

फकत तरजुमा - तफसीर

कुरआन मजीद

मय तरजुमा

तरजुमा

हज़रत मौलाना अशरफ़ अली थानवी रह॰

हिन्दी अनुवाद

मौलाना मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी

एम॰ ए॰ (अलीग॰)

ibsbookstore.com





1 सूर: फातिह: 5

सूर: फातिह: मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 7 आयतें और 1 रुकूअ है।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

'सब तारीफें अल्लाह तआला के लायक हैं जो पालने वाले हैं हर-हर आलम के।' (1) जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं। (2) जो मालिक हैं बदले के दिन के। (3) हम आप ही की इबादत करते हैं और आप ही से मदद की दरख्वास्त करते हैं। (4) बतला दीजिए हमको रास्ता सीधा। (5) रास्ता उन लोगों का जिनपर आपने इनाम फरमाया है। (6) न रास्ता उन लोगों का जिनपर आपका गुज़ब किया गया और न उन लोगों का जो रास्ते से गुम हो गए। (7) ♦

1. यह सूर: रब्बुल आलमीन ने अपने बन्दों की ज़बान से फरमाई कि इन अल्फाज़ में अपने ख़ालिक व राज़िक के सामने दरख्वास्त पेश किया करें।
2. मख़्लूक़ात की अलग-अलग ज़िन्स एक-एक आलम कहलाता है, जैसे आलमे मलायका, आलमे इनसान, आलमे परिन्द, आलमे हैवानात, आलमे ज़िन्न।
3. इनाम से दीनी इनाम मुराद है। इनाम वाले चार ग़िरोह हैं, अम्बिया, सिद्दीकीन, शुहदा और नेक लोग।
4. गुज़ब के हक़दार वे लोग हैं जो तहक्कीक़ात के बावजूद हिदायत के रास्ते को छोड़ दें और गुमराह वे हैं जो सीधे रास्ते की तहक्कीक़ात न करना चाहें, इनमें से मग़ज़ूब ज़्यादा नाराज़ी के हक़दार हैं जो देखते-भालते हक़ की मुख़ालफ़त में सरग़म हैं।

पहला पार:

अलिफ़-लाम्-मीम

2 सूर: ब-कर: 87

सूर: ब-कर: मदीना में नाज़िल हुई। इसमें 286 आयतें और 40 रुकूअ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

अलिफ़-लाम्-मीम।¹ (1) यह किताब ऐसी है जिसमें कोई शुब्हा नहीं² राह बतलाने वाली है खुदा तआला से डरने वालों को।³ (2) वे खुदा से डरने वाले लोग ऐसे हैं जो यकीन लाते हैं छुपी हुई चीज़ों पर⁴ और कायम रखते हैं⁵ नमाज़ को, और जो कुछ दिया है हमने उनको उसमें से खर्च करते हैं।⁶ (3) और वे लोग ऐसे हैं कि यकीन रखते हैं इस किताब पर भी जो आपकी तरफ़ उतारी गई है और उन किताबों पर भी जो आपसे पहले उतारी जा चुकी हैं⁷ और आख़िरत पर भी वे लोग यकीन रखते हैं।⁸ (4) बस ये लोग हैं ठीक राह पर जो उनके परवर्दिगार की तरफ़ से

1. इन हुरूफ़ के मायने से अ़वाम को इतिला नहीं दी गई, शायद नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बतला दिया गया हो, क्योंकि अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एहतिमाम के साथ वही बातें बताई हैं जिनके न जानने से दीन में कोई हर्ज और नुकसान लाज़िम आता था, लेकिन इन हुरूफ़ का मतलब न जानने से कोई हर्ज न था इसलिए हमको भी ऐसी बातों की तफ़्तीश न करनी चाहिए।

2. यानी कुरआन के अल्लाह की जानिब से होने में कोई शक नहीं। यानी यह बात यकीनी है चाहे कोई ना-समझ इसमें शुब्हा रखता हो, क्योंकि यकीनी बात किसी के शुब्हा करने से भी यकीनी ही रहती है।

3. क्योंकि जिसको ख़ौफ़े खुदा न हो वह कुरआन का बतलाया हुआ रास्ता नहीं देखता।

4. यानी जो चीज़ें हवास और अक्ल से पोशीदा हैं उनको सिर्फ़ अल्लाह व रसूल के फ़रमाने से सही मान लेते हैं।

5. यानी उसको पाबन्दी से हमेशा अदा करते हैं और उसकी शर्तों और अरकान को पूरा-पूरा बजा लाते हैं।

6. यानी नेक कामों में।

7. यानी कुरआन पर भी ईमान रखते हैं और पहली आसमानी किताबों पर भी। ईमान सच्चा समझने को कहते हैं, अमल करना दूसरी बात है। पस हक़ तआला ने जितनी किताबें पिछले अम्बिया अलैहिमुस्सलाम पर नाज़िल की हैं सबको सच्चा समझना फ़र्ज़ और ईमान की शर्त है, रह गया अमल सो वह सिर्फ़ कुरआन पर होगा, पहली किताबें मन्सूख़ हो गई हैं इसलिए उनपर अमल जायज़ नहीं।

8. आख़िरत से कियामत का दिन मुराद है, चूँकि वह दिन दुनिया के बाद आएगा इसलिए उसको आख़िरत कहते हैं।

मिली है, और ये लोग हैं पूरे कामयाब।¹ (5) बेशक जो लोग काफ़िर हो चुके हैं बराबर है उनके हक में चाहे आप उनको डराएँ या न डराएँ, वे ईमान न लाएँगे।² (6) बंद लगा दिया है अल्लाह तआला ने उनके दिलों पर और उनके कानों पर, और उनकी आँखों पर पर्दा है, और उनके लिए सज़ा बड़ी है।³ (7) ♦

और उन लोगों में कुछ ऐसे भी हैं जो कहते हैं, हम ईमान लाए अल्लाह तआला पर और आखिरी दिन पर, हालाँकि वे बिल्कुल ईमान वाले नहीं। (8) चालबाज़ी करते हैं अल्लाह तआला से और उन लोगों से जो ईमान ला चुके हैं। (यानी सिर्फ़ चालबाज़ी की राह से ईमान का इज़हार करते हैं) और हकीकत में किसी के साथ भी चालबाज़ी नहीं करते सिवाय अपनी ज़ात के, और वे इसका शऊर नहीं रखते।⁴ (9) उनके दिलों में बड़ा मर्ज़ है सो और भी बढ़ा दिया अल्लाह तआला ने उनका मर्ज़,⁵ और उनके लिए दर्दनाक सज़ा है इस वजह से कि वे झूठ बोला करते थे। (10) और जब उनसे कहा जाता है कि फ़साद “यानी ख़राबी और बिगाड़” मत करो ज़मीन में, तो कहते हैं कि हम तो सुधार ही करने वाले हैं। (11) याद रखो बेशक यही लोग मुफ़सिद “यानी बिगाड़ पैदा करने वाले” हैं, लेकिन वे इसका शऊर नहीं रखते। (12) और जब उनसे कहा जाता है कि तुम भी ऐसा ही ईमान ले आओ जैसा ईमान लाए हैं और लोग, तो कहते हैं, क्या हम ईमान लाएँगे जैसा ईमान लाए हैं ये बेवकूफ़? याद रखो बेशक यही हैं बेवकूफ़, लेकिन वे इसका इल्म नहीं रखते। (13) और जब मिलते हैं वे मुनाफ़िक़ उन लोगों से जो ईमान लाए हैं तो कहते हैं कि हम ईमान ले आए हैं, और जब तन्हाई में पहुँचते हैं अपने बुरे सरदारों के पास तो कहते हैं कि हम बेशक तुम्हारे साथ हैं, हम तो सिर्फ़ मज़ाक़ किया करते हैं। (14) अल्लाह ही मज़ाक़ कर रहे हैं उनके साथ और ढील देते चले जाते हैं उनको कि वे अपनी सरकशी में हैरान व सरग़रदाँ हो रहे हैं। (15) ये वे लोग हैं कि उन्होंने गुमराही ले ली वजाय हिदायत के, तो फ़ायदेमंद न हुई उनकी यह तिजारत और न ये ठीक तरीक़े पर चले।⁶ (16) उनकी हालत उस शख्स की हालत के जैसी है जिसने कहीं आग जलाई हो, फिर जब रोशन कर दिया हो उस आग ने उस शख्स के आस-पास की सब चीज़ों को, ऐसी हालत में छीन लिया हो अल्लाह तआला ने उनकी रोशनी को और छोड़ दिया हो उनको अन्धेरों में कि कुछ देखते भालते न हों। (17) बहरे हैं, गूँगे हैं, अन्धे हैं, सो ये अब रुजू

1. यानी ऐसे लोगों को दुनिया में यह नेमत मिली कि हक़ का रास्ता नसीब हुआ और आखिरत में यह दौलत नसीब होगी कि हर तरह की कामयाबी उनके लिए है।

2. इस आयत में सब काफ़िरों का बयान नहीं बल्कि खास उन काफ़िरों का ज़िक्र है जिनके बारे में खुदा तआला को मालूम है कि उनका ख़ात्मा कुफ़्र पर होगा। और इस आयत से यह ग़रज़ नहीं कि उनको अल्लाह के अज़ाब से डराने और अहक़ाम सुनाने की ज़रूरत नहीं बल्कि मतलब यह है कि आप उनके ईमान लाने की फ़िक्र न करें और उनके ईमान न लाने से रंजीदा न हों, उनके ईमान लाने की उम्मीद नहीं।

3. उन्होंने शरारत और दुश्मनी करके अपने इख़्तियार से खुद अपनी सलाहियत बर्बाद कर ली है, सो इस सलाहियत के तबाह होने का सबब और करने वाले तो वे खुद ही हैं, मगर चूँकि बन्दों के तमाम अफ़आल का ख़ालिक अल्लाह सुब्बानहू व तआला है इसलिए इस आयत में अपने ख़ालिक होने का बयान फ़रमा दिया कि जब वे सलाहियत के तबाह करने वाले हुए और उसको अपने इरादे से इख़्तियार करना चाहा तो हमने भी वह बुरी सलाहियत की कैफ़ियत उनके दिलों वग़ैरह में पैदा कर दी। बन्द लगाने से इसी बुरी सलाहियत का पैदा करना मुराद है, उनका यह फ़ैल (काम) इस ख़त्म यानी बन्द लगाने का सबब हुआ, अल्लाह का बन्द लगाना इस फ़ैल का सबब नहीं हुआ।

4. यानी इस चालबाज़ी का बुरा अन्जाम खुद उन्हीं को भुगतना पड़ेगा।

5. मर्ज़ में उनका बुरा एतिकाद रखना, हसद और हर वक़्त का अन्देशा व ख़लजान सब कुछ आ गया, चूँकि इस्लाम की रोज़ाना तरक्की होती जाती थी इसलिए उनके दिलों में साथ-साथ ये बीमारियाँ तरक्की पाती जाती थीं।

6. यानी उनको तिजारत का ढंग न आया कि हिदायत जैसी चीज़ छोड़ी और गुमराही जैसी बुरी चीज़ ली।

न होंगे¹ (18) या उन मुनाफ़िकों की ऐसी मिसाल है जैसे बारिश हो आसमान की तरफ़ से, उसमें अन्धेरा भी हो और बिजली व कड़क भी हो, जो लोग उस बारिश में चल रहे हैं वे ठूँसे लेते हैं अपनी उंगलियाँ अपने कानों में कड़क के सबब मौत के अन्देश से, और अल्लाह तआला धरे में लिए हुए हैं काफ़िरों को। (19) बिजली की यह हालत है कि मालूम होता है कि अभी उनकी आँखों की रोशनी उसने ली। जहाँ ज़रा उनको बिजली की चमक हुई तो उसकी रोशनी में चलना शुरू किया और जब उनपर अन्धेरा हुआ फिर खड़े के खड़े रह गए, और अगर अल्लाह तआला इरादा करते तो उनके आँख-कान सब छीन लेते, बेशक अल्लाह तआला हर चीज़ पर कादिर हैं।² (20) ♦

ऐ लोगो! इबादत इख़्तियार करो अपने परवर्दिगार की जिसने तुमको पैदा किया और उन लोगों को भी कि तुमसे पहले गुज़र चुके हैं, अज़ब नहीं कि तुम दोज़ख़ से बच जाओ।³ (21) वह ज़ाते पाक ऐसी है जिसने बनाया तुम्हारे लिए ज़मीन को फ़र्श और आसमान को छत, और बरसाया आसमान से पानी, फिर नापैदी के परदे से निकाला बज़रिए उस पानी के फलों की ग़िज़ा को तुम लोगों के वास्ते, तो अब मत ठहराओ अल्लाह के मुकाबिल और तुम जानते बूझते हो।⁴ (22) और अगर तुम कुछ ख़लजान में हो इस किताब के बारे में जो हमने नाज़िल फ़रमाई है अपने ख़ास बन्दे पर, तो अच्छा फिर तुम बना लाओ एक महदूद “यानी सीमित” टुकड़ा जो उसके जैसा हो,⁵ और बुला लो अपने हिमायतियों को जो खुदा से अलग (तजवीज़ कर रखे) हैं अगर तुम सच्चे हो।⁶ (23) फिर अगर तुम यह काम न कर सके और कियामत तक भी न कर सकोगे तो फिर ज़रा बचते रहो दोज़ख़ से जिसका ईंधन आदमी और पत्थर हैं, तैयार हुई रखी है काफ़िरों के वास्ते।⁷ (24) और खुशख़बरी सुना दीजिए आप ऐ पैग़म्बर उन लोगों को जो ईमान लाए और काम किए अच्छे, इस बात की कि बेशक उनके वास्ते जन्नतें हैं कि बहती होंगी उनके नीचे से नहरें, जब कभी दिए जाएँगे वे लोग उन जन्नतों में से किसी फल की ग़िज़ा तो हर बार में यही कहेंगे कि यह तो वही है जो हमको मिला था इससे पहले और मिलेगा भी उनको दोनों बार का फल मिलता जुलता।⁸ और उनके वास्ते उन जन्नतों में वीदियाँ होंगी साफ़, पाक की हुई, और वे लोग उन जन्नतों में हमेशा को बसने वाले होंगे। (25) हाँ वाकई अल्लाह तआला तो नहीं शरमाते इस बात से कि बयान कर दें कोई मिसाल भी चाहे मच्छर की हो चाहे उससे

1. यानी हक़ से बहुत दूर हो गए हैं कि उनके कान हक़ सुनने के काबिल न रहे, जबान उनकी हक़ बात कहने के लायक़ न रही, आँखें हक़ देखने के काबिल न रही, सो अब उनके हक़ की तरफ़ रज़ू होने की क्या उम्मीद है।

2. मुतरहिद (शक में पड़े हुए) मुनाफ़िकीन इस्लाम के ग़ालिब होने के आसार की ज़्यादती देखकर कभी इस्लाम के नूर की झलक देखकर इधर को बढ़ने लगते हैं और कभी खुद-ग़रज़ी के अन्धेरे में पड़कर फिर हक़ से रुक जाते हैं।

3. शाही मुहावरे में ‘अज़ब नहीं’ का लफ़्ज़ वायदे के मौक़े में बोला जाता है।

4. यानी इस बात को जानते हो कि इन तसरूफ़ात का (यानी इन कामों का) सिवाय खुदा तआला के कोई करने वाला नहीं, तो इस सूरत में कब मुनासिब है कि खुदा के मुकाबले में दूसरों को माबूद बनाओ।

5. नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बेशुमार मोज़िज़े अता हुए, जिनमें सबसे बड़ा मोज़िज़ा कुरआन शरीफ़ है कि नुबुव्वत के साबित करने की बड़ी दलील है। इसके मोज़िज़ा होने में मुख़ालिफ़ीन को शुब्हा था कि शायद इसको रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम खुद तसनीफ़ कर लिया करते हों तो इस सूरत में इसके मोज़िज़ा होने में कलाम की गुन्जाइश हो गई, पस नुबुव्वत की दलील मुश्तबह हो गई, इसलिए अल्लाह तआला इस शुब्हा को ख़त्म फ़रमाते हैं ताकि इसका मोज़िज़ा होना साबित हो जाए। फिर नुबुव्वत पर क़तई दलील बन सके।

6. जब बावजूद इसके न बना सकेंगे तो इन्साफ़ की रू से बिना सोचे साबित हो जाएगा कि यह मोज़िज़ा अल्लाह की जानिब से है, और बिला शुब्हा आप पैग़म्बर हैं और यही मक़सूद था।

7. यह सुनकर कैसा कुछ जोश व ख़रोश और बल व गुस्सा न आया होगा, और कोशिश की कोई कसर क्यों उठा रखी होगी? फिर आजिज़ होकर अपना-सा मुँह लेकर बैठ रहना क़तई दलील है कि कुरआने करीम मोज़िज़ा है।

8. दोनों बार के फलों की सूरत एक-सी होगी, जिससे वे यूँ समझेंगे कि यह पहली ही किस्म का फल है मगर खाने में मज़ा दूसरा होगा, जिससे लुफ़्त और खुशी बढ़ जाएगी।

भी बढ़ी हुई हो, सो जो लोग ईमान लाए हुए हैं चाहे कुछ ही हो वे तो यकीन करेंगे कि बेशक यह मिसाल तो बहुत ही मौके की है उनके रब की जानिब से, और रह गए वे लोग जो काफ़िर हैं, सो चाहे कुछ भी हो जाए वे यूँ ही कहते रहेंगे: वह कौन-सा मतलब होगा जिसका इरादा किया होगा अल्लाह ने इस हकीर मिसाल से, गुमराह करते हैं अल्लाह तआला उस मिसाल की वजह से बहुतों को और हिदायत करते हैं उसकी वजह से बहुतों को। और गुमराह नहीं करते अल्लाह तआला उस मिसाल से किसी को मगर सिर्फ़ बेहुक्मी करने वालों को। (26) जो कि तोड़ते रहते हैं उस मुआहदे को जो अल्लाह तआला से कर चुके थे, उसकी मज़बूती के बाद और ख़त्म करते रहते हैं उन ताल्लुकात को कि हुक्म दिया है अल्लाह ने उनको वाबस्ता रखने “यानी जोड़ने” का¹ और फ़साद “यानी बिगाड़” करते रहते हैं ज़मीन में, पस ये लोग पूरे घाटे में पड़ने वाले हैं।² (27) भला क्योंकिर नाशुकी करते हो अल्लाह की हालाँकि थे तुम महज़ बेजान सो तुमको जानदार किया, फिर तुमको मौत देंगे, फिर ज़िन्दा करेंगे (यानी कियामत के दिन) फिर उन्हीं के पास ले जाए जाओगे। (28) वह जाते पाक ऐसी है जिसने पैदा किया तुम्हारे फ़ायदे के लिए जो कुछ भी ज़मीन में मौजूद है सब का सब, फिर तवज्जोह फ़रमाई आसमान की तरफ़, सो दुरुस्त करके बनाए सात आसमान³ और वह तो सब चीज़ों के जानने वाले हैं। (29) ♦

और जिस वक़्त इर्शाद फ़रमाया आपके रब ने फ़रिश्तों से कि ज़रूर मैं बनाऊँगा ज़मीन में एक नायब⁴ फ़रिश्ते कहने लगे: क्या आप पैदा करेंगे ज़मीन में ऐसे लोगों को जो फ़साद करेंगे और खून बहाएँगे? और हम बराबर तस्बीह करते रहते हैं बिहम्दिल्लाह, और पाकी बयान करते रहते हैं आपकी।⁵ हक़ तआला ने इर्शाद फ़रमाया कि मैं जानता हूँ उस बात को जिसको तुम नहीं जानते।⁶ (30) और इल्म दे दिया अल्लाह तआला ने (हज़रत) आदम (अलैहिस्सलाम) को (उनको पैदा करके) कुल चीज़ों के नामों का⁷ फिर वे चीज़ें फ़रिश्तों के सामने कर दीं, फिर फ़रमाया कि बतलाओ मुझको नाम इन चीज़ों के (उनके आसार व ख़ासियतों के साथ) अगर तुम सच्चे हो। (31) फ़रिश्तों ने अर्ज़ किया कि आप तो पाक हैं हमको कोई इल्म नहीं, मगर वही जो कुछ आपने हमको इल्म दिया।

1. इसमें तमाम शर्इ ताल्लुकात दाख़िल हो गए।
2. यहाँ तक उस शुब्हा के जवाब का सिलसिला था जो कि कुप्फ़ार ने पेश किया था कि अल्लाह के कलाम में ऐसी कम-क़द्र चीज़ों का ज़िक्र क्यों आया। अब उस मजमून की तरफ़ रुजू करते हैं जो इससे ऊपर आयत “या अय्युहन्नासुअबुदु” में तौहीद से मुताल्लिक मज़कूर हुआ था।
3. अव्वल ज़मीन का माद्दा बना और अभी इसकी मौजूदा शक़ल न बनी थी कि उसी हालत में आसमान का माद्दा बना, जो धुँए की सूरत में था। उसके बाद ज़मीन मौजूदा शक़ल पर फैला दी गई, फिर उसपर पहाड़ और पेड़ वग़ैरह पैदा किए गए। फिर उस धुँए के बहते हुए माद्दे के सात आसमान बना दिए।
4. यानी वह मेरा नायब होगा कि अपने शर्इ अहक़ाम को जारी करने और लागू करने की ख़िदमत मैं उसके सुपूर्द करूँगा।
5. यह बतौर एतिराज़ के नहीं कहा, न अपना हक़ जताया बल्कि यह फ़रिश्तों की अर्ज़ व दरख़्वास्त इन्क़िसारी और आजिज़ी के इज़हार के वास्ते थी।
6. यानी जो मामला तुम्हारे नज़दीक आदम की औलाद की पैदाइश के लिए रुकावट है, वही मामला हकीकत में उनकी पैदाइश और तख़लीक का सबब है।
7. यानी रू-ए-ज़मीन पर मौजूद तमाम चीज़ों के नामों और उनकी ख़ासियतों का इल्म दे दिया।

बेशक आप बड़े इल्म वाले हैं, बड़े हिक्मत वाले हैं (कि जिस कद्र जिसके लिए मसलिहत जाना उसी कद्र समझ व इल्म अता फरमाया)। (32) हक् तआला ने इर्शाद फरमाया कि ऐ आदम! इनको इन चीजों के नाम बतला दो, सो जब बतला दिए उनको आदम ने उन चीजों के नाम तो हक् तआला ने फरमाया: (देखो) मैं तुमसे कहता न था कि बेशक मैं जानता हूँ तमाम छुपी चीजें आसमानों और ज़मीन की, और जानता हूँ जिस बात को तुम जाहिर कर देते हो और जिस बात को दिल में रखते हो। (33) और जिस वक्त हमने हुक्म दिया फरिश्तों को (और ज़िन्नो को भी) कि सज्दे में गिर जाओ आदम के सामने,¹ सो सब सज्दे में गिर पड़े सिवाय इबलीस के, उसने कहना न माना और गुरुर में आ गया, और हो गया काफ़िरोँ में से।² (34) और हमने हुक्म दिया कि ऐ आदम! रहा करो तुम और तुम्हारी बीवी जन्नत में, फिर खाओ दोनों इसमें से फरागत के साथ जिस जगह से चाहो, और नज़दीक न जाइयो उस दरख्त के, वरना तुम भी उन्हीं में शुमार हो जाओगे जो अपना नुकसान कर बैठते हैं।³ (35) फिर बहका दिया आदम और हव्वा को शैतान ने उस दरख्त की वजह से, सो निकलवाकर रहा उनको उस ऐश से जिसमें वे थे, और हमने कहा: नीचे उतरो तुममें से बाज़े बाज़ों के दुश्मन रहेंगे, और तुमको ज़मीन पर कम ही ठहरना है, और काम चलाना एक मुक़र्ररा मीयाद तक।⁴ (36) उसके बाद हासिल कर लिए आदम ने अपने रब से चन्द अलफाज़, तो अल्लाह तआला ने रहमत के साथ तवज्जोह फरमाई उनपर (यानी तौबा कबूल कर ली) बेशक वही हैं बड़े तौबा कबूल करने वाले, बड़े मेहरबान। (37) हमने हुक्म फरमाया: नीचे जाओ इस जन्नत से सबके सब, फिर अगर आए तुम्हारे पास मेरी तरफ़ से किसी किस्म की हिदायत, सो जो शख्स पैरवी करेगा मेरी उस हिदायत की तो न कुछ अन्देशा होगा उसपर और न ऐसे लोग ग़मगीन होंगे। (38) और जो लोग कुफ़्र करेंगे और झुटलाएँगे हमारे अहकाम को, ये लोग होंगे दोज़ख़ वाले, वे उसमें हमेशा रहेंगे। (39) ♦

ऐ बनी इसराईल! याद करो तुम लोग मेरे उन एहसानों को जो किए हैं मैंने तुमपर, और पूरा करो तुम मेरे अह्द को, पूरा करूँगा मैं तुम्हारे अह्द को, और सिर्फ़ मुझ ही से डरो। (40) और ईमान ले आओ उस किताब पर जो मैंने नाज़िल की है (यानी कुरआन पर) ऐसी हालत में कि वह सच बतलाने वाली है उस किताब को जो तुम्हारे पास है (यानी तौरात के अल्लाह की किताब होने की तस्दीक करती है) और मत बनो तुम सबमें पहले इनकार करने वाले इस (कुरआन) के, और मत लो मेरे अहकाम के मुकाबले में हकीर मुआवज़े को, और ख़ास मुझ ही से पूरे तौर पर डरो।⁵ (41) और मख़्लूत “यानी गड़-मड़” मत करो हक् को नाहक् के साथ, और छुपाओ भी मत हक् को

1. ग़ालिबन फरिश्तों को बिला वास्ता हुक्म किया होगा और ज़िन्नो को किसी फरिश्ते वगैरह के ज़रिए से कहा गया होगा।

2. उसपर काफ़िर होने का फ़तवा इसलिए दिया गया कि उसने हुक्मे इलाही के मुकाबले में तकबुर किया और उसके कबूल करने में बुरा समझा और उसको खिलाफ़े हिक्मत और खिलाफ़े मसलहत ठहराया।

3. खुदा जाने वह क्या दरख्त था।

4. यानी वहाँ भी जाकर दवाम (हमेशा का रहना) न मिलेगा, कुछ वक्त के बाद वह घर भी छोड़ना पड़ेगा।

5. यानी मेरे अहकाम छोड़कर और उनको बदल कर और छुपाकर आम लोगों से दुनिया-ए-ज़लील व कलील को वसूल मत करो, जैसा कि उनकी आदत थी।

जिस हालत में कि तुम जानते हो।¹ (42) और कायम करो तुम लोग नमाज़ को (यानी मुसलमान होकर) और दो ज़कात को और आजिज़ी करो आजिज़ी करने वालों के साथ।² (43) क्या ग़ज़ब है कि कहते हो और लोगों को नेक काम करने को (नेक काम करने से मुराद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ईमान लाना है) और अपनी ख़बर नहीं लेते, हालाँकि तुम तिलावत करते रहते हो किताब की, तो फिर क्या तुम इतना भी नहीं समझते।³ (44) और (अगर तुमको माल और जाह की मुहब्बत के ग़लबे से ईमान लाना दुश्वार मालूम हो तो) मदद लो सब्र और नमाज़ से, और बेशक वह नमाज़ दुश्वार ज़रूर है मगर जिनके दिल में खुशूअ "यानी आजिज़ी और गिड़गिड़ाना" हो उनपर कुछ दुश्वार नहीं। (45) वे खाशिअीन, वे लोग हैं जो ख़्याल रखते हैं इसका कि वे बेशक मिलने वाले हैं अपने रब से। ♦ (46) ♦

और इस बात का भी ख़्याल रखते हैं कि वे बेशक अपने रब की तरफ़ वापस जाने वाले हैं। ऐ याकूब की औलाद! तुम लोग मेरी उस नेमत को याद करो जो मैंने तुमको इनाम में दी थी और उस (बात) को (याद करो) कि मैंने तुमको तमाम दुनिया जहान वालों पर (खास बर्ताव में) फ़ौकियत दी थी। (47) और डरो तुम ऐसे दिन से कि न तो कोई शख्स किसी शख्स की तरफ़ से कुछ मुतालबा अदा कर सकता है और न किसी शख्स की तरफ़ से कोई सिफ़ारिश कबूल हो सकती है, और न किसी शख्स की तरफ़ से कोई मुआवज़ा लिया जा सकता है, और न उन लोगों की तरफ़दारी चल सकेगी।⁴ (48) और (वह ज़माना याद करो) जबकि रिहाई दी हमने तुमको फिरऔन के मुताल्लिकीन से जो फ़िक्र में लगे रहते थे तुम्हें सख्त तकलीफ़ पहुँचाने के, गले काटते थे तुम्हारे लड़कों के और ज़िन्दा छोड़ देते थे तुम्हारी औरतों को। इस (वाकिए) में एक इम्तिहान था तुम्हारे रब की जानिब से बड़ा भारी।⁵ (49) और जब फाड़ दिया हमने तुम्हारी वजह से दरिया-ए-शोर "यानी नमकीन या काले पानी के दरिया" को, फिर हमने (डूबने से) तुमको बचा लिया और फिरऔन के मुताल्लिकीन को (मय फिरऔन के) डुबो दिया, और तुम (उसका) मुआयना कर रहे थे।⁶ (50) और (वह ज़माना याद करो) जबकि वायदा किया था हमने मूसा (अलैहिस्सलाम) से चालीस रात का, फिर तुम लोगों ने तजवीज़ कर लिया गौसाला को मूसा के (जाने के) बाद, और तुमने जुल्म पर कमर बाँध रखी थी। (51) फिर भी हमने (तुम्हारे तौबा करने पर) माफ़ किया तुमसे इतनी बड़ी बात होने के बाद, इस उम्मीद पर कि तुम एहसान मानोगे। (52) और (वह ज़माना याद करो) जब दी हमने मूसा को किताब (तौरात)

1. शरीअत के अहकाम की तब्दीली दो तरह से किया करते हैं। एक तो यह कि उसको ज़ाहिर ही न होने दिया, यह छुपाना है। और अगर छुपाए न छुप सका और ज़ाहिर ही हो गया तो फिर उसमें गड़-मड़ करना चाहते हैं, यह "लब्स" (हक़ के साथ नाहक़ को मिला देना) है। हक़ तअ़ाला ने दोनों से मना कर दिया।
2. नमाज़ से उनकी रुतबे और मन्सब की मुहब्बत कम होगी, ज़कात से उनकी माल की मुहब्बत घटेगी, बातिनी तवाज़ो से हसद वगैरह में कमी आएगी। यही मर्ज़ उनमें ज़्यादा थे।
3. इससे यह मसला नहीं निकलता कि बे-अमल को वाइज़ बनना जायज़ नहीं, बल्कि यह निकलता है कि वाइज़ को बे-अमल बनना जायज़ नहीं।
4. यह दिन कियामत का होगा।
5. किसी ने फिरऔन से भविष्यवाणी कर दी थी कि बनी इसराईल में एक लड़का पैदा होगा जिसके हाथों तेरी हुकूमत जाती रहेगी, इसलिए उसने नये पैदा होने वाले लड़कों को क़त्ल करना शुरू कर दिया।
6. यह किस्सा उस वक़्त हुआ कि मूसा अलैहिस्सलाम पैदा होकर पैग़म्बर हो गए और मुद्दतों फिरऔन को समझाते रहे।
7. फैसले की चीज़ या तो उन अहकाम को कहा जो तौरात में लिखे हैं, या मोज़िज़ों को कहा, या खुद तौरात ही को कह दिया।

और फैसले की चीज़,⁷ इस उम्मीद पर कि तुम राह पर चलते रहो। (53) और (वह ज़माना याद करो) जब मूसा ने फ़रमाया अपनी कौम से कि ऐ मेरी कौम! बेशक तुमने अपना बड़ा नुक़सान किया, अपनी इस ग़ौसाला (को पूजने) की तजवीज़ से, सो तुम अब अपने ख़ालिक की तरफ़ मुतवज्जह हो, फिर बाज़ आदमी बाज़ को क़त्ल करो।¹ यह (अमल करना) तुम्हारे लिए बेहतर होगा तुम्हारे ख़ालिक के नज़दीक, फिर हक़ तआला तुम्हारे हाल पर (अपनी इनायत से) मुतवज्जह हुए, बेशक वह तो ऐसे ही हैं कि तौबा क़बूल कर लेते हैं और इनायत फ़रमाते हैं। (54) और जब तुम लोगों ने (यूँ) कहा कि ऐ मूसा! हम हरगिज़ न मानेंगे तुम्हारे कहने से यहाँ तक कि हम (खुद) देख लें अल्लाह तआला को खुले तौर पर, सो (इस गुस्ताखी पर) आ पड़ी तुमपर कड़क बिजली और तुम (उसका आना) अपनी आँखों से देख रहे थे। (55) फिर हमने तुमको ज़िन्दा कर उठाया तुम्हारे मर जाने के बाद, इस उम्मीद पर कि तुम एहसान मानोगे। (56) और साया डालने वाला किया हमने तुमपर बादल को, (तीह के मैदान में) और (ग़ैब के ख़ज़ाने से) पहुँचाया हमने तुम्हारे पास तुरन्जबीन और बटेरें। खाओ नफीस चीज़ों से जो कि हमने तुमको दी हैं, और (इससे) उन्होंने हमारा कोई नुक़सान नहीं किया, लेकिन अपना ही नुक़सान करते थे।² (57) और जब हमने हुक्म किया कि तुम लोग उस आबादी के अन्दर दाख़िल हो, फिर खाओ उस (की चीज़ों में) से जिस जगह तुम रग़बत करो बेतक़ल्लुफी से, और दरवाज़े में दाख़िल होना (आजिज़ी से) झुके-झुके और (ज़बान से) कहते जाना कि तौबा है (तौबा है)। हम माफ़ कर देंगे तुम्हारी ख़ताएँ और अभी उसपर और ज़्यादा देंगे दिल से नेक काम करने वालों को। (58) सो बदल डाला उन ज़ालिमों ने एक और कलिमा जो ख़िलाफ़ था उस कलिमे के जिस (के कहने) की उनसे फ़रमाइश की गई थी, इसपर हमने नाज़िल की उन ज़ालिमों पर एक आसमानी आफ़त, इस वजह से कि वे नाफ़रमानी करते थे।³ (59) ♦

और (वह ज़माना याद करो) जब (हज़रत) मूसा ने पानी की दुआ माँगी अपनी कौम के वास्ते, इसपर हमने (मूसा को) हुक्म दिया कि अपनी इस लाठी को फ़लाँ पथर पर मारो, पस फ़ौरन उससे फूट निकले बारह चश्मे (और बारह ही ख़ानदान थे बनी इसराईल के, चुनौचे) मालूम कर लिया हर-हर शख़्स ने अपने पानी पीने की जगह को। खाओ और (पीने को) पियो अल्लाह के रिज़्क से और (दरमियाना दर्जे की) हद से मत निकलो फ़साद (व फ़ितना) करते हुए मुल्क में।⁴ (60) और जब तुम लोगों ने (यूँ) कहा कि ऐ मूसा (रोज़ के रोज़) हम एक ही किस्म के खाने

1. यह बयान है उस तरीके का जो उनकी तौबा के लिए तजवीज़ हुआ, यानी मुजरिम लोग क़त्ल किए जाएँ।
2. ये दोनों किस्से वादी-ए-तीह में हुए, तीह के मायने हैं सरगर्दानी (हैरानी व परेशानी)।
3. वह ख़िलाफ़ कलिमा यह था कि “हित्ततुन्” जिसके मायने तौबा की जगह के हैं, इसकी जगह मज़ाक़ उड़ाने के अन्दाज़ में “हब्बतुन् फ़ी शअरतिन्” यानी ‘ग़ुल्ला जौ के दरमियान’ कहना शुरू कर दिया, और वह आसमानी आफ़त ताऊन था।
4. यह किस्सा वादी-ए-तीह में हुआ, वहाँ प्यास लगी तो पानी माँगा, मूसा अलैहिस्सलाम ने दुआ की तो एक ख़ास पथर से सिर्फ़ लाठी के मारने से बारह चश्मे अल्लाह की कुदरत से निकल पड़े, और खाने से मुराद “मन्न” व “सल्वा” का खाना है, और पीने से यही पानी पीना मुराद है। और फ़साद व फ़ितना फ़रमाया नाफ़रमानी और अहक़ाम के छोड़ने को।

पर कभी न रहेंगे, आप हमारे वास्ते अपने परवर्दिगार से दुआ करें कि वह हमारे लिए ऐसी चीज़ें पैदा करें जो ज़मीन में उगा करती हैं, साग (हुआ) ककड़ी (हुई) गेहूँ (हुआ) मसूर (हुई) और प्याज़ (हुई) आपने फरमाया: क्या तुम बदले में लेना चाहते हो अदना दर्जे की चीज़ों को ऐसी चीज़ के मुकाबले में जो आला दर्जे की है। किसी शहर में (जाकर) उतरो, (वहाँ) ज़रूर तुमको वे चीज़ें मिलेंगी जिनकी तुम दरख्वास्त करते हो, और जम गई उनपर ज़िल्लत और परस्ती (कि दूसरों की निगाह में कद्र और खुद उनमें हिम्मत व जुर्रत न रही) और मुस्तहिक हो गए अल्लाह के ग़ज़ब के।¹ (और) यह इस वजह से (हुआ) कि वे लोग इनकारी हो जाते थे अहकामे इलाही के और कत्ल कर दिया करते थे पैगम्बरों को नाहक (और दूसरे) यह इस वजह से हुआ कि उन लोगों ने इताअत न की और (इताअत के) दायरे से निकल निकल जाते थे। (61) ♦

यह तहकीकी बात है कि मुसलमान और यहूदी और नसारा “यानी ईसाई” और फ़िर्का साबिईन (इन सबमें) जो शख्स यकीन रखता हो अल्लाह तआला (की ज्ञात और सिफ़ात) पर और कियामत के दिन पर, और कारगुज़ारी अच्छी करे, ऐसों के लिए उनका अज़्र भी है उनके परवर्दिगार के पास, और (वहाँ जाकर) किसी तरह का अन्देशा भी नहीं उनपर और न वे ग़मज़दा होंगे।² (62) और जब हमने तुमसे कौल व क़रार लिया (कि तौरात पर अमल करेंगे) और हमने तूर पहाड़ को उठाकर तुम्हारे ऊपर (बिलकुल सामने मुकाबिल में) लटका दिया कि (जल्दी) कबूल करो जो किताब हमने तुमको दी है मज़बूती के साथ, और याद रखो जो (अहकाम) उसमें हैं जिससे उम्मीद है कि तुम मुत्तकी बन जाओ। (63) फिर तुम इस कौल व क़रार के बाद भी (उससे) फिर गए, सो अगर तुम लोगों पर खुदा तआला का फ़ज़ल और रहम न होता तो ज़रूर तुम (फ़ौरन) तबाह (और हलाक) हो जाते। (64) और तुम जानते ही हो उन लोगों का हाल जो तुममें से (शरीअत की) हद से निकल गए थे, (उस हुक्म के) बारे में (जो) शनिवार के दिन के (मुताल्लिक था) सो हमने उनको कह दिया कि तुम बन्दर ज़लील बन जाओ। (65) फिर हमने उसको एक सबक (हासिल किए जाने वाला वाकिआ) बना दिया उन लोगों के लिए भी जो उस कौम के ज़माने के लोग थे और उन लोगों के लिए भी जो बाद के ज़माने में आते रहे, और नसीहत का ज़रिया (बनाया खुदा तआला से) डरने वालों के लिए।³ (66) और (वह ज़माना याद करो) जब मूसा (अलैहिस्सलाम) ने अपनी कौम से फरमाया कि हक़ तआला तुमको हुक्म देते हैं कि तुम एक बैल ज़िब्ह करो। वे लोग कहने लगे कि आया आप हमको मस्ख़रा बनाते हैं। (मूसा अलैहिस्सलाम ने) फरमाया: मैं अल्लाह की पनाह चाहता हूँ जो मैं ऐसी जहालत वालों जैसा काम करूँ।⁴ (67) वे

1. ज़िल्लत व आजिजी में से यह भी है कि यहूदियों से हुक्मत कियामत के करीब होने तक के लिए छीन ली गई।
2. कानून का हासिल ज़ाहिर है कि जो शख्स पूरी इताअत एतिकाद और आमाल में इख़्तियार करेगा, चाहे वह पहले से कैसा ही हो, हमारे यहाँ मकबूल और उसकी ख़िदमत काबिले क़द्र है। मतलब यह हुआ कि जो मुसलमान हो जाएगा अज़्र व आख़िरत में नजात का हक़दार होगा।
3. बनी इसराईल के लिए शनिवार का दिन अज़मत वाला और इबादत के लिए मुक़र्रर था और मछली का शिकार भी इस दिन मना था। ये लोग समुद्र के किनारे आबाद थे, मछली के शौकीन हजार जाल डालकर शिकार करना था सो किया, उसपर अल्लाह तआला का यह अज़ाब शक्ल को बिगाड़ देने का नाज़िल हुआ और तीन दिन के बाद वे सब मर गए।
4. बनी इसराईल में एक खून हो गया था, लेकिन उस वक़्त कातिल का पता न लगा था। बनी इसराईल ने मूसा अलैहिस्सलाम से अर्ज़ किया कि हम चाहते हैं कि कातिल का पता लगे। आपने अल्लाह के हुक्म से एक बैल के ज़िब्ह करने का हुक्म फरमाया। इसपर उन्होंने अपनी फितरत के मुवाफ़िक़ हुज्जतें निकालना शुरू कीं।

लोग कहने लगे कि आप दरखास्त कीजिए अपने रब से कि हमसे बयान कर दे कि उस (बैल) की सिफ़तें क्या हैं। आपने फ़रमाया कि वह यह फ़रमाते हैं कि वह ऐसा बैल हो कि न बिलकुल बूढ़ा हो न बहुत बच्चा हो, (बल्कि) पट्टा हो, दोनों उम्रों के दरमियान में, सो अब (ज़्यादा हुज्जत मत कीजियो बल्कि) कर डालो जो कुछ तुमको हुक्म मिला है।¹ (68) कहने लगे कि (अच्छ यह भी) दरखास्त कर दीजिए हमारे लिए अपने रब से कि हमसे यह भी बयान कर दें कि उसका रंग कैसा हो। आपने फ़रमाया कि हक़ तआला यह फ़रमाते हैं कि वह एक ज़र्द रंग का बैल हो, जिसका रंग तेज़ ज़र्द “यानी तेज़ पीला” हो कि देखने वालों को अच्छा लगता हो। (69) कहने लगे कि (अबकी बार और) हमारी खातिर अपने रब से दरियाफ़्त कर दीजिए कि हमसे बयान कर दें कि उसकी खूबियाँ और सिफ़तें क्या-क्या हों, क्योंकि हमको उस बैल में (किसी कद) इशतिबाह “यानी सिफ़तें पहचानने में शक व शुब्हा” है, और हम ज़रूर इन्शा-अल्लाह तआला (अबकी बार) ठीक समझ जाएँगे। (70) मूसा (अलैहिस्सलाम) ने जवाब दिया कि हक़ तआला यूँ फ़रमाते हैं कि वह न तो हल में चला हुआ हो, जिससे ज़मीन जोती जाए और न उससे खेती को पानी दिया जाए (गरज़ हर किस्म के ऐब से) सालिम हो और उसमें कोई दाग़ न हो। (यह सुनकर) कहने लगे कि अब आपने पूरी बात फ़रमाई। फिर उसको ज़िब्ह किया और (उनकी हुज्जतों से बज़ाहिर) करते हुए मालूम न होते थे। (71) ♦

और जब तुम लोगों (में से किसी) ने एक आदमी का खून कर दिया फिर एक-दूसरे पर उसको डालने लगे, और अल्लाह को उस मामले का ज़ाहिर करना मन्ज़ूर था, जिसको तुम पोशीदा रखना चाहते थे। (72) इसलिए हमने हुक्म दिया कि उसको उसके कोई से टुकड़े से छुआ दो, इसी तरह हक़ तआला (क़ियामत में) मुर्दों को ज़िन्दा कर देंगे, और अल्लाह तआला अपनी कुदरत के नज़ारे तुमको दिखलाते हैं, इसी उम्मीद पर कि तुम अक्ल से काम लिया करो।² (73) ऐसे-ऐसे वाकिआत के बाद तुम्हारे दिल फिर भी सख़्त ही रहे तो (यूँ कहना चाहिए कि) उनकी मिसाल पत्थर जैसी है, बल्कि सख़्ती में (पत्थर से भी) ज़्यादा सख़्त। और कुछ पत्थर तो ऐसे हैं जिनसे (बड़ी-बड़ी) नहरें फूटकर चलती हैं और उन्हीं पत्थरों में कुछ ऐसे हैं कि जो फट जाते हैं, फिर उनसे (अगर ज़्यादा नहीं तो थोड़ा ही) पानी निकल आता है, और उन्हीं पत्थरों में कुछ ऐसे हैं जो खुदा तआला के खौफ़ से ऊपर से नीचे लुढ़क आते हैं, और हक़ तआला तुम्हारे आमाal से बेख़बर नहीं हैं।³ (74) (ऐ मुसलमानो!) क्या अब भी तुम उम्मीद रखते हो कि ये यहूद तुम्हारे कहने से ईमान ले आएँगे, हालाँकि इनमें के कुछ लोग ऐसे गुज़रे हैं कि अल्लाह का कलाम सुनते थे और फिर उसको कुछ का कुछ कर डालते थे (और) उसको समझने के बाद (ऐसा करते) और जानते थे।⁴ (75) और जब मिलते हैं (मुनाफ़िकीन यहूद) मुसलमानों से तो (उनसे तो) कहते हैं कि हम (भी) ईमान ले आए हैं, और

1. हदीस में है कि अगर वे हुज्जतें न करते तो इतनी कैदें (शर्तें) उनके ज़िम्मे न होती, जो बैल ज़िब्ह कर देते काफ़ी हो जाता।

2. उस क़त्ल किए गए शख्स ने ज़िन्दा होकर अपने क़ातिल का नाम बतला दिया और फ़ौरन फिर मर गया।

3. इस मक़ाम पर इन पत्थरों की तीनों किस्मों में तरतीब निहायत लतीफ़ और जो फायदा पहुँचाना मकसूद है उसमें निहायत बलीग़ है। यानी कुछ पत्थरों से मख़्लूक को नहरों का बड़ा नफ़ा पहुँचता है, उनके दिल ऐसे भी नहीं। कुछ पत्थरों से थोड़े पानी का कम नफ़ा पहुँचता है, लेकिन उनके दिल उनसे भी सख़्त हैं, और कुछ पत्थरों से अगरचे किसी को नफ़ा नहीं पहुँचता मगर खुद तो उनमें एक असर है, मगर उनके दिलों में असर क़बूल करने की यह मामूली कैफ़ियत भी नहीं।

4. मतलब यह कि जो लोग ऐसे निडर और नफ़सानी गरज़ों के बन्धक हों, वे किसी के कहने से कब बाज़ आने वाले और किसी की कब सुनने वाले हैं।

जब तन्हाई में जाते हैं ये बाज़े दूसरे कुछ (ऐलानिया) यहूदियों के पास तो वे उनसे कहते हैं कि तुम मुसलमानों को वो बातें बतला देते हो जो अल्लाह ने तुमपर ज़ाहिर कर दी हैं, तो नतीजा यह होगा कि वे लोग तुमको हुज्जत में मगलूब कर देंगे कि यह मज़मून अल्लाह के पास (से) है, क्या तुम (इतनी मोटी बात) नहीं समझते। (76) क्या उनको इल्म नहीं है इसका कि हक़ तआला को सब ख़बर है उन चीज़ों की भी जिनको वे पोशीदा रखते हैं (77) और उनकी भी जिनका वे इज़हार कर देते हैं। और उन (यहूदियों) में बहुत से अनपढ़ (भी) हैं जो किताबी इल्म नहीं रखते, लेकिन (बग़ैर सनद के) दिल खुश करने वाली बातें (बहुत याद हैं) और वे लोग और कुछ नहीं, ख़्यालात पका लेते हैं। ● (78) तो बड़ी ख़राबी उनकी होगी जो लिखते हैं (अदल-बदलकर) किताब (तौरात) को अपने हाथों से, फिर कह देते हैं कि यह (हुक्म) खुदा की तरफ़ से है। गर्ज़ (सिर्फ़) यह होती है कि इस ज़रिये से कुछ नक़द किसी क़द्र थोड़ा वसूल कर लें। सो बड़ी ख़राबी (पेश) आएगी उनको उसकी बदौलत (भी) जिसको उनके हाथों ने लिखा था और बड़ी ख़राबी होगी उनको उसकी बदौलत (भी) जिसको वे वसूल कर लिया करते थे। (79) और यहूदियों ने यह भी कहा कि हरगिज़ हमको (दोज़ख़ की) आग छुएगी (भी) नहीं, मगर (बहुत) थोड़े दिन जो (उँगलियों पर) गिन लिए जा सकें। आप यूँ फ़रमा दीजिए: क्या तुम लोगों ने हक़ तआला से (इसके मुताल्लिक) कोई मुआहदा ले लिया है, जिसमें अल्लाह तआला अपने मुआहदे के ख़िलाफ़ न करेंगे, या अल्लाह तआला के ज़िम्मे ऐसी बात लगाते हो जिसकी कोई इल्मी सनद अपने पास नहीं रखते। (80) क्यों नहीं? जो शख्स जान बूझकर बुरी बातें करता रहे और उसको उसकी ख़ता (और कुसूर इस तरह) घेर ले (कि कहीं नेकी का असर तक न रहे) सो ऐसे लोग दोज़ख़ वाले होते हैं, (और) वे उसमें हमेशा (हमेशा) रहेंगे। (81) और जो लोग (अल्लाह और रसूल पर) ईमान लाएँ और नेक काम करें, ऐसे लोग जन्नत वाले होते हैं (और) वे उसमें हमेशा (हमेशा) रहेंगे। (82) ♦

और (वह ज़माना याद करो) जब लिया हमने (तौरात में) कौल व करार बनी इसराईल से कि इबादत मत करना (किसी की) सिवाय अल्लाह तआला के, और माँ-बाप की अच्छी तरह ख़िदमत गुज़ारी करना और रिश्तेदारों व करीबी लोगों की भी, और यतीम बच्चों की भी और ग़रीब मोहताजों की भी, और आम लोगों से बात भी अच्छी तरह (अच्छे अख़लाक़ से) करना, और पाबन्दी रखना नमाज़ की, और अदा करते रहना ज़कात, फिर तुम (कौल व करार करके) उससे फिर गए सिवाय कुछ के, और तुम्हारी तो मामूली आदत है इकरार करके हट जाना। (83) और (वह ज़माना भी याद करो) जब हमने तुमसे यह कौल व करार (भी) लिया कि आपस में खून मत बहाना और एक-दूसरे को वतन से मत निकालना, फिर तुमने इकरार भी कर लिया और (इकरार भी इशारे में नहीं बल्कि ऐसा

1. यह मामला तहकीकी है कि अगर मोमिन गुनाहगार हो तो अगरचे गुनाहों की वजह से दोज़ख़ में अज़ाब पाए, लेकिन ईमान की वजह से हमेशा दोज़ख़ में न रहेगा। कुछ मुद्त के बाद नजात हो जाएगी।
2. कुफ़ की वजह से कोई नेक अमल मक़बूल नहीं होता, बल्कि अगर कुछ कुफ़ के पहले के आमाल हों तो वे भी बेकार और ज़ाया हो जाते हैं। इस वजह से कुफ़्कार में सब बदी ही बदी होगी, ब-ख़िलाफ़ ईमान वालों के कि अब्बल तो उनका ईमान खुद एक सबसे बड़ा नेक अमल है, दूसरे और आमाल भी उनके आमाल नामे में दर्ज होते हैं, इसलिए वे नेकी के असर से ख़ाली नहीं।

साफ़ जैसे) तुम शहादत देते हो। (84) फिर तुम यह (आँखों के सामने मौजूद ही) हो (कि) क़त्ल व क़िताल भी करते हो और एक-दूसरे को वतन से भी निकालते हो (इस तौर पर कि) उन अपनों के मुकाबले में (उनकी मुख़ालिफ़ कौमों की) इम्दाद करते हो, गुनाह और जुल्म के साथ, और अगर उन लोगों में से कोई गिरफ़्तार होकर तुम तक पहुँच जाता है तो ऐसों को कुछ खर्च कर कराकर रिहा करा देते हो, हालाँकि यह बात (भी मालूम) है कि तुमको उनका वतन से निकाल देना भी मना है।¹ क्या (पस यूँ कहो कि) किताब (तौरात) के बाज़ “यानी कुछ” (अहकाम) पर तुम ईमान रखते हो और बाज़ पर ईमान नहीं रखते, सो और क्या सज़ा हो ऐसे शख्स की जो तुम लोगों में से ऐसी हरकत करे, सिवाय रुस्वाई के दुनियावी ज़िन्दगी में और कियामत के दिन को बड़े सख़्त अज़ाब में डाल दिए जाएँ, और अल्लाह तआला (कुछ) बेख़बर नहीं है तुम्हारे (बुरे) आमाल से। (85) ये वे लोग हैं कि उन्होंने दुनियावी ज़िन्दगी (के लुफ़्, और मज़ों) को ले लिया है आख़िरत (की नजात) के बदले में, सो न तो उनकी सज़ा में (कुछ) कमी की जाएगी और न कोई उनकी तरफ़दारी (पैरवी) करने पाएगा। (86) ♦

और हमने मूसा को किताब (तौरात) दी, और (फिर) उनके बाद एक के बाद एक पैग़म्बरों को भेजते रहे, और फिर हमने ईसा इब्ने मरियम को (नुबुव्वत की) वाज़ेह दलीलें अता फ़रमाई और हमने रूहुल्-क़ुदुस से ताईद दी, क्या जब कभी (भी) कोई पैग़म्बर तुम्हारे पास ऐसे अहकाम लाए जिनको तुम्हारा दिल न चाहता था, (जब ही) तुमने तकब्बुर करना शुरू कर दिया, सो बाज़ों को तो तुमने झूठा बतलाया और बाज़ों को (बे-धड़क) क़त्ल ही कर डालते थे। (87) और वे (यहूदी फ़ख़र के तौर पर) कहते हैं कि हमारे दिल महफूज़ हैं, बल्कि उनके कुफ़्र के सबब उनपर खुदा की मार है, सो बहुत ही थोड़ा-सा ईमान रखते हैं। (88) और जब उनको एक ऐसी किताब पहुँची (यानी कुरआन) जो अल्लाह की तरफ़ से है (और) उसकी (भी) तस्दीक़ करने वाली है जो पहले से उनके पास है, (यानी तौरात) हालाँकि इसके पहले वे (खुद) बयान किया करते थे कुफ़्रार से। फिर जब वह चीज़ आ पहुँची जिसको वे (ख़ूब जानते) पहचानते हैं तो उसका (साफ़) इनकार कर बैठे। सो (बस) खुदा की मार हो ऐसे इनकार करने वालों पर। (89) वह हालत (बहुत ही) बुरी है जिसको इख़्तियार करके वे अपनी जानों को छुड़ाना चाहते हैं, (और वह हालत) यह (है) कि कुफ़्र करते हैं ऐसी चीज़ का जो हक़ तआला ने नाज़िल फ़रमाई, सिर्फ़ (इसी) ज़िद पर कि

1. इस बारे में उनपर तीन हुक्म वाज़िब थे। अब्ल क़त्ल न करना, दूसरे न निकालना, तीसरे अपनी कौम में से किसी को गिरफ़्तार व बन्द देखे तो रुपया खर्च करके छुड़ा देना। सो उन लोगों ने पहले और दूसरे हुक्म को तो जाया कर दिया था और तीसरे की पाबन्दी किया करते थे। जिन मुख़ालिफ़ कौमों कि इम्दाद का ज़िक्र फ़रमाया है, मुराद उन कौमों से औस और खज़रज हैं, कि औस बनू कुरैज़ा की मुवाफ़क़त में बनू नजीर के मुख़ालिफ़ थे और खज़रज बनू नजीर की मुवाफ़क़त में बनू कुरैज़ा के मुख़ालिफ़ थे। गुनाह और जुल्म दो लफ़्ज़ लाने में इशारा हो सकता है कि इसमें दो हक़ जाया होते हैं, अल्लाह का हक़ भी कि हुक्मे इलाही की तामील न की, और बन्दे का हक़ भी कि दूसरे को तकलीफ़ पहुँची।

अल्लाह तआला अपने फ़ज़ल से जिस बन्दे पर उसको मन्ज़ूर हो नाज़िल फ़रमाए, सो वे लोग ग़ज़ब पर ग़ज़ब के हक़दार हो गए, और इन कुफ़्र करने वालों को ऐसी सज़ा होगी जिसमें ज़िल्लत (भी) है।¹ (90) और जब उनसे कहा जाता है कि तुम ईमान लाओ उन (तमाम) किताबों पर जो अल्लाह तआला ने (अनेक पैग़म्बरों पर) नाज़िल फ़रमाई हैं, तो कहते हैं कि हम (तो सिर्फ़) उस (ही) किताब पर ईमान लाएँगे जो हमपर नाज़िल की गई है, (यानी तौरात) और जितनी उसके अलावा हैं उन (सब) का इनकार करते हैं, हालाँकि वे भी हक़ हैं और तस्दीक़ करने वाली भी हैं उसकी जो उनके पास है (यानी तौरात की)। आप कहिए कि (अच्छा तो) फिर क्यों क़त्ल किया करते थे अल्लाह के पैग़म्बरों को इससे पहले के ज़माने में अगर तुम (तौरात पर) ईमान रखने वाले थे। (91) और (हज़रत) मूसा तुम लोगों के पास साफ़-साफ़ दलीलें लाए (मगर) इसपर भी तुम लोगों ने गौसाला को (माबूद) तज़वीज़ कर लिया मूसा (अलैहिस्सलाम) के (तूर पर जाने के) बाद, और तुम सितम ढा रहे थे।² (92) और जब हमने तुम्हारा कौल व करार लिया था और तूर को तुम्हारे (सरो के) ऊपर ला खड़ा किया था, जो कुछ (अहक़ाम) हम तुमको देते हैं हिम्मत (और पुख़्तगी) के साथ लो और सुनो। (उस वक़्त) उन्होंने ज़बान से कह दिया कि हमने सुन लिया और हमसे अमल न होगा, और (वजह इसकी यह है कि) उनके दिलों में वही गौसाला जम गया था, उनके (पहले) कुफ़्र की वजह से। आप फ़रमा दीजिए कि ये आमा़ल बहुत बुरे हैं जिनकी तालीम तुम्हारा ईमान तुमको कर रहा है, अगर तुम ईमान वाले हो। (93) आप कह दीजिए कि अगर (तुम्हारे कहने के मुताबिक़) आलामे आख़िरत सिर्फ़ तुम्हारे लिए ही नफ़ा देने वाला है अल्लाह के पास किसी दूसरे की शिर्क़त के बग़ैर तो तुम (इसकी तस्दीक़ के लिए ज़रा) मौत की तमन्ना कर (के दिखला) दो, अगर तुम सच्चे हो। (94) और वे हरगिज़ कभी उस (मौत) की तमन्ना न करेंगे उन (कुफ़्रिया) आमा़ल (की सज़ा के डर) की वजह से जो अपने हाथों समेटे हैं, और हक़ तआला को ख़ूब इत्तिला है इन ज़ालिमों (के हाल) की। (95) और आप (तो) उनको (दुनियावी) ज़िन्दगी के (आम) लालची आदमियों से भी बढ़कर पाएँगे, और मुशिरकीन से भी इनका एक-एक (शख्स) इस हवस में है कि उसकी उम्र हज़ार साल की हो जाए, और यह चीज़ अज़ाब से तो नहीं बचा सकती कि (किसी की बड़ी) उम्र हो जाए, और हक़ तआला के सब सामने हैं उनके (बुरे) आमा़ल।³ (96) ♦

1. एक ग़ज़ब तो कुफ़्र पर था ही, दूसरा ग़ज़ब उनके हसद पर हो गया। और अज़ाब में “मुहीन” (ज़िल्लत वाले) की कैद से कुफ़्रार को ख़ास करना हो गया, क्योंकि मोमिन गुनाहगार को अज़ाब गुनाहों से पाक करने के लिए होगा।
2. “बय्यिनात” से मुराद वे दलीलें हैं जो इस किस्से से पहले कि उस वक़्त तक तौरात न मिली थी, मूसा अलैहिस्सलाम के सच्चा होने पर कायम हो चुकी थीं, जैसे ‘असा’ (लाठी) और ‘चमकता हुआ हाथ’ और ‘दरिया का फटना’ और इनके अलावा और मोज़िज़े।
3. बावजूद आख़िरत के एतिकाद के लम्बी उम्र की तमन्ना साफ़ दलील है कि यह आख़िरत की नेमतों के हक़दार होने और अपने ख़ास होने का दावा ही दावा है, दिल में ख़ूब समझते हैं कि वहाँ पहुँचकर जहन्नम ही नसीब होना है। इसलिए जब तक बचे रहें तब तक ही सही।

आप (इनसे) यह कहिए कि जो शख्स जिबराईल से दुश्मनी रखे, सो उन्होंने यह कुरआन आपके दिल तक पहुँचा दिया है अल्लाह के हुक्म से, उसकी (खुद) यह हालत है कि तसदीक़ कर रहा है अपने से पहले वाली (आसमानी) किताबों की, और रहनुमाई कर रहा है और खुशख़बरी सुना रहा है ईमान वालों को। (97) जो (कोई) शख्स हक़ तआला का दुश्मन हो और फ़रिश्तों का (हो) और पैग़म्बरों का (हो) और जिबराईल का (हो) और मीकाईल का (हो) तो अल्लाह तआला दुश्मन है ऐसे काफ़िरो का।¹ (98) और हमने तो आपके पास बहुत-सी दलीलें खुली नाज़िल की हैं, और कोई इनकार नहीं किया करता मगर सिर्फ़ वही लोग जो नाफ़रमानी के आदी हैं। (99) क्या और जब कभी भी उन लोगों ने कोई अहद किया होगा (ज़रूर) उसको उनमें से किसी न किसी फ़रीक़ ने नज़र-अन्दाज़ कर दिया होगा, बल्कि उनमें ज़्यादा तो ऐसे ही निकलेंगे जो (मेरे उस अहद का) यकीन ही नहीं रखते। (100) और जब उनके पास एक पैग़म्बर आए अल्लाह की तरफ़ से, जो तसदीक़ भी कर रहे हैं उस किताब की जो उन लोगों के पास है (यानी तौरात की)। इन अहले किताब में के एक फ़रीक़ ने खुद उस अल्लाह की किताब ही को पीठ पीछे डाल दिया है, जैसे उनको गोया बिलकुल इल्म ही नहीं। (101) और उन्होंने ऐसी चीज़ का (यानी जादू का) इत्तिबा किया जिसका चर्चा किया करते थे शयातीन (यानी ख़बीस जिन्न) (हज़रत) सुलैमान (अलैहिस्सलाम) की हुक्म के ज़माने में, और (हज़रत) सुलैमान (अलैहिस्सलाम) ने कुफ़्र नहीं किया,² मगर (हाँ) शयातीन कुफ़्र करते थे, और (हालत यह थी कि) आदमियों को भी (उस) जादू की तालीम किया करते थे, और उस (जादू) की भी जो कि उन दोनों फ़रिश्तों पर नाज़िल किया गया था शहर बाबिल में जिनका नाम हासूत व मासूत था।³ और वे दोनों किसी को न बतलाते जब तक यह (न) कह देते कि हमारा वजूद भी एक इम्तिहान है, सो तू कहीं काफ़िर मत बन जाइयो (कि इसमें फँस जाए) सो (कुछ) लोग उन दोनों से इस किस्म का जादू सीख लेते थे जिसके ज़रिए से (अमल करके) किसी मर्द और उसकी बीवी में जुदाई पैदा कर देते थे। और ये (जादूगर) लोग उसके ज़रिए से किसी को भी नुकसान नहीं पहुँचा सकते थे मगर खुदा ही के (तक़दीरी) हुक्म से। और ऐसी चीज़ें सीख लेते हैं जो (खुद) उनको नुकसान पहुँचाने वाली हैं और उनको नफ़ा देने वाली नहीं हैं। और ज़रूर ये (यहूदी) भी इतना जानते हैं कि जो शख्स इसको इख़्तियार करे ऐसे शख्स का आख़िरत में कोई हिस्सा (बाकी) नहीं। और बेशक़ बुरी है वह चीज़ (यानी जादू व कुफ़्र) जिसमें वे लोग अपनी जान दे रहे हैं। काश उनको (इतनी) अक्ल होती! (102) और अगर वे लोग (बजाय इसके) ईमान और तक्वा (इख़्तियार) करते तो खुदा तआला के यहाँ का मुआवज़ा बेहतर था। काश उनको

1. बाज़े यहूदियों ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से यह सुनकर कि जिबराईल अलैहिस्सलाम वद्व लाते हैं, कहा कि उनसे तो हमारी दुश्मनी है, मशक्कत में डालने वाले अहक़ाम और डरावने वाकिआत उन्हीं के हाथों आया किए हैं। मीकाईल ख़ूब हैं कि बारिश और रहमत उनसे मुताल्लिक़ है। अगर वह वद्व लाया करते तो हम मान लेते। इस आयत में इसी का रद्द है।

2. ये बेवकूफ़ लोग जो हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम की तरफ़ जादू की निस्बत करते थे यहूद हैं, इसलिए अल्लाह तआला ने बीच में उन (सुलैमान अलैहिस्सलाम) का बरी होना भी ज़ाहिर फरमा दिया।

3. इन आयतों के मुताल्लिक़ एक लम्बा-चौड़ा किस्सा ज़ोहरा का मशहूर है जो किसी मोतबर रिवायत से साबित नहीं।

(इतनी) अक्ल होती! (103) ♦

ऐ ईमान वालो! तुम (लफ़ज़) 'राज़िना' मत कहा करो और 'उन्ज़ुरना' कह दिया करो, और (इसको अच्छी तरह) सुन लीजियो, और (इन) काफ़िरों को (तो) दर्दनाक सज़ा (ही) होगी।¹ (104) ज़रा भी पसन्द नहीं करते काफ़िर लोग, (चाहे) उन अहले किताब में से (हों) और (चाहे) मुशिरकीन में से, इस बात को कि तुमको किसी तरह की बेहतरी (भी) नसीब हो तुम्हारे परवर्दिगार की तरफ़ से, हालाँकि अल्लाह तआला अपनी रहमत (व इनायत) के साथ जिसको मन्ज़ूर होता है मख़सूस फ़रमा लेते हैं, और अल्लाह तआला बड़े फज़ल (करने) वाले हैं।² (105) हम किसी आयत का हुक्म जो मौकूफ़ "यानी रोक देते और मुलतवी" कर देते हैं, या उस आयत (ही) को (ज़ेहनों से) भुला देते हैं, तो हम उस आयत से बेहतर या उस आयत ही की मिसल ले आते हैं। (ऐ एतिराज़ करने वाले!) क्या तुझको यह मालूम नहीं कि हक़ तआला हर चीज़ पर कुदरत रखते हैं।³ (106) क्या तुझको यह मालूम नहीं कि हक़ तआला ऐसे हैं कि ख़ास उन्ही की है हुक्मूत आसमानों की और ज़मीन की, और (यह भी समझ रखो कि) तुम्हारा हक़ तआला के सिवा कोई यार व मददगार भी नहीं। (107) हाँ क्या तुम यह चाहते हो कि अपने रसूल से (बेजा-बेजा) दरख्वास्तें करो, जैसा कि इससे पहले मूसा (अलैहिस्सलाम) से भी (ऐसी-ऐसी) दरख्वास्तें की जा चुकी हैं, और जो शख्स बजाय ईमान लाने के कुफ़्र (की बातें) करे, बेशक वह शख्स सीधे रास्ते से दूर जा पड़ा। (108) इन अहले किताब (यानी यहूद) में से बहुत-से दिल से यह चाहते हैं कि तुमको तुम्हारे ईमान लाने के बाद फिर काफ़िर कर डालें, सिर्फ़ हसद की वजह से जो कि खुद उनके दिलों ही से (जोश मारता) है हक़ वाज़ेह होने के बाद। ख़ैर (अब तो) माफ़ करो और दरगुज़र करो, जब तक हक़ तआला (इस मामले के मुताल्लिक) अपना हुक्म (नया क़ानून) भेजे,⁴ अल्लाह तआला हर चीज़ पर कादिर हैं। ▲ (109) और (फ़िलहाल सिर्फ़) नमाज़ें पाबन्दी से पढ़े जाओ और ज़कात दिए जाओ, और जो नेक काम भी अपनी भलाई के वास्ते जमा करते रहोगे हक़ तआला के पास (पहुँचकर) उसको पा लोगे, क्योंकि अल्लाह तआला तुम्हारे सब किए हुए कामों को देखभाल रहे हैं।⁵ (110) और (यहूदी और ईसाई यूँ) कहते हैं कि जन्नत में हरगिज़ कोई न जाने पाएगा सिवाय उन लोगों के जो यहूदी हों या उन लोगों के जो ईसाई हों, यह (ख़ाली) दिल बहलाने की बातें हैं। आप कहिए कि (अच्छा) अपनी दलील लाओ अगर तुम सच्चे

1. कुछ यहूदियों ने एक शरारत ईजाद की कि जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हुज़ूर में आकर "राज़िना" से आपको ख़िताब करते, जिसके मायने उनकी इबरानी ज़बान में बुरे हैं। और वे उसी नीयत से कहते, और अरबी में इसके मायने बहुत अच्छे हैं। और उस अच्छे मायने के इरादे से बाज़े मुसलमान भी हुज़ूर को इस कलमे से ख़िताब करने लगे। इससे उन शरीरों को और गुन्जाइश मिली, हक़ तआला ने उस गुन्जाइश को ख़त्म करने के लिए मुसलमानों को यह हुक्म दिया।
2. बाज़े यहूद बाज़ मुसलमानों से कहने लगे कि जुदा की कसम! हम दिल से तुम्हारा भला चाहने वाले हैं, मगर तुम्हारा दीन हमारे दीन से अच्छा साबित नहीं हुआ। हक़ तआला इस भला चाहने के दावे का झूठा होना इस आयत में बयान फरमाते हैं।
3. यहूद ने क़िबला का हुक्म बदल जाने पर जिसका ज़िक्र आगे जल्द ही आता है, एतिराज़ किया था और मुशिरकीन भी बाज़े हुक्मों के मन्सूख़ हो जाने पर ज़बान-दराज़ी करते थे, हक़ तआला उस ताना मारने और एतिराज़ करने का इस आयत में जवाब देते हैं।
4. इशारे के तौर पर बतला दिया कि उनकी शरारतों का इलाज आम अमन के इन्ज़ामी क़ानून यानी क़िताल व ज़िज़्या (मुस्लिम हुक्मूत में रहने वाले ग़ैर-मुस्लिमों से उनकी जान-माल की हिफ़ाज़त के बदले में लिया जाने वाला टैक्स) से हम जल्दी ही करने वाले हैं।
5. उस वक़्त मौजूदा हालत का तकाज़ा यही था। फिर हक़ तआला ने इस वायदे को पूरा फरमा दिया और जिहाद की आयतें नाज़िल फरमा दीं।

हो। (111) ज़रूर (दूसरे लोग भी जाएँगे) जो कोई शख्स भी अपना रुख अल्लाह तआला की तरफ झुका दे और वह मुख़्तलस भी हो तो ऐसे शख्स को उसका अज़्र मिलता है उसके परवर्दिगार के पास पहुँचकर, और न ऐसे लोगों पर (क़ियामत में) कोई अन्देशा है और न ऐसे लोग (उस दिन) गुमगीन होने वाले हैं।¹ (112) ♦

और यहूद कहने लगे कि ईसाइयों का मज़हब किसी बुनियाद पर कायम नहीं और (इसी तरह) ईसाई कहने लगे कि यहूद किसी बुनियाद पर नहीं, हालाँकि ये सब (लोग आसमानी) किताबें (भी) पढ़ते हैं। इसी तरह ये लोग (भी) जो कि (महज़) बेइल्म हैं उनके जैसे बात कहने लगे। सो अल्लाह उन सबके दरमियान (अमली) फैसला कर देगे क़ियामत के दिन, उन तमाम (मुकद्दमों) में जिनमें वे आपस में इख़िलाफ़ कर रहे थे।² (113) और उस शख्स से ज़्यादा और कौन ज़ालिम होगा जो खुदा तआला की मस्जिदों में उनका ज़िक्र (और इबादत) किए जाने से बन्दिश करे, और उनके वीरान (व बेकार) होने (के बारे) में कोशिश करे, उन लोगों को तो कभी निडर होकर उनमें क़दम भी न रखना चाहिए था (बल्कि जब जाते डर और अदब से जाते)। उन लोगों को दुनिया में भी रुस्वाई (नसीब) होगी और उनको आखिरत में भी बड़ी सज़ा होगी।³ (114) और अल्लाह ही की ममलूक हैं (सब सन्तों) मशिरक़ भी और मगरिब भी, पस तुम लोग जिस तरफ़ मुँह करो (उधर ही) अल्लाह तआला का रुख़ है, क्योंकि अल्लाह तआला (तमाम सन्तों को) घेरे हुए हैं, कामिल इल्म वाले हैं।⁴ (115) और ये लोग कहते हैं कि खुदा तआला औलाद रखता है। सुब्हानल्लाह! (क्या बेकार बात है) बल्कि ख़ास अल्लाह तआला की ममलूक हैं जो कुछ भी आसमानों और ज़मीन में (मौजूद चीज़ें) हैं, (और) सब उनके महकूम (भी) हैं। (116) (हक़ तआला) बनाने वाले हैं आसमानों और ज़मीन के। और जब किसी काम को पूरा करना चाहते हैं तो बस उस काम के बारे में (इतना) फ़रमा देते हैं कि हो जा, पस वह (उसी तरह) हो जाता है।⁵ (117) और (बाज़े) जाहिल यूँ कहते हैं कि (खुद) हमसे क्यों नहीं कलाम फ़रमाते अल्लाह तआला, या हमारे पास कोई और ही दलील आ जाए।⁶ इसी तरह वे (जाहिल) लोग भी कहते चले आए हैं जो इनसे पहले हो गुज़रे हैं, उन्हीं के जैसा (जाहिलाना) कौल, उन सबके दिल (टेढ़ी समझ रखने में) आपस में एक दूसरे के जैसे हैं, हमने तो बहुत-सी दलीलें साफ़-साफ़ बयान कर दी हैं, (मगर वे) उन लोगों के लिए (फ़ायदेमन्द हैं) जो यकीन (हासिल करना) चाहते हैं। (118) हमने आपको एक सच्चा दीन देकर भेजा है कि

1. दलील का हासिल यह हुआ कि जब यह क़ानून मुसल्लम है तो अब सिर्फ़ यह देख लो कि यह मज़मून किस पर फ़िट बैठता है। सो जाहिर है कि किसी पहले हुक्म के मन्सूख़ हो जाने के बाद उसपर चलने वाला किसी तरह फ़रमाँबर्दार नहीं कहा जा सकता। पस यहूदी और ईसाई किसी तरह फ़रमाँबर्दार न हुए।
2. अमली फैसला यह कि अहले हक़ को जन्नत में और अहले बातिल को दोज़ख़ में भेज देंगे। और यह कैद इसलिए लगाई कि कौल से और दलील के ज़रिए फैसला तो हक़ व बातिल के दरमियान अक्ली और नक्ली दलीलों से दुनिया में भी हो चुका है।
3. मस्जिदों में मक्का की मस्जिद, मदीना की मस्जिद, बैतुल मक्दिदस की मस्जिद और सब मस्जिदें आ गई।
4. यहूद ने क़िब्ला के बदलने के हुक्म पर एतिराज़ किया था, उसका जवाब हक़ तआला यह देते हैं कि सब सन्तें अल्लाह तआला की मिल्क में हैं। जब वह मालिक हैं तो जिस सन्त को चाहें क़िब्ला मुक़र्रर कर दें।
5. 'कुन' कहने में दो एहतिमाल हैं, एक यह कि मुराद हो जल्दी हो जाने और जल्दी बना देने से, दूसरे यह कि हकीकत में हक़ तआला की यही आदत हो।
6. यहूद व नसारा (ईसाइयों) को बावजूद अहले किताब व अहले इल्म होने के जाहिल इसलिए कह दिया गया कि यह बात जाहिलों जैसी कही थी कि बावजूद मज़बूत, कतई और बहुत-सी दलीलों के कायम हो चुकने के अभी तक इनकार किए जाते हैं।

खुशख़बरी सुनाते रहिए और डराते रहिए, और आपसे दोज़ख़ में जाने वालों की पूछ-ताछ न होगी! (119) और कभी खुश न होंगे आपसे यहूद और न ईसाई जब तक कि आप (खुदा न करे) उनके मज़हब के (बिल्कुल) पैरवी करने वाले न हो जाएँ। (आप साफ़) कह दीजिए कि (भाई) हकीकत में तो हिदायत का वही रास्ता है जिसको खुदा तआला ने बतलाया है, और अगर आप इत्तिबा करने लगेँ उनके ग़लत ख़्यालात का (अल्लाह की वजह से साबित कतई) इल्म के आ चुकने के बाद तो आपका कोई खुदा से बचाने वाला न यार निकले न मददगार। (120) जिन लोगों को हमने किताब (तौरात व इन्ज़ील) दी, शर्त यह है कि वे उसकी तिलावत (उस तरह) करते रहे जिस तरह कि तिलावत का हक़ है। ऐसे लोग उसपर ईमान ले आते हैं, और जो शख्स न मानेगा (किसका नुक़सान करेगा) खुद ही ऐसे लोग घाटे में रहेंगे। (121) ♦

ऐ याक़ूब की औलाद! मेरी उन नेमतों को याद करो जिनका मैंने तुमपर (वक़्त-वक़्त पर) इनाम किया, और इसको (भी) कि मैंने तुमको बहुत-से लोगों पर फ़ौकियत “यानी रुतबा और बढ़ाई” दी। (122) और तुम डरो ऐसे दिन से जिसमें कोई शख्स किसी शख्स की तरफ़ से न कोई मुतालबा (वाजिब हक़) अदा करने पाएगा और न किसी की तरफ़ से कोई मुआवज़ा कबूल किया जाएगा, और न किसी को कोई सिफ़ारिश (जबकि ईमान न हो) मुफ़ीद होगी, और न उन लोगों को कोई बचा सकेगा। (123) और जिस वक़्त इम्तिहान किया (हज़रत) इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) का उनके परवर्दिगार ने चन्द बातों में, और वह उनको पूरे तौर से बजा लाए, (उस वक़्त) हक़ तआला ने (उनसे) फ़रमाया कि मैं तुमको लोगों का मुक़्तदा “यानी रहनुमा और ऐसा शख्स जिसकी पैरवी की जाए” बनाऊँगा। उन्होंने अर्ज किया: और मेरी औलाद में से भी किसी-किसी को (नुबुव्वत दीजिए) इश्राद हुआ कि मेरा (यह नुबुव्वत का) औहदा ख़िलाफ़-वर्ज़ी करने वालों को न मिलेगा। (124) और (वह वक़्त भी ज़िक्र करने के काबिल है) जिस वक़्त हमने काबा शरीफ़ को लोगों के इबादत की जगह और अमन (की जगह) मुक़र्रर किया।¹ और मक़ामे इब्राहीम को (कभी-कभी) नमाज़ पढ़ने की जगह बना लिया करो।² और हमने (हज़रत) इब्राहीम और (हज़रत) इसमाईल (अलैहिमस्सलाम) की तरफ़ हुक्म भेजा कि मेरे (इस) घर को ख़ूब पाक-साफ़ रखा करो, बाहर से आने वालों और मक़ामी लोगों (की इबादत) के वास्ते, और रुकू और सज्दे करने वालों के वास्ते। (125) और जिस वक़्त इब्राहीम

1. यहाँ तक यहूद की चालीस क़बाहतेँ “यानी ख़राबियाँ और बुराइयाँ” जिनमें से कुछ में ईसाई भी शरीक हैं, बयान फ़रमाई गई। आगे यह बतलाना मक़सूद है कि ऐसे हठ-धर्म लोगों से ईमान की उम्मीद न रखनी चाहिए। और इसमें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के गुम व फ़िक्र को दूर करना है, कि आप उनके आ़म तौर पर ईमान लाने से मायूस हो जाइए और परेशानी और कुल्फ़त दिल से दूर कीजिए। और इसके अलावा आगे उनकी एक और बुराई का भी बयान है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैरवी करने की तो उनको क्या तौफ़ीक़ होती वे तो यहाँ तक सोचते हैं कि ‘अल्लाह की पनाह’ आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अपनी राह पर चलाने की नामुम्किन फ़िक्र में हैं।

2. अमन का मक़ाम दो वजह से फ़रमाया, एक तो यह कि इसमें हज व उमर: और नमाज़ व तवाफ़ करने से दोज़ख़ के अज़ाब से अमन होता है, दूसरे इस वजह से कि अगर कोई ख़ूनी काबा की हदों में जिसको “हरम” कहते हैं, जा घुसे तो वहाँ उसे मौत की सज़ा न देगे।

3. मक़ामे इब्राहीम एक ख़ास पत्थर का नाम है जिसपर खड़े होकर आपने काबा की इमारत बनाई। वह काबा के पास एक महफूज़ जगह रखा है और वहाँ नफ़िलें पढ़ना सवाब है।

(अलैहिस्सलाम) ने (दुआ में) अर्ज़ किया कि ऐ मेरे परवर्दिगार! इसको एक (आबाद) शहर बना दीजिए¹ अमन (व अमान) वाला, और इसके बसने वालों को फलों से भी इनायत कीजिए, उनको (कहता हूँ) जो कि उनमें से अल्लाह तआला पर और कियामत के दिन पर ईमान रखते हों।² हक़ तआला ने इर्शाद फरमाया और उस शख्स को भी जो कि काफिर रहे, सो ऐसे शख्स को थोड़े दिन तो ख़ूब आराम बरताऊँगा फिर उसे खींचते हुए दोज़ख के अज़ाब में पहुँचाऊँगा, और वह पहुँचने की जगह तो बहुत बुरी है। (126) और जबकि उठा रहे थे इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ख़ाना-काबा की दीवारें और इसमाईल भी,³ (और यह कहते जाते थे) ऐ हमारे परवर्दिगार! (यह ख़िदमत) हमसे कबूल फरमाइए बिला शुब्हा आप ख़ूब सुनने वाले जानने वाले हैं। (127) ऐ हमारे परवर्दिगार! हमको अपना और ज़्यादा फरमाँबर्दार बना लीजिए और हमारी औलाद में से भी एक ऐसी जमाअत (पैदा) कीजिए जो आपकी इताअत करने वाली हो, और (तथा) हमको हमारे हज (वगैरह) के अहक़ाम भी बतला दीजिए और हमारे हाल पर तवज्जोह रखिए, (और) हकीकत में आप ही हैं तवज्जोह फरमाने वाले, मेहरबानी करने वाले। (128) ऐ हमारे परवर्दिगार! और उस जमाअत के अन्दर उन्हीं में से एक ऐसे पैगम्बर भी मुकर्रर कीजिए जो उन लोगों को आपकी आयतें पढ़-पढ़कर सुनाया करें, और उनको (आसमानी) किताब की और अक्ल व समझ की तालीम दिया करें और उनको पाक कर दें। बेशक आप ही हैं ग़ालिब कुदरत वाले, कामिल इन्तिज़ाम वाले।⁴ (129) ♦

और मिलते इब्राहीमी से तो वही मुँह फेरेगा जो अपनी ज़ात ही से अहमक हो, और हमने उन (इब्राहीम अलै.) को दुनिया में चुना और (इसी की बदौलत) वह आख़िरत में बड़े लायक लोगों में शुमार किए जाते हैं। (130) जबकि उनसे उनके परवर्दिगार ने फरमाया कि तुम इताअत इख़्तियार करो, उन्होंने अर्ज़ किया कि मैंने इताअत इख़्तियार की रब्बुल-आलमीन की। (131) और इसी का हुक्म कर गए हैं इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) अपने बेटों को और (इसी तरह) याकूब (अलैहिस्सलाम) भी, मेरे बेटो! अल्लाह ने इस दीन (इस्लाम) को तुम्हारे लिए मुन्तख़ब फरमाया है, सो तुम सिवाय इस्लाम के और किसी हालत पर जान मत देना। (132) क्या तुम खुद (उस वक़्त) मौजूद थे जिस वक़्त याकूब (अलैहिस्सलाम) का आख़िरी वक़्त आया, (और) जिस वक़्त उन्होंने अपने बेटों से पूछा कि तुम लोग मेरे (मरने के) बाद किस चीज़ की परस्तिश “यानी पूजा और इबादत” करोगे। उन्होंने (मुत्तफ़िक़ होकर) जवाब दिया कि हम उसकी इबादत करेंगे जिसकी आप और आपके बुजुर्ग (हज़रात) इब्राहीम व इसमाईल व इसहाक़ इबादत करते आए हैं, यानी वही माबूद जो अकेला है जिसका कोई शरीक नहीं है, और हम उसी की इताअत पर (कायम) रहेंगे। (133) यह (उन बुजुर्गों की) एक जमाअत थी जो गुज़र चुकी, उनके काम उनका किया हुआ आयेगा

1. शहर होने की दुआ इस वास्ते की थी कि उस वक़्त यह जगह बिल्कुल जंगल थी, फिर अल्लाह तआला ने उसको शहर कर दिया।
2. इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने जो काफ़िरों के लिए रिज़्क की दुआ नहीं माँगी, ग़ालिबन् इसकी वजह यह हुई कि पहली दुआ के जवाब में हक़ तआला ने ज़ालिमों को एक नेमत की सलाहियत से ख़ारिज फरमा दिया था, इसलिए अदब की वजह से इस दुआ में उनको शामिल नहीं किया कि कहीं अल्लाह की मर्ज़ी के खिलाफ़ हो।
3. हज़रत इसमाईल अलैहिस्सलाम का शरीक होना दो तरह हो सकता है, या तो पत्थर-गारा देते होंगे या किसी वक़्त चुनाई भी करते होंगे।
4. जिस जमाअत का इस आयत में ज़िक्र है वे सिर्फ़ इसमाईल अलैहिस्सलाम की औलाद हैं, जिनमें जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भेजे गए। क्योंकि यह दुआ दोनों हज़रात ने की है, तो वही जमाअत मुराद हो सकती है जो दोनों की औलाद हो, और पैगम्बर के ज़िक्र में कहा गया है कि वे इस जमाअत से हों तो वह जमाअत इसमाईल की औलाद हुई और पैगम्बर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हुए जो कि इसमाईल अलैहिस्सलाम की औलाद में से हैं। इसी लिए सही हदीस में नबी करीम का इर्शाद है कि मैं अपने बाप इब्राहीम अलैहिस्सलाम की दुआ का जुहर हूँ।

और तुम्हारे काम तुम्हारा किया हुआ आयेगा, और तुमसे उनके किए हुए की पूछ भी तो न होगी। (134) और ये (यहूदी व ईसाई) लोग कहते हैं कि तुम लोग यहूदी हो जाओ या ईसाई हो जाओ, तुम भी राह पर पड़ जाओगे। आप कह दीजिए कि हम तो मिलते इब्राहीम (यानी इस्लाम) पर रहेंगे, जिसमें टेढ़ का नाम नहीं, और इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) मुशिरक भी न थे।¹ (135) (मुसलमानो!) कह दो कि हम ईमान रखते हैं अल्लाह पर और उस (हुक्म) पर जो हमारे पास भेजा गया और उसपर भी जो (हज़रत) इब्राहीम और (हज़रत) इसमाईल और (हज़रत) इसहाक और (हज़रत) याकूब (अलैहिमुस्सलाम) और याकूब की औलाद की तरफ़ भेजा गया, और उस (हुक्म व मोजिज़े) पर भी जो (हज़रत) ईसा को दिया गया, और उसपर भी जो कुछ और नबियों (अलैहिमुस्सलाम) को दिया गया उनके परवर्दिगार की तरफ़ से, इस कैफ़ियत से कि हम उन (हज़रत) में से किसी एक में भी तफ़रीक़ नहीं करते, और हम तो अल्लाह तआला के फ़रमाँबर्दार हैं।² (136) सो अगर वे भी इसी तरीक़े से ईमान ले आएँ जिस तरीक़े से तुम (मुसलमान) ईमान लाए हो, तब तो वे भी (हक़) रास्ते पर लग जाएँगे, और अगर वे रूग़दानी करें तो वे लोग तो (हमेशा से) मुख़ालफ़त पर कमर बाँधे हुए हैं ही, तो (समझ लो कि) तुम्हारी तरफ़ से जल्द ही निमट लेंगे अल्लाह तआला, और अल्लाह तआला सुनते हैं, (और) जानते हैं। (137) हम (दीन की) उस हालत पर हैं जिसमें (हमको) अल्लाह तआला ने रंग दिया है, और (दूसरा) कौन है जिसके रंग देने की हालत अल्लाह तआला से ज़्यादा अच्छी हो, और (इसी लिए) हम उसी की गुलामी इख़्तियार किए हुए हैं। (138) आप फ़रमा दीजिए कि क्या तुम लोग हमसे (अब भी) हुज्जत किए जाते हो अल्लाह तआला के बारे में, हालाँकि वह हमारा और तुम्हारा (सबका) रब है, और हमको हमारा किया हुआ मिलेगा और तुमको तुम्हारा किया हुआ मिलेगा, और हमने सिर्फ़ हक़ तआला के लिए अपने (दीन) को (शिरक़ वग़ैरह) से ख़ालिस कर रखा है। (139) या कहे जाते हो कि इब्राहीम और इसमाईल और इसहाक और याकूब और याकूब की औलाद (में जो नबी गुज़रे हैं, ये सब हज़रत) यहूदी या ईसाई थे। (ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)! कह दीजिए कि तुम ज़्यादा वाकिफ़ हो या हक़ तआला, और ऐसे शख़्स से ज़्यादा ज़ालिम कौन होगा जो ऐसी गवाही को छुपाए जो उसके पास अल्लाह की जानिब से पहुँची हो, और अल्लाह तुम्हारे किए हुए से बेख़बर नहीं हैं।³ (140) यह (उन बुजुर्गों की) एक जमाअत थी जो गुज़र गई, उनके काम उनका किया हुआ आएगा और तुम्हारे काम तुम्हारा किया हुआ आएगा, और तुमसे उनके किए हुए की पूछ भी तो न होगी।⁴ (141) ♦

1. 'मिलते इब्राहीम' एक लक़ब है 'शरीअते मुहम्मदिया' का। सो यह कहना कि हम मिलते इब्राहीम पर रहेंगे, या यह कहना कि तुम मिलते इब्राहीम की इत्तिबा करो, इसका मतलब यही है कि हम शरीअते मुहम्मदिया पर रहेंगे और तुम शरीअते मुहम्मदिया की इत्तिबा करो।
2. हुक्म में सहीफ़े और किताबें सब दाख़िल हैं। मज़मून का हासिल यह हुआ कि देखो हमारा दीन कैसा इन्साफ़ और हक़ का है कि सब नबियों को मानते हैं, सब किताबों को सच्चा जानते हैं, सबके मोजिज़ों को हक़ पहचानते हैं। अगरचे ज़्यादातर अहक़ाम के रद्द हो जाने की वजह से दूसरी मुस्तक़िल शरीअत यानी शरीअते मुहम्मदिया पर अमल करते हैं लेकिन इनकार और झुठलाना किसी का नहीं करते।
3. पस जब ये हज़रत यहूद व ईसाई न थे तो तुम दीन के तरीक़े में उनके मुवाफ़िक़ कब हुए? फिर तुम्हारा हक़ पर होना भी साबित न होगा।
4. और जब ख़ाली तज़क़िरा भी न होगा तो उससे तुमको कोई नफ़ा नहीं पहुँच सकता। इससे साबित हुआ कि किसी बुजुर्ग से ख़ाली किसी निस्बत और ताल्लुक़ का होना आख़िरत की नजात के लिए काफ़ी नहीं हो सकता।

दूसरा पार: स-यकूल

सूर: ब-कर: (आयत 142 से 252)

अब तो (ये) बेवकूफ लोग ज़रूर कहेंगे ही, कि उन (मुसलमानों) को उनके (पहली सन्त वाले) किब्ला से (कि बैतुल मक्दिस था) जिस तरफ पहले मुतवज्जह हुआ करते थे, किस (बात) ने बदल दिया। आप फरमा दीजिए कि सब पूरब और पश्चिम अल्लाह ही की मिल्क हैं।¹ जिसको खुदा ही चाहें (यह) सीधा रास्ता बतला देते हैं।² (142) और हमने तुमको ऐसी ही एक जमाअत बना दी है जो (हर पहलू से) दरमियानी राह पर है, ताकि तुम (मुख़ालिफ़) लोगों के मुकाबले में गवाह हो, और तुम्हारे लिए (अल्लाह के) रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) गवाह हों।³ और जिस (सन्त) किब्ला पर आप रह चुके हैं (यानी बैतुल मक्दिस) वह तो सिर्फ़ इसलिए था कि हमको मालूम हो जाए कि कौन तो (अल्लाह के) रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की पैरवी इख़्तियार करता है और कौन पीछे को हटता जाता है। और यह (किब्ला का बदलना बेराह और नाफ़रमान लोगों पर) बड़ा भारी है, (हाँ) मगर जिन लोगों को अल्लाह तआला ने हिदायत फ़रमाई है। और अल्लाह तआला ऐसे नहीं हैं कि तुम्हारे ईमान को जाया (और नाकिस) कर दें, (और) वाकई अल्लाह तआला तो (ऐसे) लोगों पर बहुत ही शफ़ीक़ (और) मेहरबान हैं।⁴ (143) हम आपके मुँह का (यह) बार-बार आसमान की तरफ़ उठना देख रहे हैं, इसलिए हम आपको उसी किब्ला की तरफ़ मुतवज्जह कर देंगे जिसके लिए आपकी मर्ज़ी है, (लो) फिर अपना चेहरा (नमाज़ में) मस्जिदे हराम (काबा) की तरफ़ किया कीजिए, और तुम सब लोग जहाँ कहीं भी मौजूद हो अपने चेहरों को उसी (मस्जिदे हराम) की तरफ़ किया करो, और ये अहले किताब भी यकीनन जानते हैं कि यह (हुक्म) बिल्कुल ठीक है, (और) उनके परवर्दिगार ही की तरफ़ से (है) और अल्लाह तआला उनकी कार्रवाइयों से बेख़बर नहीं हैं।⁵ (144) और अगर आप (इन) अहले किताब के सामने तमाम (दुनिया भर की) दलीलें पेश कर दें जब भी यह (कभी) आपके किब्ला को कबूल न करें, और आप भी उनके किब्ला को कबूल नहीं कर सकते, (फिर मुवाफ़क़त की क्या सूरत) और उनका कोई (फरीक़) भी दूसरे (फरीक़) के किब्ला को कबूल नहीं करता। और अगर आप उनके (उन) नफ़्सानी ख़्यालात को इख़्तियार कर लें (और वे भी) आपके पास इल्म (वह्य) आने के बाद तो यकीनन आप (अल्लाह अपनी पनाह में रखे) ज़ालिमों में शुमार होने लगें।⁶ (145) जिन लोगों को हमने किताब (तौरात व इन्जील) दी है वे लोग इन (रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को ऐसा पहचानते हैं जैसा कि अपने बेटों को पहचानते हैं, और बाज़े उनमें से हक़ को इसके बावजूद कि ख़ूब जानते हैं, (मगर) छुपाते हैं।⁷ (146) (हालाँकि) यह हक़ बात अल्लाह की जानिब से (साबित हो

1. खुदा तआला को मालिकाना इख़्तियार है, जिस सन्त (दिशा) को चाहें किब्ला मुक़र्रर फ़रमा दें, किसी को वजह दरियाफ़्त करने का हक़ नहीं।

2. जिस चीज़ को इस मक़ाम पर सीधा रास्ता कहा गया है हकीक़त में सलामती और अमन उसी तरीके में है।

3. यानी तुम एक बड़े मुक़द्दमे में जिसमें एक फरीक़ हज़रते अम्बिया अलैहिमुस्सलाम होंगे और दूसरा फरीक़ उनकी मुख़ालिफ़ कौमें होंगी, उन मुख़ालिफ़ लोगों के मुकाबले में गवाह तजवीज़ हो, और इज़्ज़त पर इज़्ज़त यह है कि तुम्हारे गवाही के काबिल और मोतबर होने के लिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम गवाह हों।

4. किब्ला की तब्दीली पर एतिराज़ का हाकिमाना जवाब देकर अब हकीमाना जवाब शुरू होता है जिसमें कई हिक्मतों की तरफ़ इशारा है।

5. इस आयत से बैतुल मक्दिस का मन्सूख़ करना और काबा को किब्ला मुक़र्रर करना मन्ज़ूर है। हासिल हिक्मत का यह है कि हमको आपकी खुशी मन्ज़ूर थी और आपकी खुशी काबा के किब्ला मुक़र्रर होने में देखी, (शेष तफ़सीर पृष्ठ 42 पर)

चुकी) है, सो हरगिज़ शक व शुब्हा लाने वालों में शुमार न होना। (147) ♦

और हर शख्स (मज़हब वाले) के वास्ते एक-एक किब्ला रहा है जिसकी तरफ वह (इबादत में) मुँह करता रहा है, सो तुम नेक कामों में दौड़-धूप करो चाहे तुम कहीं होगे (लेकिन) अल्लाह तआला तुम सबको हाज़िर कर देंगे। यकीनन अल्लाह तआला हर मामले पर पूरी कुदरत रखते हैं। (148) और जिस जगह से भी (कहीं सफ़र में) आंफ बाहर जाएँ तो (भी) अपना चेहरा (नमाज़ में) मस्जिदे हराम (यानी काबा) की तरफ रखा कीजिए, और यह (हुक्म आम किब्ला का) बिलकुल हक है (और) अल्लाह की जानिब से (है) और अल्लाह तआला तुम्हारे किए हुए कामों से हरगिज़ बेख़बर नहीं। (149) और (फिर कहा जाता है कि) आप जिस जगह से भी (सफ़र में) बाहर जाएँ अपना चेहरा मस्जिदे हराम की तरफ रखिए और तुम लोग जहाँ कहीं (मौजूद) हो अपना चेहरा उसी की तरफ रखा करो, ताकि (इन मुख़ालिफ़) लोगों को तुम्हारे मुक़ाबले में गुफ़्तगू (की मजाल) न रहे, मगर उनमें जो (बिलकुल ही) बेइन्साफ़ हैं, तो ऐसे लोगों से (हरगिज़) अन्देशा न करो, और मुझसे डरते रहो, और ताकि तुमपर जो (कुछ) मेरा इनाम है मैं उसकी तक्मील कर दूँ, और ताकि (दुनिया में) तुम हक़ रास्ते पर रहो।¹ (150) जिस तरह तुम लोगों में हमने एक (अज़ीमुश्शान) रसूल भेजा, तुम ही में से, जो हमारी आयतें (और अहक़ाम) पढ़-पढ़कर तुमको सुनाते हैं और (जहालत से) तुम्हारी सफ़ाई करते रहते हैं और तुमको (अल्लाह की) किताब और समझ की बातें बतलाते रहते हैं। और तुमको ऐसी (मुफ़ीद) बातें तालीम करते रहते हैं जिनकी तुमको ख़बर भी न थी।² (151) तो (इन नेमतों पर) मुझको याद करो मैं तुमको (इनायत से) याद रखूँगा और मेरी (नेमत की) शुक्र गुज़ारी करो, और मेरी नाशुक्री मत करो। (152) ♦

ऐ ईमान वालो! सब्र और नमाज़ से सहारा हासिल करो, बेशक अल्लाह सब्र करने वालों के साथ (रहते) हैं। (और नमाज़ पढ़ने वालों के साथ तो और भी ज्यादा)³ (153) और जो लोग अल्लाह की राह में क़त्ल किए जाते हैं उनके बारे में (यूँ भी) मत कहो कि वे (मामूली मुर्दों की तरह) मुर्दे हैं, बल्कि वे तो (एक खास ज़िन्दगी के साथ) ज़िन्दा हैं, लेकिन तुम (इन हवास से उस ज़िन्दगी का) एहसास नहीं कर सकते।⁴ (154) और (देखो) हम तुम्हारा इम्तिहान करेंगे किसी क़द्र ख़ौफ़ से, और फ़ाके से, और माल और जान और फलों की कमी से, और आप ऐसे सब्र करने वालों को खुशख़बरी सुना दीजिए (155) (जिनकी यह आदत है) कि उनपर जब कोई मुसीबत पड़ती है तो वे

(पृष्ठ 40 का शेष) इसलिए उसी को किब्ला मुक़र्रर कर दिया। रहा यह कि आपकी खुशी इसमें क्यों थी, वजह इसकी यह मालूम होती है कि आपकी नुबुव्वत की निशानियों में से एक निशानी यह भी थी कि आपके किब्ला की यह सन्त होगी। अल्लाह तआला ने आपके नूरानी दिल में उसी के मुवाफ़िक़ तमन्ना पैदा कर दी।

6. आपका ज़ालिम होना मासूम (यानी ख़ता व गुनाहों से महफूज़ होने की वजह से) मुहाल है, इसलिए यह बात कि: आप उनके ख़ालात को जिनमें से एक उनका किब्ला भी है, कबूल कर लें मुहाल है।

7. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पहचानने को जो बेटों के पहचानने के मानिन्द बताया है तो तश्बीह यानी मिसाल देने में बेटे के बेटा होने का लिहाज़ नहीं है बल्कि बेटे की सूरत का लिहाज़ किया गया है।

1. किब्ला की बहस के शुरू और आखिर के इत्तिहाद में इशारा है कि काबा का इन नबी की शरीअत में किब्ला मुक़र्रर होना कोई ताज्जुब की बात नहीं, क्योंकि काबा इब्राहीम अलैहिस्सलाम का तामीर किया हुआ है और यह नबी इब्राहीम अलैहिस्सलाम की औलाद में से हैं, और इस इमारत के कबूल होने की और इस "बेटे" के रसूल होने की उन्होंने दुआ भी की थी, हमने उनकी दोनों दुआएँ कबूल कर लीं।

2. ऊपर की आयतों में हक़ तआला की बड़ी-बड़ी नेमतों का ज़िक्र था, इसलिए अगली आयत में नेमत देने वाले (यानी अल्लाह पाक) के ज़िक्र और उनकी नेमत के शुक्र का हुक्म फ़रमाकर ज़िक्र की हुई आयतों के मज़मून को उम्दा तरीक़े से मुकम्मल फ़रमाते हैं।

3. जब सब्र में यह वायदा है तो नामज़ जो उससे बढ़कर है उसमें तो और ज्यादा यह खुशख़बरी होगी। (शेष तफ़सीर पृष्ठ 44 पर)

कहते हैं कि हम तो (मय माल व औलाद हकीकत में) अल्लाह तआला ही की मिल्क हैं, और हम सब (दुनिया से) अल्लाह तआला के पास जाने वाले हैं। (156) उन लोगों पर (अलग-अलग) खास-खास रहमतें भी उनके रब की तरफ से होंगी, और (सबपर मुश्तरका) आम रहमत भी होगी, और यही लोग हैं जिनकी (असल हकीकत तक) पहुँच हो गई। (157) यह बात तहकीकी है कि सफा और मर्वा अल्लाह (के दीन) की यादगारों में से हैं, इसलिए जो शख्स हज करे (अल्लाह के) घर का, या (उसका) उमरः करे, उसपर ज़रा भी गुनाह नहीं उन दोनों के दरमियान आना-जाना करने में (जिसका नाम “सई” है) और जो शख्स खुशी से कोई ख़ैर की बात करे तो हक़ तआला (उसकी बड़ी) क़दर-दानी करते हैं, (और उसकी नीयत को) ख़ूब जानते हैं। (158) जो लोग छुपाते हैं उन मज़ामीन को जिनको हमने नाज़िल किया है, जो कि (अपनी ज़ात में) वाज़ेह हैं और (दूसरों को) हिदायत देने वाले हैं बाद इसके कि हम उनको (अल्लाह की) किताब (तौरात व इन्जील) में आम लोगों पर ज़ाहिर कर चुके हैं, ऐसे लोगों पर अल्लाह तआला भी लानत फ़रमाते हैं और (दूसरे बहुत-से) लानत करने वाले भी उनपर लानत भेजते हैं। (159) मगर जो लोग तौबा कर लें और सुधार कर लें और (उन मज़ामीन को) ज़ाहिर कर दें तो ऐसे लोगों पर मैं मुतवज्जह हो जाता हूँ, और मेरी तो आदत ही है तौबा कबूल कर लेना और मेहरबानी फ़रमाना। (160) अलबत्ता जो लोग (उनमें से) इस्लाम न लाएँ और इसी ग़ैर-इस्लामी हालत पर मर जाएँ, ऐसे लोगों पर (वह) लानत (जिसका ज़िक्र हुआ) अल्लाह की और फ़रिश्तों की और आदमियों की भी सबकी (161) (ऐसे तौर पर बरसा करेगी कि) वे हमेशा-हमेशा उसी (लानत) में रहेंगे। उनसे अज़ाब हल्का न होने पाएगा और न (दाख़िल होने से पहले) उनको मोहलत दी जाएगी। (162) और (ऐसा माबूद) जो तुम सबके माबूद बनने का मुस्तहिक़ “यानी हक़दार” है, वह तो एक ही (हकीकी) माबूद है, उसके सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं, (वही) रहमान है और रहीम है। (163) ♦

बेशक आसमानों और ज़मीन के बनाने में और एक के बाद एक रात और दिन के आने में और जहाज़ों में जो कि समुद्रों में चलते हैं, आदमियों के नफे की चीज़ें (और असबाब) लेकर और (बारिश के) पानी में जिसको अल्लाह ने आसमान से बरसाया, फिर उससे ज़मीन को तरोताज़ा किया उसके सूख जाने के बाद, और हर किस्म के जानदार उसमें फैला दिए, और हवाओं के बदलने में, और बादल में जो ज़मीन व आसमान के दरमियान मुक़ैयद (और लटका हुआ) रहता है, (तौहीद की) दलीलें (मौजूद) हैं उन लोगों के लिए जो अक्ल (सही सलामत) रखते हैं। (164) और एक आदमी वह (भी) है जो खुदा तआला के अलावा औरों को भी (खुदाई में) शरीक़ करार देते हैं, उनसे ऐसी

(पृष्ठ 42 का शेष) 4. ऐसे क़त्ल किए गए शख्स को शहीद कहते हैं, और उसके मुताल्लिक अगरचे यह कहना कि वह मर गया सही और जायज़ है लेकिन उसकी मौत को दूसरे मर्दों के जैसी मौत समझने की मनाही की गई है।

1. यह ख़िताब सारी उम्मत को है, तो सबको समझ लेना चाहिए कि दुनिया मुसीबतों और परेशानियों का घर है, यहाँ के हादसों को अजीब और बर्द न समझना चाहिए।

2. हज, उमरः और सई का तरीका मसाइल की किताबों में बयान किया गया है, और सई इमाम अहमद रहमतुल्लाहि अलैहि के नज़दीक सुन्नते मुस्तहिबा है, और इमाम मालिक रहमतुल्लाहि अलैहि व इमाम शाफ़ई रहमतुल्लाहि अलैहि के नज़दीक फ़र्ज़ है, और इमाम अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाहि अलैहि के नज़दीक वाजिब है, कि उसके छोड़ने से एक बकरी जिब्ब करनी पड़ती है।

3. इस आयत में हक़ के छुपाने पर जो वर्द (डॉट-डपट और सज़ा की धमकी) ज़िक्र हुई, हर चन्द कि हर हक़ मामले के बारे में लफ़्ज़ों के एतिबार से आम है, लेकिन जुमला “यअरिफून्हु कमा यअरिफून् अब्ना-अहुम्” के करीने से मक़ाम के ख़ास होने के सबब ज़्यादा मक़सूद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की रिसालत का मसला है, पस इस लिहाज़ से इस आयत में रिसालत के मसले को साबित करना हुआ, चूँकि तौहीद व रिसालत का एतिकाद दोनों शरीअत में जुड़े हुए हैं, इसलिए अगली आयत में तौहीद के मसले की तक्रीर फ़रमाई जाती है।

4. अरब के मुश्रिक लोगों ने जो आयत “इलाहुकुम् इलाहुन् वाहिदुन्” (यानी ऐसा माबूद जो तुम सबके माबूद (शेष तफ़सीर पृष्ठ 46 पर)

मुहब्बत रखते हैं जैसी मुहब्बत अल्लाह से (रखना ज़रूरी) है, और जो मोमिन हैं उनको अल्लाह तआला के साथ कवी मुहब्बत है,¹ और क्या खूब होता अगर ये ज़ालिम (मुशिरकीन) जब (दुनिया में) किसी मुसीबत को देखते तो (उसके पेश आने में गौर करके) समझ लिया करते कि सब कुव्वत हक़ तआला ही को है, और यह (समझ लिया करते) कि अल्लाह तआला का अज़ाब (आखिरत में और भी) सख़्त होगा!² (165) जबकि वे लोग जिनके कहने पर दूसरे चलते थे उन लोगों से साफ़ अलग हो जाएँगे जो उनके कहने पर चलते थे, और सब अज़ाब को देख लेंगे, और आपस में उनमें जो ताल्लुकात थे उस वक़्त सब टूट जाएँगे। (166) और (जब) ये पैरोकार लोग यूँ कहने लगेंगे कि किसी तरह हम सबको ज़रा एक दफ़ा (दुनिया में) जाना मिल जाए तो हम भी उनसे साफ़ अलग हो जाएँ, जैसा कि ये हमसे (इस वक़्त) साफ़ अलग हो बैठे, अल्लाह तआला यूँ ही उनकी बद-आमालियों को ख़ाली अरमान करके उनको दिखला देंगे, और उनको दोज़ख़ से निकलना भी नसीब न होगा!³ (167) ♦

ऐ लोगो! जो चीज़ें ज़मीन में मौजूद हैं उनमें से (शरई) हलाल पाक चीज़ों को खाओ (बरतो) और शैतान के कदम से कदम मिलाकर मत चलो, हकीकत में वह तुम्हारा खुला दुश्मन है। (168) वह तो तुमको उन्हीं बातों की तालीम करेगा जो कि (शरई तौर पर) बुरी और गन्दी हैं, और यह (भी तालीम करेगा) कि अल्लाह तआला के ज़िम्मे वे बातें लगाओ जिसकी तुम सनद भी नहीं रखते। (169) और जब कोई उन (मुशिरक) लोगों से कहता है कि अल्लाह तआला ने जो हुक्म भेजा है उसपर चलो, तो कहते हैं (नहीं) बल्कि हम तो उसी (तरीके) पर चलेंगे जिसपर हमने अपने बाप-दादा को पाया है। क्या अगरचे उनके बाप-दादा (दीन की) न कुछ समझ रखते हों और न (किसी आसमानी किताब की) हिदायत रखते हों!⁴ (170) और इन काफ़िरों की कैफ़ियत (ना-समझी में) उस (जानवर की) कैफ़ियत के जैसी है कि एक शख्स है, वह ऐसे (जानवर) के पीछे चिल्ला रहा है जो सिवाय बुलाने और पुकारने के कोई ब्रात नहीं सुनता। (इसी तरह ये कुपफ़ार) बहरे हैं, गूँगे हैं, अन्धे हैं, इसलिए समझते कुछ नहीं। (171) ऐ ईमान वालो! जो (शरीअत की रू से) पाक चीज़ें हमने तुमको इनायत फ़रमाई हैं, उनमें से (जो चाहो) खाओ (बरतो) और हक़ तआला की शुक्र गुज़ारी करो, अगर तुम ख़ास उनके साथ गुलामी (का ताल्लुक) रखते हो। (172) अल्लाह तआला ने तो तुमपर सिर्फ़ हराम किया है मुर्दार को, और खून को (जो बहता हो) और सुअर के गोश्त को, (इसी

(पृष्ठ 44 का शेष) बनने का हक़दार है, वह तो एक ही हकीकी माबूद है) अपने अक़ीदे के खिलाफ़ सुनी तो ताज्जुब से कहने लगे कि कहीं सारे ज़हान का एक माबूद भी हो सकता है? और अगर यह दावा सही है तो कोई दलील पेश करनी चाहिए। हक़ तआला आगे तौहीद की दलील बयान फ़रमाते हैं।

5. ऊपर की आयतों में तौहीद का सूबूत था, आगे मुशिरकीन की गुलती और वईद (डॉट और धमकी) का बयान फ़रमाते हैं।

1. अगर किसी मुशिरक को यह साबित हो जाए कि मेरे माबूद से मुझपर नुक़सान पड़ेगा तो फ़ौरन मुहब्बत ख़त्म हो जाए, और मोमिन बावजूद इसके कि नफ़े व नुक़सान का पहुँचाने वाला अल्लाह तआला ही को एतिकाद करता है, लेकिन फिर भी मुहब्बत व रिज़ा उसकी बाकी रहती है।

2. और आखिरत के अज़ाब को सख़्त फ़रमाया है। आगे उस सख़्ती की कैफ़ियत का बयान फ़रमाते हैं।

3. इस अज़ाब में कई तरह की सख़्ती साबित हुई, हसरत और आग से निकलना न होने की वजह वगैरह से। ऊपर मुशिरकों के अक़ीदे के बातिल होने का बयान है, आगे मुशिरकों के बाज़ आमाल के बातिल होने का बयान है, जैसे सॉड का अदब व ताज़ीम वगैरह।

4. बाज़ मुशिरकीन बुतों के नाम पर जानवर छोड़ते थे और उनसे फ़ायदा उठाने को, उनकी ताज़ीम के एतिकाद की वजह से हराम समझते थे। और अपने इस फ़ैल को हुक्मे इलाही और अल्लाह तआला की रिज़ा का सबब और उन बुतों की सिफ़ारिश के वास्ते से अल्लाह तआला के कुर्ब का ज़रिया समझते थे, इस आयत में इसकी मनाही की गई है।

तरह उसके सब अंगों और हिस्सों को भी) और ऐसे जानवर को जो (निकटता हासिल करने के इरादे से) अल्लाह के ग़ैर के लिए नामजद कर दिया गया हो, फिर भी जो शख्स (भूख से बहुत ही) बेताब हो जाए, शर्त यह है कि न तो मजे का तालिब हो और न (ज़रूरत की मात्रा से) आगे बढ़ने वाला हो, तो उस शख्स पर कोई गुनाह नहीं होता, वाकई अल्लाह तआला हैं बड़े बख़्शने वाले, रहम करने वाले।¹ (173) इसमें कोई शुब्हा नहीं कि जो लोग अल्लाह की भेजी हुई किताब (के मज़ामीन) को छुपाते हैं और उसके मुआवज़े में (दुनिया की) मामूली कीमत और फायदा वसूल करते हैं,² ऐसे लोग और कुछ नहीं अपने पेट में आग (के अंगारे) भर रहे हैं, और अल्लाह तआला उनसे न तो क़ियामत में (नरमी और मेहरबानी के साथ) कलाम करेंगे और न (गुनाह माफ़ करके) उनकी सफ़ाई करेंगे, और उनको दर्दनाक सज़ा होगी। (174) ये ऐसे लोग हैं जिन्होंने (दुनिया में तो) हिदायत छोड़कर गुमराही इख़्तियार की और (आख़िरत में) मग़फ़िरत छोड़कर अज़ाब (सर पर लिया) सो दोज़ख़ के लिए कैसे हिम्मत वाले हैं। (175) ये (सारी ज़िक्र की गई सज़ाएँ उनको) इस वजह से हैं कि अल्लाह ने (उस) किताब को ठीक-ठीक भेजा था। और जो लोग (ऐसी) किताब में बेराही करें वे बड़ी दूर के इख़्तिलाफ़ में होंगे।³ ♦ (176) ♦

(कुछ सारा) कमाल इसी में नहीं (आ गया) कि तुम अपना मुँह पूरब को कर लो या पश्चिम को,⁴ लेकिन (असली) कमाल तो यह है कि कोई शख्स अल्लाह तआला पर यकीन रखे, और क़ियामत के दिन पर, और फ़रिश्तों पर, और (सब आसमानी) किताबों पर, और पैग़म्बरों पर, और माल देता हो अल्लाह की मुहब्बत में रिश्तेदारों को और यतीमों को और मोहताजों को और (ख़र्च से परेशान) मुसाफ़िरों को और सवाल करने वालों को और गर्दन छुड़ाने में, और नमाज़ की पाबन्दी रखता हो और ज़कात भी अदा करता हो, और जो लोग अपने अहदों को पूरा करने वाले हों जब अहद कर लें, और (वे लोग) मुस्तक़िल रहने वाले हों तंगदस्ती में और बीमारी में और क़िताल में, ये लोग हैं जो सच्चे (कमाल वाले) हैं, और यही लोग हैं जो (सच्चे) मुत्तकी (कहे जा सकते) हैं।⁵ (177) ऐ

1. इस मक़ाम के मुताल्लिक चन्द फ़िक्रही मसाइल हैं। 1: जिस जानवर का ज़िब्ह करना शरअन ज़रूरी हो और वह बिना ज़िब्ह किए हलाक हो जाए वह हराम होता है, और जिस जानवर का ज़िब्ह करना ज़रूरी नहीं है वे दो तरह के हैं: एक टिढ़ी और मछली, दूसरे जंगली जैसे हिरन वगैरह, जबकि उसके ज़िब्ह करने पर ताक़त न हो, तो उसको दूर ही से तीर या और किसी तेज़ हथियार से अगर बिस्मिल्लाह कहकर ज़ख्मी किया जाए तो हलाल हो जाता है, अलबत्ता बन्दूक का शिकार बिना ज़िब्ह किए हलाल नहीं, क्योंकि गोली में धार नहीं होती। 2: खून जो बहता न हो। इससे दो चीज़ें मुराद हैं: ज़िगर और तिल्ली, ये हलाल हैं। 3: ख़िनज़ीर (सुअर) के सब अंग और हिस्से और गोश्त, चर्बी, खाल और पट्टे वगैरह हराम भी हैं और नापाक भी हैं। 4: जिस जानवर को अल्लाह के ग़ैर के लिए नामजद इस नीयत से कर दिया हो कि वे हमसे खुश होंगे और हमारी कार्रवाई कर देंगे, वह हराम हो जाता है, अगरचे ज़िब्ह के वक़्त उसपर अल्लाह तआला का नाम लिया हो।

2. ऊपर महसूस होने वाली हराम चीज़ों का ज़िक्र था, इस आयत में उन हराम चीज़ों का बयान है जिन्हें ज़ाहिरी तौर पर महसूस नहीं किया जा सकता, जो यहूदी आलिमों की आदत थी कि अहक़ाम ग़लत बयान करके अ़वाम से रिश्तत लेते और खाते थे। तथा इसमें तालीम है उम्मेत मुहम्मदिया के आलिमों को कि हमने जो कुछ अहक़ाम बयान किए हैं, किसी नफ़सानी गरज़ और फ़ायदे से उनके बयान व तब्तीग़ में कोताही मत करना।

3. आने वाली आयतों में जो कि सूर: ब-कर: का बाकी का आधा हिस्सा है, ज़्यादा मकसूद मुसलमानों को बाज़ बुनियादी और कुछ अमली चीज़ों की तालीम करना है, अगरचे किसी मज़मून के ताबे होकर ग़ैर-मुस्लिमों को कोई ख़िताब हो जाए। और यह मज़मून सूर: के ख़त्म तक चला गया है, जिसको एक मुख़्तसर उन्वान "बिर्" से शुरू किया गया है जो कि तमाम ज़ाहिरी व बातिनी नेकियों को आ़ाम है। और अब्बल आयत में जामे अल्फ़ाज़ से एक तालीम की गई है, आगे इस "बिर्" की तफ़सील चली है, जिसमे बहुत से अहक़ाम वक़्त और जगह की ज़रूरत के मुताबिक़ ज़रूरत के बक़्दर बयान फ़रमा कर खुशख़बरी, रहमत और मग़फ़िरत के वायदे पर ख़त्म फ़रमा दिया।

4. ख़ास सन्तों का किस्सा यहाँ इसलिए बयान हुआ है कि किस्सा की तब्दीली के वक़्त पूरी की पूरी बहस यहूद व नसारा की इसी में रह गई थी, इसलिए ख़बरदार फ़रमाया कि इससे बढ़कर और काम हैं उनकी पाबन्दी और एहतिमाम करो।

5. गरज़ यह कि दीन के असली मक़ासिद और कमालात ये हैं, नमाज़ में किसी सन्त को मुँह करना इन्हें (शेष तफ़सीर पृष्ठ 50 पर)

ईमान वालो! तुमपर किसास “यानी बदले” (का कानून) फर्ज किया जाता है, (जान-बूझकर कत्ल करने से) कत्ल किए गए लोगों के बारे में, आज़ाद आदमी आज़ाद अदमी के बदले में और गुलाम गुलाम के बदले में, और औरत औरत के बदले में। हाँ जिसको उसके फरीक की तरफ से कुछ माफ़ी हो जाए (मगर पूरी न हो) तो (दावा करने वाले के ज़िम्मे) माकूल तौर पर (खून की कीमत का) मुतालबा करना और (कातिल के ज़िम्मे) खूबी के साथ उसके पास पहुँचा देना (है), यह (माफ़ करने और खून की कीमत लेने का कानून) तुम्हारे परवर्दिगार की तरफ से (सज़ा में) कमी और (शाहाना) रहम करना है। फिर जो शख्स उसके बाद ज़्यादाती करेगा तो उस शख्स को बड़ा दर्दनाक अज़ाब होगा। (178) और ऐ समझदार लोगो! बदले (के इस कानून) में तुम्हारी जानों का बड़ा बचाव है, (हम) उम्मीद (करते हैं) कि तुम लोग (ऐसे अमन वाले कानून की खिलाफ़-वर्जी करने से) परहेज़ रखोगे। (179) तुमपर फर्ज किया जाता है कि जब किसी को मौत नज़दीक मालूम होने लगे, शर्त यह है कि कुछ माल भी अपने पीछे छोड़ा हो, तो माँ-बाप और रिश्तेदारों व करीबी लोगों के लिए माकूल तौर पर (जो कि कुल मिलाकर एक तिहाई से ज़्यादा न हो) कुछ-कुछ बतला जाए, (इसका नाम वसीयत है) जिनको खुदा का ख़ौफ़ है उनके ज़िम्मे यह ज़रूरी है।¹ (180) फिर जो शख्स उस (वसीयत) के सुन लेने के बाद उसको तब्दील करेगा तो उसका गुनाह उन्हीं लोगों को होगा जो उसको तब्दील करेंगे, अल्लाह तआला तो यकीनन सुनते, जानते हैं। (181) हाँ, जिस शख्स को वसीयत करने वाले की जानिब से किसी बेइन्तिज़ामी की या किसी जुर्म के करने की तहकीक हुई हो, फिर यह शख्स उनमें आपस में सुलह-सफ़ाई करा दे तो इसपर कोई गुनाह नहीं, वाकई अल्लाह तआला (तो खुद गुनाहों के) माफ़ करने वाले हैं (और गुनाहगारों पर) रहम करने वाले हैं। (182) ♦

ऐ ईमान वालो! तुमपर रोज़ा फर्ज किया गया, जिस तरह तुमसे पहले (वाली उम्मतों के) लोगों पर फर्ज किया गया था, इस उम्मीद पर कि तुम (रोज़े की बदौलत धीरे-धीरे) परहेज़गार बन जाओ।² (183) थोड़े दिनों (रोज़ा रख लिया करो) फिर (इसमें भी इतनी आसानी है कि) जो शख्स तुममें (ऐसा) बीमार हो (जिसमें रोज़ा रखना मुश्किल या नुकसानदेह हो) या (शरई) सफ़र में हो तो दूसरे दिनों का शुमार (करके उनमें रोज़े) रखना (उसपर वाजिब) है, और (दूसरी आसानी जो बाद में मन्सूख हो गई यह है कि) जो लोग (रोज़े की) ताकत रखते हों उनके ज़िम्मे फ़िदया है (कि वह) एक ग़रीब का खाना (खिला देना या दे देना है), और जो शख्स खुशी से (ज़्यादा) ख़ैर करे (कि ज़्यादा फ़िदया दे) तो उस शख्स के लिए और भी बेहतर है। और तुम्हारा रोज़ा रखना (इस हाल में) ज़्यादा बेहतर है अगर तुम (रोज़े की फ़ज़ीलत की) ख़बर रखते हो।³ (184) (वे थोड़े दिन) रमज़ान का महीना है जिसमें कुरआन मजीद

(पृष्ठ 48 का शेष) ज़िक्र हुए कमालात में से एक ख़ास कमाल यानी नमाज़ के कायम करने की शर्तों और ताबे चीज़ों में से है, और उसके अच्छा होने से इसमें भी अच्छाई और कमाल आ गया, वरना अगर नमाज़ न होती तो किसी ख़ास सन्त को मुँह करना भी इबादत न होता।

1. इस हुकम के तीन हिस्से थे: एक सिवाय औलाद के अलावा वारिसों के हिस्सों व हुक्क का तर्क में मुकर्रर न होना। दूसरे ऐसे रिश्तेदारों और करीबी लोगों के लिए वसीयत का वाजिब होना। तीसरे एक तिहाई माल से ज़्यादा वसीयत की इजाज़त न होना। पस पहला हिस्सा तो मीरास की आयत से मन्सूख है, दूसरा हिस्सा हदीस से जो कि इज्मा के ज़रिए ताईद-शुदा है मन्सूख है, और वाजिब होने के साथ जायज़ होना भी मन्सूख हो गया, यानी शरई वारिस के लिए माल की वसीयत बातिल है। तीसरा हिस्सा अब भी बाकी है, एक तिहाई से ज़्यादा में बिना बालिग़ वारिसों की रज़ामन्दी के वसीयत बातिल है।

2. रोज़ा रखने से नफ़्स को उसके अनेक तकाज़ों से रोकने की आदत पड़ेगी, और इसी आदत की पुख़्तगी तक्वे की बुनियाद है। यह रोज़े की एक हिक्मत का बयान है, लेकिन हिक्मत इसी में सीमित नहीं हो गई, खुदा जाने और क्या-क्या हज़ारों हिक्मतें होंगी।

3. अब यह हुकम मन्सूख है, अलबत्ता जो शख्स बहुत बूढ़ा हो या ऐसा बीमार हो कि अब सेहत की उम्मीद नहीं, ऐसे लोगों के लिए यह हुकम अब भी है।

भेजा गया है,¹ जिसका (एक) वस्फ 'यानी खूबी' यह है कि लोगों के लिए हिदायत (का ज़रिया) है, और (दूसरा वस्फ) वाज़ेह दलालत करने वाला है उन सब किताबों में जो कि हिदायत (का ज़रिया भी) हैं और (हक व बातिल में) फैसला करने वाली (भी) हैं। सो जो शख्स इस महीने में मौजूद हो उसको ज़रूर इस (महीने) में रोज़ा रखना चाहिए, और जो शख्स बीमार हो या सफ़र में हो तो दूसरे दिनों का (उतना ही) शुमार (करके उनमें रोज़ा) रखना (उसपर वाजिब) है। अल्लाह को तुम्हारे साथ (अहकाम में) आसानी करना मन्ज़ूर है, और तुम्हारे साथ (अहकाम व क़वानीन मुक़र्रर करने में) दुश्वारी मन्ज़ूर नहीं, और ताकि तुम लोग (अदा या क़ज़ा के दिनों के) शुमार को पूरा कर लिया करो, (कि सवाब में कमी न रहे) इसलिए तुम लोग अल्लाह की बड़ाई (व तारीफ़) बयान किया करो, इसपर कि तुमको (एक ऐसा) तरीक़ा बतला दिया (जिससे तुम रमज़ान की बरकतों और फ़ायदों से महरूम न रहोगे) और (उज़्र की वजह से ख़ास रमज़ान में रोज़े न रखने की इजाज़त इसलिए दे दी) ताकि तुम लोग (इस आसानी की नेमत पर अल्लाह का) शुक्र अदा किया करो। (185) और जब आपसे मेरे बन्दे मेरे मुताल्लिक़ दरियाफ़्त करें तो (आप मेरी तरफ़ से फ़रमा दीजिए कि) मैं करीब ही हूँ, (और नामुनासिब दरख्वास्त को छोड़कर) मन्ज़ूर कर लेता हूँ (हर) अज़ी दरख्वास्त करने वाले की, जबकि वह मेरे हुज़ूर में दरख्वास्त दे, सो उनको चाहिए कि मेरे अहकाम को क़बूल किया करें और मुझपर यक़ीन रखें, उम्मीद है कि वे लोग हिदायत (व फ़लाह) हासिल कर सकेंगे।² (186) तुम लोगों के लिए रोज़े की रात में अपनी बीवियों से मशगूल होना हलाल कर दिया गया, क्योंकि वे तुम्हारे ओढ़ने-बिछौने (की जगह) हैं, और तुम उनके ओढ़ने-बिछौने (जैसे) हो, खुदा तआला को इसकी ख़बर थी कि तुम ख़ियानत (कर) के गुनाह में अपने को मुक्ताला कर रहे थे, (मगर) ख़ैर अल्लाह तआला ने तुमपर इनायत फ़रमाई और तुमसे गुनाह को धो दिया।³ सो अब उनसे मिलो-मिलाओ, और जो (इजाज़त का क़ानून) अल्लाह तआला ने तुम्हारे लिए तजवीज़ कर दिया है (बिला तकल्लुफ़) उसका सामान करो, और खाओ और पियो (भी) उस वक़्त तक कि तुमको सफ़ेद ख़त (यानी सुबहे सादिक़ का नूर) अलग मालूम हो जाए काले ख़त से।⁴ फिर (सुबहे सादिक़ से) रात तक रोज़ा पूरा किया करो, और उन (बीवियों) से अपना बदन भी मत मिलने दो जिस ज़माने में कि तुम लोग एतिकाफ़ वाले हो मस्जिदों में।⁵ ये खुदाई ज़ाबते हैं, सो इन (से निकलने) के नज़दीक़ भी मत हो, इसी तरह अल्लाह तआला अपने (और) अहकाम (भी) लोगों (की इस्लाह) के वास्ते बयान फ़रमाते हैं, इस उम्मीद पर कि वे लोग (बाख़बर होकर ख़िलाफ़ करने से) परहेज़ रखें। (187) और आपस में एक-दूसरे के माल नाहक़ (तौर पर) मत खाओ, और उन (के झूटे

1. कुरआन मजीद में दूसरी आयत में आया है कि हमने कुरआन मजीद शबे क़दर में नाज़िल फ़रमाया, और यहाँ रमज़ान शरीफ़ में नाज़िल करना फ़रमाया है। सो वह शबे क़दर रमज़ान की थी, इसलिए दोनों मज़मून मुवाफ़िक़ हो गए। और अगर यह वस्वसा हो कि कुरआन मजीद तो कई साल में थोड़ा-थोड़ा करके हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर नाज़िल हुआ है फिर रमज़ान या शबे क़दर में नाज़िल फ़रमाने के क्या मायने? इसका ज़वाब यह है कि कुरआन लौहे-महफूज़ से दुनिया के आसमान पर एक ही बार में रमज़ान की शबे क़दर में नाज़िल हो चुका था, फिर दुनिया के आसमान से दुनिया में धीरे-धीरे कई साल में नाज़िल हुआ। पस इसमें भी इख़िलाफ़ और टकराव न रहा।

2. यह जो फ़रमाया कि मैं करीब हूँ तो जिस तरह हक़ तआला की ज़ात की हकीक़त बेनज़ीर व बेमिसल होने की वजह से महसूस नहीं की जा सकती, उसी तरह उनकी सिफ़ात की हकीक़त भी मालूम नहीं हो सकती, इसलिए ऐसी चीज़ों में ज़्यादा खोज-बीन जायज़ नहीं।

3. शुरु इस्लाम में यह हुक्म था कि रात को एक बार नौद आ जाने से आँख खुलने के बाद खाना-पीना और बीवी के पास जाना हराम हो जाता था। कुछ सहाबा से ग़ल्बे में इस हुक्म के पूरा करने में कोताही हो गई, फिर शर्मिन्दा होकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इत्तिला की। उनकी शर्मिन्दागी और तौबा पर हक़ तआला ने रहमत फ़रमाई और इस हुक्म को मन्सूख़ कर दिया।

4. मुराद अलग और फ़र्क़ मालूम होने से यह है कि सुबह सादिक़ निकल आए।

5. एतिकाफ़ की हालत में बीवी के साथ सोहबत और इसी तरह चूमना और लिपटाना सब हराम है। एतिकाफ़ सिर्फ़ ऐसी मस्जिद में जायज़ है जिसमें पाँचों वक़्त जमाअत से नमाज़ का इन्तिज़ाम हो। जो एतिकाफ़ रमज़ान में न हो उसमें भी रोज़ा शर्त है। एतिकाफ़ वाले को मस्जिद से किसी वक़्त बाहर निकलना दुरुस्त नहीं, अलबत्ता जो काम बहुत ही लाचारी के हैं जैसे पाख़ाना या कोई खाना लाने वाला न हो तो घर से खाना ले आना या जामा मस्जिद में जुमा की नमाज़ के लिए बाहर जाना दुरुस्त है, लेकिन घर या रास्ते में ठहरना दुरुस्त नहीं। अगर औरत एतिकाफ़ करना चाहे तो जो जगह उसकी नमाज़ पढ़ने की मुक़र्रर है उसी जगह एतिकाफ़ भी दुरुस्त है।

मुकद्दमे) को हाकिमों के यहाँ इस गरज़ से रुजू मत करो कि (उसके ज़रिए से) लोगों के मालों का एक हिस्सा गुनाह के तरीके पर (यानी जुल्म से) खा जाओ और तुमको (अपने झूठ और जुल्म का) इल्म भी हो। (188) ❖

आपसे चाँदों के हालात की तहकीकात करते हैं, आप फरमा दीजिए कि वह (चाँद) वक्ती के पहचानने का आला "यानी यन्त्र" है, लोगों (के इख्तियारी मामलात जैसे इद्दत और हुक्क के मुतालबे) के लिए, (और गैर-इख्तियारी इबादात जैसे रोज़ा, ज़कात वगैरह) और हज के लिए।¹ और इसमें कोई फज़ीलत नहीं कि घरों में उनकी पुश्त की तरफ़ से आया करो, हाँ लेकिन फज़ीलत यह है कि कोई शख्स (हराम चीज़ों से) बचे, और घरों में उनके दरवाज़ों से आओ,² और खुदा तआला से डरते रहो, उम्मीद है कि तुम कामयाब हो। (189) और (बेतकल्लुफ़) तुम लड़ो अल्लाह की राह में, उन लोगों के साथ जो (अहद को तोड़ कर) तुम्हारे साथ लड़ने लगे और (अपनी तरफ़ से मुआहदे की) हद से न निकलो। वाकई अल्लाह तआला (शरई कानून की) हद से निकलने वालों को पसन्द नहीं करते। (190) और (जिस हालत में वे खुद अहद तोड़ें उस वक़्त चाहे) उनको क़त्ल करो जहाँ उनको पाओ और (चाहे) उनको निकाल बाहर करो जहाँ से उन्होंने तुमको निकलने पर मजबूर किया है, और शरारत क़त्ल से भी ज़्यादा सख़्त है, और उनके साथ मस्जिदे हराम के (आस) पास में (जो कि हरम कहलाता है) क़िताल मत करो जब तक कि वे लोग वहाँ तुमसे खुद न लड़ें। हाँ अगर वे (काफ़िर लोग) खुद ही लड़ने का सामान करने लगे तो तुम (भी) उनको मारो, ऐसे काफ़िरों की (जो हरम में लड़ने लगे) ऐसी ही सज़ा है। (191) फिर अगर वे लोग (अपने कुफ़्र से) बाज़ आ जाएँ (और इस्लाम कबूल कर लें) तो अल्लाह तआला बख़्श देंगे और मेहरबानी फरमा देंगे। (192) और उनके साथ इस हद तक लड़ो कि अक्कीदे का बिगाड़ (यानी शिर्क) न रहे और (उनका) दीन (ख़ालिस) अल्लाह ही का हो जाए। और अगर वे लोग कुफ़्र से बाज़ आ जाएँ तो सख़्ती किसी पर नहीं हुआ करती सिवाय बेइन्साफी करने वालों के। (193) हुर्मत वाला महीना है हुर्मत वाले महीने के बदले, और (ये) हुर्मत तो बदला मुआवज़ा (की चीज़ें) हैं, सो जो तुमपर ज़्यादती करो तो तुम भी उसपर ज़्यादती करो जैसी उसने तुमपर ज़्यादती की है, और अल्लाह से डरते रहो और यकीन कर लो कि अल्लाह तआला डरने वालों के साथ होते हैं।³ (194) और तुम लोग (जान के साथ माल भी) खर्च किया करो अल्लाह की राह में, और अपने आपको अपने हाथों तबाही में मत डालो,⁴ और काम अच्छी तरह किया करो बिला शुब्हा अल्लाह तआला पसन्द करते हैं अच्छी तरह काम करने

1. शरीअत ने बुनियादी तौर पर चाँद के हिसाब पर अहकाम व इबादतों का मदार रखा है कि सबका जमा होना व इत्तिफ़ाक़ इन उमूर में सहूलत से मुम्किन हो, फिर कुछ अहक़ाम में तो इस हिसाब पर लाज़िम कर दिया है कि उनमें दूसरे हिसाब पर मदार रखना जायज़ ही नहीं, जैसे हज, रमज़ान के रोज़े, दोनों ईद, ज़कात और इद्दत व तलाक़ वगैरह। और कुछ में अगरचे इख्तियार दिया है, जैसे कोई चीज़ ख़रीदी और वायदा ठहरा कि इस वक़्त से एक साल सूरज के हिसाब से गुज़रने पर कीमत अदा करेंगे, इसमें शरीअत ने मजबूर नहीं किया कि चाँद के हिसाब से साल पूरा हो जाने पर मुतालबे का हक़ हो जाएगा। लेकिन इसमें शक़ नहीं है कि अगर शुरू में चाँद के हिसाब पर मदार रखा जाए तो आम तौर पर सहूलत उसमें है।

2. कई लोग इस्लाम से पहले हज के एहराम की हालत में अगर किसी ज़रूरत से घर जाना चाहते तो दरवाज़े से जाना मना समझते, इसलिए पीछे की दीवार में नक़ब देकर उसमें से अन्दर जाते थे, और इस अमल को फज़ीलत का सबब समझते थे। हक़ तआला इसके मुताल्लिक़ इश़ाद फरमाते हैं कि इसमें कोई फज़ीलत नहीं कि घरों में उनकी पुश्त की तरफ़ से आया करो। इससे एक बड़े काम की बात मालूम होती है कि जो चीज़ शरीअत में मुबाह हो उसको नेकी व इबादत एतिकाद कर लेना इसी तरह उसको गुनाह और मलामत का मौक़ा एतिकाद कर लेना शरअन् बुरा है और बिद्अत में दाख़िल है।

3. काफ़िरों के साथ क़िताल करने की पहल करना जायज़ है जबकि उसके जायज़ होने की शर्तें पाई जाएँ। जज़ीरा-ए-अरब के अन्दर कुफ़्रार को वतन बनाने की इजाज़त नहीं।

4. यह जो फरमाया है कि "अपने हाथों" इस कैद लगाने का हासिल यह है कि अपने इख्तियार से कोई काम ख़िलाफ़े हुक्म न करे, और जो बिना इरादे व इख्तियार के कुछ हो जाए तो वह माफ़ है।

वालों को। (195) और (जब हज व उमर: करना हो तो उस) हज व उमरे को अल्लाह तआला के वास्ते पूरा-पूरा अदा किया करो। फिर अगर (किसी दुश्मन या बीमारी के सबब) रोक दिए जाओ तो कुर्बानी का जानवर जो कुछ मयस्सर हो (जिन्ह करो) और अपने सरो को उस वक्त तक न मुंडवाओ जब तक कि कुर्बानी अपनी जगह पर न पहुँच जाए, (और वह जगह हरम है, कि किसी के हाथ वहाँ जानवर भेज दिया जाए)। अलबत्ता अगर तुममें से कोई बीमार हो या उसके सर में कुछ तकलीफ हो, (जिससे पहले ही सर मुंडाने की ज़रूरत पड़ जाए) तो (वह सर मुंडवाकर) फिदया (यानी उसका शरई बदला) दे दे (तीन) रोज़े से या (छह मिस्कीनों को) ख़ैरात दे देने या (एक बकरी) जिन्ह कर देने से, फिर जब अमन की हालत में हो (या तो पहले ही से कोई ख़ौफ पेश न आया हो, या होकर जाता रहा हो) तो जो शख्स उमर: से उसको हज के साथ मिलाकर मुनतफा हुआ हो (यानी हज के दिनों में उमर: भी किया हो) तो जो कुछ कुर्बानी मयस्सर हो (जिन्ह) करे, (और जिसने सिर्फ उमर: या सिर्फ हज किया हो, उसपर हज वगैरह के मुताल्लिक कोई कुर्बानी नहीं)। फिर जिस शख्स को कुर्बानी का जानवर मयस्सर न हो तो (उसके ज़िम्मे) तीन दिन के रोज़े हैं हज (के दिनों) में, और सात हैं जबकि (हज से) तुम्हारे लौटने का वक्त आ जाए, ये पूरे दस हुए। यह उस शख्स के लिए है जिसके अहल (व अयाल) “यानी बाल-बच्चे और घर वाले” मस्जिदे हराम (यानी काबा) के करीब में न रहते हों (यानी करीब का वतन रखने वाला न हो) और अल्लाह तआला से डरते रहो (कि किसी बात में हुक्म के खिलाफ न हो जाए) और जान लो कि बेशक अल्लाह तआला (बेबाकी और मुख़ालफ़त करने वालों को) सख़्त सज़ा देते हैं।¹ (196) ♦

हज (का ज़माना) चन्द महीने हैं जो मालूम हैं, (शव्वाल, जीकादा और ज़िलहिज्जा की दस तारीखें) सो जो शख्स इनमें हज मुक़र्रर करे तो फिर (उसको) न कोई गन्दी बात (जायज़) है और न कोई नाफरमानी (दुरुस्त) है, और न किसी किस्म का झगड़ा (मुनासिब) है। हज में² जो नेक काम करोगे खुदा तआला को उसकी इत्तिहा होती है, और (जब हज को जाने लगे) खर्च ज़रूर ले लिया करो क्योंकि सबसे बड़ी बात खर्च में (भीख माँगने से) बचा रहना है, और ऐ अक्ल वालो! मुझसे डरते रहो।³ (197) तुमको इसमें ज़रा भी गुनाह नहीं कि (हज में) रोज़ी की तलाश करो,⁴ जो तुम्हारे परवर्दिगार की तरफ से है, फिर जब तुम लोग अरफ़ात से वापस आने लगे तो मशअरे हराम के पास (मुज़दलिफ़ा में रात को ठहर करके) खुदा तआला की याद करो,⁵ और (इस तरह) याद करो जिस तरह तुमको बतला रखा है, (न यह कि अपनी राय को दखल दो) और हकीकत में इससे पहले तुम महज़ अन्जान ही थे। (198) फिर तुम सबको ज़रूरी है कि उसी जगह होकर वापस आओ जहाँ और लोग जाकर वहाँ से वापस आते हैं, और (हज के अहकाम में पुरानी रस्मों पर अमल करने से) अल्लाह के सामने तौबा करो, यकीनन अल्लाह

1. औरत को सर मुंडाना हराम है, वह सिर्फ एक-एक उंगल बाल काट डाले। हज तीन तरह का होता है: “इफ़राद” कि हज के दिनों में सिर्फ हज किया जाए। और “तमत्तो” और “किरान” जिनमें हज के दिनों में उमर: और हज दोनों किए जाएँ। इफ़राद हर शख्स को जायज़ है और तमत्तो और किरान सिर्फ उन लोगों को जायज़ है जो “मीकात” की हदों से बाहर रहते हैं। और जो लोग “मीकात” के अन्दर रहते हैं उनके लिए तमत्तो और किरान की इजाज़त नहीं है।

2. गन्दी और बेहूदा बातें दो तरह की हैं: एक वह जो पहले ही से हराम है, वह हज की हालत में ज्यादा हराम होगी। दूसरे वह कि पहले से हलाल थी जैसे अपनी बीवी से बेपर्दीगी की बातें करना, हज में यह भी दुरुस्त नहीं।

3. बेखर्च लिए हुए ऐसे शख्स को हज को जाना दुरुस्त नहीं जिसके नफ़स में तवक्कुल की ताक़त न हो।

4. हज में तिजारत यकीनन मुबाह (जायज़ और दुरुस्त) है, अब रही यह बात कि इख़्लास के खिलाफ तो नहीं, सो इसमें इसका हुक्म और जायज़ चीज़ों की तरह है कि दारो-मदार नीयत पर होता है।

5. ज़माना-ए-जाहिलियत में कुरैश अरफ़ात में न जाते थे, मुज़दलिफ़ा ही में ठहर कर वहाँ से लौट आते थे, इसलिए अल्लाह तआला ने इस आयत में इन अहकाम का आम होना बतला दिया।

तआला माफ कर देंगे (और) मेहरबानी फरमा देंगे। (199) फिर जब तुम अपने हज के आमाल पूरे कर चुको तो हक तआला का (इस तरह) जिक्र किया करो जिस तरह तुम अपने बापों (और दादाओं) का जिक्र किया करते हो, बल्कि यह जिक्र उससे (कई दरजे) बढ़कर हो।¹ सो बाजे आदमी (जो कि काफिर हैं) ऐसे हैं जो कहते हैं कि ऐ हमारे परवर्दिगार हमको (जो कुछ देना हो) दुनिया में दे दीजिए, और ऐसे शख्स को आखिरत में (आखिरत के इनकार करने की वजह से) कोई हिस्सा न मिलेगा। (200) और बाजे आदमी (जो कि मोमिन हैं) ऐसे हैं जो कहते हैं कि ऐ हमारे परवर्दिगार! हमको दुनिया में भी बेहतरी इनायत कीजिए और आखिरत में भी बेहतरी दीजिए और हमको दोजख के अजाब से बचाइए। (201) ऐसे लोगों को (दोनों जहान में) बड़ा हिस्सा मिलेगा उनके अमल की बदौलत, और अल्लाह तआला जल्द ही हिसाब लेने वाले हैं।² ● (202) और अल्लाह तआला का जिक्र करो कई दिन तक, फिर जो शख्स दो दिन में (मक्का वापस आने में) जल्दी करे उसपर भी कुछ गुनाह नहीं, और जो शख्स (दो दिन में) ताखीर “यानी देरी” करे उसपर भी कुछ गुनाह नहीं उस शख्स के लिए जो (खुदा से) डरे, और अल्लाह तआला से डरते रहो और खूब यकीन रखो कि तुम सबको खुदा के ही पास जमा होना है। (203) और बाजा आदमी ऐसा भी है कि आपको उसकी गुफ्तगू जो सिर्फ दुनियावी गरज से होती है मजेदार मालूम होती है और वह अल्लाह तआला को हाजिर व नाजिर बताता है अपने दिल की बात पर, हालाँकि वह (आपकी) मुख़ालफ़त में (बहुत ही) सख़्त है। (204) और जब पीठ फेरता है तो इस दौड़-धूप में फिरता रहता है कि शहर में फ़साद करे और (किसी के) खेत या मवेशी को बर्बाद कर दे, और अल्लाह तआला फ़साद को पसन्द नहीं फरमाते। (205) और जब उससे कोई कहता है कि खुदा का खौफ़ कर, तो घमंड उसको उस गुनाह पर (दुगना) आमादा कर देता है, सो ऐसे शख्स की काफी सज़ा जहन्नम है, और वह बुरा ही ठिकाना है।³ (206) और बाजा आदमी ऐसा भी है कि अल्लाह की रिज़ा हासिल करने में अपनी जान तक खर्च कर डालता है, और अल्लाह (ऐसे) बन्दों (के हाल) पर निहायत मेहरबान हैं। (207) ऐ ईमान वाले! इस्लाम में पूरे-पूरे दाख़िल हो, और (फ़ासिद ख़्यालात में पड़कर) शैतान के कदम से कदम मिलाकर मत चलो, वाकई वह तुम्हारा खुला दुश्मन है। (208) फिर अगर तुम इसके बाद कि तुमको वाज़ेह दलीलें पहुँच चुकी हैं (सीधे रास्ते से) बहकने लगे तो यकीन रखो कि हक़ तआला बड़े ज़बरदस्त हैं (और) हिकमत वाले हैं। (209) ये (टेढ़ी राह चलने वाले) लोग इस बात के मुन्तज़िर (मालूम होते) हैं कि हक़ तआला और फरिश्ते बादल के छज्जों में उनके पास (सज़ा देने के लिए) आएँ और सारा किस्सा ही ख़त्म हो जाए, और ये सारे मुकद्दमे अल्लाह तआला ही की तरफ़ लौटाए जाएँगे।⁴ (210) ♦

1. आयत में जो हुक्म याद का फरमाया इसमें नमाज़ें भी दाख़िल हैं। पस यह जिक्र तो वाजिब है, बाकी जिक्र जो कुछ करे मुस्तहब है।
2. हासिल यह है कि दुनिया तलब की जगह है, खुद मतलूब नहीं बल्कि मतलूब बेहतरी है।
3. कोई शख्स था अख़्स बिन शुरैक, बड़ा फ़सीह व बलीग़ था। वह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में आकर कस्में खा-खाकर झूठा इस्लाम का दावा किया करता और मजिस से उठकर जाता तो फ़साद व शरारत और मज़्लूक को तकलीफ़ पहुँचाने में लग जाता था। उस मुनाफ़िक़ के बारे में ये आयतें नाज़िल हुईं।
4. रूहुल-मआनी में इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हदीसे पाक नक़ल की गई है कि कियामत के दिन अल्लाह तआला तमाम अंगलों और पिछलों को जमा फरमाएँगे और सब हिसाब किताब के मुन्तज़िर होंगे। अल्लाह तआला बादल के सायबानों (साया करने वालों) में अर्श से तजल्ली फरमाएँगे। और इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत नक़ल की है कि उन सायबानों के चारों तरफ़ फरिश्ते होंगे, सो आयत में इस किस्से की तरफ़ इशारा है। मतलब यह हुआ कि कियामत के मुन्तज़िर हैं फिर उस वक़्त क्या हो सकता है?

आप बनी इसराईल (के उलमा) से (ज़रा) पूछिए (तो सही) कि हमने आपको कितनी वाज़ेह दलीलें दी थीं,¹ और जो शख्स अल्लाह तआला की नेमत को बदलता है उसके पास पहुँचने के बाद, तो हक़ तआला यकीनन सख़्त सज़ा देते हैं।² (211) दुनियावी जिन्दगी कुफ़ार को अच्छी और खुशनुमा मालूम होती है, और (इसी वजह से) इन मुसलमानों से ठट्ठा-मज़ाक़ करते हैं, हालाँकि ये (मुसलमान) जो (कुफ़ व शिर्क से) बचते हैं, उन (काफ़िरों) से आला दर्जे में होंगे क़ियामत के दिन, और रोज़ी तो अल्लाह तआला जिसको चाहते हैं बेहिसाब दे देते हैं।³ (212) (एक ज़माने में) सब आदमी एक ही तरीक़े के थे⁴ फिर अल्लाह तआला ने पैग़म्बरों को भेजा, जो कि खुशी (के वायदे) सुनाते थे और डराते थे और उनके साथ (आसमानी) किताबें भी ठीक तौर पर नाज़िल फ़रमाईं, इस गरज़ से कि अल्लाह तआला लोगों में उनके (मज़हबी) इख़िलाफ़ी मामलों में फैसला फ़रमा दें, और इस (किताब) में (यह) इख़िलाफ़ और किसी ने नहीं किया मगर सिर्फ़ उन लोगों ने जिनको (शुरू में) वह (किताब) मिली थी, उसके बाद कि उनके पास वाज़ेह दलीलें पहुँच चुकी थीं, आपसी जिद्दा-जिद्दी की वजह से। फिर अल्लाह तआला ने (हमेशा) ईमान वालों को वह हक़ अम्र “यानी बात और मामला” जिसमें इख़िलाफ़ करने वाले इख़िलाफ़ किया करते थे, अपने फ़ज़ल व करम से बतला दिया, और अल्लाह तआला जिसको चाहते हैं उसको सही रास्ता बतला देते हैं। (213) (दूसरी बात सुनो) क्या तुम्हारा यह ख़्याल है कि जन्नत में (मशक्कत उठाए बग़ैर) जा दाख़िल होंगे, हालाँकि तुमको अभी उन (मुसलमान) लोगों के जैसा कोई अजीब वाकिआ पेश नहीं आया जो तुमसे पहले हो गुज़रे हैं, उनपर (मुख़ालिफ़ों के सबब) ऐसी-ऐसी तंगी और सख़्ती पेश आई और (मुसीबतों से) उनको यहाँ तक हिलाया गया कि (उस ज़माने के) पैग़म्बर तक और जो उनके साथ ईमान वाले थे, बोल उठे कि अल्लाह तआला की (वायदा की गई) इम्दाद कब होगी।⁵ याद रखो बेशक अल्लाह तआला की इम्दाद (बहुत) नज़दीक है। (214) लोग आपसे पूछते हैं कि क्या चीज़ ख़र्च किया करें? आप फ़रमा दीजिए कि जो कुछ माल तुमको ख़र्च करना हो सो माँ-बाप का हक़ है⁶ और रिश्तेदारों व करीबी लोगों का, और बेबाप के बच्चों का, और मोहताजों का, और मुसाफ़िर का, और जो भी नेक काम-करोगे सो अल्लाह तआला को उसकी ख़ूब ख़बर है। (वह उसपर सवाब देंगे) (215) जिहाद करना तुमपर फ़र्ज़

1. जैसे तौरात मिली, चाहिए था कि उसको कबूल करते मगर उसका इनकार किया। आख़िर तूर पहाड़ गिराने की धमकी दी गई। और जैसे हक़ तआला का कलाम सुना, चाहिए था कि सर-आँखों पर रखते, मगर शुब्हात निकाले। आख़िर बिजली से हलाक़ हुए। और जैसे दरिया को फाड़कर के फ़िरऔन से नजात दी गई, एहसान मानते, मगर गौसाला को पूजा शुरू कर दिया, तो क़त्ल की सज़ा दी गई। और जैसे “मन्न” व “सत्तुवा” नाज़िल हुआ, शुक्र करना चाहिए था, मगर नाफ़रमानी की, वह सड़ने लगा और उससे नफ़रत ज़ाहिर की तो वह बन्द हो गया (यानी अल्लाह की तरफ़ से उसका अज़ा करना बंद कर दिया गया) और खेती की मुसीबत सर पर पड़ी। और जैसे अम्बिया अलैहिमुस्सलाम का सिलसिला उनमें जारी रहा, ग़नीमत समझते, मगर उनको क़त्ल करना शुरू किया, हुकूमत से महरूमी की सज़ा दी गई। और इसी तरह बहुत-से मामलात इस सूर: अल-बकर: के शुरू में भी ज़िक्र हो चुके हैं।
2. यह सज़ा कभी दुनिया में भी हो जाती है, कभी आख़िरत में होगी।
3. पस इसका मदार किस्मत पर है न कि कमाल और मक़बूलियत पर।
4. अव्वल दुनिया में आदम अलैहिस्सलाम मय अपनी बीवी के तशरीफ़ लाए और जो औलाद होती गई उनको देने हक़ की तालीम फ़रमाते रहे, और वे उनकी तालीम पर अमल करते रहे। एक मुद्दत इसी हालत में गुज़र गई, फिर तबीयतों के मुख़्तलिफ़ और अलग-अलग होने से मक़सद और गरज़ में इख़िलाफ़ होना शुरू हुआ, यहाँ तक कि एक मुद्दत के बाद आमाल व अक़ीदों में इख़िलाफ़ की नौबत आ गई।
5. नबियों और मोमिनों का इस तरह कहना नऊजु बिल्लाह (अल्लाह अपनी पनाह में रखे) शक़ की वजह से न था, बल्कि वजह यह थी कि इम्दाद आने और मुख़ालिफ़ीन के मुकाबले में ग़ालिब होने का वक़्त उन हज़रात को न बतलाया गया था, वक़्त के साफ़ बयान न होने से उनको जल्दी होने का इन्तिज़ार रहता था। जब इन्तिज़ार से थक जाते तब इस तरह अर्ज़ व दरख़्वास्त करने लगते, जिसका हासिल गिड़गिड़ाने के साथ दुआ करना है, और रोना-गिड़गिड़ाना ख़िलाफ़े रिज़ा व तस्लीम नहीं है, बल्कि जब गिड़गिड़ाने और आजिज़ी करने का अल्लाह तआला के नज़दीक पसन्दीदा होना रिज़ा-ए-हक़ से है तो रोना और गिड़गिड़ाना बिल्कुल हक़ की रिज़ा से है।
6. माँ-बाप को ज़कात और दूसरे वाजिब सदकात देना दुरुस्त नहीं। इस आयत में नफ़िल ख़ैरात का बयान है।

किया गया है और वह तुमको (तबई तौर पर) गिराँ “यानी भारी और नागवार” (मालूम होता) है, और यह बात मुम्किन है कि तुम किसी चीज़ को गिराँ समझो और वह तुम्हारे हक में ख़ैर हो, और यह (भी) मुम्किन है कि तुम किसी चीज़ को अच्छा समझो और वह तुम्हारे हक में ख़राबी (का सबब) हो। और अल्लाह तआला जानते हैं और तुम (पूरा-पूरा) नहीं जानते।¹ (216) ♦

लोग आपसे हराम महीने में किताल करने के मुताल्लिक सवाल करते हैं, आप फ़रमा दीजिए कि उसमें खास तौर पर किताल करना (यानी जान-बूझकर) बड़ा जुर्म है, और अल्लाह की राह से रोक-टोक करना और अल्लाह तआला के साथ कुफ़्र करना और मस्जिदे हराम (यानी काबा) के साथ, और जो लोग मस्जिदे हराम के अहल थे उनको उससे ख़ारिज कर देना बहुत बड़ा जुर्म है अल्लाह के नज़दीक, और फ़ितना उठाना (उस खास) क़त्ल से कई दर्जे बढ़कर है,² और ये कुफ़्राने तुम्हारे साथ हमेशा जंग रखेंगे इस गरज़ से कि अगर (खुदा न करे) काबू पाएँ तो तुमको तुम्हारे दीन (इस्लाम) से फेर दें, और जो शख्स तुममें से अपने दीन से फिर जाए, फिर काफ़िर ही होने की हालत में मर जाए तो ऐसे लोगों के (नेक) आमाल दुनिया व आख़िरत में सब ग़ारत हो जाते हैं³ और ऐसे लोग दोज़खी होते हैं, (और) ये लोग दोज़ख में हमेशा रहेंगे। (217) हकीकत में जो लोग ईमान लाए हों और जिन लोगों ने राहे खुदा में वतन छोड़ा हो और जिहाद किया हो, ऐसे लोग तो अल्लाह की रहमत के उम्मीदवार हुआ करते हैं, और अल्लाह तआला (इस ग़लती को) माफ़ कर देंगे (और तुमपर) रहमत करेंगे। (218) लोग आपसे शराब और जुए के बारे में पूछते हैं, आप फ़रमा दीजिए कि इन दोनों (के इस्तेमाल) में गुनाह की बड़ी-बड़ी बातें भी हैं और लोगों को (बाज़े) फ़ायदे भी हैं, और (वे) गुनाह की बातें उनके फ़ायदों से ज़्यादा बढ़ी हुई हैं⁴ और लोग आपसे पूछते हैं कि (ख़ैर-ख़ैरात में) कितना ख़र्च किया करें, आप फ़रमा दीजिए कि जितना आसान हो, अल्लाह तआला इसी तरह अहक़ाम को साफ़-साफ़ बयान फ़रमाते हैं। (219) ताकि तुम दुनिया व आख़िरत के मामलों में सोच लिया करो। और लोग आपसे यतीम बच्चों का हुक्म पूछते हैं, आप फ़रमा दीजिए कि उनकी मस्लहत की रियायत रखना ज़्यादा बेहतर है, और अगर तुम उनके साथ ख़र्च शामिल रखो तो वे तुम्हारे (दीनी) भाई हैं, और अल्लाह तआला मस्लहत के ज़ाया करने वाले को और मस्लहत की रियायत रखने वाले को (अलग-अलग) जानते हैं,⁵ और अगर अल्लाह चाहते तो तुमको मुसीबत में डाल देते, क्योंकि अल्लाह तआला ज़बरदस्त हैं, हिक्मत वाले हैं। (220) और

1. जिहाद फ़र्ज़ है जबकि उसकी वे शर्तें पाई जाएँ जो मसाइल की किताबों (फ़िक्ह) में ज़िक्र हुई हैं। और फ़र्ज़ दो तरह का होता है: फ़र्ज़ ऐन और फ़र्ज़ किफ़ाय़ा। सो दीन के दुश्मन जब मुसलमानों पर चढ़ आएँ तब तो जिहाद फ़र्ज़ ऐन है, वरना फ़र्ज़ किफ़ाय़ा है।

2. हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कुछ सहाबा का एक सफ़र में इतिफ़ाक़ से काफ़िरों के साथ मुकाबला हो गया। एक काफ़िर उनके हाथ से मारा गया, और जिस दिन यह किस्सा हुआ रजब की पहली तारीख़ थी, मगर सहाबा जमादिल आख़िर की तीस समझते थे। (और रजब उन महीनों में से है जिनको हराम का दर्जा हासिल है। यानी जिन महीनों में लड़ाई और किताल की मनाही है।) कुफ़्राने इस वाकिए पर ताना दिया कि मुसलमानों ने ‘शर्ते हराम’ (यानी हराम महीने) की हुर्मत और इज़ज़त का भी ख़याल नहीं किया। मुसलमानों को इसकी फ़िक्र हुई और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूछा। इस आयत में उसी का जवाब इश़ाद हुआ है, और खुलासा जवाब का यह है कि अव्वल तो मुसलमानों ने कोई गुनाह नहीं किया, और अगर मान लें कि किया है तो एतिराज़ करने वाले इससे बड़े-बड़े गुनाह यानी कुफ़्र और दीने हक़ से टकराने और रुकावट पैदा करने में मुक्ताला हैं। फिर उनको मुसलमानों पर एतिराज़ करने का क्या हक़ है।

3. दुनिया में आमाल का ज़ाया होना यह है कि उसकी बीवी निकाह से निकल जाती है, अगर उसका कोई मूरिस (जिसकी मीरास मिलने वाली हो) मुसलमान भरे, उस शख्स को मीरास का हिस्सा नहीं मिलता। इस्लाम की हालत में नमाज़-रोज़ा जो कुछ किया था सब ज़ाया हो जाता है। मरने के बाद जनाज़े की नमाज़ नहीं पढ़ी जाती, मुसलमानों के कब्रिस्तान में दफ़न नहीं किया जाता। और आख़िरत में ज़ाया होना यह है कि इबादतों का सवाब नहीं मिलता, हमेशा-वमेशा के लिए दोज़ख में दाख़िल होता है।

4. पहले ये दोनों चीज़ें हलाल थीं। सबसे पहली आयत शराब व जुए के मुताल्लिक यह नाज़िल की गई। इस आयत से इन दोनों को हुर्मत का इनकी ज़ात के एतिबार से बयान मकसूद नहीं था, बल्कि बाज़-बाज़ पेश आने वाली ग़ैर-ज़रूरी चीज़ों की वजह से इन दोनों के छोड़ने का मशिवरा देना मकसूद था।

5. चूँकि शुरू में हिन्दुस्तान की तरह अरब में भी यतीमों का हक़ देने में पूरी एहतियात न थी इसलिए यह वर्ड सुनाई गई थी कि यतीमों का माल खाना ऐसा है जैसा कि दोज़ख़ के अंगारे पेट में भरना। तो सुनने वाले डर गए। इसके मुताल्लिक यह आयत नाज़िल हुई।

निकाह मत करो काफिर औरतों के साथ जब तक कि वे मुसलमान न हो जाएँ, और मुसलमान औरत (चाहे) बाँदी (क्यों न हो, वह हजार दर्जा) बेहतर है काफिर औरत से, चाहे वह तुमको अच्छी ही मालूम हो। और औरतों को काफिर मर्दों के निकाह में मत दो, जब तक कि वे मुसलमान न हो जाएँ। और मुसलमान मर्द गुलाम बेहतर है काफिर मर्द से, चाहे वह तुमको अच्छा ही मालूम हो, (क्योंकि) ये लोग दोज़ख़ (में जाने) की तहरीक देते हैं “यानी दोज़ख़ की ओर ले जाते हैं”, और अल्लाह तआला जन्नत और मग़िफ़रत की तहरीक देते हैं अपने हुक़म से।¹ और (अल्लाह इस वास्ते) आदमियों को अपने अहक़ाम बता देते हैं ताकि वे लोग नसीहत पर अमल करें। (221) ♦

और लोग आपसे हैज़ “यानी माहवारी” का हुक़म पूछते हैं, आप फ़रमा दीजिए कि वह गन्दी चीज़ है। तो माहवारी में तुम औरतों से अलग रहा करो और उनसे निकटता मत किया करो जब तक कि वे पाक न हो जाएँ, फिर जब वे अच्छी तरह पाक हो जाएँ तो उनके पास आओ-जाओ जिस जगह से अल्लाह तआला ने तुमको इजाज़त दी है (यानी आगे से), यकीनन अल्लाह तआला मुहब्बत रखते हैं तौबा करने वालों से, और मुहब्बत रखते हैं साफ़-पाक रहने वालों से।² (222) तुम्हारी बीवियाँ तुम्हारे (लिए बतौर) खेत (के) हैं। सो अपने खेत में जिस तरफ़ से होकर चाहो आओ। और आइन्दा के लिए (भी) अपने लिए कुछ करते रहो, और अल्लाह तआला से डरते रहो और यह यकीन रखो कि बेशक तुम अल्लाह तआला के सामने पेश होने वाले हो, और (ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ऐसे ईमानदारों को खुशी की ख़बर सुना दीजिए। (223) और अल्लाह तआला को अपनी क़स्मों के ज़रिये से इन उमूर का हिजाब मत बनाओ कि तुम नेकी के और तक्वे के और मख़्लूक के दरमियान सुधार के काम करो, और अल्लाह तआला सब कुछ सुनते जानते हैं।³ (224) अल्लाह तआला तुमपर (आख़िरत में) पकड़ न फ़रमाएँगे तुम्हारी (ऐसी) बेहूदा क़स्मों पर, लेकिन पकड़ फ़रमाएँगे उस (झूठी क़सम) पर जिसमें तुम्हारे दिलों ने (झूठ बोलने का) इरादा किया था, और अल्लाह तआला बख़्शाने वाले हैं, हलीम “यानी बर्दाश्त करने वाले और नर्मी बरताने वाले” हैं।⁴ (225) जो लोग क़सम खा बैठते हैं अपनी बीवियों (के पास जाने) से, उनके लिए चार महीने तक की मोहलत है। सो अगर ये लोग (क़सम तोड़कर औरत की तरफ़) रुजू कर लें तब तो अल्लाह तआला माफ़ कर देंगे, रहमत फ़रमा देंगे।⁵ (226) और अगर बिल्कुल छोड़ ही देने का पुख़्ता इरादा कर लिया है तो अल्लाह तआला सुनते हैं,

1. इस आयत में दो हुक़म हैं, एक यह कि काफिर मर्दों से मुसलमान औरतों का निकाह न किया जाए। सो यह हुक़म तो अब भी बाकी है। दूसरा हुक़म यह है कि मुसलमान मर्द का काफिर औरत से निकाह न किया जाए। इस हुक़म में दो हिस्से हैं, एक हिस्सा यह है कि वह काफिर औरत किताबी यानी यहूदी या ईसाई न हो और कोई मज़हब कुफ़्र का रखती हो। सो इस हिस्से में भी इसका हुक़म बाकी है। चुनौचे हिन्दू औरत या आग को पूजने वाली औरत से मुसलमान का निकाह नहीं हो सकता। दूसरा हिस्सा यह है कि औरत किताबिया हो यानी यहूदी या ईसाई हो। इस ख़ास हिस्से में इस आयत का हुक़म बाकी नहीं, बल्कि एक आयत सूर: माइद: में इस मज़मून की है कि किताबी औरत से निकाह दुरुस्त है, सो इस सूरत में इस आयत का यह ख़ास हिस्सा मन्सूख़ हो गया। चुनौचे यहूदी या ईसाई औरत से निकाह दुरुस्त है। अगरचे किताबी औरत से निकाह दुरुस्त है लेकिन अच्छा नहीं है। हदीस में दीनदार औरत के हासिल करने का हुक़म है, तो बद्-दीन औरत का हासिल करना इस दर्जे में ना-पसन्द होगा।

2. माहवारी की हालत में नाफ़ से घुटने तक औरत के बदन को देखना और हाथ लगाना भी दुरुस्त नहीं।

3. नेक काम का छोड़ना बिना क़सम भी बुरा है।

4. बेहूदा क़सम के दो मायने हैं, एक तो यह कि किसी गुज़री हुई बात पर झूठी क़सम बिना इरादा निकल गई, या आगे आने वाली बात पर इस तरह क़सम निकल गई कि कहना चाहता था कुछ और बेइरादा मुँह से क़सम निकल गई, इसमें गुनाह नहीं होता। इसके मुकाबले में जिसपर पकड़ होने का ज़िक्र फ़रमाया, यह वह क़सम है जो जान-बूझकर झूठी समझकर खाई हो।

5. अगर कोई क़सम खा ले कि मैं अपनी बीवी से सोहबत न करूँगा, तो अगर चार महीने के अन्दर अपनी क़सम तोड़ डाले और बीवी के पास चला जाए तो क़सम का कफ़ारा दे और निकाह बाकी है। और अगर चार महीने गुज़र गए और क़सम न तोड़ी तो उस औरत पर क़तई तलाक़ पड़ गई, रुजू करना दुरुस्त नहीं रहा, अलबत्ता अगर दोनों रज़ामन्दी से फिर निकाह कर लें तो दुरुस्त है।

जानते हैं। (227) और तलाक दी हुई औरतें अपने आपको (निकाह से) रोके रखें तीन हैज तक,¹ और उन औरतों को यह बात हलाल नहीं कि खुदा तआला ने जो कुछ उनके रहम में पैदा किया हो (चाहे गर्भ या हैज) उसको छुपाएँ, अगर वे औरतें अल्लाह तआला पर और कियामत के दिन पर यकीन रखती हैं। और उन औरतों के शौहर उनके (बिना दोबारा निकाह किए) फिर लौटा लेने का हक रखते हैं, उस (इद्दत) के अन्दर, शर्त यह है कि इस्लाह “यानी भलाई और सुधार” का इरादा रखते हों। और औरतों के भी हुक्क हैं जो कि उन्हीं के हुक्क की तरह हैं जो उन औरतों पर हैं (शरई) कायदे के मुवाफिक। और मर्दों का उनके मुकाबले में कुछ दर्जा बढ़ा हुआ है, और अल्लाह तआला ज़बरदस्त (हाकिम) हैं, हकीम हैं।² (228) ♦

वह तलाक दो बार (की) है, फिर चाहे रख लेना कायदे के मुवाफिक चाहे छोड़ देना अच्छे अन्दाज़ के साथ,³ और तुम्हारे लिए यह बात हलाल नहीं कि (छोड़ने के वक़्त) कुछ भी लो (अगरचे) उसमें से (ही सही) जो तुमने उनको (महर में) दिया था, मगर यह कि मियाँ-बीवी दोनों को अन्देशा हो कि अल्लाह तआला के ज़ाबतों “यानी कानूनों” को कायम न कर सकेंगे। सो अगर तुम लोगों को यह अन्देशा हो कि वे दोनों खुदावन्दी ज़ाबतों को कायम न कर सकेंगे तो दोनों पर कोई गुनाह न होगा उस (माल के लेने-देने) में जिसको देकर औरत अपनी जान छुड़ा ले। ये खुदाई ज़ाबते हैं सो तुम इनसे बाहर मत निकलना। और जो शख्स खुदाई ज़ाबतों से बाहर निकल जाए सो ऐसे ही लोग अपना नुकसान करने वाले हैं।⁴ (229) फिर अगर कोई (तीसरी) तलाक दे दे औरत को तो फिर वह उसके लिए हलाल न रहेगी उसके बाद, यहाँ तक कि वह उसके सिवा एक और ख़ाविन्द के साथ (इद्दत के बाद) निकाह करे। फिर अगर यह उसको तलाक दे दे तो इन दोनों पर इसमें कुछ गुनाह नहीं कि बदस्तूर फिर मिल जाएँ, शर्त यह है कि दोनों ग़ालिब गुमान रखते हों कि (आइन्दा) खुदावन्दी ज़ाबतों को कायम रखेंगे।⁵ और ये खुदावन्दी ज़ाबते हैं, (हक़ तआला) उनको बयान फ़रमाते हैं, ऐसे लोगों के लिए जो समझदार हैं। (230) और जब तुमने औरतों को (रज़ूअी) तलाक दे दी हो, फिर वे अपनी इद्दत गुज़रने के करीब पहुँच जाएँ तो (या तो) तुम उनको कायदे के मुवाफिक़ (लौटा करके) निकाह में रहने दो या कायदे के मुवाफिक़ उनको रिहाई दो। और उनको तकलीफ़ पहुँचाने की गरज़ से मत रोको, इस इरादे से कि उनपर जुल्म किया करोगे। और जो शख्स ऐसा (बर्ताव) करेगा सो वह अपना ही नुकसान करेगा। और अल्लाह तआला के अहक़ाम को खेल-कूद (की तरह बेवक़अत) मत समझो, और हक़ तआला की जो नेमतें तुमपर हैं उनको याद करो, और (खास कर) इस किताब और हिकमत (के मज़ामीन) को जो अल्लाह तआला ने तुमपर (इस हैसियत से) नाज़िल फ़रमाई है कि तुमको उसके ज़रिए से नसीहत फ़रमाते हैं। और अल्लाह तआला से डरते रहो और यकीन रखो कि अल्लाह तआला हर चीज़ को ख़ूब जानते हैं। ▲ (231) ♦

1. उन औरतों में इतनी सिफ़तें हों: ख़ाविन्द ने उनसे सोहबत या “खिलवते सहीहा” (यानी इतनी देर मियाँ-बीवी को तन्हाई का मौक़ा मिलना कि अगर चाहें तो सोहबत कर सकें) की हो, उनको हैज (माहवारी) आता हो, आज़ाद हों यानी शरई कायदे से बाँदी न हों। जिस औरत से मर्द ने सोहबत या खिलवते सहीहा न की हो और उसको तलाक दे दे तो उसपर बिलकुल इद्दत लाज़िम नहीं, इद्दत के अन्दर दूसरे शौहर से निकाह दुरुस्त है।

2. तलाक पाई हुई औरत पर वाजिब है कि अपने माहवारी में होने या गर्भ से होने की हालत ज़ाहिर कर दे, ताकि उसके मुवाफिक़ इद्दत का हिसाब हो। मर्द पर औरत के ख़ास हुक्क ये हैं: अपनी गुंजाइश के मुताबिक़ उसको खाना, कपड़ा, रहने का घर और महर दे, उसको तंग न करे। और औरत पर मर्द के ख़ास हक़ ये हैं कि उसकी फ़रमाँबरदारी करे, उसकी ख़िदमत करे।

3. उस तलाक़ को ‘रज़ूअी’ कहते हैं जो कि दो बार से ज़्यादा न हो, और उसमें यह भी कैद है कि साफ़ लफ़्ज़ों से हों। और कायदे से मुराद यह है कि उसका तरीक़ा भी शरीअत के मुवाफिक़ हो और नीयत भी उसमें शरीअत के मुवाफिक़ हो, और अच्छे अन्दाज़ से भी मुराद यह है कि उसका तरीक़ा शरीअत के मुवाफिक़ हो। तथा अच्छे अन्दाज़ से छोड़ने के लिए ज़रूरी है कि नीयत भी शरीअत के मुताबिक़ हो यानी झगड़े का टालना मक़सूद हो, यह मक़सूद न हो कि उसका दिल तोड़ें, उसको ज़लील करें, इसलिए नरमी व हमदर्दी की रियायत ज़रूरी है।

4. औरत से माल ठहराकर छोड़ना इसकी दो सूरतें हैं। एक “खुला” दूसरा “तलाक अ़ला माल”। (शेष तफ़सीर पृष्ठ 68 पर)

और जब तुम (में ऐसे लोग पाए जाएँ कि वे) अपनी बीवियों को तलाक दे दें, फिर वे औरतें अपनी (इद्दत की) मीयाद भी पूरी कर चुकें तो तुम उनको इस बात से मत रोको कि वे अपने शौहरों से निकाह कर लें, जबकि आपस में सब रज़ामन्द हो जाएँ कायदे के मुवाफिक। इस (मज़मून) से नसीहत की जाती है उस शख्स को जो कि तुममें से अल्लाह पर और कियामत के दिन पर यकीन रखता हो, यह (यानी इस नसीहत को कबूल करना) तुम्हारे लिए ज़्यादा सफाई और ज़्यादा पाकी की बात है, और अल्लाह तआला जानते हैं और तुम नहीं जानते।¹ (232) और माएँ आपने बच्चों को पूरे दो साल दूध पिलाया करें, (यह मुद्दत) उसके लिए (है) जो दूध पिलाने की तक्मील करना चाहे। और जिसका बच्चा है (यानी बाप) उसके ज़िम्मे है उन (माओं) का खाना और कपड़ा कायदे के मुवाफिक, किसी शख्स को हुक्म नहीं दिया जाता मगर उसकी बर्दाश्त के मुवाफिक। किसी माँ को तकलीफ न पहुँचाना चाहिए उसके बच्चे की वजह से, और न किसी बाप को तकलीफ देनी चाहिए उसके बच्चे की वजह से,² और इसी तरह (यानी ज़िक्र हुए तरीके के मुताबिक) उसके ज़िम्मे है जो वारिस हो,³ फिर अगर दोनों दूध छुड़ाना चाहें अपनी रज़ामन्दी और मशिवरे से तो दोनों पर किसी किस्म का गुनाह नहीं, और अगर तुम लोग अपने बच्चों को (किसी और अन्ना का) दूध पिलवाना चाहो तब भी तुमपर कोई गुनाह नहीं, जबकि उनके हवाले कर दो जो कुछ उनको देना किया है कायदे के मुवाफिक, और हक तआला से डरते रहो, और यकीन रखो कि अल्लाह तआला तुम्हारे किए हुए कामों को खूब देख रहे हैं। (233) और जो लोग तुममें वफ़ात पा जाते हैं और बीवियाँ छोड़ जाते हैं, वे बीवियाँ अपने आपको (निकाह वगैरह से) रोके रखें चार महीने और दस दिन, फिर जब अपनी (इद्दत की) मीयाद ख़त्म कर लें तो तुमको कुछ गुनाह न होगा ऐसी बात में कि वे औरतें अपनी ज़ात के लिए (निकाह की) कुछ कार्रवाई करें कायदे के मुवाफिक, और अल्लाह तआला तुम्हारे कामों की ख़बर रखते हैं।⁴ (234) और तुमपर कोई गुनाह नहीं होगा जो (इन ज़िक्र की गई) औरतों को (निकाह का) पैग़ाम देने के बारे में कोई बात इशारे में कहो, या अपने दिल में (निकाह के इरादे को) छुपाओ, अल्लाह तआला को यह बात मालूम है कि तुम उन औरतों का (ज़स्र) ज़िक्र मज़कूर करोगे, लेकिन उनसे निकाह का वायदा (और गुफ्तगू) मत करो, मगर यह कि कोई बात कायदे के मुवाफिक कहो। और तुम निकाह के ताल्लुक का (फिलहाल) इरादा भी मत करो, यहाँ तक कि मुकर्ररा इद्दत अपनी इन्तिहा को (न) पहुँच जाए। और यकीन रखो इसका कि अल्लाह तआला को इत्तिला है तुम्हारे दिलों की बात की, सो अल्लाह तआला से डरते रहा करो। और यकीन रखो कि अल्लाह तआला माफ़ भी करने वाले हैं, हलीम भी हैं।⁵ (235) ♦

(पृष्ठ 66 का शेष) खुला यह है कि औरत कहे कि तू इतने माल पर मुझसे खुला कर ले और मर्द कहे कि मुझको मन्ज़ूर है। इसके कहते ही अगरचे तलाक का लफ़्ज़ न कहे मगर “तलाके बाइन” पड़ जाएगी, और उसी क़द्र माल औरत के ज़िम्मे वाजिब हो जाएगा। और ‘तलाक अला माल’ यह है कि मर्द औरत से कहे कि तुझको इस क़द्र माल के बदले तलाक है। इसका हुक्म यह है कि औरत मन्ज़ूर न करे तो तलाक नहीं होती और मन्ज़ूर कर ले तो “तलाके बाइन” हो जाएगी, और उस क़द्र माल औरत के ज़िम्मे वाजिब हो जाएगा।

5. इसको हलाला कहते हैं।

1. इस आयत में रोकने की सब सूरतें दाख़िल हैं, और हर सूरत में रोकने को मना फ़रमाया है।

2. यानी बच्चे के माँ-बाप आपस में किसी बात पर ज़िद्दा-ज़िद्दी न करें। माँ अगर किसी वजह से माज़ूर न हो तो उसके ज़िम्मे दियानत के तौर पर यानी अल्लाह के नज़दीक वाजिब है कि बच्चे को दूध पिलाए, जबकि वह निकाह वाली (बीवी) हो या इद्दत में हो, और उज़ूरत लेना दुर्मुस्त नहीं। और अगर तलाक के बाद इद्दत गुज़र चुकी तो उसपर बिना उज़ूरत दूध पिलाना वाजिब नहीं। अगर माँ दूध पिलाने से इनकार करे तो उसपर ज़बरदस्ती न की जाएगी। हाँ अगर बच्चा किसी का दूध ही नहीं लेता और न ऊपर का दूध पीता है तो माँ को मजबूर किया जाएगा। माँ दूध पिलाना चाहती है और उसके दूध में कोई ख़राबी भी नहीं तो बाप को जायज़ नहीं कि उसको न पिलाने दे और दूसरी अन्ना का दूध पिलाए। माँ दूध पिलाने पर रज़ामन्द है (शेष तफ़सीर पृष्ठ 70 पर)

तुमपर (महर का) कुछ मुतालबा और पकड़ नहीं अगर बीवियों को ऐसी हालत में तलाक दे दो कि न उनको तुमने हाथ लगाया है और न उनके लिए कुछ महर मुकर्रर किया है, और (सिर्फ) उनको एक जोड़ा दे दो। गुंजाइश वाले के ज़िम्मे उसकी हैसियत के मुवाफिक है और तंगदस्त के ज़िम्मे उसकी हैसियत के मुवाफिक जोड़ा देना कायदे के मुवाफिक वाजिब है, मामले के अच्छे लोगों पर। (236) और अगर तुम उन बीवियों को तलाक दो इससे पहले कि उनको हाथ लगाओ और उनके लिए कुछ महर भी मुकर्रर कर चुके थे तो जितना महर तुमने मुकर्रर किया हो उसका आधा (वाजिब) है, मगर यह कि वे औरतें (अपना आधा) माफ कर दें या यह कि वह शर्ख्स रियायत कर दे जिसके हाथ में निकाह का ताल्लुक (रखना और तोड़ना) है। और तुम्हारा माफ कर देना (ब-निस्बत वसूल करने के) तक्वे से ज्यादा करीब है। और आपस में एहसान करने से गफलत न करो। बेशक अल्लाह तआला सब कामों को खूब देखते हैं। (237) हिफाज़त करो सब नमाज़ों की (आम तौर पर) और दरमियान वाली नमाज़ की (खास तौर पर), और खड़े हुआ करो अल्लाह के सामने आज़िज़ बने हुए। (238) फिर अगर तुमको अन्देशा हो तो खड़े-खड़े या सवारी पर चढ़े-चढ़े पढ़ लिया करो। फिर जब तुमको इत्मीनान हो जाए तो तुम खुदा तआला की याद उस तरीके से करो जो तुमको सिखलाया है, जिसको तुम न जानते थे। (239) और जो लोग वफात पा जाते हैं तुममें से और छोड़ जाते हैं बीवियों को, वे वसीयत कर जाया करें अपनी उन बीवियों के वास्ते एक साल तक फायदा उठाने की, इस तौर पर कि वे घर से निकाली न जाएँ, हाँ अगर खुद निकल जाएँ तो तुमको कोई गुनाह नहीं उस कायदे की बात में जिसको वे अपने बारे में करें, और अल्लाह तआला ज़बरदस्त हैं, हिक्मत वाले हैं। (240) और सब तलाक दी हुई औरतों के लिए कुछ-कुछ फायदा पहुँचाना कायदे के मुवाफिक (यह) मुकर्रर हुआ है उनपर जो (शिक्र व कुफ्र से) परहेज़ करते हैं। (241) इसी तरह हक़ तआला तुम्हारे लिए अपने अहकाम बयान फरमाते हैं, इस उम्मीद पर कि

(पृष्ठ 68 का शेष)

लेकिन उसका दूध बच्चे को नुकसानदेह है तो बाप को जायज़ है कि उसको दूध न पिलाने दे और किसी अन्ना का दूध पिलवाए।

3. बाप के होते हुए बच्चे की परवरिश का खर्च सिर्फ बाप के ज़िम्मे है, और जब बाप मर जाए तो उसमें तफसील यह है कि अगर बच्चा माल का मालिक है तब तो उसी माल में से उसका खर्च होगा, और अगर माल का मालिक नहीं है तो उसके मालदार रिश्तेदारों में जो उसके मेहरम हैं और मेहरम होने के अलावा शरई तौर पर उसकी मीरास के हकदार भी हैं, पस ऐसे मेहरम वारिस रिश्तेदारों के ज़िम्मे उसका खर्च वाजिब होगा और उन रिश्तेदारों में माँ भी दाखिल है।

4. यह इद्दत उस बेवा की है जिसको हमल (गर्भ) न हो। और अगर हमल हो तो बच्चा पैदा होने तक उसकी इद्दत है, चाहे जनाज़ा लेजाने से पहले ही पैदा हो जाए या चार महीने दस दिन से भी ज्यादा में हो। यह मसला सूर: तलाक में आया। जिसका शौहर मर जाए उसको इद्दत के अन्दर सिंघार करना, सुर्मा और तेल दवा की ज़रूरत के बिना लगाना, मेहंदी लगाना, रंगीन कपड़े पहनना दुरुस्त नहीं, और दूसरे निकाह के लिए खुली बात-चीत करना भी दुरुस्त नहीं जैसा कि अगली आयत में आता है। और रात को दूसरे के घर में रहना भी दुरुस्त नहीं।

5. यहाँ इद्दत के अन्दर चार काम ज़िक्र किए गए हैं, दो ज़बान के और दो दिल के, और हर एक का अलग हुक्म है। अव्वल ज़बान से खुले तौर पर पैगाम देना, यह हराम है। “ला तुवाअिदुहुन्-न सिरन्” में इसका ज़िक्र है। दूसरे ज़बान से इशारे के तौर पर कहना, यह जायज़ है। “ला जुना-ह अलैकुम्” और “कौलम्-मअरूफन्” में इसका ज़िक्र है। तीसरे दिल से यह इरादा करना कि अभी यानी इद्दत के अन्दर निकाह कर लेंगे, यह भी हराम है। क्योंकि इद्दत के अन्दर निकाह करना हराम है, और हराम का इरादा करना हराम है। “ला तअज़िम्” में इसका ज़िक्र है। चौथे दिल से यह इरादा करना कि इद्दत के बाद निकाह कर लेंगे, यह जायज़ है। “अकान्तुम् फी अन्फुसिकुम्” में इसका ज़िक्र है।

1. जिस औरत का महर निकाह के वक्त मुकर्रर हुआ हो उसको सोहबत व मुकम्मल तन्हाई से पहले अगर तलाक दे दी हो तो मुकर्रर किए हुए महर का आधा मर्द के ज़िम्मे वाजिब होगा, हाँ अगर औरत माफ कर दे या मर्द पूरा दे दे तो इख्तियारी बात है।

2. कसूरत से उलमा का कौल बाज़ हदीसों की दलील से यह है कि बीच वाली नमाज़ ‘असर’ है क्योंकि इसके एक तरफ दो नमाज़ें दिन की हैं ‘फज़्र’ और ‘जोहर’ और एक तरफ दो नमाज़ें रात की हैं ‘मगरिब’ व ‘इशा’। (शेष तफसील पृष्ठ 72 पर)

तुम समझो (और अमल करो)। (242) ♦

(ऐ मुख़ातब!) तुझको उन लोगों का किस्सा तहकीक़ नहीं हुआ जो कि अपने घरों से निकल गए थे, और वे लोग हज़ारों ही थे मौत से बचने के लिए, सो अल्लाह तआला ने उनके लिए (हुक्म) फ़रमा दिया कि मर जाओ, फिर उनको जिन्दा कर दिया। बेशक अल्लाह तआला बड़ा फज़ल करने वाले हैं लोगों (के हाल) पर, मगर अक्सर लोग शुक्र नहीं करते। (243) (इस किस्से में ग़ौर करो) और अल्लाह की राह में किताल करो और यकीन रखो इस बात का कि अल्लाह तआला ख़ूब सुनने वाले (और) ख़ूब जानने वाले हैं। (244) (ऐसा) कौन शख्स है जो अल्लाह तआला को कर्ज़ दे अच्छे तौर पर कर्ज़ देना, फिर अल्लाह तआला उस (के सवाब) को बढ़ाकर बहुत-से हिस्से कर दे,¹ और अल्लाह कमी करते हैं और फ़राख़ी “यानी वुसूअत” करते हैं, और तुम उसी की तरफ़ (मरने के बाद) ले जाए जाओगे। (245) (ऐ मुख़ातब!) तुझको बनी इसराईल की जमाअत का किस्सा जो मूसा के बाद हुआ है तहकीक़ नहीं हुआ, जबकि उन लोगों ने अपने एक पैग़म्बर से कहा कि हमारे लिए एक बादशाह मुक़र्रर कर दीजिए कि हम अल्लाह की राह में (जालूत से) किताल करें। (उन पैग़म्बर ने) फ़रमाया: क्या यह एहतिमाल “यानी वहम व अन्देशा” नहीं कि अगर तुमको जिहाद का हुक्म दिया जाए तो तुम (उस वक़्त) जिहाद न करो? वे लोग कहने लगे कि हमारे वास्ते ऐसा कौन-सा सबब होगा कि हम अल्लाह की राह में जिहाद न करें? हालाँकि हम अपनी बस्तियों और अपने बेटों से भी जुदा कर दिए गए हैं, फिर जब उन लोगों को जिहाद का हुक्म हुआ तो बहुत थोड़े-से लोगों को छोड़कर (बाकी) सब फिर गए। और अल्लाह तआला ज़ालिमों को ख़ूब जानते हैं? (246) और उन लोगों से उनके पैग़म्बर ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने तुमपर तालूत को बादशाह मुक़र्रर फ़रमाया है। वे कहने लगे उनको हमपर हुक्मरानी का हक़ कैसे हासिल हो सकता है? हालाँकि उनकी ब-निस्बत हम हुक्मरानी के ज़्यादा हक़दार हैं, और उनको तो कुछ माली गुंजाइश भी नहीं दी गई। (उन पैग़म्बर ने जवाब में) फ़रमाया कि (अव्वल तो) अल्लाह तआला ने तुम्हारे मुकाबले में उनको चुना है, और (दूसरे) इल्म और जसामत “यानी भारी-भरकम होने और डील-डोल” में उनको ज़्यादाती दी है,³ और (तीसरे) अल्लाह तआला अपना मुल्क जिसको चाहें दें, और (चौथे) अल्लाह तआला वुसूअत देने वाले, जानने वाले हैं। (247) और उनसे उनके पैग़म्बर ने फ़रमाया कि उनके (अल्लाह की जानिब से)

(पृष्ठ 70 का शेष) और अज़ीज़ी की तफ़सीर हदीस में ख़ामोशी के साथ आई है। इसी आयत से नमाज़ में बातें करने की मनाही हुई, इससे पहले बोलना दुरुस्त था।

3. जब मीरास की आयत नाज़िल हो गई, घर-बाहर सब तरफ़ के में से औरत का हक़ मिल गया तो यह आयत मन्सूख़ हो गई।

4. निकाह और तलाक़ वग़ैरह के अहक़ाम में जगह-जगह “इत्तकुल्ला-ह” और “हुदूदुल्लाह” और “समीअुन् अलीमुन्” और “अज़ीजुन् हकीमुन्” और “बसीरुन्” और “ख़बीरुन्” और “हुमुज्जालिमून्” और “फ-क़द् ज-ल-म नफ़्सहू” वग़ैरह का आना कतई दलील है कि ये सब अहक़ाम शरीअत में मक़सूद और वाज़िब हैं। बतौर मशिवरे के नहीं जिनमें तर्मीम व तब्दीली करने का या अमल न करने का हमको नज़ुज़ बिल्लाह इख़्तियार हो।

1. कर्ज़ मजाज़न् कह दिया वरना सब खुदा ही की मिल्क है। मतलब यह है कि जैसे कर्ज़ का बदला ज़रूर ही दिया जाता है इसी तरह तुम्हारे खर्च करने का बदला ज़रूर मिलेगा। और बढ़ाने का बयान एक हदीस में इस तरह आया है कि अगर एक छुवारा अल्लाह की राह में खर्च किया जाए तो खुदा तआला उसको इतना बढ़ाते हैं कि वह उहुद पहाड़ से ज़्यादा हो जाता है।

2. उन बनी इसराईल ने हक़ तआला के अहक़ाम को छोड़ दिया था, अमालिका के काफ़िरों को उनपर मुसल्लत कर दिया गया, उस वक़्त उन लोगों को इस्लाह की फ़िक्र हुई। और उन पैग़म्बर का नाम शमवील मशहूर है।

3. बादशाह होने के लिए इल्म की ज़्यादा ज़रूरत है ताकि मुल्क के इन्तिज़ाम पर कादिर हो और जसामत (भारी-भरकम और डील-डोल का होना) भी इस मायने में मुनासिब है कि मुवाफ़िक़ व मुख़ालिफ़ के दिल में वक़अत व रोब पैदा हो।

बादशाह होने की यह निशानी है कि तुम्हारे पास वह सन्दूक आ जाएगा जिसमें तस्कीन (और बरकत) की चीज़ है तुम्हारे रब की तरफ से, और कुछ बची हुई चीज़ें हैं जिनको (हज़रत) मूसा (अलैहिस्सलाम) और (हज़रत) हारून (अलैहिस्सलाम) की औलाद छोड़ गई है। उस (सन्दूक) को फरिश्ते ले आएँगे। उसमें तुम लोगों के वास्ते पूरी निशानी है अगर तुम यकीन लाने वाले हो।' (248) ♦

फिर जब तालूत फौजों को लेकर (बैतुल मक्दिस् से अमालिका की तरफ) चले तो उन्होंने कहा कि हक़ तआला तुम्हारा इम्तिहान करेंगे एक नहर से। सो जो शख्स (बहुत ज़्यादा) पीना शुरू कर दिया, मगर थोड़े आदमियों ने उनमें से ¹ सो जब तालूत और जो मोमिनीन उनके साथ थे नहर के पार उतर गए, कहने लगे कि आज तो हममें जालूत और उसके लश्कर से मुकाबले की ताक़त मालूम नहीं होती, (यह सुनकर) ऐसे लोग जिनको यह ख़्याल था कि वे अल्लाह तआला के रू-ब-रू पेश होने वाले हैं, कहने लगे कि कितनी ही बार बहुत-सी छोटी-छोटी जमाअतें बड़ी-बड़ी जमाअतों पर खुदा के हुक्म से ग़ालिब आ गई हैं, और अल्लाह तआला मुस्तक़िल रहने और जमने वालों का साथ देते हैं। (249) और जब जालूत और उसकी फौजों के सामने (मैदान में) आए तो कहने लगे: ऐ हमारे परवरिदागर! हमपर इस्तिक़लाल "यानी मज़बूती और मुस्तक़िल मिज़ाजी" (ग़ैब से) नाज़िल फ़रमाइए और हमारे क़दम जमाए रखिए और हमको इस काफ़िर कौम पर ग़ालिब कीजिए। ² (250) फिर (तालूत वालों ने जालूत वालों को) खुदा तआला के हुक्म से शिकस्त दे दी और दाऊद (अलैहिस्सलाम) ने जालूत को क़त्ल कर डाला, और उनको (यानी दाऊद को) अल्लाह तआला ने हुक्मत और हिक्मत अता फ़रमाई, और भी जो-जो मन्ज़ूर हुआ उनको तालीम फ़रमाया। और अगर यह बात न होती कि अल्लाह तआला बाज़े आदमियों को बाज़ों के ज़रिये से दफ़ा करते रहा करते हैं तो सर-ज़मीन "यानी दुनिया" (पूरी की पूरी) फ़साद और बिगाड़ से भर जाती, लेकिन अल्लाह तआला बड़े फज़ल वाले हैं जहान वालों पर। ³ (251) ये अल्लाह तआला की आयतें हैं जो सही-सही तौर पर हम तुमको पढ़-पढ़कर सुनाते हैं, और (इससे साबित है कि) आप बेशक पैग़म्बरों में से हैं। (252)

1. उस सन्दूक में तबर्क़ात थे। जालूत जब बनी इसराईल पर ग़ालिब आया था तो यह सन्दूक भी ले गया था। जब अल्लाह को उस सन्दूक का पहुँचाना मन्ज़ूर हुआ तो यह सामान किया कि जहाँ उस सन्दूक को रखते वहाँ ही सख़्त बलाएँ नाज़िल होतीं। आख़िर उन लोगों ने एक गाड़ी पर उसको लादकर बैलों को हॉक़ दिया। फरिश्ते उसको हॉक़कर यहाँ पहुँचा गए, जिससे बनी इसराईल को बड़ी खुशी हुई और तालूत बादशाह मान लिए गए।

2. इस इम्तिहान की हिक्मत और वजह नाचीज़ (हज़रत थानवी रहमतुल्लाहि अलैहि) के जौक में यह मालूम होती है कि ऐसे मौकों पर जोश व ख़रोश और भीड़-भाड़ बहुत हो जाया करती है, लेकिन वक़्त पर जमने वाले कम होते हैं और उस वक़्त ऐसों का उखड़ जाना बाकी लोगों के पाँव भी उखाड़ देता है, अल्लाह तआला को ऐसे लोगों का अलग करना मन्ज़ूर था।

3. इस दुआ की तरतीब बड़ी पाकीज़ा है कि ग़ल्बे के लिए चूँकि क़दम जमाने की ज़रूरत है इसलिए पहले उसकी दुआ की, और साबित-क़दमी का मदार दिल के जमने पर है इसलिए उससे पहले दिल के जमने और मुस्तक़िल रहने की दुआ की।

4. चूँकि क़ुरआन के बड़े मक़सिद में से हज़ुरे पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नुबुव्वत का साबित करना भी है, इसलिए अक्सर जिस जगह किसी मज़मून के साथ मुनासबत होने से मौका होता है वहाँ उसको दोहराया जाता है। चुनाँचे इस मक़ाम पर इस किससे की सही ख़बर देना ऐसे तौर पर कि न आपने कहीं पढ़ा न किसी से सुना न आपने देखा, मोज़िज़ा होने की बिना पर नुबुव्वत के दावे के सच्चा होने की खुली दलील है, इसलिए आगे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नुबुव्वत पर इस्तिक़लाल फ़रमाते हैं।

तीसरा पार: तिल्करूसुलु

सूर: ब-कर: आयत (253 से 286)

ये हज़रते मुसलीन ऐसे हैं¹ कि हमने उनमें से बाज़ों को बाज़ों पर फौकियत दी है, (मिसाल के तौर पर) बाज़े उनमें वे हैं जो अल्लाह तआला से हम-कलाम हुए और बाज़ों को उनमें से बहुत-से दर्जों पर सरफराज़ किया। और हमने (हज़रत) ईसा बिन मरियम को खुली-खुली दलीलें अता फरमाई, और हमने उनकी ताईद रूहुल-कुदुस (यानी जिबराईल) से फरमाई। और अगर अल्लाह तआला को मन्ज़ूर होता तो (उम्मत के) जो लोग उनके बाद हुए आपस में कत्ल व किताल न करते, बाद इसके कि उनके पास (हक बात के) दलाइल पहुँच चुके थे, लेकिन वे लोग (आपस में दीन में) मुख्तलिफ़ हुए, सो उनमें कोई तो ईमान लाया और कोई काफिर रहा, (और नौबत कत्ल व किताल की पहुँची) और अगर अल्लाह तआला को मन्ज़ूर होता तो वे लोग आपस में कत्ल व किताल न करते, लेकिन अल्लाह तआला जो चाहते हैं करते हैं² (253) ♦

ऐ ईमान वालो! खर्च करो उन चीज़ों में से जो हमने तुमको दी हैं, इससे पहले कि वह (कियामत का) दिन आ जाए जिसमें न तो खरीद व फरोख्त होगी और न दोस्ती होगी, और न (बिना अल्लाह की इजाज़त के) कोई सिफारिश होगी, और काफिर लोग ही जुल्म करते हैं। (तो तुम ऐसे मत बनो)³ (254) अल्लाह तआला (ऐसा है कि) उसके सिवा कोई इबादत के काबिल नहीं,⁴ जिन्दा है संभालने वाला है (तमाम आलम का) न उसको ऊँच दबा सकती है और न नींद, उसी के मम्लूक हैं सब जो कुछ आसमानों में हैं और जो कुछ ज़मीन में हैं, ऐसा कौन शख्स है जो उसके पास (किसी की) सिफारिश कर सके बिना उसकी इजाज़त के,⁵ वह जानता है उनके तमाम हाज़िर व गायब हालात को, और वे मौजूदात उसके मालूमात में से किसी चीज़ को अपने इल्मी इहाते “यानी जानकारी के घेरे” में नहीं ला सकते, मगर जिस कद्र (इल्म देना) वही चाहे, उसकी कुर्सी ने सब आसमानों और ज़मीन को अपने अन्दर ले रखा है,⁶ और अल्लाह को उन दोनों की हिफाज़त कुछ गिराँ नहीं गुज़रती, और वह आलीशान और अज़ीमुशान है। (255) दीन में ज़बरदस्ती (का अपने आपमें कोई मौका) नहीं,⁷ (क्योंकि) हिदायत यकीनन गुमराही से मुन्ताज़ “यानी अलग और नुमायाँ” हो चुकी है, सो जो शख्स शैतान से बद-एतिकाद हो और अल्लाह तआला के साथ अच्छा एतिकाद रखे (यानी इस्लाम कबूल कर ले) तो उसने बड़ा मज़बूत हल्का थाम लिया, जिसको किसी तरह शिकस्तगी नहीं⁸ (हो सकती) और अल्लाह ख़ूब सुनने वाले (और) ख़ूब जानने वाले हैं। (256) अल्लाह साथी है उन

1. चूँकि ऊपर की आयत में जिम्नी तौर पर पैगम्बरों का मुख्तसरन् ज़िक्र आ गया था इसलिए इस आयत में किसी कद्र तफसील उनमें से बाज़ हज़रत के हालात व कमालात की और फिर उनके ज़िक्र की मुनासबत से उनकी उम्मतों की एक खास हालत और उस हालत के वजूद में आने में खुदा की हिकमत व मस्तहत के शामिल होने की तरफ़ इशारा, ये सब मज़ामीन ज़िक्र किये जाते हैं।
2. इस मज़मून में एक तरह से तसल्ली देना है। जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अल्लाह तआला ने यह बात सुना दी कि और भी पैगम्बर मुख्तलिफ़ दर्जों के गुज़रे हैं, लेकिन ईमान किसी की उम्मत में आम नहीं हुआ, किसी ने मुवाफकत की, किसी ने मुखालफत की। और इसमें भी हक़ तआला की हिकमत होती है, भले ही हर शख्स पर ज़ाहिर न हों मगर मुख्तसर तौर पर इतना अकीदा रखना ज़रूरी और लाज़िम है कि कोई हिकमत ज़रूर है।
3. मतलब यह है कि जो नेक अमल दुनिया में छूट जाएगा फिर वहाँ उसकी कोई तलाफ़ी कुदरत से ख़ारिज हो जाएगी। चुनौते तलाफ़ी के तरीकों में से कुछ तरीके तो खुद ही न होंगे, जैसे खरीद व फरोख्त, और बाज़े आम न होंगे जैसे दोस्ती, बाज़े इख्तियारी न होंगे जैसे शफाअत। और इससे मकसूद कियामत के दिन नेक आमाल के बदले और नतीजे को हासिल करने पर कादिर न होने का याद दिलाना है।
4. इस आयत का लकब “आयतुल कुर्सी” है।
5. कियामत में अम्बिया और औलिया गुनाहगारों की शफाअत करेंगे। वे पहले हक़ तआला की मरज़ी पा लेंगे जब शफाअत करेंगे।
6. कुर्सी अर्श से छोटा और आसमानों से बड़ा एक ज़िम्म है। (शेष तफसीर पृष्ठ 78 पर)

लोगों का जो ईमान लाए, उनको (कुफ़ की) अन्धेरियों से निकालकर (या बचाकर) (इस्लाम के) नूर की तरफ लाता है, और जो लोग काफ़िर हैं उनके साथी शयातीन हैं, (इनसानी या जिन्नी) वे उनको (इस्लाम के) नूर से निकालकर (या बचाकर कुफ़ की) अन्धेरियों की तरफ ले जाते हैं, ऐसे लोग दोज़ख में रहने वाले हैं, (और) ये लोग उसमें हमेशा-हमेशा रहेंगे। (257) ♦

(ऐ मुखातब!) तुझको उस शख्स का किस्सा मालूम नहीं हुआ (यानी नमरूद का) जिसने (हज़रत) इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) से मुबाहसा किया था, अपने परवर्दिगार के (वजूद के) बारे में, इस वजह से कि खुदा तआला ने उसको हुक्मत दी थी। जब इब्राहीम ने फरमाया कि मेरा परवर्दिगार ऐसा है कि वह ज़िन्दा करता है और मारता है, कहने लगा कि मैं भी ज़िन्दा करता हूँ और मारता हूँ। इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया: अल्लाह तआला सूरज को (हर दिन) पूरब से निकालता है तू (एक ही दिन) पश्चिम से निकाल दे, इसपर चकित रह गया वह काफ़िर (और कुछ जवाब बन न आया) और अल्लाह तआला (की आदत है कि) ऐसे बेजा राह पर चलने वालों को हिदायत नहीं फरमाते। (258) या तुमको इस तरह का किस्सा भी मालूम है जैसे एक शख्स था¹ कि एक बस्ती पर ऐसी हालत में उसका गुज़र हुआ कि उसके मकानात अपनी छतों पर गिर गए थे,² कहने लगा कि अल्लाह तआला इस बस्ती (के मुद्दों) को उसके मरने के बाद किस कैफ़ियत से ज़िन्दा करेंगे, सो अल्लाह तआला ने उस शख्स को सौ साल तक मुर्दा रखा, फिर उसको ज़िन्दा कर उठाया (और फिर) पूछा कि तू कितनी मुद्दत इस हालत में रहा? उस शख्स ने जवाब दिया कि एक दिन रहा हूँगा या एक दिन से भी कम, अल्लाह तआला ने फरमाया कि नहीं! बल्कि तू सौ साल रहा है।³ तू अपने खाने (की चीज़) और पीने (की चीज़) को देख ले कि नहीं सड़ी-गली, और (दूसरे) अपने गधे की तरफ नज़र कर, और तांकि हम तुझको एक नज़ीर लोगों के लिए बना दें, और (इस गधे की) हड्डियों की तरफ नज़र कर कि हम उनको किस तरह तरकीब दिए देते हैं, फिर उनपर गोशत चढ़ाए देते हैं। फिर जब यह सब कैफ़ियत उस शख्स को वाज़ेह हो गई तो कह उठा कि मैं यकीन रखता हूँ कि बेशक अल्लाह तआला हर चीज़ पर पूरी कुदरत रखते हैं।⁴ (259) और (उस वक़्त को याद करो) जबकि इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने अर्ज़ किया कि ऐ मेरे परवर्दिगार! मुझको दिखला दीजिए कि आप मुद्दों को किस कैफ़ियत से ज़िन्दा करेंगे। इशाद फरमाया: क्या तुम यकीन नहीं लाए? उन्होंने अर्ज़ किया कि यकीन क्यों न लाता, लेकिन इस गरज़ से यह दरख्वास्त करता हूँ कि मेरे दिल को सुकून हो जाए।⁵ इशाद हुआ कि अच्छा तो तुम चार पक्षी लो फिर उनको (पालकर) अपने लिए हिला लो, फिर हर पहाड़ पर उनमें का एक-एक हिस्सा रख दो (और) फिर उन सबको बुलाओ, (देखो) तुम्हारे पास सब दौड़ते चले आएंगे, और ख़ूब यकीन रखो इस बात का कि हक़ तआला ज़बरदस्त हैं, हिक्मत वाले हैं।⁶ (260) ♦

(पृष्ठ 76 का शेष) 7. ऊपर आयत “व इन्न-क ल-मिन्नल मुसली-न” में पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की रिसालत, और “आयतुल कुसी” में हक़ तआला की तौहीद मजकूर हुई है, और यही दो चीज़ें इस्लाम की असल और बुनियादी हैं, तो उनके साबित करने से दीने इस्लाम का हक़ होना भी लाज़िमी तौर पर साबित हो गया। इस आयत में इसी से निकालते हुए इस्लाम का ज़बरदस्ती का महल न होना इशाद फरमाते हैं।

8. इस्लाम को मज़बूत पकड़ने वाला चूँकि हलाकत व घाटे से महफूज़ रहता है इसलिए उसको ऐसे शख्स से तश्बीह दी जो किसी मज़बूत रस्सी का हल्का हाथ में मज़बूत थाम कर गिरने से महफूज़ रहता है।

फ़ायदा:- अगर मुर्तद (जो दीन से फिर गया हो) पर या काफ़िर हर्बी पर दलील के मछ्फ़ी होने की वजह से इक़राह यानी ज़बरदस्ती की जाए जैसा कि शरीअत में हुक्म है तो यह अपने आपमें “इक़राह” की नफ़ी के खिलाफ़ नहीं।

1. रूहुल-मआनी में हाकिम की रिवायत से हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से और इसहाक़ बिन बशर की रिवायत से हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु व अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु से नकल किया है कि यह बुजुर्ग उज़ैर अलैहिस्सलाम हैं।

2. यानी पहले छतें गिरीं फिर उनपर दीवारें गिर गईं। मुराद यह कि किसी हादसे से वह बस्ती बिल्कुल वीरान हो गई थी और सब आदमी मर-मरा गए थे।

3. यह तो यकीन था कि अल्लाह तआला कियामत में मुद्दों को ज़िन्दा कर देंगे, मगर उस वक़्त के ज़िन्दा करने का जो ख़्याल ग़ालिब हुआ तो अजीब मामला होने की वजह से एक हैरत-सी दिल पर ग़ालिब हो गई, और चूँकि अल्लाह तआला एक काम को कई तरह कर सकते हैं इसलिए तबीयत में इसकी ख़्वाहिश हुई कि खुदा जाने ज़िन्दा करना किस सूरत से होगा। (शेष तफ़सीर पृष्ठ 80 पर)

जो लोग अल्लाह की राह में अपने मालों को खर्च करते हैं, उनके खर्च किए हुए मालों की हालत ऐसी है जैसे एक दाने की हालत (अल्लाह तआला के नजदीक) जिससे (फर्ज करो) सात बालें जमें (और) हर बाल के अन्दर सौ दाने हों, और यह बढ़ोत्तरी खुदा तआला जिसको चाहता है अता फरमाता है, और अल्लाह तआला बड़ी वुसअत वाले हैं, जानने वाले हैं।¹ (261) जो लोग अपना माल अल्लाह की राह में खर्च करते हैं, फिर खर्च करने के बाद न तो (उसपर) एहसान जतलाते हैं और न (बर्ताव से उसको) तकलीफ पहुँचाते हैं।² उन लोगों को उन (के आमाल) का सवाब मिलेगा उनके परवर्दिगार के पास, और न उनपर कोई खतरा होगा और न वे गमगीन होंगे। (262) (कुछ पास न होने के वक्त) मुनासिब बात कह देना और दरगुज़र करना (हज़ार दर्जे) बेहतर है ऐसी ख़ैरात (देने) से जिसके बाद तकलीफ़ पहुँचाई जाए। और अल्लाह तआला ग़नी हैं, हलीम हैं।³ (263) ऐ ईमान वालो! तुम एहसान जतलाकर या तकलीफ़ पहुँचाकर अपनी ख़ैरात को बर्बाद मत करो, उस शख्स की तरह जो अपना माल खर्च करता है (महज़) लोगों को दिखलाने की गरज़ से, और ईमान नहीं रखता अल्लाह पर और कियामत के दिन पर, सो उस शख्स की हालत ऐसी है जैसे एक चिकना पत्थर (हो) जिसपर कुछ मिट्टी (आ गई) हो फिर उसपर जोर की बारिश पड़ जाए सो उसको बिलकुल साफ़ कर दे, ऐसे लोगों को अपनी कमाई ज़रा भी हाथ न लगेगी, और अल्लाह तआला काफ़िर लोगों को (जन्नत का) रास्ता न बतलायेंगे।⁴ (264) और उन लोगों के खर्च किए हुए माल की हालत जो अपने मालों को खर्च करते हैं अल्लाह तआला की रिज़ा हासिल करने की गरज़ से, और इस गरज़ से कि अपने नफ़्तों (को इस कठिन काम का आदी बनाकर उन) में पुख़्तगी पैदा करें, उनकी हालत एक बाग़ की तरह है जो किसी टीले पर हो कि उसपर जोर की बारिश पड़ी हो, फिर वह दोगुना (चौगुना) फल लाया हो, और अगर ऐसे जोर की बारिश न पड़े तो हल्की फुवार भी उसको काफी है, और अल्लाह तुम्हारे कामों को ख़ूब देखते हैं। (265) भला तुम में से किसी को यह बात पसन्द है कि उसका एक बाग़ हो खजूरों का और अंगूरों का, उसके (पेड़ों के) नीचे नहरें बहती हों, उस शख्स के यहाँ उस बाग़ में और भी हर किस्म के (मुनासिब) मेवे हों, और उस शख्स का बुढ़ापा आ गया हो और अहल व अयाल “यानी घर वाले और बाल बच्चे” भी हों जिनमें (कमाने की) ताक़त नहीं, से उस बाग़ पर बगूला आए जिसमें आग का (माद्दा) हो, फिर वह बाग़ जल जाए। अल्लाह तआला इसी तरह नज़ीरें बयान फरमाते हैं तुम्हारे लिए ताकि तुम सोचा करो।⁵ (266) ♦

ऐ ईमान वालो! (नेक काम में) खर्च किया करो उम्दा चीज़ को अपनी कमाई में से, और उसमें से जो कि हमने

(पृष्ठ 78 का शेष) अल्लाह तआला को मन्ज़ूर हुआ कि उसका तमाशा उनको दुनिया ही में दिखला दें ताकि एक नज़ीर के ज़ाहिर हो जाने से लोगों को ज़्यादा हिदायत हो।

4. उनकी हैरत का जवाब इस मजमूई कैफ़ियत से देना, इसकी वजह नाचीज़ (हज़रत थानवी रहमतुल्लाहि अलैहि) के जौक में यह है कि हैरत की बात यानी कियामत के दिन ज़िन्दा करना मुश्तमिल है कई हिस्सों पर, अब्बल तो खुद ज़िन्दा करना, दूसरे लम्बी मुदत के बाद ज़िन्दा करना, तीसरे ख़ास कैफ़ियत से ज़िन्दा करना, चौथे उस मुदत तक रूह का बाकी रखना, पाँचवे ज़िन्दा होने के बाद बरजुख़ में रहने की मुदत मालूम न होना। पहले जुज़ पर खुद उनके ज़िन्दा करने और उनके ग़धे में जान डालने से दलालत की गई, और दूसरे जुज़ के साबित करने के लिए उनको सौ साल तक मुर्दा रखा, तीसरा जुज़ खुद ग़धा उनके सामने ज़िन्दा करके दिखला दिया, चौथे जुज़ का नमूना खान-पान का बाकी रखना और खुद उनके बदन का बाकी रखना दिखला दिया जो रूह के बाकी रहने के मुम्किन होने पर अच्छी तरह दलालत करता है, क्योंकि बदन और खान-पान अनासिर पर मुश्तमिल होने के सबब रूह के मुकाबले में तब्दीली और ख़राब होने के ज़्यादा काबिल हैं, और पाँचवे अमूर की नज़ीर उनका जवाब में “यौमन् औ बअ-ज़ यौमिन्” (एक दिन या उससे भी कम) कहना है, जैसा कि बिलकुल यही जवाब बाज़ महशर वाले भी देंगे।

5. यानी ज़िन्दा करने का तो यकीन है मगर अक्ली तौर पर उसकी मुख़्तलिफ़ कैफ़ियतें हैं, अब उनमें से मालूम नहीं कौन-सी कैफ़ियत होगी।

6. इस वाकिए को दिखला कर अल्लाह ने कियामत के दिन ज़िन्दा करने की कैफ़ियत बतला दी कि इसी तरह पहले बदन के हिस्से मुख़्तलिफ़ मक़ामात से जमा होकर जिसमें तैयार होंगे फिर उनमें रूह पड़ जाएगी।

1. नेक काम में खर्च करना नीयत के एतबार से तीन किस्म का है, एक नुमाइश के साथ, (शेष तफ़सीर पृष्ठ 82 पर)

तुम्हारे लिए ज़मीन से पैदा किया है, और रद्दी (नाकारा) चीज़ की तरफ़ नीयत मत ले जाया करो कि उसमें से खर्च करो, हालाँकि तुम कभी उसके लेने वाले नहीं हो मगर देखकर टाल जाओ (तो और बात है)¹ और यकीन रखो कि अल्लाह तआला किसी के मोहताज नहीं, तारीफ़ के लायक़ हैं। (267) शैतान तुमको मोहताजी से डराता है² और तुमको बुरी बात (यानी कन्जूसी) का मशिवरा देता है, और अल्लाह तुमसे वायदा करता है अपनी तरफ़ से गुनाह माफ़ कर देने का और ज़्यादा देने का, और अल्लाह तआला वुसूअत वाले हैं, ख़ूब जानने वाले हैं।³ (268) दीन की समझ जिसको चाहते हैं दे देते हैं, और (सच तो यह है कि) जिसको दीन की समझ मिल जाए उसको बड़ी ख़ैर की चीज़ मिल गई, और नसीहत वही लोग क़बूल करते हैं जो अक्ल वाले हैं। (यानी जो सही अक्ल रखते हैं) (269) और तुम लोग जो किसी किस्म का खर्च करते हो या किसी तरह की नज़्र “यानी मन्त” मानते हो, सो हक़ तआला को यकीनन सबकी इत्तिला है, और बेजा काम करने वालों का कोई साथी (और हिमायती) न होगा।⁴ (270) अगर तुम ज़ाहिर करके दो सदकों को तब भी अच्छी बात है, और अगर उनको छुपाओ और फकीरों को दे दो तो यह छुपाना तुम्हारे लिए ज़्यादा बेहतर है, और अल्लाह तआला (उसकी बरकत से) तुम्हारे कुछ गुनाह भी दूर कर देंगे। अल्लाह तआला तुम्हारे किए हुए कामों की ख़ूब ख़बर रखते हैं।⁵ (271) उन (काफ़िरों) को हिदायत पर ले आना कुछ आपके ज़िम्मे (फ़र्ज़ या वाजिब) नहीं, लेकिन खुदा तआला जिसको चाहें हिदायत पर ले आएँ। और (ऐ मुसलमानो!) जो कुछ तुम खर्च करते हो अपने फ़ायदे की ग़रज़ से करते हो, और तुम और किसी ग़रज़ से खर्च नहीं करते सिवाय हक़ तआला की ज़ाते पाक की रिज़ा हासिल करने के, और (तथा) जो कुछ माल खर्च कर रहे हो यह सब (यानी इसका सवाब) पूरा-पूरा तुमको मिल जाएगा, और तुम्हारे लिए इसमें ज़रा कमी न की जाएगी।⁶ (272) (सदकात) असल हक़ उन ज़रूरतमन्दों का है जो कैद हो गए हों अल्लाह की राह में,⁷ (और इसी वजह से) वे लोग कहीं मुल्क में चलने-फिरने की (आदतन) संभावना नहीं रखते, (और) नावाक़िफ़ उनको मालदार ख़्याल करता है उनके सवाल से बचने के सबब से, (अलबत्ता) तुम उनको उनके तर्ज़ से पहचान सकते हो (कि तंगदस्ती व फ़ाक़े से चेहरे पर असर ज़रूर आ जाता है) वे लोगों से लिपट कर माँगते नहीं फिरते, और जो माल खर्च करोगे बेशक हक़ तआला को उसकी ख़ूब इत्तिला है। ♦ (273) ♦

जो लोग खर्च करते हैं अपने मालों को रात और दिन में, (यानी वक़्त को ख़ास किए बग़ैर) खुले और छुपे तौर

(पृष्ठ 80 का शेष) उसका कुछ सवाब नहीं। दूसरे मामूली दरजे के इख़लास के साथ, उसका सवाब दस हिस्से मिलता है। तीसरे ज़्यादा इख़लास यानी उसके दरमियानी या आला दरजे के साथ, उसके लिए इस आयत में वायदा है दस से ज़्यादा सात सौ तक, और आयत “मन् ज़ल्लज़ी युकिरजुल्ला-ह.....” में इस सात सौ के वायदे के बाद और ज़्यादा का भी वायदा किया गया है।

2. बर्ताव से तकलीफ़ पहुँचाना यह कि जैसे अपने एहसान की बिना पर उसके साथ अपमान से पेश आए कि इससे दूसरा तकलीफ़ पाता है, और तकलीफ़ पहुँचाना हराम और अज़ाब को वाजिब करने वाला है। एहसान जताना भी इसमें आ गया।

3. नादारी (कुछ पास न होने) की कैद इसलिए लगाई कि गुंजाइश होते हुए ज़रूरतमन्द की मदद न करना खुद बुरा है, उसको बेहतर क्यों कहा जाता, अलबत्ता नादारी के वक़्त नरमी से जवाब दे देना और साइल की सख़्ती को टाल देना चूँकि सवाब का सबब है इसलिए इसको ख़ैर फ़रमाया।

4. मालूम होता है कि खर्च करने के लिए ईमान के साथ एक शर्त इख़लास का सही होना भी है, और एहसान जताने और तकलीफ़ पहुँचाने से बाज़ रहना उसके बाकी रहने की शर्त है, इसलिए मुनाफ़िक् और दिखावा करने वाले के खर्च करने को बातिल और एहसान जताने और तकलीफ़ पहुँचाने को बातिल करने वाला (यानी ख़ैरात को बेकार और जाया करने वाला) कहा गया, कि उसमें सही होने और बाकी रहने की शर्त मौजूद नहीं है।

5. ज़ाहिर बात है कि किसी को अपने लिए यह बात पसन्द नहीं आ सकती। पस जब तुम इस मिसाल के वाक़िए को पसन्द नहीं करते तो नेकियों के बातिल और बेकार करने को कैसे ग़वारा करते हो?

1. यह उस शख्स के लिए है जिसके पास उम्दा चीज़ हो और फिर वह बुरी और निकम्मी चीज़ खर्च करे। और जिसके पास अच्छी हो ही नहीं वह इस मुमानअत (मनाही) से बरी है और उसकी वह बुरी चीज़ मक़बूल है।

2. यानी अगर खर्च करोगे या अच्छा माल खर्च करोगे तो मोहताज हो जाओगे। (शेष तफ़सीर पृष्ठ 84 पर)

पर (यानी हालात को खास किए बगैर) सो उन लोगों को उनका सवाब मिलेगा अपने रब के पास, और उनपर कोई ख़तरा नहीं है और न वे ग़मगीन होंगे। (274) जो लोग सूद खाते हैं, नहीं खड़े होंगे (क़ियामत में क़ब्रों से) मगर जिस तरह खड़ा होता है ऐसा शख्स जिसको ख़बूती बना दे लिपट कर, (यानी हैरान व मद्होश) यह (सज़ा) इसलिए (होगी) कि उन लोगों ने कहा था कि बैअू “यानी तिजारत” भी तो सूद की तरह है, हालाँकि अल्लाह ने बैअू को हलाल फ़रमाया है और सूद को हराम करार दिया है। फिर जिस शख्स को उसके परवर्दिगार की तरफ़ से नसीहत पहुँची और वह बाज़ आ गया तो जो कुछ पहले (लेना) हो चुका है वह उसी का रहा, और (बातिन का) मामला उसका खुदा के हवाले रहा। और जो शख्स फिर लौट जाए ‘यानी दोबारा सूदी मामले में मशगूल हो जाए’ तो ये लोग दोज़ख़ में जाएँगे, वे उसमें हमेशा रहेंगे। (275) अल्लाह तआला सूद को मिटाते हैं¹ और सदकात को बढ़ाते हैं,² और अल्लाह पसन्द नहीं करते किसी कुफ़्र करने वाले को (और) किसी गुनाह के काम करने वाले को। (276) बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक काम किए और (खास तौर पर) नमाज़ की पाबन्दी की और ज़कात दी, उनके लिए उनका सवाब होगा उनके परवर्दिगार के पास, और (आख़िरत में) उनपर कोई ख़तरा नहीं होगा और न वे ग़मगीन होंगे।³ (277) ऐ ईमान वालो! अल्लाह तआला से डरो और जो कुछ सूद का बकाया है उसको छोड़ दो अगर तुम ईमान वाले हो। (278) फिर अगर तुम इसपर अमल न करोगे तो इश्तिहार सुन लो जंग का अल्लाह की तरफ़ से और उसके रसूल की तरफ़ से, (यानी तुमपर जिहाद होगा) और अगर तुम तौबा कर लोगे तो तुमको तुम्हारे असल माल मिल जाएँगे, न तुम किसी पर जुल्म करने पाओगे और न तुमपर कोई जुल्म करने पाएगा।⁴ (279) और अगर तंगदस्त हो तो मोहलत देने का हुक्म है खुशहाली तक। और यह (बात) कि माफ़ ही कर दो और ज़्यादा

(पृष्ठ 82 का शेष)

3. आयत का हासिल यह हुआ कि ऐसे खर्च करने में नुकसान तो बिल्कुल नहीं और नफ़ा हर तरह का है कि मफ़िरत भी मिले और फ़ज़ल भी। पस समझ का तकाज़ा यही है कि ऐसी हालत में शैतानी वस्वों को हरगिज़ क़बूल न करे। और अगर ज़ाहिर में और यकीनी तौर पर मोहताजी के असबाब व हालात मौजूद हों तो शरीअत खुद ऐसे शख्स को नफ़ली सदकात व ख़ैरात से रोकती है, और ऐसे शख्स के खर्च न करने को कन्ज़ूसी भी नहीं कह सकते।

4. बेजा काम करने वालों से न सिर्फ़ वे लोग मुराद हैं जो ज़रूरी शर्तों का लिहाज़ नहीं करते बल्कि वे भी मुराद हैं जो अहक़ाम की मुख़ालफ़त करते हैं, उनको खुले तौर पर वईद सुना दी।

5. यह आयत फ़र्ज़ और नफ़िल सब सदकात को शामिल है और सबमें छुपाना ही अफ़ज़ल है, और छुपाने के अफ़ज़ल होने से आयत में मुराद अपनी ज़ात में अफ़ज़ल होना है। पस अगर किसी मक़ाम पर किसी सबब से जैसे तोहमत को ख़त्म करने या इस उम्मीद पर कि लोग मेरी पैरवी करेंगे, वगैरह के सबब इज़हार को तरज़ीह हो जाए तो यह अपने आपमें अफ़ज़लियत के मनाफ़ी नहीं है। और यह जो कहा ‘कुछ गुनाह’ तो पज़ह इसकी यह है कि ऐसी नेकियों से सिर्फ़ छोटे गुनाह माफ़ होते हैं।

6. यानी तुमको अपने बदले से मतलब रखना चाहिए और बदला हर हाल में मिलेगा, फिर तुमको इससे क्या बहस कि हमारा सदका मुसलमान ही को मिले काफ़िर को न मिले। खुलासा यह कि नीयत भी तुम्हारी असल में अपना ही नफ़ा हासिल करने की है, और हकीक़त में भी हासिल खास तुम ही को होगा, फिर इसपर नज़र क्यों की जाती है कि यह नफ़ा खास इसी तरीक़े से हासिल किया जाए कि मुसलमान को ही सदका दें काफ़िर को न दें। और जानना चाहिए कि हदीस में जो आया है कि तेरा खाना खास मुतकी खाया करे तो मुराद उससे दावत का खाना है, और इस आयत में ज़रूरत का खाना मुराद है, पस टकराव और इख़िलाफ़ का शुब्हा न किया जाए।

7. यानी दीन की ख़िदमत में। और जानना चाहिए कि हमारे मुल्क में इस आयत के मिस्दाक़ (यानी जिनपर यह फिट आती है) सबसे ज़्यादा वे हज़रात हैं जो दीनी उलूम की ख़िदमत और उनको फैलाने में मशगूल हैं।

1. कभी तो दुनिया ही में सब बर्बाद हो जाता है, वरना आख़िरत में तो यकीनी बर्बादी है, क्योंकि वहाँ उसपर अज़ाब होगा।

2. कभी तो दुनिया में भी वरना आख़िरत में तो यकीनन बढ़ता है, क्योंकि वहाँ उसपर बहुत-सा सवाब मिलेगा, जैसा कि ऊपर की आयत में मज़कूर हुआ।

3. ऊपर की आयत में सूद खाने वालों का कौल “इन्-मल् बैअु मिस्तुरिबा” (शेष तफ़सीर पृष्ठ 86 पर)

बेहतर है तुम्हारे लिए, अगर तुमको (इसके सवाब की) ख़बर हो।¹ (280) और उस दिन से डरो जिसमें तुम अल्लाह तआला की पेशी में लाए जाओगे, फिर हर शख्स को उसका किया हुआ (बदला) पूरा-पूरा मिलेगा, और उनपर किसी किस्म का जुल्म न होगा। (281) ❖

ऐ ईमान वालो! जब उधार का मामला करने लगे,² एक मुकर्ररा मीयाद तक (के लिए) तो उसको लिख लिया करो। और यह ज़रूरी है कि तुम्हारे आपस में (जो) कोई लिखने वाला हो (वह) इन्साफ़ के साथ लिखे, और लिखने वाला लिखने से इनकार भी न करे, जैसा कि अल्लाह तआला ने उसको (लिखना) सिखला दिया, उसको चाहिए कि लिख दिया करे, और वह शख्स लिखवा दे जिसके ज़िम्मे हक़ वाजिब हो, और अल्लाह तआला से जो कि उसका परवर्दिगार है डरता रहे, और उसमें से ज़रा बराबर (बतलाने में) कमी न करे। फिर जिस शख्स के ज़िम्मे हक़ वाजिब था वह अगर कम-अक़ल हो या कमज़ोर बदन वाला हो या खुद लिखने की कुदरत न रखता हो,³ तो उसका कारकुन ठीक-ठीक तौर पर लिखाए। और दो शख्सों को अपने मर्दों में से गवाह (भी) कर लिया करो,⁴ फिर अगर वे दो गवाह मर्द (मयस्सर) न हों तो एक मर्द और दो औरतें (गवाह बना ली जाएँ) ऐसे गवाहों में से जिनको तुम पसन्द करते हो, ताकि उन दोनों औरतों में से कोई एक भूल भी जाए तो उनमें की एक दूसरी को याद दिला दे। और गवाह भी इनकार न किया करें जब (गवाह बनने के लिए) बुलाए जाया करें। और तुम उस (कर्ज़) के (बार-बार) लिखने से उकताया मत करो, चाहे वह (मामला) छोटा हो या बड़ा हो। यह लिख लेना इन्साफ़ को ज़्यादा कायम रखने वाला है अल्लाह के नज़दीक और शहादत का ज़्यादा दुरुस्त रखने वाला है और इस बात के लिए ज़्यादा मुनासिब है कि तुम (मामले के मुताल्लिक) किसी शुब्हा में न पड़ो, मगर यह कि कोई सौदा हाथों-हाथ हो, जिसको आपस में लेते देते हो तो उसके न लिखने में तुमपर कोई इल्जाम नहीं, और (इतना उसमें भी ज़रूर कर लिया करो कि) ख़रीद व बेच के वक़्त गवाह कर लिया करो, और किसी लिखने वाले को तकलीफ़ न दी जाए और न किसी गवाह को, और अगर तुम ऐसा करोगे तो इसमें तुमको गुनाह होगा, और खुदा से डरो और अल्लाह (का तुमपर एहसान है कि) तुमको तालीम फ़रमाता है और अल्लाह तआला सब चीज़ों के जानने वाले हैं।⁵ (282) और

(पृष्ठ 84 का शेष) उनके कुफ़ पर दलालत करता है। उसके मुकाबिल इस आयत में “आ-मनू” लाया गया। और वहाँ उनकी सूद की बद-अमली मज़कूर थी, जिससे उन लोगों का दुनिया की तरफ़ राग़िब होना भी समझ में आता था, यहाँ उनका अच्छे अमल करना मुख़्तसर तौर पर “अमिलुस्सालिहाति” से और तफ़सीली तौर पर अल्लाह की तरफ़ राग़िब होना “अक़ामुस्सला-त” से, और सूद का माल हासिल करने के बजाय उसके उलट माल ख़र्च करना “आतुज्ज़का-त” से ज़िक्र हुआ है। और ज़ाहिर है कि इन मुकाबलों की रियायत से कलाम में किस कदर हुस्न व खूबी आ गई।

4. इस आयत में जो यह फ़रमाया है कि अगर तुम तौबा कर लो तो तुम्हारा असल माल तुम्हें मिलेगा, इससे समझ में आता है कि तौबा न करने की सूरत में असल माल भी न मिलेगा।

1. मुफ़्तिस को मोहलत देना वाजिब है। जब उसको गुंजाइश हो फिर मुतालबे की इजाज़त है।

2. चाहे दाम उधार हो या जो चीज़ ख़रीदनी हो वह उधार हो।

3. जैसे गूँगा है और लिखने वाला उसका इशारा नहीं समझता, या जैसे दूसरे मुल्क का रहने वाला है और दूसरी ज़बान बोलता है और लिखने वाला उसकी बोली नहीं समझता।

4. शरीअत में दावे को साबित करने का असल मदार यही गवाह हैं अगरचे दस्तावेज़ न हो, और ख़ाली दस्तावेज़ बग़ैर गवाहों के ऐसे मामलात में हुज्जत और मोतबर नहीं। दस्तावेज़ लिखना सिर्फ़ याददाश्त की आसानी के लिए है कि उसका मज़मून सुनकर तबई तौर पर अक्सर वाकिआ याद आ जाता है।

5. लिखने में तीन फ़ायदे बयान फ़रमाए। अवल का हासिल यह है कि एक का हक़ (शेष तफ़सीर पृष्ठ 88 पर)

अगर तुम कहीं सफर में हो और (वहाँ) कोई लिखने वाला न पाओ, सो रहन रखने की चीजें (हैं) जो कब्जे में दे दी जाएँ।¹ और अगर एक-दूसरे का एतिबार करता हो तो जिस शख्स का एतिबार कर लिया गया है (यानी कर्ज लेने वाला) उसको चाहिए कि दूसरे का हक (पूरा-पूरा) अदा कर दे और अल्लाह तआला से जो कि उसका परवर्दिगार है डरे। और गवाही को मत छुपाया करो, और जो शख्स उसको छुपाएगा उसका दिल गुनाहगार होगा, और अल्लाह तआला तुम्हारे किए हुए कामों को खूब जानते हैं।² (283) ♦

अल्लाह तआला ही की मिल्क हैं सब जो कुछ कि आसमानों में हैं और जो कुछ ज़मीन में हैं। और जो बातें तुम्हारे नफ़्सों में हैं उनको अगर तुम ज़ाहिर करोगे या कि छुपाओगे हक तआला तुमसे हिसाब लेंगे,³ फिर (कुर्फ व शिर्क के अलावा) जिसके लिए मन्ज़ूर होगा बख़्श देंगे और जिसको मन्ज़ूर होगा सज़ा देंगे, और अल्लाह तआला हर चीज़ पर पूरी कुदरत रखने वाले हैं। (284) एतिकाद रखते हैं रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) उस चीज़ का जो उनके पास उनके रब की तरफ़ से नाज़िल की गई है, और मोमिनीन भी सबके-सब अक्कीदा रखते हैं अल्लाह के साथ और उसके फ़रिश्तों के साथ और उसकी किताबों के साथ और उसके पैग़म्बरों के साथ कि हम उसके पैग़म्बरों में से किसी में तफ़रीक नहीं करते, और उन सबने यूँ कहा कि हमने (आपका इर्शाद) सुना और खुशी से माना, हम आपकी बख़्शि़श चाहते हैं ऐ हमारे परवर्दिगार, और आप ही की तरफ़ (हम सबको) लौटना है। (285) अल्लाह तआला किसी शख्स को मुकल्लफ नहीं बनाता मगर उसी का जो उसकी ताक़त (और इख़्तियार) में हो। उसको सवाब भी उसी का मिलेगा जो इरादे से करे, और उसपर अज़ाब भी उसी का होगा जो इरादे से करे।⁴ ऐ हमारे रब! हमपर पकड़ न फ़रमाइए अगर हम भूल जाएँ या चूक जाएँ, ऐ हमारे रब! और हमपर कोई सख़्त हुक्म न भेजिए जैसे हमसे पहले लोगों पर आपने भेजे थे, ऐ हमारे रब! और हमपर कोई ऐसा बोझ (दुनिया या आख़िरत का) न डालिए जिसकी हमको सहाय न हो, और दरगुज़र कीजिए हमसे, और बख़्श दीजिए हमको, और रहम कीजिए हमपर, आप हमारे काम बनाने वाले हैं (और काम बनाने वाला तरफ़दार होता है) सो आप हमको काफ़िर लोगों पर ग़ालिब कीजिए।⁵ (286) ♦

(पृष्ठ 86 का शेष) दूसरे के पास न जाएगा न रहेगा। दूसरे का हासिल यह है कि गवाहों को आसानी होगी। तीसरे का हासिल यह है कि मामला करने वालों का जी साफ़ रहेगा। तीनों फ़ायदों का अलग-अलग होना ज़ाहिर है। और इन फ़ायदों का इस तरह बयान करना करीना है लिखने के मुस्तहब (अच्छा और पसन्दीदा) होने का, इसी तरह गवाह करना भी मुस्तहब है, अलबत्ता लिखने वाले और गवाह को नुक़सान पहुँचाना हराम है, “फुसूकुन् बिकुम्” इसका खुला करीना है। और यह जो फ़रमाया कि न लिखने में इल्ज़ाम नहीं तो मुराद यह है कि दुनिया का नुक़सान नहीं वरना गुनाह तो किसी मामले के न लिखने में नहीं है।

1. जम्हूर उलमा का इतिफ़ाक़ है कि रहन रखना जिस तरह सफ़र में जायज़ है हज़र (वतन और ठहरने की जगह) में भी जायज़ है। यहाँ ज़िक्र करने में सफ़र को ख़ास करने की वजह यह है कि हज़र के मुकाबले में सफ़र में इसकी ज़रूरत ज़्यादा पड़ेगी।

मसला: जो चीज़ रहन रखी जाए उसपर जब तक उसका कब्ज़ा न हो जाए जिसके पास वह रखी गई है, वह रहन नहीं होता।

2. शहादत (गवाही) का छुपाना दो तरह से है, एक यह कि बिल्कुल बयान न करे, दूसरे यह कि ग़लत-बयानी करे। दोनों में असल वाकिआ छुप गया और दोनों सूरतें हराम हैं। जब किसी हक़दार का हक़ बग़ैर उसकी शहादत के जाया होने लगे और वह दरख़्वास्त भी करे, तो उस वक़्त गवाही देने से इनकार करना हराम है। चूँकि शहादत का देना वाजिब है इसलिए उसपर उज़रत लेना जायज़ नहीं, अलबत्ता आने-जाने का ख़र्च और ज़रूरत के मुताबिक़ खाना-पीना साहिबे मामला के ज़िम्मे है। अगर ज़्यादा आ जाए तो बक़िया वापस कर दे।

3. ‘मा फी अन्फुसिकुम्’ से मुराद दिल की इख़्तियारी बातें हैं।

4. यहाँ जो सवाब व अज़ाब का मदार आमाल और मेहनत पर रखा, मुराद इससे सवाब व अज़ाब शुरूआत में है न कि किसी के देने या सबब बनने से।

5. हदीस में है कि ये सब दुआएँ कबूल हुईं।

3 सूर: आलि इमरान 89

सूर: आलि इमरान मदीना में नाज़िल हुई। इसमें 200 आयतें और 20 रुकूअ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

अलिफ्-लाम्-मीम् (1) अल्लाह तआला ऐसे हैं कि उनके सिवा कोई माबूद बनाने के काबिल नहीं और वह जिन्दा (हमेशा रहने वाले) हैं, सब चीज़ों के संभालने वाले हैं।¹ (2) अल्लाह तआला ने आपके पास कुरआन भेजा है हक के साथ इस कैफ़ियत से कि वह तस्दीक करता है उन (आसमानी) किताबों की जो उससे पहले नाज़िल हो चुकी हैं, और (इसी तरह) भेजा था तौरात और इन्जील को (3) इससे पहले लोगों की हिदायत के वास्ते, और अल्लाह तआला ने भेजे मोजिज़ात, बेशक जो लोग इनकारी हैं अल्लाह की आयतों के उनके लिए सख़्त सज़ा है, और अल्लाह तआला ग़ल्बे (और कुदरत) वाले हैं, (और) बदला लेने वाले हैं। (4) बेशक अल्लाह से कोई चीज़ छुपी हुई नहीं है, (न कोई चीज़) ज़मीन में और न (कोई चीज़) आसमान में। (5) वह ऐसी ज़ाते पाक है कि तुम्हारी सूरत (व शक्ल) बनाता है रहमों “यानी बच्चेदानियों” में, जिस तरह चाहता है। कोई इबादत के लायक नहीं सिवाय उसके, वह ग़ल्बे वाले हैं (और) हिक्मत वाले हैं। (6) वह ऐसा है जिसने नाज़िल किया तुमपर किताब को जिसमें का एक हिस्सा वे आयतें हैं जो कि मुराद के इश्तिबाह “यानी पोशीदा और मुश्तबह होने” से महफूज़ हैं।² और यही आयतें असली मदार हैं (इस) किताब का,³ और दूसरी आयतें ऐसी हैं जो कि मुराद में मुश्तबह हैं,⁴ सो जिन लोगों के दिलों में टेढ़ है वे उसके उसी हिस्से के पीछे हो लेते हैं जो मुराद में मुश्तबह है, (दीन में) शोरिश “यानी फ़ितना” ढूँढने की गरज़ से, और उसका (ग़लत) मतलब ढूँढने की गरज़ से, हालाँकि उनका (सही) मतलब सिवाय हक़ तआला के कोई और नहीं जानता। और जो लोग (दीन के) इल्म में पुख्तगी रखने वाले (और समझदार) हैं वे यूँ कहते हैं कि हम इसपर (इज्मालन् “यानी सरसरी और समझ में न आने के बावजूद” यकीन रखते हैं, (ये) सब हमारे परवर्दिगार की तरफ़ से हैं, और नसीहत वही लोग कबूल करते हैं जो कि अक्ल वाले हैं।⁵ (7) ऐ हमारे परवर्दिगार! हमारे दिलों को टेढ़ा न कीजिए बाद इसके कि आप हमको हिदायत कर चुके हैं, और हमको अपने पास से (खास) रहमत अता फरमाइए, बेशक आप बड़े अता फरमाने वाले हैं।⁶ (8) ऐ हमारे परवर्दिगार! आप बेशक तमाम आदमियों को (मैदाने हश्म में)

1. ‘हय्यु व कय्यूम्’ की सिफ़ात लाने में बातिल माबूदों के माबूद न होने की अक्ली दलील पर इशारा है क्योंकि उनमें ये सिफ़तें नहीं हैं।
2. यानी उनका मतलब ज़ाहिर है।
3. यानी मायने ज़ाहिर न करने वाली आयतों को भी मायने ज़ाहिर करने वाली के मुवाफ़िक़ बनाया जाता है।
4. यानी उनका मतलब पोशीदा है, चाहे मुख़्तसर होने की वजह से, चाहे किसी ज़ाहिर मुराद वाली नस्स से टकराने की वजह से।
5. बाज़ तौहीद के इनकारी लोगों का बाज़ ऐसे कलिमात से जो तौहीद के ख़िलाफ़ वहम में डालने वाले हों, से इस्तिदलाल हो सकता था, चुनौचे कुछ ईसाइयों ने लफ़्ज़ “रुहुल्लाह” और “कलिमतुल्लाह” से जो कि कुरआन में आए हैं, अपने मुद्आ पर इल्ज़ामी तौर पर इस्तिदलाल किया था। इस आयत में उस शुब्हे का जवाब है। जिसका हासिल यह है कि ऐसे कलिमात से जिनकी मुराद पोशीदा है हुज्जत पकड़ना दुरुस्त नहीं, बल्कि अक़ायद का मदार वाज़ेह और खुली नुसूस (दीन के वे अहक़ाम जो वाज़ेह हैं) हैं, और जिनकी मुराद पोशीदा हो उनपर जबकि उनकी तफ़सीर मालूम न हो इज्मालन् ईमान ले आना वाजिब है, ज़्यादा तफ़तीश की इजाज़त नहीं।
6. यह हक़ परस्तों का दूसरा क़माल ज़िक्र किया गया है, कि बावजूद हक़ तक पहुँचने के उसपर नाज़ों और मगरूर नहीं बल्कि हक़ तआला से हक़ पर जमे रहने की दुआ करते हैं।

जमा करने वाले हैं, उस दिन जिसमें ज़रा शक नहीं, बेशक अल्लाह तआला वायदे के खिलाफ नहीं करते।¹ (9) ♦

यकीनन जो लोग कुफ़्र करते हैं हरगिज़ उनके काम नहीं आ सकते उनके माल (व दौलत) और न उनकी औलाद अल्लाह तआला के मुकाबले में ज़रा बराबर भी,² और ऐसे लोग जहन्नम का ईंधन होंगे। (10) जैसा मामला था फिरऔन वालों का और उनसे पहले वाले (काफिर) लोगों का, कि उन्होंने हमारी आयतों को झूठा बतलाया इसपर अल्लाह ने उनकी पकड़ फ़रमाई उनके गुनाहों के सबब, और अल्लाह तआला सज़ा देने वाले हैं। (11) आप उन कुफ़्र करने वालों से फ़रमा दीजिए कि जल्द ही तुम (मुसलमानों के हाथ से) मग़लूब किए जाओगे, और (आख़िरत में) जहन्नम की तरफ़ जमा करके ले जाए जाओगे, और वह (जहन्नम) बुरा ठिकाना है।³ (12) बेशक तुम्हारे लिए बड़ा नमूना है दो गिरोहों (के वाकिए) में जो कि आपस में एक-दूसरे⁴ के मुकाबिल हुए थे। एक गिरोह तो अल्लाह की राह में लड़ता था (यानी मुसलमान) और दूसरा गिरोह वे काफिर लोग थे, ये काफिर अपने को देख रहे थे कि उन (मुसलमानों) से कई हिस्से (ज़्यादा) हैं खुली आँखों देखना, और अल्लाह तआला अपनी इम्दाद से जिसको चाहते हैं कुव्वत दे देते हैं, (सो) बेशक इसमें बड़ी इब्रत है (समझने) देखने वाले लोगों के लिए।⁵ (13) अच्छी मालूम होती है (अक्सर) लोगों को मुहब्बत पसन्दीदा चीज़ों की, (जैसे) औरतें हुई, बेटे हुए, लगे हुए ढेर हुए सोने और चाँदी के, नम्बर (यानी निशान) लगे हुए घोड़े हुए, (या दूसरे) मवेशी हुए और खेती हुई, (लेकिन) ये सब चीज़ें दुनियावी ज़िन्दगानी में इस्तेमाल करने की हैं, और अन्जामकार की भलाई तो अल्लाह ही के पास है।⁶ (14) आप फ़रमा दीजिए क्या मैं तुमको ऐसी चीज़ बतला दूँ जो (बहुत ही ज़्यादा) बेहतर हो इन चीज़ों से, (सो सुनो) ऐसे लोगों के लिए जो (अल्लाह से) डरते हैं, उनके (हकीकी) मालिक के पास ऐसे-ऐसे बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें जारी हैं, उनमें हमेशा-हमेशा को रहेंगे और (उनके लिए) ऐसी बीवियाँ हैं जो साफ़-सुथरी की हुई हैं, और (उनके लिए) रिज़ा और खुशनूदी है अल्लाह तआला की तरफ़ से, और अल्लाह तआला ख़ूब देखते (भालते) हैं बन्दों को। (15) (ये) ऐसे लोग (हैं) जो कहते हैं कि ऐ हमारे परवर्दिगार! हम ईमान ले आए, सो आप हमारे गुनाहों को माफ़ कर दीजिए

1. यहाँ तक ज़बान से हुज्जत पूरी करने का बयान था, आगे तलवार से मुकाबले का बयान और तलवार का लुक़्मा बनने और मग़लूब होने की वईद है, जो साफ़ तौर पर इस आयत में ज़िक्र की गई है: 'कुल्-तिल्लज़ी-न क-फ़रु...' और इससे पहले कि आयत बतौर तम्हीद के है।

2. मुकाबले में काम आने के दो मायने हो सकते हैं, एक यह कि अल्लाह तआला की रहमत व इनायत की ज़रूरत न हो, उसके बदले सिर्फ़ माल और औलाद काफ़ी और लाभदायक हो जाए, दूसरे यह कि माल व औलाद अल्लाह तआला के मुकाबिल होकर उनके अज़ाब से बचा ले। मुकाबले का लफ़्ज़ दोनों जगह बोला जाता है। सो आयत में दोनों की नफ़ी (इनकार) कर दी गई।

3. इस आयत में काफ़िरों के मग़लूब होने की ख़बर दी गई है। आगे उसकी एक काफ़ी नज़ीर बतौर दलील के इशार्द फ़रमाते हैं।

4. बदर की लड़ाई में।

5. रिवायतों में आया है कि उस दिन मुसलमान तीन सौ तेरह (313) थे और कुफ़्फ़ार एक हज़ार (1000) थे, गोया काफिर लोग मुसलमानों से तीन हिस्से थे। इस आयत में उसी ज़्यादा होने को बयान फ़रमाया है, कि कुफ़्फ़ार आँखों से देख रहे थे कि हमारा गिरोह ज़्यादा है मगर फिर भी अन्जाम देख लिया कि मुसलमान ही ग़ालिब रहे।

6. यह जो फ़रमाया कि इन चीज़ों की मुहब्बत खुशनुमा (अच्छी) मालूम होती है, इसका हासिल मेरे ज़ौक में यह है कि मुहब्बत व मैलान अक्सर हालात में फ़िलने का सबब हो जाने की वजह से डर की चीज़ थी मगर अक्सर लोग इसको नुक़सान का सबब नहीं जानते बल्कि इस मैलान को बिना किसी कैद के अच्छा समझते हैं। और अल्लाह ही को ज़्यादा इल्म है।

और हमको दोज़ख के अज़ाब से बचा लीजिए।¹ (16) (और वे लोग) सब्र करने वाले हैं और सच्चे हैं और (अल्लाह के सामने) आजिजी करने वाले हैं, और (माल) खर्च करने वाले हैं और रात के आखिरी हिस्से में (उठ-उठकर) गुनाहों की माफ़ी चाहने वाले हैं।² (17) गवाही दी अल्लाह तआला ने इसकी कि सिवाय उस ज़ात के कोई माबूद होने के लायक नहीं और फ़रिश्तों ने भी और इल्म वालों ने भी, और माबूद भी वह इस शान के हैं कि एतिदाल के साथ इन्तिज़ाम रखने वाले हैं,³ उनके सिवा कोई माबूद होने के लायक नहीं, वह ज़बरदस्त हैं, हिक्मत वाले हैं। ● (18) बेशक (हक और मकबूल) दीन अल्लाह तआला के नज़दीक सिर्फ़ इस्लाम ही है, और अहले किताब ने जो इख़िलाफ़ किया (कि इस्लाम को बातिल कहा) तो ऐसी हालत के बाद कि उनको दलील पहुँच चुकी थी सिर्फ़ एक-दूसरे से बढ़ने के सबब से,⁴ और जो शख्स अल्लाह तआला के अहकाम का इनकार करेगा तो इसमें कोई शुब्हा नहीं कि अल्लाह तआला बहुत जल्द उसका हिसाब लेने वाले हैं। (19) फिर भी अगर ये लोग आपसे हुज्जतें निकालें तो आप फ़रमा दीजिए कि (तुम मानो या न मानो) मैं तो अपना रुख़ खास अल्लाह की तरफ़ कर चुका और जो मेरी पैरवी करने वाले थे वे भी। और अहले किताब से और अरब (के मुश्रिकीन) से कहिए कि क्या तुम भी इस्लाम लाते हो? सो अगर वे लोग इस्लाम ले आएँ तो वे लोग भी राह पर आ जाएँगे, और अगर वे लोग रु-गर्दानी करें तो आपके ज़िम्मे सिर्फ़ पहुँचा देना है, और अल्लाह तआला खुद देख (और समझ) लेंगे बन्दों को। (20) ♦

बेशक जो लोग कुफ़्र करते हैं अल्लाह तआला की आयतों के साथ और क़त्ल करते हैं पैग़म्बरों को नाहक, और क़त्ल करते हैं ऐसे शख्सों को जो (अफ़आल व अख़लाक़ के) एतिदाल की तालीम देते हैं, सो ऐसे लोगों को ख़बर सुना दीजिए एक दर्दनाक सज़ा की। (21) (और) ये वे लोग हैं कि उनके सब (नेक) आमाल ग़ारत हो गए दुनिया में और आखिरत में,⁵ और (सज़ा के वक़्त) उनका कोई (हिमायती और) मददगार न होगा। (22) (ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम!) क्या आपने ऐसे लोग नहीं देखे जिनको किताब (तौरात) का एक (काफ़ी) हिस्सा दिया गया,⁶ और उसी अल्लाह की किताब की तरफ़ इस ग़ुरज़ से उनको बुलाया भी जाता है कि वह उनके दरमियान फ़ैसला कर दे, फिर (भी) उनमें से कुछ लोग मुँह मोड़ते हैं बेरुख़ी करते हुए। (23) (और) यह इस सबब से है कि वे लोग यूँ कहते हैं कि हमको सिर्फ़ गिनती के थोड़े दिनों तक दोज़ख़ की आग़ लगेगी, और उनको धोखे में डाल

1. यह जो कहा कि हम ईमान ले आए सो आप हमारे गुनाहों को माफ़ कर दीजिए, यह इस वजह से है कि बग़ैर ईमान के मफ़िरत नहीं होती। पस हासिल यह हुआ कि कुफ़्र जो मफ़िरत में हमेशा के लिए रुकावट है उसको हम दूर कर चुके अब माफ़ कर दीजिए।
2. रात के आखिरी हिस्से की तख़्तीस इसलिए है कि उस वक़्त उठने में मशक्कत भी है और वह वक़्त कबूलियत का भी है।
3. “काइम-बिल्किस्ति” की सिफ़त ग़ालिबन् इसलिए बढ़ा दी कि वह ऐसे नहीं कि सिर्फ़ अपनी ताज़ीम और इबादत ही कराते हों बल्कि वह सबके काम भी बनाते हैं।
4. यानी इस्लाम के हक़ होने में शुब्हा करने की कोई वजह नहीं हुई, बल्कि उनमें दूसरों से बड़ा बनने का माद्दा है और इस्लाम लाने में यह सरदारी जो उनको अब अ़वाम पर हासिल है ख़त्म होती थी, इसलिए इस्लाम को कबूल नहीं किया बल्कि उल्टा उसको बातिल बतलाने लगे।
5. दुनिया में ग़ारत होना यह कि उनके साथ मुसलमानों जैसा मामला न होगा, और आखिरत में यह कि उनकी मफ़िरत न होगी।
6. अगर हिदायत के तालिब होते तो वह हिस्सा इस ग़ुरज़ को पूरा करने के लिए काफ़ी था।

रखा है उनके दीन के बारे में उनकी घड़ी हुई बातों ने, सो (उनका) क्या (बुरा) हाल होगा। (24) जबकि हम उनको उस तारीख में जमा कर लेंगे जिस (के आने) में ज़रा-सा शुब्हा नहीं, और (उस तारीख में) पूरा-पूरा बदला मिल जाएगा हर शख्स को (उस काम का) जो कुछ उसने (दुनिया में) किया था, और उन शख्सों पर जुल्म न किया जाएगा।¹ (25) (ऐ-मुहम्मद) आप (अल्लाह से) यूँ कहिए कि ऐ अल्लाह तमाम मुल्क के मालिक! आप मुल्क जिसको चाहें दे देते हैं और जिससे चाहें मुल्क ले लेते हैं, और जिसको चाहें ग़ालिब कर देते हैं, और जिसको चाहें पस्त कर देते हैं, आप ही के इख्तियार में है सब भलाई, बेशक आप हर चीज़ पर पूरी कुदरत रखने वाले हैं। (26) आप रात के हिस्सों को दिन में दाखिल कर देते हैं, और (बाज़ मौसमों में) दिन (के हिस्सों) को रात में दाखिल कर देते हैं, और आप जानदार चीज़ को बेजान चीज़ से निकाल लेते हैं, (जैसे अंडे से बच्चा) और बेजान चीज़ को जानदार से निकाल लेते हैं, (जैसे परिन्दे से अंडा) और आप जिसको चाहते हैं बेशुमार रिज्क अता फ़रमाते हैं।² (27) मुसलमानों को चाहिए कि काफ़िरो को (खुले तौर पर या छुपे तौर पर) दोस्त न बनाएँ,³ मुसलमानों (की दोस्ती) से आगे बढ़ करके,⁴ और जो शख्स ऐसा (काम) करेगा सो वह शख्स अल्लाह के साथ (दोस्ती रखने के) किसी शुमार में नहीं, मगर ऐसी सूरत में कि तुम उनसे किसी किस्म का (सख़्त) अन्देशा रखते हो, और अल्लाह तआला तुमको अपनी ज़ात से डराता है, और खुदा ही की तरफ़ लौटकर जाना है।⁵ (28) आप फ़रमा दीजिए कि अगर तुम छुपाकर रखोगे अपने दिल की बात या उसको ज़ाहिर करोगे, अल्लाह तआला उसको (हर हाल में) जानते हैं, और वह सब कुछ जानते हैं जो कुछ आसमनों में है और जो कुछ ज़मीन में है, और अल्लाह तआला हर चीज़ पर कुदरत भी मुकम्मल रखते हैं। (29) जिस दिन (ऐसा होगा) कि हर शख्स अपने अच्छे किए हुए कामों को सामने लाया हुआ पाएगा और अपने बुरे किए हुए कामों को भी, (और) इस बात की तमन्ना करेगा कि क्या ख़ूब होता जो उस शख्स के और उस दिन के दरमियान बहुत लम्बी दूरी (आड़) होती, और खुदा तआला तुमको अपनी (अज़ीमुश्शान) ज़ात से डराते हैं, और अल्लाह तआला बन्दों पर निहायत मेहरबान हैं। (30) ♦

1. अगली आयत में उम्मत मुहम्मदिया के काफ़िरो पर ग़ालिब आने की पैशिनगोई (भविष्यवाणी) की तरफ़ तालीमे मुनाजात के उन्वान में इशारा है। जैसा कि शाने नुजूल से साबित है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने रूम व ईरान फतह हो जाने का वायदा फरमाया तो मुनाफ़िक लोग और यहूद ने मज़ाक उड़ाया और इसे दूर की बात बताया, उसपर यह आयत नाज़िल हुई।
2. यानी हर तरह की कुदरत हासिल है। सो कमज़ोरो को कुव्वत व हुकूमत दे देना क्या मुश्किल है। इस दुआ में एक किस्म का इस्तिदलाल है इसके इम्कान (संभावना) पर, और कुफ़्र के दूर होने का दफा करना है। (यानी जो लोग यह समझते हैं कि कुफ़्र का ज़ोर नहीं टूटेगा सो उनका रद्द है) और ख़ैर की तख़सीस इसलिए मुनासिब हुई कि यहाँ मकसूद ख़ैर का माँगना है। जैसे कोई कहे कि नौकर रखना आपके इख्तियार में होता है, अगरचे नौकर का हटा देना और अलग कर देना भी इख्तियार में होता है।
3. ऊपर कुफ़्रार की बुराई ज़िक्र हुई थी, इस आयत में उनके साथ दोस्ती करने की मुमानअत (मनाही) फरमाते हैं।
4. हद से बढ़ना दो सूरत से होता है, एक यह कि मुसलमानों के साथ बिलकुल दोस्ती न रखें, दूसरे यह कि मुसलमानों के साथ-साथ कुफ़्रार से भी दोस्ती रखें, दोनों सूरतें मनाही में दाखिल हैं।
5. काफ़िरो के साथ तीन किस्म के मामले होते हैं, एक यह कि 'मवालात' यानी दोस्ती, नम्बर दो 'मुदारात' यानी ज़ाहिरी तौर पर अच्छे अख़्लाक का बर्ताव, नम्बर तीन 'मुवासात' यानी एहसान करना व फ़ायदा पहुँचाना। मवालात तो किसी हाल में जायज़ नहीं और मुदारात तीन हालतों में दुरुस्त है, एक नुक़सान और शर को दफा करने के वास्ते, दूसरे उस काफ़िर की दीनी मस्लहत यानी हिदायत की उम्मीद के वास्ते, तीसरे मेहमान के इक्राम और अदब के लिए। और अपनी मस्लहत और माल व जान के फ़ायदे के लिए दुरुस्त नहीं। और मुवासात का हुक्म यह है कि अहले हरब के साथ नाजायज़ है और ग़ैर-अहले हरब के साथ जायज़।

आप फरमा दीजिए कि अगर तुम खुदा तआला से मुहब्बत रखते हो तो तुम लोग मेरी पैरवी करो और खुदा तआला तुमसे मुहब्बत करने लगेंगे और तुम्हारे सब गुनाहों को माफ कर देंगे, और अल्लाह तआला बड़े माफ करने वाले, बड़ी इनायत फरमाने वाले हैं। (31) (और) आप (यह भी) फरमा दीजिए कि तुम फरमाँबदारी किया करो अल्लाह तआला की और उसके रसूल की, फिर (इसपर भी) अगर वे लोग मुँह मोड़ें सो (सुन रखें कि) अल्लाह तआला काफिरों से मुहब्बत नहीं करते। (32) बेशक अल्लाह तआला ने (नुबुव्वत के लिए) चुन लिया है (हज़रत) आदम को और (हज़रत) नूह को और (हज़रत) इब्राहीम की औलाद (में से कुछ) को और इमरान की औलाद (में से कुछ) को तमाम जहान पर। (33) बाज़े उनमें बाज़ों की औलाद हैं,¹ और अल्लाह तआला ख़ूब सुनने वाले हैं ख़ूब जानने वाले हैं। (34) जबकि इमरान² (मरियम के बाप) की बीवी ने (गर्भ की हालत में) अर्ज़ किया कि ऐ मेरे परवर्दिगार! मैंने मन्नत मानी है आपके लिए इस बच्चे की जो मेरे पेट में है, कि वह आज़ाद रखा जाएगा, सो आप मुझसे (पैदाइश के बाद) कबूल कर लीजिए, बेशक आप ख़ूब सुनने वाले, ख़ूब जानने वाले हैं। (35) फिर जब लड़की को जन्म दिया (हसरत से) कहने लगीं कि ऐ मेरे परवर्दिगार! मैंने तो वह हमल “यानी गर्भ” लड़की जन्मी, हालाँकि खुदा तआला ज़्यादा जानते हैं उसको जो उन्होंने जन्मी, और वह लड़का (जो उन्होंने चाहा था) इस लड़की के बराबर नहीं, और मैंने इस लड़की का नाम मरियम रखा, और मैं इसको और इसकी औलाद को (अगर कभी औलाद हो) आपकी पनाह में देती हूँ शैतान मर्दूद से। (36) पस उन (मरियम अलैहस्सलाम) को उनके रब ने बेहतरीन तौर पर कबूल फरमाया और उम्दा तौर पर परवान चढ़ाया³ और (हज़रत) ज़करिया को उनका सरपरस्त “यानी अभिभावक” बनाया, (सो) जब कभी ज़करिया (अलैहस्सलाम) उनके पास उम्दा मकान में तशरीफ़ लाते तो उनके पास कुछ खाने-पीने की चीज़ें पाते (और) यूँ फरमाते कि ऐ मरियम! ये चीज़ें तुम्हारे वास्ते कहाँ से आईं, वह कहतीं कि अल्लाह तआला के पास से आईं, बेशक अल्लाह तआला जिसको चाहते हैं बे-अहलियत रिज़्क अता फरमाते हैं। (37) इस मौके पर दुआ की ज़करिया (अलैहस्सलाम) ने अपने रब से, अर्ज़ किया कि ऐ मेरे रब! इनायत कीजिए मुझको खास अपने पास से कोई अच्छी औलाद, बेशक आप बहुत सुनने वाले हैं दुआ के। (38) पस पुकार कर कहा उनसे फरिश्तों ने और वह खड़े नमाज़ पढ़ रहे थे मेहराब में,⁴ कि अल्लाह तआला आपको खुशख़बरी देते हैं यहया की जिनके हालात ये होंगे कि वह कलिमतुल्लाह की तस्दीक करने वाले होंगे,⁵ और मुक्तदा होंगे, “यानी रहनुमा होंगे और उनकी पैरवी की जाएगी” और अपने नफ़्स को (लज़्ज़तों से) बहुत रोकने वाले होंगे,⁶

1. यह जो फरमाया कि एक-दूसरे की औलाद है, शायद मकसूद इससे उन सब हज़रत का इतिहाद या जाती शरफ़ के साथ नसब का शरफ़ बयान फरमाना हो, या इस बात का जताना हो कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बाप-दादाओं में भी नुबुव्वत रही है, अगर आपको नुबुव्वत मिल गई तो बर्इद क्या है। वल्लाहु अज़्ज़म्।

2. अगर यह इमरान हज़रत मूसा अलैहस्सलाम के वालिद हैं तो औलाद से मुराद हज़रत मूसा अलैहस्सलाम और हज़रत हारून अलैहस्सलाम हैं। और अगर यह इमरान हज़रत मरियम अलैहस्सलाम के वालिद हैं तो औलाद से मुराद हज़रत ईसा बिन मरियम अलैहस्सलाम हैं।

3. यह जो फरमाया कि उम्दा तौर पर उनको परवान चढ़ाया तो इसके दो मायने हो सकते हैं, एक यह कि शुरू से इबादत व इताअत में मशगूल रखा, दूसरे यह कि और बच्चों कि मामूली बढ़ोतरी और फलने-फूलने से उनकी जाहिरी बढ़ोतरी थी।

4. मेहराब से मुराद या तो मस्जिदे बैतुल मक्दिदस की मेहराब है, या मुराद इससे वह मकान है जिसमें हज़रत मरियम अलैहस्सलाम को रखा करते थे, क्योंकि इस जगह मेहराब के मायने उम्दा मकान के हैं।

5. यानी हज़रत ईसा अलैहस्सलाम की नुबुव्वत की तस्दीक करने वाले होंगे। कलिमतुल्लाह हज़रत ईसा अलैहस्सलाम को इसलिए कहते हैं कि वह महज़ खुदा तआला के हुक्म से ख़िलाफ़े आदत बिना बाप के वास्ते के पैदा किए गए।

6. लज़्ज़तों से रोकने में सब जायज़ ख्वाहिशों से बचना दाखिल हो गया। अच्छा खाना, अच्छा पहनना, निकाह करना, वगैरह-वगैरह।

और नबी भी होंगे और आला दर्जे के सलीके वाले होंगे। (39) ज़करिया ने अज़ किया कि ऐ मेरे परवर्दिगार! मेरे लड़का किस तरह होगा हालाँकि मुझको बुढ़ापा आ पहुँचा और मेरी बीवी भी बच्चा जनने के काबिल नहीं रही, अल्लाह तआला ने इर्शाद फरमाया कि इसी हालत में लड़का हो जाएगा, (क्योंकि) अल्लाह तआला जो कुछ इरादा करें कर देते हैं। (40) उन्होंने अज़ किया कि ऐ परवर्दिगार! मेरे वास्ते कोई निशानी मुकर्रर कर दीजिए, अल्लाह तआला ने फरमाया कि तुम्हारी निशानी यही है कि तुम लोगों से तीन दिन तक बातें न कर सकोगे सिवाय इशारे के, और अपने रब को (दिल से) कसूरत से याद कीजिये और (ज़बान से भी) तसबीह (और पाकी बयान) कीजिये दिन ढले भी और सुबह को भी, (कि इसकी कुदरत रहेगी) (41) ♦

और (वह वक़्त ज़िक्र करने के काबिल है) जबकि फरिश्तों ने कहा¹ कि ऐ मरियम! बेशक तुमको अल्लाह तआला ने मुन्तख़ब (यानी मकबूल) फरमाया है और पाक बनाया है और तमाम जहान की औरतों के मुकाबले में तुमको मुन्तख़ब फरमाया है।² (42) ऐ मरियम! फरमाँबर्दारी करती रहो अपने परवर्दिगार की और सज्दा किया करो, और रुकूअ किया करो उन लोगों के साथ जो रुकू करने वाले हैं। (43) ये (किस्से) ग़ैब की ख़बरों में से हैं, हम उनकी वदह भेजते हैं आपके पास और उन लोगों के पास आप न तो उस वक़्त मौजूद थे जबकि वे (परची डालने के तौर पर) अपने-अपने कलमों को (पानी में) डालते थे कि उन सबमें कौन शख्स (हज़रत) मरियम (अलैहस्सलाम) की ज़िम्मेदारी लें, और न आप उनके पास मौजूद थे जबकि आपस में इख़िलाफ़ कर रहे थे।³ (44) (उस वक़्त को याद करो) जबकि फरिश्तों ने (यह भी) कहा कि ऐ मरियम! बेशक अल्लाह तआला तुमको खुशख़बरी देते हैं एक कलिमे की, जो अल्लाह की जानिब से होगा, उसका नाम (व लक़ब) मसीह ईसा बिन मरियम होगा, आबरू वाले होंगे दुनिया में और आखिरत में और मुकर्रबीन में से होंगे। (45) और अदमियों से कलाम करेंगे गहवारे “यानी पालने” में और बड़ी उम्र में और सलीके वाले लोगों में से होंगे। (46) (हज़रत) मरियम (अलैहस्सलाम) बोलीं, ऐ मेरे परवर्दिगार! किस तरह होगा मेरे बच्चा हालाँकि मुझको किसी बशर ने हाथ नहीं लगाया, अल्लाह तआला ने फरमाया कि वैसे ही (बिना मर्द के) होगा, (क्योंकि) अल्लाह तआला जो चाहें पैदा कर देते हैं। जब किसी चीज़ को पूरा करना चाहते हैं तो उसको कह देते हैं कि हो जा, बस वह चीज़ हो जाती है।⁴ (47) और अल्लाह तआला उनको तालीम फरमाएँगे (आसमानी) किताबें और समझ की बातें, (ख़ास तौर पर) तौरात और इन्जील। (48) और उनको (तमाम) बनी इसराईल की तरफ़ भेजेंगे (पैग़म्बर बनाकर, वे कहेंगे कि) मैं तुम लोगों के पास (अपनी नुबुव्वत पर) काफी दलील लेकर आया हूँ तुम्हारे परवर्दिगार की तरफ़ से, वह यह है कि मैं तुम लोगों के लिए गारे से ऐसी शकल बनाता

1. फरिश्तों का कलाम करना नुबुव्वत की खुसूसियत में से नहीं।

2. लफ़ज़ “निसा” से जो कि ख़ास है बालिगा के साथ, ज़ाहिर में मालूम होता है कि यह कहना फरिश्तों का हज़रत मरियम अलैहस्सलाम के जवान होने के बाद था, और इस बिना पर “इस्तिफ़ा” (मुन्तख़ब करना और मकबूल बना लेना) के दो बार लाने की यह वजह बयान की जा सकती है कि पहला “इस्तिफ़ा” बचपन का हो और दूसरा “इस्तिफ़ा” जवानी का हो।

3. शरीअते मुहम्मदिया में हनफ़िया के मसलक पर कुर्आ (परची) डालने का यह हुक्म है कि जिन हुक्क के असबाब शरीअत में मालूम व मुतयन हैं, उनमें कुर्आ नाजायज़ व जुए के अन्दर दाख़िल है, और जिन हुक्क के असबाब राय पर छोड़े हुए हों उनमें कुर्आ जायज़ है।

4. यानी किसी चीज़ के पैदा होने के लिए सिर्फ़ उनका चाहना काफी है, किसी ख़ास वास्ते और सबब की उनको हाज़त नहीं।

हूँ जैसी परिन्दे की शक्ल होती है, फिर उसके अन्दर फूँक मार देता हूँ जिससे वह (जानदार) परिन्दा बन जाता है खुदा के हुक्म से, और मैं अच्छा कर देता हूँ जन्म के अन्धे को, और बर्स (कोढ़) के बीमार को, और ज़िन्दा कर देता हूँ मुर्दों को अल्लाह तआला के हुक्म से,¹ और मैं तुमको बतला देता हूँ जो कुछ अपने घरों में खा (कर) आते हो और जो कुछ रख आते हो, बेशक इनमें (मेरी नुबुव्वत की) काफ़ी दलील है तुम लोगों के लिए, अगर तुम ईमान लाना चाहो। (49) और मैं इस तौर पर आया हूँ कि तस्दीक करता हूँ उस किताब की जो मुझसे पहले थी यानी तौरात की, और इसलिए आया हूँ कि तुम लोगों के वास्ते कुछ ऐसी चीज़ें हलाल कर दूँ जो तुमपर हराम कर दी गई थीं, और मैं तुम्हारे पास (नुबुव्वत की) दलील लेकर आया हूँ तुम्हारे परवर्दिगार की ओर से, हासिल यह कि तुम लोग अल्लाह तआला से डरो और मेरा कहना मानो। (50) बेशक अल्लाह तआला मेरे भी रब हैं और तुम्हारे भी रब हैं, सो तुम लोग उसकी इबादत करो, बस यह है सीधा रास्ता। (51) सो जब (हज़रत) ईसा (अलैहिस्सलाम) ने उनसे इनकार देखा तो आपने फ़रमाया कि कोई ऐसे आदमी भी हैं जो मेरे मददगार हो जाएँ अल्लाह के वास्ते, हवारिय्यीन बोले कि हम हैं अल्लाह (के दीन) के मददगार, हम अल्लाह तआला पर ईमान लाए और आप इसके गवाह रहिए कि हम फ़रमाँबरदार हैं। (52) ऐ हमारे परवर्दिगार! हम ईमान ले आए उन चीज़ों (यानी अहकाम) पर जो आपने नाज़िल फ़रमाई और पैरवी इख़्तियार की हमने (इन) रसूल की, सो हमको उन लोगों के साथ लिख दीजिए जो तस्दीक करते हैं। (53) और उन लोगों ने खुफ़िया तदबीर की² और अल्लाह तआला ने खुफ़िया तदबीर फ़रमाई और अल्लाह तआला सब तदबीरों करने वालों से अच्छे हैं।³ ▲ (54) ♦

जबकि अल्लाह तआला ने फ़रमाया: ऐ ईसा (कुछ ग़म न करो) बेशक मैं तुमको वफ़ात देने वाला हूँ⁴ और (फ़िलहाल) मैं तुमको अपनी तरफ़ उठाए लेता हूँ⁵ और तुमको उन लोगों से पाक करने वाला हूँ जो इनकारी हैं,⁶ और जो लोग तुम्हारा कहना मानने वाले हैं उनको ग़ालिब रखने वाला हूँ उन लोगों पर जो कि (तुम्हारे) मुन्किर “यानी इनकार करने वाले” हैं क़ियामत के दिन तक,⁷ फिर मेरी तरफ़ होगी सबकी वापसी, सो मैं तुम्हारे दरमियान (अमली) फैसला कर दूँगा उन मामलों में जिनमें तुम आपस में इख़्तिलाफ़ करते थे। (55) (तफ़सील फैसले की यह है कि) जो लोग (इन इख़्तिलाफ़ करने वालों में) काफ़िर थे सो उनको सख़्त सज़ा दूँगा दुनिया में भी और आख़िरत में भी, और उन लोगों का कोई हिमायती (व तरफ़दार) न होगा। (56) और जो लोग मोमिन थे और उन्होंने नेक काम किए थे,

1. परिन्दे की शक्ल बनाना तस्वीर था जो उस शरीअत में जायज़ था। हमारी शरीअत में इसका जायज़ होना मन्सूख़ हो गया। और कोढ़ी और जन्म से अन्धे को सही करने की संभावना अगर तबई असबाब से साबित हो जाए तो मोज़िज़ा होना इस तौर पर था कि बिना तबई असबाब के सेहत हो जाती थी।
2. चुनाँचे फ़रेब और बहाने से आपको गिरफ़्तार करके सूली देने पर तैयार हो गए।
3. एक और शख्स को ईसा अलैहिस्सलाम की शक्ल का बना दिया और ईसा अलैहिस्सलाम को आसमान पर उठा लिया जिससे वह महफूज़ रहे और वह हम-शक्ल सूली दिया गया।
4. यानी अपने मुक़र्रा वक़्त पर तबई मौत से वफ़ात देने वाला हूँ। इससे मकसूद दुश्मनों से हिफ़ाज़त की खुशख़बरी देनी थी, यह मुक़र्रा वक़्त उस वक़्त आएगा जब क़ियामत के करीबी ज़माने में ईसा अलैहिस्सलाम आसमान से ज़मीन पर तशरीफ़ लाएँगे, जैसा कि सही हदीसों में आया है।
5. यह वायदा ऊपर आसमान की तरफ़ फ़िलहाल उठा लेने का है। चुनाँचे यह वायदा साथ-के-साथ पूरा किया गया, जिसके पूरा करने की ख़बर सूर: निसा में दी गई है: ‘र-फ-अहुल्लाहु इलैहि’ (यानी अल्लाह ने उनको उठा लिया है) (शेष तफ़सीर पृष्ठ 104 पर)

सो उनको अल्लाह तआला उनके (ईमान और नेक कामों के) सवाब देंगे, और अल्लाह तआला मुहब्बत नहीं रखते जुल्म करने वालों से। (57) यह हम आपको पढ़-पढ़कर सुनाते हैं जो कि (आपकी नुबुव्वत की) दलीलों में से है, और हिकमत भरे मज़ामीन में से है। (58) बेशक अजीब हालत (हज़रत) ईसा की अल्लाह तआला के नज़दीक (हज़रत) आदम (अलैहिस्सलाम) की अजीब हालत की तरह हैं, कि उन (के जिस्मानी ढाँचे) को मिट्टी से बनाया फिर उनको हुक्म दिया कि (जानदार) हो, पस वह (जानदार) हो गये। (59) यह वाकई अम्र आपके परवर्दिगार की तरफ़ से (बतलाया गया) है, सो आप शुब्हा करने वालों में से न होजिए। (60) पस जो शख्स आपसे ईसा के बारे में (अब भी) हुज्जत करे, आपके पास (कतई) इल्म आने के बाद तो आप फ़रमा दीजिए कि आ जाओ हम (और तुम) बुला लें अपने बेटों को और तुम्हारे बेटों को, और अपनी औरतों को और तुम्हारी औरतों को, और खुद अपने तनों को और तुम्हारे तनों को, फिर हम (सब मिलकर) ख़ूब दिल से दुआ करें, इस तौर पर कि अल्लाह की लानत भेजें उनपर जो (इस बहस में) नाहक़ पर हों। (61) बेशक यह (जो कुछ ज़िक्र हुआ) वही है सच्ची बात, और कोई माबूद होने के लायक़ नहीं सिवाय अल्लाह के, और बेशक अल्लाह तआला ही ग़ल्बे वाले, हिकमत वाले हैं। (62) फिर (भी) अगर नाफ़रमानी करें तो बेशक अल्लाह तआला ख़ूब जानने वाले हैं फ़साद वालों को। (63) ♦

आप फ़रमा दीजिए कि ऐ अहले किताब आओ एक ऐसी बात की तरफ़ जो हमारे और तुम्हारे दरमियान (मुसल्लम होने में) बराबर है, (वह यह) कि सिवाय अल्लाह तआला के हम किसी और की इबादत न करें, और अल्लाह तआला के साथ किसी को शरीक न ठहराएँ, और हममें से कोई किसी दूसरे को रब करार न दे खुदा तआला को छोड़कर, फिर अगर वे लोग (हक़ से) मुँह मोड़ें तो तुम लोग कह दो कि तुम (हमारे इस इक़रार के) गवाह रहो कि हम तो मानने वाले हैं। (64) ऐ अहले किताब! क्यों हुज्जत करते हो (हज़रत) इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के बारे में? हालाँकि नहीं नाज़िल की गई तौरात और इन्जील मगर उनके (ज़माने के बहुत) बाद, क्या फिर समझते नहीं हो? (65) हाँ तुम ऐसे हो कि ऐसी बात में तो हुज्जत कर ही चुके थे जिससे तुम्हें किसी कद्र तो जानकारी थी, सो ऐसी बात में क्यों हुज्जत करते हो जिससे तुमको बिल्कुल जानकारी नहीं, और अल्लाह तआला जानते हैं और तुम नहीं जानते। (66) इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) न तो यहूदी थे और न ईसाई थे, लेकिन (अलबत्ता) सीधे तरीके वाले (यानी) इस्लाम वाले थे, और मुशिरकीन में से (भी) न थे। (67) बेशक सब आदमियों में ज़्यादा

(पृष्ठ 102 का शेष) अब ज़िन्दा आसमान पर मौजूद हैं। अगरचे पहला वायदा बाद में पूरा होगा लेकिन उसका ज़िक्र पहले है, क्योंकि यह दूसरे वायदे के लिए दलील की तरह है, और दलील रुतबे के तौर पर मुकद्दम होती है, और “वाव” चौँकि तर्तीब के लिए मौजू नहीं इसलिए इसको आगे-पीछे करने में कोई इश्काल नहीं।

6. इस वायदे का पूरा करना यह हुआ कि जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ़ लाए और यहूद के सब बेजा इल्ज़ामों और तोहमतों को जो हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के ज़िम्मे लगते थे, उन सबको साफ़ कर दिया।

7. यहाँ फ़रमाँबदारी से मुराद ख़ास फ़रमाँबदारी है यानी नुबुव्वत का अक़ीदा रखना। पस इतिबा करने वालों के मिस्दाक़ वे लोग हैं जो आपकी नुबुव्वत के मोतकिद हैं, सो इसमें ईसाई और मुसलमान दोनों दाख़िल हैं और इनकारियों से मुराद यहूद हैं जो ईसा अलैहिस्सलाम की नुबुव्वत के इनकारी थे। पस हासिल यह हुआ कि उम्मतें मुहम्मदिया और ईसाई हमेशा यहूद पर ग़ालिब रहेंगे।

1. आयत में ‘अपने तन’ से मुराद तो खुद बहस करने वाले हैं और ‘निसा’ से ख़ास बीवी मुराद नहीं बल्कि अपने घर की जो औरतें हों जिसमें लड़की भी शामिल है, मुराद हैं। चुनाँचे आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस वजह से कि हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा सब औलाद में ज़्यादा अज़ीज़ थीं उनको लाए, इसी तरह ‘अबना-अना’ से ख़ास हकीकी औलाद मुराद नहीं, बल्कि औलाद की औलाद को भी आम है, और उनको भी जो मज़ाज़ी तौर पर औलाद कहलाते हों, यानी उर्फ़ में औलाद के जैसे समझे जाते हों, और इस मतलब में नवासे और दामाद भी दाख़िल हैं, चुनाँचे आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम (शेष तफ़सीर पृष्ठ 106 पर)

खुसूसियत रखने वाले (हज़रत) इब्राहीम के साथ अलबत्ता वे लोग थे जिन्होंने उनका इत्तिबा “यानी पैरवी” किया था, और यह नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) हैं और ये ईमान वाले। और अल्लाह तआला हिमायती हैं ईमान वालों के। (68) दिल से चाहते हैं बाज़े लोग अहले किताब में से इस बात को कि तुमको (दीने हक से) गुमराह कर दें, और वे किसी को गुमराह नहीं कर सकते मगर खुद अपने आपको, और इसकी खबर नहीं रखते। (69) ऐ अहले किताब! क्यों कुफ़ करते हो अल्लाह तआला की आयतों के साथ? हालाँकि तुम इकरार करते हो। (70) ऐ अहले किताब! क्यों गड़-मड़ करते हो वाकई (मज़मून यानी नुबुव्वते मुहम्मदिया) को ग़ैर वाकई से, और छुपाते हो हकीकी बात को हालाँकि तुम जानते हो।¹ (71) ♦

और बाज़े लोगों ने अहले किताब में से कहा कि ईमान ले आओ उसपर जो नाज़िल किया गया है मुसलमानों पर (यानी कुरआन पर) शुरू दिन में और (फिर) इनकार कर बैठो आखिर दिन में, (यानी शाम को) क्या ताज्जुब है कि वे फिर जाएँ।² (72) और (सच्चे दिल से) किसी के रू-ब-रू इकरार मत करना मगर ऐसे शख्स के रू-ब-रू जो तुम्हारे दीन की पैरवी करने वाला हो। (ऐ मुहम्मद) आप कह दीजिए कि यकीनन हिदायत, हिदायत अल्लाह की है, ऐसी बातें इसलिए करते हो कि किसी और को भी ऐसी चीज़ मिल रही है जैसी तुमको मिली थी, या वे लोग तुमपर ग़ालिब आ जाएँगे तुम्हारे रब के नज़दीक।³ (ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) आप कह दीजिए कि बेशक फज़ल तो खुदा के कब्ज़े में है वह इसको जिसे चाहें अता फ़रमा दें, और अल्लाह तआला बड़ी वुसअत वाले हैं (और) ख़ूब जानने वाले हैं। (73) खास कर देते हैं अपनी रहमत (व फज़ल) के साथ जिसको चाहें, और अल्लाह तआला बड़े फज़ल वाले हैं। (74) और अहले किताब में से बाज़ा शख्स ऐसा है कि (ऐ मुखातब) अगर तुम उसके पास ढेर-का-ढेर माल भी अमानत का रख दो तो वह (माँगने के साथ ही) उसको तुम्हारे पास ला रखे, और उन्हीं में से बाज़ा वह शख्स है कि अगर तुम उसके पास एक दीनार भी अमानत रख दो तो वह भी तुमको अदा न करे, मगर जब तक कि तुम उसके सर पर खड़े रहो, यह (अमानत का अदा न करना) इस सबब से है कि वे लोग कहते हैं कि हम पर ग़ैर अहले किताब के (माल के) बारे में किसी तरह का इल्ज़ाम नहीं।⁴ और वे लोग अल्लाह तआला पर झूठ लगाते हैं और (दिल में) वे भी जानते हैं⁵ (कि ख़ियानत करने वाले पर इल्ज़ाम क्यों न होगा)। (75) जो

(पृष्ठ 104 का शेष) हज़रते हसन और हुसैन और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हुम को लाए। मुबाहला (किसी इख़िलाफी मसले को खुदा पर छोड़ते हुए एक-दूसरे के लिए बद्-दुआ करना कि जो झूठा हो वह बर्बाद हो जाए) अब भी हाजत के वक़्त जायज़ और मशरू है। मुबाहले का अन्जाम कहीं खुले अल्फ़ाज़ में तो नज़र से नहीं गुज़रा मगर हदीस में इस किस्से के मुताल्लिक इतना ज़िक्र है कि अगर वे लोग मुबाहला कर लेते तो उनके घर वाले और माल वग़ैरह सब हलाक हो जाते।

1. दोनों जगह जो ‘तशहदून’ और ‘ता-लमून’ फ़रमाया तो इसकी यह वजह नहीं है कि इकरार न करने या इल्म न होने की हालत में कुफ़ जायज़ है। जो चीज़ अपनी ज़ात में बुरी हो वह किसी हाल में जायज़ हो ही नहीं सकती, बल्कि वजह यह है कि इकरार और इल्म के वक़्त कुफ़ और ज़्यादा मलामत के काबिल है। ऊपर ज़िक्र किया गया था कि बाज़ अहले किताब मुसलमानों को गुमराह करने की फ़िक्र में रहते हैं, आगे उनकी एक तदबीर का बयान फ़रमाते हैं जिसको मोमिनों को गुमराह करने के लिए उन्होंने तजवीज़ किया था।

2. यानी मुसलमान यह ख़याल करें कि ये लोग इल्म वाले हैं और बे-तअस्सुब भी हैं कि इस्लाम कबूल कर लिया, इसपर भी जो यह फिर गए तो ज़रूर इस्लाम का ग़ैर-हक होना उनको इल्मी दलीलों से साबित हो गया होगा, और ज़रूर उन्होंने इस्लाम में कोई ख़राबी देखी होगी जब ही तो उससे फिर गए।

3. हासिल इल्तत का यह हुआ कि तुमको मुसलमानों से हसद है कि उनको आसमानी किताब क्यों मिल गई, या ये लोग हमपर मज़हबी मुनाज़रे में क्यों ग़ालिब आ जाते हैं। उस हसद की वजह से इस्लाम और मुसलमानों की शान घटाने (शेष तफ़सीर पृष्ठ 108 पर)

शख्स अपने अहद को पूरा करे और अल्लाह तआला से डरे तो बेशक अल्लाह तआला महबूब रखते हैं (ऐसे) मुत्तकियों को। (76) यकीनन जो लोग हकीर मुआवज़ा ले लेते हैं उस अहद के मुकाबले में जो अल्लाह तआला से (उन्होंने) किया है, और (मुकाबले में) अपनी कसम के, उन लोगों को कुछ हिस्सा आखिरत में (वहाँ की नेमत का) न मिलेगा, और न खुदा तआला उनसे (नरमी का) कलाम फरमाएँगे, और न उनकी तरफ़ (मुहब्बत की नज़र से) देखेंगे कियामत के दिन, और न उनको पाक करेंगे, और उनके लिए दर्दनाक अज़ाब होगा। (77) और बेशक उनमें से बाज़े ऐसे हैं कि टेढ़ा करते हैं अपनी ज़बानों को किताब (पढ़ने) में, ताकि तुम लोग उस (मिलाई हुई चीज़) को (भी) किताब का हिस्सा समझो, हालाँकि वह किताब का हिस्सा नहीं, और कहते हैं कि यह (लफ़्ज़ या मतलब) खुदा के पास से है हालाँकि वह (किसी तरह) खुदा तआला के पास से नहीं, और अल्लाह तआला पर झूठ बोलते हैं और वह जानते हैं।¹ (78) किसी बशर से यह बात नहीं हो सकती कि अल्लाह तआला उसको किताब और समझ और नुबुव्वत अता फरमाएँ, फिर वह लोगों से कहने लगे कि मेरे बन्दे बन जाओ खुदा तआला को छोड़कर, वे लेकिन (कहेगा कि) तुम लोग अल्लाह वाले बन जाओ, इस वजह से कि तुम किताब सिखाते हो और इस वजह से कि तुम पढ़ते हो।² (79) और न यह बात बतलाएगा कि तुम फरिश्तों को और नबियों को रब करार दे लो, क्या वह तुमको कुफ़्र की बात बतलाएगा? इसके बाद कि तुम मुसलमान हो। (80) ♦

और जबकि अल्लाह ने अहद लिया नबियों से कि जो कुछ मैं तुमको किताब और इल्म दूँ, फिर तुम्हारे पास कोई पैग़म्बर आए, जो तसदीक करने वाला हो उसकी जो तुम्हारे पास है, तो तुम ज़रूर उस रसूल पर एतिकाद भी लाना और उसकी तरफ़दारी भी करना। फरमाया कि क्या तुमने इकरार किया और इसपर मेरा अहद कबूल किया? वे बोले हमने इकरार किया, इरशाद फरमाया, तो गवाह रहना और मैं इसपर तुम्हारे साथ गवाहों में से हूँ।³ (81) सो जो शख्स रू-गरदानी करेगा बाद इसके तो ऐसे ही लोग बेहुकमी करने वाले हैं। (82) क्या फिर अल्लाह के दीन के सिवा और किसी तरीके को चाहते हैं, हालाँकि अल्लाह तआला के सामने सब सर झुकाए हुए हैं जितने आसमानों

(पृष्ठ 106 का शेष) और उनको नीचे लाने की कोशिश कर रहे हो।

4. यानी ग़ैर-अहले किताब जैसे कुरैश का माल चुरा लेना या छीन लेना सब जायज़ है।
5. जिन बाज़ की अमानत की तारीफ़ की गई है, अगर उन बाज़ से वे लोग मुराद हैं जो अहले किताब में से ईमान ले आए थे, तब तो तारीफ़ में कोई इश्काल नहीं, और अगर ख़ास मोमिन मुराद न हों बल्कि बिना किसी कैद के अहले किताब में अमानतदार और ख़ियानत करने वाले दोनों का ज़िक्र करना मकसूद है तो तारीफ़ अल्लाह के नज़दीक कबूल होने के एतिबार से नहीं, क्योंकि ईमान के बग़ैर कोई नेक अमल मकबूल नहीं होता, बल्कि तारीफ़ इस एतिबार से है कि अच्छी बात चाहे काफ़िर की हो किसी दर्जे में अच्छी है।
1. मुम्किन है कि लफ़्ज़ी तहरीफ़ (यानी अल्फ़ाज़ में फेर-बदल या कमी ज़्यादती) करते हों, और मुम्किन है कि तफ़सीर ग़लत बयान करते हों। लफ़्ज़ी तहरीफ़ में तो दावा होता है कि यह लफ़्ज़ ही अल्लाह की तरफ़ से नाज़िल हुआ है, और ग़लत तफ़सीर में यह तो नहीं होता लेकिन यह दावा होता है कि यह तफ़सीर शरई कायदों से साबित है और शरई कायदों का अल्लाह की जानिब से होना ज़ाहिर है। एक सूरत में शक्ल के एतिबार से किताब का हिस्सा होने का दावा होगा, एक सूरत में मायने के एतिबार से किताब का हिस्सा होने का दावा होगा। इस तरह कि यह हिस्सा शरीअत से साबित है और हर शरीअत से साबित होने वाली बात हकीक़त में किताब से साबित है।
2. नबी की तरफ़ से अल्लाह के अलावा किसी और की इबादत का हुक्म करना शरअन मनफ़ी व मुहाल है।
3. अम्बिया अलैहिमुस्सलाम से तो इसका अहद लिया जाना कुरआन मजीद में वाज़ेह है। बाकी उनकी उम्मतों से या तो उसी वक़्त लिया गया होगा या अम्बिया अलैहिमुस्सलाम के ज़रिये से लिया गया हो। और इस अहद का मक़ाम या तो अब्बल रूहों की दुनिया हो या सिर्फ़ दुनिया में वह्य से लिया गया हो। अहले किताब को यह अहद इसलिए सुनाया कि (शेष तफ़सीर पृष्ठ 110 पर)

और ज़मीन में हैं, खुशी से और बेइख्तियारी से, और सब अल्लाह ही की तरफ लौटाए जाएंगे।¹ (83) आप फरमा दीजिए कि हम ईमान रखते हैं अल्लाह पर और उसपर जो हमारे पास भेजा गया, और उसपर जो इब्राहीम व इसमाईल व इसहाक व याकूब और याकूब की औलाद की तरफ भेजा गया, और उसपर भी जो मूसा और ईसा और दूसरे नबियों को दिया गया उनके परवर्दिगार की तरफ से, इस कैफियत से कि हम उनमें से किसी एक में भी तफरीक नहीं करते, और हम तो अल्लाह ही के फरमाँबदार हैं। (84) और जो शख्स इस्लाम के सिवा किसी दूसरे दीन को तलब करेगा तो वह उससे मकबूल न होगा और वह आखिरत में तबाहकारों में से होगा। (85) अल्लाह तआला ऐसे लोगों को कैसे हिदायत करेंगे जो काफिर हो गए अपने ईमान लाने के बाद, और अपने इस इकरार के बाद कि रसूल सच्चे हैं, और इसके बाद कि उनको खुली दलीलें पहुँच चुकी थीं, और अल्लाह तआला ऐसे बेढंगे लोगों को हिदायत नहीं करते।² (86) ऐसे लोगों की सज़ा यह है कि उनपर अल्लाह तआला की भी लानत होती है और फरिश्तों की भी और आदमियों की भी सबकी। (87) वे हमेशा-हमेशा को उसी में रहेंगे, उनपर से अज़ाब हल्का भी न होने पाएगा और न उनको मोहलत ही दी जाएगी। (88) हाँ, मगर जो लोग तौबा कर लें उसके बाद और अपने आपको संवारें।³ सो बेशक खुदा तआला बख्श देने वाले, रहमत करने वाले हैं। (89) बेशक जो लोग काफिर हुए अपने ईमान लाने के बाद, फिर बढ़ते रहे कुफ़ में,⁴ उनकी तौबा हरगिज़ मकबूल न होगी, और ऐसे लोग पक्के गुमराह हैं। (90) बेशक जो लोग काफिर हुए और वे मर भी गए कुफ़ ही की हालत में, सो उनमें से किसी का ज़मीन भर “यानी ज़मीन के बराबर” सोना भी न लिया जाएगा अगरचे मुआवज़े में उसको देना भी चाहे, उन लोगों को दर्दनाक सज़ा होगी और उनके कोई हामी भी न होंगे। (91) ♦

(पृष्ठ 108 का शेष) जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की रिसालत दलीलों से साबित है तो लाज़िमी तौर पर वे भी इस अहद के मज़मून में दाखिल हैं, फिर तुमपर यकीनन आपकी तस्दीक और मदद फर्ज़ है, और यही इस्लाम का हासिल है।

1. हासिले मक़ाम यह हुआ कि हक़ तआला के पैदा करने और मौजूद करने के अहक़ाम के तो सब ताबे हैं, और “बेइख्तियारी” से यही मुराद है। और बहुत से तशरीई अहक़ाम की भी इताअत करने वाले हैं। और “खुशी से” का मतलब यही है। तो हुक्म की एक किस्म तो सब पर ही जारी है और दूसरी किस्म को भी बहुतों ने कबूल कर रखा है, जिससे हाकिम की अज़मत नुमायाँ हैं। अब बाज़े जो दूसरी किस्म में ख़िलाफ़ करते हैं तो क्या कोई और इस अज़मत और शान का है जिसकी मुवाफ़क़त के लिए ये मुख़ालफ़त करते हैं।
2. यह मतलब नहीं कि ऐसों को इस्लाम की तौफीक़ कभी नहीं देते, बल्कि मकसूद उनके उसी पहले ज़िक्र हुए दावे की नफ़ी करना है, कि वे कहते थे कि हमने जो इस्लाम छोड़कर यह रास्ता इख्तियार किया है, हमको खुदा ने हिदायत दी है। खुलासा नफ़ी का यह हुआ कि जो शख्स कुफ़ का बेढंगा रास्ता इख्तियार करे वह खुदा की हिदायत पर नहीं, इसलिए वह यह नहीं कह सकता कि मुझको खुदा ने हिदायत दी है, क्योंकि कुफ़ हिदायत का रास्ता नहीं बल्कि ऐसे लोग यकीनन गुमराह हैं।
3. यानी मुनाफ़िक़ाना तौर पर ज़बान से तौबा काफ़ी नहीं।
4. यानी हमेशा कुफ़ पर रहे ईमान नहीं लाए।

चौथा पार: लन् तनालू

सूर: आलि इमरान (आयत 92 से 200)

तुम कामिल ख़ैर को कभी न हासिल कर सकोगे यहाँ तक कि अपनी प्यारी चीज़ को ख़र्च न करोगे। और जो कुछ भी ख़र्च करोगे अल्लाह तआला उसको ख़ूब जानते हैं।¹ (92) सब खाने की चीज़ें तौरात के नाज़िल होने से पहले उसको छोड़कर जिसको याकूब (अलैहिस्सलाम) ने अपने नफ्स पर हराम कर लिया था,² बनी इसराईल पर हलाल थी,³ फरमा दीजिए की फिर तौरात लाओ फिर उसको पढ़ो अगर तुम सच्चे हो। (93) सो जो शख्स उसके बाद अल्लाह तआला पर झूठ बात की तोहमत लगाए तो ऐसे लोग बड़े बेइन्साफ़ हैं। (94) आप कह दीजिए कि अल्लाह तआला ने सच कह दिया सो तुम मिल्लते इब्राहीम का इत्तिबा करो जिसमें ज़रा टेढ़ नहीं, और वह मुश्रिक भी न थे। (95) यकीनन वह मकान जो सबसे पहले लोगों के लिए मुकर्रर किया गया⁴ वह मकान है जो कि मक्का में है,⁵ जिसकी हालत यह है कि वह बरकत वाला है और दुनिया भर के लोगों का रहनुमा है।⁶ (96) उसमें खुली निशानियाँ हैं (उनमें से) एक मकामे इब्राहीम है,⁷ और जो शख्स उसमें दाख़िल हो जाए वह अमन वाला हो जाता है। और अल्लाह के वास्ते लोगों के ज़िम्मे उस मकान का हज करना है, (यानी) उस शख्स के ज़िम्मे जो कि ताक़त रखे वहाँ तक पहुँचने की,⁸ और जो शख्स मुनकिर “यानी इनकार करने वाला” हो तो अल्लाह तआला तमाम जहान वालों से ग़नी है।⁹ (97) आप फरमा दीजिए कि ऐ अहले किताब! तुम क्यों इनकार करते हो अल्लाह तआला के अहकाम का, हालाँकि अल्लाह तआला तुम्हारे सब कामों की इत्तिला रखते हैं। (98) आप फरमा दीजिए कि ऐ अहले किताब क्यों हटाते हो अल्लाह तआला की राह से ऐसे शख्स को जो ईमान ला चुका इस तौर पर कि टेढ़ ढूँढ़ते हो उस राह के लिए हालाँकि तुम खुद भी इत्तिला रखते हो, और अल्लाह तआला तुम्हारे कामों से बेख़बर नहीं। (99) ऐ ईमान वालो! अगर तुम कहना मानोगे किसी फिर्के का उन लोगों में से जिनको किताब दी गई है तो वे लोग तुमको तुम्हारे ईमान लाने के बाद काफ़िर बना देंगे। (100) और तुम कुफ़्र कैसे कर सकते हो हालाँकि तुमको अल्लाह तआला के अहकाम पढ़कर सुनाए जाते हैं, और तुममें अल्लाह के रसूल मौजूद हैं। और जो शख्स अल्लाह तआला

1. आयत से मालूम हुआ कि सवाब तो हर ख़र्च करने से होता है जो अल्लाह की राह में किया जाए, मगर ज़्यादा सवाब प्यारी और पसन्दीदा चीज़ के ख़र्च करने से होता है।

2. यानी ऊँट का गोश्त। हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम को इकुनिसा का मर्ज़ था। आपने मन्नत मानी थी कि अगर अल्लाह तआला इससे शिफा दें तो सबमें ज़्यादा जो खाना मुझको महबूब हो उसको छोड़ दूँ। उनको शिफा हो गई और आपको ऊँट का गोश्त सबमें ज़्यादा महबूब था, उसको छोड़ दिया। फिर यही तहरीम (हराम करना) जो मन्नत से हुई थी बनी इसराईल में भी वहा के हुक्म से रही। और मालूम होता है कि उनकी शरीअत में मन्नत से तहरीम भी हो जाती होगी, जिस तरह हमारी शरीअत में मुबाह का इजाब हो जाता है। (यानी एक चीज़ जिसका करना पहले ज़रूरी नहीं था मन्नत मानने से वह वाजिब हो जाती है) मगर तहरीम (यानी किसी चीज़ को हराम करने) की मन्नत जायज़ नहीं, बल्कि उसमें उसके खिलाफ़ करना और फिर उस खिलाफ़ करने और तोड़ने का कफ़ारा वाजिब है।

3. ‘तौरात के नाज़िल होने से पहले’ इस वास्ते फरमाया कि तौरात के नाज़िल होने के बाद इन जिक्र कि गई हलाल चीज़ों में से भी बहुत-सी चीज़ें हराम हो गई थीं, जिसकी कुछ तफ़सील सूर: अन्आम की इस आयत में है: ‘व अल्लज़ी-न हादू हरर्मना कुल-ल जी जुफ़ुरिन्.....’।

4. सब इबादतगाहों से पहले उसके मुकर्रर होने से यह भी मालूम हो गया कि बैतुल-मक़िदस से भी पहले बना है, चुनौचे बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में इसका खुलासा दिया है। (शेष तफ़सीर पृष्ठ 114 पर)

को मज़बूत पकड़ता है तो ज़रूर सीधे रास्ते की हिदायत किया जाता है। (101) ♦

ऐ ईमान वालो! अल्लाह तआला से डरा करो डरने का हक¹ और सिवाय इस्लाम के और किसी हालत पर जान मत देना। (102) और मज़बूत पकड़े रहो अल्लाह तआला के सिलसिले को इस तौर पर कि (तुम सब) आपस में मुत्तफ़िक भी रहो, और आपस में ना-इत्तिफ़ाकी मत करो, और तुमपर जो अल्लाह तआला का इनाम है उसको याद करो जबकि तुम दुश्मन थे। पस अल्लाह तआला ने तुम्हारे दिलों में उल्फ़त डाल दी, सो तुम खुदा तआला के इनाम से आपस में भाई-भाई हो गए, और तुम लोग दोज़ख के गढ़े के किनारे पर थे² सो उससे अल्लाह तआला ने तुम्हारी जान बचाई, इसी तरह अल्लाह तआला तुम लोगों को अपने अहकाम बयान करके बतलाते रहते हैं, ताकि तुम लोग राह पर रहो। (103) और तुममें एक ऐसी जमाअत होना ज़रूरी है जो कि खैर की तरफ़ बुलाया करें और नेक कामों के करने को कहा करें और बुरे कामों से रोका करें, और ऐसे लोग पूरे कामयाब होंगे।³ (104) और तुम लोग उन लोगों की तरह मत हो जाना जिन्होंने आपस में तफ़रीक़ कर ली और आपस में इख़िलाफ़ कर लिया, उनके पास वाज़ेह अहकाम पहुँचने के बाद⁴ और उन लोगों के लिए बड़ी सज़ा होगी। (105) उस दिन कि बाज़े चेहरे सफ़ेद हो जाएँगे और बाज़े चेहरे सियाह होंगे, सो जिनके चेहरे सियाह हो गए होंगे उनसे कहा जाएगा: क्या तुम लोग काफ़िर हो गए थे अपने ईमान लाने के बाद? तो सज़ा चखो अपने कुफ़्र के सबब से। (106) और जिनके चेहरे सफ़ेद हो गए होंगे वे अल्लाह की रहमत में होंगे, वे उसमें हमेशा-हमेशा रहेंगे। (107) ये अल्लाह तआला की आयतें हैं, जो सही-सही तौर पर हम तुमको पढ़-पढ़कर सुनाते हैं, और अल्लाह तआला मख़्लूक़ात पर जुल्म करना नहीं चाहते। (108) और अल्लाह ही की मिल्क है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है, और अल्लाह

(पृष्ठ 112 का शेष)

5. यानी ख़ाना काबा।

6. मतलब यह कि हज़ वहाँ होता है और जैसे नमाज़ का सवाब हदीस की वज़ाहत के मुताबिक़ वहाँ बहुत ज़्यादा होता है, दीनी बरकत तो यह हुई और जो वहाँ नहीं हैं उनको उस मक़ान के ज़रिये से नमाज़ का रुख़ मालूम होता है, यह रहनुमाई हुई।
7. मक़ामे इब्राहीम एक पत्थर है जिसपर खड़े होकर हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने काबा की तामीर की थी, और उस पत्थर में आपके कदमों का निशान बन गया था। अब वह पत्थर ख़ाना काबा से ज़रा फासले पर एक महफूज़ जगह में रखा है।
8. सबील की तफ़सील हदीस में सफ़र के खर्च और सवारी के साथ आई है।
9. दलील का हासिल यह हुआ कि देखो ये शरई अहक़ाम ख़ाना काबा से मुताल्लिक़ हैं, जिनका मुताल्लिक़ होना दलीलों से साबित है, और ऐसे अहक़ाम बैतुल-मक़्दिस के मुताल्लिक़ शरीअत में बयान नहीं किए गए, पस ख़ाना काबा की अफ़ज़लियत साबित हो गई।
1. पूरे तौर पर डरने का मतलब यह है कि जिस तरह शिर्क व कुफ़्र से बचे हो, तमाम गुनाहों से भी बचा करो। आयत का मतलब यह है कि मामूली तक्वे पर इक्तिफ़ा मत करो बल्कि आला और कामिल दर्जे का तक्वा इख़्तियार करो, जिसमें गुनाहों से बचना भी आ गया।
2. यानी काफ़िर होने की वजह से दोज़ख़ से इतने करीब थे कि बस दोज़ख़ में जाने के लिए सिर्फ़ मरने की देर थी।
3. जो शख्स अच्छाई का हुक्म करने और बुराई से रोकने पर कादिर हो, यानी हालात से ग़ालिब गुमान रखता हो कि अगर मैं अच्छाई का हुक्म करूँगा और बुराई से रोकूँगा तो मुझको कोई ख़ास नुक़सान नहीं पहुँचेगा, तो उसके लिए वाजिब उमूर में अच्छाई का हुक्म करना और बुराई से रोकना वाजिब है, और मुस्तहब उमूर में मुस्तहब है। और जो आदमी इस तरह कादिर न हो उसपर यह काम वाजिब उमूर में भी वाजिब नहीं, अलबत्ता अगर हिम्मत करे तो सवाब मिलेगा।
4. आयत में जो तफ़रीक़ व इख़िलाफ़ की मज़म्मत (निंदा) है, मुराद इससे वह तफ़रीक़ है जो दीन के उसूल में हो, या वाज़ेह अहक़ाम में नफ़सानियत से हो। और जो ग़ैर-वाज़ेह अहक़ाम में या तो खुली नस्स न होने की वजह से या नुसूस के ज़ाहिरी टकराव की वजह से हो, जिनमें मुताबक़त की वजह वाज़ेह न हो तो ऐसे मसाल में इख़िलाफ़ हो जाना इस आयत में दाख़िल नहीं और बुरा नहीं, बल्कि उम्मत मरहूमा में ऐसा इख़िलाफ़ मौजूद है।

ही की तरफ सब मुकद्मात रुजू किए जाएँगे। (109) ♦

तुम लोग अच्छी जमाअत हो कि वह जमाअत लोगों के लिए ज़ाहिर की गई है, तुम लोग नेक कामों को बतलाते हो और बुरी बातों से रोकते हो और अल्लाह तआला पर ईमान लाते हो, और अगर अहले किताब ईमान ले आते तो उनके लिए ज़्यादा अच्छा होता, उनमें से बाज़े तो मुसलमान हैं और ज़्यादा हिस्सा उनमें से काफिर हैं।¹ (110) वे तुमको हरगिज़ कोई नुकसान न पहुँचा सकेंगे मगर ज़रा मामूली सी तकलीफ,² और अगर तुमसे वे लड़ाई और जंग करें तो तुमको पीठ दिखाकर भाग³ जाएँगे, फिर किसी की तरफ से उनकी हिमायत भी न की जाएगी। (111) जमा दी गई उनपर बेकद्री⁴ जहाँ कहीं भी पाए जाएँगे, मगर हाँ! एक तो ऐसे ज़रिये के सबब जो अल्लाह तआला की तरफ से है और एक ऐसे ज़रिये से जो आदमियों की तरफ से है।⁵ और मुस्तहिक हो गए ग़ज़वे इलाही के, और जमा दी गई उनपर पस्ती, यह इस वजह से हुआ कि वे लोग इनकारी हो जाते थे अल्लाह के अहकाम के, और क़त्ल कर दिया करते थे पैग़म्बरों को नाहक, और यह इस वजह से हुआ कि उन लोगों ने इताअत न की और दायरे से निकल-निकल जाते थे। (112) ये सब बराबर नहीं, इन अहले किताब में से एक जमाअत वह भी है जो कायम हैं, अल्लाह तआला की आयतें रात के वक्तों में पढ़ते हैं और वे नमाज़ भी पढ़ते हैं। (113) अल्लाह पर और कियामत वाले दिन पर ईमान रखते हैं और नेक काम बतलाते हैं और बुरी बातों से रोकते हैं और नेक कामों में दौड़ते हैं, और ये लोग सलीके वाले लोगों में से हैं।⁶ (114) और ये लोग जो नेक काम करेंगे उससे महरूम न किए जाएँगे और अल्लाह तआला तक्वे वालों को खूब जानते हैं। (115) जो लोग काफिर हैं हरगिज़ उनके काम न आएँगे उनके माल और न उनकी औलाद अल्लाह तआला के मुकाबले में ज़रा भी, और वे लोग दोज़ख वाले हैं, वे हमेशा-हमेशा उसी में रहेंगे। (116) वे जो कुछ खर्च करते हैं इस दुनियावी ज़िन्दगानी में उसकी हालत उस हालत जैसी है कि एक हवा हो जिसमें तेज़ सर्दी हो, वह लग जाए ऐसे लोगों की खेती को जिन्होंने अपना नुकसान कर रखा हो, पस वह उसको बर्बाद कर डाले, और अल्लाह तआला ने उनपर जुल्म नहीं किया लेकिन वे खुद ही अपने

1. यह ख़िताब तमाम उम्मत मुहम्मदिया को आम है। फिर उनमें से सहाबा अब्बल और अशरफ़ मुखातबीन हैं।

2. यानी जबानी बुरा-भला कहकर दिल दुखाना।

3. यह एक पेशीनगोई है जो इसी तरह ज़ाहिर हुई। चुनाँचे अहले किताब नुबुव्वत के ज़माने में किसी मौके पर भी सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम पर जो कि मक़ाम की मुनासबत से इस मज़मून के मुखातब हैं ग़ालिब न आए, खासकर यहूद जिनकी बुराइयाँ खुसूसियत से इस जगह ज़िक्र की गई हैं।

4. यानी जान की बेअम्मी।

5. अल्लाह की तरफ़ का ज़रिया यह कि कोई किताबी (किताब वाला यानी यहूदी या ईसाई) अल्लाह तआला की इबादत में ऐसा मशगूल हो कि मुसलमानों से लड़ता-भिड़ता न हो, वह जिहाद में क़त्ल नहीं किया जाता, अगरचे उसकी इबादत आखिरत में नफ़ा देने वाली न हो। और आदमियों की तरफ़ के ज़रिये से मुराद वह मुआहदा व सुलह है जो मुसलमानों के साथ हो जाए। चुनाँचे ज़िम्मी (वह ग़ैर-मुस्लिम जो मुस्लिम हुकूमत में रहे और टैक्स अदा करे, जिसके बदले में मुस्लिम हुकूमत उसकी जान-माल की हिफ़ाज़त का इन्तिज़ाम करे) व सुलह करने वाला भी मामूनी है। या किसी कौम का उनसे लड़ने का इरादा न करना, जैसा बाज़े ज़मानों में हुआ या होगा। यह अमन भी आदमियों ही की जानिब से है। बाकी और किसी को अमन नहीं।

6. आयत का हसिल उन लोगों की तारीफ़ है कि उन्होंने उन सिफ़्तों को इश्तियार किया है जो कि इस उम्मत के ख़ैर होने के असबाब से हैं, इसलिए 'युअमिनु-न' और 'यअमुसु-न' को तख़सीस के साथ लाए, जिसकी वजह ख़ैर होने में खुलासा थी, वरना 'का-इमह' के आम होने में ये सब उमूर दाख़िल हो गए थे।

आपको नुकसान पहुँचा रहे हैं। (117) ऐ ईमान वालो! अपने सिवा किसी को साहिबे खुसूसियत मत बनाओ,¹ वे लोग तुम्हारे साथ फसाद करने में कोई कसर उठा नहीं रखते, तुम्हारे नुकसान की तमन्ना रखते हैं, वाकई बुग़ज़ उनके मुँह से जाहिर हो पड़ता है, और जिस कद्र उनके दिलों में है वह तो बहुत कुछ है, हम निशानियाँ तुम्हारे सामने जाहिर कर चुके, अगर तुम अक्ल रखते हो। (118) हाँ, तुम ऐसे हो कि उन लोगों से मुहब्बत रखते हो और ये लोग तुमसे बिल्कुल मुहब्बत नहीं रखते, हालाँकि तुम तमाम किताबों पर ईमान रखते हो और ये लोग जो तुमसे मिलते हैं कह देते हैं कि हम ईमान ले आए और जब अलग होते हैं तो तुमपर अपनी उँगलियाँ काट-काट खाते हैं मारे सख्त गुस्से के,² आप कह दीजिए कि तुम मर रहो अपने गुस्से में,³ बेशक अल्लाह तआला खूब जानते हैं दिलों की बातों को। (119) अगर तुमको कोई अच्छी हालत पेश आती है तो उनके लिए रन्ज का सबब होती है। और अगर तुमको कोई नागवार हालत पेश आती है तो वे उससे खुश होते हैं। और अगर तुम इस्तिकलाल और तक्वे के साथ रहो तो उन लोगों की तदबीर तुमको ज़रा भी नुकसान न पहुँचा सकेगी, बेशक अल्लाह तआला उनके आमाल पर इहाता रखते हैं। (120) ♦

और जबकि आप सुबह के वक़्त अपने घर से चले,⁴ मुसलमानों को जंग करने के लिए मकामात पर जमा रहे थे, और अल्लाह तआला सब सुन रहे थे, सब जान रहे थे। (121) जब तुममें से दो जमाअतों ने दिल में ख्याल किया कि हिम्मत हार दें और अल्लाह तो उन दोनों जमाअतों का मददगार था, और बस मुसलमानों को तो अल्लाह तआला ही पर भरोसा करना चाहिए।⁵ (122) और यह बात तहकीकी है कि हक़ तआला ने बद्र में तुम्हारी मदद फरमाई, हालाँकि तुम बेसरोसामान थे, सो अल्लाह तआला से डरते रहा करो, ताकि तुम शुक्र गुज़ार रहो।⁶ (123) जबकि आप मुसलमानों से (यूँ) फरमा रहे थे कि क्या तुमको यह बात काफ़ी न होगी कि तुम्हारा रब तुम्हारी इम्दाद

1. यहाँ जो ग़ैर-मज़हब वालों से खुसूसियत की मनाही फरमाई है उसमें यह भी दाख़िल है कि उनको अपना राज़दार बनाया जाए। और इसमें यह भी दाख़िल है कि अपने खास इन्तिज़ामी मामलात में उनको दख़ल दिया जाए।
2. यह गुस्से की सख़्ती की तरफ़ इशारा है जो मजबूरी के वक़्त हो।
3. मुराद यह है कि अगर तुम मर भी जाओगे तब भी तुम्हारी मुराद पूरी न होगी।
4. यह किस्सा ग़ज़वा-ए-उहद का है।
5. सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम पर खुदा तआला की कैसी इनायत है कि जुर्म के बयान के साथ उनको मददगार होने की खुशख़बरी भी सुना दी, जिसमें माफ़ी का वायदा मफ़हूम होता है। और जुर्म भी कितना हल्का बतलाया कि वापसी नहीं सिर्फ़ कम-हिम्मती, फिर उसका भी मौजूद होना नहीं बल्कि ख़्याल। पस या तो इतना ही सादिर हुआ हो या सादिर हुए कुछ हिस्से को ज़िक्र नहीं फरमाया। और पहली शकल मान लेने पर नाराज़गी की वजह इन हज़रात का हद दर्जा करीब होना है।
6. बदर असल में एक कुएँ का नाम है जो बदर बिन कुरैश ने खोदा था। बदर की लड़ाई उसके नज़दीक ही हुई थी।

करे तीन हजार फरिश्तों के साथ जो उतारे जाएंगे।¹ (124) हाँ, क्यों नहीं! अगर तुम मुस्तकिल रहोगे और मुत्तकी रहोगे, और वे लोग तुमपर एक-दम से आ पहुँचेंगे तो तुम्हारा रब तुम्हारी इम्दाद फरमाएगा पाँच हजार फरिश्तों से जो एक खास वज़ा “यानी शक्ल और हुलिया” बनाए होंगे।² ♦ (125) और अल्लाह तआला ने (यह इम्दाद) महज़ इसलिए की कि तुम्हारे लिए खुशख़बरी हो और ताकि तुम्हारे दिलों को करार हो जाए, और मदद सिर्फ अल्लाह ही की तरफ से है, जो कि ज़बरदस्त हैं, हकीम हैं। (126) ताकि काफ़िरों में से एक गिरोह को हलाक कर दे या उनको ज़लील व ख़ार कर दे, फिर वे नाकाम लौट जाएंगे।³ (127) आपको कोई दख़ल नहीं यहाँ तक कि खुदा तआला उनपर या तो मुतवज्जह हो जाएँ या उनको कोई सज़ा दे दें, क्योंकि वे जुल्म भी बढ़ा कर रहे हैं। (128) और अल्लाह ही कि मिल्क है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है, वह जिसको चाहें बख़्श दें और जिसको चाहें अज़ाब दें, और अल्लाह तआला बड़े मग़्फ़िरत करने वाले, बड़े रहमत करने वाले हैं। (129) ♦

ऐ ईमान वालो! सूद मत खाओ (यानी असल से) कई हिस्से ज़ायद (करके न लो), और अल्लाह तआला से डरो, उम्मीद है कि तुम कामयाब हो जाओ।⁴ (130) और उस आग से बचो जो काफ़िरों के लिए तैयार की गई है। (131) और खुशी से कहना मानो अल्लाह तआला का और रसूल का, उम्मीद है कि तुम रहम किए जाओगे। (132) और मग़्फ़िरत की तरफ़ दौड़ो जो तुम्हारे परवर्दिगार की तरफ़ से है,⁵ और जन्नत की तरफ़ जिसकी वुसूअत ऐसी है जैसे सब आसमान और ज़मीन, वह तैयार की गई है अल्लाह से डरने वालों के लिए। (133) ऐसे लोग जो कि ख़र्च करते हैं फरागत में और तंगी में, और गुस्से के ज़ब्त करने वाले और लोगों से दरगुज़र करने वाले, और अल्लाह तआला ऐसे नेक काम करने वालों को महबूब रखता है। (134) और ऐसे लोग कि जब कोई ऐसा काम कर गुज़रते हैं जिसमें ज़्यादती हो, या अपनी ज़ात पर नुक़सान उठाते हैं तो अल्लाह तआला को याद कर

1. मालूम होता है कि बड़े दर्जे के फरिश्ते होंगे वरना जो फरिश्ते पहले से ज़मीन पर मौजूद थे उनसे भी यह काम लिया जा सकता था।
2. यहाँ इम्दाद की हिकमत निहायत वज़ाहत के साथ बयान फरमाई जिसमें गौर करने से इस मज़मून पर कोई शुब्हा बाकी नहीं रहता, क्योंकि हासिल इसका यह हुआ कि उन फरिश्तों के नाज़िल होने से असली मक़सद यह था कि मुसलमानों के दिल को सुकून हो।
3. ग़ज़वा-ए-उहुद में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का दाँत मुबारक शहीद हो गया और चेहरा मुबारक ज़ख्मी हो गया तो आपने यह फरमाया कि ऐसी कौम को कैसे फ़लाह होगी जिन्होंने अपने नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के साथ ऐसा किया, हालाँकि वह नबी उनको खुदा की तरफ़ बुला रहा है। उस वक़्त यह आयत नाज़िल हुई।
4. यह जो फरमाया: ‘असल से कई हिस्से ज़ायद करके’ यह सूद के हराम होने की कैद नहीं, क्योंकि सूद कम हो या ज़्यादा सब हराम है।
5. मतलब यह है कि ऐसे नेक काम अपनाओ जिससे परवर्दिगार तुम्हारी मग़्फ़िरत कर दें और तुमको जन्नत इनायत हो।

लेते हैं, फिर अपने गुनाहों की माफी चाहने लगते हैं, और अल्लाह तआला के सिवा और है कौन जो गुनाहों को बख्शता हो। और वे लोग अपने फेल पर इसरार नहीं करते और वे जानते हैं। (135) उन लोगों की जज़ा बख्शिश है उनके रब की तरफ से, और ऐसे बाग हैं कि उनके नीचे नहरें चलती होंगी, ये हमेशा-हमेशा उन्हीं में रहेंगे, और यह अच्छा बदला है उन नेक काम करने वालों का।¹ (136) तहकीक कि तुमसे पहले मुख्तलिफ तरीके गुज़र चुके हैं तो तुम रू-ए-ज़मीन पर चलो फिरो और देख लो कि अज़ीर अन्जाम झुठलाने वालों का कैसा हुआ। (137) यह बयान काफी है तमाम लोगों के लिए और हिदायत व नसीहत है खास खुदा से डरने वालों के लिए। (138) और तुम हिम्मत मत हारो और रंज मत करो, और ग़ालिब तुम ही रहोगे अगर तुम पूरे मोमिन रहे। (139) अगर तुमको ज़ख्म पहुँच जाए तो उस कौम को भी ऐसा ही ज़ख्म पहुँच चुका है, और हम इन दिनों को उन लोगों के दरमियान अदलते-बदलते रहा करते हैं, और ताकि अल्लाह तआला ईमान वालों को जान लें, और तुममें से बाज़ों को गवाह बनाना था, और अल्लाह तआला जुल्म करने वालों से मुहब्बत नहीं रखते। (140) और ताकि मैल-कुचैल से साफ़ कर दे ईमान वालों को और मिटा दे काफ़िरो को। (141) हाँ, क्या तुम यह ख़याल करते हो कि जन्नत में जा दाख़िल होंगे हालाँकि अभी अल्लाह तआला ने उन लोगों को तो देखा ही नहीं जिन्होंने तुममें से जिहाद किया हो और न उनको देखा जो साबित कदम रहने वाले हों। (142) और तुम तो मरने की तमन्ना कर रहे थे मौत के सामने आने से पहले ही,² सो उसको तो खुली आँखों देख लिया था। (143) ♦

और मुहम्मद सिर्फ़ रसूल ही तो हैं, आपसे पहले और भी बहुत-से रसूल गुज़र चुके हैं,³ सो अगर आपका इन्तिक़ाल हो जाए या आप शहीद ही हो जाएँ तो क्या तुम लोग उल्टे फिर जाओगे, और जो शख्स उल्टा फिर भी जाएगा तो खुदा तआला का कोई नुक़सान न करेगा, और खुदा तआला जल्द ही बदला देगा हक़ पहचानने वाले लोगों

1. इन आयतों में दो दर्जों के मुसलमानों का बयान है, एक आला दर्जे के, एक उनसे कम। और खुदा से डरने वालों में सब आ गए, क्योंकि तौबा भी खुदा के डर ही से होती है।
2. इस आयत के नाज़िल होने का सबब और मौका यह है कि पिछले साल बाज़ सहाबा जो बदर में शहीद हुए और उनके बड़े फज़ाइल मालूम हुए तो बाज़ ने तमन्ना की कि काश! हमको भी कोई ऐसा मौका पेश आए कि इस शहादत की दौलत से मुशरफ़ हों। (यानी शहीद होने की इज़्ज़त हासिल करें) आख़िर यह उहुद की लड़ाई पेश आई तो पाँव उखड़ गए, इसपर यह आयत नाज़िल हुई।
3. जब उहुद की जंग में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का दाँत मुबारक शहीद हुआ और सर मुबारक ज़ख्मी हुआ तो उस वक़्त किसी दुश्मन ने पुकार दिया कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) क़त्ल कर दिए गए। मुसलमान लड़ाई बिगड़ जाने से बद-हवास और मुन्तशिर हो ही रहे थे, इस ख़बर से और भी कमर टूट गई। किसी ने यह तजवीज़ किया कि अब कुफ़ार से अमन ले लेना चाहिए, बाज़े हिम्मत हारकर बैठ रहे और हाथ पाँव छोड़ दिए, बाज़े भाग खड़े हुए, बाज़े मुनाफ़िक़ बोले कि अगर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) नहीं रहे तो फिर अपना पहला ही दीन क्यों न इख़्तियार कर लिया जाए, बाज़ ने कहा कि अगर नबी होते तो क़त्ल क्यों होते और बाज़ ने कहा कि अगर आप ही न रहे तो हम रहकर क्या करेंगे, जिसपर आपने जान दी उसपर हमको भी जान दे देनी चाहिए। और अगर आप क़त्ल हो गए तो क्या है, अल्लाह तआला तो क़त्ल नहीं हुए। इस परेशानी में अबल आपको हज़रत क़अ़ब बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु ने देखकर पहचाना और पुकार कर कहा कि ऐ मुसलमानो! रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ज़िन्दा और सही-सलामत हैं। गरज़ उस वक़्त फिर मुसलमान इकठ्ठे हुए, आपने उनको मलामत फरमाई। अर्ज़ किया: या रसूलुल्लाह! यह ख़बर सुनकर हमारे दिलों में होल बैठ गई इसलिए हमारे पाँव उखड़ गए। इस मौके पर यह आयत नाज़िल हुई।

को। (144) और किसी शख्स को मौत आना मुश्किल नहीं खुदा तआला के हुक्म के बगैर, इस तौर से कि उसकी मुक़ररा मीयाद लिखी हुई रहती है। और जो शख्स दुनियावी नतीजा चाहता है तो हम उसको दुनिया का हिस्सा दे देते हैं, और जो शख्स आखिरत का नतीजा चाहता है तो हम उसको आखिरत का हिस्सा देंगे, और हम बहुत जल्द बदला देंगे हक पहचानने वालों को। (145) और बहुत नबी हो चुके हैं जिनके साथ होकर बहुत अल्लाह वाले लड़े हैं। सो न तो हिम्मत हारी उन्होंने उन मुसीबतों की वजह से जो उनपर अल्लाह की राह में आई और न उनका जोर घटा, और न वे दबे, और अल्लाह तआला को ऐसे मुस्तकिल मिज़ाजों से मुहब्बत है। (146) और उनकी ज़बान से भी तो इसके सिवा और कुछ नहीं निकला कि उन्होंने अर्ज़ किया कि ऐ हमारे परवर्दिगार! हमारे गुनाहों को और हमारे कामों में हमारे हद से निकल जाने को बख़्श दीजिए और हमको साबित कदम रखिए, और हमको काफ़िर लोगों पर ग़ालिब कीजिए। (147) सो उनको अल्लाह तआला ने दुनिया का भी बदला दिया और आखिरत का भी उम्दा बदला (दिया) और अल्लाह तआला को ऐसे नेकी करने वालों से मुहब्बत है। (148) ♦

ऐ ईमान वालो! अगर तुम काफ़िरों का कहना मानोगे तो वे तुमको उल्टा फेर देंगे, फिर तुम नाकाम हो जाओगे। (149) बल्कि अल्लाह तआला तुम्हारा दोस्त है और वह सबसे बेहतर मदद करने वाला है। (150) हम अभी डाले देते हैं होल काफ़िरों के दिलों में, इसके सबब कि उन्होंने अल्लाह तआला का शरीक ऐसी चीज़ को ठहराया है जिसपर कोई दलील अल्लाह तआला ने नाज़िल नहीं फ़रमाई, और उनकी जगह जहन्नम है, और वह बुरी जगह है बेइन्साफ़ों की। (151) और यकीनन अल्लाह तआला ने तुमसे अपने वायदे को सच्चा कर दिखाया था, जिस वक़्त कि तुम उन काफ़िरों को हुक्मे खुदावन्दी से क़त्ल कर रहे थे, यहाँ तक कि तुम खुद ही कमज़ोर हो गए और आपस में हुक्म में इख़िलाफ़ करने लगे, और तुम कहने पर न चले बाद उसके कि तुमको तुम्हारी दिल-पसन्द बात दिखला दी थी। तुममें से बाज़े तो वे शख्स थे जो दुनिया चाहते थे, और बाज़े तुममें से वे थे जो आखिरत के तलबगार थे, (इसलिए अल्लाह तआला ने आइन्दा के लिए अपनी इम्दाद को बन्द कर लिया और) फिर तुमको उन (काफ़िरों) से हटा दिया ताकि (खुदा तआला) तुम्हारी आजमाइश फ़रमाए और यकीन समझो कि (अल्लाह तआला ने) तुमको माफ़ कर दिया और अल्लाह तआला बड़े फज़ल वाले हैं मुसलमानों पर। (152) (वह वक़्त याद करो) जबकि तुम चढ़े चले जाते थे और किसी को मुड़कर भी तो न देखते थे, और रसूल तुम्हारे पीछे की ओर से तुमको पुकार

1. पस उसी की दोस्ती पर बस करो और उसी को मददगार समझो। दूसरा मुख़ालिफ़ अगर अल्लाह के हुक्म के ख़िलाफ़ मदद की भी तदबीर बतलाए तो अमल मत करो।
2. चुनौचे इस रोब डालने का जुहूर इस तरह हुआ कि अब्बल तो बावजूद मुसलमानों के शिकस्त खा जाने के मुशिरकीन बिना किसी ज़ाहिरी सबब के मक्का को लौट गए। फिर जब कुछ रास्ता तय कर चुके तो अपने इस तरह आ जाने पर बहुत अफ़सोस हुआ और फिर मदीने की तरफ़ वापसी का इरादा किया, मगर कुछ ऐसा रोब छाया कि फिर न आ सके और रास्ते में कोई देहाती मिल गया उससे कहा कि हम तुझको इतना माल देंगे तू मुसलमानों को डरा देना। यहाँ वहाँ से मालूम हो गया, आप उनका पीछा करते हुए 'हमराउल-असद' तक पहुँचे।
3. इस आयत से सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम के हाल पर बड़ी इनायत मालूम हुई कि नाराज़गी में भी कई-कई तसल्लियाँ फ़रमाईं। एक यह कि सज़ा न थी बल्कि इसमें भी तुम्हारी मस्लहत थी, फिर आखिरत की पकड़ से बेफ़िक़्र कर दिया।

रहे थे, सो खुदा तआला ने तुमको नतीजे और सज़ा में ग़म दिया ग़म देने के सबब से, ताकि तुम ग़मज़दा न हुआ करो, न उस चीज़ पर जो तुम्हारे हाथ से निकल जाए और न उसपर जो तुमपर मुसीबत पड़े, और अल्लाह तआला सब ख़बर रखते हैं तुम्हारे सब कामों की। (153) फिर अल्लाह तआला ने उस ग़म के बाद तुमपर चैन भेजा यानी ऊँघ, कि तुममें से एक जमाअत पर तो उसका ग़ल्बा हो रहा था¹ और एक जमाअत वह थी कि उनको अपनी जान ही की फ़िक्र पड़ रही थी, वे लोग अल्लाह तआला के साथ ख़िलाफ़े हकीकत ख़्यालात कर रहे थे जो कि महज़ बेवकूफी का ख़्याल था। वे यूँ कह रहे थे: क्या हमारा कुछ इख़्तियार चलता है? आप फ़रमा दीजिए कि इख़्तियार तो सब अल्लाह ही का है। वे लोग अपने दिलों में ऐसी बात छुपाकर रखते हैं जिसको आपके सामने ज़ाहिर नहीं करते। कहते हैं कि अगर हमारा कुछ इख़्तियार चलता तो हम यहाँ क़त्ल न किए जाते, आप फ़रमा दीजिए कि तुम लोग घरों में भी रहते तब भी जिन लोगों के लिए क़त्ल होना मुक़द्दर हो चुका है वे लोग उन जगहों की तरफ़ निकल पड़ते जहाँ वे गिरे हैं। और यह (जो कुछ हुआ) इसलिए हुआ ताकि अल्लाह तआला तुम्हारे बातिन की बात की आजमाइश करे और ताकि तुम्हारे दिलों की बात को साफ़ कर दे, और अल्लाह तआला सब बातिन की बातों को ख़ूब जानते हैं। (154) यकीनन तुममें से जिन लोगों ने पीठ फेर दी थी जिस दिन कि दोनों जमाअतें आपस में आमने-सामने हुईं, इसके सिवा और कोई बात नहीं हुई कि उनको शैतान ने बहका दिया उनके बाज़ आमाल के सबब,² और यकीन समझो कि अल्लाह तआला ने उनको माफ़ फ़रमा दिया। वाकई अल्लाह तआला बड़े मग़्फ़िरत करने वाले हैं, बड़े इल्म वाले हैं।³ (155) ♦

1. जब कुप्फ़ार मैदान से वापस हो गए तो उस वक़्त ग़ैब से मुसलमानों पर ऊँघ ग़ालिब हुई जिससे सब ग़म दूर हो गया।
2. 'बि-बअज़ि मा क-सबू' से मालूम होता है कि एक गुनाह से दूसरा गुनाह पैदा होता है, जैसा कि एक ताअत (यानी नेकी और अच्छाई) से दूसरी ताअत की तौफ़ीक़ बढ़ती जाती है।
3. सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम के बाज़ मुख़ालिफ़ीन और दुश्मनों ने इस वाकिए से सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम पर और खुसूसन हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु पर तान किया है और इससे उनके अन्दर ख़िलाफ़त की सलाहियत न होना निकाला है, लेकिन यह महज़ बेकार और बेहूदा बात है। जब अल्लाह तआला ने माफ़ कर दिया तो अब दूसरों को लब हिलाने का क्या हक़ रहा। रहा ख़िलाफ़त का किस्सा, सो अहले हक़ के नज़दीक़ ख़िलाफ़त के लिए मासूम और बेगुनाह होना शर्त नहीं है।

ऐ ईमान वालो! तुम उन लोगों की तरह मत हो जाना¹ जो किं काफिर हैं और कहते हैं अपने भाइयों के बारे में जबकि वे किसी इलाके में सफर करते हैं,² या वे लोग कहीं गाज़ी बनते हैं कि अगर ये लोग हमारे पास रहते तो न मरते और न मारे जाते, ताकि अल्लाह तआला इस बात को उनके दिलों में हसरत का पैदा करने वाला कर दें, और जिलाता-मारता तो अल्लाह ही है, और अल्लाह तआला जो कुछ तुम करते हो सब कुछ देख रहे हैं। (156) और अगर तुम लोग अल्लाह की राह में मारे जाओ या मर जाओ तो लाज़िमी तौर पर अल्लाह के पास की मग़फ़िरत और रहमत उन चीज़ों से बेहतर है जिनको ये लोग जमा कर रहे हैं। (157) और अगर तुम लोग मर गए या मारे गए तो ज़रूर ही अल्लाह ही के पास जमा किए जाओगे। (158) उसके बाद खुदा ही की रहमत के सबब आप उनके साथ नरम रहे।³ और अगर आप कड़वे मिज़ाज वाले सख्त तबीयत के होते तो आपके पास से सब मुन्तशिर हो जाते, “यानी अलग और इधर-उधर हो जाते” सो आप उनको माफ़ कर दीजिए और आप उनके लिए इस्तिग़फ़ार कर दीजिए और उनसे खास-खास बातों में मशिवरा लेते रहा कीजिए।⁴ फिर जब आप राय पुख़्ता कर लें तो खुदा तआला पर भरोसा कीजिए,⁵ बेशक अल्लाह तआला ऐसे भरोसा करने वालों से मुहब्बत फ़रमाते हैं। (159) अगर हक़ तआला तुम्हारा साथ दें तब तो तुमसे कोई नहीं जीत सकता, और अगर तुम्हारा साथ न दें तो उसके बाद ऐसा कौन है जो तुम्हारा साथ दे (और ग़ालिब कर दे)। और ईमान वालों को सिर्फ़ अल्लाह तआला पर भरोसा रखना चाहिए। (160) और नबी की यह शान नहीं कि वह ख़ियानत करे। हालाँकि जो शख्स ख़ियानत करेगा वह शख्स अपनी ख़ियानत की हुई चीज़ को कियामत के दिन हाज़िर करेगा। फिर हर शख्स को उसके किए का पूरा बदला मिलेगा, और उनपर बिलकुल जुल्म न होगा।⁶ (161) सो ऐसा शख्स जो कि अल्लाह की रिज़ा का ताबे हो, क्या वह उस शख्स के जैसा हो जाएगा जो कि अल्लाह के ग़ज़ब का मुस्तहिक् हो और उसका ठिकाना दोज़ख़ हो? और वह जाने की बुरी जगह है। (162) ये (जिनका ज़िक्र हुआ) दर्जों में मुख़्तलिफ़ होंगे अल्लाह तआला के यहाँ, और अल्लाह तआला ख़ूब देखते हैं उनके आमाल को। (163) हकीकत में अल्लाह तआला ने मुसलमानों पर एहसान किया जबकि उनमें उन्हीं की जिन्स “यानी नस्ल और जमाअत में” से एक ऐसे पैग़म्बर को भेजा कि वह उन लोगों को अल्लाह तआला की आयतें पढ़-पढ़कर सुनाते हैं और उन लोगों की सफ़ाई करते रहते हैं और उनको किताब और समझ की बातें बतलाते रहते हैं, और यकीनन ये लोग पहले से खुली ग़लती में थे।⁷ ● (164) और जब

1. ऊपर मुनाफ़िकों का क़ौल नक़ल किया था। चूँकि ऐसे अक्वाल के सुनने से शुब्हा हो सकता है कि मुसलमानों के दिलों में इस किस्म के वस्वे पैदा होने लगे, इसलिए हक़ तआला इस आयत में मुसलमानों को ऐसे अक्वाल और ऐसे हालात से मुमानअत (मनाही) फ़रमाते हैं।
2. इस सफर से दीनी काम के लिए सफर करना मुराद है।
3. मिज़ाज की नरमी को रहमत का सबब इसलिए फ़रमाया कि खुश-अख़्लाकी इबादत है, और इबादत की तौफ़ीक़ खुदा तआला की रहमत से होती है।
4. यह जो कहा गया है कि खास-खास बातों में मशिवरा लेते रहा कीजिए तो मुराद इनसे वे मामलात हैं जिनमें आप पर वह नाज़िल न हुई हो, वरना वह के बाद फिर मशिवरों की कोई गुंजाइश नहीं।
5. लफ़्ज़ ‘अज़्म’ (यानी इरादा) में कोई कैद नहीं लगाई। इससे मालूम हुआ कि राय से मुताल्लिक इन्तिज़ामी मामलात में कसरते-राय (यानी बहुमत) का ज़ाबता महज़ बेअसल है। वरना यहाँ ‘अज़्म’ में यह कैद होती कि बशर्ते कि आपका अज़्म बहुमत के ख़िलाफ़ न हो। और मशिवरा व अज़्म के बाद जो तवक्कुल का हुक्म फ़रमाया तो इससे साबित हुआ कि तदबीर तवक्कुल के ख़िलाफ़ नहीं, क्योंकि मशिवरे व इरादे का तदबीर में दाख़िल होना ज़ाहिर है। और जानना चाहिए कि यह तवक्कुल का मर्तबा कि बावजूद तदबीर के एतिकादी तौर पर अल्लाह तआला पर एतिमाद रखे, हर मुसलमान के जिम्मे फ़र्ज़ है, (शेष तफ़सीर पृष्ठ 130 पर)

तुम्हारी ऐसी हार हुई जिससे दो हिस्से तुम जीत चुके थे तो (क्या ऐसे वक्त में) तुम (यूँ) कहते हो कि यह किधर से हुई, आप फरमा दीजिए कि यह (हार खास) तुम्हारी तरफ से हुई। बेशक अल्लाह तआला को हर चीज़ पर पूरी कुदरत है। (165) और जो मुसीबत तुमपर पड़ी जिस दिन कि दोनों गिरोह आपस में आमने-सामने हुए सो अल्लाह की मरज़ी से हुई और ताकि अल्लाह तआला मोमिनों को भी देख लें। (166) और उन लोगों को भी देख लें जिन्होंने निफ़ाक का बर्ताव किया, और उनसे (यूँ) कहा गया कि आओ अल्लाह की राह में लड़ना या दुश्मनों के लिए रोक बन जाना। वे बोले कि अगर हम कोई ढंग की लड़ाई देखते तो ज़रूर तुम्हारे साथ हो लेते। ये (मुनाफ़िक लोग) उस दिन कुफ़्र से बहुत ज़्यादा नज़दीक हो गए, उस हालत के मुकाबले में कि वे ईमान से नज़दीक थे। ये लोग अपने मुँह से ऐसी बातें करते हैं जो उनके दिल में नहीं, और अल्लाह तआला ख़ूब जानते हैं जो कुछ ये अपने दिल में रखते हैं। (167) ये ऐसे लोग हैं कि अपने भाइयों के बारे में बैठे हुए बातें बनाते हैं कि अगर हमारा कहना मानते तो क़त्ल न किए जाते। आप फरमा दीजिए कि अच्छा तो अपने ऊपर से मौत को हटा दो अगर तुम सच्चे हो। (168) और (ऐ मुखातब!) जो लोग अल्लाह की राह में क़त्ल किए गए उनको मुर्दा मत ख़्याल कर बल्कि वे तो ज़िन्दा हैं अपने परवर्दिगार के करीबी हैं, उनको रिज़्क भी मिलता है। (169) वे खुश हैं उस चीज़ से जो उनको अल्लाह तआला ने अपने फज़ल से अता फरमाई, और जो लोग उनके पास नहीं पहुँचे उनसे पीछे रह गए हैं। उनकी भी इस हालत पर वे खुश होते हैं कि उनपर भी किसी तरह का ख़ौफ़ वाक़ेअ होने वाला नहीं और न वे ग़मगीन होंगे। (170) वे खुश होते हैं अल्लाह की नेमत व फज़ल की वजह से, और इस वजह से कि अल्लाह तआला ईमान वालों का अज़्र ज़ाया नहीं फरमाते। (171) ♦

जिन लोगों ने अल्लाह और रसूल के कहने को कबूल किया उसके बाद कि उनको ज़ख़्म लगा था, उन लोगों में जो नेक और मुत्तकी हैं उनके लिए बड़ा सवाब है। (172) ये ऐसे लोग हैं कि लोगों ने उनसे कहा कि उन लोगों ने

(पृष्ठ 128 का शेष) और तवक्कुल जो तदबीर को छोड़ देने के मायने में है तो उसमें तफ़सील यह है कि अगर वह तदबीर दीनी है तो उसको छोड़ना बुरा है, और अगर दुनियावी आम आदत के मुताबिक यकीनी है तो उसका छोड़ना भी नाजायज़ है, और अगर गुमान और ख़्याल के दर्जे में है तो मज़बूत दिल वाले को जायज़ है, और अगर वहमी है तो उसके छोड़ने का हुक्म दिया गया है।

6. अम्बिया अलैहिमुस्सलाम का अमीन होना यहाँ दलील से साबित किया गया है।

7. यह जो फरमाया गया कि 'उन्हीं की नस्ल और ज़िन्स से' तो इसमें मुफ़स्सरीन के कई कौल हैं। बाज़ ने कहा कि उनके नसब से यानी कुरैश से, बाज़ ने कहा कि अरब से, बाज़ ने कहा कि आदम की औलाद से, और यही आख़िर वाला कौल ज़्यादा मुनासिब है, क्योंकि लफ़्ज़ 'मोमिनीन' इस जगह आम है और 'अन्फ़ुसिहिम्' की ज़मीर (Pro-noun) इसी तरफ़ लौट रही है, पस आम सिफ़त के साथ तफ़सीर करना ज़्यादा मुनासिब है।

1. इस शिकस्त के वाक़िए में जो इताब (नाराज़गी और नागवारी) के बाद सहाबा की जगह-जगह तसल्ली की गई तो इससे नाफ़रमानी करने वाले धोखा न खाएँ कि हमसे जो गुनाह होते हैं उनमें भी अल्लाह की मशिय्यत व हिकमत होती है फिर ग़म की कोई बात नहीं। बात यह है कि अब्बल तो सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम से ग़लती से ऐसा हुआ, मुखा़लफ़त का इरादा न था। दूसरे उनपर नदामत और ग़म का बेइन्तिहा गुल्बा था जो तौबा का आला दर्जा है, इसलिए उनकी तसल्ली की गई। और जो जान-बूझकर गुनाह करे फिर उसपर ज़ुरत करे, वह तसल्ली का हक़दार नहीं बल्कि डॉट-डपट और अज़ाब की धमकी का हक़दार है।

2. ऊपर ग़ज़वा-ए-उहुद का किस्सा ज़िक्र हो चुका, आगे उसके मुताल्लिक एक-दूसरे ग़ज़वे (लड़ाई और जंग) का ज़िक्र है, जो 'ग़ज़वा-ए-हमराउल-असद' के नाम से मशहूर है। वह यह कि जब कुप्फ़ार मैदान से मक्का को वापस हुए तो रास्ते में जाकर इसपर अफ़सोस किया कि हम बाज़वूद ग़ालिब आ जाने के नाहक़ लौट आए, सो अब चलकर सबका ख़ात्मा कर दें। अल्लाह तआला ने उनके दिलों में रोब डाल दिया और फिर वे मक्का ही की तरफ़ हो लिए, (शेष तफ़सीर पृष्ठ 132 पर)

तुम्हारे लिए सामान जमा किया है सो तुमको उनसे अन्देशा करना चाहिए, सो उसने उनके ईमान को और ज्यादा कर दिया और (उन्होंने) कह दिया कि हमको अल्लाह तआला काफी है और वही सब काम सुपुर्द करने के लिए अच्छा है। (173) पस ये लोग खुदा की नेमत और फज़ल से भरे हुए वापस आए कि उनको कोई नागवारी ज़रा भी पेश नहीं आई, और वे लोग अल्लाह की रिज़ा के ताबे रहे, और अल्लाह तआला बड़ा फज़ल वाला है। (174) इससे ज्यादा कोई बात नहीं कि यह शैतान है कि अपने दोस्तों से डराता है, सो तुम उनसे मत डरना और मुझ ही से डरना अगर तुम ईमान वाले हो।¹ (175) और आपके लिए वे लोग ग़म का सबब न होने चाहियें जो जल्दी से कुफ़्र में जा पड़ते हैं, यकीनन वे लोग अल्लाह तआला को ज़रा बराबर भी नुक़सान नहीं पहुँचा सकते। अल्लाह तआला को यह मन्ज़ूर है कि आख़िरत में उनको बिल्कुल हिस्सा न दे, और उन लोगों को बड़ी सज़ा होगी। (176) यकीनन जितने लोगों ने ईमान की जगह कुफ़्र को इख़्तियार कर रखा है, ये लोग अल्लाह तआला को ज़रा बराबर भी नुक़सान नहीं पहुँचा सकते और उनको दर्दनाक सज़ा होगी। (177) और जो लोग कुफ़्र कर रहे हैं वे यह ख़्याल हरगिज़ न करें कि हमारा उनको मोहलत देना उनके लिए बेहतर है, हम उनको सिर्फ़ इसलिए मोहलत दे रहे हैं ताकि जुर्म में उनको और तरक्की हो जाए और उनको तौहीन भरी सज़ा होगी।² (178) अल्लाह तआला मुसलमानों को इस हालत में नहीं रखना चाहते जिसपर तुम अब हो जब तक कि नापाक को पाक से अलग न फ़रमा दें। और अल्लाह तआला ऐसे ग़ैबी उमूर की तुमको इत्तिला नहीं करते वे लेकिन हाँ जिसको खुद चाहें, और वे अल्लाह तआला के पैग़म्बर हैं उनको चुन लेते हैं, पस अब अल्लाह पर और उसके रसूलों पर ईमान ले आओ,³ और अगर तुम ईमान ले आओ और परहेज़ रखो तो फिर तुमको बड़ा अज़्र मिले। (179) और हरगिज़ ख़्याल न करें ऐसे लोग जो ऐसी चीज़ में बुख़ल करते हैं जो अल्लाह तआला ने उनको अपने फज़ल से दी है कि यह बात कुछ उनके लिए अच्छी

(पृष्ठ 130 का शेष) लेकिन बाज़ राह चलते लोगों से कह गए कि किसी तदबीर से मुसलमानों के दिलों में हमारा रोब जमा दिया जाए। नबी करीम को वह से यह बात मालूम हो गई और आप उनका पीछा करते हुए मक़ाम हमराउल-असद तक पहुँचे। हमराउल-असद मदीने से आठ मील के फासले पर है। वहाँ आपने तीन दिन कियाम फ़रमाया। उस मक़ाम पर ताजिरो का एक काफ़िला गुज़रा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनसे तिजारत का माल ख़रीदा, अल्लाह तआला ने उसमें नफ़ा दिया। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने वह नफ़ा साथ में मौजूद मुसलमानों को तकसीम फ़रमा दिया। आगे आने वाली आयतों में इस किस्से की तरफ़ इशारा है।

1. ऊपर मुनाफ़िकों की बेवफ़ाई और बुरा चाहने का ज़िक्र था। जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मुबारक दिल पर उनकी इन हरकतों का रंज हुआ होगा, हक़ तआला आने वाली आयत में आपको तसल्ली देते हैं और उसके साथ ज़िम्न व तहत में तमाम कुफ़्रार के मामले के मुताल्लिक़ चाहे कोई हो आपकी तसल्ली फ़रमाते हैं ताकि आपके दिल पर अब या आइन्दा उनकी और दूसरों की तरफ़ से कभी ज़िद ग़ालिब न हो।

2. इस आयत से कोई यह शुब्हा न करे कि जब अल्लाह तआला ने इसी लिए मोहलत दी है कि और ज्यादा जुर्म करें तो फिर ज्यादा जुर्म करने से अज़ाब क्यों होगा? असल सबब छूट देने का सज़ा की ज्यादाती है, लेकिन इस सबब के सबब यानी गुनाह के ज्यादा करने को जो बन्दे के इख़्तियार से है कलाम में हुस्न पैदा करने के लिए सबब के कायम-मक़ाम कर दिया गया।

3. यह जो फ़रमाया कि सब रसूलों पर ईमान लाओ, हालाँकि यह मक़ाम मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ईमान लाने के ज़िक्र को चाहता है। वजह इसकी यह है कि आप पर भी ईमान जब ही साबित होगा जब सबको माने, क्योंकि एक को झुठलाना सबको झुठलाना है।

होगी, बल्कि यह बात उनके लिए बहुत ही बुरी है, वे लोग कियामत के दिन तौक पहना दिए जाएंगे उसका जिसमें उन्होंने बुझ किया था, और आखिर में आसमान व ज़मीन अल्लाह तआला ही का रह जाएगा, और अल्लाह तआला तुम्हारे सब आमाल की पूरी ख़बर रखते हैं।¹ (180) ♦

बेशक अल्लाह तआला ने सुन लिया है उन लोगों का कौल जिन्होंने (यूँ) कहा कि अल्लाह मुफ़लिस है और हम मालदार हैं। हम उनके कहे हुए को लिख रहे हैं,² और उनका नबियों को नाहक क़त्ल करना भी, और हम कहेंगे कि चखो आग का अज़ाब। (181) यह उन (आमाल) की वजह से है जो तुमने अपने हाथों समेटे हैं, और यह (अमूर साबित ही है) कि अल्लाह तआला अपने बन्दों पर जुल्म करने वाले नहीं। (182) वे लोग ऐसे हैं जो कहते हैं कि अल्लाह ने हमको हुक़्म फ़रमाया था कि हम किसी पैग़म्बर पर एतिकाद न लाएँ जब तक कि हमारे सामने (अल्लाह तआला की नियाज़ व) मन्नत (का मोज़िज़ा) ज़ाहिर न करे कि उसको आग खा जाए,³ आप फ़रमा दीजिए कि यकीनन बहुत-से पैग़म्बर मुझसे पहले बहुत-सी दलीलें लेकर आए और (खुद) यह (मोज़िज़ा) भी जिसको तुम कह रहे हो, सो तुमने उनको क्यों क़त्ल किया अगर तुम सच्चे हो। (183) सो अगर ये लोग आपको झुठलाएँ तो बहुत-से पैग़म्बर जो आपसे पहले गुज़रे हैं झुठलाए जा चुके हैं⁴ जो मोज़िज़े लेकर आए थे और सहीफ़े और रोशन किताब लेकर।⁵ (184) हर जान को मौत का मज़ा चखना है और तुमको तुम्हारा पूरा बदला कियामत के दिन ही मिलेगा, तो जो शख्स दोज़ख़ से बचा लिया गया और जन्नत में दाख़िल किया गया सो वह पूरा कामयाब हुआ। और दुनियावी ज़िन्दगी तो कुछ भी नहीं सिर्फ़ थोड़े का सौदा है।⁶ (185) अलबत्ता आगे और आज़माए जाओगे अपने मालों में और अपनी जानों में, और अलबत्ता आगे को और सुनोगे बहुत-सी बातें दिल दुखाने वाली उन लोगों से जो तुमसे पहले किताब दिए गए हैं और उन लोगों से जो कि मुश्रिक हैं।⁷ और अगर सब्र करोगे और परहेज़ रखोगे तो यह ताकीदी अहक़ाम में से है।⁸ (186) और जबकि अल्लाह ने किताब वालों से यह अहद लिया कि इस किताब को

1. इस तौक पहनाए जाने की कैफ़ियत हदीसे बुख़ारी में आई है। हज़रत अबू हु़रैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इशार्द फ़रमाया कि जिसको खुदा तआला माल दे और वह उसकी ज़कात अदा न करे तो उसका वह माल कियामत के दिन एक ज़हरीले सौंप की शक़्त बनाकर उसके गले में डाल दिया जाएगा और वह उस शख्स की बाँछें पकड़ेगा और कहेगा कि मैं तेरा माल हूँ तेरा सरमाया हूँ। फिर हुज़ुरे पाक ने यह आयत पढ़ी।
2. आमाल नामे में दर्ज करा देने में यह हिक़मत है कि आदत यही है कि यह मुज़्रिम पर ज़्यादा हुज़्जत हो जाता है, वरना हक़ तआला को इसकी ज़रूरत नहीं।
3. पहले बाज़ अम्बिया अलैहिमुस्सलाम का यह मोज़िज़ा हुआ है कि कोई चीज़ जानदार या ग़ैर-जानदार अल्लाह के नाम की निकाल कर किसी मैदान या पहाड़ पर रख दी, ग़ैब से एक आग ज़ाहिर हुई और उस चीज़ को जला दिया।
4. जब औरों को भी झुठलाया जा चुका है तो आपको झुठलाया जाना कोई नई बात नहीं, फिर गुम क्या।
5. यानी बाज़े सिर्फ़ मोज़िज़े लाए, बाज़े छोटी किताबें, बाज़े बड़ी किताबें, जैसे तौरात व इन्ज़ील। चूँकि किताब से बड़ी किताब मुराद है और बड़ी किताब शान और मज़ामीन में ज़्यादा होगी इसलिए उसकी सिफ़त में 'मुनीर' बढ़ाया कि उसमें शान और मज़ामीन दोनों के एतिबार से ज़ाहिर होने के मायने ज़्यादा होंगे।
6. यह जो फ़रमाया कि थोड़े का सौदा, तो इससे यह न समझा जाए कि दुनियावी ज़िन्दगी सबके लिए नुक़सानदेह है। तश्बीह देने (यानी समानता ज़ाहिर करने) से मतलब सिर्फ़ यह है कि यह असली मक़सूद बनाने के काबिल नहीं।
7. आज़माने का मतलब यह है कि ऐसे हादसे तुमपर वक़्त-वक़्त पर आया करेंगे, इसको मज़ाज़ी तौर पर आज़माना कह दिया, वरना अल्लाह तआला आज़माने के हकीक़ी मायने से पाक है क्योंकि वह ग़ैब का जानने वाला है।
8. सब्र करने का यह मतलब नहीं कि तदबीर न करो या इन्तिक़ाम के मौक़ों में इन्तिक़ाम न लो, या क़िताल के मौक़ों में क़िताल न करो, बल्कि हादसों में तंगदिल न हो, क्योंकि इसमें तुम्हारे लिए फ़ायदे और मस्तहतें हैं। और तक्वा यह कि ख़िलाफ़े शरीअत बातों और मामलात से बचो, अगरचे तदबीर भी की जाए।

आम लोगों के रू-ब-रू ज़ाहिर कर देना और इसको मत छुपाना, सो उन लोगों ने उसको अपनी पीठ पीछे फेंक दिया और उसके मुकाबले में कम-हकीकत मुआवजा ले लिया। सो बुरी चीज़ है जिसको वे लोग ले रहे हैं। (187) जो लोग ऐसे हैं कि अपने (बुरे) किर्दार पर खुश होते हैं और जो (नेक) काम नहीं किया उसपर चाहते हैं कि उनकी तारीफ़ हो सो ऐसे शख्सों को हरगिज़-हरगिज़ मत ख्याल करो कि वे ख़ास अन्दाज़ के अज़ाब से बचाव में रहेंगे, (बल्कि) और उनको दर्दनाक सज़ा होगी।¹ (188) और अल्लाह ही के लिए है बादशाहत आसमानों की और ज़मीन की, और अल्लाह तआला हर चीज़ पर पूरी कुदरत रखते हैं।² (189) ♦

बेशक आसमानों के और ज़मीन के बनाने में और एक के बाद एक रात और दिन के आने-जाने में दलीलें हैं अक्ल वालों के लिए। (190) जिनकी हालत यह है कि वे लोग अल्लाह की याद करते हैं खड़े भी, बैठे भी, लेते भी, और आसमानों और ज़मीन के पैदा होने में ग़ौर करते हैं कि ऐ हमारे परवर्दिगार! आपने इस को बेकार पैदा नहीं किया।³ हम आपको पाक समझते हैं सो हमको दोज़ख़ के अज़ाब से बचा लीजिए। (191) ऐ हमारे परवर्दिगार! बेशक आप जिसको दोज़ख़ में दाख़िल करें उसको वाकई रुस्वा ही कर दिया, और ऐसे बेइन्साफ़ों का कोई भी साथ देने वाला नहीं। (192) ऐ हमारे परवर्दिगार! हमने एक पुकारने वाले को सुना कि वह ईमान लाने के वास्ते ऐलान कर रहे हैं⁴ कि तुम अपने परवर्दिगार पर ईमान लाओ, सो हम ईमान ले आए। ऐ हमारे परवर्दिगार! फिर हमारे गुनाहों को भी माफ़ फ़रमा दीजिए और हमारी बुराइयों को भी हमसे दूर कर दीजिए और हमको नेक लोगों के साथ मौत दीजिए। (193) ऐ हमारे परवर्दिगार! हमको वह चीज़ भी दीजिए जिसका हमसे अपने पैग़म्बरों की मारफ़त आपने वायदा फ़रमाया है, और हमको कियामत के दिन रुस्वा न कीजिए,⁵ यकीनन आप वायदा ख़िलाफ़ी नहीं करते।⁶ (194) सो उनके रब ने मन्ज़ूर कर लिया उनकी दरख़्वास्त को इस वजह से कि मैं किसी शख्स के काम को

1. बुरा किर्दार यही कि हक़ अहक़ाम को छुपाते थे और जो नेक काम नहीं किया उससे मुराद हक़ का इज़हार है, जिसको वे न करते थे लेकिन दूसरों को यह यकीन दिलाना चाहते थे कि हम हक़ को ज़ाहिर करते हैं, ताकि उनका धोखा देना मालूम न हो। चुनौचे जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के रू-ब-रू भी यहूद ने यह ज़ुरत की।
2. पस चूँकि वह हकीकी बादशाह है, सबपर उनका हुक़्म मानना ज़रूरी है और नाफ़रमानी जुर्म है। और चूँकि वह कादिर हैं इसलिए जुर्म की सज़ा दे सकते हैं। और चूँकि उन्होंने इस सज़ा की ख़बर दी है इसलिए ज़रूर सज़ा देंगे। और चूँकि ये सिफ़तें उनके साथ ख़ास हैं लिहाज़ा उनके सज़ा दिए हुए को कोई बचा नहीं सकता।
3. बल्कि इसमें हिक्मतें रखी हैं, जिनमें एक बड़ी हिक्मत यह है कि इस मख़्लूक से ख़ालिक तआला के वजूद व तौहीद पर दलील पकड़ी जाए।
4. मुराद इससे मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम है वास्ते से या बिला वास्ता।
5. मतलब यह है कि शुरू ही से जन्नत में दाख़िल कर दीजिए।
6. लेकिन हमको यह ख़ौफ़ है कि जिनके लिए वायदा है यानी मोमिन और नेक लोग, कहीं ऐसा न हो कि खुदा न करे हम उन सिफ़ात वाले न रहें जिनपर वायदा है, इसलिए हम आपसे यह दरख़्वास्त करते हैं कि हमको अपने वायदे की चीज़ें दीजिए। यानी हमको ऐसा कर दीजिए और ऐसा ही रखिए जिससे हम वायदे के मुखातब व महल हो जाएँ।

जो कि तुममें से काम करने वाला हो अकारत नहीं करता चाहे वह मर्द हो या औरत,¹ तुम आपस में एक-दूसरे के जुज “यानी अंग” हो, सो जिन लोगों ने वतन छोड़ा और अपने घरों से निकाले गए² और तकलीफें दिए गए मेरी राह में और जिहाद किया और शहीद हो गए, ज़रूर उन लोगों की तमाम ख़ताएँ माफ़ कर दूँगा,³ और ज़रूर उनको ऐसे बाग़ों में दाख़िल करूँगा जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, यह बदला मिलेगा अल्लाह तआला के पास से, और अल्लाह ही के पास अच्छा बदला है।⁴ (195) तुझको उन काफ़िरों का शहरों में चलना-फिरना मुग़ालते में न डाल दे। (196) कुछ दिन की बहार है,⁵ फिर उनका ठिकाना दोज़ख़ होगा और वह बहुत ही बुरी आरामगाह है। (197) लेकिन जो लोग खुदा से डरें उनके लिए बागात हैं जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, वे उनमें हमेशा-हमेशा रहेंगे, यह मेहमानी होगी अल्लाह तआला की तरफ़ से, और जो चीज़ें खुदा तआला के पास हैं वे नेक बन्दों के लिए बहुत ही बेहतर हैं। ▲ (198) और यकीनन बाज़े लोग किताब वालों में से ऐसे भी ज़रूर हैं जो अल्लाह तआला के साथ एतिकाद रखते हैं और इस किताब के साथ भी जो तुम्हारे पास भेजी गई, और उस किताब के साथ जो उनके पास भेजी गई, इस तौर पर कि अल्लाह तआला से डरते हैं अल्लाह तआला की आयात के मुकाबले में कम-हकीकत मुआवज़ा नहीं लेते, ऐसे लोगों को उनका नेक बदला मिलेगा उनके परवर्दिगार के पास, इसमें शुब्हा नहीं कि अल्लाह तआला जल्द ही हिसाब कर देंगे। (199) ऐ ईमान वालों! खुद सब्र करो और मुकाबले में सब्र करो और मुकाबले के लिए तैयार रहो। और अल्लाह तआला से डरते रहो ताकि तुम पूरे कामयाब हो।⁶ (200) ♦

4 सूर: निसा 92

सूर: निसा मदीना में नाज़िल हुई। इसमें 177 आयतें और 24 रुकूअ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

ऐ लोगो! अपने परवर्दिगार से डरो जिसने तुमको एक जानदार से पैदा किया और उस जानदार से उसका जोड़ा पैदा किया, और उन दोनों से बहुत-से मर्द और औरतें फैलाई,⁷ और तुम खुदा तआला से डरो जिसके नाम से एक-दूसरे से मुतालबा किया करते हो, और क़सबत “यानी रिश्तेदारी और नातेदारी” से भी डरो, यकीनन अल्लाह तआला तुम सबकी इत्तिला रखते हैं।⁸ (1) और जिन बच्चों का बाप मर जाए उनके माल उन्हीं को पहुँचाते रहो,

1. दोनों के लिए एक जैसा क़ानून है।
2. यानी कुफ़ार ने वतन में परेशान किया, बेचारे घर छोड़कर परदेस को निकल खड़े हुए।
3. तमाम ख़ताएँ इसलिए कहा गया कि यहाँ हिजरत व जिहाद और शहादत की फज़ीलत ज़िक्र की गई है और हदीसों से इन आमाँल का पिछले तमाम गुनाहों का कफ़ारा होना मालूम होता है।
4. ऊपर की आयत में मुसलमानों की परेशानियों का बयान और उनका नेक अन्जाम ज़िक्र किया गया था, आगे काफ़िरों की ऐश व आराम का बयान और उनका बुरा अन्जाम ज़िक्र किया गया है। ताकि मुसलमानों को अपना अन्जाम सुनकर जो तसल्ली हुई थी अपने दुश्मनों का अन्जाम सुनकर और ज़्यादा तसल्ली हो, और उनके ऐश व आराम की तरफ़ हिस्, ग़म या गुस्से के तौर पर भी तवज्जोह न करें।
5. क्योंकि मरते ही इसका नाम व निशान भी न रहेगा।
6. कामूस में “मुआवज़त” और “रिबात” के दो मायने लिखे हैं, एक इस्लामी हुक्मत और काफ़िर हुक्मत के दरमियान सरहद की जगह क़ियाम करना ताकि कुफ़ार से दारुल-इस्लाम यानी इस्लामी हुक्मत की हिफ़ाज़त रहे, (शेष तफ़सीर पृष्ठ 140 पर)

और तुम अच्छी चीज़ से बुरी चीज़ को मत बदलो, और उनके माल मत खाओ अपने मालों (के रहने) तक, ऐसी कार्यवाही करना बड़ा गुनाह है। (2) और अगर तुमको इस बात का अन्देशा हो कि तुम यतीम लड़कियों के बारे में इन्साफ न कर सकोगे तो और औरतों से जो तुमको पसन्द हों निकाह कर लो, दो-दो औरतों से और तीन-तीन औरतों से और चार-चार औरतों से,¹ पस अगर तुमको इसका अन्देशा हो कि अदुल “यानी इन्साफ और बराबरी” न रखोगे तो फिर एक ही बीवी पर बस करो, या जो बाँदी तुम्हारी मिल्क में हो वही सही, इस जिक्र हुए मामले में ज्यादाती न होने की ज्यादा उम्मीद है।² (3) और तुम लोग बीवियों को उनके महर खुशदिली से दे दिया करो। हाँ, अगर वे बीवियाँ खुशदिली से छोड़ दें तुमको उस महर में का कोई हिस्सा तो तुम उसको खाओ मजेदार और खुशगवार समझ कर। (4) और तुम कम-अक़लों को अपने वे माल मत दो जिनको अल्लाह तआला ने तुम्हारे लिए ज़िन्दगी का सरमाया बनाया है, और उन मालों में से उनको खिलाते रहो पहनाते रहो और उनसे माकूल बात कहते रहो।³ (5) और तुम यतीमों को आजमा लिया करो यहाँ तक कि जब वे निकाह को पहुँच जाएँ,⁴ फिर अगर उनमें किसी कद्र तमीज़ देखो⁵ तो उनके माल उनके हवाले कर दो,⁶ और उन मालों को ज़रूरत से ज़ायद खर्च करके और इस ख्याल से कि ये बालिग हो जाएँगे जल्दी-जल्दी उड़ाकर मत खा डालो, और जो शख्स ज़रूरतमन्द न हो सो वह तो अपने को बिल्कुल बचाए, और जो शख्स ज़रूरतमन्द हो तो वह मुनासिब मिक्दार “यानी मात्रा” से खा ले, फिर जब उनके माल उनके हवाले करने लगे तो उनपर गवाह भी कर लिया करो, और अल्लाह तआला ही हिसाब लेने वाले काफी हैं।⁷ (6) मदों के लिए भी हिस्सा है उस चीज़ में से जिसको माँ-बाप और बहुत नज़दीक के रिश्तेदार छोड़ जाएँ और औरतों के लिए भी हिस्सा है उस चीज़ में से जिसको माँ-बाप और बहुत नज़दीक के रिश्तेदार छोड़ जाएँ, चाहे वह चीज़ थोड़ी हो या ज्यादा हो, कतई हिस्सा।⁸ (7) और जब (वारिसों में तरके के) तकसीम होने के

(पृष्ठ 138 का शेष) मैंने यही मायने लिए हैं। दूसरे मायने मुतलक अहकाम की पाबन्दी करना। बैजावी ने यह मायने भी लिए हैं। और हदीस में नमाज़ के बाद अगली नमाज़ के इन्तिज़ार को “रिबात” फरमाया है, इसमें दोनों मायनों की गुंजाइश है। या तो पहले मायने के एतिबार से तश्बीह (उस जैसा होने) के तौर पर इसको “रिबात” फरमा दिया कि यह भी नफ़्स व शैतान के मुकाबले में तैयार और चौकन्ना रहना है, या दूसरे मायने के एतिबार से हकीकत ही के तौर पर फरमा दिया है कि यह इन्तिज़ार खुद पहचान है पाबन्दी और हमेशा करने की, जैसा कि ज़ाहिर है। और अल्लाह ही ज्यादा जानते हैं।

7. इस आयत में पैदाइश की तीन सूरतों का बयान है। एक तो जानदार का बेजान से पैदा करना, क्योंकि आदम अलैहिस्सलाम मिट्टी से पैदा हुए। दूसरे जानदार का जानदार से पैदाइश के आम जाने-पहचाने तरीके के खिलाफ पैदा होना, क्योंकि हज़रत हव्वा हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की पत्नी से पैदा हुई हैं। और तीसरे जानदार का जानदार से पैदाइश के आम और जाने-पहचाने तरीके से पैदा होना, जैसे और आदमी आदम और हव्वा से इस वक़्त तक पैदा होते आ रहे हैं। और अपने आपमें अजीब होने में और कुदरत के सामने अजीब न होने में तीनों सूरतें बराबर हैं।

8. ऊपर तक्वे का हुक्म था और उसके तहत इनसानी और रिश्ते के हुक्क की रियायत का इशार्द था, आगे उस तक्वे के मौकों का जो कि जिक्र किए हुए हुक्क हैं, तफ़सील से जिक्र फरमाते हैं।

1. ‘दो-दो, तीन-तीन और चार-चार’ अरबी ज़बान के कायदे के मुताबिक यहाँ यह हुक्म मुकैयद करने के लिए है, मुतलक और आम नहीं। इसलिए अगर कैद ख़त्म हो गई जैसे चार से ज्यादा हों तो वहाँ यह गुंजाइश और मुबाह होना बाकी न रहेगा।

2. अगर इन्साफ और बराबरी न हो सकने का ग़ालिब गुमान हो तो कई औरतों से निकाह करना इस मायने में ममनू (यानी वर्जित) है कि यह शख्स गुनाहगार होगा, न कि इस मायने में कि निकाह सही न होगा। निकाह यकीनन हो जाएगा।

3. यानी उनकी तसल्ली करते रहो कि माल तुम्हारा ही है। तुम्हारी ख़ैर-ख़्वाही की वजह से अभी तुम्हारे हाथ में नहीं दिया, ज़रा समझदार हो जाओगे तो तुम ही को दे दिया जाएगा।

4. यानी बालिग हो जाएँ। क्योंकि निकाह की पूरी काबलियत बालिग होने से होती है।

5. यानी माल की हिफ़ाज़त व मसलहतों की रियायत का सलीका और इन्तिज़ाम उनमें पाओ। (शेष तफ़सीर पृष्ठ 142 पर)

वक्त (दूर के) रिश्तेदार आ मौजूद हों और यतीम और गरीब लोग, तो उनको भी उस (तरके) में से (जिस कद्र बालिगों का है) कुछ दे दो और उनके साथ अच्छे अन्दाज़ से बात करो।¹ (8) और ऐसे लोगों को डरना चाहिए कि अगर अपने बाद छोटे-छोटे बच्चे छोड़ जाएँ तो उनकी उनको फ़िक्र हो, सो उन लोगों को चाहिए कि अल्लाह से डरें और मौके की बात कहें। (9) बेशक जो लोग यतीमों का माल बिना हक़दार होते हुए खाते (बरतते) हैं, और कुछ नहीं अपने पेट में आग भर रहे हैं। और जल्द ही जलती हुई आग में दाख़िल होंगे।² (10) ♦

अल्लाह तआला तुमको हुक्म देता है तुम्हारी औलाद के बारे में। लड़के का हिस्सा दो लड़कियों के हिस्से के बराबर, और अगर सिर्फ़ लड़कियाँ ही हों अगरचे दो से ज्यादा हों तो उन लड़कियों को दो तिहाई मिलेगा उस माल का जो कि मूरिस छोड़कर मरा है, और अगर एक ही लड़की हो तो उसको आधा मिलेगा।³ और माँ-बाप के लिए यानी दोनों में से हर एक के लिए मय्यित के तरके “यानी छोड़े हुए माल व जायदाद” में से छठा हिस्सा है अगर मय्यित के कुछ औलाद हो, और अगर उस मय्यित के कुछ औलाद न हो और उसके माँ-बाप ही उसके वारिस हों तो उसकी माँ का एक तिहाई है, अगर मय्यित के एक से ज्यादा भाई या बहन हों तो उसकी माँ को छठा हिस्सा मिलेगा (और बाकी बाप को मिलेगा) वसीयत निकाल लेने के बाद कि मय्यित उसकी वसीयत कर जाए या कर्ज़ के बाद,⁴ तुम्हारे उसूल व फ़ुरू “यानी बाप-दादा और औलाद व औलाद की औलाद” जो हैं तुम पूरे तौर पर यह नहीं जान सकते हो कि उनमें का कौन-सा शख्स तुमको नफ़ा पहुँचाने में ज्यादा नज़दीक है। यह हुक्म अल्लाह की तरफ़ से मुकर्रर कर दिया गया, यकीनन अल्लाह तआला बड़े इल्म और हिक्मत वाले हैं।⁵ (11) और तुमको आधा मिलेगा उस तरके का जो तुम्हारी बीवियाँ छोड़ जाएँ अगर उनके कुछ औलाद न हो। और अगर उनके कुछ औलाद हो तो

(पृष्ठ 140 का शेष)

6. तमीज़ न होने को “सफ़ह” (यानी कम-अक्ली) कहते हैं जो माल सुपुर्द करने के लिए रुकावट है, चाहे सलीका न हो चाहे सलीका हो मगर उस सलीके से काम न लेता हो। यानी इन्तिज़ाम न करता हो बल्कि माल को उड़ाता हो, दोनों सूरतों में माल अभी न दिया जाएगा।

7. यतीम के हाज़तमन्द कारकुन को अपनी लाज़िमी ज़रूरत के मुताबिक़ खर्च करना अपनी ख़िदमत करने के हक़ के तौर पर लेना जायज़ है।

8. यहाँ सिर्फ़ मीरास के हिस्सों के हक़दार होने को मुख़्तसर तौर पर बताया है, थोड़ा आगे चलकर वारिसों के हिस्सों की तफ़सील आती है। और नज़दीक के रिश्ते से मतलब यह है कि शरीअत में जो तरतीब वारिसों में मुकर्रर और साबित है उस तरतीब में नज़दीक हो, और ज़ाहिर है कि नज़दीकी दोनों जानिब से होती है। पस इससे लाज़िम आ गया कि जो रिश्तेदार ज्यादा करीब होगा वह मीरास पाएगा।

1. यह हुक्म वाजिब नहीं मुस्तहब (यानी पसन्दीदा) है। और अगर शुरू में वाजिब हुआ हो तो इसका वाजिब होना मन्सूख़ है।

2. जिस तरह यतीम का माल खुद खाना हराम है इसी तरह किसी को खिलाना या देना अगरचे बतौर ख़ैर-ख़ैरात ही के क्यों न हो, यह भी हराम है। और हर नाबालिग़ का हुक्म यही है चाहे वह यतीम न हो।

3. हदीस और अहले-हक़ के इज्मा से इस आयत का हुक्म अम्बिया अलैहिमुस्सलाम के लिए नहीं। इसी वास्ते हज़रत सिदीके अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु ने ‘फ़िदक’ (एक गाँव का नाम है जहाँ जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का सरकारी बाग़ था जो आपके खलीफ़ाओं को मुन्ताकिल हो गया) वग़ैरह को मीरास में तकसीम नहीं फरमाया।

4. इन दोनों (वसीयत और कर्ज़) से पहले कफ़न-दफ़न ज़रूरी है। और वसीयत से मुराद वह है जो शरीअत के मुवाफ़िक़ हो। जैसे वारिस को वसीयत में कुछ न दे और कफ़न-दफ़न के खर्च और कर्ज़ की अदायगी के बाद जो माल बचे उसके एक तिहाई से ज़ायद की वसीयत न करे वरना वह वसीयत मीरास से मुक़द्दम न होगी। और जानना चाहिए कि कर्ज़ और वसीयत में कर्ज़ मुक़द्दम (पहले) है।

5. मीरास का मामला मय्यित की राय पर नहीं रखा गया, बल्कि खुद हक़ तआला ने सब कायदे मुकर्रर फरमा दिए।

तुमको उनके तरके से एक चौथाई मिलेगा वसीयत निकालने के बाद कि वे उसकी वसीयत कर जाएँ या कर्ज के बाद। और उन बीवियों को चौथाई मिलेगा उस तरके का जिसको तुम छोड़ जाओ अगर तुम्हारे कुछ औलाद न हो, और अगर तुम्हारे कुछ औलाद हो तो उनको तुम्हारे तरके से आठवाँ हिस्सा मिलेगा वसीयत निकालने के बाद कि तुम उसकी वसीयत कर जाओ या कर्ज के बाद। और अगर कोई मय्यित जिसकी मीरास दूसरों को मिलेगी, चाहे वह मय्यित मर्द हो या औरत, ऐसी हो जिसके न उसूल हों न फुरू, “यानी न बाप-दादा की जानिब से कोई हो और न औलाद की जानिब से कोई हो” और उसके एक भाई या एक बहन हो तो उन दोनों में से हर एक को छठा हिस्सा मिलेगा। फिर अगर ये लोग इससे ज्यादा हों तो वे सब तिहाई में शरीक होंगे वसीयत निकालने के बाद जिसकी वसीयत कर दी जाए या कर्ज के बाद, शर्त यह है कि किसी को नुकसान न पहुँचाए, यह हुक्म किया गया है खुदा तआला की तरफ से। और अल्लाह तआला खूब जानने वाले हैं, हलीम हैं।¹ (12) ये सब अहकाम जो जिक्र हुए खुदावन्दी ज़ाबते हैं, और जो शख्स अल्लाह और रसूल की पूरी इताअत करेगा अल्लाह तआला उसको ऐसी जन्नतों में दाखिल कर देंगे जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, हमेशा-हमेशा उनमें रहेंगे, और यह बड़ी कामयाबी है। (13) और जो शख्स अल्लाह तआला और रसूल का कहना न मानेगा और बिल्कुल ही उसके ज़ाबतों से निकल जाएगा उसको आग में दाखिल कर देंगे, इस तरह से कि वह उसमें हमेशा-हमेशा रहेगा और उसको ऐसी सज़ा होगी जिसमें ज़िल्लत भी है।² (14) ♦

और जो औरतें बेहयाई का काम करें तुम्हारी बीवियों में से सो तुम लोग उन औरतों पर चार आदमी अपनों में से गवाह कर लो, सो अगर वे गवाही दे दें तो तुम उनको घरों के अन्दर रोक कर रखो यहाँ तक कि मौत उनका खात्मा कर दे या अल्लाह तआला उनके लिए कोई और राह तजवीज़ फरमा दें।³ (15) और जो दो शख्स भी बेहयाई का काम करें तुममें से तो उन दोनों को तकलीफ पहुँचाओ, फिर अगर वे दोनों तौबा कर लें और इस्लाह कर लें तो उन दोनों से कुछ तअरूज़ “यानी रोक-टोक” न करो, बिला शुब्हा अल्लाह तआला तौबा कबूल करने वाले हैं, रहमत करने वाले हैं।⁴ (16) तौबा जिसका कबूल करना अल्लाह के ज़िम्मे है वह तो उन्हीं की है जो हिमाक़त से कोई गुनाह कर बैठते हैं,⁵ फिर करीब ही वक़्त में तौबा कर लेते हैं, सो ऐसों पर तो खुदा तआला तवज्जोह फरमाते हैं, और अल्लाह तआला खूब जानने वाले हैं, हिक्मत वाले हैं। (17) और ऐसे लोगों की तौबा नहीं जो गुनाह करते

1. अहकाम को बयान करके आगे उनके एतिकादी और अमली तौर पर मानने की ताकीद और न मानने पर वर्द इशार्द फरमाते हैं।
2. जाहिलियत में जैसे यतीमों और मीरास पाने वालों के मामले में बहुत-सी बेइन्तिज़मियाँ थीं जिनकी इस्लाह ऊपर की आयतों में जिक्र हुई। इसी तरह औरतों के मामले में भी तरह-तरह की बुरी और ख़राब रस्में और बेउन्वानियाँ फैली हुई थीं, आगे ‘अर्रिजालु कव्बामू-न’ तक उन मामलात की इस्लाह फरमाते हैं, और जो ख़ता व कुसूर शर्ई तौर पर मोतबर हो उसपर तंबीह की इजाज़त देते हैं।
3. वह दूसरा हुक्म बाद में नाज़िल हुआ जिसको जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस तरह इशार्द फरमाया कि अल्लाह ने वह सबील इशार्द फरमा दी है। तुम लोग समझ लो, याद कर लो कि ग़ैर-शादीशुदा के लिये सौ दुर्रे और शादीशुदा के लिये संगसारी (यानी पत्थर मार-मारकर हलाक कर देना) है। (जैसा कि हदीस की मोतबर किताबों में है) पस इस आयत का हुक्म मन्सूख है।
4. ‘जो दो शख्स भी’ इसमें शादीशुदा और ग़ैर-शादीशुदा औरत, और निकाह वाला और बेनिकाह वाला मर्द सब आ गए। पस चारों का हुक्म बयान हो गया।
5. ‘हिमाक़त’ की कैद वाकई है शर्त के तौर पर नहीं, क्योंकि हमेशा गुनाह हिमाक़त ही से होता है।

रहते हैं यहाँ तक कि जब उनमें से किसी के सामने मौत ही आ खड़ी हुई¹ तो कहने लगा कि मैं अब तौबा करता हूँ, और न उन लोगों की जिनको कुफ़्र की हालत पर मौत आ जाती है। उन लोगों के लिए हमने एक दर्दनाक सज़ा तैयार कर रखी है। (18) ऐ ईमान वालो! तुमको यह बात हलाल नहीं कि औरतों के (माल या जान के) जब्रन मालिक हो जाओ² और उन औरतों को इस ग़रज़ से मुक़ैयद मत करो कि जो कुछ तुम लोगों ने उनको दिया है उसमें का कोई हिस्सा वसूल कर लो, मगर यह कि वे औरतें कोई खुली नामुनासिब और ग़लत हरकत करें। और उन औरतों के साथ ख़ूबी के साथ गुज़रान किया करो। और अगर वे तुमको नापसन्द हों तो मुम्किन है कि तुम एक चीज़ को नापसन्द करो और अल्लाह तआला उसके अन्दर कोई बड़ी ख़ैर रख दे। (19) और अगर तुम बजाय एक बीवी के दूसरी बीवी करना चाहो और तुम उस एक को ढेर का ढेर माल दे चुके हो तो तुम उसमें से कुछ भी मत लो।³ क्या तुम उसको लेते हो बोहतान रखकर और खुले गुनाह के करने वाले होकर। (20) और तुम उसको कैसे लेते हो हालाँकि तुम आपस में एक-दूसरे से बेहिजाबी के साथ मिल चुके हो, और वे औरतें तुमसे एक गाढ़ा इकरार ले चुकी हैं। (21) और तुम उन औरतों से निकाह मत करो जिनसे तुम्हारे बाप (दादा या नाना) ने निकाह किया हो, मगर जो बात गुज़र गई गुज़र गई। बेशक यह (अक्ल के एतिबार से भी) बड़ी बेहयाई है और बहुत ही नफ़रत की बात है, और (शर्अन भी) बुरा तरीका है।⁴ (22) ♦

तुमपर हराम की गई हैं तुम्हारी माँ और तुम्हारी बेटियाँ⁵ और तुम्हारी बहनें⁶ और तुम्हारी फूफियाँ⁷ और तुम्हारी ख़ालाएँ⁸ और भतीजियाँ और भान्जियाँ⁹ और तुम्हारी वे माँ जिन्होंने तुम्हें दूध पिलाया है और तुम्हारी वे बहनें जो दूध पीने की वजह से हैं,¹⁰ और तुम्हारी बीवियों की माँ¹¹ और तुम्हारी बीवियों की बेटियाँ¹² जो कि तुम्हारी परवरिश में रहती हैं, उन बीवियों से कि जिनके साथ तुमने सोहबत की हो।¹³ और अगर तुमने उन बीवियों से सोहबत न की हो तो तुमको कोई गुनाह नहीं, और तुम्हारे उन बेटों की बीवियाँ जो कि तुम्हारी नस्ल से हों,¹⁴ और यह कि तुम दो बहनों को एक साथ रखो, लेकिन जो पहले हो चुका। बेशक अल्लाह तआला बड़े बख़्शने वाले, बड़े रहमत वाले हैं। (23)

1. मौत के हाज़िर होने का मतलब यह है कि उसे दूसरी दुनिया की चीज़ें नज़र आने लगे।

2. माल का मालिक होना तीन तरह से है। एक यह कि उस औरत का जो हक़ शरई मीरास में है उसको खुद ले लिया जाए, उसको न दिया जाए। दूसरे यह कि उसको निकाह न करने दिया जाए, यहाँ तक कि वह यहीं पर मर जाए, फिर उसका माल ले लें या वह मजबूरन खुद कुछ दे दे। तीसरे यह कि शौहर उसको मजबूर करे कि वह उसको कुछ माल दे तब यह उसको छोड़े। और जान का मालिक होना यह था कि मुर्दे की औरत को मुर्दे के माल की तरह अपनी मीरास समझते थे, इस सूरत में जबर की कैद वाकई है कि वे ऐसा करते थे। यह नहीं कि औरत अगर राज़ी हो तो वह सचमुच मीरास और मिलक हो जाएगी।

3. अगर किसी को शुब्हा हो कि हदीस में महर कम मुक़र्रर करने की ताकीद आई है और इस आयत से ज़्यादा का जायज़ होना मालूम होता है, तो उसका जवाब यह है कि यह कुरआन से जो जायज़ होने का मफ़हूम निकल रहा है यह सही हो जाने और लागू होने के मायने में है और हदीस में जायज़ होना मुत्लक़ दुरुस्त होने और मक्रूह न होने की नफ़ी है, पस कुछ टकराव नहीं। और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का एक वाकिए में ज़्यादा महर के जायज़ और दुरुस्त होने को मान लेना इसलिए था कि सुनने वाले उसको हराम न समझने लगे, पस इससे कराहत का न होना साबित नहीं होता, न हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु पर कोई एतिराज़ लाज़िम आता है।

4. जिस औरत से बाप ने ज़िना किया हो उससे बेटा निकाह नहीं कर सकता। इसी तरह जहाँ-जहाँ निकाह से हराम होना साबित हो जाता है ज़िना से भी हराम हो जाता है।

5. इनमें सब उसूल व फ़ुरु (यानी रिश्ते की जड़ जैसे बाप-दादा की जानिब और शाख़ जैसे औलाद की जानिब) वास्ते से और बिला वास्ता सब दाख़िल हैं।

6. चाहे हकीकी हों या माँ-शरीक या बाप-शरीक।

7. इसमें बाप की और सब मुजक्कर (Male) उसूल की तीनों किस्म की बहनें आ गईं। (शेष तफ़सीर पृष्ठ 148 पर)

पाँचवाँ पार: वल-मुहसनातु

सूर: निसा (आयत 24 से 147)

और वे औरतें जो कि शौहर वालियाँ हैं, मगर जो कि तुम्हारी मिल्क में आ जाएँ, अल्लाह तआला ने इन अहकाम को तुमपर फर्ज कर दिया है।¹ और उन औरतों के अलावा और औरतें तुम्हारे लिए हलाल की गई हैं, यानी यह कि तुम उनको अपने मालों के ज़रिये से चाहो,² इस तरह से कि तुम बीवी बनाओ, सिर्फ़ मस्ती ही निकालना न हो,³ फिर जिस तरीके से तुमने उन औरतों से फायदा उठाया है सो उनको उनके महर दो जो कुछ मुकर्रर हो चुके हैं। और मुकर्रर होने के बाद भी जिसपर तुम आपस में रज़ामन्द हो जाओ उसमें तुमपर कोई गुनाह नहीं, बेशक अल्लाह तआला बड़े जानने वाले, बड़े हिक्मत वाले हैं। (24) और जो शख्स तुममें पूरी ताकत और गुंजाइश न रखता हो आज़ाद मुसलमान औरतों से निकाह करने की तो वह अपने आपस की मुसलमान बाँदियों से जो कि तुम लोगों की मिल्क में हैं, निकाह कर ले। और तुम्हारे इमान की पूरी हालत अल्लाह ही को मालूम है, तुम आपस में एक-दूसरे के बराबर हो। सो उनसे निकाह कर लिया करो उनके मालिकों की इजाज़त से, और उनको उनके महर कायदे के मुवाफ़िक़ दे दिया करो, इस तौर पर कि वे निकाह में लाई जाएँ, न तो खुले-आम बदकारी करने वाली हों और न छुपे ताल्लुकात रखने वाली हों।⁴ फिर जब वे बाँदियाँ निकाह में लाई जाएँ, फिर अगर वे बड़ी बेहयाई का काम (ज़िना) करें तो उनपर उस सज़ा से आधी सज़ा होगी जो आज़ाद औरतों पर होती है।⁵ यह उस शख्स के लिए है जो तुममें ज़िना का अन्देशा रखता हो,⁶ और ज़ब्त करना ज़्यादा बेहतर है, और अल्लाह तआला बड़े बख़्शने वाले, बड़े रहमत वाले हैं। (25) ♦

अल्लाह तआला को यह मन्ज़ूर है कि तुमसे बयान कर दे और तुमसे पहले लोगों के हालात तुम्हें बता दे और तुमपर तवज्जोह फरमाए, और अल्लाह तआला बड़े इल्म वाले, बड़े हिक्मत वाले हैं। (26) और अल्लाह तआला को

- (पृष्ठ 146 का शेष) 8. इसमें माँ की और सब मुअन्नस (Female) उसूल की तीनों किस्म की बहनें आ गईं।
9. इसमें तीनों किस्म की बहनों की औलाद वास्ते से और बिला वास्ता सब आ गई।
10. यानी तुमने उनकी हकीकी या दूध पिलाने वाली माँ का दूध पिया है, या उन्होंने तुम्हारी हकीकी या दूध पिलाने वाली माँ का दूध पिया है, अगरचे अलग-अलग वक्तों में पिया हो।
11. इसमें बीवी के सब मुअन्नस उसूल आ गए।
12. इसमें बीवी के सब मुअन्नस फुरु आ गए।
13. किसी औरत के साथ निकाह से उसकी वह लड़की जो पहले शौहर से हो हराम नहीं होती, बल्कि जब उस औरत से सोहबत हो जाए तब हराम होती है।
14. इसमें सब मुजक्कर फुरु की बीवियाँ आ गईं। और नस्ल की कैद का मतलब यह है कि मुँह-बोले लेपालक जिसको मुतबन्ना कहते हैं, उसकी बीवी हराम नहीं।
1. यहाँ तक उनका बयान था जिनसे निकाह करना हराम है। इसके बाद उनके अलावा के निकाह के हलाल होने मय हलाल होने की शर्तों का बयान है।
2. यानी निकाह में महर होना ज़रूरी है।
3. इसके आ़म होने में ज़िना और मुत्आ (यानी एक मुहते मुकर्ररा के लिए निकाह कर लेना) सब दाख़िल हो गए।
4. बाँदी के साथ निकाह करने में दो शर्तें लगाई हैं, एक यह कि वह ऐसी औरत से निकाह न कर सके जिसमें दो सिफ़तें हों-नम्बर एक आज़ाद होना, नम्बर दो मोमिन होना। दूसरी शर्त यह है कि वह मुसलमान बाँदी हो। इमाम अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाहि अलैहि के नज़दीक इन शर्तों का लिहाज़ रखना अफ़ज़ल है, और अगर इन शर्तों की रियायत किए बग़ैर (शेष तफ़सीर पृष्ठ 150 पर)

तो तुम्हारे हाल पर तवज्जोह फरमाना मन्ज़ूर है। और जो लोग शहवत परस्त हैं¹ वे यूँ चाहते हैं कि तुम बड़े भारी कजी “यानी टेढ़पन” में पड़ जाओ।² (27) अल्लाह को तुम्हारे साथ तख्फ़ीफ़ “यानी कमी और सहूलत करना” मन्ज़ूर है और आदमी कमज़ोर पैदा किया गया है। (28) ऐ ईमान वालो! आपस में एक-दूसरे के माल नाहक़ तौर पर मत खाओ, लेकिन कोई तिजारत हो जो आपसी रज़ामन्दी से हो तो हर्ज नहीं, और तुम एक-दूसरे को क़त्ल भी मत करो, बिला शुब्हा अल्लाह तआला तुमपर बड़े मेहरबान हैं। (29) और जो शख्स ऐसा फ़ेल “यानी काम” करेगा इस तौर पर कि हद से गुज़र जाए और इस तौर पर कि जुल्म करे,³ तो हम जल्द ही उसको⁴ आग में दाख़िल करेंगे, और यह (काम) खुदा तआला को आसान है। (30) जिन कामों से तुमको मना किया जाता है उनमें जो भारी-भारी काम हैं अगर तुम उनसे बचते रहो तो हम तुम्हारी हल्की और छोटी बुराइयाँ तुमसे दूर फरमा देंगे और हम तुमको एक इज़्ज़त वाली जगह में दाख़िल कर देंगे।⁵ (31) और तुम किसी ऐसे अमूर “यानी मामले और काम” की तमन्ना मत किया करो जिसमें अल्लाह तआला ने बाज़ों को बाज़ों पर फौकियत बख़्शी है,⁶ मर्दों के लिए उनके आमाल का हिस्सा साबित है और औरतों के लिए उनके आमाल का हिस्सा साबित है, और अल्लाह तआला से उसके फ़ज़ल की दरख्वास्त किया करो, बेशक अल्लाह तआला हर चीज़ को ख़ूब जानते हैं। (32) और हर ऐसे माल के लिए जिसको माँ-बाप और रिश्तेदार लोग छोड़ जाएँ हमने वारिस मुकर्रर कर दिए हैं, और जिन लोगों से तुम्हारे अहद बंधे हुए हैं उनको उनका हिस्सा दे दो,⁷ बेशक अल्लाह तआला हर चीज़ पर इत्तिला रखते हैं। (33) ♦

मर्द हाकिम हैं औरतों पर, इस सबब से कि अल्लाह तआला ने बाज़ों को बाज़ों पर फज़ीलत दी है, और इस सबब से कि मर्दों ने अपने माल खर्च किए हैं, सो जो औरतें नेक हैं इताअत करती हैं, मर्द की ग़ैर मौजूदगी में अल्लाह की हिफ़ाज़त से निगरानी करती हैं, और जो औरतें ऐसी हों कि तुमको उनकी बद-दिमागी का अंदेशा हो तो उनको ज़बानी नसीहत करो और उनको उनके लेटने की जगहों में अकेला छोड़ दो, और उनको मारो, फिर अगर वे तुम्हारी इताअत करना शुरू कर दें तो उनपर बहाना मत ढूँढो, बेशक अल्लाह तआला बड़ी बुलन्दी और बड़ाई

(पृष्ठ 148 का शेष)

बाँदी से निकाह किया तो निकाह हो जाएगा लेकिन मक्रूह होगा।

5. वह सज़ा यह है कि उनको पचास दुर्रें लगाए जाएँगे।

6. और जिसको यह अन्देशा न हो उसके लिए मुनासिब नहीं।

1. इब्ने ज़ैद के कौल के मुताबिक़ शहवत परस्त लोगों से फ़ासिक लोग मुराद हैं, और हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु के कौल के मुताबिक़ जिनाकार मुराद हैं। यहाँ शहवत परस्ती की बुराई में मुबाह शहवतों से अलग होना दाख़िल नहीं है।

2. बड़ी भारी कजी (टेढ़पन) के दो मतलब हैं। एक यह कि बेख़ौफ़ और निडर होकर हराम कामों को करना, दूसरे यह कि हराम को हलाल समझ लेना। और उसके मुकाबले में हल्का टेढ़पन यह है कि गुनाह को गुनाह समझे और इत्तिफ़ाक़ से गुनाह हो जाए। इस आयत में ‘हल्के टेढ़पन’ (यानी थोड़ी बहुत बेराहरवी) की इजाज़त नहीं है बल्कि उन बदख़्वाहों के हाल का बयान करना है कि वे बड़ी कजी की कोशिश में हैं।

3. “उद्वान” का हासिल यह है कि वह (क़त्ल किया गया) शख्स हकीकत में क़त्ल का मुस्तहिक़ न हो और उसको क़त्ल किया जाए। और जुल्म का हासिल यह है कि जो क़त्ल का हक़दार न हो उसका क़त्ल हो जाना तीन तरह पर हो सकता है, एक यह कि फ़ेल में ख़ता हुई, यानी जैसे गोली शिकार पर चलाई और वह किसी आदमी को लग गई, दूसरे यह कि काज़ी व हाकिम से फैसला करने में ख़ता हुई, तीसरे यह कि हकीकते हाल यानी उसका क़त्ल का मुस्तहिक़ न होना मालूम है फिर भी जान-बूझकर उसको क़त्ल कर डाला। पस जुल्म कहने से पहली दो सूरतें ख़ारिज हो जाएँगी कि उनमें यह वर्ड नहीं।

4. यानी मरने के बाद।

5. गुनाहे कबीरा (यानी बड़े गुनाह) की तारीफ़ में बहुत अक्वाल हैं। सबसे ज़्यादा जामेअ कौल वह है जिसको ‘रुहुल मअानी’ में शैख़ुल इस्लाम बारज़ी से नक़ल किया है, कि जिस गुनाह पर कोई वर्ड हो या सज़ा हो या उसपर लानत आई हो, या उसमें किसी ऐसे ही गुनाह के बराबर ख़राबी हो या ज़्यादा हो जिसपर डॉट-डपट या सज़ा या लानत आई हो, या वह दीन की तौहीन करने के तौर पर सादिर हो, वह कबीरा (यानी बड़ा) है, और उसका मुकाबिल सगीरा (छोटा) है। और हदीसों में जो अ़दद आया है (शेष तफ़सीर पृष्ठ 152 पर)

वाले हैं। (34) और अगर तुम ऊपर वालों को उन दोनों मियाँ-बीवी में कशा-कशी का अन्देशा हो तो तुम लोग एक आदमी जो तसफिया करने की सलाहियत रखता हो मर्द के खानदान से, और एक आदमी जो तसफिया करने की सलाहियत रखता हो औरत के खानदान से भेजो, अगर उन दोनों आदमियों को इस्लाह मन्जूर होगी तो अल्लाह तआला उन मियाँ-बीवी में इत्तिफाक फरमा देंगे। बेशक अल्लाह तआला बड़े इल्म वाले, बड़े खबर वाले हैं। (35) और तुम अल्लाह तआला की इबादत इख्तियार करो और उसके साथ किसी चीज़ को शरीक मत करो और माँ-बाप के साथ अच्छा मामला करो, और रिश्तेदारों के साथ भी और यतीमों के साथ भी और गरीब-गुरबा के साथ भी और पास वाले पड़ोसी के साथ भी और दूर वाले पड़ोसी के साथ भी, और साथ रहने और उठने-बैठने वाले के साथ भी,¹ और राहगीर के साथ भी और उनके साथ भी जो तुम्हारे मालिकाना कब्जे में हैं,² बेशक अल्लाह तआला ऐसे शख्सों से मुहब्बत नहीं रखते जो अपने को बड़ा समझते हों, शेखी की बातें करते हों। (36) जो कि बुख्ल “यानी कन्जूसी” करते हों और दूसरे लोगों को भी बुख्ल की तालीम करते हों, और वे उस चीज़ को छुपाकर रखते हों जो अल्लाह तआला ने उनको अपने फज़ल से दी है।³ और हमने ऐसे नाशुकों के लिए तौहीन वाली सज़ा तैयार कर रखी है। (37) और जो लोग कि अपने मालों को लोगों को दिखाने के लिए खर्च करते हैं और अल्लाह तआला पर और आखिरी दिन पर एतिकाद नहीं रखते, और शैतान जिसका साथी हो उसका वह बुरा साथी है।⁴ (38) और उनपर क्या मुसीबत नाज़िल हो जाएगी अगर वे लोग अल्लाह तआला पर और आखिरी दिन पर ईमान ले आएँ, और अल्लाह तआला ने जो उनको दिया है उसमें से खर्च करते रहा करें,⁵ और अल्लाह तआला उनको खूब जानते हैं। (39) बिला शुब्हा अल्लाह तआला एक ज़रा बराबर भी जुल्म न करेंगे, और अगर एक नेकी होगी तो उसको कई गुना कर देंगे और अपने पास से और बड़ा अज़्र देंगे।⁶ (40) सो उस वक़्त भी क्या हाल होगा जबकि हम हर उम्मत में से एक-एक गवाह को हाज़िर करेंगे और आपको उन लोगों पर गवाही देने के लिए सामने लाएँगे।⁷ (41) उस दिन जिन्होंने कुफ़ किया होगा और रसूल का कहना न माना होगा वे इस बात की तमन्ना करेंगे कि काश! हम ज़मीन के पैवन्द हो जाएँ, और अल्लाह तआला से किसी बात को छुपा न सकेंगे। (42) ♦

(पृष्ठ 150 का शेष) उससे मकसूद उसी में महदूद करना नहीं बल्कि वक़्त के तकाज़े से उन्हीं का ज़िक्र होगा।

6. जैसे मर्द होना या मर्दों का डबल हिस्सा होना, या उनकी गवाही का कामिल होना वगैरह-वगैरह।

7. जिन दो शख्सों में आपस में इस तरह कौल व करार हो जाए कि हम एक-दूसरे के इस तरह मददगार रहेंगे कि अगर एक शख्स के ज़िम्मे कोई दियत (यानी जुर्माना, खून-बहा) लाज़िम आई तो दूसरा भी उसको बर्दाश्त करने वाला हो, और जब वह मर जाए तो दूसरा उसकी मीरास ले, तो यह अ़हद ‘अ़वदे मवालात’ है और उनमें से हर शख्स ‘मौलल-मवालात’ कहलाता है। यह रस्म अरब में इस्लाम से पहले भी थी और शुरू इस्लाम में जब तक कि अक्सर मुसलमानों के रिश्तेदार भी मुसलमान न हुए थे, और इस वजह से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अन्सार व मुहाजिरीन में आपस में ‘अ़वदे उखुवत’ (यानी भाईचारा) आयोजित फरमा दिया था, जिसका असर इसी मवालात का-सा था। उस वक़्त भी इसी पुरानी रस्म के मुवाफ़िक हुक्म रहा कि अन्सार व मुहाजिरीन में आपस में मीरास जारी होती थी। फिर जब लोग कस्ूरत से मुसलमान हो गए तो उसमें अव्वल वह तरमीम हुई जो इस आयत में ज़िक्र हुई है, यानी छठा हिस्सा उस ‘मौलल मवालात’ को और बाकी दूसरे वारिसों को दिलाया जाता था। फिर इसके कुछ बाद सूर: अहज़ाब की आयत ‘व उलुल अरहामि बअज़ुहुम् औला बि-बअज़िन्’ से बिलकुल ही इस ‘मौलल मवालात’ का हिस्सा मन्सूख हो गया।

1. चाहे वह मज्लिस हमेशा की हो जैसे लम्बे सफ़र का साथ और किसी जायज़ काम में शिर्कत, या आरज़ी हो जैसे छोटे सफ़र का साथ या इत्तिफाकी जलसे में शिर्कत।

2. ये हुक्क वाले अगर काफ़िर भी हों तब भी उनके साथ एहसान करे, अलबत्ता मुसलमान का हक़ इस्लाम की वजह से उनसे ज़्यादा होगा।

3. इससे या तो मुराद माल व दौलत है जबकि हिफाज़त की मसलहत के बग़ैर महज़ बुख्ल की वजह से कि हुक्क वाले उम्मीद न करें, छुपाए, या मुराद इल्मे दीन है कि यहूद रिसालत की ख़बरों को छुपाया करते थे, पस बुख्ल भी आ़म हो जाएगा, (शेष तफ़सीर पृष्ठ 154 पर)

ऐ ईमान वालो! तुम नमाज़ के पास भी ऐसी हालत में मत जाओ कि तुम नशे में हो,¹ यहाँ तक कि तुम समझने लगे कि (मुँह से) क्या कहते हो,² और नापाकी की हालत में भी तुम्हारे मुसाफिर होने की हालत को छोड़कर, यहाँ तक कि गुस्ल कर लो,³ और अगर तुम बीमार हो⁴ या सफर की हालत में हो या तुममें से कोई शख्स इस्तिन्जे से “यानी पेशाब पाख़ाने की ज़रूरत से फारिग होकर” आया हो, या तुमने बीवियों से कुरबत की हो, फिर तुमको पानी न मिले तो तुम पाक ज़मीन (पर हाथ मारकर उस) से तयम्मूम कर लिया करो, यानी अपने चेहरों और हाथों पर (हाथ) फेर लिया करो,⁵ बिला शुब्हा अल्लाह तआला बड़े माफ करने वाले, बड़े बख़्शने वाले हैं। (43) क्या तुने उन लोगों को नहीं देखा जिनको किताब का एक बड़ा हिस्सा मिला है, वे लोग गुमराही को इख़्तियार कर रहे हैं और (युँ) चाहते हैं कि तुम राह से बेराह हो जाओ। (44) और अल्लाह तआला तुम्हारे दुश्मनों को ख़ूब जानते हैं और अल्लाह तआला काफी रफ़ीक़ है, और अल्लाह तआला काफी हिमायती है। (45) ये लोग जो यहूदियों में से हैं कलाम को उसके मौकों से दूसरी तरफ़ फेर देते हैं, और (ये कलिमात) कहते हैं: समिअना व असैना और इसमअ गै-र मुस्-मअ और राअिना इस तौर पर कि अपनी ज़बानों को फेर कर और दीन में ताना मारने की नीयत से,⁶ और अगर ये लोग (ये कलिमात) कहते, समिअना व अतअना⁷ और इस्-मअ और उन्जुरना⁸ तो (यह बात) उनके लिए बेहतर होती और मौकों की बात थी, मगर उनको खुदा तआला ने उनके कुफ़्र के सबब अपनी रहमत से दूर फेंक दिया, अब वे ईमान न लाएँगे मगर थोड़े-से आदमी।⁹ (46) ऐ वे लोगो! जो किताब दिए गए हो, तुम उस किताब पर ईमान लाओ जिसको हमने नाज़िल फरमाया है, ऐसी हालत पर कि वह सच बतलाती है उस किताब को जो तुम्हारे पास है, इससे पहले-पहले कि हम चेहरों को बिलकुल मिटा डालें और उनको उनकी उल्टी तरफ़ की तरह बना दें, या उनपर हम ऐसी लानत करें जैसी लानत उन हफ़ते वालों पर की थी, और अल्लाह तआला का हुक्म पूरा ही होकर रहता है। (47) बेशक अल्लाह तआला इस बात को न बख़्शेंगे कि उनके साथ किसी को शरीक़ करार दिया जाए और इसके सिवा जितने गुनाह हैं जिसके लिए मन्ज़ूर होगा वे गुनाह बख़्श देंगे। और जो अल्लाह तआला

(पृष्ठ 152 का शेष) जिसमें बख़ील लोग और रिसालत का इनकार करने वाले दोनों आ गए।

4. ऊपर अल्लाह व रसूल और कियामत के साथ कुफ़्र और बुख़ल और दिखावे और तकब्बुर की मज़मूत (बुराई और निंदा) फरमाई है, आगे उनकी उलट सिफ़ात की तरफ़ीब देते हैं। पस वह जो पहले गुज़रा यह उसका पूरा करने वाला, बकिया और आख़िरी हिस्सा है।

5. यानी कुछ भी नुक़सान नहीं हर तरह नफ़ा-ही-नफ़ा है।

6. ऊपर जिन उमूर की तर्गीब थी आगे उनके न करने पर डरावा और धमकी है।

7. यानी जिन लोगों ने दुनिया में खुदाई अहक़ाम न माने होंगे उनके मुक़द्दमे की पेशी के वक़्त बतौर सरकारी गवाह के अम्बिया अलैहिमुस्सलाम के बयानात सुने जाएँगे। जो-जो मामलात नबियों की मौजूदगी में पेश आए थे वे सब जाहिर कर देंगे। उस गवाही के बाद उन मुख़ालिफ़ीन पर जुर्म साबित होकर सज़ा दी जाएगी।

1. यानी ऐसी हालत में नमाज़ मत पढ़ो। मतलब यह है कि नमाज़ का अदा करना तो अपने वक़्तों में फर्ज़ है और यह हालत नमाज़ अदा करने के मनाफ़ी है, पस नमाज़ के वक़्तों में नशे का इस्तेमाल मत करो, कभी तुम्हारे मुँह से कोई ग़लत कलिमा न निकल जाए।

2. यह हुक्म उस वक़्त था जब शराब हलाल थी, फिर शराब हराम हो गई। न नमाज़ के वक़्त दुरुस्त है न गैर-नमाज़ के वक़्त। पस इस आयत का पहला हिस्सा मन्सूख़ है।

3. नापाकी से गुस्ल करना नमाज़ के सही होने की शर्तों में से है। और यह हुक्म यानी नापाकी के बाद बिना गुस्ल किए नमाज़ पढ़ना उज़्र न होने की हालत में है।

4. जिस बीमारी में पानी के इस्तेमाल से बीमारी के ज़्यादा या लम्बी हो जाने का डर हो उसमें तयम्मूम दुरुस्त है। ‘मरज़ा’ में ये दोनों सूरतें दाख़िल हैं।

5. तयम्मूम हर ऐसी चीज़ से जायज़ है जो ज़मीन की ज़िन्स से हो, और ज़मीन की ज़िन्स वह है (शेष तफ़सीर पृष्ठ 156 पर)

के साथ शरीक ठहराता है वह बड़े जुर्म का करने वाला हुआ।¹ (48) क्या तूने उन लोगों को नहीं देखा जो अपने को मुकद्दस “यानी पाकीज़ा और नेक” बतलाते हैं, बल्कि अल्लाह तआला जिसको चाहें मुकद्दस बना दें, और उनपर धागे के बराबर भी जुल्म न होगा। (49) तू देख ये लोग अल्लाह तआला पर कैसी झूठी तोहमत लगाते हैं। और यही बात खुला मुज्रिम होने के लिए काफी है। (50) ♦

क्या तूने उन लोगों को नहीं देखा जिनको किताब का एक हिस्सा मिला है, वे बुत और शैतान को मानते हैं² और वे लोग काफिरों के बारे में कहते हैं कि ये लोग उन मुसलमानों के मुकाबले में ज्यादा सही रास्ते पर हैं। (51) ये लोग वे हैं जिनको खुदा तआला ने मलऊन बना दिया है, और खुदा तआला जिसको मलऊन बना दे उसका कोई हिमायती न पाओगे। (52) हाँ क्या उनके पास कोई हिस्सा है हुक्मत का, सो ऐसी हालत में तो और लोगों को ज़रा-सी चीज़ भी न देते। (53) या दूसरे आदमियों की उन चीज़ों पर जलते हैं जो अल्लाह तआला ने उनको अपने फज़ल से अज़ा फरमाई हैं, सो हमने (हज़रत) इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के खानदान को किताब भी दी है और इल्म भी दिया है, और हमने उनको बड़ी भारी हुक्मत भी दी है।³ (54) सो उनमें से बाज़े तो उसपर ईमान लाए और बाज़े ऐसे थे कि उससे मुँह फेरे ही रहे, और दोज़ख की दहकती हुई आग काफी है।⁴ (55) बेशक जो लोग हमारी आयतों के इनकारी हुए हम उनको जल्द ही एक सख्त आग में दाखिल करेंगे, जबकि एक दफ़ा उनकी खाल जल चुकेगी तो हम उस पहली खाल की जगह फौरन दूसरी खाल पैदा कर देंगे ताकि अज़ाब ही भुगतते रहें।⁵ बेशक अल्लाह तआला ज़बरदस्त हैं, हिक्मत वाले हैं। ♦ (56) और जो लोग ईमान लाए और अच्छे काम किए हम उनको जल्द ही ऐसे बागों में दाखिल करेंगे कि उनके नीचे नहरें जारी होंगी, वे उनमें हमेशा-हमेशा रहेंगे। उनके वास्ते

(पृष्ठ 154 का शेष)

जो आग में न जले और न गले, लेकिन चूना और राख इससे अलग हैं कि चूना आग में जल जाता है मगर तयम्मूम उससे दुरुस्त है, और राख न जलती है और न गलती है मगर उससे तयम्मूम जायज़ नहीं।

6. नबी का मज़ाक उड़ाना और उसको ताना देना, यह दीन का मज़ाक उड़ाना और उसको ताना मारना है।

7. जिसके मायने यह है कि हमने सुन लिया और मान लिया।

8. ‘इस्मअ’ के मायने यह है कि आप सुन लीजिए और ‘उन्जुरना’ के मायने यह है कि हमारी मस्तहत पर नज़र फरमाइए।

9. यह ‘ता युअ्मिनु-न’ उन्हीं के बारे में फरमाया जो अल्लाह के इल्म में कुफ़र पर मरने वाले थे। पस नौ-मुस्लिमों के ईमान लाने से कोई शुब्हा नहीं हो सकता। और जो ईमान ले आता है अगर वह किसी वक़्त बेअदबी और नाफरमानी भी कर चुका हो, लेकिन जब उससे बाज़ आ गया तो वह ख़त्म हो गई।

1. कुरआन व हदीस व इज़्मा से यह मसला शरीअत की ज़रूरी चीज़ों में से है कि शिर्क और कुफ़र दोनों बख़्से नहीं जाएँगे।

2. क्योंकि मुशिरकीन का दीन बुत-परस्ती और शैतान की पैरवी था, जब ऐसे दीन को अच्छा बतलाया तो बुत और शैतान की तस्दीक साफ़ लाज़िम आई।

3. चुनौतें बनी इसराईल में बहुत से अम्बिया गुज़रे, बाज़ अम्बिया हुक्मत वाले भी हुए जैसे हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम, हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम, हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम, उनका बहुत-सी बीवियों वाला होना मालूम व मशहूर है, और ये सब इब्राहीम अलैहिस्सलाम की औलाद में हैं। सो जबकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी इब्राहीम अलैहिस्सलाम की औलाद से हैं तो आपको अगर ये नेमतें व इनामात मिल गए तो ताज्जुब की क्या बात है।

4. पस अगर आपकी रिसालत व कुरआन पर भी आपके ज़माने के बाज़े लोग ईमान न लाएँ तो रंज की बात नहीं।

5. क्योंकि पहली खाल में जलने के बाद शुब्हा हो सकता था कि शायद उसमें एहसास न रहे इस शुब्हे को दूर करने के लिए यह सुना दिया।

उनमें पाक-साफ बीवियाँ होंगी और हम उनको बहुत ही घने साए में दाखिल करेंगे।¹ (57) बेशक तुमको अल्लाह तआला इस बात का हुक्म देते हैं कि हक वालों को उनके हुक्क पहुँचा दिया करो,² और यह कि जब लोगों का तसफिया किया करो तो अद्ल “यानी इन्साफ” से तसफिया किया करो, बेशक अल्लाह तआला जिस बात की तुमको नसीहत करते हैं वह बात बहुत अच्छी है,³ बेशक अल्लाह तआला ख़ूब सुनते हैं, ख़ूब देखते हैं। (58) ऐ ईमान वालो! तुम अल्लाह तआला का कहना मानो और रसूल का कहना मानो और तुममें जो लोग हुक्मत वाले हैं उनका भी, फिर अगर किसी मामले में तुम आपस में इख़िलाफ करने लगे तो उस मामले को अल्लाह और उसके रसूल के हवाले कर दिया करो अगर तुम अल्लाह पर और कियामत के दिन पर ईमान रखते हो। ये उमूर सब बेहतर हैं और इनका अन्जाम अच्छा है। (59) ♦

क्या आपने उन लोगों को नहीं देखा जो दावा करते हैं कि वे उस किताब पर भी ईमान रखते हैं जो आपकी तरफ नाज़िल की गई और उस किताब पर भी जो आपसे पहले नाज़िल की गई, अपने मुकद्दमे शैतान के पास ले जाना चाहते हैं हालाँकि उनको यह हुक्म हुआ है कि उसको न मानें, और शैतान उनको बहका कर बहुत दूर ले जाना चाहता है। (60) और जब उनसे कहा जाता है कि आओ उस हुक्म की तरफ जो अल्लाह तआला ने नाज़िल फरमाया है और रसूल की तरफ तो आप मुनाफिकों की यह हालत देखेंगे कि आपसे किनारा करते हैं। (61) फिर कैसी जान को बनती है जब उनपर कोई मुसीबत पड़ती है उनकी उस हरकत की बदौलत जो कुछ वे पहले कर चुके थे, फिर आपके पास आते हैं खुदा की कस्में खाते हुए कि हमारा और कुछ मकसूद न था सिवाय इसके कि कोई भलाई निकल आए और आपस में मुवाफकत हो जाए। (62) ये वे लोग हैं कि अल्लाह तआला को मालूम है जो कुछ उनके दिलों में है, सो आप उनसे बेतवज्जोही कर जाया कीजिए और उनको नसीहत फरमाते रहिए और उनसे उनकी ख़ास ज़ात के मुताल्लिक़ काफी मज़मून कह दीजिए।⁴ (63) और हमने तमाम पैगम्बरों को ख़ास इसी वास्ते भेजा है कि अल्लाह तआला के हुक्म से उनकी इताअत की जाए, और अगर जिस वक़्त अपना नुक़सान कर बैठे थे उस वक़्त आपकी ख़िदमत में हाज़िर हो जाते, फिर अल्लाह तआला से माफी चाहते और रसूल भी उनके लिए

1. यानी दुनिया का साया न होगा कि खुद साए के अन्दर भी धूप छनती है, वह बिलकुल मिला हुआ होगा।
2. यह हुक्मत वालों को ख़िताब है।
3. वह बात दुनिया के एतिबार से भी बहुत अच्छी है कि उसमें हुक्मत की बका है और आख़िरत के एतिबार से भी कि सवाब और अल्लाह की निकटता का सबब है।
4. इन आयतों में एक किस्से की तरफ़ इशारा है। एक मुनाफ़िक़ शख्स था, बिशर उसका नाम था। उसका किसी यहूदी से झगड़ा हुआ, यहूदी ने कहा: चल मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पास उनसे फैसला करा लें। मुनाफ़िक़ ने कहा कि काब बिन अशरफ़ के पास चल, यह यहूद का एक सरदार था। ज़ाहिर में यह मालूम होता है कि इस मामले में हक़ पर यहूदी होगा। उसने जाना कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम किसी की रियायत न फरमाएँगे वहाँ हक़ फैसला होगा, अगरचे मैं आपसे मज़हबी मुख़ालफ़त रखता हूँ। मुनाफ़िक़ क्योंकि बातिल पर था उसने समझा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के यहाँ तो मेरी बात चलेगी नहीं अगरचे मैं ज़ाहिर में मुसलमान हूँ मगर काब बिन अशरफ़ खुद कोई हक़-परस्त नहीं वहाँ मेरा मुकद्दमा सरसब्ज हो जाएगा। फिर आख़िर वे दोनों रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ही पास मुकद्दमा ले गए। आपने यहूदी को ग़ालिब किया, वह मुनाफ़िक़ राज़ी न हुआ। उस यहूदी से कहा कि चलो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के पास, ग़ालिबन् वह यह समझा होगा कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु कुफ़र पर सख़्त हैं, इस यहूदी पर सख़्ती फरमाएँगे। यहूदी को इत्मीनान था कि अगरचे सख़्त हैं मगर वह सख़्ती हक़-परस्ती ही की वजह से तो है। जब मैं हक़ पर हूँ तो मुझको ही ग़ालिब रखेंगे, इसलिए उसने इनकार नहीं किया। जब वहाँ पहुँचे तो यहूदी ने सारा किस्सा बयान कर दिया कि यह मुकद्दमा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के यहाँ से फैसले तक पहुँच चुका है, मगर यह शख्स (यानी मुनाफ़िक़) उसपर राज़ी नहीं हुआ। आपने उस मुनाफ़िक़ से पूछा: क्या यही बात है? उसने कहा हाँ! हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा: अच्छा ठहरो आता हूँ, (शेष तफ़सीर पृष्ठ 160 पर)

अल्लाह तआला से माफी चाहते तो ज़रूर अल्लाह तआला को तौबा का कबूल करने वाला और रहमत करने वाला पाते। (64) फिर कसम है आपके रब की ये लोग ईमानदार न होंगे जब तक यह बात न हो कि उनके आपस में जो झगड़ा उत्पन्न हो उसमें ये लोग आपसे तसफिया कराएँ,¹ फिर आपके उस तसफिए से अपने दिलों में तंगी न पाएँ और पूरे तौर पर मान लें।² (65) और हम अगर लोगों पर यह बात फर्ज़ कर देते कि तुम खुदकुशी किया करो या अपने वतन से बे-वतन हो जाया करो तो सिवाय थोड़े से लोगों के इस हुक्म को कोई भी न बजा लाता,³ और अगर ये लोग जो कुछ उनको नसीहत की जाती है उसपर अमल किया करते तो उनके लिए बेहतर होता और ईमान को ज़्यादा पुख्ता करने वाला होता। (66) और इस हालत में हम उनको ख़ास अपने पास से बड़ा अज़्र अज़ा फ़रमाते। (67) और हम उनको सीधा रास्ता बतला देते।⁴ (68) और जो शख्स अल्लाह और रसूल का कहना मान लेगा तो ऐसे लोग भी उन हज़रात के साथ होंगे जिनपर अल्लाह तआला ने इनाम फ़रमाया, यानी अम्बिया और सिद्दीकीन और शहीद लोग और नेक लोग, और ये हज़रात बहुत अच्छे साथी हैं। (69) यह फ़ज़ल है अल्लाह तआला की जानिब से, और अल्लाह तआला काफी जानने वाले हैं।⁵ (70) ♦

ऐ ईमान वालो! अपनी तो एहतियात रखो,⁶ फिर अलग-अलग तौर पर या इकट्ठे तौर पर निकलो। (71) और तुम्हारे मजमे में बाज़ा-बाज़ा शख्स ऐसा है जो हटता है, फिर अगर तुमको कोई हादसा पहुँच गया तो कहता है: बेशक अल्लाह तआला ने मुझपर बड़ा फ़ज़ल किया कि मैं उन लोगों के साथ हाज़िर नहीं हुआ। (72) और अगर तुमपर अल्लाह तआला का फ़ज़ल हो जाता है तो ऐसे तौर पर कि गोया तुममें और उसमें कुछ ताल्लुक ही नहीं, कहता है: हाय क्या ख़ूब होता कि मैं भी उन लोगों के साथ होता⁷ तो मुझको भी बड़ी कामयाबी होती। (73) तो हाँ उस शख्स को चाहिए कि अल्लाह की राह में उन लोगों से लड़े जो आख़िरत (की ज़िन्दगी) के बदले दुनियावी ज़िन्दगी. इस्तिथार किए हुए हैं,⁸ और जो शख्स अल्लाह की राह में लड़ेगा फिर चाहे जान से मारा जाए या ग़ालिब आ जाए तो हम उसको बड़ा अज़्र देंगे। (74) और तुम्हारे पास क्या उज़्र है कि तुम अल्लाह की राह में जिहाद न करो और कमज़ोरों की ख़ातिर से जिनमें कुछ मर्द हैं और कुछ औरतें हैं और कुछ बच्चे हैं जो दुआ कर रहे हैं कि

(पृष्ठ 158 का शेष) और घर से एक तलवार लेकर आए और मुनाफ़िक का काम तमाम किया, और कहा कि जो शख्स रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के फैसले पर राज़ी न हो उसका यही फैसला है। और बहुत-से मुफ़सिरीन ने यह भी लिखा है कि फिर उस मुनाफ़िक मक्तूल के वारिसों ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु पर दावा किया और उस मुनाफ़िक के कौली व फेली कुफ़ की तावील की, अल्लाह तआला ने इन आयतों में असल हकीकत ज़ाहिर फ़रमा दी।

1. और आप न हों तो आपकी शरीअत से।
2. फैसल बनाने और दिल में तंगी न होने और मानने के तीन दर्जे हैं। एतिकाद से, ज़बान से और अमल से। एतिकाद से यह कि शरीअत के क़ानून को हक़ और फैसले की बुनियाद जानता है और उसमें अक्ल के दर्जे में तंगी नहीं, और इसी दर्जे में उसको तस्लीम करता है। और ज़बान से यह कि इन उमूर का इक़रार करता है कि हक़ इसी तरह है, और अमल से यह कि मुक़दमा ले भी जाता है और तबई तंगी भी नहीं और उस फैसले के मुवाफ़िक़ कार्रवाई भी कर ली। सो पहला दर्जा तर्दीक़ व ईमान का है, उसका न होना अल्लाह के नज़दीक़ कुफ़ है, और मुनाफ़िकों में खुद इसी की कमी थी, चुनाँचे तंगी के साथ लफ़ज़ इन्कार इसी की वज़ाहत के लिए ज़ाहिर कर दिया है। और दूसरा दर्जा इक़रार का है, इसका न होना लोगों के नज़दीक़ कुफ़ है। तीसरा दर्जा तक्वे व नेकी का है, इसका न होना फ़िस्क़ है, और तबई तंगी माफ़ है। पस आयत में मुनाफ़िकों के ज़िक़्र से मुताल्लिक़ होने की वजह से पहला दर्जा मुराद है।

3. उन बहुत थोड़े और गिने-चुने लोगों में तमाम सहाबा व क़ामिल मोमिनीन दाख़िल हैं।

4. ऊपर अल्लाह व रसूल की इताअत पर ख़ास मुखातब हज़रात से वायदा था, आगे बतौर कायदा कुल्लिया के अल्लाह व रसूल की इताअत और फ़रमाँबरदारी पर आम वायदा है। (शेष तफ़सीर पृष्ठ 162 पर)

ऐ हमारे परवर्दिगार! हमको इस बस्ती से बाहर निकाल जिसके रहने वाले सख्त जालिम हैं, और हमारे लिए ग़ैब से किसी दोस्त को खड़ा कीजिए, और हमारे लिए ग़ैब से किसी हिमायती को भेजिए।¹ (75) जो लोग पक्के ईमानदार हैं वे तो अल्लाह की राह में जिहाद करते हैं, और जो लोग काफ़िर हैं वे शैतान की राह में लड़ते हैं, तो तुम शैतान के साथियों से जिहाद करो, हकीकत में शैतानी तदबीर लचर होती है।² (76) ♦

क्या तूने उन लोगों को नहीं देखा कि उनको यह कहा गया था कि अपने हाथों को थामे रहो और नमाज़ों की पाबन्दी रखो और ज़कात देते रहो, फिर जब उनपर जिहाद करना फ़र्ज़ कर दिया गया तो किस्सा क्या हुआ कि उनमें से बाज़-बाज़ आदमी लोगों से ऐसा डरने लगे जैसा कोई अल्लाह तआला से डरता हो बल्कि उससे भी ज़्यादा डरना, और (यूँ) कहने लगे कि ऐ हमारे परवर्दिगार! आपने हमपर जिहाद क्यों फ़र्ज़ फ़रमा दिया, हमको और थोड़ी मोहलत की मुदत दे दी होती,³ आप फ़रमा दीजिए कि दुनिया का फ़ायदा महज़ चन्द दिन का है और आख़िरत हर तरह से बेहतर है उस शख्स के लिए जो अल्लाह तआला की मुख़ालफ़त से बचे, और तुमपर धागे के बराबर भी जुल्म नहीं किया जाएगा। (77) तुम चाहे कहीं भी हो उसी जगह तुमको मौत आ दबाएगी अगरचे तुम कलई-चूने के किलों में ही हो,⁴ और अगर उनको कोई अच्छी हालत पेश आती है⁵ तो कहते हैं कि यह अल्लाह की तरफ़ से (इत्तिफ़ाकन) हो गई, और अगर उनको कोई बुरी हालत पेश आती है तो कहते हैं कि यह आपके सबब से है। आप फ़रमा दीजिए कि सब कुछ अल्लाह ही की तरफ़ से है। तो उन लोगों को क्या हुआ कि बात समझने के पास को भी नहीं निकलते। (78) ऐ इन्सान! तुझको जो कोई खुशहाली पेश आती है वह महज़ अल्लाह की तरफ़ से है, और जो कोई बदहाली पेश आए वह तेरे ही सबब से है। और हमने आपको तमाम लोगों की तरफ़ पैग़म्बर बनाकर भेजा है, और अल्लाह तआला गवाह काफी हैं।⁶ (79) जिस शख्स ने रसूल की इताअत की उसने अल्लाह तआला की इताअत

(पृष्ठ 160 का शेष)

5. अब जिहाद के अहकाम का ज़िक्र शुरू होता है। यहाँ से छह रुकू तक इसी मज़मून के मुताल्लिक अहकाम और तफ़सील बयान होती चली गई है।

6. यानी उनके दाव-घात से भी होशियार रहो और लड़ाई के वक़्त सामान, हथियार, ढाल, तलवार से भी दुरुस्त रहो।

7. यानी जिहाद में जाता।

8. यानी उस शख्स को अगर बड़ी कामयाबी का शौक है तो दिल दुरुस्त करे, हाथ-पाँव हिलाए, मशक्कत झेले, तीर व तलवार के सामने सीना तान कर खड़ा हो। देखो बड़ी कामयाबी हाथ आती है कि नहीं।

1. मक्का में ऐसे कमज़ोर मुसलमान रह गए थे कि अपनी जिस्मानी कमज़ोरी और कम-सामानी की वजह से हिज़रत न कर सके, फिर काफ़िरों ने भी न जाने दिया और तरह-तरह से उनको सताते थे। चुनाँचे हदीसों व तफ़सीरों में बाज़ों के नाम भी आये हैं। आख़िर हक़ तआला ने उनकी दुआ कबूल फ़रमाई और बाज़ों की रिहाई का तो पहले ही सामान हो गया और फिर मक्का मुकर्रमा फ़तह हो गया, जिससे सबको अमन व सम्मान हासिल हो गया और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनपर हज़रत इताब बिन उसैद को आ़मिल व हाकिम मुकर्रर फ़रमाया। पस दोस्त व हिमायती का मिस्दाक़ चाहे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को कहा जाए और यही अच्छा मालूम होता है, और या हज़रत इताब रज़ियल्लाहु अन्हु को कहा जाए कि उन्होंने अपने हुक्मत के ज़माने में सबको ख़ूब आराम पहुँचाया।

2. ऊपर जिहाद का वाज़िब होना और उसके फ़ज़ाइल बयान करके उसकी तरगीब थी, आगे दूसरे अन्दाज़ से उसकी तरगीब है। यानी जिहाद में बाज़ मुसलमानों के तैयार न होने पर उनकी एक लुफ़ भरी शिकायत भी है, जिसकी बिना यह हुई कि मक्का में कुप्फ़ार बहुत सताते थे, उस वक़्त बाज़ सहाबा ने जिहाद की इजाज़त इसरार से चाही, मगर उस वक़्त माफ़ करने और दरगुज़र करने का हुक्म था, हिज़रत के बाद जब जिहाद का हुक्म नाज़िल हुआ तो तबई तौर पर बाज़ को दुश्वार हुआ, इसपर यह शिकायत फ़रमाई गई। और चूँकि यह बतौर इन्कार या हुक्म पर एतिराज़ करने के न था बल्कि कुछ वक़्त तक और इस हुक्म के न आने की महज़ तमन्ना थी इसलिए डॉट-डपट नहीं है महज़ लुफ़-भरी शिकायत है।

3. उन हज़रात का यह तमन्नाई कौल अगर ज़बान से था तब तो उसके नाफ़रमानी न होने की वजह मालूम (शेष तफ़सीर पृष्ठ 164 पर)

की,¹ और जो शख्स मुँह फेरे “यानी अल्लाह और उसके रसूल की फरमाँबरदारी से अपना रुख फेर ले” सो हमने आपको उनका निगारों करके नहीं भेजा। (80) और (ये लोग) कहते हैं कि हमारा काम इताअत करना है, फिर जब आपके पास से बाहर जाते हैं तो रात के वक़्त मशिवरा करती है इन्हीं की एक जमाअत उसके खिलाफ जो कुछ कि (ज़बान से) कह चुके थे, और अल्लाह तआला लिखते जाते हैं जो कुछ वे रातों को मशिवरा किया करते हैं, सो आप उनकी तरफ़ ध्यान न कीजिए और अल्लाह के हवाले कीजिए और अल्लाह तआला काफी कारसाज़ हैं।² (81) क्या फिर कुरआन में ग़ौर नहीं करते,³ और अगर यह अल्लाह के सिवा किसी और की तरफ़ से होता तो इसमें कसूरत से फर्क और इख़्तिलाफ़ पाते।⁴ (82) और जब उन लोगों को किसी अमूर “यानी मामले और बात” की ख़बर पहुँचती है चाहे अमन हो या ख़ौफ़ तो उसको मशहूर कर देते हैं। और अगर ये लोग उसको रसूल के और जो उनमें ऐसे मामलात को समझते हैं उनके ऊपर हवाले रखते तो उसको वे हज़रात तो पहचान ही लेते जो उनमें उसकी तहकीक़ कर लिया करते हैं। और अगर तुम लोगों पर खुदा तआला का फ़ज़ल और रहमत न होती तो तुम सबके-सब शैतान के पैरवी करने वाले हो जाते सिवाय थोड़े-से आदमियों के। (83) पस आप अल्लाह की राह में क़िताल कीजिए, आपको सिवाय आपके ज़ाती फ़ेल के कोई हुक़म नहीं, और मुसलमानों को तरगीब दीजिए, अल्लाह तआला से उम्मीद है कि काफ़िरों के जंग के ज़ोर को रोक देंगे। और अल्लाह तआला जंग के ज़ोर में ज़्यादा शदीद हैं और सख़्त सज़ा देते हैं।⁵ (84) जो शख्स अच्छी सिफ़ारिश करे⁶ उसको उसकी वजह से हिस्सा मिलेगा, और जो शख्स बुरी सिफ़ारिश करे⁷ उसको उसकी वजह से हिस्सा मिलेगा, और अल्लाह तआला हर चीज़ पर कुदरत रखने वाले हैं। (85) और जब तुमको कोई (शरीअत के मुताबिक़) सलाम करे तो तुम उस (सलाम) से अच्छे अल्फ़ाज़ में

(पृष्ठ 162 का शेष)

हो गई। और अगर दिल में बतौर वस्वसे और ख़्याल के था तो वस्वसे और ख़्याल का नाफ़रमानी न होना कुरआन करीम व हदीस में आया है, इसलिए कोई इश्काल ही नहीं।

4. ऊपर जिहाद की तरगीब में यह ज़िक्र हुआ है कि वक़्त पर मौत नहीं टलती, चाहे जिहाद में जाओ या न जाओ। चूँकि बाज़ मुनाफ़िक़ जिहाद में जाने को मौत में मुअस्सिर (यानी असर करने वाला और सबब) और न जाने को ज़िन्दगी में मुअस्सिर समझते और कहते थे, पस जब कभी जिहाद में क़त्ल व मौत वाक़अ होती तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर इल्ज़ाम लगाते कि आप ही के कहने से जिहाद में गए और मौत का शिकार हुए, देखो जिहाद का मौत में असर रखना साबित हो गया। और अगर कभी बावजूद ज़ाहिरी असबाब की कमी के कुफ़्फ़ार पर फ़तह होती और उससे दलील पकड़ी जाती कि देखो अगर जिहाद मौत में असर रखता है तो अब वह असर कहाँ गया, तो कहते कि यह सिर्फ़ इत्तिफ़ाकी बात अल्लाह की तरफ़ से है। गरज़ काम बिगड़ता तो हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर इल्ज़ाम, और संवरता तो इत्तिफ़ाकी बात, आगे इसकी तरफ़ इशारा है।

5. जैसे फ़तह व कामयाबी।

6. तमाम लोगों में ज़िन्न और इनसान दोनों आ गए। पस इसमें बयान है हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सबके लिए नबी की हैसियत से तशरीफ़ लाने का, जो कुरआन व हदीस में और जगह भी मज़कूर व मन्सूस और कतई अक्वीदा है।

1. और जिसने आपकी नाफ़रमानी की उसने खुदा तआला की नाफ़रमानी की।

2. चुनाँचे कभी उनकी शरारत से कोई नुक़सान नहीं पहुँचा।

3. ताकि इसका अल्लाह का कलाम होना वाज़ेह हो जाए।

4. पस यकीनन यह ग़ैरुल्लाह का कलाम नहीं बल्कि अल्लाह तआला का कलाम है। हासिले कलाम यह है कि कलामुल्लाह के मोज़िज़ा होने के दलाइल में से इसके अन्दाज़े बयान का उम्दा और मौके के मुताबिक़ होने के एतबार से बेमिसल होना और इसमें दी गई ख़बरों का जिनपर इत्तिफ़ा पाने का रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास कोई ज़रिया न था, बिलकुल सही व हकीक़त के मुताबिक़ होना है। पस मालूम हुआ कि यह कलाम ख़ालिफ़ तआला का है।

5. इस भविष्यवाणी का सामने आना ज़ाहिर है। अगर ख़ास कुरैश के कुफ़्फ़ार मुराद हों जब भी और अगर सारी दुनिया के कुफ़्फ़ार मुराद हों जब भी, क्योंकि कुछ ही समय में तमाम हुकूमते मुसलमानों ने फ़तह कर लीं। (शेष तफ़सीर पृष्ठ 166 पर)

सलाम करो या वैसे ही अल्फाज़ कह दो, बिला शुब्हा अल्लाह तआला हर चीज़ पर हिसाब लेंगे।¹ ● (86) अल्लाह ऐसे हैं कि उनके सिवा कोई माबूद होने के काबिल नहीं, वह ज़रूर तुम सबको जमा करेंगे कियामत के दिन में इसमें कोई शुब्हा नहीं, और खुदा तआला से ज्यादा किसकी बात सच्ची होगी।² (87) ♦

फिर तुमको क्या हुआ कि इन मुनाफिकों के बारे में तुम दो गिरोह हो गए हालाँकि अल्लाह तआला ने उनको उल्टा फेर दिया उनके (बुरे) अमल के सबब,³ क्या तुम लोग इसका इरादा रखते हो कि ऐसे लोगों को हिदायत करो जिनको अल्लाह तआला ने गुमराही में डाल रखा है,⁴ और जिसको अल्लाह तआला गुमराही में डाल दें उसके लिए कोई सबील न पाओगे।⁵ (88) वे इस तमन्ना में हैं कि जैसे वे काफिर हैं तुम भी काफिर बन जाओ, जिसमें तुम और वे सब एक तरह के हो जाओ, सो उनमें से किसी को दोस्त मत बनाना जब तक कि वे अल्लाह की राह में हिजरत न करें,⁶ और अगर वे मुँह फेरें तो उनको पकड़ो और कत्ल करो जिस जगह उनको पाओ, और न उनमें से किसी को दोस्त बनाओ और न मददगार बनाओ।⁷ (89) मगर जो लोग ऐसे हैं जो कि ऐसे लोगों से जा मिलते हैं⁸ कि तुम्हारे और उनके दरमियान अहद है या खुद तुम्हारे पास इस हालत से आएँ कि उनका दिल तुम्हारे साथ और तथा अपनी कौम के साथ लड़ने से मुन्कबिज़ “यानी नाखुश और खिंचा हुआ” हो,⁹ और अगर अल्लाह तआला चाहता तो उनको तुमपर मुसल्लत कर देता फिर वे तुमसे लड़ने लगते, फिर अगर वे तुमसे अलग रहें यानी तुमसे न लड़ें और तुमसे सलामत-रवी रखें¹⁰ तो अल्लाह तआला ने तुमको उनपर कोई राह नहीं दी।¹¹ (90) बाज़े ऐसे भी तुमको ज़रूर मिलेंगे कि वे यह चाहते हैं कि तुमसे भी बेखौफ होकर रहें और अपनी कौम से भी बेखौफ होकर रहें। जब कभी उनको शरारत की तरफ़ मुतवज्जह किया जाता है तो वे उसमें जा गिरते हैं, सो ये लोग अगर तुमसे किनारा करने वाले न हों और न तुमसे सलामत-रवी रखें और न अपने हाथों को रोकें तो तुम उनको पकड़ो और कत्ल करो जहाँ कहीं उनको पाओ। और हमने तुमको उनपर साफ़ हुज्जत दी है। (91) ♦

(पृष्ठ 164 का शेष) 6. यानी जिसका तरीका व मकसद दोनों शरीअत के मुताबिक हों।

7. यानी जिसका तरीका या गरज़ शरीअत के मुताबिक न हो।

1. अमर (हुक्म देने) के सींगे से और “हसीब” से इस हुक्म का ज़ाहिर में वाजिब होना मालूम होता है और फुकहा का यही मज़हब है। यह सलाम के जवाब का वाजिब होना किफ़ाय़ा के तौर पर है। यानी अगर जमाअत में से एक ने भी जवाब दे दिया तो सबके ज़िम्मे से उतर जाएगा। असल जवाब वाजिब है, बाकी वैसे ही अल्फाज़ या उनसे अच्छे या बाज़ सूरतों में उनसे कम, यह सब इख़्तियार में है।

2. यह तरकीब जैसे ज्यादा सच्चा होने की इनकारी है ऐसे ही मुहावरे के एतिबार से सच्चा होने में बराबर होने की भी इनकारी है। (यानी अल्लाह तआला से न कोई ज्यादा सच्चा हो सकता है और न उनके बराबर सच्चा हो सकता है)।

3. वह बुरा अमल इस्लाम से फिर कर दारुल-इस्लाम को बावजूद क़ुदरत के छोड़ देना है, जो कि एक तरह से इस्लाम के इकरार को छोड़ने की वजह से कुफ़ की निशानी थी। और हकीकत में तो वे पहले भी मुसलमान न हुए थे और इसी वजह से उनको मुनाफ़िक कहा।

4. मतलब यह है कि गुमराह को जो मोमिन कहते हो, हालाँकि मोमिन वह है जिसमें ईमान हो, और उनमें इस वक़्त तक ईमान नहीं है तो क्या अब ईमान पैदा करोगे जो उनको मोमिन कह सको, और यह मुहाल है। पस उनका मोमिन व हिदायत वाला होना मुहाल के साथ जुड़ा हुआ है इसलिए उनको मोमिन कहना मुहाल के हुक्म की तरह है।

5. पस उन लोगों को मोमिन न कहना चाहिए।

6. उस वक़्त हिजरत का वह हुक्म था जो अब शहादतैन (यानी अल्लाह के एक माबूद होने और हुज़ूरे पाक के रसूले बरहक होने) के इकरार का है।

7. मतलब यह है कि किसी हालत में उनसे कोई ताल्लुक न रखो, न अमन में दोस्ती न खौफ़ में मदद तलब करना, बल्कि बिलकुल अलग-थलग रहो। (शेष तफ़सीर पृष्ठ 168 पर)

और किसी मोमिन की शान नहीं कि वह किसी मोमिन को (पहल करते हुए) कत्ल करे लेकिन ग़लती से, और जो शख्स किसी मोमिन को ग़लती से कत्ल कर दे तो उसपर एक मुसलमान गुलाम या बाँदी का आज़ाद करना है, और ख़ूँ-बहा है जो उसके ख़ानदान वालों के हवाले कर दी जाए मगर यह कि वे लोग माफ़ कर दें।¹ और अगर वह ऐसी कौम से हो जो तुम्हारे मुख़ालिफ़ हैं और वह शख्स खुद मोमिन है तो एक मुसलमान गुलाम या बाँदी का आज़ाद करना, और अगर वह ऐसी कौम से हो कि तुममें और उनमें मुआहदा हो तो ख़ूँ-बहा है जो उसके ख़ानदान वालों के हवाले कर दी जाए और एक मुसलमान गुलाम या बाँदी का आज़ाद करना, फिर जिस शख्स को न मिले तो लगातार दो महीने के रोज़े हैं तौबा के तौर पर, जो अल्लाह की तरफ़ से मुक़र्रर हुई है, और अल्लाह तआला बड़े इल्म वाले, बड़ी हिक़मत वाले हैं। (92) और जो शख्स किसी मुसलमान को जान-बूझकर कत्ल कर डाले तो उसकी सज़ा जहन्म है कि हमेशा-हमेशा को उसमें रहता² और उसपर अल्लाह तआला ग़ज़बनाक होंगे और उसको अपनी रहमत से दूर कर देंगे, और उसके लिए बड़ी सज़ा का सामान करेंगे।³ (93) ऐ ईमान वालो! जब तुम अल्लाह की राह में सफ़र किया करो तो (हर काम को) तहकीक़ (करके किया) करो, और ऐसे शख्स को जो कि तुम्हारे सामने इताअत ज़ाहिर करे⁴ दुनियावी ज़िन्दगी के सामान की ख़्वाहिश में यूँ मत कह दिया करो कि तू मुसलमान नहीं, क्योंकि खुदा के पास बहुत ग़नीमत के माल हैं। पहले तुम भी ऐसे ही थे फिर अल्लाह तआला ने तुमपर एहसान किया सो ग़ौर करो, बेशक अल्लाह तआला तुम्हारे अमल की पूरी ख़बर रखते हैं।⁵ (94) बराबर नहीं वह मुसलमान जो बिना किसी उज़्र के घर में बैठे रहें⁶ और वे लोग जो अल्लाह की राह में अपने मालों और अपनी जानों से जिहाद करें, अल्लाह तआला ने उन लोगों का दर्जा बहुत ज़्यादा बनाया है जो अपने मालों और जानों से जिहाद करते हैं घर में बैठने वालों के मुक़ाबले में, और अल्लाह तआला ने सबसे अच्छे घर का वायदा कर रखा है। और अल्लाह तआला

(पृष्ठ 166 का शेष)

8. यानी उनसे मुआहदा हो जाता है।

9. न तो अपनी कौम के साथ होकर तुमसे लड़ें और न तुम्हारे साथ होकर अपनी कौम से लड़ें, बल्कि उनसे भी सुलह रखें और तुमसे भी सुलह रखें।

10. इन सब अल्फ़ाज़ का मतलब यह है कि सुलह से रहें।

11. यानी इजाज़त नहीं दी।

1. इस आयत में 'ख़ता' यानी ग़लती से मुराद 'अन्जाने में' है।

2. लेकिन अल्लाह तआला का फ़ज़ल है कि यह असली सज़ा जारी न होगी बल्कि ईमान की बरक़त से आख़िरकार नज़ात हो जाएगी। तमाम अहले हक़ मुत्ताफ़िक़ हैं कि सिवाय कुफ़्र व शिर्क के कोई चीज़ जहन्म में हमेशा के लिए रहने का सबब नहीं है।

3. ऊपर मोमिन के कत्ल पर सख़्त वर्द फ़रमाई है, आगे फ़रमाते हैं कि शरीअत के अहक़ाम जारी होने में मोमिन के मोमिन होने के लिए सिर्फ़ ज़ाहिरी इस्लाम काफ़ी है। जो शख्स इस्लाम का इज़हार करे उसके कत्ल से हाथ खींच लेना वाज़िब है। अन्दाज़ों और हालात की निशानियों से बातों की तफ़्तीश करना और इस्लामी अहक़ाम के जारी करने में उसके सुबूत का मुन्तज़िर रहना जायज़ नहीं।

4. जैसे कलिमा पढ़ना या मुसलमानों के तरीक़े पर सलाम करना।

5. यह हुक्म सफ़र के साथ ख़ास नहीं।

6. यानी जिहाद में न जाएँ।

ने मुजाहिदीन को घर में बैठने वालों के मुकाबले में बड़ा अज्रे अज़ीम दिया है। (95) यानी बहुत-से दर्जे जो अल्लाह तआला की तरफ से मिलेंगे और मग़िफ़रत और रहमत¹ और अल्लाह तआला बड़ी मग़िफ़रत वाले, बड़ी रहमत वाले हैं।² (96) ♦

बेशक जब ऐसे लोगों की जान फ़रिश्ते निकालते हैं जिन्होंने अपने आपको गुनाहगार कर रखा था तो वे फ़रिश्ते (उनसे) कहते हैं कि तुम किस काम में थे? वे कहते हैं कि हम सरज़मीन “यानी अपने मुल्क और ख़ित्ते” में महज़ मग़लूब थे। वे कहते हैं: क्या अल्लाह तआला की ज़मीन कुशादा और फैली हुई न थी, तुमको वतन छोड़ करके उसमें चला जाना चाहिए था, सो उन लोगों का ठिकाना जहन्नम है, और जाने के लिए वह बुरी जगह है। (97) लेकिन जो मर्द और औरतें और बच्चे कादिर न हों कि न कोई तदबीर कर सकते हैं और न रास्ते से वाकिफ़ हैं। (98) सो उनके लिए उम्मीद है कि अल्लाह तआला माफ़ कर दें, और अल्लाह तआला बड़े माफ़ करने वाले, बड़े मग़िफ़रत करने वाले हैं।³ (99) और जो शख्स अल्लाह की राह में हिजरत करेगा⁴ तो उसको रू-ए-ज़मीन पर जाने की बहुत जगह मिलेगी और बहुत गुंजाइश, और जो शख्स अपने घर से इस नीयत से निकल खड़ा हो कि अल्लाह और रसूल की तरफ़ हिजरत करूँगा फिर उसको मौत आ पकड़े तब भी उसका सवाब साबित हो गया अल्लाह तआला के ज़िम्मे, और अल्लाह तआला बड़े मग़िफ़रत करने वाले हैं बड़ी रहमत वाले हैं। (100) ♦

और जब तुम ज़मीन में सफ़र करो⁵ सो तुमको इसमें कोई गुनाह न होगा (बल्कि ज़रूरी है) कि तुम नमाज़ को कम कर दो,⁶ अगर तुमको यह अन्देशा हो कि तुमको काफ़िर लोग परेशान करेंगे, बिला शुब्हा काफ़िर लोग तुम्हारे खुले दुश्मन हैं।⁷ (101) और जब आप उनमें तशरीफ़ रखते हों फिर आप उनको नमाज़ पढ़ाना चाहें तो यूँ चाहिए कि उनमें से एक गिरोह तो आपके साथ खड़े हो जाएँ और वे लोग हथियार ले लें, फिर जब ये लोग सज्दा कर चुकें तो ये लोग तुम्हारे पीछे हो जाएँ और दूसरा गिरोह जिन्होंने अभी नमाज़ नहीं पढ़ी आ जाए और आपके साथ नमाज़ पढ़ लें, और ये लोग भी अपने बचाव का सामान और अपने हथियार ले लें। काफ़िर लोग (यूँ) चाहते हैं कि अगर तुम अपने हथियारों और सामानों से गाफ़िल हो जाओ तो तुमपर एक बार में हमला कर बैठें। और अगर तुमको

1. यानी उन अनेक आमाल की वजह से जो कि मुजाहिद से सादिर होते हैं, सवाब के बहुत-से दर्जे खुदा तआला की तरफ से मिलेंगे और गुनाहों की मग़िफ़रत और रहमत भी, यह सब अज्रे अज़ीम की तफ़सील हुई। वे अनेक आमाल सूर: बराअत के आख़िर में ज़िक्र हुए हैं।

2. ऊपर जिहाद के वाजिब होने का हुक्म था आगे हिजरत के वाजिब होने का ज़िक्र है।

3. ऊपर हिजरत के छोड़ने पर डाँट और धमकी थी आगे हिजरत की तरगीब और उसपर दोनों जहाँ की नेक-बख़्शी का वायदा है।

4. हिजरत शुरू इस्लाम में फ़र्ज़ थी और फ़र्ज़ियत के साथ वह ज़ाहिर में ज़रूरी शिआर और किसी के मुसलमान होने के लिए सुबूत थी, लेकिन उज़्र की हालत में उसकी फ़र्ज़ियत और शिआर व पहचान होना ख़त्म हो जाता था, और इस शिआर होने की वजह से उससे बिला उज़्र फिरना इस्लाम से फिर जाने की निशानी थी।

5. जिसकी मिक़दार तीन मन्ज़िल हो (यानी 48 मील)।

6. यानी ज़ोहर व अ़सर व इशा के फ़र्ज़ की रक्क़त चार की जगह दो पढ़ा करो।

7. जो सफ़र तीन मन्ज़िल से कम हो उसमें पूरी नमाज़ पढ़ी जाती है।

बारिश की वजह से तकलीफ हो या तुम बीमार हो तो तुमको इसमें कुछ गुनाह नहीं कि हथियार उतार रखो और अपना बचाव ले लो, बिला शुब्हा अल्लाह ने काफिरों के लिए तौहीन भरी सज़ा तैयार कर रखी है।¹ (102) फिर जब तुम उस नमाज़ को अदा कर चुको तो अल्लाह तआला की याद में लग जाओ खड़े भी और लेटे भी और बैठे भी,² फिर जब तुम मुत्मइन हो जाओ तो नमाज़ को कायदे के मुवाफिक पढ़ने लगो। यकीनन नमाज़ मुसलमानों पर फर्ज़ है और वक़्त के साथ महदूद है। (103) हिम्मत मत हारो उस मुखालिफ़ कौम का पीछा करने में, अगर तुम तकलीफ़ में हो तो वे भी तो तकलीफ़ के मारे हैं जैसे तुम तकलीफ़ पाए हुए हो, और तुम अल्लाह तआला से ऐसी-ऐसी चीज़ों की उम्मीद रखते हो कि वे लोग उम्मीद नहीं रखते, और अल्लाह तआला बड़े इल्म वाले हैं, बड़े हिक्मत वाले हैं। (104) ♦

बेशक हमने आपके पास यह नविश्ता “यानी तहरीर और किताब” भेजा है हकीकत के मुवाफिक़ ताकि आप इन लोगों के दरमियान उसके मुवाफिक़ फैसला करें जो कि अल्लाह तआला ने आपको बतला दिया है, और आप इन ख़ियानत करने वालों की तरफ़दारी (की बात) न कीजिए।³ (105) और आप इस्तिग़फ़ार फ़रमाइए, बिला शुब्हा अल्लाह तआला बड़े मग़्फ़िरत करने वाले, बड़े रहमत वाले हैं। (106) और आप उन लोगों की तरफ़ से कोई जवाबदेही की बात न कीजिए जो कि अपना ही नुक़सान कर रहे हैं, बिला शुब्हा अल्लाह तआला ऐसे शख्स को नहीं चाहते जो बड़ा ख़ियानत करने वाला, बड़ा गुनाह करने वाला हो। (107) जिन लोगों की यह कैफ़ियत है कि आदमियों से तो छुपाते हैं और अल्लाह तआला से नहीं शरमाते, हालाँकि वह उस वक़्त उनके पास होता है जबकि वे अल्लाह की मर्ज़ी के खिलाफ़ गुफ़्तगू के मुताल्लिक़ तदबीरें करते हैं, और अल्लाह तआला उनके सब आमाल को अपने घेरे में लिए हुए हैं। (108) हाँ, तुम ऐसे हो कि तुमने दुनियावी ज़िन्दगी में तो उनकी तरफ़ से जवाबदेही की

1. सलातुल-ख़ौफ़ (यानी ख़ौफ़ की नमाज़) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बाद भी मुताफ़िका तौर पर शरीअत में जायज़ है। जैसे आदमी से ख़ौफ़ के वक़्त यह नमाज़ शरीअत में जायज़ रखी गई है ऐसे ही अगर किसी शेर या अज़्दहे वगैरह का ख़ौफ़ हो और नमाज़ का वक़्त तंग हो तो उस वक़्त भी जायज़ है, ऐन किताल (यानी जंग और लड़ाई) के वक़्त नमाज़ को क़ज़ा कर दिया जाएगा।

2. यानी हर हालत में यहाँ तक कि ऐन लड़ाई और जंग के वक़्त भी दिल से भी और अहक़ाम के इत्तिबा से भी, कि वह भी ज़िक्र है। चुनौचे किताल (यानी जंग और लड़ाई) में शरीअत के खिलाफ़ कोई कार्यवाही करना नाजायज़ है। गरज़ नमाज़ तो ख़त्म हुई ज़िक्र ख़त्म नहीं होता, नमाज़ में तो कमी हो गई थी लेकिन यह अपनी जगह बरकरार है।

3. बनू अबीरक़ एक ख़ानदान था, उसमें एक शख्स बशीर नामी मुनाफ़िक़ था। उसने हज़रत रिफ़ाआ की बुख़ारी (यानी बावरची ख़ाने) में नक़ब देकर कुछ आटा और कुछ हथियार जो उसमें रखे थे चुरा लिए। सुबह को पास-पड़ोस में तलाश किया और बाज़ मज़बूत अन्दाज़ों से बशीर पर शुब्हा हुआ। बनू अबीरक़ ने जो कि बशीर के शरीके हाल थे अपने बचाव के लिए हज़रत लबीद का नाम ले दिया। गर्ज़ हज़रत रिफ़ाआ ने अपने भतीजे कतादा रज़ियल्लाहु अन्हु को जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में भेजकर इस वाक़िए की इत्तिला दी, आपने तहकीक़ का वायदा फ़रमाया। बनू अबीरक़ को जो यह ख़बर हुई तो एक शख्स असीर नाम का जो उसी ख़ानदान का था सब उसके पास आए और सब मशिवरा करके जमा होकर और साथ में कुछ मोहल्ले वालों को लेकर जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और हज़रत कतादा रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत रिफ़ाआ रज़ियल्लाहु अन्हु की शिकायत की, कि बिना गवाहों के एक मुसलमान और दीनदार घराने पर चोरी की तोहमत लगाते हैं। और मक़सद उनका यह था (शेष तफ़सीर पृष्ठ 174 पर)

बातें कर लीं, सो अल्लाह तआला के सामने कियामत के दिन उनकी तरफ से कौन जवाबदेही करेगा, या वह कौन शख्स होगा जो उनका काम बनाने वाला होगा। (109) जो शख्स कोई बुराई करे या अपनी जान को नुकसान पहुँचाए, फिर अल्लाह तआला से माफी चाहे तो वह अल्लाह तआला को बड़ी मग़्फ़िरत वाला, बड़ी रहमत वाला पाएगा। (110) और जो शख्स कुछ गुनाह का काम करता है तो वह फ़क़त अपनी ज़ात पर उसका असर पहुँचाता है और अल्लाह तआला बड़े इल्म वाले हैं, बड़े हिक़मत वाले हैं। (111) और जो शख्स कोई छोटा गुनाह करे या बड़ा गुनाह, फिर उसकी तोहमत किसी बेगुनाह पर लगा दे तो उसने बड़ा भारी बोहतान और खुला गुनाह अपने ऊपर लादा।¹ (112) ♦

और अगर आप पर अल्लाह का फ़ज़ल व रहमत न हो तो उन लोगों में से एक ग़िरोह ने तो आपको ग़लती में डाल देने का इरादा कर लिया था,² और ग़लती में नहीं डाल सकते लेकिन अपनी जानों को, और आपको ज़रा बराबर नुक़सान नहीं पहुँचा सकते, और अल्लाह तआला ने आप पर किताब और इल्म की बातें नाज़िल फ़रमाई और आपको वे-वे बातें बतलाई हैं जो आप न जानते थे, और आप पर अल्लाह का बड़ा फ़ज़ल है। ▲ (113) आम लोगों कि अक्सर सरगोशियों “यानी कानाफूसी और चुपके-चुपके बातें करने” में ख़ैर नहीं होती। हाँ, मगर उनकी जो ऐसे हैं कि ख़ैरात की या और किसी नेक काम की³ या लोगों में आपस में सुधार कर देने की तरगीब देते हैं, और जो शख्स अल्लाह तआला को राज़ी करने के वास्ते यह काम करेगा सो हम उसको जल्द ही बड़ा अज़्र अता फ़रमाएँगे। (114) और जो शख्स रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की मुख़ालफ़त करेगा इसके बाद कि उसको हक़ बात ज़ाहिर हो चुकी थी और मुसलमानों का रास्ता छोड़कर दूसरे रास्ते पर हो लिया तो हम उसको जो कुछ वह करता है करने देंगे और उसको जहन्नम में दाख़िल करेंगे, और वह जाने की बुरी जगह है। (115) ♦

(पृष्ठ 172 का शेष) कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस मुक़द्दमे में उनकी तरफ़दारी करें। आपने यह तो नहीं किया लेकिन इतना हुआ कि हज़रत क़तादा जो ख़िदमत में हाज़िर हुए तो आपने इश़ाद फ़रमाया कि तुम ऐसे लोगों पर बे-सनद क्यों इल्ज़ाम लगाते हो? उन्होंने आकर अपने चचा (रिफ़ाअ) से कहा। वह अल्लाह पर भरोसा करके ख़ामोश हो गए। इसपर ये अगली आयतें दो रुकू के करीब तक नाज़िल हुईं। गर्ज़ चोरी साबित हुई और माल बरामद हुआ और मालिक को दिया गया तो बशीर नाख़ुश होकर इस्लाम से फिर गया और मक्का जाकर मुशिरकों में जा मिला, इसपर आख़िर की आयतें नाज़िल हुईं: ‘व मय्युशाकिर्क़िरूसू-ल’ आख़िर तक।

1. जैसे बशीर ने किया कि खुद तो चोरी की और एक नेक-बख़्त बुजुर्ग आदमी लबीद के ज़िम्मे रख दी।
2. लेकिन खुदा के फ़ज़ल से उनकी लच्छेदार बातों का आप पर कोई असर नहीं हुआ और आइन्दा भी न होगा।
3. नेक काम में जो कि ‘मारूफ़’ का तर्जुमा है, वे तमाम उमूर आ गए जो नफ़ा देने वाले हों, चाहे दीनी हों या दुनियावी हों, मगर शरीअत के मुताबिक़ यानी जायज़ हों। और अगरचे इसमें सदका भी दाख़िल था लेकिन नफ़स पर भारी होने की वजह से उसका ज़्यादा एहतियाम फ़रमाया।

बेशक अल्लाह तआला इस बात को न बख्शेंगे कि उनके साथ किसी को शरीक करार दिया जाए और इसके अलावा जितने गुनाह हैं जिसके लिए मन्ज़ूर होगा वे गुनाह बख्श देंगे। और जो शख्स अल्लाह तआला के साथ शरीक ठहराता है वह बड़ी दूर की गुमराही में जा पड़ा।¹ (116) ये लोग खुदा तआला को छोड़कर चन्द ज़नानी चीज़ों की इबादत करते हैं² और सिर्फ़ शैतान की इबादत करते हैं जो कि हुक़्म से बाहर है। (117) जिसको खुदा तआला ने अपनी रहमत से दूर डाल रखा है, और जिसने (यूँ) कहा था कि मैं ज़रूर तेरे बन्दों से अपना (इताअत का) मुकर्रर हिस्सा लूँगा। (118) और मैं उनको गुमराह करूँगा और मैं उनको हवसें दिलाऊँगा, और मैं उनको तालीम दूँगा जिससे वे चौपायों के कानों को तराशा करेंगे, और मैं उनको तालीम दूँगा जिससे वे अल्लाह तआला की बनाई हुई सूरत को बिगाड़ा करेंगे,³ और जो शख्स खुदा तआला को छोड़कर शैतान को अपना साथी बना लेगा⁴ वह खुले नुकसान में पड़ जाएगा। (119) (शैतान) उन लोगों से वायदा किया करता है और उनको हवसें दिलाता है, और शैतान उनसे सिर्फ़ झूठे वायदे करता है। (120) ऐसे लोगों का ठिकाना जहन्नम है, और उससे कहीं बचने की जगह न पाएँगे। (121) और जो लोग ईमान ले आए और अच्छे काम किए हम उनको जल्द ही ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेंगे कि उनके नीचे नदरें बहती होंगी, वे उसमें हमेशा-हमेशा रहेंगे। खुदा तआला ने वायदा फ़रमाया है (और) सच्चा वायदा (फ़रमाया है) और खुदा तआला से ज़्यादा किसका कहना सही होगा। (122) न तुम्हारी तमन्नाओं से काम चलता है और न अहले किताब की तमन्नाओं से, जो शख्स कोई बुरा काम करेगा वह उसके बदले सज़ा दिया जाएगा और उस शख्स को खुदा तआला के सिवा न कोई यार मिलेगा न मददगार मिलेगा। (123) और जो शख्स कोई नेक काम करेगा चाहे वह मर्द हो या औरत, शर्त यह है कि मोमिन हो,⁵ सो ऐसे लोग जन्नत में दाख़िल होंगे और उनपर ज़रा भी जुल्म न होगा। (124) और ऐसे शख्स से ज़्यादा अच्छा किसका दीन होगा जो कि अपना रुख़ अल्लाह की तरफ़ झुका दे⁶ और वह मुख़लिस भी हो⁷ और वह मिल्लते इब्राहीम का इत्तिबा करे⁸ जिसमें टेढ़ का नाम नहीं, और अल्लाह तआला ने इब्राहीम को अपना ख़ालिस दोस्त बनाया था।⁹ (125) और अल्लाह तआला ही की

1. चूँकि शिर्क करने वाले ने अल्लाह तआला (जो कि सबका पैदा करने वाला है) की तौहीन की इसलिए ऐसी ही सज़ा का हक़दार होगा। बख़िलाफ़ दूसरे गुनाहों के कि कुछ तो गुमराही हैं मगर तौहीद के ख़िलाफ़ और उससे बर्द नहीं इसलिए मफ़िरत के काबिल करार दिए गए।
2. ज़नानी चीज़ों से मुराद बाज़े बुत हैं जिनके नाम और सूरतें औरतों की-सी थीं, और उनको ज़ेवर वगैरह भी पहनाते थे।
3. यानी ऐसे शैतान की इताअत करते हैं जो एक तो यह कि नाफ़रमान और बागी है, दूसरे नाफ़रमानी और बगावत की वजह से मलऊन है, तीसरे इनसान का दुश्मन है जैसा कि उसके अक्वाल से साफ़ ज़ाहिर है।
4. यानी खुदा तआला की इताअत न करेगा बल्कि शैतान की बात मानेगा।
5. यह जो मोमिन की कैद लगाई गई इसका मिस्दाक़ हर फ़िर्का नहीं, बल्कि सिर्फ़ वह फ़िर्का है जिसका दीन खुदा तआला के नज़दीक़ मक़बूल होने में सबसे अच्छा हो, और ऐसा फ़िर्का सिर्फ़ इस्लाम के मानने वाले हैं, जिसकी दलील यह है कि उनके अन्दर ये सिफ़तें हैं: मुक़म्मल फ़रमाँबर्दारी, इख़्लास, मिल्लते इब्राहीम (यानी इस्लाम) की पैरवी।
6. यानी फ़रमाँबर्दारी इख़्तियार करे अक़ीदों में भी और आमाल में भी।
7. दिल से फ़रमाँबर्दारी इख़्तियार की हो, ख़ाली मस्लहत से दिखावे के तौर पर न हो।
8. मिल्लते इब्राहीमी यानी इस्लाम की पैरवी करे।
9. ख़लील होना आला दर्जे का तक्व़र्रब व मक़बूलियत है, और हज़रत जुनुदुब रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने मुझको भी ख़लील बनाया है जैसा कि इब्राहीम अलैहिस्सलाम को बनाया था।

मिल्क है जो कुछ भी आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है, और अल्लाह तआला तमाम चीज़ों को घेरे में लिए हुए हैं।¹ (126) ♦

और लोग आपसे औरतों के बारे में हुक्म मालूम करते हैं, आप फरमा दीजिए कि अल्लाह तआला उनके बारे में हुक्म देते हैं और वे आयतें भी जो कुरआन के अन्दर तुमको पढ़कर सुनाई जाया करती हैं, जो कि उन यतीम औरतों के बारे में हैं जिनको जो उनका हक मुकर्रर है नहीं देते हो, और उनके साथ निकाह करने से नफरत करते हो, और कमज़ोर बच्चों के बारे में और इस बारे में कि यतीमों की कारगुज़ारी इन्साफ़ के साथ करो, और जो नेक काम करोगे सो बेशक अल्लाह तआला उसको ख़ूब जानते हैं।² (127) और अगर किसी औरत को अपने शौहर से ज़्यादा आशंका बद-दिमागी या बेपरवाई की हो, सो दोनों को इस बात में कोई गुनाह नहीं कि दोनों आपस में एक खास तरीके पर सुलह कर लें, और यह सुलह बेहतर है, और नफ़सों के अन्दर लालच भरा रहता है, और अगर तुम अच्छा बर्ताव रखो और एहतियात रखो तो बेशक हक़ तआला तुम्हारे आमाल की पूरी ख़बर रखते हैं। (128) और तुमसे यह तो कभी न हो सकेगा कि सब बीवियों में बराबरी रखो अगरचे तुम्हारा कितना ही जी चाहे, तो तुम बिल्कुल एक ही तरफ़ न ढल जाओ जिससे उसको ऐसा कर दो जैसे कोई अधर में लटकी हो,³ और अगर सुधार कर लो और एहतियात रखो तो बेशक अल्लाह तआला बड़ी मग़्फ़िरत वाले, बड़ी रहमत वाले हैं। (129) और अगर दोनों मियाँ-बीवी जुदा हो जाएँ तो अल्लाह तआला अपनी वुस्अत से हर एक को ज़रूरत से फ़ारिग़ कर देगा, और अल्लाह तआला बड़ी वुस्अत वाले, बड़ी हिक्मत वाले हैं। (130) और अल्लाह तआला की मिल्क हैं जो चीज़ें कि आसमानों में हैं और जो चीज़ें कि ज़मीन में हैं,⁴ और वाकई हमने उन लोगों को भी हुक्म दिया था जिनको तुमसे पहले किताब मिली थी और तुमको भी कि अल्लाह तआला से डरो,⁵ और अगर तुम नाशुकी करोगे⁶ तो अल्लाह तआला की मिल्क हैं जो चीज़ें कि आसमानों में हैं और जो चीज़ें कि ज़मीन में हैं, और अल्लाह तआला किसी के मोहताज नहीं खुद अपनी ज़ात में तारीफ़ के लायक हैं। (131) और अल्लाह तआला ही की मिल्क हैं जो चीज़ें कि आसमानों में हैं और जो चीज़ें कि ज़मीन में हैं, और अल्लाह तआला काफ़ी कारसाज़ हैं। (132) अगर उनको

1. आयत नम्बर 123 से 126 तक की आयतों का खुलासा यह हुआ कि सिर्फ़ तमन्नाओं से काम नहीं चलता और मुसलमान सिर्फ़ तमन्नाओं पर नहीं हैं बल्कि काम करते हैं। और दूसरे फ़िर्के जब इस्लाम न लाए जिसपर सारा काम मौकूफ़ है तो बस सिर्फ़ तमन्नाओं पर हुए।
2. मतलब का खुलासा यह हुआ कि जो आयतें इस बारे में पहले आ चुकी हैं जिनको तुम वक़्त-वक़्त पर सुनते रहते हो, वे उन अहक़ाम के बारे में अब भी अमल करने के लिए वाजिब और ज़रूरी हैं, कोई नया हुक्म नहीं दिया जाता।
3. यानी न तो उसके हुक्म अदा किए जाएँ कि शौहर वाली समझी जाए और न उसको तलाक़ दी जाए कि बेशौहर वाली कही जाए।
4. तो ऐसे मालिक के अहक़ाम मानना बहुत ही ज़रूरी है।
5. इसको तक्वा कहते हैं जिसमें तमाम अहक़ाम की मुवाफ़क़त दाख़िल है।
6. यानी अहक़ाम की मुख़ालफ़त करोगे।

मन्ज़ूर हो तो ऐ लोगो! तुम सबको फना कर दें और दूसरों को मौजूद कर दें, और अल्लाह तआला इसपर पूरी कुदरत रखते हैं। (133) जो शख्स दुनिया का मुआवज़ा चाहता हो तो अल्लाह तआला के पास तो दुनिया और आखिरत दोनों का मुआवज़ा है, और अल्लाह तआला बड़े सुनने वाले, बड़े देखने वाले हैं।¹ (134) ♦

ऐ ईमान वालो! इन्साफ पर खूब कायम रहने वाले, अल्लाह के लिए गवाही देने वाले रहो, अगरचे अपनी ही जात पर हो² या कि माँ-बाप और रिश्तेदारों के मुकाबले में हो, वह शख्स अगर अमीर है तो, और गरीब है तो, दोनों के साथ अल्लाह तआला को ज़्यादा ताल्लुक है,³ सो तुम नफ़्स की ख्वाहिश की पैरवी मत करना, कभी तुम हक से हट जाओ, और अगर तुम कज-बयानी “यानी गुलत और ख़िलाफे हकीकत बयान” करोगे या किनारा करो और बचोगे तो बेशक अल्लाह तआला तुम्हारे सब आमाल की पूरी ख़बर रखते हैं। (135) ऐ ईमान वालो!⁴ तुम एतिकाद रखो अल्लाह के साथ और उसके रसूल के साथ, और उस किताब के साथ जो उसने अपने रसूल पर नाज़िल फरमाई, और उन किताबों के साथ जो कि पहले नाज़िल हो चुकी हैं। और जो शख्स अल्लाह तआला का इनकार करे और उसके फरिश्तों का और उसकी किताबों का और उसके रसूलों का और कियामत के दिन का तो वह शख्स गुमराही में बड़ी दूर जा पड़ा। (136) बेशक जो लोग मुसलमान हुए फिर काफिर हो गए, फिर मुसलमान हुए फिर काफिर हो गए, फिर कुफ़्र में बढ़ते चले गए,⁵ अल्लाह तआला ऐसों को हरगिज़ न बर्ख़ोर्गे और न उनको (मन्ज़िले मकसूद यानी जन्नत का) रास्ता दिखलाएँगे।⁶ (137) मुनाफ़िकों को खुशख़बरी सुना दीजिए इस बात की कि उनके वास्ते बड़ी दर्दनाक सज़ा है। (138) जिनकी यह हालत है कि काफ़िरों को दोस्त बनाते हैं मुसलमानों को छोड़कर। क्या उनके पास इज़्ज़त वाले रहना चाहते हैं, सो ऐज़ाज़ “यानी इज़्ज़त और सम्मान” तो सारा खुदा तआला के कब्जे में है।⁷ (139) और अल्लाह तआला तुम्हारे पास यह फरमान भेज चुका है कि जब अल्लाह के अहकाम के साथ मज़ाक-ठट्टा और कुफ़्र होता हुआ सुनो तो उन लोगों के पास मत बैठो जब तक कि वे कोई और बात शुरू न कर दें⁸ कि उस हालत में तुम भी उन्हीं जैसे हो जाओगे,⁹ यकीनन अल्लाह तआला मुनाफ़िकों को और काफ़िरों को सबको दोज़ख़ में जमा कर देंगे। (140) वे ऐसे हैं कि तुमपर मुसीबत पड़ने के मुन्तज़िर रहते हैं, फिर अगर तुम्हारी

1. वे सबकी बातों और दरख़्वास्तों को सुनते हैं दुनिया की हो या दीन की, और सबकी नीयतों को देखते हैं। पस आखिरत के चाहने वालों को सवाब देंगे और दुनिया के चाहने वालों को आखिरत में महरूम रखेंगे, पस आखिरत ही की नीयत और दरख़्वास्त करनी चाहिए। अलबत्ता दुनिया की हाज़त मुस्तक़िल तौर पर माँगने में हर्ज नहीं, लेकिन इबादत में यह इरादा न करे।

2. इसको इकरार कहते हैं।

3. यानी गवाही के वक़्त यह ख़्याल न करो कि जिसके मुकाबले में हम गवाही दे रहे हैं यह अमीर है, इसको नफा पहुँचाना चाहिए ताकि इससे बेमुरव्वती न हो, या यह कि यह गरीब है इसका कैसे नुक़सान कर दें। तुम किसी की अमीरी-गरीबी को न देखो, क्योंकि उनसे तुम्हारा ताल्लुक जिस क़द्र है वह भी अल्लाह तआला का दिया हुआ है और अल्लाह तआला को जो ताल्लुक है वह तुम्हारा दिया हुआ नहीं। फिर जब बावजूद मजबूत ताल्लुक के अल्लाह तआला ने उनकी मस्लहत इसमें रखी है कि हक़ का इज़हार किया जाए तो तुम कमज़ोर ताल्लुक पर उनकी एक आरज़ी (यानी अस्थायी) मस्लहत का क्यों ख़्याल करते हो।

4. यानी जो मुख़्तसर तौर पर ईमान लाकर मोमिनों की जमाअत में दाख़िल हो चुके हैं।

5. यानी कुफ़्र पर मरते दम तक जमे रहे और कायम रहे।

6. क्योंकि मग़फ़रत और जन्नत के लिए ईमान पर मौत शर्त है।

7. चुनाँचे अल्लाह तआला ने जल्द ही मुसलमानों के हाथों सबको ज़लील व रुस्वा फरमा दिया।

8. यह मज़ाक-ठट्टा करने वाले मक्का में मुशिरकीन थे और मदीने में यहूद तो खुलेआम और मुनाफ़िक लोग सिर्फ़ गरीब व कमज़ोर मुसलमानों के सामने। पस जिस तरह वहाँ मुशिरकीन के साथ उठना-बैठना ऐसे वक़्त में मना था, (शेष तफ़सीर पृष्ठ 182 पर)

फह अल्लाह की तरफ से हो गई तो बातें बनाते हैं कि क्या हम तुम्हारे साथ न थे, और अगर काफिरों को कुछ हिस्सा मिल गया तो बातें बनाते हैं कि क्या हम तुमपर ग़ालिब न आने लगे थे और क्या हमने तुमको मुसलमानों से बचा नहीं लिया। सो अल्लाह तआला तुम्हारा और उनका कियामत में (अमली) फैसला फरमा देंगे, और (उस फैसले में) अल्लाह तआला काफिरों को हरगिज़ मुसलमानों के मुकाबले में ग़ालिब न फरमाएँगे। (141) ♦

बिला शुब्हा मुनाफिक लोग चालबाज़ी करते हैं अल्लाह तआला से, हालाँकि अल्लाह तआला उस चाल की सज़ा आपको देने वाले हैं। और जब नमाज़ को खड़े होते हैं तो बहुत ही सुस्ती के साथ खड़े होते हैं¹ सिर्फ आदमियों को दिखलाते हैं, और अल्लाह तआला का ज़िक्र भी नहीं करते मगर बहुत ही मुख़्तसर² (142) लटक रहे हैं दोनों के दरमियान में, न इधर न उधर,³ और जिसको अल्लाह तआला गुमराही में डाल दें ऐसे शख्स के लिए कोई सबील न पाओगे।⁴ (143) ऐ ईमान वाले! तुम मोमिनों को छोड़कर काफिरों को⁵ दोस्त मत बनाओ, क्या तुम यूँ चाहते हो कि अपने ऊपर अल्लाह तआला की साफ हुज्जत कायम कर लो।⁶ (144) बेशक मुनाफिक लोग दोज़ख के सबसे नीचे के तबूके में जाएँगे, और तू हरगिज़ उनका कोई मददगार न पाएगा।⁷ (145) लेकिन जो लोग तौबा कर लें और सुधार कर लें और अल्लाह तआला पर भरोसा रखें और अपने दीन को ख़ालिस अल्लाह ही के लिए किया करें, तो ये लोग मोमिनों के साथ होंगे, और मोमिनों को अल्लाह तआला बड़ा अज़्र अता फरमाएँगे। (146) (और ऐ मुनाफिको!) अल्लाह तआला तुमको सज़ा देकर क्या करेंगे अगर तुम शुक्र गुज़ारी करो और ईमान ले आओ, और अल्लाह तआला बड़ी क़द्र करने वाले और ख़ूब जानने वाले हैं। (147)

(पृष्ठ 180 का शेष)

यहाँ यहूद और मुनाफिकों के साथ उठने-बैठने से मना किया गया है।

9. अहले बातिल के साथ उठने-बैठने की चन्द सूरतें हैं। अव्वल उनकी कुफ़्र भरी और ख़िलाफ़े इस्लाम बातों और आमाल पर रज़ामन्दी के साथ, यह कुफ़्र है। दूसरे कुफ़्रियात के इज़हार के वक़्त कराहत यानी नागवारी के साथ, मगर बिना किसी उज़्र के, यह फ़िस्क है। तीसरे किसी दुनियावी ज़रूरत के वास्ते, यह मुबाह (यानी जायज़ और गुन्जाइश रखता) है। चौथे अहकाम की तब्लीग़ के लिए, यह इबादत है। पाँचवे मजबूरी और बेइख़्तियारी के साथ, इसमें माज़ूर है।

1. जिस सुस्ती की यहाँ मज़म्मत (यानी निंदा) है वह एतिकादी सुस्ती है, और जो बावजूद एतिकाद सही होने के सुस्ती हो वह इससे ख़ारिज है। फिर अगर किसी उज़्र से हो जैसे बीमारी व थकन या नींद के ग़ल्बे से, तब तो काबिले मलामत भी नहीं। और अगर बिला उज़्र हो तो काबिले मलामत है।

2. यानी सिर्फ नमाज़ की सूरत बना लेते हैं जिससे नमाज़ का नाम हो जाए, और ताज्जुब नहीं कि सिर्फ उठना-बैठना ही होता हो।

3. जाहिर में मोमिन तो कुफ़्रान से अलग, और बातिन में काफिर तो मोमिनों से अलग।

4. मतलब यह कि इन मुनाफिकों के राह पर आने की उम्मीद मत रखो। इसमें मुनाफिकों को बुरा-भला कहना और मलामत है और मोमिनों की तसल्ली, कि उनकी शरारतों से रंज न करें।

5. चाहे मुनाफिक हों चाहे खुले काफिर हों।

6. साफ़ हुज्जत यही कि जब हमने मना कर दिया था तो फिर ऐसा क्यों किया।

7. ऊपर मुनाफिकों की बुराइयों और ख़राबियों का बयान मकसूद था (अगरचे एक मज़मून के तहत में उनकी सज़ा जहन्नम होने का भी ज़िक्र आ गया था) आगे उनकी सज़ा का बयान मकसूद है। और चूँकि सज़ा के बयान का असर अपने आपमें यह है कि सही समझ रखने वाले आदमी को ख़ौफ़ पैदा हो जाता है, जो तौबा का सबब हो जाता है। इसलिए तौबा करने वालों का सज़ा से अलग होना और उनके नेक बदले का बयान भी फरमा दिया।

छठा पार: ला युहिबुल्लाहु

सूर: निसा (आयत 148 से 177)

अल्लाह तआला बुरी बात ज़बान पर लाने को पसन्द नहीं करते सिवाय मज़्लूम के,¹ और अल्लाह तआला ख़ूब सुनते हैं, ख़ूब जानते हैं।² (148) अगर नेक काम ऐलानिया करो या उसको खुफिया करो या किसी बुराई को माफ़ कर दो तो अल्लाह तआला बड़े माफ़ करने वाले हैं, पूरी कुदरत वाले हैं। (149) जो लोग कुफ़्र करते हैं अल्लाह तआला के साथ और उसके रसूलों के साथ और (यूँ) चाहते हैं कि अल्लाह के और उसके रसूलों के दरमियान में फ़र्क़ रखें, और कहते हैं कि हम बाज़ों पर तो ईमान लाते हैं और बाज़ों के इनकारी हैं,³ और (यूँ) चाहते हैं कि बीच की एक राह तजवीज़ करें (150) ऐसे लोग यकीनन काफ़िर हैं, और काफ़िरों के लिए हमने तौहीन वाली सज़ा तैयार कर रखी है। (151) और जो लोग अल्लाह तआला पर ईमान रखते हैं और उसके सब रसूलों पर भी, और उनमें से किसी में फ़र्क़ नहीं करते, उन लोगों को अल्लाह तआला ज़रूर उनके सवाब देंगे, और अल्लाह तआला बड़े मग़्फ़िरत वाले हैं, बड़े रहमत वाले हैं।⁴ (152) ♦

आपसे अहले किताब यह दरख़्वास्त करते हैं कि आप उनके पास एक ख़ास तहरीर आसमान से मंगवा दें, सो उन्होंने मूसा से इससे भी बड़ी बात की दरख़्वास्त की थी और (यूँ) कहा था कि हमको अल्लाह तआला को खुल्लम-खुल्ला दिखला दो, उनकी (इस) गुस्ताख़ी के सबब उनपर कड़क बिजली आ पड़ी,⁵ फिर उन्होंने गौसाला को तजवीज़ किया था, उसके बाद कि बहुत-सी दलीलें उनको पहुँच चुकी थीं। फिर हमने उनसे दरगुज़र कर दिया था। और मूसा (अलैहिस्सलाम) को हमने बहुत बड़ा रोब दिया था। (153) और हमने उन लोगों से कौल व करार लेने के वास्ते तूर पहाड़ को उठाकर उनके ऊपर (लटका हुआ) कर दिया था, और हमने उनको यह हुक्म दिया था कि दरवाज़े में आजिज़ी से दाख़िल होना, और हमने उनको यह हुक्म दिया था कि हफ़्ते “यानी शनिवार” के दिन के बारे में हद से मत बढ़ना, और हमने उनसे कौल व करार बहुत सख़्त लिए। (154) सो (हमने उनको सज़ा में

1. यानी मज़्लूम अगर अपने ज़ालिम के बारे में शिकायत बयान करे तो वह गुनाह नहीं।
2. इसमें इशारा है कि मज़्लूम को हकीकत के खिलाफ़ कहने की इजाज़त नहीं।
3. इस कौल और अक़ीदे से अल्लाह तआला के साथ भी कुफ़्र लाज़िम आ गया और सब रसूलों के साथ भी, क्योंकि अल्लाह तआला ने और हर रसूल ने सब रसूलों को रसूल कहा है, जब बाज़ का इनकार हुआ तो अल्लाह तआला और दूसरे रसूलों को झुठलाना हो गया, जो कि तस्दीक और ईमान के खिलाफ़ है।
4. बाज़ मुफ़त्सिरनी ने इस आयत को यहूद व ईसाइयों (नसारा) दोनों की शान में कहा है, क्योंकि ईसाई भी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को नहीं मानते लेकिन मज़मून के गुज़रे हुए और आने वाले हिस्से में यहूद का ज़िक्र होना इसको चाहता है कि आयत का यहूद की शान में होना ज़्यादा अहम है, अगरचे उसके तहत में ईसाई भी लफ़ज़ के आम होने में दाख़िल हो जाएँ।
5. यहूद ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से (दुश्मनी के तौर पर) यह दरख़्वास्त की कि हम आपसे जब बैअत करें कि हमारे पास अल्लाह तआला की तरफ़ से एक तहरीर (यानी लिखा हुआ) इस मज़मून की आप कि खुदा तआला की तरफ़ से फ़लाँ यहूदी के नाम यह है कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रसूल है, इस तरह हर-हर यहूदी के नाम ये ख़त हों, अल्लाह तआला ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तसल्ली फ़रमाई है कि ये लोग हमेशा से ऐसी ज़हालतें करते आए हैं, आप रन्जीदा न हों।

मुब्तला किया) उनके अहद तोड़ने की वजह से और अल्लाह के अहकाम के साथ उनके कुफ़ की वजह से, और उनके नबियों को नाहक़ क़त्ल करने की वजह से, और उनके इस कहने की वजह से कि हमारे दिल महफूज़ हैं। (महफूज़ नहीं) बल्कि उनके कुफ़ के सबब उन (दिलों) पर अल्लाह तआला ने बन्द लगा दिया है, सो उनमें ईमान नहीं मगर बहुत मामूली।¹ (155) और (उन्हें सज़ा दी) उनके कुफ़ की वजह से, और (हज़रत) मरियम (अलैहस्सलाम) पर उनके बड़ा भारी बोहतान धरने की वजह से। (156) और उनके इस कहने की वजह से कि हमने मसीह ईसा इब्ने मरियम को जो कि अल्लाह तआला के रसूल हैं, क़त्ल कर दिया,² हालाँकि उन्होंने न उनको क़त्ल किया न उनको सूली पर चढ़ाया, लेकिन उनको धोखा और शुब्हा हो गया। और जो लोग उनके बारे में इख़्तिलाफ़ करते हैं वे ग़लत ख़्याल में हैं, उनके पास इसपर कोई दलील नहीं सिवाय अटकली बातों पर अमल करने के, और यकीनी बात है कि उन्होंने उनको क़त्ल नहीं किया। (157) बल्कि उनको खुदा तआला ने अपनी तरफ़ उठा लिया, और अल्लाह तआला बड़े ज़बरदस्त, हिक्मत वाले हैं। (158) और कोई शख्स अहले किताब से नहीं रहता मगर वह ईसा अलैहिस्सलाम की अपने मरने से पहले ज़रूर तस्दीक़ कर लेता है, और क़ियामत के दिन वह उनपर गवाही देंगे।³ (159) सो यहूद के इन्ही बड़े-बड़े जुर्मों के सबब हमने बहुत-सी पाकीज़ा चीज़ें जो उनके लिए हलाल थीं उनपर हराम कर दीं,⁴ और इस सबब से कि वे बहुत आदमियों के लिए अल्लाह तआला की राह से रुकावट बन जाते थे। (160) और इस सबब से कि वे सूद लिया करते थे हालाँकि उनको इससे मना किया गया था, और इस सबब से कि वे लोगों के माल नाहक़ तरीके से खा जाते थे। और हमने उन लोगों के लिए जो उनमें से काफ़िर हैं दर्दनाक सज़ा का सामान कर रखा है। (161) लेकिन उनमें जो लोग (दीन के) इल्म में पुख्ता हैं और जो (उनमें) ईमान ले आने वाले हैं, कि इस (किताब) पर भी ईमान लाते हैं जो आपके पास भेजी गई और (उसपर भी ईमान रखते हैं) जो आपसे पहले भेजी गई थी, और जो (उनमें) नमाज़ की पाबन्दी करने वाले हैं और जो (उनमें) ज़कात देने वाले हैं और जो (उनमें) अल्लाह तआला पर और क़ियामत के दिन पर एतिकाद रखने वाले हैं, (सो) ऐसे लोगों को हम (आख़िरत में) ज़रूर बहुत बड़ा सवाब अता फ़रमाएँगे।⁵ (162) ♦

1. अहद तोड़ने में बाद वाला सारा मज़मून दाख़िल है, लेकिन बुराई और मलामत के ज़्यादा होने की वजह से सब मामलात को अलग-अलग भी बयान फ़रमा दिया कि अल्लाह तआला के साथ उनका मामला यह है कि उनके अहकाम के इनकारी हैं, अम्बिया अलैहिमुस्सलाम के साथ यह बर्ताव है कि उनको झुठलाने से गुज़रकर उनको क़त्ल करते थे, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ यह मामला है कि आपके सामने अपने हक़ पर होने के दावेदार हैं, और ये सब कुफ़ की किस्में हैं।
2. ईसा अलैहिस्सलाम के नाम के साथ जो रसूलुल्लाह आया है यह यहूद का कौल नहीं, बल्कि अल्लाह तआला ने बढ़ा दिया है कि देखो ऐसे के बारे में ऐसा कहते हैं।
3. ऊपर यहूद की बाज़ शरारतें और कुछ सज़ाएँ लान-तान वग़ैरह जो कि दुनिया में होने वाली और तक़वीनी उमूर से थीं, बयान फ़रमाई हैं, आगे भी उनकी बाज़ शरारतों का ज़िक्र है और साथ में बाज़ सज़ाओं का भी, दुनिया में शरीअत के हुक्म के एतिबार से यह कि बाज़ हलाल चीज़ों का हराम होना और आख़िरत के अन्जाम का ज़िक्र कि दर्दनाक अज़ाब है, का बयान है, और चूँकि असल सज़ा यही है इसलिए यहूद के ज़िक्र के शुरू पर भी अज़ाबे मुहीन (यानी तौहीन वाले अज़ाब) के उनवान से इसको फ़रमाया था, पस दोनों तरफ़ में होने से ज़्यादा ताकीद हो गई।
4. जुर्मों की वजह से जो तहरीम (यानी हराम करना) हुई वह तहरीम आम थी, अगरचे जुर्मों से बाज़ नेक लोग महफूज़ भी थे, क्योंकि बहुत-सी हिक्मतों के तकाज़े से अल्लाह का तरीक़ा यूँ ही जारी है जैसा कि कुरआन में इसकी तरफ़ इशारा भी है, “वक्तू फ़िल्न-तल्ला तुसीबन्नल्लज़ी-न मिन्कुम् ख़ास्स-तन्” और हदीस में भी आया है कि बड़ा मुज़िम वह है जिसके बेज़रूरत सवाल करने से कोई चीज़ सबके लिए हराम हो जाए, यानी वह के ज़माने में। और शरीअते मुहम्मदिया में जो चीज़ें हराम हैं वे किसी जिस्मानी या रूहानी नुक़सान की वजह से हराम हैं, कि इस हैसियत से नापाक हैं, पस फ़ायदेमन्द हलाल चीज़ों का (शेष तफ़सीर पृष्ठ 188 पर)

हमने आपके पास वह भेजी है जैसे नूह के पास भेजी थी, और उनके बाद और पैगम्बरों के पास, और हमने इब्राहीम और इसमाईल और इसहाक और याकूब और याकूब की औलाद और ईसा और अय्यूब और यूनस और हारून और सुलेमान के पास वह भेजी थी, और हमने दाऊद को ज़बूर दी थी। (163) और (ऐसे) पैगम्बरों को (वह वाला बनाया) जिनका हाल हम इससे पहले आपसे बयान कर चुके हैं और ऐसे पैगम्बरों को जिनका हाल हमने आपसे बयान नहीं किया, और मूसा (अलैहिस्सलाम) से अल्लाह तआला ने खास तौर पर कलाम फरमाया। (164) उन सबको खुशखबरी देने वाले और ख़ौफ सुनाने वाले पैगम्बर बनाकर इसलिए भेजा ताकि लोगों के पास अल्लाह तआला के सामने उन पैगम्बरों के बाद कोई उज़्र बाकी न रहे, और अल्लाह तआला पूरे ज़ोर वाले हैं, बड़ी हिक्मत वाले हैं।¹ (165) लेकिन अल्लाह तआला (इस किताब) के ज़रिये से जिसको आपके पास भेजा है, और भेजा भी अपने इल्मी कमाल के साथ, शहादत दे रहे हैं और फरिश्ते तस्दीक कर रहे हैं, और अल्लाह ही की शहादत काफी है। (166) जो लोग इनकारी हैं और खुदाई दीन से रुकावट होते हैं, बड़ी दूर की गुमराही में जा पड़े हैं। (167) बेशक जो लोग इनकारी हैं और (दूसरों का भी) नुकसान कर रहे हैं अल्लाह तआला उनको कभी न बख्शेंगे और न उनको कोई और राह दिखाएँगे (168) सिवाय जहन्नम की राह के, इस तरह पर कि उसमें हमेशा-हमेशा रहा करेंगे, और अल्लाह तआला के नज़दीक यह (सज़ा देना) मामूली बात है।² (169) ऐ तमाम लोगो! तुम्हारे पास यह रसूल सच्ची बात लेकर तुम्हारे परवर्दिगार की तरफ से तशरीफ लाए हैं, सो तुम यकीन रखो यह तुम्हारे लिए बेहतर होगा। और अगर तुम मुनकिर “यानी इनकार करने वाले” रहे तो खुदा तआला की मिलक है यह सब जो कुछ आसमानों में है और ज़मीन में है, और अल्लाह तआला पूरी इत्तिहा रखते हैं, कामिल हिक्मत वाले हैं।³ (170) ऐ अहले किताब! तुम अपने दीन में हद से मत निकलो और खुदा तआला की शान में ग़लत बात मत कहो,⁴ मसीह ईसा इब्ने मरियम तो और कुछ भी नहीं अलबत्ता अल्लाह के रसूल हैं और उसका एक कलिमा हैं, जिसको उसने मरियम

(पृष्ठ 186 का शेष) हराम होना सज़ा व सियासत है और नुकसानदेह हलाल चीज़ों का हराम होना रहमत व हिफाज़त है।

5. मुराद उनसे ये हज़रात और उनके जैसे हैं, जैसे अन्बुल्लाह बिन सलाम रज़ियल्लाहु अन्हु व उसैद रज़ियल्लाहु अन्हु व सअलबा रज़ियल्लाहु अन्हु और आयत का यही नाज़िल होने का सबब भी है। और आयत में कामिल अज़्र को उन पहले ज़िक्र हुए उमूर के साथ जोड़ना मकसूद है, और जहाँ तक अज़्र व मुतलक नज़ात की बात है तो वह सिर्फ़ अज़ायदे ज़रूरिया को सही करने से वाबस्ता है।

1. अल्लाह तआला पूरे ज़ोर और इख़्तियार वाले हैं कि रसूलों को भेजे बिना भी सज़ा देते तो तन्हा हकीकी मालिक होने की वजह से, यह कोई जुल्म न होता, और हकीकत में किसी को उज़्र करने का हक़ भी न होता, लेकिन चूँकि बड़ी हिक्मत वाले भी हैं इसलिए हिक्मत रसूलों के भेजने में यह थी ताकि ज़ाहिरी उज़्र भी न रहे।

2. ऊपर यहूद के शुब्हा का जो कि हुज़ूरे पाक की नुबुव्वत के मुताल्लिक था, जवाब और नुबुव्वत का साबित करना, साथ ही इनकार करने वालों के लिए वर्ड निहायत साफ़ और उम्दा अन्दाज़ से ज़िक्र हो चुकी, आगे आम ख़िताब से नुबुव्वत की तस्दीक का वाजिब होना बयान फरमाते हैं।

3. ऊपर यहूद को ख़िताब था आगे नसारा (यानी ईसाइयों) को ख़िताब है।

4. यानी इन्ज़ील वालो।

5. कि नज़्जु बिल्लाह (यानी अल्लाह अपनी पनाह में रखे) वह औलाद वाला है, जैसा कि बाज़ कहते हैं कि मसीह अल्लाह के बेटे हैं, या वह माबूदों के मजमूए का एक हिस्सा हैं, जैसा कि बाज़ कहते थे कि अल्लाह तीन का तीसरा है और बक़िया दो हिस्से एक हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को कहते थे और एक हज़रत जिबराईल अलैहिस्सलाम को, जैसा कि आगे आयत में “व लल्मलाइ-कतुल-मुकर्रबून” के बढ़ाने से मालूम होता है, और बाज़े हज़रत मरियम अलैहिस्सलाम को, जैसा कि “इत्तख़िज़्ज़नी व उम्मि-य” से मालूम होता है, या वह ऐन मसीह है, जैसा कि बाज़ कहते थे, “कि खुदा तो बस मसीह इब्ने मरियम है” ये सब अक़ीदे बातिल हैं।

तक पहुँचाया था और उसकी तरफ से एक जान हैं। सो अल्लाह पर और उसके सब रसूलों पर ईमान लाओ, और (यूँ) मत कहो कि तीन हैं, बाज़ आ जाओ तुम्हारे लिए बेहतर होगा। माबूदे हकीकी तो एक ही माबूद है, वह औलाद वाला होने से पाक है, जो कुछ आसमानों और ज़मीन में मौजूद चीज़ें हैं सब उसकी मिल्क हैं, और अल्लाह तआला कारसाज़ होने में काफ़ी हैं। (171) ♦

मसीह हरगिज़ खुदा के बन्दे बनने से शर्म नहीं करेंगे और न करीबी फ़रिश्ते, और जो शख्स खुदा तआला की बन्दगी से शर्म करेगा “या बुरा समझेगा” और तकब्बुर करेगा तो खुदा तआला ज़रूर सब लोगों को अपने पास जमा करेंगे। (172) फिर जो लोग ईमान लाए होंगे और उन्होंने अच्छे काम किए होंगे तो उनको उनका पूरा सवाब देंगे और उनको अपने फज़ल से और ज़्यादा देंगे, और जिन लोगों ने शर्म की होगी और तकब्बुर किया होगा तो उनको सख़्त दर्दनाक सज़ा देंगे। (173) और वे लोग अल्लाह के अलावा किसी और को अपना मददगार हिमायती न जाएँगे। (174) ऐ लोगो! यकीनन तुम्हारे पास तुम्हारे परवर्दिगार की तरफ़ से एक दलील आ चुकी है,² और हमने तुम्हारे पास एक साफ़ नूर भेजा है।³ (175) सो जो लोग अल्लाह पर ईमान लाए और उन्होंने उसको मज़बूत पकड़ा,⁴ तो ऐसों को अल्लाह तआला अपनी रहमत में दाख़िल करेंगे और अपने फज़ल में और अपने तक उनको सीधा रास्ता बता देंगे।⁵ (176) लोग आपसे हुक्म दरियाफ़्त करते हैं,⁶ आप फ़रमा दीजिए कि अल्लाह तआला तुमको कलाला के बारे में हुक्म देता है।⁷ अगर कोई शख्स मर जाए जिसके औलाद न हो (और न माँ-बाप) और उसके एक (हकीकी या माँ-शरीक सौतेली) बहन हो तो उसको तमाम तर्क का आधा मिलेगा, और वह शख्स उस (अपनी बहन) का वारिस होगा, अगर (वह बहन मर जाए और) उसके औलाद न हो, (और माँ-बाप भी न हों)। और अगर (बहनें) दो हों (या ज़्यादा) तो उनको उसके कुल तरफ़े में से दो तिहाई मिलेंगे। और अगर (कई वारिस) भाई (बहन) हों मर्द और औरत तो एक मर्द को दो औरतों के हिस्से के बराबर,⁸ अल्लाह तआला तुमसे (दीन की बातें) इसलिए बयान करते हैं कि तुम गुमराही में न पड़ो, और अल्लाह हर चीज़ को ख़ूब जानते हैं। (177) ♦

1. ऊपर ईसाइयों के अक़ीदों का बातिल होना तथा इक्कार करने वालों की जज़ा और इनकार करने वालों की सज़ा का बयान हो चुका, आगे आम ख़िताब से इन मज़ामीन का और इन मज़ामीन के तालीम फ़रमाने वाले रसूल और कुरआन का सच्चा होना और तस्दीक करने वालों की फज़ीलत बयान फ़रमाते हैं, जिस तरह यहूद के सामने हुज्जत पेश करने के बाद इसी तरह ख़िताबे आम फ़रमाया था। “या अय्युहन्नासु कद जा-अकुमुरसूलु”.....

2. वह मुबारक ज़ात है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की।

3. वह कुरआन मजीद है।

4. यानी इस्लाम को।

5. हासिल यह है कि इताअत की बरकत से इताअत पर जमे रहने की तौफ़ीक़ अता होती है।

6. इस आयत के नाज़िल होने का सबब हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु का फ़त्वा मालूम करना है कि उस वक़्त सिर्फ़ उनकी बहनें वारिस थीं जैसा कि नसई शरीफ़ और लबाब में इब्ने मरदूया से हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का सवाल करना भी नक़ल किया है।

7. कलाला यानी जिसके न औलाद हो न माँ-बाप हों।

8. क्योंकि इस सूर: में यहाँ तक बहुत-से उसूल व अहक़ाम की तफ़सील है इसलिए आख़िर में एक मुख़्तसर उनवान से पूरी की पूरी तफ़सील को दोबारा याद दिलाकर अपनी मन्नत और एहसान, शरीअत के बयान करने में और उन अहक़ाम में हिक्मत की रियायत ज़िक्र फ़रमा कर सूर: को ख़त्म फ़रमाते हैं।

5 सूर: मा-इद: 112

सूर: मा-इद: मदीना में नाज़िल हुई। इसमें 120 आयतें और 16 रुकूअ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

ऐ ईमान वालो! अहदों को पूरा करो,¹ तुम्हारे लिए तमाम चौपाए “यानी चार पैरों पर चलने वाले चरने वाले जानवर” (यानी ऊँट, बकरी, गाय) हलाल किए गए हैं,² मगर जिनका ज़िक्र आगे आता है, लेकिन शिकार को हलाल मत समझना जिस हालत में कि तुम एहराम में हो। बेशक अल्लाह तआला जो चाहें हुकम करें। (1) ऐ ईमान वालो! खुदा तआला की निशानियों की बेहुर्मती न करो और न हुर्मत वाले महीने की, और न (हरम में) कुरबानी होने वाले जानवर की, और न उन (जानवरों) की जिनके गले में पड़े पड़े हुए हों, और न उन लोगों की जो कि बैतुल-हराम के इरादे से जा रहे हों, अपने रब के फज़ल और रज़ामन्दी के तालिब हों। और जिस वक़्त तुम एहराम से बाहर आ जाओ तो शिकार किया करो। और ऐसा न हो कि तुमको किसी कौम से, जो इसी सबब से बुग़ज़ है कि उन्होंने तुमको मस्जिदे-हराम से रोक दिया था, वह तुम्हारे लिए इसका सबब हो जाए कि तुम हद से निकल जाओ। और नेकी और परहेज़गारी में एक-दूसरे की मदद किया करो, और गुनाह और “जुल्म व” ज़्यादती में एक-दूसरे की मदद मत करो, और अल्लाह तआला से डरा करो, बेशक अल्लाह तआला सख़्त सज़ा देने वाले हैं। ♦ (2) तुमपर हराम किए गए हैं मुर्दार³ और खून और ख़िन्ज़ीर “यानी सुअर” का गोशत⁴ और जो (जानवर) कि अल्लाह के अलावा किसी और के लिए नामज़द कर दिया गया हो, और जो गला घुटने से मर जाए, और जो किसी चोट से मर जाए, और जो गिरकर मर जाए, और जो किसी की टक्कर से मर जाए, और जिसको कोई दरिन्दा खाने लगे लेकिन जिसको ज़िब्ह कर डालो,⁵ और जो (जानवर) इबादत गाहों पर ज़िब्ह किया जाए,⁶ और यह कि तक़सीम करो तीरों के कुरा डालने के ज़रिये, ये सब गुनाह हैं। आजके दिन ना-उम्मीद हो गये⁷ काफ़िर लोग तुम्हारे दीन से,⁸ सो उनसे मत डरना और मुझसे डरते रहना,⁹ आजके दिन मैंने तुम्हारे लिए तुम्हारे दीन को कामिल कर दिया,¹⁰ और मैंने तुमपर अपना इनाम मुकम्मल कर दिया, और मैंने इस्लाम को तुम्हारा दीन (बनने के लिए) पसन्द कर लिया,¹¹ पस जो शख्स शिद्दत की भूख में बेताब हो जाए शर्त यह है कि किसी गुनाह की तरफ़ उसका मैलान “यानी रुझान” न हो,¹² तो यकीनन अल्लाह तआला माफ़ करने वाले हैं, रहमत वाले हैं।¹³ (3) लोग आपसे पूछते हैं कि क्या-क्या

1. ऊपर की सूर: के ख़तम पर फ़रमाया था कि हम शरीअत के अहकाम को तुमसे बयान करते हैं। इस सूर: के शुरू में इसका हुकम है कि तुम हमारे उन बयान किए हुए शरीअत के अहकाम की पूरी-पूरी तामील करो, यह ताल्लुक तो दोनों सूरतों के आख़िर और शुरू में है, बाकी पूरी सूरतों में भी दोनों के शरीअत के अहकाम पर मुश्तमिल होने से ताल्लुक ज़ाहिर है, और खुद इस सूर: के हिस्सों में भी एक अजीब ताल्लुक और मुनासबत है कि इसके पहले की आयत एक तरह से “मतन” (यानी असल इबादत) है। और पूरी सूरत गोया उसकी शरह यानी खुलासा है, क्योंकि लफ़ज़ “अकूद” हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु के कौल के मुताबिक़ शरीअत के तमाम अहकाम को आम और शामिल है और सूर: में उन्हीं अहकाम की तफ़सील है, पस अब्बलन मुख़्तसर व कुल्ली उनवान से शरीअत के अहकाम पर अमल का हुकम फ़रमाते हैं।

2. जैस हिरन, नील-गाय वगैरह सिवाय उन मवेशी जानवरों के जो कि शरीअत की दूसरी दलीलें हदीस वगैरह से ख़ास व अलग हो चुके हैं, जैसे गधा, ख़च्चर वगैरह। इन अलग किए हुए जानवरों के सिवा और सब पालतू व जंगली जानवर हलाल हैं सिवाय उनके जिनका ज़िक्र आगे आता है।

3. यानी जो जानवर बावज़ूद इसके कि उनका ज़िब्ह करना वाजिब है, शरई तौर पर बिना ज़िब्ह किए मर जाए।

4. इसी तरह उसके सब हिस्से और अंग।

(शेष तफ़सीर पृष्ठ 194 पर)

(जानवर) उनके लिए हलाल किए गए हैं, आप फरमा दीजिए कि तुम्हारे लिए कुल हलाल (जानवर) हलाल रखे हैं, और जिन शिकारी जानवरों को तुम तालीम दो और तुम उनको छोड़ो भी, और उनको उस तरीके से तालीम दो जो तुमको अल्लाह तआला ने तालीम दिया है, तो ऐसे शिकारी जानवर जिस (शिकार) को तुम्हारे लिए पकड़ें उसको खाओ और उसपर अल्लाह का नाम भी लिया करो, और अल्लाह से डरते रहा करो, बेशक अल्लाह तआला जल्दी हिसाब लेने वाले हैं। (4) आज तुम्हारे लिए हलाल चीजें हलाल रखी गईं और जो लोग किताब दिए गए हैं उनका खाना (यानी ज़बीहा) तुमको हलाल है, और तुम्हारा खाना (यानी ज़बीहा) उनको हलाल है, और पारसा औरतें भी जो मुसलमान हों, और पारसा औरतें उन लोगों में से भी जो तुमसे पहले किताब दिए गए हैं जबकि तुम उनका मुआवज़ा दे दो,¹ इस तरह से कि तुम बीवी बनाओ, न तो एलानिया बदकारी करो न खुफिया ताल्लुकात पैदा करो,² और जो शख्स ईमान के साथ कुफ़ करेगा³ तो उस शख्स का अमल ग़ारत हो जाएगा और वह आख़िरत में बिल्कुल घाटे में होगा।⁴ (5) ♦

ऐ ईमान वालो! जब तुम नमाज़ को उठने लगे तो अपने चेहरों को धोओ और अपने हाथों को भी (धोओ) कोहनियों समेत, और अपने सरों पर हाथ फेरो और (धोओ) अपने पैरों को भी टख़्नों समेत,⁵ और अगर तुम नापाकी की हालत में हो तो (सारा बदन) पाक करो, और अगर तुम बीमार हो या सफ़र की हालत में हो, या तुममें से कोई शख्स इस्तन्जे से आया हो या तुमने बीवियों से नज़दीकी की हो, फिर तुमको पानी न मिले तो तुम पाक ज़मीन से तयम्मूम (कर लिया) करो, यानी अपने चेहरों और हाथों पर हाथ फेर लिया करो इस (ज़मीन पर) से,⁶ अल्लाह तआला को यह मन्ज़ूर नहीं कि तुमपर कोई तंगी डालें,⁷ लेकिन उसको (यानी अल्लाह तआला को) यह मन्ज़ूर है कि तुमको पाक साफ़ रखे,⁸ और यह कि तुमपर अपना इनाम पूरा फ़रमाए ताकि तुम शुक्र अदा करो। (6) और

(पृष्ठ 192 का शेष)

5. यानी “दम घुटने” से, “जिसको दरिन्दा खाने लगे” तक जिनका ज़िक्र है उनमें से जिनको दम निकलने से पहले शरई कायदे के मुताबिक ज़िह्न कर डालो वे इस हराम होने के हुक्म से अलग हैं।

6. अगरचे ज़बान से अल्लाह के ग़ैर के लिए नामज़द न करे, क्योंकि हराम होने का दारोमदार बुरी नीयत पर है, इसका ज़ाहिर होना कभी कौल से होता है कि नामज़द करे और कभी फ़ैल से होता है कि ऐसे मक़ामात पर ज़िह्न कराए।

7. आजके दिन से मुराद खास दिन नहीं, बल्कि वह ज़माना मुराद है जिसमें उससे मिला हुआ शुरू व आख़िर का ज़माना भी मुराद है, पस अगर उसके बाद भी किसी हुक्म का नाज़िल होना साबित हो तो मुकम्मल करने यानी अहक़ाम को मुकम्मल करने पर एतिराज़ लाज़िम नहीं आता।

8. क्योंकि माशा-अल्लाह इस्लाम का ख़ूब फैलाव हो गया।

9. यानी मेरे अहक़ाम की मुख़ालफ़त मत करना।

10. कुव्वत में भी जिससे कुफ़्रार को मायूसी हुई और अहक़ाम व कायदों में भी।

11. यानी कियामत तक तुम्हारा यही दिन रहेगा इसको मन्सूख़ करके दूसरा दिन तजवीज़ न किया जाएगा।

12. यानी न ज़रूरत से ज़्यादा खाए और न लज़्ज़त मक़सूद हो।

13. यह आयत जैसा कि इमाम बुख़ारी व इमाम मुस्लिम ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया, असर के वक़्त जुमा के दिन ज़िलहिज्जा की नवीं तारीख़ हिज्जतुल विदाअ में जो दस हिजरी में हुआ था, नाज़िल हुई है और इसके नाज़िल होने के करीब तीन महीने के बाद तक हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जिन्दा रहे।

1. यानी महर देना अगरचे शर्त नहीं मगर वाजिब है।

2. ये सब शरीअत के अहक़ाम हैं जिनपर ईमान लाना फ़र्ज़ है।

3. जैसे क़तई हलाल के हलाल होने और क़तई हराम के हराम होने का इनकार करेगा।

4. इसलिए हलाल समझो और हराम को हराम समझो।

5. ये चार चीज़ें फ़र्ज़ हैं, तुज़ू में बाकी चीज़ें मसनून व पसन्दीदा हैं।

(शेष तफ़सीर पृष्ठ 196 पर)

तुम लोग अल्लाह तआला के इनाम को जो तुमपर हुआ है याद करो और उसके उस अहद को भी जिसका तुमसे मुआहदा किया है, जबकि तुमने कहा था कि हमने सुना और मान लिया, और अल्लाह तआला से डरो बिना शुब्हा अल्लाह तआला दिलों तक की बातों की पूरी ख़बर रखते हैं।¹ (7) ऐ ईमान वालो! अल्लाह तआला के लिए पूरी पाबन्दी करने वाले, इन्साफ़ के साथ शहादत अदा करने वाले रहो, और किसी ख़ास कौम की दुश्मनी तुम्हारे लिए इसका सबब न हो जाए कि तुम अदल “यानी इन्साफ़” न करो। इन्साफ़ किया करो कि वह तक्वे “यानी परहेज़गारी” से ज़्यादा करीब है, और अल्लाह से डरो, बिना शुब्हा अल्लाह तआला को तुम्हारे सब आमाल की पूरी ख़बर है।² (8) अल्लाह तआला ने ऐसे लोगों से जो ईमान ले आए और उन्होंने अच्छे काम किए वायदा किया है कि उनके लिए मफ़िरत और बड़ा सवाब है। (9) और जिन लोगों ने कुफ़्र किया और हमारे अहकाम को झूठा ठहराया ऐसे लोग दोज़ख़ में रहने वाले हैं। (10) ऐ ईमान वालो! अल्लाह तआला के इनाम को याद करो जो तुमपर हुआ है, जबकि एक कौम फ़िक् में थी³ कि तुमपर हाथ डाल दें, सो अल्लाह तआला ने तुमपर उनका काबू न चलने दिया, और अल्लाह तआला से डरो,⁴ और ईमान वालों को हक़ तआला ही पर भरोसा रखना चाहिए। (11) ♦

और अल्लाह तआला ने बनी इसराईल से अहद लिया था, और हमने उनमें से बारह सरदार मुकर्रर किए, और अल्लाह तआला ने (यूँ) फ़रमाया कि मैं तुम्हारे साथ हूँ अगर तुम नमाज़ की पाबन्दी रखोगे और ज़कात अदा करते रहोगे और मेरे सब रसूलों पर ईमान लाते रहोगे और उनकी मदद करते रहोगे और अल्लाह को अच्छे तौर पर कर्ज़ देते रहोगे,⁵ तो मैं ज़रूर तुमसे तुम्हारे गुनाह दूर कर दूँगा और ज़रूर तुमको ऐसे बाग़ों में दाख़िल करूँगा जिनके नीचे नहरें जारी होंगी। और जो शख्स इसके बाद भी कुफ़्र करेगा तो बेशक वह सही रास्ते से दूर जा पड़ा।⁶ (12) तो

(पृष्ठ 194 का शेष)

6. ऊपर पाकी के अहकाम ज़िक्र किए गए हैं जिनमें बन्दों की रियायत, सहूलत और मस्तहत का लिहाज़ है, आगे इस पाकी और रियायत पर एहसान ज़ाहिर फ़रमाते हैं और शुक्र अदा करने की तरफ़ तवज्जोह दिलाते हैं।

7. यानी यह मन्ज़ूर है कि तुमपर कोई तंगी न रहे, चुनाँचे ज़िक्र हुए अहकाम में ख़ास तौर पर और शरीअत के कुल अहकाम में आम तौर पर सहूलत व मस्तहत की रियायत ज़ाहिर है।

8. इसलिए तहारत (यानी पाकी) के कायदे और तरीके तय किए और किसी एक तरीके पर बस नहीं किया कि अगर वह न हो तो तहारत मुम्किन ही न हो।

1. इसलिए जो काम करो उसमें इज़्ज़ास व एतिकाद भी होना चाहिए, सिर्फ़ दिखावे के लिए हुक्म मानना काफ़ी नहीं।

2. ऐसी आयत पार: वल्मुहसनात के आख़िर के करीब में भी आ चुकी है। और दोनों में फ़र्क़ यह है कि बेइन्साफ़ी की वजह दो चीज़ें होती हैं, या तो एक फ़रीक़ की रियायत या किसी फ़रीक़ की दुश्मनी, वहाँ पहला सबब ज़िक्र है यहाँ दूसरा सबब। चुनाँचे वहाँ अल्फ़ाज़ “व लौ अला अन्फ़ुसिकुम् अविल् वालिदैनि वल् अक़रबी-न इय्यकुन् ग़निय्यन् औ फ़कीरन् फ़ल्लाहु औला बिहिमा” और यहाँ लफ़ज़ “श-नआनु” इसकी साफ़ दलील है, पस इस फ़र्क़ के बाद दोहराना न रहा।

3. यानी कुरैश के काफ़िर शुरू इस्लाम में जबकि मुसलमान कमजोर थे।

4. शुरू सूरत से यहाँ तक अक्सर आयतों में हक़ तआला से डरने का हुक्म फ़रमाया है, एक जगह लफ़ज़ “ख़शिय्यत” से बाकी जगह लफ़ज़ “तक्वा” से। इससे मालूम होता है कि इसको हुक्म मानने में बहुत दख़ल है, चुनाँचे ज़ाहिर भी है।

5. ख़ैर में ख़र्च करने को मजाज़न् (अवास्तविकता के तौर पर) कर्ज़ इसलिए फ़रमा दिया कि जिस तरह कर्ज़ का अदा करना लाज़िम होता है उसी तरह अल्लाह तआला इसका बदला ज़रूर देगे।

6. यहाँ उस शख्स का हाल बयान नहीं फ़रमाया जो कुफ़्र न करे लेकिन आमाल की पूरी पाबन्दी भी न करे, और कुरआन मजीद में अक्सर जगह यही आदत है कि इलाअत में जो कामिल हो और मुख़ालफ़त में जो कामिल हो ज़्यादा ज़िक्र उन्हीं का होता है, वजह यह है कि दोनों तरफ़ वालों के हाल से बीच का हाल अक्लमन्द को खुद अन्दाज़े और क़यास से मालूम हो जाता है, कि उनकी ऐसी जज़ा होगी, ऐसी सज़ा होगी, फिर हदीसों में तफ़सील मालूम हो गई।

सिर्फ उनके अहद तोड़ने की वजह से हमने उनको अपनी रहमत से दूर कर दिया, और हमने उनके दिलों को कठोर कर दिया। वे लोग कलाम को उसके मौकों से बदलते हैं,¹ और वे लोग जो कुछ उनको नसीहत की गई थी उसमें से एक बड़ा हिस्सा जाया कर बैठे, और आपको आए दिन किसी न किसी (नई) ख़ियानत की इत्तिला होती रहती है² जो उनसे सादिर होती है सिवाय उनमें के गिनेचुने चन्द शख्सों के, सो आप उनको माफ़ कीजिए और उनसे दरगुज़र कीजिए, बिला शुब्हा अल्लाह तआला अच्छा मामला करने वाले लोगों से मुहब्बत करता है।³ (13) और जो लोग कहते हैं कि हम ईसाई हैं, हमने उनसे भी उनका अहद लिया था, सो वे भी जो कुछ उनको नसीहत की गई उसमें से अपना एक बड़ा हिस्सा जाया कर बैठे, तो हमने उनमें आपस में कियामत तक के लिए बुग़ज़ और दुश्मनी डाल दी, और उनको अल्लाह तआला उनका किया हुआ जतला देंगे।⁴ (14) ऐ किताब वालो! तुम्हारे पास हमारे (ये) रसूल आए हैं, किताब में से जिन उमूर को तुम छुपाते हो उनमें से बहुत-सी बातों को तुम्हारे सामने साफ-साफ़ खोल देते हैं और बहुत-से उमूर को दरगुज़र कर देते हैं। तुम्हारे पास अल्लाह की तरफ़ से एक रोशन चीज़ आई है और एक स्पष्ट किताब (15) कि उसके ज़रिए से अल्लाह तआला ऐसे शख्सों को जो हक़ की रिज़ा के तालिब हों सलामती की राहें बतलाते हैं, और उनको अपनी तौफ़ीक़ से अन्धेरियों से निफाल कर नूर की तरफ़ ले आते हैं,⁵ और उनको सही रास्ते पर कायम रखते हैं।⁶ (16) बिला शुब्हा वे लोग काफ़िर हैं जो (यूँ) कहते हैं कि अल्लाह तआला ऐन मसीह इब्ने मरियम है। आप (यूँ) पूछिए (कि अगर ऐसा है तो यह बतलाओ) कि अगर अल्लाह तआला हज़रत मसीह इब्ने मरियम को और उनकी माँ को और जितने ज़मीन में हैं उन सबको हलाक करना चाहें तो कोई शख्स ऐसा है जो खुदा तआला से उनको ज़रा भी बचा सके, और अल्लाह तआला ही के लिए ख़ास है हुक्मत आसमानों पर और ज़मीन पर, और जितनी चीज़ें इन दोनों के दरमियान हैं उनपर, और वह जिस चीज़ को चाहें पैदा कर दें, और अल्लाह तआला को हर चीज़ पर पूरी कुदरत है।⁷ (17) और यहूद व नसारा “यानी ईसाई” दावा

1. यानी लफ़्ज़ी रद्दोबदल या मायनों में रद्दोबदल करते हैं।

2. नई ख़ियानत यह कि एक बार जैसे रज़ूम (यानी अगर ज़िना करने वाला शादीशुदा हो तो पत्थरों से हलाक करने) के हुक्म को छुपा लिया। एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दरियाफ़्त फ़रमाने पर तौरात का एक मज़मून ग़लत बयान कर दिया, जिसपर आयत “ला तस्स-बन्नल्लजी-न यफ़रहु-न” नाज़िल हुई थी, और जैसे हलाल चीज़ों के हराम करने के कदीमी होने का एक बार ग़लत दावा किया था जिसपर शुरू पार: लन्-तनालू में आयत “कुलू फ़अतू बिताौराति” नाज़िल हुई और वे सब ग़लत बयानियाँ जिनकी तफ़सील मय उनके बातिल होने के कुरआन मजीद में जगह-जगह मज़कूर है, इसमें दाख़िल हैं, जैसे “लन् तमस्स-नन्नारु” और “लैय्यदख़ुलल जन्न-त इल्ला मन् क़-न हूदन् औ नसारा” और “नस्तु अब्नाउल्लाहि व अहिब्बाउहु” और इसी तरह दूसरी ग़लत बयानियाँ।

3. ऊपर यहूद का हाल था आगे कुछ ईसाइयों का हाल बयान फ़रमाते हैं।

4. ऊपर यहूद व ईसाइयों का अलग-अलग ज़िक्र था, आगे दोनों को जमा करके नसीहत का ख़िताब फ़रमाते हैं।

5. कुरआन के ज़रिये से सलामती की राहें बतलाना आम है लेकिन यहाँ रिज़ा-ए-हक़ के तालिबों को इसलिए ख़ास किया गया कि इससे फ़ायदा वही लोग उठाते हैं।

6. ऊपर आयत “व मिनल्लजी-न कालू इन्ना नसारा” में ईसाइयों के अहद तोड़ने का मुख़्तसर तौर पर बयान था, आगे उनके बाज़ अक्रायद को तय किया गया है कि वह तौहीद में खलल डालना है।

7. ऊपर यहूद और ईसाइयों के बाज़-बाज़ बुरे आमाल और ख़राबियाँ ज़िक्र की गई थीं आगे उनमें से एक मुश्तरक़ा और मामले और उसके बातिल होने का बयान है, यानी दोनों फ़रीक़ बावजूद कुफ़ व नाफ़रमानी के अपने अल्लाह तआला के नज़दीक़ मुक़र्रब और मक़बूल होने के दावेदार थे।

करते हैं कि हम अल्लाह के बेटे और उसके महबूब हैं,¹ आप (यह) पूछिए कि (अच्छा तो) फिर तुमको तुम्हारे गुनाहों के बदले अज़ाब क्यों देंगे, बल्कि तुम भी और सब मख्लूक ही की तरह के एक (मामूली) आदमी हो, अल्लाह तआला जिसको चाहेंगे बख्शेंगे और जिसको चाहेंगे सज़ा देंगे, और अल्लाह तआला ही की है सब हुक्मत आसमानों में भी और ज़मीन में भी और जो कुछ उनके दरमियान में है (उनमें भी)। उसी की (यानी अल्लाह ही की) तरफ़ सबको लौटकर जाना है। (18) ऐ अहले किताब! तुम्हारे पास हमारे (ये) रसूल आ पहुँचे जो कि तुमको साफ़-साफ़ बतलाते हैं, ऐसे वक़्त में कि रसूलों का सिलसिला मौकूफ़ “यानी रुका हुआ और बन्द” था,² ताकि तुम (यूँ न) कहने लगे कि हमारे पास कोई खुशख़बरी देने वाला और डराने वाला नहीं आया। सो तुम्हारे पास खुशख़बरी देने वाले और डराने वाले आ चुके हैं, और अल्लाह तआला हर चीज़ पर पूरी कुदरत रखते हैं। (19) ♦

और (वह वक़्त भी ज़िक्र के काबिल है) जब मूसा ने अपनी कौम से फरमाया कि ऐ मेरी कौम! तुम अल्लाह तआला के इनाम को जो कि तुमपर हुआ है याद करो, जबकि अल्लाह तआला ने तुममें से बहुत-से पैग़म्बर बनाए और तुमको मुल्क वाला बनाया और तुमको वे चीज़ें दीं जो दुनिया ज़हान वालों में से किसी को नहीं दीं। (20) ऐ मेरी कौम! बरकत वाले मुल्क में दाख़िल हो कि इसको अल्लाह तआला ने तुम्हारे हिस्से में लिख दिया, और पीछे वापस मत चलो कि फिर बिलकुल ख़सारे में पड़ जाओगे।³ (21) कहने लगे कि ऐ मूसा! वहाँ तो बड़े-बड़े ज़बरदस्त आदमी हैं, और हम तो वहाँ हरगिज़ क़दम न रखेंगे जब तक कि वे वहाँ से (न) निकल जाएँ, (हाँ) अगर वे वहाँ से (कहीं और) चले जाएँ तो हम बेशक जाने को तैयार हैं। (22) उन दो शख्सों ने जो कि डरने वालों में से थे, जिनपर अल्लाह तआला ने फ़ज़ल किया था, कहा कि तुम उनपर दरवाज़े तक तो चलो, सो जिस वक़्त तुम दरवाज़े में क़दम रखोगे उसी वक़्त ग़ालिब आ जाओगे, और अल्लाह तआला पर नज़र रखो अगर तुम ईमान रखते हो। (23) कहने लगे कि ऐ मूसा! हम तो हरगिज़ कभी भी वहाँ क़दम न रखेंगे जब तक कि वे लोग वहाँ मौजूद हैं, तो आप और

1. मतलब यह मालूम होता है कि हमको इस वजह से कि नबियों की औलाद व नस्ल से हैं दूसरे लोगों की बनिस्बत अगरचे वे हमारे मज़हब के क्यों न हों, अल्लाह तआला के साथ यह खुसूसियत है कि हमसे बावजूद नाफ़रमानियों के भी औरों के बराबर नाख़ुश नहीं होते, जैसे बाप के साथ औलाद को यह खुसूसियत होती है कि अगर वह नाफ़रमानी भी करे तब भी उसके दिल पर वह असर नहीं होता जो किसी ग़ैर-आदमी के उसी की नाफ़रमानी करने से होता है, अल्लाह तआला इसका रद्द फ़रमाते हैं।

2. ईसा अलैहिस्सलाम और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दरमियान जो ज़माना है वह ज़माना “फ़ितरत” का कहलाता है। इमाम बुख़ारी रहमतुल्लाहि अलैहि ने हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है कि यह ज़माना छह सौ साल का है, और इस दरमियान में कोई नबी नहीं भेजे गए।

3. दुनिया में भी मुल्क के विस्तार से महरूम रहोगे और आख़िरत में भी कि जिहाद के फ़रीजे को छोड़ने से गुनाहगार होगे।

आपके अल्लाह मियाँ चले जाइए और दोनों लड़-भिड़ लीजिए, हम तो यहाँ से सरकते नहीं। (24) (मूसा) दुआ करने लगे कि ऐ मेरे परवर्दिगार! मैं अपनी जान और अपने भाई पर अलबत्ता इख्तियार रखता हूँ। सो आप हम दोनों के और इस नाफरमान कौम के दरमियान फैसला फरमा दीजिए। (25) इरशाद हुआ कि यह (मुल्क) तो उनके हाथ चालीस साल तक न लगेगा, यूँ ही ज़मीन में सर मारते फिरते रहेंगे। सो आप इस बेहुकम कौम पर ग़म न कीजिए। (26) ♦

और आप इन अहले किताब को आदम के दो बेटों का किस्सा सही तौर पर पढ़कर सुनाइए, जबकि दोनों ने एक-एक नियाज़ पेश की और उनमें से एक की तो मकबूल हो गई और दूसरे की मकबूल न हुई। (वह दूसरा) कहने लगा कि मैं तुझको ज़रूर क़त्ल करूँगा, (उस एक ने) जवाब दिया कि खुदा तआला मुत्तकियों का ही अमल कबूल करते हैं। ● (27) अगर तू मुझपर मेरे क़त्ल करने के लिए दस्त-दराज़ी करेगा जब भी मैं तुझपर तेरे क़त्ल करने के लिए हरगिज़ दस्त-दराज़ी करने वाला नहीं, मैं तो खुदा परवर्दिगारे आलम से डरता हूँ। (28) मैं (यूँ) चाहता हूँ कि तू मेरे गुनाह और अपने गुनाह सब अपने सर रख ले, फिर तू दोज़खियों में शामिल हो जाए, और यही सज़ा होती है जुल्म करने वालों की। (29) सो उसके जी ने उसको अपने भाई के क़त्ल पर आमादा कर दिया, फिर उसको क़त्ल ही कर डाला जिससे बड़े नुकसान उठाने वालों में शामिल हो गया। (30) फिर अल्लाह तआला ने एक कौआ भेजा कि वह ज़मीन को खोदता था ताकि उसको तालीम कर दे कि अपने भाई की लाश को किस तरीके से छुपाए। कहने लगा कि अफ़सोस मेरी हालत पर! क्या मैं इससे भी गया गुज़रा कि इस कौए ही के बराबर होता और अपने भाई की लाश को छुपा देता, सो बड़ा शर्मिन्दा हुआ। (31) इसी वजह से हमने बनी इसराईल पर यह लिख दिया कि जो शख्स किसी शख्स को बिना मुआवज़ा दूसरे शख्स के या बिना किसी फ़साद के (जो ज़मीन में उससे

1. चुनौचे चालीस साल तक ज़मीन के एक महदूद हिस्से में हैरान व परेशान फिरा किए, यहाँ तक कि सब वहाँ ही ख़त्म हो चुके। इस मुद्दत में उनके जो औलाद पैदा हुई उनको रिहाई हासिल हुई। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम और उनसे ज़रा मुद्दत पहले हज़रत हारून अलैहिस्सलाम भी उस वादी में जिसे वादी-ए-तीह कहते हैं इन्तिकाल फ़रमा गए और हज़रत यूशा अलैहिस्सलाम जिनका ज़िक्र ऊपर आ चुका है पैग़म्बर हुए और उनकी मारफ़त इस नई नस्ल बनी इसराईल को उस मुल्क की फ़तह का हुक्म हुआ, चुनौचे सबने उनके साथ होकर जिहाद किया और फ़तह हुई।

2. ऊपर अहले किताब की बहुत-सी बुराइयों में से उनका यह कौल नक़ल फ़रमाया था कि “नस्तु अब्नाउल्लाहि व अहिब्बाउहु” जिसका मन्शा अम्बिया अलैहिस्सलाम की औलाद में होने पर फ़ख़्र था, हक़ तआला इस घमण्ड के तोड़ने के लिए आगे हाबील व काबील का किस्सा बयान फ़रमाते हैं कि आदम अलैहिस्सलाम के हकीकी बेटे होने में इन मुद्दइयों से बढ़कर दोनों भाई बराबर थे, मगर उनमें भी मकबूल वही हुआ जो हुक्म का फ़रमाँबरदार रहा, यानी हाबील, और दूसरे ने नाफ़रमानी की तो वह मरदूद हो गया और आदम का बेटा होना कुछ काम न आया।

3. आयत के आख़िर में जो उसका शर्मिन्दा होना ज़िक्र किया गया है, यह शर्मिन्दा होना मुफ़स्सरीन के कौल के मुताबिक़ क़त्ल पर नहीं, ताकि तौबा का शुब्हा हो, बल्कि क़त्ल करने पर जो परेशानियाँ पेश आईं उनपर है, जैसे लाश के दफ़न में हैरान होना और कौए की तालीम का मोहताज़ होना और बद-हवास हो जाना, या बाज़ मुफ़स्सरीन ने लिखा है कि बदन का काला हो जाना और आदम अलैहिस्सलाम का नाराज़ हो जाना।

फैला हो) कत्ल कर डाले तो गोया उसने तमाम आदमियों को कत्ल कर डाला। और जो शख्स किसी शख्स को बचा ले तो गोया उसने तमाम आदमियों को बचा लिया, और उनके (यानी बनी इसराईल के) पास हमारे बहुत-से पैगम्बर भी खुले दलाइल लेकर आए, फिर उसके बाद भी उनमें से बहुत-से दुनिया में ज्यादाती करने वाले ही रहे।¹ (32) जो लोग अल्लाह और उसके रसूल से लड़ते हैं² और मुल्क में फसाद फैलाते फिरते हैं,³ उनकी यही सज़ा है कि कत्ल किए जाएँ या सूली दिए जाएँ या उनके हाथ और पाँव मुख़ालिफ़ जानिब से काट दिए जाएँ या ज़मीन पर से निकाल दिए जाएँ। यह उनके लिए दुनिया में सख़्त रुस्वाई है और उनको आख़िरत में बड़ा अज़ाब होगा। (33) हाँ मगर जो लोग इससे पहले कि तुम उनको गिरफ़्तार करो तौबा कर लें तो जान लो कि बेशक अल्लाह तआला बख़्श देंगे, मेहरबानी फ़रमा देंगे।⁴ (34) ♦

ऐ ईमान वालो! अल्लाह तआला से डरो और अल्लाह तआला का कुर्ब “यानी निकटता” ढूँढो और अल्लाह तआला की राह में जिहाद किया करो, उम्मीद है कि तुम कामयाब हो जाओगे।⁵ (35) यकीनन जो लोग काफ़िर हैं अगर उनके पास तमाम दुनिया भर की चीज़ें हों और उन चीज़ों के साथ इतनी चीज़ें और भी हों ताकि वे उसको देकर क़ियामत के दिन के अज़ाब से छूट जाएँ तब भी वे चीज़ें उनसे कबूल न की जाएँगी और उनको दर्दनाक अज़ाब होगा। (36) (इस बात की) ख़्वाहिश करेंगे कि दोज़ख़ से निकल आएँ और वे उससे (कभी) न निकलेंगे और उनको हमेशा का अज़ाब होगा। (37) और जो मर्द चोरी करे और जो औरत चोरी करे, सो उन दोनों के (दाहिने) हाथ (गट्टे पर से) काट डालो उनके किरदार के बदले में बतौर सज़ा के, अल्लाह तआला की तरफ़ से, और अल्लाह तआला बड़े कुव्वत वाले हैं (जो सज़ा चाहें मुक़र्रर फ़रमाएँ) बड़ी हिक्मत वाले हैं (कि मुनासिब ही सज़ा मुक़र्रर फ़रमाते हैं)।⁶ (38) फिर जो शख्स अपनी (इस) ज्यादाती के बाद तौबा करे और (आमाल की) दुरुस्ती रखे तो

1. बहुत-से इसलिए फ़रमाया कि बाज़े इताअत करने वाले और फ़रमाँबरदार भी थे।

2. ऊपर नाहक कत्ल की जो बिला मुआवज़ा किसी शख्स के कत्ल या ज़मीन में फसाद के हो, बुराई व क़बाहत बयान फ़रमाई थी, आगे कत्ल और उसके तहत आने वाले जैसे हाथ-पैर काटना और सज़ा का जारी करना जो कि हक़ के साथ हो, यानी ज़मीन में फसाद फैलाने और कत्ल के बदले में कत्ल करने के सबब से हो, इसका जायज़ और शरीअत में पसन्दीदा होना बयान फ़रमाते हैं, इसलिए पहले राहगीरों से लूटपाट करने वालों का हुक्म फिर चोर का हुक्म मज़कूर होता है, और उसके दरमियान और मज़मून ख़ास मुनासबत की वजह से लाया गया है।

3. मुराद इससे रहज़नी और डकैती है।

4. मतलब यह है कि ऊपर जो सज़ा मज़कूर हुई है वह अल्लाह के हक़ और सज़ा के तौर पर है, जो कि बन्दे के माफ़ करने से माफ़ नहीं होती, किसास व बन्दे के हक़ के तौर पर नहीं जो कि बन्दे के माफ़ करने से माफ़ हो जाता है, पस जब गिरफ़्तारी से पहले उन लोगों का तौबा करने वाला होना सबित हो जाए तो सज़ा ख़त्म हो जाएगी जो कि अल्लाह का हक़ था, अलबत्ता बन्दे का हक़ बाक़ी रहेगा। पस अगर माल लिया होगा तो उसका ज़िमान देना पड़ेगा और कत्ल किया होगा तो उसका किसास लिया जाएगा। लेकिन इस ज़िमान व किसास के माफ़ करने का हक़ माल वाले और मक्तूल के वली को हासिल होगा।

5. वह कामयाबी अल्लाह की रज़ामन्दी का हासिल होना और दोज़ख़ से नजात है।

6. माल की कम से कम मिक्दार जिसमें हाथ काटा जाता है दस दिरम है।

बेशक अल्लाह उसपर तवज्जोह फरमाएँगे, बेशक अल्लाह तआला बड़ी मग़्फ़िरत वाले हैं, बड़ी रहमत वाले हैं। (39) क्या तुम नहीं जानते कि अल्लाह ही के लिए (साबित) है हुक्म त सब आसमानों की और ज़मीन की, वह जिसको चाहें सज़ा दें और जिसको चाहें माफ़ कर दें, और अल्लाह तआला को हर चीज़ पर पूरी कुदरत है।¹ (40) ऐ रसूल! जो लोग कुफ़्र में दौड़-दौड़ गिरते हैं² आपको ग़मगीन न करें, (चाहे वे) उन लोगों में (हों) जो अपने मुँह से तो कहते हैं कि हम ईमान ले आए और उनके दिल यकीन नहीं लाए,³ और (चाहे) उन लोगों में से हों जो यहूदी हैं। ये लोग ग़लत बातों के सुनने के आदी हैं, (आपकी बातों) दूसरी कौम की खातिर कान धर-धर सुनते हैं। (जिस कौम के ये हालात हैं) कि आपके पास नहीं आए, कलाम को बाद इसके कि वह अपने मौके पर होता है बदलते रहते हैं। कहते हैं कि अगर तुमको यह (हुक्म) मिले तब तो इसको कबूल कर लेना और अगर तुमको यह हुक्म न मिले तो एहतिyात रखना। और जिसका ख़राब होना खुदा तआला ही को मन्ज़ूर हो⁴ तो उसके लिए अल्लाह से तेरा कुछ ज़ोर नहीं चल सकता। ये लोग ऐसे हैं कि अल्लाह को उनके दिलों का पाक करना मन्ज़ूर नहीं हुआ,⁵ उन लोगों के लिए दुनिया में रुस्वाई है और आख़िरत में उनके लिए बड़ी सज़ा है। (41) ये लोग ग़लत बातों के सुनने के आदी हैं, बड़े हराम खाने वाले हैं, तो अगर ये लोग आपके पास आएँ तो (आप मुख़्तार हैं) चाहे आप उनमें फैसला कर दीजिए या उनको टाल दीजिए, और अगर आप उनको टाल दें तो उनकी मजाल नहीं कि वे आपको ज़रा भी नुक़सान पहुँचा सकें, और अगर आप फैसला करें तो उनमें इन्साफ़ के मुवाफ़िक़ फैसला कीजिए,⁶ बेशक अल्लाह इन्साफ़ करने वालों से मुहब्बत करते हैं।⁷ (42) और वे आपसे कैसे फैसला कराते हैं हालाँकि उनके पास तौरात है जिसमें अल्लाह का हुक्म है, फिर उसके बाद हट जाते हैं, और ये लोग हरगिज़ एतिकाद वाले नहीं। (43) ♦

1. सूर: के तीसरे रुकूअ से अहले किताब का ज़िक्र चला आ रहा था, दरमियान में थोड़े से और बाज़ मज़ामीन ख़ास-ख़ास मुनासबत से आ गए थे। अब आगे फिर उसी अहले किताब के ज़िक्र की तरफ़ लौटते हैं, जिनमें यहूद और उन यहूद में जो मुनाफ़िक़ थे, और ईसाई सब दाख़िल हैं, अहले किताब के इन्हीं तीनों फ़िर्क़ों का ज़िक्र मिले-जुले अन्दाज़ में यहाँ से दूर तक यानी पार: के ख़त्म तक चला गया है, फिर सूर: के ख़त्म के करीब ख़ास ईसाइयों के मुताल्लिक़ कुछ बयान आएगा।
2. यानी बेतक़ल्लुफ़ रग़बत से उन बातों को करते हैं।
3. मुराद मुनाफ़िक़ लोग हैं जो कि एक वाकिफ़ में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए थे।
4. यह पैदाइशी मन्ज़ूरी उस गुमराह के गुमराही का इरादा करने के बाद होती है।
5. क्योंकि यह इरादा ही नहीं करते इसलिए अल्लाह तआला पैदाइशी पाक करने का अमल नहीं फ़रमाते बल्कि उनके गुमराही के इरादे की वजह से पैदाइशी तौर पर उनका ख़राब ही होना मन्ज़ूर है। पस ज़िक्र हुए कायदे के मुवाफ़िक़ कोई शख्स उनको हिदायत नहीं कर सकता। मतलब यह है कि जब ये खुद ख़राब रहने का पुख़्ता इरादा रखते हैं और इरादे के बाद उस फ़ैल की पैदाइश और वजूद में लाना अल्लाह की आदत है और अल्लाह को किसी चीज़ को वजूद में लाने से कोई रोक नहीं सकता। फिर उनके राह पर आने की क्या उम्मीद की जाए, इससे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ज़्यादा तसल्ली हो सकती है, जिससे कलाम शुरू भी हुआ था। पस कलाम की शुरूआत व आख़िर तसल्ली के मज़मून से हुआ। आगे उन आमाल का समरा (नतीजा और फल) बयान फ़रमाते हैं।
6. यानी इस्लामी क़ानून के मुवाफ़िक़।
7. और वह इन्साफ़ अब इस्लामी क़ानून में मुन्हसिर (यानी सीमित और महदूद) हो गया है, पस वही लोग महबूब होंगे जो इस क़ानून के मुवाफ़िक़ फैसला करेंगे।

हमने तौरात नाज़िल फरमाई थी जिसमें हिदायत थी और वज़ाहत थी, अम्बिया जो कि अल्लाह तआला के फरमाँबरदार थे उसके मुवाफिक़ यहूद को हुक्म दिया करते थे, और अल्लाह वाले और उलमा भी इस वजह से कि उनको उस अल्लाह की किताब की हिफाज़त का हुक्म दिया गया था और वे उसके इक़रारी हो गए थे, सो तुम भी लोगों से अन्देशा मत करो और मुझसे डरो और मेरे अहकाम के बदले में मता-ए-कलील “यानी मामूली फायदा” मत लो, और जो शख्स अल्लाह के नाज़िल किए हुए के मुवाफिक़ हुक्म न करे सो ऐसे लोग बिलकुल काफ़िर हैं। (44) और हमने उनपर उसमें यह बात फ़र्ज़ की थी कि जान बदले जान के, और आँख बदले आँख के, और नाक बदले नाक के, और कान बदले कान के, और दाँत बदले दाँत के, और खास ज़ख्मों का भी बदला है, फिर जो शख्स उसको माफ़ कर दे तो वह उसके लिए कफ़ारा हो जाएगा,¹ और जो शख्स खुदा के नाज़िल किए हुए के मुवाफिक़ हुक्म न करे, तो ऐसे लोग बिलकुल सितम कर रहे हैं।² (45) और हमने उनके पीछे ईसा इब्ने मरियम (अलैहिमस्सलाम) को इस हालत में भेजा कि वे अपने से पहले की किताब यानी तौरात की तस्दीक़ फरमाते थे, और हमने उनको इन्जील दी जिसमें हिदायत थी और वज़ाहत थी और अपने से पहले की किताब यानी तौरात की तस्दीक़ करती थी, और वह (सरासर) हिदायत और नसीहत थी (खुदा से) डरने वालों के लिए। (46) और इन्जील वालों को चाहिए कि अल्लाह तआला ने जो कुछ उसमें नाज़िल फरमाया है उसके मुवाफिक़ हुक्म किया करें, और जो शख्स खुदा तआला के नाज़िल किए हुए के मुवाफिक़ हुक्म न करे तो ऐसे लोग बिलकुल बेहुक्मी करने वाले हैं।³ (47) और हमने (यह) किताब⁴ आपके पास भेजी है जो (खुद भी) सच्चाई के साथ मौसूफ़ है और इससे पहले जो किताबें हैं उनकी तस्दीक़ करती है, और उन (किताबों) की मुहाफ़िज़ है, तो उनके आपसी मामलात में इस भेजी हुई (किताब) के मुवाफिक़ फैसला फरमाया कीजिए, और यह जो सच्ची किताब आपको मिली है इससे दूर होकर उनकी ख्वाहिशों पर अमल दरामद न कीजिए, तुममें से हर एक के लिए हमने (खास) शरीअत और (खास) तरीका तजवीज़ किया था। और अगर अल्लाह तआला को मन्ज़ूर होता तो तुम सबको एक ही उम्मत कर देते, लेकिन (ऐसा नहीं किया) ताकि जो दीन तुमको दिया है उसमें तुम सबका इम्तिहान फरमाएँ, तो मुफीद बातों की तरफ़ दौड़ो,⁵ तुम सबको खुदा ही के पास जाना है, फिर वह तुम सबको जतला देगा, जिसमें तुम इख़िलाफ़ किया करते थे। (48) और (हम एक

1. यानी माफ़ करना सवाब का सबब है।

2. मसाइल: मसला नम्बर 9. किंसास उस क़त्ल या जुर्म में है जो नाहक़ और जान-भूझकर हो, इसलिए कि हक़ पर क़त्ल करना दुरुस्त है, और गुलती से किए गए क़त्ल में दियत (यानी खून-बहा) है। मसला नम्बर 2. जान के बदले जान में आज़ाद व गुलाम, मुसलमान व काफ़िर, ज़िम्मी, मर्द व औरत, बड़ा व छोटा, शरीफ़ व रज़ील, बादशाह और रइय्यत सब दाख़िल हैं, अलबत्ता खुद अपने ममलूक गुलाम और अपनी औलाद के किंसास में न मारा जाना इज़्मा व हदीस से साबित है।

3. ऊपर तौरात व इन्जील का अपने-अपने दौर में वाजिबुल-अमल होना (जिसपर अमल करना वाजिब हो) बयान फरमाया है। आगे कुरआन मजीद का अपने दौर में जो कि इसके नाज़िल होने के ज़माने से कियामत आने तक है, वाजिबुल-अमल होना बयान फरमाते हैं।

4. यानी कुरआन मजीद।

5. यानी उन अक़ीदों, आमाल और अहक़ाम की तरफ़ दौड़ो जिनपर कुरआन मुश्तमिल है, यानी कुरआन पर ईमान लाकर इसपर चलो।

बार फिर हुक्म देते हैं कि) आप उनके आपसी मामलात में इस भेजी हुई (किताब) के मुवाफिक फैसला फरमाया कीजिए और उनकी ख्वाहिशों पर अमल दरामद न कीजिए और उनसे (यानी उनकी इस बात से) एहतियात रखिए कि वे आपको खुदा तआला के भेजे हुए किसी हुक्म से भी बिचला दें, फिर अगर ये लोग मुँह मोड़ें तो (यह) यकीन कर लीजिए कि बस खुदा ही को मन्ज़ूर है कि उनके बाज़े जुर्मों पर उनको सज़ा दें, और ज़्यादा आदमी तो बेहुक्म ही (होते) हैं। (49) क्या ये लोग ज़माना-ए-जाहिलियत का फैसला चाहते हैं, और फैसला करने में अल्लाह से अच्छा कौन होगा यकीन रखने वालों के नज़दीक। (50) ♦

ऐ ईमान वालो! तुम यहूद और ईसाइयों को दोस्त मत बनाना। वे एक दूसरे के दोस्त हैं।^१ और जो शख्स तुममें से उनके साथ दोस्ती करेगा बेशक वह उन्हीं में से होगा। बेशक अल्लाह तआला समझ नहीं देते उन लोगों को जो अपना नुकसान कर रहे हैं। (51) (इसी लिए) तुम ऐसे लोगों को जिनके दिल में मर्ज़ है देखते हो कि दौड़-दौड़कर उनमें घुसते हैं, कहते हैं कि हमको अन्देशा है कि हमपर कोई हादसा पड़ जाए, सो करीब ही उम्मीद है कि अल्लाह तआला कामिल फ़तह को जाहिर फरमा दे या किसी और बात को ख़ास अपनी तरफ से,^३ फिर अपने छुपे हुए दिली ख़्यालात पर शर्मिन्दा होंगे।^४ (52) और मुसलमान लोग कहेंगे: (अरे) क्या ये वही लोग हैं कि बड़े मुबालगे से “यानी बढ़-बढ़कर” अल्लाह तआला की कस्में खाया करते थे कि हम तुम्हारे साथ हैं, इन लोगों की सारी कार्यवाहियाँ ग़ारत गईं, जिससे नाकाम रहे।^५ ▲ (53) ऐ ईमान वालो! जो शख्स तुममें से अपने दीन से फिर जाए तो अल्लाह बहुत जल्दी ऐसी कौम पैदा कर देगा जिससे उसको (यानी अल्लाह तआला को) मुहब्बत होगी और उनको उससे (यानी अल्लाह तआला से) मुहब्बत होगी। वे मुसलमानों पर मेहरबान होंगे और काफ़िरों पर तेज़ होंगे, जिहाद करते होंगे अल्लाह की राह में, और वे लोग किसी मलामत करने वाले की मलामत का अन्देशा न करेंगे।^६ यह अल्लाह तआला का फ़ज़ल है जिसको चाहें अज़ा फरमाएँ, और अल्लाह तआला बड़ी वुसूअत वाले हैं, बड़े इल्म वाले हैं। (54) तुम्हारे

1. ऊपर यहूद व ईसाइयों की बद-आमाली और बुराइयाँ मज़कूर हुई हैं और बाज़ मुनाफ़िक लोग जो कि जाहिर में इस्लाम के दावेदार थे, उनसे बाज़ वहमी मस्लहतों की बिना पर दोस्ती रखते थे, इसलिए आगे इसी मज़मून की मुनासबत से ईमान वालों को उनके साथ दोस्ती करने से मना फरमाते हैं कि जब उन लोगों के ये हालात हैं तो उनका तकाज़ा तो यही है कि उनसे मुनाफ़िकों की तरह हरगिज़ दोस्ती मत करो, ईमान वालों को मना करने के बाद उन मुनाफ़िकों की निन्दा और उन मस्लहतों का बातिल होना और अन्जामकार उनका नदामत यानी शर्मिन्दगी उठाना बतौर पेशीनगोई (यानी भविष्यवाणी) के मज़कूर है।

2. मतलब यह है कि दोस्ती होती है ताल्लुक से, सो उनमें आपस में तो ताल्लुक है मगर तुममें और उनमें क्या मुनासबत और ताल्लुक?

3. मतलब यह है कि मुसलमानों की फ़तह और मुनाफ़िकों की छुपी हालत जाहिर होना दोनों बातें जल्द ही होने वाली हैं।

4. एक शर्मिन्दगी तो अपने ख़्याल की ग़लती पर कि फ़ित्री बात है, दूसरी शर्मिन्दगी अपने निफ़ाक़ पर जिसकी बदौलत आज रुस्वा हुए, ‘मा असर्स’ में ये दोनों दाख़िल हैं, और तीसरी शर्मिन्दगी कुफ़्फ़ार के साथ दोस्ती करने पर कि बेकार ही गई और मुसलमानों से भी बुरे बने चूँकि यह दोस्ती ‘मा असर्स’ पर मुन्हसिर थी, इसलिए इन दो नदामतों के ज़िक्र से यह तीसरी साफ़ तौर पर ज़िक्र किए बिना ही खुद समझ में आ गई।

5. चुनाँचे यह पेशीनगोई सच्ची हुई, उन मुनाफ़िकों की ज़्यादा दोस्ती मदीने के यहूद और मक्का के मुशिरकीन से थी, मक्का फ़तह हो गया और यहूद तबाह व बर्बाद हुए जिसका ज़िक्र कई बार आ चुका है।

6. चुनाँचे बाज़े लोग इस्लाम से फिर गए थे लेकिन खुदा तआला ने अपनी इस पेशीनगोई के मुवाफ़िक मुख़्लिस मोमिनो के हाथों हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु के ज़माने में उनका ख़ात्मा फरमा दिया, बाज़ ने तौबा कर ली थी। बहर हाल इस्लाम को कोई कमज़ोरी या नुक़सान नहीं पहुँचा।

दोस्त तो अल्लाह और उसके रसूल और ईमान वाले लोग हैं जो कि इस हालत से नमाज़ की पाबन्दी रखते हैं और ज़कात देते हैं कि उनमें खुशूअ "यानी अज़िज़ी और गिड़गिड़ाना" होता है।¹ (55) और जो शख्स अल्लाह से दोस्ती रखेगा और उसके रसूल से और ईमान वाले लोगों से, सो अल्लाह का गिरोह बिला शक़ ग़ालिब है। (56) ♦

ऐ ईमान वालो! जिन लोगों को तुमसे पहले किताब मिल चुकी है, जो ऐसे हैं कि जिन्होंने तुम्हारे दीन को हँसी और खेल बना रखा है, उनको और दूसरे कुफ़्फ़ार को दोस्त मत बनाओ, और अल्लाह तआला से डरो अगर तुम ईमान वाले हो। (57) और जब तुम नमाज़ के लिए ऐलान करते हो तो वे लोग उसके साथ हँसी और खेल करते हैं, यह इस सबब से है कि वे लोग ऐसे हैं कि बिल्कुल अक्ल नहीं रखते।² (58) आप कहिए कि ऐ अहले किताब! तुम हममें कौन-सी बात ऐबदार और बुरी पाते हो, सिवाय इसके कि हम ईमान लाए हैं अल्लाह पर और उसपर जो हमारे पास भेजी गई है और उसपर जो पहले भेजी जा चुकी है बावजूद इसके कि तुममें अक्सर लोग ईमान से ख़ारिज हैं।³ (59) आप कहिए कि क्या मैं तुमको ऐसा तरीका बतलाऊँ जो इससे भी खुदा के यहाँ पादाश "यानी नतीजा और बदला" मिलने में ज़्यादा बुरा हो। वह उन शख्सों का तरीका है जिनको अल्लाह तआला ने दूर कर दिया हो और उनपर ग़ज़ब फ़रमाया हो और उनको बन्दर और सुअर बना दिया हो, और उन्होंने शैतान की परस्तिश की हो, ऐसे लोग मक़ाम के एतिबार से भी बहुत बुरे हैं और सही रास्ते से भी बहुत दूर हैं।⁴ (60) और जब ये लोग तुम लोगों के पास आते हैं तो कहते हैं कि हम ईमान ले आए, हालाँकि वे कुफ़ को ही लेकर आए थे और कुफ़ को ही लेकर चले गए, और अल्लाह तआला तो ख़ूब जानते हैं जिसको ये छुपाते हैं। (61) और आप उनमें बहुत आदमी ऐसे देखते हैं जो दौड़-दौड़कर गुनाह और जुल्म और हराम खाने पर गिरते हैं, वाकई उनके ये काम (बहुत) बुरे हैं। (62) उनको नेक लोग और उलमा गुनाह की बात कहने से और हराम माल खाने से क्यों नहीं

1. यानी अक़ायद व अज़्लाक और बदनी व माली आमाल सब के जामे हैं।
2. यह इशारा है दो किस्सों की तरफ़, एक यह कि जब अज़ान होती और मुसलमान नमाज़ शुरू करते तो यहूद कहते कि यह खड़े होते हैं, खुदा करे कभी खड़ा होना नसीब न हो। और जब उनको रुकूअ व सज्दा करते देखते तो हँसते और मज़ाक उड़ाते। दूसरा किस्सा यह है कि मदीना में एक ईसाई था, जब अज़ान सुनता "अशहदु अन्-न मुहम्मदरसूलुल्लाह" तो कहता "कद ह-रकल् काज़िब" यानी झूठा जल जाए। एक रात ऐसा इत्तिफ़ाक़ हुआ कि वह और उसके घर वाले और बाल बच्चे सब सो रहे थे। कोई खादिम घर में आग लेकर गया, एक चिंगारी गिर पड़ी। वह, उसका घर और घर वाले सब जल गए। यह तो "अल्लज़ी-न ऊतुल् किता-ब" के मिस्दाक़ थे और "अल्-कुफ़्फ़ार" के मिस्दाक़ का एक किस्सा यह हुआ था कि रिफ़ाअ बिन ज़ैद बिन ताबूत और सुवैद बिन हारिस ने दिखावे के तौर पर इस्लाम का इज़हार किया था। बाज़े मुसलमान उनसे मिलना-जुलना रखते थे। इन सब वाकिआत पर ये आयतें नाज़िल हुईं।
3. अक्सर इसलिए फ़रमाया कि कुछ न कुछ हर ज़माने में ईमान वाले रहे।
4. जिनसे दोस्ती करने की ऊपर मुमानअत फ़रमाई उनमें बाज़े मुनाफ़िक़् थे जो ऊपर भी लफ़ज़ "अल-कुफ़्फ़ार" में या लफ़ज़ के आम होने में यहूद दाख़िल होकर मज़कूर हैं, आगे उनकी एक ख़ास हालत बयान फ़रमाते हैं।

मना करते, वाकई उनकी यह आदत बुरी है। (63) और यहूद ने कहा कि अल्लाह तआला का हाथ बन्द हो गया है,¹ उन्हीं के हाथ बन्द हैं और अपने इस कहने से ये रहमत से दूर कर दिए गए। बल्कि अल्लाह तआला के तो दोनों हाथ खुले हुए हैं,² जिस तरह चाहते हैं खर्च करते हैं³ और जो (मजमून) आपके पास आपके परवर्दिगार की तरफ से भेजा जाता है वह उनमें से बहुतों की सरकशी और कुफ़ की तरक्की का सबब हो जाता है, और हमने उनमें आपस में कियामत तक दुश्मनी और बुग़ज डाल दिया। जब कभी लड़ाई की आग भड़काना चाहते हैं अल्लाह तआला उसको ख़त्म कर देते हैं, और मुल्क में फ़साद “यानी बिगाड़ और ख़राबी” करते फिरते हैं,⁴ और अल्लाह फ़साद करने वालों को महबूब नहीं रखते। (64) और अगर अहले किताब ईमान ले आते और तक्वा इख़्तियार करते तो हम ज़रूर उनकी तमाम बुराइयाँ माफ़ कर देते और ज़रूर उनको चैन के बाग़ों में दाख़िल करते। (65) और अगर ये लोग तौरात की और इन्जील की और जो (किताब) उनके परवर्दिगार की तरफ़ से उनके पास भेजी गई है उसकी पूरी पाबन्दी करते⁵ तो ये लोग अपने ऊपर से और अपने नीचे से ख़ूब फ़राग़त से खाते। उनमें एक जमाअत सही रास्ते पर चलने वाली है, और ज़्यादा उनमें ऐसे ही हैं कि उनके किरदार बहुत बुरे हैं। (66) ♦

ऐ रसूल! जो-जो कुछ आपके रब की जानिब से आप पर नाज़िल किया गया है आप सब पहुँचा दीजिए, और अगर आप ऐसा न करेंगे तो आपने अल्लाह तआला का एक पैग़ाम भी नहीं पहुँचाया,⁶ और अल्लाह तआला आपको लोगों से महफूज़ रखेगा,⁷ यकीनन अल्लाह तआला उन काफ़िर लोगों को राह न देंगे। (67) आप कहिए कि ऐ अहले

1. वजह इस गुस्ताख़ी की यह हुई थी कि पहले यहूद पर रोज़ी की फ़राग़त थी, जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ़ लाए और वे आपके साथ दुश्मनी और मुख़ालफ़त से पेश आए तो रोज़ी में तंगी हो गई। इसपर बेहूदा बातें बकने लगे, और बार-बार कहने वाले दो ही शख्स थे। लेकिन चूँकि और यहूद भी इससे रोकने वाले नहीं हुए बल्कि राज़ी रहे इसलिए औरों को भी इस बात में शरीक़ फ़रमाया गया।
2. यानी बड़े दाता और करीम हैं।
3. क्योंकि हिकमत वाले भी हैं इसलिए जिस तरह चाहते हैं खर्च करते हैं। पस यहूद पर जो तंगी हुई उसकी वजह हिकमत है कि उनके कुफ़ का वबाल उनको चखाना और दिखाना है, न यह कि बुख़ल इसकी वजह हो।
4. जैसे नौ-मुस्लिमों को बहकाना, लगाई-बुझाई करना, अ़वाम को तौरात के कमी-बेशी किए हुए मज़ामीन सुनाकर इस्लाम से रोकना।
5. यानी उनमें जिस-जिस बात पर अमल करने को लिखा है सब पर पूरा अमल करते। इसमें रिसालत की तस्दीक़ भी आ गई और इससे तब्दील किए हुए और मन्सूख़ हुए अहक़ाम निकल गए, क्योंकि उन किताबों का मजमूआ उनपर अमल करने को नहीं बतलाता बल्कि मना करता है।
6. क्योंकि इस मजमूए का पहुँचाना फ़र्ज़ है तो जैसा कुल के छुपाने से यह फ़र्ज़ छूटता है इसी तरह बाज़ के छुपाने से भी वह फ़र्ज़ छूट जाता है।
7. चुनाँचे यह वायदा इसी तरह सच्चा हुआ कि अगरचे बाज़ लड़ाई और जंगों में आप ज़ख्मी हुए और यहूद ने नामदों की तरह आपको ज़हर दिया, मगर इक़ट्टे व मुक़ाबिल होकर कोई क़त्ल व हलाक़ न कर सका। और इस पेशीनगोई का ज़ाहिर होना आपका मोजिज़ा और नुबुव्वत की दलील है। तिरमिज़ी शरीफ़ में है कि पहले हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास पहरा दिया जाता था, जब यह आयत नाज़िल हुई तो आपने फ़रमाया कि चले जाओ, अल्लाह तआला ने मेरी हिफ़ाज़त कर ली, यह भी नुबुव्वत की दलील है, क्योंकि ऐसा एतमाद वक़ के बग़ैर नहीं हो सकता।

किताब! तुम किसी भी (सही) चीज़ पर नहीं,¹ जब तक कि तौरात की और इन्जील की और जो (किताब) तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ से भेजी गई है उसकी भी पूरी पाबन्दी न करोगे। और ज़रूर जो (मज़मून) आपके पास आपके रब की तरफ से भेजा जाता है वह उनमें से बहुतों की सरकशी और कुफ़ की तरक्की का सबब बन जाता है, तो आप उन काफ़िर लोगों पर गुम न किया कीजिए।² (68) यह तहकीकी बात है कि मुसलमान और यहूदी और साबिईन का फ़िर्का और नसारा में से जो शख्स यकीन रखता हो अल्लाह तआला पर और क़ियामत के दिन पर, और कारगुज़ारी अच्छी करे,³ ऐसों पर न किसी तरह का अन्देशा है और न वे गुमगीन होंगे। (69) हमने बनी इसराईल से अहद लिया⁴ और हमने उनके पास (बहुत-से) पैग़म्बर भेजे। जब कभी उनके पास कोई पैग़म्बर वह (हुक्म) लाया जिसको उनका जी न चाहता था तो उन्होंने बाज़ों को झूठा बतलाया और बाज़ों को क़त्ल ही कर डालते थे। (70) और (यही) गुमान किया कि कुछ सज़ा न होगी, तो वे (उससे और भी) अन्धे और बहरे बन गए, फिर अल्लाह तआला ने उन पर तवज्जोह फ़रमाई, फिर भी उनमें के बहुत-से अन्धे और बहरे बने रहे, और अल्लाह तआला उनके आमाल को ख़ूब देखने वाले हैं। (71) बेशक वे लोग काफ़िर हो चुके जिन्होंने (यह) कहा कि अल्लाह तआला ऐन मरियम के बेटे मसीह हैं, हालाँकि मसीह ने खुद फ़रमाया (था) कि ऐ बनी इसराईल! तुम अल्लाह तआला की इबादत करो जो मेरा भी और तुम्हारा भी रब है।⁵ बेशक जो शख्स अल्लाह तआला के साथ शरीक करार देगा, सो उसपर अल्लाह तआला जन्नत को हराम कर देगा और उसका ठिकाना दोज़ख़ है, और (ऐसे) ज़ालिमों का कोई मददगार न होगा। (72) बिला शुब्हा वे लोग भी काफ़िर हैं जो कहते हैं कि अल्लाह तआला तीन में का एक है, हालाँकि सिवाय एक माबूद के और कोई माबूद नहीं, और अगर ये लोग अपने इन कौलों से बाज़ न आए तो जो लोग उनमें काफ़िर रहेंगे उनपर दर्दनाक अज़ाब होगा। (73) क्या फिर भी अल्लाह तआला के सामने तौबा नहीं करते और उससे माफ़ी नहीं चाहते, हालाँकि अल्लाह तआला बड़ी मग़्फ़िरत करने वाले, बड़ी रहमत

1. क्योंकि ग़ैरे-मक़बूल राह पर होना बेराह होने की तरह है।

2. ऊपर अहले किताब को इस्लाम की तरगीब थी, आगे भी एक आम क़ानून से जो कि अहले किताब और ग़ैर-अहले किताब सबको शामिल है, इसी की तरगीब है।

3. यानी शरीअत के क़ानून के मुवाफ़िक़।

4. यानी तमाम पैग़म्बरों की तस्दीक़ व फ़रमाँबरदारी का अहद।

5. इस कौल में अपने बन्दा होने की वज़ाहत और स्पष्टता है, फिर उनको माबूद कहना वही बात है कि “मुद्ई सुस्त ग़वाह चुस्त”।

फरमाने वाले हैं।¹ (74) मरियम के बेटे मसीह कुछ भी नहीं सिर्फ एक पैगम्बर हैं, जिनसे पहले (और) भी पैगम्बर गुजर चुके हैं, और उनकी वालिदा सिद्दिका (यानी एक वली बीबी) हैं, दोनों खाना खाया करते थे। देखिए तो हम उनसे कैसी (कैसी) दलीलें बयान कर रहे हैं, फिर देखिए वे उल्टे किधर जा रहे हैं।² (75) आप फरमाइए क्या खुदा के सिवा ऐसे की इबादत करते हो जो कि तुमको न कोई नुकसान पहुँचाने का इख्तियार रखता हो और न नफा पहुँचाने का, हालाँकि अल्लाह तआला सब सुनते हैं, सब जानते हैं।³ (76) आप फरमाइए कि ऐ अहले किताब! तुम अपने दीन में नाहक का गुलू मत करो “यानी हद से मत गुजरो” और उन लोगों के ख्यालात पर मत चलो जो पहले (खुद भी) गलती में पड़ चुके हैं और बहुतों को गलती में डाल चुके हैं, और वे लोग सीधे रास्ते से बहक गए (यानी दूर हो गए) थे। (77) ♦

बनी इसराईल में जो लोग काफिर थे उनपर लानत की गई थी दाऊद और ईसा इब्ने मरियम की ज़बान से,⁴ यह (लानत) इस सबब से हुई कि उन्होंने हुक्म की मुखालफत की और हद से निकल गए। (78) जो बुरा काम उन्होंने कर रखा था उससे एक-दूसरे को मना न करते थे, वाकई उनका फेल (बेशक) बुरा था। (79) आप उनमें बहुत आदमी देखेंगे कि काफिरों से दोस्ती करते हैं,⁵ जो (काम) उन्होंने आगे के लिए किया है वह बेशक बुरा है कि अल्लाह तआला उनसे नाखुश हुआ और ये लोग अज़ाब में हमेशा रहेंगे। (80) और अगर ये लोग अल्लाह तआला पर ईमान रखते और पैगम्बर पर और उस (किताब) पर जो उनके पास भेजी गई तो उन (मुशिरकीन) को कभी दोस्त न बनाते, लेकिन उनमें ज़्यादा लोग ईमान से खारिज ही हैं।⁶ (81) तमाम आदमियों से ज़्यादा मुसलमानों से दुश्मनी रखने वाले आप इन यहूद और इन मुशिरकों को पाएँगे, और उनमें मुसलमानों के साथ दोस्ती रखने के ज़्यादा करीब उन लोगों को पाइएगा जो अपने को ईसाई कहते हैं,⁷ यह इस सबब से है कि उनमें बहुत-से (इल्म से दोस्ती रखने वाले) आलिम हैं, और बहुत-से दुनिया से बेताल्लुक (दुर्वेश), और (यह इस सबब से है कि) ये लोग तकब्बुर करने वाले नहीं हैं।⁸ (82)

1. हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के माबूद होने का बातिल होना आ़म मज़मून से बयान फरमाया था। आगे एक ख़ास दलील से बयान करते हैं।
 2. यह दलील मादियत के इस्तिदाल के एतबार से “रुहुल-कुदुस” के माबूद होने के बातिल होने के लिए भी काफी है, क्योंकि उनका आना-जाना, चलना-फिरना कि ये सब उमूर मादे के ख़्वास से हैं, मुसल्लम हैं, और मादियत से मुम्किन होना और उससे माबूद होने का बातिल होना ज़ाहिर है, इसलिए अलग से मुस्तक़िल तौर पर इसका ज़िक्र ज़रूरी नहीं।
 3. या तो ये ईसाई जिनका ज़िक्र हुआ ईसा अलैहिस्सलाम की पूजा भी करते होंगे या यह कि इबादत में सबसे बड़ा दर्जा माबूद होने के एतिकाद का है। जब वे ईसा अलैहिस्सलाम के माबूद होने के कायल हुए तो यकीनन उनकी इबादत की।
 4. यानी ज़बूर और इन्जील में काफिरों पर लानत लिखी थी, जैसे कुरआन मजीद में है “फ-लअनतुल्लाहि अललू काफिरिन” चूँकि ये किताबें हज़रत दाऊद और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पर नाज़िल हुई इसलिए यह मज़मून उनकी ज़बान से ज़ाहिर हुआ।
 5. मदीना के यहूद और मक्का के मुशिरकीन में मुसलमानों की दुश्मनी के ताल्लुक से जिसका मन्शा कुफ्र में तनासुब था, आपस में ख़ूब मुवाफ़क़त थी।
 6. ज़्यादा का मिस्दाक़ दोनों जगह एक ही है, यानी ग़ैर-मोमिन, और यह कैद मोमिनो को अलग निकालने के लिए है।
 7. ज़्यादा करीब का मतलब यह है कि दोस्त वे भी नहीं मगर दूसरे जिनका ज़िक्र किया गया उनसे गुनीमत हैं।
 8. यह आयत तमाम ज़मानों और तमाम जगहों के ईसाइयों के बारे में नहीं है, बल्कि इससे वे ईसाई मुराद हैं जो उन सिफ़्तों से जो सबब और मुसबब में मज़कूर हैं मौसूफ़ हों, पस बाज़ चापलूसी करने वालों का दुनियावी गरज़ से इसके आ़म होने का दावा करना महज़ अपनी मनमानी और ख़्वाहिश परस्ती है।
- तंबीह: मकसूद आयत में ईसाइयों की तारीफ़ नहीं बल्कि तकरीर में इन्साफ़ है, और मकसूद दोस्ती का पूरी तरह नज़दीकी होना नहीं बल्कि इज़ाफ़ी नज़दीकी है।

सातवाँ पार: व इज़ा समिअू

सूर: मा-इद: (आयत 83 से 120)

और जब वे उसको सुनते हैं जो कि रसूल की तरफ भेजा गया है तो आप उनकी आँखें आँसुओं से बहती हुई देखते हैं, इस सबब से कि उन्होंने हक़ को पहचान लिया,¹ (यूँ) कहते हैं कि ऐ हमारे रब! हम मुसलमान हो गए, तो हमको भी उन लोगों के साथ लिख लीजिए जो तस्दीक करते हैं। (83) और हमारे पास कौन-सा उज़्र है कि हम अल्लाह पर और जो हक़ हमको पहुँचा है उसपर ईमान न लाएँ, और इस बात की उम्मीद रखें कि हमारा रब हमको नेक लोगों के साथ दाखिल कर देगा। (84) सो उनको अल्लाह तआला उनके कौल के बदले में ऐसे बाग़ देंगे जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, ये उनमें हमेशा-हमेशा को रहेंगे, और नेक काम करने वालों की यही जज़ा है। (85) और जो लोग काफ़िर रहे और हमारी आयतों को झूठा कहते रहे वे लोग दोज़ख़ वाले हैं।² (86) ♦

ऐ ईमान वालो! अल्लाह तआला ने जो पाक व लज़ीज़ चीज़ें तुम्हारे वास्ते हलाल की हैं³ उन्हें हराम मत करो, और हदों से आगे मत निकलो, बेशक अल्लाह तआला हद से निकलने वालों को पसन्द नहीं करते। (87) और खुदा तआला ने जो चीज़ें तुमको दी हैं उनमें से हलाल पसन्दीदा चीज़ें खाओ और अल्लाह तआला से डरो जिसपर तुम ईमान रखते हो।⁴ (88) अल्लाह तआला तुम्हारी पकड़ नहीं फरमाते तुम्हारी कस्मों में लगव “यानी बेअसर” कस्म (तोड़ने) पर⁵, लेकिन पकड़ इसपर फरमाते हैं कि तुम कस्मों को मज़बूत करो, (फिर तोड़ दो) सो इसका कफ़ारा दस मोहताजों को खाना देना है दरमियानी दर्जे का जो अपने घर वालों को खाने को दिया करते हो, या उनको कपड़ा देना या एक गर्दन (यानी एक गुलाम या बाँदी) आज़ाद करना।⁶ और जिसको यह हासिल न हो तो तीन दिन के रोज़े हैं। यह कफ़ारा है तुम्हारी कस्मों का, जबकि तुम कसम खा लो (फिर तोड़ दो), और अपनी कस्मों का ख़याल रखा करो। इसी तरह अल्लाह तआला तुम्हारे वास्ते अपने अहकाम बयान फरमाते हैं ताकि तुम शुक्र करो।⁷ (89) ऐ ईमान वालो! (बात यही है कि) शराब और जुआ और बुत (वगैरह) और कुर्आ के तीर (ये सब) गन्दे शैतानी काम हैं, सो इनसे बिलकुल अलग रहो ताकि तुमको कामयाबी हो। (90) शैतान तो यूँ चाहता है कि शराब और जुए के

1. मतलब यह कि हक़ को सुनकर मुतास्सिर होते हैं।

2. यहाँ तक तो अहले किताब के मुताल्लिक गुफ्तगू थी, आगे फिर उन अहकाम की तरफ वापस आते हैं जिनका कुछ शुरू सूर: में और कुछ दरमियान में भी बयान हुआ है।

3. चाहे खाने की किस्म में से हों या पहनने की, या निकाह करने की किस्म से हों।

4. यानी हलाल चीज़ का हराम कर लेना अल्लाह की रिज़ा के खिलाफ़ है, इससे डरो और इसका जुर्म मत करो।

5. यानी कफ़ारा वाजिब नहीं करते।

6. यानी तीनों में से जिसको चाहे इख़्तियार कर ले।

7. ‘लगव’ कहते हैं बेअसर को, इसके दो मायने हैं, एक वह जिसपर गुनाह का असर मुरत्तब न हो, दूसरे वह जिसपर कफ़ारे का असर मुरत्तब न हो, इस आयत में इसी का ज़िक्र है।

जरिए से तुम्हारे आपस में दुश्मनी और बुग़ज़ पैदा कर दे और अल्लाह तआला की याद से और नमाज़ से तुमको रोक दे। सो अब भी बाज़ (नहीं) आओगे?¹ (91) और तुम अल्लाह तआला की इताअत करते रहो और रसूल की इताअत करते रहो और एहतियात रखो, और अगर मुँह मोड़ोगे तो यह जान रखो कि हमारे रसूल के ज़िम्मे सिर्फ़ साफ़-साफ़ पहुँचा देना था। (92) ऐसे लोगों पर जो ईमान रखते हों और नेक काम करते हों, उस चीज़ में कोई गुनाह नहीं जिसको वे खाते-पीते हों, जबकि वे लोग परहेज़ रखते हों और ईमान रखते हों और नेक काम करते हों, फिर परहेज़ करने लगते हों और ईमान रखते हों, फिर परहेज़ करने लगते हों और ख़ूब नेक अमल करते हों, और अल्लाह तआला ऐसे नेक काम करने वालों से मुहब्बत रखते हैं। (93) ♦

ऐ ईमान वालो! अल्लाह तआला किसी क़द्र शिकार से तुम्हारा इम्तिहान करेगा जिन तक तुम्हारे हाथ और तुम्हारे नेज़े पहुँच सकेंगे, ताकि अल्लाह तआला मालूम करे कि कौन शख्स उससे बिन देखे डरता है?² तो जो शख्स इसके बाद हद से निकलेगा उसके वास्ते दर्दनाक सज़ा है। (94) ऐ ईमान वालो! (जंगली) शिकार को क़त्ल मत करो जबकि तुम एहराम की हालत में हो,³ और जो शख्स तुममें से उसको जान-बूझकर क़त्ल करेगा तो उसपर सज़ा और जुर्माना वाजिब होगा, जो कि बराबर होगा उस जानवर के जिसको उसने क़त्ल किया है, जिसका फैसला तुममें से दो मोतबर शख्स कर दें, (चाहे वह जुर्माना ख़ास चौपायों में से हो) शर्त यह है कि नियाज़ के तौर पर काबा तक पहुँचाई जाए, चाहे कफ़फ़ारा कि ग़रीबों को खाना दे दिया जाए, चाहे उसके बराबर रोज़े रख लिए जाएँ, ताकि अपने किए की शामत का मज़ा चखे। जो गुज़र गया अल्लाह ने उसको माफ़ कर दिया, और जो शख्स फिर ऐसी ही हरकत करेगा तो अल्लाह उससे इन्तिकाम लेंगे, और अल्लाह तआला ज़बरदस्त हैं, इन्तिकाम ले सकते हैं। (95) तुम्हारे लिए दरिया का शिकार पकड़ना और उसका खाना हलाल किया गया है,⁴ तुम्हारे फ़ायदा उठाने के वास्ते और मुसाफ़िरों के वास्ते, और खुश्की का शिकार पकड़ना तुम्हारे लिए हराम किया गया, जब तक कि तुम एहराम की हालत में हो, और अल्लाह तआला से डरो जिसके पास जमा किए जाओगे। (96) खुदा तआला ने काबा को जो कि

1. हासिल यह हुआ कि यह शराब, जुआ, बुत-परस्ती और कुफ़्र के करीब इसलिए हैं कि नमाज़ से जो कि ईमान की बड़ी निशानियों और अलामतों में से है, रोक बने हुए है। जब इस तौर पर ईमान से दूरी हुई तो कुफ़्र से नज़दीकी हुई।
2. इम्तिहान का मतलब यह है कि एहराम की हालत में जंगली जानवरों के शिकार करने को तुमपर हराम करके उन जंगली जानवरों को तुम्हारे आस-पास फिराते रहेंगे। चुनौचे जंगली जानवर इसी तरह आस-पास लगे फिरते थे। चूँकि सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम में बहुत-से शिकार के आदी थे, इसमें उनकी इताअत का इम्तिहान हो रहा था जिसमें वे पूरे उतरे।
3. इसी तरह जबकि वह शिकार हरम में हो, अगरचे शिकारी एहराम में न हो, उसका भी यही हुक्म है।
4. दरियाई जानवर वह है कि जिस तरह पानी उसके रहने की जगह है उसी तरह पानी ही उसके पैदा होने की जगह हो, पस बत्तख़ व मुरगाबी वगैरह इससे ख़ारिज और खुश्की के शिकार में दाख़िल हैं।

अदब का मकान है लोगों के कायम रहने का सबब करार दे दिया¹ और इज़्जत वाले महीने को भी, और हरम में कुरबानी होने वाले जानवरों को भी और उन (जानवरों) को भी जिनके गले में पट्टे हों, यह इसलिए कि तुम इस बात का यकीन कर लो कि बेशक अल्लाह तआला तमाम आसमानों और ज़मीन के अन्दर की चीज़ों का इल्म रखते हैं। और बेशक अल्लाह तआला सब चीज़ों को ख़ूब जानते हैं। (97) तुम यकीन जान लो कि अल्लाह तआला सज़ा भी सख्त देने वाले हैं, और अल्लाह तआला बड़े मग़्फ़िरत वाले (और) रहमत वाले भी हैं। (98) रसूल के ज़िम्मे तो सिर्फ़ पहुँचाना है। और अल्लाह सब जानते हैं जो कुछ तुम ज़ाहिर करते हो और जो कुछ छुपाकर रखते हो। (99) आप फ़रमा दीजिए कि नापाक और पाक बराबर नहीं, अगरचे तुझको नापाक की कसरत “यानी ज़्यादा होना” ताज्जुब में डालती हो, तो खुदा तआला से डरते रहो ऐ अक्लमन्दो! ताकि तुम कामयाब हो जाओ। (100) ♦

ऐ ईमान वालो! ऐसी (फुज़ूल) बातें मत पूछो² कि अगर तुमसे ज़ाहिर कर दी जाएँ तो तुम्हारी नागवारी का सबब हो। और अगर तुम कुरआन के नाज़िल होने के ज़माने में (कारामद बातें) पूछो तो तुमसे ज़ाहिर कर दी जाएँ, वे (गुज़रे हुए सवालात) अल्लाह ने माफ़ कर दिए और अल्लाह तआला बड़ी मग़्फ़िरत वाले हैं, बड़े बर्दाश्त करने वाले हैं। (101) ऐसी बातें तुमसे पहले और लोगों ने भी पूछी थीं, फिर उन बातों का हक़ न पूरा किया। (102) अल्लाह तआला ने न बहीरा को मश्रूअ “यानी जायज़ और मुकर्रर” किया है और न सायबा को और न वसीला को और न हामी को, लेकिन जो लोग काफ़िर हैं वे अल्लाह तआला पर झूठ लगाते हैं, और अक्सर (काफ़िर) उनमें के अक्ल नहीं रखते।³ (103) और जब उनसे कहा जाता है कि अल्लाह तआला ने जो अहक़ाम नाज़िल फ़रमाए हैं उनकी तरफ़ और रसूल की तरफ़ रूजू करो, तो कहते हैं कि हमको वही काफी है जिसपर हमने अपने बड़ों को देखा है। क्या अगरचे उनके बड़े न कुछ समझ रखते हों और न हिदायत रखते हों! (104) ऐ ईमान वालो! अपनी फ़िक्र करो, जब तुम राह पर चल रहे हो, तो जो शख्स गुमराह रहे तो उससे तुम्हारा कोई नुक़सान नहीं, अल्लाह ही के पास तुम सबको जाना है, फिर वह तुम सबको जतला देंगे जो-जो तुम सब किया करते थे। (105) ऐ ईमान वालो! तुम्हारे आपस में दो शख्सों का वसी “यानी जिसको वसीयत की गई हो, वसीयत पर अमल करने वाला” होना

1. काबा की दुनियावी मस्लहतों और बरकतों में से बाज़ ये हैं। १. उसका अमन की जगह होना। २. वहाँ हर साल मजमा होना जिसमें माली तरक्की और कौमी इत्तिहाद बहुत सहूलत से मयस्सर हो सकता है। ३. उसके बाकी रहने तक दुनिया का बाकी रहना, यहाँ तक कि जब कुफ़्फ़ार उसको ढा देंगे तो करीब ही कियामत आ जाएगी।

2. फुज़ूल की कैद इसलिए लगाई कि ज़रूरत की बात पूछने में कोई हर्ज नहीं, जैसे जब बाज़ औरतों की इद्त का हुक्म नाज़िल हुआ और बाज़ का नहीं हुआ और ज़रूरत सबकी पड़ती है। उसको सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने पूछा तो बिला नाराज़गी के इस आयत में जवाब नाज़िल हुआ: “वल्लाई यअिस्-न मिनल् महीजि....।

3. बहीरा वह जानवर है जिसका दूध बुतों के नाम कर देते, उसे कोई अपने काम में न लाता, और साइबा वह जानवर है जिसको बुतों के नाम पर छोड़ देते, उससे कोई काम न लेते। जैसे इस मुल्क में बाज़े लोग साँड़ छोड़ देते हैं। और वसीला वह ऊँटनी है जो पहली बार मादा बच्चा जने, फिर दूसरी बार भी मादा बच्चा दे, दरमियान में नर बच्चा न पैदा हो। उसको भी बुतों के नाम पर छोड़ देते थे। और हामी वह नर ऊँट है जो एक खास गिन्ती से जुफ़्ती (यानी सोहबत) कर चुका हो, उसको भी बुतों के नाम पर छोड़ देते। यह सब बातिल, कुफ़ और शिर्क हैं।

मुनासिब है, जबकि तुममें से किसी को मौत आने लगे, जब वसीयत करने का वक्त हो वे दो शख्स ऐसे हों कि दीनदार हों और तुममें से हों या ग़ैर कौम के दो शख्स हों, अगर तुम कहीं सफ़र में गए हो फिर तुमपर मौत का वाकिआ पड़ जाए, अगर तुमको शुब्हा हो तो उन दोनों को बाद नमाज़ के रोक लो, फिर दोनों खुदा की कसम खाएँ कि हम इस कसम के बदले कोई नफ़ा नहीं लेना चाहते अगरचे कोई रिश्तेदार भी होता, और अल्लाह की बात को हम छुपाकर न रखेंगे (वरना) हम इस हालत में सख़्त गुनाहगार होंगे। (106) फिर अगर इसकी इत्तिहा हो कि वे दोनों (वसी) किसी गुनाह के करने वाले हुए हैं तो उन लोगों में से जिनके मुकाबले में गुनाह का काम हुआ था और दो शख्स जो सबमें ज़्यादा करीब हैं, जहाँ वे दोनों खड़े हुए थे वे दोनों खड़े हों, फिर दोनों खुदा की कसम खाएँ कि यकीनन हमारी यह कसम इन दोनों की उस कसम से ज़्यादा सच्ची और दुरुस्त है और हम ज़रा भी हद से नहीं बढ़ें, (वरना) हम इस हालत में सख़्त ज़ालिम होंगे। (107) यह बहुत करीब ज़रिया है इस बात का कि वे लोग वाकिए को ठीक तौर पर ज़ाहिर कर दें, या इस बात से डर जाएँ कि उनसे कस्में लेने के बाद (वारिसों पर) कस्में मुतवज्जह की जाएँगी। और अल्लाह तआला से डरो और सुनो, और अल्लाह तआला फ़ासिक लोगों की रहनुमाई न करेंगे। (108) ♦

जिस दिन अल्लाह तआला पैग़म्बरों को (मय उनकी उम्मतों के) जमा करेंगे, फिर इरशाद फ़रमाएँगे कि तुमको (उन उम्मतों की तरफ़ से) क्या जवाब मिला था? वे अज़्र करेंगे कि (ज़ाहिरी जवाब तो हमें मालूम है, लेकिन उनके दिल की) हमको कुछ ख़बर नहीं, आप बेशक छुपी बातों के जानने वाले हैं। (109) जब अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाएँगे कि ऐ मरियम के बेटे ईसा! मेरा इनाम याद करो जो तुमपर और तुम्हारी माँ पर (हुआ है) जबकि मैंने तुमको रूहुल-कुदुस से ताईद दी। तुम आदमियों से कलाम करते थे गोद में भी और बड़ी उम्र में भी, और जबकि मैंने तुमको किताबें और समझ की बातें और तौरात और इन्जील तालीम कीं, और जबकि तुम मेरे हुक्म से गारे से एक शक्ल बनाते थे जैसे परिन्दे की शक्ल होती है, फिर तुम उसके अन्दर मेरे हुक्म से फूँक मार देते थे जिससे वह परिन्दा बन जाता था, और तुम मेरे हुक्म से अच्छा कर देते थे जन्म के अन्धे को और कोढ़ के बीमार को, और जबकि तुम मेरे हुक्म से मुर्दों को निकालकर खड़ा कर लेते थे, और जबकि मैंने बनी इसराईल को तुमसे (यानी तुम्हारे क़त्ल व हलाक करने से) बाज़ रखा जब तुम उनके पास दलीलें लेकर आए थे, फिर उनमें जो काफ़िर थे उन्होंने कहा था कि यह सिवाय खुले जादू के और कुछ भी नहीं। (110) और जबकि मैंने हवारियों को हुक्म दिया

1. क्योंकि पराया माल जान-बूझकर बिला इजाज़त ले लेना जुल्म है।
2. ऊपर मुख़्तलिफ़ अहक़ाम का ज़िक्र हुआ है और दरमियान में उनपर अमल करने की तरगीब और उनकी मुख़ालफ़त पर डरावा और डाँट बयान फ़रमाई गई है, इसी की ताकीद के लिए अगली आयत में कियामत की हौल व हैबत याद दिलाते हैं ताकि इताअत का ज़्यादा सबब हो और मुख़ालफ़त से ज़्यादा रोकने वाला हो, और अक्सर कुरआन मजीद का यही तरीका है।
3. मतलब यह है कि एक ऐसा दिन होगा और आमाँल व हालात की पूछ-गछ होगी, इसलिए तुमको मुख़ालफ़त व नाफ़रमानी से डरते रहना चाहिए।
4. ज़िक्र की गई चीज़ों का हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के लिए इनाम होना तो ज़ाहिर है, लेकिन हज़रत मरियम अलैहिस्सलाम के हक़ में इनाम होना इस तौर पर है कि इन सब उमूर से आपका नबी होना साबित है, और आपने उनकी पाकीज़गी की ख़बर दी, और नबी की दी हुई ख़बरें सब सच्ची होती हैं। पस उनकी पाकदामनी साबित हो गई और यह बड़ा इनाम है। और वालिदा पर जो इनाम हुआ वह ईसा अलैहिस्सलाम को इसलिए याद दिलाया गया कि असल और जड़ पर इनाम होना एक तरह से शाख़ पर भी है, कि वे उसी असल से निकली हुई हैं।

कि तुम मुझपर और मेरे रसूल पर ईमान लाओ। उन्होंने कहा कि हम ईमान लाए, आप गवाह रहिए कि हम पूरे फरमाँबर्दार हैं। (111) (वह वक्त याद करने के काबिल है) जबकि हवारियों ने अर्ज किया कि ऐ ईसा इब्ने मरियम! क्या आपके रब ऐसा कर सकते हैं कि हमपर आसमान से दस्तरख्वान (यानी कुछ खाना) नाज़िल फरमा दें? आपने फरमाया खुदा तआला से डरो अगर तुम ईमान वाले हो।¹ (112) वे बोले, हम यह चाहते हैं कि उसमें से खाएँ और हमारे दिलों को पूरा इत्मीनान हो जाए, और हमारा यह यकीन और बढ़ जाए कि आपने हमसे सच बोला है, और हम गवाही देने वालों में से हो जाएँ। ♦ (113) ईसा इब्ने मरियम ने दुआ की, ऐ अल्लाह! ऐ हमारे परवर्दिगार! हमपर आसमान से दस्तरख्वान (यानी खाना) नाज़िल फरमाइए कि वह हमारे लिए यानी हममें जो अब्बल हैं और जो बाद में हैं सबके लिए ईद (यानी एक खुशी की बात) हो जाए, और आपकी तरफ से एक निशान हो जाए, और आप हमको अता फरमाइए कि आप सब अता करने वालों से अच्छे हैं। (114) हक तआला ने इरशाद फरमाया कि मैं वह खाना तुम लोगों पर नाज़िल करने वाला हूँ, फिर जो शख्स तुममें से हक न पहचानने का जुर्म करेगा तो मैं उसको ऐसी सज़ा दूँगा कि वह सज़ा दुनिया जहान वालों में से किसी को न दूँगा।² (115) ♦

और (वह वक्त भी ज़िक्र के काबिल है) जबकि अल्लाह तआला फरमाएँगे³ कि ऐ ईसा इब्ने मरियम! क्या तुमने उन लोगों से कह दिया था कि खुदा के अलावा मुझको और मेरी माँ को भी दो माबूद करार दे लो। (ईसा अलैहिस्सलाम) अर्ज करेंगे कि (तौबा-तौबा मैं) आप (को शरीक से) पाक (समझता हूँ और) हैं, मुझको किसी तरह मुनासिब न था कि मैं ऐसी बात कहता जिस (के कहने) का मुझको कोई हक नहीं,⁴ अगर मैंने यह कहा होगा तो आपको इसका इल्म होगा, आप तो मेरे दिल के अन्दर की बात भी जानते हैं, और मैं आपके इल्म में जो कुछ है उसको नहीं जानता, तमाम गैबों के जानने वाले आप ही हैं। (116) मैंने तो उनसे और कुछ नहीं कहा मगर सिर्फ वही जो आपने मुझसे कहने को फरमाया था कि तुम अल्लाह की बन्दगी (इख़्तियार) करो, जो मेरा भी रब है और

1. मतलब यह है कि तुम ईमान वाले हो इसलिए खुदा से डरो और मोजिज़ात की फरमाइश से जो कि बेज़रूरत होने की वजह से अदब के खिलाफ है, बचो।
2. हक न पहचानने का जुर्म करेगा, यानी अक्ली और नकली तौर पर जो हुक्क वाजिब हैं उनको अदा न करेगा। मजमूआ उन हुक्क का यह था कि उसपर शुक्र किया जाए कि अक्ल के एतिबार से भी वाजिब है और उसमें ख़ियानत न करें और अगले दिन के लिए उठाकर न रखें, चुनौचे इसका हुक्म होना तिर्मिज़ी शरीफ की हदीस में अम्मार बिन यासिर रज़ियल्लाहु अन्हु से नकल किया गया है, और उस हदीस में यह भी है कि जो दस्तरख्वान आसमान से नाज़िल हुआ उसमें रोटी और गोश्त था। और उस हदीस में यह भी है कि उन लोगों ने (यानी उनमें से बाज़ ने) ख़ियानत की और अगले दिन के लिए उठाकर रखा, पस बन्दर और खिन्ज़ीर की सूरत में शक्लें बिगड़ गई।
3. यानी कियामत में।
4. न अपने अक़ीदे के एतिबार से कि मैं मुव्हिद (यानी अल्लाह को एक मानने वाला, पक्का सच्चा मुसलमान) हूँ और न हकीकत के एतिबार से कि आप वाहिद हैं।

तुम्हारा भी रब है, और मैं उनपर बा-ख़बर रहा जब तक उनमें रहा, फिर जब आपने मुझको उठा लिया तो आप उनपर मुत्तला रहे, और आप हर चीज़ की पूरी ख़बर रखते हैं। (117) अगर आप इनको सज़ा दें तो ये आपके बन्दे हैं, और अगर आप इनको माफ़ फ़रमा दें तो आप ज़बरदस्त हैं, हिक्मत वाले हैं। (118) अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाएँगे कि यह वह दिन है कि जो लोग सच्चे थे उनका सच्चा होना उनके काम आएगा, उनको बाग़ मिलेंगे जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, जिनमें वे हमेशा-हमेशा को रहेंगे। अल्लाह उनसे राज़ी और खुश और वे अल्लाह तआला से राज़ी और खुश हैं, यह बड़ी भारी कामयाबी है। (119) अल्लाह ही की हुक्मत है आसमानों की और ज़मीन की, और उन चीज़ों की जो उनमें मौजूद हैं, और वह हर चीज़ पर पूरी कुदरत रखते हैं। (120) ♦

6 सूर: अन्आम 55

सूर: अन्आम मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 166 आयतें और 20 रुकूअ हैं।

शुरु करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

तमाम तारीफें अल्लाह ही के लिए हैं जिसने आसमानों को और ज़मीन को पैदा किया और अन्धेरियों को और नूर को बनाया, फिर भी काफ़िर लोग दूसरों को अपने रब के बराबर करार देते हैं। (1) वह ऐसा है जिसने तुमको मिट्टी से बनाया, फिर एक वक़्त मुक़र्रर किया, और दूसरा मुक़र्रर वक़्त खास उसी के (यानी अल्लाह ही के) नज़दीक है, फिर भी तुम शक़ रखते हो। (2) और वही है अल्लाह (माबूद बरहक़) आसमानों में भी और ज़मीन में भी, वह तुम्हारे छुपे हालात को भी और ज़ाहिरी हालात को भी जानते हैं, और तुम जो कुछ अमल करते हो उसको जानते हैं। (3) और उनके पास कोई निशानी भी उनके रब की निशानियों में से नहीं आती, मगर वे उससे मुँह ही मोड़ लेते हैं। (4) सो उन्होंने उस सच्ची किताब को भी झूठा बतलाया जबकि वह उनके पास पहुँची। सो जल्दी ही उनको ख़बर मिल जाएगी उस चीज़ की जिसके साथ ये लोग मज़ाक़-ठट्ठा किया करते थे। (5) क्या उन्होंने देखा नहीं कि

1. पिछली सूर: के ख़तम और इस सूर: के आगाज़ में तो मुनासबत यह है कि दोनों शिर्क के बातिल करने और तौहीद के साबित करने और उसके दलाइल पर मुश्तमिल हैं, और दोनों में शरीअतों पर का बयान किया गया है। अगरचे पिछली सूर: में उसूल की तरह फुरुअ यानी अहकाम भी बहुत हैं, चुनाँचे बीस तक उनकी गिन्ती पहुँची है। और इसमें तक़रीबन तमाम सूर: में उसूल ही ज़्यादा हैं और फुरुअ बहुत कम हैं, जो कि ज़िक्र की गई गिन्ती के तिहाई या चौथाई से ज़्यादा नहीं। और खुद इस सूर: के हिस्सों में आपस में मुनासबत व ताल्लुक़ यह है कि हासिल सूर: का चन्द उमूर हैं। तौहीद का साबित करना, रिसालत का साबित करना, तौहीद व रिसालत की ताईद के लिए बाज़ अम्बिया के वाकिआत, कुरआन का साबित करना, हुज़ुरे पाक के नबी बनाकर भेजने को साबित करना, उनके इनकारियों की कौली व फेली दुश्मनी, उन इनकारियों पर वईदें, उन वईदों की ताईद के लिए बाज़ झुठलाने वाली उम्मतों की बर्बादी का हाल, उन इनकारियों से गुफ्तगू, बहस व हुज्जत, खुद उनके तौर-तरीकों व आदत की बुराई ज़ाहिर करना, उनके साथ मामला रखने में एनिदाल की तालीम, कि तब्बीग़ में कमी न हो, सख़्ती में शरई हद्दों से गुज़रना न हो, मेल-जोल में दीन की किसी बात की तरफ़ से चश्मपोशी न हो, दिलजोई या हिदायत की फ़िक्र में मुबालागा न हो, उनकी जहालत की रस्मों के मुकाबले में बाज़ बुलन्द इस्लामी अख़्लाक़ का बयान, और यह पूरी की पूरी गुफ्तगू मुशिरकीन से है, सिर्फ़ दो तीन जगह नुबुव्वत व कुरआन के मसले में या चीज़ों के हलाल व हराम होने की बहस में मुनासबत से ज़िम्नन अहले किताब खासकर यहूद की बुराई और कमियों का बयान आ गया है। यह हासिल है सूर: का, और इन सब मज़ामीन में ताल्लुक़ व रब्त का सबब पोशीदा नहीं। पस सबसे पहले तौहीद की आयतें हैं। (शेष तफ़सीर पृष्ठ 232 पर)

हम उनसे पहले कितनी जमाअतों को हलाक कर चुके हैं, जिनको हमने ज़मीन (यानी दुनिया) में ऐसी कुव्वत दी थी कि तुमको वह कुव्वत नहीं दी, और हमने उनपर ख़ूब बारिशें बरसाईं, और हमने उनके नीचे से नहरें जारी कीं, फिर हमने उनको उनके गुनाहों के सबब हलाक कर डाला, और उनके बाद दूसरी जमाअतों को पैदा कर दिया।¹ (6) और अगर हम कागज़ पर लिखी हुई कोई तहरीर आप पर नाज़िल फ़रमाते फिर उसको ये लोग अपने हाथों से छू भी लेते तब भी ये काफ़िर लोग यही कहते कि यह कुछ भी नहीं, मगर खुला जादू है। (7) और ये लोग यूँ कहते हैं कि उनके पास कोई फ़रिश्ता क्यों नहीं भेजा गया? और अगर हम कोई फ़रिश्ता भेज देते तो सारा किस्सा ही ख़त्म हो जाता, फिर उनको ज़रा भी मोहलत न दी जाती। (8) और अगर हम उसको फ़रिश्ता तजवीज़ करते तो हम उसको आदमी ही बनाते, और हमारे इस फ़ेल से फिर उनपर वही इश्काल होता जो इश्काल अब कर रहे हैं।² (9) और वाकई आपसे पहले जो पैग़म्बर हुए हैं उनका भी हँसी और मज़ाक़ उड़ाया गया है, फिर जिन लोगों ने उनसे हँसी-मज़ाक़ किया था उनको उस अज़ाब ने आ घेरा जिसका वे मज़ाक़ उड़ाते थे। (10) ♦

आप फ़रमा दीजिए कि ज़रा ज़मीन में चलो-फिरो, फिर देख लो कि झुठलाने वालों का कैसा अन्जाम हुआ। (11) आप कहिए कि जो कुछ आसमानों और ज़मीन में मौजूद है, यह सब किसकी मिल्क है? आप कह दीजिए कि सब अल्लाह ही की मिल्क है, उसने (यानी अल्लाह तआला ने) मेहरबानी फ़रमाना अपने ऊपर लाज़िम फ़रमा लिया है। तुमको खुदा तआला कियामत के दिन जमा करेंगे इसमें कोई शक नहीं, जिन लोगों ने अपने को जाया कर दिया है सो वे ईमान न लाएँगे। (12) और उसी की (यानी अल्लाह ही की मिल्क) है सब जो कुछ रात और दिन में रहते हैं, और वही है बड़ा सुनने वाला, बड़ा जानने वाला। (13) आप कहिए कि क्या अल्लाह के सिवा जो कि आसमानों और ज़मीन के पैदा करने वाले हैं और जो कि खाने को देते हैं और उनको कोई खाने को नहीं देता, किसी को माबूद करार दूँ? आप फ़रमा दीजिए कि मुझको यह हुक्म हुआ है कि सबसे पहले मैं इस्लाम कबूल करूँ, और तुम मुशिरकों में से हरगिज़ न होना। (14) आप कह दीजिए कि मैं अगर अपने रब का कहना न मानूँ तो मैं एक बड़े दिन के अज़ाब से डरता हूँ। (15) जिस शख्स से उस दिन वह अज़ाब हटाया जाएगा तो उसपर

(पृष्ठ 230 का शेष)

2. तौहीद तीनों आयतों का मकसूदे मुश्तरक है। यानी इबादत के लायक वह है जिसमें ये सिफ़तें हों कि वह दुनिया ज़हान का पैदा करने वाला हो, और हाज़िर व ग़ायब का जानने वाला हो। और आख़िर की दो आयतों में नबी करीम को भेजने की ख़बर और उसके मना करने को रद्द करना और किए हुए आमाल पर हिसाब व पूछताछ पर तंबीह भी है, जिससे शिर्क पर वर्द साबित हो गई। और दूसरे 'वक्त्' (ग़ालिबन इससे मुराद कियामत है) के इल्म को अपने साथ मख्सूस फ़रमाया, क्योंकि पहले 'वक्त्' (यानी मौत) का अगरचे कतई इल्म न सही मगर अन्दाज़े के तौर पर निशानियों से मालूम हो जाता है।

3. मुराद इससे वह अज़ाब है जिसकी ख़बर कुरआन में सुनकर हँसते थे, जिससे कुरआन का झुठलाना लाज़िम आता था। उसकी ख़बर मिलने का मतलब यह है कि जब अज़ाब नाज़िल होगा उसकी ख़बर आँखों से देख लेंगे।

1. मुराद इन हलाक होने वाली जमाअतों से आद व समूद वगैरह हैं कि अज़ाब के मुख़्तलिफ़ तरीकों से हलाक किए गए।

2. यानी उस फ़रिश्ते को बशर (यानी इन्सान) समझकर फिर वही एतिराज़ करते। गरज़ फ़रिश्ते के नाज़िल होने से उनका नफ़ा तो कुछ न होता, क्योंकि उनका शक व शुब्हा अपनी जगह बाक़ी रहता, और उनका नुक़सान यह होता कि हलाक कर दिए जाते। इसलिए हमने इस तरह नाज़िल नहीं किया। खुलासा यह हुआ कि हद दर्जा दुश्मनी की वजह से ऐसी बातें मुँह से निकालते थे जो हिदायत और हक़ के वाज़ेह होने का तरीक़ (यानी रास्ता और तरीक़ा) नहीं, और जो उसका तरीक़ा है कि मौजूद आयात व मौजिज़ात में ग़ौर करना, उससे काम नहीं लेते।

अल्लाह तआला ने बड़ा रहम किया और यह खुली कामयाबी है। (16) और अगर अल्लाह तआला तुझको कोई तकलीफ पहुँचा दें तो उसका दूर करने वाला सिवाय अल्लाह तआला के कोई नहीं। और अगर तुझको वह (यानी अल्लाह तआला) कोई नफा पहुँचा दें तो वह हर चीज़ पर कुदरत रखने वाले हैं। (17) और वही अल्लाह तआला अपने बन्दों के ऊपर ग़ालिब (व बरतर) हैं, और वही बड़ी हिकमत वाले (और) पूरी ख़बर रखने वाले हैं।¹ (18) आप कहिए कि गवाही देने के लिए सबसे बढ़कर चीज़ कौन है? आप कहिए कि मेरे और तुम्हारे दरमियान अल्लाह तआला गवाह है, और मेरे पास यह कुरआन बतौर वह्य के भेजा गया है ताकि मैं इस कुरआन के ज़रिये से तुमको और जिस-जिसको यह कुरआन पहुँचे उन सबको डराऊँ, क्या तुम सब सचमुच यही गवाही दोगे कि अल्लाह तआला के साथ कुछ और माबूद भी हैं? आप कह दीजिए कि मैं तो गवाही नहीं देता, आप कह दीजिए कि बस वह तो एक ही माबूद है, और बेशक मैं तुम्हारे शिर्क से बेज़ार हूँ। (19) जिन लोगों को हमने किताब दी है वे लोग इस (रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को इस तरह पहचानते हैं जिस तरह अपने बेटों को पहचानते हैं। जिन लोगों ने अपने को ज़ाया कर लिया है² सो वे ईमान न लाएँगे। (20) ♦

और उससे ज़्यादा और कौन बेइन्साफ़ होगा जो अल्लाह तआला पर झूठ बोहतान बाँधे या अल्लाह तआला की आयतों को झूठा बतलाए, ऐसे बेइन्साफ़ों को छुटकारा न मिलेगा।³ (21) और (वह वक़्त याद करने के काबिल है) जिस दिन हम उन तमाम मख़्लूकों को जमा करेंगे, फिर हम मुशिरकों से (वास्ते से या बिला वास्ता सज़ा और झिड़की के तौर पर) कहेंगे कि (बतलाओ) तुम्हारे वे शुरका जिनके माबूद होने का तुम दावा करते थे कहाँ गए? (22) फिर उनके शिर्क का अन्जाम इसके सिवा कुछ भी न होगा कि वे यूँ कहेंगे कि अल्लाह की कसम, अपने परवर्दिगार की, हम मुशिरक न थे।⁴ (23) ज़रा देखो तो किस तरह झूठ बोला अपनी जानों पर, और जिन चीज़ों को तराशा करते थे वे सब उनसे ग़ायब हो गई।⁵ (24) और उनमें⁶ बाज़े ऐसे हैं कि आपकी तरफ़ कान लगाते हैं और हमने उनके दिलों पर पर्दे डाल रखे हैं, इससे कि वे उसको समझें और उनके कानों में डाट दे रखी है, और अगर वे लोग तमाम दलीलों को देख लें; उनपर भी ईमान न लाएँ, यहाँ तक कि जब ये लोग आपके पास आते हैं तो आपसे ख़्वाह-मख़्वाह झगड़ते हैं। ये लोग जो काफ़िर हैं यूँ कहते हैं कि यह तो कुछ भी नहीं, सिर्फ़ बे-सनद बातें हैं जो पहलों से चली आ रही हैं। (25) और ये लोग उससे औरों को भी रोकते हैं और खुद भी उससे दूर रहते हैं, और

1. ऊपर तौहीद व रिसालत के बारे में अलग-अलग कलाम हुआ है, आगे दोनों के बारे में इकट्ठे तौर पर कलाम है। चुनाँचे “अ-इन्नकुम् ल-तशहदू-न” में तौहीद की बहस है, और “कुलिल्लाहु शहीदुम् बैनी व बैनकुम्” में रिसालत की बहस है। शाने नुजूल भी इसका दो वाकिआत दोनों मसलों के मुताल्लिक हैं। चुनाँचे कलूबी ने रिवायत किया है कि मक्का के काफ़िरों ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में आकर कहा कि क्या खुदा तआला को आपके सिवा कोई रसूल नहीं मिला? हम तो नहीं समझते कि आपके दावे की कोई तस्दीक़ कर सकता है? और हमने तो यहूद व नसारा (यानी ईसाइयों) से पूछकर देख लिया है कि उनकी किताबों में आपका ज़िक्र ही नहीं, सो हमको कोई ऐसा शख्स बतलाइए जो इस बात की गवाही दे कि आप अल्लाह के रसूल हैं। इसपर यह आयत नाज़िल हुई और इब्ने जरीर वग़ैरह ने इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है कि नुहाम बिन ज़ैद और करूम बिन कअ़ब और बहज़ी बिन अम्र आपकी ख़िदमत में आए और कहा कि क्या आपके इल्म में सिवाय अल्लाह तआला के और कोई माबूद नहीं? आपने फ़रमाया कि हकीकत में भी अल्लाह के सिवा और कोई माबूद नहीं, मैं तो यही देकर भेजा गया हूँ और इसी की दावत देता हूँ। इसपर अल्लाह तआला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई।

2. यानी अपनी अक़ल को मज़क़ूरा शहादत पर दलालत करने वाली वुजूहात में सही ग़ौर व फ़िक्र करने से बेकार कर लिया है, चाहे वे अहले किताब हों या ग़ैर-अहले किताब हों।

3. ऊपर कुफ़्र का फ़लाह न पाना ज़िक्र हुआ है। आगे इस फ़लाह न पाने की कुछ कैफ़ियत ज़िक्र है। (शेष तफ़सीर पृष्ठ 236 पर)

ये लोग अपने ही को तबाह कर रहे हैं और कुछ ख़बर नहीं रखते। (26) और अगर आप (उस वक़्त) देखें जबकि ये दोज़ख़ के पास खड़े किए जाएंगे तो कहेंगे: क्या अच्छी बात हो कि हम फिर वापस भेज दिए जाएँ, और (अगर ऐसा हो जाए तो) हम अपने परवर्दिगार की आयतों को झूठा न बताएँ और हम ईमान वालों में से हो जाएँ। (27) बल्कि जिस चीज़ को इससे पहले दबाया करते थे वह उनके सामने आ गई है।¹ और अगर ये लोग फिर वापस भी भेज दिए जाएँ तब भी यह वही काम करें जिससे उनको मना किया गया था, और यकीनन ये लोग बिलकुल झूठे हैं।² (28) और ये कहते हैं कि जीना और कहीं नहीं सिर्फ़ यही फिलहाल का जीना है, और हम ज़िन्दा न किए जाएंगे। (29) और अगर आप (उस वक़्त) देखें जबकि वे अपने रब के सामने खड़े किए जाएंगे और अल्लाह तआला फ़रमाएगा कि क्या यह अम्र वाकई नहीं है? वह कहेंगे बेशक क़सम अपने रब की! अल्लाह तआला फ़रमाएगा तो अब अपने कुफ़्र के बदले अज़ाब चखो। (30) ♦

बेशक घाटे में पड़े वे लोग जिन्होंने अल्लाह तआला से मिलने को झुठलाया, यहाँ तक कि जब वह मुक़र्रर वक़्त³ उनपर अचानक आ पहुँचेगा तो कहने लगेंगे कि हाय अफ़सोस हमारी कोताही पर जो इसके बारे में हुई!⁴ और हालत उनकी यह होगी कि वे अपने बोझ अपनी कमर पर लादे होंगे। ख़ूब सुन लो कि बुरी होगी वह चीज़ जिसको वे लादेंगे। (31) और दुनियावी ज़िन्दगानी तो कुछ भी नहीं सिवाय खेल-कूद, सैर-तमाशे और तफ़रीह के,⁵ और पिछला घर मुत्तकियों के लिए बेहतर है, क्या तुम सोचते समझते नहीं हो! (32) हम ख़ूब जानते हैं कि आपको उनकी बातें ग़मगीन करती हैं। सो ये लोग आपको झूठा नहीं कहते, लेकिन ये ज़ालिम तो अल्लाह तआला की आयतों का इनकार करते हैं। (33) और बहुत-से पैग़म्बर जो आपसे पहले हुए हैं उनको भी झुठलाया जा चुका है, सो उन्होंने उसपर सब्र ही किया कि उनको झुठलाया गया और उनको तकलीफ़ें पहुँचाई गईं, यहाँ तक कि हमारी मदद उनको पहुँची, और अल्लाह तआला की बातों को कोई बदलने वाला नहीं। और आपके पास बाज़ पैग़म्बरों के बाज़ किस्से पहुँच चुके हैं।⁶ (34) और अगर आपको उनका मुँह मोड़ना नागवार गुज़रता है तो आपको यह ताक़त है कि

(पृष्ठ 234 का शेष) मुश्किनी की तो खुले तौर पर, कि मक्का में जो इस सूरः के नाज़िल होने की जगह है और वहाँ मुश्किनी ज़्यादा थे, और दूसरे कुफ़्रार की कियास के तौर पर, क्योंकि असल इल्लत फ़लाह न होने की यानी कुफ़्र सबमें पाई जाती है।

4. यानी जिसके हक़ होने का आज दावा है उसका अन्जाम यह होगा कि खुद ही उसको बातिल समझने लगेंगे।

5. यानी उनके कोई काम न आएगा।

6. यानी मुश्किनी में से।

7. यह जो फ़रमाया कि हमने पर्दे डाल रखे हैं तो यह मिसाल के तौर पर है, अगरचे परिचित पर्दे वगैरह न हों। और खुदा तआला की तरफ़ उसकी निस्वत होने से न तो ये माज़ूर हो सकते हैं न अल्लाह तआला पर कोई इल्ज़ाम आ सकता है, क्योंकि इस पर्दे वगैरह का सबब उनका इख़्तियारी तौर पर मुँह मोड़ना है और निस्वत तख़लीक़ के एतिबार से है।

1. मुराद उस चीज़ से वह अज़ाब है जिसकी वईद कुफ़्र और झुठलाने पर उनको की जाती थी। और दबाने से मुराद इनकार है।

2. ऊपर तौहीद व रिसालत और क़ुरआन के इनकार पर सज़ाओं का बयान था, आगे इनकारे बअस (यानी नबी को भेजने का इनकार) और उसकी सज़ा का बयान है।

3. यानी कियामत का दिन मय मुक़द्दिमात।

4. अगरचे झुठलाना उनके मरने के वक़्त ही ख़त्म हो जाएगा लेकिन कियामत को इसलिए हद करार दिया कि उस दिन सब कुछ खुलकर सामने आ जाएगा। और 'साहिबे कश्शाफ़' ने कहा है कि मौत का वक़्त भी कियामत के मुक़द्दिमात में से है, इसलिए वह भी कियामत के हुक्म में दाख़िल है।

5. खुद दुनियावी ज़िन्दगी को 'लख़व-व-लअिब' फ़रमाना मक़सूद नहीं बल्कि इसके उन मशग़लों और आमाल को जो कि आख़िरत के लिए नहीं बनाए गए और न आख़िरत के लिए मददगार हैं। तो इस कैद से नेक काम और अच्छाइयाँ (शेष तफ़सीर पृष्ठ 238 पर)

ज़मीन में कोई सुरंग या आसमान में कोई सीढ़ी ढूँढ लो, फिर कोई मोजिज़ा ले आओ (तो ऐसा करो), और अगर अल्लाह को मन्ज़ूर होता तो उन सबको सही रास्ते पर जमा कर देता, सो आप नादानों में से न होइए।¹ ● (35) वही लोग कबूल करते हैं जो सुनते हैं, और मुर्दों को अल्लाह तआला ज़िन्दा करके उठाएँगे फिर वे सब अल्लाह ही की तरफ़ लाए जाएँगे। (36) और ये लोग कहते हैं कि उनपर उनके रब की तरफ़ से कोई मोजिज़ा क्यों नाज़िल नहीं किया गया, आप फ़रमा दीजिए कि अल्लाह तआला को बेशक इसपर पूरी कुदरत है कि वह मोजिज़ा नाज़िल फ़रमाएँ, लेकिन उनमें अक्सर बेख़बर हैं। (37) और जितने किस्म के जानदार ज़मीन पर चलने वाले हैं और जितने किस्म के परिन्दे (जानवर) हैं कि अपने दोनों बाज़ुओं से उड़ते हैं उनमें कोई किस्म ऐसी नहीं जो कि तुम्हारी ही तरह के गिरोह न हों,² हमने दफ़्तर (लौहे महफूज़) में कोई चीज़ नहीं छोड़ी (सब कुछ लिख लिया है)। फिर सब अपने परवर्दिगार के पास जमा किए जाएँगे। (38) और जो लोग हमारी आयतों को झुठलाते हैं वे तो बहरे और गूँगे हो रहे हैं, तरह-तरह की अंधेरियों में हैं,³ अल्लाह तआला जिसको चाहे बेराह कर दें और जिसको चाहें सीधी राह पर लगा दें। (39) आप कहिए कि अपना हाल तो बतलाओ कि अगर तुमपर खुदा का कोई अज़ाब आ पड़े या तुमपर कियामत ही आ पहुँचे तो क्या खुदा के सिवा किसी और को पुकारोगे, अगर तुम सच्चे हो? (40) बल्कि ख़ास उसी को पुकारने लगे, फिर जिसके लिए तुम पुकारो, अगर वह चाहे तो उसको हटा भी दे, और जिन-जिन को तुम शरीक ठहराते हो उन सबको भूल जाओ।⁴ (41) ♦

और हमने और “यानी दूसरी” उम्मतों की तरफ़ भी जो कि आपसे पहले हो चुकी हैं पैग़म्बर भेजे थे, सो हमने उनको तंगदस्ती और बीमारी से पकड़ा ताकि वे ढीले पड़ जाएँ। (42) सो जब उनको हमारी सज़ा पहुँची थी वे ढीले क्यों न पड़े? लेकिन उनके दिल तो सख़्त रहे और शैतान उनके आमाल को उनके ख़याल में सँवार करके दिखलाता रहा। (43) फिर जब वे लोग उन चीज़ों को भूले रहे जिनकी उनको नसीहत की जाती थी तो हमने उनपर हर चीज़ के दरवाज़े खोल दिए,⁵ यहाँ तक कि जब उन चीज़ों पर जो कि उनको मिली थीं वे ख़ूब इतरा गए तो हमने उनको अचानक पकड़ लिया, फिर तो वे बिल्कुल भौचक्के रह गए। (44) फिर ज़ालिम लोगों की जड़ कट गई

(पृष्ठ 236 का शेष) और वे मुबाह काम जो नेक कामों में मददगार हों सब निकल गए, और वे मुबाह काम जो बेफ़ायदा हों और गुनाह व नाफ़रमानी सब दाख़िल रह गए, अगरचे ऐसे मुबाहात यानी जायज़ कामों में गुनाह न हो, लेकिन बेफ़ायदा और बेअसर तो हैं। और ‘लह्व’ और ‘लअ़िब’ के मायने अहले लुगत न करीब-करीब बल्कि एक ही लिखे हैं सिर्फ़ एतिबारी फ़र्क हो सकता है। वह यह कि बेफ़ायदा काम में मशगूल होने के दो असर हैं, एक खुद उसकी तरफ़ मुतवज्जह होना, दूसरे उस तवज्जोह की वजह से फ़ायदेमन्द चीज़ों से बेतवज्जोह हो जाना। वह पहले मामले के एतिबार से ‘लअ़िब’ कहलाता है और दूसरे के एतिबार से ‘लह्व’।

6. तसल्ली के मज़मून का हासिल यह हुआ कि ये जो आपको झुठला रहे हैं, ये हकीकत में अल्लाह तआला और उसकी आयतों को झुठला रहे हैं। इस वजह से कि आप अल्लाह की जानिब से अहकाम पहुँचाने वाले हैं, पस देखने में तो आपको झुठलाना है और हकीकत में जान-बूझकर अल्लाह तआला को झुठलाना है।

1. “फ़ला तकूनन्-न मिनल् जाहिलीन” नसीहत व मुहब्बत के तौर पर है। चुनाँचे तर्जुमा से ज़ाहिर है। और लफ़ज़ “जहल” या “जहालत” से तर्जुमा न करना इस वजह से है कि हमारे मुहावरे में ये अल्फ़ाज़ अपमान करने, बेवकूफ़ ज़ाहिर करने और डॉटने के लिए इस्तेमाल होते हैं इसलिए बेअदबी का गुमान और वहम पैदा करने वाले हैं।

2. यानी कियामत के दिन जमा होने की सिफ़त में।

3. क्योंकि हर कुफ़्र एक जुल्मत यानी अंधेरी है, उनका मुँह मोड़ना जो कि न सुनने और बहरा बनने का हासिल है, एक कुफ़्र है। उनका कुफ़्र भरी बातें बकना जो कि गूँगा होने से मकसूद है, एक कुफ़्र है। और यह खुद ऊई मर्तबा होता है इसलिए बहुत-सी जुल्मते (अंधेरियाँ) हो गईं।

4. पस इसी से समझ लो कि खुदा के सिवा जब कोई कादिर व मुख़्तार नहीं तो इबादत का हक़दार भी उसके सिवा कोई नहीं हो सकता।

5. यानी ख़ूब नेमत व दौलत दी।

और अल्लाह का शुक्र है¹ जो तमाम जहानों का परवर्दिगार है। (45) आप कहिए कि यह बतलाओ कि अगर अल्लाह तआला तुम्हारी सुनने और देखने की कुव्वत बिलकुल ले ले और तुम्हारे दिलों पर मोहर कर दे तो अल्लाह तआला के सिवा और कौन माबूद है कि ये तुमको फिर से दे दे? आप देखिए तो हम किस तरह दलीलों को मुख्तलिफ़ पहलुओं से पेश कर रहे हैं, फिर (भी) ये मुँह मोड़ते हैं। (46) आप कहिए कि यह बतलाओ, अगर तुमपर अल्लाह तआला का अज़ाब आ पड़े चाहे बेख़बरी में या ख़बरदारी में तो क्या सिवाय ज़ालिम लोगों के और भी कोई हलाक किया जाएगा? (47) और हम पैग़म्बरों को सिर्फ़ इस वास्ते भेजा करते हैं कि वे खुशख़बरी दें और डराएँ, फिर जो शख्स ईमान ले आए और दुरुस्ती कर ले, सो उन लोगों को कोई अन्देशा नहीं और न वे ग़मज़दा होंगे। (48) और जो लोग हमारी आयतों को झूठा बतलाएँ उनको अज़ाब लगता है, इस वजह से कि वे दायरे से निकलते हैं।² (49) आप कह दीजिए कि न तो मैं तुमसे यह कहता हूँ कि मेरे पास³ खुदा तआला के ख़ज़ाने हैं और न मैं तमाम ग़ैबों को जानता हूँ, और न मैं तुमसे यह कहता हूँ कि मैं फ़रिश्ता हूँ, मैं तो सिर्फ़ उसकी इत्तिबा कर लेता हूँ जो मेरे पास वद्य आती है।⁴ आप कहिए कि अन्धा और देखने वाला कहीं बराबर हो सकता है? सो क्या तुम ग़ौर नहीं करते? (50) ♦

और ऐसे लोगों को डराइए जो इस बात से अन्देशा रखते हैं⁵ कि अपने रब के पास ऐसी हालत से जमा किए जाएंगे कि ग़ैरुल्लाह में से न कोई उनका मददगार होगा और न कोई शफ़ाअत करने वाला होगा,⁶ इस उम्मीद पर कि वे डर जाएँ। (51) और उन लोगों को न निकालिए जो सुबह व शाम अपने परवर्दिगार की इबादत करते हैं, जिससे ख़ास उसकी रज़ामन्दी का इरादा रखते हैं, उनका हिसाब ज़रा भी आपसे मुताल्लिक और आपका हिसाब ज़रा भी उनसे मुताल्लिक नहीं कि आप उनको निकाल दें, वरना आप नामुनासिब काम करने वालों में हो जाएंगे। (52) और

1. इसलिए कि ऐसे ज़ालिमों का पाप कटा जिनके होने से नहसत ही फैलती।
2. यानी वह अज़ाब जुल्म की वजह से होगा, जैसा कि पहली उम्मतों पर भी इसी वजह से हुआ है। सो लाज़िमी तौर पर ज़ालिमों ही के साथ ख़ास होगा और ज़ालिम तुम हो, पस ख़ास तुमपर ही पड़ेगा और मोमिन लोग बचे रहेंगे। सो तुमको सचेत होना चाहिए और यह ख़्याल भी दिल से निकाल देना चाहिए कि अगर मुसीबत आम हो तो उसका एहसास कम होता है। (क्योंकि यहाँ अज़ाब आम नहीं बल्कि सिर्फ़ ज़ालिमों को होगा)।
3. यानी पैग़म्बरों का असल काम और उसका नतीजा यह है न कि तमाम फ़रमाइशों का पूरा करना। पस इसी कायदे के मुवाफ़िक़ यह रसूल भी है।
4. यानी मेरी कुदरत में।
5. आयत में तीन उमूर-की नफ़ी की गई है। ख़ज़ानों पर कुदरत, इल्मे ग़ैब और मिलिकियत। मकसूद इससे कुफ़्फ़ार के एतिराज़ का दूर करना हो सकता है। यानी तुम जो निशानियों के पेश करने से मेरे रसूल होने को झुठलाते हो तो वह बिलकुल बेमानी है, इसलिए कि रिसालत जिसका मैं दलील के साथ दावेदार हूँ कोई मुहाल अमूर नहीं है। किसी अजीब व ग़रीब बात और मामले जैसे कुदरत, इल्म, मज़कूरा मिलिकियत का तो मैं दावेदार नहीं, जो उसको मुहाल समझकर इनकार करते हो।
6. हशर के मुताल्लिक कुल तीन तरह के आदमी हैं, एक वे जो यकीनी तौर पर उसके सुबूत के मोतकिद हैं, दूसरे वे जो शक में हैं। आयत में इन्हीं दोनों जमाअतों का ज़िक्र है। तीसरे वे जो कि यकीनी तौर पर इसके इनकारी हैं, और डराना अगरचे उनको भी आम है जैसा कि दूसरी आयतों में साफ़ मौजूद है, लेकिन यहाँ मुतलक़ डराना मुराद नहीं बल्कि वह डराना जिसमें ख़ास एहतिमाम हो। सो यह वहाँ ही होगा जहाँ नफ़ा यकीनी हो या नफ़े की उम्मीद हो, जैसा कि पहली और दूसरी किस्म का हाल है। बख़िलाफ़ इस तीसरी किस्म के कि नफ़े की उम्मीद न होने की वजह से उनको डराना सिर्फ़ हुज्जत पूरा करने के लिए होगा, दुश्मनी की वजह से उनमें तवज्जोह की काबलियत ही नहीं, इसलिए यहाँ पहली दो किस्मों की तख़सीस की गई है जैसा कि बाज़ आयतों में नफ़े के यकीनी होने की वजह से सिर्फ़ पहली किस्म ही की तख़सीस भी है।
7. ग़ैर-मोमिनों के लिए शफ़ाअत और ग़ैरुल्लाह की तरफ़ से किसी तरह की मदद होने की यहाँ मुतलक़ तौर पर नफ़ी है। और मोमिनों के लिए अल्लाह का मददगार होना और मकबूल हज़रात का शफ़ाअत करना साबित है।

इसी तरीके पर हमने एक को दूसरे से आजमाइश में डाल रखा है ताकि लोग कहा करें कि क्या ये लोग हैं कि हम सबमें से उनपर अल्लाह ने फज़ल किया है? क्या यह बात नहीं है कि अल्लाह तआला हक पहचानने वालों को खूब जानता है? (53) और ये लोग जब आपके पास आएँ जो कि हमारी आयतों पर ईमान रखते हैं तो यूँ कह दीजिए कि तुमपर सलामती है, तुम्हारे रब ने मेहरबानी फरमाना अपने जिम्मे मुकर्रर कर लिया है कि जो शख्स तुममें से कोई बुरा काम कर बैठे नादानी से फिर वह उसके बाद तौबा कर ले और सुधार रखे तो (अल्लाह तआला की यह शान है कि) वह बड़े मफ़िरत वाले हैं, बड़ी रहमत वाले हैं। (54) और इसी तरह हम आयतों की तफ़सील करते रहते हैं और ताकि मुज़िर्मों का तरीका ज़ाहिर हो जाए।¹ (55) ♦

आप कह दीजिए कि मुझे इससे मना किया गया है कि मैं उनकी इबादत करूँ जिनकी तुम लोग अल्लाह को छोड़कर इबादत करते हो। आप कह दीजिए कि मैं तुम्हारे ख़्यालात की पैरवी न करूँगा, क्योंकि इस हालत में तो मैं बेराह हो जाऊँगा और राह पर चलने वालों में न रहूँगा।² (56) आप कह दीजिए कि मेरे पास तो मेरे रब की तरफ़ से एक दलील है,³ और तुम उसको झुठलाते हो, जिस चीज़ का तुम तकाज़ा कर रहे हो वह मेरे पास नहीं। हुक्म किसी का नहीं सिवाय अल्लाह तआला के, वह (यानी अल्लाह तआला) हक बात को बतला देता है और सबसे अच्छा फैसला करने वाला वही है। (57) आप कह दीजिए कि अगर मेरे पास वह चीज़ होती जिसका तुम तकाज़ा कर रहे हो तो मेरा और तुम्हारा आपसी किस्से का फैसला हो चुका होता, और ज़ालिमों को अल्लाह तआला खूब जानता है।⁴ (58) और उसी के (यानी अल्लाह तआला के) पास हैं ख़जाने तमाम छुपी चीज़ों के, उनको कोई नहीं जानता सिवाय अल्लाह तआला के,⁵ और वह तमाम चीज़ों को जानता है जो कुछ खुशकी में हैं और जो कुछ दरियाओं में हैं, और कोई पत्ता नहीं गिरता मगर वह उसको भी जानता है, और कोई दाना ज़मीन के अन्धेरे वाले हिस्सों में नहीं पड़ता, और न कोई तर और खुशक चीज़ गिरती है मगर ये सब किताबे-मुबीन में हैं।⁶ (59) और वह ऐसा है कि रात में तुम्हारी रूह को एक तरह से कब्ज़ कर देता है,⁷ और जो कुछ दिन में करते हों उसको जानता है, फिर तुमको जगा उठाता है ताकि मुकर्ररा मीयाद “यानी निश्चित समय” पूरी कर दी जाए, फिर उसी की तरफ़ तुमको जाना है, फिर तुमको बतला देगा जो कुछ तुम किया करते थे। (60) ♦

और वही अपने बन्दों के ऊपर ग़ालिब हैं (बरतर् हैं) और तुमपर निगरानी रखने वाले भेजते हैं, यहाँ तक कि

1. और हक व बातिल के वाज़ेह होने से तालिबे हक को हक का पहचानना आसान हो जाए।

2. इस मज़मून का ज़्यादा ताल्लुक तौहीद से था, आगे का मज़मून रिसालत से ज़्यादा मुताल्लिक है।

3. यानी कुरआन मजीद जो कि मेरा मौजिज़ा है, जिससे मेरी तस्दीक होती है।

4. उनके इल्म में जब मुनासिब होगा अज़ाब नज़िल हो जाएगा, चाहे दुनिया में भी जैसे बद्र वगैरह में हलाक किए गए और चाहे आखिरत में कि दोज़ख में जाएँगे। गरज़ न मुझको उसकी कुदरत है न उसके मुनासिब होने का वक़्त मुझको मालूम है और न इसकी ज़रूरत है।

5. इनमें से जिस चीज़ को जिस वक़्त चाहें जुहूर में ले आते हैं, इन चीज़ों में अज़ाब भी आ गया। मतलब यह है कि और किसी को उन पर कुदरत नहीं, और जिस तरह मुकम्मल कुदरत उनके साथ खास है उसी तरह मुकम्मल इल्म भी।

6. किताबे-मुबीन यानी लौहे महफूज़ में हर वह चीज़ जो कियामत तक होने वाली है लिखी है, और ज़ाहिर है कि बिना इल्म के लिखना मुष्किन नहीं है। पस हासिल यह हुआ कि सब चीज़ें अल्लाह तआला के इल्म के घेरे में हैं। और यह न समझो कि अल्लाह तआला की तमाम मालूमात लौहे महफूज़ ही में मुन्हसिर हैं बल्कि उनकी तो कोई इन्तिहा ही नहीं।

7. “रूहे-नफ़सानी” तीन पाक रूहों में से है। इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु ने “अल्लाहु य-तवफ़फ़ल् अन्फु-स” की तफ़सीर में इसको “नफ़से तमीज़” फरमाया है, और “रूहे हैवानी” को जिसके निकलने से मौत आ जाती है “नफ़से हयात” फरमाया है। कुरआन में लफ़्ज़े नफ़्स दोनों को शामिल है, जिस जगह पर जो तफ़सीर मुनासिब होगी वही की जाएगी।

जब तुममें किसी को मौत आ पहुँचती है, उसकी रूह हमारे भेजे हुए कब्ज़ कर लेते हैं, और वे ज़रा भी कोताही नहीं करते।¹ (61) फिर सब अपने हकीकी मालिक अल्लाह के पास लाए जाएँगे। ख़ूब सुन लो कि फैसला उसी का (यानी अल्लाह ही का) होगा, और वह बहुत जल्द हिसाब ले लेगा। (62) आप कहिए कि वह कौन है जो तुमको खुशकी और दरिया की अंधेरियों से उस हालत में नजात देता है कि तुम उसको पुकारते हो आजिज़ी ज़ाहिर करके और चुपके-चुपके, कि अगर आप हमको इनसे नजात दे दें तो हम ज़रूर हक़ पहचानने वालों में से हो जाएँगे। (63) आप कह दीजिए कि खुदा तआला ही तुमको उनसे नजात देता है, और हर ग़म से, तुम फिर भी शिर्क करने लगते हो।² (64) आप कहिए कि इसपर भी वही कादिर है कि तुमपर कोई अज़ाब तुम्हारे ऊपर से भेज दे,³ या तुम्हारे पाँव तले से,⁴ या कि तुमको गिरोह-गिरोह करके सबको भिड़ा दे, और तुम्हारे एक को दूसरे की लड़ाई चखा दे। आप देखिए तो सही हम किस तरह से मुख़्तलिफ़ पहलुओं से दलीलें बयान करते हैं, शायद वे समझ जाएँ। (65) और आपकी कौम उसको झुठलाती है हालाँकि वह यकीनी है। आप कह दीजिए कि मैं तुम पर तैनात नहीं किया गया हूँ। (66) हर ख़बर के ज़ाहिर होने का एक वक़्त है, और जल्द ही तुमको मालूम हो जाएगा (कि यह अज़ाब आया)।⁵ (67) और जब तू उन लोगों को देखे जो हमारी आयतों में ऐब ढूँढ़ रहे हैं तो उन लोगों से किनारा करने वाला हो जा, यहाँ तक कि वे किसी और बात में लग जाएँ। और अगर तुझको शैतान भुला दे⁶ तो याद आने के बाद फिर ऐसे ज़ालिम लोगों के पास मत बैठ। (68) और जो लोग एहतियात रखते हैं उनपर उनकी पूछताछ का कोई असर न पहुँचेगा।⁷ लेकिन उनके ज़िम्मे नसीहत कर देना है शायद कि वे भी एहतियात करने लगे। (69) और ऐसे लोगों से बिल्कुल अलग रह जिन्होंने अपने दीन को लहव-व-लज़िब “यानी खेल-तमाशा” बना रखा है, और दुनियावी ज़िन्दगी ने उनको धोखे में डाल रखा है, और इस कुरआन के ज़रिये से नसीहत भी करता रह ताकि कोई शख्स अपने किरदार के सबब इस तरह न फंस जाए कि अल्लाह के अलावा कोई न उसका मददगार हो न सिफ़ारिश करने वाला, और (यह कैफ़ियत हो कि) अगर दुनिया भर का मुआवज़ा भी दे डाले तब भी उससे न लिया जाए, ये ऐसे ही हैं कि अपने किरदार के सबब फंस गए, उनके लिए पीने के लिए बहुत तेज़ (खोलता हुआ) पानी होगा और दर्दनाक सज़ा होगी अपने कुफ़्र के सबब से।⁸ (70) ♦

1. ग़रज़ मौत नहीं टलती। आयत के ज़ाहिर से इस मक़ाम पर तीन किस्म के फ़रिश्तों का ज़िक्र है। एक आमाज़ लिखने वाले जिनका ज़िक्र इस आयत में है, “व इन्-न अलैकुम् ल-हाफ़िज़ी-न, किरामन् कातिबीन” दूसरे जान की हिफ़ाज़त करने वाले जिनको नुक़सानात से हिफ़ाज़त करने का हुक्म हो और जब तक हुक्म हो, उनका ज़िक्र इस आयत में है “लहू मुअक्किबातुम् मिन्बैनि यदैहि” तीसरे जान निकालने वाले। और दूसरी आयत से मालूम होता है कि यह काम मौत के फ़रिश्ते का है। इसलिए उलमा ने रूहुल्-मआनी में ज़िक्र हुई इन बाज़ रिवायतों की बिना पर कहा है कि ये मौत के फ़रिश्ते के मददगार हैं। साथ रहने और ताल्लुक की वजह से उनकी तरफ़ निस्वत कर दी गई, अल्लाह ही ज़्यादा जानते हैं।
2. ग़रज़ यह कि परेशानी और सख़्ती के वक़्त में तुम्हारे इकरार से तौहीद का हक़ होना साबित हो जाता है, फिर इनकार कब तवज्जोह के काबिल है।
3. जैसे पत्थर या हवा या तूफ़ानी बारिश।
4. जैसे जलजला या गर्क हो जाना।
5. अज़ाब दुनिया और आख़िरत के अज़ाब दोनों को शामिल है, जिसमें जिहाद भी दाख़िल है।
6. यानी ऐसी मज्लिस में बैठने की मनाही याद न रहे।
7. यानी ज़रूरत की वजह से वहाँ जाने वाले गुनाहगार न होंगे।
8. कुछ रिवायतों में आया है कि मुशिरकीन ने मुसलमानों से इस्लाम को छोड़ने की दरख़्वास्त भी की थी। (शेष तफ़सीर पृष्ठ 246 पर)

आप कह दीजिए कि क्या हम अल्लाह के सिवा ऐसी चीज़ की इबादत करें कि वह हमको न नफ़ा पहुँचाए और न हमको नुक़सान पहुँचाए? और क्या हम इसके बाद उल्टे फिर जाएँ कि हमको खुदा तआला ने हिदायत कर दी है? जैसे कोई शख़्स हो कि उसको शैतानों ने कहीं जंगल में बेराह कर दिया हो और वह भटकता फिरता हो,¹ उसके कुछ साथी भी हों कि वे उसको ठीक रास्ते की तरफ़ बुला रहे हों कि हमारे पास आ, आप कह दीजिए कि यकीनी बात है कि सही रास्ता वह खास अल्लाह ही का रास्ता है, और हमको यह हुक्म हुआ है कि हम परवर्दिगारे आलम के पूरे फ़रमाँबर्दार हो जाएँ। (71) और यह कि नमाज़ की पाबन्दी करो और उससे डरो, और वही है जिसके पास तुम सब जमा किए जाओगे। (72) और वही है जिसने आसमानों को और ज़मीन को बाकायदा पैदा किया, और जिस वक़्त वह (यानी अल्लाह तआला) इतना कह देगा कि (हश्) हो जा, बस वह हो जाएगा। ▲ (73) उसका कहना असरदार है, और जबकि सूर में फूँक मारी जाएगी, सारी हुक्मत खास उसी की होगी, वह छुपी हुई और ज़ाहिर चीज़ों का जानने वाला है, वही है बड़ी हिक्मत वाला (और) पूरी ख़बर रखने वाला।² (74) और (वह वक़्त भी याद करने के काबिल है) जब इब्राहीम ने अपने बाप आज़र से फ़रमाया कि क्या तू बुतों को माबूद करार देता है?³ बेशक मैं तुझको और तेरी सारी कौम को खुली ग़लती में देखता हूँ। (75) और हमने ऐसे ही तौर पर इब्राहीम को आसमानों और ज़मीन की मख़्लूक़ात दिखलाई (ताकि वे आरिफ़ हो जाएँ) और ताकि कामिल यकीन करने वालों में से हो जाएँ। (76) फिर जब उनपर रात का अंधेरा छा गया तो उन्होंने एक सितारा देखा तो फ़रमाया कि यह मेरा रब है, सो जब वह छुप गया तो फ़रमाया कि मैं छुप जाने वालों से मुहब्बत नहीं रखता। (77) फिर जब चाँद को चमकता हुआ देखा तो फ़रमाया कि यह मेरा रब है,⁴ सो जब वह छुप गया तो आपने फ़रमाया कि अगर मेरा रब मुझको हिदायत न करता रहे तो मैं गुमराह लोगों में शामिल हो जाऊँ। (78) फिर जब सूरज को चमकता हुआ देखा⁵ तो आपने फ़रमाया कि यह मेरा रब है, यह तो सबसे बड़ा है, सो जब वह छुप गया तो फ़रमाया: ऐ मेरी कौम! बेशक मैं तुम्हारे शिर्क से बेज़ार हूँ।⁶ (79) मैं यक्सू होकर अपना रुख़ उसकी तरफ़ करता हूँ जिसने-

(पृष्ठ 244 का शेष)

अगली आयत में इसका जवाब है, ऊपर “ज़िक़रा” और “ज़क्विर” में हुक्म था कि मुशिरकीन को इस्लाम की तरफ़ बुलाएँ, आगे उनके इस्लाम को छोड़ देने की दावत देने का जवाब है।

1. मिसाल देने में जो शैतानों का राह भुला देना ज़िक़र किया गया है, इससे मालूम हुआ कि शैतान और ख़बीस जिन्न की तरफ़ से कभी-कभी इस किस्म का कब्ऱा जमाना और अफ़आल ज़ाहिर हो सकते हैं।

2. ऊपर शिर्क को बातिल करना और तौहीद को साबित करना मज़कूर था, आगे इसी मज़मून की ताईद में हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के तौहीद की तरफ़ दावत का किस्सा बयान फ़रमाते हैं, और इस वजह से कि अरब वाले इब्राहीम अलैहिस्सलाम को मानते थे, ज़िक़र किए गए मज़मून की ताईद में ज़्यादा कुव्वत हो गई। और इस किस्से में रिसालत के मसले की भी ताईद है कि नुबुव्वत कोई ऐसी अज़ीब व ग़रीब चीज़ नहीं है, पहले से भी अम्बिया होते आए हैं।

3. इन आयतों की तफ़सीर से पहले चन्द ज़रूरी उमूर का लिहाज़ रखना तफ़सीर के समझने में मददगार होगा। अब्बल इब्राहीम अलैहिस्सलाम की कौम के जो हालात कुरआन में ज़िक़र हुए हैं उनसे मालूम होता है कि वह बुत-परस्ती भी करती थी और सितारों को भी दुनिया के कामों में तसर्लूफ़ करने वाला जानती थी। पस वह दो तरीक़े पर मुशिरक थी, बुतों के माबूद होने का एतिकाद रखने और सितारों के रब होने का एतिकाद रखने से, इसी वास्ते इब्राहीम अलैहिस्सलाम के मुनाज़रों में दोनों पर कलाम है। दूसरे इब्राहीम अलैहिस्सलाम होश सँभालने ही के वक़्त से तौहीद के पहचानने वाले और मुहक्किक् थे। तीसरे आपकी कौम खुदा की भी कायल थी या नहीं, दोनों एहतिमाल हैं। (यानी खुदा की कायल हो भी सकती है और नहीं भी)।

4. यानी आपने अपनी कौम से मुखातिब होकर फ़रमाया कि तुम्हारे गुमान के मुवाफ़िक़ यह मेरा और तुम्हारा रब है।

5. चूँकि उस बस्ती में जिसमें बाबिल और हलब भी दाख़िल हैं जो कि इतिहासकारों के मुताबिक़ इस गुफ़्तगू (शेष तफ़सीर पृष्ठ 248 पर)

आसमानों को और ज़मीन को पैदा किया, और मैं शिर्क करने वालों में से नहीं हूँ। (80) और उनसे उनकी कौम ने हुज्जत करना शुरू की। फ़रमाया कि क्या तुम अल्लाह के मामले में मुझसे हुज्जत करते हो, हालाँकि उसने मुझको तरीका बतला दिया है, और मैं उन चीज़ों से जिनको तुम अल्लाह तआला के साथ शरीक बनाते हो नहीं डरता, लेकिन हाँ अगर मेरा परवर्दिगार ही कोई मामला चाहे, मेरा परवर्दिगार हर चीज़ को अपने इल्म में घेरे हुए है।¹ क्या तुम फिर ख़्याल नहीं करते? (81) और मैं उन चीज़ों से कैसे डरूँ जिनको तुमने शरीक बनाया है, हालाँकि तुम इस बात से नहीं डरते कि तुमने अल्लाह तआला के साथ ऐसी चीज़ों को शरीक ठहराया है जिनपर अल्लाह तआला ने कोई दलील नाज़िल नहीं फ़रमाई,² सो उन दो जमाअतों में से अमन का ज़्यादा हक़दार कौन है? अगर तुम ख़बर रखते हो। (82) जो लोग ईमान रखते हैं और अपने ईमान को शिर्क के साथ नहीं मिलाते ऐसों ही के लिए अमन है, और वही राह पर (चल रहे) हैं। (83) ♦

और यह हमारी हुज्जत थी जो हमने इब्राहीम को उनकी कौम के मुक़ाबले में दी थी। हम जिसको चाहते हैं रुतबों में बढ़ा देते हैं, बेशक आपका रब बड़ा हिक़मत वाला, बड़ा इल्म वाला है। (84) और हमने उनको (एक बेटा) इसहाक़ और (एक पोता) याक़ूब दिया, हर एक को (हक़ रास्ते की) हमने हिदायत की, और (इब्राहीम से) पहले ज़माने में हमने नूह को हिदायत की, और उन (इब्राहीम) की औलाद में से दाऊद को और सुलैमान को और अय्यूब को और यूसुफ़ को और मूसा को और हारून को (हक़ रास्ते की हिदायत की थी), और इसी तरह हम नेक काम करने वालों को बदला दिया करते हैं। (85) और ज़करिया को और यहया को और ईसा को और इलियास को (हमने हक़ रास्ते की हिदायत की थी), और ये सब (हज़रात) पूरे शायस्ता “यानी तहज़ीब वाले और अख़्लाक़ व मुरव्वत वाले नेक” लोगों में थे। (86) और फिर इसमाईल को और यसअ़ को और यूनस को और लूत को (हक़ रास्ते की हिदायत की थी) और (इनमें से) हर एक को (उन ज़मानों के) तमाम ज़हान वालों पर हमने (नुबुव्वत से) फज़ीलत दी (87) और साथ ही उनके कुछ बाप-दादों को और कुछ औलाद को और कुछ भाइयों को, और हमने उन (सब) को मक़बूल बनाया और हमने उन सबको सही रास्ते की हिदायत की। (88) अल्लाह की हिदायत वह यही (दीन) है, अपने बन्दों में से जिसको चाहे इसकी हिदायत करता है, और अगर (थोड़ी देर को मान लें कि) ये हज़रात भी शिर्क करते तो जो कुछ ये (आमाल किया) करते थे उनसे सब बेकार हो जाते। (89) ये ऐसे थे कि हमने उन (के मजमूए) को (आसमानी) किताब और हिक़मत (के उलूम) और नुबुव्वत अता की थी, सो अगर

(पृष्ठ 246 का शेष) का मौक़ा था, सितारों की जो मामूल की रफ़्तार है उसके मुताबिक़ यह एक रात में नहीं हो सकता कि चाँद का अपने किनारे से निकलना किसी सय्यारे के छुपने के बाद हो, और फिर सूरज के निकलने से पहले छुप जाए, इसलिए ये तीनों वाकिए एक रात के नहीं हो सकते, या तो दो रात के हैं या तीन रात के। पस दोनों जगह “फलम्मा रआ” में जो “फ़ा” है वह उर्फ़ के एतिबार से मिलाने और एक दूसरे के बाद होने के मायने में है, न कि हकीकी तौर पर मिलाने के लिए।

6. यानी बराअत ज़ाहिर करता हूँ। यूँ एतिकाद के तौर पर तो हमेशा से बेज़ार ही थे।

1. ग़रज़ कुदरत और इल्म दोनों उसी के साथ ख़ास हैं, और तुम्हारे माबूद को न कुदरत है न इल्म है।

2. मतलब यह कि तुमको डरना चाहिए, फिर उल्टा मुझ ही को डराते हो।

ये लोग नुबुव्वत का इनकार करें तो हमने उसके लिए बहुत-से ऐसे लोग मुकर्रर कर दिए हैं जो उसके इनकारी नहीं हैं। (90) ये (हज़रात) ऐसे थे जिनको अल्लाह तआला ने (सब्र की) हिदायत की थी, सो आप भी उन्हीं के तरीके पर चलिए। आप कह दीजिए कि मैं तुमसे इस (कुरआन की तब्लीग) पर कोई मुआवज़ा नहीं चाहता, यह कुरआन तो तमाम जहान वालों के वास्ते सिर्फ एक नसीहत है। (91) ❖

और उन लोगों ने अल्लाह तआला की जैसी क़द्र पहचानना वाजिब थी वैसी क़द्र न पहचानी, जबकि यूँ कह दिया कि अल्लाह ने किसी इनसान पर कोई चीज़ भी नाज़िल नहीं की। आप कहिए कि वह किताब किसने नाज़िल की है जिसको मूसा लाए थे? (जिसकी यह कैफ़ियत है) कि वह नूर है और लोगों के लिए हिदायत है, जिसको तुमने अलग-अलग पन्नों में रख छोड़ा है, जिनको ज़ाहिर कर देते हो और बहुत-सी बातों को छुपाते हो। और तुमको बहुत-सी ऐसी बातें तालीम की गईं जिनको न तुम जानते थे और न तुम्हारे बड़े, आप कह दीजिए कि अल्लाह तआला ने नाज़िल फ़रमाया है फिर उनको उनके मशग़ले में बेहूदगी के साथ लगा रहने दीजिए। (92) और यह भी ऐसी ही किताब है जिसको हमने नाज़िल किया है, जो बड़ी बरकत वाली है, अपने से पहली किताबों की तस्दीक करने वाली है, और ताकि आप मक्का वालों को और उसके आस-पास वालों को डराएँ, और जो लोग आख़िरत का यकीन रखते हैं ऐसे लोग इसपर ईमान ले आते हैं और वे अपनी नमाज़ की पूरी पाबन्दी करते हैं। (93) और उस शख्स से ज़्यादा कौन ज़ालिम होगा जो अल्लाह तआला पर झूठ तोहमत लगाए, या यूँ कहे कि मुझ पर वह्य आती है, हालाँकि उसके पास किसी भी बात की वह्य नहीं आई, और जो शख्स (यूँ) कहे कि जैसा कलाम अल्लाह तआला ने नाज़िल किया है इसी तरह का मैं भी लाता हूँ, और अगर आप उस वक़्त देखें जबकि ये ज़ालिम लोग मौत की सख़्तियों में होंगे और फ़रिश्ते अपने हाथ बढ़ा रहे होंगे: हाँ अपनी जानें निकालो, आज तुमको ज़िल्लत की सज़ा दी जाएगी, इस सबब से कि तुम अल्लाह तआला के ज़िम्मे झूठी बातें बकते थे, और तुम उसकी (यानी अल्लाह तआला की) आयतों से घमण्ड करते थे। (94) और तुम हमारे पास अकेले-अकेले आ गए, जिस तरह हमने तुमको अव्वल बार पैदा किया था और जो कुछ हमने तुमको दिया था उसको अपने पीछे ही छोड़ आए, और हम तो तुम्हारे साथ

1. ऊपर तौहीद का मज़मून मक़सद बनाकर मज़कूर था अगरचे उसके तहत रिसालत के मसले की भी ताईद थी। आगे रिसालत के मसले को मक़सद बनाकर ज़िक्र किया गया है, और इसके नाज़िल होने का सबब यह हुआ था कि एक यहूदी जिसका नाम मालिक बिन सैफ़ था, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और कुछ मज़हबी गुप्तगू होने लगी तो जोश में आकर इस क़द्र मुबालगा किया कि कहने लगा कि किसी इनसान पर अल्लाह तआला ने कोई किताब नाज़िल नहीं की। एक रिवायत में है कि यहूद ने कहा कि खुदा की क़सम! आसमान से कोई किताब अल्लाह तआला ने नाज़िल नहीं की, इसपर यह आयत नाज़िल हुई।

2. यह कहना क़द्र न पहचानना इसलिए है कि इससे नुबुव्वत के मसले का इनकार लाज़िम आता है, और नुबुव्वत का इनकार करने वाला अल्लाह तआला को झुठलाता है। और हक़ की तस्दीक़ वाजिब है, पस इसमें वाजिब क़द्र पहचानने में खलल डालना हुआ।

3. “तज्ज़लूनहू कराती-स” से तो यही ज़ाहिर होता है कि हर मज़मून के पन्ने अलग कर रखे थे, और बाज़ का ऐसा कर लेना कुछ ताज़्जुब की बात भी नहीं। और अगर “कराती-स” से वह मुराद लिया जाए जो पन्नों में है तो मायने यह हो सकते हैं कि अपने ज़ेहन में तौरात के मुख्तलिफ़ हिस्से तजवीज़ कर रखे थे, जिनमें से बाज़ मज़ामीन को जैसे मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तारीफ़ व सिफ़ात को छुपाते थे और उसकी और तावीलें कर देते थे, और अल्लाह ही ज़्यादा जानते हैं। मतलब यह कि जिस तौरात कि यह हालत है कि उसको अव्वल तो तुम मानते हो, दूसरे नूर व हिदायत होने की वजह से मानने के काबिल भी है, तीसरे हर वक़्त तुम्हारे इस्तेमाल में है अगरचे वह इस्तेमाल शर्मनाक है, लेकिन उसकी वजह से इनकार की गुन्जाइश तो नहीं रही, चौथे तुम्हारे हक़ में वह बड़ी नेमत और एहसान की चीज़ है, उसी की बदौलत आलिम बने बैठे हो, इस हैसियत से भी उसमें इनकार की गुन्जाइश नहीं। यह बताओ कि उसको किसने नाज़िल किया है।

तुम्हारे उन शफ़ाअत करने वालों को नहीं देखते जिनके बारे में तुम दावे रखते थे कि वे तुम्हारे मामले में शरीक हैं। वाकई तुम्हारा आपस में तो ताल्लुक ख़त्म हो गया, और वह तुम्हारा दावा सब तुमसे गया-गुज़रा हुआ।¹ (95) ❖

बेशक अल्लाह तआला फाड़ने वाला है दाने और गुठलियों को,² वह जानदार (चीज़) को बेजान (चीज़) से निकाल लाता है³ और वह बेजान (चीज़) को जानदार (चीज़) से निकालने वाला है,⁴ अल्लाह यही है।⁵ सो तुम कहाँ उल्टे जा रहे हो? (96) वह सुबह का निकालने वाला है, और उसने रात को राहत की चीज़ बनाई है, और सूरज और चाँद (की रफ़्तार) को हिसाब से रखा है।⁶ यह ठहराई हुई बात है ऐसी ज़ात की जो कि कादिर है, बड़े इल्म वाला है। (97) और वह (अल्लाह) ऐसा है जिसने तुम्हारे (फायदे के) लिए सितारों को पैदा किया ताकि तुम उनके ज़रिये से खुशकी और दरिया के अंधेरों में रास्ता मालूम कर सको, बेशक हमने ख़ूब खोल-खोलकर दलीलें बयान कर दी हैं, उन लोगों के लिए जो ख़बर रखते हैं। (98) और वह (अल्लाह) ऐसा है जिसने तुम (सब) को (असल में) एक शख्स से पैदा किया, फिर एक जगह ज़्यादा रहने की है और एक जगह थोड़ा रहने की है, बेशक हमने ख़ूब खोल-खोलकर दलीलें बयान कर दी हैं, उन लोगों के लिए जो समझ-बूझ रखते हैं। (99) और वह ऐसा है जिसने आसमानों से पानी बरसाया, फिर हमने उसके ज़रिये से हर किस्म के पेड़-पौधों को निकाला, फिर हमने उससे हरी डाली निकाली कि उससे हम ऊपर-तले चढ़े हुए दाने निकालते हैं, और खजूर के दरख़्तों से यानी उनके गुप्फे में से गुच्छे निकलते हैं, जो (बोझ के मारे) नीचे को लटक जाते हैं, और उसी पानी से हमने अंगूरों के बाग़ और जैतून और अनार के दरख़्त पैदा किए जो कि एक-दूसरे से मिलते-जुलते होते हैं और एक-दूसरे से मिलते-जुलते नहीं होते। ज़रा हर एक के फल को तो देखो जब वह फलता है, और (फिर) उसके पकने को देखो,⁷ उनमें (भी तौहीद की) दलीलें (मौजूद) हैं उन लोगों के लिए जो ईमान (लाने की फ़िक्र) रखते हैं।⁸ (100) और उन लोगों ने शैतानों को अल्लाह का शरीक करार दे रखा है, हालाँकि उन लोगों को खुदा ने पैदा किया है, और उन लोगों ने अल्लाह के हक़ में बेटे और बेटियाँ बिना सनद तराश रखी हैं,⁹ वह उन बातों से पाक और बरतर है जिनको ये लोग बयान करते हैं। (101) ❖

1. ऊपर रिसालत के मसले की तहकीक मय उसके मुताल्लिकात के थी, और उससे ऊपर तौहीद का मसला मज़कूर था। आगे फिर तौहीद की तरफ़ वापसी है, और उसके साथ इस्तिदलाल में अपनी नेमतों का ज़िक्र और अपने नेमत देने वाला होने का भी बयान है ताकि शिर्क का फ़ितरी तौर पर बुरा होना भी जाहिर हो जाए।
2. यानी ज़मीन में दबाने के बाद जो दाना या गुठली फूटती है तो यह अल्लाह ही का काम है।
3. जैसे नुतुफ़े (वीर्य के क़तरे) से आदमी पैदा होता है।
4. जैसे आदमी के बदन से नुतुफ़ा (वीर्य की बूँद) जाहिर होता है।
5. जिसकी ऐसी कुदरत है।
6. यानी उनकी रफ़्तार मुक़र्रर और एक निज़ाम के तहत (व्यवस्थित) है, जिससे वक़्तों के मुक़र्रर करने और पाबन्दी में सहूलत हो।
7. इन मज़ामीन में एक अजीब तरतीब की रियायत रखी गई है। वह यह कि यहाँ कायनात की तीन किस्में ज़िक्र की गयी हैं: सिफ़लियात (यानी नीचे की चीज़ें), उलुवियात (बुलन्दी की चीज़ें), फ़िज़ाई कायनात। और शुरू किया नीचे की चीज़ों से कि वे हमसे ज़्यादा करीब हैं, और फिर उसके दो हिस्से किए, एक पेड़-पौधों का बयान, दूसरे जानदार चीज़ों का बयान, फिर फ़िज़ाई कायनात का ज़िक्र किया जैसे सुबह व रात, फिर बुलन्दी की चीज़ों का ज़िक्र किया जैसे सूरज व चाँद और सितारे। फिर चूँकि नीचे की चीज़ों का ज़्यादा मुशाहदा होता है इसलिए इसको दोबारा लाकर इसपर ख़त्म फरमाया कि पहले वे मुख़्तसर तौर पर मज़कूर थे अब तफ़सील से ज़िक्र किए गए। लेकिन तफ़सील की तरतीब में मुख़्तसर बयान का उल्टा कर दिया गया कि जानदारों के बयान को पहले लाया गया और पेड़-पौधों के बयान को बाद में लाया गया।
8. ऊपर तौहीद की दलीलों का ज़िक्र था, आगे वाज़ेह तौर पर तौहीद को साबित करने (शेष तफ़सीर पृष्ठ 254 पर)

वह आसमानों और ज़मीन का बनाने वाला है, उसके (यानी अल्लाह के) औलाद कहाँ हो सकती है? हालाँकि उसकी कोई बीवी तो है नहीं, और अल्लाह तआला ने हर चीज़ को पैदा किया और वह हर चीज़ को ख़ूब जानता है। (102) यह है अल्लाह तुम्हारा रब, उसके सिवा कोई इबादत के लायक नहीं, हर चीज़ का पैदा करने वाला है, तो तुम उसकी इबादत करो, और वह हर चीज़ का कारसाज़ है।¹ (103) उसको तो किसी की निगाह नहीं घेर सकती और वह सब निगाहों को घेर लेता है, और वही बड़ा बारीक देखने वाला, ख़बर रखने वाला है। (104) अब बिला शुब्हा तुम्हारे पास तुम्हारे रब की जानिब से हक़ देखने के ज़राए “यानी साधन” पहुँच चुके हैं, सो जो शख्स देख लेगा वह अपना फ़ायदा करेगा, और जो शख्स अन्धा रहेगा वह अपना नुक़सान करेगा, और मैं तुम्हारा निगराँ नहीं हूँ। (105) और हम इस तौर पर दलाइल को मुख़्तलिफ़ पहलुओं से बयान करते हैं (ताकि आप सबको पहुँचा दें) और ताकि ये यूँ कहें कि आपने किसी से पढ़ लिया है, और ताकि हम उसको समझदारों के लिए ख़ूब ज़ाहिर कर दें। (106) आप खुद इस रास्ते पर चलते रहिए जिसकी वजह आपके रब की तरफ़ से आपके पास आई है, अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक नहीं, और मुशिरकों की तरफ़ ख़्याल न कीजिए। (107) और अगर अल्लाह तआला को मन्ज़ूर होता तो ये शिर्क न करते, और हमने आपको उनका निगराँ नहीं बनाया और न आप उनपर मुख़्तार हैं।² (108) और उनको ग़ाली मत दो जिनकी ये लोग खुदा को छोड़कर इबादत करते हैं, (यानी उनके माबूदों को क्योंकि) फिर वे जहालत की वजह से हद से गुज़र कर अल्लाह तआला की शान में गुस्ताख़ी करेंगे, हमने इसी तरह हर तरीक़े वालों को उनका अमल पसन्दीदा बना रखा है,³ फिर अपने रब ही के पास उनको जाना है, सो वह उनको बतला देगा जो कुछ भी वे किया करते थे। (109) और उन (इनकार करने वाले) लोगों ने अपनी कस्मों में बड़ा ज़ोर लगाकर अल्लाह की कसम खाई कि अगर उनके पास कोई निशानी आ जाए तो वे ज़रूर ही उसपर ईमान ले आएँगे। आप (जवाब में) कह दीजिए कि निशानियाँ सब खुदा तआला के कब्ज़े में हैं, और तुमको इसकी क्या ख़बर (बल्कि हमको ख़बर है) कि वे निशान जिस वक़्त आ जाएँगे, ये लोग जब भी ईमान न लाएँगे।⁴ (110) और हम भी उनके दिलों और निगाहों को फेर देंगे⁵ जैसा कि ये लोग उसपर पहली बार ईमान नहीं लाए और हम उनको उनकी सरकशी में हैरान रहने देंगे। (111) ♦

(पृष्ठ 252 का शेष)

और शिर्क को बातिल करने का बयान है।

9. जैसे ईसाई लोग हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम को और कुछ यहूदी हज़रत उज़ैर अलैहिस्सलाम को खुदा का बेटा और अरब के मुशिरक फ़रिश्तों को खुदा की बेटियाँ कहते थे।

1. गरज़ ख़ालिफ़ भी वही, जानने वाला भी वही, वकील भी वही और ये सब उमूर इसका तकाज़ा करते हैं कि माबूद भी वही हो।

2. ऊपर के मज़ामीन में मुशिरकीन के तरीक़े का बातिल होना और साथ ही ज़िक्र हुए मज़ामीन के साथ उसकी तब्तीग़ का हुक्म भी किया गया है। आगे मुशिरकीन के बातिल माबूदों को बुरा-भला कहने से मुसलमानों को मना फरमा कर तब्तीग़े-दीन की हदें कायम करते हैं, जिसका हासिल यह है कि ग़ैर-क़ौम से मुनाज़रा करना तो तब्तीग़ का हिस्सा है लेकिन ग़ाली-ग़लोच और दिल दुखाने ग़ाली बातें उनके हक़ में कहना जिनका वे एहतिराम करते हैं मना है। सबब यह है कि इस तरह वे भी हमारे माबूद या रसूलों और काबिले एहतिराम शख्सियतों की शान में गुस्ताख़ी करेंगे, तो गोया उसके सबब हम हुए।

★ बुतों को बुरा कहना अपने आपमें जायज़ है मगर जब वह ज़रिया बन जाए एक हराम काम यानी अल्लाह तआला की शान में गुस्ताख़ी का तो वह भी मना और ना-पसन्दीदा हो जाएगा। इससे शरीअत का एक कायदा साबित हुआ कि जब कोई जायज़ काम या मामला हराम का सबब बन जाए तो वह भी हराम हो जाता है, और कुरआन मजीद की बाज़ आयतों में जो बातिल माबूदों की तहकीर (अपमान) मज़कूर है वह बुरा-भला कहने के तौर पर नहीं, बल्कि मुनाज़रे में बतौर मक़सद की तहकीक़ व इस्तिदलाल और मुख़्तलिफ़ पर इल्ज़ाम रखने के लिए है जो मुनाज़रों में इस्तेमाल होता है, और हालात से मुखातब को फ़र्क़ (शेष तफ़सीर पृष्ठ 256 पर)

आठवाँ पार: व लौ अन्नना

सूर: अन्आम (आयत 112 से 166)

और अगर हम उनके पास फ़रिश्तों को भेज देते और उनसे मुर्दे बातें करने लगते और हम (ग़ैब में) मौजूद तमाम चीज़ों को उनके पास उनकी आँखों के सामने लाकर जमा कर देते तब भी ये लोग ईमान न लाते, हाँ अगर खुदा ही चाहे (तो और बात है), लेकिन उनमें से अक्सर लोग जहालत की बातें करते हैं। (112) और इसी तरह हमने हर नबी के लिए दुश्मन बहुत-से शैतान पैदा किए, कुछ आदमी और कुछ जिन्न, जिनमें से बाज़े दूसरे बाज़ों को चिकनी-चुपड़ी बातों का वस्वसा डालते रहते थे ताकि उनको धोखे में डाल दें। और अगर तुम्हारा परवर्दिगार चाहता तो ये ऐसे काम न कर सकते, सो उन लोगों को और जो कुछ ये बोहतान लगा रहे हैं उसको आप रहने दीजिए। (113) और ताकि उसकी तरफ़ उन लोगों के दिल माइल हो जाएँ जो आख़िरत पर यकीन नहीं रखते, और ताकि उसको पसन्द कर लें और ताकि उन उमूर के करने वाले हो जाएँ जिनको वे करते थे। (114) तो क्या अल्लाह तआला के सिवा किसी और फैसला करने वाले को तलाश करूँ? हालाँकि वह ऐसा है कि उसने एक कामिल किताब तुम्हारे पास भेज दी है, उसकी हालत यह है कि उसके मज़ामीन ख़ूब साफ़-साफ़ बयान किए गए हैं, और जिन लोगों को हमने किताब दी है वे इस बात को यकीन के साथ जानते हैं कि यह (कुरआन) आपके रब की तरफ़ से हक़ के साथ भेजा गया है, सो आप शुब्हा करने वालों में न हों। (115) और आपके रब का कलाम हकीकत और एतिदाल के एतिबार से कामिल है, उसके कलाम का कोई बदलने वाला नहीं, और वे ख़ूब सुन रहे हैं, ख़ूब जान रहे हैं। (116) और दुनिया में अक्सर लोग ऐसे हैं कि अगर आप उनका कहना मानने लें तो वे आपको अल्लाह की राह से बेराह कर दें,¹ वे सिर्फ़ बेअसल ख़्यालात पर चलते हैं और बिलकुल ख़्याली बातें करते हैं।² (117) यकीनन आपका रब उसको ख़ूब जानता है जो उसकी राह से बेराह हो जाता है, और वह उनको भी ख़ूब जानता है जो उसकी राह पर चलते हैं। (118) सो जिस जानवर पर अल्लाह का नाम लिया जाए उसमें से खाओ³ अगर तुम उसके अहकाम पर ईमान रखते हो⁴ (119) और तुमको कौन-सी चीज़ इसका सबब हो

(पृष्ठ 254 का शेष)

मालूम हो जाता है कि तहकीक़ मंकसूद है या अपमान। अव्वल जायज़ है दूसरा नाजायज़।

3. यानी ऐसे असबाब जमा हो जाते हैं कि उनकी वजह से हर एक को अपना तरीका पसन्द होता है, इससे मालूम हुआ कि यह जहान असल में आजमाइश का है, पस इसमें सज़ा ज़रूरी नहीं।

4. “लयुअमिनुन्-न बिहा” में कुफ़ार के कौल की नक़ल है और “इन्मल् आयातु अिन्दल्लाहि” में उनका जवाब है, और “व मा युशिअरुकुम्” से आख़िर तक मुसलमानों को तंबीह और खिताब है। जवाब का हासिल यह है कि रसूल नुबुव्वत के दावेदार हैं और मोजिज़ात इस दावे की दलील हैं और मुद्दई के ज़िम्मे अक्ली कायदे के मुताबिक़ मुतुलक़ दलील का कायम करना ज़रूरी है, किसी खास दलील का मुतैयन करना ज़रूरी नहीं, इसलिए इन इनकार करने वालों को नई निशानियों के तलब करने का हक़ न था, हाँ पेश की हुई दलीलों पर बहस व सवालात करें तो उसका जवाब खुद या अपने किसी नायब के ज़रिये मुद्दई के ज़िम्मे है, जिसके लिए इस्लाम के हक़ होने का हर मुद्दई अब भी आमादा है।

5. इससे यह शुब्हा न किया जाए कि अल्लाह तआला ही ने उनको ख़राब कर दिया फिर पकड़ व इल्ज़ाम क्यों, इसलिए कि इस फेर देने का सबब उनका मुँह मोड़ना है। यह नहीं कि उनके दिल हक़ की तरफ़ पहले ही से मुतवज्जह हों और फेर फेर दिया गया हो, खुदा की पना हरगिज़ ऐसा नहीं, बल्कि तवज्जोह के साथ तो यह वायदा है कि “वल्लज़ी-न जाहदू फीना ल-नहदियन्नुहुम् सुबु-लना” (यानी जो हमारे रास्ते में मशक्कतें बर्दाश्त करते हैं हम ज़रूर उनको अपने कुर्ब व सवाब यानी जन्नत के रास्ते दिखा देंगे)।

1. “ला तकूनन्-न” और “इन तुतिअ.....” में फ़ैअल की निस्बत जो रसूलुल्लाह सल्ल. (शेष तफ़सीर पृष्ठ 258 पर)

सकती है कि तुम ऐसे जानवर में से न खाओ जिसपर अल्लाह का नाम लिया गया हो, हालाँकि अल्लाह तआला ने उन सब जानवरों की तफ़सील बतला दी है जिनको तुमपर हराम किया है, मगर जब तुमको सख़्त ज़रूरत पड़ जाए तो वे भी हलाल हैं, और यह यकीनी बात है कि बहुत-से आदमी अपने ग़लत ख्यालात से विला किसी सनद के गुमराह करते हैं। इसमें कोई शुब्हा नहीं कि आपका रब हद से निकल जाने वालों को ख़ूब जानता है। (120) और तुम ज़ाहिरी गुनाह को भी छोड़ो और बातिनी गुनाह को भी (छोड़ो), बिला शुब्हा जो लोग गुनाह कर रहे हैं उनको उनके किए की जल्द ही सज़ा मिलेगी। (121) और उन (जानवरों) में से मत खाओ जिनपर अल्लाह का नाम न लिया गया हो, और यह नाफ़रमानी (की बात) है,¹ और यकीनन शयातीन अपने दोस्तों को तालीम कर रहे हैं, ताकि ये तुमसे (बेकार) झगड़ा करें। और अगर (खुदा न करे) तुम उन लोगों की इताअत करने लगे तो यकीनन तुम मुशिरक हो जाओ।² (122) ❖

ऐसा शख्स जो कि पहले मुदा था³ फिर हमने उसको ज़िन्दा बना दिया,⁴ और हमने उसको एक ऐसा नूर दे दिया कि वह उसको लिए हुए आदमियों में चलता फिरता है,⁵ क्या उस शख्स की तरह हो सकता है जिसकी हालत यह है कि वह अंधेरियों में है, उनसे निकलने ही नहीं पाता, इसी तरह काफ़िरों को उनके आमाल अच्छे मालूम हुआ करते हैं।⁶ (123) और इसी तरह हमने हर बस्ती में वहाँ के रईसों 'यानी बड़े लोगों और सरदारों' ही को जुर्मों का करने वाला बनाया ताकि वे लोग वहाँ शरारतें किया करें,⁷ और वे लोग अपने ही साथ शरारत कर रहे हैं⁸ और उनको ज़रा ख़बर नहीं। (124) और जब उनको कोई आयत पहुँचती है तो यूँ कहते हैं कि हम हरगिज़ ईमान न लाएँगे जब तक कि हमको भी ऐसी ही चीज़ (न) दी जाए जो अल्लाह के रसूलों को दी जाती है।⁹ उस मौके को तो खुदा ही ख़ूब जानता है जहाँ अपना पैग़ाम भेजता है, जल्द ही उन लोगों को जिन्होंने यह जुर्म किया है खुदा के पास पहुँचकर ज़िल्लत पहुँचेगी, और उनकी शरारतों के मुकाबले में सख़्त सज़ा। (125) सो जिस शख्स को अल्लाह तआला रास्ते पर डालना चाहते हैं उसके सीने को¹⁰ इस्लाम के लिए खोल देते हैं, और जिसको बेराह रखना चाहते हैं उसके सीने को तंग, बहुत तंग कर देते हैं, जैसे कोई आसमान में चढ़ता हो,¹¹ इसी तरह अल्लाह ईमान न लाने वालों पर फिटकार डालता है। (126)

(पृष्ठ 256 का शेष)

की तरफ़ की गई है, इससे सुनाना औरों को मन्ज़ूर है। आपकी तरफ़ निस्वत करने से मुवाला हो गया कि जब आपको वावज़ूद इसके कि इसका इम्क़ान ही नहीं कि आप ग़ैरुल्लाह की इताअत करें, ऐसा कहा गया तो दूसरों की क्या हस्ती है, जैसा कि "अव्दगी" में भी ज़ाहिरन निस्वत आपकी तरफ़ है और मकसूद यह है कि तुम किसी और को तलाश करते हो, जिसका सबब मुनाज़रे में नमी का अन्दाज़ इख़्तियार करना है जो दावत में ज़्यादा मुफ़ीद है।

2. यानी अक़ीदों में वे महज़ बेअसल ख्यालात पर चलते हैं, और गुफ़्तगू में बिलकुल ख्याली और अन्दाज़े की बातें करते हैं।

3. ऊपर "व इन् तुतिअ....." में गुमराह लोगों की पैरवी से बिलकुल मना फ़रमाया था, अब एक वाकिए की ज़रूरत के सबब एक ख़ास मामले में पैरवी करने से मना फ़रमाते हैं, और वह ख़ास मामला ज़िद्द किए गए और ग़ैर-ज़िद्द किए गए जानवर के हलाल और हराम होने का मामला है। और वह वाक़िआ यह है कि कुफ़्फ़ार ने मुसलमानों को यह शुब्हा डालना चाहा कि अल्लाह के मारे हुए जानवर को तो ख़ाते नहीं हो और अपने मारे हुए यानी ज़िद्द किए हुए को ख़ाते हो। बाज़ मुसलमानों ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में यह शुब्हा नक़ल किया, उसपर ये आयतें "ल-मुशिरकून" तक नाज़िल हुई।

4. क्योंकि हलाल को हराम जानना ख़िलाफ़े ईमान है।

1. यानी "मा लम् युज़करिस्मुल्लाहि अलैहि" का खाना नाफ़रमानी है।

2. यानी उनकी इताअत ऐसी बुरी चीज़ है कि उसकी तरफ़ ध्यान लगाने से भी बचना चाहिए।

3. यानी गुमराह था।

4. यानी मुसलमान बना दिया।

5. यानी ईमान दे दिया जो हर वक़्त उसके साथ रहता है, जिससे वह सब नुक़सानों (शेष तफ़सीर पृष्ठ 260 पर)

और यही आपके रब का सीधा रास्ता है।¹ हमने नसीहत हासिल करने वालों के वास्ते इन आयतों को साफ-साफ बयान कर दिया।² (127) उन लोगों के वास्ते उनके रब के पास सलामती का घर है, और वह (यानी अल्लाह तआला) उनसे उनके आमाल की वजह से मुहब्बत रखता है। (128) और जिस दिन अल्लाह तआला तमाम मख्लूकों को जमा करेंगे (और कहेंगे) ऐ जिन्नात की जमाअत! तुमने इनसानों (को गुमराह करने) में बड़ा हिस्सा लिया। जो इनसान उनके साथ ताल्लुक रखने वाले थे वे (इकरार के तौर पर) कहेंगे कि ऐ हमारे परवर्दिगार! हममें एक ने दूसरे से फायदा हासिल किया था, और हम अपनी इस मुकर्ररा मीयाद “यानी निश्चित समय” तक आ पहुँचे जो आपने हमारे लिए मुअय्यन “यानी निर्धारित” फरमाई थी (यानी कियामत)। वह (यानी अल्लाह तआला सारे काफिर जिन्न और काफिर इनसानों से) फरमाएँगे कि तुम सबका ठिकाना दोज़ख है, जिसमें हमेशा-हमेशा को रहोगे। हाँ अगर खुदा ही को मन्ज़ूर हो (तो दूसरी बात है)। बेशक आपका रब बड़ा हिक्मत वाला, बड़ा इल्म वाला है।³ (129) और इसी तरह हम बाज़ कुप्फार को बाज़ के करीब रखेंगे उनके आमाल के सबब। (130) ♦

ऐ जिन्नात और इनसानों की जमाअत! क्या तुम्हारे पास तुम्ही में से पैगम्बर नहीं आए थे? जो तुमसे मेरे अहकाम बयान किया करते थे, और तुमको इस आज के दिन की खबर दिया करते थे। वे सब अर्ज़ करेंगे कि हम अपने ऊपर (जुर्म का) इकरार करते हैं, और उनको दुनियावी जिन्दगानी ने भूल में डाल रखा है, और ये लोग इकरार करेंगे कि वे काफिर थे। (131) यह इस वजह से है कि आपका रब किसी बस्ती वालों को कुफ़्र के सबब ऐसी हालत में हलाक नहीं करता कि उस बस्ती के रहने वाले बेखबर हों।⁴ (132) और हर एक के लिए दर्जे हैं उनके आमाल के सबब, और आपका रब उनके आमाल से बेखबर नहीं है। (133) और आपका रब बिलकुल ग़नी है, रहमत वाला है,⁵ अगर वह चाहे तो तुम सबको उठा ले और तुम्हारे बाद जिसको चाहे तुम्हारी जगह आबाद कर दे, जैसा कि तुमको एक-दूसरी कौम की नस्ल से पैदा किया है। (134) जिस चीज़ का तुमसे वायदा किया जाता है वह बेशक आने वाली चीज़ है,⁶ और तुम अज़िज़ नहीं कर सकते। (135) आप यह फ़रमा दीजिए कि ऐ मेरी कौम! तुम अपनी हालत पर अमल करते रहो, मैं भी अमल कर रहा हूँ। सो अब जल्दी ही तुमको मालूम हो जाता है कि (उस जहान का) अन्जामकार किसके लिए नफ़ा देने वाला

(पृष्ठ 258 का शेष) जैसे गुमराही वगैरह से महफूज़, मामून और बेफ़िक्र है।

6. चुनौचे इसी वजह से ये मक्का के सरदार लोग जो आपसे बेकार फरमाइशें और शुब्हात व झगड़े पेश करते रहते हैं, अपने कुफ़्र को अच्छा ही समझकर उसपर अड़े हुए हैं।

7. जिससे उनका सज़ा का हक़दार होना ख़ूब साबित हो जाए।

8. क्योंकि उसका वबाल तो खुद-उनको ही भुगतना पड़ेगा।

9. इस कौल का बहुत बड़ा जुर्म होना ज़ाहिर है कि झुठलाने, दुश्मनी, घमण्ड और गुस्ताखी सब को शामिल है।

10. यानी दिल को।

11. यानी चढ़ना चाहता हो और चढ़ा नहीं जाता, और जी तंग होता है, और मुसीबत का सामना होता है।

1. यानी इस्लाम।

2. ताकि वे इसके मोजिज़ा होने से इसकी तस्दीक करें और फिर इसके मज़ामीन पर अमल करके नजात हासिल करें, यही तस्दीक व अमल सीधा रास्ता है, बख़िलाफ़ उनके जिनको नसीहत हासिल करने की फ़िक्र ही नहीं। उनके वास्ते न यह काफी है न दूसरी दलीलें काफी हैं।

3. इल्म से सबके जराइम मालूम करता है और हिक्मत से मुनासिब सज़ा देता है।

4. इसलिए रसूलों को भेजते हैं ताकि उनको जराइम की इत्तिहा हो जाए, फिर जिसको अज़ाब हो उसका हक़दार होने की वजह से हो।

5. वह रसूलों को कुछ इसलिए नहीं भेजता कि नज़्जु बिल्लाह (अल्लाह की पनाह) वह इबादत का (शेष तफ़सीर पृष्ठ 262 पर)

होगा। यह यकीनी बात है कि हक-तल्फी करने वालों को कभी फ़लाह “यानी कामयाबी” न होगी।¹ (136) और (अल्लाह तआला ने) जो खेती और मवेशी पैदा किए हैं, उन लोगों ने उनमें से कुछ हिस्सा अल्लाह का मुकर्रर किया और अपने गुमान के मुताबिक कहते हैं कि यह तो अल्लाह का है और यह हमारे माबूदों का है, फिर जो चीज़ उनके माबूदों की होती है वह तो अल्लाह की तरफ नहीं पहुँचती और जो चीज़ अल्लाह की होती है वह उनके माबूदों की तरफ पहुँच जाती है,² उन्होंने क्या बुरी तजवीज़ निकाल रखी है। (137) और इसी तरह बहुत-से मुशिरकों के ख़्याल में उनके माबूदों ने अपनी औलाद के क़त्ल करने को अच्छा और पसन्दीदा बना रखा है ताकि वे उनको बर्बाद करें और ताकि उनके तरीके को ख़ल्ल-मल्ल कर दें।³ और अगर अल्लाह तआला को मन्ज़ूर होता तो ये ऐसा काम न करते। तो आप उनको और जो कुछ ये ग़लत बातें बना रहे हैं, यूँ ही रहने दीजिए। (138) और वे अपने (बातिल) ख़्याल पर यह भी कहते हैं कि ये (मख़सूस) मवेशी हैं और (मख़सूस) खेत हैं, जिनका इस्तेमाल हर शख्स को जायज़ नहीं, उनको कोई नहीं खा सकता सिवाय उनके जिनको हम चाहें,⁴ और कहते हैं कि ये (मख़सूस) मवेशी हैं जिनपर सवारी या बोझ लादने का काम हराम कर दिया गया है,⁵ और (मख़सूस) मवेशी हैं जिनपर ये लोग अल्लाह का नाम नहीं लेते, (ये सब बातें) सिर्फ़ अल्लाह पर बोहतान बाँधने के तौर पर (कहते) हैं⁶ अभी अल्लाह तआला उनको उनके बोहतान बाँधने की सज़ा दिए देता है (139) और वे (यूँ भी) कहते हैं कि जो चीज़ उन मवेशियों के पेट में (से निकलती) है⁷ वह ख़ालिस हमारे मर्दों के लिए है और हमारी औरतों पर हराम है, और अगर वह (पेट का निकला हुआ वच्चा) मुर्दा है तो उस (से नफ़ा उठाने के जायज़ होने) में (मर्द व औरत) सब बराबर हैं,⁸ अभी अल्लाह तआला उनको उनकी ग़लत-बयानी की सज़ा दिये देता है। बेशक वह बड़ा हिक्मत वाला है, बड़ा इल्म वाला है।⁹ (140) वाकई वे लोग ख़राबी में पड़ गए जिन्होंने अपनी औलाद को महज़ बेवकूफी की वजह से बिला किसी सनद के क़त्ल कर डाला, और जो (हलाल) चीज़ें उनको अल्लाह तआला ने खाने-पीने को दी थीं उनको हराम कर लिया महज़ अल्लाह पर तोहमत बाँधने के तौर पर, बेशक ये लोग गुमराही में पड़ गए और कभी राह पर चलने वाले नहीं हुए।¹⁰ ♦ (141) ♦

(पृष्ठ 260 का शेष) मोहताज है, वह तो बिल्कुल ग़नी है, बल्कि इसलिए भेजता है कि वह रहमत वाला भी है। अपनी रहमत से रसूलों को भेजा ताकि उनके ज़रिये से लोगों को फ़ायदेमन्द और नुक़सान देने वाली चीज़ें मालूम हो जाएँ, और वे नफ़ा देने वाली चीज़ों से फ़ायदा उठाएँ और नुक़सान देने वाली चीज़ों से महफूज़ रहें, इसमें बन्दों ही का नफ़ा है।

6. यानी क्रियामत व अज़ाब।

1. ऊपर मुशिरकीन के कुफ़्रिया व शिक्रिया एतिकादों की जहालतों का बयान था, आगे उनकी बाज़ अमली जहालतों का बयान है, जिसका मन्शा शिक्र व कुफ़्र था।

2. ग़ल्ले और फल में से कुछ हिस्सा अल्लाह के नाम का निकालते और कुछ बुतों और जिन्नात के नाम का। फिर अगर इत्तिफ़ाक़ से अल्लाह के हिस्से में से कुछ बुतों के हिस्से में मिल जाता तो उसको मिला रहने देते, और अगर उल्टा हो जाता तो उसको निकाल कर फिर बुतों के हिस्से में मिला देते, और बहाना यह करते कि अल्लाह तो ग़नी है, उसका हिस्सा कम हो जाने से उसको कोई नुक़सान नहीं, और शुरका यानी बुत मोहताज हैं, उनका हिस्सा न घटना चाहिए।

3. ताकि वे हमेशा ग़लती में फँसे रहें।

4. कुछ खेत बुतों के नाम वक्फ़ कर देते और कहते कि इसके ख़र्च होने की असल जगह मर्द हैं और औरतों को इसमें से कुछ देना हमारी राय पर है, अगर हमारी मरज़ी हो तो कुछ हिस्सा उनको दे सकते हैं वरना वे इसके ख़र्च होने की जगह नहीं। इसी तरह मवेशियों के बारे में भी उनका अमल था। (शेष तफ़सीर पृष्ठ 264 पर)

और वही (अल्लाह पाक) है जिसने बाग़ पैदा किए, वे भी जो टट्टियों “यानी बाँस या सरकन्डों के बने हुए छप्पर व झोंपड़ी” पर चढ़ाए जाते हैं, (जैसे अंगूर) और वे भी जो टट्टियों पर नहीं चढ़ाए जाते, और खजूर के पेड़ और खेती जिनमें खाने की चीज़ें मुख्तलिफ़ तौर की होती हैं, और आपस में जैतून और अनार (यानी अनार-अनार आपस में और जैतून-जैतून आपस में) एक-दूसरे के जैसे भी होते हैं और (कभी) एक-दूसरे के जैसे नहीं होते, उन सबकी पैदावार खाओ जब वह निकल आए, और उसमें (शरीअत की रू से) जो हक़ वाजिब है वह उसके काटने (और तोड़ने) के दिन (गरीबों को) दिया करो।¹ और हद से मत गुज़रो, यकीनन वह हद से गुज़रने वालों को ना-पसन्द करते हैं। (142) और मवेशियों में ऊँचे क़द के और छोटे क़द के, जो कुछ अल्लाह तआला ने तुमको दिया है खाओ, और शैतान के क़दम से क़दम मिलाकर मत चलो, बेशक वह तुम्हारा खुला दुश्मन है। (143) (और ये मवेशी) आठ नर व मादा (पैदा किए) यानी भेड़ (और दुँबा) में दो किस्म (नर व मादा) और बकरी में दो किस्म (नर व मादा)। आप (उनसे) कहिए कि क्या अल्लाह तआला ने दोनों नरों को हराम किया है या दोनों मादा को, या उस (बच्चे) को जिसको दोनों मादा (अपने) पेट में लिए हुए हैं! तुम मुझको किसी दलील से तो बतलाओ, अगर तुम सच्चे हो। (144) और ऊँट में दो किस्म और गाय (भैंस) में दो किस्म। आप कहिए कि क्या अल्लाह तआला ने उन दोनों नरों को हराम किया है या दोनों मादा को, या उस (बच्चे) को जिसको दोनों मादा (अपने) पेट में लिए हुए हों। क्या तुम उस वक़्त हाज़िर थे जिस वक़्त अल्लाह तआला ने इस (हराम व हलाल होने) का हुक्म दिया? तो उससे ज़्यादा (और) कौन ज़ालिम होगा जो अल्लाह तआला पर बिला दलील झूठ तोहमत लगाए? ताकि लोगों को गुमराह करे। यकीनन अल्लाह तआला ज़ालिम लोगों को (आखिरत में जन्नत का) रास्ता न दिखलाएँगे।² (145) ❖

आप कह दीजिए कि जो कुछ अहक़ाम व हद के ज़रिये से मेरे पास आए हैं उनमें तो मैं किसी खाने वाले के लिए कोई हराम (ग़िज़ा) नहीं पाता जो उसको खाए, मगर यह कि वह मुर्दार (जानवर) हो,³ या बहता हुआ खून हो, या सुअर का गोشت हो क्योंकि वह बिल्कुल नापाक है,⁴ या जो (जानवर) शिक़ का ज़रिया हो कि अल्लाह के सिवा किसी और के लिए नामज़द कर दिया गया हो। फिर जो शख्स बेताब हो जाए, शर्त यह है कि न तो मज़े का तालिब हो और न (ज़रूरत की मात्रा से) आगे बढ़ने वाला हो तो वाकई आपका रब माफ़ करने वाला, रहम करने वाला है।⁵ (146) और यहूद पर हमने तमाम नाख़ुन वाले जानवर हराम कर दिए थे,

(पृष्ठ 262 का शेष) 5. जिन जानवरों को बुतों के नाम मख़सूस करके छोड़ देते थे उनपर सवारी करने और सामान लादने को जायज़ न समझते थे।

6. बोहतान बौधना इसलिए कि वे इन उमूर को अल्लाह तआला की खुश्रूदी का सबब समझते थे।

7. जैसे दूध या बच्चा।

8. बहीरा और साइबा के ज़िब्र के वक़्त जो बच्चा पेट में से निकलता, अगर वह ज़िन्दा होता तो उसको ज़िब्र कर लेते और उसे मर्दों के लिए हलाल और औरतों के लिए हराम समझते। और अगर वह मुर्दा होता तो सबके लिए हलाल समझते। इसी तरह बाज़ जानवरों के दूध को मर्दों के लिए हलाल और औरतों के लिए हराम समझते थे।

9. अब तक जो सज़ा नहीं मिली तो उसकी वजह यह है कि बेशक अल्लाह तआला हिक्मत वाला है, उसने बाज़ हिक्मतों से मोहलत दे रखी है। और अभी सज़ा न देने से कोई यह न समझे कि उसको ख़बर नहीं, क्योंकि वह बड़ा इल्म वाला है, उसको सब ख़बर है।

10. यह गुमराही नई नहीं क्योंकि पहले भी कभी राह पर चलने वाले नहीं हुए। पस इस आयत में उनके गुमराह होने को और ताकीद के साथ बयान किया गया और आयत के आखिरी हिस्से में उनके बुरे अन्जाम यानी सज़ा होने का ज़िक्र है।

1. इस आयत में जिस शरई हक़ ख़ैर-ख़ैरात का ज़िक्र है उससे उशर (यानी दसवाँ हिस्सा) मुराद नहीं जो कि ज़मीन की ज़कात है।

2. ऊपर मुशिरकों के खुद ही हलाल व हराम घड़ लेने के ग़लत और बेबुनियाद होने को बयान फरमाया है। आगे भी इसी मज़मून की ताईद है कि जिन जानवरों का बयान हो रहा है उनमें हराम तो फ़लों-फ़लों चीज़ें हैं, (शेष तफ़सीर पृष्ठ 266 पर)

और गाय और बकरी (के अंगों) में से उन दोनों की चरबियाँ उनपर हमने हराम कर दी थीं, मगर वह जो उनकी पुश्त पर या अंतड़ियों में लगी हो, या जो हड्डी से मिली हो। उनकी शरारत के सबब हमने उनको यह सज़ा दी थी, और हम यकीनन सच्चे हैं। (147) फिर अगर ये आपको झूठा कहें तो आप फ़रमा दीजिए कि तुम्हारा रब बड़ी विशाल रहमत वाला है¹ और उसका अज़ाब मुज़्जिम लोगों से न टलेगा। (148) ये मुशिरक यूँ कहने को हैं कि अगर अल्लाह तआला को मन्ज़ूर होता तो न हम शिर्क करते और न हमारे बाप-दादा, और न हम किसी चीज़ को हराम कह सकते, इसी तरह जो (काफ़िर) लोग उनसे पहले हो चुके हैं उन्होंने भी (रसूलों को) झुठलाया था, यहाँ तक कि उन्होंने हमारे अज़ाब का मज़ा चखा² आप कहिए कि क्या तुम्हारे पास कोई दलील है?³ तो उसको हमारे सामने ज़ाहिर करो, तुम लोग सिर्फ़ ख्याली बातों पर चलते हो, और तुम बिलकुल अटकल से बातें बनाते हो। (149) आप कहिए कि पस पूरी हुज्जत अल्लाह ही की रही, फिर अगर वह चाहता तो तुम सबको राह पर ले आता⁴ (150) आप कहिए कि अपने गवाहों को लाओ जो इस बात पर (बाकायदा) गवाही दें कि अल्लाह तआला ने इन (ज़िक्र की हुई चीज़ों) को हराम कर दिया है, फिर अगर वे गवाही दे दें तो आप उस गवाही को न सुनें। और (ऐ मुखातब!) ऐसे लोगों के बातिल ख्यालात की पैरवी मत करना जो हमारी आयतों को झुठलाते हैं और जो आख़िरत पर ईमान नहीं रखते, और वे अपने रब के बराबर दूसरों को ठहराते हैं। (151) ♦

आप (उनसे) कहिए कि आओ मैं तुमको वे चीज़ें पढ़कर सुनाऊँ जिनको तुम्हारे रब ने तुमपर हराम फ़रमाया है, वे ये कि (१) अल्लाह तआला के साथ किसी चीज़ को शरीक मत ठहराओ,⁵ (२) और माँ-बाप के साथ एहसान किया करो, (३) और अपनी औलाद को बदहाली और तंगी के सबब क़त्ल मत किया करो, हम तुमको और उनको (तयशुदा) रिज़्क देंगे, (४) और बेहयाई के जितने तरीक़े हैं उनके पास भी मत जाओ, चाहे वे एलानिया हों या छुपे तौर पर हों, (५) और जिसका खून करना अल्लाह तआला ने हराम कर दिया है उसको क़त्ल मत करो मगर हक़ पर, इसका तुमको ताकीदी हुक्म दिया है ताकि तुम समझो। (152) (६) और

(पृष्ठ 264 का शेष) तुम अपनी तरफ़ से क्यों घड़ते हो। और इसमें उनकी एक दूसरी गुमराही की तरफ़ भी इशारा है, क्योंकि बहते हुए खून और अल्लाह के अलावा दूसरे के नाम पर ज़िब्द किए हुए जानवर के खाने की आ़म आदत थी। पस ऊपर हलाल को हराम करने का ज़िक्र था और यह हराम को हलाल करने का ज़िक्र है।

3. यानी जिसका ज़िब्द करना वाजिब हो और वह शरई तरीक़े पर ज़िब्द किए बिना मर जाए।
4. सुअर के सब हिस्से और अंग नापाक और हराम हैं, ऐसा नापाक मुकम्मल नापाक कहलाता है।
5. ऊपर जो मज़मून ज़िक्र किया गया था आगे उसके मुताल्लिक़ एक शुब्हा का जवाब है कि खाने-पीने की जिन चीज़ों की बहस जारी है उनमें कुछ चीज़ों को छोड़कर सबको हलाल किया गया है, हालाँकि बाज़ अहले किताब से मालूम हुआ कि बाज़े और जानवर भी हराम हैं। जवाब यह है कि यह हराम होना सिर्फ़ यहूद के लिए एक सबब की वजह से हुआ था जो अब ख़त्म हो गया, पस दावा अपनी जगह पर सही और उसकी ज़िद (यानी उसका उल्टा) अपनी जगह पर ग़लत है।

1. इसलिए बाज़ हिक्मतों से जल्दी पकड़ नहीं फ़रमाते।
2. चाहे दुनिया में जैसा कि अक्सर पिछले कुफ़्फ़ार पर अज़ाब नाज़िल हुआ है, या मरने के बाद तो ज़ाहिर ही है। और यह इशारा है इस तरफ़ कि उन लोगों के उन कुफ़्रियात (यानी कुफ़्र भरी बातों और हरकतों) के मुक़ाबले में सिर्फ़ ज़बानी जवाब और मुनाज़रे पर बस न किया जाएगा बल्कि पिछले कुफ़्फ़ार की तरह अमली सज़ा भी दी जाएगी। चाहे दुनिया में भी या सिर्फ़ आख़िरत में।
3. यानी इस दावे पर कि किसी अमल के सादिर होने की कुदरत देना रज़ामन्दी की दलील है।
4. मगर हक़ तआला की बहुत-सी हिक्मतें हैं, किसी को तौफ़ीक़ दी किसी को नहीं दी। अलबत्ता हक़ का इज़हार और इज़्तिहार व इरादे का देना सबके लिए आ़म है।
5. पस शरीक़ ठहराना इराम हुआ।

यतीम के माल के पास मत जाओ मगर ऐसे तरीके से जो कि अच्छा और पसन्दीदा है,¹ यहाँ तक कि वह अपने बालिग होने की उम्र को पहुँच जाए, (७) और नाप-तौल पूरी-पूरी किया करो इन्साफ के साथ, हम किसी शख्स को उसकी ताकत से ज्यादा तकलीफ नहीं देते,² (८) और जब तुम बात किया करो तो इन्साफ रखा करो, चाहे वह शख्स³ रिश्तेदार ही हो, (९) और अल्लाह तआला से जो अहद किया करो⁴ उसको पूरा किया करो। इन (सब) का तुमको अल्लाह तआला ने ताकीदी हुक्म दिया है ताकि तुम याद रखो (और अमल करो)। (153) और यह कि यह दीन मेरा रास्ता है, जो कि सीधा है, सो इस राह पर चलो और दूसरी राहों पर मत चलो कि वे (राहें) तुमको उसकी (यानी अल्लाह की) राह से जुदा कर देंगी। इसका तुमको अल्लाह तआला ने ताकीदी हुक्म दिया है ताकि तुम (इस राह के खिलाफ करने से) एहतियात रखो। (154) फिर हमने मूसा को किताब दी थी, जिससे अमल करने वालों पर अच्छी तरह नेमत पूरी हो और सब अहकाम की तफसील हो जाए, और रहनुमाई हो और रहमत हो, ताकि वे लोग अपने रब की मुलाकात होने पर यकीन लाएँ। (155) ❖

और यह (कुरआन मजीद) एक किताब है जिसको हमने भेजा, बड़ी खैर व बरकत वाली, सो इसका इत्तिबा करो और डरो, ताकि तुम पर रहमत हो। (156) कभी तुम लोग यूँ कहने लगते कि किताब तो सिर्फ हमसे पहले जो दो फ़िके थे उनपर नाज़िल हुई थी और हम उनके पढ़ने-पढ़ाने से बिल्कुल बेख़बर थे। (157) या यूँ कहते कि अगर हमपर कोई किताब नाज़िल होती तो हम उनसे भी ज्यादा राह पर होते। सो अब तुम्हारे पास तुम्हारे रब के पास से एक वाज़ेह किताब और रहनुमाई का ज़रिया और रहमत आ चुकी है, सो उस शख्स से ज्यादा ज़ालिम कौन होगा जो हमारी इन आयतों को झूठा बतलाए और इससे रोके? हम अभी उन लोगों को जो कि हमारी आयतों से रोकते हैं उनके इस रोकने के सबब सख्त सज़ा देंगे। (158) ये लोग सिर्फ इस बात के मुन्तज़िर हैं कि उनके पास फ़रिश्ते आएँ या उनके पास आपका रब आए या आपके रब की कोई बड़ी निशानी आए।⁵ जिस दिन आपके रब की यह बड़ी निशानी आ पहुँचेगी, किसी ऐसे शख्स का ईमान उसके काम न आएगा जो पहले से ईमान नहीं रखता, या उसने अपने ईमान में कोई नेक अमल न किया हो, आप फ़रमा दीजिए कि तुम मुन्तज़िर रहो हम भी मुन्तज़िर हैं।⁶ (159) बेशक जिन लोगों ने अपने दीन को

1. जैसे उसके काम में लगाना, उसकी हिफ़ाज़त करना और बाज़ औलिया (सरपरस्तों) और जिनके लिए वसीयत की गई है, उनको उसमें यतीम के लिए तिज़ारत करने की भी इजाज़त है।
2. फिर उनके अहकाम में कोताही क्यों की जाए।
3. जिसके मुकाबले में वह बात कह रहे हो।
4. जैसे क़सम या मन्नत. शर्त यह है कि वह शरीअत में जायज़ हो।
5. मतलब यह हुआ कि क्या ईमान लाने में क़ियामत के आने या नज़दीक होने का इन्तिज़ार है।
6. यहाँ तक बयान का ज्यादा हिस्सा मुशिरकीन के बारे में है, आगे एक आम उनवान से दूसरे गुमराहों का हक़ से दूर और वईद (सज़ा की धमकी) का हक़दार होना बयान फ़रमाते हैं, जिसमें सब कुफ़ार, मुशिरकीन, अहले किताब और ख़्वाहिशों के पीछे चलने वाले और बिद्अत में मुब्तला लोग वईद के दर्जों के एतिबार से दाख़िल हो गए।
7. यानी दीने हक़ को मुकम्मल तौर पर कबूल न किया, चाहे सबको छोड़ दिया या बाज़ को, और शिर्क, बिद्अत और कुफ़र के तरीके इख़्तियार कर लिए।

जुदा-जुदा कर दिया' और गिरोह-गिरोह बन गए, आपका उनसे कोई ताल्लुक नहीं, बस उनका मामला अल्लाह तआला के हवाले है, फिर वह उनको उनका किया हुआ जतला देंगे।' (160) जो शख्स नेक काम करेगा तो उसको उसके दस हिस्से (मिलेंगे) और जो शख्स बुरा काम करेगा सो उसको उसके बराबर ही सज़ा मिलेगी, और उन लोगों पर जुल्म न होगा।' (161) आप कह दीजिए कि मुझको मेरे रब ने एक सीधा रास्ता बतला दिया है, कि वह एक मज़बूत दीन है, जो इब्राहीम का तरीका है, जिसमें ज़रा भी टेढ़पन नहीं, और वह शिर्क करने वालों में से न थे।' (162) आप फ़रमा दीजिए कि यकीनन मेरी नमाज़ और मेरी सारी इबादत और मेरा जीना और मेरा मरना यह सब ख़ालिस अल्लाह तआला ही का है जो सारे ज़हान का मालिक है। (163) उसका कोई शरीक नहीं, और मुझको इसी का हुक्म हुआ है, और मैं सब मानने वालों से पहला हूँ।' (164) आप फ़रमा दीजिए कि क्या मैं खुदा तआला के सिवा किसी और को रब बनाने के लिए तलाश करूँ हालाँकि वह हर चीज़ का मालिक है, और जो शख्स भी कोई अमल करता है वह उसी पर रहता है, और कोई दूसरे का वोझ न उठाएगा। फिर तुम सबको अपने रब के पास जाना होगा, फिर वह तुमको जतला देंगे जिस-जिस चीज़ में तुम इख़्तिलाफ़ करते थे। (165) और वह ऐसा है जिसने तुमको ज़मीन में इख़्तियार वाला बनाया और एक का दूसरे पर रुतबा बढ़ाया ताकि (ज़ाहिरन्) तुमको उन चीज़ों में आजमाए जो तुमको दी हैं,⁵ यकीनन आपका रब जल्द सज़ा देने वाला है, और बेशक वह बड़ी मफ़िरत करने वाला, बड़ी मेहरबानी करने वाला है।' ● (166) ❖

1. दुर्गे मन्सूर में इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से इन गिरोहों से यहूद व नसारा मुराद होना, और हज़रत अबू हुदैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से मरफूअन् बिद्अली लोगों का होना और तफ़सीरे ख़ाज़िन में हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु से तमाम मुशिरकीन इस एतिबार से कि बाज़े बुत-परस्त हैं, बाज़े सितारों को पूजते हैं वगैरह, मुराद होना नक़ल किया गया है। चूँकि लफ़्ज़ "फ़रकू" सबको शामिल हो सकता है इसलिए आम मुराद लेना ज़्यादा मुनासिब है। अलबत्ता वर्ईद (सज़ा की धमकी और डाँट) के दर्जे अलग-अलग होंगे। यानी काफ़िरो को हमेशा का अज़ाब होगा और बिद्अतियों को ईमान के मौजूद होने के सबब बुरे और फ़ासिद अक़ायद की सज़ा पाने के बाद नज़ात होगी।

2. कि कोई नेकी लिखी न जाए या कोई बदी ज़्यादा करके लिख ली जाए।

3. आगे ज़िक्र हुए दीन की किसी क़द तफ़सील बयान फ़रमा दी।

4. इसमें दूसरों को एक ख़ास अन्दाज़ के साथ दावत है कि जब नवी भी ईमान लाने का मुक़ल्लफ़ है तो दूसरे क्यों न होंगे।

5. आज़माना यह कि कौन इन नेमतों की क़द करके नेमतों के देने वाले की इताअत करता है और कौन बेक़द्री करके इताअत नहीं करता। पस बाज़े फ़रमाँवरदार हुए और बाज़े नाफ़रमान हुए, और दोनों के साथ मुनासिब मामला किया जाएगा।

6. पस नाफ़रमानों के लिए सज़ा है और फ़रमाँवरदारों के लिए रहमत है, और नाफ़रमानी से फ़रमाँवरदारी की तरफ़ आने वालों के लिए मफ़िरत है। पस जो मुक़ल्लफ़ हैं उनके लिए यह ज़रूरी हुआ कि दीने हक़ के मुवाफ़िक़ इताअत इख़्तियार करें, बातिल (ग़ैर-हक़) पर अमल करने और हक़ की मुख़ालफ़त से बाज़ आएँ।

7 सूर: आराफ़ 39

सूर: आराफ़ मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 206 आयतें और 24 रुकूअ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

अलिफ़-लाम-मीम-सौद।¹ (1) यह एक किताब है, जो आपके पास इसलिए भेजी गई है कि आप इसके ज़रिये से डराएँ, सो आपके दिल में इससे बिलकुल तंगी न होनी चाहिए,² और यह नसीहत है ईमान वालों के लिए। (2) तुम लोग इसका इत्तिबा करो, जो तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से आई है,³ और खुदा तआला को छोड़कर दूसरे रफ़ीकों की इत्तिबा मत करो, तुम लोग बहुत ही कम नसीहत मानते हो। (3) और बहुत-सी वस्तियों को हमने तवाह कर दिया, और उनपर हमारा अज़ाब रात के वक़्त पहुँचा, या ऐसी हालत में कि वे दोपहर के वक़्त आराम में थे। (4) तो जिस वक़्त उनपर हमारा अज़ाब आया उस वक़्त उनके मुँह से सिवाय इसके और कोई बात न निकली थी कि वाकई हम ज़ालिम थे।⁴ (5) फिर हम उन लोगों से ज़रूर पूछेंगे जिनके पास पैग़म्बर भेजे गए थे, और हम पैग़म्बरों से ज़रूर पूछेंगे।⁵ (6) फिर हम चूँकि पूरी ख़बर रखते हैं, उनके सामने वयान कर देंगे, और हम कुछ वेख़बर न थे। (7) और उस दिन वज़न भी किया जाएगा,⁶ फिर जिस शख़्स का पल्ला भारी होगा सो ऐसे लोग कामयाब होंगे। (8) और जिस शख़्स का पल्ला हल्का होगा सो ये वे लोग होंगे जिन्होंने अपना नुक़सान कर लिया, इस वजह से कि वे हमारी आयतों की हक़-तल्फ़ी करते थे।⁷ (9) और वेशक़ हमने तुमको ज़मीन पर रहने के लिए जगह दी और हमने उसमें तुम्हारे लिए ज़िन्दगानी का सामान पैदा किया, तुम लोग बहुत ही कम शुक्र अदा करते हो।⁸ (10) ♦

और हमने तुमको पैदा किया, फिर हमने ही तुम्हारी सूरत बनाई, फिर हमने फ़रिश्तों से फ़रमाया कि आदम को सज्दा करो, सो सबने सज्दा किया सिवाय शैतान के, वह सज्दा करने वालों में शामिल नहीं हुआ। (11) (अल्लाह तआला ने) फ़रमाया, तू जो सज्दा नहीं करता, तुझको इससे कौन-सी बात रुकावट है, जबकि मैं तुझको हुक्म दे चुका। कहने लगा, मैं इससे बेहतर हूँ, आपने मुझको आग से पैदा किया है और

1. पूरी सूर: पर नज़र डालने से मालूम होता है कि इसमें ज़्यादा मज़ामीन मआद (यानी आखिरत) और नुबुव्वत से मुताल्लिक हैं।

2. क्योंकि किसी के न मानने से आपके डराने में तो (जो कि असली गरज़ है) ख़लल नहीं पड़ता, फिर आप क्यों दिल छोटा करें।

3. इत्तिबा यह कि तस्दाक़ भी करो, अमल भी करो।

4. यानी उस वक़्त अपने जुर्म का इक़रार किया जबकि इक़रार का वक़्त गुज़र गया।

5. दोनों सवालों से कुफ़्फ़ार को झिड़कना और मलामत होगी।

6. यानी क़ियामत के दिन।

7. उस तराजू में ईमान व कुफ़्र का वज़न किया जाएगा और उस तराजू में एक पल्ला ख़ाली रहेगा और एक पल्ले में अगर वह मोमिन है तो ईमान और अगर काफ़िर है तो कुफ़्र रखा जाएगा। जब उस तौल से मोमिन और काफ़िर अलग-अलग हो जाएँगे तो फिर ख़ास मोमिनो के लिए एक पल्ले में उनकी नेकियाँ और दूसरे पल्ले में उनकी बुराइयाँ रखकर उन आमाल का वज़न होगा। और जैसा कि दुर्रें मन्सूर में इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया गया है कि अगर नेकियाँ ग़लिब हुईं तो जन्नत और अगर बुराइयाँ ग़ालिब हुईं तो दोज़ख़, और अगर दोनों बराबर हुईं तो आराफ़ उसके लिए तजवीज़ होगी। फिर चाहे सज़ा से पहले चाहे सज़ा के बाद शफ़ाअत से मफ़िरत हो जाएगी।

8. मुराद शुक्र से इताअत व फ़रमाँवरदारी है।

इसको आपने मिट्टी से पैदा किया। (12) (अल्लाह तआला ने) फरमाया, तू आसमान से उतर, तुझको कोई हक हासिल नहीं कि तू इसमें (यानी आसमान में रहकर) तकबुर करे, सो तू निकल, बेशक तू ज़लीलों में शुमार होने लगा। (13) वह कहने लगा कि मुझे कियामत के दिन तक मोहलत दीजिये। (14) (अल्लाह तआला ने) फरमाया कि तुझको मोहलत दी गई।¹ (15) वह कहने लगा इस सबब से कि आपने मुझको गुमराह किया है मैं कसम खाता हूँ कि मैं उनके लिए आपकी सीधी राह पर बैठूँगा। (16) फिर उनपर हमला करूँगा, उनके आगे से भी और उनके पीछे से भी, और उनकी दाहिनी तरफ़ से भी और उनकी बाई तरफ़ से भी,² और आप उनमें ज्यादातर को एहसान मानने वाला न पाइएगा। (17) (अल्लाह तआला ने) फरमाया कि यहाँ से ज़लील व ख़्वाब होकर निकल, जो शख्स उनमें से तेरा कहना मानेगा मैं ज़रूर तुम सबसे³ जहन्नम को भर दूँगा। (18) और (हमने हुक्म दिया कि) ऐ आदम! तुम और तुम्हारी बीबी जन्नत में रहो, फिर जिस जगह से चाहो दोनों आदमी खाओ और उस पेड़ के पास मत जाओ, कभी उन लोगों की गिनती में आ जाओ जिनसे नामुनासिब काम हो जाया करता है। (19) फिर शैतान ने उन दोनों के दिलों में वस्वसा डाला, ताकि उनका पर्दे का बदन जो एक-दूसरे से छुपा हुआ था दोनों के सामने बेपर्दा कर दे, और कहने लगा कि तुम्हारे रब ने तुम दोनों को इस पेड़ से और किसी सबब से मना नहीं फरमाया, मगर सिर्फ़ इस वजह से कि तुम दोनों कहीं फ़रिश्ते हो जाओ, या कहीं हमेशा ज़िन्दा रहने वालों में से हो जाओ। (20) और उन दोनों के सामने कसम खाई कि यकीन जानिए मैं आप दोनों का ख़ैरख़्वाह “यानी तुम दोनों का भला चाहने वाला” हूँ। (21) सो उन दोनों को फ़रेब से नीचे ले आया,⁴ पस उन दोनों ने जब पेड़ को चखा तो दोनों के पर्दे का बदन एक-दूसरे के सामने बेपर्दा हो गया, और दोनों अपने ऊपर जन्नत के पत्ते जोड़-जोड़कर रखने लगे। और उनके रब ने उनको पुकारा, क्या मैं तुम दोनों को इस पेड़ से मना न कर चुका था, और यह न कह चुका था कि शैतान तुम्हारा खुला दुश्मन है? (22) दोनों कहने लगे कि ऐ हमारे रब! हमने अपना बड़ा नुक़सान किया, और अगर आप हमारी मग़्फ़िरत न करेंगे और हमपर रहम न करेंगे तो वाकई हमारा बड़ा नुक़सान हो जाएगा। (23) (अल्लाह तआला ने) फरमाया कि नीचे ऐसी हालत में जाओ कि तुम आपस में बाज़े दूसरे बाज़ों ‘यानी एक-दूसरे’ के

1. इससे मालूम हुआ कि काफ़िर की दुआ भी कभी कबूल हो जाती है, और इससे अल्लाह के नज़दीक उसका महबूब और सम्मानित होना लाज़िम नहीं आता।

2. यानी उनके बहकाने में खूब कोशिश करूँगा, जिससे वे आपकी इबादत न करने पाएँ।

3. यानी तुझसे और उनसे।

4. नीचे ले आया, हालत और राय के एतिबार से भी और जगह के एतिबार से भी, यहाँ तक कि अपनी बुलन्द राय से उसकी घटिया राय की तरफ़ माइल हो गए, जिससे जन्नत से नीचे की तरफ़ उतारे गए।

दुश्मन रहोगे।¹ और तुम्हारे वास्ते ज़मीन में रहने की जगह है और फ़ायदा हासिल करना एक वक़्त तक। (24) (और) फ़रमाया कि तुमको वहाँ ही ज़िन्दगी बसर करना है और वहाँ ही मरना है, और उसी में से फिर पैदा होना है।² (25) ♦

ऐ आदम की औलाद! हमने तुम्हारे लिए लिबास पैदा किया जो कि तुम्हारे पर्दे वाले बदन को भी छुपाता है और ज़ीनत का सबब भी है, और तक्वे का लिबास यह उससे बढ़कर है,³ यह अल्लाह तआला की निशानियों में से है ताकि ये लोग याद रखें।⁴ (26) ऐ आदम की औलाद! शैतान तुमको किसी ख़राबी में न डाल दे, जैसा कि उसने तुम्हारे दादा-दादी को जन्नत से बाहर करा दिया, (ऐसी हालत से) कि उनका लिबास भी उनसे उतरवा दिया, ताकि उनको उनके पर्दे का बदन दिखाई देने लगे। वह और उसका लश्कर तुमको ऐसे तौर पर देखता है कि तुम उनको नहीं देखते हो, हम शैतानों को उन्हीं लोगों का साथी होने देते हैं जो ईमान नहीं लाते। (27) और वे लोग जब कोई फुहश “यानी ग़लत और बेहूदा” काम करते हैं⁵ तो कहते हैं कि हमने अपने बाप-दादा को इसी तरीके पर पाया है और अल्लाह तआला ने हमको यही बतलाया है। आप कह दीजिए कि अल्लाह तआला फुहश “यानी बुरी और बेहूदा” बात की तालीम नहीं देता, क्या खुदा के ज़िम्मे ऐसी बात लगाते हो जिसकी तुम सनद नहीं रखते?⁶ (28) आप कह दीजिए कि मेरे रब ने हुक्म दिया है इन्साफ़ करने का, और यह कि तुम हर सन्दे के वक़्त अपना रुख़ सीधा रखा करो, और उसकी (यानी अल्लाह की) इबादत इस तौर पर करो कि उस इबादत को ख़ालिस अल्लाह ही के वास्ते रखा करो,⁷ जिस तरह तुमको अल्लाह तआला ने शुरू में पैदा किया था उसी तरह फिर तुम दोबारा पैदा होगे। (29) बाज़ लोगों को तो अल्लाह ने हिदायत की है और बाज़ पर गुमराही साबित हो चुकी है। उन लोगों ने अल्लाह तआला को छोड़कर शैतानों को अपना रफ़ीक़ बना लिया,⁸ और ख़्याल रखते हैं कि वे राह पर हैं। (30) ऐ आदम की औलाद! तुम मस्जिद की हर हाज़िरी के वक़्त अपना लिबास पहन लिया करो, और (ख़ूब) खाओ और पियो और हृद से मत निकलो, बेशक अल्लाह तआला हृद से निकल जाने वालों को पसन्द नहीं करते। (31) ♦

1. यानी जन्नत से नीचे ज़मीन पर जाओ।

2. मतलब “तुमको वहाँ ही ज़िन्दगानी बसर करनी है” का यह है कि आम आदत के मुताबिक़ तुम्हारा असली ठिकाना यह होगा, और अगर किसी सबब के पेश आने की वजह से इस आदत के ख़िलाफ़ हो जाए तो उसकी नफ़ी (इनकार) नहीं है। पस इससे हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के आसमान पर ज़िन्दा जाने और रहने के इनकार पर दलील पकड़ना ग़लत और बातिल है।

3. क्योंकि इस जाहिरी लिबास का शर्इ तौर पर पसन्दीदा होना इसी तक्वे के वाजिब होने की एक किस्म है। पस असली मक़सूद जो हर हालत में ज़रूरी है वह यह लिबास है।

4. ऊपर के किस्से में शैतान की गुमराही और आदम की औलाद से उसकी दुश्मनी ज़िक्र की गई थी, आगे उसके गुमराह करने और उससे बचने व एहतियात की ताकीद का बयान है।

5. चाहे अक़ीदों में से जैसे शिर्क़ कि बड़ी बेहयाई है, चाहे आमाल में से जैसे तवाफ़ के वक़्त नंगे हो जाना।

6. पैरवी उस मसले में जायज़ है जिसमें पैरवी करने के लिए इजाज़त और शर्इ सनद हो, जो उसकी शर्तों के जमा होने पर मौकूफ़ है। और यहाँ खुद “क़तई नस्स” की मुख़ालफ़त से शर्तें ग़ायब हैं, पस ऐसी पैरवी से एहतियाज़ (यानी मुख़ालफ़त में आवाज़ उठाना) खुद बातिल हो गया।

7. इन मामूरात (यानी जिन चीज़ों का हुक्म किया गया है) में शरीअत के सब उसूल आ गए। “इन्साफ़ करने” में बन्दों के हुक्क, “रुख़ सीधा करने” में आमाल व अच्छे काम, “ख़ालिस अल्लाह ही के लिए रखने” में अक़ायद। मतलब यह कि अल्लाह के तो ये अहक़ाम हैं, इनको मानो, क्योंकि सिर्फ़ तुमको हुक्म देकर नहीं छोड़ा जाएगा बल्कि एक वक़्त हिसाब-किताब के लिए भी आने वाला है, यानी क़ियामत।

8. यानी अल्लाह तआला की इताअत न की और शैतानों की इताअत की।

आप फ़रमाइए कि अल्लाह तआला के पैदा किए हुए कपड़ों को, जिनको उसने अपने बन्दों के वास्ते बनाया है और खाने-पीने की हलाल चीज़ों को किस शख्स ने हराम किया है?¹ आप यह कह दीजिए कि ये चीज़ें इस तौर पर कि क़ियामत के दिन भी ख़ालिस रहें, दुनियावी ज़िन्दगानी में ख़ालिस ईमान वालों ही के लिए हैं, हम इसी तरह समझदारों के वास्ते तमाम आयतों को साफ़-साफ़ बयान किया करते हैं। (32) आप फ़रमाइए कि अलबत्ता मेरे रब ने हराम किया है तमाम फुहश “यानी गन्दी और बेहूदा” बातों को, उनमें जो खुले तौर पर हों वे भी² और उनमें जो छुपे तौर पर हों वे भी,³ और वह हर गुनाह की बात को और नाहक किसी पर जुल्म करने को और इस बात को कि तुम अल्लाह तआला के साथ किसी ऐसी चीज़ को शरीक ठहराओ जिसकी अल्लाह तआला ने कोई सनद नाज़िल नहीं फ़रमाई। और इस बात को कि तुम लोग अल्लाह तआला के ज़िम्मे ऐसी बात लगा दो जिसकी तुम सनद न रखो।⁴ (33) और हर ग़िरोह के लिए एक मुक़र्ररा मीयाद है, सो जिस वक़्त उनकी मुक़र्ररा मीयाद आ जाएगी उस वक़्त एक घड़ी न पीछे हट सकेंगे और न आगे बढ़ सकेंगे।⁵ (34) ऐ आदम की औलाद!⁶ अगर तुम्हारे पास पैग़म्बर आएँ जो तुम्ही में से होंगे, जो मेरे अहक़ाम तुमपर बयान करेंगे, सो जो शख्स परहेज़ रखे और दुरुस्ती करे,⁷ सो उन लोगों पर न कुछ अन्देशा है और न वे ग़मगीन होंगे। (35) और जो लोग हमारे इन अहक़ाम को झूठा बतलाएँगे और इनसे तकब्बुर करेंगे, वे लोग दोज़ख़ वाले होंगे, वे उसमें हमेशा-हमेशा रहेंगे। (36) सो उस शख्स से ज़्यादा ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह तआला पर झूठ बाँधे⁸ या उसकी आयतों को झूठा बतलाए, उन लोगों के नसीब का जो कुछ (लिखा) है वह उनको मिल जाएगा, यहाँ तक कि जब उनके पास हमारे भेजे हुए (फ़रिश्ते) उनकी जान कब्ज़ करने आएँगे तो कहेंगे कि वे कहाँ गए जिनकी तुम खुदा को छोड़कर इबादत किया करते थे? वे कहेंगे कि हमसे सब ग़ायब हो गए,⁹ और अपने काफ़िर होने का इक़रार करने लगेंगे।¹⁰ (37) (अल्लाह) फ़रमाएगा कि जो फ़िर्के तुमसे पहले गुज़र चुके हैं जिन्नात में से भी और आदमियों में से भी, उनके साथ तुम भी दोज़ख़ में जाओ। जिस वक़्त भी (काफ़िरों की) कोई जमाअत (दोज़ख़ में) दाख़िल होगी, अपनी जैसी दूसरी जमाअत को लानत करेगी,¹¹ यहाँ तक कि जब उसमें सब जमा हो जाएँगे तो बाद वाले लोग पहले लोगों के बारे में कहेंगे

1. यानी किसी चीज़ को हराम करने के लिए तो उसको हराप करने वाले की ज़रूरत है, वह हराम करार देने वाला अल्लाह तआला के सिवा कौन है।

2. जैसे नंगे तवाफ़ करना।

3. जैसे बदकारी।

4. यानी जो हकीकत में हलाल हैं उनको तो तुमने हराम समझा, और जो हकीकत में हराम हैं उनको हलाल समझा, अजीब जहालत में गिरफ़्तार हो। और जिस तरह आयत “कुल् अ-म-र रब्बी बिल्किस्ति (आख़िर तक)” में तमाम अहक़ाम दाख़िल हो गए थे उसी तरह यहाँ आयत “इन्मा हर-म (आख़िर तक)” में तमाम वे चीज़ें दाख़िल हैं जिनसे मना किया गया है। “बग़-य” में तो सब मामलात आ गए, और “अन् तुशिरकू व अन तकूलू” में तमाम फ़ासिद और बुरे अकायद आ गए, और “इस्-म” में तमाम गुनाह और नाफ़रमानियाँ आ गईं, जिनमें से फुहश गुनाहों को ख़ास तौर पर एहतिमाम के साथ ज़िक्र किया गया।

5. उस मीयाद से पहले सज़ा न होना इसकी दलील नहीं कि हराम कामों पर सज़ा न होगी।

6. ऊपर अ़कीदों व आमा़ल में शैतान की इत्तिबा व मुवाफ़क़त से मुमानअत फ़रमाई गई थी, अब यह बतलाते हैं कि इस मज़मून का ख़िताब तुमको नया नहीं, बल्कि “आलमे अरवाह” (यानी रूहों की दुनिया) में यह अहद ले लिया गया था, अब उसी को दोहराया जा रहा है। और इसमें रिसालत और आख़िरत के मसले का सुबूत भी हो गया, जो कि इस सूरत के बड़े मक़ासिद में से है।

7. मुराद यह कि मुकम्मल इत्तिबा करे। (शेष तफ़सीर पृष्ठ 280 पर)

कि ऐ हमारे परवर्दिगार! हमको इन लोगों ने गुमराह किया था, सो इनको दोज़ख़ का अज़ाब (हमसे) दोगुना दीजिए। (अल्लाह तआला) फ़रमाएँगे कि सब ही का दोगुना है, लेकिन (अभी) तुमको ख़बर नहीं। (38) और पहले लोग बाद वाले लोगों से कहेंगे कि फिर तुमको हमपर कोई बरतरी नहीं, सो तुम भी अपने किरदार के मुकाबले में अज़ाब (का मज़ा) चखते रहो। (39) ❖

जो लोग हमारी आयतों को झूठा बतलाते हैं और उन (के मानने) से तकब्बुर करते हैं, उनके लिए आसमान के दरवाज़े न खोले जाएँगे, और वे लोग कभी जन्नत में न जाएँगे, जब तक कि ऊँट सूई के नाके के अन्दर से (न) चला जाए,¹ और हम मुज़िम लोगों को ऐसी ही सज़ा देते हैं। (40) उनके लिए दोज़ख़ (की आग) का बिछौना होगा और उनके ऊपर (उसी का) ओढ़ना होगा, और हम ऐसे ज़ालिमों को ऐसी ही सज़ा देते हैं।² (41) और जो लोग ईमान लाए³ और उन्होंने नेक काम किए, हम किसी शख्स को उसकी ताक़त से ज़्यादा कोई काम नहीं बतलाते, ऐसे लोग जन्नत वाले हैं, वे उसमें हमेशा-हमेशा रहेंगे। (42) और जो कुछ उनके दिलों में गुबार था हम उसको दूर कर देंगे, उनके नीचे नहरें जारी होंगी और वे लोग कहेंगे कि अल्लाह का (लाख-लाख) एहसान है जिसने हमको इस मक़ाम तक पहुँचाया, और हमारी कभी रसाई न होती अगर अल्लाह तआला हमको न पहुँचाते,⁴ वाकई हमारे रब के पैग़म्बर सच्ची बातें लेकर आए थे। और उनसे पुकारकर कहा जाएगा कि तुमको यह जन्नत दी गई है⁵ तुम्हारे आमाल के बदले।⁶ ▲ (43) और जन्नत वाले दोज़ख़ वालों को पुकारेंगे कि हमसे जो हमारे रब ने वायदा फ़रमाया था हमने तो उसको हकीक़त के मुताबिक़ पाया,⁷ सो तुमसे जो तुम्हारे रब ने वायदा किया था तुमने भी उसको हकीक़त के मुताबिक़ पाया?⁸ वे कहेंगे हाँ, फिर एक पुकारने वाला उन (दोनों) के दरमियान में पुकारेगा कि अल्लाह की मार हो उन ज़ालिमों पर (44) जो अल्लाह की राह से मुँह फेरा करते थे, और उसमें कज़ी “यानी टेढ़ और कमी” तलाश करते रहते थे,

(पृष्ठ 278 का शेष)

8. यानी जो बात खुदा की कही हुई हो उसको बेकही बतला दे।

9. यानी वाकई कोई काम न आया।

10. लेकिन उस वक़्त का इकरार बिल्कुल बेकार होगा।

11. यानी आपस में हमदर्दी न होगी। हकीक़त के सामने आ जाने की वजह से हर शख्स दूसरे को बुरी नज़र से देखेगा और बुरा कहेगा।

1. और यह मुहाल है। पस जो चीज़ मुहाल (नामुम्किन) के साथ मशरूत (जुड़ी हुई) हो वह भी हमेशा के लिए मन्फ़ी (न होने वाली) होगी।

2. यानी हमको कोई दुश्मनी न थी, जैसा किया वैसा भुगता।

3. ऊपर झुठलाने वालों की सज़ा की तफ़सील थी। अब मोमिनों की जज़ा और बदले की तफ़सील है।

4. इसमें यह भी आ गया कि यहाँ तक पहुँचने का जो तरीका था, ईमान व आमाल, वह हमको बतलाया और उसपर चलने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाई।

5. यह आवाज़ देने वाला एक फ़रिश्ता होगा, जैसा कि दुरें मन्सूर में इब्ने अबी हातिम की रिवायत से अबू मुआज़ बसरी से मरफूअन् नक़ल किया गया है।

6. “तुम्हारे आमाल के बदले” से ज़ाहिर में आमाल का जन्नत में दाख़िल होने का सबब होना मालूम होता है, और हदीस में आया है कि आमाल के सबब कोई जन्नत में न जाएगा बल्कि रहमते इलाही के सबब जाएँगे। असल यह है कि आयत में ज़ाहिरी सबब मुराद है और हदीस में हकीक़ी सबब मुराद है। पस ज़ाहिरी के होने और हकीक़ी के न होने में कोई टकराव नहीं।

7. कि ईमान और नेक आमाल के इख़्तियार करने से जन्नत देंगे।

8. यानी अब तो अल्लाह तआला व रसूल के सच्चा होने और अपनी गुमराही की हकीक़त मालूम हुई।

और वे लोग आखिरत का इनकार करने वाले भी थे। (45) और उन दोनों के दरमियान एक आड़ होगी,¹ और आराफ के ऊपर बहुत-से आदमी होंगे, वे लोग हर एक को उनके निशानों से पहचानेंगे और जन्नत वालों को पुकार कर कहेंगे, अस्सलामु अलैकुम। अभी ये (आराफ वाले) उसमें (यानी जन्नत में) दाखिल नहीं हुए होंगे और उसके उम्मीदवार होंगे। (46) और जब उनकी निगाहें दोज़ख वालों की तरफ जा पड़ेंगी तो कहेंगे ऐ हमारे रब! हमको उन ज़ालिम लोगों के साथ शामिल न कीजिए। (47) ♦

और आराफ “जन्नत और दोज़ख के बीच एक जगह” वाले बहुत-से आदमियों को जिनको कि उनके निशानों और अन्दाज़ों से पहचानेंगे, पुकारेंगे। कहेंगे कि तुम्हारी जमाअत और तुम्हारा अपने को बड़ा समझना तुम्हारे कुछ काम न आया। (48) क्या ये वही हैं जिनके बारे में तुम कस्में खा-खाकर कहा करते थे कि अल्लाह तआला उनपर रहमत न करेगा? (उनको यूँ हुक्म हो गया कि) जाओ जन्नत में, तुमपर न कुछ अन्देशा है और न तुम ग़मज़दा होंगे। (49) और दोज़ख वाले जन्नत वालों को पुकारेंगे कि हमारे ऊपर थोड़ा पानी ही डाल दो, या और ही कुछ दे दो, जो अल्लाह तआला ने तुमको दे रखा है। (जन्नत वाले) कहेंगे कि अल्लाह तआला ने दोनों चीज़ों की काफ़िरों के लिए बन्दिश कर रखी है। (50) जिन्होंने (दुनिया में) अपने दीन को लहव-व-लअ़िब “यानी खेल-तमाशे की चीज़” बना रखा था, और जिनको दुनियावी ज़िन्दगानी ने धोखे में डाल रखा था, सो हम भी आजके दिन उनका नाम न लेंगे, जैसा कि उन्होंने इस दिन का नाम तक न लिया था, और जैसा कि ये हमारी आयतों का इनकार किया करते थे।² (51) और हमने उन लोगों के पास एक ऐसी किताब³ पहुँचा दी है जिसको हमने अपने कामिल इल्म से बहुत ही वाज़ेह करके बयान कर दिया है, (और वह) हिदायत का ज़रिया और रहमत है उन लोगों के लिए जो ईमान लाते हैं। (52) उन लोगों को और किसी बात का इन्तिज़ार नहीं सिर्फ़ उसके आखिरी नतीजे का इन्तिज़ार है,⁴ जिस दिन उसका आखिरी नतीजा पेश आएगा उस दिन जो लोग उसको पहले से भूले हुए थे यूँ कहने लगेंगे कि वाकई हमारे रब के पैग़म्बर सच्ची-सच्ची बातें लाए थे, सो अब क्या हमारा कोई सिफ़ारिश करने वाला है कि वह हमारी सिफ़ारिश कर दे, या क्या हम फिर वापस भेजे जा सकते हैं ताकि हम लोग उन आमाल के उलट जिनको हम किया करते थे दूसरे आमाल करें? बेशक उन लोगों ने अपने को घाटे में डाल दिया, और ये जो-जो बातें बनाते थे सब गुम हो गईं।⁵ (53) ♦

1. इसकी खा़सा यह होगा कि जन्नत का असर दोज़ख तक और दोज़ख का असर जन्नत तक न जाने देगी।

2. ऊपर जज़ा और सज़ा की तफ़सील बयान की गई है। आगे यह फ़रमाते हैं कि इस खुले बयान का और फिर कुरआन के दूसरे मज़ामीन का तकाज़ा यह है कि कुफ़्र और मुखा़लफ़त से वाज़ आ जायें। चुनाँचे ईमान वाले इस सज़ादत से मुशरफ़ होते भी हैं लेकिन कुफ़्र और मुखा़लिफ़ान की सख़्तदिला इस दर्जा बढ़ी हुई है कि वे सज़ा के ज़ाहिर होने से पहले न मानेंगे, लेकिन उस वक़्त मानना काम न आएगा।

3. यानी कुरआन।

4. यानी सज़ा का वायदा।

5. ऊपर आख़िरत की तफ़सील थी। चूँकि मुशिरक़ान दोबारा ज़िन्दा होने को दूर की और न होने वाली बात समझते थे, इसलिए आगे अपनी कुदरत और कामिल तसरूफ़ का बयान फ़रमाते हैं।

बेशक तुम्हारा रब अल्लाह ही है जिसने सब आसमानों और ज़मीन को छह दिन में पैदा किया, फिर अर्श पर कायम हुआ,¹ छुपा देता है रात से दिन को,² ऐसे तौर पर कि वह रात उस दिन को जल्दी से आ लेती है,³ और सूरज और चाँद और दूसरे सितारों को पैदा किया, ऐसे तौर पर कि सब उसके हुक्म के ताबे हैं, याद रखो अल्लाह ही के लिए खास है ख़ालिफ़ “यानी पैदा करने वाला” होना और हाकिम होना, बड़ी ख़ूबियों से भरे हुए हैं अल्लाह तआला जो तमाम जहान के पालने वाले हैं। (54) तुम लोग अपने परवर्दिगार से दुआ किया करो आजिजी ज़ाहिर करके भी और चुपके-चुपके भी, (अलबत्ता यह बात) वाकई (है कि) अल्लाह तआला उन लोगों को ना-पसन्द करते हैं जो हद से निकल जाएँ।⁴ (55) और दुनिया में बाद इसके कि इसकी दुरुस्ती कर दी गई है, फ़साद मत फैलाओ, और उसकी (यानी अल्लाह की) इबादत किया करो डरते और उम्मीदवार रहते हुए,⁵ बेशक अल्लाह की रहमत नज़दीक है नेक काम करने वालों से। (56) और वह (अल्लाह) ऐसा है कि अपनी रहमत की बारिश से पहले हवाओं को भेजता है कि वे खुश कर देती हैं, यहाँ तक कि जब वे हवाएँ भारी बादलों को उठा लेती हैं तो हम उस बादल को किसी सूखी ज़मीन की तरफ़ हाँक ले जाते हैं, फिर उस बादल से पानी बरसाते हैं, फिर उस पानी से हर किस्म के फल निकालते हैं, यूँ ही हम मुर्दों को निकाल खड़ा कर देंगे,⁶ ताकि तुम समझो। (57) और जो सुथरी सरज़मीन होती है उसकी पैदावार तो खुदा के हुक्म से ख़ूब निकलती है, और जो ख़राब है उसकी पैदावार (अगर निकली भी) तो बहुत कम निकलती है। इसी तरह हम (हमेशा) दलीलों को तरह-तरह से बयान करते रहते हैं, उन लोगों के लिए जो क़द्र करते हैं।⁷ (58) ❖

हमने नूह (अलैहिस्सलाम) को उनकी कौम की तरफ़ भेजा, सो उन्होंने फ़रमाया: ऐ मेरी कौम! तुम सिर्फ़ अल्लाह की इबादत करो, उसके सिवा कोई तुम्हारा माबूद होने के लायक नहीं, मुझको तुम्हारे लिए एक बड़े (सख़्त) दिन के अज़ाब का अन्देशा है। (59) उनकी कौम के आबरूदार “यानी समाज के इज़्ज़तदार” लोगों ने कहा कि हम तुमको खुली ग़लती में (मुब्तला) देखते हैं। (60) उन्होंने फ़रमाया कि ऐ मेरी कौम! मुझमें तो ज़रा भी ग़लती नहीं लेकिन मैं परवर्दिगारे-आलम का रसूल हूँ। (61) तुमको अपने परवर्दिगार के पैग़ाम पहुँचाता हूँ और तुम्हारी ख़ैर-ख़्वाही करता हूँ और मैं खुदा की तरफ़ से उन चीज़ों की ख़बर रखता हूँ जिनकी तुमको

1. यानी ज़मीन व आसमान में अहक़ाम जारी करने लगा।

2. यानी रात के अन्धकार से दिन की रोशनी छुप जाती और ख़त्म हो जाती है।

3. यानी दिन आनन-फ़ानन गुजरता मालूम होता है, यहाँ तक कि अचानक रात आ जाती है।

4. जैसे वे चीज़ें माँगने लगे जो अक्ली या शरई तौर पर मुहाल हों, या ऐसी चीज़ों का मुतालबा करने लगे जो आदतन् न पाई जाती हों, या गुनाह की या बेकार चीज़ें माँगने लगे, जैसे खुदाई या नुबुव्वत या फ़रिशतों पर हुक्ूमत या बेनिकाह किए औरतों से फ़ायदा हासिल करना, या जन्नत के दाहिनी तरफ़ का सफ़ेद महल और इसी तरह की चीज़ें माँगने लगे, यह सब अदब के खिलाफ़ है। हाँ जन्नत और फ़िरदौस की दुआ मतलूब है, इसमें ये फ़ुज़ूल कैदे ममनूअ (वर्जित) हैं।

5. यानी इबादत करके न तो नाज़ हो और न मायूसी हो।

6. यानी क़ियामत के दिन।

7. इन आयतों का खुलासा यह है कि जब हक़ तआला के ये ज़ाती व सिफ़ाती कमालात साबित हुए तो इबादत और अपनी हाज़त तलब करने में उनके साथ किसी को शरीक मत करो, और उनकी कुदरत को सामने रखकर मरने के बाद दोबारा ज़िन्दा होने का इनकार मत करो।

ख़बर नहीं। (62) क्या तुम इस बात से ताज्जुब करते हो कि तुम्हारे परवर्दिगार की तरफ़ से तुम्हारे पास एक ऐसे शख्स के ज़रिये जो तुम्हारी ही जिन्स का है कोई नसीहत की बात आ गई, ताकि वह शख्स तुमको डराए और ताकि तुम डर जाओ, और ताकि तुमपर रहम किया जाए? (63) सो वे लोग उनको झुठलाते ही रहे तो हमने उनको (यानी नूह को) और जो लोग उनके साथ कश्ती में थे बचा लिया, और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया उनको हमने डुबो दिया, बेशक वे लोग अन्धे हो रहे थे। (64) ♦

और हमने आद कौम की तरफ़ उनके भाई हूद को भेजा,¹ उन्होंने फ़रमाया, ऐ मेरी कौम! तुम अल्लाह की इबादत करो, उसके सिवा कोई तुम्हारा माबूद नहीं, सो क्या तुम नहीं डरते? (65) उनकी कौम में जो आबरूदार काफ़िर थे उन्होंने कहा कि हम तुमको कम-अक्ली में देखते हैं, और हम बेशक तुमको झूठे लोगों में से समझते हैं।² (66) उन्होंने फ़रमाया कि ऐ मेरी कौम! मुझमें ज़रा भी कम-अक्ली नहीं, लेकिन मैं परवर्दिगारे-आलम का भेजा हुआ पैग़म्बर हूँ। (67) तुमको अपने परवर्दिगार के पैग़ाम पहुँचाता हूँ और मैं तुम्हारा सच्चा ख़ैर-ख़्वाह हूँ। (68) और क्या तुम इस बात से ताज्जुब करते हो कि तुम्हारे परवर्दिगार की तरफ़ से तुम्हारे पास एक शख्स की मारिफ़त जो तुम्हारी जिन्स का (आदमी) है कोई नसीहत की बात आ गई, ताकि वह शख्स तुमको डराए? और तुम यह हालत याद करो कि अल्लाह तआला ने तुमको नूह की कौम के बाद आबाद किया और डील-डोल में तुमको फैलाव (भी) ज़्यादा दिया। सो खुदा तआला की (इन) नेमतों को याद करो³ ताकि तुमको कामयाबी हो। (69) वे कहने लगे कि क्या आप हमारे पास इस वास्ते आए हैं कि हम सिर्फ़ अल्लाह ही की इबादत किया करें और जिनको हमारे बाप-दादा पूजते थे हम उनको छोड़ दें? और हमको जिस अज़ाब की धमकी देते हो उसको हमारे पास मँगवा दो अगर तुम सच्चे हो। (70) उन्होंने फ़रमाया कि वस अब तुमपर खुदा की तरफ़ से अज़ाब और ग़ज़ब आया ही चाहता है, क्या तुम मुझसे ऐसे नामों के बारे में झगड़ते हो जिनको तुमने और तुम्हारे बाप-दादा ने (आप ही) ठहरा लिया है। उसकी (यानी उनके माबूद होने की) खुदा तआला ने कोई (नक़ली या अक्ली) दलील नहीं भेजी, सो तुम इन्तिज़ार करो, मैं भी तुम्हारे साथ इन्तिज़ार कर रहा हूँ। (71) गरज़ हमने उनको और उनके साथियों को अपनी रहमत से बचा लिया,

1. मशहूर अहले नसब के नज़दीक यही है कि हूद अलैहिस्सलाम आद कौम के नसबी भाई और खुद कौमे आद से हैं। और कुछ लोगों का ख़्याल है कि वे दूसरी कौम के हैं, और “उनके भाई” के मायने “उनके साथी” लेते हैं, अल्लाह ही को ख़ूब मालूम है। और आद असल में एक शख्स का नाम है, फिर उसकी औलाद को भी आद कहने लगे, और ये लोग बड़े लम्बे-तड़ने और मज़बूत जिस्म के मालिक होते थे।

“ज़ा-दकुम् फ़िल् ख़ल्कि वस्त-तन्” के यही मायने हैं।

2. यानी (अल्लाह की पनाह) न तौहीद सही मसला है और न अज़ाब का आना सही है।

3. और याद करके एहसान मानो और इताअत करो।

और उन लोगों की जड़ (तक) काट दी¹ जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया था, और वे ईमान लाने वाले न थे। (72) ❖

और हमने समूद की तरफ़ उनके भाई सालेह को भेजा। उन्होंने फ़रमाया, ऐ मेरी कौम! तुम अल्लाह की इबादत करो, उसके सिवा कोई तुम्हारा माबूद नहीं, तुम्हारे पास तुम्हारे परवर्दिगार की तरफ़-से एक साफ़ और वाज़ेह दलील आ चुकी है यह ऊँटनी है अल्लाह की, जो तुम्हारे लिए दलील है,² सो इसको छोड़ दो कि अल्लाह की ज़मीन में खाती फिरा करे, और इसको बुराई के साथ हाथ भी मत लगाना, कभी तुमको दर्दनाक अज़ाब आ पकड़े। (73) और तुम यह हालत याद करो कि अल्लाह तआला ने तुमको आद के बाद आबाद किया और तुमको ज़मीन पर रहने के लिए ठिकाना दिया कि नर्म ज़मीन पर महल बनाते हो और पहाड़ों को तराश-तराशकर उसमें घर बनाते हो, सो खुदा तआला की नेमतों को याद करो और ज़मीन में फ़साद मत फैलाओ। (74) उनकी कौम में जो घमण्डी सरदार थे, उन्होंने ग़रीब लोगों से जो कि उनमें से ईमान ले आए थे पूछा कि क्या तुमको इस बात का यकीन है कि सालेह अपने रब की तरफ़ से भेजे हुए हैं? उन्होंने कहा कि बेशक हम तो उसपर पूरा यकीन रखते हैं जो उनको देकर भेजा गया है। (75) वे घमण्डी लोग कहने लगे कि तुम जिस चीज़ पर यकीन लाए हुए हो हम तो उसका इनकार करते हैं। (76) गरज़ उन्होंने उस ऊँटनी को मार डाला और अपने परवर्दिगार के हुक्म से सरकशी की और कहने लगे कि ऐ सालेह! जिसकी आप हमको धमकी देते थे उसको मंगवाइए, अगर आप पैगम्बार हैं। (77) पस आ पकड़ा उनको जलजले ने, सो अपने घरों में औंधे (के औंधे) पड़े रह गए।³ (78) उस वक़्त वह (यानी सालेह अलैहिस्सलाम) उनसे मुँह मोड़कर चले और फ़रमाने लगे कि ऐ मेरी कौम! मैंने तो तुमको अपने परवर्दिगार का हुक्म पहुँचा दिया था, और मैंने

1. यानी बिलकुल हलाक कर दिया “क-तअना दाबि-र.....” से बाज़ ने कहा है कि उनकी नस्ल बिलकुल ख़त्म हो गई। और बाज़ ने कहा कि कुप्फ़ार बिलकुल हलाक हो गए और मोमिनीन बाकी रहे, और मुम्किन है कि कुप्फ़ार की छोटी औलाद भी रह गई हो, उनकी नस्ल आगे बढ़ी, उनको “दूसरी आद” कहते हैं और पहले वालों को “पहली आद”। और अज़ाब इस कौम का तेज़ औंधी थी जैसा कि कई जगह कुरआन में ज़िक्र है। और सूर: फुस्सिलत में जो “साअिका” (यानी कड़कदार बिजली) आया है उससे मुराद मुतलक अज़ाब है, और सूर: मोमिन में नूह अलैहिस्सलाम के किस्से के बाद जो “सुम्-म अन्शअना मिम्बअदिहिम कर्नन् आखरीन” आया है। जिन्होंने उसकी तफ़सीर कौम आद से की है वे इसके कायल हैं कि उनपर जोरदार आवाज़ या चीख़ भी आई और तेज़ औंधी भी आई, अल्लाह ही को ज़्यादा और सही इल्म है। और उसका ठिकाना दूसरी आयत में “अत्काफ़” आया है जो मुहम्मद बिन इसहाक के कौल के मुताबिक़ “अम्मान” और “हज़रे-मौत” के दरमियान एक रेगिस्तान है।

2. उन्होंने एक खास मौजिज़े की दरख्वास्त की कि उस पत्थर में से एक ऊँटनी पैदा हो तो हम ईमान लाएँ। चुनाँचे आपकी दुआ से ऐसा ही हुआ कि वह पत्थर फटा और उसके अन्दर से एक बड़ी ऊँटनी निकली।

3. दूसरी आयत में ‘सख़्त आवाज़ या चिन्चाड़’ यानी फ़रिश्ते के नारे से हलाक होना आया है। बाज़ ने कहा कि ऊपर से चीख़ और चिन्चाड़ और नीचे से जलजला आया था। और बाज़ ने कहा कि जलजले से मुराद दिल की वह हरकत है जो सख़्त आवाज़ या चीख़ के ख़ौफ़ से पैदा हुई थी। और जिसने ऊँटनी को क़त्ल किया उसका नाम क़िदार आया है। और दूसरी आयत में उनके रहने का मक़ाम हिज़्र आया है जो कि “हिजाज़” और “शाम” के दरमियान एक मक़ाम था। और आयत के ज़ाहिर से मालूम होता है कि सालेह अलैहिस्सलाम यहाँ से कौम के हलाक होने के बाद तशरीफ़ ले गए। फिर कुछ ने मुल्क शाम की तरफ़ जाना और कुछ ने मक्का को जाना नक़ल किया है।

तुम्हारी खैर-ख्वाही की, लेकिन तुम लोग खैर-ख्वाहों को पसन्द ही नहीं करते थे। (79) और हमने लूत को भेजा जबकि उन्होंने अपनी कौम से फरमाया, क्या तुम ऐसा फुहश “यानी गंदा और बुरा” काम करते हो जिसको तुमसे पहले किसी ने दुनिया जहान वालों में से नहीं किया। (80) (यानी) तुम औरतों को छोड़कर मर्दों के साथ ख्वाहिश पूरी करते हो, बल्कि तुम (इनसानियत की) हद से ही गुज़र गए हो।¹ (81) और उनकी कौम से कोई जवाब न बन पड़ा सिवाय इसके कि (आपस में) कहने लगे कि इन लोगों को तुम अपनी बस्ती में से निकाल दो, ये लोग बड़े पाक-साफ़ बनते हैं। (82) सो हमने उनको (यानी लूत अलैहिस्सलाम को) और उनके मुताल्लिकीन को बचा लिया सिवाय उनकी बीवी के,² कि वह उन्हीं लोगों में रही जो अज़ाब में रह गए थे। (83) और हमने उनके ऊपर एक नई तरह की बारिश बरसाई (जो कि पत्थरों की थी)। सो देख तो सही उन मुज्रिमों का अन्जाम कैसा हुआ? (84) ♦

और हमने मद्यन की तरफ़ उनके भाई शुऐब को भेजा।³ उन्होंने फरमाया कि ऐ मेरी कौम! तुम अल्लाह तआला की इबादत करो, उसके सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं, तुम्हारे पास तुम्हारे परवर्दिगार की तरफ़ से एक वाज़ेह और खुली दलील आ चुकी है, तो तुम नाप और तौल पूरी-पूरी किया करो और लोगों का इन चीज़ों में नुकसान मत किया करो, और रू-ए-ज़मीन में इसके बाद कि उसकी दुरुस्ती कर दी गई, फ़साद मत फैलाओ, यह तुम्हारे लिए फ़ायदेमन्द है, अगर तुम तस्दीक़ करो। (85) और तुम सड़कों पर (इस गरज़ से) मत बैठा करो कि अल्लाह पर ईमान लाने वालों को धमकियाँ दो और अल्लाह की राह से रोको, और उसमें कज़ी “यानी टेढ़ और कमी” की तलाश में लगे रहो, और उस हालत को याद करो जबकि तुम कम थे फिर अल्लाह तआला ने तुमको ज़्यादा कर दिया, और देखो कि कैसा अन्जाम हुआ फ़साद करने वालों का। (86) और अगर तुममें से बाज़े उस हुक्म पर जिसको देकर मुझे भेजा गया है, ईमान लाए हैं, और बाज़े ईमान नहीं लाए हैं तो ज़रा ठहर जाओ यहाँ तक कि हमारे दरमियान में अल्लाह तआला फैसला किए देते हैं, और वह सब फैसला करने वालों से बेहतर हैं। (87)

1. “बल अन्तुम” की तफ़सीर का हासिल यह है कि बाज़ गुनाहों में बाप-दादा की पैरवी वगैरह से धोखा हो जाता है, इसमें तो यह भी नहीं। और बाज़ आयतों में जो “तन्हलून” (यानी तुम नहीं जानते) आया है उससे यह शुब्हा न हो कि उनको उसकी बुराई मालूम न थी, क्योंकि वहाँ जहालत से मुराद यह नहीं बल्कि मुराद यह है कि तुमको इसका बुरा अन्जाम यानी अज़ाब मालूम नहीं।
2. यह बीवी काफ़िरा थी। जब लूत अलैहिस्सलाम को अज़ाब से पहले बस्ती से निकल जाने का हुक्म हुआ, कुछ ने तो कहा है कि यह बीवी साथ नहीं गई, कुछ ने कहा कि साथ चली थी फिर वापस लौटने लगी और हलाक कर दी गई। और लूत अलैहिस्सलाम फिर हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के पास आकर रहने लगे।
3. कुरआन में शुऐब अलैहिस्सलाम का ‘मद्यन’ और ‘ऐका’ वालों की तरफ़ नबी बनाकर भेजा जाना और मद्यन वालों पर कहीं ज़ोरदार चीख़ और कहीं ज़लज़ले का अज़ाब और ऐका वालों पर सायबान का अज़ाब होना ज़िक्र किया है। बाज़ ने तो दोनों कौमों को एक ही कहा है और बाज़ ने अलग-अलग कहा है कि एक कौम यानी मद्यन वालों के हलाक होने के बाद दूसरों की यानी ऐका वालों की तरफ़ जो कि मद्यन के करीब रहते थे और निकटता की वजह से उनमें भी कम तौलने-नापने का मर्ज़ मुशतरक था, नबी बनाकर भेजे गए, और अक्सर का कौल यही है। और अज़ाब की किस्मों में दो का या तीनों को जमा होना कुछ बर्द नही। और इन काफ़िरों के हलाक होने के बाद आप मक्का में आकर रहने लगे थे, और वहीं पर आपकी वफ़ात हुई। और मद्यन असल में हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के एक लड़के का नाम था, फिर उस कबीले पर जो उनकी औलाद थे या उस शहर पर जो उनकी औलाद के रहने की जगह था, इसको बोला जाने लगा।

नवाँ पार: काल्लू म-लउ

सूर: आराफ (आयत 88 से 206)

उनकी कौम के घमण्डी सरदारों ने कहा कि ऐ शुऐब! हम आपको और आपके साथ जो ईमान वाले हैं उनको अपनी बस्ती से निकाल देंगे, या (यह हो कि) तुम हमारे मज़हब में फिर आ जाओ,¹ (शुऐब अलैहिस्सलाम ने) जवाब दिया कि क्या (हम तुम्हारे मज़हब में आ जाएंगे) अगरचे हम उसको (समझ की दलील से) ना-पसन्द और मक्रूह ही समझते हैं? (88) हम तो अल्लाह पर बड़ी झूठी तोहमत लगाने वाले हो जाँएँ अगर (खुदा न करे) हम तुम्हारे मज़हब में आ जाँएँ, (खास कर) इसके बाद कि अल्लाह तआला ने हमको उससे नजात दी हो, और हमसे मुम्किन नहीं कि उसमें (यानी तुम्हारे मज़हब में) फिर आ जाँएँ, लेकिन हाँ यह कि अल्लाह ही ने जो कि हमारा मालिक है हमारे मुकद्दर (में) किया हो, हमारे रब का इल्म हर चीज़ को घेरे हुए है। हम अल्लाह तआला ही पर भरोसा रखते हैं,³ ऐ हमारे परवर्दिगार! हमारे और हमारी (इस) कौम के बीच हक के मुवाफिक़ फैसला कर दीजिए, और आप सबसे अच्छा फैसला करने वाले हैं। (89) और उनकी कौम के (उन्ही ज़िक्र किए गए) काफ़िर सरदारों ने कहा कि अगर तुम शुऐब की राह पर चलने लगोगे तो बेशक बड़ा नुक़सान उठाओगे। (90) पस उनको ज़लज़ले ने आ पकड़ा, सो अपने घर में (औंधे के औंधे) पड़े रह गए। (91) जिन्होंने शुऐब को झुटलाया था (उनकी यह हालत हो गई कि) जैसे उन घरों में कभी बसे ही न थे। जिन्होंने शुऐब को झुटलाया था वही घाटे में पड़ गए। (92) उस वक़्त वह (यानी शुऐब अलैहिस्सलाम) उनसे मुँह मोड़कर चले और फ़रमाने लगे कि ऐ मेरी कौम! मैंने तुमको अपने परवर्दिगार के अहक़ाम पहुँचा दिए थे, और मैंने तुम्हारी ख़ैर-ख़्वाही की, फिर मैं उन काफ़िर लोगों पर क्यों रंज करूँ? (93) ♦

और हमने किसी बस्ती में कोई नबी नहीं भेजा मगर यह कि वहाँ के रहने वालों को (झुटलाने पर) हमने मोहताजी और बीमारी में पकड़ा ताकि वे ढीले पड़ जाँएँ। (94) फिर हमने उस बदहाली की जगह खुशहाली बदल दी, यहाँ तक कि उनको ख़ूब तरक्की हुई और (उस वक़्त अपनी उल्टी समझ की वजह से) कहने लगे कि हमारे बाप-दादा को भी तंगी और राहत पेश आई थी, तो हमने उनको अचानक पकड़ लिया और उनको ख़बर भी न थी। (95) और अगर उन बस्तियों के रहने वाले ईमान ले आते और परहेज़गारी “यानी हराम

1. यह बात मोमिनों के लिए इसलिए कही कि वे लोग ईमान से पहले उसी कुफ़्र के तरीक़े पर थे। लेकिन शुऐब अलैहिस्सलाम के हक़ में बावजूद इसके कि नबियों से कभी कुफ़्र सादिर नहीं होता इसलिए कही कि नबी बनाए जाने से पहले उनके चुप रहने से वे यही समझते थे कि उनका एतिकाद भी हम ही जैसा होगा।

2. यानी जब उसके बातिल होने पर दलील कायम है तो हम उसको कैसे इख़्तियार कर लें।

3. इससे यह शुब्हा न किया जाए कि उनको अपने ख़ैर पर ख़ात्मे का यकीन न था, अम्बिया को यह यकीन दिया जाता है। मक़सूद आजिज़ी और अपने मालिक को अपने तमाम मामलात सौंपने का इज़हार करना है जो कि नुबुव्वत के लवाज़िमात में से है।

4. ऊपर जिन कौमों का किस्सा ज़िक्र हुआ है चूँकि और कौमों के भी ऐसे किस्से पेश आए हैं, आगे आम उनवान से मुख़्तसर तौर पर उन सबकी जुर्म की हालत और जुर्म पर भी शुरू में मोहलत मिलने की और फिर भी न समझने पर सज़ा जारी होने को ज़िक्र किया गया है। और किस्से को नक़ल करने के बाद आयत “अ-वलम् यहिद लहुम्.....” से इसके नक़ल करने की गरज़ पर जो कि इससे इबरत और सबक़ हासिल करना है, तंबीह फ़रमाई गई है।

कामों से बचते और एहतियात" करते तो हम उनपर आसमान और ज़मीन की बरकतें खोल देते,¹ लेकिन उन्होंने तो (पैगम्बरों को) झुटलाया, तो हमने (भी) उनके (बुरे) आमाल की वजह से उनको पकड़ लिया। (96) क्या फिर भी उन बस्तियों के रहने वाले इस बात से बेफ़िक्र हो गए हैं कि उनपर (भी) हमारा अज़ाब रात के वक़्त आ पड़े, जिस वक़्त वे (पड़े) सोते हों। (97) और क्या इन (मौजूदा) बस्तियों के रहने वाले इस बात से बेफ़िक्र हो गए हैं कि उनपर हमारा अज़ाब दिन-दोपहरी आ पड़े, जिस वक़्त कि वे अपने फुज़ूल किस्सों में मशगूल हों? (98) हाँ तो क्या अल्लाह की इस (अचानक) पकड़ से बेफ़िक्र हो गए, सो (समझ लो कि) खुदा तआला की पकड़ से सिवाय उनके जिनकी शामत ही आ गई हो और कोई बेफ़िक्र नहीं होता? (99) ♦

और इन (गुज़रे हुए) ज़मीन पर रहने वालों के बाद जो लोग (अब) ज़मीन पर उनकी जगह रहते हैं, क्या (इन ज़िक्र हुए वाकिआत ने) उनको यह बात (अभी) नहीं बतलाई कि अगर हम चाहते तो उनको उनके जुर्मों के सबब हलाक कर डालते, और हम उनके दिलों पर बन्द लगाए हुए हैं, इससे वे सुनते नहीं! (100) उन (ज़िक्र हुई) बस्तियों के कुछ-कुछ किस्से हम आपसे बयान कर रहे हैं, और उन सबके पास उनके पैगम्बर मोजिज़ात लेकर आए थे, फिर जिस चीज़ को उन्होंने पहली (ही मर्तबा में एक बार) झूठा कह दिया, यह बात न हुई कि फिर उसको मान लेते, अल्लाह तआला इसी तरह काफ़िरों के दिलों पर बन्द लगा देते हैं। (101) और ज़्यादातर लोगों में हमने अहद को पूरा करना न देखा, और हमने अक्सर लोगों को बेहुकम ही पाया। (102) फिर उनके बाद हमने मूसा को अपनी दलीलें⁵ देकर फिरऔन और उसके सरदारों के पास भेजा, सो उन लोगों ने उनका हक़ बिलकुल अदा न किया, सो देखिए उन फसादियों और बिगाड़ करने वालों का क्या अन्जाम हुआ?⁶ (103) और मूसा ने फ़रमाया कि ऐ फिरऔन! मैं रब्बुल्-अलमीन की तरफ़ से पैगम्बर हूँ। (104) मेरे लिए (यही) मुनासिब है कि सिवाय सच के खुदा की तरफ़ कोई बात मन्सूब न करूँ, मैं तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से एक बड़ी दलील भी लेकर आया हूँ, सो तू बनी इसराईल को मेरे साथ भेज दे। (105) (फिरऔन ने कहा) अगर आप कोई मोजिज़ा लेकर आए हैं तो उसको पेश कीजिए, अगर आप सच्चे हैं। (106) पस आपने (फौरन) अपना असा "यानी लाठी" डाल दिया, सो वह देखते ही देखते साफ़ एक अज्दहा (बन गया)! (107) और अपना हाथ बाहर निकाल लिया, सो वह एकदम सब देखने वालों

1. यानी आसमान से बारिश और ज़मीन से पैदावार उनको बरकत के साथ अता फरमाते। और अगरचे इस हलाकत से पहले उनको खुशहाली एक हिक्मत के लिए दी, लेकिन उस खुशहाली में इसलिए बरकत न थी कि आखिर में वह वबाले जान हो गई, उन नेमतों के उलट जो ईमान और इताअत के साथ मिलती हैं कि उनमें यह ख़ैर व बरकत होती है कि वे वबाल कभी नहीं होतीं, न दुनिया में न आखिरत में। हासिल यह है कि अगर वे ईमान व तक्वा इख्तियार करते तो उनको भी ये बरकतें देते।

2. मुराद इससे दुनियावी कारोबार है।

3. इस आयत से यह बात निकाली गई है कि अल्लाह के अज़ाब से बेख़ौफ़ होना कुफ़्र है, क्योंकि कुरआनी मुहावरों में अक्सर "खासिर" (यानी घाटा उठाने वाले) से मुराद काफ़िर होता है।

4. इस बन्द लगाने का सबब उन्हीं का शुरू में कुफ़्र करना है, अल्लाह तआला के कौल "त-बअल्लाहु अलैहा बिकुफ़िरहिम्" के सबब।

5. यानी मोजिज़े।

6. यह तो तमाम किस्से का मुक़्तसर बयान था, आगे तफ़सील है।

7. 'मुबीन' यानी साफ़ से मालूम होता है कि हकीकत बदल जाती थी, ख़्याली किस्सा न था।

के सामने बहुत चमकता हुआ (हो गया)¹ (108) ♦

फिरऔन की कौम में जो सरदार “यानी बड़े” लोग थे, उन्होंने कहा कि वाकई यह शख्स बड़ा माहिर जादूगर है। (109) (ज़रूर) यह चाहता है कि तुमको तुम्हारे (इस) मुल्क से बाहर कर दे, सो तुम लोग क्या मशिवरा देते हो। (110) उन्होंने कहा कि आप इनको और इनके भाई को थोड़ी मोहलत दीजिए और शहरों में चपरासियों को भेज दीजिए (111) कि वे सब माहिर जादूगरों को आपके पास लाकर हाज़िर कर दें। (112) (चुनाँचे ऐसा ही किया गया) और वे जादूगर फिरऔन के पास हाज़िर हुए! कहने लगे कि अगर हम ग़ालिब आए तो क्या हमको कोई (बड़ा) सिला मिलेगा? (113) (फिरऔन) ने कहा कि हाँ! (बड़ा इनाम मिलेगा) और (उसके अलावा यह कि) तुम क़रीबी और ख़ास लोगों में दाख़िल हो जाओगे। (114) (उन जादूगरों ने) अर्ज़ किया, ऐ मूसा! चाहे आप डालिए और या हम ही डालें। (115) (मूसा अलैहिस्सलाम ने) फ़रमाया कि (पहले) तुम ही डालो। जब उन्होंने (अपनी रस्सियों और लाठियों को) डाला तो लोगों की नज़र-बन्दी कर दी,² और उनपर हैबत ग़ालिब कर दी और एक (तरह का) बड़ा जादू दिखलाया। (116) और हमने मूसा को (वह्न के ज़रिये) हुक्म दिया कि आप अपनी लाठी डाल दीजिए। (सो लाठी का डालना था कि) उसने अचानक (अज़्दहा बनकर) उनके सारे बने-बनाए खेल को निगलना शुरू किया। (117) पस (उस वक़्त) हक़ (का हक़) होना ज़ाहिर हो गया, और उन्होंने जो कुछ बनाया था सब (आता) जाता रहा। (118) पस वे लोग उस मौक़े पर हार गए और ख़ूब ज़लील हुए। (119) और वे जो जादूगर थे सज़्दे में गिर गए। (120) (और पुकार-पुकार कर) कहने लगे कि हम ईमान लाए रब्बुल-आलमीन पर। (121) जो मूसा और हारून का भी रब है।³ (122) फिरऔन कहने लगा कि हाँ तुम उसपर (यानी मूसा पर) ईमान लाए हो इसके बग़ैर ही कि मैं तुमको इजाज़त दूँ, बेशक यह एक कार्रवाई थी जिसपर इस शहर में तुम्हारा अमल दरामद हुआ है ताकि तुम सब इस (शहर) के रहने वालों को इससे बाहर निकाल दो, सो (बेहतर है) अब तुमको हकीकत मालूम हुई जाती है। (123) मैं तुम्हारे एक तरफ़ के हाथ और दूसरी तरफ़ के पाँव काटूँगा, फिर तुम सबको सूली पर टाँग दूँगा।⁴ (124) उन्होंने जवाब दिया कि (कुछ परवाह नहीं) हम मरकर अपने मालिक ही के पास जाएँगे।⁵ (125) और तूने हममें कौन-सा ऐब देखा सिवाय इसके कि हम अपने रब के अहक़ाम पर ईमान ले आए, जब वे (अहक़ाम) हमारे पास आए। ऐ हमारे रब! हमारे ऊपर सब्र का फैज़ान फ़रमा और हमारी जान इस्लाम की हालत पर निकालिए।⁶ (126) ♦

1. “लिन्नाज़िरीन” (यानी देखने वालों के सामने) से कोई नज़रबन्दी का शुब्हा न करे, क्योंकि यह उसकी वाकई सफ़ेदी की ताकीद है, जैसे कहा करते हैं कि लोगों ने खुली आँखों देखा।
2. जिससे वे लाठियाँ और रस्सियाँ साँप की शक्ल में लहराती हुई नज़र आने लगीं।
3. “जो मूसा और हारून का भी रब है” इसलिए बढ़ाया कि फिरऔन अपने को रब्बे-आला बतलाता था। तो रब्बुल-आलमीन का मिस्दाक़ सुनने वाले उसको न समझ जाएँ, इसलिए इसको बढ़ाकर मुराद तय कर दी कि जिसको मूसा व हारून रब कहते हैं।
4. ताकि औरों को इबरत हो।
5. जहाँ हर तरह अमन व राहत है।
6. ताकि उसकी सख़्ती से परेशान होकर कोई बात ईमान के खिलाफ़ न हो जाए।

और फिरऔन की कौम के सरदारों ने कहा कि क्या आप मूसा और उनकी कौम को यँ ही रहने देंगे कि वे मुल्क में फ़साद करते फिरें,¹ और वे आपको और आपके माबूदों को छोड़े रहें? (फिरऔन ने) कहा कि हम अभी उन लोगों के बेटों को क़त्ल करना शुरू कर दें और उनकी औरतों को ज़िन्दा रहने दें, और हमको उनपर हर तरह का ज़ोर है। (127) मूसा ने अपनी कौम से फ़रमाया कि खुदा तआला का सहारा रखो और मुस्तक़िल “यानी जमे” रहो, (घबराओ मत) यह ज़मीन अल्लाह तआला की है, अपने बन्दों में से जिसको चाहें इसका मालिक (व हाकिम) बना दें, और अख़ीर कामयाबी उन्हीं (लोगों) की होती है जो खुदा तआला से डरते हैं।² (128) (कौम के लोग) कहने लगे कि हम तो (हमेशा) मुसीबत ही में रहे, आपके तशरीफ़ लाने से पहले भी और आपके तशरीफ़ लाने के बाद भी। (मूसा ने) फ़रमाया कि बहुत जल्द अल्लाह तआला तुम्हारे दुश्मन को हलाक कर देंगे, और उनकी जगह तुमको इस ज़मीन का मालिक बना देंगे, फिर तुम्हारे अमल का तरीका देखेंगे।³ (129) ❖

और हमने फिरऔन वालों को कहत-साली (अकाल) में मुब्तला किया, और फलों की कम पैदावारी में ताकि वे (हक़ वात को) समझ जाएँ।⁴ (130) सो जब उनपर खुशहाली आ जाती तो कहते कि यह तो हमारे लिए होना ही चाहिए,⁵ और अगर उनको कोई बदहाली पेश आती तो मूसा और उनके साथियों की नहूसत बतलाते। याद रखो कि उनकी नहूसत अल्लाह तआला के इल्म में है,⁶ लेकिन उनमें अक्सर लोग नहीं जानते थे। (131) और (यँ) कहते थे (चाहे) कैसी ही अजीब बात हमारे सामने लाओ, कि उसके ज़रिये से हमपर जादू चलाओ, (जब भी) हम तुम्हारी बात हरगिज़ न मानेंगे। (132) फिर हमने उनपर तूफ़ान भेजा⁷ और टिट्टियाँ और घुन का कीड़ा और मेंढ़क और खून, कि ये सब खुले-खुले मोजिज़े थे,⁸ सो वे तकब्बुर करते रहे, और वे लोग कुछ थे ही जराइम-पेशा।⁹ (133) और जब उनपर कोई अज़ाब आता तो (यँ) कहते कि ऐ मूसा! हमारे लिए अपने रब से दुआ कर दीजिए, जिसका उसने आपसे अहद कर रखा है। अगर आप इस अज़ाब को हमसे हटा दें तो हम ज़रूर आपके कहने से ईमान ले आएँगे और हम बनी इसराईल को भी (रिहा करके) आपके साथ कर देंगे। (134) फिर जब उनसे उस अज़ाब को एक खास वक़्त तक कि उस तक

1. फ़साद यह कि अपना मजमा बढ़ाएँ जिससे अन्जामकार बगावत का अन्देशा है।

2. यानी उनके माबूद होने के इनकारी रहें।

3. सो तुम ईमान व तक्वे पर कायम रहो, इन्शा-अल्लाह यह हुकूमत तुम ही को मिल जाएगी, थोड़े दिनों इन्तिज़ार की ज़रूरत है।

4. कि शुक, क़द्र और इताअत करते हो या बेक़द्री और ग़फ़लत व नाफ़रमानी। इसमें नेक कामों की तरफ़ शौक़ दिलाना और नाफ़रमानी से डराना और ख़ौफ़ दिलाना है।

5. और समझकर कबूल कर लें।

6. यानी हम अच्छी किस्मत वाले हैं। यह हमारी खुशकिस्मती का असर है। यह न था कि उसको खुदा की नेमत समझकर शुक बजा लाते और इताअत इख़्तियार करते।

7. यानी उनके कुफ़्र के आमाल तो अल्लाह को मालूम हैं। यह नहूसत उन्हीं आमाल की सज़ा है।

8. बारिश की ज़्यादती।

9. रुक़ूअ के शुरू में ज़िक्र हुए उमूर 9. कहतसाली यानी अकाल २. फलों कि कमी और ये पाँच चीज़ें और लाठी और सफ़ेद चमकता हुआ हाथ मिलकर नौ निशानियाँ कहलाती हैं।

10. क्योंकि इतनी सख़्ती पर भी बाज़ न आते थे।

उनको पहुँचना था हम हटा देते तो वे फौरन ही अहद तोड़ने लगते। (135) फिर हमने उनसे बदला लिया, यानी उनको दरिया में डुबो दिया, इस सबब से कि वे हमारी आयतों को झुठलाते थे, और उनसे बिलकुल ही लापरवाही बरतते थे। (136) और हमने उन लोगों को जो कि बिलकुल कमज़ोर ही शुमार किए जाते थे¹ उस सरज़मीन “यानी मुल्क” के पूरब-पश्चिम का² मालिक बना दिया, जिसमें हमने बरकत रखी है।³ और आपके रब का नेक वायदा बनी इसराईल के हक में उनके सब्र की वजह से पूरा हो गया, और हमने फिरऔन को और उसकी कौम के तैयार किए और सजाए हुए कारख़ानों को और जो कुछ वे ऊँची-ऊँची इमारतें बनवाते थे, सबको उलट-पलट कर दिया। ♦ (137) और हमने बनी इसराईल को दरिया से पार उतार दिया, पस उन लोगों का एक कौम पर गुज़र हुआ जो अपने चन्द बुतों को लगे बैठे हैं। कहने लगे कि ऐ मूसा! हमारे लिए भी एक (जिस्म वाला) माबूद ऐसा ही मुकर्रर कर दीजिए, जैसे उनके ये माबूद हैं। आपने फरमाया कि वाकई तुम लोगों में बड़ी जहालत है।⁴ (138) ये लोग जिस काम में लगे हैं यह (अल्लाह की तरफ़ से भी) तबाह किया जाएगा और (अपने आप में भी) उनका यह काम महज़ बेबुनियाद है। (139) फरमाया कि क्या अल्लाह तआला के सिवा और किसी को तुम्हारा माबूद तजवीज़ कर दूँ? हालाँकि उसने तुमको तमाम दुनिया-जहान वालों पर बरतरी दी है। (140) और (वह वक़्त याद करो) जब हमने तुमको फिरऔन वालों (के जुल्म व तकलीफ़ पहुँचाने) से बचा लिया, जो तुमको बड़ी सख़्त तकलीफ़ें पहुँचाते थे, तुम्हारे बेटों को (कसूरत से) क़त्ल कर डालते थे और तुम्हारी औरतों को (अपनी बेगार और ख़िदमत के लिए) ज़िन्दा छोड़ देते थे। और इस (वाकिए) में तुम्हारे परवर्दिगार की तरफ़ से बड़ी भारी आजमाइश थी। (141) ♦

और हमने मूसा से तीस रात का वायदा किया, और दस रात को उन (तीस रात) का पूरा करने वाला बनाया, सो उनके परवर्दिगार का वक़्त पूरी चालीस रात हो गया। और मूसा ने अपने भाई हारून से कह दिया था कि मेरे बाद मेरी कौम का इन्तिज़ाम रखना⁵ और इस्लाह करते रहना और बद-नज़्म “यानी बिगाड़ व ख़राबी पैदा करने वाले” लोगों की राय पर अमल मत करना। (142) और जब मूसा हमारे (मुकर्ररा) वक़्त

1. यानी बनी इसराईल को।

2. यानी तमाम हदों (सीमाओं) का।

3. यानी ज़ाहिरी और बातिनी बरकत। ज़ाहिरी बरकत पैदावार ज़्यादा होने से। और बातिनी बरकत अम्बिया अलैहिमुस्सलाम के वहाँ रहने और उनके दफ़न होने की जगह होने से।

4. उनकी इस बेहूदा दरख़्वास्त की वजह अल्लामा बग़वी रहमतुल्लाहि अलैहि ने यह लिखी है कि उनको तौहीद में शक न हुआ था बल्कि अपनी जहालत से यह समझे कि ग़ायब माबूद की तरफ़ मुतवज्जह होने के लिए अगर किसी सामने मौजूद को ज़रिया बनाया जाए तो यह बात दियानत के मनाफ़ी नहीं है, बल्कि इसमें अल्लाह की ताज़ीम और निकटता ज़्यादा है। और चूँकि यह ख़याल नक़ल और अक़ल के एतिबार से अपने आप में ग़लत है, इसलिए इसको जहल (मूर्खता) फरमाया गया। और अल्लाह को ज़्यादा मालूम है।

5. मूसा अलैहिस्सलाम का ‘मेरे बाद मेरी कौम का इन्तिज़ाम रखना’ फरमाना इस बिना पर है कि हज़रत हारून अलैहिस्सलाम सिर्फ़ नबी थे, हाकिम और सुल्तान न थे। इस सिफ़त में ख़लीफ़ा बनाना मकसूद है, नुबुव्वत में ख़लीफ़ा बनाना मकसूद नहीं।

पर आए और उनके रब ने उनसे (बहुत ही लुत्फ और इनायत की) बातें की,¹ तो अर्ज किया कि ऐ मेरे परवरदिगार! मुझको अपना दीदार दिखला दीजिए कि मैं आपको एक नज़र देख लूँ। इरशाद हुआ कि तुम मुझको (दुनिया में) हरगिज़ नहीं देख सकते, लेकिन तुम इस पहाड़ की तरफ देखते रहो, सो अगर यह अपनी जगह बरकरार रहा तो (खैर) तुम भी देख सकोगे।² पस उनके रब ने जब पहाड़ पर तजल्ली फरमाई तो (तजल्ली ने) उस (पहाड़) के परख्चे “यानी धज्जियाँ” उड़ा दिए और मूसा बेहोश होकर गिर पड़े।³ फिर जब होश में आए तो अर्ज किया कि बेशक आपकी ज्ञात पाकीज़ा (और बुलन्द) है, मैं आपकी जनाब में माज़िरत करता हूँ और सबसे पहले मैं उसपर यकीन करता हूँ। (143) इरशाद हुआ कि ऐ मूसा! (यही बहुत है कि) मैंने पैगम्बरी और अपनी गुफ्तगू से और लोगों पर तुमको इस्तियाज़ दिया है, तो (अब) जो कुछ मैंने तुमको अता किया है उसको लो और शुक्र करो। (144) और हमने चन्द तख़्तियों पर हर किस्म की (ज़रूरी) नसीहत और (ज़रूरी अहकाम के मुताल्लिक) हर चीज़ की तफ़सील उनको लिखकर दी, तो उनको कोशिश के साथ (खुद भी) अमल में लाओ और अपनी कौम को (भी) हुक्म करो कि उनके अच्छे-अच्छे अहकाम पर अमल करें, मैं अब बहुत जल्द तुम लोगों को उन बेहुकों का मक़ाम दिखलाता हूँ।⁴ (145) मैं ऐसे लोगों को अपने अहकाम से बरग़श्ता “यानी विमुख” ही रखूँगा जो दुनिया में तकबुर करते हैं जिसका उनको कोई हक़ हासिल नहीं,⁵ और अगर तमाम निशानियाँ देख लें तब भी उनपर ईमान न लाएँ, और अगर हिदायत का रास्ता देख लें तो उसको अपना तरीक़ा न बनाएँ, और अगर गुमराही का रास्ता देख लें तो उसको अपना तरीक़ा बना लें।⁶ यह इस सबब से है कि उन्होंने हमारी आयतों को झूठा बतलाया और उनसे गाफ़िल रहे। (146) और ये लोग जिन्होंने हमारी आयतों को और कियामत के पेश आने को झुठलाया, उनके सब काम ग़ारत गए, उनको वही सज़ा दी जाएगी जो कुछ ये करते थे। (147) ♦

और मूसा की कौम ने उनके बाद अपने (कब्जे में मौजूद) ज़ेवरों का एक बछड़ा ठहरा लिया जो कि एक कालिब “यानी ढाँचा और साँचा” था जिसमें एक आवाज़ थी। क्या उन्होंने यह न देखा कि वह उनसे बात तक नहीं करता था, और न उनको कोई राह बतलाता था, उसको उन्होंने (माबूद) करार दिया और बड़ा बेढंगा काम किया। (148) और जब शर्मिन्दा हुए और मालूम हुआ कि वाकई वे लोग गुमराही में पड़ गए तो कहने

1. हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से हक़ तअ़ाला ने कलाम फरमाया, मगर यह कि उसकी हकीकत क्या थी, अल्लाह ही को मालूम है। जिन अक्ली गुमानों की शरीअत नफी न करे उन सबके कायल होने की गुन्जाइश है, लेकिन बिना दलील यकीन का न होना ज़्यादा एहतियात की राह है।
2. मूसा अलैहिस्सलाम का दीदार की दरख़्वास्त करना दुनिया में उसके अक्ली तौर पर मुम्किन होने पर, और हक़ तअ़ाला का जवाब शर्ई तौर पर उसकी मुमानअत की दलील है। और अहले सुन्नत वल् जमाअत (यानी हक़ पर कायम जमाअत) का यही मज़हब है।
3. मूसा अलैहिस्सलाम की बेहोशी उनपर तजल्ली फरमाने से न थी, क्योंकि ज़ाहिरन् ‘लिज़-बलि’ के खिलाफ़ है, बल्कि पहाड़ की यह हालत देखकर और फिर तजल्ली के मक़ाम यानी पहाड़ के साथ एक तरह से ताल्लुक और करीब होने से बेहोशी हुई।
4. इसमें खुशख़बरी और वायदा है कि ‘मिस्र’ या ‘शाम’ पर जल्द ही कब्ज़ा हुआ चाहता है। मकसूद इससे इताअत का शौक दिलाना है, कि अल्लाह के अहक़ाम की इताअत की ये वरकतें हैं।
5. क्योंकि अपने को बड़ा समझना उसका हक़ है जो हकीकत में बड़ा हो, और वह एक खुदा की ज्ञात है।
6. यानी हक़ के क़वूल न करने से फिर दिल सख़्त हो जाता है और बर्ग़श्तगी (विमुखता) इस हद तक पहुँच जाती है।
7. इसका किस्सा सूर: ‘ता-हा’ में है।

लगे कि अगर हमारा रब हमपर रहम न करे और हमारा (यह) गुनाह माफ़ न करे तो हम बिलकुल गए गुज़रे।¹ (149) और जब मूसा अपनी कौम की तरफ़ वापस आए गुस्से और रंज में भरे हुए,² तो फ़रमाया तुमने मेरे बाद यह बड़ी नामाकूल हरकत की। क्या अपने रब का हुक्म (आने) से पहले ही तुमने जल्दबाज़ी कर ली? और (जल्दी में) तख़्तियाँ एक तरफ़ रखी³ और अपने भाई का सर पकड़कर उनको अपनी तरफ़ घसीटने लगे। (हारून ने) कहा कि ऐ मेरे माँ-जाये (भाई!) इन लोगों ने मुझको बेहकीकत समझा और करीब था कि मुझको क़त्ल कर डालें, तो तुम मुझपर (सख़्ती करके) दुश्मनों को मत हँसाओ, और मुझको इन ज़ालिमों के साथ मत शुमार करो। (150) (मूसा ने) कहा कि ऐ मेरे रब! मेरी ख़ता माफ़ फ़रमा दे और मेरे भाई की भी, और हम दोनों को अपनी रहमत में दाख़िल फ़रमाइए, और आप सब रहम करने वालों से ज़्यादा रहम करने वाले हैं। (151) ♦

बेशक जिन लोगों ने गौसाला-परस्ती की है, उनपर बहुत जल्द उनके रब की तरफ़ से ग़ज़ब और ज़िल्लत इस दुनियावी ज़िन्दगी में ही पड़ेगी, और हम बोहतान बाँधने वालों को ऐसी ही सज़ा दिया करते हैं। (152) और जिन लोगों ने गुनाह के काम किए फिर वे उनके बाद तौबा कर लें और ईमान ले आयें तो तुम्हारा रब उस (तौबा) के बाद गुनाह का माफ़ कर देने वाला, रहमत करने वाला है। (153) और जब मूसा का गुस्सा ख़त्म हुआ तो (उन) तख़्तियों को उठा लिया⁴ और उनके मज़ामीन में उन लोगों के लिए जो अपने रब से डरते थे हिदायत और रहमत थी। (154) और मूसा (अलैहिस्सलाम) ने सत्तर आदमी अपनी कौम में से हमारे

1. चुनौचे खास तरीके से उनको तौबा को मुकम्मल करने का हुक्म हुआ, जिसका किस्सा सूर: ब-कर: आयत 'फ़क्कतुलू अन्फु-सकुम्' में गुज़रा है।
2. क्योंकि उनको वज़ह से यह मालूम हो गया था।
3. और जल्दी में ऐसे जोर से रखी गई कि देखने वाले को अगर गौर न करे तो शुब्हा हो कि जैसे किसी ने पटख दी हों।
4. मूसा अलैहिस्सलाम का गुस्सा अल्लाह के लिए था। उसकी मिसाल 'सुक्र मिनल मुबाह' (यानी जायज़ और हलाल चीज़ से नशे या बेहोशी की कैफ़ियत) जैसी है, जिसमें आदमी मुकल्लफ़ नहीं रहता। उसपर दूसरे शख्स के गुस्से को जो नफ़स के वास्ते हो कियास नहीं कर सकते बल्कि उसकी हालत 'सुक्र मिनल हराम' (यानी किसी हराम चीज़ से नशे व ख़ुमार की कैफ़ियत) जैसी है, जिसको शरीअत में उज़्र करार नहीं दिया गया। और फिर आदतनु मुम्किन है कि ज़्यादा मशग़ूली की वज़ह से ख़याल ही न रहा हो कि मेरे हाथ में क्या है, और भाई को पकड़ने और पूछताछ करने के लिए हाथ ख़ाली करना हो, इसलिए तख़्तियों के 'इल्का-ए-अल्वाह' (यानी तख़्तियों को डाल देने) का अमल हो गया हो। और बाज़ ने लिखा है कि इल्का के मायने हैं 'जल्दी से रख देना', मजाज़न व तश्बीहन इल्का से ताबीर किया।

मुकर्ररा वक्त (पर लाने) के लिए चुने,¹ सो जब उनको जलजले (वगैरह) ने आ पकड़ा तो (मूसा) अर्ज करने लगे कि ऐ मेरे परवर्दिगार! अगर आपको यह मन्जूर होता तो आप इससे पहले ही इनको और मुझको हलाक कर देते, कहीं आप हममें के चन्द बेवकूफों की हरकत पर सबको हलाक कर देंगे? यह सिर्फ आपकी तरफ से एक इम्तिहान है, और इन (इम्तिहानों) से जिसको आप चाहें गुमराही में डाल दें और जिसको आप चाहें हिदायत पर कायम रखें, आप ही तो हमारे खबरगीरी करने वाले हैं। हमपर मग्फिरत और रहमत फरमाइए, और आप सब माफी देने वालों से ज्यादा हैं। (155) और हम लोगों के नाम दुनिया में भी नेक हालत पर रहना लिख दीजिए और आखिरत में भी हम आपकी तरफ रुजू करते हैं। (अल्लाह तआला) ने फरमाया कि मैं अपना अज़ाब तो उसी पर करता हूँ जिसपर चाहता हूँ और मेरी रहमत तमाम चीज़ों को घेरे हुए है। तो वह रहमत उन लोगों के नाम तो ज़रूर ही लिखूँगा जो अल्लाह तआला से डरते हैं और ज़कात देते हैं और जो कि हमारी आयतों पर ईमान लाते हैं।² (156) जो लोग ऐसे रसूल नबी उम्मी की इत्तिबा करते हैं जिनको वे लोग अपने पास तौरात व इन्जील में लिखा हुआ पाते हैं, (जिनकी सिफ़्त यह भी है) कि वह उनको नेक बातों का हुक्म फरमाते हैं और बुरी बातों से रोकते हैं, और पाकीज़ा चीज़ों को उनके लिए हलाल बतलाते हैं और गन्दी चीज़ों को (बदस्तूर) उनपर हराम फरमाते हैं, और उन लोगों पर जो बोझ और तौक “यानी बेड़ियाँ” थे उनको दूर करते हैं, सो जो लोग उन (नबी मौसूफ) पर ईमान लाते हैं और उनकी हिमायत करते हैं और उनकी मदद करते हैं, और उस नूर की इत्तिबा करते हैं जो उनके साथ भेजा गया है,³ ऐसे लोग पूरी फ़लाह पाने वाले हैं। (157) ♦

आप कह दीजिए कि ऐ (दुनिया-जहान के) लोगो! मैं तुम सबकी तरफ़ उस अल्लाह का भेजा हुआ (पैगम्बर) हूँ जिसकी बादशाही है तमाम आसमानों और ज़मीन में, उसके सिवा कोई इबादत के लायक नहीं, वही ज़िन्दगी देता है और वही मौत देता है। सो (ऐसे) अल्लाह पर ईमान लाओ और उसके (ऐसे) नबी उम्मी पर (भी) जो कि (खुद) अल्लाह पर और उसके अहकाम पर ईमान रखते हैं,⁴ और उन (नबी) की पैरवी करो ताकि तुम सही रास्ते पर आ जाओ। (158) और मूसा की कौम में एक जमाअत ऐसी भी है जो (दीने) हक के मुवाफ़िक़ हिदायत करते हैं और उसी के मुवाफ़िक़ इन्साफ़ भी करते हैं।⁵ (159) और हमने उनको बारह

1. जब गौसाला का किस्सा तमाम हुआ तो मूसा अलैहिस्सलाम ने इल्मीनान से तौरात के अहकाम सुनाए। उन लोगों की शुब्हात निकालने की आदत थी ही, चुनौचे उसमें भी शुब्हा निकाला कि हमको यह कैसे मालूम हो कि ये अल्लाह तआला के अहकाम हैं। हमसे अल्लाह तआला खुद कह दें तो यकीन किया जाए। आपने हक़ तआला से अर्ज किया। वहाँ से हुक्म हुआ कि उनमें के कुछ आदमी जिनको ये लोग मोतबर समझते हों चुन करके उनको तूर पहाड़ पर ले आओ, हम उनसे खुद कह देंगे कि ये हमारे अहकाम हैं। और उनके लाने के लिए एक वक्त तय किया गया।
2. तक्वा और ज़कात व ईमान में सीमित करना मकसूद नहीं, हर बाब का एक अमल नमूने के तौर पर ज़िक्र फरमा दिया। मतलब यह है कि अहकाम की इताअत करते हैं, फिर जिस दर्जे की इताअत होगी उसी दर्जे की रहमत होगी।
3. इससे कुरआन मुराद है।
4. यानी बावजूद इस बड़े रुतबे के उनको अल्लाह पर और सब रसूलों व किताबों पर ईमान से आर और शर्म नहीं, तो तुमको अल्लाह व रसूल पर ईमान लाने से क्यों इनकार है?
5. इससे अब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ियल्लाहु अन्हु वगैरह मुराद हैं। और इससे यह भी मालूम हुआ कि आपकी नुबुव्वत जैसे दलीलों की शहादत से साबित है इसी तरह अहले इल्म की शहादत से भी ताईद पाई हुई है।

खानदानों में बाँट करके सबकी अलग-अलग जमाअत मुकर्रर कर दी।¹ और (एक इनाम यह किया कि) हमने मूसा को हुक्म दिया जबकि उनकी कौम ने पानी माँगा कि अपनी लाठी को (फलों) पत्थर पर मारो, (बस मारने की देर थी) फौरन उससे बारह चश्मे फूट निकले, (चुनाँचे) हर-हर शख्स ने अपने पानी पीने का मौका “यानी जगह” मालूम कर लिया। और (एक इनाम यह किया कि) हमने उनपर बादल से साया किया, और (एक इनाम यह किया कि) उनको तुरन्जबीन “यानी एक किस्म की कुदरती शक्र” और बटेरें पहुँचाई, (और इजाजत दी कि) खाओ पाक चीजों से जो कि हमने तुमको दी हैं, और उन्होंने हमारा कोई नुकसान नहीं किया लेकिन अपना ही नुकसान करते थे।² (160) और (वह ज़माना याद करो) जब उनको हुक्म दिया कि तुम लोग उस आबादी में जाकर रहो, और खाओ उससे जिस जगह से तुम्हारा दिल चाहे, और (ज़बान से) कहते जाना कि तौबा है (तौबा है) और (अज़िज़ी से) झुके-झुके दरवाज़े में दाखिल होना, हम तुम्हारी (पिछली) ख़ताएँ माफ़ कर देंगे (यह तो सबके लिए होगा और) जो नेक काम करेंगे उनको और भी ज़्यादा देंगे। (161) सो बदल डाला उन ज़ालिमों ने एक और कलिमा जो ख़िलाफ़ था उस (कलिमे) के जिसकी उनसे फ़रमाइश की गई थी, (इसपर) हमने उनपर एक आसमानी आफ़त भेजी, इस वजह से कि वे हुक्म को ज़ाया करते थे। (162) ♦

और आप इन (अपने ज़माने के यहूदी) लोगों से (तंबीह के तौर पर) उस बस्ती³ (वालों) का जो कि दरिया-ए-शोर के करीब आबाद थे, (उस वक़्त का) हाल पूछिए, जबकि वे हफ़्ता “शनिवार” के बारे में (शर्ई) हद से निकल रहे थे, जबकि उनके हफ़्ते “शनिवार” के दिन उन (के दरिया) की मछलियाँ ज़ाहिर हो-होकर उनके सामने आती थीं, और जब हफ़्ते “शनिवार” का दिन न होता तो उनके सामने न आती थीं। हम उनकी इस तरह पर (सख़्त) आजमाइश करते थे, इस सबब से कि वे (पहले से) बेहुक्मी किया करते थे। ● (163) और (उस वक़्त का हाल पूछिए) जबकि उनमें से एक जमाअत ने (यूँ) कहा कि तुम ऐसे लोगों को क्यों नसीहत किए जाते हो जिनको अल्लाह तआला (बिलकुल) हलाक करने वाले हैं या उनको सख़्त सज़ा देने वाले हैं? उन्होंने जवाब दिया कि तुम्हारे (और अपने) रब के सामने उज़्र करने के लिए, और (साथ ही) इसलिए कि शायद ये डर जाएँ।⁴ (164) सो (आख़िर) जब वे उस अमूर “यानी बात और हुक्म” को छोड़े ही रहे जो उनको समझाया जाता था, (यानी न माना) तो हमने उन लोगों को तो बचा लिया जो उस बुरी बात से मना किया करते थे, और उन लोगों को जो (ज़िक्र हुए हुक्म में) ज़्यादती करते थे एक सख़्त अज़ाब में पकड़ लिया, इस वजह से कि वे नाफ़रमानी किया करते थे। (165) (यानी) जिस काम से उनको मना किया गया था

1. और हर एक पर एक सरदार निगरानी के लिए मुकर्रर कर दिया जिनका ज़िक्र सूर: मा-इद: के रुकूअ नम्बर तीन में है, ‘व बअस्मा मिन्हमुस्ने अ-श-र नकीबन्’।
2. ये वाकिआत वादी-ए-तीह के हैं। इनकी तफ़सील सूर: ब-कर: में गुज़र चुकी।
3. उस बस्ती का नाम अक्सर ने ईला लिखा है। समुद्र के करीब होने की वजह से ये लोग मछली पकड़ने के शौकीन थे।
4. जब नसीहत के असरदार होने की बिलकुल उम्मीद न हो तो नसीहत करना वाजिब नहीं रहता। अगर फिर भी नसीहत करे तो यह बुलन्द हिम्मती है। पस जिस जमाअत ने यूँ कहा कि ‘तुम क्यों नसीहत किए जाते हो’ नाउम्मीद होने की वजह से वाजिब न होने पर अमल किया। और जिस जमाअत ने यह कहा कि ‘तुम्हारे और अपने रब के सामने उज़्र करने के लिए’ तो या तो उनको नाउम्मीदी नहीं हुई या बुलन्द हिम्मती वाले पहलू को इख़्तियार किया। गरज़ दोनों सही थे और दोनों के नज़ात पाने को हज़रत इकरमा रज़ियल्लाहु अन्हु ने निकाला और साबित किया, और हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु ने पसन्द करके उनको इनाम भी दिया।

जब वे उसमें हद से निकल गए तो हमने उनको (ग़ज़ब और गुस्से से) कह दिया कि तुम ज़लील बन्दर बन जाओ। (166) और (वह वक़्त याद करना चाहिए) जब आपके रब ने (यह बात) बतला दी कि वह उन (यहूद) पर कियामत (के करीब) तक ऐसे (किसी-न-किसी) शख्स को ज़रूर मुसल्लत करता रहेगा जो उनको सख़्त सज़ाओं की तकलीफ़ पहुँचाता रहेगा,¹ बेशक आपका रब वाकई (जब चाहे) जल्द ही सज़ा दे देता है, और बेशक वह (अगर कोई बाज़ आ जाए तो) बड़ी ही मग़्फ़िरत (और) बड़ी ही रहमत वाला (भी) है (167) और हमने दुनिया में उनकी अलग-अलग जमाअतें कर दीं, बाज़े उनमें नेक थे और बाज़े उनमें और तरह के थे (यानी बुरे), और हम उनको खुशहालियों (सेहत और मालदारी) और बदहालियों (बीमारी और तंगी) से आजमाते रहे, शायद कि बाज़ आ जाएँ? (168) फिर उनके बाद ऐसे लोग उनके उत्तराधिकारी हुए कि किताब (तौरात) को उनसे हासिल किया, इस ज़लील दुनिया का माल व सामान ले लेते हैं, और (इस गुनाह को मामूली समझकर) कहते हैं कि हमारी ज़रूर मग़्फ़िरत हो जाएगी, हालाँकि अगर उनके पास (फिर) वैसा ही माल व सामान (दीन बेचने के बदले) आने लगे तो उसको ले लेते हैं। क्या उनसे (इस) किताब (के इस मज़मून) का अहद नहीं लिया गया कि खुदा की तरफ़ सिवाय हक़ बात के और किसी बात की निस्बत न करें? और उन्होंने उस (किताब) में जो कुछ था उसको पढ़ (भी) लिया, और आख़िरत वाला घर उन लोगों के लिए (इस दुनिया से) बेहतर है जो (इन बुरे अक़ीदों और आमाal से) परहेज़ रखते हैं, क्या फिर (ऐ यहूद) तुम नहीं समझते? (169) और (उनमें से) जो लोग किताब के पाबन्द हैं और नमाज़ की पाबन्दी करते हैं, हम ऐसे लोगों का जो अपना सुधार और दुरुस्ती करें सवाब जाया न करेंगे। (170) और (वह वक़्त भी ज़िक्र के काबिल है) जब हमने पहाड़ को उठाकर छत की तरह उनके ऊपर (लटका हुआ) कर दिया और उनको यकीन हुआ कि अब उनपर गिरा,² (और कहा कि जल्दी) क़बूल करो जो किताब हमने तुमको दी है, (यानी तौरात और) मज़बूती के साथ (क़बूल करो) और याद रखो जो अहक़ाम उसमें हैं, जिससे उम्मीद है कि तुम मुत्तकी बन जाओ। (171) ♦

और जबकि आपके रब ने आदम की औलाद की पुश्त से उनकी औलाद को निकाला, और उनसे उन्हीं के मुताल्लिक़ इकरार लिया⁴ कि क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूँ? सबने जवाब दिया कि क्यों नहीं, हम सब (इस हकीक़त के) गवाह बनते हैं, ताकि तुम लोग कियामत के दिन (यूँ न) कहने लगे कि हम तो इस (तौहीद) से (बिलकुल) बेख़बर थे। (172) या (यूँ) कहने लगे कि (असल) शिर्क तो हमारे बड़ों ने किया था और हम उनके बाद उनकी नस्ल में हुए, सो क्या उन ग़लत राह (निकालने) वालों के फ़ेल पर आप हमको तबाही में

1. यानी ज़िल्लत व रुस्वाई और मातहतती। चुनौचे मुदत से यहूदी किसी न किसी हुकूमत के मातहत और नाराज़गी का शिकार ही चले आते हैं।
2. क्योंकि कभी नेकियों से तरगीब (यानी शौक) हो जाती है और कभी बुराइयों से डराना और ख़ौफ़ दिलाना हो जाता है।
3. छत के साथ तश्बीह (उपमा) सर के ऊपर होने में है, लटका हुआ होने में नहीं।
4. यह रूहों के आलम में हुए अहद का बयान है।

डाले देते हैं। (173) और हम इसी तरह आयतों को साफ-साफ बयान किया करते हैं, और ताकि वे बाज़ आ जाएँ। (174) और उन लोगों को उस शख्स का हाल पढ़कर सुनाइए कि उसको हमने अपनी आयतें दीं,² फिर वह उनसे बिलकुल ही निकल गया, फिर शैतान उसके पीछे लग लिया, सो वह गुमराह लोगों में (दाखिल) हो गया। (175) और अगर हम चाहते तो उसको उन (आयतों) की बदौलत बुलन्द (रुतबे वाला) कर देते,³ लेकिन वह तो दुनिया की तरफ़ माइल हो गया और अपनी नफ़्सानी ख्वाहिश की पैरवी करने लगा। सो उसकी हालत कुत्ते की सी हो गई कि अगर तू उसपर हमला करे तब भी हाँपे या उसको छोड़ दे तब भी हाँपे। यही हालत (आम तौर पर) उन लोगों की है जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया, सो आप उस हाल को बयान कर दीजिए, शायद वे लोग कुछ सोचें। (176) (हकीकत में) उन लोगों की (हालत भी) बुरी हालत है, जो हमारी आयतों को झुठलाते हैं, और (इस झुठलाने से) वे अपना (ही) नुकसान करते हैं।⁴ (177) जिसको अल्लाह हिदायत करता है सो हिदायत पाने वाला वही होता है, और जिसको वह गुमराह कर दे, सो ऐसे ही लोग (हमेशा के) घाटे में पड़ जाते हैं। (178) और हमने ऐसे बहुत-से जिन्न और इनसान द्रोख के लिए पैदा किए हैं, जिनके दिल ऐसे हैं जिनसे नहीं समझते, और जिनकी आँखें ऐसी हैं जिनसे नहीं देखते, और जिनके कान ऐसे हैं जिनसे नहीं सुनते, ये लोग जानवरों की तरह हैं, बल्कि ये लोग ज़्यादा बेराह हैं, ये लोग गाफिल हैं। (179) और अच्छे-अच्छे नाम अल्लाह तआला ही के लिए हैं, सो उन (नामों) से अल्लाह तआला ही को पुकारा करो और ऐसे लोगों से ताल्लुक भी न रखो जो उसके नामों में ग़लत रास्ता इख्तियार करते हैं। उन लोगों को उनके किए की ज़रूर सज़ा मिलेगी। (180) और हमारी मख़्लूक (जिन्न और इनसान) में एक जमाअत ऐसी भी है जो हक़ (यानी दीन इस्लाम) के मुवाफ़िक़ हिदायत करते हैं और उसी के मुवाफ़िक़ इन्साफ़ भी करते हैं।⁵ (181) ♦

1. ऊपर बनी इसराईल के हालात के दरमियान में उनका अल्लाह के अहक़ाम का मामूर होना और रूहों के आलमे अहद में तमाम आदमियों का तौहीद के लिए मामूर होने का ज़िक्र मकसूद बनाकर और इन ज़िक्रशुदा का तौहीद व रिसालत के इनकार से उन किए हुए अहदों के खिलाफ़ करना जिम्नन मज़कूर हुआ था। आगे अहक़ाम को जानने के बाद उनके खिलाफ़ करने वाले की मिसाल बयान फरमाते हैं।
2. यानी अहक़ाम का इल्म दिया।
3. यानी अगर वह उन आयतों पर अमल करता जिसका तक्दीर से वाबस्ता होना एक मालूम चीज़ है तो उसकी कबूलियत का रुतबा बढ़ता।
4. ऊपर गुमराह लोगों की हालत बयान फरमाई कि इसके बावजूद कि हिदायत का रास्ता उनपर वाजेह हो गया फिर भी मुख़ालफ़त और बैर को नहीं छोड़ते। चूँकि उनके इस बैर और मुख़ालफ़त से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सख़्त ग़म होता था इसलिए आगे आपकी तसल्ली का मज़मून है।
5. ऊपर मुशिरकों के हक़ में 'उन लोगों को सज़ा ज़रूर मिलेगी' फरमाया था। चूँकि वह जज़ा उस वक़्त तक ज़ाहिर न हुई थी, इससे ज़ाहिर न होने का उनको शुब्हा हो सकता था। आगे उसके ज़ाहिर न होने की वजह बयान करके उस शुब्हा को ख़त्म फरमाते हैं।

और जो लोग हमारी आयतों को झुठलाते हैं, हम उनको धीरे-धीरे लिए जा रहे हैं,¹ इस तरह पर कि उनको ख़बर भी नहीं।² (182) और उनको मैं मोहलत देता हूँ, इसमें कोई शक नहीं कि मेरी तदबीर बड़ी मज़बूत है।³ (183) क्या उन लोगों ने इस बात पर गौर न किया कि उनका जिनसे वास्ता है उनको ज़रा भी जुनून नहीं, वे तो सिर्फ़ एक (अज़ाब से) साफ़-साफ़ डराने वाले हैं।⁴ (184) और क्या उन लोगों ने गौर नहीं किया आसमानों और ज़मीन के आलम में, और साथ ही दूसरी चीज़ों में जो अल्लाह तआला ने पैदा की हैं, और इस बात में (भी गौर नहीं किया) कि हो सकता है कि उनकी मुद्दत करीब ही आ पहुँची हो? फिर इस (कुरआन) के बाद कौन-सी बात पर ये लोग ईमान लाएँगे।⁵ (185) जिसको अल्लाह तआला गुमराह करे उसको कोई राह पर नहीं ला सकता (फिर गुम करना बेकार है) और अल्लाह तआला उनको उनकी गुमराही में भटकते हुए छोड़ देता है। (186) ये लोग आपसे कियामत के मुताल्लिक सवाल करते हैं कि वह कब आएगी, आप फ़रमा दीजिए कि उसका इल्म सिर्फ़ मेरे रब ही के पास है,⁶ उसके वक़्त पर उसको सिवाय उसके (यानी अल्लाह के) कोई और ज़ाहिर न करेगा,⁷ वह आसमान और ज़मीन में बड़ा भारी (हादसा) होगा, इसलिए कि वह तुमपर बिल्कुल अचानक आ पड़ेगी। वे आपसे (इस तरह) पूछते हैं (जैसे) गोया आप उसकी तहकीकात कर चुके हैं। आप फ़रमा दीजिए कि उसका ख़ास इल्म अल्लाह ही के पास है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते।⁸ (187) आप कह दीजिए कि मैं खुद अपनी ख़ास ज़ात के लिए किसी नफ़े का इस्ति़यार नहीं रखता और न किसी नुक़सान का, मगर इतना ही जितना खुदा तआला ने चाहा हो, और अगर मैं ग़ैब की बातें जानता होता तो मैं बहुत-से मुनाफ़े हासिल कर लिया करता और कोई नुक़सान मुझको हरगिज़ न होता, मैं तो सिर्फ़ (शरई अहक़ाम बतला कर सवाब की) खुशख़बरी देने वाला और (अज़ाब से) डराने वाला हूँ, उन लोगों को जो ईमान रखते हैं। (188) ♦

वह (अल्लाह तआला) ऐसा कादिर व नेमतें देने वाला है जिसने तुमको एकमात्र बदन (आदम) से पैदा किया, और उसी से उसका जोड़ा (हव्वा अलैहस्सलाम को) बनाया, ताकि वह उस (अपने जोड़े) से उन्स हासिल करे। फिर जब मियाँ ने बीवी से कुरबत “निकटता” की तो उसको हल्का सा हमल “गर्भ” रह गया, सो वह उसको लिए हुए चलती फिरती रही, फिर जब वह बोझल हो गई तो दोनों (मियाँ-बीवी) अल्लाह से जो कि उनका मालिक है दुआ करने लगे कि अगर आपने हमको सही (सालिम औलाद) दे दी तो हम ख़ूब शुक्रगुज़ारी करेंगे। (189) सो जब अल्लाह तआला ने उन दोनों को सही (सालिम औलाद) दे दी तो अल्लाह

1. यानी जहन्नम की तरफ़।
2. और ‘ला यअलमू-न’ के मायने यह है कि वे इस मोहलत को अपने तरीके के दुरुस्त होने पर गुमान करते हैं, और अल्लाह के यहाँ अपने महबूब व मक्बूल होने पर, हालाँकि वे जहन्नम तक की दूरी को तय कर रहे हैं।
3. हासिल यह कि उनकी शरारतों पर सख़्त सज़ा देना मन्ज़ूर है, इसलिए उसकी यह तदबीर की गई कि यहाँ कामिल पकड़ नहीं फ़रमाई।
4. हासिल यह कि अगर आपकी मजमूई हालत में गौर करें तो आपकी पैग़म्बरी समझ में आ जाए।
5. हासिल यह कि न दीने हक़ तक पहुँचाने वाले यानी दलील की फ़िक्र है। और न इस पहुँचाने वाले के सहायक यानी मौत के ध्यान व ख़याल का ज़िक्र है।
6. यानी दूसरे किसी को उसकी ख़बर नहीं।
7. और वह ज़ाहिर करना यह होगा कि उसको कायम कर देगा। उस वक़्त सबको पूरी ख़बर हो जाएगी।
8. वाज़ उलूम हक़ तआला ने अपने इल्म के ख़जाने में महफूज़ रखे हैं। अम्बिया को भी तफ़सील के साथ उनकी इत्तिला नहीं दी। इस आयत और मुस्लिम व बुख़ारी में मौजूद उस हदीस जिसमें यह कहा गया है कि उसके बारे में जिससे पूछा जा रहा है वह भी पूछने वाले से ज़्यादा नहीं जानता, से साफ़ मालूम होता है कि यकीन व तफ़सील के साथ कियामत की इत्तिला आपसे भी पोशीदा थी।

तआला की दी हुई चीज़ में वे दोनों अल्लाह तआला के शरीक करार देने लगे, सो अल्लाह तआला पाक है उनके शिर्क से।' (190) क्या ऐसों को शरीक ठहराते हैं जो किसी चीज़ को बना न सकें और वे खुद ही बनाए जाते हों। (191) और वे उनको किसी किस्म की मदद (भी) नहीं दे सकते, और वे खुद अपनी भी मदद नहीं कर सकते। (192) और अगर तुम उनको कोई बात बतलाने को पुकारो तो तुम्हारे कहने पर न चलें। तुम्हारे एतिबार से (दोनों बातें) बराबर हैं, चाहे तुम उनको पुकारो या तुम चुप रहो।' (193) वाकई तुम खुदा को छोड़कर जिनकी इबादत करते हो वे भी तुम जैसे ही बन्दे हैं, सो तुम उनको पुकारो, फिर उनको चाहिए कि तुम्हारा कहना कर दें अगर तुम सच्चे हो। (194) क्या उनके पाँव हैं जिनसे वे चलते हैं, या उनके हाथ हैं जिनसे वे किसी चीज़ को थाम सकें, या उनकी आँखें हैं जिनसे वे देखते हों, या उनके कान हैं जिनसे वे सुनते हों? आप (यह भी) कह दीजिए कि तुम अपने सब शरीकों को बुला लो, फिर मुझे नुकसान पहुँचाने की तदबीर करो, फिर मुझको बिलकुल भी मोहलत मत दो। (195) यकीनन मेरा मददगार अल्लाह तआला है जिसने यह किताब नाज़िल फ़रमाई, और वह (आम तौर पर) नेक बन्दों की मदद किया करता है। (196) और तुम जिन लोगों की खुदा को छोड़कर इबादत करते हो वे तुम्हारी कुछ मदद नहीं कर सकते, और न वे अपनी मदद कर सकते हैं। (197) और अगर उनको कोई बात बताने को पुकारो तो (उसको) न सुनें, और उनको आप देखते हैं कि (जैसे) वे आपको देख रहे हैं, और वे कुछ भी नहीं देखते।' (198) सरसरी बर्ताव को कबूल कर लिया कीजिए और नेक काम की तालीम कर दिया कीजिए, और जाहिलों से एक किनारे हो जाया कीजिए।' (199) और अगर आपको शैतान की तरफ़ से कोई वस्वसा आने लगे तो अल्लाह तआला की पनाह माँग लिया कीजिए, बेशक वह ख़ूब सुनने वाला, ख़ूब जानने वाला है। (200) यकीनन जो लोग खुदा से डरने वाले हैं, जब उनको शैतान की तरफ़ से कोई ख़तरा आ जाता है तो वे याद में लग जाते हैं, सो एक दम उनकी आँखें खुल जाती हैं। (201) और जो (शैतानों के ताबे या अधीन) हैं वे उनको गुमराही में खींचे

1. यहाँ तक तो हक़ तआला की सिफ़तें ज़िक्र की गई थीं, जिनका तक्ज़ा यह है कि माबूद होने का हक़दार सिर्फ़ वही है। आगे बातिल और झूठे माबूदों की कमियों और ख़ामियों का ज़िक्र है, जिनसे अच्छी तरह वाज़ेह हो जाता है कि वे माबूद बनने और बनाने के लायक नहीं हैं।
2. इसके दो मतलब हो सकते हैं, एक यह कि तुम उनको पुकारो कि वे तुमको कोई बात बतला दें, तो तुम्हारा कहना न करें यानी न बतलाएँ। और दूसरे इससे ज़्यादा यह कि तुम उनको पुकारो कि आओ हम तुमको कुछ बतला दें तो वे तुम्हारे कहने पर न चलें, यानी तुम्हारी बतलाई हुई बात पर अमल न कर सकें।
3. खुलासा यह है कि जो काम सबसे ज़्यादा आसान है कि कोई बात बतलाने के लिए पुकारे तो सुन लेना, वे इसी से आज़िज़ हैं, तो जो इससे मुश्किल है कि अपनी हिफ़ाज़त करें। और फिर जो इससे भी ज़्यादा मुश्किल है कि दूसरों की इम्दाद करना, और फिर जो इन सबसे ज़्यादा दुश्वार है कि किसी चीज़ को पैदा करना, इससे तो और भी ज़्यादा आज़िज़ होंगे। फिर ऐसे आज़िज़ और मोहताज़ माबूद बनने के लायक कैसे हो सकते हैं?
4. ऊपर जाहिल मुशिरकीन से एक बहस थी। चूँकि बावजूद इस बहस और दलील देने के भी वे लोग अपनी हद दर्जा दुश्मनी से अपनी जहालत पर अड़े रहते थे जिससे गुस्सा आ जाना स्वभाविक था, इसलिए आगे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को नर्मी का हुक्म है। और गुस्सा आ जाने पर अल्लाह तआला से पनाह माँगने की तालीम है, और उनके गुमराही में फँसे रहने का बयान है। जिससे उनकी तरफ़ से मुकम्मल तौर पर मायूसी हो जाए, ताकि फिर गुस्सा न आए।
5. यानी लोगों के आमाल व अख़्लाक की तह और हकीकत तलाश न कीजिए, बल्कि ज़ाहिरी नज़र में सरसरी तौर पर जो काम किसी से अच्छा हो उसको भलाई पर महमूल कीजिए, बातिन का हाल अल्लाह के सुपुर्द कीजिए। हासिल यह कि समाजी ज़िन्दगी में आसानी रखिए, सख़्ती न कीजिए।
6. 'और अगर आपको शैतान की तरफ़ से कोई वस्वसा आने लगे' का मज़मून अम्बिया अलैहिमुस्सलाम के गुनाहों से महफूज़ रहने के मनाफ़ी और ख़िलाफ़ नहीं, क्योंकि महफूज़ रहने का हासिल यह है कि शैतान गुनाह नहीं करा सकता, यह नहीं कि गुनाह की राय नहीं दे सकता।

चले जाते हैं, पस वे बाज़ नहीं आते। (202) और जब आप कोई मोजिज़ा उनके सामने ज़ाहिर नहीं करते तो वे लोग कहते हैं कि आप यह मोजिज़ा क्यों न लाए? आप फ़रमा दीजिए कि मैं उसकी पैरवी करता हूँ जो मुझपर मेरे रब की तरफ़ से हुक्म भेजा गया है, ये (गोया) तुम्हारे रब की तरफ़ से बहुत-सी दलीलें हैं और हिदायत और रहमत है उन लोगों के लिए जो ईमान रखते हैं।¹ (203) और जब कुरआन पढ़ा जाया करे तो उसकी तरफ़ कान लगा दिया करो और ख़ामोश रहा करो,² उम्मीद है कि तुमपर (नई या और ज़्यादा) रहमत हो। (204) और (आप हर-हर शख्स से यह भी कह दीजिए कि ऐ शख्स!) अपने रब की याद किया कर, अपने दिल में आजिज़ी के साथ, और ख़ौफ़ के साथ, और ज़ोर की आवाज़ के मुकाबले में कम-आवाज़ के साथ, सुबह और शाम, (यानी हमेशा) और गाफिलों में शुमार मत होना।³ (205) यकीनन जो (फ़रिश्ते) तेरे रब के नज़दीक (ख़ास और करीबी) हैं वे उसकी इबादत से (जिसमें असल अक़ायद हैं) तकब्बुर नहीं करते और उसकी पाकी बयान करते हैं, (जो कि ज़बान की नेकी है) और उसको सज्दा करते हैं, (जो कि हाथ-पाँव और जिस्म के अन्य अंगों के आमाल से है)। □ ▲ (206) ♦

8 सूर: अन्फाल 88

सूर: अन्फाल मदीना में नाज़िल हुई। इसमें 75 आयतें और 10 रुकूअ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

ये लोग⁴ आपसे (ख़ास) गुनीमतों का हुक्म मालूम करते हैं। आप फ़रमा दीजिए कि ये गुनीमतें अल्लाह की हैं और रसूल की हैं, सो तुम अल्लाह से डरो और अपने आपसी ताल्लुकात की इस्लाह (भी) करो, और अल्लाह की और उसके रसूल की इताअत करो, अगर तुम ईमान वाले हो। (1) (क्योंकि) बस ईमान वाले तो ऐसे होते हैं कि जब (उनके सामने) अल्लाह तआला का ज़िक्र आता है तो उनके दिल डर जाते हैं, और जब अल्लाह की आयतें उनको पढ़कर सुनाई जाती हैं तो वे (आयतें) उनके ईमान को और ज़्यादा (मज़बूत) कर देती हैं, और वे लोग अपने रब पर भरोसा करते हैं। (2) (और) जो कि नमाज़ की पाबन्दी करते हैं और हमने जो कुछ उनको दिया है उसमें से खर्च करते हैं। (3) (बस) सच्चे ईमान वाले ये लोग हैं। उनके लिए बड़े दर्जे हैं उनके रब के पास और (उनके लिए) मग़्फ़िरत है और इज्ज़त की रोज़ी। (4) जैसा कि आपके रब ने आपके घर (और वस्ती) से मस्तहत के साथ आपको (बद्र की तरफ़) रवाना किया, और मुसलमानों की एक

1. जवाब का हासिल यह है कि नुबुव्वत की असली गरज़ इस्लाह व सुधार है।
2. ताकि उसका मोजिज़ (यानी इनसानी ताक़त से बाहर) होना और उसकी तालीम की ख़ूबी समझ में आ जाए।
3. अदब का हासिल यह है कि दिल और हैयत में आजिज़ी व इन्किसारी और ख़ौफ़ हो, और आवाज़ बहुत ज़्यादा ऊँची न हो। या तो विलकुल आहिस्ता हो यानी ज़बान की हरकत के साथ और या दरमियानी दर्जे की हो।
4. ऊपर की सूर: में ज़्यादातर मुशिरकीन की मूर्खता और दुश्मनी और किसी क़द्र अहले किताब के कुफ़ व फ़साद का ज़िक्र था। इस सूर: में उस ज़हलत, दुश्मनी और कुफ़ व फ़साद का उनपर जो दुनिया में ववाल और निकाल (बद्र में मुशिरकीन पर और अन्य बाज़ वाकिआत में अहले किताब यहूद पर) नाज़िल हुआ उसका बयान है। बद्र का बयान ज़्यादा है और अहले किताब के वाकिआ का कम।

जमाअत उसको नागवार समझती थी।¹ (5) (और) वे उस मस्तहत (के काम) में इसके बाद कि वह ज़ाहिर हो गया था, (अपने बचाव के लिए) आपसे (मश्वरे के तौर पर) इस तरह झगड़ रहे थे कि जैसे कोई उनको मौत की तरफ़ हाँके लिए जाता है और वे देख रहे हैं। (6) और (तुम लोग उस वक़्त को याद करो) जबकि अल्लाह तआला तुमसे उन दो जमाअतों में से एक का वायदा करते थे कि वह तुम्हारे हाथ आ जाएगी, और तुम इस तमन्ना में थे कि हथियारों से ख़ाली जमाअत (यानी काफ़िला) तुम्हारे हाथ आ जाए, और अल्लाह तआला को यह मन्ज़ूर था कि अपने अहक़ाम से हक़ का हक़ होना (अमली तौर पर) साबित कर दे, और उन काफ़िरों की बुनियाद (और ताक़त) को काट दे।² (7) ताकि हक़ का हक़ होना और बातिल का बातिल होना (अमली तौर पर) साबित कर दे, अगरचे ये मुज़िम लोग ना-पसन्द ही करें। (8) (उस वक़्त को याद करो) जबकि तुम अपने रब से फ़रियाद कर रहे थे। फिर उसने (यानी अल्लाह तआला ने) तुम्हारी सुन ली, कि मैं तुमको एक हज़ार फ़रिश्तों से मदद दूँगा जो सिलसिलेवार चले आएँगे। (9) और अल्लाह तआला ने यह (इम्दाद) सिर्फ़ इस (हिक्मत के) लिए की कि (ग़ल्बे की) खुशख़बरी हो, और ताकि तुम्हारे दिलों को (बेचैनी से) करार हो जाए, और (हकीकत में तो) मदद (और ग़ल्बा) सिर्फ़ अल्लाह ही की तरफ़ से है, बेशक अल्लाह तआला ज़बरदस्त हैं, हिक्मत वाले हैं। (10) ♦

(उस वक़्त को याद करो) जबकि अल्लाह तआला तुमपर ऊँघ को तारी कर रहा था अपनी तरफ़ से चैन सुकून देने के लिए, और (उससे पहले) तुमपर आसमान से पानी बरसा रहा था, ताकि उस (पानी) के ज़रिये से तुमको (छोटी-बड़ी नापाकी से) पाक कर दे, और तुमसे शैतानी वस्वसे को दूर कर दे, और तुम्हारे दिलों को मज़बूत कर दे, और तुम्हारे पाँव जमा दे।³ (11) (और उस वक़्त को याद करो) जबकि आपका रब (उन) फ़रिश्तों को हुक्म देता था कि मैं तुम्हारा साथी (और मददगार) हूँ, सो (मुझको मददगार समझकर) तुम ईमान वालों की हिम्मत बढ़ाओ, मैं अभी काफ़िरों के दिलों में रोब डाले देता हूँ, सो तुम (काफ़िरों की) गर्दनो पर मारो और उनके पोर-पोर को मारो। (12) यह (सज़ा) इसलिए है कि उन्होंने अल्लाह की और उसके रसूल की मुखा़लफ़त की, और जो अल्लाह और उसके रसूल की मुखा़लफ़त करता है सो अल्लाह तआला (उसको) सख़्त सज़ा देते हैं। (13) (सो) यह (सज़ा) चखो, और (जान लो कि) काफ़िरों के लिए जहन्नम का अज़ाब

1. मक्का के ताजिरो का एक छोटा-सा काफ़िला मुल्क शाम से मक्का को चला, जिसके साथ माल व असबाब बहुत था। आपको वहाँ से मालूम हुआ, आपने सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम को ख़बर दी। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम को आदमियों के कम होने और माल के ज़्यादा होने का हाल मालूम होने से ग़नीमत का ख़याल हुआ और इसी इरादे से मदीना से चले। यह ख़बर जो मक्का पहुँची तो अबू जहल वहाँ के सरदारों और लश्कर के साथ उस काफ़िले की हिफ़ाज़त के लिए निकला, और काफ़िला समुद्र के किनारे-किनारे हो लिया, और अबू जहल लश्कर के साथ बद्र में आकर ठहरा। उस वक़्त जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वादी-ए-दजरान में तशरीफ़ रखते थे। और आपको यह सारा किस्सा वहाँ के ज़रिये मालूम हुआ और आपसे अल्लाह पाक का वायदा हुआ कि उन दो गिरोह यानी काफ़िला और लश्कर में से आपको एक गिरोह पर ग़ल्बा होगा। आपने सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम से मशिवरा किया। चूँकि लश्कर के मुकाबले के इरादे से न आए थे इसलिए पूरे तौर पर लड़ाई का सामान भी साथ न था, और साथ ही तादाद भी तीन सौ से कुछ ज़्यादा थी, और कुफ़ार के लश्कर में एक हज़ार आदमी थे। इसलिए बाज़ हज़रात दुविधा में पड़ गए और अज़ु किया कि इस लश्कर का मुकाबला न कीजिए बल्कि काफ़िले का पीछा करना मुनासिब है। आप रंजीदा हुए तो उस वक़्त हज़रत अबूबक्र, हज़रत उमर, हज़रत मिक्दाद, हज़रत सअद बिन मुआज़ रज़ियल्लाहु अन्हुम ने इताअत की तक़रीरें कीं। तब आप बद्र की तरफ़ रवाना हुए।

2. इस ग़ल्बे को बावजूद इसके कि कुरैश के तमाम काफ़िर हलाक न हुए थे 'बुनियाद काटना' इसलिए कहा गया कि इस वाकिए से उनकी कुव्वत विलकुल फना हो गई थी क्योंकि उनके सत्तर बड़े-बड़े सरदार क़त्ल और सत्तर कैद हुए थे इस तरह गोया वे सब ही ख़त्म हो गए थे।

3. इसमें एक किस्से की तरफ़ इशारा है। जिसका मुख़्तसर बयान यह है कि बद्र में मुशिरकीन पहले जा पहुँचे थे और पानी पर कब्ज़ा कर लिया था। मुस्लमान बाद में पहुँचे और एक सूखे रेगिस्तान में उतरे, जहाँ पानी न होने से (शेष तफ़सीर पृष्ठ 322 पर)

(मुकरर ही) है। (14) ऐ ईमान वालो! जब तुम (जिहाद में) काफिरों से आमने-सामने हो जाओ तो उनसे पुश्त मत फेरना। (15) और जो शख्स उनसे उस मौके पर (यानी मुकाबले के वक्त) पुश्त फेरेगा, मगर हाँ जो लड़ाई के लिए पैतरा बदलता हो या जो अपनी जमाअत की तरफ पनाह लेने आता हो (वह इससे अलग है, बाकी और जो ऐसा करेगा) तो वह अल्लाह तआला के गुज़ब में आ जाएगा और उसका ठिकाना दोज़ख़ होगा और वह बहुत ही बुरी जगह है।¹ (16) सो तुमने उनको कत्ल नहीं किया, लेकिन अल्लाह तआला ने (बेशक) उनको कत्ल किया, और आपने (खाक की मुट्ठी) नहीं फेंकी, जिस वक्त आपने फेंकी थी, लेकिन अल्लाह ने फेंकी,² और ताकि मुसलमानों को अपनी तरफ से उनकी मेहनत का ख़ूब बदला दे, बेशक अल्लाह तआला (उन मोमिनो की बातों के) ख़ूब सुनने वाले (और उनके कामों व हालात के) ख़ूब जानने वाले हैं। (17) (एक बात तो) यह हुई और (दूसरी बात) यह (है) कि अल्लाह तआला को काफिरों की तदबीर को कमज़ोर करना था। (18) अगर तुम लोग फैसला चाहते हो तो वह फैसला तुम्हारे सामने आ मौजूद हुआ, और अगर बाज़ आ जाओ तो यह तुम्हारे लिए बहुत ही अच्छा है, और अगर तुम फिर (वही काम) करोगे तो हम भी फिर (वही काम) करेंगे और तुम्हारी जमअीयत “यानी जमाअत व संगठन” तुम्हारे ज़रा भी काम न आएगी, अगरचे कितनी ही ज़्यादा हो, और वाकई बात यह है कि अल्लाह (असल में) ईमान वालों के साथ है। (19) ♦

ऐ ईमान वालो! अल्लाह का कहना मानो और उसके रसूल का, और उस (का कहना मानने) से मुँह मत फेरना, और तुम (एतिकाद से) सुन तो लेते ही हो। (20) और तुम उन लोगों की तरह मत होना जो दावा तो करते हैं कि हमने सुन लिया, हालाँकि वे सुनते-सुनाते कुछ नहीं।¹ (21) बेशक मख़्लूक में सबसे बद्तर अल्लाह के नज़दीक वे लोग हैं जो बहरे हैं, गूंगे हैं, जो कि ज़रा नहीं समझते। (22) और अगर अल्लाह तआला उनमें कोई ख़ूबी देखते तो उनको सुनने की तौफ़ीक़ देते, और अगर उनको अब सुना दें तो ज़रूर मुँह फेर लेंगे, बेरुख़ी करते हुए। (23) ऐ ईमान वालो! तुम अल्लाह और रसूल के कहने पर अमल किया करो,

(पृष्ठ 320 का शेष)

प्यास की भी शिदत थी और नमाज़ के वक्त वुजू और गुस्ल से भी आजिज़ थे। और तयम्मूम

का हुक्म उस वक्त तक नाज़िल न हुआ था। उधर रेगिस्तान में चलना-फिरना मुसीबत कि उसमें पाँव धँसे जाते थे। इन हालात से दिल सख़्त परेशान हुआ, ऊपर से शैतान ने वस्वसा डालना शुरू किया कि अगर तुम अल्लाह के यहाँ मक़बूल व मदद-याफ़ता होते तो इस परेशानी में क्यों मुब्तला होते। हक़ तआला ने अव्वल रहमत की बारिश नाज़िल फरमाई, जिससे पानी की बहुतात हो गई, पिया भी, वुजू व गुस्ल भी किया और उससे रेत जम गया और धसन जाती रही। उसके उलट काफिर नर्म ज़मीन में थे, वहाँ कीचड़ हो गई, जिससे चलने-फिरने में दिक्कत होने लगी। गरज़ सब वस्वसे और परेशानियाँ ख़त्म हो गईं। उसके बाद उनपर ऊँघ का ग़ल्बा हुआ जिससे पूरी राहत हो गई और सब बेचैनी जाती रही। इस आयत में इन्ही वाकिआत की तरफ़ इशारा है।

1. जिहाद से भागना हराम है। हाँ अगर काफिर दोगुने से ज़्यादा हों तो जायज़ है। और जब वे दोगुने से ज़्यादा न हों तब भी दो सूरतें जायज़ होने की हैं जिनको आयत में अलग कर दिया है, एक यह कि धोखा देने को सामने से भागा हो, ताकि सामने वाला गा हो जाए, फिर अचानक उसपर लौटकर हमला करे। दूसरे यह कि असली मक़सद भागना न हो बल्कि ख़ाली हाथ होने या किसी और सबब से अपनी जमाअत में इस गरज़ से आ मिला कि उनसे ताक़त और मदद हासिल करे, फिर जाकर मुकाबला करे।

2. इसमें भी एक किस्से की तरफ़ इशारा है। वह यह कि आपने बद्र के दिन एक मुट्ठी कंकरीयों की उठाकर काफिरों की तरफ़ फेंकी, जिसके रेज़े सबकी आँखों में जा गिरे और उनको शिकस्त हुई। मुट्ठी खाक फेंकने का किस्सा कई बार हुआ, बद्र में, उहुद में, हुनैन में, लेकिन यहाँ मज़मून के रब्त से बद्र का मुराद लेना ज़्यादा मुनासिब है।

3. मतलब यह कि एतिकाद से सुनने का फायदा अमल है। जब अमल न हुआ तो यह ऐसा ही है कि जैसे एतिकाद के साथ सुना ही नहीं।

जबकि रसूल तुमको तुम्हारी जिन्दगी देने वाली चीज़ की तरफ बुलाते हों,¹ और जान लो कि अल्लाह तआला आड़ बन जाया करता है आदमी के और उसके दिल के दरमियान में,² और बेशक तुम सबको खुदा ही के पास जमा होना है। (24) और तुम ऐसे वबाल से बचो कि जो खास उन्हीं लोगों पर न पड़ेगा जो तुममें से उन गुनाहों के करने वाले हुए हैं,³ और यह जान लो कि अल्लाह तआला सख्त सज़ा देने वाले हैं। (25) और उस हालत को याद करो जबकि तुम थोड़े से थे,⁴ सरज़मीन में कमज़ोर शुमार किए जाते थे,⁵ और इस अन्देशे में रहते थे कि तुमको (मुख़ालिफ़) लोग नोच-खसोट न लें। सो (ऐसी हालत में) अल्लाह ने तुमको (मदीना में) रहने को जगह दी, और तुमको अपनी मदद से कुव्वत दी, और तुमको अच्छी-अच्छी चीज़ें (खाने को) अता फरमाई, ताकि तुम शुक्र करो। (26) ऐ ईमान वालो! तुम अल्लाह और रसूल के हुक्क में ख़लल मत डालो, और अपनी हिफ़ाज़त के काबिल चीज़ों में ख़लल मत डालो, और तुम तो (उसका नुक़सानदेह होना) जानते हो। (27) और तुम (इस बात को) जान लो कि तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद एक इम्तिहान की चीज़ है, और (इस बात को भी जान रखो कि) अल्लाह तआला के पास बड़ा भारी अन्न (मौजूद) है। (28) ♦

ऐ ईमान वालो! अगर तुम अल्लाह से डरते रहोगे, वह (यानी अल्लाह तआला) तुमको एक फ़ैसले की चीज़ देगा और तुमसे तुम्हारे गुनाह दूर कर देगा, और तुमको बख़्श देगा, और अल्लाह तआला बड़े फज़ल वाला है। (29) और (उस वाकिए का भी ज़िक्र कीजिए) जबकि काफ़िर लोग आपके बारे में (बड़ी-बड़ी) तदबीरें सोच रहे थे कि (आया) कैद कर लें या आपको क़त्ल कर डालें या आपको वतन से निकाल दें, और वे तो अपनी तदबीरें कर रहे थे और अल्लाह (पाक) अपनी तदबीरें कर रहे थे, और सबसे ज़्यादा मज़बूत तदबीर वाला अल्लाह है। (30) और जब उनके सामने हमारी आयतें पढ़ी जाती हैं तो कहते हैं कि हमने सुन लिया, अगर हम इरादा करें तो इसके बराबर हम भी कहकर ले आएँ, ये तो कुछ भी नहीं, सिर्फ़ बे-सनद बातें हैं, जो पहलों से (नक़ल होती हुई) चली आ रही हैं। (31) और जबकि उन लोगों ने कहा कि ऐ अल्लाह! अगर यह (कुरआन) वाकई आपकी तरफ़ से है, तो हमपर आसमान से पत्थर बरसाइए, या हमपर (और) कोई दर्दनाक अज़ाब भेज दीजिए। (32) और अल्लाह तआला ऐसा न करेंगे कि उनमें आपके होते हुए उनको (ऐसा) अज़ाब दें, और (यह कि) अल्लाह तआला उनको (ऐसा) अज़ाब न देंगे, जिस हालत में कि वे

1. तिमिज़ी शरीफ़ की हदीस है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उब्बी बिन कअब को पुकारा और वह नमाज़ में थे, तो उनके उज़्र पर आपने उनको यह आयत याद दिलाई। मालूम होता है कि 'इस्तजीबू' अपने आम होने की वजह से इस सूरत को भी शामिल है कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम किसी को पुकारें तो जवाब देना वाजिब है। और अपने मुतलक और आम होने से इस सूरत को भी शामिल है कि यह शख्स नमाज़ में मशगूल तो नमाज़ में ही जवाब देना वाजिब है।
2. दो रास्तों में से एक रास्ता यह कि मोमिन के दिल में नेकी की बरकत से कुफ़्र व नाफरमानी को नहीं आने देता। दूसरा रास्ता यह कि काफ़िर के दिल में मुख़ालफ़त की नहूसत से ईमान व नेकी को नहीं आने देता। इससे मालूम हुआ कि इताअत व फ़रमाँवरदारी पर हमेशा जमे रहना बड़ी फ़ायदे की चीज़ है और मुख़ालफ़त पर अड़े रहना बड़ी नुक़सान देनी वाली चीज़ है।
3. बल्कि उन गुनाहों को देखकर जिन्होंने मुदाहनत (यानी निगाह बचाई और रोक-टोक नहीं) की है वे भी उसमें शरीक होंगे।
4. यानी हिज़रत से पहले।
5. यानी मक्का में।

इस्तिगफार भी करते रहते हैं।¹ (33) और (फिर) उनका क्या हक बनता है कि उनको अल्लाह तआला (बिलकुल ही मामूली) सजा भी न दे, हालाँकि वे लोग मस्जिदे-हराम से रोकते हैं,² हालाँकि वे लोग इस मस्जिद के मुतवल्ली (बनने के भी लायक) नहीं। उसके मुतवल्ली (बनने के लायक) तो सिवाय मुत्तकी लोगों के और कोई भी नहीं, लेकिन उनमें अक्सर लोग (अपनी नालायकी) का इल्म भी नहीं रखते।³ (34) और उनकी नमाज़ खाना काबा के पास सिर्फ यह थी, सीटियाँ बजाना और तालियाँ बजाना,⁴ सो इस अज़ाब का मज़ा चखो,⁵ अपने कुफ़ के सबब।⁶ (35) बेशक ये काफ़िर लोग अपने मालों को इसलिए खर्च कर रहे हैं कि अल्लाह तआला की राह से रोकें,⁷ सो ये लोग अपने माल खर्च करते ही रहेंगे (मगर) फिर वे माल उनके हक में हसरत का सबब हो जाएँगे, फिर (आख़िर) मग़लूब हो जाएँगे, और काफ़िर लोगों को दोज़ख़ की तरफ़ जमा किया जाएगा। (36) ताकि अल्लाह तआला नापाक (लोगों) को पाक (लोगों) से अलग कर दे और (उनसे अलग करके) नापाकों को एक-दूसरे से मिला दे। यानी उन सबको एक जगह कर दे, फिर उन सबको जहन्नम में डाल दे, ऐसे ही लोग पूरे ख़सारे “यानी घाटे” में हैं। (37) ♦

आप उन काफ़िरों से कह दीजिए कि अगर ये लोग (अपने कुफ़ से) बाज़ आ जाएँगे तो उनके सारे गुनाह जो (इस्लाम से) पहले हो चुके हैं सब माफ़ कर दिए जाएँगे। और अगर अपनी वही (कुफ़ की) आदत जारी रखेंगे तो (सुना दीजिए कि) पहले गुज़रे (काफ़िरों के हक) में (हमारा) क़ानून नाफ़िज़ हो चुका है।⁸ (38) और तुम उन (अरब के काफ़िरों) से इस हद तक लड़ो कि उनमें अक़ीदे की ख़राबी (यानी शिर्क) न रहे, और दीन (ख़ालिस) अल्लाह ही का हो जाए।⁹ फिर अगर ये (कुफ़ से) बाज़ आ जाएँ तो अल्लाह तआला उनके आमाल को ख़ूब देखते हैं।¹⁰ (39) और अगर मुँह मोड़ें तो यकीन रखो कि अल्लाह तआला तुम्हारा रफ़ीक़ है, वह बहुत अच्छा रफ़ीक़ है और बहुत अच्छा मददगार है।¹¹ (40)

1. मतलब यह कि ज़बरदस्त सज़ाओं से दो चीज़ें रुकावट हैं, एक हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मक्का में या दुनिया में तशरीफ़ रखना, और दूसरा लोगों का अपने तवाफ़ वगैरह में यह कहना ‘गुफ़रान-क गुफ़रान-क’ जो कि हिज़रत के बाद और वफ़ात के बाद भी बाकी था।
2. यानी मस्जिदे हराम (बैतुल्लाह शरीफ़) में जाने, उसमें नमाज़ पढ़ने और उसमें तवाफ़ करने से रोकते हैं।
3. चाहे इल्म ही न हो या यह कि जब उस इल्म पर अमल न किया तो वह भी इल्म न होने की तरह है।
4. यानी बजाय नमाज़ के उनकी ये नामाकूल हरकतें होती थीं।
5. चुनौचे अनेक लड़ाइयों में यह सज़ा सामने आई।
6. यहाँ तक तो उन लोगों की बातों और जिस्मानी आमाल का ज़िक्र था, आगे उनके माली आमाल का बयान है।
7. चुनौचे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मुक़ाबले और मुख़ालफ़त के सामान जमा करने में ज़ाहिर है कि जो खर्च होता था उसमें यही ग़रज़ थी।
8. यानी दुनिया में हलाकत और आख़िरत में अज़ाब।
9. किसी के दीन का ख़ालिस तौर पर अल्लाह ही के लिए हो जाना मौकूफ़ है इस्लाम के क़बूल करने पर। तो हासिल यह हुआ कि शिर्क छोड़कर इस्लाम इस्तिज़ाया करें। खुलासा यह कि अगर इस्लाम न लाएँ तो उनसे लड़ो जब तक कि इस्लाम न लाएँ। क्योंकि अरब के काफ़िरों से जिज़या (टैक्स) नहीं लिया जाता।
10. यानी अगर कुफ़ से बाज़ आ जाएँ तो उनके ज़ाहिरी इस्लाम को क़बूल करो, दिल का हाल मत टटोलो। अगर ये दिल से ईमान न लाएँगे तो अल्लाह तआला उनके आमाल को ख़ूब देखते हैं, वह खुद समझ लेंगे, तुमको क्या?
11. ऊपर आयत ‘व क़ातिलहुम्.....’ में लड़ने और जंग करने का हुक्म था। चूँकि कभी लड़ाई और जंग में ग़नीमत भी हासिल होती है इसलिए आगे उसका हुक्म बयान फ़रमाते हैं।

दसवाँ पार: वअलमू

सूर: अनुफाल (आयत 41 से 75)

और (इस बात को) जान लो कि जो चीज़ (काफ़िरों) से ग़नीमत के तौर पर तुमको हासिल हो तो (उसका हुक्म यह है कि) कुल का पाँचवाँ हिस्सा अल्लाह का और उसके रसूल का है, और (एक हिस्सा) आपके रिश्तेदारों का है, और (एक हिस्सा) यतीमों का है, और (एक हिस्सा) ग़रीबों का है, और (एक हिस्सा) मुसाफ़िरों का है, अगर तुम अल्लाह पर यकीन रखते हो और उस चीज़ पर जिसको हमने अपने बन्दे (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर फैसले के दिन,¹ जिस दिन कि (मोमिनों व काफ़िरों की) दोनों जमाअतें आपस में आमने-सामने हुई थीं, नाज़िल फरमाया था² और अल्लाह तआला (ही) हर चीज़ पर पूरी कुदरत रखने वाले हैं। (41) (यह वह वक़्त था कि) जब तुम (उस मैदान के) इधर वाले किनारे पर थे और वे लोग (यानी काफ़िर उस मैदान के) उधर वाले किनारे पर थे,³ और वह (कुरैश का) काफ़िला तुमसे नीचे की तरफ़ (बचा हुआ) था,⁴ और अगर तुम (और वे) कोई बात ठहराते तो ज़रूर उस ठहराने के बारे में तुममें इख़्तिलाफ़ होता, लेकिन ताकि जो बात अल्लाह को करना मन्ज़ूर थी उसको पूरा कर दे, यानी ताकि जिसको बर्बाद (गुमराह) होना है वह निशान आने के बाद बर्बाद हो, और जिसको ज़िन्दा (हिदायत-याफ़्ता) होना है वह (भी) निशान आने के बाद ज़िन्दा हो,⁵ और बेशक अल्लाह तआला ख़ूब सुनने वाले, ख़ूब जानने वाले हैं। (42) (वह वक़्त भी ज़िक्र करने के काबिल है) जब अल्लाह ने आपके ख़्वाब में आपको वे लोग कम दिखलाए और अगर अल्लाह आपको वे लोग ज़्यादा दिखा देते तो तुम्हारी हिम्मतें हार जातीं, और इस मामले में तुममें आपस में झगड़ा (व इख़्तिलाफ़) हो जाता, लेकिन (तय करने और ठहराने के बारे में) अल्लाह ने (उस कम-हिम्मती और इख़्तिलाफ़ से) बचा लिया, बेशक वह दिलों की बात को ख़ूब जानता है। (43) और (उस वक़्त को याद करो) जबकि अल्लाह तुमको जबकि तुम आमने-सामने हुए, वे लोग तुम्हारी नज़र में कम करके दिखला रहे थे और (इसी तरह) उनकी निगाह में तुमको कम करके दिखला रहे थे, ताकि जो बात अल्लाह को करनी मन्ज़ूर थी उसको पूरा कर दे,⁶ और सब मुकद्दमे खुदा ही की तरफ़ लौटाए जाएंगे। (44) ♦

ऐ ईमान वालो! जब तुमको (जिहाद में) किसी जमाअत से मुकाबले का इत्तिफ़ाक़ हुआ करे तो (इन आदाब का लिहाज़ रखो) (१) साबित कदम रहो (२) और अल्लाह तआला का ख़ूब कसरत से ज़िक्र करो उम्मीद है कि तुम कामयाब हो। (45) (३) और अल्लाह और उसके रसूल की इताअत (का लिहाज़) किया

1. फैसले के दिन से मुराद बद्र का दिन है। क्योंकि उसमें अमली तौर पर हक़ व बातिल का फैसला वाज़ेह हो गया।
2. मुराद इससे फ़रिश्तों के वास्ते से ग़ैबी इम्दाद है। यानी अगर हम पर और हमारी ग़ैबी इनायतों पर यकीन रखते हो तो इस हुक्म को जान लो और अमल करो। यह इसलिए बढ़ा दिया कि पाँचवाँ हिस्सा निकालना भारी न हो, और समझ लें कि यह सारी ग़नीमत अल्लाह ही की इम्दाद से तो हाथ आई, फिर अगर हमको एक पाँचवाँ हिस्सा न मिला तो क्या हुआ, वे चार पाँचवे हिस्से भी तो हमारी कुदरत से ख़ारिज थे, बल्कि सिर्फ़ अल्लाह की कुदरत से हासिल हुए।
3. इधर वाले से मुराद मदीना से नज़दीक की जगह और उधर वाले से मुराद मदीना से दूर की जगह है।
4. यानी समुद्र के किनारे-किनारे जा रहा था।
5. मतलब यह कि अल्लाह को लड़ाई होना मन्ज़ूर था, ताकि एक खास तरीके से इस्लाम का हक़ होना ज़ाहिर हो जाए, कि तादाद और सामान की इस कमी पर भी मुसलमान ग़ालिब आए जो कि आम आदत के ख़िलाफ़ है। जिससे मालूम हुआ कि इस्लाम हक़ है। पस इससे अल्लाह की हुज्जत मुकम्मल हो गई। उसके बाद जो गुमराह होगा वह हक़ के वाज़ेह होने के बाद होगा, जिसमें अज़ाब का पूरा हक़दार होना हो गया और उज़्र की गुन्जाइश ही न रही। इसी तरह जिसको हिदायत होना होगा (शेष तफ़सीर पृष्ठ 330 पर)

करो। (४) और झगड़ा मत करो, (न अपने इमाम से और न आपस में) वरना कम-हिम्मत हो जाओगे और तुम्हारी हवा उखड़ जाएगी। (५) सब्र करो बेशक अल्लाह तआला सब्र करने वालों के साथ हैं। (46) (६) और उन (काफिर) लोगों के जैसे मत होना कि जो (इसी बद्र के वाकिए में) अपने घरों से इतराते हुए और लोगों को (अपनी शान) दिखलाते हुए निकले और लोगों को अल्लाह के रास्ते (दीन) से रोकते थे, और अल्लाह तआला उनके आमाल को (अपने इल्म के) घेरे में लिए हुए है। (47) और (उस वक्त का जिक्र कीजिए) जबकि शैतान ने उन (कुफ़ार) को उनके आमाल अच्छे करके दिखलाए और कहा कि लोगों में से आज कोई तुमपर ग़ालिब आने वाला नहीं और मैं तुम्हारा हामी हूँ। फिर जब (काफ़िरो और मुसलमानों की) दोनों जमाअतें एक-दूसरे के आमने-सामने हुईं तो वह उल्टे पाँव भागा और (यह) कहा कि मेरा तुमसे कोई वास्ता नहीं, मैं उन चीज़ों को देख रहा हूँ जो तुमको नज़र नहीं आती (यानी फ़रिश्ते), मैं तो खुदा से डरता हूँ और अल्लाह तआला सख़्त सज़ा देने वाले हैं। (48) ♦

(और वह वक्त भी ज़िक्र करने के काबिल है कि) जब मुनाफ़िक लोग² और जिनके दिलों में (शक की) बीमारी थी³ (यूँ) कहते थे कि इन (मुसलमान) लोगों को उनके दीन ने भूल में डाल रखा है। और जो शख्स अल्लाह पर भरोसा करता है तो बेशक अल्लाह तआला ज़बरदस्त हैं (और) हिक्मत वाले (भी) हैं। (49) और अगर आप (उस वक्त का वाक़िआ) देखें जबकि फ़रिश्ते इन (मौजूदा) काफ़िरो की जान कब्ज़ करते जाते हैं (और) उनके मुँह पर और उनकी पीठ पर मारते जाते हैं, और (यह कहते जाते हैं कि अभी क्या है आगे चलकर) आग की सज़ा झेलना। (50) यह (अज़ाब) उन (कुफ़िया आमाल) की वजह से है जो तुमने अपने हाथों समेटे हैं और यह (बात साबित ही है) कि अल्लाह तआला बन्दों पर जुल्म करने वाले नहीं। (51) (उनकी हालत ऐसी है) जैसी फ़िरऔन वालों की, और उनसे पहले के (काफ़िर) लोगों की हालत (थी) कि उन्होंने अल्लाह की आयतों का इनकार किया, सो खुदा तआला ने उनके (उन) गुनाहों पर उनको पकड़ लिया, बेशक अल्लाह तआला बड़ी कुव्वत वाले, सख़्त सज़ा देने वाले हैं। (52) यह बात⁷ इस सबब से है कि अल्लाह तआला किसी ऐसी नेमत को जो किसी कौम को अता फ़रमाई हो, नहीं बदलते जब तक कि वही लोग अपने ज़ाती आमाल को नहीं बदल डालते,⁸ और यह (बात साबित ही है) कि अल्लाह तआला बड़े सुनने वाले, बड़े जानने वाले हैं। (53) (उनकी हालत) फ़िरऔन वालों और उनसे पहले वालों की-सी हालत (है) कि उन्होंने अपने रब की आयतों को झुठलाया, उसपर हमने उनको उनके गुनाहों के सबब हलाक कर दिया और फ़िरऔन

(पृष्ठ 328 का शेष)

वह हक़ को क़बूल कर लेगा। हिक्मत का खुलासा यह हुआ कि हक़ वाज़ेह हो जाए।

6. रिवायतों में है कि उस दिन मुसलमान तीन सौ तेरह (313) और कुफ़ार एक हजार थे। मगर फिर भी मुसलमान ही ग़ालिब रहे। इससे हर इन्साफ़-पसन्द समझदार नतीजा निकाल सकता है कि जब अल्लाह तआला अपने दीन को ग़ालिब करना चाहता है तो कुफ़ार की कसरत और माल व दौलत उसको रोक नहीं सकती। हक़ तआला ने अपने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ख़्वाब में कुफ़ार की तादाद कम करके दिखलाई थी ताकि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम से ख़्वाब बयान करें तो उनमें मुकाबले की ज़ुरत बढ़े। फिर जब दोनों ग़िरोह आमने-सामने हुए तो भी मुसलमानों को काफ़िर कम तादाद में ही दिखाई दिए। अगर ऐसा न होता तो मुसलमानों में अपने ख़ाली हाथ और बेसामान होने की वजह से लड़ाई करने या न करने के बारे में राय का इख़िलाफ़ होता और शायद जंग की नौबत न आती, लेकिन लड़ाई हुई और खुदा-ए-क़दीर ने बद्र में फ़त्ह की बदीलत इस्लाम की तरक्की की राहें खोल दीं।

1. चूँकि बिना ईमान के ख़ाली ख़ौफ़ मक़बूल नहीं इसलिए शैतान का खुदा से डरना अगर हकीकत भी हो तो इसपर कुछ शुब्हा और इश्काल नहीं किया जा सकता।

2. मदीना वालों में से।

3. बाज़ मक्का वाले (यानी कुरैश) मुसलमानों का ख़ाली हाथ और बेसामानी के साथ काफ़िरो के मुकाबले में आ जाना देखकर कहने लगे।

4. गरज़ ज़ाहिरी सामान होने या न होने पर दारोमदार नहीं, कुदरत रखने वाला कोई और ही है। (शेष तफ़सीर पृष्ठ 332 पर)

वालों को गर्क कर दिया, और वे सब ज़ालिम थे। (54) बिला शुब्हा मख्लूक में सबसे बुरे अल्लाह तआला के नज़दीक ये काफ़िर लोग हैं, तो ये ईमान न लाएँगे।¹ (55) जिनकी यह कैफ़ियत है कि आप उनसे (कई बार) अहद ले चुके हैं (मगर) फिर (भी) वे हर बार अपना अहद तोड़ डालते हैं, और वे (अहद तोड़ने से) डरते नहीं।² (56) सो अगर आप लड़ाई में उन लोगों पर काबू पाएँ तो उन (पर हमला करके उस) के ज़रिये से और लोगों को जो कि उनके अलावा हैं मुन्तशिर “यानी तित्तर-बित्तर” कर दीजिए, ताकि वे लोग समझ जाएँ। (57) और अगर आपको किसी कौम से ख़ियानत (यानी अहद तोड़ने) का अन्देशा हो तो आप (वह अहद) उनको इस तरह वापस कर दीजिए कि (आप और वे उस इत्तिला में) बराबर हो जाएँ,³ बेशक अल्लाह तआला ख़ियानत करने वालों को पसन्द नहीं करते। (58) ♦

और काफ़िर लोग अपने को यह ख़्याल न करें कि वे बच गए, यकीनन वे लोग (खुदा तआला को) अज़िज़ नहीं कर सकते। (59) और उन (काफ़िरों) के लिए जिस क़द्र हो सके तुमसे कुव्वत (यानी हथियार) से और पले हुए घोड़ों से, सामान दुरुस्त रखो, कि उसके ज़रिये से तुम उनपर (अपना) रोब जमाए रखो जो कि (कुफ़ की वजह से) अल्लाह के दुश्मन हैं और तुम्हारे दुश्मन हैं, और उनके अलावा दूसरों पर भी जिनको तुम (ख़ास और मुतैयन तौर पर) नहीं जानते, उनको अल्लाह ही जानता है, और अल्लाह की राह में जो कुछ भी खर्च करोगे वह तुमको पूरा-पूरा दे दिया जाएगा, और तुम्हारे लिए कुछ कमी न होगी।⁴ (60) और अगर वे (काफ़िर) सुलह की तरफ़ झुकें तो आप भी उस तरफ़ झुक जाइए और अल्लाह पर भरोसा रखिए, बिला शुब्हा वह ख़ूब सुनने वाला, ख़ूब जानने वाला है। (61) और अगर वे लोग आपको धोखा देना चाहें तो अल्लाह तआला आपके लिए काफ़ी हैं, वह वही है जिसने आपको अपनी (ग़ैबी) इम्दाद (फ़रिशतों) से और (ज़ाहिरी इम्दाद) मुसलमानों से कुव्वत दी (62) और उनके दिलों में इत्तिफ़ाक़ पैदा कर दिया,⁵ अगर आप दुनिया भर का माल खर्च करते तब भी उनके दिलों में इत्तिफ़ाक़ पैदा न कर सकते, लेकिन अल्लाह ही ने उनमें आपस में इत्तिफ़ाक़ पैदा कर दिया, बेशक वह ज़बरदस्त हैं, हिक्मत वाले हैं। (63) ऐ नबी! आपके लिए अल्लाह तआला काफ़ी है, और जिन मोमिनों ने आपकी पैरवी की है (वे काफ़ी हैं)। (64) ♦

(पृष्ठ 330 का शेष) 5. सो अल्लाह तआला ने बेजुर्म सज़ा नहीं दी।

6. उनके मुकाबले में कोई ऐसी कुव्वत नहीं रखता कि उनके अज़ाब को हटा सके।

7. यानी यह कि बिना जुर्म के हम सज़ा नहीं देते।

8. इन मौजूदा काफ़िरों ने अपनी यह हालत बदली कि उनमें बावजूद कुफ़ के, पहले ईमान लाने की इस्तेदाद (काबलियत) करीब थी। इनकार व मुख़ालफ़त करके उसको दूर कर डाला। पस हमने अपनी ढील देने की नेमत को जो पहले से उनको हासिल थी पकड़-धकड़ से बदल दिया। उसकी वजह यह हुई कि उन्होंने ज़िक्क़ किए गए तरीक़े से काबलियत के करीब होने की नेमत को बदल डाला।

1. ‘ये ईमान न लाएँगे’ फ़रमाना उन्हीं के एतवार से है जो अल्लाह के इल्म में आख़िर तक काफ़िर रहने वाले थे।

2. इस आयत के नाज़िल होने का सबब यहूद बनी कुरैज़ा का अहद तोड़ना है कि उन्होंने जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अहद किया था कि हम आपके मुख़ालिफ़ों को मदद न देंगे, और फिर गुज़वा-ए-अहज़ाब में मुश्रीकीन को मदद दी। और भी कई बार ऐसा हो चुका था। हर बार कह देते थे कि हम भूल गए, फिर ताज़ा अहद करते थे, फिर ऐसा ही करते थे। इसपर इन आयतों में आपको उनसे जंग और लड़ाई करने का हुक्म हुआ।

3. यानी इस तरह उस अहद के बाकी न रहने की इत्तिला कर दीजिए। बिना ऐसी इत्तिला के लड़ना ख़ियानत है।

4. हदीस में तीर चलाने की मशक़ और घोड़ों के रखने और घुड़-सवारी सीखने की बड़ी फज़ीलत आई है। अब बन्दूक और तोप तीर के कायम मक़ाम है। और अमूमन कुव्वत में यह सब और वर्जिश यानी कसूरत भी दाख़िल है।

5. ज़ाहिर है कि अगर आपस में इत्तिफ़ाक़ न हो तो कोई काम ख़ास कर दीन की मदद मिलकर नहीं कर सकते।

ऐ पैगम्बर! आप मोमिनों को जिहाद की तरगीब दीजिए, अगर तुममें के बीस आदमी साबित कदम रहने वाले होंगे तो दो सौ पर गालिब आ जाएंगे, और (इसी तरह) तुममें के सौ आदमी हों तो एक हजार काफिरों पर गालिब आ जाएंगे।¹ इस वजह से कि वे ऐसे लोग हैं जो (दीन को) कुछ नहीं समझते। (65) अब अल्लाह ने तुमपर तख्फ़ीफ़ “यानी कमी और नरमी” कर दी और मालूम कर लिया कि तुममें हिम्मत की कमी है, सो अगर तुममें के सौ आदमी साबित कदम रहने वाले होंगे तो दो सौ पर गालिब आ जाएंगे, और अगर तुममें के हजार होंगे तो दो हजार पर अल्लाह के हुक्म से गालिब आ जाएंगे, और अल्लाह तआला सब्र करने वालों के साथ हैं। (66) नबी (की शान) के लायक नहीं कि उनके कैदी (बाकी) रहें (बल्कि कत्ल कर दिए जाएँ) जब तक कि वह ज़मीन में अच्छी तरह (काफिरों का) खून न बहा लें।² तुम तो दुनिया का माल व असबाब चाहते हो और अल्लाह तआला आखिरत (की मस्तहत) को चाहते हैं, और अल्लाह तआला बड़े ज़बरदस्त हैं, बड़ी हिक्मत वाले हैं। (67) अगर खुदा तआला का एक लिखा हुआ (मुकद्दर) न हो चुकता तो जो मामला तुमने इख्तियार किया है उसके बारे में तुमपर कोई बड़ी सज़ा आ पड़ती। (68) सो जो कुछ तुमने लिया है उसको हलाल पाक (समझकर) खाओ और अल्लाह तआला से डरते रहो, बेशक अल्लाह तआला बड़े बख्शाने वाले, बड़ी रहमत वाले हैं। (69) ❖

ऐ पैगम्बर! आपके कब्जे में जो कैदी हैं, आप उनसे फ़रमा दीजिए कि अगर अल्लाह तआला को तुम्हारे दिल में ईमान मालूम होगा तो जो कुछ (फ़िदये में) तुमसे लिया गया है (दुनिया में) उससे बेहतर तुमको दे देगा, और (आखिरत में) तुमको बख्श देगा, और अल्लाह तआला बड़ी मरिफ़रत वाले हैं, बड़ी रहमत वाले हैं। (70) और अगर (फ़र्ज कर लो) ये लोग आपके साथ ख़ियानत करने (यानी अहद तोड़ने) का इरादा रखते हों तो (कुछ फ़िक्र न कीजिए) इससे पहले उन्होंने अल्लाह के साथ ख़ियानत की थी, फिर अल्लाह तआला ने उनको गिरफ़्तार करा दिया, और अल्लाह तआला ख़ूब जानने वाले, बड़ी हिक्मत वाले हैं। (71) बेशक जो लोग

1. अगरवे यहाँ ख़बर देने का सीगा इस्तेमाल किया है कि इतने आदमी इतनों पर गालिब आ जाएंगे लेकिन मकसूद ख़बर नहीं बल्कि उम्मीद और हुक्म है। यानी जमे रहना वाजिब है और भागना हराम है, और ख़बर के उनवान से ताबीर करने में बतौर किनाए के मुबालगा व ताकीद है, जिसका हासिल यह है कि जैसे ग़्लबे की ख़बर यकीनी होने पर जमे रहना वाजिब होना चाहिए उसी तरह अब भी वाजिब है।
2. इन आयतों के नाज़िल होने का सबब यह है कि बद्र में सत्तर काफ़िर पकड़े हुए आए तो आपने सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम से उनके बारे में मशिवरा किया। बाज़ ने मशिवरा दिया कि उनको कत्ल कर देना चाहिए, बाज़ ने कहा कि उनसे कुछ माल लेकर छोड़ देना चाहिए। आप पर वह्म नाज़िल हुई कि इन सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम से फ़रमा दीजिए कि तुमको इख्तियार दिया जाता है, चाहे उनको कत्ल कर दो चाहे उनसे फ़िदया लेकर छोड़ दो, मगर इस सूरत में अगले साल सत्तर आदमी शहीद होंगे। गरज़ अक्सर सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम की यही राय हुई कि ख़ैर हम शहीद हो जाएँगे, इस वक़्त उनको फ़िदया लेकर छोड़ दिया जाए, शायद ये मुसलमान हो जाएँ और इस वक़्त मुसलमानों को माली मदद मिले। आपने भी अपनी रहम-दिली की वजह से इस राय को पसन्द फ़रमाया। चुनौचे चन्द लोगों को छोड़कर कि वे तो कत्ल किए गए, जैसे उक़बा, नज़र और तअ़मा, बाकी सब कैदियों से फ़िदया लेकर छोड़ दिया गया। सिर्फ़ हज़रत अबुलआस रज़ियल्लाहु अन्हुम को कि वह भी उस वक़्त उनमें थे, सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम की मरज़ी से बिना कुछ लिए हुए छोड़ दिया। इसको शरीअत की इस्तिहाह में ‘मन्न’ कहते हैं। इसपर ये आयतें ‘मा का-न लि नबिय्यिन्’ से ‘अज़ाबुन अज़ीम’ तक नाज़िल हुई। इन आयतों से सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम को इस फ़िदए के हलाल व हराम होने में शुब्हा हो गया तो आयत ‘फ़कुलू.....आख़िर तक’ नाज़िल हुई। चूँकि बाज़े कैदी फ़िदया देने के बाद मुसलमान हो गए थे, जैसे हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुम वग़ैरह और उन्होंने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से फ़िदया देने की वजह से अपने मुफ़लिस हो जाने की शिकायत की, इसपर आयत ‘या अय्युहन्नबिय्यु कुल लिमन् फ़ी ऐदीकुम्.....’ नाज़िल हुई। इस किस्से का बाकी और आख़िरी हिस्सा यह है कि उसके बाद बाज़ सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने आपको रोते हुए देखा। पूछा तो आपने फ़रमाया कि अज़ाब के आसार बहुत करीब आ गए थे मगर अल्लाह तआला का फ़ज्र हुआ कि नाज़िल नहीं हुआ।

ईमान लाए उन्होंने हिजरत भी की और अपने माल और जान से अल्लाह के रास्ते में जिहाद भी किया, और जिन लोगों ने रहने को जगह दी और मदद की ये लोग आपस में एक-दूसरे के वारिस होंगे, और जो लोग ईमान तो लाए और हिजरत नहीं की, तुम्हारा उनसे मीरास का कोई ताल्लुक नहीं,¹ जब तक कि वे हिजरत न करें, और अगर वे तुमसे दीन के काम में मदद चाहें तो तुम्हारे ज़िम्मे मदद करना (वाजिब) है, मगर उस कौम के मुकाबले में (नहीं) कि तुममें और उनमें आपस में (सुलह का) अहद हो, और अल्लाह तआला तुम्हारे सब कामों को देखते हैं। (72) और जो लोग काफिर हैं वे आपस में एक-दूसरे के वारिस हैं, अगर इस (ऊपर ज़िक्र हुए हुक्म) पर अमल न करोगे तो दुनिया में बड़ा फ़ितना और बड़ा फ़साद फैलेगा। (73) और जो लोग (अव्वल) मुसलमान हुए और उन्होंने (नबी की हिजरत के ज़माने में) हिजरत की, और अल्लाह की राह में जिहाद (भी) करते रहे, और जिन लोगों ने (उन हिजरत करने वालों को) अपने यहाँ ठहराया और (उनकी) मदद की, ये लोग ईमान का पूरा हक़ अदा करने वाले हैं, उनके लिए (आखिरत में बड़ी) मग़्फ़िरत और (जन्नत में बड़ी) इज़्ज़त वाली रोज़ी है। (74) और जो लोग (नबी के हिजरत के ज़माने के) बाद के ज़माने में ईमान लाए और हिजरत की और तुम्हारे साथ जिहाद किया,² सो ये लोग (अगरचे फ़ज़ीलत में तुम्हारे बराबर नहीं लेकिन फिर भी) तुम्हारी ही गिन्ती में हैं, और जो लोग रिश्तेदार हैं किताबुल्लाह में एक-दूसरे (की मीरास) के ज़्यादा हक़दार हैं, बेशक अल्लाह तआला हर चीज़ को ख़ूब जानते हैं।³ ♦ (75) ♦

9 सूर: तौबा 113

सूर: तौबा⁴ मदीना में नाज़िल हुई। इसमें 129 आयतें और 16 रुकूअ हैं।

अल्लाह की तरफ़ से और उसके रसूल की तरफ़ से, उन मुशिरकीन (के अहद) से अलग होना है जिनसे तुमने (बिना मुदत तय किए हुए) अहद कर रखा था। (1) सो तुम लोग इस सरज़मीन में चार महीने चल फिर लो, और (यह भी) जान रखो कि तुम खुदा तआला को आजिज़ नहीं कर सकते, और यह (भी जान रखो) कि बेशक अल्लाह तआला (आखिरत में) काफ़िरों को रुस्वा करेंगे। (2) और अल्लाह और उसके रसूल की तरफ़ से बड़े हज़ की तारीख़ों में आम लोगों के सामने ऐलान (किया जाता) है कि अल्लाह तआला और उसका रसूल दोनों अलग होते हैं उन मुशिरकीन (को अमन देने) से। फिर अगर तुम (कुफ़्र से) तौबा कर लो तो तुम्हारे लिए बेहतर है, और अगर तुमने (इस्लाम से) मुँह मोड़ा तो यह समझ रखो कि तुम खुदा तआला को

1. यानी न तुम उनके वारिस न वे तुम्हारे वारिस।

2. यानी काम तो सब किए मगर बाद में।

3. इसलिए हर वक़्त की मस्तहत के मुनासिब हुक्म मुक़र्रर फ़रमाते हैं।

4. इस सूर: में चन्द ग़ज़वात (यानी लड़ाइयाँ और जंगें) और चन्द वाकिआत जो कि ग़ज़वात ही के हुक्म में हैं, वे ज़िक्र किए गए हैं, जैसे अरब के कबीलों से अहद ख़त्म करने का ऐलान, मक्का की फ़तह, ग़ज़वा-ए-हुनैन, हरम शरीफ़ से काफ़िरों का निकालना, ग़ज़वा-ए-तबूक और उन्हीं आयतों के ज़िम्न में ताबे बनाकर हिजरत का वाकिआ।

आजिज़ नहीं कर सकोगे, और उन काफ़िरो को एक दर्दनाक सज़ा की ख़बर सुना दीजिए। (3) (हाँ) मगर वे मुशिरकीन (इससे अलग हैं) जिनसे तुमने अहद लिया, फिर उन्होंने तुम्हारे साथ ज़रा कमी नहीं की और न तुम्हारे मुकाबले में किसी की मदद की, सो उनके मुआहदे को उनकी (मुकर्ररा) मुद्दत तक पूरा करो, वाकई अल्लाह तआला (अहद के खिलाफ़ करने से) एहतियात रखने वालों को पसन्द करते हैं। (4) सो जब हुर्मत वाले महीने गुज़र जाएँ तो (उस वक़्त) उन मुशिरकों को जहाँ पाओ वहाँ मारो, और पकड़ो और बाँधो, और दाव-घात के मौकों में उनकी ताक में बैठो,¹ फिर अगर वे (कुफ़्र से) तौबा कर लें और नमाज़ पढ़ने लगेँ और ज़कात देने लगेँ तो उनका रास्ता छोड़ दो, वाकई अल्लाह तआला बड़ी मग़्फ़िरत करने वाले, बड़ी रहमत करने वाले हैं। (5) और अगर मुशिरकों में से कोई शख्स आपसे पनाह का तालिब हो तो आप उसको पनाह दीजिए, ताकि वह अल्लाह का कलाम सुन ले,² फिर उसको उसकी अमन की जगह पहुँचा दीजिए,³ यह (हुक्म) इस सबब से है कि वे ऐसे लोग हैं कि पूरी ख़बर नहीं रखते।⁴ (6) ❖

उन (कुरैश के) मुशिरकों का अहद अल्लाह तआला के नज़दीक और उसके रसूल के नज़दीक कैसे (रियायत के काबिल) रहेगा⁵ मगर जिन लोगों से तुमने मस्जिदे-हराम के नज़दीक अहद लिया है,⁶ सो जब तक ये लोग तुमसे सीधी तरह रहें, तुम भी उनसे सीधी तरह रहो,⁷ बेशक अल्लाह तआला (अहद के खिलाफ़ करने से) एहतियात रखने वालों को पसन्द करते हैं।⁸ (7) कैसे (उनका अहद रियायत के काबिल रहेगा) हालाँकि (उनकी हालत यह है कि) अगर वे तुमपर कहीं ग़ल्बा पा जायें तो तुम्हारे बारे में न रिश्तेदारी का ख़याल करें और न क़ौल व क़रार का। ये लोग तुमको अपनी ज़बानी बातों से राज़ी कर रहे हैं, और उनके दिल (उन बातों को) नहीं मानते, और उनमें ज़्यादा आदमी शरीर हैं। (8) उन्होंने अल्लाह के अहक़ाम के बदले (दुनिया की) वाक़ी न रहने वाली मत्ताअ “यानी सामान और फ़ायदे” को इख़्तियार कर रखा है, सो ये लोग उसके

1. यानी लड़ाई में जो-जो होता है सबकी इजाज़त है।

2. मुराद देने हक़ के मुतलक़ दलाइल हैं।

3. यानी पहुँचने दीजिए ताकि वे सोच-समझकर अपनी राय कायम करे।

4. इसलिए किसी क़द्र मोहलत देना ज़रूरी है।

5. क्योंकि रियायत तो उस अहद की होती है जिसको दूसरा शख्स खुद न तोड़े, वरना रियायत बाक़ी नहीं रहती। मतलब यह कि जब ये लोग खुद अहद को तोड़ेंगे तो उस वक़्त इस तरफ़ से भी रियायत न होगी।

6. यानी उनसे उम्मीद है कि ये अहद को कायम रखेंगे।

7. यानी जब तक ये लोग अहद न तोड़ें तुम भी उनसे किए हुए अहद की मुद्दत पूरी करो। चुनाँचे बराअत यानी उनसे अलग हो जाने के हुक्म के नाज़िल होने के वक़्त इस मुद्दत में नौ महीने वाक़ी रहे थे, और उनके अहद न तोड़ने की वजह से उनकी यह मुद्दत पूरी की गई।

8. पस तुम भी एहतियात रखने से अल्लाह तआला के महबूब हो जाओगे।

(यानी अल्लाह तआला के) रास्ते से हटे हुए हैं, (और) यकीनन उनका यह अमल बहुत ही बुरा है। (9) ये लोग किसी मुसलमान के बारे में (भी) न रिश्तेदारी का पास करें और न कौल व करार का, और ये लोग बहुत ही ज़्यादा कर रहे हैं। (10) सो अगर ये लोग (कुफ़ से) तौबा कर लें और नमाज़ पढ़ने लगे और ज़कात देने लगे तो वे तुम्हारे दीनी भाई हो जाएँगे,¹ और हम समझदार लोगों के लिए अहकाम को खूब तफ़सील से बयान करते हैं। (11) और अगर वे लोग अहद करने के बाद अपनी कस्मों को तोड़ डालें और तुम्हारे दीन (इस्लाम) पर ताना मारें तो तुम लोग इस इरादे से कि ये बाज़ आ जाएँ, उन कुफ़ के पेशवाओं से (खूब) लड़ो, क्योंकि (इस सूरत की) कस्में बाकी नहीं रहीं। (12) तुम ऐसे लोगों से क्यों नहीं लड़ते जिन्होंने अपनी कस्मों को तोड़ डाला, और रसूल को वतन से निकालने की तजवीज़ की, और उन्होंने तुमसे पहले खुद छेड़ निकाली,² क्या उनसे (लड़ने से) तुम डरते हो? सो अल्लाह तआला इस बात के ज़्यादा मुस्तहिक हैं कि तुम उनसे डरो, अगर तुम ईमान रखते हो। (13) उनसे लड़ो, अल्लाह तआला (का वायदा है कि) उनको तुम्हारे हाथों सज़ा देगा और उनको ज़लील (व रुस्वा) करेगा, और तुमको उनपर ग़ालिब करेगा, और बहुत-से मुसलमानों के दिलों को शिफ़ा देगा। (14) और उनके दिलों के ग़ैज़ (व ग़ज़ब) को दूर करेगा, और जिसपर मन्ज़ूर होगा अल्लाह तआला तवज्जोह (भी) फ़रमाएगा,³ और अल्लाह तआला बड़े इल्म वाले, बड़ी हिक्मत वाले हैं। (15) क्या तुम यह ख़याल करते हो कि तुम यूँ ही छोड़ दिए जाओगे, हालाँकि अभी अल्लाह तआला ने (ज़ाहिरी तौर पर) उन लोगों को तो देखा ही नहीं जिन्होंने तुममें से (ऐसे मौके पर) जिहाद किया हो, और अल्लाह और रसूल और मोमिनों के सिवा किसी को खुसूसी दोस्त न बनाया हो,⁴ और अल्लाह तआला को तुम्हारे सब कामों की पूरी ख़बर है।⁵ (16) ♦

मुशिरकों में यह काबलियत ही नहीं कि वे अल्लाह की मस्जिदों को आबाद करें, जिस हालत में कि वे खुद अपने ऊपर कुफ़ (की बातों) का इकरार कर रहे हैं। उन लोगों के सब आमाल बेकार हैं⁶ और दोज़ख़ में वे लोग हमेशा रहेंगे। (17) हाँ अल्लाह की मस्जिदों को आबाद करना उन लोगों का काम है जो अल्लाह पर और कियामत के दिन पर ईमान लाएँ और नमाज़ की पाबन्दी करें और ज़कात दें और सिवाय अल्लाह के किसी से

1. यानी उनके अहद तोड़ने वगैरह पर बिलकुल नज़र न होगी, चाहे उन्होंने कुछ ही किया हो।
2. यानी तुम्हारी तरफ़ से अहद को पूरा करने में कोई कमी नहीं हुई, उन्होंने बैठे-बिठाए खुद एक शोशा छोड़ा। पस ऐसे लोगों से क्यों न लड़ो।
3. यानी मुसलमान होने की तौफ़ीक़ देगा। चुनाँचे मक्का फ़तह होने के दिन बाज़े लड़े और ज़लील व मक्तूल हुए और बाज़े मुसलमान हो गए।
4. जिसके ज़ाहिर होने का अच्छा ज़रिया ऐसे मौके का जिहाद है जहाँ मुकाबला अपने रिश्तेदारों और करीबी लोगों से हो कि इसमें पूरा इन्तिहान हो जाता है कि कौन अल्लाह को चाहता है और कौन बिरादरी को।
5. ऊपर मुशिरकीन की बुराइयाँ ज़िक्र की गई थीं। चूँकि उनको अपने बाज़ आमाल जैसे मस्जिदे-हराम की ख़िदमत और हाजियों को पानी पिलाने वगैरह पर गर्व था, इसलिए आगे पिछले मज़मून को मुकम्मल करने के लिए उनके इस फ़ख़र और गर्व का इन चन्द आयतों में जवाब देते हैं। और इसी के ज़िम्न में मुसलमानों के एक इख़्तिलाफ़ी मसले का जिसमें उस वक़्त कलाम हुआ था कि ईमान के बाद सबसे अफ़ज़ल अमल आया मस्जिदे-हराम की तामीर और हाजियों को पानी पिलाना है या जिहाद, आयत 'अ-जअल्लुम्.....' में जवाब देते हैं।
6. इस वजह से कि उनकी कबूलियत की शर्त नहीं पाई जाती।

न डरें, सो ऐसे लोगों के मुताल्लिक उम्मीद (यानी वायदा) है कि अपने मकसूद तक पहुँच जाएँगे। (18) क्या तुम लोगों ने हाजियों के पानी पिलाने को और मस्जिदे-हराम के आबाद रखने को उस शख्स (के अमल) के बराबर करार दे लिया जो कि अल्लाह पर और कियामत के दिन पर ईमान लाया हो, और उसने अल्लाह की राह में जिहाद किया हो, ये लोग अल्लाह के नज़दीक बराबर नहीं, और जो लोग बेइन्साफ़ है¹ अल्लाह तआला उनको समझ नहीं देता। (19) जो लोग ईमान लाए और (अल्लाह के वास्ते) उन्होंने वतन छोड़ा और अल्लाह की राह में अपने माल और जान से जिहाद किया, वे दर्जे में अल्लाह के नज़दीक बहुत बड़े हैं, और यही लोग पूरे कामयाब हैं। (20) उनका रब उनको खुशख़बरी देता है अपनी तरफ़ से बड़ी रहमत और बड़ी रज़ामन्दी और (जन्नत के) ऐसे बाग़ों की, कि उनके लिए उन (बाग़ों) में हमेशा रहने वाली नेमत होगी। (21) (और) उनमें ये हमेशा-हमेशा को रहेंगे। वेशक अल्लाह तआला के पास बड़ा अन्न है² (22) ऐ ईमान वालो! अपने बापों को, अपने भाइयों को (अपना) रफ़ीक़ “यानी साथी और दोस्त” मत बनाओ, अगर वे लोग कुफ़्र को ईमान के मुकाबले में (ऐसा) अज़ीज़ रखें (कि उनके ईमान लाने की उम्मीद न रहे), और जो शख्स तुममें से उनके साथ दोस्ती और दिली ताल्लुक रखेगा सो ऐसे लोग बड़े नाफ़रमान हैं³ (23) आप कह दीजिए कि अगर तुम्हारे बाप और तुम्हारे बेटे और तुम्हारे भाई और तुम्हारी बीवियाँ और तुम्हारा कुन्बा और वे माल जो तुमने कमाए हैं, और वह तिजारत जिसमें निकासी न होने का तुमको अन्देशा हो, और वे घर जिनको तुम पसन्द करते हो, तुमको अल्लाह से और उसके रसूल से और उसकी राह में जिहाद करने से ज्यादा प्यारे हों⁴ तो तुम इन्तिज़ार करो यहाँ तक कि अल्लाह तआला (हिजरत न करने की सज़ा का) अपना हुक़्म भेज दें, और अल्लाह तआला बेहुक़्मी करने वालों को उनके मकसूद तक नहीं पहुँचाता⁵ (24) ♦

1. मुराद मुशिरक हैं।

2. ऊपर हिजरत का ज़िक्र था जिसमें वतन और रिश्तेदारों व कुन्बे वालों और अपने माल व जायदाद से ताल्लुक ख़त्म करना पड़ता है, जो कि तबई तौर पर नागवार मालूम होता है, जो कर्भा हिजरत न करने का सबब हो सकता है। इसलिए आगे उन ताल्लुकात के ग़ालिब होने की मज़म्मत (निंदा) फ़रमाते हैं।

3. मतलब यह कि हिजरत से बड़ी रुकावट उन लोगों का ताल्लुक है और खुद वही जायज़ नहीं, फिर हिजरत में क्या दुश्वारी है।

4. इन चीज़ों का ज्यादा प्यारा होना जो बुरा है। मुराद इससे वह मोहब्बत है जो अल्लाह और रसूल के अहक़ाम पर अमल करने से रोक दे। तर्बायत का जो मैलान होता है वह मुराद नहीं।

5. यानी उनका मकसूद उन चीज़ों से फ़ायदा हासिल करना था, वह बहुत जल्द उनकी उम्मीद के खिलाफ़ मौत से ख़त्म हो जाता है।

तुमको खुदा तआला ने (लड़ाई के) बहुत-से मौकों में (काफिरों पर) गल्बा दिया, और हुनैन के दिन भी,¹ जबकि तुमको अपने मजमे के ज्यादा होने से ग़रा “यानी एक तरह का उस मजमे पर फ़ख़र” हो गया था, फिर वह ज्यादाती तुम्हारे लिए कुछ कारामद न हुई, और तुमपर ज़मीन बावजूद अपनी फ़राख़ी के तंगी करने लगी, फिर (आख़िर) तुम पीठ देकर भाग खड़े हुए। (25) फिर (उसके बाद) अल्लाह तआला ने अपने रसूल (के दिल) पर और दूसरे मोमिनों (के दिलों) पर अपनी (तरफ़ से) तसल्ली नाज़िल फ़रमाई,² और (मदद के लिए) ऐसे लश्कर नाज़िल फ़रमाए जिनको तुमने नहीं देखा और काफिरों को सज़ा दी, और यह काफिरों की (दुनिया में) सज़ा है। (26) फिर (उसके बाद) खुदा तआला जिसको चाहें तौबा नसीब कर दें, और अल्लाह तआला बड़ी मग़्फ़िरत करने वाले, बड़ी रहमत करने वाले हैं। (27) ऐ ईमान वालो! मुशिरक लोग (अपने गन्दे और नापाक अक़ीदों की वजह से) बिल्कुल नापाक हैं, सो ये लोग इस साल के बाद मस्जिदे-हराम के पास न आने पाएँ, और अगर तुमको तंगदस्ती का अन्देशा हो तो (खुदा पर भरोसा रखो) खुदा तुमको अपने फज़ल से अगर चाहेगा (उनका) मोहताज न रखेगा, बेशक अल्लाह ख़ूब जानने वाला है, बड़ा हिक्मत वाला है। (28) अहले किताब जो कि न खुदा पर (पूरा-पूरा) ईमान रखते हैं और न कियामत के दिन पर, और न उन चीज़ों को हराम समझते हैं जिनको खुदा तआला ने और उसके रसूल ने हराम बतलाया है, और न सच्चे दीन (इस्लाम) को कबूल करते हैं, उनसे यहाँ तक लड़ो कि वे मातहत होकर और रअिय्यत बनकर जिज़या “यानी इस्लामी हुकूमत में रहने का टैक्स” देना मन्ज़ूर करें। (29) ♦

और यहूद (में से बाज़) ने कहा कि उज़ैर खुदा के बेटे हैं, और ईसाइयों (में से अक्सर) ने कहा कि मसीह खुदा के बेटे हैं, यह उनका कौल है, उनके मुँह से कहने का,³ यह भी उन लोगों जैसी बातें करने लगे जो इनसे पहले काफिर हो चुके हैं,⁴ खुदा इनको ग़ारत करे, ये किधर उल्टे जा रहे हैं। (30) उन्होंने खुदा को

1. हुनैन मक्का और ताइफ़ के दरमियान एक मक़ाम है, यहाँ कबीला ‘हवाज़न’ और ‘सकीफ़’ से मक्का फ़तह होने के दो हफ़्ते बाद लड़ाई हुई थी। मुसलमान बारह हजार थे और मुशिरकीन चार हजार। बाज़ मुसलमान अपना मजमा देखकर ऐसे तौर पर कि उससे नाज़ और ग़ुरू टपकता था, कहने लगे कि हम आज किसी तरह मग़लूब नहीं हो सकते। चुनाँचे शुरू के मुकाबले में काफिरों को शिकस्त हुई। बाज़े मुसलमान ग़नीमत के माल व सामान को जमा करने लगे, उस वक़्त कुम्फ़ार टूट पड़े और वे तीर चलाने में बड़े माहिर थे। मुसलमानों पर तीर बरसाने शुरू किए। इस घबराहट में मुसलमानों के पाँव उखड़ गए। सिर्फ़ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम चन्द सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम के साथ मैदान में रह गए। आपने हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से मुसलमानों को आवाज़ दिलवाई। फिर सब लौटकर दोबारा काफिरों से मुकाबला करने लगे और आसमान से फ़रिशतों की मदद आई। आख़िर काफिर भागे और बहुत-से क़त्ल हुए। फिर उन कबीलों के बहुत-से आदमी आपकी ख़िदमत में हाज़िर होकर इस्लाम ले आए और आपने उनके अहल व अयाल (घर वाले और बाल-बच्चे) जो पकड़े गए थे सब उनकी वापस कर दिए।

2. यह जो फ़रमाया कि रसूल पर तसल्ली नाज़िल फ़रमाई, मुराद इससे मुतलक़ तसल्ली नहीं, वह तो आपको बल्कि उन सहाबा को भी जो आपके साथ रह गए थे हासिल थी, और वे इसी वजह से साबित क़दम रहे, बल्कि मुराद इससे ख़ास तसल्ली है जिससे ग़ल्बे की उम्मीद करीब हो गई।

3. जिसका हकीक़त में कहीं नाम व निशान नहीं।

4. मुराद अरब के मुशिरक हैं जो फ़रिशतों को खुदा की बेटियाँ कहते थे।

छोड़कर अपने आलिमों और बुजुर्ग हस्तियों को (इताअत के एतिबार से) रब बना रखा है,¹ और मसीह इब्ने मरियम को भी, हालाँकि उनको सिर्फ यह हुक्म किया गया है कि फ़क़त एक (बरहक़) माबूद की इबादत करें जिसके सिवा कोई इबादत के लायक नहीं, वह उनके शिर्क से पाक है। (31) वे लोग (यूँ) चाहते हैं कि अल्लाह के नूर (यानी दीने इस्लाम) को अपने मुँह से बुझा दें,² हालाँकि अल्लाह तआला अपने नूर को क़माल तक पहुँचाए बग़ैर नहीं मानेगा, चाहे काफ़िर लोग कैसे ही नाख़ुश हों। (32) (चुनाँचे) वह (अल्लाह) ऐसा है कि उसने अपने रसूल को हिदायत (का सामान यानी कुरआन) और सच्चा दीन³ देकर भेजा है, ताकि उसको (बक़िया) तमाम दीनों पर ग़ालिब कर दे, चाहे मुशिरक कैसे ही नाख़ुश हों।⁴ ● (33) ऐ ईमान वालो! अक्सर अह्बार और रुह्बान⁵ लोगों के माल नाजायज़ तरीक़े से खाते हैं,⁶ और अल्लाह की राह से रोकते हैं, और (हद दर्जा हिस्से से) जो लोग सोना-चाँदी जमा करके रखते हैं और उनको अल्लाह की राह में खर्च नहीं करते, सो आप उनको एक बड़ी दर्दनाक सज़ा की ख़बर सुना दीजिए। (34) जो कि उस दिन ज़ाहिर होगी कि उनको (पहले) दोज़ख़ की आग में तपाया जाएगा, फिर उनसे उनकी पेशानियों “यानी माथों” और उनकी करवटों और उनकी पुश्तों को दाग़ दिया जायेगा। यह है वह जिसको तुमने अपने वास्ते जमा करके रखा, सो अब अपने जमा करने का मज़ा चखो। (35) यकीनन महीनों की गिनती (जो कि) अल्लाह की किताब में अल्लाह के नज़दीक (मोतबर हैं,) बारह महीने (चाँद के) हैं, जिस दिन उसने (यानी अल्लाह तआला ने) आसमान और ज़मीन पैदा किए थे (उसी दिन से, और) उनमें चार ख़ास महीने अदब के हैं,⁷ यही (जो ज़िक्र किया गया) दीने मुस्तकीम है⁸ सो तुम सब उन (महीनों) के बारे में (दीन के खिलाफ़ करके) अपना नुक़सान मत करना, और उन मुशिरकों से सबसे लड़ना जैसा कि वे तुम सबसे लड़ते हैं, और (यह) जान रखो कि अल्लाह तआला मुत्तकियों का साथी है।⁹ (36) यह हटा देना कुफ़्र में और तरक्की है जिससे कुफ़्फ़ार गुमराह किए जाते हैं कि

1. यानी हलाल व हराम में उनकी इताअत अल्लाह की इताअत की तरह करते हैं कि शरीअत के हुक्म पर उनके कौल को तरजीह देते हैं, और ऐसी फ़रमाँबरदारी एक तरह से इबादत ही है। पस इस हिसाब से वे उनकी इबादत करते हैं।
2. यानी मुँह से रद्द व एतिराज़ की बातें इस गरज़ से करते हैं कि दीने हक़ को फ़रोग और तरक्की न हो।
3. यानी इस्लाम।
4. मुकम्मल करना दलीलों से साबित करने और कुव्वत देने के मायने में तो इस्लाम के लिए हर ज़माने में आम है, और यही मुक़ाबिल है ‘इतफ़ा’ का जो कि रद्द के मायने में है, और तफ़सीर के सही होने के लिए काफ़ी है। और हुक्ूमत का मिलना मशरूत है अहले दीन के तक्वे व सुधार के साथ। और बक़िया तमाम दीनों का मिटना हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के ज़माने में होगा।
5. यानी यहूद और ईसाइयों के आलिम और बुजुर्ग हज़रात।
6. यानी हक़ अहक़ाम को छुपाकर अ़वाम की मरज़ी के मुवाफ़िक़ फ़तवे देकर उनसे नज़राने लेते हैं।
7. यानी जीकादा, ज़िलहिज्जा, मुहर्रम, रजब।
8. यानी इन महीनों का बारह होना और चार का तख़सीस के साथ हराम महीने होना।
9. आयत में मक़सूद उस हिसाब को बातिल करना है जिससे शरई अहक़ाम में ख़लल पड़ने या ग़लती होने लगे। अलबत्ता चूँकि शरई अहक़ाम का मदार चाँद के हिसाब पर है इसलिए उसकी हिफ़ाज़त फ़र्ज़े किफ़ाय़ा है। पस अगर सारी उम्मत दूसरी इस्तिलाह को अपना मामूल बना ले जिससे चाँद का हिसाब ज़ाय़ा हो जाए तो सब गुनाहगार होंगे। और अगर वह महफूज़ रहे तो दूसरे हिसाब का इस्तेमाल भी मुबाह और जायज़ है, लेकिन बुजुर्गों के तरीक़े और मामूल के खिलाफ़ ज़रूर है। और चाँद के हिसाब का बरतना उसके फ़र्ज़े किफ़ाय़ा होने की वजह से ज़रूरी, अफ़ज़ल और बेहतर है।

वे इस (हराम महीने) को किसी साल (नफ़्सानी गरज़ से) हलाल कर लेते हैं, और किसी साल (जब कोई गरज़ न हो) हराम समझते हैं, ताकि अल्लाह तआला ने जो (महीने) हराम किए हैं (सिर्फ़) उनकी गिनती पूरी कर लें, फिर अल्लाह के हराम किए हुए (महीने) को हलाल कर लेते हैं। उनके बुरे आमांल उनको अच्छे मालूम होते हैं, और अल्लाह तआला ऐसे काफ़िरो को हिदायत (की तौफ़ीक़) नहीं देता।' (37) ❖

ऐ ईमान वालो! तुम लोगों को क्या हुआ कि जब तुमसे कहा जाता है कि अल्लाह की राह में (जिहाद के लिए) निकलो तो तुम ज़मीन को लगे जाते हो? क्या तुमने आख़िरत के बदले दुनियावी ज़िन्दगी पर क़नाअत कर ली? सो दुनियावी ज़िन्दगी से फ़ायदा हासिल करना तो आख़िरत के मुक़ाबले में (कुछ भी नहीं) बहुत कम है। (38) अगर तुम न निकलोगे तो वह (यानी अल्लाह तआला) तुमको सख़्त सज़ा देगा (यानी तुमको हलाक कर देगा) और तुम्हारे बदले दूसरी क़ौम को पैदा कर देगा (और उनसे अपना काम लेगा) और तुम अल्लाह (के दीन) को कुछ नुक़सान नहीं पहुँचा सकोगे, और अल्लाह को हर चीज़ पर पूरी कुदरत है। (39) अगर तुम लोग उनकी (यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की) मदद न करोगे तो अल्लाह तआला आपकी मदद उस वक़्त कर चुका है जबकि आपको काफ़िरो ने वतन से निकाल दिया था, जबकि दो आदमियों में से एक आप थे जिस वक़्त कि दोनों ग़ार में थे, जबकि आप अपने हमराही से फ़रमा रहे थे कि तुम (कुछ) ग़म न करो यकीनन अल्लाह तआला हमारे साथ है। सो अल्लाह तआला ने आप (के दिल) पर अपनी तसल्ली नाज़िल फ़रमाई और आपको ऐसे लश्करो से कुव्वत दी जिनको तुमने नहीं देखा, और अल्लाह तआला ने काफ़िरो की बात (और तदबीर) नीची कर दी, (कि वे नाकाम रहे) और अल्लाह ही का बोल-बाला रहा, और अल्लाह ज़बरदस्त है, हिक्मत वाला है। (40) निकल पड़ो (चाहे) थोड़े सामान से (हो) और (चाहे) ज़्यादा सामान से (हो) और अल्लाह तआला की राह में अपने माल और जान से जिहाद करो, यह तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम यकीन रखते हो (तो देर मत करो)। (41) अगर कुछ हाथ के हाथ मिलने वाला होता और सफ़र भी मामूली-सा होता तो ये (मुनाफ़िक़) लोग आपके साथ हो लेते, लेकिन उनको तो सफ़र की दूरी ही दूर-दराज़ मालूम होने लगी। और अभी खुदा की कस्में खा जाएँगे कि अगर हमारे बस की बात होती तो हम ज़रूर तुम्हारे साथ चलते, ये लोग (झूठ बोल-बोलकर) अपने आपको तबाह कर रहे हैं, और अल्लाह तआला जानता है कि ये लोग यकीनन झूठे हैं। (42) ❖

1. यहाँ से तबूक की लड़ाई का बयान है। तबूक मुल्क शाम में एक मक़ाम है। जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मक्का के फ़तह और हुनैन की लड़ाई वगैरह से फ़ारिग़ हुए तो आपको ख़बर हुई कि रूम का बादशाह मदीना पर फ़ौज भेजना चाहता है, और वह फ़ौज तबूक में जमा की जाएगी। आपने खुद ही मुक़ाबले के लिए सफ़र का इरादा फ़रमाया और मुसलमानों में इसका आ़म ऐलान कर दिया। चूँकि वह ज़माना गर्मी की शिदत का था और मुसलमानों के पास सामान बहुत कम था, और सफ़र भी बहुत लम्बा था, इसलिए इस लड़ाई में जाना बड़ी हिम्मत का काम था। इसलिए इन आयतों में उसकी बहुत तरगीब दी गई है। और चूँकि मुनाफ़िक़ लोग ईमान व इज़्लास न होने की वजह से उसमें तरह-तरह के वहाने सामने लाए और उनकी तरह-तरह की ख़बासतें ज़ाहिर हुईं, इसलिये इन आयतों में उनपर भी बहुत लानत मलामत हुई है। गरज़ आप उस मक़ाम तबूक तक तशरीफ़ लेजाकर ईसाइयों के लश्कर के मुन्तज़िर रहे, मगर वे ऐसे मरऊब हुए कि उनका हौसला जाता रहा, और आप वहाँ एक मुद्दत तक ठहरकर ख़ैर व आफ़ियत के साथ मदीना मुनब्वरा तशरीफ़ ले आए। यह वाक़िआ रजब सन् नौ हिज़री में हुआ।

अल्लाह तआला ने आपको माफ़ (तो) कर दिया (लेकिन) आपने उनको (ऐसी जल्दी) इजाज़त क्यों देदी थी? जब तक कि आपके सामने सच्चे लोग ज़ाहिर न हो जाते, और आप झूठों को मालूम न कर लेते। (43) जो लोग अल्लाह तआला पर और क़ियामत के दिन पर ईमान रखते हैं वे अपने माल और जान से जिहाद करने के बारे में आपसे रुख़सत न माँगेंगे, (बल्कि वे हुक्म के साथ दौड़ पड़ेंगे), और अल्लाह तआला (उन) मुत्तकियों को ख़ूब जानता है। (44) अलबत्ता वे लोग (जिहाद में न जाने की) आपसे रुख़सत माँगते हैं जो अल्लाह पर और क़ियामत के दिन पर ईमान नहीं रखते, और उनके दिल शक में पड़े हैं, सो वे अपने शर्कों में पड़े हुए हैरान हैं। (45) और अगर वे लोग (लड़ाई में) चलने का इरादा करते तो उसका कुछ सामान तो दुरुस्त करते, लेकिन (ख़ैर हुई) अल्लाह तआला ने उनके जाने को पसन्द नहीं किया, इसलिए उनको तौफीक नहीं दी और (तक्वीनी हुक्म की वजह से यूँ) कह दिया गया कि अपाहिज लोगों के साथ तुम भी यहाँ ही धरे रहो। (46) अगर ये लोग तुम्हारे साथ शामिल होकर जाते तो सिवाय इसके कि और दोगुना फ़साद करते और क्या होता, और तुम्हारे बीच फ़ितना डालने की फ़िक्र में दौड़े-दौड़े फिरते,¹ और (अब भी) तुममें उनके कुछ जासूस (मौजूद) हैं, और (उन) ज़ालिमों को अल्लाह तआला ख़ूब समझेगा। (47) उन्होंने तो पहले भी फ़ितना खड़ा करने की फ़िक्र की थी,² और आपके लिए कार्रवाइयों की उलट-फेर करते ही रहे, यहाँ तक कि हक़ (का वायदा) आ गया, और (उसका आना यह कि) अल्लाह का हुक्म ग़ालिब रहा, और उनको नागवार ही गुज़रता रहा।³ (48) और उन (ख़िलाफ़ करने वाले मुनाफ़िकों) में बाज़ा शख्स वह है जो कहता है कि मुझको इजाज़त दीजिए और मुझको ख़राबी में न डालिए। ख़ूब समझ लो कि ये लोग ख़राबी में तो पड़ ही चुके, और यकीनन (आख़िरत में) दोज़ख़ उन काफ़िरों को घेरेगी।⁴ (49) अगर आपको कोई अच्छी हालत पेश आती है तो वह उनके लिए गुम का सबब होती है, और अगर आप पर कोई हादसा आ पड़ता है तो (खुश होकर) कहते हैं कि हमने तो (इसी लिए) पहले से अपना एहतियात (का पहलू) इख़्तियार कर लिया था, और वे खुश होते हुए वापस चले जाते हैं। (50) आप फ़रमा दीजिए कि हमपर कोई हादसा नहीं पड़ सकता मगर वही जो अल्लाह ने हमारे लिए मुक़द्दर फ़रमाया है, वह हमारा मालिक है, और सब मुसलमानों को अपने सब काम अल्लाह ही के सुपुर्द रखने चाहिए।⁵ (51) आप फ़रमा दीजिए कि तुम तो हमारे हक़ में दो बेहतरीयों में से एक बेहतरी ही

1. यानी लगाई-बुझाई करके आपस में फूट डलवाते और झूठी ख़बरें उड़ाकर परेशान करते, दुश्मन का रोब तुम्हारे दिलों में डालने की कोशिश करते, इसलिए उनका न जाना ही अच्छा हुआ।

2. यानी जंगे उहुद वगैरह में।

3. ऊपर मुनाफ़िकों के मुश्तरका हालात का बयान था। आगे कई आयतों में जो लफ़्ज़ 'मिन्हुम्' से शुरू हुई हैं, बाज़ के मख़सूस हालात और अक्वाल (बातें) और दरमियान में मुश्तरका हालात भी ज़िक्र किए गए हैं।

4. उस शख्स का नाम 'जद बिन कैस' था। उसने यह बहाना बनाया था कि मैं औरतों पर फ़िदा हो जाता हूँ और रूमियों की औरतें हसीन ज़्यादा हैं। जाने में मेरा दीनी नुक़सान है, इसलिए रुख़सत का इच्छुक हूँ।

5. हासिल यह है कि अल्लाह मालिक और हाकिम हैं। हाकिम होने की हैसियत से उनको हर तसरूफ़ का इख़्तियार है, इसलिए हम राज़ी हैं।

के मुन्तज़िर रहते हो, और हम तुम्हारे हक में इसके मुन्तज़िर रहा करते हैं कि अल्लाह तआला तुमपर कोई अज़ाब भेजेगा, (चाहे) अपनी तरफ से (दुनिया या आखिरत में) या हमारे हाथों से। सो तुम (अपने तौर पर) इन्तिज़ार करो (और) हम तुम्हारे साथ (अपने तौर पर) इन्तिज़ार में हैं।¹ (52) आप फरमा दीजिए कि तुम (चाहे) खुशी से खर्च करो या नाखुशी से, तुम किसी तरह (खुदा के नज़दीक) मकबूल नहीं, (क्योंकि) बेशक तुम हुक्म के खिलाफ करने वाले लोग हो। (53) और उनकी (खैर) खैरात कबूल होने से और कोई चीज़ इसके अलावा रुकावट नहीं कि उन्होंने अल्लाह के साथ और उसके रसूल के साथ कुफ़ किया, और वे लोग नमाज़ नहीं पढ़ते मगर हारे जी से, और खर्च नहीं करते मगर नागवारी के साथ। (54) सो उनके माल और औलाद आपको ताज्जुब में न डालें, अल्लाह तआला को सिर्फ यह मन्ज़ूर है कि इन (ज़िक्र की हुई) चीज़ों की वजह से दुनियावी ज़िन्दगी में (भी) उनको अज़ाब में गिरफ़्तार रखे और उनकी जान कुफ़ ही की हालत में निकल जाए। (55) और ये (मुनाफ़िक) लोग अल्लाह तआला की कस्में खाते हैं कि वे तुममें के हैं।² हालाँकि (हकीकत में) वे तुममें के नहीं, लेकिन (बात यह है कि) वे डरपोक लोग हैं। (56) उन लोगों को अगर कोई पनाह मिल जाती, या ग़ार या कोई घुस-बैठने की ज़रा जगह (मिल जाती) तो ये ज़रूर मुँह उठाकर उधर चल देते (और ईमान का इज़हार न करते)। (57) और उनमें बाज़ वे लोग हैं जो सदकों (को तकसीम करने) के बारे में आप पर ताना मारते हैं। सो अगर उन (सदकों) में से (उनकी ख़्वाहिश के मुवाफ़िक) उनको मिल जाता है तो वे राज़ी हो जाते हैं, और अगर उन (सदकों) में से उनको (उनकी ख़्वाहिश के मुवाफ़िक) नहीं मिलता तो वे नाराज़ हो जाते हैं।³ (58) और (उनके लिए बेहतर होता) अगर वे लोग उसपर राज़ी रहते जो कुछ उनको अल्लाह ने और उसके रसूल ने दिया था, और (यूँ) कहते कि हमको अल्लाह काफी है, आइन्दा अल्लाह अपने फ़ज़ल से हमको (और) देगा, और उसके रसूल देंगे, हम (शुरू से) अल्लाह ही की तरफ़ राग़िब हैं। (59) ♦

1. हासिल यह कि अल्लाह तआला हिकमत वाले हैं, इस मुसीबत में भी हमारे फ़ायदे का ख़्याल करते हैं, इसलिए हम हर हाल में फ़ायदे में हैं, बख़िलाफ़ तुम्हारे कि तुम्हारी खुशहाली का अन्जाम भी वबाल और निकाल है, अगर दुनिया में नहीं तो आखिरत में ज़रूर है।

2. यानी मुसलमान हैं।

3. इससे मालूम होता है कि उनके एतिराज़ और हर्फ़गीरी का असल मन्शा महज़ दुनियावी लालच और खुद-ग़रज़ी है। पस ऐसे एतिराज़ का बातिल होना ज़ाहिर है।

सदकात तो सिर्फ गरीबों का हक है और मोहताजों का,¹ और जो कार्यकरता उन सदकात पर मुतैयन हैं,² और जिनकी दिलजोई करना (मन्ज़ूर) है,³ और गुलामों की गर्दन छुड़ाने में,⁴ और कर्जदारों के कर्जे में, और जिहाद में, और मुसाफिरो में, यह हुक्म अल्लाह की तरफ से (मुकरर) है,⁵ और अल्लाह तआला बड़े इल्म वाले (और) बड़ी हिक्मत वाले हैं। (60) और उन (मुनाफिकों) में से बाजे ऐसे हैं कि नबी को तकलीफें पहुँचाते हैं और कहते हैं कि आप हर बात कान देकर “यानी तवज्जोह से” सुन लेते हैं। आप फरमा दीजिए कि (वह नबी) कान देकर “यानी तवज्जोह से” तो वही बात सुनते हैं जो तुम्हारे हक में खैर (ही खैर) है कि वे अल्लाह पर ईमान लाते हैं और मोमिनों का यकीन करते हैं, और आप उन लोगों के हाल पर मेहरबानी फरमाते हैं जो तुममें ईमान का इज़हार करते हैं, और जो लोग अल्लाह के रसूल को तकलीफें पहुँचाते हैं उनके लिए दर्दनाक सज़ा होगी। (61) ये लोग तुम्हारे सामने अल्लाह तआला की (झूठी) कस्में खाते हैं ताकि तुमको राज़ी कर लें, (जिसमें माल व जान महफूज़ रहे) हालाँकि अल्लाह और उसका रसूल ज़्यादा हक रखते हैं, कि अगर ये लोग सच्चे मुसलमान हैं तो उसको राज़ी करें। ▲ (62) क्या उनको खबर नहीं कि जो शख्स अल्लाह की और उसके रसूल की मुख़ालफ़त करेगा (जैसा कि ये लोग कर रहे हैं) तो (यह बात तय हो चुकी है कि) ऐसे शख्स को दोज़ख़ की आग (इस तौर पर) नसीब होगी (कि) वह उसमें हमेशा रहेगा, यह बड़ी रुस्वाई है। (63) मुनाफ़िक लोग (तबई तौर पर) इससे अन्देशा करते हैं कि मुसलमानों पर कोई ऐसी सूर: (मिसाल के तौर पर, या आयत) नाज़िल (न) हो जाए जो उनको उन (मुनाफ़िकों) के दिल के हाल की इत्तिला दे दे। आप फरमा दीजिए कि अच्छा तुम मज़ाक़ उड़ाते रहो, बेशक अल्लाह तआला उस चीज़ को ज़ाहिर करके रहेगा जिस (के इज़हार) से तुम अन्देशा करते थे। (64) और अगर आप उनसे पूछिए तो कह देंगे कि हम तो बस मज़ाक़ और दिल्लगी कर रहे थे। आप (उनसे) कह दीजिएगा कि क्या अल्लाह के साथ और उसकी आयतों के साथ और उसके रसूल के साथ तुम हँसी करते थे? (65) तुम अब (यह बेहुदा) उज़्र मत करो, तुम तो अपने को मोमिन कहकर कुफ़्र करने लगे, अगर हम तुममें से बाज़ को छोड़ भी दें फिर भी बाज़ को तो (ज़रूर ही) सज़ा देंगे, इस वजह से कि वे (इल्मे-अज़ली में) मुज़्रिम थे।* (66) ♦

1. फ़कीर के मायने हैं जिसके पास कुछ न हो। मिस्कीन के मायने हैं जिसके पास निसाब (यानी माल की इतनी मात्रा जिसपर ज़कात वाजिब हो जाती है) से कम हो।
2. मुसलमान होना और अपनी बुनियादी असली ज़रूरतों से जायद निसाब के बक़द का मालिक व काबिज़ न होना सबमें शर्त है, सिवाय ज़कात को वसूल करने और कार्यकरताओं के जो मुसलमान बादशाह की तरफ से मुकरर हों कि उनको बावजूद ग़नी (यानी मालदार) होने के भी इस ज़कात में से उज़रत के तौर पर देना जायज़ है। बाकी तमाम किस्मों में उक्त कैद (यानी मुसलमान होना और शरई तौर पर मालदार न होना) शर्त है।
3. दिलजोई के लिए जनाव रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने में ज़कात दी जाती थी, चाहे वे मुसलमान न हों मगर उनके मुसलमान होने की उम्मीद हो या सिर्फ उनके शर व फ़ितने से बचने के लिए। और या मुसलमान हों मगर ग़रीब न हों सिर्फ उनको इस्लाम से मुहब्बत पैदा करने के लिए। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम के वक़्त में उनके इसका हक़दार न होने पर सबकी राय एक हो गई, जो पहले हुक्म के मन्सूख़ यानी ख़त्म हो जाने की निशानी है।
4. गर्दन छुड़ाने का मतलब यह है कि किसी गुलाम को उसके आका ने कह दिया हो कि इतना रुपया दे दे तो तू आज़ाद है। उस गुलाम को ज़कात दी जाए ताकि वह अपने आका को रुपया देकर आज़ाद हो जाए।
5. ज़कात के ख़र्च होने की सब जगहों में यह शर्त है कि जिनको ज़कात दी जाए उनको मालिक बना दिया जाए, बिना मालिक बनाए ज़कात अदा न होगी।
6. दीन के साथ जान-बूझकर हँसी-ठट्ठा करना चाहे बद-एतिकादी से हो या बिना बद-एतिकादी के हो, कुफ़्र है। और अल्लाह, उसकी आयतों और उसके रसूल के साथ हँसी-ठट्ठा करना, तीनों का एक ही हुक्म है। (कि वह आदमी काफ़िर हो जाता है)।

मुनाफिक मर्द और मुनाफिक औरतें सब एक तरह के हैं, कि बुरी बात (यानी कुफ्र और इस्लाम की मुखालफत) की तालीम देते हैं और अच्छी बात (यानी ईमान व नबी-ए-करीम की पैरवी) से मना करते हैं, और अपने हाथों को बन्द रखते हैं, उन्होंने खुदा का ख्याल न किया, तो खुदा ने उनका ख्याल न किया,¹ बेशक ये मुनाफिक बड़े ही सरकश हैं। (67) अल्लाह तआला ने मुनाफिक मर्दों और मुनाफिक औरतों और (खुलेआम) कुफ्र करने वालों से दोज़ख की आग का अहद कर रखा है, जिसमें वे हमेशा रहेंगे। वह उनके लिए काफी (सज़ा) है, और अल्लाह तआला उनको अपनी रहमत से दूर कर देगा, और उनको हमेशा का अज़ाब होगा। (68) (ऐ मुनाफिको!) तुम्हारी हालत उन लोगों की-सी है जो तुमसे पहले हो चुके हैं, जो कुव्वत में तुमसे ज़बरदस्त और माल व औलाद की कसरत में तुमसे भी ज़्यादा थे, तो उन्होंने अपने (दुनियावी) हिस्से से ख़ूब फ़ायदा हासिल किया, सो तुमने भी अपने (दुनियावी) हिस्से से ख़ूब फ़ायदा हासिल किया, जैसा कि तुमसे पहले लोगों ने अपने हिस्से से ख़ूब फ़ायदा हासिल किया था। और तुम भी (बुरी बातों में) ऐसे ही घुसे जैसे वे घुसे थे, और उन लोगों के (अच्छे) आमाल दुनिया व आखिरत में बेकार गए,² और वे लोग बड़े नुकसान में हैं। (69) क्या उन लोगों को उन (के अज़ाब व हलाक होने) की ख़बर नहीं पहुँची जो उनसे पहले हुए हैं, जैसे कौमे नूह और आद और समूद और इब्राहीम की कौम और मद्यन वाले और उल्टी हुई बस्तियाँ, कि उनके पास उनके पैग़म्बर (हक़ की) साफ़ निशानियाँ लेकर आए (लेकिन न मानने से बर्बाद हुए)। सो (इस बर्बादी में) अल्लाह ने उनपर जुल्म नहीं किया, लेकिन वे खुद ही अपनी जानों पर जुल्म करते थे।³ (70) और मुसलमान मर्द और मुसलमान औरतें आपस में एक-दूसरे के (दीनी) साथी हैं, नेक बातों की तालीम देते हैं और बुरी बातों से मना करते हैं, और नमाज़ की पाबन्दी रखते हैं और ज़कात देते हैं, और अल्लाह और उसके रसूल का कहना मानते हैं। उन लोगों पर ज़रूर अल्लाह तआला रहमत करेगा, बेशक अल्लाह तआला (पूरी तरह) कादिर है, हिक्मत वाला है। (71) और अल्लाह तआला ने मुसलमान मर्दों और मुसलमान औरतों से ऐसे बाग़ों का वायदा कर रखा है जिनके नीचे से नहरें चलती होंगी, जिनमें वे हमेशा रहेंगे, और नफ़ीस मकानों का जो कि उन हमेशा रहने वाले बाग़ों में होंगे, और (इन नेमतों के साथ) अल्लाह तआला की

1. यानी उन्होंने इताअत न की। अल्लाह तआला ने उनपर अपनी ख़ास रहमत न की।

2. क्योंकि दुनिया में उन आमाल पर सवाब की खुशख़बरी नहीं और आखिरत में सवाब नहीं।

3. ऊपर मुनाफिकों की ख़्वासतें, बुराइयाँ और नालायकियाँ ज़िक्र की गई थीं, आगे मज़मून की और ज़्यादा वज़ाहत के लिए इस कहावत पर नज़र रखते हुए कि चीज़ें अपनी ज़िद और मुखालिफ़ चीज़ों से पहचानी जाती हैं, मोमिनो की बाज़ खूबियों और अच्छाइयों का बयान है।

रज़ामन्दी सब (नेमतों) से बड़ी चीज़ है, यह (ज़िक्र हुई जज़ा) बड़ी कामयाबी है। (72) ♦

ऐ नबी! कुफ़ार (से तलवार के साथ) और मुनाफ़िकों से (ज़बानी) जिहाद कीजिए, और उनपर सख़्ती कीजिए। (ये दुनिया में तो इसके हक़दार हैं) और (आख़िरत में) इनका ठिकाना दोज़ख़ है, और वह बुरी जगह है। (73) वे लोग अल्लाह की कस्में खा जाते हैं कि हमने (फ़लानी बात) नहीं कही, हालाँकि यकीनन उन्होंने कुफ़र की बात कही थी, और (वह बात कहकर) अपने (ज़ाहिरी) इस्लाम के बाद (ज़ाहिर में भी) काफ़िर हो गए, और उन्होंने ऐसी बात का इरादा किया था जो उनके हाथ न लगी, और यह उन्होंने सिर्फ़ इस बात का बदला दिया है कि उनको अल्लाह ने और उसके रसूल ने अल्लाह के रिज़्क से मालदार कर दिया, सो अगर (इसके बाद भी) तौबा करें तो उनके लिए (दोनों ज़हान में) बेहतर होगा। और अगर मुँह मोड़ा तो अल्लाह तआला उनको दुनिया और आख़िरत में दर्दनाक सज़ा देगा, और उनका दुनिया में न कोई यार है और न मददगार। (74) और उन (मुनाफ़िकों) में बाज़ आदमी ऐसे हैं कि खुदा तआला से अहद करते हैं कि अगर अल्लाह तआला हमको अपने फ़ज़ल से (बहुत-सा माल) अता फ़रमा दे तो हम ख़ूब ख़ैरात करें, और हम (उसके ज़रिए से) ख़ूब नेक-नेक काम किया करें। (75) सो जब अल्लाह तआला ने उनको अपने फ़ज़ल से (बहुत-सा माल) दे दिया तो वे उसमें बुख़ल करने लगे (कि ज़कात न दी) और (इताअत से) मुँह मोड़ने लगे, और वे मुँह फेरने के आदी हैं। (76) सो अल्लाह तआला ने उसकी सज़ा में उनके दिलों में निफ़ाक़ (कायम) कर दिया (जो) खुदा के पास जाने के दिन तक (रहेगा) इस सबब से कि उन्होंने खुदा तआला से अपने वायदे में ख़िलाफ़ किया और इस सबब से कि वे (उस वायदे में शुरू ही से) झूठ बोलते थे। (77) क्या उनको ख़बर नहीं? कि अल्लाह तआला को उनके दिल का राज़ और उनकी सरगोशी “यानी कानाफ़ूसी” सब मालूम है, और यह कि अल्लाह तआला तमाम ग़ैब की बातों को ख़ूब जानते हैं। (78) ये (मुनाफ़िक लोग) ऐसे हैं कि नफ़्ली सदका देने वाले मुसलमानों पर सदकात के बारे में ताना मारते हैं, और (खासकर) उन लोगों पर (और

1. अगली आयत के मुताल्लिक़ किस्सा यह है कि तबूक से वापसी में चन्द मुनाफ़िकों ने जिनकी तादाद बारह तक नक़ल की गई है, एक रात सलाह की कि फ़लाँ घाटी में से आपकी सवारी गुज़रेगी तो सब मिलकर आपको ढकेल दें, फिर क़त्ल कर दें। ग़रज़ सब अपना मुँह लपेटकर जमा होकर उस जगह आ पहुँचे, मगर आपने देखकर डाँटा और हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु व हज़रत अम्मार रज़ियल्लाहु अन्हु साथ थे, उन्होंने हटाया, मगर पहचाने नहीं गए। आपको वह्म से मालूम हुआ, आपने मन्ज़िल पर पहुँचकर उन लोगों को बुलाकर पूछा कि तुमने ऐसा-ऐसा इरादा किया था। वे सब कस्में खा गए कि न मश्वरा हुआ न इरादा हुआ। उनमें से बाज़ के साथ आपने ख़ास तौर पर माली इम्दाद भी फ़रमाई थी जैसे जिलास। इस किस्से में यह आयत नाज़िल हुई और इसके नाज़िल होने के बाद जिलास ने इख़्लास और सच्चे दिल से इस्लाम कबूल किया।

2. सालबा विन हातिब नाम के एक शख्स ने आपसे माल के ज्यादा होने की दुआ कराई। आपने समझाया कि मस्तहत नहीं। उसने कहा कि मैं नेक कामों में खर्च किया करूँगा। ग़रज़ आपकी दुआ से वह मालदार हो गया। जब ज़कात का वक़्त आया तो कहने लगा कि इसमें (यानी ज़कात में) और जिज़ये (यानी टैक्स में) क्या फ़र्क़ है, और ज़कात न दी। इसपर अगली आयत नाज़िल हुई।

3. इन आयतों के नाज़िल होने की खबर सुनकर सालबा ज़कात लेकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की खिदमत में हाज़िर हुआ। आपने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने मुझे तेरी ज़कात लेने से मना फ़रमा दिया है। उसने बहुत हाय-तौबा की। फिर हज़रत सिद्दीके अक़बर रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िलाफ़त में ज़कात लाया, आपने भी कबूल न की। इसी तरह हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने भी कबूल न की, यहाँ तक कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के ज़माने में वह मर गया।

ज्यादा) जिनको सिवाय मेहनत (व मजदूरी की आमदनी) के और कुछ मयस्सर नहीं होता, यानी उनसे मज़ाक-ठट्टा करते हैं, अल्लाह उनको इस मज़ाक उड़ाने का तो ख़ास बदला देगा,¹ और (मुतलक ताना मारने का यह बदला मिलेगा ही कि) उनके लिए (आखिरत में) दर्दनाक सज़ा होगी। (79) आप चाहे उन (मुनाफ़िकों) के लिए इस्तिग़फ़ार करें या उनके लिए इस्तिग़फ़ार न करें, अगर आप उनके लिए सत्तर बार भी इस्तिग़फ़ार करेंगे तब भी अल्लाह तआला उनको न बख़्शेगा, यह इस वजह से है कि उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल के साथ कुफ़्र किया, और अल्लाह तआला ऐसे सरकश लोगों को हिदायत नहीं किया करता। (80) ♦

ये पीछे रह जाने वाले खुश हो गए, अल्लाह के रसूल के (जाने के) बाद अपने बैठे रहने पर, और उनको अल्लाह तआला की राह में अपने माल और जान के साथ जिहाद करना नागवार हुआ, और (दूसरों को भी) कहने लगे कि तुम गर्मी में मत निकलो। आप कह दीजिए कि जहन्नम की आग (इससे भी) ज्यादा गर्म है, क्या ख़ूब होता अगर वे समझते। (81) सो थोड़े (दिनों दुनिया में) हँस लें, और बहुत (दिनों आखिरत में) रोते रहें,² उन कामों के बदले में जो कुछ (कुफ़्र, निफ़ाक और खिलाफ़त) किया करते थे। (82) तो अगर खुदा तआला आपको (इस सफ़र से मदीना को सही-सालिम) उनके किसी गिरोह की तरफ़ वापस लाए, फिर ये लोग (किसी जिहाद में) चलने की इजाज़त माँगे तो आप (यूँ) कह दीजिए कि तुम कभी भी मेरे साथ न चलोगे, और न मेरे साथ होकर किसी (दीन के) दुश्मन से लड़ोगे। तुमने पहले भी बैठे रहने को पसन्द किया था, तो उन लोगों के साथ बैठे रहो जो (वाकई) पीछे रह जाने के लायक ही हैं। (83) और उनमें कोई मर जाए तो उस (के जनाज़े) पर कभी नमाज़ न पढ़िए और न (दफ़न के लिए) उसकी कब्र पर खड़े होइए, क्योंकि उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल के साथ कुफ़्र किया है और वे कुफ़्र ही की हालत में मरे हैं।³ (84) और उनके माल और औलाद आपको ताज्जुब में न डालें, अल्लाह तआला को सिर्फ़ यह मन्ज़ूर है कि इन (ज़िक्र हुई चीज़ों) की वजह से उनको दुनिया में (भी) अज़ाब में गिरफ़्तार रखे और उनका दम कुफ़्र ही की हालत में निकल जाए।⁴ (85) और जब कभी कुरआन का कोई टुकड़ा (इस मज़मून में) नाज़िल किया जाता है कि तुम

1. मज़ाक उड़ाने से चूँकि ज्यादा दिल दुखता है इसलिए इसकी जगहों और सज़ा को ख़ास तौर पर ज़िक्र किया गया।

2. यानी हँसना थोड़े दिनों का है फिर रोना हमेशा-हमेशा का। अगरचे यहाँ इस तरह का लफ़्ज़ इस्तेमाल किया गया है जैसे हुक्म दिया जा रहा हो, मगर मकसद इससे ख़बर देना है।

3. बुख़ारी व मुस्लिम में इस आयत का शाने नुज़ूल इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से यह नक़ल किया है कि जब अब्दुल्लाह बिन उबई मुनाफ़िक मर गया तो उसके बेटे ने जो कि सहाबी (रज़ियल्लाहु अन्हु) थे, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से दरख़्वास्त की कि अपना मुबारक क़ुर्ता दे दीजिए कि उसमें उसको कफ़नाया जाए। आपने दे दिया। फिर दरख़्वास्त की कि उसकी जनाज़े की नमाज़ पढ़ दीजिए। आप पढ़ने खड़े हुए तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने आपका दामन पकड़ लिया और अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल! आप इसकी नमाज़ पढ़ते हैं, हालाँकि अल्लाह तआला ने आपको मुनाफ़िकों की नमाज़ पढ़ने को मना फ़रमाया है। यानी 'आप उन मुनाफ़िकों के लिए इस्तिग़फ़ार करें या न करें.....इस आयत में' आपने फ़रमाया कि मुझे अल्लाह तआला ने इख़्तियार दिया है (मना नहीं किया) ग़रज़ आपने नमाज़ पढ़ी। उसपर यह आयत नाज़िल हुई। फिर कभी आपने मुनाफ़िकों के जनाज़े पर नमाज़ नहीं पढ़ी।

मसला: काफ़िर के जनाज़े पर नमाज़ और उसके लिए इस्तिग़फ़ार या उसके कफ़न-दफ़न में शिर्कत जायज़ नहीं।

4. ऊपर तबूक की लड़ाई के मुताल्लिक मुनाफ़िकों के पीछे रह जाने और झूठे बहाने बनाकर इजाज़त माँगने का बयान था। आगे उनकी यह मुस्तक़िल आदत होना कि हर लड़ाई में उनकी यह हालत है। और उनके मुकाबले में ईमान वालों की जाँबाज़ी और उसकी फ़ज़ीलत बयान फ़रमाते हैं।

(दिल के खुलूस से) अल्लाह पर ईमान लाओ और उसके रसूल के साथ होकर जिहाद करो, तो उनमें के ताकत वाले आपसे रुख्सत “यानी न जाने के लिए छुट्टी” माँगते हैं,¹ और कहते हैं, हमको इजाजत दीजिए कि हम भी यहाँ ठहरने वालों के साथ रह जाएँ। (86) वे लोग (निहायत बेगैरती के साथ) घर में बैठी औरतों के साथ रहने पर राजी हो गए और उनके दिलों पर मोहर लग गई, जिससे वे (गैरत या बेगैरती को) समझते ही नहीं। (87) (हाँ) लेकिन रसूल और आपके साथ में जो मुसलमान हैं उन्होंने (इस हुक्म को माना और) अपने मालों से और अपनी जानों से जिहाद किया, और उन्हीं के लिए सारी खूबिया हैं, और यही लोग कामयाब हैं। (88) अल्लाह तआला ने उनके लिए ऐसे बाग तैयार कर रखे हैं जिनके नीचे से नहरें जारी हैं, वे उनमें हमेशा को रहेंगे, यह बड़ी कामयाबी है। (89) ♦

और कुछ बहाना बनाने वाले लोग देहातियों में से आए ताकि उनको (घर रहने की) इजाजत मिल जाए, और (उन देहातियों में से) जिन्होंने खुदा से और उसके रसूल से (ईमान के दावे में) बिलकुल ही झूठ बोला था, वे बिलकुल ही बैठ रहे, उनमें से जो (आखिर तक) काफिर रहेंगे उनको दर्दनाक अज़ाब होगा।² (90) कम ताकत लोगों पर कोई गुनाह नहीं, और न बीमारों पर, और न उन लोगों पर जिनको खर्च करने को मयस्सर नहीं, जबकि ये लोग अल्लाह और रसूल के साथ (दूसरे अहकाम में) खुलूस रखें, (उन) नेक काम करने वालों पर किसी किस्म का इल्जाम (आयद) नहीं, और अल्लाह पाक बड़ी मग़्फ़िरत वाले, बड़ी रहमत वाले हैं।³ (91) और न उन लोगों पर (कोई गुनाह और इल्जाम है) कि जिस वक़्त वे आपके पास इस वास्ते आते हैं कि आप उनको कोई सवारी दे दें और आप (उनसे) कह देते हैं कि मेरे पास तो कोई चीज़ नहीं जिसपर मैं तुमको सवार कर दूँ, तो वे (नाकाम) इस हालत से वापस चले जाते हैं कि उनकी आँखों से आँसू बहते होते हैं, इस ग़म में कि (अफ़सोस) उनको खर्च करने को कुछ भी मयस्सर नहीं। (92) पस इल्जाम (और पकड़) तो सिर्फ़ उन लोगों पर है जो बावजूद सामान (और ताकत) वाले होने के (घर रहने की) इजाजत चाहते हैं, वे लोग (निहायत बेशर्मी से) घर में बैठी औरतों के साथ रहने पर राजी हो गए, और अल्लाह ने उनके दिलों पर मोहर लगा दी, जिससे वे (गुनाह व सवाब को) जानते ही नहीं।⁴ (93)

1. 'ताकत वालों' के ज़िक्र से ख़ास करना मकसूद नहीं, बल्कि जो ताकत वाले नहीं यानी इसकी ताकत व हिम्मत नहीं रखते उनका हाल इससे और भी अच्छी तरह मालूम हो गया कि जब ताकत वालों का यह हाल है तो बेताकतों और कमज़ोरों का तो ज़रूर ही होगा।
2. यूँ तो ईमान के दावे में सब ही मुनाफ़िक़ीन झूठे थे, मगर जो उज़्र करने आए थे उन्होंने अपने दावे को दिखावे में तो निभाया और बाज़े ऐसे घमण्डी और बेबाक थे जिन्होंने ज़ाहिरी तौर पर भी न निभाया। वे जैसे दिल में झूठे थे ज़ाहिर में भी उनका झूठ खुल गया।
3. अगर ये लोग अपनी जानकारी में माज़ूर हों और अपनी तरफ़ से खुलूस व इताअत में कोशिशें करें और हकीकत में कुछ कमी रह जाए तो माफ़ कर देंगे।
4. ऊपर उन मुनाफ़िक़ों का ज़िक्र था जिन्होंने रवानगी के वक़्त उज़्र घड़े थे। आगे उनका ज़िक्र है जिन्होंने वापसी के वक़्त बहाने बनाए थे। ये अगली आयतें वापसी से पहले नाज़िल हुईं, जिनमें फ़ानी ग़रज़ों और मख़्लूक की रज़ामन्दी हासिल करने के लिए उनकी बहानेबाज़ी के मुताल्लिक़ 'यअतज़िरू-न' (यानी ये लोग तुम सबके सामने उज़्र पेश करेंगे) में पेशीनगी है। और 'कुल ला तअतज़िरू' और 'फ-अअरिजू' (यानी 'आप सबकी तरफ़ से साफ़ कह दीजिए कि ये उज़्र मत पेश करो', और 'तुम उनको उनकी हालत पर छोड़ दो') में इस उज़्र के वक़्त उनके साथ कौल व अमल के एतिबार से बर्ताव की तालीम है, और साथ-साथ अज़ाब की वईद यानी धमकियाँ उनको सुनाई गई हैं।

ग्यारहवाँ पार: यअतज़िरु-न

सूर: तौबा (आयत 94 से 129)

ये लोग तुम्हारे (सबके) सामने उज़्र पेश करेंगे जब तुम उनके पास वापस जाओगे। (सो ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) आप (सबकी तरफ से साफ) कह दीजिए कि (यह) उज़्र पेश मत करो, हम कभी तुमको सच्चा न समझेंगे, अल्लाह तआला हमको तुम्हारी (असली हालत की) ख़बर दे चुके हैं। और आगे भी अल्लाह तआला और उसका रसूल तुम्हारी कारगुजारी देख लेंगे। फिर ऐसे के पास लौटाए जाओगे जो छुपे और ज़ाहिर सबका जानने वाला है। फिर वह तुमको बतला देगा जो-जो कुछ तुम करते थे। (94) (हाँ) वे अब तुम्हारे सामने अल्लाह की कस्में खा जाएँगे (कि हम माज़ूर थे) जब तुम उनके पास वापस जाओगे, ताकि तुम उनको उनकी हालत पर छोड़ दो। सो तुम उनको उनकी हालत पर छोड़ दो, वे लोग बिलकुल गन्दे हैं, और (अख़ीर में) उनका ठिकाना दोज़ख़ है, उन कामों के बदले में जो कुछ वे (निफ़ाक़ व मुखालिफ़त वग़ैरह) किया करते थे। (95) ये इसलिए कस्में खाएँगे कि तुम उनसे राज़ी हो जाओ। सो अगर तुम उनसे राज़ी भी हो जाओ तो (उनको क्या नफ़ा, क्योंकि) अल्लाह तआला तो ऐसे शरीर लोगों से राज़ी नहीं होता। (96) (उन मुनाफ़िकों में जो) देहाती लोग (हैं वे) कुफ़्र और निफ़ाक़ में बहुत ही सख़्त लोग हैं, और उनको ऐसा होना ही चाहिए कि उनको उन अहक़ाम का इल्म न हो जो अल्लाह तआला ने अपने रसूल पर नाज़िल फ़रमाए हैं, और अल्लाह तआला बड़े इल्म वाले, बड़ी हिक्मत वाले हैं। (97) और उन देहातियों में से बाज़-बाज़ ऐसा है कि जो कुछ वह ख़र्च करता है उसको जुर्माना समझता है, और तुम मुसलमानों के वास्ते (ज़माने की) गर्दिशों का मुन्तज़िर रहता है, बुरा वक़्त उन ही (मुनाफ़िकों) पर (पड़ने वाला) है,² और अल्लाह तआला सुनते हैं, जानते हैं। (98) और बाज़े देहात वाले ऐसे भी हैं जो अल्लाह पर और कियामत के दिन पर (पूरा-पूरा) ईमान रखते हैं, और जो कुछ ख़र्च करते हैं उसको अल्लाह के पास कुर्ब “यानी निकटता” हासिल होने का ज़रिया और रसूल की दुआ का ज़रिया बनाते हैं,³ याद रखो कि (उनका) यह (ख़र्च करना) बेशक उनके लिए निकटता का सबब है, ज़रूर उनको अल्लाह तआला अपनी रहमत में दाख़िल कर लेंगे, अल्लाह तआला बड़ी मफ़िरत वाले, बड़ी रहमत वाले हैं। (99) ♦

और जो मुहाजिरीन और अन्सार (ईमान लाने में सबसे) पहले और मुक़द्दम हैं, और (बक़िया उम्मत में) जितने इख़लास के साथ उनके पैरोकार हैं, अल्लाह उन सबसे राज़ी हुआ और वे सब उससे (यानी अल्लाह से) राज़ी हुए,⁴ और उसने (यानी अल्लाह ने) उनके लिए ऐसे बाग़ मुहैया कर रखे हैं जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, जिनमें वे हमेशा-हमेशा रहेंगे, (और) यह बड़ी कामयाबी है। (100) और कुछ तुम्हारे आस-पास वाले

1. उज़्र करने और हलफ़ उठाने में उनकी दो ग़रज़ें बयान फ़रमाई, मुँह मोड़ना और रिज़ा। और उसके मुताल्लिक़ तीन हुक्म फ़रमाए, एक ‘उज़्र पेश मत करो’ दूसरा ‘उनको उनकी हालत पर छोड़ दो’ तीसरा ‘रिज़ा हासिल न होना’ जो ‘फ़-इन तरज़ौ.....’ से समझ में आता है।
2. चुनौचे फ़तुहात की वुसूअत हुई, कुफ़्फ़ार ज़लील हुए, उनकी सारी हसरतें दिल ही दिल में रह गई और तमाम उग्र रंज व ख़ौफ़ में कटी।
3. क्योंकि आपकी आदतें शरीफ़ा थी कि ऐसे मौकों पर ख़र्च करने वाले को दुआ देते थे, जैसा कि हदीसों में है।
4. ‘वस्साबिकूनल् अव्वलून’ में सब मुहाजिरीन व अन्सार आ गए। और ‘अल्लज़ीनल्ल-बऊहुम्’ में बक़िया मोमिनीन, जिनमें पहला दर्जा तो उनका है जो सहाबा हैं, चाहे मुहाजिर व अन्सार न हों, क्योंकि अख़ीर में हिज़रत फ़र्ज़ न थी, मुसलमान होकर अपने-अपने घर रहने की इजाज़त थी। और दूसरा दर्जा इस्तिलाही मायने में ताबिईन का है, फिर सहाबा और ताबिईन के अलावा का, फिर खुद इस आख़िरी दर्जे में भी अलग-अलग दर्जे हैं कि तब्-ए-ताबिईन फ़ज़ीलत में औरों से मुक़द्दम हैं, जिस तरह सहाबा में मुहाजिरीन व अन्सार दूसरे सहाबा से अफ़ज़ल हैं।

देहातियों में और कुछ मदीना वालों में ऐसे मुनाफिक हैं, कि निफाक की आखिरी हद को पहुँचे हुए हैं, कि आप (भी) उनको नहीं जानते (कि ये मुनाफिक हैं, बस) उनको हम ही जानते हैं। हम उनको (यानी मुनाफिकों को आखिरत से पहले भी) दोहरी सज़ा देंगे, (एक निफाक की दूसरे निफाक में हद से बढ़ने की) फिर (आखिरत में) वे बड़े भारी अज़ाब की तरफ़ भेजे जाएँगे।¹ (101) और कुछ और लोग हैं जो अपनी ख़ता के इकरारी हो गए। जिन्होंने मिले-जुले अमल किए थे, कुछ भले और कुछ बुरे, (सो) अल्लाह तआला से उम्मीद है कि उन (के हाल) पर रहमत के साथ तवज्जोह फ़रमाएँ, (यानी तौबा कबूल कर लें) बेशक अल्लाह तआला बड़ी मग़्फ़िरत वाले, बड़ी रहमत वाले हैं। (102) आप उनके मालों में से सदका (जिसको ये लाए हैं) ले लीजिए, जिसके (लेने के) ज़रिये से आप उनको (गुनाह के आसार से) पाक व साफ़ कर देंगे² और उनके लिए दुआ कीजिए, बेशक आपकी दुआ उनके लिए (दिल के) इत्मीनान का सबब है, और अल्लाह तआला (उनके मान लेने को) ख़ूब सुनते हैं (और उनकी शर्मिन्दगी को) ख़ूब जानते हैं। (103) क्या उनको यह ख़बर नहीं कि अल्लाह तआला ही अपने बन्दों की तौबा कबूल करता है और वही सदकों को कबूल फ़रमाता है, (और क्या उनको ख़बर नहीं कि) अल्लाह तआला ही तौबा कबूल करने (की सिफ़त में, और) रहमत करने (की सिफ़त) में कामिल हैं। (104) और आप कह दीजिए कि (जो चाहो) अमल किए जाओ, सो अभी देखे लेता है अल्लाह और उसका रसूल और ईमान वाले तुम्हारे अमल को, और ज़रूर तुमको ऐसे के पास जाना है जो तमाम छुपी और खुली चीज़ों को जानने वाला है। सो वह तुमको तुम्हारा सब किया हुआ बतला देगा। (105) और कुछ और लोग हैं जिनका मामला खुदा का हुक्म आने तक मुल्लवी “यानी स्थगित” है कि उनको सज़ा देगा या उनकी तौबा कबूल कर लेगा, और अल्लाह ख़ूब जानने वाला है, बड़ा हिक्मत वाला है। (106) और (बाज़े ऐसे हैं कि) जिन्होंने (इन गरजों के लिए) मस्जिद बनाई है कि (इस्लाम को) नुक़सान पहुँचाएँ और (उसमें बैठ-बैठकर) कुफ़्र की बातें करें, और ईमान वालों में फूट डालें,³ और उस शख्स के ठहरने का सामान करें जो पहले से ही खुदा और रसूल का मुख़ालिफ़ है⁴ और कस्में खा जाएँगे कि सिवाय भलाई के हमारी और कुछ

1. उनको और मुनाफिकों से बढ़ा हुआ इसलिए फ़रमाया कि निफाक के निफाक होने का मदार छुपाना है, और इसमें वे ऐसे बढ़े हुए हैं कि बावजूद यह कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ज़हानत, समझ और अक्ल में तमाम ज़हान से ज़्यादा मुकम्मल हैं, मगर उन्होंने आपको भी पता न चलने दिया।
2. इसी लिए उनकी तौबा कबूल की और अपनी रहमत से माल कबूल करने और उनके लिए दुआ करने का हुक्म फ़रमाया। पस आइन्दा भी ख़ता या गुनाहों के हो जाने पर तौबा कर लिया करें और अगर तौफीक हो तो ख़ैर-ख़ैरात भी किया करें। अगर कोई यह सवाल करे कि जब तौबा से गुनाह माफ़ हो गया तो सदके के पाक-साफ़ करने वाला होने के क्या मायने? जवाब इसका यह है कि तौबा से गुनाह तो माफ़ हो जाता है लेकिन कभी-कभी उसका अँधकार और मैल का असर बाकी रह जाता है, और अगरचे उसपर पकड़ नहीं लेकिन उससे आइन्दा और गुनाहों के पैदा होने का अन्देशा होता है। पस सदके से खुसूसन और दूसरे नेक आमाल से अमूमन यह अँधकार और मैल ख़त्म हो जाता है।
3. इस किस्से का खुलासा यह है कि शहर मदीना के करीब एक मौहल्ला है, कुबा उसका नाम है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब हिजरत करके मदीना तशरीफ़ लाए तो अव्वल इसी मौहल्ले में ठहरे, फिर शहर में तशरीफ़ ले आए थे। तो वहाँ ठहरने के ज़माने में जिस जगह आप नमाज़ पढ़ते थे वहाँ उस मौहल्ले के मोमिनीन मुख़लिसीन ने एक मस्जिद बनाई थी और उसमें नमाज़ पढ़ा करते थे। मुनाफिकों में आपस में यह सलाह ठहरी कि एक मकान मस्जिद के नाम से अलग बनाया जाए और उसमें सब जमा होकर इस्लाम को नुक़सान पहुँचाने के मशिवरे किया करें। गरज़ मस्जिद की शक्ल पर वह मकान तैयार हुआ तो आपकी ख़िदमत में हाज़िर होकर दरख़्वास्त की कि आप वहाँ चलकर नमाज़ पढ़ लीजिए तो फिर वहाँ जमाअत होने लगे। आपने वायदा कर लिया कि तबूक से वापस आकर उसमें नमाज़ पढ़ूँगा। अल्लाह तआला ने इन आयतों में आपको असल हकीकत की इत्तिहास कर दी और वहाँ नमाज़ पढ़ने की गरज़ से जाने से मना फ़रमा दिया। चुनाँचे आपने सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम को भेजकर उसको आग लगवा दी और गिरवा दिया। उस मस्जिद का लक़ब मस्जिदे-ज़रार मशहूर है, इस वजह से कि वह ज़रर यानी नुक़सान का सबब थी।
4. मुराद अबू आमिर राहिब है।

नीयत नहीं, और अल्लाह गवाह है कि वे बिल्कुल झूठे हैं। (107) आप उसमें कभी (नमाज़ के लिए) खड़े न हों, अलबत्ता जिस मस्जिद की बुनियाद अब्बल दिन से तक्वे पर रखी गई है। (मुराद मस्जिदे कुबा है) वह (वाकई) इस लायक है कि आप उसमें (नमाज़ के लिए) खड़े हों।¹ उसमें ऐसे आदमी हैं कि वे ख़ूब पाक होने को पसन्द करते हैं, और अल्लाह तआला ख़ूब पाक होने वालों को पसन्द करता है। (108) फिर क्या ऐसा शख्स बेहतर है जिसने अपनी इमारत (यानी मस्जिद) की बुनियाद अल्लाह तआला से डरने पर और उसकी की रिज़ा पर रखी हो, या वह शख्स जिसने अपनी इमारत की बुनियाद किसी घाटी (यानी गुफा) के किनारे पर रखी हो जो कि गिरने ही को हो, फिर वह (इमारत) उस (बनाने वाले) को लेकर दोज़ख़ की आग में गिर पड़े, और अल्लाह तआला ऐसे ज़ालिमों को (दीन की) समझ नहीं देता। (109) उनकी (यह) इमारत जो उन्होंने बनाई है (हमेशा) उनके दिलों में (काँटा-सा) खटकती रहेगी, (हाँ) मगर उनके (वे) दिल ही (अगर) फना हो जाएँ तो खैर,² और अल्लाह तआला बड़े इल्म वाले, बड़ी हिकमत वाले हैं।³ (110) ♦

बेशक अल्लाह तआला ने मुसलमानों से उनकी जानों और उनके मालों को इस बात के बदले ख़रीद लिया है कि उनको जन्नत मिलेगी। वे लोग अल्लाह की राह में लड़ते हैं, (जिसमें) क़त्ल करते हैं और क़त्ल किए जाते हैं,⁴ इसपर च्या वायदा (किया गया) है तौरात में (भी) और इन्ज़ील में (भी) और कुरआन में (भी) और (यह मुसल्लम है कि) अल्लाह से ज़्यादा अपने अहद को कौन पूरा करने वाला है। तो तुम लोग अपने इस बेचने पर जिसका तुमने उससे (यानी अल्लाह पाक से) मामला ठहराया है खुशी मनाओ,⁵ और यह बड़ी कामयाबी है। (111) वे ऐसे हैं जो (गुनाहों से) तौबा करने वाले हैं (और अल्लाह की) इबादत करने वाले (और) तारीफ़ करने वाले, रोज़ा रखने वाले, रुकूअ करने वाले, (और) सज्दा करने वाले, नेक बातों की तालीम करने वाले, और बुरी बातों से रोकने वाले, और अल्लाह की हदों का (यानी उसके अहकाम का) ख़्याल रखने वाले (हैं), और ऐसे मोमिनीन कि (जिनमें जिहाद और ये सिफ़तें हैं) आप खुशख़बरी सुना दीजिए।⁶ (112) पैग़म्बर को और दूसरे मुसलमानों को जायज़ नहीं कि मुशिरकों के लिए मग़ि़रत की दुआ माँगें, अगरचे वे रिश्तेदार ही (क्यों न) हों, इस (बात) के उनपर ज़ाहिर हो जाने के बाद कि ये लोग दोज़ख़ी हैं।⁷ (113) और इब्राहीम का अपने बाप के लिए मग़ि़रत की दुआ माँगना, वह (भी) सिर्फ़ वायदे के सबब था, जो उन्होंने उससे वायदा कर लिया था। फिर जब उनपर यह बात ज़ाहिर हो गई कि वह खुदा का दुश्मन है (यानी काफ़िर

1. चुनाँचे कभी-कभी आप वहाँ तशरीफ़ ले जाते और नमाज़ पढ़ते।
2. 'मगर यह कि उनके वे दिल ही फना हो जाएँ' का यह मतलब नहीं कि मौत आने या फना होने के बाद राहत हो जाएगी, बल्कि यह मुहावरों में किनाया है हमेशा की हसरत में रहने का।
3. ऊपर जिहाद में पीछे हट जाने वालों की मज़म्मत (निंदा) थी, आगे मुजाहिदीन की फज़ीलत, फिर उनमें से ख़ास कामिलीन की, जिनमें इसके साथ दूसरी ईमानी सिफ़तें भी हों, उनकी तारीफ़ ज़िक्र की गई है।
4. यानी वह बैअ (सौदा) जिहाद करना है, चाहे उसमें कातिल होने की नौबत आए या मक्तूल होने की।
5. क्योंकि इस बैअ पर तुमको ज़िक्र हुए वायदे के मुताबिक जन्नत मिलेगी।
6. इन सिफ़तों की कैद लगाने का यह मतलब नहीं कि बिना इन सिफ़तों के जिहाद का सवाब नहीं मिलता। बल्कि मतलब यह है कि इन सबके इकट्ठा होने से सवाब और फज़ीलत में और ज़्यादाती और कुव्वत हो जाती है, ताकि ख़ाली जिहाद पर न बैठ जाएँ, बल्कि इन इबादतों को भी हमेशा बजा लाएँ।
7. वजह इस मना करने की यह हुई कि अबू तालिब की वफ़ात के बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि जब तक मुझको मनाही न होगी उनके लिए इस्तिग़फ़ार करूँगा। इसपर और मुसलमानों ने भी अपने मुशिरक होने की हालत में मौत पाए हुए रिश्तेदारों के लिए इस्तिग़फ़ार शुरू किया, तो इस आयत में इसकी मनाही आई। बाज़ को शुब्हा हुआ कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने भी तो अपने बाप के लिए इस्तिग़फ़ार फरमाया था, इसपर अगली आयत में जवाब नाज़िल हुआ।

होकर मरा) तो वह उससे बिल्कुल बेताल्लुक हो गए, वाकई इब्राहीम बड़े रहम मिजाज वाले, तबीयत के हलीम थे। (114) और अल्लाह तआला ऐसा नहीं करता कि किसी कौम को हिदायत देने के बाद गुमराह कर दे जब तक कि उन चीजों को साफ-साफ न बतला दे जिनसे वे बचते रहें। बेशक अल्लाह तआला हर चीज को खूब जानते हैं। (115) (और) बेशक अल्लाह ही की हुकूमत है, आसमानों और ज़मीन की, वही जिलाता है और मारता है, और तुम्हारा अल्लाह के सिवा न कोई यार है और न मददगार। (116) अल्लाह ने पैग़म्बर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हाल) पर तवज्जोह फ़रमाई,¹ और मुहाजिरीन और अन्सार (के हाल) पर भी,² जिन्होंने (ऐसी) तंगी के वक़्त में पैग़म्बर का साथ दिया,³ इसके बाद कि उनमें से एक गिरोह के दिलों में कुछ हलचल हो चली थी, फिर उसने (यानी अल्लाह ने) उन (के हाल) पर तवज्जोह फ़रमाई। बेशक अल्लाह उन सबपर बहुत ही शफ़ीक़ (और) मेहरबान है। (117) और उन तीन शख्सों (के हाल) पर भी (तवज्जोह फ़रमाई) जिनका मामला मुल्तवी “यानी स्थगित” छोड़ दिया गया था, यहाँ तक कि जब (उनकी परेशानी की यह नोबत पहुँची कि) ज़मीन बावजूद अपनी फ़राख़ी के उनपर तंगी करने लगी और वे खुद अपनी जान से तंग आ गए, और उन्होंने समझ लिया कि खुदा (की गिरफ़्त) से कहीं पनाह नहीं मिल सकती सिवाय इसके कि उसी की तरफ़ रुजू किया जाए। (उस वक़्त वे ख़ास तवज्जोह के काबिल हुए), फिर उन (के हाल) पर (भी ख़ास) तवज्जोह फ़रमाई, ताकि वे (आइन्दा भी) रुजू (रहा) करें, बेशक अल्लाह तआला बहुत तवज्जोह फ़रमाने वाले, बड़े रहम करने वाले हैं।⁴ (118) ♦

ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो और (अमल में) सच्चों के साथ रहो। (119) मदीना के रहने वालों को और जो देहाती उनके आस-पास में (रहते) हैं उनको यह मुनासिब न था कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का साथ न दें, और न यह (चाहिए था) कि अपनी जान को उनकी जान से ज़्यादा प्यारा समझें। (और) यह (साथ जाने का ज़रूरी होना) इस सबब से है कि उनको (यानी रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ जाने वालों को) अल्लाह की राह में जो प्यास लगी और जो थकान पहुँची और जो भूख लगी और जो चलना चले, जो काफ़िरो के लिए नाराज़गी और गुस्से का सबब हुआ हो, और दुश्मनों की जो कुछ ख़बर ली, उन सबपर उनके नाम एक-एक नेक काम लिखा गया (अगर ये साथ जाते तो इनके नाम भी लिखा जाता), यकीनन अल्लाह तआला मुख़्लिसीन का अज़्र ज़ाया नहीं करते। (120) और (यह भी कि) जो कुछ छोटा-बड़ा उन्होंने ख़र्च किया और जितने मैदान उनको तय करने पड़े, यह सब भी उनके नाम (नेकियों में)

1. कि आपको नुबुव्वत, जिहाद की इमामत और तमाम खूबियाँ अता फ़रमाई।
2. कि उनको ऐसी मशक्कत के जिहाद में साबित कदम रखा।
3. तबूक की लड़ाई के ज़माने को ‘तंगी का वक़्त’ इस वास्ते फ़रमाया कि सख़्त गर्मी का वक़्त था, सफ़र लम्बा था, मुकाबला तर्बियत-याफ़ता लश्कर से था, सवारी की बहुत कमी थी। खाने-पीने के सामान की कमी इस कदर थी कि एक-एक छुआरा दो-दो शख्सों में तकसीम होता था। बाज़ दफ़ा एक छुआरे को एक के बाद एक कई-कई आदमी चूसते थे, सवारी के ऊँट ज़िब्ह करने पड़े, उनकी अंतड़ियों को निचोड़कर पीना पड़ा।
4. किसी शख्स को उसके शरीअत के ख़िलाफ़ कोई काम करने पर यह सज़ा देना कि उससे सलाम व कलाम बंद कर दें, यह जायज़ है। और हदीसों में जो मनाही आई है कि तीन दिन से ज़्यादा बातचीत बन्द न करें मुराद उससे वह है जिसका सबब कोई दुनियावी रंज हो।

लिखा गया ताकि अल्लाह उनको उनके (उन सब) कामों का अच्छे-से-अच्छा बदला दे।¹ (121) और (हमेशा के लिये) मुसलमानों को यह (भी) न चाहिए कि (जिहाद के लिये) सब-के-सब (ही) निकल खड़े हों। सो ऐसा क्यों न किया जाए कि उनकी हर बड़ी जमाअत में से एक छोटी जमाअत (जिहाद में) जाया करे ताकि बाकी रहने वाले लोग दीन की समझ-बूझ हासिल करते रहें, और ताकि ये लोग अपनी (उस) कौम को जबकि वे उनके पास वापस आएँ, डराएँ। ताकि वे (उनसे दीन की बातें सुनकर बुरे कामों से) एहतियात रखें।² (122) ♦

ऐ ईमान वालो! उन कुफ़र से लड़ो जो तुम्हारे आस-पास (रहते) हैं,³ और उनको तुम्हारे अन्दर सख्ती पाना चाहिए,⁴ और यह यकीन रखो कि अल्लाह की (इम्दाद) मुत्तकी लोगों के साथ है। ♦ (123) (पस उनसे डरो मत) और जब कोई (नई) सूर: नाज़िल की जाती है तो उन (मुनाफ़िकों) में से बाज़ ऐसे हैं जो (ग़रीब मुसलमानों से मज़ाक उड़ाने के तौर पर) कहते हैं कि (कहो) इस (सूर:) ने तुममें से किसके ईमान में तरक्की दी। सो (सुनो) जो लोग ईमान वाले हैं उस (सूर:) ने उनके (तो) ईमान में तरक्की दी है और वे (उस तरक्की के पाने से) खुश हो रहे हैं। (124) और जिनके दिलों में (निफ़ाक की) बीमारी है, उस (सूर:) ने उनमें उनकी (पहली) गन्दगी के साथ और (नई) गन्दगी बढ़ा दी, और वे कुफ़र ही की हालत में मर गए।⁵ (125) और क्या उनको नहीं दिखाई देता कि ये लोग हर साल में एक बार या दो बार किसी न किसी आफ़त में फँसे रहते हैं (मगर) फिर भी (अपनी बुरी हरकतों से) बाज़ नहीं आते, और न वे कुछ समझते हैं (जिससे आइन्दा बाज़ आने की उम्मीद हो)। (126) और जब कोई (नई) सूर: नाज़िल की जाती है तो एक-दूसरे को देखने लगते हैं (और इशारे से बातें करते हैं) कि तुमको कोई (मुसलमान) देखता तो नहीं, फिर चल देते हैं। (ये लोग हुजुरे पाक की मज्लिस से क्या फिरे) खुदा तआला ने उनका दिल (ही ईमान से) फेर दिया है, इस वजह से कि वे बिलकुल बे-समझ लोग हैं (कि अपने नफ़े से भागते हैं)। (127) (ऐ लोगो!) तुम्हारे पास एक ऐसे पैगम्बर तशरीफ़ लाए हैं जो तुम्हारी जिन्स (बशर) से हैं, जिनको तुम्हारी नुक़सान की बात निहायत भारी गुज़रती है,⁶ जो तुम्हारे फ़ायदे के बड़े इच्छुक रहते हैं, (यह हालत तो सबके साथ है, खास तौर पर) ईमान वालों के साथ बड़े ही शफ़ीक़ (और) मेहरबान हैं। (128) फिर अगर ये मुँह मोड़ें तो आप कह दीजिए (मेरा क्या नुक़सान है) कि मेरे लिए (तो) अल्लाह (हिफ़ाज़त करने वाला और मदद करने वाला) काफी है, उसके सिवा कोई माबूद होने के लायक नहीं, मैंने उसी पर भरोसा कर लिया और वह बड़े भारी अर्श का मालिक है। (129) ♦

1. ऊपर जो पीछे रह जाने वालों के बारे में मलामत के मज़ामीन नाज़िल हुए उससे आइन्दा के लिए शुब्हा हो सकता था कि हमेशा के लिए सबके जिम्मे जिहाद में जाना ज़रूरी होगा, इसलिए आगे हर शख्स के जाने का फ़र्ज न होना बयान फरमाते हैं।
2. बाकी बचे लोगों के रह जाने में जो मस्लहतें हैं उनमें से एक बड़ी मस्लहत को जो कि दीनी मस्लहत है, ज़िक्र फरमा दिया। इसके अलावा दुनिया की भी मस्लहतें हैं जो ज़ाहिर होने की वजह से ज़िक्र की मोहताज़ नहीं। जैसे सबके चले जाने में खुद दारुल-इस्लाम का कब्ज़े से निकल जाना भी मुम्किन है।
3. ऊपर चन्द आयतों में जिहाद की तरगीब थी, अब उसकी तरतीब मय उसके मुताल्लिक चन्द चीज़ों के ज़िक्र है। हासिल तरतीब का ज़ाहिर है कि अव्वल पास वालों से निबटना चाहिए, फिर बक़िया में जो सबसे पास के हों, और इसी पर आगे क़ियास कर लिया जाए। और इस तरतीब के खिलाफ़ में जो ख़राबियाँ हैं वे ज़ाहिर हैं, चुनाँचे हुजुर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जो अपने इख़्तियार से गुज़ावत (लड़ाइयाँ) फरमाए और सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने भी, सबमें यही तरतीब अपनाई है।
4. यानी जिहाद के वक़्त भी मजबूत रहना चाहिए। और वैसे भी सुलह के ज़माने को छोड़कर उनसे ढीलापन न बरतना चाहिए।
5. यानी जो उनमें मर चुके वे काफ़िर मरे और जो इसी ज़िद व हठ पर रहेंगे, वे काफ़िर मरेंगे। जवाब का हासिल यह है कि कुरआन में ईमान को तरक्की देने की बेशक ख़ासियत है लेकिन जगह और मक़ाम में काबलियत भी तो हो। और अगर पहले से गन्दगी जड़ जमाए हुए है तो और भी उसकी जड़ मजबूत हो जाएगी। जैसे बारिश कि हर जगह एक-सी होती है, लेकिन उसी बारिश से किसी जगह फूल-फल और ख़ूबसूरत पौधे पैदा होते हैं और उसी बारिश से दूसरी जगह कँटे और झाड़-झन्काड़ पैदा होते हैं। इसमें कुसूर बारिश का नहीं बल्कि कुसूर उस ज़मीन और जगह की काबलियत का है।
6. यानी चाहते हैं कि तुमको कोई नुक़सान न पहुँचे।

10 सूर: यूनुस 51

सूर: यूनुस मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 109 आयतें और 11 रुकूअ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

ये हिकमत से भरी किताब (यानी कुरआन) की आयतें हैं।¹ (1) क्या उन (मक्का के) लोगों को इस बात से ताज्जुब हुआ कि हमने उनमें से एक शख्स के पास वह भेज दी कि (खुदा तआला के अहकाम के खिलाफ करने पर) सब आदमियों को डराइए, और जो ईमान ले आएँ उनको यह खुशख़बरी सुनाइए कि उनके रब के पास (पहुँचकर) उनको पूरा मर्तबा मिलेगा। काफ़िर कहने लगे (हम अल्लाह की पनाह चाहते हैं) कि यह शख्स तो बिना शुब्हा खुला जादूगर है। (2) बेशक तुम्हारा (हकीकी) रब अल्लाह ही है जिसने आसमानों को और ज़मीन को छह दिन (की मात्रा) में पैदा कर दिया, फिर अर्श (यानी तख्ते शाही) पर कायम हुआ,² वह हर काम की (मुनासिब) तदबीर करता है, (उसके सामने) कोई सिफ़ारिश करने वाला (सिफ़ारिश) नहीं (कर सकता) बिना उसकी इजाज़त के। ऐसा अल्लाह तुम्हारा (हकीकी) रब है, सो तुम उसकी इबादत करो (और शिर्क मत करो), क्या तुम (इन दलीलों के सुनने के बाद) फिर भी नहीं समझते। (3) तुम सबको उसी के (यानी अल्लाह ही के) पास जाना है, अल्लाह ने (इसका) सच्चा वायदा कर रखा है। बेशक वही पहली बार भी पैदा करता है, फिर (कियामत में) वही दोबारा भी पैदा करेगा, ताकि ऐसे लोगों को जो कि ईमान लाए और उन्होंने नेक काम किए, इन्साफ़ के साथ (पूरा-पूरा) बदला दे। और जिन लोगों ने कुफ़्र किया उनके वास्ते (आख़िरत में) पीने को ख़ौलता हुआ पानी मिलेगा और दर्दनाक अज़ाब होगा, उनके कुफ़्र की वजह से। (4) वह (अल्लाह) ऐसा है जिसने सूरज को चमकता हुआ बनाया और चाँद को (भी) नूरानी बनाया, और उस (की चाल) के लिए मन्ज़िलें मुक़र्रर कीं, ताकि तुम बरसों की गिनती और हिसाब मालूम कर लिया करो।³ अल्लाह तआला ने ये चीज़ें बेफ़ायदा पैदा नहीं कीं। वह ये दलीलें उन लोगों को साफ़-साफ़ बतला रहे हैं जो समझ रखते हैं।⁴ (5) बेशक रात और दिन के एक के बाद एक के आने में और अल्लाह ने जो कुछ आसमानों और ज़मीन में पैदा किया है उन सबमें उन लोगों के वास्ते (तौहीद की) दलीलें हैं जो डर मानते हैं। (6) जिन लोगों को हमारे

1. इस पूरी सूर: का हासिल चन्द-मज़ामीन हैं। अब्ल तौहीद का साबित करना, दूसरे रिसालत का साबित करना, तीसरे कुरआन का साबित करना, चौथे आख़िरत का साबित करना, पाँचवे बाज़ वाकिआत के ज़रिये तबीह करना। और अब्ल के तहत में शिर्क को बातिल करना, और दूसरे के तहत में उसके मुताल्लिक बाज़ शुब्हात का जवाब, और तीसरे के तहत में उसके यानी आख़िरत के झुठलाने पर रद्द करना, और चौथे के तहत में बदले व सज़ा और दुनिया के फना होने का बयान, और पाँचवे के तहत में बाज़ शुब्हात का जवाब और आपकी तसल्ली के मज़ामीन ज़िक्र हैं। और ये सब मज़ामीन कुफ़्रार के साथ मुकाबला और मुनाज़रा हैं। और पहली सूर: में भी उनसे मुकाबला था, अगरचे वहाँ तलवार से था और यहाँ ज़बान से है, और वहाँ काफ़िरो के मुख़लिफ़ फ़िर्कों से था और यहाँ सिर्फ़ मुशिरकीन से है। चुनौचे आयतों में गौर करने से ये सब बातें ज़ाहिर हो सकती हैं। इस तकरीर से दोनों सूर: में भी और इस सूर: के हिस्सों में एक दूसरे के साथ भी मुनासबत व ताल्लुक ज़ाहिर हो गया।

2. यानी ज़मीन व आसमान में अहकाम जारी करने लगा।

3. मन्ज़िल से मुराद वह दूरी है जिसको कोई सितारा दिन-रात में तय कर ले, चाहे वह दूरी ख़ला (यानी ख़ाली जगह) हो या मला (यानी भरी हुई जगह) हो। और इस मायने के एतिबार से सूरज भी मन्ज़िलों वाला है, लेकिन चूँकि चाँद की चाल सूरज के मुकाबले में तेज़ है और उसका मन्ज़िलों को तय करना महसूस है। इसलिए उसके साथ मन्ज़िलों में चलने की तख़सीस मुनासिब हुई, और इस एतिबार से चाँद की उन्तीस या तीस मन्ज़िलें हुई। मगर चूँकि अठ्ठाईस रात से ज़्यादा नज़र नहीं आता (शेष तफ़सीर पृष्ठ 376 पर)

पास आने का खटका नहीं है और वे दुनियावी जिन्दगी पर राजी हो गए हैं (आखिरत की तलब बिलकुल नहीं करते) और उसमें जी लगा बैठे हैं (आइन्दा की कुछ खबर नहीं), और जो लोग हमारी आयतों से बिलकुल गाफिल हैं, (7) ऐसे लोगों का ठिकाना उनके आमाल की वजह से दोज़ख है। (8) (और) यकीनन जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक काम किए, उनका रब उनके मोमिन होने की वजह से उनके मकसद (यानी जन्नत) तक पहुँचा देगा। उनके (ठिकाने के) नीचे नहरें जारी होंगी, चैन के बागों में। (9) उनके मुँह से यह बात निकलेगी कि सुब्हानल्लाह! और उनका आपस में सलाम उसमें यह होगा, अस्सलामु अलैकुम! और उनकी (उस वक़्त की उन बातों में) आखिरी बात यह होगी, अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन। (10) ♦

और अगर अल्लाह तआला लोगों पर (उनके जल्दी मचाने के मुवाफ़िक़) जल्दी से नुकसान डाल दिया करता, जिस तरह वे फ़ायदे के लिए जल्दी मचाते हैं तो उनका (अज़ाब का) वायदा कभी का पूरा हो चुका होता। सो (इसलिए) हम उन लोगों को जिनको हमारे पास आने का खटका नहीं है, उनके हाल पर (बिना अज़ाब चन्द दिन) छोड़े रखते हैं कि अपनी सरकशी में भटकते रहें। (11) और जब इनसान को कोई तकलीफ़ पहुँचती है तो हमको पुकारने लगता है, लेटे भी, बैठे भी, खड़े भी,³ फिर जब हम उसकी वह तकलीफ़ उससे हटा देते हैं तो फिर अपनी पहली हालत पर आ जाता है कि गोया जो तकलीफ़ उसको पहुँची थी उसके (हटाने) के लिए कभी हमको पुकारा ही न था। उन हद से निकलने वालों के (बुरे) आमाल उनको इसी तरह अच्छे मालूम होते हैं (जिस तरह हमने अभी बयान किया है)। (12) और हमने तुमसे पहले बहुत-से गिरोहों को (तरह-तरह के अज़ाब से) हलाक कर दिया है, जबकि उन्होंने जुल्म किया (यानी कुफ़्र व शिर्क) हालाँकि उनके पास उनके पैगम्बर दलीलें लेकर आए, और वे (अपनी हद से बढ़ी हुई दुश्मनी के सबब) ऐसे कब थे कि ईमान ले आते, हम मुज़िम लोगों को ऐसी ही सज़ा दिया करते हैं (जैसा कि हमने अभी बयान किया है)। (13) फिर उनके बाद दुनिया में उनकी जगह हमने तुमको आबाद किया ताकि ज़ाहिरी तौर पर हम देख लें कि तुम किस तरह काम करते हो। (14) और जब उनके सामने हमारी आयतें पढ़ी जाती हैं जो बिलकुल साफ़-साफ़ हैं तो ये लोग जिनको हमारे पास आने का खटका नहीं है, (आपसे यूँ) कहते हैं कि इसके

(पृष्ठ 374 का शेष)

इसलिए अट्ठाईस मन्ज़िलें उसकी मशहूर हैं। और अगरचे सूरज व चाँद दोनों सालों की गिनती करने और हिसाब के आलात (यन्त्रों) में से हैं लेकिन सूरज का चक्कर एक साल में पूरा होने की वजह से ज़्यादा मुनासिब यह है कि सालों की गिनती को सूरज के मुताल्लिक किया जाए और उससे छोटे हिसाब को चाँद के मुताल्लिक किया जाए, और इसी वास्ते हिसाब का लफ़्ज़ बढ़ाया गया, ख़ास करने के बाद अमूमियत पैदा करने के लिए।

4. यूँ तो दलाइल उन लोगों के लिए भी बयान किए गए हैं जो इल्म और तक्वे वाले नहीं, मगर यह ख़ास करना इसलिए है कि इन दलाइल से फ़ायदा अहले इल्म और मुत्तकी लोग ही उठाते हैं।

1. ऊपर 'उलाइ-क मअ्वाहुमुन्नारु' (यानी ऐसे लोगों का ठिकाना उनके आमाल की वजह से दोज़ख है) में कुफ़्फ़ार का आखिरत में अज़ाब में होना बयान फ़रमाया है। ऐसे मज़ामीन पर काफ़िर झुठलाने की गरज़ से कहा करते कि हम तो अज़ाब को हक़ जब समझें कि हमपर यहाँ दुनिया ही में अज़ाब नाज़िल हो जाए, और उसके बाद अज़ाब नाज़िल न होने से आखिरत में अज़ाब न होने का जो शुब्हा हो सकता था, आगे उसका जवाब इशार्द होता है।

2. जो शर और फ़साद ज़ाहिर होता है उसमें किसी ख़ास शख्स या आम मसलहत के एतिबार से कोई ख़ैर छुपी होती है। और जिस ख़ैर में देर और ताख़ीर होती है इसी तरह उसमें कोई शर और बुराई छुपी होती है, तो शर का ज़ाहिर होना हकीक़त में ख़ैर का आना है, और उस ख़ैर का ज़ाहिर न होना हकीक़त में शर और बुराई का ज़ाहिर न होना है।

3. ऊपर तौहीद का ज़िक्र हुआ है, यहाँ शिर्क का बातिल होना एक ख़ास अन्दाज़ पर बयान फ़रमाते हैं। वह यह कि मुसीबत में खुद मुशिरक लोग भी खुदा के सिवा सबको छोड़ बैठते हैं। पस शिर्क हकीक़त में जिस तरह बातिल है उसी तरह उसके मानने वालों के तरीका-ए-अमल से भी वह लचर साबित होता है।

सिवा कोई (पूरा) दूसरा कुरआन (ही) लाइए, या (कम-से-कम) इसमें कुछ तरमीम कर दीजिए। आप (यूँ) कह दीजिए कि मुझसे यह नहीं हो सकता कि मैं अपनी तरफ से इसमें तरमीम कर दूँ। बस मैं तो उसी का इत्तिबा करूँगा जो मेरे पास वह्य के ज़रिये से पहुँचा है, अगर मैं अपने रब की नाफरमानी करूँ तो मैं एक बड़े भारी दिन के अज़ाब का अन्देशा रखता हूँ। (15) आप (यूँ) कह दीजिए कि अगर खुदा तआला को मन्ज़ूर होता तो न तो मैं तुमको यह (कलाम) पढ़कर सुनाता, और न वह (यानी अल्लाह तआला) तुमको इसकी इत्तिला देता,¹ क्योंकि इससे पहले भी तो मैं उम्र के एक बड़े हिस्से तक तुममें रह चुका हूँ। फिर क्या तुम इतनी अक्ल नहीं रखते? (16) सो उस शख्स से ज्यादा कौन जालिम होगा जो अल्लाह पर झूठ बाँधे या उसकी आयतों को झूठा बतला दे। यकीनन ऐसे मुज़िमों को हरगिज़ फ़लाह न होगी, (बल्कि हमेशा के अज़ाब में गिरफ़्तार होंगे)। (17) और ये लोग अल्लाह (की तौहीद) को छोड़कर ऐसी चीज़ों की इबादत करते हैं जो न उनको नुकसान पहुँचा सकें और न उनको नफ़ा पहुँचा सकें। और कहते हैं कि ये अल्लाह के पास हमारे सिफ़ारिश करने वाले हैं। आप कह दीजिए कि क्या तुम खुदा तआला को ऐसी चीज़ों की ख़बर देते हो जो खुदा तआला को मालूम नहीं, न आसमानों में और न ज़मीन में, वह पाक और बरतर है उन लोगों के शिर्क से। (18) और तमाम आदमी एक ही तरीके के थे,² फिर (अपनी ग़लत राय से) उन्होंने इख़िलाफ़ पैदा कर लिया। और अगर एक बात न होती जो आपके रब की तरफ़ से पहले तय हो चुकी है तो जिस चीज़ में ये लोग इख़िलाफ़ कर रहे हैं उनका क़तई फैसला (दुनिया ही में) हो चुका होता। (19) और ये लोग (यूँ) कहते हैं कि उनके रब की तरफ़ से उनपर कोई मोज़िज़ा क्यों नाज़िल नहीं हुआ? सो आप फ़रमा दीजिए कि ग़ैब की ख़बर सिर्फ़ खुदा को है (मुझको नहीं), सो तुम भी मुन्तज़िर रहो मैं भी तुम्हारे साथ इन्तिज़ार कर रहा हूँ।³ (20) ♦

और जब हम लोगों को इसके बाद कि उनपर कोई मुसीबत पड़ चुकी हो, किसी नेमत का मज़ा चखा देते हैं तो फ़ौरन ही हमारी आयतों के बारे में शरारत करने लगते हैं,⁴ आप कह दीजिए कि अल्लाह तआला (इस शरारत की) सज़ा बहुत जल्द देगा। यकीनन हमारे भेजे हुए (यानी फ़ारेश्ते) तुम्हारी सब शरारतों को लिख रहे हैं। (21) वह (अल्लाह) ऐसा है कि तुमको खुश्की और दरिया में लिए-लिए फिरता है,⁵ यहाँ तक कि कई बार जब तुम क़त्ती में सवार होते हो और वे (कश्तियाँ) लोगों को मुवाफ़िक़ हवा के ज़रिये से लेकर चलती हैं और वे लोग उन (की रफ़्तार) से खुश होते हैं, (उस हालत में अचानक) उनपर (मुख़ालिफ़) हवा का एक झोंका आता है, और हर तरफ़ से उनपर लहरें (उठी चली) आती हैं, और वे समझते हैं कि (बुरे) आ धिरे, (उस

1. पस जब मैं तुमको सुना रहा हूँ और मेरे ज़रिये से तुमको इत्तिला हो रही है तो इससे मालूम हुआ कि अल्लाह तआला को इस मोज़िज़ (यानी अज़ाब) कर देने वाले और इनसानी ताक़त से बाहर) कलाम का सुनवाना और इत्तिला करना मन्ज़ूर हुआ। और सुनाना और इत्तिला देना बिना वह्य के इस वजह मुम्किन नहीं कि यह कलाम इनसानी ताक़त से बाहर है। इससे मालूम हुआ कि वह वह्य अल्लाह की तरफ़ से है और अल्लाह का कलाम है।

2. यानी अगर यह मेरा कलाम है तो या तो इतनी मुद्दत तक एक जुम्ला भी इस तरह का न निकला, और या एक दम इतनी बड़ी बात बना ली, यह तो बिल्कुल अक्ल के ख़िलाफ़ है। इसके मोज़िज़ा होने के सबूत में 'फ़-क़द लबिस्तु फ़ीकुम.....' से दलील पकड़ना नीचे के दर्जे पर उतरकर है, यानी इस्तिदलाल यह है कि 'इस जैसी कोई सूर: लाकर दिखाओ' और इसमें कोई दूर का एहतिमाल निकालना कि शायद आम लोग इसपर कादिर न हों, आप कादिर हों। इस एहतिमाल और शुब्हा पर यह जवाब दिया है कि अचानक ऐसे आला तर्ज़ का इतना बड़ा कलाम पेश कर देना ख़िलाफ़े आदत (यानी आम इनसानों के मामूल और ताक़त से बाहर) है, और मोज़िज़ा होने में ख़िलाफ़े आदत (यानी आम इनसानों के मामूल और ताक़त से बाहर होने) पर ही मदार होता है।

3. यानी सब मुसलमान थे, क्योंकि आदम अलैहिस्सलाम मुसलमान और खुदा को मानने वाले थे। बहुत मुद्दत तक उनकी औलाद उन ही के तरीके पर रही। पस सब मुसलमान (मुवहिद्द) रहे। (शेष तफ़सीर पृष्ठ 380 पर)

वक्त) खालिस एतिकाद करके सब अल्लाह ही को पुकारने लगते हैं, (कि ऐ अल्लाह) अगर आप हमको इस (मुसीबत) से बचा लें तो हम जरूर हक को पहचानने वाले (तौहीद के इकरारी) बन जाएँ। (22) फिर जब अल्लाह तआला उनको (उस तबाही से) बचा लेता है तो फौरन ही वे (चारों तरफ) ज़मीन में नाहक की सरकशी करने लगते हैं।¹ ऐ लोगो! (सुन लो) यह तुम्हारी सरकशी तुम्हारे लिए वबाले (जान) होने वाली है, (बस) दुनियावी ज़िन्दगी में (उससे थोड़ा-सा) फायदा उठा रहे हो, फिर हमारे पास तुम सबको आना है, फिर हम तुम्हारा किया हुआ सब कुछ तुमको जतला देंगे (और उसकी सज़ा देंगे)।² (23) बस दुनियावी ज़िन्दगी की हालत तो ऐसी है जैसे हमने आसमान से पानी बरसाया, फिर उस (पानी) से ज़मीन के पेड़-पौधे जिनको आदमी और चौपाए खाते हैं ख़ूब घने होकर निकले, यहाँ तक कि जब वह ज़मीन अपनी रौनक का (पूरा हिस्सा) ले चुकी और उसकी ख़ूब ज़ेबाइश “यानी सँवरना” हो गई³ और उसके मालिकों ने समझ लिया कि अब हम इसपर बिलकुल काबिज़ हो चुके, तो (ऐसी हालत में) दिन में या रात में हमारी तरफ़ से कोई हादसा आ पड़ा (जैसे पाला या सूखा या और कुछ) सो हमने उसको ऐसा साफ़ कर दिया गया कल वह (यहाँ) मौजूद ही न थी। हम इसी तरह आयतों को साफ़-साफ़ बयान करते हैं, ऐसे लोगों के लिए जो सोचते हैं। (24) और अल्लाह तआला दारुल-बका “यानी आखिरत” की तरफ़ तुमको बुलाता है, और जिसको चाहता है सही रास्ते (पर चलने) की तौफ़ीक़ दे देता है। (25) जिन लोगों ने नेकी की है उनके वास्ते ख़ूबी (जन्नत) है, और उसपर यह भी कि (खुदा का दीदार) भी, और उनके चेहरों पर न (ग़म की) कदूरत छाएगी और न ज़िल्लत, ये लोग जन्नत में रहने वाले हैं, वे उसमें हमेशा रहेंगे। (26) और जिन लोगों ने बुरे काम किए⁴ उनकी बदी की सज़ा उसके बराबर मिलेगी, और उनको ज़िल्लत घेर लेगी, उनको अल्लाह तआला (के अज़ाब) से कोई न बचा सकेगा। (उनके चेहरों की कदूरत की ऐसी हालत होगी कि) गोया उनके चेहरों पर अन्धेरी रात के परत-के-परत लपेट दिए गए हैं। ये लोग दोज़ख़ (में रहने) वाले हैं, वे उसमें हमेशा-हमेशा रहेंगे।⁵ (27) और (वह दिन भी ज़िक्र करने के काबिल है) जिस दिन हम उन सब (मख़्लूक़ात) को (क़ियामत के मैदान में) जमा

(पृष्ठ 378 का शेष)

4. यानी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर।

5. खुलासा यह कि इन चीज़ों को रिसालत के मन्सब या उसके मुताल्लिकात से कोई ताल्लुक नहीं। मैं नहीं जानता न मुझको कोई दख़ल, असल मकसूद के साबित करने के लिए अलबत्ता हर वक्त तैयार हूँ और साबित भी कर चुका हूँ।

6. यानी उनसे किनारा करते हैं और उनके साथ झुठलाने और हँसी उड़ाने से पेश आते हैं, और एतिराज़ व बैर के तौर पर दूसरे मोजिज़ों की फरमाइश करते हैं, और गुज़री मुसीबत से सबक़ हासिल नहीं करते। पस एतिराज़ का सबब अल्लाह की तरफ़ से नाज़िल हुई आयतों से मुँह मोड़ना है और इस मुँह मोड़ने की वजह ऐश व मस्ती में मशगूलियत है।

7. यानी जिन आलात (यन्त्रों) व असबाब से तुम चलते-फिरते हो, वे सब अल्लाह ही के दिए हुए हैं।

1. यानी वही शिर्क और नाफरमानी।

2. ऊपर ‘या अय्युहन्नासु इन्नमा बग्युकुम.....’ में फरमाया था कि दुनिया में कुफ़्र और नाफरमानी के साथ तुम्हारी यह कामयाबी चन्द दिन की है, फिर आखिरत में इसकी सज़ा भुगतना है। आगे दुनिया का फानी होना और आखिरत की जज़ा व सज़ा का बाक़ी होना मय जज़ा व सज़ा की तफ़सील और उसके हक़दारों के ज़िक्र की गई है।

3. यानी हरियाली से अच्छी मालूम होने लगी।

4. यानी शिर्क व कुफ़्र किया।

5. ऊपर मुशिरकों के हक़ में फरमाया था ‘उनको अल्लाह के अज़ाब से कोई बचा न सकेगा’ इसलिए कि वे लोग अपने माबूदों को अपना शफ़ाअत करने वाला कहते थे। आगे उन माबूदों का उन इबादत करने वालों से क़ियामत में बेताल्लुकी ज़ाहिर करना, जिसके लिए नफ़ा न होना लाज़िम है, बयान फरमाते हैं।

करेंगे, फिर मुशिरकों से कहेंगे कि तुम और तुम्हारे शरीक अपनी जगह ठहरो। फिर हम उन (इबादत करने वालों और उनके माबूदों) के दरमियान में फूट डालेंगे, और उनके वे शुरका (उनसे ख़िताब करके) कहेंगे कि तुम हमारी इबादत नहीं करते थे। (28) सो हमारे और तुम्हारे दरमियान अल्लाह काफ़ी गवाह है¹ कि हमको तुम्हारी इबादत की ख़बर भी न थी।² (29) उस मक़ाम पर हर शख्स अपने अगले किए हुए कामों का इम्तिहान कर लेगा, और ये लोग अल्लाह (के अज़ाब) की तरफ़ जो उनका मालिके हकीकी है लौटाए जाएँगे³ और जो कुछ (माबूद) उन्होंने घड़ रखे थे सब उनसे ग़ायब (और गुम) हो जाएँगे। (कोई भी तो काम न आएगा) ● (30) ♦

आप (उन मुशिरकों से) कहिए कि (बतलाओ) वह कौन है जो तुमको आसमान और ज़मीन में रिज़्क पहुँचाता है,⁴ या (यह बतलाओ कि) वह कौन है जो (तुम्हारे) कानों और आँखों पर पूरा इख़्तियार रखता है। और वह कौन है जो जानदार (चीज़) को बेजान (चीज़ से) निकालता है, और बेजान (चीज़) को जानदार से निकालता है, और वह कौन है जो तमाम कामों की तदबीर करता है? सो (इन सवालों के जवाब में) वे (ज़रूर यही) कहेंगे (कि इन सब कामों का करने वाला) अल्लाह (है), तो उनसे कहिए कि फिर (शिकं से) क्यों परहेज़ नहीं करते। (31) सो यह है अल्लाह जो तुम्हारा हकीकी रब है, (और जब हक़ मामला साबित हो गया) फिर हक़ (मामले) के बाद और क्या रह गया, सिवाय गुमराही के,⁵ फिर (हक़ को छोड़कर बातिल की तरफ़) कहाँ फिरे जाते हो।⁶ (32) इसी तरह आपके रब की यह (तकदीरी) बात कि ये ईमान न लाएँगे, तमाम नाफरमान (सरकश) लोगों के हक़ में साबित हो चुकी है। (33) आप (उनसे यूँ भी) कहिए कि क्या तुम्हारे (तजवीज़ किए हुए) शरीकों में कोई ऐसा है जो पहली बार भी मख़्लूक को पैदा करे, फिर (क़ियामत में) दोबारा भी पैदा करे। आप कह दीजिए कि अल्लाह तआला ही पहली बार भी पैदा करता है, फिर वही दोबारा भी पैदा करेगा, सो फिर तुम (हक़ से) कहाँ फिरे जाते हो। (34) (और) आप (उनसे यूँ भी) कहिए कि क्या तुम्हारे शरीकों में कोई ऐसा है कि (अम्रें) हक़ का रास्ता बतलाता हो। आप कह दीजिए कि अल्लाह ही (अम्रें) हक़ का रास्ता (भी) बतलाता है।⁷ तो फिर आया जो शख्स हक़ (मामले) का रास्ता बतलाता हो वह ज़्यादा इत्तिबा के लायक है या वह शख्स जिसको बिना बतलाए खुद ही रास्ता न सूझे। तो (ऐ मुशिरको!) तुमको क्या हो गया, तुम कैसी तजवीज़ें करते हो। (35) और उनमें से अक्सर लोग सिर्फ़ बेअसल ख़्यालात पर चल रहे हैं, (और) यकीनन बेअसल ख़्यालात हक़ (मामले) से मुस्तग़नी करने (या उसके साबित करने) में ज़रा भी मुफीद नहीं। (ख़ैर) ये जो कुछ कर रहे हैं यकीनन अल्लाह को सब ख़बर है, (वक़्त पर सज़ा देगा)। (36) और यह

1. अगर किसी को शुब्हा हो कि क्या बुत भी बोलेंगे तो ज़वाब यह है कि यह नामुम्किन नहीं।
2. उनका ग़ाफ़िल होना उनकी इबादत से ज़ाहिर है, इस वास्ते कि बुतों को ऐसा शऊर ज़ाहिर है कि यहाँ नहीं है। और अगर दूसरे माबूदों जैसे फ़रिश्ते वगैरह को भी आम मुराद लिया जाए तो भी ग़ाफ़िल होना सही है, क्योंकि फ़रिश्तों वगैरह का इल्म सब कुछ घेरने वाला नहीं है, और सब अपने-अपने काम में लगे हुए हैं।
3. यहाँ अल्लाह तआला को काफ़िरों का मौला फ़रमा देना मालिक होने के मायने के एतिबार से है। और 'ला मौला लहुम' में नफ़ी करना मददगार और चाहने वाले के एतिबार से है।
4. यानी आसमान से बारिश बरसाता और ज़मीन से पेड़-पौधे पैदा करता है, जिससे तुम्हारा रिज़्क तैयार होता है।
5. यानी जो चीज़ हक़ की ज़िद और उलट होगी वह गुमराही है, और तौहीद का हक़ होना साबित हो गया। पस शिकं यकीनन गुमराही है।
6. आगे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तसल्ली है कि आप उन लोगों की बातिल-परस्ती पर ग़मज़दा हुआ करते थे।
7. चुनौते उसने अक़ल दी, नबियों को भेजा, बख़िलाफ़ शैतानों के कि अव्वल तो वे उन अफ़आल (यानी कामों) पर कादिर नहीं, और सिर्फ़ तालीम जिसकी कुदरत उनको दी गई है वे उसको गुमराह करने और बहकाने में ख़र्च करते हैं।

कुरआन अल्लाह के सिवा किसी और का घड़ा हुआ नहीं है, (कि उनसे सादिर हुआ हो) बल्कि यह तो उन (किताबों) की तस्दीक (करने वाला) है जो इससे पहले (नाज़िल) हो चुकी हैं। और किताब (यानी अल्लाह के जरूरी अहकाम) की तफ़सील (बयान करने वाला) है, (और) इसमें कोई (बात) शक (व शुब्हा की) नहीं कि (वह) रब्बुल आलमीन की तरफ़ से (नाज़िल हुआ) है। (37) क्या ये लोग (यूँ) कहते हैं कि आपने इसको घड़ लिया है, आप कह दीजिए कि फिर तुम इसके जैसी एक ही सूर: (बना) लाओ, और (अकेले नहीं बल्कि) जिन-जिनको अल्लाह के सिवा बुला सको (उनको मदद के लिए) बुला लो, अगर तुम सच्चे हो।¹ (38) बल्कि ऐसी चीज़ को झुठलाने लगे जिसके (यानी उसके सही और ग़ैर-सही होने) को अपने इल्मी घेरे में नहीं लाए। “यानी उन्हें खुद उसके बारे में कुछ इल्म नहीं” और अभी उनको इस (कुरआन के झुठलाने) का आखिरी नतीजा नहीं मिला। जो लोग (उनसे पहले) हुए हैं इसी तरह उन्होंने भी (हक चीज़ों को) झुठलाया था,² सो देख लीजिए कि उन ज़ालिमों का अन्जाम कैसा हुआ, (इसी तरह उनका होगा)। (39) और उनमें से बाज़े ऐसे हैं जो इस (कुरआन) पर ईमान ले आएँगे और बाज़े ऐसे हैं कि इसपर ईमान न लाएँगे, और आपका रब (उन) मुफ़सिदों को ख़ूब जानता है। (40) ♦

और अगर इन दलीलों के बाद भी आपको झुठलाते रहे तो (बस आखिरी बात यह) कह दीजिए कि (अच्छा साहिब) मेरा किया हुआ मुझको (मिलेगा) और तुम्हारा किया हुआ तुमको (मिलेगा)। तुम मेरे किए हुए के जवाबदेह नहीं हो, और मैं तुम्हारे किए हुए का जवाबदेह नहीं हूँ। (41) और (आप उनके ईमान की उम्मीद छोड़ दीजिए, क्योंकि) उनमें (अगरचे) बाज़ ऐसे भी हैं जो (ज़ाहिर में) आपकी तरफ़ कान लगा-लगा बैठते हैं, क्या आप बहरों को सुना (कर उनके मानने का इन्तिज़ार कर) रहे हैं, चाहे उनको समझ भी न हो। (42) और (इसी तरह) उनमें बाज़ ऐसे हैं कि (ज़ाहिर में) आपको (मोजिज़ात व कमालात के साथ) देख रहे हैं, तो फिर क्या आप अन्धों को रास्ता दिखलाना चाहते हैं चाहे उनको बसीरत “यानी अक्ल व समझ” भी न हो। (43) (यह) यकीनी बात है कि अल्लाह तआला लोगों पर जुल्म नहीं करता, लेकिन लोग खुद ही अपने आपको तबाह करते हैं।³ (44) और (उनको) वह दिन (याद दिलाइए) जिसमें अल्लाह तआला उनको (इस कैफ़ियत से) जमा करेगा कि (वे ऐसा समझेंगे) जैसे वे (दुनिया या बरज़ख़ में) सारे दिन की एक आध-घड़ी रहे होंगे⁴ और आपस में एक-दूसरे को पहचानेंगे (भी और) वाकई (उस वक़्त सख़्त) ख़सारे में पड़े वे लोग जिन्होंने अल्लाह के पास जाने को झुठलाया, और वे (दुनिया में भी) हिदायत पाने वाले न थे। (45) और जिस (अज़ाब) का उनसे हम वायदा कर रहे हैं, उसमें से कुछ थोड़ा-सा (अज़ाब) अगर हम आपको दिखला दें,⁵ या (उसके नाज़िल होने से पहले ही) हम आपको वफ़ात दे दें। सो हमारे पास तो उनको आना

1. यानी अल्लाह की पनाह अगर मैंने तैयार कर लिया है तो तुम भी तैयार कर लाओ।
2. ‘लम युहीतू’ का मतलब यह है कि आदमी जिस मामले में कलाम करे पहले उसकी तहकीक़ तो कर ले, तहकीक़ के बाद जो कलाम करना हो करे।
3. यानी खुद ही दी हुई काबलियत को ज़ाया कर देते हैं और उससे काम नहीं लेते।
4. ऊपर आयत ‘कज़ालि-क कज़़बल्लज़ी-न मिन क़ब्लिहिम.....’ और आयत ‘रब्बु-क अज़लमु.....’ में क़फ़ व झुठलाने पर अज़ाब की वईद फ़रमाई है। आगे उस अज़ाब के दुनिया में वाक़े न होने से वे कुम्फ़ार जो शुब्हात करते थे, उनका जवाब आखिरत की तहकीक़ के ज़िम्न में (अंतर्गत) बतलाते हैं। जिसका हासिल यह है कि दुनिया में चाहे कभी ज़ाहिर हो जाए लेकिन असली वक़्त उसका हश्म के दिन है, इसी लिए दुनिया में उसके सिर्फ़ बाज़ शोबे ज़ाहिर होते हैं, यानी मामूली हिस्से ही ज़ाहिर होते हैं, पूरे तौर पर नहीं, जैसे कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया ‘बअज़ल्लज़ी’ और कामिल तौर पर उसी वक़्त होगा, जैसे कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया ‘व लौ अन्-न लिक्वलि नफ़िसन्’ पस दुनिया में ज़ाहिर न होना न नुक़सानदेह है और न मेरे इख़्तियार में है, जैसे कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया (शेष तफ़सीर पृष्ठ 386 पर)

(ही) है, फिर (सबको मालूम है कि) अल्लाह तआला उनके सब कामों की इत्तिला रखता ही है। (46) और हर-हर उम्मत के लिए एक हुक्म पहुँचाने वाला (हुआ) है। सो जब वह उनका रसूल (उनके पास) आ चुकता है (और अहकाम पहुँचा देता है, तो उसके बाद) उनका फैसला इन्साफ़ के साथ किया जाता है, और उनपर (ज़रा भी) जुल्म नहीं किया जाता।¹ (47) और ये लोग कहते हैं कि (ऐ नबी और ऐ मुसलमानो!) यह (अज़ाब का) वायदा कब (ज़ाहिर) होगा, अगर तुम सच्चे हो (तो ज़ाहिर क्यों नहीं करा देते)। (48) आप फरमा दीजिए कि मैं (खुद) अपनी जाते खास के लिए तो किसी नफ़े (के हासिल करने का) और किसी नुकसान (के दूर करने) का इख़्तियार रखता ही नहीं, मगर जितना (इख़्तियार) खुदा को मन्ज़ूर हो² हर उम्मत के (अज़ाब के) लिए (अल्लाह के नज़दीक) एक तय वक़्त है, (सो) जब उनका वह तय किया हुआ वक़्त आ पहुँचता है तो (उस वक़्त) एक घड़ी न पीछे हट सकते हैं और न आगे सरक सकते हैं।³ (49) आप (उसके मुताल्लिक) फरमा दीजिए कि यह तो बतलाओ कि अगर तुमपर उसका (यानी खुदा का) अज़ाब रात को आ पड़े, या दिन को, तो (यह बतलाओ कि) उस (अज़ाब) में कौन-सी चीज़ ऐसी है कि मुज़्रिम लोग उसको जल्दी माँग रहे हैं।⁴ (50) क्या फिर जब वो (मुकर्ररा आर तयशुदा वायदा) आ ही पड़ेगा (उस वक़्त) उसकी तस्दीक करोगे? हाँ अब (माना) हालाँकि (पहले से) तुम (झुटलाने के इरादे से) उसकी जल्दी (मचाया) करते थे। (51) फिर ज़ालिमों (यानी मुशिरकों) से कहा जाएगा कि हमेशा का अज़ाब चखो, तुमको तो तुम्हारे ही किए का बदला मिला है। (52) और वे (इन्तिहाई ताज्जुब व इनकार से आपसे) पूछते हैं कि क्या वह (अज़ाब) वाकई (कोई चीज़) है, आप फरमा दीजिए कि हाँ कसम है मेरे रब की, वह वाकई (चीज़) है, और तुम किसी तरह उसे (यानी खुदा को) आज़िज़ नहीं कर सकते (कि वह अज़ाब देना चाहे और तुम बच जाओ)। (53) ♦

और अगर हर-हर मुशिरक शख्स के पास इतना (माल) हो कि सारी ज़मीन में भर जाए तब भी उसको देकर अपनी जान बचाने लगे। और जब अज़ाब देखेंगे तो (और फज़ीहत के ख़ौफ़ से) शर्मिन्दगी को (अपने दिल ही में) छुपाकर रखेंगे और उनका फैसला इन्साफ़ के साथ होगा, और उनपर (ज़रा भी) जुल्म न होगा। (54) याद रखो कि जितनी चीज़ें आसमानों और ज़मीन में हैं, सब अल्लाह ही की (मिल्क) हैं। याद रखो कि अल्लाह का वायदा सच्चा है, (पस कियामत ज़रूर आएगी) लेकिन बहुत-से आदमी यकीन ही नहीं करते। (55) वही जान डालता है, वही जान निकालता है,⁵ और तुम सब उसी के पास लाए जाओगे, (और हिसाब किताब होगा)। (56) ऐ लोगो! तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से (एक ऐसी चीज़) आई है जो (बुरे कामों से रोकने के लिए) नसीहत (है) और दिलों में जो (बुरे कामों से) रोग (हो जाते हैं) उनके लिए शिफा है, और रहनुमाई करने वाली है, और रहमत (और सवाब का ज़रिया) है, (और ये सब बरकतें) ईमान वालों के लिए हैं। (57) आप (उनसे) कह दीजिए कि (जब कुरआन ऐसी चीज़ है) पस लोगों को खुदा के इस इनाम और रहमत पर खुश होना चाहिए। वह इस (दुनिया) से कहीं बेहतर है, जिसको वे जमा कर रहे हैं।⁶ (58)

(पृष्ठ 384 का शेष)

‘कुल ला अम्लिकु’ और न तुम्हारे लिए मस्तहत है क्योंकि फ़ौरन आ जाने में ईमान की मोहलत भी ख़त्म हो जाएगी, जैसे कि अल्लाह तआला ने फरमाया ‘मा ज़ा यस्तअज़िलु.....’।

5. चूँकि वह दिन लम्बा भी होगा और सख़्त भी होगा, इसलिए दुनिया और बरज़ख़ (यानी मौत और कियामत के दरमियान के ज़माने) की मुदत और तकलीफ़ सब भूलकर ऐसा समझेंगे कि वह ज़माना बहुत जल्द गुज़र गया।

6. यानी अगर आपकी ज़िन्दगी में उनपर वह नाज़िल हो जाए। गरज़ यह कि दुनिया में सज़ा हो या न हो मगर असली मौक़े पर ज़रूर होगी।

1. वह फैसला यही है कि न मानने वालों को हमेशा के अज़ाब में मुब्तला किया जाता है।

2. पस जब अपने नफ़े व नुकसान का मालिक नहीं तो दूसरे के नफ़े व नुकसान का तू क्योंकर मालिक होगा? पस अज़ाब का लाना मेरे इख़्तियार में नहीं। (शेष तफ़सीर पृष्ठ 388 पर)

आप (उनसे) कह दीजिए कि यह तो बतलाओ कि अल्लाह ने तुम्हारे (फायदा उठाने के) लिए जो कुछ रिज़्क भेजा था, फिर तुमने (अपनी घड़त से) उसका कुछ हिस्सा हराम और कुछ हिस्सा हलाल करार दे लिया। आप (उनसे) पूछिए कि क्या तुमको खुदा ने हुक्म दिया है या (सिर्फ) अल्लाह पर (अपनी तरफ से) बोहतान ही बाँधते हो? (59) और जो लोग अल्लाह पर झूठ बोहतान बाँधते हैं, उनका कियामत के बारे में क्या गुमान है,¹ वाकई लोगों पर अल्लाह का बड़ा ही फज़्ल है,² लेकिन अक्सर (आदमी) उनमें से बेक़द्र हैं (वरना तौबा कर लेते)। (60) ❖

और आप (चाहे) किसी हाल में हों, और उन्ही हालात में से यह कि आप कहीं से कुरआन पढ़ते हों और (इसी तरह और लोग भी जितने हों) तुम जो काम करते हो हमको सबकी ख़बर रहती है, जब तुम उस काम को करना शुरू करते हो, और आपके रब (के इल्म) से कोई चीज़ ज़रूरी बराबर भी ग़ायब नहीं, न ज़मीन में और न आसमान में, (बल्कि सब उसके इल्म में हाज़िर हैं) और न कोई चीज़ इस (ज़िक्र हुई मिक्दार) से छोटी है और न कोई चीज़ (उससे) बड़ी है, मगर यह सब (अल्लाह तआला के इल्म में होने की वजह से) किताबे मुबीन (यानी लौहे महफूज़) में (लिखा हुआ) है। (61) याद रखो कि अल्लाह के दोस्तों पर न कोई अन्देशे (वाला वाकिआ पड़ने वाला) है और न वे (किसी मतलूब के जाते रहने पर) ग़मज़दा होते हैं।³ (62) वे (अल्लाह के दोस्त) हैं जो ईमान लाए और (गुनाहों से) परहेज़ रखते हैं।⁴ (63) उनके लिए दुनियावी ज़िन्दगी में भी और आखिरत में भी (अल्लाह तआला की तरफ से ख़ौफ़ व रंज से बचने की) खुशख़बरी है, (और) अल्लाह की बातों में (यानी वायदों में) कुछ फ़र्क नहीं (हुआ करता), यह (खुशख़बरी जो ज़िक्र हुई) बड़ी कामयाबी है। (64) और आपको उनकी बातें ग़म में न डालें, पूरी तरह ग़ल्बा (और कुदरत भी) खुदा ही के लिए (साबित) है,⁵ वह (उनकी बातें) सुनता है (और उनकी हालत) जानता है, (वह आपका बदला उनसे खुद ले लेगा)। (65) याद रखो कि जितने कुछ आसमानों में हैं और जितने ज़मीन में हैं (यानी जिन्नात, इनसान और फ़रिश्ते) ये सब अल्लाह तआला ही की (मिल्क में) हैं।⁶ और जो लोग अल्लाह तआला को छोड़कर दूसरे शरीकों की इबादत कर रहे हैं, (खुदा जाने) किस चीज़ की इत्तिबा कर रहे हैं? महज़ बे-सनद ख़्याल की पैरवी कर रहे हैं, और महज़ ख़्याली बातें कर रहे हैं। (66) वह ऐसा है जिसने तुम्हारे लिए रात बनाई ताकि तुम उसमें आराम करो, और दिन भी (इस तौर पर बनाया कि रोशन होने की वजह से) देखने-भालने का ज़रिया है। इस (के बनाने) में उन लोगों के लिए (तौहीद) की दलीलें हैं जो (ग़ौर व फ़िक्र के साथ इन मज़ामीन को)

(पृष्ठ 386 का शेष) 3. इसी तरह तुम्हारे अज़ाब का वक़्त भी तय है, उस वक़्त वह ज़ाहिर हो जाएगा।

4. यानी अज़ाब तो सख़्त चीज़ और पनाह माँगने की चीज़ है, न कि जल्दी माँगने की चीज़।

5. पस दोबारा पैदा करना उसको क्या मुश्किल है।

6. क्योंकि दुनिया का नफ़ा मामूली और फ़ानी, और कुरआन का नफ़ा बहुत ज़्यादा और बाकी है।

1. यानी जो बिल्कुल डरते नहीं, क्या यह समझते हैं कि कियामत नहीं आएगी, या आएगी मगर हमसे पूछगछ न होगी।

2. कि साथ के साथ सज़ा नहीं देता, बल्कि तौबा के लिए मोहलत दे रखी है।

3. यानी अल्लाह तआला उनको ख़ौफ़नाक और ग़मनाक हादसों से बचाता है। ख़ौफ़ से हक़ का ख़ौफ़ और ग़म से आखिरत का ग़म मुराद नहीं है, बल्कि दुनियावी ख़ौफ़ व ग़म की नफ़ी मुराद है जिसका एहतियाम दुश्मनों की मुखा़लफ़त से हो सकता है, वह कामिल मोमिनों को नहीं होता। हर वक़्त उनका अल्लाह पर एतियाम होता है। हर वाकिआ की हिक्मत का एतियाद रखते हैं, उसमें मस्लहत समझते हैं।

4. यानी ईमान और तक्वे से अल्लाह की निकटता नसीब होती है।

5. वह अपनी कुदरत से वायदे के मुताबिक़ आपकी हिफ़ाज़त करेगा।

6. उसकी हिफ़ाज़त या बदले को कोई नहीं रोक सकता, पस हर एतियार से तसल्ली रखना चाहिए।

सुनते हैं। (67) वे कहते हैं (अल्लाह की पनाह) कि अल्लाह औलाद रखता है? सुब्हानल्लाह! (कैसी सख्त बात कही) वह तो किसी का मोहताज नहीं (और सब उसके मोहताज हैं)। उसी की (मिल्क) है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है। तुम्हारे पास (सिवाय बेहूदा दावे के) इस (दावे) पर कोई दलील (भी) नहीं, (तो) क्या अल्लाह के ज़िम्मे ऐसी बात लगाते हो जिसका तुम (किसी दलील से) इल्म नहीं रखते। (68) आप कह दीजिए कि जो लोग अल्लाह तआला पर झूठ घड़ते हैं, (जैसे मुशिरक लोग) वे (कभी) कामयाब न होंगे। (69) (यह) दुनिया में (चन्द दिनों का) थोड़ा-सा ऐश है, (जो बहुत जल्द खत्म हुआ जाता है) फिर (मरकर) हमारे (ही) पास उनको आना है, फिर (आखिरत में) हम उनको उनके कुफ़्र के बदले सख्त सज़ा (का मज़ा) चखा देंगे। ▲ (70) ♦

और आप उनको नूह (अलैहिस्सलाम) का किस्सा पढ़कर सुनाइए, (जो कि उस वक़्त सामने आया था) जबकि उन्होंने अपनी कौम से फरमाया कि ऐ मेरी कौम! अगर तुमको (नसीहत व भलाई की बात कहने की हालत में) मेरा रहना और अहकामे खुदावन्दी की नसीहत करना भारी (और नागवार) मालूम होता है तो मेरा तो खुदा ही पर भरोसा है, सो तुम (मुझको नुकसान पहुँचाने के मुताल्लिक) अपनी तदबीर (जो कुछ कर सको) अपने शरीकों के साथ (यानी बुतों) के पुख्ता कर लो,¹ फिर तुम्हारी (वह) तदबीर तुम्हारी घुटन (और दिल की तंगी) का सबब न (होनी चाहिए),² फिर मेरे साथ (जो कुछ करना है) कर गुज़रो, और मुझको (बिलकुल) मोहलत न दो।³ (71) फिर भी अगर तुम मुँह ही मोड़े जाओ तो यह (समझो कि) मैंने तुमसे (इस तब्तीग पर) कोई मुआवज़ा तो नहीं माँगा, (और मैं तुमसे क्यों माँगता, क्योंकि) मेरा मुआवज़ा तो (करम के वायदे के मुताबिक) सिर्फ अल्लाह ही के ज़िम्मे है।⁴ और (चूँकि) मुझको हुक्म किया गया है कि मैं इताअत करने वालों में रहूँ (72) सो (बावजूद इस वाज़ेह नसीहत के भी) वे लोग उनको झुठलाते रहे, पस (उनपर तूफ़ान का अज़ाब मुसल्लत हुआ और) हमने (उस अज़ाब से) उनको और जो उनके साथ कश्ती में थे उनको नजात दी और उनको आबाद किया। और जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया था उनको (उस तूफ़ान में) गर्क कर दिया। सो देखना चाहिए उन लोगों का कैसा (बुरा) अन्जाम हुआ जो (अल्लाह के अज़ाब) से डराए जा चुके थे।⁵ (73) फिर उन (नूह अलैहिस्सलाम) के बाद हमने और रसूलों को उनकी कौमों की तरफ भेजा, सो वे उनके पास मोजिज़े लेकर आए (मगर) फिर (भी उनकी ज़िद और हट की यह कैफियत थी कि) जिस चीज़ को उन्होंने अव्वल (बारी में एक बार) झूठा कह दिया, यह न हुआ कि फिर उसको मान लेते, (और जैसे ये दिल के सख्त थे) हम (अल्लाह तआला) इसी तरह काफ़िरों के दिल पर बन्द लगा देते हैं। (74) फिर इन (ज़िक्र हुए) पैगम्बरों के बाद हमने मूसा (अलैहिस्सलाम) और हासून (अलैहिस्सलाम) को फिरऔन और उसके सरदारों के पास अपने मोजिज़े (लाठी और चमकता हुआ हाथ) देकर भेजा, सो उन्होंने (दावे के साथ ही उनकी तस्दीक करने से) तकबुर किया, और वे लोग अपराधों के आदी थे (इसलिए इताअत न की)। (75) फिर जब (दावे

1. यानी तुम और तुम्हारे माबूद सारे मिलकर मुझको नुकसान पहुँचाने में अपना अरमान पूरा कर लो।

2. यानी अक्सर खुफ़िया तदबीर से तबीयत घुटा करती है। सो खुफ़िया तदबीर की ज़रूरत नहीं, जो कुछ तदबीर करो दिल खोलकर ऐलानिया करो। मेरा न लिहाज़-पास करो और न मेरे चले जाने और निकल जाने का अन्देशा करो, क्योंकि इतने आदमियों के पहरे में से एक आदमी का निकल जाना भी नामुम्किन है, फिर खुफ़िया रखने की क्या ज़रूरत है।

3. हासिल यह कि मैं तुम्हारी इन बातों से न डरता हूँ और न तब्तीग से रुक सकता हूँ।

4. गुज़र न तुमसे डरता हूँ न कुछ इच्छा रखता हूँ।

5. यानी बेख़बरी में हलाक नहीं किए गए, पहले कह दिया, समझा दिया। न माना, सज़ा पाई।

के बाद) उनको हमारे पास से (मूसा अलैहिस्सलाम की नुबुव्वत पर) सही दलील पहुँची¹ तो वे लोग कहने लगे कि यकीनन यह खुला जादू है। (76) मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फ़रमाया: क्या तुम इस सही दलील के बारे में जबकि वह तुम्हारे पास पहुँची, (ऐसी बात) कहते हो (कि यह जादू है)? क्या यह जादू है? और (हालाँकि) जादूगर कामयाब नहीं हुआ करते? (77) वे लोग कहने लगे क्या तुम हमारे पास इसलिए आए हो कि हमको उस तरीके से हटा दो जिसपर हमने अपने बुजुर्गों को देखा है, और (इसलिए आए हो कि) तुम दोनों को दुनिया में रियासत (और सरदारी) मिल जाए, और (तुम अच्छी तरह समझ लो) हम तुम दोनों को कभी न मानेंगे। (78) और फिरऔन ने (अपने सरदारों से) कहा कि मेरे पास तमाम माहिर जादूगरों को (जो हमारे मुल्क में हैं) हाज़िर करो। (79) (चुनाँचे जमा किए गए) सो जब वे आए (और मूसा अलैहिस्सलाम से मुकाबला हुआ तो) मूसा ने उनसे फ़रमाया कि डालो जो कुछ तुमको (मैदान में) डालना है। (80) सो जब उन्होंने (अपना जादू का सामान) डाला तो मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फ़रमाया कि जो कुछ तुम (बनाकर) लाए हो, जादू (यह) है,² यकीनी बात है कि अल्लाह तआला इस (जादू) को अभी दरहम-बरहम “यानी उलट-पलट” किए देता है, (क्योंकि) अल्लाह तआला ऐसे फ़सादियों का काम बनने नहीं देता।³ (81) और अल्लाह तआला हक़ (यानी सही दलील और मोज़िज़े) को अपने वायदों के मुवाफ़िक़ साबित कर देता है, चाहे मुज़्रिम (और काफ़िर) लोग (कैसा ही) नागवार समझें। (82) ♦

पस (जब लाठी का मोज़िज़ा ज़ाहिर हुआ तो) मूसा अलैहिस्सलाम पर (शुरू-शुरू में) उनकी कौम में से सिर्फ़ थोड़े-से आदमी ईमान लाए, वे भी फिरऔन से और अपने हाकिमों से डरते-डरते, कि कहीं (ज़ाहिर होने पर) उनको तकलीफ़ (न) पहुँचाये, और (हकीकत में उनका डरना बेजा न था) क्योंकि फिरऔन उस मुल्क में जोर (हुकूमत) रखता था, और यह (बात भी थी) कि वह (इन्साफ़) की हद से बाहर हो जाता था। (83) और मूसा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि ऐ मेरी कौम! अगर तुम (सच्चे दिल से) अल्लाह पर ईमान रखते हो तो (सोच-विचार मत करो बल्कि) उसी पर तवक्कुल करो, अगर तुम (उसकी) इताअत करने वाले हो।⁴ (84) उन्होंने (जवाब में) अर्ज़ किया कि हमने अल्लाह ही पर तवक्कुल किया। ऐ हमारे परवर्दिगार! हमको इन ज़ालिमों की मशक़ का तख़्ता “यानी निशाना” न बना। (85) और हमको अपनी रहमत के सदके में इन काफ़िरों से नजात दे।⁵ (86) और हमने मूसा (अलैहिस्सलाम) और उनके भाई (हारून अलैहिस्सलाम) के पास वह्य भेजी कि तुम दोनों अपने उन लोगों के लिए (बदस्तूर) मिस्र में घर बरकरार रखो, (और नमाज़ के वक़्त में) तुम सब अपने उन्हीं घरों को नमाज़ पढ़ने की जगह करार दे लो। और (यह ज़रूरी है कि) नमाज़ के पाबन्द रहो। और (ऐ मूसा!) आप मुसलमानों को खुशख़बरी दे दें।⁶ (87) और मूसा ने (दुआ में) अर्ज़ किया कि ऐ हमारे रब! (हमको यह बात मालूम हो गई कि) आपने फिरऔन को और उसके सरदारों को दुनियावी

1. मुराद इससे मोज़िज़ा है।

2. यानी जादूगर जबकि नुबुव्वत का दावा करें तो ख़िलाफ़े आदत उमूर के इज़हार में कामयाब नहीं हुआ करते।

3. न वह जिसको फिरऔन वाले जादू कहते हैं।

4. यानी ऐसे फ़सादियों का काम बनने नहीं देता जो मोज़िज़े के साथ मुकाबले से पेश आएँ।

5. तवक्कुल (यानी भरोसे) के लिए यह लाज़िम है कि मख़्लूक पर नज़र न रहे, न लालच के एतबार से और न डरकर। पस यह दुआ के ख़िलाफ़ नहीं।

6. यानी जब तक हमपर उनकी हुकूमत मुक़दर है जुल्म न करने पाएँ, और फिर उनकी हुकूमत ही के दायरे से निकाल दीजिए।

7. कि यह मुसीबत ख़त्म हो जाएगी।

ज़िन्दगी में ठाट-बाट के सामान और तरह-तरह के माल ऐ हमारे रब! इसी वास्ते दिए हैं कि वे (लोगों को) आपकी राह से गुमराह करें। ऐ हमारे रब! उनके मालों को तबाह व बर्बाद कर दीजिए और उनके दिलों को (ज़्यादा) सख्त कर दीजिए (जिससे हलाकत के हकदार हो जाएँ) सो ये ईमान न लाने पाएँ यहाँ तक कि दर्दनाक अज़ाब (के हकदार होकर उस) को देख लें। (88) (हक़ तआला ने) फ़रमाया कि तुम दोनों की दुआ कबूल कर ली गई, सो तुम अपने मन्सबी काम (यानी तब्लीग़ पर) साबित कदम रहो, और उन लोगों की राह न चलना जिनको इल्म नहीं।¹ (89) और हमने बनी इसराईल को (उस) दरिया से पार कर दिया,² फिर उनके पीछे-पीछे फिरऔन अपने लश्कर के साथ जुल्म और ज़्यादती के इरादे से (दरिया में) चला, यहाँ तक कि जब डूबने लगा (और अज़ाब के फ़रिश्ते नज़र आने लगे) तो (घबराकर) कहने लगा कि मैं ईमान लाता हूँ कि सिवाय उसके कि जिसपर बनी इसराईल ईमान लाए हैं, कोई माबूद नहीं, और मैं मुसलमानों में दाख़िल होता हूँ। (90) (जवाब दिया गया कि) अब (ईमान लाता है) और (अज़ाब के देखने से) पहले सरकशी करता रहा, और फ़सादियों में दाख़िल रहा। अब नजात चाहता है। (91) सो (जो तू नजात चाहता है उसके बजाय) आज हम तेरे बदन (यानी तेरी लाश को, पानी में नीचे बैठ जाने से) नजात देंगे, ताकि तू उनके लिए (इबरत का) निशान हो जो तेरे बाद (मौजूद) हैं।³ और हकीक़त यह है कि (फिर भी) बहुत-से आदमी हमारी (ऐसी-ऐसी) निशानियों से (यानी इबरतों से) गाफ़िल हैं, (और अल्लाह के अहक़ाम की मुख़ालफ़त से नहीं डरते)। (92) ♦

और हमने (फ़िरऔन को गर्क करने के बाद) बनी इसराईल को बहुत अच्छा ठिकाना रहने को दिया,⁴ और हमने उनको नफ़ीस और पाक चीज़ें (बागात और चश्मों वगैरह से) खाने को दी। सो उन्होंने (जहालत की वजह से) इख़िलाफ़ नहीं किया, यहाँ तक कि उनके पास (अहक़ाम का) इल्म पहुँच गया। यकीनी बात है कि आपका रब उन (इख़िलाफ़ करने वालों) के दरमियान कियामत के दिन उन मामलात में (अमली) फैसला करेगा जिनमें वे इख़िलाफ़ किया करते थे। (93) फिर अगर मान लीजिए आप इस (किताब) की तरफ़ से शक़ (व शुब्हा) में हों जिसको हमने आपके पास भेजा है, तो आप उन लोगों से पूछ लीजिए जो आपसे पहले (की) किताबों को पढ़ते हैं, (मुराद तौरात व इन्जील हैं, तो वे कुरआन को सच बतलाएँगे)। बेशक आपके पास आपके रब की तरफ़ से सच्ची किताब आई है, आप हरगिज़ शक़ करने वालों में न हों। (94) और न (शक़ करने वालों से बढ़कर) उन लोगों में से हों जिन्होंने अल्लाह तआला की आयतों को झुठलाया, कहीं आप (अल्लाह अपनी पनाह में रखे) तबाह न हो जाएँ।⁵ (95) यकीनन जिन लोगों के हक़ में आपके रब की (यह

1. यानी जिनको हमारे वायदे के सच्चे होने का, या देरी में हिक्मत होने का, या तब्लीग़ के ज़रूरी होने का इल्म नहीं।
2. जब अल्लाह तआला ने फिरऔन को हलाक करना चाहा तो मूसा अलैहिस्सलाम को हुक्म दिया कि बनी इसराईल को मिस्र से बाहर निकाल ले जाइए। चुनाँचे वह सबको लेकर चले और रास्ते में दरिया-ए-शोर (यानी नमकीन पानी का दरिया) रुकावट बना और मूसा अलैहिस्सलाम की दुआ से उसमें रास्ता पैदा हो गया।
3. उसकी लाश के बचा लेने को और पानी पर तैर आने को नजात फ़रमाना मज़ाक़ उड़ाने के तौर पर उसको मायूस कर देने के लिए है कि ऐसी नजात होगी जो तेरे लिए ज़्यादा रुस्वाई का सबब है।
4. 'मुबव्व-अ सिद्किन्' की तफ़सीर 'मिस्र' व 'शाम' के साथ दुर्रें मन्सूर में मन्कूल है।
5. ज़ाहिर में ख़िताब आपको है मगर ख़िताब का मक़सद दूसरों को है। और आयत के नाज़िल होने के वक़्त आपने ख़िताब में अपने को मक़सूद न होने को इन लफ़्ज़ों से ज़ाहिर फ़रमा दिया कि 'न मैं किसी शक़ में हूँ और न सवाल करता हूँ'।

तकदीरी) बात (कि ईमान न लाएँगे) साबित हो चुकी है वे (कभी) ईमान न लाएँगे। (96) चाहे उनके पास (हक के सबूत की) तमाम दलीलें पहुँच जाएँ, जब तक कि दर्दनाक अज़ाब को न देख लें, (मगर उस वक्त ईमान फ़ायदेमन्द नहीं होता)। (97) चुनाँचे (अज़ाब शुदा बस्तियों में से) कोई बस्ती ईमान न लाई, कि ईमान लाना उसको फ़ायदेमन्द होता, हाँ मगर यूनस (अलैहिस्सलाम) की कौम। जब वे ईमान ले आए तो हमने रुस्वाई के अज़ाब को दुनियावी ज़िन्दगी में उनपर से टाल दिया, और उनको एक ख़ास वक्त (यानी मौत के वक्त) तक (ख़ैर व ख़ूबी के साथ) ऐश “यानी चैन व सुकून” दिया।¹ (98) और उन कौमों और बस्तियों की क्या तख़्सीस है?) अगर आपका रब चाहता तो तमाम रू-ए-ज़मीन के लोग सबके सब ईमान ले आते,² सो (जब यह बात है तो) क्या आप लोगों पर ज़बरदस्ती कर सकते हैं जिससे वे ईमान ही ले आएँ। (99) हालाँकि किसी शख्स का ईमान बिना खुदा के हुक्म (यानी उसकी मरज़ी) के मुम्किन नहीं, और वह (यानी अल्लाह तआला) बेअक्ल लोगों पर (कुफ़ की) गंदगी डाल देता है। आप कह दीजिए कि तुम गौर करो। (100) (और देखो) कि क्या-क्या चीज़ें हैं आसमानों और ज़मीन में³ और जो लोग (दुश्मनी के तौर पर) ईमान नहीं लाते, उनको दलीलें और धमकियाँ कुछ फ़ायदा नहीं पहुँचातीं, (यह बयान हुआ उनके बैर का), (101) सो वे लोग (जैसा कि उनके हाल से ज़ाहिर है) सिर्फ़ उन लोगों के जैसे वाकिआत का इन्तिज़ार कर रहे हैं जो उनसे पहले गुज़र चुके हैं।⁴ आप फ़रमा दीजिए कि अच्छा तो तुम (तो उसके) इन्तिज़ार में रहो, मैं भी तुम्हारे साथ (उसके) इन्तिज़ार करने वालों में हूँ। (102) फिर हम (उस अज़ाब से) अपने पैग़म्बरों को और ईमान वालों को बचा लेते थे, (जिस तरह हमने उन मोमिनों को नजात दी थी) हम इसी तरह सब ईमान वालों को नजात दिया करते हैं। यह (वायदे के मुताबिक़) हमारे ज़िम्मे है।⁵ (103) ♦

आप कह दीजिए कि ऐ लोगो! अगर तुम मेरे दीन की तरफ़ से शक (और शुब्हा) में हो तो मैं उन माबूदों की इबादत नहीं करता खुदा के अलावा जिनकी तुम इबादत करते हो, लेकिन हाँ उस माबूद की इबादत करता हूँ जो तुम (यानी तुम्हारी जान) को कब्ज़ करता है, और मुझको (अल्लाह की तरफ़ से) यह हुक्म हुआ है कि मैं ईमान लाने वालों में से हूँ। (104) और यह कि अपने आपको इस (ज़िक्र हुए) दीन (और ख़ालिस तौहीद) की तरफ़ इस तरह मुतवज्जह रखना कि और सब तरीकों से अलग हो जाऊँ, और (मुझको यह हुक्म हुआ है कि) कभी भुशिरक मत बनना। (105) और (यह हुक्म हुआ है कि) खुदा (की तौहीद) को छोड़कर ऐसी चीज़ की इबादत मत करना जो तुझको न (इबादत करने की हालत में) कोई नफ़ा पहुँचा सके और न (इबादत छोड़ देने की हालत में) कोई नुक़सान पहुँचा सके। फिर अगर (मान लो) तुमने ऐसा किया (यानी अल्लाह के अलावा किसी और की इबादत की) तो तुम उस हालत में (अल्लाह का) हक़ ज़ाया करने वालों में

1. यूनस अलैहिस्सलाम की कौम के किस्से का खुलासा यह है कि उनके ईमान न लाने पर अल्लाह की वब के मुताबिक़ यूनस अलैहिस्सलाम ने उनको अज़ाब की ख़बर दी और खुद चले गए। जब बताए हुए वक्त पर अज़ाब के आसार शुरू हुए तो तमाम कौम ने हक़ तआला के सामने रोना और गिड़गिड़ाना शुरू किया और ईमान ले आए और वह अज़ाब टल गया।
2. मगर बाज़ हिक्मतों की वजह से यह न चाहा, इसलिए सब ईमान न लाए।
3. यानी उनमें गौर करने से तौहीद की अक्ली दलील हासिल होगी।
4. यानी बावजूद दलीलों और वईदों के जो ईमान नहीं लाते तो उनकी हालत उस शख्स के जैसी है जो ऐसे अज़ाब का मुन्तज़िर हो जो कि पहली कौमों पर आया था।
5. पस इसी तरह अगर इन काफ़िरों पर कोई मुसीबत पड़ी तो मुसलमान उससे महफूज़ रहेंगे, चाहे दुनिया में चाहे आख़िरत में।

से हो जाओगे। (106) और (मुझसे यह कहा गया है कि) अगर तुमको अल्लाह तआला कोई तकलीफ पहुँचाए तो सिवाय उसके और कोई उसका दूर करने वाला नहीं है, और अगर वह तुमको कोई राहत पहुँचाना चाहे तो उसके फज़ल का कोई हटाने वाला नहीं, (बल्कि) वह अपना फज़ल अपने बन्दों में से जिसपर चाहे मुतवज्जह फरमाए, और वह बड़ी मग़्फ़िरत वाले (और) रहमत वाले हैं।¹ (107) आप (यह भी) कह दीजिए² कि ऐ लोगो! तुम्हारे पास (दीने) हक़ तुम्हारे रब की तरफ़ से (दलील के साथ) पहुँच चुका है, सो (उसके पहुँच जाने के बाद) जो शख्स सही रास्ते पर आ जाएगा सो वह अपने (नफ़े के) वास्ते सही रास्ते पर आएगा। और जो शख्स (अब भी) बेराह रहेगा तो उसका बेराह होना (यानी उसका वबाल भी) उसी पर पड़ेगा, और मैं तुमपर (कुछ बतौर जिम्मेदारी के) मुसल्लत नहीं किया गया। (108) और आप उसकी पैरवी करते रहिए जो कुछ आपके पास वहा भेजी जाती है, और (उनके कुफ़ व तकलीफ़ पहुँचाने पर) सब्र कीजिए, यहाँ तक कि अल्लाह (उनका) फैसला कर देंगे, और वह सब फैसला करने वालों में अच्छे (फैसला करने वाले) हैं। (109) ♦

11 सूर: हूद 52

सूर: हूद मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 123 आयतें और 10 रुकूअ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

अलिफ़-लाम-रा, (के मायने तो अल्लाह को मालूम हैं)। यह (कुरआन) एक ऐसी किताब है कि इसकी आयतें (दलीलों से) मज़बूत की गई हैं, (फिर उसी के साथ) साफ़-साफ़ (भी) बयान की गई हैं। (वह किताब ऐसी है कि) एक बाख़बर हकीम (यानी अल्लाह तआला) की तरफ़ से (है)। (1) यह कि अल्लाह तआला के सिवा किसी की इबादत मत करो, मैं तुमको अल्लाह की तरफ़ से (ईमान न लाने पर अज़ाब से) डराने वाला, और (ईमान लाने पर सवाब की) खुशख़बरी देने वाला हूँ। (2) और यह (भी है) कि तुम लोग अपने गुनाह (शिक़ व कुफ़्र वगैरह) अपने रब से माफ़ कराओ, फिर (ईमान लाकर) उसकी तरफ़ (इबादत से) मुतवज्जह रहो, वह तुमको मुक़रर वक़्त (यानी मौत के वक़्त) तक (दुनिया में) खुशऐशी “यानी अच्छी पुरसुकून ज़िन्दगी” देगा,³ और (आख़िरत में) हर ज़्यादा अमल करने वाले को ज़्यादा सवाब देगा। और अगर (ईमान लाने से) तुम लोग मुँह (ही) मोड़ते रहे तो मुझको (उस सूरत में) तुम्हारे लिए एक बड़े दिन के अज़ाब का अन्देशा है। (3) तुम (सब) को अल्लाह ही के पास जाना है, और वह हर चीज़ पर पूरी कुदरत रखता है। (4) याद रखो कि वे लोग अपने सीनों को दोहरा किए देते हैं, (और ऊपर से कपड़ा लपेट लेते हैं) ताकि (अपनी बातें) उससे (यानी खुदा से) छुपा सकें।⁴ याद रखो कि वे लोग जिस वक़्त (दोहरे होकर) अपने कपड़े (अपने ऊपर) लपेटते हैं, वह (उस वक़्त भी) सब जानता है, जो कुछ चुपके-चुपके (बातें) करते हैं और जो कुछ (बातें) वे ज़ाहिर करते हैं, (क्योंकि) यकीनन वह (तो) दिलों के अन्दर की बातें जानता है। (5)

1. खुलासा यह कि मेरा दीन तो यह है जिसमें किसी को शक न होना चाहिए। और कुफ़्रार इसके बावजूद कि इनकारी थे फिर शक क्यों फरमाया? इसमें इशारा इस तरफ़ है कि इस दीन में तो शक भी न होना चाहिए, कहाँ यह कि इनकार और झुठलाना।

2. मतलब यह कि आप अपने ज़ाती और सुपुर्द किए हुए काम में लगे रहिए, उनकी फ़िक्र न कीजिए।

3. ‘खुश-ऐशी’ से मुराद वह है जिसको ‘आतिना फ़िदुन्या ह-स-नतन्’ और ‘लनुथियन्नहू हयातन् तथ्यब-तन्’ में ज़िक्र फरमाया है।

4. यानी इस्लाम और मुसलमानों के खिलाफ़ जो बातें करते हैं तो इस अन्दाज़ से करते हैं कि किसी को खबर न हो जाए। और जिसको पतिफ़ाद होगा कि खुदा को ज़रूर खबर होती है और आपका साहिबे-वहा (वहब वाला) होना दलीलों से साबित है, तो वह छुपाने की यह तदबीर कभी न करेगा। पस यह तदबीर करना गोया कि इसपर दलालत करता है कि अल्लाह से पोशीदा रहने की कोशिश की जा रही है।

बारहवाँ पार: व मा मिन् दाब्बतिन्

सूर: हूद (आयत 6 से 123)

और कोई (रिज़्क खाने वाला) जानवर रू-ए-ज़मीन पर चलने वाला ऐसा नहीं कि उसकी रोज़ी अल्लाह तआला के ज़िम्मे न हो, और वह हर एक की ज़्यादा रहने की जगह को और चन्द दिन रहने की जगह को जानता है। सब चीज़ें किताबे मुबीन (यानी लौहे महफूज़) में (भी दर्ज और मुकर्रर) हैं। (6) और वह (अल्लाह) ऐसा है कि सब आसमान और ज़मीन को छह दिन (की मिकदार) में पैदा किया, और (उस वक़्त) उसका अर्श पानी पर था, ताकि तुमको आजमाए कि (देखें) तुममें अच्छा अमल करने वाला कौन है।¹ और अगर आप (लोगों से) कहते हैं कि यकीनन तुम लोग मरने के बाद (कियामत के दिन दोबारा) ज़िन्दा किए जाओगे तो (उनमें) जो लोग काफ़िर हैं वे (कुरआन के बारे में, जिसमें कियामत में ज़िन्दा होकर उठने की ख़बर है) कहते हैं कि यह तो बिलकुल खुला जादू है।² (7) और अगर थोड़े दिनों तक (मुराद दुनियावी ज़िन्दगी है) हम उनसे (वायदा किए गए) अज़ाब को मुल्तवी “यानी स्थगित” रखते हैं, (कि इसमें हिक्मतें हैं) तो (बतौर इनकार व मज़ाक उड़ाने के) कहने लगते हैं कि उस (अज़ाब) को कौन-सी चीज़ रोक रही है?³ याद रखो जिस दिन (मुकर्ररा वक़्त पर) वह (अज़ाब) उनपर आ पड़ेगा तो फिर (किसी के) टाले न टलेगा, और जिस (अज़ाब) के साथ यह हँसी-ठट्टा कर रहे थे वह उनको आ घरेगा।⁴ (8) ♦

और अगर हम इनसान को अपनी मेहरबानी का मज़ा चखाकर उससे छीन लेते हैं तो वह नाउम्मीद और नाशुक्र हो जाता है। (9) और अगर उसको किसी तकलीफ़ के बाद जो कि उसपर आ पड़ी हो किसी नेमत का मज़ा चखा दें, तो कहने लगता है कि मेरा सब दुख-दर्द रुख़्सत हुआ, (अब कभी न होगा) पस वह इतराने लगता है, शैखी बघारने लगता है। (10) मगर जो लोग मुस्तक़िल मिज़ाज हैं और नेक काम करते हैं,⁵ (वे ऐसे नहीं होते)⁶ ऐसे लोगों के लिए बड़ी मग़्फ़िरत और बड़ा अज़्र है।⁷ (11) सो शायद आप (तंग होकर) उन (अहक़ाम) में से जो कि आपके पास वहब के ज़रिये से भेजे जाते हैं, बाज़ को (कि वह तब्सीग़ है) छोड़ देना चाहते हैं,⁸ और आपका दिल इस बात से तंग होता है कि वे कहते हैं कि (अगर यह नबी हैं तो) इनपर कोई ख़ज़ाना क्यों नाज़िल नहीं हुआ, या उनके साथ कोई फ़रिश्ता (जो हमसे भी बात-चीत करता) क्यों नहीं आया?⁹ आप तो (उन कुफ़्फ़ार के एतिबार से) सिर्फ़ डराने वाले हैं,¹⁰ और हर चीज़ पर पूरा इख़्तियार रखने वाला (तो) अल्लाह ही है।¹¹ (12) क्या (उसके मुताल्लिक़ यूँ) कहते हैं (अल्लाह अपनी पनाह में रखे) कि आपने उसको (अपनी तरफ़ से) खुद बना लिया है? आप (जवाब में) फ़रमा दीजिए कि अगर (यह मेरा बनाया हुआ है) तो (अच्छा) तुम भी इस जैसी दस सूरतें (जो तुम्हारी) बनाई हुई (हों) ले आओ, और (अपनी मदद

1. मतलब यह कि ज़मीन व आसमान को पैदा किया। तुम्हारी ज़रूरतें और फ़ायदे उसमें पैदा किए, ताकि तुम उनको देखकर तौहीद पर दलील पकड़ो, और उनसे फ़ायदा उठाकर नेमत देने वाले का शुक्र और ख़िदमत यानी नेक अमल बजा लाओ। सो बाज़ ने ऐसा किया, बाज़ ने न किया।

2. जादू इसलिए कहते हैं कि वह बातिल होता है मगर असर करने वाला, इसी तरह ‘अल्लाह अपनी पनाह में रखे’ कुरआन को बातिल समझते थे, लेकिन इसके मज़ामीन का असरदार होना भी ख़ूब देखते थे। इस मजमूए पर यह हुक्म किया। अल्लाह हमें अपनी पनाह में रखे।

3. यानी अगर अज़ाब कोई चीज़ होती तो अब तक हो चुकता, जब नहीं हुआ तो मालूम हुआ कि कुछ भी नहीं।

4. मतलब यह कि बावजूद हक़दार होने के यह देरी इसलिए है कि बाज़ हिक्मतों से उसका वक़्त तय है, फिर उस वक़्त सारी कसर निकल जाएगी।

5. मुराद इससे मोमिन लोग हैं। (शेष तफ़सीर पृष्ठ 402 पर)

के लिए) जिन-जिन को अल्लाह के अलावा बुला सको बुला लो, अगर तुम सच्चे हो। (13) फिर ये (काफिर लोग) अगर तुम लोगों का कहना (कि इसके जैसा बना लाओ) न कर सकें तो तुम (उनसे कह दो कि अब तो) यकीन कर लो कि (यह कुरआन) अल्लाह ही के इल्म (और कुदरत) से उतरा है, और यह भी (यकीन कर लो) कि अल्लाह तआला के सिवा कोई माबूद नहीं।¹ तो फिर अब भी मुसलमान होते हो (या नहीं)? (14) जो शख्स (अपने अच्छे आमाल से) महज़ दुनियावी जिन्दगी (के फायदों) और इसकी रौनक (को हासिल करना) चाहता है, तो हम उन लोगों के (उन) आमाल (का बदला) उनको इस (दुनिया) ही में पूरे तौर से भुगता देते हैं, और उनके लिए (दुनिया) में कुछ कमी नहीं होती।² (15) ये ऐसे लोग हैं कि उनके लिए आखिरत में सिवाय दोज़ख के और कुछ (सवाब वगैरह) नहीं, और उन्होंने इस (दुनिया) में जो कुछ किया था वह (आखिरत में सब-का-सब) नाकारा (साबित) होगा, और (हकीकत में तो) जो कुछ कर रहे हैं वह अब भी बेअसर है।³ (16) क्या (कुरआन का इनकार करने वाला ऐसे शख्स की बराबरी कर सकता है) जो कुरआन पर (कायम हो?) जो कि उसके रब की तरफ से (आया) है, और इस (कुरआन) के साथ एक गवाह तो इसी में (मौजूद) है,⁴ और एक इससे पहले (यानी) मूसा (अलैहिस्सलाम) की किताब है, जो (अहकाम बतलाने के एतिबार से) इमाम है और रहमत है।⁵ ऐसे लोग इस (कुरआन) पर ईमान रखते हैं। और (दूसरे) फ़िर्कों में से जो शख्स इस (कुरआन) का इनकार करेगा तो दोज़ख उसके वायदे की जगह है, (काफिर का यही हाल है) सो (ऐ मुखातब!) तुम कुरआन की तरफ से शक में मत पड़ना, इसमें कोई शक व शुब्हा नहीं कि वह सच्ची (किताब) है, तुम्हारे रब के पास से (आई है) लेकिन (बावजूद इन दलीलों के ग़ज़ब है कि) बहुत-से आदमी ईमान नहीं लाते। (17) और ऐसे शख्स से ज़्यादा कौन ज़ालिम है जो अल्लाह तआला पर झूठ बाँधे?⁶ ऐसे लोग (कियामत के दिन) अपने रब के सामने पेश किए जाएंगे और (आमाल के) गवाह (फरिश्ते सबके सामने यूँ) कहेंगे कि ये वे लोग हैं जिन्होंने अपने रब के मुताल्लिक झूठी बातें लगाई थीं, (सब) सुन लो कि ऐसे ज़ालिमों पर खुदा की (ज़्यादा) लानत है। (18) जो कि (अपने कुफ़्र व जुल्म के साथ) दूसरों को भी खुदा की राह (यानी दीन) से रोकते थे, और उस (राह) में टेढ़ (और शुब्हात) निकालने की तलाश (और फ़िक्क) में रहा करते थे, (ताकि दूसरों को गुमराह करें) और वे आखिरत के भी इनकारी थे। (19) ये लोग (तमाम) ज़मीन (के तख़्ते) पर (भी) खुदा तआला को आजिज़ नहीं कर सकते थे, और न उनका खुदा के सिवा कोई मददगार हुआ, (कि गिरफ़्तारी के बाद छुड़ा लेता), ऐसों को (औरों से) दोगुनी सज़ा होगी,⁷ ये लोग न सुन सकते थे और न (हद से बढ़ी हुई दुश्मनी की वजह से राहे हक़ को) देखते थे। (20) ये वे लोग हैं जो अपने आपको

(पृष्ठ 400 का शेष)

6. वे नेमत के ख़त्म हो जाने के वक़्त सब्र से काम लेते हैं और नेमत के देने के वक़्त शुक्र व फ़रमाँबर्दारी बजा लाते हैं जो कि नेक आमाल का हासिल है।

7. ख़ुलासा यह कि मोमिनों के अलावा अक्सर आदमी ऐसे ही हैं कि ज़रा-सी देर में निडर हो जाएँ, ज़रा-सी देर में नाउम्मीद हो जाएँ। इसलिए ये लोग अज़ाब में देरी होने के सबब बेख़ौफ़ और इनकारी हो गए।

8. यानी क्या ऐसा मुम्किन है कि आप तब्लीग़ छोड़ दें, सो ज़ाहिर है कि ऐसा इरादा तो आप कर नहीं सकते, फिर तंगदिल होने से क्या फ़ायदा।

9. सो ऐसी बातों से आप तंग न हों।

10. यानी आप पैग़म्बर हैं जिसके लिए मुतलक मोजिज़े की ज़रूरत है, न कि फ़रमाइशी मोजिज़े की।

11. इन मोजिज़ों का ज़ाहिर करना आपके इख़्तियार से बाहर है, फिर उसकी फ़िक्क और इस फ़िक्क से तंगी क्यों हो, और चूँकि पैग़म्बर के लिए मुतलक मोजिज़े की ज़रूरत है और आपका बड़ा मोजिज़ा कुरआन है, तो इसको न मानने की क्या वजह?

1. क्योंकि माबूद, माबूद होने की सिफ़तों में का़मिल होता है। फिर अगर कोई और होता तो उसको कुदरत भी पूरी होती और उस कुदरत से वह तुम लोगों की मदद करता कि तुम उसका बदल ले आते, लेकिन जब तुम इससे आजिज़ हो तो (शेष तफ़सीर पृष्ठ 404 पर)

बर्बाद कर बैठे, और जो (माबूद) उन्होंने घड़ रखे थे (आज) उनसे सब गायब (और गुम) हो गए, (कोई भी तो काम न आया)। (21) पस लाज़िमी बात है कि आखिरत में ज़्यादा ख़सारा “यानी घाटा” पाने वाले यही लोग होंगे। (22) बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे-अच्छे काम किए और दिल से अपने रब की तरफ़ झुके,² ऐसे लोग जन्नत वाले हैं, और वे उसमें हमेशा रहा करेंगे।³ (23) दोनों फ़रीक़ (जिनका ज़िक्र हुआ यानी मोमिन व काफ़िर) की हालत ऐसी है जैसे एक शख्स हो अन्धा भी और बहरा भी, और एक शख्स हो कि देखता भी हो और सुनता भी हो, (जिसको समझना बहुत आसान है)। क्या ये दोनों शख्स हालत में बराबर हैं?⁴ क्या तुम (इस फ़र्क़ को) समझते नहीं?⁵ (24) ♦

और हमने नूह (अलैहिस्सलाम) को उनकी कौम के पास रसूल बनाकर (यह पैग़ाम देकर) भेजा कि तुम अल्लाह के सिवा किसी और की इबादत मत करना। (25) मैं तुमको (अल्लाह के अलावा किसी और की इबादत करने की सूरत में) साफ़-साफ़ डराता हूँ, मैं तुम्हारे हक़ में एक बड़े तकलीफ़ देने वाले दिन के अज़ाब का अन्देशा करता हूँ। (26) सो उनकी कौम में जो काफ़िर सरदार थे, वे (जवाब में) कहने लगे कि हम तो तुमको अपने ही जैसा आदमी देखते हैं, और तुम्हारी पैरवी उन्हीं लोगों ने की है जो हममें बिल्कुल कम दर्जे के और हकीर हैं, (जिनकी अक्ल अक्सर कम होती है, फिर वह पैरवी भी महज़) सरसरी राय से (हुई है) और हम तुम लोगों में (यानी तुममें और मुसलमानों में) कोई बात अपने से ज़्यादा भी नहीं पाते, बल्कि हम तुमको (बिल्कुल) झूठा समझते हैं। (27) (हज़रत नूह ने) फ़रमाया कि ऐ मेरी कौम! भला यह तो बतलाओ कि अगर मैं अपने रब की जानिब से दलील पर (कायम) हूँ, (जिससे मेरी नुबुव्वत साबित होती है) और उसने मुझको अपने पास से रहमत (यानी नुबुव्वत) अता फ़रमाई हो, फिर वह (नुबुव्वत या उसकी हुज्जत) तुमको न सूझती हो, तो (मैं क्या करूँ, मजबूर हूँ) क्या हम इस (दावे या दलील) को तुम्हारे गले मढ़ दें, और तुम उससे नफ़रत किए चले जाओ।⁶ (28) और (इतनी बात और भी फ़रमाई कि) ऐ मेरी कौम! मैं तुमसे इस (तब्लीग़) पर कुछ माल नहीं माँगता, मेरा मुआवज़ा तो सिर्फ़ अल्लाह ही के ज़िम्मे है, और मैं तो इन ईमान वालों को निकालता नहीं (क्योंकि) ये लोग अपने रब के पास (इज़्ज़त व मक़बूलियत के साथ) जाने वाले हैं, लेकिन वाकई मैं तुम लोगों को देखता हूँ कि (ख़्वाह-मख़्वाह) की जहालत कर रहे हो, (और बेढंगी बातें कर रहे हो)। (29) और ऐ मेरी कौम! (मान लो) अगर मैं उनको निकाल भी दूँ तो (यह बतलाओ) मुझको खुदा की पकड़ से कौन बचा लेगा। क्या तुम इतनी बात भी नहीं समझते?⁷ (30) और मैं तुमसे यह नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह के (तमाम) ख़ज़ाने हैं, और न मैं (यह कहता हूँ कि मैं) तमाम ग़ैब की बातें जानता हूँ, और न यह कहता हूँ कि मैं फ़रिश्ता हूँ। और जो लोग तुम्हारी निगाहों में हकीर हों, मैं उनके मुताल्लिक़ (तुम्हारी तरह) यह नहीं कह सकता कि अल्लाह हरगिज़ उनको सवाब न देगा, उनके दिल में जो कुछ हो उसको अल्लाह ही ख़ूब जानता है, मैं तो (अगर ऐसी बात कह दूँ तो) उस सूरत में सितम ही कर दूँ।⁸ (31) वे लोग कहने लगे कि ऐ नूह! तुम

(पृष्ठ 402 का शेष)

तौहीद और रिसालत दोनों साबित हो गई।

2. यानी दुनिया ही में उन आमाल के बदले में उनको नेकनामी, सेहत, ज़िन्दगी की फ़रागत, माल व औलाद की ज़्यादती वगैरह देदी जाती है।
3. इस आयत का यह मतलब नहीं कि कुपफ़ार की नीयत दुनिया के अलावा कुछ नहीं होती, बल्कि उनमें जो ऐसे होते हैं कि उनकी नीयत सिवाय दुनिया के कुछ भी न हो, इस आयत में उनका बयान है।
4. यानी उसका आजिज़ कर देने वाला होना, जो कि अक्ली दलील है।
5. यह दलील नकली है। ग़रज़ कुरआन के सच्चा व सही होने के लिए दोनों दलीलें मौजूद हैं।
6. यानी उसकी तौहीद का, उसके रसूल की रिसालत का और उसके कलाम यानी कुरआन का इनकार करे।
7. एक अपने काफ़िर होने की, एक दूसरों को काफ़िर बनाने की कोशिश करने की।
1. यह तो अन्जाम होगा काफ़िरों का, आगे मुसलमानों का अन्जाम ज़िक्र किया गया है। (शेष तफ़सीर पृष्ठ 406 पर)

हमसे बहस कर चुके, फिर बहस भी बहुत कर चुके, सो (अब हम बहस-वहस नहीं करते) जिस चीज़ से तुम हमको धमकाया करते हो (कि अज़ाब आ जाएगा) वह हमारे सामने ले आओ, अगर तुम सच्चे हो। (32) उन्होंने फरमाया कि अल्लाह तआला उसको तुम्हारे सामने लाएगा, बशर्तेकि उसको मन्ज़ूर हो, और (उस वक़्त फिर) तुम उसको अजिज़ न कर सकोगे। (33) और मेरी ख़ैर-ख़्वाही तुम्हारे काम नहीं आ सकती, चाहे मैं तुम्हारी (कैसी ही) ख़ैर-ख़्वाही करना चाहूँ, जबकि अल्लाह ही को तुम्हारा गुमराह करना मन्ज़ूर हो,¹ वही तुम्हारा मालिक है और उसी के पास तुमको जाना है। (34) क्या ये लोग कहते हैं कि उन्होंने (यानी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने, अल्लाह अपनी पनाह में रखे) यह (कुरआन) घड़ लिया है। आप (जवाब में) फरमा दीजिए कि अगर (मान लो कि) मैंने घड़ा होगा तो मेरा (यह) जुर्म मुझपर आयद होगा और तुम मेरे जुर्म से बरी रहोगे, और मैं तुम्हारे इस जुर्म से बरी रहूँगा।² (35) ♦

और नूह (अलैहिस्सलाम) के पास वह भेजी गई कि सिवाय उनके जो (इस वक़्त तक) ईमान ला चुके हैं, और कोई (नया शख्स) तुम्हारी कौम में से ईमान न लाएगा, सो जो कुछ ये लोग (कुफ़्र, तकलीफ़ देना और हँसी मज़ाक) कर रहे हैं। (36) इसपर कुछ गुम न करो। और तुम हमारी निगरानी में और हमारे हुक्म से कश्ती तैयार कर लो,³ और मुझसे काफ़िरों के बारे में कुछ गुप्तगू मत करना, वे सब गर्क किए जाएंगे।⁴ (37) और वे कश्ती तैयार करने लगे, और जब कभी उनकी कौम के किसी गिरोह के सरदार का उनपर गुज़र होता तो उनसे हँसी करते। आप फरमाते कि अगर तुम हमपर हँसते हो तो हम तुमपर हँसते हैं, जैसा कि तुम (हमपर) हँसते हो।⁵ (38) सो अभी तुमको मालूम हुआ जाता है कि वह कौन-सा शख्स है जिसपर ऐसा अज़ाब आया चाहता है जो उसको रुस्वा कर देगा, और उसपर हमेशा का अज़ाब नाज़िल होगा। (39) यहाँ तक कि जब हमारा (अज़ाब का) हुक्म (करीब) आ पहुँचा और तन्दूर (यानी ज़मीन से पानी) उबलना शुरू हुआ, हमने (नूह से) फरमाया कि हर एक (किस्म) में से (एक-एक नर और एक-एक मादा यानी) एक जोड़ा, यानी दो अदद उसपर चढ़ा लो,⁶ और अपने घर वालों को भी, उसको छोड़कर जिसपर हुक्म नाफ़िज़ हो चुका है, और दूसरे ईमान वालों को भी (सवार कर लो) और सिवाय थोड़े से आदमियों के उनके साथ (यानी उनपर) कोई ईमान न लाया था। (40) और (नूह ने) फरमाया कि इस कश्ती में सवार हो जाओ, इसका

(पृष्ठ 404 का शेष)

2. यानी फरमाँबरदारी और आजिज़ी दिल में पैदा की।

3. यह दोनों के अन्जाम का फर्क बयान हो गया। आगे मौजूदा फर्क की मिसाल है जिसपर अन्जाम का फर्क मुरत्तब होता है।

4. यही हालत काफ़िर और मुसलमान की है कि पहला हिदायत से बहुत दूर है और दूसरा हिदायत से मौसूफ़ है। यानी हिदायत पाए हुए है।

5. यानी इसमें तरद्दुद की गुन्जाइश ही नहीं, बिल्कुल ज़ाहिर है।

6. मतलब यह कि तुम्हारा यह कहना कि जी को नहीं लगती, महज़ यह समझना है कि नुबुव्वत और बशरीयत एक जगह जमा नहीं हो सकते, जबकि तुम्हारे इस तरह का अक्कीदा रखने की तुम्हारे पास कोई दलील नहीं, और मेरे पास इन दोनों के जमा होने की दलील मौजूद है, यानी मौजिजा वगैरह, न कि किसी की पैरवी। इससे इसका जवाब भी हो गया कि उनकी इत्तिबा हुज्जत नहीं, लेकिन दलील से नतीजा निकालना ग़ौर व फ़िक्र पर मौकूफ़ है, तुम ग़ौर व फ़िक्र करते नहीं। और यह मेरे बस से बाहर है।

7. इस तक़रीर में उनके तमाम शुब्हात का जवाब हो गया, लेकिन आगे उन सब जवाबों का पूरा करने वाला हिस्सा है। यानी जब मेरी नुबुव्वत दलील से साबित है तो अव्वल तो दलील के सामने किसी चीज़ का बर्द्द होना कोई चीज़ नहीं, फिर यह कि वह बर्द्द भी नहीं, अलबत्ता अगर मैं किसी अज़ीब व ग़रीब मामले का दावा करता तो इनकार व मुहाल समझना भी कोई बर्द्द न था, अगरचे दलील के बाद वह भी सुने जाने के काबिल नहीं। अलबत्ता अगर दलील भी नागुफ़िन् मालूम होती हो तो फिर वाजिब है, लेकिन मैं तो किसी ऐसे अज़ीब मामले का दावा नहीं करता।

8. क्योंकि बेदलील दावा करना गुनाह की बात है।

1. मतलब यह कि जब तुम ही अपनी बदकिस्मती से अपने लिए नफ़ा हासिल करना और नुकसान से न बचना चाहो तो मेरे चाहने से क्या होता है। (शेष तफ़सीर पृष्ठ 408 पर)

चलना और ठहरना अल्लाह ही के नाम से है, यकीनन मेरा रब मग़ि़रत करने वाला (है), रहीम है। (41) और वह क़श्ती आपको लेकर पहाड़ जैसी लहरों में चलने लगी, और नूह ने अपने (एक सगे या सौतेले) बेटे को पुकारा, और वह अलग मक़ाम पर था,¹ कि ऐ मेरे (प्यारे) बेटे! हमारे साथ सवार हो जा और काफ़िरों के साथ मत हो।² (42) वह कहने लगा कि मैं अभी किसी पहाड़ की पनाह ले लूँगा जो मुझको पानी से बचा लेगा, (नूह ने) फ़रमाया कि आज अल्लाह के हुक्म (यानी क़हर से) कोई बचाने वाला नहीं, लेकिन जिसपर वही रहम करे, और दोनों के बीच में एक मौज़ “यानी लहर” आड़ हो गई, पस वह भी दूसरे काफ़िरों की तरह गर्क हो गया। (43) और हुक्म हो गया कि ऐ ज़मीन अपना पानी निगल जा, और ऐ आसमान थम जा, और पानी घट गया और किस्सा ख़त्म हुआ, और वह (क़श्ती) जूदी पर आ ठहरी, और कह दिया गया कि काफ़िर लोग रहमत से दूर।³ ♦ (44) और नूह ने अपने रब को पुकारा और अर्ज़ किया कि मेरा यह बेटा मेरे घर वालों में से है, और आपका वायदा बिल्कुल सच्चा है, और आप हाकिमों के हाकिम हैं।⁴ (45) (अल्लाह तआला ने) इरशाद फ़रमाया कि ऐ नूह! यह शख्स तुम्हारे घर वालों में से नहीं, यह तबाहकार है। सो मुझसे ऐसी चीज़ की दरख़्वास्त मत करो जिसकी तुमको ख़बर नहीं, मैं तुमको नसीहत करता हूँ कि तुम नादान न बन जाओ। (46) उन्होंने अर्ज़ किया कि ऐ मेरे रब! मैं इस (बात) से आपकी पनाह माँगता हूँ कि आपसे ऐसे मामले की दरख़्वास्त करूँ जिसकी मुझको ख़बर न हो, और अगर आप मेरी मग़ि़रत न फ़रमाएँगे और मुझपर रहम न फ़रमाएँगे तो मैं बिल्कुल ही तबाह हो जाऊँगा। (47) कहा गया कि ऐ नूह! उतरो हमारी तरफ़ से सलाम और बरक़तें लेकर जो तुमपर नाज़िल होंगी, और उन जमाअतों पर जो कि तुम्हारे साथ हैं, और बहुत-सी ऐसी जमाअतें भी होंगी कि उनको हम चन्द दिन की ऐश देंगे, फिर उनपर हमारी तरफ़ से सख़्त सज़ा वाक़ेअ होगी।⁵ (48) यह किस्सा ग़ैब की ख़बरों में से है जिसको हम व़ह्य के ज़रिये से आपको पहुँचाते हैं, इसको इससे पहले न आप जानते थे और न आपकी कौम,⁶ सो सब्र कीजिए, यकीनन नेक अन्जाम होना

(पृष्ठ 406 का शेष)

2. यह आखिरी दर्जे का जवाब है। और असल जवाब वह है कि इस झूठ का झूठ होना साबित कर दिया जाए, जैसा कि इसी सूर: के दूसरे रुकूअ में जवाब दिया है, कि आप कह दीजिए कि तुम इस जैसी दस सूरतें बना लाओ लेकिन जो शख्स दलील में न बहस कर सके और न तसलीम करे, अख़ीर दर्जे में यही कहा जाता है कि ख़ैर भाई जैसा मैंने किया होगा, मैं भुगतूँगा, और जैसा तुम कर रहे हो तुम भुगतोगे।

3. यानी तुम उस तूफ़ान से बचने के लिए क़श्ती तैयार कर लो, कि उसके ज़रिये से तुम और ईमान वाले महफूज़ रहोगे।

4. यानी उनके लिए यह क़तई तौर पर तजवीज़ हो चुका है तो उनकी सिफ़ारिश बेकार होगी।

5. कि अज़ाब ऐसा नज़दीक आ पहुँचा है और तुमको हँसी सूझ रही है। हम इसपर हँसते हैं।

6. हर किस्म के जानवरों में से जो कि इनसान के कारामद हैं, और पानी में ज़िन्दा नहीं रह सकते।

1. उसका नाम किनआन था, वह बावजूद तंबीह के ईमान न लाया और ईमान न लाने की वजह से क़श्ती में सवार न किया गया था।

2. यानी कुफ़्र को छोड़ दे ताकि गर्क होने से बच जाए।

3. इससे मालूम हुआ कि तूफ़ान का पानी पहाड़ से ऊँचा था, और किस्सा ख़त्म होने में सब बातें आ गईं, नूह अलैहिस्सलाम की नजात, काफ़िरों का गर्क होना और तूफ़ान का ख़त्म हो जाना। और ‘काफ़िर लोग रहमत से दूर’ शायद इसलिए फ़रमाया गया हो कि इब्रत ताज़ा हो जाए कि कुफ़्र का यह वबाल है, ताकि आइन्दा आने वाले इससे बचे रहें।

4. इस गुज़ारिश का खुलासा उसके मोमिन होने के लिए दुआ थी।

5. नूह अलैहिस्सलाम के किस्से को ख़त्म करके किस्से के फ़ायदों में से दो फ़ायदे बयान फ़रमाते हैं, अव्वल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नुबुव्वत पर दलालत करना, दूसरे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को तसल्ली देना।

6. इस एतिबार से ग़ैब था और सिवाय व़ह्य के इल्म के दूसरे सब असबाब यकीनन नापैद हैं, पस साबित हो गया कि आपको व़ह्य के ज़रिये से मालूम हुआ है, और यही नुबुव्वत है। लेकिन ये लोग नुबुव्वत के साबित होने के बाद भी आपसे मुख़ालफ़त करते हैं।

मुत्तकियों के लिए है। (49) ♦

और हमने आद की तरफ उनके भाई हूद को भेजा। उन्होंने फरमाया कि ऐ मेरी कौम! तुम अल्लाह की इबादत करो, उसके सिवा कोई तुम्हारा माबूद (होने के काबिल) नहीं, तुम (इस बुत-परस्ती के एतिकाद में) बिलकुल झूठ घड़ने वाले हो। (50) ऐ मेरी कौम! मैं तुमसे इस (तब्लीग) पर कुछ मुआवज़ा नहीं माँगता, मेरा मुआवज़ा तो सिर्फ उस (अल्लाह) के ज़िम्मे है जिसने मुझको पैदा किया, फिर क्या तुम नहीं समझते! (51) और ऐ मेरी कौम! तुम अपने गुनाह अपने रब से माफ़ कराओ, फिर उसकी तरफ़ मुतवज्जह रहो,² वह तुम पर ख़ूब बारिश बरसाएगा और तुमको और कुव्वत देकर तुम्हारी कुव्वत में तरक्की कर देगा, और मुज़िम रहकर मुँह मत फेरो। (52) उन लोगों ने जवाब दिया कि ऐ हूद! आपने हमारे सामने कोई दलील तो पेश नहीं की, और हम आपके कहने से तो अपने माबूदों को छोड़ने वाले नहीं, और हम किसी तरह आपका यकीन करने वाले नहीं। (53) हमारा कौल तो यह है कि हमारे माबूदों में से किसी ने आपको किसी ख़राबी में मुब्तला कर दिया है। (हज़रत हूद अलैहिस्सलाम ने) फरमाया कि मैं (ऐलानिया) अल्लाह को गवाह करता हूँ और तुम भी (सुन लो और) गवाह रहो कि मैं उन चीज़ों से बेज़ार हूँ जिनको तुम खुदा के सिवा शरीक करार देते हो। (54) सो तुम सब मिलकर मेरे साथ दाव-घात कर लो, फिर मुझको ज़रा भी मोहलत न दो। (55) मैंने अल्लाह पर भरोसा कर लिया है, जो मेरा भी मालिक है और तुम्हारा भी मालिक है, जितने (रू-ए-ज़मीन पर) चलने वाले हैं सबकी चोटी उसने पकड़ रखी है।³ यकीनन मेरा रब सीधे रास्ते पर है।⁴ (56) फिर अगर तुम फिरे रहोगे तो मैं तो जो पैग़ाम देकर मुझको भेजा गया है, वह तुमको पहुँचा चुका हूँ और तुम्हारी जगह मेरा रब दूसरे लोगों को (ज़मीन में आबाद कर) देगा और उसका तुम कुछ नुकसान नहीं कर रहे हो, यकीनन मेरा रब हर चीज़ की हिफ़ाज़त और देखभाल करता है। (57) और जब (अज़ाब के लिए) हमारा हुक्म पहुँचा तो हमने हूद को और जो उनके साथ ईमान-वाले थे, उनको अपनी इनायत से बचा लिया, और उनको एक सख़्त अज़ाब से बचा लिया। (58) और यह (कौम) आद थी जिन्होंने अपने रब की आयतों का इनकार किया⁵ और उसके रसूल का कहना न माना,⁶ और मुकम्मल तौर पर ऐसे लोगों के कहने पर चलते रहे जो ज़ालिम (और) ज़िदी थे। (59) और इस दुनिया में भी लानत उनके साथ-साथ रही और कियामत के दिन भी।⁷ ख़ूब सुन लो (कौमे) आद ने अपने रब के साथ कुफ़्र किया, ख़ूब सुन लो रहमत से दूरी हुई आद को जो कि हूद की कौम थी। (60) ♦

1. नुबुव्वत को सही ठहराने वाली दलील मौजूद है और नुबुव्वत के सही होने में रुकावट यानी खुद-ग़रज़ी है ही नहीं, फिर नुबुव्वत में शुब्हा करने की क्या वजह?
2. यानी नेक अमल करो।
3. यानी सब उसके कब्जे में हैं, उसके हुक्म के बिना कोई कान नहीं हिला सकता।
4. पस तुम भी इस सही रास्ते को इख़्तियार करो, ताकि मकबूल व करीबी हो जाओ।
5. यानी दलाइल और अहक़ाम का इनकार किया।
6. यह जो फरमाया कि आद ने रसूलों का कहना नहीं माना, हालाँकि उनके पास सिर्फ़ हूद अलैहिस्सलाम का तशरीफ़ लाना साबित है। वजह इसकी यह है कि पैग़म्बर तौहीद के मसल में सब मुत्तफ़िक़ हैं। जब हूद अलैहिस्सलाम का कहना न माना तो जितने पैग़म्बर उनसे पहले हो गुज़रे थे, बल्कि जो आइन्दा भी हुए उन सब ही की मुख़ालफ़त हुई।
7. चुनौचे दुनिया में इसका असर हलाक करने का अज़ाब था और आख़िरत में हमेशा का अज़ाब होगा।

और हमने समूद के पास उनके भाई सालेह को (पैगम्बर बनाकर) भेजा, उन्होंने फरमाया कि ऐ मेरी कौम! तुम अल्लाह की इबादत करो, उसके सिवा कोई तुम्हारा माबूद नहीं। उसने तुमको ज़मीन (के मादे) से पैदा किया और उसने तुमको इसमें आबाद किया, तो तुम अपने गुनाह उससे माफ़ कराओ (यानी ईमान लाओ) फिर उसकी तरफ़ मुतवज्जह रहो, बेशक मेरा रब करीब है, कबूल करने वाला है। (61) वे लोग कहने लगे कि ऐ सालेह! तुम तो इससे पहले हममें होनहार थे, क्या तुम हमको उन चीज़ों की इबादत से मना करते हो जिनकी इबादत हमारे बड़े करते आए हैं, और जिस (दीन) की तरफ़ तुम हमको बुला रहे हो वाकई हम तो उसकी तरफ़ से बड़े शुब्हा में हैं। जिसने हमको फ़िक्क में डाल रखा है। (62) आपने फरमाया, ऐ मेरी कौम! (भला) यह तो बताओ कि अगर मैं अपने रब की जानिब से दलील पर हूँ और उसने मुझको अपनी तरफ़ से रहमत (यानी नुबुव्वत) अता फरमाई हो, सो अगर मैं उसका कहना न मानूँ तो फिर मुझको खुदा से कौन बचा लेगा, तुम तो सरासर मेरा नुक़सान ही कर रहे हो।¹ (63) और ऐ मेरी कौम! (तुम जो मोजिज़ा चाहते थे, सो) यह ऊँटनी है अल्लाह की जो तुम्हारे लिए दलील है। सो इसको छोड़ दो कि अल्लाह की ज़मीन में खाती फिरा करे, और इसको बुराई के साथ हाथ भी मत लगाना, कभी तुमको फ़ौरी अज़ाब आ पकड़े। (64) सो उन्होंने उसको मार डाला, तो (सालेह अलैहि. ने) फरमाया कि तुम अपने घरों में तीन दिन और बसर कर लो। और यह ऐसा वायदा है जिसमें ज़रा झूठ नहीं। (65) सो जब हमारा हुक्म आ पहुँचा, हमने सालेह को और जो उनके साथ ईमान वाले थे उनको अपनी इनायत से बचा लिया। और उस दिन की बड़ी रुस्वाई से (बचा लिया), बेशक आपका रब ही बड़ी कुव्वत वाला, ग़ल्बे वाला है।² (66) और उन ज़ालिमों को एक नारा “यानी जोर की चीख़” ने आ दबाया,³ जिससे वे अपने घरों में औंधे पड़े रह गए, जैसे कभी उन घरों में बसे ही न थे। (67) ख़ूब सुन लो समूद ने अपने रब के साथ कुफ़्र किया, ख़ूब सुन लो रहमत से समूद को दूरी हुई। (68) ♦

और हमारे भेजे हुए (फ़रिश्ते) इब्राहीम के पास खुशख़बरी लेकर आए और उन्होंने सलाम किया। उन्होंने

1. यानी अगर खुदा न करे कबूल कर लूँ तो सिवाय नुक़सान के और क्या हाथ आए।
2. जिसको चाहे सज़ा दे, जिसको चाहे बचा ले।
3. वह जिबराईल अलैहिस्सलाम की आवाज़ थी।

(यानी इब्राहीम ने) भी सलाम किया, फिर देर नहीं लगाई कि एक तला हुआ बछड़ा लाए। (69) सो जब उन्होंने (यानी इब्राहीम ने) देखा कि उनके हाथ उस (खाने) तक नहीं बढ़ते तो उनसे घबराहट महसूस की, और उनसे दिल में डर गए। वे (फ़रिश्ते) कहने लगे डरो मत, हम कौमे लूत की तरफ भेजे गए हैं।¹ (70) और उनकी (यानी इब्राहीम की) बीवी खड़ी थी, पस हँसी। सो हमने उनको इसहाक की खुशखबरी दी, और इसहाक के बाद याकूब की। (71) कहने लगी कि हाय खाक पड़े, अब मैं बुढ़िया होकर बच्चा जन्मूँगी, और यह मेरे मियाँ हैं बिलकुल बूढ़े, वाकई यह भी अजीब बात है। (72) (फ़रिश्तों ने) कहा, क्या तुम खुदा के कामों में ताज्जुब करती हो, और (खास कर) इस ख़ानदान के लोगो! तुम पर तो अल्लाह तआला की (खास) रहमत और उसकी बरकतें हैं, बेशक वह तारीफ़ के लायक, बड़ी शान वाला है।² (73) फिर जब इब्राहीम का वह ख़ौफ़ ख़त्म हो गया और उनको खुशी की ख़बर मिली तो हमसे लूत की कौम के बारे में झगड़ा करना शुरू किया।³ (74) वाकई इब्राहीम बड़े बर्दाश्त करने वाले और नर्म दिल वाले थे। (75) ऐ इब्राहीम! इस बात को जाने दो, तुम्हारे रब का हुक्म आ पहुँचा है, और उनपर ज़रूर ऐसा अज़ाब आने वाला है जो किसी तरह हटने वाला नहीं। (76) और जब हमारे भेजे हुए (फ़रिश्ते) लूत के पास आए तो वह (यानी लूत अलैहिस्सलाम) उनकी वजह से ग़मगीन हुए और उनके आने के सबब तंगदिल हुए और कहने लगे कि आज का दिन बहुत भारी है। (77) और उनकी कौम उनके पास दौड़ी हुई आई, और वे पहले से नामाकूल हरकतें किया ही करते थे। वह (यानी लूत) फ़रमाने लगे कि ऐ मेरी कौम! ये मेरी (बहू) बेटियाँ (जो तुम्हारे घरों में मौजूद) हैं,⁴ वे तुम्हारे लिए (अच्छी)-खासी हैं, सो अल्लाह तआला से डरो और मेरे मेहमानों में मुझको रुखा और फ़ज़ीहत मत करो। क्या तुममें कोई भी (माकूल आदमी और) भला मानस नहीं? (78) वे लोग कहने लगे कि आपको तो मालूम है कि हमको आपकी (बहू) बेटियों की ज़रूरत नहीं,⁵ और आपको तो मालूम है जो हमारा मतलब है। (79) वह (यानी लूत) फ़रमाने लगे, क्या ख़ूब होता अगर मेरा तुमपर कुछ ज़ोर चलता, या मैं किसी मज़बूत सहारे की पनाह पकड़ता। (80) वे (फ़रिश्ते) कहने लगे कि ऐ लूत! हम तो आपके रब के

1. ताकि उनको कुफ़्र की सज़ा में हलाक करें।
2. वह बड़े से बड़ा काम कर सकता है। पस बजाय ताज्जुब के उसकी तारीफ़ और शुक्र में मशगूल हो।
3. सिफ़ारिश जो बहुत ज़्यादा इसरार और देखने में झगड़ा थी, और यह गुप्तगू फ़रिश्तों से हुई थी, मगर मकसूद हक़ तआला से अर्ज़ करना था। इसलिए 'युजादिलुना' 'यानी हमसे झगड़ा करना शुरू किया,' फ़रमाया।
4. 'मेरी बेटियों' से मजाज़न उम्मत की औरतें मुराद हैं, क्योंकि नबी उम्मत के लिए बाप की जगह होता है, और हकीकी मायने इसलिए मुराद नहीं हो सकते कि आपकी दो या तीन बेटियाँ थीं, सो किस-किस से उनका निकाह कर देते, वे तो सारे इसी बीमारी में मुब्तला थे।
5. क्योंकि औरतों से हमें दिलचस्पी ही नहीं।

भेजे हुए (फ़रिश्ते) हैं, आप तक हरगिज़ उनकी रसाई न होगी, सो आप रात के किसी हिस्से में अपने घर वालों को लेकर चलिए, और तुममें से कोई (पीछे) फिरकर भी न देखे, (हाँ) मगर आपकी बीवी (न जाएगी) उसपर भी वही (आफ़त) आने वाली है जो और लोगों पर आएगी। उनके वायदे का वक़्त सुबह (का वक़्त) है, क्या सुबह (का वक़्त) करीब नहीं। (81) सो जब हमारा हुक्म आ पहुँचा तो हमने उस ज़मीन (को उलटकर उस) का ऊपर का तख़्ता तो नीचे कर दिया (और नीचे का ऊपर) और उस ज़मीन पर खंगर के पत्थर (झाँवे) “यानी जली हुई ईंटों के टुकड़े” बरसाना शुरू किए (जो) लगातार (गिर रहे थे), (82) जिनपर आपके रब के पास का ख़ास निशान भी था।¹ और ये (बस्तियाँ) उन ज़ालिमों से कुछ दूर नहीं हैं। ● (83) ♦

और हमने मद्दन की तरफ़ उनके भाई शुऐब को भेजा। उन्होंने फ़रमाया कि ऐ मेरी कौम! तुम अल्लाह की इबादत करो, उसके सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं, और तुम नाप और तौल में कमी न किया करो। मैं तुमको फ़राग़त की हालत में देखता हूँ² और मुझको तुमपर ऐसे दिन के अज़ाब का अन्देशा है जो (किस्म-किस्म की मुसीबतों) का जामे होगा। (84) और ऐ मेरी कौम! तुम नाप और तौल पूरी-पूरी किया करो इन्साफ़ से, और लोगो का उनकी चीज़ों में नुक़सान मत किया करो, और ज़मीन में फ़साद करते हुए हृद से नहीं निकलो। (85) अल्लाह का दिया हुआ जो कुछ बच जाए वह तुम्हारे लिए बहुत ही बेहतर है,³ अगर तुमको यकीन आए, और मैं तुम्हारा पहरा देने वाला तो हूँ नहीं। (86) वे कहने लगे कि ऐ शुऐब! क्या तुम्हारी पाकबाज़ी तुमको तालीम कर रही है कि हम उन चीज़ों को छोड़ दें जिनकी परस्तिश “यानी पूजा और इबादत” हमारे बड़े करते आए हैं या (इस बात को छोड़ दें कि) हम अपने माल में जो चाहें तसर्फ़ करें। वाकई आप हैं बड़े अक्लमन्द, दीन पर चलने वाले।⁴ (87) शुऐब ने फ़रमाया कि ऐ मेरी कौम! भला यह बताओ कि अगर मैं अपने रब की जानिब से दलील पर हूँ और उसने मुझको अपनी तरफ़ से एक उम्दा दौलत (यानी नुबुव्वत) दी हो, (तो फिर कैसे तब्तीग़ न करूँ) और मैं यह नहीं चाहता कि तुम्हारे बरख़िलाफ़ उन कामों को करूँ जिनसे मैं तुमको मना करता हूँ,⁵ मैं तो इस्लाह “यानी सुधार” चाहता हूँ जहाँ तक मेरे बस में है, और मुझको जो कुछ तौफ़ीक़ हो जाती है सिर्फ़ अल्लाह ही की मदद से है, उसी पर मैं भरोसा रखता हूँ और उसी की तरफ़ रज़ू करता हूँ।⁶ (88) और ऐ मेरी कौम! मेरी ज़िद “और मुख़ालफ़त” तुम्हारे लिए इसका सबब न हो

1. कन्करियों को जो ख़ास कहा सो दुरें मन्सूर में रिवायतें हैं जिनसे मालूम होता है कि उनपर कुछ ख़ास रंग और शक़ल के नक्श बने थे जो दुनिया के पत्थरों में नहीं देखे जाते।
2. फिर तुमको नाप-तौल में कमी करने की क्या ज़रूरत पड़ी है, अगरचे हकीकत में तो किसी को भी ज़रूरत नहीं होती।
3. क्योंकि हराम में बरकत नहीं अगरचे वह ज्यादा हो, और उसका अन्जाम जहन्नम है। और हलाल में बरकत होती है अगरचे वह कम हो। और उसका अन्जाम अल्लाह की रिज़ा है।
4. यानी जिन बातों से हमको मना करते हो उनमें कोई बुराई नहीं। हलीम व रशीद यानी बड़े अक्लमन्द और दीन पर चलने वाले मज़ाक़ उड़ाने के तौर पर कहा, जैसे बद-दीनों की आदत होती है दीनदारों के साथ छेड़ख़ानी करने की।
5. ‘बरख़िलाफ़’ से यही मुराद है कि तुमको और राह बतलाऊँ और खुद दूसरी राह पर चलूँ। मतलब यह है कि मेरी नसीहत महज़ ख़ैरख़्वाही व दिली दर्द के साथ है, जिसकी दलील यह है कि मैं तुमको वही बतलाता हूँ जो मैं अपनी ज़ात के लिये भी पसन्द करता हूँ।
6. खुलासा यह कि तौहीद व अदल के वाजिब होने पर दलाइल भी कायम और अल्लाह के हुक्म से उसकी तब्तीग़, और नसीहत करने वाला भी ऐसा हमदर्द और सुधारक, फिर भी नहीं मानते बल्कि उल्टी मुझसे उम्मीद रखते हो कि मैं कहना छोड़ दूँ। और चूँकि इस तद्क़ीर में दिलसोज़ी और सुधार की अपनी तरफ़ निस्वत है इसलिए ‘व मा तौफ़ीकी.....’ फ़रमा दिया।

जाए कि तुमपर भी उसी तरह की मुसीबतें आ पड़ें जैसी नूह की कौम, या हूद की कौम, या सालेह की कौम पर आ पड़ी थीं, और लूत की कौम तो (अभी) तुमसे (बहुत) दूर (ज़माने में) नहीं (हुई)। (89) और तुम अपने रब से अपने गुनाह माफ़ कराओ फिर उसकी तरफ़ मुतवज्जह हो, बिला शुब्हा मेरा रब बड़ा मेहरबान (और) बड़ी मुहब्बत वाला है। (90) वे लोग कहने लगे कि ऐ शुऐब! बहुत-सी बातें तुम्हारी कही हुई हमारी समझ में नहीं आती, और हम तुमको अपने में कमज़ोर देख रहे हैं। और अगर तुम्हारे ख़ानदान का पास न होता तो हम तुमको संगसार “यानी पत्थरों से मार-मारकर हलाक” कर चुके होते। और हमारी नज़र में तो तुम्हारी कुछ इज्ज़त व क़द्र ही नहीं।¹ (91) (शुऐब अलैहिस्सलाम ने) फ़रमाया कि ऐ मेरी कौम! क्या मेरा ख़ानदान तुम्हारे नज़दीक अल्लाह से भी ज़्यादा इज्ज़त वाला है। और उसको तुमने पीठ पीछे डाल दिया, यकीनन मेरा रब तुम्हारे सब आपाल को घेरे में लिए हुए है। (92) और ऐ मेरी कौम! तुम अपनी हालत पर अमल करते रहो, मैं भी (अपने तौर पर) अमल कर रहा हूँ। अब जल्द ही तुमको मालूम हुआ जाता है कि वह कौन शख्स है जिसपर अज़ाब आया चाहता है, जो उसको रुस्वा कर देगा। और वह कौन शख्स है जो झूठा था, और तुम भी इन्तिज़ार करो मैं भी तुम्हारे साथ इन्तिज़ार कर रहा हूँ।² (93) और जब हमारा हुक्म आ पहुँचा, हमने शुऐब को और जो उनके साथ में ईमान वाले थे, उनको अपनी इनायत सेहत बचा लिया। और उन ज़ालिमों को एक सख़्त आवाज़ ने आ पकड़ा, सो अपने घरों के अन्दर औंधे गिरे रह गए (और मर गए)। (94) जैसे उन घरों में बसे ही न थे। ख़ूब सुन लो कि मद्यन को रहमत से दूरी हुई जैसा कि समूद रहमत से दूर हुए थे। (95) ♦

और हमने मूसा को अपने मोजिज़े और रोशन दलील देकर³ (96) फिरऔन और उसके सरदारों के पास भेजा। सो वे लोग फिरऔन की राय पर चलते रहे, और फिरऔन की राय कुछ सही न थी। (97) वह कियामत के दिन अपनी कौम के आगे-आगे होगा, फिर उनको दोज़ख़ में जा उतारेगा, और वह उतरने की बहुत ही बुरी जगह है, जिसमें ये लोग उतारे जाएँगे। (98) और इस (दुनिया) में भी लानत उनके साथ-साथ रही और कियामत के दिन भी,⁴ बुरा इनाम है जो उनको दिया गया। (99) ये (तबाहशुदा) बस्तियों के बाज़ हालात थे, जिनको हम आपसे बयान करते हैं, (सो) बाज़ (बस्तियाँ) तो उनमें (अब भी) कायम हैं,⁵ और बाज़ का बिलकुल ख़ात्मा हो गया। (100) और हमने उनपर जुल्म नहीं किया लेकिन उन्होंने खुद ही अपने ऊपर

1. मतलब उनका यह था कि तुम हमको ये मज़ामीन मत सुनाओ, वरना तुम्हारी जान का ख़तरा है।
2. यानी तुम नुबुव्वत की दावत में मुझको झूठा कहते हो और हकीर समझते हो, तो अब मालूम हो जाएगा कि झूठ के जुर्म का करने वाला और ज़िल्लत की सज़ा का हक़दार कौन था, तुम या मैं। देखें अज़ाब पड़ता है जैसा कि मैं कहता हूँ या अज़ाब नहीं होता जैसा कि तुम्हारा गुमान है।
3. ‘रोशन दलील’ से मुराद या तो लाठी और चमकता हुआ हाथ है, जो उन नौ निशानियों में से हैं जो नवें पारे के पहले चौथाई पर ज़िक्र हुई हैं कि ये बड़ी हैं और या मूसा अलैहिस्सलाम की असरदार तक़रीर है जो आपने तौहीद से मुताल्लिक़ फिरऔन के सामने फ़रमाई।
4. चुनौचे यहाँ क़हर से गर्क हुए और वहाँ दोज़ख़ नसीब होगी।
5. जैसे मिस्र कि फिरऔनियों के हलाक करने के बाद आबाद रहा।

जुल्म किया। सो उनके वे माबूद जिनको वे अल्लाह के अलावा पूजते थे उनको कुछ फायदा न पहुँचा सके, जब आपके रब का हुक्म आ पहुँचा, और उल्टा उनको नुकसान पहुँचाया।¹ (101) और आपके रब की पकड़ ऐसी ही है, जब वह किसी बस्ती पर पकड़ करता है जबकि वे जुल्म किया करते हों। बेशक उसकी पकड़ बड़ी दर्दनाक (और) सख्त है।² (102) इन (वाकिआत) में उस शख्स के लिए बड़ी इबरत है जो आखिरत के अज़ाब से डरता हो।³ वह ऐसा दिन होगा कि उसमें तमाम आदमी जमा किए जाएँगे, और वह (सबकी) हाज़िरी का दिन है। (103) और हम उसको सिर्फ़ थोड़ी मुद्दत के लिए मुलतवी किए हुए हैं। (104) जिस वक़्त वह दिन आएगा, कोई शख्स बिना उसकी (यानी खुदा की) इजाज़त के बात तक न कर सकेगा। फिर उनमें बाज़े तो शकी “बदबख्त” होंगे और बाज़े सईद “यानी नेकबख्त” होंगे। (105) सो जो लोग शकी हैं वे तो दोज़ख में (ऐसे हाल से) होंगे कि उसमें उनकी चीख़-पुकार पड़ी रहेगी। (106) और हमेशा-हमेशा को उसमें रहेंगे जब तक आसमान और ज़मीन कायम हैं,⁴ हाँ अगर उसके रब ही को (निकालना) मन्ज़ूर हो (तो दूसरी बात है) आपका रब जो कुछ चाहे उसको पूरा कर सकता है।⁵ (107) और रह गए वे लोग जो सईद हैं, सो वे जन्नत में होंगे और वे उसमें हमेशा-हमेशा को रहेंगे जब तक आसमान और ज़मीन कायम हैं। हाँ अगर आपके रबको (निकालना) मन्ज़ूर हो (तो दूसरी बात है)⁶ वह ख़त्म न होने वाला अतिया होगा। (108) सो जिस चीज़ की ये पूजा करते हैं उसके बारे में ज़रा शुब्हा न करना,⁷ ये लोग भी उसी तरह इबादत कर रहे हैं जिस तरह उनसे पहले उनके बाप-दादा इबादत करते थे। और हम यकीनन उनका (अज़ाब का) हिस्सा उनको (क़ियामत के दिन) पूरा-पूरा बिना किसी कमी के पहुँचा देंगे। (109) ♦

और हमने मूसा को किताब दी थी, सो उसमें इख़्तिलाफ़ किया गया,⁸ और अगर एक बात न होती जो आपके रब की तरफ़ से पहले मुकर्रर हो चुकी है तो उनका फैसला हो चुका होता, और ये लोग उसकी तरफ़ से ऐसे शक में हैं जिसने उनको तरद्दुद “यानी असमंजस” में डाल रखा है। (110) और यकीनन

1. यानी नुकसान के सबब हुए कि उनकी पूजा की बदौलत सज़ा पाई।
2. उससे सख्त तकलीफ़ पहुँचती है और उससे बच नहीं सकता।
3. सबक लेने की वजह जाहिर है कि जब दुनिया का अज़ाब ऐसा सख्त है, हालाँकि यह बदला मिलने की जगह नहीं, तो आखिरत का कैसा सख्त अज़ाब होगा जो कि बदला मिलने की जगह है।
4. यह मुहावरा है हमेशा रहने के लिए।
5. मगर बावजूद कुदरत के यह यकीनी बात है कि खुदा कभी यह बात न चाहेगा, पस निकलना भी नसीब न होगा।
6. मगर यह यकीनी है कि खुदा यह बात कभी न चाहेगा, पस उनके निकलने का भी कोई एहतिमाल और गुन्जाइश नहीं।
7. बल्कि यकीन रखना कि उनका यह अमल सज़ा को वाजिब करने वाला है, उसके बातिल होने की वजह से।
8. किसी ने माना किसी ने न माना, यह कोई आपके लिए नई बात नहीं हुई। पस आप ग़मगीन न हों।

सब-के-सब ऐसे ही हैं कि आपका रब उनको उनके आमाल का पूरा-पूरा हिस्सा देगा, वह यकीनन उनके आमाल की पूरी-पूरी ख़बर रखता है। (111) तो आप जिस तरह कि आपको हुक्म हुआ है मुस्तकीम रहिए, “यानी सही रास्ते पर कायम रहिए” और वे लोग भी जो (कुफ़्र से) तौबा करके आपके साथ में हैं, और दायरे से ज़रा मत निकलो, यकीनी तौर पर वह तुम सब के आमाल को ख़ूब देखता है। (112) और उन ज़ालिमों की तरफ़ मत झुको, कभी तुमको दोज़ख़ की आग़ लग जाए और खुदा के सिवा कोई तुम्हारा साथ देने वाला न हो, फिर हिमायत तो तुम्हारी ज़रा भी न हो। (113) और आप नमाज़ की पाबन्दी रखिए, दिन के दोनों सिरों पर और रात के कुछ हिस्सों में।¹ बेशक नेक काम मिटा देते हैं बुरे कामों को, यह बात एक नसीहत है नसीहत मानने वालों के लिए। (114) और सब्र किया कीजिए कि अल्लाह तआला नेक काम करने वालों का अन्न ज़ाया नहीं करते। (115) जो उम्मतें तुमसे पहले हो गुज़री हैं उनमें ऐसे समझदार लोग न हुए जो कि (दूसरों को) मुल्क में फ़साद (यानी कुफ़्र व शिर्क) फैलाने से मना करते, सिवाय चन्द आदमियों के कि जिनको उनमें से हमने (अज़ाब से) बचा लिया था।² और जो लोग नाफ़रमान थे वे नाज़ व नेमत में थे, उसी के पीछे पड़े रहे और अपराधों के आदी हो गए।³ (116) और आपका रब ऐसा नहीं कि बस्तियों को कुफ़्र के सबब हलाक कर दे और उनके रहने वाले सुधार में लगे हों। (117) और अगर आपके रब को मन्ज़ूर होता तो सब आदमियों को एक ही तरीक़े का (यानी सब को मोमिन) बना देते, और (आगे भी) हमेशा इख़िलाफ़ करते रहेंगे, (118) मगर जिसपर आपके रब की रहमत हो। और (इस इख़िलाफ़ का ग़म न कीजिए, क्योंकि) उसने (यानी अल्लाह तआला ने) लोगों को इसी वास्ते पैदा किया है, और आपके रब की (यह) बात पूरी होगी कि मैं जहन्नम को जिन्नात और इनसानों दोनों से भर दूँगा।⁴ (119) और पैग़म्बरों के किस्सों में से हम ये सारे किस्से आपसे बयान करते हैं जिनके ज़रिये से हम आपके दिल को मज़बूती देते हैं, और उन (किस्सों) में आपके पास (ऐसा मज़मून) पहुँचा है, (जो खुद भी) सही (है) और मुसलमानों के लिए नसीहत (है) और याद-दिहानी (है)।⁵ (120) और जो लोग ईमान नहीं लाते उनसे कह दीजिए कि तुम अपनी हालत पर अमल करते रहो, हम भी अमल कर रहे हैं। (121) और तुम मुन्तज़िर रहो हम भी मुन्तज़िर हैं। (122) और

1. दिन के दो सिरों से मुराद बाज़ के नज़दीक फ़ज़्र और अन्न है और बाज़ के नज़दीक इससे मुराद दिन के अब्ल व आख़िर के हिस्से हैं। अब्ल हिस्से में सुबह की नमाज़ है और आख़िर के हिस्से में जोहर और अन्न। और रात के हिस्सों से मुराद मग़रिब और इशा का वक़्त। पस एक कौल पर इस आयत में पाँचों नमाज़ें मुराद हैं और एक कौल पर सिवाय जोहर के चार नमाज़ें, और जोहर दूसरी आयत में ज़िक्र की गई है जो सूर: रूम में है: ‘व ही-न तुज़िह्रून.....’।
2. वे जैसे ख़ूद कुफ़्र व शिर्क से तौबा कर चुके थे औरों को भी मना करते रहते थे। और इन्हीं दोनों अमल की बरकत से वे अज़ाब से बच गए थे। बाकी और लोग चूँकि खुद ही कुफ़्र में मुब्तला थे और उन्होंने औरों को भी मना न किया, इसलिए उनपर अज़ाब आया।
3. मतलब का खुलासा यह कि नाफ़रमानी तो उनमें आम तौर पर रही और मना करने वाला कोई हुआ नहीं, इसलिए सब एक ही अज़ाब में मुब्तला हुए। वरना कुफ़्र का अज़ाब आम होता और फ़साद यानी ख़राबी और बिगाड़ का खास। अब मना न करने की वजह से जो फ़सादी नहीं थे वे भी उन्हें में शरीक क़ारर दिए गए। इसलिए जो अज़ाब कुफ़्र व फ़साद के मज़मून पर नाज़िल हुआ वह भी सबके लिए आम रहा।
4. खुद उसकी हिक्मत यह है कि जिस तरह मरहूमिन में रहमत की सिफ़्त का जुहूर हुआ, जिनपर गुज़ब किया गया उनमें गुज़ब की सिफ़्त ज़ाहिर हो। फिर उस ज़ाहिर होने की हिक्मत या उस हिक्मत की हिक्मत अल्लाह ही को मालूम है। ग़रज़ इस ज़ाहिर होने की हिक्मत से बाज़ों का जहन्नम में जाना ज़रूरी और जहन्नम में जाने के लिए काफ़िरों का वजूद तक्वीनी तौर पर ज़रूरी। और काफ़िरों के वजूद के लिए इख़िलाफ़ लाज़िम। यह वजह है सबके मुसलमान न होने की।
5. किस्सों के बयान करने का यह दूसरा फ़ायदा हुआ, एक फ़ायदा नबी के लिए, दूसरा उम्मत के लिए। फ़ायदा: हक़ ज़ाती सिफ़्त है क़ुरआन की उन आयतों की जो किस्सों पर मुशतमिल हैं, और नसीहत व याद-दिहानी उनकी इज़ाफ़ी सिफ़्तें हैं, जिनमें एक हाकिम और एक डॉट-डपट करने वाला है।

आसमानों और ज़मीन में जितनी ग़ैब की बातें हैं उनका इल्म खुदा ही को है, और सब मामलात उसी की तरफ़ लौटाए जाएँगे। तो आप उसी की इबादत कीजिए और उसी पर भरोसा कीजिए, और आपका रब उन बातों से बेख़बर नहीं जो कुछ तुम (लोग) कर रहे हो। (123) ♦

12 सूर: यूसुफ 53

सूर: यूसुफ़ मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 111 आयतें और 12 रुकूअ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

¹अलिफ़-लाम-रा। ये आयतें हैं एक वाजेह किताब की। (1) हमने उसको उतारा है कुरआन अरबी (ज़बान का) ताकि तुम समझो। (2) हमने जो यह कुरआन आपके पास भेजा है, इसके ज़रिये से हम आपसे एक बड़ा उम्दा किस्सा बयान करते हैं, और इससे पहले आप बिल्कुल बेख़बर थे।² (3) (वह वक़्त ज़िक्र करने के काबिल है) जब यूसुफ़ ने अपने वालिद से कहा कि अब्बा! मैंने ग्यारह सितारे और सूरज और चाँद देखे हैं, उनको अपने सामने सज़्दा करते हुए देखा है। (4) उन्होंने फ़रमाया कि बेटा! अपने इस ख़्वाब को अपने भाइयों के सामने बयान मत करना, पस वे तुम्हारे लिए कोई ख़ास तदबीर करेंगे। बेशक़ शैतान आदमी का खुला दुश्मन है। (5) और इसी तरह तुम्हारा रब तुमको चुनेगा और तुमको ख़्वाबों की ताबीर का इल्म देगा, और तुमपर और याकूब के ख़ानदान पर अपना इनाम पूरा करेगा जैसा कि इससे पहले तुम्हारे दादा-परदादा (यानी) इब्राहीम और इसहाक़ पर अपना इनाम पूरा कर चुका है, वाकई तुम्हारा रब बड़ा इल्म (व) हिक्मत वाला है।³ (6) ♦

यूसुफ़ के और उनके भाइयों के किस्से में (खुदा की कुदरत और आँ-हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नुबुव्वत के) दलाइल मौजूद हैं, उन लोगों के लिए जो पूछते हैं।⁴ (7) (वह वक़्त ज़िक्र करने के काबिल है) जबकि उनके भाइयों ने बातचीत की कि यूसुफ़ और उनका भाई हमारे बाप को हमसे ज़्यादा प्यारे हैं, हालाँकि हम एक जमाअत (की जमाअत) हैं, वाकई हमारे बाप खुली ग़लती में हैं।⁵ (8) या तो यूसुफ़ को क़त्ल कर डालो, या उसको किसी सरज़मीन में डाल आओ तो तुम्हारे बाप का रुख़ ख़लिस तुम्हारी तरफ़ हो जाएगा और तुम्हारे सब काम बन जाएँगे। (9) उन्हीं में से एक कहने वाले ने कहा कि यूसुफ़ को क़त्ल मत करो,

1. यह सूरत तकरीबन पूरी की पूरी हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के किस्से पर मुश्तमिल है और उसके शुरू करने से पहले कुरआन पाक के हक़ होने का बयान है, जिसमें वह किस्सा बयान हुआ है। और उसके ख़त्म करने से पहले अब्बल तौहीद का मज़मून और उसमें कोताही पर वर्ईद, फिर रिसालत की बहस और उसके इनकारियों का बुरा अन्जाम होने का मुख़्तसर तौर बयान, और ऐसी हिकायतों और किस्सों का इबरात का सबब होना और कुरआन का हक़ होना मज़कूर है जिसमें ये किस्से हैं और इसी पर सूर: ख़त्म है। पस सूर: का ज़्यादा हिस्सा किस्सों पर मुश्तमिल है और सूर: का कुछ हिस्सा दीन के उसूलों में है जिसमें कुम्फ़ार की मुख़ालफ़त की वजह से आपको जो ग़म था उसके ख़ात्मे और तसल्ली के लिए यह किस्सा बयान किया गया है कि हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को उनके भाइयों की मुख़ालफ़त से कोई नुक़सान नहीं पहुँचा, बल्कि अन्जामकार वही तरक्की का सबब हो गया। इसी तरह आपको आपकी कौम की मुख़ालफ़त नुक़सानदेह न होगी।

2. क्योंकि आपने न कोई किताब पढ़ी थी, न किसी किताब वाले से फ़ायदा हासिल किया था और अ़वाम में इस तरह सही तौर पर यह किस्सा मशहूर न था। पस इससे साबित हुआ कि यह कुरआन वद्व यानी अल्लाह की तरफ़ से नाज़िल-शुदा है।

3. ये खुशख़बरीयाँ जो याकूब अलैहिस्सलाम ने दी या तो इस ख़्वाब से समझे या वद्व से।

4. यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को ऐसी बेकसी और बेबसी से उस बुलन्दी और हुक्मत पर पहुँचा देना (शेष तफ़सीर पृष्ठ 426 पर)

और उनको किसी अन्धेरे कुँए में डाल दो,¹ ताकि उनको कोई राह चलता निकाल ले जाए, अगर तुमको करना है। (10) सबने कहा कि अब्बा! इसकी क्या वजह है कि यूसुफ के बारे में आप हमारा एतिबार नहीं करते, हालाँकि हम उनके खैर-ख्वाह हैं। (11) आप उनको कल के दिन हमारे साथ भेजिए कि ज़रा वे खाएँ और खेलें,² और हम उनकी पूरी हिफाज़त रखेंगे। (12) (हज़रत याकूब ने) फरमाया कि मुझको यह बात ग़म में डालती है कि उसको तुम ले जाओ और मैं यह अन्देशा करता हूँ कि उसको कोई भेड़िया खा जाए और तुम उससे बेख़बर रहो। (13) वे बोले अगर उनको कोई भेड़िया खा जाए और हम एक जमाअत (की जमाअत मौजूद) हों तो हम बिलकुल ही गए गुज़रे हुए। (14) सो जब उनको ले गए और सबने पुख्ता इरादा कर लिया कि उनको किसी अन्धेरे कुँए में डाल दें, और हमने उनके पास वस्त्र भेजी कि तुम उन लोगों को यह बात जतलाओगे और वे पहचानेंगे भी नहीं।³ (15) और वे लोग अपने बाप के पास इशा के वक़्त रोते हुए पहुँचे। (16) कहने लगे, अब्बा! हम सब तो आपस में दौड़ने में लग गए और यूसुफ को हमने अपने सामान के पास छोड़ दिया, पस एक भेड़िया उनको खा गया, और आप तो हमारा काहे को यकीन करने लगे, चाहे हम (कैसे ही) सच्चे हों। ▲ (17) और यूसुफ के कुर्ते पर झूठ-मूठ का खून भी लगा लाए थे, (याकूब अलैहि. ने) फरमाया, (ऐसा नहीं है) बल्कि तुमने अपने दिल से एक बात बना ली है,⁴ सो सब्र ही करूँगा जिसमें शिकायत का नाम न होगा। और जो बातें तुम बनाते हो उनमें अल्लाह तआला ही मदद करे।⁵ (18) और एक काफिला आ निकला और उन्होंने अपना आदमी पानी लाने के वास्ते भेजा, उसने अपना डोल डाला। कहने लगा कि (अरे भाई) बड़ी खुशी की बात है, यह तो (अच्छा) लड़का (निकल आया) और उनको (तिजारत का) माल करार देकर छुपा लिया,⁶ और अल्लाह को उन सबकी कारगुज़ारियाँ मालूम थीं।⁷ (19) और उनको बहुत ही कम कीमत में बेच डाला, यानी गिनती के चन्द दिरहम के बदले, और वे लोग उनके कुछ कद्रदान तो थे ही नहीं। (20) ♦

(पृष्ठ 424 का शेष) यह खुदा ही का काम था, इससे मुसलमानों को जो किसी किस्से के इच्छुक थे इब्रत और ईमान की कुव्वत हासिल होगी और यहूद को कि उन्होंने खुसूसियत के साथ यह किस्सा पूछा था नुबुव्वत की दलील मिल सकती है, अगर गौर करें।

5. हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम को हज़रत यूसुफ अलैहिस्सलाम के साथ सबसे ज़्यादा मुहब्बत होने की अनेक वजह बयान की गई हैं। जिनमें ज़्यादा सही यह है कि नुबुव्वत की समझ से याकूब अलैहिस्सलाम उनको होनहार देखते थे और ख़ाब सुनने के बाद यह बात और ज़्यादा पुख्ता हो गई थी जैसा कि उनके इशॉद 'और इसी तरह तुम्हारा रब तुमको चुनेगा' से साफ़ मालूम होता है। लेकिन यूसुफ अलैहिस्सलाम के भाई समझते थे कि यूसुफ (अलैहिस्सलाम) के बारे में ऐसा ख़्याल याकूब अलैहिस्सलाम की अपनी सोच है, और सोच में ग़लती होना नुबुव्वत के मनाफ़ी नहीं। पस 'ज़लाले मुबीन' यानी खुली ग़लती से ग़ौर व फ़िक्र की ख़ता मुराद है, वरना नबी के बारे में गुमराही का ख़्याल व एतिक़ाद कुफ़्र है।

6. क्योंकि वह दोनों सूरतों में बाप से जुदा हो जाएँगे।

1. जिसमें पानी भी ज़्यादा न हो कि डूबने का डर हो, वरना वह तो क़त्ल ही है और जल्दी से हर किसी को पता भी न चले, क्योंकि अन्धेरा कुआँ है, और आम रास्ते से भी दूर न हो।

2. ज़ाहिरन खेलने को याकूब अलैहिस्सलाम ने जायज़ रखा, इसके बावजूद कि बेफ़ायदा और बेकार काम की तजवीज़ अम्बिया अलैहिमुस्सलाम की शान के खिलाफ़ है। सो असल यह है कि यह खेलना बेफ़ायदा नहीं, क्योंकि मुराद इससे दौड़ और तीर चलाना वगैरह है, जो फ़ायदेमन्द चीज़ों में से हैं। इसके अलावा खेल के जायज़ होने की दूसरी वजह यह थी कि और फ़ायदों के साथ-साथ तबीयत की ताज़गी भी है जो कि बच्चों के लिए ज़रूरी और लाज़िमी मशग़लों में जी लगने का ज़रिया है। और ज़रूरी का मुक़द्दिमा (यानी जो चीज़ उसके लिए ज़रूरी हो वह) भी ज़रूरी होता है।

3. चुनाँचे यह वायदा ज़ाहिर और पूरा हुआ। (शेष तफ़सीर पृष्ठ 428 पर)

और जिस शख्स ने मिस्र में उनको खरीदा था उसने अपनी बीवी से कहा की इसको खातिर से रखना, क्या अजब है कि हमारे काम आए या हम इसको बेटा बना लें। और हमने इसी तरह यूसुफ को उस सरज़मीन में कुव्वत दी, और ताकि हम उनको ख्वाबों की ताबीर देना बतला दें,¹ और अल्लाह तआला अपने काम पर ग़ालिब है, लेकिन अक्सर आदमी नहीं जानते।² (21) और जब वह अपनी जवानी को पहुँचे, हमने उनको हिक्मत और इल्म अता फ़रमाया, और हम नेक लोगों को इसी तरह बदला दिया करते हैं।³ (22) और जिस औरत के घर में यूसुफ रहते थे, वह (उनसे अपना मतलब हासिल करने को) उनको फुसलाने लगी और सारे दरवाज़े बन्द कर दिए और कहने लगी कि आ जाओ, तुम ही से कहती हूँ। (यूसुफ अलैहिस्सलाम ने) कहा, (यह तो भारी गुनाह है) अल्लाह बचाए। (दूसरे) वह मेरा पालने-परवरिश करने वाला है। मुझको कैसी अच्छी तरह रखा, ऐसे हक़-फ़रामोश को फ़लाह नहीं हुआ करती। (23) और उस औरत के दिल में तो उनका ख़्याल ज़म ही रहा था, और उनको भी उस औरत का कुछ-कुछ ख़्याल हो चला था,⁴ अगर अपने रब की दलील⁵ को उन्होंने न देखा होता⁶ तो ज़्यादा ख़्याल हो जाता अजब न था।⁷ इसी तरह (हमने उनको इल्म दिया) ताकि हम उनसे छोटे और बड़े गुनाह को दूर रखें,⁸ क्योंकि वह हमारे मुख़्लिस बन्दों में से थे। (24) और दोनों (आगे-पीछे) दरवाज़े की तरफ़ को दौड़े, और उस औरत ने उनका कुर्ता पीछे से फाड़ डाला, और दोनों ने उस औरत के शौहर को दरवाज़े के पास पाया।⁹ (औरत) बोली, जो शख्स तेरी बीवी के साथ बदकारी का इरादा करे उसकी सज़ा सिवाय इसके और क्या है कि वह जेलख़ाने भेजा जाए या और कोई दर्दनाक सज़ा हो। (25) (हज़रत यूसुफ ने) कहा, यही मुझसे अपना मतलब (निकालने) को फुसलाती थी, और उस औरत के ख़ानदान में से एक गवाह ने गवाही दी¹⁰ कि इनका कुर्ता अगर आगे से फटा है तो औरत सच्ची है और ये झूठे। (26) और अगर इनका कुर्ता पीछे से फटा है तो औरत झूठी और यह सच्चे।¹¹ (27) सो जब उनका कुर्ता पीछे से फटा हुआ देखा तो कहने लगा कि यह तुम औरतों की चालाकी है, बेशक तुम्हारी चालाकियाँ ग़ज़ब ही की हैं। (28) ऐ यूसुफ! इस बात को जाने दो, और ऐ औरत! तू अपने कुसूर की माफ़ी माँग, बेशक पूरी की पूरी तू ही कुसूरवार है। (29) ♦

(पृष्ठ 426 का शेष)

4. याकूब अलैहिस्सलाम का 'बल सबलत्' 'यानी बल्कि तुमने अपने दिल से एक बात बना ली है,' फरमाना मशहूर कौल के मुताबिक़ उस कुर्ते के धब्बे देखने से था, लेकिन अगर वह रिवायत साबित न हो तो अपनी फ़िक़्री सलाहियत और दिल की गवाही से होगा जो कि अम्बिया अलैहिमुस्सलाम में अक्सर तो हकीक़त के मुताबिक़ होता है और कभी हकीक़त के ख़िलाफ़ भी हो जाता है।

5. जब याकूब अलैहिस्सलाम को यकीनी तौर पर या अन्दाज़े से यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के भाइयों का बयान ग़लत होना मालूम था तो यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को तलाश क्यों न किया। ग़ालिब यह है कि याकूब अलैहिस्सलाम को वद्व से मुख़्तसर तौर पर मालूम हो गया होगा कि वह जाया न होंगे लेकिन मेरी किस्मत में लम्बी जुदाई मुक़द्दर है, मेरी तलाश से न मिलेंगे।

6. ताकि कोई आकर दावेदार न हो, फिर उसको लेजाकर मिस्र में किसी बड़े आदमी के हाथ बेचकर ख़ूब नफ़ा कमाएँगे।

7. कि भाई उनको बेवतन और काफ़िले वाले माल हासिल करने का ज़रिया बना रहे थे, और अल्लाह तआला उनको ज़माने का बादशाह बना रहा था।

1. ख़ूब कुव्वत और ख़्वाब की ताबीरों का इल्म देने से मक़सद यह था कि दौलते जाहिरी व बांतिनी से मांलामाल करें।

2. यह जुम्ला किस्से के दरमियान में एक ज़ायद जुम्ले के तौर पर आ गया ताकि ख़रीद व बेच के साथ शुरू ही से सुनने वालों को मालूम हो जाए कि गोया इस वक़्त जाहिरन ऐसी नागवार हालत में हैं, मगर हमने उनको असल में एक शानदार हुकूमत और अज़ीब व ग़रीब उलूम के लिए बचाया है। और ये हालतें आरज़ी और असली मक़ासिद का मुक़द्दिमा हैं। क्योंकि हुकूमत हासिल करके तरक्की पाने का ज़रिया अज़ीज़ के घर आना ही हुआ। इसी तरह उलूम व दिल की कैफ़ियतों के लिए नागवारियाँ और मशक्कतें सबब हो जाते हैं। पस इस एतिबार से उलूम के फैज़ान में भी उसको दख़ल हुआ। और मुश्तरक तौर पर रईसों और सरदारों के घर में परवरिश पाना सलीका व तज़ुर्बा बढ़ाता है, जिसकी हुकूमत और उलूम दोनों में ज़रूरत है, ख़ासकर ताबीर के इल्म में। (शेष तफ़सीर पृष्ठ 430 पर)

और कुछ औरतों ने जो कि शहर में रहती थीं यह बात कही कि अजीज की बीवी अपने गुलाम को (उससे अपना मतलब हासिल करने के वास्ते) फुसलाती है। उस गुलाम का इश्क उसके दिल में जगह कर गया है, हम तो उसको खुली गलती में देखते हैं। (30) सो जब उस औरत ने उन औरतों की यह बदगोई सुनी तो किसी के हाथ उनको बुला भेजा (कि तुम्हारी दावत है)¹ और उनके वास्ते (मसूनद) तकिया लगाया, और हर एक को उनमें से एक-एक चाकू दे दिया। (यह तो सिर्फ बहाना था, असली गरज यह थी कि अपने आपे में न रहकर अपने हाथ जख्मी कर लें) और (यूसुफ से) कहा कि ज़रा इनके सामने तो आ जाओ। (वह यह समझकर कि कोई जायज़ और सही ज़रूरत होगी बाहर आ गए) सो औरतों ने जो उनको देखा तो (उनके हुस्न व खूबसूरती से) हैरान रह गईं और (उनपर ऐसी बदहवासी तारी हुई कि) अपने हाथ काट लिए, और कहने लगीं, खुदा की पनाह, यह शख्स आदमी हरगिज़ नहीं, यह तो कोई बुजुर्ग फरिश्ता है!² (31) बोली, वह शख्स यही है जिसके बारे में तुम मुझको बुरा-भला कहती थीं (कि अपने गुलाम को चाहती है) और वाकई मैंने इससे अपना मतलब हासिल करने की ख्वाहिश की थी मगर यह पाक-साफ़ रहा, और अगर आइन्दा (भी) मेरा कहना नहीं करेगा तो बेशक जेलखाने भेजा जाएगा और बेइज़्जत भी होगा। (32) (यूसुफ ने) दुआ की कि ऐ मेरे रब! जिस काम की तरफ़ ये औरतें मुझको बुला रही हैं उससे तो जेल में जाना ही मुझको ज़्यादा पसन्द है। और अगर आप उनके दाव-पेच को मुझसे दूर न करेंगे तो मैं उनकी तरफ़ माइल हो जाऊँगा और नादानी का काम कर बैठूँगा।³ (33) सो उनके रब ने उनकी दुआ कबूल की और उन औरतों के दाव-पेच को उनसे दूर रखा, बेशक वह बड़ा सुनने वाला, बड़ा जानने वाला है। (34) फिर बहुत-सी निशानियाँ देखने के बाद उन लोगों को यही मस्तहत मालूम हुआ कि उनको एक वक़्त तक कैद में रखें!⁴ (35) ♦

और उनके (यानी यूसुफ के) साथ और भी दो गुलाम कैदखाने में दाखिल हुए। उनमें से एक ने कहा कि मैं अपने को (ख़्वाब में) देखता हूँ कि शराब निचोड़ रहा हूँ, और दूसरे ने कहा कि मैं अपने को इस तरह देखता हूँ कि मैं अपने सर पर रोटियाँ लिए जाता हूँ, उनमें से परिन्दे खाते हैं। हमको इस (ख़्वाब) की ताबीर बतलाइए, आप हमको नेक आदमी मालूम होते हैं। (36) (यूसुफ ने) फरमाया कि जो खाना तुम्हारे पास आता है जो कि तुमको खाने के लिए मिलता है, मैं उसके आने से पहले उसकी हकीकत तुमको बतला दिया करता हूँ। यह (बतला देना) उस इल्म की बदौलत है जो मुझको मेरे रब ने तालीम फरमाया है, मैंने तो उन लोगों का मज़हब छोड़ रखा है जो अल्लाह पर ईमान नहीं लाते, और वे लोग आखिरत के भी इनकारी हैं!⁵ (37) और

(पृष्ठ 428 का शेष)

3. इसमें पहले से यह बतलाना मकसूद है कि जो कुछ आगे किस्से में बाज़े मामलात और बातों की तोहमत आपके मुताल्लिक आएगी वह सब ग़लत होगी, क्योंकि वह साहिबे हिक्मत थे जिसका हासिल है नफ़ा देने वाला इल्म, यानी इल्म अमल के साथ, और इन चीज़ों का सादिर होना हिक्मत के खिलाफ़ है। पस सादिर और जाहिर होना ग़लत है।

4. तबई चीज़ होने के दर्जे में जो कि इख्तियार से बाहर है जैसा कि गर्मी के रोज़े में पानी की तरफ़ तबई मैलान होता है अगरचे रोज़ा तोड़ने का वस्वसा भी नहीं आता।

5. यानी इस काम के गुनाह होने की दलील को कि शर्ई हुक्म है।

6. यानी उनको शरीअत का इल्म जो कि अमली कुव्वत के साथ मिला हुआ है, न होता।

7. क्योंकि असबाब और उसकी तरफ़ मुतवज्जह करने वाले हालात ऐसे ही ताक़तवर थे।

8. यानी इरादे से भी बचाया और फ़ैल से भी बचाया।

9. औरत शौहर को देखकर सटपटाई और फ़ौरन बात बनाकर बोली।

10. वह एक दूध पीता बच्चा था जो यूसुफ अलैहिस्सलाम के मोज़िज़े से बोल पड़ा। अगर यूसुफ अलैहिस्सलाम उस वक़्त नबी न हों तो इस आम आदत के खिलाफ़ पेश आने वाले वाकिए को इस्तिलाह में मोज़िज़े के बजाय 'इरहास' (यानी उसकी बुनियाद और पहला दर्जा) कहेंगे।

11. इस गवाही देने वाले ने जो फ़ैसला बतलाया यह कोई शर्ई हुज्जत नहीं, काफ़ी हुज्जत तो सिर्फ़ उसका बोल पड़ना है, लेकिन हाज़िरीन के ज़ौक के मुवाफ़िक़ उसका बयान कर देना असली हुज्जत के लिए ज़्यादा ताईद करने वाला हो गया। (पृष्ठ 430 की तफ़सीर पृष्ठ 432 पर)

मैंने अपने बाप-दादों का मजहब इख्तियार कर रखा है। इब्राहीम का और इसहाक का और याकूब का, हमको किसी तरह मुनासिब नहीं कि अल्लाह के साथ किसी चीज़ को शरीक करार दें।¹ यह (तौहीद का अकीदा) हमपर और दूसरे लोगों पर खुदा तआला का एक फज़्ल है,² लेकिन अक्सर लोग शुक्र नहीं करते।³ (38) ऐ कैदखाने के दोनों साथियो! मुतफ़र्रिक “यानी अलग-अलग” माबूद अच्छे या एक माबूद बरहक, जो सबसे ज़बरदस्त है (वह अच्छा)। (39) तुम लोग तो खुदा को छोड़कर सिर्फ़ चन्द बेहकीकत नामों की इबादत करते हो, जिनको तुमने और तुम्हारे बाप-दादाओं ने मुकर्रर कर लिया है। खुदा तआला ने तो उनकी कोई दलील भेजी नहीं। हुक्म खुदा ही का है, उसने यह हुक्म दिया है कि सिवाय उसके और किसी की इबादत मत करो, यही सीधा तरीका है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते।⁴ (40) ऐ कैदखाने के दोनों साथियो! तुममें एक तो (बरी होकर) अपने आका को शराब पिलाया करेगा और दूसरा सूली दिया जाएगा, और उसके सर को परिन्दे खाएँगे, जिस बारे में तुम पूछते थे वह इसी तरह मुकद्दर हो चुका।⁵ (41) और जिस शख्स की रिहाई का गुमान था उससे (यूसुफ ने) फरमाया कि अपने आका के सामने मेरा भी ज़िक्र करना, (कि एक शख्स बेकुसूर कैद है। उसने वायदा कर लिया) फिर उसको अपने आका के सामने ज़िक्र करना शैतान ने भुला दिया तो कैदखाने में और भी चन्द साल उनका रहना हुआ।⁶ (42) ♦

और बादशाह ने कहा, मैं देखता हूँ कि सात गायें मोटी-ताज़ी हैं जिनको सात कमज़ोर और दुबली गायें खा गईं, और सात बालें हरी हैं और उनके अलावा (सात) और हैं जो कि सूखी हैं। ऐ दरबार वालो! अगर तुम ताबीर दे सकते हो तो मेरे इस ख्वाब के बारे में मुझको जवाब दो। (43) वे लोग कहने लगे कि यूँ ही परेशान ख्यालात हैं, और हम लोग ख्वाबों की ताबीर का इल्म भी नहीं रखते।⁷ (44) और उन (ज़िक्र हुए) दो

(तफ़सीर पृष्ठ 430) 1. इस दावत में उनके सामने मुख्तलिफ़ खाने और मेवे हाज़िर किए, जिनमें बाज़ चीज़ें चाकू से छीलकर खाने की थीं।
2. मतलब यह कि ऐसा हुस्न व जमाल आदमी में कहाँ होता है। फ़रिश्ते अलबत्ता ऐसे नूरानी होते हैं।
3. यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का यह फ़रमाना ‘कि अगर आप उनके दाव-पेच को मुझसे दूर न करेंगे तो मैं उनकी तरफ़ माइल हो जाऊँगा’ पारसाई के खिलाफ़ नहीं, क्योंकि यह पारसाई भी तो अल्लाह की हिफ़ाज़त ही की बदौलत है। चूँकि अम्बिया अलैहिमुस्सलाम की नज़र हकीकी असर करने वाले की तरफ़ होती है इसलिए उनको अपनी पारसाई पर एतमाद और नाज़ नहीं होता। और यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का यह कहना ‘कि अगर आप उनके दाव-पेच को मुझसे दूर न करेंगे तो मैं उनकी तरफ़ माइल हो जाऊँगा’ मकसूद इससे यह है कि ‘इसको मुझसे दूर फ़रमा दीजिए’ इसलिए इसके बाद ‘सो उनकी दुआ उनके रब ने कबूल की’ फ़रमाया। और इस कबूल होने का बयान खुद कुरआन में है: ‘और उन औरतों के दाव-पेच को उनसे दूर रखा’। जेल में जाना कबूलियत का हिस्सा नहीं, जैसा कि मशहूर है कि कैद की दुआ की इसलिए कैद में गए, क्योंकि कैद की दरख्वास्त तो नहीं की सिर्फ़ बुरे फ़ेल को जेलख़ाने से ज़्यादा बुरा होना बयान किया।
4. अ़वाम में चर्चा बन्द होने की ग़रज़ से।
5. हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने चाहा कि जब ये मेरे मोतक़िद हैं तो इनको पहले इमान की दावत देनी चाहिए, इसलिए अब्बल अपना नबी होना एक मौजिज़े से साबित किया। आगे तौहीद को साबित किया है, यानी जब मेरा कमाल और नुबुव्वत दलील से साबित है तो जिस तरीके को मैं इख्तियार करूँ और उसको सही बतलाऊँ वह हक़ होगा, सो वह तरीका यह है।

(तफ़सीर पृष्ठ 432) 1. यानी तौहीद इस मजहब का सबसे बड़ा रुक्न है।
2. क्योंकि उसकी बदौलत दुनिया व आख़िरत की फ़लाह हासिल होती है।
3. यानी न तौहीद की क़द्र करते हैं और न उसको इख्तियार करते हैं।
4. इमान के अरकान की तब्लीग़ करके अब उनके ख्वाब की ताबीर बतलाते हैं।
5. चुनाँचे मुक़द्दिमे में सफ़ाई के बाद एक बरी साबित हुआ, दूसरा मुज़्रिम, दोनों जेलख़ाने से बुलाए गए। एक रिहाई के लिए दूसरा सज़ा के लिए।
6. ‘बिज़्रअनु’ अरबी में तीन से दस तक के लिए आता है। इसके दरमियान जितने अ़दद (अंक) हैं हर अ़दद का आयत में एहतिमाल है। चूँकि आदतन जो असबाब इस्तेमाल किए जाते हों उनका इस्तेमाल जायज़ है इसलिए इस मामले में (शेष तफ़सीर पृष्ठ 434 पर)

(कैदियों) में से जो रिहा हो गया था उसने कहा, और मुद्दत के बाद उसको (हज़रत यूसुफ अलैहिस्सलाम की वसीयत का) ख्याल आया कि मैं इसकी ताबीर की खबर लाए देता हूँ, आप लोग मुझको ज़रा जाने की इजाज़त दीजिए। (45) (वह कैद ख़ाने में पहुँचा और कहा) ऐ यूसुफ! ऐ सच्चाई के पैकर, आप हम लोगों को इस (ख़्वाब) का जवाब (यानी ताबीर) दीजिए कि सात गायें मोटी हैं, उनको सात दुबली गायें खा गई, और सात बाले हरी हैं और उसके अलावा (सात) सूखी हैं, ताकि मैं उन लोगों के पास लौटकर जाऊँ, ताकि उनको भी मालूम हो जाए। (46) आपने फ़रमाया कि 'तुम सात साल लगातार ग़ल्ला बोना, फिर जो फल काटो उसको बालों ही में रहने देना, (ताकि धुन न लग जाए) हाँ मगर थोड़ा-सा जो तुम्हारे खाने में आए (निकाल लेना) (47) फिर उसके बाद सात साल ऐसे सख्त आएँगे जो कि उस ज़ख़ीरे को खा जाएँगे जिसको तुमने (उन सालों के वास्ते) जमाकर रखा है, हाँ मगर थोड़ा-सा जो रख छोड़ोगे। (48) फिर उसके बाद एक साल ऐसा आएगा जिसमें लोगों के लिए ख़ूब बारिश होगी और उसमें शीरा भी निचोड़ेंगे। (49) ♦

और बादशाह ने हुक्म दिया कि उनको मेरे पास लाओ। फिर जब उनके पास कासिद पहुँचा, आपने फ़रमाया तू अपनी सरकार के पास लौट जा, फिर उनसे दरियाफ़्त कर कि उन औरतों का क्या हाल है जिन्होंने अपने हाथ काट लिए थे, मेरा रब उन औरतों के फरेब को ख़ूब जानता है। (50) कहा कि तुम्हारा क्या वाकिआ है, जब तुमने यूसुफ से अपने मतलब की ख़्वाहिश की। औरतों ने जवाब दिया कि अल्लाह की पनाह, हमको उनमें ज़रा भी बुराई की बात मालूम नहीं हुई। अज़ीज़ की बीवी कहने लगी कि अब तो हक़ बात ज़ाहिर हो ही गई। मैंने ही उनसे अपने मतलब की ख़्वाहिश की थी, और बेशक वही सच्चे हैं। (51) (यूसुफ ने) फ़रमाया कि यह (एहतिमाम) सिर्फ़ इस वजह से है ताकि उसको (यानी अज़ीज़ को) यकीन के साथ मालूम हो जाए कि मैंने उनकी ग़ैर-मौजूदगी में उसकी आबरू पर हाथ नहीं डाला, और यह कि अल्लाह तअाला ख़ियानत करने वालों के फरेब को चलने नहीं देता। (52)

(पृष्ठ 432 का शेष)

हज़रत यूसुफ अलैहिस्सलाम पर कोई शुब्हा नहीं हो सकता। और यह जो फ़रमाया: 'तो कैदख़ाने में और भी चन्द साल उनका रहना हुआ' यह बतौर इताब के नहीं फ़रमाया बल्कि महज़ भूल जाने पर इसका मुरत्तब करना मक़सद है कि वह भूल गया इसलिए यूसुफ अलैहिस्सलाम की रिहाई का कोई सामान न हुआ।

7. दो जवाब इसलिए दिए कि पहले जवाब से बादशाह के दिल से परेशानी और वस्वसा दूर करना है, और दूसरे जवाब से अपना उज़्र ज़ाहिर करना है। खुलासा यह कि अब्बल तो ऐसे ख़्वाब काबिले ताबीर नहीं, दूसरे हम इस फ़न से वाकिफ़ नहीं।

1. यानी उन सात मोटी गायों और सात हरी बालों से पैदावार और बारिश के साल मुराद हैं।

2. मतलब यह था कि उनको बुलाकर मेरा हाल उस वाकिफ़ के मुताल्लिक जिसमें मुझको कैद किया गया था तफ़्तीश किया जाए, और औरतों के हाल से मुराद उनका यूसुफ अलैहिस्सलाम के हाल से वाकिफ़ या नावाकिफ़ होना है। उन औरतों की तख़्सीस शायद इसलिए की हो कि उनके सामने जुलेखा ने कबूल किया था कि 'वाकई मैंने इससे अपना मक़सद हासिल करने की ख़्वाहिश की थी मगर यह पाक रहा'। यूसुफ अलैहिस्सलाम के अपने पाकदामन होने के इस एहतिमाम से मालूम हुआ कि तोहमत को हटाने में कोशिश करना पसन्दीदा बात है। हदीसों में इसका पसन्दीदा होना आया है। अन्य फ़ायदों के साथ इसका एक फ़ायदा यह भी है कि लोग ग़ीबत से बचेँगे और अपना दिल भी तश्वीश से महफूज़ रहेगा।

3. यानी वे बिलकुल पाक व साफ़ हैं।

तेरहवाँ पार: व मा उबर्रिउ

सूर: यूसुफ (आयत 53 से 111)

और (बाकी) मैं अपने नफ्स को (जात के एतिबार से) बरी (और पाक) नहीं बतलाता, (क्योंकि) नफ्स तो (हर एक का) बुरी ही बात बतलाता है, सिवाय उस (नफ्स) के जिसपर मेरा रब रहम करे,¹ बेशक मेरा रब बड़ी मरिफ़रत वाला, बड़ी रहमत वाला है। (53) और (यह सुनकर) बादशाह ने कहा कि उनको मेरे पास लाओ, मैं उनको खास अपने (काम के) लिए रखूँगा। पस जब उसने (यानी बादशाह ने) उनसे बातें कीं तो (उनसे) कहा कि तुम हमारे नज़दीक आज (से) इज़्ज़त व इकराम वाले और मोतबर हो। (54) (यूसुफ अलैहिस्सलाम ने) फ़रमाया कि मुल्की खज़ानों पर मुझको मामूर कर दो, मैं (उनकी) हिफ़ाज़त भी रखूँगा (और) ख़ूब वाकिफ़ (भी) हूँ।² (55) और हमने ऐसे (अजीब) अन्दाज़ पर यूसुफ़ को मुल्क में बाइख़्तियार बना दिया कि उसमें जहाँ चाहें रहें-सहें,³ हम जिसपर चाहें अपनी इनायत मुतवज्जह कर दें और हम नेकी करने वालों का अज़्र ज़ाया नहीं करते।⁴ (56) और आख़िरत का अज़्र कहीं ज़्यादा बढ़कर है, ईमान और तक्वा वालों के लिए।⁵ (57) ♦

और (किनआन में भी अकाल पड़ा तो) यूसुफ़ के भाई आए फिर उनके (यानी यूसुफ़ के) पास पहुँचे, सो उन्होंने (यानी हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने) उनको पहचान लिया और उन्होंने उनको (यानी यूसुफ़ को) नहीं पहचाना। (58) और जब उन्होंने (यानी यूसुफ़ ने) उनके (ग़ल्ले का) सामान तैयार कर दिया तो (चलते वक़्त) फ़रमा दिया कि अपने अल्लाती “माँ की तरफ़ से सौतेले” भाई को भी (साथ) लाना (ताकि उसका हिस्सा भी दिया जा सके), तुम देखते नहीं हो कि मैं पूरा नापकर देता हूँ, और मैं सबसे ज़्यादा मेहमान नवाज़ी करता हूँ।⁶ (59) और अगर तुम (दोबारा आए और) उसको मेरे पास न लाएँ तो न मेरे पास तुम्हारे नाम का ग़ल्ला होगा और न तुम मेरे पास आना। (60) वे बोले (देखिए) हम (अपनी कोशिश भर तो) उसके बाप से उसको माँगेंगे और हम (इस काम को) ज़रूर करेंगे। (61) और उन्होंने (यानी यूसुफ़ ने) अपने नौकरों से कह दिया कि उनकी जमा-पूँजी उन (ही) के सामान में (छुपाकर) रख दो, ताकि जब घर जाएँ तो उसको पहचानें, शायद (यह एहसान व करम देखकर) फिर दोबारा आएँ।⁷ (62) गरज़ जब वह लौटकर अपने बाप (याकूब) के पास पहुँचे, कहने लगे ऐ अब्बा!⁸ हमारे लिए (कतई तौर पर) ग़ल्ले की बन्दिश कर दी गई, सो आप हमारे भाई (बिनयामीन) को हमारे साथ भेज दीजिए ताकि हम (फिर) ग़ल्ला ला सकें, और हम उनकी पूरी हिफ़ाज़त रखेंगे। (63) उन्होंने (यानी याकूब अलैहि. ने) फ़रमाया कि बस (रहने दो) मैं इसके बारे में भी तुम्हारा वैसा ही एतिबार करता हूँ जैसा इससे पहले इसके भाई (यूसुफ़) के बारे में तुम्हारा एतिबार कर चुका हूँ। सो अल्लाह (के सुपुर्द, वही) सबसे बढ़कर निगहबान है, और वह सब मेहरबानों से ज़्यादा मेहरबान है। (64)

1. खुलासा यह कि मेरी पाकीज़गी और पाकदामनी मेरे नफ्स का ज़ाती कमाल नहीं कि इसके खिलाफ़ हो ही न सके, बल्कि अल्लाह की रहमत व इनायत का असर है, इसलिए वह बुराई का हुक्म नहीं करता वरना जैसे औरों के नुफ़ूस हैं वैसा ही मेरा होता।

2. चुनाँचे बजाय इसके कि उनको कोई खास ओहदा देता जैसे अपने पूरे इख़्तियारात हर किस्म के दे दिए, गोया हकीकत में बादशाह यही हो गए। अगरचे बराये नाम वह बादशाह रहा, और यह अजीज़ के ओहदे से मशहूर हुए। इससे मालूम हुआ कि जब किसी काम की अपने अन्दर काबलियत देखें तो खुद उसकी दरखास्त जायज़ है, मगर मकसूद नफ़ा पहुँचाना हो, न कि नफ़्स-परवरी।

3. यानी या तो वह वक़्त था कि कुएँ में कैद थे, फिर अजीज़ की मातहत में बन्दी रहे, फिर कैदख़ाने में बन्द रहे। और या आज यह खुदमुख्तारी और आज़ादी इनायत हुई।

4. यानी दुनिया में भी नेकी का अज़्र है कि पाकीज़ा ज़िन्दगी अता फरमाते हैं। (शेष तफ़सीर पृष्ठ 438 पर)

और (इस गुप्तगू के बाद) जब उन्होंने अपना सामान खोला तो (उसमें) उनको उनकी जमा-पूँजी (भी) मिली कि उन्हीं को वापस कर दी गई। कहने लगे कि ऐ अब्बा! (लीजिए) और हमको क्या चाहिए, यह हमारी जमा-पूँजी भी तो हम ही को लौटा दी गई है, और अपने घर वालों के वास्ते (और) रसद लाएँगे और अपने भाई की खूब हिफाज़त रखेंगे, और एक ऊँट का बोझ गल्ला और ज़्यादा लाएँगे, यह थोड़ा-सा गल्ला है। (65) उन्होंने (यानी याकूब अलैहि. ने) फ़रमाया कि उस वक़्त तक हरगिज़ इसको तुम्हारे साथ न भेजूँगा जब तक कि अल्लाह की कसम खाकर मुझको पक्का कौल न दोगे कि तुम इसको ज़रूर ले ही आओगे, हाँ अगर धिर ही जाओ (तो मजबूरी है)। (घुनाँचे सबने इसपर कसम खाई) सो जब वे कसम खाकर उन्हें (यानी अपने बाप को) कौल दे चुके तो उन्होंने फ़रमाया कि हम लोग जो कुछ बात-चीत कर रहे हैं यह सब अल्लाह ही के हवाले है।¹ (66) और (चलते वक़्त) उन्होंने (यानी याकूब ने उनसे) फ़रमाया कि ऐ मेरे बेटो! सब-के-सब एक ही दरवाज़े से मत जाना, बल्कि अलग-अलग दरवाज़ों से जाना,² और मैं खुदा के हुक्म को तुमपर से टाल नहीं सकता। हुक्म तो बस अल्लाह ही का (चलता) है, (बावजूद इस ज़ाहिरी तदबीर के दिल से) उसी पर भरोसा रखता हूँ, और भरोसा करने वालों को उसी पर भरोसा करना चाहिए।³ (67) और जब (मिस्र पहुँचकर) जिस तरह उनके बाप ने कहा था (उसी तरह शहर के) अन्दर दाख़िल हुए (तो बाप का अरमान पूरा हो गया, बाकी) उनको (यानी उनके बाप को उन्हें यह तदबीर बतलाकर) उनसे खुदा का हुक्म टालना मकसूद न था लेकिन याकूब (अलैहिस्सलाम) के जी में (तदबीर के दर्जे में) एक अरमान (आया) था जिसको उन्होंने ज़ाहिर कर दिया, और वह बेशक बड़े आलिम थे, इस वजह से कि हमने उनको इल्म दिया था,⁴ लेकिन अक्सर लोग इसका इल्म नहीं रखते।⁵ (68) ♦

और जब ये लोग (यानी यूसुफ अलैहिस्सलाम के भाई) यूसुफ के पास पहुँचे तो उन्होंने अपने भाई को अपने साथ मिला लिया (और तन्हाई में उनसे) कहा कि मैं तेरा भाई (यूसुफ) हूँ, सो ये लोग जो कुछ (बद-सुलूकी) करते रहे हैं उसका रंज मत करना।⁶ (69) फिर जब उन्होंने (यानी यूसुफ अलैहि. ने) उनका सामान तैयार कर दिया तो पानी पीने का बरतन अपने भाई के सामान में रख दिया।⁷ फिर एक पुकारने वाले ने पुकारा कि ऐ काफ़िले वालो! तुम ज़रूर चोर हो। (70) वे उन (तलाश करने वालों) की तरफ़ मुतवज्जह होकर कहने लगे कि तुम्हारी क्या चीज़ गुम हो गई है। (71) उन्होंने कहा कि हमको बादशाही पैमाना नहीं

(पृष्ठ 436 का शेष)

5. गरज़ यूसुफ अलैहिस्सलाम ने बाइख़्तियार होकर गल्ला पैदा कराना और जमा कराना शुरू किया और सात साल के बाद अकाल शुरू हुआ, यहाँ तक कि दूर-दूर से यह ख़बर सुनकर कि मिस्र में हुक्मत की तरफ़ से गल्ला फ़रोख़्त होता है, गिरोह के गिरोह लोग आना शुरू हुए और किनआन में भी अकाल पड़ा तो यूसुफ अलैहिस्सलाम के भाई बिनयामीन के अलावा गल्ला लेने मिस्र आए। अगली आयतों में दूर तक इसी वाकिए को बयान किया गया है।

6. पस अगर तुम्हारा वह भाई आएगा तो उसको भी पूरा हिस्सा दूँगा, और उसकी खूब खातिर-मुदारात करूँगा, जैसा कि तुमने अपने साथ देखा।

7. तो मैं समझूँगा कि तुम मुझको धोखा देकर गल्ला ज़्यादा लेना चाहते थे।

8. चूँकि यूसुफ अलैहिस्सलाम को उनका दोबारा आना और उनके भाई का लाना मन्ज़ूर था इसलिए कई तरह से इसकी तदबीर की, अव्वल वायदा किया कि अगर उसको लाओगे तो उसका हिस्सा भी मिलेगा। दूसरे यह डॉट-डपट भी दी कि अगर न लाओगे तो अपना हिस्सा भी न पाओगे। तीसरे दाम जो नक़द के अलावा कोई और चीज़ थी वापस कर दिए, दो ख़्याल से एक यह कि इस एहसान व करम को ज़ेहन में रखकर फिर आएँगे, दूसरे इसलिए कि शायद इनके पास और दाम न हों और ख़ाली हाथ होने की वजह से फिर न आ सकें। लेकिन जब यह दाम होंगे तो इन्हीं को लेकर फिर आ सकते हैं।

9. हमारी बड़ी खातिर हुई और गल्ला भी मिला, मगर बिनयामीन का हिस्सा नहीं मिला बल्कि बिना बिनयामीन को साथ लाए आइन्दा भी बन्दिश कर दी गई।

1. यानी वही हमारे कौल व क़रार का गवाह है कि सुन रहा है, और वही इस कौल को (शेष तफ़सीर पृष्ठ 440 पर)

मिलता, (वह गायब है) और जो शख्स उसको (लाकर) हाज़िर करे उसको एक ऊँट के बोझ के बराबर गुल्ला मिलेगा, और मैं उस (के दिलवाने) का जिम्मेदार हूँ। (72) ये लोग कहने लगे कि खुदा की कसम तुमको खूब मालूम है कि हम लोग मुल्क में फ़साद फैलाने नहीं आए, और हम लोग चोरी करने वाले नहीं।¹ (73) उन (ढूँढ़ने वाले) लोगों ने कहा (अच्छा) अगर तुम झूठे निकले तो उस चोर की क्या सज़ा? (74) उन्होंने जवाब दिया कि जिस शख्स के सामान में मिले बस वही शख्स अपनी सज़ा है,² हम लोग ज़ालिमों (यानी चोरों) को ऐसी ही सज़ा दिया करते हैं।³ (75) फिर उन्होंने (यानी यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने) अपने भाई के सामान के थैले से पहले तलाशी की शुरूआत दूसरे भाइयों के (सामान के) थैलों से की, फिर (आखिर में) उस (बरतन को) अपने भाई के (सामान के) थैले से बरामद कर लिया। हमने यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) की खातिर से इस तरह तदबीर फ़रमाई।⁴ वह (यानी यूसुफ़ अलैहिस्सलाम) अपने भाई को उस (मिस्र के) बादशाह के कानून की रू से नहीं ले सकते थे,⁵ मगर यह कि अल्लाह ही को मन्ज़ूर था। हम जिसको चाहते हैं (इल्म में) खास दर्जों तक बढ़ा देते हैं, और तमाम इल्म वालों से बढ़कर एक बड़ा इल्म वाला है। (76) कहने लगे, (साहिब) अगर उसने चोरी की तो (ताज्जुब नहीं, क्योंकि) इसका एक भाई (था वह) भी (इसी तरह) इससे पहले चोरी कर चुका है। पस यूसुफ़ ने इस बात को (जो आगे आती है) अपने दिल में पोशीदा रखा और इसको उनके सामने (ज़बान से) ज़ाहिर नहीं किया, यानी (दिल में) यूँ कहा कि उस (चोरी) के दर्जे में तुम तो और भी ज़्यादा बुरे हो, और जो कुछ तुम बयान कर रहे हो उस (की हकीकत) का अल्लाह ही को खूब इल्म है।⁶ (77) कहने लगे कि ऐ अज़ीज़! इस (बिनयामीन) का एक बहुत बड़ा बाप है, सो (आप ऐसा कीजिए कि) इसकी जगह हम में से एक को रख लीजिए, (और अपना गुलाम बना लीजिए) हम आपको नेक-मिज़ाज देखते हैं। (78) उन्होंने (यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने) कहा कि ऐसी (बेइन्साफ़ी की) बात से खुदा बचाए कि जिसके पास हमने अपनी चीज़ पाई है उसके सिवा दूसरे शख्स को पकड़ कर रख लें, इस हालत में तो हम बड़े बेइन्साफ़ समझे जाएँगे। (79) ♦

फिर जब उनको उनसे (यानी यूसुफ़ अलैहिस्सलाम से) बिल्कुल उम्मीद न रही (कि बिनयामीन को देंगे) तो (उस जगह से) अलग होकर आपस में मशिवरा करने लगे। उन सबमें जो बड़ा था उसने कहा, क्या तुमको मालूम नहीं तुम्हारे बाप तुमसे खुदा की कसम खिलाकर पक्का कौल ले चुके हैं, और इससे पहले यूसुफ़ के बारे में तुम किस कदर कोताही कर ही चुके हो। सो मैं तो इस ज़मीन से टलता नहीं जब तक कि मेरे बाप मुझको (हाज़िरी की) इजाज़त न दें, या अल्लाह तआला मेरे लिए इस मुश्किल को सुलझा दे, और वही खूब सुलझाने वाला है। (80) तुम वापस अपने बाप के पास जाओ, और (जाकर उनसे) कहो कि अब्बा! आपके साहिबज़ादे

(पृष्ठ 438 का शेष) पूरा कर सकता है। इस इशार्द से दो मकसद हुए, अव्वल अपने कौल का पास व लिहाज़ रखने की तरगीब व तंबीह कि अल्लाह को हाज़िर-नाज़िर समझने से यह बात होती है, और दूसरे इस तदबीर की हद का आखिरी दर्जा तकदीर को करार देना जो कि तवक्कुल का हासिल है। गरज़ मिस्र के सफ़र को मय बिनयामीन सब दोबारा तैयार हुए।

2. बाज़ बुरी चीज़ों जैसे बुरी नज़र वगैरह से बचने की यह सिर्फ़ एक जाहिरी तदबीर है।

3. यानी तुम भी उसी पर भरोसा रखना, तदबीर पर नज़र मत करना।

4. पस वह इल्म के खिलाफ़ तदबीर को एतिकादी तौर पर हकीकतन असर करने वाली कब समझ सकते थे।

5. बल्कि जहालत की वजह से तदबीर को असल असर करने वाली एतिकाद कर लेते हैं। यहाँ यह सवाल पैदा होता है कि पहली बार जो ये गुल्ला लेने गए थे उस वक़्त याकूब अलैहिस्सलाम ने उनसे यह क्यों न कहा कि एक ही दरवाज़े से दाखिल न होना? इसका जवाब यह है कि पहली बार मिस्र वाले उनको पहचानते नहीं थे, इसलिए किसी ने उनकी तरफ़ ध्यान भी न किया था। इस बार जो यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने उनके साथ इनायत का खास बर्ताव किया तो उनपर नज़रें पड़ने लगीं, और थे सब हसीन व खूबसूरत, इसलिए बुरी नज़र और हसद वगैरह का अन्देशा हुआ।

6. क्योंकि अब तो अल्लाह ने हमको मिला दिया है, अब सब ग़म भुला देना चाहिए। यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के साथ बद-सुलूकी तो ज़ाहिर और मशहूर है, रहा बिनयामीन के साथ या तो (पृष्ठ 438 की बकिया और पृष्ठ 440 की तफ़सीर पृष्ठ 442-446 पर)

(बिनयामीन) ने चोरी की, (इसलिए गिरफ्तार हुए) और हम तो वही बयान करते हैं जो हमको (देखने से) मालूम हुआ है, और हम ग़ैब की बातों के तो हाफ़िज़ नहीं थे। (81) और उस बस्ती (यानी मिस्र) वालों से पूछ लीजिए जहाँ हम (उस वक़्त) मौजूद थे, और उस काफ़िले वालों से पूछ लीजिए जिनमें हम शामिल होकर (यहाँ) आए हैं।¹ और यकीन जानिए कि हम बिल्कुल सच कहते हैं। (82) वह (यानी याकूब अलैहिस्सलाम) फ़रमाने लगे कि बल्कि तुमने अपने दिल से एक बात बना ली, सो सब्र ही करूँगा, (जिसमें शिकायत का नाम न होगा), (मुझको) अल्लाह से उम्मीद है कि उन सबको मुझ तक पहुँचा देगा, (क्योंकि) वह ख़ूब वाकिफ़ है,² बड़ी हिक़मत वाला है।³ (83) और उनसे दूसरी तरफ़ रुख़ कर लिया और कहने लगे कि हाय यूसुफ़, अफ़सोस! और ग़म से (रोते-रोते) उनकी आँखें सफ़ेद पड़ गईं, और वह (ग़म से जी ही जी में) घुटा करते थे।⁴ (84) (बेटे) कहने लगे, खुदा की क़सम (मालूम होता है) तुम हमेशा ही यूसुफ़ की यादगारी में लगे रहोगे, यहाँ तक कि धूल-धूलकर जान होंठों पर आ जाएगी या यह कि बिल्कुल मर ही जाओगे।⁵ (85) उन्होंने (यानी याकूब अलैहिस्सलाम ने) फ़रमाया कि मैं तो अपने रंज व ग़म की सिर्फ़ अल्लाह से शिकायत करता हूँ और अल्लाह की बातों को जितना मैं जानता हूँ तुम नहीं जानते। (86) ऐ मेरे बेटो! जाओ यूसुफ़ और उनके भाई की तलाश करो, और अल्लाह की रहमत से नाउम्मीद मत हो, बेशक अल्लाह की रहमत से वही लोग नाउम्मीद होते हैं जो काफ़िर हैं। (87) फिर जब वे उनके (यानी यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के) पास पहुँचे। कहने लगे ऐ अज़ीज़! हमको और हमारे घर वालों को (अकाल की वजह से) बड़ी तकलीफ़ पहुँच रही है, और हम कुछ यह निकम्मी “यानी बेकार-सी और मामूली” चीज़ लाए हैं, सो आप पूरा ग़ल्ला दे दीजिए और हमको ख़ैरात (समझकर) दे दीजिए, बेशक अल्लाह तआला ख़ैरात देने वालों को (बेहतरीन) बदला देता है।⁶ (88) उन्होंने (यानी यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने) फ़रमाया, (कहो) वह भी तुमको याद है जो कुछ तुमने यूसुफ़ और उसके भाई के साथ (बर्ताव) किया था, जबकि तुम्हारी जहालत का ज़माना था।⁷ (89) कहने लगे, क्या सचमुच तुम ही यूसुफ़ हो। उन्होंने फ़रमाया, (हाँ) मैं यूसुफ़ हूँ और यह (बिनयामीन) मेरा (हकीकी) भाई है। हमपर अल्लाह तआला ने बड़ा एहसान किया,⁸ वाकई जो शख़्स गुनाहों से बचता है और सब्र करता है तो अल्लाह ऐसे नेक काम करने वालों का अज़्र ज़ाया नहीं किया करता।⁹ (90) वे कहने लगे कि खुदा की क़सम कुछ शक़ नहीं कि तुमको अल्लाह तआला ने हमपर फ़ज़ीलत अता फ़रमाई,¹⁰ और बेशक हम (इसमें) ख़तावार थे। (91) उन्होंने

(पिछले पृष्ठ का शेष) उनको भी कुछ तकलीफ़ दी हो, वरना यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की जुदाई, क्या उनके हक़ में कुछ कम तकलीफ़ थी। फिर दोनों भाइयों ने मशिवरा किया कि कोई ऐसी सूरत हो कि बिनयामीन यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के पास रहें, क्योंकि वैसे रहने में तो और भाइयों के क़सम खाने और कौल व क़रार की वजह से इसरार होगा, नाहक़ का झगड़ा होगा। फिर अगर वजह भी ज़ाहिर हो गई तो राज़ खुला और अगर पोशीदा रही तो याकूब अलैहिस्सलाम का रंज बढ़ेगा कि बिला सबब क्यों रखे गए या क्यों रहे। यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि तदबीर तो है मगर ज़रा-सी तुम्हारी बदनामी है। बिनयामीन ने कहा, कुछ परवाह नहीं। गरज़ उनमें यह मामला क़रार पा गया जिसका बयान अगली आयत में है।

7. वही बरतन पैमाना ग़ल्ला देने का भी था।

(तफ़सीर पृष्ठ 440).

1. यानी हमारा यह तरीका और आदत नहीं।

2. यानी चोरी के बदले में खुद उसकी ज़ात को माल वाला अपना गुलाम बना ले।

3. यानी हमारी शरीअत में यही मसला और अमल है।

4. यानी अगरचे यूसुफ़ अलैहिस्सलाम बड़े आलिम व अक़लमन्द थे, मगर फिर भी हमारी तरफ़ से तदबीर सुझाए जाने के मोहताज थे, इसलिए कि किसी का इल्म ज़ाती और ग़ैर-महदूद नहीं।

5. दुरें मन्सूर में मुजाहिद रहमतुल्लाहि अलैहि से नक़ल किया गया है कि मिस्र का बादशाह मुसलमान हो गया था, लेकिन ‘मा का-न लियाअखु-ज़...’ से मालूम होता है कि यह रिवायत सही नहीं, (पृष्ठ 440 की बकिया और पृष्ठ 442 की तफ़सीर पृष्ठ 444-448 पर)

(यानी यूसुफ अलैहिस्सलाम) ने फरमाया कि तुमपर आज कोई इल्जाम नहीं,¹ अल्लाह तआला तुम्हारा कुसूर माफ करे, और वह सब मेहरबानों से ज्यादा मेहरबान है।² (92) अब तुम मेरा यह कुर्ता (भी) लेते जाओ और इसको मेरे बाप के चेहरे पर डाल दो, (इससे) उनकी आँखें रोशन हो जाएँगी,³ और अपने (बाकी) घर वालों को (भी) सबको मेरे पास ले आओ। (93) ♦

और जब काफिला चला तो उनके बाप ने कहना शुरू किया कि अगर तुम मुझको बुढ़ापे में बहकी बातें करने वाला न समझो तो (एक बात कहूँ कि) मुझको तो यूसुफ (अलैहिस्सलाम) की खुशबू आ रही है।⁴ (94) वे (पास वाले) कहने लगे कि खुदा की कसम आप तो अपने उसी पुराने ग़लत ख्याल में मुब्तला हैं। ♦ (95) पस जब खुशख़बरी लाने वाला आ पहुँचा तो (आते ही) उसने वह कुर्ता उनके मुँह पर (लाकर) डाल दिया। पस फौरन ही उनकी आँखें खुल गईं, और (बेटों से) फरमाया, क्यों मैंने तुमसे कहा न था कि अल्लाह तआला की बातों को जितना मैं जानता हूँ तुम नहीं जानते। (96) सब बेटों ने कहा कि ऐ हमारे बाप! हमारे लिए (खुदा से) हमारे गुनाहों की मग़्फ़िरत की दुआ कीजिए, हम बेशक ख़तावार थे।⁵ (97) उन्होंने (यानी याकूब अलैहिस्सलाम ने) फरमाया जल्द ही तुम्हारे लिए अपने रब से मग़्फ़िरत की दुआ करूँगा, बेशक वह बख़्शने वाला, रहम करने वाला है।⁶ (98) फिर जब ये सब-के-सब यूसुफ के पास पहुँचे तो उन्होंने अपने माँ-बाप को (अदब के तौर पर) अपने पास जगह दी, और कहा कि सब मिस्र में चलिए (और) खुदा को मन्ज़ूर है तो (वहाँ) अमन-चैन से रहिए। (99) और अपने माँ-बाप को (शाही) तख़्त पर ऊँचा बिठाया, और सब-के-सब उनके (यानी यूसुफ अलैहिस्सलाम के) आगे सन्धे में गिर गए,⁷ और उन्होंने (यानी यूसुफ अलैहिस्सलाम ने) कहा कि ऐ मेरे अब्बा! यह है मेरे ख़्वाब की ताबीर जो पहले ज़माने में देखा था, जिसको मेरे रब ने सच्चा कर दिया। और उसने (यानी खुदा ने) मेरे साथ एहसान किया कि (एक तो) उसने मुझे कैद से निकाला और (दूसरा यह कि) तुम सबको बाहर से (यहाँ) लाया। (यह सब कुछ) इसके बाद (हुआ) कि शैतान ने मेरे और मेरे भाइयों के बीच फ़साद डलवा दिया था,⁸ बेशक मेरा रब जो चाहता है उसकी उम्दा तदबीर करता है, बेशक वह बड़ा इल्म वाला (और) हिक्मत वाला है।⁹ (100) ऐ मेरे परवर्दिगार! तूने मुझको हुक्मत का बड़ा हिस्सा दिया और मुझको ख़्वाबों की ताबीर देना तालीम फरमाया (जो कि एक बड़ा इल्म है), ऐ आसमानों और ज़मीन के पैदा करने वाले! तू मेरा कारसाज़ है दुनिया में भी और आख़िरत में भी, मुझको पूरी फरमाँबरदारी की हालत में दुनिया से उठा ले और मुझको खास नेक बन्दों में शामिल कर ले।¹⁰ (101) (ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम!) यह किस्सा ग़ैब की ख़बरों में से है जो हम आपको वह्य के ज़रिये से बतलाते

(पिछले पृष्ठ का शेष) वरना इस्लाम के बाद अपना क़ानून ग़ैर-शरई क्यों रखता। अलबत्ता अगर यह कहा जाए कि आम रिआया से मग़लूब रहा हो इसलिए क़ानून जारी न कर सका हो तो मुम्किन है। दूसरे यह कि यूसुफ अलैहिस्सलाम अपना शरई क़ानून जारी करने के मुख़्तार न थे तो हुक्मत का ओहदा क्यों लिया। जवाब यह है कि शरई क़ानून जारी न करने से यह लाज़िम नहीं आता कि ग़ैर-शरई क़ानून जारी करते हों, और एतिराज़ का मक़ाम यह दूसरी चीज़ हो सकती है। दूसरे जहाँ शरई तौर पर हद 'यानी इस्लामी सज़ा का क़ानून' हो और क़ानून सज़ा हो और हद का इख़्तियार न हो तो सज़ा के न होने से उसका वजूद ग़नीमत है, उसको ग़ैर-मुख़्तार के लिए बग़ैर शरई क़ानून का हाकिम न कहेंगे।

6. यानी हम दोनों भाइयों से तो चोरी का जुर्म नहीं हुआ और तुमने तो इतना बड़ा काम किया कि कोई माल ग़ायब करता है तुमने तो आदमी ग़ायब कर दिया कि मुझको बाप से बिछड़ा दिया। और जाहिर है कि आदमी की चोरी माल की चोरी से ज्यादा बुरी है। और यूसुफ अलैहिस्सलाम के भाइयों ने यह जो कहा कि इसके भाई ने भी चोरी की थी, इसकी हकीकत दुर्गे मन्सूर में यह लिखी है कि यूसुफ अलैहिस्सलाम को उनकी फूफी परवरिश करती थी, जब होशियार हुए तो याकूब अलैहिस्सलाम ने उन्हें वापस लेना चाहा, लेकिन वह अपने पास रखना चाहती थीं इसलिए उनकी कमर में एक पटका कपड़ों के अन्दर बाँधकर मशहूर कर दिया कि पटका गुम हो गया, और जब तलाशी ली तो उनकी कमर में निकला (पृष्ठ 440 की बक़िया और पृष्ठ 442, 444 की तफ़सीर पृष्ठ 446-450 पर)

हैं, (और) आप उन (यूसुफ के भाइयों) के पास उस वक्त मौजूद न थे जबकि उन्होंने अपना इरादा पुख्ता कर लिया था और वे तदबीरें कर रहे थे।¹ (102) और अक्सर लोग ईमान नहीं लाते गो आपका कैसा ही जी चाहता हो। (103) और आप उनसे इसपर कुछ मुआवज़ा तो चाहते नहीं। यह (कुरआन) तो तमाम जहान वालों के लिए सिर्फ नसीहत है। (104) ♦

और बहुत-सी निशानियाँ हैं आसमानों में और ज़मीन में, जिनपर उनका गुज़र होता रहता है,² और वे उनकी तरफ़ (बिलकुल) तवज्जोह नहीं करते। (105) और अक्सर लोग जो खुदा को मानते भी हैं तो इस तरह कि शिर्क भी करते जाते हैं।³ (106) सो क्या फिर भी इस बात से मुत्मइन हुए (बैठे) हैं कि उनपर खुदा के अज़ाब की कोई ऐसी आफ़त आ पड़े जो उनको घेर ले या उनपर अचानक क़ियामत आ जाए और उनको (पहले से) ख़बर भी न हो।⁴ (107) आप फ़रमा दीजिए कि यह मेरा रास्ता है, मैं (लोगों को) खुदा की (तौहीद की) तरफ़ इस तौर पर बुलाता हूँ कि मैं दलील पर कायम हूँ, मैं भी और मेरे साथ वाले भी,⁵ और अल्लाह (शिर्क से) पाक है और मैं मुशिरकों में से नहीं हूँ।⁶ (108) और हमने आपसे पहले मुख़्तलिफ़ बस्ती वालों में से जितने (रसूल) भेजे सब आदमी ही थे (कोई भी फ़रिश्ता न था), और (ये लोग जो बेफ़िक्र हैं, तो) क्या ये लोग मुल्क में (कहीं) चले-फिरे नहीं कि (अपनी आँखों से) देख लेते कि उन लोगों का कैसा (बुरा) अन्जाम हुआ जो इनसे पहले (काफ़िर) हो गुज़रे हैं, और अलबत्ता आख़िरत की दुनिया उन लोगों के लिए निहायत ख़ैर व फ़लाह की चीज़ है जो एहतियाल रखते हैं, सो क्या तुम इतना भी नहीं समझते।⁷ (109) यहाँ तक कि जब पैग़म्बर (इस बात से) मायूस हो गए और उन पैग़म्बरों को गुमान ग़ालिब हो गया कि हमारी समझ ने ग़लती की, उनको हमारी मदद पहुँची,⁸ फिर (उस अज़ाब से) हमने जिसको चाहा वह बचा लिया गया,⁹ और हमारा अज़ाब मुज़्रिम लोगों से नहीं हटता।¹⁰ (110) उन (नबियों और पहली उम्मतों) के किस्से में समझदार लोगों के लिए (बड़ी) इबरत है। यह कुरआन (जिसमें किस्से हैं) कोई घड़ी हुई बात तो है नहीं (कि इससे इबरत न होती) बल्कि इससे पहले जो (आसमानी) किताबें हो चुकी हैं यह उनकी तस्दीक़ करने वाला है और हर ज़रूरी बात का खुलासा करने वाला है, और ईमान वालों के लिए हिदायत का ज़रिया और रहमत है। (111) ♦

(पिछले पृष्ठ का शेष)

और उस शरीअत के कानून के मुवाफ़िक़ यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को फूफ़ी के कब्जे में रहना पड़ा, यहाँ तक कि उनकी फूफ़ी ने वफ़ात पाई और आप याकूब अलैहिस्सलाम के पास आ गए।

(तफ़सीर पृष्ठ 442)

1. मालूम होता है कि किनआन या आस-पास के और लोग भी ग़ल्ला लेने गए होंगे।

2. इसलिए उसको सबकी ख़बर है कि कहाँ-कहाँ और किस-किस हाल में हैं।

3. वह जब मिलाना चाहेगा तो हज़ारों असबाब व तदबीरें दुरुस्त कर देगा।

4. क्योंकि ज़्यादा रोने से आँखों की सियाही गुम हो जाती है और आँखें बेरौनक़ या बिलकुल बेनूर हो जाती हैं, और गुम की शिद्दत के साथ जब बर्दाश्त भी शिद्दत की होगी जैसा कि साबिरीन की शान है तो क़न्म (यानी घुटन) की कैफ़ियत पैदा होगी।

5. याकूब अलैहिस्सलाम का मख़्लूक की मुहब्बत में इस क़दर रोना वस्वसे का सबब न हो, क्योंकि मुहब्बत एक बेइख़्तियारी चीज़ है और रोना भी दिल के नर्म होने और रहम की दलील है, और ख़ासकर उस वक्त जबकि मुहब्बत का सबब कोई दीनी मामला हो। और किसी को शुब्हा न हो कि जब याकूब अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया था: 'फ़-सब्क़ु ज़मील' तो फिर ज़बान पर शिकायत क्यों लाए। इसका जवाब खुद कुरआन में है कि: 'अश्कू बस्ती व हुज़्नी इलल्लाहि' यानी मख़्लूक के पास शिकायत ले जाना सब्र ज़मील के मनाफ़ी है न कि ख़ालिफ़ की तरफ़ रज़ू करना, इसलिए कि यह तो दुआ और अल्लाह से माँगना है जो कि मतलूब है।

6. यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने जो उनके ये आज़िज़ी भरे अल्फ़ाज़ सुने तो न रहा गया और बेइख़्तियार चाहा कि अब उनसे खुल जाऊँ और अज़ब नहीं कि दिल के नूर से मालूम हो गया हो कि इस बार उनको तजस्सुस भी है, और यह मालूम हो गया हो कि अब जुदाई का ज़माना ख़त्म हो चुका। पस तआरुफ़ (परिचय) की तम्हीद के तौर पर यह बात फ़रमाई जो अगली आयत में ज़िक्र है।

7. यह सुनकर चकराए कि अज़ीज़े मिस्र को (पृष्ठ 442 की बक़िया और पृष्ठ 444, 446 की तफ़सीर पृष्ठ 448-454 पर)

13 सूर: रअद 96

सूर: रअद मदीना में नाज़िल हुई। इसमें 43 आयतें और 6 रुकूअ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

अलिफ्-लाम्-मीम्-रा।¹ यह (जो आप सुन रहे हैं) आयतें हैं (एक बड़ी) किताब (यानी कुरआन) की, और जो कुछ आप पर आपके रब की तरफ से नाज़िल किया जाता है बिल्कुल सच है, और लेकिन बहुत-से आदमी ईमान नहीं लाते। (1) अल्लाह ऐसा (कादिर है) कि उसने आसमानों को बिना सुतून के ऊँचा खड़ा कर दिया, चुनाँचे तुम इन (आसमानों) को (इसी तरह) देख रहे हो, फिर अर्श पर कायम हुआ,² और सूरज व चाँद को काम में लगा दिया, हर एक मुकर्ररा वक़्त पर चलता रहता है।³ वही (अल्लाह) हर काम की तदबीर करता है, (और) दलीलों को साफ़-साफ़ बयान करता है ताकि तुम अपने रब के पास जाने का यकीन कर लो।⁴ (2) और वह ऐसा है कि उसने ज़मीन को फैलाया और उस (ज़मीन) में पहाड़ और नहरें पैदा कीं, और उसमें हर किस्म के फूलों से दो-दो किस्म के पैदा किए,⁵ रात (की अँधेरी) से दिन (की रोशनी) को छुपा देता है। इन (ज़िक्र हुए) उमूर में सोचने वालों के (समझने के) वास्ते (तौहीद पर) दलीलें (मौजूद) हैं। (3) और ज़मीन में पास-पास (और फिर) मुख़्तलिफ़ टुकड़े हैं और अंगूरों के बाग़ हैं और खेतियाँ हैं और खजूरें हैं, जिनमें बाज़े तो ऐसे हैं कि एक तने से ऊपर जाकर दो तने हो जाते हैं और बाज़े में दो तने नहीं होते,⁶ सबको एक ही तरह का पानी दिया जाता है, और हम एक को दूसरे पर फलों में फौकियत “यानी बरतरी” देते हैं। इन (ज़िक्र हुए) उमूर में (भी) समझदारों के वास्ते (तौहीद की) दलीलें (मौजूद) हैं।⁷ (4) और (ऐ मुहम्मद!) अगर आपको ताज्जुब हो तो (वाकई) उनका यह कौल ताज्जुब के लायक है कि जब हम खाक हो गए तो क्या हम फिर (क़ियामत के दिन) नए सिरे से पैदा होंगे। ये वे लोग हैं कि उन्होंने अपने रब के साथ कुफ़्र किया और ऐसे लोगों की गर्दनो में (दोज़ख़ में) तौक डाले जाएँगे, और ऐसे लोग दोज़ख़ी हैं (और) वे उसमें हमेशा रहेंगे। (5) और ये लोग आफ़ियत से पहले आपसे मुसीबत (के नाज़िल होने) का तकाज़ा करते

(पिछले पृष्ठ का शेष) यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के वाकिए से क्या सरोकार? उधर उस शुरू के ज़माने के ख़ाब से इहतिमाल था ही कि शायद यूसुफ़ अलैहिस्सलाम किसी बड़े रुतबे को पहुँचें और हम सबको उनके सामने गर्दन झुकानी पड़े, इसलिए इस बात से शक़ हुआ और ग़ौर किया तो कुछ-कुछ पहचाना और वह बात कही जिसका आगे ज़िक्र है।

8. यानी हम दोनों को अब्बल सब्र व तक्वे की तौफ़ीक़ अता फ़रमाई, फिर उसकी बरक़त से हमारी तकलीफ़ को राहत से और फूट को इजतिमा (संगठन) से और माल व ओहदे की कमी को माल व ओहदे की ज़्यादती से तब्दील फ़रमा दिया।

9. यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के भाई पिछले तमाम वाक़िआत को याद करके शर्मिन्दा हुए और माज़िरत के तौर पर वह बात कहने लगे जो अगली आयत में है।

10. और वाकई आप इसी लायक थे।

(तफ़सीर पृष्ठ 444)

1. यानी बेफ़िक्र रहो मेरा दिल साफ़ हो गया।

2. इसी दुआ से यह भी समझ में आ गया कि मैंने भी माफ़ कर दिया।

3. यह इसलिए फ़रमाया कि उनको बीनाई में ख़राबी आने का इल्म हो गया होगा, और याकूब अलैहिस्सलाम का उस कुर्ते के डालने से बीना (यानी देखने वाला) हो जाना मोज़िजे के तौर पर था, और सही रिवायतों की बुनियाद पर कुर्ता कोई ख़ास न था, यही मामूली पहनने का था।

4. यह याकूब अलैहिस्सलाम का मोज़िजा था कि उस कुर्ते में यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के बदन का जो असर था वह महसूस हो गया, और चूँकि मोज़िजा इख़्तियारी नहीं होता इसलिए उससे पहले यह एहसास न हुआ।

5. मतलब यह कि आप भी माफ़ कर दीजिए, क्योंकि आदतन किसी के लिए इस्तिग़फ़ार वही करता है जो खुद भी कोई दारोगीर और पकड़ करना नहीं चाहता। (पृष्ठ 444 की बक़िया और पृष्ठ 446, 448 की तफ़सीर पृष्ठ 450-456 पर)

हैं, हालाँकि इनसे पहले (और काफ़िरोँ पर सज़ाओं के) वाकिआत गुज़र चुके हैं। और यह बात भी यकीनी है कि आपका रब लोगों की ख़ताएँ बावजूद उनकी बेजा हरकतों के माफ़ कर देता है, और यह बात भी यकीनी है कि आपका रब सख़्त सज़ा देता है।¹ (6) और (ये) काफ़िर लोग (यूँ भी) कहते हैं कि उनपर (वह ख़ास) मोज़िज़ा (जो हम चाहते हैं) क्यों नाज़िल नहीं किया गया, (हालाँकि) आप सिर्फ़ डराने वाले (नबी) हैं, और हर कौम के लिए हादी होते चले आए हैं।² (7) ♦

अल्लाह तआला को सब ख़बर रहती है जो कुछ किसी औरत को हमल “यानी गर्भ” रहता है,³ और जो कुछ रहम “यानी बच्चेदानी” में कमी व बेशी होती है। और हर चीज़ अल्लाह के नज़दीक एक ख़ास अन्दाज़ से (मुकर्रर) है। (8) वह (तमाम) छुपी और ज़ाहिर (चीज़ों) का जानने वाला (है), सबसे बड़ा (और) आलीशान है। (9) तुममें से जो शख्स कोई बात चुपके से कहे और जो पुकारकर कहे, और जो शख्स रात में कहे और जो दिन में चले-फिरे, ये सब (खुदा के इल्म में) बराबर हैं।⁴ (10) हर शख्स (की हिफ़ाज़त) के लिए कुछ फ़रिश्ते (मुकर्रर) हैं जिनकी बदली होती रहती है, कुछ उसके आगे और कुछ उसके पीछे कि वे अल्लाह के हुक्म से उसकी हिफ़ाज़त करते हैं।⁵ वाकई अल्लाह तआला किसी कौम की (अच्छी) हालत में बदलाव नहीं करता जब तक कि वे लोग खुद अपनी (सलाहियत की) हालत को नहीं बदल देते।⁶ और जब अल्लाह किसी कौम पर मुसीबत डालना तजवीज़ कर लेता है तो फिर उसके हटने की कोई सूरत ही नहीं, और कोई उसके (यानी खुदा के) सिवा उनका मददगार नहीं रहता।⁷ (11) वह ऐसा है कि तुमको बिजली दिखाता है जिससे डर भी होता है और उम्मीद भी होती है, और वह बादलों को (भी) बुलन्द करता है जो (पानी से) भरे होते हैं। (12) और रअद (फ़रिश्ता) उसकी तारीफ़ के साथ उसकी पाकी बयान करता है और (दूसरे) फ़रिश्ते (भी) उसके ख़ौफ़ से, और वह बिजलियाँ भेजता है, फिर जिसपर चाहे उन्हें गिरा देता है। और वे लोग अल्लाह के

(पिछले पृष्ठ का शेष)

6. इससे उनका माफ़ कर देना भी मालूम हो गया। गरज़ सब तैयार होकर मित्र को चल दिए और यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ख़बर सुनकर स्वागत के लिए मित्र से बाहर तश्रीफ़ ले गए और बाहर ही मुलाकात का बन्दोबस्त किया गया, जिसका बयान अगली आयत में है।

7. इसकी वजह कि पहली मुलाकात में सज़्दा न किया और मित्र पहुँचकर किया, यह थी कि पहली मुलाकात में मुहब्बत का गुल्बा था और मित्र में यूसुफ़ अलैहिस्सलाम अपने शाही तख़्त पर थे। और यह सज़्दा बतौर सलाम के था, जो पहली उम्मतों में जायज़ था। यहाँ यह शुब्हा होता है कि यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने अपने माँ-बाप से इतनी बड़ी ताज़ीम और अदब को क्योंकर ग़वारा किया? इसका जवाब यह है कि याक़ूब और यूसुफ़ अलैहिमस्सलाम दोनों को ख़्वाब से मालूम हुआ था कि ऐसा मामला होने वाला है, इसलिए खुदाई मामलात में कुछ कहना मुश्किन न था। इसके बाद सब हँसी-खुशी रहते रहे, यहाँ तक कि याक़ूब अलैहिस्सलाम के इत्तिकाल का वक़्त आ पहुँचा और वह वसीयत के मुताबिक़ वफ़ात के बाद मुल्क शाम में लेजाकर अपने बुजुर्गों के पास दफ़न किए गए।

8. जिसका तकाज़ा यह था कि उम्र भर मेल-जोल और इत्तिफ़ाक़ न होता, लेकिन अल्लाह तआला की इनायत से मिलाप हो गया।

9. वह अपने इल्म व हिक्मत से सब उमूर की तदबीर दुरुस्त कर देता है।

10. यानी जिस तरह दुनिया में मेरे सब काम बना दिए कि हुक्मत दी, इल्म दिया, इसी तरह आख़िरत के काम भी बना दीजिए और जो मेरे बुजुर्गों में बड़े-बड़े नबी हुए हैं उनमें मुझको पहुँचा दीजिए। अगर मौत का शौक़ अल्लाह तआला की मुलाकात की तमन्ना के लिए हो तो जायज़ है।

(तफ़सीर पृष्ठ 446)

1. यह यकीनी बात है कि आपने किसी से यह किस्सा सुना-सुनाया भी नहीं। पस यह साफ़ दलील है आपकी नुबुव्वत की और इस बात की कि आपके पास अल्लाह की तरफ़ से वद्व आती है।

2. यानी उनको देखते रहते हैं।

3. बिना तौहीद के खुदा को मानना (पृष्ठ 446 की बकिया और पृष्ठ 448, 450 की तफ़सीर पृष्ठ 452-458 पर)

बारे में झगड़ते हैं, हालाँकि वह बड़ा ज़बरदस्त कुव्वत वाला है। (13) सच्चा पुकारना उसी के लिए खास है,¹ और उसके (यानी खुदा के) सिवा जिनको ये लोग पुकारते हैं वे इनकी दरखास्त को इससे ज्यादा मन्ज़ूर नहीं कर सकते जितना पानी उस शख्स की दरखास्त को मन्ज़ूर करता है जो अपने दोनों हाथ पानी की तरफ फैलाए हुए हो ताकि वह उसके मुँह तक (उड़कर) आ जाए, और वह उस (के मुँह) तक (अपने आप) आने वाला नहीं,² और काफ़िरो का (उनसे) दरखास्त करना बिल्कुल बेअसर है। (14) और अल्लाह ही के सामने सब सर झुकाए हुए हैं जितने आसमानों में हैं और जितने ज़मीन में हैं, खुशी से और मजबूरी से,³ और उनके साथे भी सुबह और शाम के वक्तों में।⁴ □ (15) आप कहिए कि आसमानों और ज़मीन का परवर्दिगार कौन है? आप (ही) कह दीजिए कि अल्लाह है। (फिर) आप (यह) कहिए कि क्या फिर भी तुमने उसके (यानी खुदा के) सिवा (दूसरे) मददगार करार दे रखे हैं जो खुद अपनी ज़ात के नफ़े-नुक़सान का भी इख़्तियार नहीं रखते। आप (यह भी) कहिए कि क्या अन्धा और आँखों वाला बराबर हो सकता है?⁵ या कहीं अँधेरा और रोशनी बराबर हो सकती है,⁶ या उन्होंने अल्लाह के ऐसे शरीक करार दे रखे हैं कि उन्होंने भी (किसी चीज़ को) पैदा किया हो जैसे कि खुदा पैदा करता है, फिर उनको पैदा करना एक-सा मालूम हुआ हो। आप कह दीजिए कि अल्लाह ही हर चीज़ का पैदा करने वाला है और वही वाहिद है, ग़ालिब है। (16) उसी (अल्लाह तआला) ने आसमानों से पानी नाज़िल फ़रमाया, फिर नाले (भरकर) अपनी मिक्दार “यानी मात्रा” के मुवाफ़िक़ चलने लगे, फिर (वह) सैलाब कूड़े-कबाड़ को बहा लाया जो उस (पानी) के ऊपर (आ रहा) है। और जिन चीज़ों को आग के अन्दर ज़ेवर और असबाब बनाने की गरज़ से तपाते हैं उसमें भी ऐसा मैल-कुचैल (ऊपर आ जाता) है।⁷ अल्लाह तआला हक़ (यानी ईमान वग़ैरह) और बातिल (कुफ़्र वग़ैरह) की इसी तरह की मिसाल बयान कर रहा है, सो जो मैल-कुचैल था वह तो फेंक दिया जाता है और जो चीज़ लोगों के लिए कारामद है ज़मीन (यानी दुनिया) में (नफ़ा पहुँचाने के साथ) रहती है। अल्लाह तआला इसी तरह (हर ज़रूरी मज़मून में) मिसालें बयान किया करते हैं।⁸ (17) जिन लोगों ने अपने रब का कहना मान लिया उनके वास्ते अच्छा बदला है,⁹ और जिन लोगों ने उसका कहना न माना उनके पास अगर तमाम ज़मीन (यानी दुनिया) भर की चीज़ें (मौजूद) हों और (बल्कि) उसके साथ उसी के बराबर और भी हो, तो वह सब अपनी रिहाई के लिए दे डालें। उन लोगों का सख़्त हिसाब होगा और उनका ठिकाना दोज़ख़ है, और वह बुरा ठिकाना है। ● (18) ♦

(पिछले पृष्ठ का शेष)

न मानने की तरह है। पस ये लोग अल्लाह के साथ भी कुफ़्र करते हैं और नबी के साथ भी।

4. मतलब यह कि कुफ़्र का तकाज़ा है कि सज़ा हो, चाहे दुनिया में नाज़िल हो या क़ियामत के दिन वाक़े हो। उनको उससे डरना और कुफ़्र छोड़ देना चाहिए।

5. यानी मेरे पास भी तौहीद व रिसालत की दलील है, और मेरे साथ वाले भी दलील से इल्मीनान हासिल करने के साथ मुझपर ईमान लाए हैं। मैं बेदलील बात की तरफ़ किसी को नहीं बुलाता, इसलिए दलील सुनो और समझो। रास्ते का हासिल यह हुआ कि खुदा एक है और मैं उसकी तरफ़ बन्दों को बुलाने वाला हूँ।

6. खुलासा यह हुआ कि नुबुव्वत के दावे से मेरा मक़सद अपना बन्दा बनाना नहीं बल्कि अल्लाह का बन्दा बनाना है, लेकिन उसका तरीका अल्लाह तआला के दाई यानी रसूल की तरफ़ से बतलाया जाता है, इसलिए मुझे दाई मानना वाज़िब है जबकि मेरे पास इसकी दलील भी है।

7. कि फ़ानी का इख़्तियार करना बेहतर है या बाकी का। और अगर तुमको अज़ाब में देरी से यह शक हो कि वह आएगा ही नहीं तो यह तुम्हारी ग़लती है, इसलिए कि पहली उम्मतों के काफ़िरो को भी बड़ी-बड़ी मोहलतें दी गईं।

8. मोहलत की मुदत के लम्बा होने की वजह से पैग़म्बरों ने समझ लिया कि अल्लाह के वायदे का जो मुख़्तसर वक़्त अपने अन्दाज़े और ख़याल से तय करके हमने अपने (पृष्ठ 446 की बक़िया और पृष्ठ 448, 450, 452 की तफ़सीर पृष्ठ 454-459 पर)

जो शख्स (यह) यकीन रखता हो कि जो कुछ आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के रब की तरफ से आप पर नाज़िल हुआ है वह सब हक है, क्या ऐसा शख्स उसकी तरह हो सकता है जो कि अन्धा है,¹ पस नसीहत तो समझदार लोग ही कबूल करते हैं। (19) (और) ये (समझदार) लोग ऐसे हैं कि अल्लाह से जो कुछ उन्होंने अहद किया है उसको पूरा करते हैं और उस (अहद) को तोड़ते नहीं। (20) और (ये) ऐसे हैं कि अल्लाह तआला ने जिन ताल्लुकात के कायम रखने का हुक्म किया है उनको कायम रखते हैं, और अपने रब से डरते रहते हैं, और सख्त अज़ाब का अन्देशा रखते हैं।² (21) और ये लोग ऐसे हैं कि अपने रब की रज़ामन्दी को ढूँढते हुए मज़बूत रहते हैं, और नमाज़ की पाबन्दी रखते हैं, और जो कुछ हमने उनको रोज़ी दी है उसमें से चुपके भी और ज़ाहिर करके भी खर्च करते हैं।³ और बदसुलूकी को अच्छे सुलूक से टाल देते हैं,⁴ उस जहान “यानी आखिरत” में नेक अन्जाम उन्हीं लोगों के वास्ते है। (22) (यानी) हमेशा रहने की जन्नतें जिनमें वे लोग भी दाखिल होंगे और उनके माँ-बाप और बीवियाँ और औलाद में से⁵ जो (जन्नत के) लायक होंगे (वे भी दाखिल होंगे) और फरिश्ते उनके पास हर (तरफ के) दरवाज़े से आते होंगे (23) (और यह कहते होंगे कि) तुम सही-सलामत रहोगे इसकी बदौलत कि तुम (दीने हक पर) मज़बूत रहे थे, सो इस जहान में तुम्हारा अन्जाम बहुत अच्छा है। (24) और जो लोग खुदा तआला के मुआहदों को उनकी पुख्तगी के बाद तोड़ते हैं, और खुदा तआला ने जिन ताल्लुकात “और रिश्तों” के कायम रखने का हुक्म फरमाया है उनको तोड़ते हैं, और ज़मीन (यानी दुनिया) में फ़साद करते हैं, ऐसे लोगों पर लानत होगी, और उनके लिए उस जहान में ख़राबी होगी। (25) अल्लाह जिसको चाहे रिज़्क ज़्यादा देता है और तंगी कर देता है। और ये (काफ़िर) लोग दुनियावी ज़िन्दगी पर इतराते हैं, और यह दुनियावी ज़िन्दगी आखिरत के मुकाबले में सिवाय एक मामूली फायदे के और कुछ भी नहीं। (26) ♦

और ये काफ़िर लोग कहते हैं कि उनपर (हमारे फरमाइशी मोजिज़ों में से) कोई मोजिज़ा उनके रब की तरफ से क्यों नाज़िल नहीं किया गया। आप कह दीजिए कि वाकई अल्लाह तआला जिसको चाहें गुमराह कर देते हैं, और जो शख्स उनकी तरफ मुतवज्जह होता है उसको अपनी तरफ से हिदायत कर देते हैं। (27) (मुराद इससे वे लोग हैं) जो ईमान लाए और अल्लाह के ज़िक्र से उनके दिलों को इत्मीनान होता है।⁶ ख़ूब समझ लो कि अल्लाह के ज़िक्र से दिलों को इत्मीनान हो जाता है।⁷ (28) जो लोग ईमान लाए और नेक काम

(पिछले पृष्ठ का शेष) ज़ेहन में करार दे रखा था कि उस वक़्त हम कामयाब व ग़ालिब और कुफ़्फ़ार मग़लूब और अल्लाह के कहर का शिकार होंगे, और गुमान ग़ालिब हो गया कि अल्लाह के वायदे की हद-बन्दी करने में हमसे ग़लती हुई कि बिला वाज़ेह वायदे के महज़ अन्दाज़ों या मदद के जल्द आने की खुशी में हमने करीब का वक़्त तय कर लिया हालाँकि वायदा मुतलक था, ऐसी हालत में कुफ़्फ़ार पर अज़ाब आ पहुँचा।

9. इससे मोमिन लोग मुराद हैं।

10. बल्कि उनपर ज़रूर आ पड़ता है चाहे देर से ही सही। पस यह मक्का के काफ़िर भी इसी धोखे में न रहें।

(तफ़सीर पृष्ठ 448)

1. इस सूर: का हासिल ये मज़ामीन हैं: तौहीद, रिसालत, रिसालत पर शुब्हात का जवाब, रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तसल्ली, कुरआन का हक होना और वायदा-वईद वगैरह।

2. यानी ज़मीन व आसमान में अहकाम जारी करने लगा।

3. चुनौते सूरज अपने मदार (यानी दायरे और गर्दिश करने की जगह) को साल भर में तय कर लेता है और चाँद महीने भर में।

4. यानी मरने के बाद ज़िन्दा होने और क़ियामत के आने का यकीन कर लो, उसके मुफ्किन होने को तो इस तरह कि जब अल्लाह तआला ऐसी अज़ीम चीज़ों के पैदा करने पर कादिर है तो मुद्दों को ज़िन्दा करने पर क्यों कादिर नहीं होगा, और उसके आने और मौजूद हो जाने का यकीन इस तरह कि (पृष्ठ 448 की बक़िया और पृष्ठ 450, 452, 454 की तफ़सीर पृष्ठ 456-459 पर)

किए उनके लिए खुशहाली और नेक अन्जामी है।¹ (29) (और) इसी तरह हमने आपको एक ऐसी उम्मत में रसूल बनाकर भेजा है कि उस (उम्मत) से पहले और बहुत-सी उम्मतें गुज़र चुकी हैं, ताकि आप उनको वह (किताब) पढ़कर सुना दें जो हमने आपके पास वह्य के ज़रिये भेजी है,² और वे लोग बड़े रहमत वाले की नाशुक्री करते हैं।³ आप फ़रमा दीजिए कि वह मेरा पालने वाला (और निगहबान) है, उसके सिवा कोई इबादत के काबिल नहीं, मैंने उसी पर भरोसा कर लिया और उसी के पास मुझको जाना है।⁴ (30) और अगर कोई ऐसा कुरआन होता जिसके ज़रिये से पहाड़ (अपनी जगह से) हटा दिए जाते या उसके ज़रिये से ज़मीन जल्दी-जल्दी तय हो जाती, या उसके ज़रिये से मुर्दों के साथ किसी को बातें करा दी जाती⁵ (तब भी ये लोग ईमान न लाते), बल्कि सारा इख़्तियार ख़ास अल्लाह ही को है।⁶ क्या (यह सुनकर) फिर भी ईमान वालों को इस बात में तसल्ली नहीं हुई कि अगर खुदा तआला चाहता तो तमाम (दुनिया भर के) आदमियों को हिदायत कर देता,⁷ और (ये मक्का के) काफ़िर तो हमेशा (आए दिन) इस हालत में रहते हैं कि उनके (बुरे) किरदारों के सबब उनपर कोई न कोई हादसा पड़ता रहता है,⁸ या उनकी बस्ती के करीब नाज़िल होता रहता है, यहाँ तक कि अल्लाह का वायदा आ जाएगा।⁹ यकीनन अल्लाह तआला वायदे के खिलाफ़ नहीं करते। (31) ♦

और बहुत-से पैग़म्बरों के साथ जो आपसे पहले हो चुके हैं हँसी-ठट्ठा हो चुका है,¹⁰ फिर मैं उन काफ़िरों को मोहलत देता रहा, फिर मैंने उनपर दारोगीर “यानी पकड़” की, सो मेरी सज़ा किस तरह की थी। (32) फिर (भी) क्या जो (खुदा) हर शख्स के आमाल पर बाख़बर हो (और उन लोगों के शरीक करार दिए हुए बराबर हो सकते हैं) और उन लोगों ने खुदा के लिए शरीक तजवीज़ किए हैं। आप कहिए कि (ज़रा) उन (शरीकों) का नाम तो लो, क्या तुम उसको (यानी खुदा तआला को) ऐसी बात की ख़बर देते हो कि दुनिया (भर) में उस (के वजूद) की ख़बर उसको (यानी अल्लाह को) न हो,¹¹ या ख़ाली जाहिरी लफ़्ज़ के एतिबार से उनको शरीक कहते हो, बल्कि काफ़िरों को अपने मुग़ालते की बातें पसन्दीदा मालूम होती हैं, और (इसी वजह से) ये लोग (हक) रास्ते से महरूम रह गए। और जिसको खुदा तआला गुमराही में रखे उसको कोई राह पर लाने वाला नहीं।¹² (33) उनके लिए दुनियावी ज़िन्दगी में (भी) अज़ाब है,¹³ और आख़िरत का अज़ाब इससे कई दर्जे ज़्यादा सख़्त है, और अल्लाह (के अज़ाब) से उनको कोई बचाने वाला नहीं होगा। (34) (और) जिस जन्नत का मुत्तकियों से वायदा किया गया है उसकी कैफ़ियत यह है कि उस (की इमारतों व पेड़ों) के नीचे से

(पिछले पृष्ठ का शेष) ऐसे शख्स ने उसकी ख़बर दी है जो बिल्कुल सच्चा है (यानी हुज़ुरे पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तो ज़रूर ऐसा ही होगा।

5. जैसे खट्टे और मीठे या छोटे और बड़े। कोई किसी रंग का और कोई किसी रंग का।
6. बल्कि जड़ से शाखों तक एक ही तना चला जाता है, ‘सिन्वान’ के तर्जुमे में दो तने की तख़सीस मिसाल देने के लिए है वरना बाज़ में तीन चार तक देखे गए हैं। और फिर हर एक में पट्टे अलग-अलग निकलते हैं और फल अलग-अलग लगते हैं।
7. ऊपर तौहीद को साबित किया था, आगे काफ़िरों के उन शुक्लत का जवाब है जो नुबुव्वत के मुताल्लिक थे सज़ा की धमकी के साथ, और वे तीन शुब्हे थे। पहला शुब्हा यह था कि मरने के बाद ज़िन्दा होने को वे लोग मुहाल समझते थे और इससे नुबुव्वत की नफ़ी पर दलील पकड़ते थे। दूसरा शुब्हा यह था कि अगर आप नबी हैं तो नुबुव्वत के इनकार पर जिस अज़ाब की वर्द सुनाते हैं वह क्यों नहीं आता। तीसरा शुब्हा यह था कि जिन मोज़िज़ों की हम फ़रमाइश करते हैं वे क्यों ज़ाहिर नहीं किये जाते। आयत ‘व इन तअजुब्...’ में पहले शुब्हे का रद्द है और आयत ‘व यस्तअज़िलून-क..’ में दूसरे शुब्हे का जवाब है, और आयत ‘व यकूलुल्लज़ी-न क-फ़रू..’ में तीसरे शुब्हे का जवाब है।

(तफ़सीर पृष्ठ 450) 1. यानी इसमें दोनों सिफ़तें हैं और हर एक के ज़ाहिर होने की शर्तें और असबाब हैं। पस उन्होंने बिला सबब अपने को रहमत व मफ़िरत के लिए हक़दार समझ लिया, बल्कि कुफ़ की वजह से उनके लिए तो अल्लाह तआला सख़्त सज़ा देने वाला है।

(पृष्ठ 450 की बक़िया और पृष्ठ 452, 454, 456 की तफ़सीर पृष्ठ 458-460 पर)

नहरें जारी होंगी, उसका फल और उसका साया हमेशा रहने वाला रहेगा।¹ यह तो अन्जाम होगा मुत्तकियों का, और काफिरों का अन्जाम दोज़ख होगा। (35) और जिन लोगों को हमने किताब दी है वे उस (किताब) से खुश होते हैं² जो आप पर नाज़िल की गई है, और उन्हीं के गिरोह में बाज़े ऐसे हैं कि उसके कुछ हिस्से का इनकार करते हैं।³ आप फरमाइए कि⁴ मुझको यह हुक्म हुआ है कि मैं अल्लाह तआला की इबादत करूँ और किसी को उसका शरीक न ठहराऊँ। मैं उसी (अल्लाह ही) की तरफ बुलाता हूँ और उसी की तरफ मुझको जाना है। (36) और इसी तरह हमने उसको इस तौर पर नाज़िल किया कि वह एक खास हुक्म है, अरबी (ज़बान में)⁵ और अगर आप (मान लो, अगरचे ऐसा होना नामुम्किन है) उनके नफ्सानी ख्यालात की पैरवी करने लगेँ इसके बाद कि आपके पास (सही) इल्म पहुँच चुका है, तो अल्लाह के मुकाबले में न कोई आपका मददगार होगा और न कोई बचाने वाला।⁶ (37) ♦

और हमने यकीनन आपसे पहले बहुत-से रसूल भेजे, और हमने उनको बीवियाँ और बच्चे भी दिए,⁷ और किसी पैगम्बर के इख्तियार में यह बात नहीं कि एक आयत भी बिना खुदा तआला के हुक्म के ला सके, हर ज़माने के (मुनासिब खास-खास) अहकाम (होते) हैं। (38) खुदा तआला (ही) जिस (हुक्म) को चाहे मौकूफ कर देते हैं और जिस (हुक्म) को चाहें कायम रखते हैं, और असल किताब उन्हीं के पास है।⁸ (39) और जिस (बात) का हम उनसे वायदा कर रहे हैं उसमें का बाज़ (वाकिआ) अगर हम आपको दिखला दें या हम आपको वफात दे दें, पस आपके ज़िम्मे तो सिर्फ (अहकाम का) पहुँचा देना है और दारोगीर “यानी पूछताछ और पकड़” करना हमारा काम है।⁹ (40) क्या वे इस (बात) को नहीं देख रहे हैं कि हम ज़मीन को हर (चारों) तरफ से लगातार कम करते चले आते हैं।¹⁰ और अल्लाह (जो चाहता है) हुक्म करता है, उसके हुक्म को कोई हटाने वाला नहीं, और वह बड़ी जल्दी हिसाब लेने वाला है। (41) और उनसे पहले जो (काफिर) लोग हो चुके हैं उन्होंने तदबीरें कीं, सो असल तदबीर तो खुदा ही की है,¹¹ उसको सब ख़बर रहती है जो शख्स जो कुछ भी करता है, और उन काफिरों को अभी मालूम हुआ जाता है कि उस आलम “यानी आखिरत” में नेक अन्जामी किसके हिस्से में है।¹² (42) और (ये) काफिर लोग (यूँ) कह रहे हैं कि (हम अल्लाह की पनाह चाहते हैं) आप पैगम्बर नहीं, आप फरमा दीजिए कि (मेरी नुबुव्वत पर) मेरे और तुम्हारे दरमियान अल्लाह और वह शख्स जिसके पास (आसमानी) किताब का इल्म है, काफ़ी गवाह हैं।¹³ (43) ♦

(पिछले पृष्ठ का शेष)

2. आयत में लफ़्ज़ ‘हादी’ नबी और नबी के नायब दोनों को आम है, पस हिन्दुस्तान में मुतलक ‘हादी’ के आने से उसका नबी होना लाज़िम नहीं, हाँ इसका एहतिमाल और गुन्जाइश ज़रूर है।

3. बच्चों की तादाद की या मुदत की कि कभी एक बच्चा होता है कभी ज़्यादा, कभी जल्दी होता है कभी देर में।

4. यानी सबको यक्साँ जानता है। और जैसा कि तुममें से हर एक को जानता है इसी तरह हर एक ही हिफाज़त करता है।

5. बहुत-सी बलाओं से इनसान की हिफाज़त करते हैं। लेकिन इससे कोई यह न समझ जाए कि जब फ़रिश्ते हमारे मुहाफ़िज़ हैं फिर जो चाहो नाफरमानी करो, अगरचे कुछ ही क्यों न हो किसी तरह अज़ाब नाज़िल न होगा। यह गुमान ग़लत है।

6. जब वे अपनी सलाहियत में ख़लल डालने लगते हैं तो फिर अल्लाह तआला की तरफ से भी उनपर मुसीबत व सज़ा तजवीज़ की जाती है। आयत से जिस बात पर दलालत हो रही है उसका हासिल यह है कि बिना नाफरमानी के हम नाराज़ नहीं होते। पस गुनाहों से बचने में नाराज़ी की नफ़ी यकीनी है नेमत और आफ़ियत के न होने का वायदा नहीं। गुनाहों और नाफरमानी से अगरचे ज़ाहिरी नेमत व आफ़ियत ख़त्म भी न हो लेकिन हक़ तआला की नाराज़ी तो ज़रूर मुरत्तब हो जाती है।

7. ऐसे वक़्त में खुदा के सिवा कोई भी उनका मददगार नहीं रहता, यहाँ तक कि वे भी जिनकी हिफाज़त का उनको गुमान व नाज़ है। ग़रज़ यह कि फ़रिश्ते भी उनकी हिफाज़त नहीं करते और अगर करते तो भी हिफाज़त काम न आ सकती।

(पृष्ठ 452, 454, 456 और 458 की तफ़सीर पृष्ठ 459, 460 पर)

(पिछले पृष्ठ का शेष)

ईमान वालों को तसल्ली नहीं हुई? अगर खुदा चाहता तो दुनिया भर के आदमियों को हिदायत कर देता मगर बाज़ हिक्मतों से उसकी मरज़ी नहीं हुई, और सब ईमान नहीं लाएंगे। इसका करीबी सबब उनकी दुश्मनी और मुख़ालफ़त है, फिर उन मुख़ालिफ़ों के ईमान की फ़िक्र में क्यों लगे हैं।

8. कहीं कत्ल, कहीं कैद, कहीं शिकस्त और हार।

9. या बाज़े हादसे खुद उनपर नहीं पड़ते मगर उनकी बस्ती के करीब नाज़िल होते रहते हैं, जैसे किसी और क़ौम पर आफ़त आई और इनको ख़ौफ़ पैदा हुआ कि कहीं हमपर भी बला न आ जाए, यहाँ तक कि इसी हालत में आख़िरत के अज़ाब का सामना हो जाएगा, जो मरने के बाद शुरू हो जाएगा।

10. उन लोगों का यह मामला झुठलाना और हँसी उड़ाना कुछ आपके साथ ख़ास नहीं। और इसी तरह उनके लिए अज़ाब में देरी होना कुछ उनके साथ ख़ास नहीं, बल्कि पहले रसूलों और पहली उम्मतों के साथ भी ऐसा होता रहा है।

11. क्योंकि हक़ तआला तो उसी को मौजूद जानता है जो हकीक़त में मौजूद हो, और जो मौजूद न हो उसको मौजूद नहीं जानता, क्योंकि इससे इल्म का ग़लत होना लाज़िम आता है, अगरचे ज़ाहिर होने में दोनों बराबर हैं।

12. अलबत्ता वह उसी को गुमराह रखता है जो बावजूद हक़ वाज़ेह होने के मुख़ालफ़त करता रहे।

13. वह अज़ाब कत्ल, कैद और ज़िल्लत या बीमारियाँ व मुसीबतें हैं।

(तफ़सीर पृष्ठ 458)

1. मेवों के हमेशा रहने से यह मुराद है कि अगर एक बार मेवा खा लिया तो दूसरा उसके बदले दरख़्त पर और लम्बा जाएगा। और साये के हमेशा रहने की वजह यह है कि वहाँ सूरज न होगा। मगर याद रहे कि रोशनी का वजूद सूरज पर मुन्हासिर नहीं, इसलिए यह वस्वसा न होना चाहिए कि रोशनी कहाँ से आएगी।

2. जैसे यहूद में अब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ियल्लाहु अन्हु और उनके साथी, और ईसाइयों में नज्जाशी और उनके भेजे हुए।

3. इससे मुराद वह हिस्सा है जिसमें उनकी किताब के ख़िलाफ़ अहक़ाम हैं।

4. अहक़ाम दो किस्म के हैं, उसूल यानी बुनियादी और फ़रूअ यानी उसूल से निकले हुए अहक़ाम। अगर तुम उसूल में मुख़ालिफ़ हो तो वे सब शरीअतों में मुश्तरक हैं।

5. अहक़ाम का इख़िलाफ़ उम्मतों के इख़िलाफ़ के सबब हुआ, क्योंकि उम्मतों की मस्लहतें हर ज़माने में अलग-अलग रहीं। पस शरीअतों का यह इख़िलाफ़ मुख़ालफ़त को नहीं चाहता। चुनौचे खुद तुम्हारी मानी हुई शरीअतों में भी अहक़ाम का ऐसा इख़िलाफ़ मौजूद था, फिर तुम्हारे लिए मुख़ालफ़त और इनकार की क्या गुन्जाइश है।

6. जब नबी को ऐसा ख़िताब किया जा रहा है तो और लोग इनकार करके कहाँ रहेंगे।

7. अहले किताब में से बाज़ों का जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर यह ताना है कि यह कैसे नबी? इनको तो बीवियों और बच्चों का शग़ल रहता है, सो यह चीज़ रसूल होने के ख़िलाफ़ नहीं, बहुत-से पैग़म्बरों के इनसे भी ज़्यादा बीवियाँ और बच्चे थे।

8. यानी लौहे महफूज़। ये सब अहक़ाम निरस्त करने वाले और निरस्त होने वाले और जो अपनी जगह कायम हैं सब उसमें दर्ज हैं। वह सब को जमा करने वाली और गोया तमाम चीज़ों का मजमूआ है। यानी जहाँ से ये अहक़ाम आते हैं वह अल्लाह ही के कब्ज़े में है। पस पहले अहक़ाम के मुवाफ़िक़ या उनसे अलग अहक़ाम लाने की किसी को गुन्जाइश और ताक़त ही नहीं हो सकती।

9. यानी ये लोग जो इस बिना पर नुबुव्वत का इनकार करते हैं कि अगर आप नबी हैं तो नुबुव्वत का इनकार करने पर जिस अज़ाब का वायदा किया जाता है वह क्यों नहीं नाज़िल होता, चाहे आपकी ज़िन्दगी में उनपर कोई अज़ाब नाज़िल हो जाए चाहे उस अज़ाब के नाज़िल होने से पहले हम आपको वफ़ात दे दें, फिर बाद में वह अज़ाब ज़ाहिर हो, चाहे दुनिया में या आख़िरत में, तो दोनों हालतों में आप इस फ़िक्र में न पड़ें कि अगर अज़ाब आ जाए तो बेहतर है कि शायद ये ईमान ले आएँ, क्योंकि आपके ज़िम्मे सिर्फ़ तब्तीग़ है और दारोगीर और पकड़ करना तो हमारा काम है।

10. यानी इस्लामी फ़ुतूहात की कसरत की वजह से उनकी हुकूमत और राज दिन-प्रतिदिन घटता जा रहा है। सो यह भी तो एक किस्म का अज़ाब है, जो असली अज़ाब का दीबाचा यानी शुरूआत है।

11. उसके सामने किसी की नहीं चलती। सो अल्लाह ने उनकी वे तदबीरें नहीं चलने दीं।

12. यानी जल्द ही उनको अपना बुरा अन्जाम और आमाज़ की सज़ा मालूम हो जाएगी।

13. इससे अहले किताब के वे उलमा मुराद हैं जो इनसाफ़ वाले थे और नुबुव्वत की पेशीनगोई (यानी भविष्यवाणी) देखकर ईमान ले आए थे। मतलब यह हुआ कि मेरी नुबुव्वत की दो दलीलें हैं अक्ली और नक्ली। अक्ली तो यह कि हक़ तआला ने मुझको मोज़िजे अता फरमाए जो नुबुव्वत की दलील है, और अल्लाह के गवाह होने के यही मायने हैं। और नक्ली यह कि पहली आसमानी किताबों में इसकी ख़बर मौजूद है। अगर यकीन न आए तो इन्साफ़-पसन्द उलमा से पूछ लो, वे ज़ाहिर कर देंगे। पस अक्ली और नक्ली दलीलों के होते हुए नुबुव्वत का इनकार करना सिवाय बद-बख़्ती के और क्या है।

14 सूर: इब्राहीम 72

सूर: इब्राहीम मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 52 आयतें और 7 रुकूअ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

अलिफ-लाम-रा। यह (कुरआन) एक किताब है जिसको हमने आप पर नाज़िल फ़रमाया है ताकि आप तमाम लोगों को उनके परवर्दिगार के हुक्म से अन्धकार से निकालकर रोशनी की तरफ़ यानी खुदा-ए-ग़ालिब तारीफ़ वाले की राह की तरफ़ लाएँ।¹ (1) (वह ऐसा खुदा है) कि उसी की मिल्क है जो कुछ कि आसमानों में है और जो कुछ कि ज़मीन में है, और बड़ी ख़राबी यानी बड़ा सख़्त अज़ाब है (2) उन (काफ़िरों) को जो कि दुनियावी ज़िन्दगानी को आख़िरत पर तरजीह देते हैं, और (बल्कि) अल्लाह की (ज़िक्र हुई) राह से रोकते हैं और उसमें टेढ़ (यानी शुब्हात) को ढूँढते रहते हैं।² ऐसे लोग बड़ी दूर की गुमराही में हैं।³ (3) और हमने (पहले) तमाम पैग़म्बरों को (भी) उन्हीं की कौम की ज़बान में पैग़म्बर बनाकर भेजा है⁴ ताकि उनसे (अल्लाह के अहकाम को) बयान करें। फिर जिसको अल्लाह तआला चाहें गुमराह करते हैं⁵ और जिसको चाहें हिदायत करते हैं,⁶ और वही (सब उमूर पर) ग़ालिब है (और) हिक़मत वाला है।⁷ (4) और हमने मूसा को अपनी निशानियाँ देकर भेजा कि अपनी कौम को (कुफ़्र) की अँधेरियों से (ईमान की) रोशनी की तरफ़ लाओ, और उनको अल्लाह तआला की (नेमत और सज़ा के) मामलात याद दिलाओ,⁸ बेशक उन (मामलात) में इब़रतें हैं हर सब्र करने वाले और शुक्र करने वाले के लिए। (5) और (उस वक़्त को याद कीजिये कि) जब मूसा ने अपनी कौम से फ़रमाया कि तुम अल्लाह तआला का इनाम अपने ऊपर याद करो, जबकि तुमको फिरऔन वालों से नजात दी, जो तुमको सख़्त तकलीफ़ें पहुँचाते थे और तुम्हारे बेटों को ज़िब्ह करते थे और तुम्हारी औरतों को ज़िन्दा छोड़ देते थे, और उसमें तुम्हारे रब की तरफ़ से बड़ा इम्तिहान था।⁹ (6) ♦

और (वह वक़्त याद करो) जबकि तुम्हारे रब ने तुमको इत्तिला फ़रमा दी कि अगर तुम शुक्र करोगे तो तुमको ज़्यादा (नेमत) दूँगा और अगर तुम नाशुक्री करोगे तो (यह अच्छी तरह समझ लो कि) मेरा अज़ाब बड़ा सख़्त है।¹⁰ (7) और मूसा ने (यह भी) फ़रमाया कि अगर तुम और दुनिया भर के आदमी सब-के-सब

1. रोशनी में लाने का मतलब यह है कि वह राह बतलाएँ।
2. यानी ऐसे शुब्हात पैदा करते हैं जिनके ज़रिये से दूसरों को गुमराह कर सकें।
3. यानी वह गुमराही हक़ से बड़ी दूर है।
4. यह उस शुब्हे का जवाब है कि कुरआन अरबी ज़बान में क्यों नाज़िल हुआ, इससे तो यह शुब्हा होता है कि खुद पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तैयार कर लिया होगा। अरबी के अलावा किसी दूसरी ज़बान में क्यों नाज़िल नहीं हुआ ताकि यह शुब्हा ही न होता, और कुरआन दूसरी आसमानी किताबों से ग़ैर-अरबी होने में उनके मुवाफ़िक़ भी होता। जवाब का खुलासा यह है कि तमाम पैग़म्बरों पर उन्हीं की कौमी ज़बान में अहकाम नाज़िल होते रहे, क्योंकि असल मक़सूद अहकाम का बयान करना और तबलीग़ है, न कि ज़बानों में मुत्तफ़िक़ होना।
5. यानी उन अहकाम को कबूल न करके गुमराह होता है।
6. कि वह उन अहकाम को कबूल कर लेता है।
7. पस ग़ालिब होने की बिना पर सबको हिदायत कर सकता था मगर बहुत-सी हिक़मतों की वजह से ऐसा न हुआ।
8. क्योंकि नेमत को याद करके शुक्र करेगा। सज़ा और उसके ख़त्म होने को याद करके आइन्दा हादसों में सब्र करेगा कि याद दिलाने का एक फ़ायदा यह भी है।
9. यानी मुसीबत में बला थी और बला और नेमत दोनों बन्दे के लिए इम्तिहान हैं। पस इसमें मूसा अलैहिस्सलाम ने नेमत व सज़ा दोनों का ज़िक्र फ़रमाया।
11. शुक्र में ईमान और नाशुक्रि में कुफ़्र भी दाख़िल है।

मिलकर भी नाशुकी करने लगे तो अल्लाह तआला (का कोई नुकसान नहीं, क्योंकि वह) बिलकुल गनी (और) तारीफ वाले हैं। (8) (ऐ मक्का के काफ़िरो!) क्या तुमको उन लोगों की ख़बर नहीं पहुँची जो तुमसे पहले गुज़र चुके हैं, यानी नूह की कौम, और (हूद की कौम) आद, और (सालेह की कौम) समूद, और जो लोग उनके बाद हुए हैं जिनको सिवाय अल्लाह तआला के कोई नहीं जानता। उनके पैग़म्बर उनके पास दलीलें लेकर आए, सो उन कौमों ने अपने हाथ उन (पैग़म्बरों) के मुँह में दे दिए,¹ और कहने लगे कि जो (हुक्म) तुमको देकर भेजा गया है हम उसके इनकारी हैं, और जिस चीज़ की तरफ़ तुम हमको बुलाते हो हम उसकी तरफ़ से बहुत बड़े शुब्हे में हैं जो (हमको) तरद्दुद में डाले हुए है।² ▲ (9) उनके पैग़म्बरों ने कहा, क्या (तुमको) अल्लाह तआला के बारे में शक है जो कि आसमानों और ज़मीन का पैदा करने वाला है,³ वह तुमको बुला रहा है ताकि तुम्हारे गुनाह माफ़ कर दे,⁴ और मुकर्ररा मुद्दत तक तुमको (ख़ैर व ख़ूबी के साथ) ज़िन्दगी दे।⁵ उन्होंने कहा कि तुम सिर्फ़ एक आदमी हो जैसे हम हैं,⁶ तुम (यूँ) चाहते हो कि हमारे बाप (और दादा) जिस चीज़ की इबादत करते थे (यानी बुत) उससे हमको रोक दो,⁷ सो कोई साफ़ मोजिज़ा दिखलाओ। (10) उनके रसूलों ने (इसके जवाब में) कहा कि हम भी तुम्हारे जैसे आदमी ही हैं, लेकिन अल्लाह अपने बन्दों में से जिसपर चाहे एहसान फ़रमा दे,⁸ और यह बात हमारे कब्जे की नहीं कि हम तुमको बिना खुदा के हुक्म के कोई मोजिज़ा दिखला सकें, और अल्लाह ही पर सब ईमान वालों को भरोसा करना चाहिए।⁹ (11) और हमको अल्लाह पर भरोसा न करने का कौन-सी चीज़ सबब हो सकती है, हालाँकि उसने हमको हमारे (दोनों जहान के फ़ायदों के) रास्ते बतला दिए,¹⁰ और तुमने जो कुछ हमको तकलीफ़ पहुँचाई है हम उसपर सब्र करेंगे, और भरोसा करने वालों को अल्लाह ही पर भरोसा रखना चाहिए। (12) ♦

और (उन) काफ़िरोँ ने अपने रसूलों से कहा कि हम तुमको अपनी सरज़मीन से निकाल देंगे, या (यह हो कि) तुम हमारे मज़हब में लौट आओ। पस उन (रसूलों) पर उनके रब ने (तसल्ली के लिए) वह्य नाज़िल फ़रमाई कि हम (ही) इन ज़ालिमों को ज़रूर हलाक कर देंगे। (13) और उनके (हलाक करने के) बाद तुमको इस सरज़मीन में आबाद रखेंगे। (और) यह हर उस शख्स के लिए (आम) है जो मेरे सामने खड़ा होने से डरे

1. यानी मानते तो क्या? बल्कि यह कोशिश करते थे कि उनको बात तक न करने दें।
2. मकसूद इससे तौहीद व रिसालत दोनों का इनकार है।
3. यानी उसका इन चीज़ों को पैदा करना खुद उसके वजूद और एक होने की दलील है, फिर इस दलील के होते हुए उसके वजूद और उसकी तौहीद में शक है।
4. इस्लाम से तमाम गुनाह तो माफ़ होते हैं लेकिन हुक्क व सज़ाएँ माफ़ नहीं होते। चुनाँचे इस्लाम के सबब ज़िम्मी (यानी वह ग़ैर-मुस्लिम जो मुआहदे के तहत इस्लामी हुक्मत में रहता हो) से सज़ा का ख़त्म न होना फ़िक्ह यानी मसाल के अन्दर ज़िक्र हुआ है।
5. मतलब यह कि तौहीद इसके अलावा कि अपने आप में हक़ है, तुम्हारे लिए दोनों जहान में फ़ायदेमन्द भी है।
6. और बशर (यानी इनसान) होना रसूल होने के खिलाफ़ है, जब पैग़म्बर नहीं हो तो तुम जो कुछ तौहीद के बारे में कहते हो वह अल्लाह की तरफ़ से नहीं है।
7. हालाँकि शिर्क के हक़ होने की वाज़ेह दलील यह है कि हमारे बुर्जुग इसको करते आए हैं।
8. हम अपने बशर (यानी इनसान) होने को तसलीम करते हैं कि वाकई हम भी तुम्हारे जैसे आदमी ही हैं, लेकिन बशर होने और नुबुव्वत में कोई ऐसी बात नहीं कि दोनों जमा न हों, क्योंकि नुबुव्वत अल्लाह तआला का एक आला दर्जे का इनाम व एहसान है।
9. मोजिज़ा दिखाना हमारे बस की बात नहीं, फिर अगर इसपर भी तुम न मानो और मुख़ालफ़त किए जाओ तो हम तुम्हारी मुख़ालफ़त से नहीं डरते बल्कि अल्लाह पर भरोसा करते हैं।
10. जिसका इतना बड़ा फ़जल हो उसपर तो ज़रूर भरोसा करना चाहिए।

और मेरी वईद “यानी सज़ा की धमकी” से डरे।¹ (14) और (काफ़िर लोग) फैसला चाहने लगे और जितने नाफरमान (और) ज़िद्दी (लोग) थे वे सब नाकाम हुए।² (15) उसके आगे दोज़ख़ है और उसको (दोज़ख़ में) ऐसा पानी पीने को दिया जाएगा जो कि पीप-लहू (के जैसा) होगा। (16) जिसको घूँट-घूँट करके पिएगा और (गले से) आसानी के साथ उतारने की कोई सूरत न होगी, और हर (चारों) तरफ़ से उसपर मौत (के सामान) की आमद होगी और वह किसी तरह से मरेगा नहीं,³ और उसको और सख़्त अज़ाब का सामना होगा।⁴ (17) जो लोग अपने परवर्दिगार के साथ कुफ़्र करते हैं उनकी हालत अमल के एतिबार से यह है कि जैसे कुछ राख हो, जिसको तेज़ आँधी के दिन में तेज़ी के साथ हवा उड़ा ले जाए। (इसी तरह) उन लोगों ने जो कुछ अमल किए थे उनका कोई हिस्सा उनको हासिल न होगा (राख की तरह बर्बाद हो जाएगा), यह भी बड़ी दूर दराज़ की गुमराही है।⁵ (18) क्या (ऐ मुख़ातब!) तुझको यह बात मालूम नहीं कि अल्लाह तआला ने आसमानों को और ज़मीन को बिलकुल ठीक-ठीक⁶ पैदा किया है, (इससे उसका कादिर होना भी मालूम हो गया, पस) अगर वह चाहे तो तुम सबको फ़ना कर दे और एक दूसरी नई मख़्लूक को पैदा कर दे। (19) और यह खुदा को कुछ भी मुश्किल नहीं।⁷ (20) और खुदा के सामने सब पेश होंगे, फिर छोटे दर्जे के लोग (यानी अ़वाम और पैरवी करने वाले) बड़े दर्जे के लोगों से कहेंगे कि हम (दुनिया में) तुम्हारे ताबे थे, तो क्या तुम खुदा के अज़ाब का कुछ हिस्सा हमसे हटा सकते हो।⁸ वे (जवाब में) कहेंगे कि अगर अल्लाह हमको कोई राह बतलाता तो हम तुमको वह राह बतला देते, (और अब तो) हम सबके हक़ में (दोनों सूरतों) बराबर हैं, चाहे हम परेशान हों चाहे संयम से काम लें, हमारे बचने की कोई सूरत नहीं।⁹ (21) ♦

1. मुराद यह कि जो मुसलमान हो, जिसकी निशानी अल्लाह के सामने खड़ा होने और उसकी सज़ा की धमकी से खौफ़ है, सबके लिए यह अज़ाब से नजात देने का वायदा आम है।
2. यानी हलाक हो गए और जो उनकी मुराद थी कि अपने को हक़ पर समझकर फ़तह व कामयाबी चाहते थे वह हासिल न हुई।
3. रिसालत के बाज़ इनकारी अपने ख़याल व गुमान में अल्लाह से नज़दीकी और सवाब के भी कुछ आमांल करते थे जिनमें से कुछ तो अपनी ज़ात के एतिबार से भी नज़दीकी का सबब न थे जैसे बुतों को पूजना, और बाज़ अपनी ज़ात के एतिबार से तो कुर्ब व नज़दीकी का ज़रिया थे मगर ईमान के न होने के सबब उनके हक़ में कुर्बत नहीं रहे थे जैसे गुलामों और बौंदियों को आज़ाद करना, रिश्तेदारों के साथ अच्छा सुलूक, मेहमानों की ख़ातिर-मुदारात वगैरह-वगैरह। पस इन आमांल का लिहाज़ करके उनको शुब्हा हो सकता था कि ये आमांल हमारे काम आएंगे और अज़ाब से बचा लेंगे। इसी तरह यह ख़याल हो सकता था कि क़ियामत ही कायम न होगी इसलिए अज़ाब भी न होगा। इसी तरह यह वस्वसा भी मुष्किन था कि हम जिनके हुक्म से इस बुत-परस्ती को इख़्तियार किए हुए हैं, वे और अल्लाह के अलावा हमारे माबूद हमको बचा लेंगे, इसलिए हक़ तआला ने उनके लिए नजात के तमाम रास्तों का बन्द हो जाना गुज़िश्ता आयतों में ज़ाहिर फ़रमा दिया।
4. अगर उन काफ़िरों को अपनी नजात के मुताल्लिक़ यह गुमान हो कि हमारे आमांल हमारे लिए फ़ायदेमन्द (लाभदायक) होंगे तो इसका कायदा कुल्लिया यह सुन लो कि काफ़िरों के आमांल की तो यह मिसाल है जैसे तेज़ आँधी राख को उड़ा ले जाए। इस सूरत में उस राख का नाम व निशान भी न रहेगा जो उड़ने में बहुत हल्की होती है, जिसका बयान अगली आयत में है।
5. गुमान तो यह हो कि हमारे अमल नेक और नफ़ा देने वाले हैं और फिर ज़ाहिर हों बुरे और नुक़सान देने वाले।
6. यानी फ़ायदों और मस्तहतों पर मुश्तमिल।
7. पस जब नई मख़्लूक पैदा करना आसान है तो तुमको दोबारा पैदा करना क्या मुश्किल है। पस इसमें आसमान व ज़मीन के पैदा करने से तो नई मख़्लूक के पैदा करने की कुदरत होने पर इस्तिदाल किया और उससे पुरानी मख़्लूक के दोबारा पैदा करने पर कादिर होने पर दलील पकड़ी। गरज़ नजात के रास्ते का यह ख़याल व गुमान भी बातिल हुआ।
8. यानी अगर यह गुमान हो कि हमारे बड़े हमको बचा लेंगे तो इसकी हकीक़त भी सुन लो कि अ़वाम और ताबिईन् ख़ास लोगों और जिनकी वे पैरवी करते थे उनसे बतौर मलामत व नाराज़गी के कहेंगे कि दीन का जो रास्ता तुमने हमको बतलाया हम उसी पर हो लिए और आज हमपर मुसीबत है, अगर बिलकुल न बचा सको तो कुछ तो बचा सकते हो?
9. इस सवाल व जवाब से मालूम हो गया कि कुफ़्र के रास्ते के बड़े भी अपने पैरोकारों के कुछ काम न आएंगे। नजात के इस तरीके में भी कोई गुन्जाइश न रही।

और जब (कियामत में) तमाम मुकद्दमों का फैसला हो चुकेगा तो (जवाब में) शैतान कहेगा कि अल्लाह तआला ने तुमसे सच्चे वायदे किए थे और मैंने भी तुमसे कुछ वायदे किए थे, सो मैंने वे वायदे तुमसे ख़िलाफ़ किए थे, और मेरा तुमपर और तो कुछ ज़ोर चलता न था, सिवाय इसके कि मैंने तुमको बुलाया था। सो तुमने (अपने इख़्तियार से) मेरा कहना मान लिया, तो तुम (सारी) मलामत मुझपर मत करो, और (ज्यादा) मलामत अपने आपको करो।¹ न मैं तुम्हारा मददगार (हो सकता) हूँ और न तुम मेरे मददगार (हो सकते) हो, मैं खुद (तुम्हारे) इस (फ़ेल) से बेज़ार हूँ कि तुम इसके पहले (दुनिया में) मुझको (खुदा का) शरीक करार देते थे। यकीनन ज़ालिमों के लिए दर्दनाक अज़ाब (मुकर्रर) है।² (22) और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक काम किए वे ऐसे बाग़ों में दाख़िल किए जाएंगे जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, (और) वे उनमें अपने परवर्दिगार के हुक्म से हमेशा-हमेशा रहेंगे, (और) वहाँ उनको सलाम इस लफ़्ज़ से किया जाएगा। अस्सलामु अलैकुम।³ (23) क्या आपको मालूम नहीं कि अल्लाह तआला ने कैसी मिसाल बयान फ़रमाई है, कलिमा-ए-तथियबा (यानी कलिमा-ए-तौहीद) की कि वह एक पाकीज़ा दरख़्त के जैसा है,⁴ जिसकी जड़ ख़ूब गड़ी हुई हो और उसकी शाखें “यानी टहनियाँ” ऊँचाई में जा रही हों। (24) वह अपने परवर्दिगार के हुक्म से हर फ़सल में अपना फल देता हो,⁵ और अल्लाह तआला (ऐसी) मिसालें लोगों के वास्ते इसलिए बयान फ़रमाते हैं ताकि वे ख़ूब समझ लें। (25) और गन्दे कलिमे (या कुफ़्र व शिर्क के कलिमे) की मिसाल ऐसी है जैसे एक ख़राब दरख़्त हो कि ज़मीन के ऊपर ही ऊपर से उखाड़ लिया जाए, उसको कुछ जमाव “और मज़बूती” न हो।⁶ (26) अल्लाह तआला ईमान वालों को इस पक्की बात (यानी कलिमा-ए-तथियबा की बरकत) से दुनिया और आख़िरत में मज़बूत रखता है,⁷ और अल्लाह तआला ज़ालिमों (यानी काफ़िरों) को (दीन में और इम्तिहान में) बिचला देता है,⁸ और अल्लाह तआला जो चाहता है करता है। (27) ♦

क्या आपने उन लोगों (मक्का वालों) को नहीं देखा जिन्होंने अल्लाह की नेमत पर बजाय (शुक्र करने के) कुफ़्र किया और जिन्होंने अपनी कौम को हलाकत के घर (28) (यानी) जहन्नम में पहुँचा दिया।⁹ वे उसमें दाख़िल होंगे, और वह रहने की बुरी जगह है। (29) और उन लोगों ने अल्लाह के साझी करार दिए ताकि दूसरों को भी उसके दीन से गुमराह करें। आप कह दीजिए कि थोड़ी और ऐश कर लो, क्योंकि तुम्हारा अख़ीर अन्जाम दोज़ख़ में जाना है।¹⁰ (30) जो मेरे (खास) ईमान वाले बन्दे हैं उनसे कह दीजिए कि वे नमाज़ की पाबन्दी रखें और हमने जो कुछ उनको दिया है उसमें से छुपे और खुले तौर पर खर्च किया करें, ऐसे दिन के आने से पहले (पहले) कि जिसमें न ख़रीद व बेच होगी और न दोस्ती।¹¹ (31) अल्लाह ऐसा है कि जिसने

1. जब कियामत में ईमान वाले जन्नत में और कुफ़रार दोज़ख़ में भेज दिये जायेंगे तो उस वक़्त शैतान भी उनका शरीके हाल होगा। दोज़ख़ वाले उसको मलामत करेंगे कि कमबख़्त! तू तो डूबा ही था हमको भी अपने साथ डुबो दिया। शैतान जवाब देगा कि मुझपर तुम्हारी मलामत बेजा है क्योंकि अल्लाह ने तुमसे जितने वायदे किये थे सब सच्चे वादे थे, कि ईमान से नजात और कुफ़्र से हलाकत होगी, और कियामत ज़रूर कायम होगी। इसके बरख़िलाफ़ मैंने कहा था कि कियामत कायम नहीं होगी और तुम्हारा कुफ़्र का तरीका ही नजात का सबब है। हक़ तआला का इश्राद सही और मेरा बयान ग़लत था। अल्लाह तआला के वायदों के हक़ होने और मेरे बयानात के ग़लत होने पर कतई दलीलें कायम थीं। सो बावजूद इसके तुमने मेरे वायदों को सही और खुदा के वायदों को ग़लत समझा। तो तुम अपने हाथों खुद डूबे।
2. पस इससे अल्लाह के अलावा दूसरे माबूदों का भरोसा भी ख़त्म हुआ। क्योंकि जो उन माबूदों की इबादत का असल ज़न्बा और सबब है। जब उसने साफ़ जवाब दे दिया तो औरों से क्या उम्मीद हो सकती है। पस काफ़िरों की नजात तमाम रास्ते बन्द हो गये।
3. यानी आपस में भी और फ़रिश्तों की तरफ़ से भी। अल्लाह तआला के कौल: ‘इल्ला कीलन् सलामन् सलामा’ और अल्लाह तआला के कौल: ‘वल्ल-मलाइ-कतु यदखुलू-न अलैहिम मिन् कुल्लि बाबिन्, सलामुन् अलैकुम बिमा स-बरतुम-.....’ की वजह से।
4. मुराद खज़ूर का दरख़्त है।
5. यानी ख़ूब फल देता हो कोई फ़सल मारी न जाती हो। इसी तरह कलिमा-ए-तौहीद यानी: (शेष तफ़सीर पृष्ठ 470 पर)

आसमानों और ज़मीन को पैदा किया और आसमान से पानी (यानी बारिश को) बरसाया, फिर उस (पानी) से फलों की किस्म से तुम्हारे लिए रिज्क पैदा किया और तुम्हारे नफे के वास्ते कश्ती (और जहाज़) को तुम्हारे ताबे बनाया ताकि वह उसके (यानी खुदा के) हुक्म (व कुदरत) से दरिया में चले, और तुम्हारे नफे के वास्ते नहरों को (अपनी कुदरत का) ताबे बनाया। (32) और तुम्हारे नफे के वास्ते सूरज और चाँद को (अपनी कुदरत का) ताबे बनाया जो हमेशा चलने ही में रहते हैं, और तुम्हारे नफे के वास्ते रात और दिन को (अपनी कुदरत का) ताबे बनाया। (33) और जो-जो चीज़ तुमने माँगी तुमको (हर चीज़) दी,¹ और अल्लाह तआला की नेमतें अगर शुमार करने लगे तो शुमार में नहीं ला सकते, (मगर) सच यह है कि आदमी बहुत ही बेइन्साफ़ और बड़ा ही नाशुक है।² (34) ♦

और जबकि इब्राहीम ने कहा,³ ऐ मेरे रब! इस शहर (यानी मक्का) को अमन वाला बना दीजिए⁴ और मुझको और मेरे खास फरज़न्दों को बुतों की हिफाज़त से बचाए रखिए।⁵ (35) ऐ मेरे परवर्दिगार! उन बुतों ने बहुत-से आदमियों को गुमराह कर दिया,⁶ फिर जो शख्स मेरी राह पर चलेगा वह तो मेरा है ही, और जो शख्स (इस बारे में) मेरा कहना न माने, सो आप तो बहुत ज़्यादा मफ़िरत करने वाले (और) बहुत ज़्यादा रहमत फ़रमाने वाले हैं।⁷ (36) ऐ हमारे रब! मैं अपनी औलाद को⁸ आपके अज़मत वाले “यानी प्रतिष्ठा” घर के करीब⁹ एक (चटियल और सुनसान) मैदान में जो काश्तकारी के काबिल नहीं,¹⁰ आबाद करता हूँ, ऐ हमारे रब ताकि वे लोग नमाज़ का एहतिमाम “यानी पाबन्दी” रखें, तो आप कुछ लोगों के दिल उनकी तरफ़ माइल कर दीजिए,¹¹ और उनको (महज़ अपनी कुदरत से) फल खाने को दीजिए¹² ताकि ये लोग (इन नेमतों का) शुक्र करें।¹³ (37) ऐ हमारे रब! आपको तो सब कुछ मालूम है जो हम अपने दिल में रखें और जो ज़ाहिर कर दें। और अल्लाह तआला से (तो) कोई चीज़ भी छुपी नहीं, (न) ज़मीन में और न आसमान में। (38) तमाम तारीफ़ (और प्रशंसा) खुदा के लिए (लायक) है जिसने मुझको बुढ़ापे में इसमाईल और इसहाक (दो बेटे) अता फ़रमाए। हकीकत में मेरा रब दुआ का बड़ा सुनने वाला है।¹⁴ (39) ऐ मेरे रब! मुझको भी नमाज़ का (खास) एहतिमाम करने वाला रखिए और मेरी औलाद में भी¹⁵ (बाज़ों को)। ऐ हमारे रब! और मेरी (यह) दुआ कबूल कीजिये। (40) (और) ऐ हमारे रब! मेरी मफ़िरत कर दीजिए और मेरे माँ-बाप की भी और तमाम मोमिनों की भी हिसाब के कायम होने के दिन।¹⁶ (41) ♦

(पृष्ठ 468 का शेष)

‘ला इला-ह इल्लाह’ की एक जड़ है यानी एतिकाद जो मोमिन के दिल में मज़बूती के साथ जगह पकड़े हुए है। और उसकी कुछ शाखें हैं यानी नेक आमाल जो ईमान पर मुरत्तब होते हैं जो बारगाहे कबूलियत में आसमान की तरफ़ ले जाये जाते हैं। फिर उनपर हमेशा की रिज़ा का फल और नतीजा मुरत्तब होता है।

6. मुराद हन्ज़ल यानी इन्द्राइन का पेड़ है। वह तनेदार नहीं होता उसको मजाज़न पेड़ फ़रमा दिया गया। और ख़राब उसकी बू, रंग और मजे की वजह से फ़रमाया। और ऊपर से उखाड़ने का मतलब यह है कि उसकी जड़ दूर तक नहीं होती ऊपर ही रखी होती है।

7. दुनियावी ज़िन्दगी में साबित कदम रहने से यह मुराद है कि उसपर शैतानों के बहकाने और गुमराह करने का असर नहीं होता और मरते दम तक ईमान पर कायम रहता है। और आख़िरत की मज़बूती से मुराद क़ब्र में मुन्कर नकीर के जवाब का सही-सही और इत्मीनान से जवाब दे देना है। यह तफ़सीर बहुत-सी हदीसों में आई है।

8. दुनिया में तो काफ़िरों की गुमराही ज़ाहिर है और क़ब्र में हदीसों की वज़ाहत के मुताबिक़ उनसे जवाब न बन पड़ेगा बल्कि हैरानी व परेशानी भरा जवाब देंगे। हाँ हाँ मैं नहीं जानता।

9. यानी उनको भी कुफ़्र की तालीम दी।

10. ऐश से मुराद कुफ़्र की हालत में रहना है। क्योंकि हर शख्स को अपने मज़हब में लज़्ज़त होती है। यानी और थोड़े दिन कुफ़्र कर लो यह धमकी और डंट है।

11. यानी जिस्मानी और माली इबादतों को (पृष्ठ 468 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 470 की तफ़सीर पृष्ठ 472-476 पर)

और (ऐ मुख़ातब!) जो कुछ ये ज़ालिम (काफ़िर) लोग कर रहे हैं इससे अल्लाह को बेख़बर मत समझ (क्योंकि) उनको सिर्फ़ उस दिन तक मोहलत दे रखी है जिसमें (उन लोगों की) निगाहें फटी रह जाएँगी। (42) दौड़ते होंगे, अपने सर ऊपर उठा रखे होंगे, (और) उनकी नज़र उनकी तरफ़ हटकर न आएँगी,¹ और उनके दिल बिल्कुल बदहवास होंगे। (43) और आप उन लोगों को उस दिन से डराइए जिस दिन उनपर अज़ाब आ पड़ेगा। फिर ये ज़ालिम लोग कहेंगे कि ऐ हमारे रब! एक थोड़ी-सी मुद्दत तक हमको (और) मोहलत दे दीजिए, हम आपका सब कहना मान लेंगे और पैग़म्बरों की इत्तिबा “यानी पैरवी” करेंगे। (जवाब में इशार्द होगा) क्या तुमने इससे पहले कस्में न खाई थीं कि तुमको कहीं जाना ही नहीं है? (44) हालाँकि तुम उन (पहले) लोगों के रहने की जगहों में रहते थे जिन्होंने अपनी ज़ात का नुक़सान किया था, और तुमको (यह भी) मालूम हो गया था कि हमने उनके साथ क्योकर मामला किया था, और हमने तुमसे मिसालें बयान कीं।² (45) और उन लोगों ने अपनी-सी बहुत ही बड़ी-बड़ी तदबीरें कीं, और उनकी तदबीरें अल्लाह के सामने थीं। और वाकई उनकी तदबीरें ऐसी थीं कि उनसे पहाड़ भी टल जाएँ, (मगर सब बेकार हो गईं)।³ (46) पस अल्लाह तआला को अपने रसूलों से वायदा-ख़िलाफ़ी करने वाला न समझना, बेशक अल्लाह तआला बड़ा ज़बरदस्त (और) पूरा बदला लेने वाला है। (47) जिस दिन दूसरी ज़मीन बदल दी जाएगी इस ज़मीन के अलावा और आसमान भी,⁴ और सब-के-सब एक ज़बरदस्त अल्लाह के सामने पेश होंगे। (48) और तू मुज़्रिमों (यानी काफ़िरों) को ज़न्जीरों में जकड़े हुए देखेगा। (49) (और) उनके कुत्ते कतरान के होंगे,⁵ और आग उनके चेहरों पर लिपटी होगी। (50) ताकि अल्लाह तआला हर (मुज़्रिम) शख्स को उसके किए की सज़ा दे, यकीनन अल्लाह तआला बड़ी जल्दी हिसाब लेने वाला है। (51) यह (कुरआन) लोगों के लिए (अहक़ाम का) पहुँचाना है, और ताकि इसके ज़रिये से (अज़ाब से) डराए जाएँ, और ताकि इस बात का यकीन कर लें कि वही एक माबूद (बरहक़) है, और ताकि समझदार लोग नसीहत हासिल करें। (52) ♦

15 सूर: हिज्र 54

सूर: हिज्र मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 99 आयतें और 6 रुकूअ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

अलिफ़-लाम-रा।¹ ये आयतें हैं एक (कामिल) किताब और वाज़ेह कुरआन की।² (1)

(पिछले पृष्ठ का शेष)

अदा करते हैं कि यही नेमत का शुक्र है। इस आयत में मोमिनों की कई तरह तारीफ़ हो गई। एक तो ‘अल्लज़ी-न आमनू’ से उनको ताबीर फ़रमाया, फिर उनको अ़िबादी (यानी मेरे बन्दे) सम्मान बढ़ाने के तौर पर फ़रमाया, फिर इनायत फ़रमाते हुए शुक्र करने की तरगीब देकर नाशुकी की बड़ी आफ़त से बचा लिया।

(तफ़सीर पृष्ठ 470)

1. जो-जो चीज़ में शर्त यह है कि वह बन्दे के हाल के भी मुनासिब हो। इससे यह शुब्हा जाता रहा कि बाज़ चीज़ें हम माँगते हैं मगर वे नहीं मिलतीं। सो वे अल्लाह की मस्तहत में माँगने वाले के हाल के मुनासिब न होंगी।

2. क्योंकि वह अल्लाह की नेमतों की क़द्र और उनका शुक्र अदा नहीं करता बल्कि और इसके उनट कुफ़ व नाफ़रमानी करने लगता है।

3. हज़रत इसमाईल अलैहिस्सलाम और हज़रत हाज़रा अलैहस्सलाम को अल्लाह के हुक्म से मक्का के मैदान में लाकर रखने के वक़्त दुआ के तौर पर कहा।

4. यानी इसके रहने वाले अमन के हक़दार रहें, यानी इसको हरम कर दीजिए।

5. बुत-परस्ती से महफूज़ रखिए जो जाहिलों में राज़ि है, जैसा कि अब तक महफूज़ रखा।

6. यानी उनकी गुमराही के सबब हो गए, इसलिए डरकर आपकी पनाह चाहता हूँ। और मैं जिस तरह औलाद के बचने की दुआ करता हूँ इसी तरह उनको भी कहता-सुनता रहूँगा। (पृष्ठ 470 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 472 की तफ़सीर पृष्ठ 474-478 पर)

चौदहवाँ पार: रु-बमा

सूर: हिज़्र (आयत 2 से 99)

काफ़िर लोग बार-बार तमन्ना करेंगे कि क्या ख़ूब होता अगर वे मुसलमान होते।¹ (2) आप उनको (उनके हाल पर) रहने दीजिए कि वे खा लें और चैन उड़ा लें और ख़्याली मन्सूबे उनको ग़फलत में डाले रखें, उनको अभी हकीक़त मालूम हुई जाती है। (3) और हमने जितनी बस्तियाँ हलाक की हैं उन सबके लिए एक मुकर्रर (वक़््त) लिखा हुआ (होता रहा) है। (4) कोई उम्मत अपनी मुकर्ररा मीयाद से न पहले (हलाक) हुई है और न पीछे रही है।² (5) और (उन काफ़िरो ने यूँ) कहा कि ऐ वह शख़्स जिसपर कुरआन नाज़िल किया गया है, तहकीक़ कि तुम मजन्नु हो। (6) अगर तुम सच्चे हो तो हमारे पास फ़रिश्तों को क्यों नहीं लाते। (7) हम फ़रिश्तों को साफ़ फ़ैसले ही के लिए नाज़िल किया करते हैं, और उस वक़््त उनको मोहलत भी न दी जाती। (8) हमने कुरआन को नाज़िल किया है और हम इसके मुहाफ़िज़ हैं।³ (9) और हमने आपसे पहले भी (पैग़म्बरों को) अगले लोगों के गिरोहों में भेजा था। (10) और कोई रसूल उनके पास ऐसा नहीं आया जिसके साथ उन्होंने हँसी-ठट्टा न किया हो। (11) इसी तरह हम यह (हँसी और मज़ाक़ उड़ाना) उन मुज़िर्मों के दिलों में डाल देते हैं। (12) (जिसकी वजह से) ये लोग इस (कुरआन) पर ईमान नहीं लाते, और (यह) दस्तूर पहलों ही से होता आया है। (13) और अगर हम उनके लिए आसमान में कोई दरवाज़ा खोल दें फिर ये दिन के वक़््त उसमें चढ़ जाएँ। (14) (तब भी यूँ) कह दें कि हमारी नज़रबन्दी कर दी गई थी, बल्कि हम लोगों पर तो बिल्कुल जादू कर रखा है। (15) ♦

और बेशक हमने आसमान में बड़े-बड़े सितारे पैदा किए, और देखने वालों के लिए उसको सजाया।⁴ (16) और उसको हर शैतान मरदूद से महफूज़ फरमाया।⁵ (17) हाँ मगर कोई बात चोरी-छुपे सुन भागे तो उसके पीछे एक चमकदार शोला हो लेता है।⁶ (18) और हमने ज़मीन को फैलाया और उसमें भारी-भारी पहाड़ डाल दिए और उसमें हर किस्म की चीज़ एक मुतैयन मिक्कदार “मात्रा” से उगाई है। (19) और हमने तुम्हारे

(पिछले पृष्ठ का शेष) 7. उनकी मफ़िरत और रहमत का सामान भी कर सकते हैं कि उनको हिदायत कर दें। इस दुआ से मकसूद मोमिनो के लिए हिदायत तलब करना है।

8. यानी इसमाईल अलैहिस्सलाम को और उनके वास्ते से उनकी नस्ल को।

9. यानी ख़ाना काबा के करीब जो कि पहले से यहाँ बना हुआ था और हमेशा से लोग उसका अदब करते आते थे।

10. चटियल और सुनसान मैदान में जो पथरीला होने के सबब खेती-बाड़ी के काबिल नहीं।

11. कि यहाँ आकर रहें-सहें ताकि आबादी पुर-रौनक हो जाए।

12. चूँकि यहाँ खेती-बाड़ी वगैरह नहीं हो सकती, इसलिए उनको महज़ अपनी कुदरत से फल खाने को दीजिए।

13. ये दुआएँ महज़ बन्दगी और आजिजी के इज़हार के लिए हैं, इनसे यह गरज़ नहीं कि दरख़ास्त करके आपको अपनी हाजतों की इत्तिला दें।

14. कि औलाद के देने के मुताल्लिक़ मेरी दुआ कबूल की।

15. चूँकि मुझको वह्द से मालूम हो गया है कि मेरी औलाद में गैर-मोमिन भी होंगे इसलिए सारी औलाद के लिए दुआ नहीं कर सकता।

16. इस मक़ाम पर इब्राहीम अलैहिस्सलाम की कई दुआएँ सिवाय माँ-बाप की मफ़िरत के सब कबूल हुई। अव्वल मक्का को अमन वाला बनाना। चुनाँचे वह इस तरह कबूल हुई कि वह हरम हो गया जिसमें कल्ल व ग़ारत यहाँ तक कि जंगली जानवरों और बाज़े घास और पौधों का काटना व हटाना भी हराम हो गया। दूसरी दुआ अपने और अपनी औलाद के शिर्क से महफूज़ रहने की थी। वह इस तरह कबूल हुई कि उनके ख़ास फ़रज़न्द (पृष्ठ 470 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 472, 474 की तफ़सीर पृष्ठ 476-480 पर)

वास्ते उसमें रोज़ी के सामान बनाए और उनको भी (रोज़ी दी) कि जिनको तुम रोज़ी नहीं देते। (20) और जितनी चीज़ें हैं हमारे पास सब ख़ज़ाने (के ख़ज़ाने) हैं। और हम उस (चीज़) को एक मुतैयन मिक्दार “यानी मात्रा” से उतारते रहते हैं। (21) और हम ही हवाओं को भेजते रहते हैं जो कि बादलों को पानी से भर देती हैं, फिर हम ही आसमान से पानी बरसाते हैं, फिर वह (पानी) तुमको पीने को देते हैं, और तुम (इतना पानी) जमा करके न रख सकते थे। (22) और हम ही ज़िन्दा करते हैं और मारते हैं, और हम ही (बाकी) रह जाँगे। (23) और हम तुम्हारे अगलों को भी जानते हैं और हम तुम्हारे पिछलों को भी जानते हैं। (24) और बेशक आपका रब ही उन सबको जमा फ़रमाएगा, बेशक वह हिक्मत वाला, इल्म वाला है। (25) ♦

और हमने इनसान को¹ बजती हुई मिट्टी से जो कि सड़े हुए गारे की बनी हुई थी, पैदा किया। (26) और जिन्न को इससे पहले² आग से कि वह एक गर्म हवा थी, पैदा कर चुके थे। (27) और (वह वक़्त याद करने के काबिल है) जब आपके रब ने फ़रिश्तों से फ़रमाया कि मैं एक बशर को बजती हुई मिट्टी से जो कि सड़े हुए गारे से बनी होगी, पैदा करने वाला हूँ। (28) सो जब मैं उसको पूरा बना चुकूँ और उसमें अपनी तरफ़ से जान डाल दूँ तो तुम सब उसके सामने सज्दे में गिर पड़ना। (29) सो सारे के सारे फ़रिश्तों ने सज्दा किया। (30) मगर इब्नीस ने (नहीं किया), उसने इस बात को कबूल नहीं किया कि सज्दा करने वालों में शामिल हो।³ (31) (अल्लाह तआला ने) फ़रमाया कि ऐ इब्नीस! तुझको कौन-सी बात इसकी सबब हुई कि तू सज्दा करने वालों में शामिल न हुआ। (32) कहने लगा कि मैं ऐसा नहीं कि बशर “आदमी” को सज्दा करूँ जिसको आपने बजती हुई मिट्टी से जो कि सड़े हुए गारे की बनी है, पैदा किया है।⁴ (33) इर्शाद हुआ कि तू इस (आसमान) से निकल, क्योंकि बेशक तू मरदूद हो गया। (34) और बेशक तुझपर लानत रहेगी कियामत के दिन तक।⁵ (35) कहने लगा, तो फिर मुझको मोहलत दीजिए कियामत के दिन तक। (36) इर्शाद हुआ कि तुझको मोहलत दी गई। (37) तय वक़्त की तारीख़ तक। (38) कहने लगा कि ऐ मेरे परवर्दिगार! इस सबब

(पिछले पृष्ठ का शेष)

जो आपकी पुश्त से थे इससे महफूज़ रहे, पस औलाद दर औलाद के शिर्क से कोई इश्काल लाज़िम नहीं आता। खुद इब्राहीम अतैहिस्सलाम शिर्क से शुरू से बरी और पाक चले आते थे। अपने लिए जो शिर्क से महफूज़ रहने की दुआ की तो उससे हमेशा महफूज़ रहना मकसूद था, फिर यह कि हमेशा की हिफाज़त भी नुबुव्वत व मासूम होने की वजह से यकीनी थी फिर उसकी तलब के क्या मायने? जवाब यह है कि गुनाहों से महफूज़ रहने का लाज़िम रहना अल्लाह की तौफीक से है, कोई तबई चीज़ नहीं, इसलिए हिफाज़त की तलब ज़रूरी है। तीसरी दुआ नामाज़ की पाबन्दी के लिए थी, यह भी कबूल हुई। आपकी औलाद में बहुत-से आबिद बल्कि आबिदों के सरदार हुए। चौथी दुआ भी कबूल हुई, चुनौचे पहले कबीला जुहुम ने वहाँ आकर रिहाइश इख़्तियार की फिर मुख़्तलिफ़ ज़मानों में लोग मुख़्तलिफ़ मक़ामात से आकर वहाँ बसते रहे। पाँचवीं दुआ फलों के लिए थी। यह दो तरह से कबूल हुई एक ताइफ़ में पैदावार की ज़्यादती, दूसरे दुनिया के दूसरे शहरों और मुल्कों से उनका आना।

(तफ़सीर पृष्ठ 472)

1. यानी ऐसी टिकटिकी बंधेगी कि आँख न झपकेगी।

2. यानी कियामत के इनकारी थे और इसपर क़सम खाते थे।

3. यानी आसमानी किताबों में हमने इन वाकिआत को मिसाल के तौर पर बयान किया कि अगर तुम ऐसा करोगे तो तुम भी ऐसे ही गुज़ब और अज़ाब के हक़दार होगे। पस वाकिआत का पहले तो ख़बरो से सुनना फिर हमारा उनको बयान करना, फिर उन जैसा बनने पर तबीह कर देना, इन सब असबाब का तकाज़ा यह था कि कियामत का इनकार न करते।

4. यह जो फ़रमाया कि उन तदबीरों से पहाड़ों का टल जाना भी हैरतनाक न था, तो यह किसी चीज़ की कुव्वत बयान करने के लिए एक मुहावरा है, और अपने आप में यह चीज़ कुछ मुहाल भी नहीं, क्योंकि पहाड़ों के तोड़ने और उड़ाने की तदबीरें आजकल ख़ूब कसरत से इस्तेमाल में आ रही हैं। और अल्लाह ही ज़्यादा बेहतर जानते हैं।

5. यानी इन आसमानों के अलावा आसमान भी (पृष्ठ 472 की बकिया तफ़सीर और पृष्ठ 474, 476 की तफ़सीर पृष्ठ 478-482 पर)

से कि आपने मुझको गुमराह किया है मैं कसम खाता हूँ कि मैं आपको दुनिया में (गुनाहों को) पसन्दीदा करके दिखाऊँगा, और उन सबको गुमराह करूँगा। (39) सिवाय आपके उन बन्दों के जो उनमें से चुन लिए गए हैं। (40) इर्शाद हुआ कि यह एक सीधा रास्ता है जो मुझ तक पहुँचता है। (41) वाकई मेरे उन बन्दों पर तेरा ज़रा भी बस न चलेगा, हाँ मगर जो गुमराह लोगों में से तेरी राह पर चलने लगे। (42) और उन सबसे जहन्नम का वायदा है। (43) जिसके सात दरवाज़े हैं, हर दरवाज़े के लिए उन लोगों के अलग-अलग हिस्से हैं। (44) ♦

बेशक खुदा से डरने वाले बागों और चश्मों में होंगे। (45) तुम उनमें सलामती और अमन से दाखिल हो। (46) और उनके दिलों में जो कीना था हम वह सब दूर कर देंगे कि सब भाई-भाई की तरह रहेंगे, तख्तों पर आमने-सामने (बैठा करेंगे)। (47) वहाँ आपको ज़रा भी तकलीफ़ न पहुँचेगी और न वे वहाँ से निकाले जाएँगे। (48) आप मेरे बन्दों को इत्तिला दे दीजिए कि मैं बड़ा मरिफ़रत वाला, बड़ा रहमत वाला (भी) हूँ। (49) और यह कि मेरी सज़ा दर्दनाक सज़ा है। (50) और आप आपको इब्राहीम के मेहमानों की भी इत्तिला दीजिए। (51) जबकि वे उनके पास आए, फिर उन्होंने अस्सलामु अलैकुम कहा, (इब्राहीम) कहने लगे कि हम तो तुमसे डर रहे हैं। (52) उन्होंने कहा कि आप डरें नहीं, हम आपको एक फ़रज़न्द “यानी लड़के” की खुशख़बरी देते हैं जो बड़ा आलिम होगा। (53) (इब्राहीम) कहने लगे कि क्या तुम मुझको इस हालत पर खुशख़बरी देते हो कि मुझपर बुढ़ापा आ गया, सो किस चीज़ की खुशख़बरी देते हो। (54) वे बोले कि हम आपको हक़ चीज़ की खुशख़बरी देते हैं, सो आप नाउम्मीद न हों। (55) (इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने) फ़रमाया कि भला अपने रब की रहमत से कौन नाउम्मीद होता है सिवाय गुमराह लोगों के। (56) फ़रमाने लगे कि अब तुमको क्या मुहिम पेश आई है ऐ भेजे हुए (फ़रिश्तो)! (57) (फ़रिश्तों ने) कहा कि हम एक मुज्जिम कौम की तरफ़ भेजे गए हैं। (58) मगर लूत का ख़ानदान, कि हम उन सबको बचा लेंगे। (59)

(पिछले पृष्ठ का शेष)

दूसरे बदल दिए जाएँगे। क्योंकि पहली बार के सूर फूँकने से सब ज़मीन व आसमान टूट-फूट जाएँगे, फिर दूसरी बार नये सिरों से ज़मीन व आसमान बनेंगे। हदीसों से साबित होता है कि इस दोबारा पैदा करने के अलावा आसमानों और ज़मीन में कोई और तब्दीली भी होगी, जिसमें अहले महशर किसी तब्दीली के वक़्त ज़मीन पर नहीं होंगे बल्कि पुलसिरात पर होंगे, जैसा कि मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में वज़ाहत है। बाकी उस तब्दीली की हिक्मत खुदा-ए-अलीम ही को मालूम है।

6. कतरान चीड़ के पेड़ का रोगन होता है। यानी सारे बदन को चीड़ का तेल लिपटा होगा कि उसमें आग जल्दी और तेज़ी के साथ लगे।

7. खुलासा इस सूर: का ये मज़ामीन हैं: कुरआन का हक़ होना, काफ़िरों को अज़ाब देना, रिसालत की तहकीक़, तौहीद का साबित करना, बाज़ इनामात का ज़िक्र, फ़रमाँबर्दारों को बदला और जज़ा, मुखालिफ़ों को सज़ा, बतौर नमूना जज़ा और सज़ा के बाज़ किस्से, कियामत की हकीक़त और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तसल्ली।

8. यानी इसकी दोनों सिफ़तें हैं, कामिल किताब होना भी और वाज़ेह कुरआन होना भी।

(तफ़सीर पृष्ठ 474)

1. बार-बार इसलिए कि जब कोई नई शिद्दत वाक़ेअ होगी और मालूम होगा कि इसका सबब क़फ़्र है तब ही इस्लाम न लाने पर ताज़ा हसरत करेंगे।

2. पस इसी तरह जब उनका वक़्त आ जाएगा उनको भी सज़ा दे दी जाएगी।

3. इसलिए इसमें कोई कमी-बेशी नहीं कर सकता, जैसा कि और किताबों में होता आ रहा है कि बावजूद किसी मुखालिफ़ के न होने के उसके नुस्खों में कमी-ज्यादती का इख़्तिलाफ़ होता है, और इसमें मुखालिफ़ों की कोशिश के बावजूद यह बात नहीं हुई।

4. ‘बुरुज’ की तफ़सीर सितारों के साथ (पृष्ठ 474 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 476, 478 की तफ़सीर पृष्ठ 480-484 पर)

सिवाय उनकी बीवी के कि हमने उसके बारे में तय कर रखा है कि वह ज़रूर उसी मुज़्रिम कौम में रह जाएगी।^१ (60) ♦

फिर जब भेजे हुए (फ़रिश्ते) लूत के ख़ानदान के पास आए (61) (तो) वे कहने लगे, तुम तो अजनबी आदमी हो। (62) उन्होंने कहा, नहीं! बल्कि हम आपके पास वह चीज़ लेकर आए हैं जिसमें ये लोग शक किया करते थे।^२ (63) और हम आपके पास यकीनी (होने वाली) चीज़ लेकर आए हैं और हम बिलकुल सच्चे हैं। (64) सो आप रात के किसी हिस्से में अपने घर वालों को लेकर चले जाइए, और आप सबके पीछे हो लीजिए,^३ और तुममें से कोई पीछे फिरकर भी न देखे, और जिस जगह का तुमको हुक्म हुआ है उस तरफ़ सब चले जाना।^४ (65) और हमने उनके (यानी लूत अलैहिस्सलाम के) पास यह हुक्म भेजा कि सुबह होते ही उनकी बिलकुल जड़ ही कट जाएगी।^५ (66) और शहर के लोग ख़ूब खुशियाँ करते हुए पहुँचे।^६ (67) (लूत अलैहिस्सलाम ने) फ़रमाया कि ये लोग मेरे मेहमान हैं, सो मुझको फ़ज़ीहत मत करो। (68) और अल्लाह तआला से डरो और मुझको रुस्वा मत करो। (69) वे कहने लगे कि क्या हम आपको दुनिया भर के लोगों से मना नहीं कर चुके। (70) (हज़रत लूत ने) फ़रमाया कि ये मेरी (बहु) बेटियाँ मौजूद हैं,^७ अगर तुम (मेरा कहना) करो। (71) आपकी जान की कसम वे अपनी मस्ती में मदहोश थे। (72) पस सूरज निकलते-निकलते उनको सख़्त आवाज़ ने आ दबाया। (73) फिर हमने उन बस्तियों का ऊपर का तख़्ता तो नीचे कर दिया और उन लोगों पर कँगर के पत्थर बरसाना शुरू किए। (74) इस (वाकिए) में कई निशानियाँ हैं अक्ल रखने वालों के लिए।^८ (75) और ये (बस्तियाँ) एक आबाद सड़क पर (मिलती) हैं।^९ (76) उन (बस्तियों) में ईमान वालों के लिए बड़ी इबरत है। (77) और बन वाले (शुऐब की उम्मत भी) बड़े ज़ालिम थे। (78) सो हमने उनसे बदला लिया,^{१०} और दोनों (बस्तियाँ) साफ़ सड़क पर हैं।^{११} (79) ♦

और हिज़्र वालों ने पैग़म्बरों को झूठा बतलाया।^{१२} (80) और हमने उनको अपनी निशानियाँ दीं, सो वे लोग उनसे मुँह मोड़ते रहे। (81) और वे लोग पहाड़ों को तराश-तराशकर उनमें घर बनाते थे कि अमन में रहें। (82) सो उनको सुबह के वक़्त सख़्त आवाज़ ने आन पकड़ा। (83) सो उनके हुनर उनके कुछ भी काम

(पिछले पृष्ठ का शेष) मुजाहिद और क़तादा से, और बड़े सितारों के साथ अबू सालेह से दुर्रें मन्सूर में नक़ल की गई है। तश्बीह देते हुए मजाज़न उनको बुरूज कह दिया गया।

5. कि वहाँ तक उनकी रसाई नहीं होने पाती।

6. जानना चाहिए कि कुरआन व हदीस में यह दावा नहीं कि बिना इस सबब के शिहाब (टूटने वाला चमकदार सितारा) पैदा नहीं होता बल्कि दावा यह है कि चोरी-छुपे आसमानी ख़बरें सुनने के वक़्त शिहाब (टूटने वाले चमकदार सितारे) से शैतानों को मारा जाता है। पस मुम्किन है कि शिहाब कभी महज़ तबई तौर पर होता हो और कभी इस ग़रज़ के लिए होता हो। और शिहाबे साकिब (टूटने वाला चमकदार सितारा) दिन को भी होता है लेकिन सूरज की रोशनी की वजह से नज़र नहीं आता। तो यह वस्वसा न रहा कि शैतान रात ही को चोरी-छुपे बात सुनने की कोशिश करते हैं।

(तफ़सीर पृष्ठ 476)

1. यानी इस ज़िन्स की पहली असल यानी आदम अलैहिस्सलाम को।

2. यानी आदम अलैहिस्सलाम से पहले।

3. यानी सज़्दा न किया।

4. यानी ऐसे हकीर व ज़लील मादे से बनाया गया है और मैं नूरानी मादे आग से पैदा हुआ हूँ, तो नूरानी होकर अंधेरी वाले को कैसे सज़्दा करूँ।

5. यानी कियामत तक तू मेरी रहमत से (पृष्ठ 476 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 478, 480 की तफ़सीर पृष्ठ 482-486 पर)

न आए।¹ (84) और हमने आसमानों को और ज़मीन को और उनकी दरमियानी चीज़ों को बग़ैर मस्लहत के पैदा नहीं किया,² और ज़रूर कियामत आने वाली है। सो आप ख़ूबी के साथ दरगुज़र कीजिए।³ (85) बेशक आपका रब बड़ा ख़ालिफ़, बड़ा आलिम है। (86) और हमने आपको सात आयतें दीं जो (नमाज़ में) बार-बार (पढ़ी जाती) हैं⁴ और कुरआने अज़ीम (दिया)। (87) आप अपनी आँख उठाकर उस चीज़ को न देखिए जो कि हमने उन मुख़लिफ़ किस्म के (काफ़िर) लोगों को बरतने के लिए दे रखी है, और उनपर ग़म न कीजिए और मुसलमानों पर शफ़क़त रखिए। (88) और कह दीजिए कि मैं खुल्लम-खुल्ला डराने वाला हूँ (89) जैसा कि हमने उन लोगों पर (अज़ाब) नाज़िल किया है जिन्होंने हिस्से कर रखे थे। (90) यानी आसमानी किताब के मुख़लिफ़ हिस्से करार दिए थे। (तुमपर भी नाज़िल करेंगे)⁵ (91) सो आपके रब की कसम हम उन सबसे पूछताछ करेंगे (92) उनके आमाल की। ♦ (93) गरज़ आपको जिस बात का हुक्म किया गया है उसको साफ़-साफ़ सुना दीजिए, और (उन) मुशिरकों की परवाह न कीजिए। (94) हँसी उड़ाने वालों के लिए हम काफ़ी हैं। (95) ये लोग जो अल्लाह के साथ दूसरा माबूद करार देते हैं, उनसे आपके लिए हम काफ़ी हैं, सो उनको अभी मालूम हुआ जाता है। (96) और वाकई हमको मालूम है कि ये लोग जो बातें करते हैं उनसे आप तंगदिल होते हैं। (97) सो आप अपने परवर्दिगार की तस्बीह व तारीफ़ करते रहिए, और नमाज़ें पढ़ने वालों में रहिए। (98) और अपने रब की इबादत करते रहिए यहाँ तक कि आपको मौत आ जाए।⁶ (99) ♦

16 सूर: नह्ल 70

सूर: नह्ल मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 128 आयतें और 16 रुकूअ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

अल्लाह का हुक्म आ पहुँचा,⁷ सो तुम उसमें जल्दी मत मचाओ। वह लोगों के शिर्क से पाक और बरतार है।⁸ (1) वह फ़रिश्तों को वह्य यानी अपना हुक्म देकर अपने बन्दों में से जिसपर चाहें नाज़िल फ़रमाते हैं, कि ख़बरदार कर दो कि मेरे सिवा कोई इबादत के लायक नहीं, सो मुझसे डरते रहो।⁹ (2) आसमानों को और

(पिछले पृष्ठ का शेष) दूर रहेगा, न मकबूल होगा और न तुझपर रहमत की जाएगी और न तौबा की तौफीक होगी। और जाहिर है कि कियामत तक जो रहमत नाज़िल होने का मक़ाम न होगा उसके कियामत में रहमत का महल होने का एहतिमाल ही नहीं। पस जिस वक़्त तक एहतिमाल था उसकी नफ़ी कर दी।

- (तफ़सीर पृष्ठ 478)
1. यानी जिनको आपने मेरे असर से महफूज़ रखा है।
 2. यानी इस वक़्त भी हर बुराई से सलामती है और आगे भी किसी बुराई का अन्देशा नहीं।
 3. ताकि इससे ख़बरदार होकर ईमान और तक्वे की तरफ़ दिलचस्पी और कुफ़ व नाफ़रमानी से नफ़रत हो।
 4. इब्राहीम अलैहिस्सलाम उनकी मेहमान समझकर फ़ौरन उनके लिए खाना तैयार करके लाए मगर चूँकि वे फ़रिश्ते थे, उन्होंने खाना नहीं खाया, तब इब्राहीम अलैहिस्सलाम दिल में डरे कि ये लोग खाना क्यों नहीं खाते। चूँकि वे फ़रिश्ते इनसानी सूरत में थे इसलिए उनको इनसान ही समझा और उनके खाना न खाने से शुब्हा हुआ कि ये लोग कहीं मुख़लिफ़ न हों।
 5. मतलब यह कि नबी होगा। क्योंकि आदमियों में सबसे ज़्यादा इल्म अम्बिया को होता है। मुराद इस लड़के से हज़रत इसहाक हैं।
 6. मतलब यह कि यह बात अपने आप में अजीब है, न यह कि कुदरत से बईद है।
 7. यानी लड़के की पैदाइश यकीनन होने वाली है।
 8. यानी अपने बुढ़ापे पर नज़र न कीजिए कि (पृष्ठ 478 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 480, 482 की तफ़सीर पृष्ठ 484-486 पर)

ज़मीन को हिक्मत से बनाया, वह उनके शिर्क से पाक है। (3) इनसान को नुत्फे से बनाया फिर वह यकायक खुल्लम-खुल्ला झगड़ने लगा। (4) और उसी ने चौपायों को बनाया, उनमें तुम्हारे जाड़े का (भी) सामान है, और (भी) बहुत-से फायदे हैं और उनमें से खाते भी हो। (5) और उनकी वजह से तुम्हारी रौनक भी है, जबकि शाम के वक़्त लाते हो और जबकि सुबह के वक़्त छोड़ देते हो। (6) और वे तुम्हारे बोझ भी ऐसे शहर को ले जाते हैं जहाँ तुम जान को मेहनत में डाले बिना नहीं पहुँच सकते थे, वाकई तुम्हारा रब बड़ी शफ़क़्त वाला, बड़ी रहमत वाला है। (7) और घोड़े और ख़च्चर और गधे भी पैदा किए ताकि तुम उनपर सवार हो और यह कि ज़ीनत के लिए भी, और वह ऐसी-ऐसी चीज़ें बनाता है जिनकी तुमको ख़बर भी नहीं। (8) और सीधा रास्ता अल्लाह तक पहुँचता है, और बाज़े रास्ते टेढ़े भी हैं। और अगर वह (यानी खुदा) चाहता तो सबको मक़सूद तक पहुँचा देता। (9) ♦

वह ऐसा है जिसने तुम्हारे वास्ते आसमान से पानी बरसाया, जिससे तुमको पीने को मिलता है और उस (के सबब) से दरख़्त (पैदा होते) हैं जिनमें तुम (अपने मवेशियों को) चरने छोड़ देते हो। (10) (और) उस (पानी) से तुम्हारे लिए खेती और जैतून और खजूर और अंगूर और हर किस्म के फल उगाता है, बेशक इसमें सोचने वालों के लिए दलील है। (11) और उसने रात और दिन और सूरज और चाँद को तुम्हारे ताबे “यानी अधीन” किया, और सितारे उसके हुक्म से ताबे हैं। बेशक इसमें अक्ल रखने वाले लोगों के लिए चन्द दलीलें हैं। (12) और उन चीज़ों को भी जिनको तुम्हारे लिए ज़मीन में इस तौर पर पैदा किया कि उनकी किस्में मुख़्तलिफ़ “यानी अलग-अलग और विभिन्न” हैं,⁵ बेशक इसमें समझदार लोगों के लिए दलील है। (13) और वह ऐसा है कि उसने दरिया को ताबे किया ताकि उसमें से ताज़ा-ताज़ा गोشت खाओ, और उसमें से गहना निकालो जिसको तुम पहनते हो, और तू कश्तियों को देखता है कि वे पानी चीरती हुई चली जा रही हैं। और ताकि तुम उसकी (यानी खुदा की) रोज़ी तलाश करो और ताकि तुम शुक्र करो। (14) और उसने ज़मीन में

(पिछले पृष्ठ का शेष)

ऐसे असबाब पर नज़र करने से जो आदतन पाए जाते हों नाउम्मीदी के वस्वसे ग़ालिब होते हैं।

9. यानी नबी होकर गुमराहों की सिफ़्त अपने अन्दर कैसे पैदा कर सकता हूँ। मक़सद सिर्फ़ इस बात का अज़ीब होना है, बाकी अल्लाह का वायदा सच्चा है और मुझको उम्मीद से बढ़कर उसका कामिल यकीन है।

10. यानी उनको बचने का तरीका बतला देंगे कि उन मुज़िम्मों से अलग हो जाएँ।

(तफ़सीर पृष्ठ 480)

1. और उनके साथ अज़ाब में मुक्त्ला होगी।

2. यानी अज़ाब।

3. ताकि कोई रह न जाए, लौट न जाए और आपके रोब और डर से कोई पीछे फिरकर भी न देखे।

4. यानी मुल्क शाम।

5. यह फ़रिश्तों की गुफ़्तगू जो ऊपर ज़िक्र हुई ज़ाहिर होने में मुअख़्बर है। मक़सद की अहमियत के लिए ज़िक्र में मुक़द्दम फरमा दिया, और वह नजात देने और हलाक करने की ख़बर देना है। और आगे जो हिस्सा आता है वह ज़ाहिर होने में मुक़द्दम है।

6. यह ख़बर सुनकर कि लूत अलैहिस्सलाम के यहाँ हसीन-हसीन लड़के आए हैं।

7. यानी जो तुम्हारे घरों में हैं।

8. मिसाल के तौर पर एक यह कि बुरे काम का नतीजा बुरा होता है। एक यह कि ईमान व इताअत से नजात होती है। एक यह कि अल्लाह को बड़ी कुदरत है कि तबई असबाब के खिलाफ़ जो चाहे कर दे, और इसी तरह दूसरे।

9. यानी अरब से मुल्क शाम को जाते हुए उनके आसार और निशानियाँ मालूम होते हैं।

10. और उनको अज़ाब से हलाक कर दिया। (पृष्ठ 480 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 482, 484 की तफ़सीर पृष्ठ 486-488 पर)

पहाड़ रख दिए ताकि वह तुमको लेकर डगमगाने न लगे, और उसने नहरें और रास्ते बनाए ताकि तुम मन्ज़िले-मकसूद तक पहुँच सको। (15) और बहुत-सी निशानियाँ (बनाईं) और तारों से भी लोग रास्ता मालूम करते हैं। (16) सो क्या जो शख्स पैदा करता हो वह उस जैसा हो जाएगा जो पैदा नहीं कर सकता, फिर क्या तुम नहीं समझते। (17) और अगर तुम अल्लाह तआला की नेमतों को गिनने लगे तो न गिन सको। वाकई अल्लाह तआला बड़ी मग़्फ़िरत वाले, बड़ी रहमत वाले हैं।¹ (18) और अल्लाह तआला तुम्हारे छुपे और ज़ाहिरी हालात सब जानते हैं। (19) और खुदा के अलावा जिनकी ये लोग इबादत करते हैं, वे किसी चीज़ को पैदा नहीं कर सकते और वे खुद ही मख़्लूक “यानी पैदा किए हुए” हैं। (20) मुर्दे हैं,² ज़िन्दा नहीं, और उनको ख़बर नहीं कि (मुर्दे) कब उठाए जाएंगे।³ (21) ♦

तुम्हारा माबूद (बरहक) एक ही माबूद है, तो जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं लाते उनके दिल मुन्किर हो रहे हैं और वे तकब्बुर करते हैं। (22) ज़रूरी बात है कि अल्लाह तआला उनके छुपे व ज़ाहिरी सब हालात जानते हैं, यकीनी बात है कि अल्लाह तआला तकब्बुर करने वालों को पसन्द नहीं करते। (23) और जब उनसे कहा जाता है कि तुम्हारे रब ने क्या चीज़ नाज़िल फ़रमाई है,⁴ तो कहते हैं कि वे तो महज़ बेसनद बातें हैं जो पहलों से चली आ रही हैं।⁵ (24) (नतीजा इसका यह होगा) कि उन लोगों को क़ियामत के दिन अपने गुनाहों का पूरा बोझ और जिनको ये लोग बेइल्मी से गुमराह कर रहे थे उन (के गुनाहों) का भी कुछ बोझ अपने ऊपर उठाना पड़ेगा। ख़ूब याद रखो जिस (गुनाह) को ये अपने ऊपर लाद रहे हैं वह बुरा (बोझ) है।⁶ (25) ♦

जो लोग उनसे पहले हो गुज़रे हैं उन्होंने (बड़ी-बड़ी) तदबीरें कीं, सो अल्लाह तआला ने उनका (बना-बनाया) घर जड़-बुनियाद से ढा दिया, फिर ऊपर से उनपर छत आ पड़ी और उनपर अज़ाब ऐसी तरह आया कि उनको ख़याल भी न था। (26) फिर क़ियामत के दिन वह (यानी अल्लाह तआला) उनको रुस्वा

(पिछले पृष्ठ का शेष)

11. और मुल्क शाम को जाते हुए राह में नज़र आती है।

12. क्योंकि जब सालेह अलैहिस्सलाम को झूठा कहा और सब पैग़म्बरों का असल दीन एक ही है तो सब ही को झूठा बताया।

(तफ़सीर पृष्ठ 482)

1. उन्हीं मज़बूत घरों में अज़ाब से काम तमाम हो गया। इस आफ़त से उनके घरों ने न बचा लिया। इस आफ़त का उनको एहतिमाल भी न था और अगर होता भी तो क्या करते।

2. बल्कि इस मसलहत से पैदा किया कि उनको देखकर दुनिया को बनाने वाले के वजूद और उसके तन्हा व यक्ता होने और उसकी बड़ाई पर इस्तिदलाल करके उसके अहक़ाम की इताअत करें। और इस हुज्जत के कायम करने के बाद जो ऐसा न करे वह अज़ाब का शिकार हो।

3. दरगुज़र का मतलब यह है कि इस ग़म में न पड़िए। इसका ख़याल न कीजिए। और ख़ूबी यह कि शिक्वा-शिकायत भी न कीजिए।

4. मुराद इससे सूर: फ़तिहा है।

5. उनमें जो मरज़ी के मुवाफ़िक़ हुआ मान लिया, जो मरज़ी के खिलाफ़ हुआ उससे इनकार कर दिया। इससे मुराद यहूदी व ईसाई हैं।

6. यानी मरते दम तक ज़िक्क व इबादत में मशगूल रहिए। इसमें जिन उमूर का हुक्म किया गया और जो अन्न व सवाब का सबब हैं उनके अलावा यह भी ख़ासियत है कि इस तरफ़ ध्यान सीमित रखने से दूसरा मशगला जो कि दिल की तंगी का सबब था, ख़त्म या मग़लूब हो जाता है।

7. यानी कुफ़्र व शिर्क की सज़ा का वक़्त करीब आ पहुँचा और उसका आना यकीनी है।

8. यानी उसका कोई शरीक नहीं।

9. इसमें यह बात ज़ाहिर फ़रमा दी कि तौहीद तमाम अम्बिया अलैहिमुस्सलाम की शरीअत में मुश्तरक़ा है।

(पृष्ठ 484, 486 की तफ़सीर पृष्ठ 488-490 पर)।

करेगा और यह कहेगा कि मेरे शरीक जिनके बारे में तुम लड़ा-झगड़ा करते थे, कहाँ हैं, जानने वाले कहेंगे कि आज काफ़िरों पर पूरी रुस्वाई और अज़ाब है। (27) जिनकी जान फ़रिश्तों ने कुफ़ की हालत में निकाली थी, फिर वे (काफ़िर) लोग सुलह का (पैग़ाम) डालेंगे कि हम तो कोई बुरा काम न करते थे। क्यों नहीं? बेशक अल्लाह को तुम्हारे सब आमाल की पूरी ख़बर है। (28) सो जहन्नम के दरवाज़ों में (से) दाख़िल हो जाओ, उसमें हमेशा-हमेशा को रहो। गरज़ तकब्बुर करने वालों का (वह) बुरा ठिकाना है। (29) और जो लोग (शिरक से) बचते हैं उनसे कहा जाता है कि तुम्हारे रब ने क्या चीज़ नाज़िल फ़रमाई है, वे कहते हैं कि बड़ी ख़ैर नाज़िल फ़रमाई है। जिन लोगों ने नेक काम किए हैं उनके लिए इस दुनिया में भी भलाई है और आख़िरत की दुनिया तो (और ज़्यादा) बेहतर है, और वाकई (वह शिरक से) बचने वालों का अच्छा घर है। (30) (वह घर) हमेशा रहने के बाग़ हैं जिनमें ये दाख़िल होंगे, उन (बाग़ों) के नीचे से नहरें जारी होंगी। जिस चीज़ को उनका जी जाहेगा वहाँ उनको मिलेगी। इसी तरह का बदला अल्लाह (सब शिरक से) बचने वालों को देगा। (31) जिनकी रूह फ़रिश्ते इस हालत में निकालते हैं कि वे पाक होते हैं और कहते जाते हैं, अस्सलामु अलैकुम, तुम जन्मत में चले जाना अपने आमाल के सबब। (32) क्या ये लोग इसी बात के मुन्तज़िर हैं कि उनके पास फ़रिश्ते आ जाएँ या आपके परवर्दिगार का हुक्म आ जाए। ऐसा ही उनसे पहले जो लोग थे उन्होंने भी किया था, और उनपर अल्लाह ने ज़रा भी जुल्म न किया लेकिन वे आप ही अपने ऊपर जुल्म कर रहे थे। (33) आख़िर उनको उनके बुरे आमाल की सज़ाएँ मिलीं और जिस (अज़ाब) पर वे हँसते थे उनको उसी ने आन घेरा। (34) ♦

और मुशिरक लोग (यूँ) कहते हैं कि अगर अल्लाह तआला को मन्ज़ूर होता तो उसके सिवा किसी चीज़ की न हम इबादत करते और न हमारे बाप-दादा, और न हम उसके (हुक्म के) बग़ैर किसी चीज़ को हराम कह सकते। जो लोग उनसे पहले हुए हैं ऐसी ही हरकत उन्होंने भी की थी, सो पैग़म्बरों के ज़िम्मे तो सिर्फ़ साफ़-साफ़ पहुँचा देना है। (35) और हम हर उम्मत में कोई न कोई पैग़म्बर भेजते रहे हैं कि तुम अल्लाह

(तफ़सीर पृष्ठ 484)

1. मतलब यह कि हमारी तो ये नेमतें और इनसान की तरफ़ से यह नाशुक्री कि खुदा ही की ज़ात व सिफ़ात में झगड़ता है।

2. कि तुम्हारे आराम के लिए क्या-क्या सामान पैदा किए।

3. इन आयतों में ख़ूबसूरती और बनने-सँवरने का जायज़ होना मालूम होता है, और उसमें और तकब्बुर व बड़ाई जतलाने में फ़र्क़ यह है कि ख़ूबसूरती और सँवरना तो अपना दिल खुश करने के लिए या नेमत के इज़हार के लिए होता है। और दिल में अपने को न उस नेमत का मुस्तहिक़ समझता है और न दूसरों को हक़ीर व ज़लील समझता है बल्कि अल्लाह तआला की तरफ़ उसका मन्सूब होना उसकी नज़रों के सामने रहता है, और जिसमें हक़दार होने का दावा और दूसरों को हक़ीर व ज़लील समझना और अपने ऊपर नज़र और दूसरों की नज़र में बड़ाई और शान ज़ाहिर करना हो वह तकब्बुर और हराम है।

4. मगर वह उसी को पहुँचाते हैं जो इस सीधे रास्ते का तालिब हो, इसलिए तुमको चाहिए कि इन दलीलों में ग़ौर करो और उनसे हक़ तलब करो कि तुमको मकसूद तक पहुँचना नसीब हो।

5. इसमें तमाम जानदार, पेड़-पौधे और घास-फूस, बेजान चीज़ें, मुक्कब और अलग-अलग चीज़ें सब दाख़िल हो गए।

(तफ़सीर पृष्ठ 486)

1. कोई शिरक से तौबा कर ले तो मफ़िरत हो जाती है और न करे तो जब भी ये तमाम नेमतें ज़िन्दगी तक उससे दूर नहीं होती।

2. चाहे हमेशा के लिए जैसे बुत,

(पृष्ठ 486 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 488 की तफ़सीर पृष्ठ 490, 490 पर)

तआला की इबादत करो और शैतान से बचते रहो।¹ सो उनमें बाज़े वे हुए हैं कि जिनको अल्लाह तआला ने हिदायत दी, और बाज़े उनमें वे हुए जिनपर गुमराही साबित हो गई।² तो (अच्छा) ज़मीन में चलो-फिरो, देखो कि झुठलाने वालों का कैसा अन्जाम हुआ।³ (36) उनके सही रास्ते पर आने की अगर आपको तमन्ना हो तो अल्लाह तआला ऐसे शख्स को हिदायत नहीं करता जिसको गुमराह करता है, और उनका कोई हिमायती न होगा। (37) और ये लोग बड़े जोर लगा-लगाकर अल्लाह की कस्में खाते हैं कि जो मर जाता है अल्लाह उसे दोबारा ज़िन्दा न करेगा। क्यों नहीं? (ज़िन्दा करेगा) इस वायदे को तो उसने (यानी अल्लाह तआला ने) अपने ज़िम्मे लाज़िम कर रखा है, लेकिन अक्सर लोग यकीन नहीं लाते। (38) ताकि जिस चीज़ में ये लोग इख़्तिलाफ़ किया करते थे उनके सामने उसको ज़ाहिर कर दे, और ताकि काफ़िर लोग यकीन कर लें कि वाकई वही झूठे थे।⁴ (39) हम जिस चीज़ को चाहते हैं, तो हमारा उससे इतना ही कहना होता है कि तू हो जा, पस वह हो जाती है।⁵ (40) ♦

और जिन लोगों ने अल्लाह के वास्ते अपना वतन छोड़ दिया⁶ उसके बाद कि उनपर जुल्म किया गया, हम उनको दुनिया में ज़रूर अच्छा ठिकाना देंगे,⁷ और आख़िरत का सवाब तो कई दर्जे बड़ा है, काश उनको ख़बर होती।⁸ (41) वे ऐसे हैं जो सब्र करते हैं और अपने रबपर भरोसा रखते हैं।⁹ (42) और हमने आपसे पहले सिर्फ़ आदमी ही (रसूल बनाकर और मोजिज़ात और किताबें देकर) भेजे हैं, कि हम उनपर वह्य भेजा करते थे, सो अगर तुमको इल्म नहीं तो जानने वालों से पूछ देखो।¹⁰ (43) और आप पर भी यह कुरआन उतारा है, ताकि जो मज़ामीन लोगों के पास भेजे गए उनको आप उनसे ज़ाहिर कर दें, और ताकि वे “ग़ौर व” फ़िक्र किया करें।¹¹ ● (44) जो लोग बुरी (बुरी) तदबीरें करते हैं क्या (ऐसे लोग) फिर भी इस बात से

(पिछले पृष्ठ का शेष)

या फ़िलहाल जैसे जो मर चुके, या अन्जाम के एतिबार से जैसे जो मरेंगे, मिसाल के तौर पर फ़रिश्ते और जिन्न और ईसा अलैहिस्सलाम।

3. यानी बाज़ को तो इल्म ही नहीं और बाज़ को उसका तयशुदा वक्त मालूम नहीं। और माबूद को तो पूरा इल्म चाहिए खुसूसन मरने के बाद ज़िन्दा होने का कि उसपर इबादत करने या न करने की जज़ा होगी, तो उसका इल्म तो माबूद के लिए बहुत ही ज़रूरी है।

4. यानी कोई नावाक़िफ़ शख्स तहकीक़ के लिए या कोई वाक़िफ़ शख्स इम्तिहान के लिए उनसे पूछता है कि कुरआन जिसको रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह तआला का नाज़िल किया हुआ फरमाते हैं, क्या यह सही है।

5. यानी मज़हब वाले पहले से तौहीद, नुबुव्वत और आख़िरत के दावेदार होते आए हैं, उन्हीं से यह भी नक़ल करने लगे।

6. जो शख्स किसी को गुमराह किया करता है उस गुमराह को तो गुमराही का गुनाह होता है और उस गुमराह करने वाले को गुमराही का सबब बन जाने का। इसी सबब बनने के हिस्से को कुछ बोझ फरमाया गया। और अपने गुनाह के बोझ का पूरे तौर पर उठाना ज़ाहिर है।

(तफ़सीर पृष्ठ 488)

1. आयत का हासिल यह हुआ कि तुमने अपने से पहले काफ़ि़रों का हाल घाटे में रहने और दुनिया व आख़िरत के अज़ाब का सुन लिया। इसी तरह जो तदबीर व फ़रेब और बहानेबाज़ी दीने हक़ के मुकाबले में तुम कर रहे हो और मख़्लूक को गुमराह करना चाहते हो तो यही अन्जाम तुम्हारा होगा।

2. रूह निकलने के बाद जन्नत में जाना रूहानी जाना है, और जिस्मानी जाना मख़सूस है क़ियामत के साथ। और यह मायने भी हो सकते हैं कि क़ियामत में तुम जन्नत में जाना और मक़सद हर हाल में खुशख़बरी सुनाना है। और आमाज़ को जो जन्नत में दाख़िल होने का सबब फरमाया तो यह सबब आदतन है, और हकीक़ी सबब अल्लाह की रहमत है जैसा कि एक हदीस में आया है।

3. ऊपर मोमिनों के ज़िक्र से पहले काफ़ि़रों के गुमराह होने और गुमराह करने का ज़िक्र था। मोमिनों का ज़िक्र मुकाबले की मुनासबत से मज़मून के मुकम्मल करने के लिए दरमियान में आ गया, अब काफ़ि़रों की हठ-धर्मी और मुख़ालफ़त व दुश्मनी पर वईद है।

4. यानी क्या मौत के वक्त या क़ियामत में ईमान लाएंगे जबकि ईमान मक़बूल न होगा, अगरचे उस वक्त सब कुछ सामने आ जाने की वजह से तमाम कुफ़ार तौबा करेंगे। (पृष्ठ 490 की तफ़सीर पृष्ठ 492, 494 पर)

बेफिक्र हैं कि अल्लाह तआला आपको ज़मीन में धँसा दे या उनपर ऐसी जगह से अज़ाब आ पड़े जहाँ से आपको गुमान भी न हो।¹ (45) या आपको चलते-फिरते पकड़े, सो ये लोग (अल्लाह तआला) को हरगिज़ हरा नहीं सकते। (46) या आपको घटाते-घटाते पकड़ ले, सो तुम्हारा रब बड़ा शफ़ीक़, मेहरबान है। (47) क्या उन लोगों ने अल्लाह की उन पैदा की हुई चीज़ों को नहीं देखा जिनके साये कभी एक तरफ़ को कभी दूसरी तरफ़ को इस तौर पर झुक जाते हैं कि खुदा के ताबे “अधीन” हैं,² और वे चीज़ें भी आजिज़ हैं। (48) और अल्लाह तआला ही की ताबेदार हैं जितनी चीज़ें चलने वाली आसमानों में और ज़मीन में मौजूद हैं, और (खास तौर पर) फ़रिश्ते, और वे तकब्बुर नहीं करते। (49) वे अपने रब से डरते हैं जो कि उनपर हाकिम है, और आपको जो कुछ हुक्म किया जाता है वे उसको करते हैं। □ (50) ♦

और अल्लाह ने फ़रमाया है कि दो माबूद मत बनाओ, बस एक माबूद वही है, तो तुम लोग खास मुझ ही से डरा करो।³ (51) और सब चीज़ें उसी की हैं जो कुछ आसमानों और ज़मीन में हैं, और लाज़िमी तौर पर इताअत बजा लाना उसी का हक़ है,⁴ तो क्या फिर भी अल्लाह के सिवा औरों से डरते हो? (52) और तुम्हारे पास जो कुछ भी नेमत है वह सब अल्लाह ही की तरफ़ से है, फिर जब तुमको तकलीफ़ पहुँचती है तो उसी से फ़रियाद करते हो।⁵ (53) फिर जब तुमसे उस तकलीफ़ को हटा देता है तो तुममें की एक जमाअत अपने रब के साथ शिर्क करने लगती है।⁶ (54) (जिसका हासिल यह है) कि वे हमारी दी हुई नेमत की नाशुक्री करते हैं। ख़ैर कुछ दिन ऐश उड़ा लो अब जल्दी ही तुमको ख़बर हुई जाती है। (55) और ये लोग हमारी दी हुई चीज़ों में से उनका हिस्सा लगाते हैं जिनके मुताल्लिक़ आपको कुछ इल्म नहीं, कसम है खुदा की! तुमसे तुम्हारी इन बोहतान-बाज़ियों की ज़रूर बाज़पुर्स “यानी पूछताछ” होगी। (56) और अल्लाह तआला के लिए बेटियाँ तजवीज़ करते हैं, सुब्हानल्लाह! और अपने लिए पसन्दीदा चीज़ (यानी बेटे)। (57) और जब

(तफ़सीर पृष्ठ 490)

1. ‘और हम हर उम्मत में कोई न कोई पैग़म्बर भेजते रहे’ से जाहिरन यह मालूम होता है कि हिन्दुस्तान वालों के लिए भी पुराने ज़माने में कुछ रसूल भेजे गए हैं, चाहे वे हिन्दुस्तान ही में पैदा हुए और रहे हों या किसी और मुल्क में रहते हों और यहाँ उनके नायब तर्ज़ाग़ के लिए आए हों।
2. मतलब यह कि कुफ़र और अम्बिया में यह मामला इसी तरह चला आ रहा है। और हिदायत व गुमराही के मुताल्लिक़ अल्लाह तआला का मामला भी यूँ ही जारी है कि काफ़िरों का झगड़ना और बहस करना भी पुराना और नबियों की तालीम भी पुरानी, और सबका हिदायत न पाना भी पुराना, फिर आपको गुम क्यों हो।
3. पस अगर वे गुमराह न थे तो उनपर अज़ाब क्यों नाज़िल हुआ। और इन वाकिआत को इत्तिफ़ाक़िया इसलिए नहीं कह सकते कि ख़िलाफ़े आदत हुए और अम्बिया अलैहिमुस्सलाम की पेशीनगोई के बाद हुए, और मोमिनीन उससे बचे रहे, फिर उसके अज़ाब होने में क्या शक़ है।
4. पस कियामत का आना यकीनी और अज़ाब व सवाब का फैसला होना ज़रूरी है।
5. तो इतनी बड़ी कुदरते कामिला के सामने बेजान चीज़ों में देवारा जान का पड़ जाना कौन-सी दुश्वार है, जैसा कि पहली बार जान डाल चुके हैं।
6. और हब्श़ा को चले गए।
7. यानी आपको मदीना पहुँचकर ख़ूब अमन व राहत देंगे। चुनाँचे थोड़े ही दिनों के बाद अल्लाह तआला ने पहुँचा दिया और उसको असली वतन करार दिया, और उसको ठिकाना कहा और हर तरह की वहाँ तरक्की हुई। इसलिए ‘ह-स-न-’ कहा गया, और हब्श़ा का ठहरना आरज़ी (अस्थायी) था इसलिए उसको ठिकाना नहीं फ़रमाया।
8. और उसके हासिल करने की राग़बत से मुसलमान हो जाते।

(पृष्ठ 490 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 492 की तफ़सीर पृष्ठ 494 पर)

उनमें से किसी को औरत (यानी बेटी) की ख़बर दी जाए तो सारे दिन उसका चेहरा बेरौनक रहे, और वह दिल ही दिल में घुटता रहे। (58) जिस चीज़ की उसको ख़बर दी गई है उसकी शर्म से लोगों से छुपा-छुपा फिरे कि आया उसको ज़िल्लत पर लिए रहे या उसको मिट्टी में गाड़ दे। ख़ूब सुन लो उनकी यह तजवीज़ बहुत ही बुरी है। (59) जो लोग आखिरत पर यकीन नहीं रखते उनकी बुरी हालत है,¹ और अल्लाह तआला के लिए तो बड़ी आला दर्जे की सिफतें (साबित) हैं, और वह बड़े ज़बरदस्त हैं (और) हिक्मत वाले हैं। (60) ♦

और अगर अल्लाह तआला लोगों पर उनके जुल्म के सबब दारोगीर “यानी पकड़” फरमाते तो ज़मीन के ऊपर कोई हरकत करने वाला न छोड़ते, लेकिन एक मुकर्ररा वक़्त तक मोहलत दे रहे हैं। फिर जब उनका मुकर्ररा वक़्त आ पहुँचेगा उस वक़्त एक घड़ी “पल” न पीछे हट सकेंगे और न आगे बढ़ सकेंगे। (61) और अल्लाह तआला के लिए वे उमूर तजवीज़ करते हैं जिनको खुद नापसन्द करते हैं और अपनी ज़बान से झूठे दावे करते जाते हैं कि उनके लिए हर तरह की भलाई है, लाज़िमी बात है कि उनके लिए दोज़ख़ है, और बेशक वे लोग सबसे पहले भेजे जाएँगे। (62) खुदा तआला की कसम! आपसे पहले जो उम्मतें हो गुज़री हैं उनके पास भी हमने (रसूलों को) भेजा था, सो उनको भी शैतान ने उनके आमाल अच्छे बना करके दिखलाए, पस वह आज उनका रफ़ीक़ “यानी साथी” था, और उनके वास्ते दर्दनाक सज़ा है।² (63) और हमने आप पर यह किताब सिर्फ़ इसलिए नाज़िल की है कि जिन उमूर में लोग इख़्तिलाफ़ कर रहे हैं आप (आम) लोगों पर उसको ज़ाहिर फरमा दें, और ईमान वालों की हिदायत और रहमत की गरज़ से (नाज़िल फरमाया), (64) और अल्लाह तआला ने आसमान से पानी बरसाया, फिर उससे ज़मीन को उसके मुर्दा होने के बाद ज़िन्दा किया,³ इसमें ऐसे लोगों के लिए बड़ी दलील है जो सुनते हैं। (65) ♦

और (साथा ही) तुम्हारे लिए मवेशियों में भी ग़ौर करने का मक़ाम है। उनके पेट में जो गोबर और ख़ून है उसके दरमियान में से साफ़ और (गले में) आसानी से उतरनेवाला दूध हम तुमको पीने को देते हैं।⁴ (66)

(पिछले पृष्ठ का शेष)

9. वतन छोड़ने के वक़्त यह ख़याल नहीं करते कि खाएँगे-पिएँगे कहाँ से।

10. ज़िक्र वालों से मुराद अहले किताब हैं।

11. गरज़ यह कि जब आपकी रिसालत भी पुराने तरीके के मुवाफ़िक़ है तो फिर इनकार की क्या वजह और ख़िलाफ़ होने के दावे की क्या दलील?

(तफ़सीर पृष्ठ 492)

1. जैसे बदर की लड़ाई में ऐसे बेसरो-सामान मुसलमानों के हाथ से उनको सज़ा मिली कि कभी उनको इसका अक्ली एहतिमाल भी न होता कि ये हमपर ग़ालिब आ सकेंगे।

2. यानी साये के असबाब कि सूरज का नूरानी होना और सायेदार जिस्म का भारी और गाढ़ा होना है, और साये की हरकत का सबब सूरज की हरकत है, फिर साये की खासियतें, ये सब अल्लाह के हुक्म से हैं।

3. क्योंकि जब माबूद होना मेरे साथ ख़ास है तो जो उसके लवाज़िम हैं मुकम्मल कुदरत होना वग़ैरह वे भी मेरे ही साथ ख़ास होंगे, तो इन्तिक़ाम वग़ैरह का ख़ौफ़ मुझ ही से होना चाहिए। और शिर्क़ इन्तिक़ाम को दावत देता है, पस शिर्क़ न करना चाहिए।

4. यानी वही इस बात का हक़दार है कि सब उसकी इताअत करें।

5. यानी जिस तरह डरने के काबिल अल्लाह के सिवा कोई नहीं उसी तरह नेमत देने वाला और उम्मीद के काबिल भी सिवाय अल्लाह तआला के कोई नहीं।

6. एक जमाअत इसलिए कहा गया कि बाज़े इस हालत को याद रखकर तौहीद व ईमान पर कायम हो जाते हैं।

(पृष्ठ 494 का तफ़सीर पृष्ठ 496 पर)

और खजूर और अंगूरों के फलों से तुम लोग नशे की चीज़¹ और उम्दा खाने की चीज़ें बनाते हो। बेशक इसमें उन लोगों के लिए बड़ी दलील है जो अक्ल रखते हैं। (67) और आपके रब ने शहद की मक्खी के दिल में यह बात डाली की तू पहाड़ों में घर बना ले और दरख्तों में और जो लोग इमारतें बनाते हैं, उनमें। (68) फिर हर किस्म के फूलों से चूसती फिर, फिर अपने रब के रास्तों में चल जो आसान हैं, उसके पेट में से पीने की एक चीज़ निकलती है जिसकी रंगतें मुख्तलिफ़ होती हैं, कि उसमें लोगों के लिए शिफा है, इसमें उन लोगों के लिए बड़ी दलील है जो सोचते हैं। (69) और अल्लाह तआला ने तुमको पैदा किया, फिर तुम्हारी जान निकालता है। और बाज़े तुममें वे हैं जो नाकारा उम्र तक पहुँचाए जाते हैं, (जिसका यह असर होता है) कि एक चीज़ से बाख़बर होकर फिर बेख़बर हो जाता है, बेशक अल्लाह तआला बड़े इल्म वाले, बड़ी कुदरत वाले हैं। (70) ♦

और अल्लाह तआला ने तुममें बाज़ों को बाज़ों पर रिज़्क में फ़ज़ीलत दी है। सो जिन लोगों को फ़ज़ीलत दी गई है वे अपने हिस्से का माल अपने गुलामों को इस तरह कभी देने वाले नहीं कि वे सब उसमें बराबर हो जाएँ, क्या फिर भी खुदा तआला की नेमत का इनकार करते हैं? (71) और अल्लाह तआला ने तुम ही में से तुम्हारे लिए बीवियाँ बनाई, और तुम्हारी बीवियों से तुम्हारे बेटे और पोते पैदा किए, और तुमको अच्छी-अच्छी चीज़ें खाने (पीने) को दीं,³ क्या फिर भी बेबुनियाद चीज़ पर ईमान रखेंगे और अल्लाह तआला की नेमत की नाशुकी करते रहेंगे। (72) और अल्लाह को छोड़कर ऐसी चीज़ों की इबादत करते रहेंगे जो उनको न आसमान में से रिज़्क पहुँचाने का इख़्तियार रखती हैं और न ज़मीन में से, और न कुदरत रखती हैं। (73) सो तुम अल्लाह तआला के लिए मिसालें मत घड़ो, (और) अल्लाह तआला जानते हैं और तुम नहीं जानते। (74)

(तफ़सीर पृष्ठ 494)

1. दुनिया में भी कि ऐसी जहालत में मुब्तला हैं और आख़िरत में भी कि ज़िल्लत व सज़ा में मुब्तला होंगे।

2. गरज़ यह बाद में आने वाले भी पहले वालों की तरह कुफ़्र कर रहे हैं और उन्हीं की तरह इनको भी सज़ा होगी। फिर आप क्यों गुम में पड़ें।

3. यानी उसकी बढ़ोत्तरी की कुव्वत को इसके बाद कि खुश्क हो जाने से कमज़ोर हो गई थी, ताक़त दे दी।

4. आयत से यह मुराद नहीं कि पेट में एक तरफ़ गोबर होता है और एक तरफ़ खून, और दोनों के दरमियान में दूध रहता है। बल्कि पेट में जो ग़िज़ा होती है उसमें वे हिस्से जो आगे चलकर दूध बनेंगे और वे हिस्से जो गोबर बन जाएंगे सब मिलेजुले होते हैं। अल्लाह तआला उनको अलग-अलग करते हैं। कुछ गोबर बनकर निकल जाता है और कुछ जिगर के ज़रिये हाज़िमे के बाद अख़लात (यानी खून, बलग़म, सौदावी मादा और सफ़रावी मादा) बनते हैं, जिनमें खून भी है। फिर उस खून में वह हिस्सा जो आगे चलकर दूध बनेगा ये दोनों मिलेजुले होते हैं। अल्लाह एक हिस्सा अलग करके छाती या थनों तक पहुँचाता है और वह वहाँ पहुँचकर दूध बन जाता है।

(तफ़सीर पृष्ठ 496)

1. नशे की चीज़। इसमें दो कौल हैं, एक यह कि आयत नाज़िल होने के वक़्त नशा लाने वाली चीज़ें हराम न थीं। क्योंकि यह आयत, मक्की है, इसलिए इसको एहसान करना फ़रमाया, लेकिन चूँकि हराम होने वाली थी इसलिए इसको अच्छा और पसन्दीदा वग़ैरह न फ़रमाया, जैसे रिज़्क को फ़रमाया है। दूसरा कौल यह है कि अगरचे आयत के नाज़िल होने के वक़्त नशा लाने वाली चीज़ें हराम भी हो गई हों, इस एहतियाल पर कि शायद यह आयत मदीनी हो, लेकिन यहाँ महसूस तौर पर एहसान करना मकसूद नहीं ताकि हलाल होने पर मौकूफ़ हो बल्कि मअनवी एहसान करना यानी तौहीद पर इस्तिदलाल है।

2. इसमें शिर्क की हद दर्जा बुराई है कि जब तुम्हारे गुलाम तुम्हारे रिज़्क में शरीक नहीं हो सकते तो अल्लाह तआला के गुलाम उसकी खुदाई में कैसे शरीक हो सकते हैं। (शेष तफ़सीर पृष्ठ 498 पर)

अल्लाह तआला एक मिसाल बयान फरमाते हैं, कि एक गुलाम है जो दूसरे की मिल्क में है कि किसी चीज़ का इख्तियार नहीं रखता। और एक शख्स है जिसको हमने अपने पास से ख़ूब रोज़ी दी है, तो वह उसमें से छुपे और खुले तौर पर खर्च करता है, क्या (इस किस्म के शख्स) आपस में बराबर हो सकते हैं। सारी तारीफें अल्लाह तआला ही के लिए लायक हैं, बल्कि उनमें से अक्सर तो जानते नहीं।¹ (75) और अल्लाह तआला एक और मिसाल बयान फरमाते हैं, कि दो शख्स हैं जिनमें एक तो गुँगा है, कोई काम नहीं कर सकता और वह अपने मालिक पर एक वबाले जान है, वह उसको जहाँ भेजता है कोई काम दुरुस्त करके नहीं लाता, क्या यह शख्स और ऐसा शख्स आपस में बराबर हो सकते हैं जो अच्छी बातों की तालीम करता हो और खुद भी एक सही रास्ते पर हो।² (76) ♦

और आसमानों और ज़मीन की (तमाम) छुपी बातें अल्लाह ही के साथ खास हैं, और कियामत का मामला बस ऐसा (झटपट) होगा जैसे आँख झपकना, बल्कि इससे भी जल्दी,³ यकीनन अल्लाह तआला हर चीज़ पर पूरी कुदरत रखते हैं।⁴ (77) और अल्लाह ने तुमको तुम्हारी माओं के पेट से इस हालत में निकाला कि तुम कुछ भी न जानते थे,⁵ और उसने तुमको कान दिए और आँख और दिल ताकि तुम शुक्र करो। (78) क्या लोगों ने परिन्दों को नहीं देखा कि आसमान के (नीचे) मैदान में ताबे हो रहे हैं, उनको सिवाय अल्लाह के कोई नहीं थामता। इसमें ईमान वाले लोगों के लिए कई दलीलें हैं।⁶ (79) और अल्लाह तआला ने तुम्हारे वास्ते तुम्हारे घरों में रहने की जगह बनाई और तुम्हारे लिए जानवरों की खाल के घर बनाए जिनको तुम अपने कूच के दिन और ठहरने के दिन हल्का (फुल्का) पाते हो, और उनकी ऊन और उनके रूओं और उनके बालों से घर का सामान और फायदे की चीज़ें एक मुद्दत तक के लिए बनाई।⁷ (80) और अल्लाह तआला ने तुम्हारे

(पृष्ठ 496 का शेष)

3. यानी कुदरत व नेमत की दूसरी दलीलों में से अल्लाह तआला की कुदरत की एक बड़ी दलील और नेमत खुद तुम्हारा एक जन्म होने की हैसियत से और शख्सि (व्यक्तिगत) वजूद है।

(तफ़सीर पृष्ठ 498)

1. पस जब मजाज़ी मालिक व मजाज़ी मम्लूक बराबर नहीं हो सकते तो मालिके हकीकी और मम्लूके हकीकी कब बराबर हो सकते हैं। और इबादत का हकदार होना मौकूफ है बराबरी पर, और वह है नहीं।

2. जब मख़्लूक मख़्लूक में बावजूद इसके बहुत-सी सिफ़्तों और हकीकत में एक हैं इतना फ़र्क है तो ख़ालिक व मख़्लूक के फ़र्क का खुद अन्दाज़ा कीजिए।

3. कियामत के मामले से मुराद है मुद्दों में जान पड़ना, और इसका जल्दी होना ज़ाहिर है। क्योंकि आँख झपकाना हरकत है और हरकत ज़मानी होती है, और जान पड़ना एक लम्हे में होना है और ज़ाहिर है कि एक लम्हे में होना ज़मानी हरकत से ज़्यादा जल्दी होना है।

4. कुदरत के साबित करने के लिए कियामत की तख़सीस शायद इस वजह से की हो कि वह मख़सूस ग़ैबी चीज़ों में से भी है। पस वह इल्म और कुदरत दोनों की दलील है। ज़ाहिर होने से पहले तो इल्म की और ज़ाहिर होने के बाद कुदरत की।

5. इस मरतबे का नाम इस्तिलाह में 'अक्ले हयूलानी' है।

6. कुछ निशानियाँ इसलिए फरमाया कि परिन्दों को एक खास अन्दाज़ पर पैदा करना जिससे उड़ना मुम्किन हो एक दलील है, फिर फ़िज़ा को ऐसे तौर पर पैदा करना जिसमें उड़ना मुम्किन हो, एक दलील है। फिर इस उड़ने का सामने ज़ाहिर होना एक दलील है। और जितने असबाब को उड़ने में दख़ल है जिसकी वजह से जिस्म का भारी या हल्कापन वग़ैरह चीज़ों का तबई असर ज़ाहिर नहीं होता, दलील हैं। क्योंकि वे सब अल्लाह ही के पैदा किए हुए हैं, फिर उन असबाब पर मुसबबब यानी उड़ने का मुरततब हो जाना यह भी अल्लाह ही के हुक्म से है।

7. एक मुद्दत तक इसलिए फरमाया कि आदतन यह सामान रूई के कपड़ों के मुकाबले में ज़्यादा देर तक टिकने वाला होता है।

लिए अपनी बाज़ मख्लूकात के साये बनाए, और तुम्हारे लिए पहाड़ों में पनाह की जगह बनाई,¹ और तुम्हारे लिए ऐसे कुर्ते बनाए जो गर्मी से तुम्हारी हिफाज़त करें, और ऐसे कुर्ते बनाए जो तुम्हारी लड़ाई से तुम्हारी हिफाज़त करें² अल्लाह तुमपर इसी तरह अपनी नेमतें पूरी करता है ताकि तुम फरमाँबरदार रहो। (81) फिर अगर ये लोग मुँह मोड़ें तो आपके ज़िम्मे तो साफ़-साफ़ पहुँचा देना है। (82) वे लोग खुदा की नेमत को पहचानते हैं, फिर उसके इनकारी होते हैं,³ और ज़्यादा उनमें नाशुके हैं। (83) ♦

और जिस दिन हम हर-हर उम्मत में से एक-एक गवाह खड़ा करेंगे, फिर उन काफ़िरों को इजाज़त न दी जाएगी और न उनको हक़ तआला के राज़ी करने की फ़रमाइश की जाएगी।⁴ (84) और जब ज़ालिम लोग अज़ाब को देखेंगे तो वह अज़ाब न उनसे कुछ हल्का किया जाएगा और न वे कुछ मोहलत दिए जाएँगे। (85) और जब वे मुशिरक लोग अपने शरीकों को देखेंगे तो कहेंगे कि ऐ हमारे परवर्दिगार! वे हमारे शरीक यही हैं कि आपको छोड़कर हम इनको पूजा करते थे। सो वे उनकी तरफ़ बात को मुतवज्जह करेंगे कि तुम झूठे हो। ▲ (86) और ये लोग उस दिन अल्लाह के सामने इताअत की बातें करने लगेंगे और जो कुछ बोहत्तान बाज़ियाँ करते थे वे सब गुम हो जाएँगी। (87) जो लोग कुफ़्र करते थे और अल्लाह की राह से रोकते थे उनके लिए हम एक सज़ा पर दूसरी सज़ा उनके फ़साद की वजह से बढ़ा देंगे। (88) और जिस दिन हम हर-हर उम्मत में से एक-एक गवाह जो उन्हीं में का होगा, उनके मुकाबले में खड़ा करेंगे,⁵ और उन लोगों के मुकाबले में आपको गवाह बनाकर लाएँगे। और हमने आप पर कुरआन उतारा है कि (दीन की) तमाम बातों का बयान करने वाला है, और मुसलमानों के वास्ते बड़ी हिदायत और बड़ी रहमत और खुशख़बरी सुनाने वाला है। (89) ♦

1. यानी गुफा वगैरह जिसमें गर्मी, सर्दी, बारिश और तकलीफ़ देने वाले दुश्मन चाहे वह आदमी हो या जानवर, उन सबसे महफूज़ रह सकते हैं।
2. मुराद इससे ज़िरहें (यानी लोहे का कुर्ता जो लड़ाई में पहनते हैं) हैं।
3. कि जो बर्ताव एहसान करने वाले और नेमत देने वाले के साथ चाहिए था यानी इबादत, वह दूसरे के साथ करते हैं।
4. यानी उनसे यूँ न कहा जाएगा कि तुम तौबा या कोई अमल करके अल्लाह को खुश कर लो, वजह इसकी ज़ाहिर है कि आख़िरत दारुल जज़ा (यानी बदला मिलने की जगह) है, दारुल अमल (यानी अमल करने की जगह) नहीं।
5. मुराद उस उम्मत का नबी है और उन्हीं में का होना आ़ाम है चाहे नसब के एतिबार से उन्हीं में से हो या उनके साथ रहने में शरीक हो।

बेशक अल्लाह तआला एतिदाल और एहसान और अहले कराबत “यानी रिश्तेदारों और करीबी ताल्लुक वालों” को देने का हुक्म फरमाते हैं, और खुली बुराई और मुतलक बुराई और जुल्म करने से मना फरमाते हैं। अल्लाह तआला तुमको इसलिए नसीहत फरमाते हैं कि तुम नसीहत कबूल करो।¹ (90) और तुम अल्लाह के अहद को पूरा करो² जबकि तुम उसको अपने जिम्मे कर लो, और कस्मों को उनके मज़बूत करने के बाद मत तोड़ो, और तुम अल्लाह तआला को गवाह भी बना चुके हो। बेशक अल्लाह तआला को मालूम है जो कुछ तुम करते हो। (91) और तुम उस औरत के जैसे मत बनो जिसने अपना सूत कातने के बाद बोटी-बोटी करके नोच डाला, कि तुम अपनी कस्मों को आपस में फसाद डालने का ज़रिया बनाने लगे,³ महज़ इस वजह से कि एक गिरोह दूसरे गिरोह से बढ़ जाए, बस इससे अल्लाह तआला तुम्हारी आजमाइश करता है।⁴ और जिन चीज़ों में तुम इख़्तिलाफ़ करते रहे कियामत के दिन उन सबको तुम्हारे सामने ज़ाहिर कर देगा। (92) और अगर अल्लाह को मन्ज़ूर होता तो तुम सबको एक ही तरीके का बना देते, लेकिन जिसको चाहते हैं बेराह कर देते हैं और जिसको चाहते हैं राह पर डाल देते हैं।⁵ और तुमसे तुम्हारे आमाल की ज़रूर पूछताछ और सवाल होगा। (93) और तुम अपनी कस्मों को आपस में फसाद डालने का ज़रिया मत बनाओ⁶ कि (कभी किसी और का) क़दम जमने के बाद न फिसल जाए। फिर तुमको इस सबब से कि तुम राहे खुदा से रुकावट हुए, तकलीफ़ भुगतना पड़े, और तुमको बड़ा अज़ाब होगा। (94) और तुम लोग अल्लाह के अहद के बदले में थोड़ा-सा फ़ायदा मत हासिल करो, बस अल्लाह के पास की जो चीज़ है वह तुम्हारे लिए ज़्यादा बेहतर है अगर तुम समझना चाहो। (95) और जो कुछ तुम्हारे पास है वह ख़त्म हो जाएगा, और जो कुछ अल्लाह के पास है वह हमेशा रहेगा। और जो लोग साबित क़दम हैं हम उनके अच्छे कामों के बदले उनका अज़्र उनको ज़रूर देंगे। (96) जो शख्स कोई नेक काम करेगा चाहे वह मर्द हो या औरत हो, शर्त यह है कि ईमान वाला हो,⁷ तो हम उस शख्स को मज़ेदार ज़िन्दगी देंगे,⁸ और उनके अच्छे कामों के बदले में उनका अज़्र देंगे। (97)

1. जिन चीज़ों का हुक्म है उनमें एतिदाल कुव्वते इल्मिया व अमलिया को आम है। इसमें सारे अक़ायद व ज़ाहिरी व बातिनी आमाल गरज़ तमाम शरई अहक़ाम दाख़िल हो गए। फिर उनमें से एहसान इस वजह से ज़िक्र के साथ ख़ास किया गया कि उसका नफ़ा दूसरे तक पहुँचता है। फिर एहसान में से रिश्तेदारों और करीबी ताल्लुक वालों के साथ एहसान और ज़्यादा फज़ीलत व अहमियत रखता है, इसलिए उसके बाद इसको लाए। इसी तरह मना की हुई चीज़ों में बुराई आम है, शरीअत के ख़िलाफ़ तमाम उमूर को। फिर उसमें खुली बुराई को उसके ज़्यादा बुरा और ख़राब होने की वजह से मख़सूस तौर पर ज़िक्र फरमाया, और उसके ज़्यादा शदीद होने की वजह से मुक़द्दम फरमाया। इसी तरह उन मना किए गए उमूर में से जुल्म करने को उसका नुक़सान दूसरे तक पहुँचने की वजह से मख़सूस तौर पर ज़िक्र किया गया। पस इस तरह से इसमें तमाम अच्छे और बुरे उमूर दाख़िल हो गए।

2. ऊपर ‘यअ्मुरु बिल्अदिल’ में तमाम जायज़ उमूर का हुक्म था अब उनमें से एक ख़ास अमूर यानी वायदे के पूरा करने का निहायत पाबन्दी से हुक्म है। और इसके ख़ास करने की वजह अपने आप में इसके अहम होने के साथ-साथ शायद यह भी हो कि शुरू इस्लाम में अहद के पूरा करने और उसके तोड़ने का इस्लाम पर एक ख़ास असर था कि इस्लाम पर बाकी रहना यह भी अहद पूरा करने की एक किस्म थी। और सुलह व जंग में एतिबार का मदार इसी पर था, साथ ही इससे इस्लाम लाने वालों को अपने निजी और अ़वामी हुक्क के बारे में पूरा इत्मीनान होता था जो इस्लाम की तरक्की और कुव्वत का सबब था। इसी तरह अहद तोड़ने में इसके उलट ख़राबियाँ सामने आती थीं जिसका नुक़सान इस्लाम को पहुँचता था, इस वजह से यह मज़मून अहम (शेष तफ़सीर पृष्ठ 504 पर)

तो जब आप कुरआन पढ़ना चाहें तो शैतान मरदूद से अल्लाह की पनाह माँग लिया करें।¹ (98) यकीनन उसका काबू उन लोगों पर नहीं चलता जो ईमान रखते हैं² और अपने रब पर भरोसा रखते हैं। (99) बस उसका काबू तो सिर्फ उन्हीं लोगों पर चलता है जो उससे ताल्लुक रखते हैं, और उन लोगों पर जो उसके (यानी अल्लाह के) साथ शिर्क करते हैं। (100) ❖

और जब हम किसी आयत को दूसरी आयत की जगह बदलते हैं,³ और हालाँकि अल्लाह तआला जो हुक्म भेजता है उसको वही खूब जानता है, तो ये लोग कहते हैं कि आप घड़ने वाले हैं, बल्कि उन्हीं में अक्सर लोग जाहिल हैं। (101) आप फरमा दीजिए कि उसको रूहुल-कुदुस⁴ आपके रब की तरफ से हिक्मत के मुवाफिक लाए हैं,⁵ ताकि ईमान वालों को साबित कदम रखे और मुसलमानों के लिए हिदायत और खुशखबरी हो जाए।⁶ (102) और हमको मालूम है कि ये लोग यह भी कहते हैं कि उनको तो आदमी सिखला जाता है, जिस शख्स की तरफ उसकी निस्वत करते हैं उसकी ज़बान तो अज़मी “यानी गैर-अरबी” है, और यह कुरआन तो साफ़ अरबी है।⁷ (103) जो लोग अल्लाह की आयतों पर ईमान नहीं लाते उनको अल्लाह तआला कभी राह पर न लाएँगे, और उनके लिए दर्दनाक सज़ा होगी। (104) पस झूठ घड़ने वाले तो यही लोग हैं जो अल्लाह की आयतों पर ईमान नहीं रखते, और ये लोग हैं पूरे झूठे। (105) जो शख्स ईमान लाने के बाद अल्लाह के साथ कुफ़ करे, मगर जिस शख्स पर ज़बरदस्ती की जाए, शर्त यह है कि उसका दिल ईमान पर मुत्मइन हो, लेकिन हाँ जो जी खोलकर कुफ़ करे तो ऐसे लोगों पर अल्लाह का ग़ज़ब होगा और उनको बड़ी सज़ा होगी। (106) यह इस सबब से होगा कि उन्होंने दुनियावी ज़िन्दगी को आखिरत के मुकाबले में अज़ीज़ रखा, और इस सबब से होगा कि अल्लाह ऐसे काफ़िरों को हिदायत नहीं किया करता। (107) ये

(पृष्ठ 502 का शेष) और पाबन्दी के काबिल हुआ।

3. क्योंकि कसम और अहद तोड़ने से जो लोग मुवाफिक होते हैं उनको बेएतिबारी और मुख़ालिफ़ों को उठ खड़े होने का मौका मिलता है, और यह फ़साद की जड़ है।

4. कि देखें अहद पूरा करते हो या झुकता पल्ला देखकर उधर ढुल जाते हो।

5. चुनौचे हिदायत में से अहद का पूरा करना और गुमराही में से अहद को तोड़ना भी है।

6. यानी कस्मों और अहदों को मत तोड़ो।

7. क्योंकि काफ़िर के नेक आमाल मकबूल नहीं।

8. ‘हयाते तथ्यिबा’ यानी मज्जेदार ज़िन्दगी से यह मुराद नहीं कि उसको फ़िक्र या बीमारी कभी न होगी, बल्कि मतलब यह है कि इताअत की बरकत से उसके दिल में ऐसा नूर होगा जिससे वह हर हाल में शाकिर व साबिर और राज़ी रहेगा। और असल राहत व आराम और सुकून यही रिज़ा है।

1. यानी दिल से खुदा तआला पर नज़र रखना वाजिब है कि पनाह माँगने की असली हकीकत यही है। और पढ़ने में ज़बान से भी कह लेना मसनून है।

2. यानी उसका वस्वसा उनपर असरदार नहीं होता।

3. यानी एक आयत को लफ़्ज़ या मायनों के एतिबार से मन्सूख़ ‘निरस्त’ करके उसकी जगह दूसरा हुक्म भेज देते हैं।

4. यानी जिबराईल अलैहिस्सलाम।

5. पस यह अल्लाह का कलाम है और अहकाम में तब्दीली हिक्मत की वजह से है।

6. इस सबब के बढ़ाने से किनाया हो गया कि ऐसी फ़ायदेमन्द चीज़ से यह मुख़ालिफ़ीन फ़ायदा नहीं उठाते।

7. मुराद इससे एक गैर-अरब व रूमी ईसाई गुलाम या लुहार है, जिसका नाम बलआम या मकीस था। वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बातें जी लगाकर सुनता तो हुज़ूर कभी उसके पास जा बैठते, (शेष तफ़सीर पृष्ठ 506 पर)

वे लोग हैं कि अल्लाह तआला ने उनके दिलों पर और कानों पर और आँखों पर मोहर लगा दी है, और ये लोग बिलकुल गाफिल हैं। (108) लाज़िमी बात है कि आखिरत में ये लोग बिलकुल घाटे में रहेंगे। (109) फिर बेशक आपका रब ऐसे लोगों के लिए कि जिन्होंने (कुफ़्र में) मुब्तला होने के बाद (ईमान लाकर) हिजरत की, फिर जिहाद किया और कायम रहे, तो आपका रब इन (आमाल) के बाद बड़ी मग़्फ़िरत करने वाला, बड़ी रहमत करने वाला है।¹ (110) ❖

जिस दिन हर शख्स अपनी ही तरफ़दारी में गुफ्तगू करेगा,² और हर शख्स को उसके किए का पूरा बदला मिलेगा, और उनपर जुल्म न किया जाएगा।³ (111) और अल्लाह तआला एक बस्ती वालों की (अजीब) हालत बयान फ़रमाते हैं कि वे अमन व इत्मीनान में थे। उनके खाने-पीने की चीज़ें बड़ी फ़रागत से हर (चार) तरफ़ से उनके पास पहुँचा करती थीं। सो उन्होंने खुदा की नेमतों की बेकद्री की।⁴ उसपर अल्लाह ने उनको इन हरकतों के सबब (एक घेरने वाले) कहत और ख़ौफ़ का मज़ा चखा दिया।⁵ (112) और उनके पास उन्हीं में का एक रसूल भी आया। सो उसको उन्होंने झूठा बतलाया। तब उनको अज़ाब ने आन पकड़ा, जबकि वे बिलकुल ही जुल्म पर कमर बाँधने लगे। (113) सो जो चीज़ें अल्लाह तआला ने तुमको हलाल और पाक दी हैं उनको खाओ और अल्लाह की नेमत का शुक्र करो, अगर तुम उसी की इबादत करते हो। (114) तुमपर तो सिर्फ़ मुर्दार को हराम किया है, और खून को, और सुअर के गोشت को, और जिस चीज़ को अल्लाह के अलावा किसी और के लिए नामज़द कर दिया गया हो। फिर जो शख्स बिलकुल बेकरार हो जाए, शर्त यह कि लज़ज़त का तालिब न हो और न हद से आगे बढ़ने वाला हो, तो अल्लाह बख़्श देने वाला, मेहरबानी करने वाला है।⁶ (115) और जिन चीज़ों के बारे में तुम्हारा महज़ झूठा ज़बानी दावा है, उनके बारे में यूँ मत कह दिया करो कि (फलानी चीज़) हलाल है और यह (फलानी चीज़) हराम है, (जिसका हासिल यह होगा) कि अल्लाह पर झूठी तोहमत लगा दो (गे), बिना शुब्हा जो लोग अल्लाह पर झूठ तोहमत लगाते हैं वे फ़लाह न पाएँगे। (116) (यह) कुछ दिन का ऐश है, और उनके लिए दर्दनाक सज़ा है। (117) और यहूदियों

(पृष्ठ 504 का शेष) और वह इन्ज़ील वग़ैरह कुछ जानता था तो काफ़िरों ने यह एक बात निकाली कि हुज़ूर को यह सिखला देता है। अल्लाह तआला जवाब देते हैं कि कुरआन मजीद तो लफ़्ज़ व मायने के मजमूए का नाम है। सो अगर इसके ऊँचे मायनों की तुमको तमीज़ नहीं तो अल्फ़ाज़ की ग़ैर-मामूली बलागत को तो समझ सकते हो। पस अगर फ़र्ज़ कर लिया जाए कि मज़ामीन वह शख्स सिखला देता है तो यह तो सोचो कि ये अल्फ़ाज़ कहाँ से आ गए।

1. यानी ईमान और नेक आमाल की बरकत से उनके सब पिछले गुनाह कुफ़्र वग़ैरह माफ़ हो जाएँगे और अल्लाह की रहमत से उनको जन्नत और उसके बड़े-बड़े दर्जे मिलेंगे।
2. और इससे शफ़ाअत के न होने का शुब्हा न हो, क्योंकि वह अपनी राय से न होगी बल्कि इजाज़त से होगी। पस कहना चाहिए कि वह शफ़ाअत करने वाले की तरफ़ मन्सूब ही नहीं, और यहाँ उस गुफ्तगू का ज़िक्र है जो अपनी राय से हो।
3. यानी नेकी के बदले में कमी न होगी अगरचे ज़्यादती हो जाए। और बुराई के बदले में ज़्यादती न होगी अगरचे कमी हो जाए।
4. यानी खुदा के साथ कुफ़्र किया।
5. मक्का शहर शान्तीपूर्ण था हालाँकि उसके आस-पास के लोग मारे और लूट लिए जाते थे। मक्के में अनाज भी सहूलत से पहुँचता रहता था, लेकिन जब मक्का वाले अपने रसूले मक़बूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ईमान न लाए तो हक़ तआला ने उनकी ये दोनों अच्छी हालतें बदल दी और उनपर सात साल तक कहत (अकाल) का अज़ाब मुसल्लत रखा जिससे उनकी हालत बहुत ख़राब हो गई, और इसपर ज़्यादती यह कि वे सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम के ख़ौफ़ से अमन को भी भूल गए।
6. चूँकि अरब वाले इसमाईल अलैहिस्सलाम की मिल्लत की पैरवी करने वाले थे इसलिए (शेष तफ़सीर पृष्ठ 508 पर)

पर हमने वे चीजें हराम कर दी थीं जिनका बयान हम इससे पहले आपसे कर चुके हैं और हमने उनपर कोई ज़्यादाती नहीं की, लेकिन वे खुद ही अपने ऊपर ज़्यादाती किया करते थे। (118) फिर आपका रब ऐसे लोगों के लिए जिन्होंने जहालत से बुरा काम कर लिया, फिर उसके बाद तौबा कर ली और अपने आमाल दुरुस्त कर लिए, तो आपका रब उसके बाद बड़ी मफ़िरत करने वाला, बड़ी रहमत करने वाला है।¹ (119) ♦

बेशक इब्राहीम बड़े मुक्तदा “यानी पेशवा और रहनुमा” थे,² अल्लाह तआला के फ़रमाँबर्दार थे, बिलकुल एक तरफ़ के हो रहे थे, और वह शिर्क करने वालों में से न थे। (120) यानी अल्लाह की नेमतों के शुक्रगुज़ार थे, अल्लाह तआला ने उनको चुन लिया था और उनको सीधे रास्ते पर डाल दिया था। (121). और हमने उनको दुनिया में भी खूबियाँ दी थीं और वे आख़िरत में भी अच्छे लोगों में होंगे।³ (122) फिर हमने आपके पास वह्य भेजी कि आप इब्राहीम के तरीक़े पर जो कि बिलकुल एक तरफ़ के हो रहे थे चलिए, और वह शिर्क करने वालों में से न थे। (123) बस हफ़्ते की ताज़ीम तो सिर्फ़ उन्हीं लोगों पर लाज़िम की गई थी जिन्होंने उसमें इख़्तिलाफ़ किया था,⁴ बेशक आपका रब कियामत के दिन उनमें आपस में फैसला कर देगा जिस बात में ये इख़्तिलाफ़ किया करते थे।⁵ (124) आप अपने रब की राह की तरफ़⁶ इल्म की बातों और अच्छी नसीहतों के ज़रिये से बुलाइए, और उनके साथ अच्छे तरीक़े से बहस कीजिए।⁷ आपका रब ख़ूब जानता है उस शख्स को भी जो उसके रास्ते से गुम हुआ और वही राह पर चलने वालों को भी ख़ूब जानता है। (125) और अगर बदला लेने लगे तो इतना ही बदला लो जितना तुम्हारे साथ बर्ताव किया गया, और अगर सब्र करो तो वह सब्र करने वालों के हक़ में बहुत ही अच्छी बात है। (126) और आप सब्र कीजिए और आपका सब्र करना खुदा ही की तौफीक़ से है,⁸ और उनपर गुम न कीजिए। और जो कुछ ये तदबीरें किया करते हैं उससे तंगदिल न होइए। (127) अल्लाह तआला ऐसे लोगों के साथ (होता) है जो परहेज़गार (होते) हैं और जो नेक काम करने वाले (होते) हैं। (128) ♦

(पृष्ठ 506 का शेष)

उनमें बहुत-से इस्लामी तौर-तरीक़े हुज़ूरे पाक को नबी बनाकर भेजे जाने तक मौजूद थे। वे उन तमाम हलाल जानवरों को जिनको हम खाते हैं हलाल समझते और खाते थे और जिनको हम हराम समझते हैं उनको वे भी हराम समझते थे। लेकिन ज़माना गुज़र जाने की वजह से उनमें यह बुरी रस्म भी जारी हो गई थी कि वे उस खून को जो कि जानवर के जिब्ब के वक़्त बहता है, खाते थे और अपने बुतों के नाम पर ज़िब्ह किए हुए जानवरों को भी खाते थे, लेकिन इस्लाम ने इन चीज़ों की मनाही फ़रमा दी और बाकी हालत को बहाल रखा।

1. ऊपर शिर्क व कुफ़्र के उसूल व उससे निकलने वाली चीज़ों यानी तौहीद व रिसालत का इनकार और हराम को हलाल व हलाल को हराम समझने को बातिल और रद्द किया गया है। चूँकि मक्का के मुशिरक जिनसे इन मज़ामीन में अव्वल खिताब है हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की औलाद में थे और अपने को उनके तरीक़े पर बतलाते थे, इसलिए आगे ज़िक्र हुए मज़ामीन को मज़बूत बनाने के लिए ‘का-न उम्म-तन्’ में इब्राहीम अलैहिस्सलाम का मज़बूत के लिए रहनुमा और पेशवा होना, जिसका हासिल नुबुव्वत व रिसालत है और ‘लम यकु मिनल मुशिरकीन’ में उनका मुशिरक न होना बयान किया जो कि तौहीद है। और ‘इन्ना जुअिलस्सबु’ में इशारे के तौर पर पाक चीज़ों का उनके यहाँ हराम न होना और ‘कानितन्’ के आ़म होने से ख्वाहिश-परस्ती से हराम का हलाल और हलाल का हराम करना दोनों का न होना, और ‘इज्ताबाहु व हदाहु व आतैनाहु’ में इस तरीक़े की और तरीक़े वाले की फज़ीलत और दरमियान में ‘सुम्-म औहेना इलै-क’ में जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का उस तरीक़े पर होना, मय रिसालत को साबित करने के बयान फ़रमाते हैं, ताकि उनको इब्राहीम अलैहिस्सलाम के तरीक़े की मुख़ालफ़त को छोड़ने की और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तरीक़े की मुवाफ़क़त की तरगीब हो जो कि इब्राहीम अलैहिस्सलाम के तरीक़े के मुवाफ़िक़ है, जिसके लवाज़िम से खास तौर पर हुज़ूरे पाक के रसूल होने के इनकार से बाज़ आना भी है।

2. यानी एक बड़ी शान वाले नबी और एक बड़ी उम्मत के मुक्तदा (यानी जिनकी पैरवी की जाए)।

3. पस ऐसे मकबूल का जो तरीका होगा वह बिलकुल मकबूल होगा, उसको इख़्तियार करना चाहिए, (शेष तफ़सीर पृष्ठ 510 पर)

पन्द्रहवाँ पार: सुब्हानल्लजी

17 सूर: बनी इसराईल 50

सूर: बनी इसराईल मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 111 आयतें और 12 रुकूअ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

‘वह पाक (जात) है जो अपने बन्दे (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को रात के वक्त मस्जिदे हराम (यानी काबा की मस्जिद) से मस्जिदे अक्सा (यानी बैतुल-मक्दिदस) तक, जिसके चारों तरफ़ (यानी मुल्क शाम में) हमने बरकतें² कर रखी हैं, ले गया ताकि हम उनको अपनी (कुदरत के) कुछ अजायबात दिखाएँ,³ बेशक अल्लाह तआला बड़े सुनने वाले, बड़े देखने वाले हैं।’¹ (1) और हमने मूसा (अलैहिस्सलाम) को किताब (यानी तौरात) दी, और हमने उसको बनी इसराईल के लिए हिदायत (का ज़रिया) बनाया कि तुम मेरे सिवा (अपना) कोई कारसाज़ मत करार दो। (2) ऐ उन लोगों की नस्त! जिनको हमने नूह के साथ सवार किया था, वह (नूह अलैहिस्सलाम) बड़े शुक्रगुज़ार बन्दे थे। (3) और हमने बनी इसराईल को किताब में (पेशीनगोई के तौर पर यह बात) बतला दी थी कि तुम (मुल्क शाम की) सरज़मीन में दो बार ख़राबी करोगे,⁵ और बड़ा ज़ोर चलाने लगोगे।⁴ (4) फिर जब उन दो (बार) में से पहली (बार की शरारत की सज़ा) की मीयाद आएगी हम तुमपर अपने ऐसे बन्दों को मुसल्लत करेंगे जो बड़े जंगजू होंगे, फिर वे तुम्हारे घरों में घुस पड़ेंगे (और तुमको क़त्ल करेंगे) और यह एक वायदा है जो ज़रूर होकर रहेगा। (5) फिर (जब तुम तौबा करोगे तो) उनपर तुम्हारा गुल्बा कर देंगे, और माल और बेटों से हम तुम्हारी मदद करेंगे,⁷ और हम तुम्हारी जमाअत को बढ़ा देंगे।⁶ (6) अगर अच्छे काम करते रहोगे तो अपने ही नफ़े के लिए अच्छे काम करोगे, और अगर (फिर) तुम बुरे काम करोगे तो भी अपने ही लिए, फिर जब पिछली (बार) की मीयाद आएगी (हम फिर दूसरों को मुसल्लत करेंगे) ताकि (मार-मारकर) तुम्हारे मुँह बिगाड़ दें, और जिस तरह वे लोग पहली बार मस्जिद (बैतुल मक्दिदस) में घुसे थे वे (पिछले) लोग भी उसमें घुस पड़ें और जिस-जिसपर उनका ज़ोर चले सबको बर्बाद कर डालें। (7) (और अगर आइन्दा इस्लाम का इत्तिबा करोगे तो) अज़ब नहीं कि तुम्हारा रब तुमपर रहम फ़रमाए, और अगर फिर वही (शरारत) करोगे तो हम भी फिर वही करेंगे,⁹ और हमने जहन्नम को (ऐसे) काफ़िरों का जेलख़ाना बना (ही) रखा है। (8) बेशक यह कुरआन ऐसे (तरीके) की हिदायत करता है जो बिल्कुल सीधा है (यानी इस्लाम) और उन ईमान वालों को जो कि नेक काम करते हैं (यह) खुशख़बरी देता है

(पृष्ठ 508 का शेष) और वह अब मुन्हसिर है मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तरीके में।

4. मुराद इससे यहूद हैं। यानी पाक चीज़ों को हराम करने की यह सूरत अन्य सूरतों की तरह सिर्फ़ यहूद के साथ मख़सूस थी, मिल्लते इब्राहीमी में न थी।

5. ऊपर ‘सुम्-म औहैना.....’ में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की रिसालत को साबित करने से यह मक़सूद था कि जिनपर आपको भेजा गया है वे इस रिसालत के हुक्क अदा करें। आगे खुद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को रिसालत के हुक्क व आदाब के अदा करने की तालीम है, जिनमें से इत्तिकाफ़ में ख़ास तौर पर अदल की रियायत बरतने में आपके पैरोकारों को भी उम्मीन ख़िताब है, क्योंकि बदला लेने में आदतन पैरोकारों का शरीक रहना ज़रूरी है, बख़िलाफ़ तब्लीग़ व दावत और आयत में ज़िक्र हुए बक़िया अहक़ाम के, कि नबी से इन्फ़रादी तौर पर भी इसका सुदूर हो सकता है, इसलिए इसमें ख़ास ख़िताब है।

6. यानी दीन। (पृष्ठ 508 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 510 की तफ़सीर पृष्ठ 512, 514 पर)

कि आपको बड़ा भारी सवाब मिलेगा। (9) और (यह भी बतलाता है कि) जो लोग आखिरत पर ईमान नहीं रखते हमने उनके लिए एक दर्दनाक सज़ा तैयार कर रखी है। (10) ❖

और (बाज़ा) इनसान बुराई (यानी अज़ाब) की ऐसी दरखास्त करता है जिस तरह भलाई की दरखास्त, और इनसान (कुछ तबई तौर पर ही) जल्दबाज़ (होता) है। (11) और हमने रात और दिन को दो निशानियाँ बनाया, सो रात की निशानी को तो हमने धुंधला बनाया और दिन की निशानी को हमने रोशन बनाया ताकि (दिन को) तुम अपने रब की रोजी तलाश करो और ताकि बरसों का शुमार और हिसाब मालूम कर लो। और हमने हर चीज़ को खूब तफ़सील के साथ बयान किया है।¹ (12) और हमने हर इनसान का अमल उसके गले का हार करके रखा है,² और (फिर) क़ियामत के दिन हम उसका आमाँलनामा उसके वास्ते निकाल (कर सामने कर) देंगे, जिसको वह खुला हुआ देख लेगा। (13) अपना आमाँलनामा (खुद) पढ़ ले, आज तू खुद अपना आप ही हिसाब लेने वाला काफी है। (14) जो शख्स (दुनिया में) राह पर चलता है वह अपने नफ़े के लिए राह पर चलता है, और जो शख्स बेराही करता है सो वह भी अपने ही नुक़सान के लिए बेराह होता है। और कोई शख्स किसी (के गुनाह) का बोझ न उठाएगा। और हम (कभी) सज़ा नहीं देते जब तक किसी रसूल को नहीं भेज लेते। (15) और जब हम किसी बस्ती को³ हलाक करना चाहते हैं⁴ तो उसके खुशहाल लोगों को⁵ हुक्म देते हैं, फिर (जब) वे लोग वहाँ शरारत मचाते हैं तो उनपर हुज्जत पूरी हो जाती है। फिर हम उस बस्ती को तबाह और ग़ारत कर डालते हैं। (16) और नूह के बाद हमने बहुत-सी उम्मतों को (कुफ़्र व नाफ़रमानी के सबब) हलाक किया है।⁶ और आपका रब अपने बन्दों के गुनाहों को जानने वाला, देखने वाला काफी है। (17) जो शख्स दुनिया (के नफ़े) की नीयत रखेगा, हम ऐसे शख्स को दुनिया में जितना चाहेंगे (और) जिसके वास्ते चाहेंगे फ़िलहाल ही दे देंगे, फिर हम उसके लिए जहन्नम तजवीज़ करेंगे, वह उसमें बंदहाल (बारगाह से) निकाला हुआ होकर दाख़िल होगा। (18) और जो शख्स आख़िरत (के सवाब) की नीयत रखेगा

(पिछले पृष्ठ का शेष)

7. बस इतना काम आपका है फिर आप इस तहकीक में न पड़िए कि किसने माना, किसने नहीं माना, क्योंकि यह काम खुदा का है।

8. इसलिए आप तसल्ली रखें कि सब्र में आपको दुश्वारी न होगी।

(तफ़सीर पृष्ठ 510)

1. इस सूर: में ज़्यादा मज़ामीन इनामात पर मुशतमिल हैं। चुनाँचे इसकी शुरूआत मेराज के किस्से से की गई कि वह एक बड़ा मोज़िज़ा है, जिससे बारी तआला की पाकी के साथ रिसालत पर दलालत करती है, और रिसालत को कुव्वत पहुँचाने के लिए मूसा और नूह अलैहिमस्सलाम का ज़िक्र लाया गया है और उसकी तस्दीक़ की तरगीब के लिए तूफ़ाने नूह (अलैहिस्सलाम) से नजात और झुठलाने से डराने के लिए बनी इसराईल की ख़राबी और उनके सज़ा पाने का किस्सा सुनाया गया। फिर कुरआन को जो कि रिसालत की दलील है हादी बताया गया। यह खुलासा है पहले रुकूअ का।

2. दीनी बरकत यह कि वहाँ कसूरत से अम्बिया हज़रात दफ़न हैं। दुनियावी बरकत यह कि वहाँ पेड़ और नहरें और पैदावार की कसूरत है।

3. जिनमें बाज़ तो खुद वहाँ के मुताल्लिक हैं, जैसे इतनी लम्बी दूरी थोड़े से वक़्त में तय करना, सब अम्बिया अलैहिमुस्सलाम को देखना, उनकी बातें सुनना वगैरह। और बाज़ आगे के मुताल्लिक हैं जैसे आसमानों पर जाना और बहुत-सी अज़ीब चीज़ें देखना।

4. मस्जिदे-हराम से मस्जिदे-अक्सा तक ले जाने को 'इस्रा' कहते हैं और आगे आसमानों पर जाने को 'मेराज' कहते हैं। और कभी दोनों लफ़ज़ मजमूए पर बोल दिए जाते हैं।

5. एक बार मूसा अलैहिस्सलाम की शरीअत की मुख़ालफ़त, दूसरी बार ईसा अलैहिस्सलाम की शरीअत की मुख़ालफ़त।

6. यानी ज़्यादतियाँ करोगे 'लतुप्सिदुन्-न' में अल्लाह तआला के हुक्क और 'ल-तअलुन्-न' में बन्दों के हुक्क के ज़ाया करने की तरफ़ इशारा है।

7. यानी ये चीज़ें तुमको वापस मिलेंगी और उनसे तुमको कुव्वत पहुँचेंगी।

(पृष्ठ 510 की बक़िया और पृष्ठ 512 की तफ़सीर पृष्ठ 514 पर)

और उसके लिए जैसी कोशिश करना चाहिए वैसी ही कोशिश भी करेगा, शर्त यह है कि वह शख्स मोमिन भी हो,¹ सो ऐसे लोगों की यह कोशिश मकबूल होगी।² (19) आपके परवरदिगार की (इस दुनियावी) अता में से तो हम इनकी भी इम्दाद करते हैं³ और उनकी भी,⁴ और आपके रब की (यह दुनियावी) अता (किसी पर) बन्द नहीं। (20) आप देख लीजिए हमने एक को दूसरे पर किस तरह बरतरी दी है, और अलबत्ता आखिरत दर्जों के एतिबार से भी बहुत बड़ी है और फज़ीलत के एतिबार से भी बहुत बड़ी है। (21) अल्लाह (बरहक) के साथ कोई और माबूद मत तजवीज़ कर (यानी शिर्क मत कर) वरना तू बदहाल बेमददगार होकर बैठ रहेगा। (22) ♦

और तेरे रब ने हुक्म कर दिया है कि सिवाय उसके किसी और की इबादत मत करो, और तुम (अपने) माँ-बाप के साथ अच्छा सुलूक किया करो, अगर तेरे पास उनमें से एक या दोनों के दोनों बुढ़ापे में पहुँच जाएँ तो उनको कभी (हाँ से) हूँ भी मत करना और न उनको झिड़कना, और उनसे खूब अदब से बात करना। (23) और उनके सामने नर्मी से इन्किसारी के साथ झुके रहना, और (यूँ) दुआ करते रहना कि मेरे परवर्दिगार! इन दोनों पर रहमत फरमाइए जैसा कि इन्होंने मुझको बचपन में पाला, परवरिश किया है।⁵ (24) तुम्हारा रब तुम्हारे दिल की बात को खूब जानता है, अगर तुम नेक-बख्त हो तो वह तौबा करने वालों की ख़ता माफ़ कर देता है। (25) और कराबतदार “यानी रिश्तेदार” को उसका (माली व ग़ैर-माली) हक़ देते रहना, और मोहताज और मुसाफ़िर को भी देते रहना, और (माल को) बेमौका मत उड़ाना। (26) (क्योंकि) बेशक बेमौका उड़ाने वाले शैतानों के भाई (बन्द यानी उनके जैसे) हैं,⁶ और शैतान अपने रब का बड़ा नाशुक्रा है। (27) और अगर अपने परवर्दिगार की तरफ़ से जिस रिज़्क के आने की उम्मीद हो, उसके इन्तिज़ार में तुझको उनसे अलग होना पड़े तो उनसे नर्मी की बात कह देना।⁷ (28) और न तो अपना हाथ गर्दन ही से बाँध लेना चाहिए⁸ और न बिलकुल ही खोल देना चाहिए,⁹ वरना इल्ज़ाम लिए हुए ख़ाली हाथ होकर बैठ रहोगे। (29) बेशक तेरा रब जिसको चाहता है ज़्यादा रिज़्क देता है, और वही तंगी कर देता है।¹⁰ बेशक वह अपने बन्दों को खूब जानता है, देखता है। (30) ♦

(पिछले पृष्ठ का शेष)

8. यानी माल, ओहदे, औलाद और मानने वालों व पैरोकारों सबमें तरक्की होगी।

9. चुनौचे हुज़ूर सल्ल. के ज़माने में उन्होंने आपकी मुख़ालफ़त की, फिर क़त्ल और कैद किए गए और ज़लील हुए।

(तफ़सीर पृष्ठ 512)

1. चाहे ‘लोहे महफूज़’ में। पस कुल्लु शैइन् “यानी हर चीज़” आम है। और या कुरआन में इस वक़्त

‘कुल्लु शैइन्’ से मुराद ज़रूरी उमूर हैं। पहली सूरत में मतलब यह है कि ‘लोहे महफूज़’ में हर चीज़ का अलग-अलग मुकर्रर वक़्त लिखा है और दूसरी सूरत में यह मतलब कि देखो कुरआन में कैसे मुफ़ीद और हिदायत-भरे मज़ामीन ज़िक्र किए गए हैं जो शुब्हात में तरकीन व तसल्ली का सबब हैं।

2. यानी हर शख्स का अमल उसके साथ लगा हुआ है।

3. जो कुफ़्र व नाफ़रमानी के सबब हिक्मत के तकाज़े से हलाक करने के काबिल हो।

4. तो उसको रसूलों को भेजने से पहले हलाक नहीं करते, बल्कि किसी रसूल को भेजते हैं और इनकार व ज़िद के नतीजे में हलाक करते हैं

5. यानी अमीर और सरदार लोगों को खाकर और अ़वाम को उमूमन ईमान व भलाई का हुक्म भेजते हैं।

6. जैसे आद व समूद और उनके अ़लावा दूसरे। और नूह अलैहिस्सलाम की क़ौम का हलाक होना तो मशहूर व मारुफ़ ही है।

(तफ़सीर पृष्ठ 514)

1. मतलब यह है कि वह अमल शर्इ कायदों के मुवाफ़िक़ किया हो, क्योंकि आखिरत के लिए वही कोशिश

करनी चाहिए जिसका हुक्म हुआ हो, उन आमाल के उलट जो नफ़सानी ख़्वाहिश के मुवाफ़िक़ हों क्योंकि वे मकबूल नहीं। गरज़ शरीअत के मुवाफ़िक़ अमल किया हो।

2. गरज़ कोशिश के कबूल होने यानी अमल के कबूल की तीन शर्तें हुईं, (9) नीयत का सही होना (शेष तफ़सीर पृष्ठ 516 पर)

और अपनी औलाद को नादारी के अन्देशे से कत्ल मत करो, (क्योंकि) हम उनको भी रिज्क देते हैं और तुमको भी, बेशक उनका कत्ल करना बड़ा भारी गुनाह है।¹ (31) और ज़िना के पास भी मत फटको,² बिला शुब्हा वह बड़ी बेहयाई (की बात) है, और बुरी राह है। (32) और जिस शख्स (के कत्ल) को अल्लाह तआला ने हराम फरमाया है उसको कत्ल मत करो, हाँ मगर हक पर।³ और जो शख्स नाहक कत्ल किया जाए तो हमने उसके वारिस को इख्तियार दिया है।⁴ सो उसको कत्ल के बारे में (शरीअत की) हद से आगे न बढ़ना चाहिए। वह शख्स तरफदारी के काबिल है। (33) और यतीम के माल के पास न जाओ⁵ मगर ऐसे तरीके से जो कि पसन्दीदा है, यहाँ तक कि वह अपने बालिग होने की उम्र को पहुँच जाए, और (जायज़) अहद को पूरा किया करो,⁶ बेशक (ऐसे) अहद की (क़ियामत में) पूछताछ और बाज़पुर्स होने वाली है। (34) और जब नाप-तौलकर दो तो पूरा नापो और सही तराजू से तौलकर दो। यह (अपने आप में भी) अच्छी बात है और इसका अन्जाम भी अच्छा है। (35) और जिस बात की तुझको तहकीक न हो उसपर अमल दरामद मत किया कर, क्योंकि कान. आँख और दिल हर शख्स से इन सबकी (क़ियामत के दिन) पूछ होगी।⁷ (36) और ज़मीन पर इतराता हुआ मत चल, (क्योंकि) तू न ज़मीन को फाड़ सकता है और न (बदन को तानकर) पहाड़ों की लम्बाई को पहुँच सकता है। (37) ये सारे बुरे काम तेरे रब के नज़दीक बिल्कुल नापसन्द हैं। (38) ये बातें उस हिक्मत में की हैं जो खुदा तआला ने आप पर वद्व के ज़रिये से भेजी हैं, और अल्लाह बरहक के साथ कोई और माबूद तजवीज़ मत करना, वरना तू इल्ज़ाम खाया हुआ और मरदूद होकर जहन्नम में फेंक दिया जाएगा। (39) तो क्या तुम्हारे रब ने तुमको तो बेटों के साथ ख़ास किया है और खुद फ़रिश्तों को (अपनी) बेटियाँ बनाई हैं, बेशक तुम बड़ी (सख़्त) बात कहते हो।⁸ (40) ♦

और हमने इस क़ुरआन में तरह-तरह से बयान किया है ताकि (उसको) अच्छी तरह से समझ लें, और उनको (इस तौहीद से) नफ़रत ही बढ़ती जाती है। (41) आप फ़रमाइए कि अगर उसके साथ और माबूद भी

(पृष्ठ 514 का शेष) जिसपर 'अरादल् आख़ि-र-त' दलालत कर रहा है। (२) अमल का शरीअत के मुताबिक सही होना जिसपर 'सअयुहा' दलालत कर रहा है। (३) अक़ीदे का सही होना, जिसपर 'मुअ्मिनुन' दलालत कर रहा है। कबूल होने की शर्तें ये हैं, और इनके बग़ैर मकबूल नहीं।

3. यानी मकबूल लोगों की।

4. यानी ग़ैर-मकबूल लोगों की।

5. 'इहम्मुमा' में जो दुआ के लिए फ़रमाया है, ज़ाहिर में यह हुक्म पसन्दीदा और मुस्तहब होने के लिए है। और बाज़ ने कहा है कि इससे वाजिब होना साबित होता है। इस सूरत में उम्र भर में एक बार दुआ करने से भी वाजिब अदा हो जाएगा और शरई दलीलों से यह दुआ करना ईमान के साथ ख़ास है, यानी माँ-बाप मोमिन हों, अलबत्ता अगर कुफ़ की हालत में ज़िन्दा हों और रहमत की दुआ हिदायत की दुआ के मायने में की जाए तो जायज़ है।

6. बेजा खर्च करने का हासिल यह है कि गुनाह की जगह में खर्च करना, चाहे वह गुनाह अपनी ज़ात के एतिबार से हो जैसे शराब व जुआ और ज़िना, चाहे ग़ैर के साथ हो जैसे मुबाह काम में शोहरत व बड़ाई की नीयत से खर्च करना।

7. यानी दिलजोई के साथ उनसे वायदा कर लेना कि इन्शा-अल्लाह कहीं से आएगा तो देंगे, और दिल दुखाने वाला जवाब मत देना।

8. कि बुख़ल की वजह से बिल्कुल ही हाथ रोक लिया जाए।

9. कि फ़ुज़ूल-खर्ची की जाए।

10. इससे यह मकसूद नहीं कि कोई किसी का ग़म न करे। बल्कि मतलब यह है कि दूसरे के नफ़े के लिए अपने को दीनी नुक़सान पहुँचाना, या ऐसा दुनियावी नुक़सान बर्दाश्त करना जिसका अन्जाम दीनी नुक़सान हो, इससे मना किया गया है।

1. चूँकि जाहिलियत के ज़माने में बाज़ आदमी बेटियों को तंगदस्ती के ख़ौफ़ से मार डालते थे, इसलिए औलाद से मुराद लड़कियाँ होंगी। और औलाद के उन्वान से ताबीर करना ताल्लुक व खुसूसियत ज़ाहिर करने के लिए है कि रहम व शफ़क़त जोश में आए।

2. यानी ऐसी चीज़ों से भी बचो जो उसकी तरफ़ ले जाएँ। (शेष तफ़सीर पृष्ठ 518 पर)

होते जैसे कि ये लोग कहते हैं तो उस हालत में अर्श वाले तक¹ उन्होंने रास्ता ढूँढ लिया होता।² (42) ये लोग जो कुछ कहते हैं अल्लाह तआला उससे पाक और बहुत ज्यादा बरतर है। (43) (तमाम) सातों आसमान और ज़मीन और उनमें जितने हैं उसकी पाकी बयान कर रहे हैं, और कोई चीज़ ऐसी नहीं जो कि तारीफ़ के साथ उसकी पाकी (अपनी ज़बान से या अपने हाल से) बयान न करती हो, लेकिन तुम लोग उनके पाकी बयान करने को समझते नहीं हो,³ वह बड़ा हलीम है, बड़ा ग़फूर है। (44) और जब आप कुरआन पढ़ते हैं तो हम आपके और जो लोग आखिरत पर ईमान नहीं रखते उनके दरमियान एक पर्दा आड़ कर देते हैं। (45) और (वह पर्दा यह है कि) हम उनके दिलों पर इससे पर्दा डाल देते हैं कि वे इस (कुरआन के मकसद) को समझें, और उनके कानों में डाट दे देते हैं,⁴ और जब आप कुरआन में सिर्फ़ अपने रब का ज़िक्र करते हैं तो वे लोग नफ़रत करते हुए पीठ फेरकर चल देते हैं। (46) जिस वक़्त ये लोग आपकी तरफ़ कान लगाते हैं तो हम ख़ूब जानते हैं जिस ग़ुरज़ से ये सुनते हैं,⁵ और जिस वक़्त ये लोग आपस में सरगोशियाँ “यानी चुपके-चुपके बातें” करते हैं, जबकि ये ज़ालिम यूँ कहते हैं कि तुम लोग महज़ ऐसे शख्स का साथ दे रहे हो जिसपर जादू का असर हो गया है। (47) आप देखिए तो ये लोग आपके लिए कैसे-कैसे लक़ब तजवीज़ करते हैं। सो ये लोग गुमराह हो गए, रास्ता नहीं पा सकते।⁶ ♦ (48) और ये लोग कहते हैं कि क्या जब हम (मरने के बाद) हड्डियाँ और चूरा हो जाएँगे, तो क्या हम नए सिरे से पैदा और ज़िन्दा किए जाएँगे। (49) आप (जवाब में) फ़रमा दीजिए कि तुम पत्थर या लोहा (50) या और कोई ऐसी मख़्लूक होकर देख लो जो तुम्हारे ज़ेहन में बहुत ही दूर की चीज़ हो।⁷ इसपर पूछेंगे कि वह कौन है जो हमको दोबारा ज़िन्दा करेगा? आप फ़रमा दीजिए कि वह वह है जिसने तुमको अब्बल बार पैदा किया था। इसपर आपके आगे सर हिला-हिलाकर कहेंगे कि (अच्छा बतलाओ) यह कब होगा? आप फ़रमा दीजिए कि अज़ब नहीं यह करीब ही

(पृष्ठ 516 का शेष) 3. यानी जब क़त्ल के वाजिब या जायज़ होने का कोई शरई सबब पाया जाए तो क़त्ल करना दुरुस्त है, और उस वक़्त वह इस हुक्म में दाख़िल नहीं।

4. वारिस से मुराद वह शख्स है जिसको बदला लेने का हक़ हो, अगर कोई वारिस मौजूद हो तो वह, वरना बादशाह।

5. यानी हमें तसर्फ़ मत करो।

6. अहद में अल्लाह के तमाम अहक़ाम और बन्दों के दरमियान हुए तमाम मुआहदे भी दाख़िल हो गए।

7. इसलिए बेतहकीक़ बात पर यकीन करके उसपर अमल-दरामद मत करो।

8. बड़ी सख़्त बात इसलिए कि एक तो अल्लाह तआला के लिए औलाद करार देना, फिर औलाद भी वह जो कि अपने लिए नाकारा समझी जाए, जिससे अल्लाह तआला की तरफ़ दो कमियों की निस्बत करना लाज़िम आया।

1. यानी हकीक़ी खुदा तक।

2. यानी मुख़ालफ़त और मुकाबला सामने आता, फिर दुनिया का मौजूदा निज़ाम कैसे बाकी रहता, हालाँकि दुनिया का निज़ाम कायम है। तो मालूम हुआ कि फ़साद व बिगाड़ का सबब यानी कई खुदाओं का होना, मौजूद नहीं।

3. तस्बीह-हाली को इसलिए नहीं समझते कि उसकी हकीक़त इस्तिदलाल है, और वह मौकूफ़ है सोच-विचार पर, और तुम सोच-विचार नहीं करते। और ज़बान की तस्बीह को बाज़ चीज़ों में तो इसलिए कि वह कशफ़ी उमूर से मुताल्लिक़ है और मोमिनों की ज़बानी तस्बीह को इसलिए कि बावजूद सुनने के उसके मायने और उसकी हकीक़त में ग़ौर व फ़िक्र नहीं करते।

4. यानी वह ईर्दा न समझना और समझने का इरादा न करना है, जिससे वे आपकी शाने नुबुव्वत नहीं समझ सकते।

5. यानी उनकी ग़ुरज़ यही एतिराज़ करना और ताना देना है। (शेष तफ़सीर पृष्ठ 520 पर)

आ पहुँचा हो। (51) यह उस दिन होगा कि अल्लाह तुमको पुकारेगा और तुम (बिला इख़्तियार) उसकी तारीफ़ करते हुए हुक्म का पालन कर लोगे, और तुम यह ख़्याल करोगे कि तुम बहुत ही कम रहे थे।¹ (52) ♦

और आप मेरे (मुसलमान) बन्दों से कह दीजिए कि ऐसी बात कहा करें जो बेहतर हो,² शैतान (सख़्त-कलामी कराके) लोगों में फ़साद डलवा देता है, वाकई शैतान इनसान का खुला दुश्मन है। (53) तुम सबका हाल तुम्हारा परवर्दिगार ख़ूब जानता है, अगर वह चाहे तुमपर रहमत फ़रमाए या अगर वह चाहे तुमको अज़ाब देने लगे। और हमने आप (तक) को उन (की हिदायत) का ज़िम्मेदार बनाकर नहीं भेजा।³ (54) और आपका परवर्दिगार ख़ूब जानता है उनको जो कि आसमानों में हैं और ज़मीन में हैं,⁴ और हमने बाज़ नबियों को बाज़ पर फज़ीलत दी है, और हम दाऊद को ज़बूर दे चुके हैं।⁵ (55) आप फ़रमा दीजिए कि जिनको तुम अल्लाह तआला के सिवा (माबूद) करार दे रहे हो, ज़रा उनको पुकारो तो सही। सो (यकीनन) वे न तुमसे तकलीफ़ को दूर करने का इख़्तियार रखते हैं और न (उसके) बदल डालने का। (56) ये लोग जिनको ये (मुशिरक लोग) पुकार रहे हैं, वे खुद ही अपने रब की तरफ़ ज़रिया ढूँढ रहे हैं,⁶ कि उनमें कौन ज़्यादा मुकर्रब “यानी करीबी” (बनता) है। और वे उसकी रहमत के उम्मीदवार हैं और उसके अज़ाब से डरते हैं। (और) वाकई आपके रब का अज़ाब है भी डरने के काबिल।⁷ (57) और (काफ़िरों की) ऐसी कोई बस्ती नहीं जिसको हम क़ियामत से पहले हलाक न करेंगे, या (क़ियामत के दिन) उसको सख़्त अज़ाब न देंगे।⁸ यह (बात) किताब (यानी लौहे महफूज़) में लिखी हुई है। (58) और हमको ख़ास (फ़रमाइशी) मौजिज़ों के भेजने से यही बात रोक हुई कि पहले लोग उनको झुटला चुके हैं,⁹ और हमने कौमे समूद को ऊँटनी दी थी जो कि बसीरत “यानी समझ और दानाई” का ज़रिया थी, सो उन लोगों ने उसके साथ जुल्म किया, और हम ऐसे मौजिज़ों को साफ़ डराने के लिए भेजा करते हैं। (59) और (आप वह वक़्त याद कर लीजिए) जबकि हमने आपसे कहा था कि आपका रब अपने इल्म से तमाम लोगों को घेरे हुए है, और हमने जो तमाशा आपको (जागने की हालत में मेराज के अन्दर) दिखलाया था, और जिस दरख़्त की कुरआन में मज़म्मत “यानी निंदा” की गई है, हमने तो उन (दोनों चीज़ों) को उन लोगों के लिए गुमराही का सबब कर दिया, और हम उनको डराते रहते हैं

(पृष्ठ 518 का शेष) 6. क्योंकि ऐसे उमूर से सलाहियत ज़ाया हो जाती है।

7. जब उस चीज़ का ज़िन्दा करना मुश्किल है जो बहुत मुश्किल और दूर की बात है तो जो चीज़ आसान और करीब है उसका ज़िन्दा करना तो ज़्यादा आसानी से मुश्किल है। और ‘कूतू’ से मकसूद हुक्म नहीं है बल्कि यह बताना है कि अगर पत्थर और लोहा भी हो जाओ तब भी उसकी कुदरत से ख़ारिज नहीं हो सकते।

1. क्योंकि क़ब्र और दुनिया में उस दिन के मुकाबले में फिर भी राहत थी, और राहत व आराम का ज़माना सख़्ती और परेशानी के ज़माने के सामने कम मालूम होता है।

2. यानी उसमें बुरा-भला कहना और सख़्ती और उत्तेजना न हो।

3. इसलिए सख़्ती करने की ज़रूरत नहीं। मगर मुराद इससे बेज़रूरत सख़्ती करना है जैसा कि अक्सर लड़ाई-झगड़ों में हो जाती है, वरना ज़रूरत और मसलहत के मौके पर तो किताल तक की भी इजाज़त है।

4. ऊपर ‘व इज़ा करअतल् कुरआन’ और ‘कालू अ-इज़ा कुन्ना’ में कुम्फ़ार के रिसालत और मरने के बाद ज़िन्दा होने के इनकार पर दलालत थी, रिसालत के इनकार के अन्य कारणों में से उनका एक ख़्याल यह भी था कि रसूल फ़रिश्ता होना चाहिए, या अगर आदमी हो तो कोई सरदार और दुनियावी एतिबार से बड़ा आदमी हो। अब इस शुब्हे का जवाब और दाऊद अलैहिस्सलाम के ज़िक्र से आपकी रिसालत की ताईद और सब रसूलों में आपके अफ़ज़ल होने की तरफ़ मुख़्तसर इशारा फ़रमाते हैं।

5. ज़बूर की ख़ास करने में यह नुक्ता है कि उसमें हुज़ूर सल्ल. के हुक्मत व बादशाही वाला होने की ख़बर दी गई है।

6. यानी इताअत व इबादत में मशगूल हैं, ताकि अल्लाह तआला का कुर्ब (यानी नज़दीकी) मयस्सर हो जाए। और चाहते हैं कि और ज़्यादा निकटता हो जाए। (शेष तफ़सीर पृष्ठ 522 पर)

लेकिन उनकी बड़ी सरकशी बढ़ती ही चली जाती है। (60) ♦

और जबकि हमने फरिश्तों से कहा कि आदम को सज्दा करो, सो उन सबने सज्दा किया मगर इब्लीस “यानी शैतान” ने (न किया और) कहा कि क्या मैं ऐसे शख्स को सज्दा करूँ जिसको आपने मिट्टी से बनाया है।¹ (61) कहने लगा कि इस शख्स को जो आपने मुझपर फौकियत “यानी बरतरी” दी है तो भला बताइए (तो, खैर) अगर आपने मुझको कियामत के ज़माने तक मोहलत दे दी तो मैं (भी) सिवाय थोड़े-से लोगों के इसकी तमाम औलाद को अपने बस में करूँगा।² (62) इर्शाद हुआ, जा जो शख्स उनमें से तेरे साथ हो लेगा, सो तुम सबकी सज़ा जहन्नम है, सज़ा पूरी। (63) और उनमें से जिस-जिसपर तेरा काबू चले, अपनी चीख-पुकार से³ उसका कदम उखाड़ देना, और उनपर अपने सवार और प्यादे चढ़ा लाना,⁴ और उनके माल और औलाद में अपना साझा कर लेना,⁵ और उनसे वायदा करना (कि गुनाहों पर पकड़ न होगी) और शैतान उन लोगों से बिलकुल झूठे वायदे करता है। (64) मेरे खास बन्दों पर तेरा ज़रा काबू न चलेगा और आपका रब काफी कारसाज़ है। (65) तुम्हारा रब ऐसा (नेमत देने वाला) है कि तुम्हारे लिए कश्ती को दरिया में ले चलता है ताकि तुम उसके रिज़्क की तलाश करो, बेशक वह तुम्हारे हाल पर बहुत मेहरबान है। (66) और जब तुमको दरिया में कोई तकलीफ़ पहुँचती है तो सिवाय उस (खुदा) के और जितनों की तुम इबादत करते थे, सब ग़ायब हो जाते हैं,⁶ फिर जब तुमको खुशकी की तरफ़ बचा लाता है तो तुम फिर (पहली आदत के मुताबिक़) फिर जाते हो, और (वाकई) इनसान है बड़ा नाशुका। (67) तो क्या तुम इस बात से बेफ़िक्र हो (बैठे हो) कि तुमको खुशकी की तरफ़ लाकर ज़मीन में धँसा दे, या तुमपर कोई ऐसी तेज़ हवा भेज दे जो कंकर पत्थर बरसाने लगे, फिर तुम किसी को अपना कारसाज़ न पाओ। (68) या तुम इससे बेफ़िक्र हो गए कि वह (अल्लाह) फिर तुमको दरिया ही में दोबारा ले जाए, फिर तुमपर हवा का सख़्त तूफ़ान भेज दे, फिर तुमको तुम्हारे कुफ़्र के सबब डुबो दे, फिर इस बात पर कोई हमारा पीछा करने वाला तुमको न मिले। (69) और हमने आदम की औलाद को इज़्ज़त दी,⁷ और हमने उनको खुशकी और दरिया में सवार किया और उम्दा-उम्दा चीज़ें उनको अता फ़रमाईं। और हमने उनको अपनी बहुत-सी मख़्लूक पर बरतरी दी।⁸ (70) ♦

(पृष्ठ 520 का शेष) 7. मतलब यह है कि जब वे खुद इबादत करने वाले हैं तो माबूद क्योंकर होंगे, और जब वे खुद ही रहमत के हासिल करने में अल्लाह तआला के मोहताज हैं तो औरों को क्या नफ़ा पहुँचा सकते हैं। इसी तरह जब वे खुद नुक़सान यानी अज़ाब से बचने में अल्लाह तआला के मोहताज हैं तो औरों से नुक़सान को क्या दूर कर सकते हैं, लिहाज़ा उनका माबूद व मददगार बनाना महज़ बातिल होगा।

8. पस अगर कोई काफ़िर यहाँ किसी आफ़त में हलाक होने से बच गया तो कियामत के दिन बड़ी आफ़त से न बचेगा। आफ़त की कैद इसलिए है कि तबई मौत से तो सब ही हलाक होते हैं इसमें कुफ़्र की कोई खुसूसियत नहीं।

9. और तबीयतें इनकी और उनकी एक जैसी हैं, पस ये भी झुठलाएँगे।

1. इसपर मरदूद हुआ और धुतकारा गया।

2. अगर कोई यह सवाल करे कि शैतान को शुरू में यह कैसे मालूम हुआ कि मैं इनसानों को गुमराह करने और बहकाने पर काविर हूँ, इसका जवाब यह है कि ग़ालिबन इनसान के मुख़लिफ़ कुव्वतों से मुरक्कब होने से उसको यह ख़्याल आया।

3. यानी बहकाने और वस्वसे से।

4. ताकि सब मिलकर गुमराह करने में ख़ूब ज़ोर लगाएँ।

5. यानी माल और औलाद को गुमराही का ज़रिया बना देना। चुनाँचे आँखों के सामने है कि यही दो चीज़ें ज़्यादातर गुमराही का अहम और ताक़तवर सबब हुआ करती हैं।

6. न सिर्फ़ ज़बान पर से बल्कि दिल से भी कि उनका ख़्याल ही नहीं आता, और फ़रियाद को पहुँचने से भी कि वे इम्दाद नहीं कर सकते, जिससे तुम्हारे हाल और ज़बान से एतिराफ़ करने से शिर्क का बातिल होना लाज़िम आता है। (शेष तफ़सीर पृष्ठ 524 पर)

जिस दिन हम तमाम आदमियों को उनके आमालनामे समेत बुलाएँगे। फिर जिसका आमाल-नामा उसके दाहिने हाथ में दिया जाएगा, ऐसे लोग अपना आमाल-नामा पढ़ेंगे, और उनका ज़रा भी नुकसान न किया जाएगा। (71) और जो शख्स दुनिया में (नजात का रास्ता देखने से) अन्धा रहेगा, सो वह आखिरत में भी (नजात की मन्ज़िल तक पहुँचने से) अन्धा रहेगा, और ज़्यादा भटका हुआ होगा। (72) और ये (काफ़िर) आपको उस चीज़ से बिचलाने ही लगे थे जो हमने आपपर वह्न के ज़रिये से भेजी है,¹ ताकि आप उसके सिवा हमारी तरफ़ ग़लत बात की निस्वत करें, और ऐसी हालत में आपको गहरा दोस्त बना लेते। (73) और अगर हमने आपको साबित क़दम न बनाया होता तो आप उनकी तरफ़ कुछ-कुछ झुकने के करीब जा पहुँचते। (74) (अगर ऐसा होता) तो हम आपको जिन्दगी की हालत में और मौत के बाद दोहरा (अज़ाब) चखाते, फिर आप हमारे मुक़ाबले में कोई मददगार भी न पाते।² (75) और ये लोग इस सरज़मीन से आपके क़दम ही उखाड़ने लगे थे,³ ताकि आपको इससे निकाल दें, और (अगर ऐसा हो जाता तो) आपके बाद ये भी बहुत कम ठहरने पाते। (76) जैसा कि उन (हज़रात) के बारे में (हमारा) कायदा रहा है जिनको आपसे पहले हमने रसूल बनाकर भेजा था, और आप हमारे (इस) कायदे में बदलाव न पाएँगे।⁴ (77) ♦

सूरज ढलने के बाद से रात के अंधेरे (होने) तक नमाज़ें अदा किया कीजिए,⁵ और सुबह की नमाज़ भी, बेशक सुबह की नमाज़ (फ़रिशतों के) हाज़िर होने का वक़्त है।⁶ (78) और किसी क़द्र रात के हिस्से में, सो उसमें तहज़ुद पढ़ा कीजिए, जो कि आपके लिए (फ़र्ज़ नमाज़ों के अलावा) ज़ायद चीज़ है, उम्मीद है कि आपका रब आपको मक़ामे-महमूद⁷ में जगह देगा। (79) और आप (यूँ) दुआ कीजिए कि ऐ परवर्दिगार! मुझको ख़ूबी के साथ पहुँचाइयो, और मुझको ख़ूबी के साथ ले जाइयो,⁸ और मुझको अपने पास से ऐसा ग़ल्बा दीजियो जिसके साथ मदद हो।⁹ (80) और कह दीजिए कि हक़ आया और बातिल गया गुज़रा हुआ। (और) वाकई बातिल चीज़ तो (यूँ ही) आती-जाती (रहती) है।¹⁰ (81) और हम कुरआन में ऐसी चीज़ें नाज़िल करते हैं कि वे ईमान वालों के हक़ में तो शिफ़ा और रहमत है,¹¹ और नाइन्साफ़ों को उससे और उल्टा नुक़सान बढ़ता है। (82) और आदमी को जब हम नेमत अता करते हैं तो मुँह मोड़ लेता है और करवट फेर लेता है,

(पृष्ठ 522 का शेष) 7. इनसान में बाज़ मख़सूस सिफ़तें ऐसी हैं जो और जानदारों में नहीं, जैसे सूरत की ख़ूबसूरती जिसमें जिस्म का सीधा व कायम होना भी आ गया, और अक्ल, और चीज़ों की ईजाद (यानी आविष्कार करना) वगैरह। और ये नेमतें पूरी इन्सानियत के लिए हैं। पस बनी आदम (यानी आदम की औलाद) से मुराद तमाम इन्सान हैं।

8. चूँकि ऊपर “कर्रम्ना” मुख़्तसर था इसलिए इससे यह शुब्हा हो सकता था कि उन सिफ़तों में जो ऊपर ज़िक्र हुई हैं, यह सबसे अफ़ज़ल है, हालाँकि यह बात हकीक़त के खिलाफ़ थी। क्योंकि ये सिफ़तें फ़रिशतों पर फ़ज़ीलत का मदार नहीं हो सकतीं, और जो सिफ़तें फ़रिशतों पर फ़ज़ीलत का मदार हैं वे तमाम औलादे-आदम (यानी इन्सानों) में नहीं पाई जातीं, इसलिए ‘फ़ज़ल्ला’ में इस बात को वाज़ेह कर दिया कि मुराद इक्राम करने से बाज़ मख़लूक़ पर फ़ज़ीलत देना है, यानी हैवानात और हैवानात से जो कम रुतबा हैं उनपर इन्सानों को फ़ज़ीलत दी। पस यह आयत मुतकल्लिमीन के दरमियान ज़ेरे बहस मसले यानी फ़रिशतों और इन्सानों के एक-दूसरे से फ़ज़ीलत-याफ़ता होने के बारे में ख़ामोश है।

1. यानी इस कोशिश में लगे थे कि आप हमारे हुक्म के खिलाफ़ करें, यानी ग़रीब मुसलमानों को अपने पास से हटा दें, या मुसलमान होने के लिए एक साल की मोहलत दे दें, जबकि ये दोनों मामले शरीअत के खिलाफ़ हैं।

2. मगर चूँकि आपको मासूम (यानी गुनाहों से महफूज़) और सबित क़दम बनाया, इसलिए मामूली करीब होना और रुझान व मैलान भी नहीं हुआ, और ‘ज़िअफ़ल् हयाति व ज़िअफ़ल ममाति’ से भी बच गए।

3. यानी मक्का से या मदीना से।

4. कि जब उनकी कौम ने उनको वतन से निकाला तो खुद उनको भी रहना नसीब न हुआ।

5. इसमें जोहर, अस्त्र, मरिब, इशा चार नमाज़ें आ गईं। (शेष तफ़सीर पृष्ठ 526 पर)

और जब उसको कोई तकलीफ पहुँचती है तो नाउम्मीद हो जाता है।¹ (83) आप फरमा दीजिए कि हर शख्स अपने तरीके पर काम कर रहा है, सो तुम्हारा रब खूब जानता है उसको जो ठीक रास्ते पर हो। (84) ♦

और ये लोग आपसे (इम्तिहान के तौर पर) रूह के बारे में पूछते हैं, आप फरमा दीजिए कि रूह मेरे रब के हुक्म से बनी है,² और तुमको बहुत थोड़ा इल्म दिया गया है।³ (85) और अगर हम चाहें तो जिस कद्र वह्य आप पर भेजी है सब छीन लें, फिर उसके (वापस लाने के) लिए आपको हमारे मुकाबले में कोई हिमायती न मिले। (86) मगर (यह) आपके रब ही की रहमत है (कि ऐसा नहीं किया) बेशक आप पर उसका बड़ा फज़ल है। (87) आप फरमा दीजिए कि अगर तमाम इनसान और जिन्नात (इस बात के लिए) जमा हो जाएँ कि ऐसा कुरआन बना लाएँ तब भी ऐसा न ला सकेंगे, अगरचे एक दूसरे का मददगार भी बन जाए। (88) और हमने लोगों के (समझाने के) लिए हर किस्म का उम्दा मज़मून तरह-तरह से बयान किया है, फिर भी अक्सर लोग इनकार किए बगैर न रहे। (89) और ये लोग कहते हैं कि हम आप पर हरगिज़ ईमान न लाएँगे जब तक आप हमारे लिए (मक्का की) ज़मीन से कोई चश्मा जारी न कर दें। (90) या ख़ास आपके लिए खजूर और अंगूरों का कोई बाग़ न हो, फिर उस बाग़ के बीच-बीच में जगह-जगह बहुत-सी नहरें आप जारी कर दें। (91) या जैसा कि आप कहा करते हैं, आप आसमान के टुकड़े हमपर न गिरा दें, या आप अल्लाह को और फ़रिश्तों को (हमारे) सामने न (ला खड़ा) करें। (92) या आपके पास कोई सोने का बना हुआ घर न हो, या आप (हमारे सामने) आसमान पर न चढ़ जाएँ, और हम तो आपके (आसमान पर) चढ़ने को भी कभी यकीन न करें, जब तक कि (वहाँ से) आप हमारे पास एक तहरीर न लाएँ, जिसको हम पढ़ भी लें।⁴ आप फरमा दीजिए कि सुब्हानल्लाह! मैं सिवाय इसके कि आदमी हूँ (मगर) पैग़म्बर हूँ और क्या हूँ। (कि इन फरमाइशों को पूरा करना मेरी कुदरत में हो)। (93) ♦

(पृष्ठ 524 का शेष) 6. चूँकि सुबह का वक़्त नींद से उठने का था इसलिए इसका हुक्म भी अलग किया, और इसकी एक ख़ास बुजुर्गी भी बयान की।

7. जो शफ़ाअते कुबरा का मक़ाम है। और शफ़ाअते कुबरा वह है जिसमें तमाम मख़्लूक़ात के हिसाब-किताब शुरू होने की शफ़ाअत होगी।

8. यानी मक्का से जाने के बाद।

9. जिससे वह ग़ल्बा बढ़ता ही जाए, वरना आरज़ी (यानी अस्थायी) ग़ल्बा तो काफ़िरों को भी हो जाता है मगर वे अल्लाह की तरफ़ से मदद-याफ़्ता नहीं होते इसलिए जल्द ख़त्म हो जाता है। इसमें सुपुर्द करने का हुक्म हो गया।

10. चुनाँचे हिजरत के बाद मक्का फ़तह हुआ और सब वायदे पूरे हो गए।

11. क्योंकि वे उसे मानते हैं जिससे हक़ तआला की रहमत उनपर होती है, और बुरे अक्कीदों व आमाल के मर्ज़ से शिफ़ा होती है।

1. ये दोनों बातें अल्लाह से बेताल्लुकी की दलील हैं, और यही बेताल्लुकी असली सबब है हिदायत की तरफ़ मुतवज्जह न होने का, और हक़ में ग़ौर न करने का, और इसी से कुफ़्र वगैरह पैदा होता है।

2. ज़ाहिर में मालूम होता है कि इसी रूह के मुताल्लिक सवाल था जिससे इनसान जिन्दा है। क्योंकि जब रूह मुतलक़ बोलते हैं यही समझी जाती है, और जवाब से ज़ाहिर में यह मालूम होता है कि नुसूस (यानी कुरआन व हदीस) में इसकी हकीक़त ज़ाहिर न करने की वजह बतलाई है, और उसके हादीस (यानी फ़ानी) होने का ज़रूरी अक्कीदा ज़ाहिर कर दिया गया है। अब यह बात कि किसी दूसरे तरीके से इसका इज़हार हो सकता है या होता है, आयत इसके साबित होने और न होने दोनों से ख़ामोश है, पस दोनों बातों की गुन्जाइश है, और कोई सी सूरत भी कुरआन व हदीस के खिलाफ़ नहीं।

3. यहाँ जो इल्म को क़लील यानी थोड़ा-सा फरमाया तो अल्लाह तआला के इल्म के मुकाबले में, और दूसरी आयत में जो इल्म को 'खैर कसीर' (यानी बड़ी भलाई) फरमाया तो दुनिया के फ़ायदे और दौलत की निस्बत से, पस दोनों में कोई टकराव नहीं।

4. और उसमें आपके आसमान पर पहुँचने की तस्दीक़ रसीद के तौर पर लिखी हुई हो।

और जिस वक्त उन लोगों के पास हिदायत पहुँच चुकी, उस वक्त उनको ईमान लाने से सिवाय इसके और कोई (फ़ाबिले तवज्जोह) बात रोक नहीं हुई कि उन्होंने कहा, क्या अल्लाह तआला ने आदमी को रसूल बनाकर भेजा है। (94) आप फ़रमा दीजिए कि अगर ज़मीन पर फ़रिश्ते (रहते) होते कि इसमें चलते-बसते तो ज़रूर हम उनपर आसमान से फ़रिश्ते को रसूल बनाकर भेजते।¹ (95) आप (आखिरी बात) कह दीजिए कि अल्लाह तआला मेरे और तुम्हारे दरमियान काफी गवाह है, (क्योंकि) वह अपने बन्दों को ख़ूब जानता, ख़ूब देखता है। (96) और अल्लाह तआला जिसको राह पर लाए वही राह पर आता है, और जिसको वह बेराह कर दे तो खुदा के सिवा आप किसी को भी ऐसों का मददगार न पाएँगे।² और हम क़ियामत के दिन उनको अंधा गूँगा बहरा करके मुँह के बल चलाएँगे, (फिर) उनका ठिकाना दोज़ख़ है। वह जब ज़रा धीमी होने लगेगी तब ही उनके लिए और ज़्यादा भड़काएँगे। ● (97) यह है उनकी सज़ा, इस सबब से कि उन्होंने हमारी आयतों का इनकार किया था, और (यूँ) कहा था कि जब हम हड्डियाँ और बिलकुल चूरा-चूरा हो जाएँगे तो क्या हम नए सिरे से पैदा करके (कब्रों से) उठाए जाएँगे। (98) क्या उन लोगों को (इतना) मालूम नहीं कि जिस अल्लाह ने आसमान और ज़मीन पैदा किए वह इस बात पर (और भी ज़्यादा) कादिर है कि वह उन जैसे आदमी दोबारा पैदा कर दे, और उनके लिए एक मीयाद मुतैयन कर रखी है, इसमें ज़रा भी शक नहीं, इसपर भी बेइन्साफ़ लोग इनकार किए बग़ैर न रहे।³ (99) आप फ़रमा दीजिए कि अगर तुम लोग मेरे रब की रहमत (यानी नुबुव्वत) के ख़ज़ानों (यानी कमालात) के मुख़्तार होते तो उस सूत में तुम (उसके) ख़र्च करने के अन्देशे से ज़रूर हाथ रोक लेते, और आदमी है ही बड़ा तँगदिल।⁴ (100) ♦

और हमने मूसा को खुले हुए नौ मोज़िज़े दिए,⁵ जबकि वह उन (बनी इसराईल) के पास आए थे। सो आप बनी इसराईल से पूछ लीजिए। तो फिरऔन ने उनसे कहा कि ऐ मूसा मेरे ख़्याल में तो ज़रूर तुमपर किसी ने जादू कर दिया है। (101) (मूसा अलैहिस्सलाम ने) फ़रमाया तू (दिल में) ख़ूब जानता है कि ये (अज़ीब चीज़ें) ख़ास आसमान और ज़मीन के रब ने ही भेजी हैं, जो कि बसीरत “यानी समझ व अक्ल” के लिए (काफी) ज़रिये हैं, और मेरे ख़्याल में ज़रूर तेरी कम-बख़्ती के दिन आ गए हैं। (102) फिर उसने चाहा

1. यह रिसालत के मुताल्लिक एक शुब्हे का जवाब है। वह शुब्हा यह कि रसूल आदमी न होना चाहिये, फ़रिश्ता होना चाहिए। जवाब का हासिल यह है कि रसूल और जिनके पास रसूल को भेजा जा रहा है उनमें मुनासबत ज़रूरी है। जिनके पास रसूल भेजा जा रहा है अगर वे फ़रिश्ते होते तो रसूल भी फ़रिश्ता होता। जब वे आदमी हैं तो रसूल भी आदमी होना चाहिए। अगर वस्वसा हो कि जब मुनासबत की ज़रूरत से हम-जिन्स होने की रियायत हुई तो फिर रसूल के पास जबकि वह इनसान होता है फ़रिश्ता कैसे आता है और क्योंकर फ़ैज़ होता है? जवाब यह है कि रसूल में चूँकि फ़रिश्ते की शान भी होती है इसलिए उसको फ़रिश्ते और इनसान दोनों से मुनासबत होती है, कि फ़रिश्ते से वझ लेकर इनसानों को पहुँचा दे।

2. यानी जब तक खुदा की तरफ़ से दस्तगीरी (यानी मदद) न हो, न हिदायत हो सकती है न अज़ाब से बच सकते हैं। चुनाँचे ये लोग बावजूद हिदायत के असबाब के जमा होने के तौफ़ीक़ न होने की वजह से हिदायत तक न पहुँच सके।

3. ऊपर काफ़िरों का आपकी नुबुव्वत पर इनकार करना और आपसे बैर रखना ज़िक्र हुआ है, आगे फ़रमाते हैं कि अगर नुबुव्वत तुम्हारे इख़्तियार में होती तो तुम रसूले मक़बूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को कभी न देते, मगर वह तो फ़ज़्ले खुदा के हाथ में है, इसलिए तुम्हारा बैर, दुश्मनी और नागवारी रोक नहीं हो सकती।

4. यानी कभी भी किसी को न देते, इसके बावजूद कि वह चीज़ ऐसी होती कि देने से भी न घटती, मगर खुद उसके देने ही को ख़र्च करने जैसा समझकर किसी को भी न देते। जैसे बाज़ लोग इल्म की बात बुख़्त की इन्तिहा की वजह से नहीं बतलाया करते।

5. जिनका ज़िक्र पारा नम्बर नौ के रुकूअ नम्बर छह की पहली और चौथी आयत में है।

कि उन (बनी इसराईल) का उस सरज़मीन से कदम उखाड़ दे,¹ सो हमने उसको और जो उसके साथ थे सबको डुबो दिया। (103) और उसके बाद हमने बनी इसराईल को कह दिया कि (अब) तुम इस सरज़मीन में रहो (सहो) फिर जब आखिरत का वायदा आ जाएगा तो हम सबको जमा करके ला हाज़िर करेंगे। (104) और हमने इस (कुरआन) को रास्ती ही के साथ नाज़िल किया और वह रास्ती ही के साथ नाज़िल हो गया,² और हमने आपको सिर्फ़ खुशी सुनाने वाला और डराने वाला बनाकर भेजा है।³ (105) और कुरआन में हमने जगह-जगह फ़ासला रखा, ताकि आप इसको लोगों के सामने ठहर-ठहर कर पढ़ें, और हमने इसको उतारने में भी दर्जा-बदर्जा और सिलसिलेवार उतारा।⁴ (106) आप कह दीजिए कि तुम इस (कुरआन) पर चाहे ईमान लाओ चाहे ईमान न लाओ, जिन लोगों को इस (कुरआन) से पहले (दीन का) इल्म दिया गया था⁵ यह (कुरआन) जब उनके सामने पढ़ा जाता है तो ठोड़ियों के बल सज्दे में गिर पड़ते हैं (107) और कहते हैं कि हमारा रब (वायदा-ख़िलाफ़ी से) पाक है, बेशक हमारे परवर्दिगार का वायदा ज़रूर पूरा ही होता है।⁶ (108) और ठोड़ियों के बल गिरते हैं रोते हुए।⁷ और यह (कुरआन मजीद) उनका खुशू “यानी आज़िज़ी” बढ़ा देता है। □ (109) आप फ़रमा दीजिए कि चाहे अल्लाह कहकर पुकारो या रहमान कहकर पुकारो। जिस (नाम) से भी पुकारोगे, सो उसके बहुत अच्छे (अच्छे) नाम हैं।⁸ और अपनी नमाज़ में न तो बहुत पुकारकर पढ़िए और न बिल्कुल चुपके-चुपके ही पढ़िए, और दोनों के दरमियान एक तरीका इख़्तियार कर लीजिए। (110) और कह दीजिए कि तमाम ख़ूबियाँ उसी अल्लाह (तआला) के लिए (ख़ास) हैं, जो न औलाद रखता है और न बादशाहत में कोई उसका शरीक है, और न कमज़ोरी की वजह से उसका कोई मददगार है। और उसकी बड़ाइयाँ ख़ूब बयान किया कीजिए।⁹ (111) ♦

18 सूर: कहफ़ 69

सूर: कहफ़ मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 110 आयतें और 12 रूकूअ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

¹⁰तमाम ख़ूबियाँ उस अल्लाह के लिए (साबित) हैं जिसने अपने (ख़ास) बन्दे पर (यह) किताब नाज़िल फ़रमाई, और इसमें ज़रा भी टेढ़ नहीं रखी। (1) बिल्कुल इस्तिक़ामत “यानी मज़बूती” के साथ मौसूफ़ बनाया ताकि वह एक सख़्त अज़ाब से जो कि अल्लाह की तरफ़ से होगा, डराए। और उन ईमान वालों को जो नेक

1. यानी उनको शहर-निकाला दे दे।
2. यानी जिस तरह कातिब (लिखने वाले) के पास से चला था उसी तरह मक्तूब इलैहि (जिसके लिए लिखा था, उस) तक पहुँच गया, और दरमियान में कोई अदलाव-बदलाव और तसरूफ़ नहीं हुआ। पस वह पूरी तरह रास्ती ही रास्ती (यानी सच्चाई और दुरुस्ती) है।
3. इसलिए अगर कोई ईमान न लाए तो कुछ ग़म न कीजिए।
4. ताकि वे अच्छी तरह समझ सकें और ताकि मायने ख़ूब ज़ाहिर हो जाएँ।
5. यानी अहले किताब के इन्साफ़-पसन्द उलमा।
6. सो जिस किताब का जिस नबी पर नाज़िल करने का वायदा पहली किताबों में किया था उसको पूरा फ़रमा दिया।
7. यह सज्दे में गिरना या तो शुक्र के तौर पर है कि पहली किताबों में दर्ज वायदा पूरा हुआ, या ताज़ीम व बुजुर्गी के लिए है कि कुरआन सुनकर हैबत तारी होती है, या किनाया है इन्तिहाई यकीन और आज़िज़ी व इन्क़िसारी से। और सज्दा चेहरे के बल होता है मगर ठोड़ी के बल कहना मुबालग़े के लिए है, कि अपने चेहरे को ज़मीन और मिट्टी से इस क़द लगा देते हैं कि ठोड़ी लगने के क़रीब हो जाती है।
8. इसमें शिर्क से कोई ताल्लुक नहीं क्योंकि मुसम्मा (यानी जिसके ये नाम हैं, वह) तो एक ही है, (शेष तफ़सीर पृष्ठ 532 पर)

काम करते हैं (यह) खुशखबरी दे कि उनको अच्छा अज्र मिलेगा। (2) जिसमें वे हमेशा रहेंगे। (3) और ताकि उन लोगों को डराए जो (यूँ) कहते हैं (हम अल्लाह तआला की पनाह चाहते हैं) कि अल्लाह तआला औलाद रखता है। (4) न तो इसकी कोई दलील उनके पास है और न उनके बाप-दादों के पास थी। बड़ी भारी बात है जो उनके मुँह से निकलती है। (और) वे लोग बिलकुल ही झूठ बकते हैं। (5) सो शायद आप उनके पीछे ग़म से अपनी जान दे देंगे, अगर ये लोग इस (कुरआनी) मज़मून पर ईमान न लाए। (यानी इतना ग़म न करें कि हलाकत के करीब कर दे)। (6) हमने ज़मीन पर की चीज़ों को उस (ज़मीन) के लिए रौनक का सबब बनाया, ताकि हम लोगों की आजमाइश करें कि उनमें ज़्यादा अच्छा अमल कौन करता है।¹ (7) और हम इस (ज़मीन) पर की तमाम चीज़ों को एक साफ़ मैदान (यानी फ़ना) कर देंगे।² (8) क्या आप (यह) ख्याल करते हैं कि ग़ार वाले और पहाड़ वाले हमारी (कुदरत की) अजीब चीज़ों में से कुछ ताज़्जुब की चीज़ थे?³ (9) (वह वक़्त ज़िक्र के काबिल है) जबकि उन नौजवानों ने (उस) ग़ार में जाकर पनाह ली, फिर कहा कि ऐ हमारे परवर्दिग़ार! हमको अपने पास से रहमत (का सामान) अता फ़रमाइए, और हमारे लिए हमारे (इस) काम में दुरुस्ती का सामान मुहैया कर दीजिए। (10) सो हमने (उस) ग़ार में उनके कानों पर सालों तक (नींद का) पर्दा डाल दिया।⁴ (11) फिर हमने उनको उठाया ताकि हम मालूम कर लें कि उन दोनों ग़िरोह में से कौनसा (ग़िरोह) उनके रहने की मुद्दत का ज़्यादा जानकार था। (12) ♦

हम उनका वाकिआ आपसे ठीक-ठीक बयान करते हैं,⁵ वे लोग कुछ नौजवान थे, जो अपने रब पर ईमान लाए थे और हमने उनकी हिदायत में और तरक्की कर दी थी। (13) और हमने उनके दिल मज़बूत कर दिए, जबकि वे (दीन में) पक्के होकर कहने लगे कि हमारा रब (तो वह है जो) आसमानों और ज़मीन का रब है। हम तो उसको छोड़कर किसी माबूद की इबादत न करेंगे, (क्योंकि) उस सूरत में हमने यकीनन बड़ी ही बेजा बात कही। (14) यह जो हमारी कौम है, उन्होंने खुदा को छोड़कर और माबूद करार दे रखे हैं, ये लोग उच (माबूदों) पर कोई खुली दलील क्यों नहीं लाते। तो उस शख्स से ज़्यादा कौन ग़ज़ब ढाने वाला होगा? जो अल्लाह तआला पर झूठी तोहमत लगा दे। (15) और जब तुम उन लोगों से अलग हो गए हो और उनके माबूदों से भी, मगर अल्लाह तआला से (अलग नहीं हुए) तो तुम (फ़लाँ) ग़ार में चलकर पनाह लो, तुमपर तुम्हारा रब अपनी रहमत फैला देगा, और तुम्हारे लिए तुम्हारे इस काम में कामयाबी का सामान दुरुस्त कर

(पृष्ठ 530 का शेष)

नाम अनेक हैं। शिर्क जब वाजिब होता जब मुसम्मा दूसरा होता।

9. सूरः को तस्बीह (यानी अल्लाह की पाकी के बयान) से शुरू किया, तम्हीद व तकबीर (यानी अल्लाह की तारीफ़ और बड़ाई के बयान) पर ख़त्म किया। पस 'सुब्हानल्लाहि वल्हम्दु लिल्लाहि वल्लाहु अकबर' के मायनों पर शुरूआत और ख़ात्मा हुआ।

10. इस सूरः में ये मज़ामीन हैं, तौहीद व रिसालत की बहसें, दुनिया का फ़ानी व ज़लील होना, आख़िरत की जज़ा व सज़ा, तकब्बुर व झगड़े की बुराई, शिर्क का बातिल होना, रिसालत व तौहीद और मरने के बाद ज़िन्दा होने पर दलालत करने के लिए कुछ किस्से, और इन सबके अन्दर ताल्लुक व मुनासबत जाहिर है कि इन सब मज़ामीन को ईमान के हासिल होने में दख़ल है।

1. यानी कौन तो इसके जीनत के असबाब में मशगूल होकर हक़ तआला से गाफ़िल हो जाता है, और कौन इसपर फ़रेष्टा न होकर हक़ तआला की तरफ़ मशगूल होता है। गरज़ यह आजमाइश का घर ठहरा, पस ज़रूरी हुआ कि कोई कुफ़्र में मुब्तला हो और कोई ईमान से शार्फ़ (इज़्ज़त व सम्मान) पाए, फिर ग़म बेकार है, आप अपना काम किए जाइए और उनके कुफ़्र के नतीजे की फ़िक्र में न पड़िए कि उसका मुरत्तब करना हमारा काम है।

2. कुरैश के काफ़िरों ने यहूद के सिखलाने से नुबुव्वत के इम्तिहान के लिए आपसे तीन सवाल किए थे, एक रूह के मुताल्लिक जिसका जवाब पिछली सूरः में गुज़र चुका है। एक 'अस्हाबे कहफ़' का किस्सा जिसका अभी ज़िक्र होता है। एक जुल्करनैन का किस्सा जो इस सूरः के आख़िर में आएगा। (शेष तफ़सीर पृष्ठ 534 पर)

देगा। (16) और (ऐ मुखातब!) जब धूप निकलती है तो तू उसको देखेगा कि वह उनके ग़ार के दाहिनी तरफ़ को बची रहती है,¹ और जब छुपती है तो (ग़ार के) बाईं तरफ़ हटी रहती है।² और वे लोग उस ग़ार की एक कुशादा जगह में थे। यह अल्लाह की निशानियों में से है। जिसको अल्लाह हिदायत दे वही हिदायत पाता है, और जिसको वह बेराह कर दे तो आप उसके लिए कोई मददगार, राह बताने वाला न पाएँगे। (17) ♦

और (ऐ मुखातब!) तू उनको जागता हुआ ख़्याल करता, हालाँकि वे सोते थे, और हम उनको (कभी) दाहिनी तरफ़ और (कभी) बाईं तरफ़ करवट दे देते थे, और उनका कुत्ता दहलीज़ पर अपने दोनों हाथ फैलाए हुए था। अगर (ऐ मुखातब!) तू उनको झाँककर देखता तो उनसे पीठ फेरकर भाग खड़ा होता, और तेरे अन्दर उनकी दहशत समा जाती।³ (18) और इसी तरह हमने उनको जगा दिया, ताकि वे आपस में पृथ्ठाछ करें। उनमें से एक कहने वाले ने कहा कि तुम (नींद की हालत में) कितनी देर रहे होगे? (उनमें से बाज़ों ने) कहा कि (ग़ालिबन) एक दिन या एक दिन से भी कुछ कम रहे होंगे। (दूसरे कुछ ने) कहा कि यह तो तुम्हारे खुदा ही को ख़बर है कि तुम कितनी देर रहे, अब अपने में से किसी को यह रुपया देकर शहर की तरफ़ भेजो, फिर वह खोज करे कि कौन-सा खाना (हलाल) है,⁴ सो उसमें से तुम्हारे पास कुछ खाना ले आए। और (सब काम) बड़ी होशियारी (से) करे, और किसी को तुम्हारी ख़बर न होने दे। (19) (क्योंकि) अगर वे लोग तुम्हारी ख़बर पा जाएँ तो तुमको या तो पत्थरों से मार डालेंगे या तुमको अपने तरीके में फिर कर लेंगे, “यानी वापस उसी में लौट लेंगे” और (ऐसा हुआ तो) तुमको कभी कामयाबी न होगी। (20) और इसी तरह हमने (लोगों को) उनपर मुत्तला कर दिया, ताकि वे लोग इस बात का यकीन कर लें कि अल्लाह तआला का वायदा सच्चा है, और यह कि कियामत में कोई शक नहीं। (वह वक़्त भी ज़िक्र के काबिल है) जबकि (उस ज़माने के लोग) उनके मामले में आपस में झगड़ रहे थे,⁵ सो उन लोगों ने कहा कि उनके पास कोई इमारत बनवा दो, उनका रब उनको ख़ूब जानता था। जो लोग अपने काम पर ग़ालिब थे उन्होंने कहा⁶ कि हम तो उनके पास एक मस्जिद बना देंगे।⁷ (21) (कुछ लोग तो) कहेंगे कि वे तीन हैं चौथा उनका कुत्ता है, और (कुछ) कहेंगे कि वे

(पृष्ठ 532 का शेष)

3. ग़ार वाले और पहाड़ वाले दोनों एक ही जमाअत के लकब हैं।

4. यानी ऐसे बेखुद होकर सोए कि कोई आवाज़ उनके कान में न पहुँचती थी, और इसमें ज़्यादा मुद्बालगा है इससे मुकाबले में कि कहा जाए कि आँख पर पर्दा डाल दिया, क्योंकि आँख तो बिना गहरी नींद के भी चीज़ों के देखने से सुस्त और बेकार हो जाती है।

5. चूँकि लोगों ने इसको मुख्तलिफ़ तौर पर मशहूर किया था इसलिए फरमाया कि ठीक वह है जो कुरआन में है।

1. यानी ग़ार के दरवाज़े से अलग रहती है।

2. यानी उस वक़्त भी दरवाज़े पर नहीं पड़ती ताकि धूप से तकलीफ़ न हो। ग़ार की दाहिनी और बाईं जानिब या तो उसमें दाख़िल होने वाले के एतिबार से है, या उससे निकलने वाले के एतिबार से। पस पहली सूरत में वह ग़ार उत्तर मुँहाना होगा और दूसरी सूरत में दक्षिण मुँहाना। और पूरब मुँहाना होने में सूरज निकलने के वक़्त उनपर धूप पड़ती और पश्चिम मुँहाना होने में सूरज छुपने के वक़्त, और मकसूद इससे उस जगह का महफूज़ होना है।

3. ग़ालिबन ये सब चीज़ें उनकी हिफाज़त के असबाब हैं। इस आयत में आम लोगों को ख़िताब है, पस इससे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मरऊब होना लाज़िम नहीं आता।

4. क्योंकि उनके ग़ार में छुपने के ज़माने में बुतों के नाम पर ज़िब्ह किया हुआ गोश्त कसूरत से बिकता था।

5. वह मामला उनकी लाशों की हिफाज़त की गरज़ से या निशान के लिए यादगार कायम करने की गरज़ से उस ग़ार का मुँह बन्द करना था।

6. यानी अहले हुकूमत जो उस वक़्त देने हक़ पर कायम थे।

7. ताकि मस्जिद इस बात की भी निशानी रहे कि ये लोग आबिद थे, उनको कोई माबूद न बना ले, जैसा कि दूसरी इमारतों में पूजा का अन्देशा है।

पाँच हैं छटा उनका कुत्ता है, (और) ये लोग बिना छाने-फटके बात को हाँक रहे हैं, और (कुछ) कहेंगे कि वे सात हैं आठवाँ उनका कुत्ता है, आप कह दीजिए कि मेरा रब उनकी गिनती खूब (सही-सही) जानता है, उन (की गिनती) को बहुत कम लोग जानते हैं¹ सो आप उनके बारे में सरसरी बहस के अलावा ज्यादा बहस न कीजिए,² और आप उनके बारे में उन लोगों में से किसी से भी न पूछिए। (22) ♦

और आप किसी काम के बारे में यूँ न कहा कीजिए कि मैं इसको कल कर दूँगा। (23) मगर खुदा तआला के चाहने को मिला दिया कीजिए, और जब आप भूल जाएँ तो अपने रब का जिक्र कीजिए और कह दीजिए कि मुझको उम्मीद है कि मेरा रब मुझको (नुबुव्वत की) दलील बनने के एतिबार से इससे भी नज़दीकी बात बतला दे³ (24) और वे लोग अपने ग़ार में (नींद की हालत में) तीन सौ वर्ष तक रहे, और नौ वर्ष ऊपर और रहे। (25) आप कह दीजिए कि अल्लाह तआला उनके रहने (की मुद्दत) को ज्यादा जानता है, तमाम आसमानों और ज़मीन का ग़ैब (का इल्म) उसी को है, वह कैसा कुछ देखने वाला और कैसा-कुछ सुनने वाला है। उनका अल्लाह तआला के सिवा कोई भी मददगार नहीं और न अल्लाह किसी को अपने हुक्म में शरीक करता है। (26) और आपके पास जो आपके रब की किताब वहाँ के ज़रिये से आई है, (लोगों के सामने) पढ़ दिया कीजिए, उसकी बातों को (यानी वायदों को) कोई बदल नहीं सकता, और आप अल्लाह तआला के सिवा और कोई पनाह की जगह न पाएँगे। (27) और आप अपने को उन लोगों के साथ रोके रखा कीजिए जो सुबह व शाम (यानी हमेशा) अपने रब की इबादत सिर्फ उसकी खुशी हासिल करने के लिए करते हैं,⁴ और दुनिया की ज़िन्दगी की रौनक के ख्याल से आपकी आँखें (यानी तवज्जोह) उनसे हटने न पाएँ⁵ और ऐसे शख्स का कहना न मानिए जिसके दिल को हमने अपनी याद से ग़ाफ़िल कर रखा है, और वह अपनी नफ़सानी ख्वाहिश पर चलता है, और उसका (यह) हाल हद से गुज़र गया है। ▲ (28) और आप कह दीजिए कि (यह दीने) हक़ तुम्हारे रब की तरफ़ से (आया) है, सो जिसका जी चाहे ईमान ले आए और जिसका जी चाहे काफ़िर रहे,⁶ बेशक हमने ऐसे जालिमों के लिए आग तैयार कर रखी है, कि उस (आग) की क्नातें उनको घेरे होंगी⁷ और अगर (प्यास से) फ़रियाद करेंगे तो ऐसे पानी से उनकी फ़रियाद-रसी की

1. चूँकि उसके निशानदेही से कोई ख़ास फ़ायदा हासिल न होता था लिहाज़ा इस इख़्तिलाफ़ का कोई वाज़ेह फ़ैसला आयत में नहीं फ़रमाया, लेकिन रिवायतों में हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु व अबू मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु का कौल आया है कि मैं उन्हीं क़लील (थोड़े लोगों) में से हूँ और वे सात थे, और आयत में भी इशारे के तौर पर इसका सही होना मालूम होता है, क्योंकि इस आख़िरी कौल को नक़ल करके इसको रद्द नहीं फ़रमाया।
2. सरसरी बहस से यह मुराद है कि आप वहाँ के मुताबिक़ उनके सामने किस्सा बयान कर दीजिए और ज्यादा सवाल व जवाब न कीजिए।
3. आपसे रुह, अस्थाबे कहफ़ और जुल्करनैन का किस्सा पूछा गया तो आपने वहाँ के भरोसे पर ज़बान से इन्शा-अल्लाह कहे बग़ैर वायदा फ़रमाया कि कल जवाब दूँगा। चुनौचे पन्द्रह दिन तक वहाँ नाज़िल न हुई और आपको बड़ा ग़म हुआ, उसके बाद जवाब के साथ यह हुक्म भी नाज़िल हुआ कि ये लोग आपसे कोई बात जवाब के काबिल दरियाफ़्त करें और आप जवाब का वायदा करें तो उसके साथ इन्शा-अल्लाह तआला या इसके मायने जैसी कोई बात ज़रूर मिला लिया करें।
4. 'वसिबर नफ़्स-क....' का यह मतलब नहीं है कि जब तक ये लोग न उठेंगे आप बैठे रहना कीजिए, बल्कि मतलब यह है कि पहले ही की तरह उनको अपनी लम्बी बैठक से सम्मान दीजिए।
5. रौनक के ख्याल से यह मुराद है कि सरदार मुसलमान हो जाएँ तो इस्लाम में ज्यादा जमाल व कमाल होगा। पस इसमें बतला दिया कि इस ज़ाहिरी सामान से इस्लाम का जमाल व कमाल नहीं है बल्कि इसका मदर इख़्लास और कामिल इताअत पर है, चाहे ग़रीबों ही से हो।
6. हमारा कोई नफ़ा व नुक़सान नहीं बल्कि ईमान न लाने से अपना ही नुक़सान और ईमान लाने से अपना ही नफ़ा है।
7. यानी वे क्नातें भी आग ही हैं जैसा कि हदीस में है, और उसमें से निकल न सकेंगे।

जाएगी जो तेल की तलछट की तरह होगा, मुँहों को भून डालेगा, क्या ही बुरा पानी होगा और (दोज़ख़ भी) क्या ही बुरी जगह होगी। (29) बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किए तो हम ऐसों का बदला बर्बाद न करेंगे जो अच्छी तरह काम को करे। (30) (पस) ऐसे लोगों के लिए हमेशा रहने के बाग़ हैं, उनके (ठिकानों के) नीचे नहरें बहती होंगी, उनको वहाँ सोने के कंगन पहनाए जाएँगे और हरे रंग के कपड़े¹ बारीक और मोटे रेशम के पहनेंगे, वहाँ मसहरियों पर तकिए लगाए (बैठे) होंगे। क्या ही अच्छा बदला है और (जन्नत) क्या ही अच्छी जगह है। (31) ♦

और आप उन लोगों से दो शख्सों का हाल बयान कीजिए। उन दो शख्सों में से एक को हमने दो बाग़ अँगूर के दे रखे थे, और उन दोनों (बाग़ों) का खजूर के पेड़ों से घेरा बना रखा था, और उन दोनों के दरमियान में खेती भी लगा रखी थी। (32) (और) दोनों बाग़ अपना पूरा फल देते थे, और किसी के फल में ज़रा भी कमी न रहती थी, और उन दोनों के दरमियान में नहर चला रखी थी। (33) और उस शख्स के पास (और भी) मालदारी का सामान था, सो वह (एक बार) अपने उस (दूसरे) मुलाकाती से इधर-उधर की बातें करते-करते कहने लगा कि मैं तुझसे माल में भी ज़्यादा हूँ और मजमा भी मेरा ज़बरदस्त है। (34) और वह अपने ऊपर (कुफ़ का) जुर्म कायम करता हुआ अपने बाग़ में पहुँचा, (और) कहने लगा कि मेरा तो ख्याल नहीं है कि यह (बाग़ मेरी ज़िन्दगी में) कभी भी बर्बाद हो।² (35) और मैं कियामत को नहीं ख्याल करता कि आएगी, और अगर मैं अपने रब के पास पहुँचाया गया तो ज़रूर इस (बाग़) से बहुत ज़्यादा अच्छी जगह मुझको मिलेगी। (36) उससे उसके मुलाकाती ने (जो कि दीनदार और ग़रीब था) जवाब के तौर पर कहा, क्या तू उस (पाक) ज़ात के साथ कुफ़ करता है जिसने (पहले) तुझको मिट्टी से पैदा किया,³ फिर नुत्फ़े से,⁴ फिर तुझको (सही व सालिम) आदमी बनाया। (37) लेकिन (मैं तो यह अक़ीदा रखता हूँ कि) वह (यानी) अल्लाह तआला मेरा (हकीकी) रब है, और मैं उसके साथ किसी को शरीक नहीं ठहराता। (38) और तू जिस वक़्त अपने बाग़ में पहुँचा था तो तूने यूँ क्यों न कहा कि जो अल्लाह तआला को मन्ज़ूर (होता) है (वही होता है, और) अल्लाह तआला की मदद के बग़ैर (किसी में) कोई ताक़त नहीं, अगर तू मुझको माल और औलाद में कमतर देखता है (39) तो (मुझको वह वक़्त) नज़दीक (मालूम होता) है कि मेरा रब मुझको तेरे बाग़ से अच्छा (बाग़) दे दे, और इस (तेरे बाग़) पर कोई (तक्दीरी) आफ़त आसमान से भेज दे, जिससे वह (बाग़) यकायक एक साफ़ मैदान (होकर) रह जाए। (40) या (उससे) इसका पानी बिलकुल अन्दर (ज़मीन में) उतर

1. यह जो फ़रमाया कि हरा लिबास होगा, इससे इसी का ख़ास करना मकसूद नहीं क्योंकि आयतों में वाज़ेह है कि जिस चीज़ को जी चाहेगा वह मिलेगी।
2. यह उसने तौहीद के मसले में कलाम किया कि तू जो दुनिया को बनाने वाले का और उसकी कुदरत वग़ैरह का कायल है, सो मैं नहीं समझता कि तबई असबाब को कोई नाकारा कर सकता है, और इस बाग़ वग़ैरह का कारख़ाना, जिसके आबाद रहने के सारे असबाब जमा हैं, किस तरह इसके वीरान हो जाने का गुमान व ख्याल किया जा सकता है।
3. जो कि तेरा दूर का मादा है आदम अलैहिस्सलाम के वास्ते से।
4. जो कि तेरा करीबी मादा है माँ के रहम (यानी पेट या बच्चेदानी) में।

(कर सूख) जाए, फिर तू उस (के लाने और निकालने) की कोशिश भी न कर सके।¹ (41) और उस शख्स के माल व दौलत के सामान को (आफ़त ने) आ घेरा² फिर उसने जो कुछ उस (बाग़) पर ख़र्च किया था, उसपर हाथ मलता रह गया, और वह (बाग़) अपनी टट्टियों पर गिरा हुआ (पड़ा) था। और कहने लगा, क्या ख़ूब होता कि मैं अपने रब के साथ किसी को शरीक न ठहराता।³ (42) और उसके पास कोई (ऐसा) मजमा न हुआ कि अल्लाह तआला के सिवा उसकी मदद करता, और न वह खुद (हमसे) बदला ले सका। (43) ऐसे मौके पर मदद करना अल्लाह बरहक ही का काम है, उसी का सवाब सबसे अच्छा है और उसी का नतीजा सबसे अच्छा है।⁴ (44) ♦

और आप उन लोगों से दुनिया की ज़िन्दगी की हालत बयान फ़रमाइए (कि वह ऐसी है) जैसे आसमान से हमने पानी बरसाया हो, फिर उसके ज़रिये से ज़मीन की नबातात “यानी घास और पेड़-पौधे” ख़ूब घनी हो गई हो, फिर वह चूरा-चूरा हो जाए कि उसको हवा उड़ाए लिए फिरती हो,⁵ और अल्लाह तआला हर चीज़ पर पूरी कुदरत रखते हैं। (45) माल और औलाद दुनिया की ज़िन्दगी की एक रौनक हैं और (जो) नेक अमाल बाकी रहने वाले हैं वे आपके रब के नज़दीक सवाब के एतिबार से भी (हज़ार दर्जा) बेहतर हैं, और उम्मीद के एतिबार से भी (हज़ार दर्जा) बेहतर हैं।⁶ (46) और (उस दिन को याद करना चाहिए) जिस दिन हम पहाड़ों को हटा देंगे, और आप ज़मीन को देखेंगे (कि खुला मैदान पड़ा है) और हम उन सबको जमा कर देंगे, और उनमें से किसी को भी न छोड़ेंगे। (47) और (सबके-सब) आपके रब के सामने बराबर-बराबर खड़े करके पेश किए जाएंगे। (देखो, आख़िर) तुम हमारे पास आए (भी) जैसा कि हमने तुमको पहली बार पैदा किया था, बल्कि तुम (यही) समझते रहे कि हम तुम्हारे लिए कोई वायदा किया गया वक़्त न लाएंगे। (48) और नामा-ए-आमाल रख दिया जाएगा, तो आप मुज़िर्मों को देखेंगे कि उसमें जो कुछ (लिखा) होगा उससे डरते होंगे, और कहते होंगे कि हाय हमारी कम-बख़्ती इस नामा-ए-आमाल का अज़ीब हाल है कि बेलिखे हुए न कोई छोटा गुनाह छोड़ा न बड़ा गुनाह (छोड़ा) और जो कुछ उन्होंने किया था वह सब (लिखा हुआ) मौजूद पाएंगे। और आपका रब किसी पर जुल्म न करेगा।⁷ (49) ♦

और जबकि हमने फ़रिश्तों को हुक्म दिया कि आदम के सामने सज्दा करो, सो सबने सज्दा किया, अलावा इब्लीस के, वह जिन्नो में से था। सो उसने अपने रबके हुक्म को न माना। सो क्या फिर भी तुम उसको और उसके पैरोकारों को दोस्त बनाते हो मुझको छोड़कर, हालाँकि वे तुम्हारे दुश्मन हैं।⁸ ये ज़ालिमों के

1. हासिल यह हुआ कि तेरा शक व शुब्हा करने का मन्शा यह दौलत व जायदाद है जो तेरे पास है और मेरे पास नहीं, यह समझना ही ग़लत है। क्योंकि अब्बल तो यहाँ ही मुम्किन है कि उल्टा हो जाए, फिर कभी न कभी तो यह फ़ना होने वाली ही है और आख़िरत की नेमतें कभी फ़ना न होंगी, इसलिए एतिबार वहाँ का है यहाँ का नहीं।

2. मालूम नहीं क्या आफ़त थी मगर ज़ाहिरन उसके ग़ैर-वाज़ेह (अस्पष्ट) होने से मालूम होता है कि कोई बड़ी आफ़त थी।

3. मुराद यह कि कुफ़्र न करता। मतलब यह मालूम होता है कि वह समझ गया कि यह आफ़त कुफ़्र के इन्तिकाम में आई है इसलिए उसपर शर्मिन्दा होता है कि अगर कुफ़्र न करता तो या तो आफ़त न आती या आती तो उसका बदल आख़िरत में मिलता, अब दुनिया व आख़िरत दोनों जगह घाटे वाली बात हो गई। ये बातें मोमिन से उसके कान में पड़ी होंगी। और इससे यह लाज़िम नहीं आता कि वह मोमिन हो गया हो, क्योंकि यह शर्मिन्दगी नुक़सान की वजह से है कुफ़्र के बुरा होने की वजह से नहीं।

4. यानी अगर उसके मक़बूल बन्दों का कोई नुक़सान हो जाता है तो दोनों ज़हान में नेक बदला मिलता है, बख़िलाफ़ काफ़िर के कि बिलकुल घाटे में रह गया।

5. यही हाल दुनिया का है कि आज हरी-भरी नज़र आती है फिर इसका नाम व निशान भी न रहेगा।

6. यानी नेक आमाल पर जो-जो उम्मीदें बाँधी होती हैं वे आख़िरत में पूरी होंगी और उससे भी ज़्यादा सवाब मिलेगा, बख़िलाफ़ दुनिया के फ़ायदे और सामान के कि उससे खुद दुनिया में उम्मीदें पूरी नहीं होती और आख़िरत में तो गुन्जाइश ही नहीं, (शेष तफ़सीर पृष्ठ 542 पर)

लिए बहुत बुरा बदल है। (50) मैंने उनको न तो आसमान और ज़मीन के पैदा करने के वक़्त बुलाया और न खुद उनके पैदा करने के वक़्त (बुलाया) और मैं ऐसा (अज़िज़) न था कि गुमराह करने वालों को अपना (हाथ व) बाज़ू बनाता।¹ (51) और उस दिन (को याद करो कि) हक़ तअ़ाला फ़रमाएगा कि जिनको तुम हमारा शरीक समझा करते थे, उनको पुकारो। पस वे उनको पुकारेंगे, सो वे उनको जवाब ही न देंगे, और हम उनके दरमियान में एक आड़ कर देंगे। (52) और (उस वक़्त) मुज़िम लोग दोज़ख़ को देखेंगे, फिर यकीन करेंगे कि वे उसमें गिरने वाले हैं, और उससे बचने की कोई राह न पाएँगे। (53) ♦

और हमने इस कुरआन में लोगों के वास्ते हर किस्म के (ज़रूरी) उम्दा मज़मून तरह-तरह से बयान फ़रमाए हैं और (इसपर भी इनकार करने वाला) आदमी झगड़े में सबसे बढ़कर है। (54) और लोगों को, इसके बाद कि उनको हिदायत पहुँच चुकी, ईमान लाने से और अपने परवर्दिगार से (कुफ़्र वग़ैरह की) मफ़िरत माँगने से और कोई चीज़ रोक नहीं रही, इसके अलावा कि (उनको इसका इन्तिज़ार हो) कि अगले लोगों के जैसा मामला उनको भी पेश आए, या यह कि (अल्लाह का) अज़ाब उनके सामने आकर खड़ा हो।² (55) और रसूलों को तो हम सिर्फ़ खुशख़बरी देने वाले और डराने वाले (बनाकर) भेजा करते हैं, और काफ़िर लोग नाहक़ की बातें पकड़-पकड़कर झगड़े निकालते हैं ताकि उसके ज़रिये से हक़ बात को बिचला दें। और उन्होंने मेरी आयतों को और जिस (अज़ाब) से उनको डराया गया था उसको दिल्लगी बना रखा है। (56) और उससे ज़्यादा ज़ालिम कौन होगा जिसको उसके रब की आयतों से नसीहत की जाए, फिर वह उससे मुँह फेर ले और जो कुछ अपने हाथों (गुनाह) समेट रहा है, उस (के नतीजे) को भूल जाए। हमने उस (हक़ बात) के समझने से उनके दिलों पर पर्दे डाल रखे हैं, और (उसके सुनने से) उनके कानों में डाट (दे रखी) है, और (इसी वजह से) अगर आप उसको सही रास्ते की तरफ़ बुलाएँ तो ऐसी हालत में हरगिज़ भी रास्ते पर न आएँ। (57) और आपका रब बड़ा मफ़िरत करने वाला (और बड़ा) रहमत वाला है। अगर उनसे उनके आमाल पर पकड़ करने लगता तो उनपर फ़ौरन ही अज़ाब ला देता, (मगर ऐसा नहीं हुआ) बल्कि उनके वास्ते एक तय वक़्त है, (यानी क़ियामत का दिन) कि उससे इस तरफ़ (यानी पहले) कोई पनाह की जगह नहीं पा सकते।³ (58) और ये बस्तियाँ, (जिनके किस्से मशहूर व मज़कूर हैं) जब उन्होंने (यानी उनके रहने वालों ने) शरारत की तो हमने उनको हलाक कर दिया,⁴ और हमने उनके हलाक होने के लिए वक़्त तय किया था।⁵ (59) ♦

(पृष्ठ 540 का शेष) इसलिए दुनिया से दिलचस्पी या इसपर फ़ख़्र न करना चाहिए बल्कि आख़िरत का एहतिमाम करना चाहिए।

7. कि बिना किया हुआ गुनाह लिख ले, या की हुई नेकी जबकि शतों के साथ की जाए, न लिखे। ख़ुलासा यह कि मुशिरकों के सरदार जिस चीज़ पर फ़ख़्र करते हैं उन्होंने उसका हाल और अन्जाम सुन लिया, और जिन ग़रीबों को हकीर समझते हैं उनके नेक आमाल का कभी ख़त्म न होना मालूम कर लिया, अब भी अक़्त न आए तो गोली मारिए।

8. यानी मेरी पैरवी को छोड़कर अक़ीदे में उनकी पैरवी करते हो, जो कि बिल्कुल शिर्क है।

1. यानी मददगार तो वह दूँडे जो क़ादिर न हो।

2. मतलब यह है कि क्या इसलिए ईमान नहीं लाते कि ऐसी चीज़ें ज़ाहिर हों तब ईमान लाएँगे जैसा कि उनके हाल से ज़ाहिर होता है, और कह भी डालते थे कि ऐसी चीज़ें ज़ाहिर क्यों नहीं होतीं।

3. पस मोहलत इसलिए दी है कि अगर मुसलमान हो जाएँ तो उनकी मफ़िरत कर दूँगा, दूसरे खुद रहमत भी इसका तकाज़ा करती है कि ईमान न लाने पर भी दुनिया में सख़्त अज़ाब से मोहलत दी जाए।

4. पस कुफ़्र का हलाकत का सबब होना साबित हुआ।

5. ऊपर काफ़िरों के सरदारों की इस दरख़्वास्त की बुराई थी कि हमारी तालीम की मज्लिस में ग़रीब मुसलमान न रहने पाएँ। आगे हज़रत मूसा के एक किस्से से इसके बुरा होने को और ज़्यादा वाज़ेह किया है, कि उन्होंने तो अपने से छोटे को बाज़ खास उलूम में उस्ताद बनाने से भी शर्म नहीं फ़रमाई और तुमको इन ग़रीबों के तालीम में शरीक होने से शर्म आती है। और साथ ही इस मकसूद के साथ इस किस्से में आपकी नुबुव्वत पर भी दलालत हो गई जिसकी वजह ज़ाहिर है।

और (वह वक्त याद करो) जबकि मूसा ने अपने खादिम से फरमाया कि मैं (इस सफर में) बराबर चला जाऊँगा, यहाँ तक कि उस मौके पर पहुँच जाऊँ जहाँ दो दरिया आपस में मिले हैं, या (यूँ ही) लम्बे अर्से तक चलता रहूँगा। (60) पस जब (चलते-चलते) दोनों दरियाओं के जमा होने के मौके पर पहुँचे, अपनी मछली को दोनों भूल गए और उस (मछली) ने दरिया में अपनी राह ली और चल दी। (61) फिर जब दोनों (वहाँ से) आगे बढ़ गए (तो मूसा ने) अपने खादिम से फरमाया कि हमारा नाश्ता तो लाओ, हमको तो इस सफर में (यानी आजकी मन्ज़िल में) बड़ी तकलीफ़ पहुँची। (62) (खादिम ने) कहा, कि (लीजिए) देखिए (अजीब बात हुई) जब हम उस पत्थर के करीब ठहरे थे, सो मैं (उस) मछली (के जिक्र करने) को भूल गया और मुझको शैतान ही ने भुला दिया कि मैं उसका जिक्र करता, और (वह किस्सा यह हुआ कि) उस (मछली) ने (ज़िन्दा होकर) दरिया में अजीब तौर पर अपनी राह ली। (63) (मूसा अलैहिस्सलाम ने यह किस्सा सुनकर) फरमाया, यही वह मौका है जिसकी हमको तलाश थी, सो दोनों अपने कदमों के निशान देखते हुए उल्टे लौटे। (64) सो (वहाँ पहुँचकर) उन्होंने हमारे बन्दों में से एक बन्दे (यानी ख़िज़्र अलैहिस्सलाम) को पाया, जिनको हमने अपनी (खास) रहमत (यानी मकबूलियत) दी थी, और हमने उनको अपने पास से (एक खास तरीके का) इल्म सिखाया था। (65) मूसा ने (उनको सलाम किया और) उनसे फरमाया, क्या मैं आपके साथ रह सकता हूँ इस शर्त से कि जो मुफ़ीद इल्म आपको (अल्लाह की तरफ़ से) सिखाया गया है, उसमें से आप मुझको भी सिखला दें। (66) (उन बुजुर्ग ने) जवाब दिया, आप से मेरे साथ (रहकर मेरे कामों पर) सब्र न हो सकेगा। (67) और (भला) ऐसे मामलों पर आप कैसे सब्र करेंगे जो आपकी जानकारी से बाहर हैं। (68) (मूसा ने) फरमाया कि इन्शा-अल्लाह आप मुझको सब्र करने वाला (यानी ज़ब्त करने वाला) पाएँगे, और मैं किसी बात में आपके खिलाफ़े हुक्म न करूँगा। (69) (उन बुजुर्ग ने) फरमाया कि (अच्छा) अगर आप मेरे साथ रहना चाहते हैं तो (इतना ख़याल रहे कि) मुझसे किसी बात के बारे में कुछ पूछना नहीं, जब तक कि उसके बारे में मैं खुद जिक्र (शुरू) न कर दूँ। (70) ♦

फिर दोनों (किसी तरफ़) चले, यहाँ तक कि जब दोनों नाव में सवार हुए तो (उन बुजुर्ग ने) उस नाव में छेद कर दिया। (मूसा ने) फरमाया कि क्या आपने इस नाव में इसलिए छेद किया (होगा) कि इसमें बैठने वालों को डुबो दें। आपने बड़ी भारी (यानी ख़तरे की) बात की। (71) (उन बुजुर्ग ने) कहा, क्या मैंने कहा नहीं था कि आप से मेरे साथ सब्र न हो सकेगा। (72) (मूसा अलैहिस्सलाम ने) फरमाया, (कि मुझको याद न रहा था, सो) आप मेरी भूल (चूक) पर पकड़ न कीजिए और मेरे इस मामले में मुझपर ज़्यादा तंगी न डालिए। (73) फिर दोनों (कशती से उतरकर आगे) चले, यहाँ तक कि जब एक (छोटी उम्र के) लड़के से मिले तो (उन बुजुर्ग ने) उसको मार डाला, (मूसा अलैहिस्सलाम घबराकर) कहने लगे कि आपने एक बेगुनाह जान को मार डाला (और वह भी) किसी जान के बदले के बग़ैर, बेशक आपने (यह तो) बड़ी बेजा हरकत की। (74)

1. इस सफर की वजह यह हुई थी कि एक बार मूसा अलैहिस्सलाम ने बनी इसराईल में बज़्र (तकरीर) फरमाया तो किसी ने पूछा कि इस वक्त आदमियों में सबसे बड़ा आलिम कौन शख्स है? आपने फरमाया, मैं। मतलब यह था कि उन उलूम में जिनको अल्लाह की निकटता हासिल करने में दखल है, मेरे बराबर कोई नहीं। और यह फरमाना सही था क्योंकि आप बड़े मर्तबे के रसूल थे। चूँकि ज़ाहिरन लफ़ज़ आम था इसलिए अल्लाह तआला को मन्ज़ूर हुआ कि आपको कलाम करने और बोलने में एहतियात की तालीम दी जाए। इशार्द हुआ कि दो दरियाओं के संगम में हमारा एक बन्दा तुमसे भी ज़्यादा इल्म रखता है। मतलब यह था कि बाज़ उलूम में वह तुमसे भी ज़्यादा है, अगरचे उन उलूम को अल्लाह से करीब होने में दखल न हो, लेकिन इस बिना पर जवाब में बिला कैद तो अपने को सबसे ज़्यादा जानने वाला न कहना चाहिए था। गरज़ मूसा अलैहिस्सलाम उनसे मिलने के इच्छुक हुए और पूछा कि उन तक पहुँचने की क्या सूरत है? इशार्द हुआ कि एक बेजान मछली अपने साथ लेकर सफ़र करो, जहाँ वह मछली गुम हो जाए वह शख्स वहाँ है। उस वक्त मूसा अलैहिस्सलाम ने यूँसा अलैहिस्सलाम को अपने साथ लिया और यह बात फरमाई।

सोलहवाँ पार: का-ल अलम्

सूर: कट्फ (आयत 75 से 110)

(उन बुजुर्ग ने) फरमाया कि क्या मैंने आपसे नहीं कहा था कि आपसे मेरे साथ सब्र न हो सकेगा? (75) (मूसा ने) फरमाया कि (खैर अब की बार और जाने दीजिए) अगर इस (बार) के बाद आप से किसी मामले के बारे में कुछ पूछूँ तो आप मुझको अपने साथ न रखिए। बेशक आप मेरी तरफ़ से उज़्र (की इन्तिहा) को पहुँच चुके हैं।¹ (76) फिर दोनों (आगे) चले, यहाँ तक कि जब एक गाँव वालों पर गुज़र हुआ तो वहाँ वालों से खाने को माँगा, (कि हम मेहमान हैं) सो उन्होंने उनकी मेहमानी करने से इनकार कर दिया, इतने में उनको वहाँ एक दीवार मिली जो गिरने ही वाली थी, तो (उन बुजुर्ग ने) उसको (हाथ के इशारे से) सीधा कर दिया। (मूसा अलैहिस्सलाम ने) फरमाया कि अगर आप चाहते तो (इस काम) पर कुछ मुआवज़ा ही ले लेते। (77) (उन बुजुर्ग ने) कहा कि यह वक्त हमारे और आपके अलग होने का है। (जैसा कि खुद आपने शर्त रखी थी) मैं उन चीज़ों की हकीकत आपको बतलाए देता हूँ जिनपर आपसे सब्र न हो सका।² (78) वह जो नाव थी, सो कुछ गरीब आदमियों की थी, जो (उसके ज़रिये से) दरिया में मेहनत (मज़दूरी) करते थे, सो मैंने चाहा कि उसमें ऐब डाल दूँ और (वजह उसकी यह थी कि) उन लोगों से आगे की तरफ़ एक (ज़ालिम) बादशाह था, जो हर (अच्छी) नाव को ज़बरदस्ती पकड़ रहा था। (79) और रहा वह लड़का, सो उसके माँ-बाप ईमान वाले थे, सो हमको अन्देशा (यानी तहकीक) हुआ कि यह उन दोनों पर सरकशी और कुफ़्र का असर न डाल दे। (80) पस हमको यह मन्ज़ूर हुआ कि बजाय उसके उनका परवर्दिगार उनको ऐसी औलाद दे जो पाकीज़गी (यानी दीन) में उससे बेहतर हो, और (माँ-बाप के साथ) मुहब्बत करने में उससे बढ़कर हो। (81) और रही दीवार, सो वह दो यतीम लड़कों की थी जो इस शहर में (रहते) हैं, और उस (दीवार) के नीचे उनका कुछ माल दफ़न था, (जो उनके बाप से मीरास में पहुँचा है) और उनका बाप (जो मर गया है वह) एक नेक आदमी था, सो आपके रब ने अपनी मेहरबानी से चाहा कि वे दोनों अपनी जवानी (की उम्र) को पहुँच जाएँ और अपना ख़ज़ाना निकाल लें, आपके रब की रहमत से। और (ये सारे काम मैंने अल्लाह की तरफ़ से हुक्म होने की वजह से किए हैं, इनमें से) कोई काम मैंने अपनी राय से नहीं किया। (लीजिए) यह है हकीकत उन (बातों) की, जिनपर आप से सब्र न हो सका। (82) ♦

और ये लोग आप से जुलकरनैन का हाल पूछते हैं। आप फरमा दीजिए कि मैं उनका ज़िक्र अभी तुम्हारे सामने बयान करता हूँ। (83) हमने उनको धरती पर हुक्मूत दी थी,³ और हमने उनको हर किस्म का (काफी)

1. यानी आपने बहुत दरगुज़र की, अगर अब साथ न रखेंगे तो माज़ूर हैं। अबकी बार भूल का उज़्र न करने से मालूम हुआ कि भूल न हुई थी।

2. अजब नहीं कि इन राजों का बतलाना उस दरख्वास्त का पूरा करना भी हो जो मूसा अलैहिस्सलाम ने इन अल्फ़ाज़ में की थी कि “क्या मैं आपके साथ रह सकता हूँ इस शर्त से कि जो मुफ़ीद इल्म आपको अल्लाह की तरफ़ से सिखलाया गया है उसमें से आप मुझको भी सिखला दें” चाहे नमूने ही के तौर पर सही। और ज़्यादा साथ रहने में ग़ालिबन वह मुनासिब मौके पर खुद ही बतलाते, और हर वाकिए पर बतलाते तो यह इल्म ज़्यादा होता, अगरचे यह मूसा अलैहिस्सलाम के इल्म के बराबर मुफ़ीदे आम न हो, क्योंकि पैरवी के काबिल नहीं। लेकिन इस मायने में ख़ास मुफ़ीद ज़रूर है कि बाज़ हिक्मतें तफ़सीली तौर पर जाहिर होती हैं अगरचे इजमाली अक़ीदा कि हर वाक़िआ हिक्मतों पर मुश्तमिल होता है, कुर्ब (यानी निकटता) के लिए काफी है।

3. बज़ाहिर मालूम होता है कि जुलकरनैन कोई मक़बूल बुजुर्ग बादशाह हैं, चाहे नबी हों या वली हों, या किसी दूसरे नबी के पैरोकार। फिर वली होने की सूत्र में यह गुप्तगू जिसका ज़िक्र आगे आएगा बतौर इल्हाम (शेष तफ़सीर पृष्ठ 548 पर)

सामान दिया था। (84) चुनाँचे वह (पश्चिमी मुल्कों को फ़तह करने के इरादे से) एक राह पर हो लिए। (85) यहाँ तक कि जब सूरज डूबने के मौके पर पहुँचे,¹ तो (वह सूरज) उनको एक काले रंग के पानी में डूबता हुआ दिखाई दिया,² और उसी जगह पर उन्होंने एक कौम देखी। हमने (उनके दिल में बात डाली और) यह कहा कि ऐ जुलकरनैन! चाहे सज़ा दो और चाहे इनके बारे में नरमी का मामला अपनाओ। (86) (जुलकरनैन ने) अर्ज़ किया कि (बहुत अच्छा, पहले ईमान ही की दावत दूँगा) लेकिन जो ज़ालिम रहेगा उसको तो हम लोग सज़ा देंगे, फिर वह अपने (हकीमी) मालिक के पास पहुँचाया जाएगा, फिर वह उसको (दोज़ख़ की) सख़्त सज़ा देगा। (87) और जो शख्स ईमान ले आएगा और नेक अमल करेगा, तो उसके लिए (आख़िरत में भी) बदले में भलाई मिलेगी, और हम (दुनिया में भी) अपने बताव में उसको आसान (और नरम) बात कहेंगे। (88) फिर एक (दूसरी) राह पर हो लिए। (89) यहाँ तक कि (जब दूरी तय करके) सूरज निकलने के मौके “यानी जगह” पर पहुँचे³ तो सूरज को एक ऐसी कौम पर निकलते देखा,⁴ जिनके लिए हमने सूरज के ऊपर कोई आड़ नहीं रखी।⁵ (90) (यह किस्सा) इसी तरह (है) और जुलकरनैन के पास जो कुछ (सामान वगैरह) था, हमको उस की पूरी ख़बर है। (91) फिर (पूरब व पश्चिम फ़तह करके) एक और राह पर हो लिए। (92) यहाँ तक कि जब दो पहाड़ों के दरमियान पहुँचे तो उन (पहाड़ों) से उस तरफ़ एक कौम को देखा, जो कोई बात समझने के करीब भी नहीं पहुँचते।⁶ (93) उन्होंने (जुलकरनैन से) अर्ज़ किया, ऐ जुलकरनैन! याजूज व माजूज (की कौम जो इस घाटी के उस तरफ़ रहते हैं, हमारी) इस धरती “यानी इस इलाक़े” पर (कभी-कभी) बड़ा फ़साद मचाते हैं, सो क्या हम लोग आपके लिए कुछ चन्दा जमा कर दें, इस शर्त पर कि आप हमारे और उनके दरमियान कोई रोक बना दें। (कि वे फिर आने न पाएँ)। (94) (जुलकरनैन ने) जवाब दिया, कि जिस (माल) में मेरे रब ने मुझको इख़्तियार दिया है, वह बहुत कुछ है, सो (माल की मुझको ज़रूरत नहीं, हाँ) कुव्वत (यानी हाथ-पाँव) से मेरी मदद करो (तो) मैं तुम्हारे और उनके दरमियान में ख़ूब मज़बूत दीवार बना दूँ। (95) (अच्छा तो) तुम लोग मेरे पास लोहे की चादरें लाओ, यहाँ तक कि जब (रद्दे मिलाते-मिलाते) उनके “यानी पहाड़ों के” दोनों सिरों के बीच (के ख़ाली हिस्से) को बराबर कर दिया तो हुक्म दिया कि धौको, (धौकना शुरू हो गया) यहाँ तक कि जब उसको (लाल) अंगारा कर दिया तो उस वक़्त हुक्म दिया कि अब मेरे पास पिघला हुआ ताँबा लाओ (जो पहले से तैयार करा लिया होगा) कि इसपर डाल दूँ। (96) सो न तो वे लोग (यानी याजूज-माजूज) उसपर चढ़ सकते थे और (बहुत ज़्यादा मज़बूत होने की वजह से) न उसमें नक़ब दे सकते थे। (97) (जुलकरनैन ने) कहा कि यह (दीवार की तैयारी) मेरे रब की एक रहमत है। फिर

(पृष्ठ 546 का शेष) (यानी अल्लाह की तरफ़ से बात दिल में डालने से) हुई हो या किसी नबी के ज़रिये से, और शायद जुलकरनैन उनका लक़ब इसलिए हुआ हो कि उन्होंने ज़मीन की दोनों जानिब (यानी पूरब व पश्चिम) पर कब्ज़ा हासिल कर लिया था इसलिए जुलकरनैन लक़ब हो गया।

1. यानी पश्चिम की दिशा में आबादी की इन्तिहा पर।
2. मुराद इससे ग़ालिबन समुद्र है, कि उसका रंग अक्सर जगह काला है। और समुद्र में अगरचे हकीकत में गुरुब नहीं होता लेकिन जहाँ समुद्र से आगे निगाह न जाती हो तो देखने में समुद्र ही में गुरुब होता हुआ मालूम होता है।
3. यानी पूरब की दिशा में आबादी की इन्तिहा पर।
4. यानी वहाँ एक ऐसी कौम आबाद थी।
5. बज़ाहिर यह मतलब मालूम होता है कि वे लोग मकान वगैरह बनाना न जानते थे कि सूरज की गर्मी और धूप से पनाह ले सकें।
6. यानी बोली अलग होने की वजह से तो बात नहीं समझते और जंगली और कम-समझ होने की वजह से समझने के लगभग भी नहीं पहुँचते, वरना समझदार आदमी इशारों और हालात से कुछ करीब-करीब समझ लेता है।

जिस वक्त मेरे रब का वायदा आएगा, (यानी इसके फना करने का वक्त आएगा) तो इसको ढाकर (ज़मीन के) बराबर कर देगा। और मेरे परवर्दिगार का (हर) वायदा सच्चा है। (98) और हम उस दिन उनकी यह हालत करेंगे कि एक में एक गड़-मड़ हो जाएँगे,¹ और सूर फुँका जाएगा, फिर हम सबको (एक-एक करके) जमा कर लेंगे। (99) और दोज़ख़ को उस दिन काफ़िरों के सामने पेश कर देंगे। (100) जिनकी आँखों पर (दुनिया में) हमारी याद से पर्दा पड़ा हुआ था और वे सुन भी न सकते थे? (101) ♦

सो क्या फिर भी इन काफ़िरों का ख़्याल है कि मुझको छोड़कर मेरे बन्दों को अपना करता-धरता (यानी माबूद और हाजत पूरी करने वाला) करार दें। हमने (तो) काफ़िरों की दावत के लिए दोज़ख़ को तैयार कर रखा है? (102) आप (उनसे) कहिए कि क्या हम तुमको ऐसे लोग बताएँ जो आमाal के एतिबार से बिल्कुल घाटे में हैं। (103) ये वे लोग हैं जिनकी दुनिया में की-कराई मेहनत सब गई गुज़री हुई और वे (जहालत की वजह से) इस ख़्याल में हैं कि वे अच्छा काम कर रहे हैं। (104) ये वे लोग हैं जो अपने रब की आयतों (यानी अल्लाह तआला की किताबों) का और उससे (क़ियामत में) मिलने का इनकार कर रहे हैं। सो (इसलिए) उनके सारे काम ग़ारत हो गए, तो क़ियामत के दिन हम उन (के नेक आमाal) का ज़रा भी वज़न कायम न करेंगे। (105) (बल्कि) उनकी सज़ा वही होगी यानी दोज़ख़, इस वजह से कि उन्होंने कुफ़्र किया था, और (यह कि) मेरी आयतों और पैग़म्बरों का मज़ाक़ बनाया था। (106) बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक काम किए, उनकी मेहमानी के लिए फिरदौस (यानी जन्नत) के बाग़ होंगे। (107) जिनमें वे हमेशा रहेंगे (न उनको कोई निकालेगा और) न वे वहाँ से कहीं और जाना चाहेंगे। (108) आप (उनसे) कह दीजिए कि अगर मेरे रबकी बातें⁴ लिखने के लिए समुद्र (का पानी) रोशनाई (की जगह) हो तो मेरे रबकी बातें ख़त्म होने से पहले समुद्र ख़त्म हो जाए, (और बातें घेरे में न आएँ) अगरचे उस (समुद्र) जैसा (एक दूसरा समुद्र उसकी) मदद के लिए हम ले आएँ। (109) (और) आप (यूँ भी) कह दीजिए कि मैं तो तुम ही जैसा बशर हूँ, मेरे पास बस यह वह्य आती है कि तुम्हारा माबूद (बरहक़) एक ही माबूद है, सो जो शख्स अपने रब से मिलने की आरजू रखे तो नेक काम करता रहे और अपने रब की इबादत में किसी को शामिल न करे। (110) ♦

1. यानी जब उस दीवार के गिराने का मुक़र्रर वक्त आएगा और याजूज-माजूज का वहाँ से निकलना होगा तो उस दिन हम उनकी यह हालत करेंगे कि एक में एक गड़-मड़ हो जाएँगे। इस वजह से कि बहुत ज़्यादा होंगे और एकदम से निकल पड़ेंगे।
2. यानी हक़ बात को ज़रा भी समझना न चाहते थे।
3. 'दावत' मज़ाक़ उड़ाने के तौर पर फरमाया।
4. यानी वे कलिमात और इबारतें जो अल्लाह तआला की सिफ़तों और कमालात पर दलालत करती हों और उनसे उनकी ताबीर की जाए।

19 सूर: मरियम 44

सूर: मरियम मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 98 आयतें और 6 रुकूअ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

¹काफ़-हा-या-अैन-सॉद। (1) यह तज़िकरा है आपके परवर्दिगार के मेहरबानी फ़रमाने का अपने बन्दे ज़करिया पर। (2) जबकि उन्होंने अपने परवर्दिगार को पोशीदा तौर पर पुकारा। (3) (जिसमें यह) अर्ज़ किया कि ऐ मेरे परवर्दिगार! मेरी हड्डियाँ (बुढ़ापे की वजह से) कमज़ोर हो गई और सर में बालों की सफ़ेदी फैल गई, और (इससे पहले कभी मैं) आपसे माँगने में ऐ मेरे रब मैं नाकाम नहीं रहा हूँ। (4) और मैं अपने बाद (अपने) रिश्तेदारों (की तरफ़) से अन्देशा रखता हूँ और मेरी बीवी बाँझ है, (इस सूरत में) आप मुझको ख़ास अपने पास से एक ऐसा वारिस (यानी बेटा) दे दीजिए। (5) कि वह (मेरे ख़ास उलूम में) मेरा वारिस बने, और (मेरे दादा) याकूब के ख़ानदान का वारिस बने,² और उसको ऐ मेरे रब! (अपना) पसन्दीदा बनाइए।³ (6) ऐ ज़करिया! हम तुमको एक फ़रज़न्द की खुशख़बरी देते हैं, जिसका नाम यस्या होगा कि इससे पहले हमने किसी को उस जैसी सिफ़त वाला न बनाया होगा।⁴ (7) (ज़करिया अलैहिस्सलाम ने) अर्ज़ किया कि ऐ मेरे रब! मेरे औलाद किस तौर पर होगी, हालाँकि मेरी बीवी बाँझ है और (इधर) मैं बुढ़ापे के इन्तिहाई दर्जे को पहुँच चुका हूँ। (8) इरशाद हुआ कि (मौजूदा हालत) यूँ ही (रहेगी, और फिर औलाद होगी। ऐ ज़करिया!) तुम्हारे रब का कौल है कि यह (बात) मुझको आसान है और मैंने तुमको पैदा किया हालाँकि तुम (पैदाइश से पहले) कुछ भी न थे।⁵ (9) (जब ज़करिया अलैहिस्सलाम ने) अर्ज़ किया कि ऐ मेरे रब! मेरे लिए कोई निशानी मुक़र्रर फ़रमा दीजिए, इरशाद हुआ कि तुम्हारी (वह) निशानी यह है कि तुम तीन रात (और तीन दिन तक) आदमियों से बात न कर सकोगे, (हालाँकि तन्दुरुस्त होगे)। (10) पस हुजरे में से अपनी क़ौम के पास निकले और उनको इशारे से फ़रमाया कि तुम लोग सुबह और शाम अल्लाह की पाकी बयान किया करो। (11) ऐ यस्या! किताब को मज़बूत होकर लो,⁶ और हमने उनको (उनके) लड़कपन ही में (दीन की) समझ (12) और ख़ास अपने पास से दिल की नरमी और (अख़्लाक की) पाकीज़गी अता फ़रमाई थी,⁷ और वह बड़े परहेज़गार थे। (13) और अपने माँ-बाप के ख़िदमत-गुज़ार थे, और वह (मख़्लूक के साथ) सरकशी करने वाले (या हक़ तआला की) नाफ़रमानी करने वाले न थे।⁸ (14) और उनको (अल्लाह तआला का) सलाम पहुँचे जिस दिन कि वह पैदा हुए, और जिस दिन कि वह इन्तिकाल करेंगे, और जिस दिन (क़ियामत में) ज़िन्दा होकर उठाए जाएँगे।⁹ (15) ♦

और (ऐ मुहम्मद!) इस किताब में मरियम का भी ज़िक्र कीजिए, जबकि वह अपने घर वालों से अलग

1. इस सूर: का ख़ुलासा तीन मज़मून हैं- अब्बल तौहीद का साबित करना, दूसरे नुबुव्वत का साबित करना, तीसरे आख़िरत के मुताल्लिक बयान।

2. यानी पिछले और मौजूदा उलूम उसको हासिल हों।

3. यानी आल्लिम भी हो और आमिल भी।

4. यानी जिस इल्म व अमल की तुम दुआ करते हो वह तो उस फ़रज़न्द को ज़रूर ही अता करेंगे। और ज़्यादा यह कि कुछ ख़ास सिफ़तें भी इनायत की जाएँगी।

5. जब मअदूम (यानी जो चीज़ मौजूद न हो, नापैद हो) को मौजूद करना आसान है तो एक मौजूद से दूसरा मौजूद पैदा कर देना क्या मुश्किल है। (शेष तफ़सीर पृष्ठ 554 पर)

(होकर) एक ऐसे मकान में जो पूरब की जानिब था (नहाने के लिए) गई। (16) फिर उन (घर वाले) लोगों के सामने उन्होंने पर्दा डाल लिया, पस (इस हालत में) हमने उनके पास अपने फरिश्ते (जिबराईल अलैहिस्सलाम) को भेजा, और वह उनके सामने एक पूरा आदमी बनकर जाहिर हुआ। (17) कहने लगीं कि मैं तुझसे (अपने खुदा-ए-) रहमान की पनाह माँगती हूँ अगर तू (कुछ) खुदा से डरने वाला है (तो यहाँ से हट जाएगा)। (18) फरिश्ते ने कहा कि मैं तुम्हारे रब का भेजा हुआ (फरिश्ता) हूँ ताकि तुमको एक पाकीजा लड़का दूँ। (19) वह (ताज्जुब से) कहने लगीं कि (भला) मेरे लड़का किस तरह हो जाएगा हालाँकि मुझको किसी इनसान ने हाथ तक नहीं लगाया, और न मैं बदकार हूँ। ♦ (20) फरिश्ते ने कहा कि यूँ ही (औलाद हो जाएगी) तुम्हारे रब ने इरशाद फरमाया है कि यह (बात) मुझको आसान है। और (इस तौर पर) इसलिए पैदा करेंगे ताकि हम उस (लड़के) को लोगों के लिए (कुदरत की) एक निशानी बनाएँ, और रहमत (का सबब) बनाएँ, और यह एक तयशुदा बात है (जो जरूर होगी)। (21) फिर उनके पेट में वह (लड़का) रह गया, फिर उस (हमल) को लिए हुए (अपने घर से) किसी दूर जगह में अलग चली गई। (22) फिर पैदाइश के दर्द के मारे खजूर के पेड़ की तरफ आई,² (घबरा कर) कहने लगीं काश! मैं इस (हालत) से पहले ही मर गई होती, और ऐसी नेस्तनाबूद हो जाती कि किसी को याद भी न रहती। (23) फिर जिबराईल ने उनके (उस मकान के) नीचे से उनको पुकारा कि तुम गमजदा मत हो,³ तुम्हारे रब ने तुम्हारे नीचे के हिस्से में एक नहर पैदा कर दी है। (24) और इस खजूर के तने को (पकड़कर) अपनी तरफ को हिलाओ इससे तुमपर तरोताजा खजूरें झड़ेंगी। (25) फिर (उस फल को) खाओ और (वह पानी) पियो, और आँखें ठन्डी करो।⁴ फिर अगर तुम आदमियों में से किसी को भी (एतिराज़ करता) देखो तो कह देना कि मैंने तो अल्लाह के वास्ते रोज़े की मन्नत माँग रखी है, सो आज मैं किसी आदमी से नहीं बोलूँगी।⁵ (26) फिर वह उनको गोद में लिए हुए अपनी क़ौम के पास आई, लोगों ने कहा कि ऐ मरियम! तुमने बड़े ग़ज़ब का काम किया।⁶ (27) ऐ हासून की बहन! तुम्हारे बाप कोई बुरे आदमी न थे और न तुम्हारी माँ बदकार थीं। (28) पस मरियम ने उस (बच्चे) की तरफ इशारा कर दिया। वे लोग कहने लगे कि भला हम ऐसे शख्स से क्योंकर बातें करें जो अभी गोद में बच्चा ही है। (29) वह (बच्चा खुद ही) बोल उठा कि मैं अल्लाह का (खास) बन्दा हूँ, उसने मुझको किताब (यानी इन्जील) दी,⁷ और उसने मुझको नबी बनाया। (यानी बना देगा)। (30) और मुझको बरकत वाला बनाया,⁸ मैं जहाँ कहीं भी हूँ। और उसने मुझको नमाज़ और ज़कात का हुक्म दिया जब तक मैं (दुनिया में) ज़िन्दा रहूँ। (31) और मुझको मेरी माँ का

(पृष्ठ 552 का शेष) यह सब इरशाद उम्मीद को कुव्वत देने और मज़बूत करने के लिए था न कि शुब्हे को ख़त्म करने के लिए, क्योंकि ज़करिया अलैहिस्सलाम को कोई शुब्हा न था।

6. यानी तौरात कि उस वक़्त वही शरीअत की किताब थी, और इन्जील बाद में नाज़िल हुई।

7. 'हुक्म' में इल्म की तरफ और 'हन्नान' और 'ज़कात' में अख़लाक की तरफ इशारा हो गया।

8. इसमें अल्लाह और बन्दों दोनों के हुक्म की तरफ इशारा हो गया।

9. वह अल्लाह के नज़्दीक ऐसे ख़ूबसूरत और सम्मानित थे कि उनके हक़ में अल्लाह की तरफ से यह इरशाद होता है कि उनको अल्लाह तआला का सलाम पहुँचे जिस दिन कि वह पैदा हुए, और जिस दिन वह इन्तिकाल करेंगे, और जिस दिन 'क़ियामत' में ज़िन्दा होकर उठाए जाएँगे।

1. यानी तुम्हारे मुँह में या गिरेबान में फूँक मार दूँ कि उसके असर से अल्लाह के हुक्म से हमल (गर्भ) रह जाएगा और लड़का पैदा होगा। हज़रत मरियम अलैहिस्सलाम ने पहली बार में अगरचे फरिश्ते को नहीं पहचाना मगर उनकी तकरीर सुनकर अल्लाह वाली होने की वजह से हासिल ख़ास समझ से यकीन आ गया, पस यह शुब्हा नहीं हो सकता कि हज़रत मरियम ने ख़ाली दावा कैसे क़बूल कर लिया।

2. ताकि उसके सहारे बैठें उठें। (शेष तफ़सीर पृष्ठ 556 पर)

खिदमत करने वाला बनाया और उसने मुझको सरकश बदबख्त नहीं बनाया। (32) और मुझपर (अल्लाह की जानिब से) सलाम है, जिस दिन मैं पैदा हुआ, और जिस दिन इन्तिकाल करूँगा, और जिस दिन (कियामत में) ज़िन्दा करके उठाया जाऊँगा। (33) यह हैं ईसा मरियम के बेटे,¹ (मैं बिल्कुल) सच्ची बात (कह रहा हूँ) जिसमें यह (कमी-बेशी करने वाले) लोग झगड़ रहे हैं। (34) अल्लाह तआला की यह शान नहीं है कि वह (किसी को) औलाद बनाए, वह (बिल्कुल) पाक है। वह जब कोई काम करना चाहता है तो बस उसको इरशाद फ़रमा देता है कि हो जा, सो वह हो जाता है। (35) और बेशक अल्लाह मेरा भी रब है और तुम्हारा भी रब है, सो (सिर्फ) उसकी इबादत करो, यही (दीन का) सीधा रास्ता है।² (36) सो (फिर भी) मुख्तलिफ़ गिरोहों ने (इस बारे में) आपस में इख़िलाफ़ डाल लिया,³ सो उन काफ़िरों के लिए एक बड़े दिन के आने से एक बड़ी ख़राबी (होने वाली) है।⁴ (37) जिस दिन ये लोग (हिसाब व बदले के लिए) हमारे पास आएँगे, कैसे कुछ सुनने और देखने वाले हो जाएँगे, लेकिन ये ज़ालिम आज (दुनिया में कैसी) खुली ग़लती में हैं। (38) और आप उन लोगों को हसरत के दिन से डराइए जबकि (जन्नत व दोज़ख़ का आख़िरी) फैसला कर दिया जाएगा, और वे लोग (आज दुनिया में) ग़फलत में हैं, और वे लोग ईमान नहीं लाते। (39) (लेकिन आख़िर एक दिन मरेंगे और) तमाम ज़मीन और ज़मीन के रहने वालों के हम ही वारिस (यानी आख़िर मालिक) रह जाएँगे, और ये सब हमारे पास ही लौटाए जाएँगे। (40) ♦

और इस किताब में इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) का (किस्सा) ज़िक्र कीजिए। वह बड़े रास्ती वाले (और) पैग़म्बर थे। (41) जबकि उन्होंने अपने बाप से (जो कि मुश्रिक था) कहा कि ऐ मेरे बाप! तुम ऐसी चीज़ की क्यों इबादत करते हो जो न कुछ सुने और न कुछ देखे और न तुम्हारे कुछ काम आ सके।⁵ (42) ऐ मेरे बाप! मेरे पास ऐसा इल्म पहुँचा है जो तुम्हारे पास नहीं आया,⁶ तो तुम मेरे कहने पर चलो मैं तुमको सीधा रास्ता बताऊँगा।⁷ (43) ऐ मेरे बाप! तुम शैतान की परस्तिश मत करो, बेशक शैतान रहमान का नाफ़रमानी करने वाला है। (44) ऐ मेरे बाप! मैं अन्देशा करता हूँ कि तुमपर रहमान की तरफ़ से कोई अज़ाब (न) आ पड़े, फिर तुम (अज़ाब में) शैतान के साथी हो जाओ।⁸ (45) (बाप ने) जवाब दिया कि क्या तुम मेरे माबूदों

(पृष्ठ 554 का शेष)

3. हज़रत जिबराईल उनके अदब व एहतियार की वजह से सामने नहीं गए बल्कि जिस मक़ाम पर हज़रत मरियम अलैहिस्सलाम थीं, उससे नीचे के मक़ाम में आड़ में आए।

4. यानी बच्चे के देखने से और खाने-पीने से, और अल्लाह के यहाँ मक़बूल होने की निशानी से खुश रहो।

5. बस तुम इतना जवाब देकर बेफ़िक्र हो जाना, अल्लाह तआला इस मुबारक बच्चे को मोज़िज़े के तौर पर बोलता कर देगा, जिससे तुम्हारे पाकदामन होने की दलील सामने आ जाएगी। गरज़ हर ग़म का इलाज हो गया।

6. यानी 'अल्लाह अपनी पनाह में रखे' बदकारी की।

7. यानी अगरचे आगे चलकर देगा मगर यकीनी होने की वजह से ऐसा ही है कि जैसे दे दी।

8. यानी मुझसे मख़्लूक को दीन का नफ़ा पहुँचेगा।

1. ईसा अलैहिस्सलाम के आयत में ज़िक्र हुए हालात व औसाफ़ के मजमूए से मरियम अलैहिस्सलाम की पाकदामनी और बुजुर्गी साबित हो गई जो मक़सूद था इस ख़िलाफ़े आदत बोलने से। जिसमें सबसे बढ़कर नुबुव्वत की सिफ़त पर दलालत है, क्योंकि नुबुव्वत के साथ नसब की ख़राबी जो कि आला दर्जे का शर्म का सबब है, जमा नहीं हो सकती, और नुबुव्वत का मिलना इस ख़िलाफ़े आदत बोलने से साबित होता है, क्योंकि बेगुनाह से मोज़िज़ों यानी ख़िलाफ़े आदत चीज़ों का जाहिर होना मक़बूलियत की दलील है, और मक़बूल होना झूठा होने के मनाफ़ी है।

2. यानी ख़ालिस खुदा की इबादत करना, या तौहीद इख़्तियार करना दीन का सीधा रास्ता है।

3. यानी तौहीद का इनकार करके तरह-तरह के मजाहिब ईजाद कर लिए।

4. मुराद इससे कियामत का दिन है कि सख़्ती और लम्बा होने के एतिबार से बड़ा होगा।

5. मुराद बुत है। हालाँकि अगर कोई देखता-सुनता कुछ काम आता भी हो मगर उसका वजूद अपनी ज़ात में मुस्तक़िल न हो तब भी इबादत के लायक नहीं, कहाँ यह कि इन सिफ़तों से भी ख़ाली हो, (शेष तफ़सीर पृष्ठ 558 पर)

से फिरे हुए हो ऐ इब्राहीम! अगर तुम बाज़ न आए तो मैं ज़रूर तुमको (पत्थरों से मारकर) संगसार कर दूँगा, और हमेशा-हमेशा के लिए मुझसे अलग रहो। (46) (इब्राहीम ने) कहा मेरा सलाम लो, अब मैं अपने रब से तुम्हारे लिए मग़्फ़रत की दरख़्वास्त करूँगा, बेशक वह मुझपर बहुत मेहरबान है। (47) और मैं तुम लोगों से और जिनकी तुम खुदा को छोड़कर इबादत कर रहे हो उनसे किनारा करता हूँ, और (अलग होकर इत्मीनान से) अपने रबकी इबादत करूँगा, उम्मीद है कि अपने रब की इबादत करके महरूम न रहूँगा।¹ (48) पस जब उन लोगों से और जिनकी वे खुदा को छोड़कर इबादत करते थे उनसे अलग हो गए (तो) हमने उनको इसहाक (बेटा) और याकूब (पोता) अता फरमाया, और हमने (उन दोनों में से) हर एक को नबी बनाया।² (49) और उन सबको हमने अपनी रहमत का हिस्सा दिया और (आगे नस्लों में) हमने उनका नाम नेक और बुलन्द किया। (50) ♦

और इस किताब में मूसा का भी ज़िक्र कीजिए,³ बेशक वह (अल्लाह तआला के) खास किए हुए (बन्दे) थे, और वह रसूल भी थे, नबी भी थे। (51) और हमने उनको तूर (पहाड़) की दाहिनी जानिब से आवाज़ दी, और हमने उनको राज़ की बातें करने के लिए मुक़र्रब बनाया। (52) और हमने उनको अपनी रहमत से उनके भाई हासून को नबी बनाकर अता किया।⁴ (53) और इस किताब में इसमाईल का भी ज़िक्र कीजिए, बेशक वह वायदे के (बड़े) सच्चे थे, और वह रसूल भी थे, नबी भी थे।⁵ (54) और अपने मुताल्लिकीन को नमाज़ और ज़कात का हुक्म करते रहते थे, और वह अपने रब के नज़दीक पसन्दीदा थे। (55) और इस किताब में इदरीस (अलैहिस्सलाम) का भी ज़िक्र कीजिए, बेशक वह बड़े रास्ती वाले नबी थे। (56) और हमने उनको (कमालात में) बुलन्द रुतबे तक पहुँचाया। (57) ये वे लोग हैं⁶ जिनपर अल्लाह तआला ने (खास) इनाम फरमाया है (दूसरे) अम्बिया में से कि आदम की नस्ल से और उन लोगों (की नस्ल) से जिनको हमने नूह के साथ सवार किया था, और इब्राहीम और याकूब की नस्ल से और उन लोगों में से जिनको हमने हिदायत फरमाई और उनको मकबूल बनाया, जब उनके सामने (अल्लाह) रहमान की आयतें पढ़ी जाती थीं तो सज्दा करते हुए और रोते हुए (ज़मीन पर) गिर जाते थे।⁷ □ (58) फिर उनके बाद (बाज़े) ऐसे ना-ख़लफ़ “यानी नालायक और नाफरमान” पैदा हुए जिन्होंने नमाज़ को बरबाद किया और (नफ़्सानी नाजायज़) ख़्वाहिशों की पैरवी की,⁸ सो ये लोग जल्द ही (आख़िरत में) ख़राबी देखेंगे। (59) हाँ मगर जिसने तौबा कर ली और

(पृष्ठ 556 का शेष) वह तो और ज़्यादा इबादत के लायक न होगा।

6. मुराद इससे व़ह है जिसमें ग़लती का शुब्हा हो ही नहीं सकता।

7. और वह तौहीद है।

8. यानी जब इताअत में उसका साथ दोगे तो सज़ा और अन्जाम में भी उसी का साथ होगा।

1. इस गुफ़्तगू के बाद उनसे इस तरह अलग हुए कि मुल्क शाम की तरफ़ हिज़रत करके चले गए।

2. इसमाईल अलैहिस्सलाम का इस जगह ज़िक्र न फरमाना इस वजह से है कि अब्बल तो वह औरों से पहले अता हो चुके थे, बाद वालों के ज़िक्र से पहले वाले का ज़िक्र खुद ही समझ में आ जाता है। दूसरे उनका ज़िक्र मुस्तक़िल तौर पर आगे करीब ही आने वाला है। तीसरे इब्राहीम अलैहिस्सलाम के ज़िक्र से जैसा कि अरब वालों की दिलजोई हुई इसी तरह इसहाक व याकूब अलैहिमस्सलाम के ज़िक्र से अहले किताब की दिलजोई मुनासिब है, और इसी नुक्ते की वजह से इसके साथ ही मूसा अलैहिस्सलाम का ज़िक्र आता है। फिर उसके बाद इसमाईल अलैहिस्सलाम का ज़िक्र आएगा।

3. यानी लोगों को सुनाइए वरना किताब में ज़िक्र करने वाला तो हकीकत में अल्लाह तआला है।

4. यानी उनकी दरख़्वास्त के मुताबिक़ उनको नबी बनाया कि उनकी मदद करें।

5. रसूल वह है कि जिनके पास वह भेजा गया है उनको नई शरीअत पहुँचाए। और नबी वह है जिसपर व़ह आती हो, चाहे नई शरीअत का तब्तीग़ करे या पहली और पुरानी शरीअत की। (शेष तफ़सीर पृष्ठ 560 पर)

ईमान ले आया और नेक काम करने लगा, सो ये लोग जन्नत में जाएँगे और उनका ज़रा नुकसान न किया जाएगा।¹ (60) वे हमेशा रहने के बाग़ जिनका रहमान ने अपने बन्दों से गायबाना वायदा फ़रमाया है, (और) उसकी वायदा की हुई चीज़ को ये लोग ज़रूर पहुँचेंगे। (61) उस (जन्नत) में वे लोग कोई फुज़ूल बात सुनने न पाएँगे सिवाय सलाम के, और उनको उनका खाना सुबह व शाम मिला करेगा। (62) यह जन्नत (जिसका ज़िक्र हुआ) ऐसी है कि हम अपने बन्दों में से उसका मालिक ऐसों को बना देंगे जो कि खुदा से डरने वाले हों। (63) और हम (यानी फ़रिश्ते) बिना आपके रब के हुक्म के वक़्त-वक़्त पर नहीं आ सकते, उसी की (मिल्क) हैं हमारे आगे की सब चीज़ें और हमारे पीछे की सब चीज़ें, और जो चीज़ें उनके दरमियान में हैं, और आपका रब भूलने वाला नहीं।² (64) वह रब है आसमानों और ज़मीन का, और उन सब चीज़ों का जो उन दोनों के दरमियान में हैं, सो (ऐ मुखातब!) तू उसकी इबादत किया कर और उसकी इबादत पर कायम रह, भला तू किसी को उसकी सिफ़तों जैसा जानता है?³ (65) और (मरने के बाद ज़िन्दा होने का इनकारी) इनसान (यूँ) कहता है कि मैं जब मर जाऊँगा तो क्या फिर ज़िन्दा करके (क़ब्र से) निकाला जाऊँगा। (66) ♦

क्या (यह) इनसान इस बात को नहीं समझता कि हम उसको इससे पहले (नापैदी की हालत से) वजूद में ला चुके हैं, और यह (एस वक़्त) कुछ भी न था।⁴ (67) सो कसम है आपके रब की हम उनको (उस वक़्त) जमा करेंगे और शैतानों को भी, फिर उनको दोज़ख़ के गिरदा-गिर्द इस हालत से हाज़िर करेंगे कि घुटनों के बल गिरे होंगे। (68) फिर (उन कुफ़्फ़ार के) हर गिरोह में से उन लोगों को अलग करेंगे जो उनमें से सबसे ज्यादा अल्लाह से सरकशी किया करते थे। (69) फिर हम (खुद) ऐसे लोगों को ख़ूब जानते हैं जो दोज़ख़ में जाने के ज्यादा (यानी प्रथम) हक़दार हैं। (70) और तुममें से कोई भी नहीं जिसका उसपर गुज़र न हो,⁵ यह आपके रब के एतिबार से (ताकीद के तौर पर) लाज़िम है जो (ज़रूर) पूरा होकर रहेगा। (71) फिर हम उन लोगों को नजात दे देंगे जो खुदा से डरते (यानी उससे डरकर ईमान लाते) थे, और ज़ालिमों को उसमें ऐसी हालत में रहने देंगे कि (रंज व गुम के मारे) घुटनों के बल गिर पड़ेंगे। (72) और जब उन (इनकार करने वाले) लोगों के सामने हमारी खुली-खुली आयतें पढ़ी जाती हैं तो ये काफ़िर लोग मुसलमानों से कहते हैं कि दोनों फ़रीकों में से मकान “यानी ठिकाना” किसका ज्यादा अच्छा है, और महफ़िल किसकी अच्छी है। (73) और हमने उनसे पहले बहुत-से (ऐसे-ऐसे) गिरोह हलाक किए हैं जो सामान और देखने में उनसे भी (कहीं) अच्छे थे। (74) आप फ़रमा दीजिए कि जो लोग गुमराही में हैं (यानी तुम) रहमान उनको ढील देता चला जा

(पृष्ठ 558 का शेष) 6. यानी जिनका ज़िक्र सूर: के शुरू से यहाँ तक हुआ, यानी हज़रत ज़करिया से इदरीस अलैहिस्सलाम तक।

7. यानी बावजूद इस मकबूलियत व मख़सूस होने के उन सब मजकूर हज़रात की बन्दगी की यह कैफ़ियत थी।

8. नमाज़ को बरबाद किया। चाहे एतिकाद के तौर पर कि इनकार किया, या अमल के तौर पर कि उसके अदा करने में या ज़रूरी हुक्म व आदाब में कोताही की।

1. यानी हर नेक अमल का बदला मिलेगा।

2. मतलब यह है कि हम पैदाइशी तौर पर या अहक़ाम की वजह से हुक्म के ताबे हैं। अपनी राय से एक जगह से दूसरी जगह में या जिस वक़्त हम कहीं जाना चाहें आ-जा नहीं सकते, लेकिन जब हमारा भेजना मस्तहत होता है तो हक़ तअाला भेज देते हैं। यह एहतियाल नहीं कि शायद किसी मस्तहत के वक़्त में भूल जाते हैं।

3. यानी कोई उसका हम-सिफ़त (उस जैसी सिफ़तों का मालिक) नहीं, तो इबादत के लायक भी कोई नहीं। पस उसी की इबादत करना ज़रूरी हुआ।

4. जब ऐसी हालत से ज़िन्दगी तक लाना आसान है तो दोबारा ज़िन्दगी देना तो और भी ज्यादा आसान है।

5. उसपर से गुज़रना किसी का दाख़िल होने के लिए और किसी का उसको पार करने के लिए होगा। जहन्नम का वजूद ऐसा यकीनी है कि उसका मुआयना हर मोमिन व हर काफ़िर को कराया जाएगा, अगरचे मुआयने की सूरत (शेष तफ़सीर पृष्ठ 562 पर)

रहा है,¹ यहाँ तक कि जिस चीज़ का उनसे वायदा किया गया है उसको देख लेंगे, चाहे (दुनिया में) अज़ाब को चाहे (दूसरी दुनिया में) कियामत को, सो (उस वक़्त) उनको मालूम हो जाएगा कि बुरा ठिकाना किसका है, और कमज़ोर मददगार किसके हैं? (75) और अल्लाह तआला हिदायत वालों को (दुनिया में तो) हिदायत बढ़ाता है और (आखिरत में ज़ाहिर होगा कि) जो नेक काम हमेशा के लिए बाकी रहने वाले हैं, वे तुम्हारे रब के नज़दीक सवाब में भी बेहतर हैं और अन्जाम में भी बेहतर हैं? (76) भला आपने उस शख्स (की हालत) को भी देखा जो हमारी आयतों के साथ कुफ़्र करता है और कहता है कि मुझको (आखिरत में) माल और औलाद मिलेंगे? (77) क्या यह शख्स ग़ैब पर बा-ख़बर हो गया है, या क्या उसने अल्लाह तआला से (इस बात का) कोई अहद ले लिया है। (78) हरगिज़ नहीं, (बिल्कुल ग़लत कहता है, और) हम उसका कहा हुआ भी लिखे लेते हैं, और उसके लिए अज़ाब बढ़ाते चले जाएँगे। (79) और उसकी कही हुई चीज़ों के हम वारिस रह जाएँगे और वह हमारे पास (माल व औलाद से) तन्हा (होकर) आएगा। (80) और उन लोगों ने अल्लाह के अलावा और माबूद तजवीज़ कर रखे हैं ताकि उनके लिए वे (अल्लाह के यहाँ) इज़्ज़त का सबब हों। (81) (ऐसा) हरगिज़ नहीं (होगा, बल्कि) वे तो उनकी इबादत का ही इनकार कर बैठेंगे, और उनके मुख़ालिफ़ हो जाएँगे। (82) ♦

क्या आपको मालूम नहीं कि हमने शैतानों को (आज़माइश के तौर पर) काफ़िरों पर छोड़ रखा है, कि वे उनको (कुफ़्र व गुमराही पर) ख़ूब उभारते रहते हैं। (83) सो आप उनके लिए ज़ल्दी न कीजिए, हम उनकी बातें खुद शुमार कर रहे हैं। (84) (और) जिस दिन मुत्कियों को रहमान (के नेमतों के घर) की तरफ़ मेहमान बनाकर जमा करेंगे। (85) और मुजरिमों को दोज़ख़ की तरफ़ (प्यासा) हॉकेंगे। (86) (वहाँ) कोई सिफ़ारिश का इख़्तियार न रखेगा, मगर हाँ जिसने रहमान के पास से इजाज़त ली है? (87) और ये (काफ़िर) लोग कहते हैं कि अल्लाह ने औलाद (भी) इख़्तियार कर रखी है। (88) (अल्लाह तआला फ़रमाते हैं कि) तुमने (जो) यह (बात कही तो) ऐसी सख़्त हरकत की है (89) कि उसके सबब कुछ बर्द नहीं कि आसमान फट पड़े और ज़मीन के टुकड़े उड़ जाएँ और पहाड़ टूटकर गिर पड़ें। (90) इस बात से कि ये लोग (खुदा-ए-) रहमान की तरफ़ औलाद की निस्वत करते हैं (91) हालाँकि (खुदा-ए-) रहमान की शान नहीं कि वह औलाद इख़्तियार करे। (92) (क्योंकि) जितने भी कुछ आसमानों और ज़मीन में हैं सब (खुदा-ए-) रहमान के सामने गुलाम होकर हाज़िर होते हैं। (93) (और) उसने सबको (अपनी कुदरत में) घेर रखा है, और सबको शुमार

(पृष्ठ 560 का शेष) और गरज़ अलग-अलग होंगी। काफ़िरों को दाख़िल होने और हमेशा का अज़ाब देने के वास्ते, और मोमिनों को पुलसिरात को पार करने के तौर पर और शुक्र व खुशी की ज़्यादती के वास्ते। और बाज़े गुनाहगारों को सीमित सज़ा के लिए जो कि उनको पाक-साफ़ करना है।

1. यानी इस दुनियावी नेमत में यह हिक्मत है कि मोहलत देकर हुज़्जत को पूरा कर दे, और यह मोहलत चन्द दिन की है।
2. यानी दुनिया में जो अपने मज्लिस वालों को अपना मददगार समझते हैं और फ़ख़्र करते हैं वहाँ मालूम होगा कि उनमें कितना ज़ोर है, क्योंकि वहाँ तो ज़ोर में इतनी कमी होगी कि बिल्कुल ज़ोर न होगा, इसी को 'अज़्ज़ाफ़' फ़रमाया।
3. पस उनको सवाब में बड़ी-बड़ी नेमतें मिलेंगी, जिनमें मकानात और बागात सब कुछ होंगे। और इन आमाal का अन्जाम उन नेमतों का हमेशा रहना है। पस हर एतिबार से मुसलमानों ही की आखिरी हालत बेहतर होगी, और अन्जाम ही का एतिबार है।
4. ख़बाब बिन अरत सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हु लुहार का काम करते थे। उनका कुछ कर्ज़ आस बिन वाइल के ज़िम्मे रह गया था। उन्होंने एक बार तकाज़ा किया तो आस ने जवाब दिया कि जब तक तू मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के साथ कुफ़्र न करेगा तेरे दाम न दूँगा। उन्होंने कहा कि अगर तू मरकर भी ज़िन्दा होगा जब भी कुफ़्र न करूँगा। उसने कहा, तो जब यह बात है कि मैं मरकर फिर ज़िन्दा होने वाला हूँ तो मेरे पास जब ही आना, मेरे पास उस वक़्त भी माल-औलाद सब कुछ होगा, तेरे दाम चुकता कर दूँगा। इसपर यह आयत नाज़िल हुई। (शेष तफ़सीर पृष्ठ 564 पर)

कर रखा है। (94) और कियामत के दिन सब-के-सब उसके पास तन्हा-तन्हा हाज़िर होंगे।¹ (95) बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किए (खुदा-ए-) रहमान उनके लिए मुहब्बत पैदा कर देगा।² (96) सो हमने इस (कुरआन) को आपकी ज़बान (यानी अरबी) में इसलिए आसान किया है कि आप इससे मुत्तकियों को खुशख़बरी सुनाएँ और (साथ ही) इससे झगड़ालू आदमियों को ख़ौफ़ दिलाएँ। (97) और हमने उनसे पहले बहुत-से गिरोहों को (अज़ाब व क़हर से) हलाक कर दिया है, (सो) क्या आप उनमें से किसी को देखते हैं, या उनकी कोई आहिस्ता आवाज़ सुनते हैं? ● (98) ♦

20 सूर: तौ-हा 45

सूर: तौ-हा मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 135 आयतें और 8 रुकूअ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

ता-हा (के मायने तो अल्लाह को मालूम हैं) (1) हमने आप पर कुरआन (मज़ीद) इसलिए नहीं उतारा कि आप तकलीफ़ उठाएँ। (2) बल्कि ऐसे शख्स की नसीहत के लिए (उतारा है) जो (अल्लाह तआला से) डरता हो। (3) यह उस (ज़ात) की तरफ़ से नाज़िल किया गया है जिसने ज़मीन को और बुलन्द आसमानों को पैदा किया है। (4) (और वह) बड़ी रहमत वाला (है) अर्श पर⁴ कायम है। (5) उसी की (मिल्क) हैं जो चीज़ें आसमानों में हैं और जो चीज़ें ज़मीन में हैं, और जो चीज़ें इन दोनों के दरमियान में हैं, और जो चीज़ें तहतुस्सरा में हैं।⁵ (6) और (उसके इल्म की यह शान है कि) अगर तुम पुकार कर बात कहो तो वह चुपके से कही हुई बात को और उससे भी ज़्यादा छुपी बात को जानता है।⁶ (7) (वह) अल्लाह ऐसा है कि उसके सिवा कोई माबूद नहीं, उसके अच्छे-अच्छे नाम हैं।⁷ (8) और क्या आपको मूसा (के किस्से) की ख़बर (भी) पहुँची है। (9) जबकि उन्होंने (मद्यन से आते हुए रात को) एक आग देखी, सो अपने घर वालों से फ़रमाया कि तुम रुके रहो मैंने आग देखी है, शायद उसमें से तुम्हारे पास कोई शोला लाऊँ या (वहाँ) आग के पास रास्ते का पता मुझको मिल जाए। (10) सो वह जब उस (आग) के पास पहुँचे तो (उनको अल्लाह की तरफ़ से) आवाज़ दी गई, कि ऐ मूसा! (11) मैं ही तुम्हारा रब हूँ, पस तुम अपनी जूतियाँ उतार डालो, (क्योंकि) तुम एक पाक मैदान यानी 'तुवा' में हो। (यह उसका नाम है)। (12) और मैंने तुमको (नबी बनाने के लिए) चुन लिया है, सो (इस वक़्त) जो कुछ वह्य की जा रही है उसको सुन लो। (13) (वह यह है कि) मैं ही अल्लाह हूँ, मेरे सिवा कोई माबूद नहीं, तुम मेरी ही इबादत किया करो और मेरी ही याद की नमाज़ पढ़ा

(पृष्ठ 562 का शेष) 5. वे अम्बिया और नेक लोग हैं। और इजाज़त ख़ास है मोमिनों के साथ। पस काफ़िर लोग शफ़ाअत का महल (यानी उसके जारी होने की जगह) न हुए।

1. यानी हर शख्स खुदा ही का मोहताज और उसके हुक्म के ताबे होगा।

2. इसका यह मतलब नहीं कि उससे किसी को बुग़्ज न होगा, बल्कि मकसूद यह है कि आम मख़्लूक जिनका न कोई नफ़ा उस मोमिन से वाबस्ता है न कोई नुक़सान वे उससे मुहब्बत करेंगे।

3. यह इशारा है कि बिलकुल नाम व निशान मिट जाने और नेस्तनाबूद होने से।

4. यानी बादशाही के तख़्त पर। अर्श रिवायतों और आयतों के मुताबिक़ एक बड़ा जिस्म है। आसमानों और कुर्सी के अलावा उन सबके ऊपर एक गुंबद की तरह से है और उन सबसे बड़ा है। उसके पाए भी हैं और फ़रिश्ते उसको उठाए हुए हैं, और वह अपनी जगह ठहरा हुआ है, कभी उसको हरकत भी हो जाती है।

5. यानी ज़मीन के अन्दर जो तर मिट्टी है उसको 'सरा' कहते हैं। 'जो चीज़ उसके नीचे है' से मुराद (शेष तफ़सीर पृष्ठ 566 पर)

करो। (14) (दूसरी बात यह सुनो कि) बेशक कियामत आने वाली है, मैं उसको (तमाम मख्लूक से) छुपाकर रखना चाहता हूँ ताकि हर शख्स को उसके किए का बदला मिल जाए। (15) सो तुमको उस (कियामत) से ऐसा शख्स बाज़ न रखने पाए जो उसपर ईमान नहीं रखता, और अपनी (नफ़्सानी) ख्वाहिशों पर चलता है, कहीं तुम (इस बेफ़िक्री की वजह से) तबाह न हो जाओ।¹ (16) और यह तुम्हारे दाहिने हाथ में क्या है ऐ मूसा! (17) उन्होंने कहा कि यह मेरी लाठी है, मैं (कभी) इस पर सहारा लगाता हूँ और (कभी) अपनी बकरियों पर पत्ते झाड़ता हूँ और इस में मेरे और भी काम (निकलते) हैं। (18) इरशाद हुआ कि इसको (ज़मीन पर) डाल दो ऐ मूसा! (19) सो उन्होंने उसको डाल दिया, यकायक वह (खुदा की कुदरत से) एक दौड़ता हुआ साँप (बन गया)। (20) इरशाद हुआ कि उसको पकड़ लो और डरो नहीं,² हम अभी उसको उसकी पहली हालत पर कर देंगे।³ (21) और तुम अपना (दाहिना) हाथ अपनी (बाईं) बगल में दे लो, (फिर निकालो) वह बिना किसी ऐब (यानी बिना किसी सफ़ेद कोढ़ की बीमारी वगैरह) के बहुत ही रोशन होकर निकलेगा, (कि यह) दूसरी निशानी होगी। (22) ताकि हम तुमको अपनी (कुदरत की) बड़ी निशानियों में से बाज़ (निशानियाँ) दिखलाएँ। (23) (अब ये निशानियाँ लेकर) तुम फिरज़ौन के पास जाओ, वह बहुत हद से निकल गया है।⁴ (24) ♦

अर्ज़ किया कि ऐ मेरे रब! मेरा सीना (यानी हौसला) खोल दीजिए। (25) और मेरा (यह तबलीग़ का) काम आसान फ़रमा दीजिए। (26) और मेरी ज़बान पर से बन्दिश (यानी रुक-रुककर बोलने की हालत) को हटा दीजिए। (27) ताकि लोग मेरी बात समझ सकें। (28) और मेरे वास्ते मेरे कुन्बे में से एक मददगार मुक़र्रर कर दीजिए। (29) यानी हारून को कि मेरे भाई हैं। (30) उनके ज़रिये से मेरी कुव्वत को मज़बूत कर दीजिए। (31) और उनको मेरे (इस तबलीग़ के) काम में शरीक कर दीजिए (32) ताकि हम दोनों (शिक़ और नुक्सों से) कसरत से आपकी पाकी बयान करें (33) और आपका (ख़ूब) कसरत से ज़िक्र करें। (34) बेशक आप हमको ख़ूब देख रहे हैं। (35) इरशाद हुआ कि तुम्हारी (हर) दरख्वास्त मन्ज़ूर की गई ऐ मूसा!⁵ (36) और हम तो एक दफ़ा और भी (इससे पहले बिना दरख्वास्त ही) तुमपर एहसान कर चुके हैं। (37) जबकि हमने तुम्हारी माँ को वह बात इल्हाम “यानी दिल में डालने” से बतलाई जो बात इल्हाम से बतलाने की

(पृष्ठ 564 का शेष) यह है कि ज़मीन की तह में है।

6. यानी जो अभी दिल में है।

7. जो कमालात और खूबियों पर दलालत करते हैं, और यह कुरआन उसी अच्छे-अच्छे नाम वाली और कमालात व खूबियों वाली ज़ात का नाज़िल किया हुआ है, और यकीनी हक़ है।

1. बुनियादी बड़े मसले तीन थे- तौहीद, नुबुव्वत, आख़िरत। तीनों की तालीम दी गई। ‘तुम मेरी ही इबादत किया करो’ में तमाम फुरुअ (यानी इनसे निकलने वाले अहक़ाम) आ गए। और नमाज़ को शर्फ़ की वजह से अलग भी ज़िक्र फ़रमाया।

2. मूसा अलैहिस्सलाम का डर जाना, बाज़ ने कहा कि तबई है जो किसी तरह से शान के अज़ीम होने के मनाफ़ी नहीं, और बाज़ ने कहा है कि जो हादसा मख़्लूक की जानिब से हो उसमें तो न डरना कमाल है, जैसे इब्राहीम अलैहिस्सलाम नमरूद की आग से नहीं डरे, और जो मामला ख़ालिफ़ (यानी अल्लाह पाक) की तरफ़ से हो उसमें डरना ही कमाल है, कि वह हकीक़त में हक़ तआला से डरना है। जैसे हवा के तेज़ होने के वक़्त जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का घबरा जाना हदीसों में आया है। चूँकि इस बदलाव में मख़्लूक का वास्ता न था इसलिए उससे डर गए कि यह कोई अल्लाह का क़हर न हो। और दूसरी आयत में ‘इन्न-क मिनल् आमिनीन’ यानी आप महफूज़ रहने वालों में हैं, फ़रमाकर तसल्ली देना इसी तरफ़ इशारा करता है।

3. यानी यह फिर लाठी बन जाएगी और तुमको कोई नुक़सान न पहुँचेगा।

4. कि खुदाई का दावा करता है। तुम जाकर उसे तौहीद की दावत दो, अगर तुम्हारी नुबुव्वत में शक़ करे तो यही मौजिज़े दिखला दो।

5. जो ‘रब्बिशरह ली सदरी’ से ‘व अशिरवहु फ़ी अमुरी’ तक ज़िक्र किया गया है।

थी। (38) (वह यह) कि उनको (यानी मूसा को जल्लादों के हाथों से बचाने के लिए) एक सन्दूक में रखो, फिर उनको दरिया में डाल दो, फिर उनको (सन्दूक के साथ) दरिया किनारे तक ले आएगा, (आखिरकार) उनको एक शख्स पकड़ लेगा जो (काफिर होने की वजह से) मेरा भी दुश्मन है और उनका भी दुश्मन है।¹ और (ऐ मूसा) मैंने तुम्हारे ऊपर एक मुहब्बत का असर डाल दिया (ताकि जो तुमको देखे प्यार करे) और ताकि तुम मेरी (खास) निगरानी में परवरिश पाओ। (39) (यह किस्सा उस वक्त का है) जबकि तुम्हारी बहन चलती हुई आई फिर कहने लगी, क्या तुम लोगों को ऐसे शख्स का पता दूँ जो इसको (अच्छी तरह) पाले, (यानी रखे) फिर (इस तदबीर से) हमने तुमको तुम्हारी माँ के पास फिर पहुँचा दिया, ताकि उनकी आँखें ठन्डी हों और उनको गुम न रहे। और तुमने (ग़लती से) एक (किबती) शख्स को जान से मार डाला,² फिर हमने तुमको इस गुम से नज़ात दी, और हमने तुमको ख़ूब-ख़ूब मेहनतों में डाला, फिर (मद्यन पहुँचे और) मद्यन वालों में कई साल रहे, फिर एक खास वक्त पर तुम (यहाँ) आए ऐ मूसा! (40) और (यहाँ आने पर) मैंने तुमको अपने लिए चुन लिया। (41) (सो अब) तुम और तुम्हारे भाई दोनों मेरी निशानियाँ (यानी मोजिज़े) लेकर जाओ और मेरी याद (ग़ारी) में सुस्ती मत करना।³ (42) दोनों फिरऔन के पास जाओ, वह बहुत हद निकल चुका है। (43) फिर उससे नरमी के साथ बात करना, शायद वह (दिलचस्पी से) नसीहत कबूल कर ले, या (अल्लाह के अज़ाब से) डर जाए। (44) दोनों ने अर्ज़ किया कि ऐ हमारे रब! हमको यह अन्देशा है कि (कहीं) वह हमपर ज़्यादाती (न) कर बैठे, या यह कि ज़्यादा शरारत (न) करने लगे। (45) इरशाद हुआ कि तुम अन्देशा न करो (क्योंकि) मैं तुम दोनों के साथ हूँ सब सुनता और देखता हूँ। (46) सो तुम उसके पास जाओ और (उससे) कहो कि हम दोनों तेरे परवरिगार के भेजे हुए हैं, (कि हमको नबी बनाकर भेजा है) सो बनी इस्राईल को हमारे साथ जाने दे और उनको तकलीफ़ मत पहुँचा, हम तेरे पास तेरे रब की तरफ़ से (अपनी नुबुव्वत का) निशान (यानी मोजिज़ा भी) लाए हैं, और ऐसे शख्स के लिए सलामती है जो (सीधी) राह पर चले। (47) हमारे पास यह हुक्म पहुँचा है कि (अल्लाह तआला का) अज़ाब उस शख्स पर होगा जो (हक़ को) झुठलाए और (उससे) मुँह मोड़े। (48) वह कहने लगा कि फिर (यह बतलाओ कि) तुम दोनों का रब कौन है? ऐ मूसा! (49) (मूसा ने) कहा कि हमारा (सबका) रब वह है जिसने हर चीज़ को उसके मुनासिब बनावट अता फ़रमाई, फिर रहनुमाई फ़रमाई। (50) (फिरऔन ने कहा) अच्छा तो पहले लोगों का क्या हाल हुआ। (51) (मूसा ने) फ़रमाया कि उन (लोगों) का इल्म मेरे रब के पास (आमाल के) दफ़्तर में (महफूज़) है, मेरा रब न ग़लती करता है और न भूलता है।⁴ (52) वह (रब) ऐसा है जिसने तुम लोगों के लिए ज़मीन को फ़रश (की तरह) बनाया,⁵ और इस (ज़मीन) में तुम्हारे (चलने के) वास्ते रास्ते बनाए और आसमान से पानी बरसाया, फिर हमने उस (पानी) के ज़रिए से (मुख़्तलिफ़) किस्मों के नबातात “यानी पेड़-पौधे, हरियाली और सब्जियाँ” पैदा किए। (53) (और तुमको इजाज़त दी कि) खुद (भी) खाओ और अपने मवेशियों को (भी) चराओ। इन सब चीज़ों में अक्ल वालों के वास्ते (अल्लाह की कुदरत की) निशानियाँ हैं। (54) ♦

हमने तुमको इसी ज़मीन से पैदा किया,⁶ और इसी में हम तुमको (मौत के बाद) ले जाएँगे,⁷ और

1. चाहे फ़िलहाल इस वजह से कि सब बच्चों को क़त्ल करता था, चाहे आइन्दा कि उनका खास तौर पर दुश्मन होगा।
2. और मारकर सज़ा के डर से भी और इन्तिक़ाम के ख़ौफ़ से भी गुम हुआ।
3. उनमें असल दो मोजिज़े हैं- लाठी और चमकता हुआ हाथ। और हर एक में मोजिज़ा होने की अनेक वजुहों हैं।
4. पस उनके आमाल का सही-सही इल्म उसको हासिल है, मगर अज़ाब के लिए वक्त मुक़र्रर कर रखा है। जब वह वक्त आएगा वह अज़ाब उनपर जारी कर दिया जाएगा, इसलिए दुनिया में अज़ाब न होने से यह लाज़िम नहीं आता कि कुफ़्र व झुठलाना अज़ाब का सबब न हो।
5. कि उसपर आराम करते हो। (शेष तफ़्सीर पृष्ठ 570 पर)

(कियामत के दिन) फिर दोबारा इसी से हम तुमको निकालेंगे। (55) और हमने उस (फिरऔन) को अपनी (वे) सब ही निशानियाँ दिखलाई¹ सो (जब भी) वह झुठलाता ही रहा और इनकार ही करता रहा। (56) (और) कहने लगा (ऐ मूसा!) तुम हमारे पास इस वास्ते आए हो-(गे) कि हमको हमारे मुल्क से अपने जादू (के जोर) से निकाल बाहर करो।² (57) सो अब हम भी तुम्हारे मुकाबले में ऐसा ही जादू लाते हैं, तुम हमारे और अपने दरमियान एक वायदा मुकर्रर कर लो जिसको न हम ख़िलाफ़ करें और न तुम (ख़िलाफ़ करो) किसी हमवार मैदान में। (ताकि सब देख लें) (58) (मूसा अलैहिस्सलाम ने) फरमाया, तुम्हारे (मुकाबले के) वायदे का वक़्त तो वह दिन है जिसमें (तुम्हारा) मेला होता है, और (जिसमें) दिन चढ़े लोग जमा हो जाते हैं। (59) गरज़ (यह सुनकर) फिरऔन (दरबार से अपनी जगह) लौट गया, फिर अपने मक्र (यानी जादू) का सामान जमा करना शुरू किया, फिर आया।³ (60) (उस वक़्त) मूसा ने उन (जादूगर) लोगों से फरमाया कि ऐ कमबख़्ती मारो! अल्लाह तआला पर झूठ मत बाँधो,⁴ कभी वह (यानी खुदा तआला) तुमको (किसी किस्म की) सज़ा से बिलकुल नेस्तनाबूद ही कर दे, और जो झूठ बाँधता है वह (आख़िरकार) नाकाम रहता है। (61) पस वे (जादूगर) यह बात सुनकर आपस में अपनी राय में इख़्तिलाफ़ करने लगे,⁵ और खुफिया गुप्तगू करते रहे। (62) (आख़िरकार सब मुत्तफ़िक़ होकर) कहने लगे कि बेशक ये दोनों जादूगर हैं, इनका मतलब यह है कि अपने जादू (के जोर) से तुमको तुम्हारी सरज़मीन से निकाल बाहर करें, और तुम्हारे उम्दा (मज़हबी) तरीके का दफ़्तर ही उठा दें। (63) सो अब तुम मिलकर अपनी तदबीर का इन्तिज़ाम करो और सफ़े बना करके (मुकाबले में) आओ, और आज वही कामयाब है जो ग़ालिब हो। (64) फिर उन्होंने कहा कि ऐ मूसा (अलैहिस्सलाम)! तुम अपनी (लाठी) पहले डालेंगे या हम पहले डालने वाले बनें। (65) आपने फरमाया, नहीं तुम ही पहले डालो,⁶ पस यकायक उनकी रस्सियाँ और लाठियाँ उनकी नज़रबन्दी से उनके (यानी मूसा अलैहिस्सलाम के) ख़याल में ऐसी मालूम होने लगीं जैसे (साँप की तरह चलती) दौड़ती हों। (66) सो मूसा के दिल में थोड़ा-सा ख़ौफ़ हुआ।⁷ (67) हमने कहा कि तुम डरो नहीं तुम ही ग़ालिब रहोगे। (68) और (इसकी सूरत यह है कि) तुम्हारे दाहिने हाथ में जो (लाठी) है उसको डाल दो, इन लोगों ने जो कुछ (साँग) बनाया है यह (लाठी) सबको निगल जाएगी, यह जो कुछ उन्होंने बनाया है जादूगरों का साँग है, और जादूगर कहीं जाए (मोज़िज़े के मुकाबले में कभी) कामयाब नहीं होता।⁸ (69) सो जादूगर सज्दे में गिर गए⁹ (और बुलन्द आवाज़ से) कहा कि हम ईमान ले आए हारून और मूसा के परवर्दिगार पर। (70) (फिरऔन ने) कहा कि इसके बिना

(पृष्ठ 568 का शेष) 6. चुनाँचे आदम अलैहिस्सलाम मिट्टी से बनाए गए। सो उनके वास्ते से सबका दूर का माद्दा मिट्टी हुई।

7. चुनाँचे कोई मुर्दा किसी हालत में हो लेकिन आख़िर को चाहे मुद्दतों के बाद ही सही मगर मिट्टी में ज़रूर मिलेगा।

1. जो मूसा अलैहिस्सलाम को अता हुई थीं।

2. और खुद अ़वाम को फ़रेफ़ता और ताबे बनाकर सरदार बन जाओ।

3. यानी उस मैदान में जहाँ वायदा ठहरा था, आया।

4. कि उसके वजूद या तौहीद का इनकार करने लगे, या उसके ज़ाहिर किए हुए मोज़िज़ों को जादू बतलाने लगे।

5. उन दोनों हज़रात के बारे में।

6. चुनाँचे उन्होंने अपनी रस्सियाँ और लाठियाँ डालीं और नज़रबन्दी कर दी।

7. यानी डर हुआ कि जब देखने में ये रस्सियाँ और लाठियाँ साँप मालूम होती हैं और मेरी लाठी भी साँप बन जाएगी तो देखने वाले दोनों चीज़ों को एक-सा ही समझेंगे। फिर हक़ और बातिल में फ़र्क़ किस तरह करेंगे।

8. इससे हज़रत मूसा की तसल्ली हो गई कि अब ख़ूब फ़र्क़ हो सकता है। चुनाँचे उन्होंने लाठी डाली और वह सबको निगल गई।

9. जबकि उन्होंने जादू से ऊपर का काम देखा और समझ गए कि बेशक यह मोज़िज़ा है।

ही कि मैं तुमको इजाज़त दूँ (यानी मेरी मरज़ी के खिलाफ) तुम इसपर (यानी मूसा पर) ईमान ले आए, वाकई (मालूम होता है कि) वह (जादू में) तुम्हारे भी बड़े हैं, कि उन्होंने तुमको जादू सिखलाया है,¹ सो मैं तुम सबके हाथ-पाँव कटवाता हूँ, एक तरफ का हाथ और एक तरफ का पाँव, और तुम सबको खजूरों के पेड़ पर टँगवाता हूँ, और यह भी तुमको मालूम हुआ जाता है कि हम दोनों में (यानी मुझमें और मूसा के रब में) किसका अज़ाब ज़्यादा सख्त और देरपा है। (71) उन लोगों ने (साफ़) जवाब (दे) दिया कि हम तुझको कभी तरजीह न देंगे उन दलीलों के मुकाबले में जो हमको मिली हैं, और उस ज़ात के मुकाबले में जिसने हमको पैदा किया है, तुझको जो कुछ करना हो (दिल खोलकर) कर डाल। तू सिवाय इसके कि इस दुनियावी ज़िन्दगी में कुछ कर ले और कर ही क्या सकता है। (72) अब तो हम अपने रब पर ईमान ला चुके हैं ताकि हमारे (पिछले) गुनाह (कुफ़्र वग़ैरह) माफ़ कर दें, और तूने जो जादू (के पेश करने) में हमपर ज़ोर डाला (उसको भी माफ़ कर दें) और अल्लाह तआला (तुझसे) लाख दर्जे अच्छे हैं, और ज़्यादा बका वाले हैं। ▲ (73) जो शख्स (बगावत का) मुजरिम होकर अपने रब के पास हाज़िर होगा सो उसके लिए दोज़ख़ (मुक़र्रर) है, उसमें न मरेगा ही और न ज़िन्दा ही रहेगा।² (74) और जो शख्स रब के पास मोमिन होकर हाज़िर होगा, जिसने नेक काम भी किए हों, सो ऐसों के लिए बड़े ऊँचे दर्जे हैं। (75) (यानी) हमेशा-हमेशा रहने के बागात जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, वे उनमें हमेशा-हमेशा को रहेंगे, और जो शख्स (कुफ़्र व गुनाहों से) पाक हो उसका यही इनाम है। (76) ♦

और हमने मूसा के पास वहा भेजी कि हमारे (उन) बन्दों (यानी बनी इस्राईल को मिस्र से) रातों-रात (बाहर) ले जाओ³ फिर उनके लिए दरिया में (लाठी) मारकर सूखा रास्ता बना देना, न तुमको किसी के पीछा करने का अन्देशा होगा और न और किसी किस्म का ख़ौफ़ होगा।⁴ (77) पस फिरऔन अपने लश्क़रों को लेकर उनके पीछे चला,⁵ (जब सब अन्दर आ गए) तो (उस वक़्त चारों तरफ़) दरिया (का पानी सिमट कर) उनपर जैसा मिलने को था, आ मिला।⁶ (78) और फिरऔन ने अपनी कौम को बुरी राह पर डाला और नेक राह उनको न बतलाई।⁷ (79) ऐ बनी इस्राईल! देखो हमने तुमको तुम्हारे (ऐसे बड़े) दुश्मन से नजात दी, और हमने तुमसे (यानी तुम्हारे पैग़म्बर से) तूर पहाड़ की दाहिनी जानिब (आने) का वायदा किया,⁸ और (वादी-ए-तीह में) हमने तुमपर 'मन्न' व 'सलवा' नाज़िल फ़रमाया। (80) (और इजाज़त दी कि) हमने जो अच्छी चीज़ें तुमको दी हैं, उनको खाओ और उस (खाने) में (शरई) हद से मत गुज़रो,⁹ कहीं मेरा ग़ज़ब

1. फिरऔन का यह कहना कि 'उन्होंने तुमको जादू सिखलाया है' अवाम को धोखा देने के लिए था, वरना मूसा अलैहिस्सलाम से उनकी बेताल्लुकी तो वह भी जानता था।

2. न मरना तो ज़ाहिर है, और न जीना यह कि जीने का आराम न होगा।

3. और दूर चले जाओ ताकि फिरऔन के जुल्म और सख़्तियों से उनको नजात हो।

4. क्योंकि पीछा करने वाले कामयाब नहीं होंगे, अगरचे पीछा करेंगे।

5. बनी इस्राईल अल्लाह के वायदे के मुताबिक़ दरिया से पार हो गए, और अभी तक वे रास्ते इसी तरह अपनी हालत पर थे, तो फिरऔनियों ने कुछ आगा-पीछा सोचा नहीं उनके रास्ते पर हो लिए।

6. और सब गुर्क होकर रह गए।

7. बुरी राह होना ज़ाहिर है कि दुनिया का भी नुक़सान हुआ और आख़िरत का भी।

8. तूर पहाड़ की तरफ़ को 'ऐमन' इसलिए फ़रमाया कि वह दिशा उस तरफ़ जाने वाले के दाहिने हाथ पड़ती है। और बाज़ ने यमन से लिया है, बरक़त के मायनों में, यानी मुबारक दिशा। इसकी वजह ज़ाहिर है कि वह वहा की जगह थी और वहा की जगह के मुबारक होने में क्या शुब्ह है, चुनाँचे उसको मुक़द्दस (और पाकीज़ा) भी कहा है। (शेष तफ़सीर पृष्ठ 574 पर)

तुमपर न आ जाए। और जिस शख्स पर मेरा गुज़ब आ पड़ता है वह बिलकुल गया गुज़रा हुआ। (81) और (तथा इसके साथ यह भी कि) मैं ऐसे लोगों के लिए बड़ा बख़्शने वाला भी हूँ जो तौबा कर लें और ईमान ले आएँ और नेक अमल करें, फिर (इसी) राह पर कायम (भी) रहें।¹ (82) और ऐ मूसा! आपको अपनी कौम से आगे जल्दी आने का क्या सबब हुआ? (83) उन्होंने (अपने गुमान के मुवाफ़िक) अर्ज़ किया कि वे लोग यही तो हैं मेरे पीछे (पीछे आ रहे हैं) और मैं आपके पास जल्दी से (इसलिए) चला आया कि आप (ज़्यादा) खुश होंगे। (84) इरशाद हुआ कि तुम्हारी कौम को तो हमने तुम्हारे (चले आने के) बाद (एक बला में) मुब्तला कर दिया, और उनको सामरी ने गुमराह कर दिया। (85) गरज़ मूसा (अलैहिस्सलाम मीयाद पूरी करने के बाद) गुस्से और रंज में भरे हुए अपनी कौम की तरफ़ वापस आए, (और) फ़रमाने लगे कि ऐ मेरी कौम! क्या तुमसे तुम्हारे रब ने एक अच्छा वायदा नहीं किया था, क्या तुमपर मुकर्रर मीयाद से (कुछ) ज़्यादा ज़माना गुज़र गया था, या तुमको यह मन्ज़ूर हुआ कि तुमपर तुम्हारे रब का गुज़ब आ पड़े, इसलिए तुमने मुझसे जो वायदा किया था उसको खिलाफ़ किया। (86) वे कहने लगे कि हमने जो आपसे वायदा किया था उसको अपने इख़्तियार से खिलाफ़ नहीं किया,² और लेकिन (किबती) कौम के ज़ेवर में से हमपर बोझ लद रहा था, सो हमने उसको (सामरी के कहने से आग में) डाल दिया, फिर उसी तरह सामरी ने (भी) डाल दिया। (87) फिर उस (सामरी) ने उन लोगों के लिए एक बछड़ा (बनाकर) ज़ाहिर किया कि वह एक क़ालिब “यानी जिस्म और साँचा” था, जिसमें एक (बेमानी) आवाज़ थी, सो वे (अहमक) लोग (एक-दूसरे से) कहने लगे कि तुम्हारा और मूसा का भी माबूद तो यह है, पस वह (यानी मूसा) तो भूल गए। (88) क्या वे लोग इतना भी नहीं देखते थे कि वह न तो उनकी किसी बात का जवाब दे सकता है और न उनके किसी नुक़सान या नफ़े पर कुदरत रखता है। (89) ❖

और उन लोगों से हाख़ून ने (मूसा अलैहिस्सलाम के लौटने से) पहले भी कहा था कि ऐ मेरी कौम! तुम इस (गौसाला) के सबब (गुमराही में) फँस गए (हो)³ और तुम्हारा (हकीकी) रब रहमान है,⁴ सो तुम मेरी राह पर चलो और मेरा कहना मानो।⁵ (90) उन्होंने जवाब दिया कि हम तो जब तक मूसा हमारे पास वापस (होकर) आएँ इसी (की इबादत) पर (बराबर) जमे (बैठे) रहेंगे। (91) (मूसा ने) कहा कि ऐ हाख़ून! जब तुमने उनको देखा था कि ये (बिलकुल) गुमराह हो गए तो (उस वक़्त) तुमको मेरे पास चले आने से कौन-सी चीज़ रोक हुई थी। (92) सो क्या तुमने मेरे कहने के खिलाफ़ किया। (93) (हाख़ून ने) कहा कि ऐ मेरे माँ-जाय तुम मेरी दाढ़ी मत पकड़ो और न सर (के बाल पकड़ो) मुझे यह अन्देशा हुआ कि तुम यह कहने लगो कि तुमने बनी इस्राईल के बीच फूट डाल दी, और तुमने मेरी बात का पास न किया।⁶ (94) (फिर सामरी की तरफ़ मुतवज्जह हुए) कहा ऐ सामरी! तेरा क्या मामला है?⁷ (95) उसने कहा कि मुझको ऐसी चीज़ नज़र आई

(पृष्ठ 572 का शेष) 9. कि वे शरई तौर पर भी हलाल हैं और तबई तौर पर भी मज़ेदार।

10. जैसे यह कि हराम से हासिल किया जाए, या खाकर गुनाह और नाफ़रमानी की जाए।

1. यानी ईमान और नेक अमल पर हमेशा पाबन्द रहें।

2. यह मायने नहीं कि बिलकुल मजबूर हो गए थे। बल्कि मतलब यह है कि जिस राय को हम शुरू में तबीयत से आज़ाद होकर इख़्तियार करते उसमें सामरी का फ़ैल (काम) हमारे लिए शुद्ध में पड़ने का सबब बन गया, जिससे हमने वह पहली राय इख़्तियार न की बल्कि राय बदल गई, अगरचे उसपर भी अमल इख़्तियार ही से हुआ।

3. यानी इस तरीक़े के सही होने का एहतिमाल ही नहीं, यकीनन गुमराही है।

4. न कि यह गौसाला।

5. यानी मेरे कौल व फ़ैल की पैरवी करो। (शेष तफ़सीर पृष्ठ 576 पर)

थी जो औरों को नज़र न आई थी।¹ फिर मैंने उस (खुदा की तरफ से) भेजी हुई (सवारी) के नक्शे कदम "पैरों के निशान" से एक मुट्ठी (भर मिट्टी) उठा ली थी, सो मैंने वह मिट्टी (इस जिस्म-साँचे के अन्दर) डाल दी, और मेरे जी को यही बात पसन्द आई।² (96) आपने फरमाया तो बस तेरे लिए इस (दुनियावी) ज़िन्दगी में यह (सज़ा) है कि तू यह कहता फिरा करेगा कि मुझको कोई हाथ न लगाना, और (इसके अलावा) तेरे लिए एक और वायदा है जो तुझसे टलने वाला नहीं। (यानी आखिरत में अज़ाब अलग होगा) और तू अपने इस (बातिल) माबूद को जिसपर तू जमा हुआ बैठा था (देख) हम इसको जला देंगे फिर उस (की राख) को दरिया में बिखेर कर बहा देंगे।³ (97) बस तुम्हारा (हकीकी) माबूद तो सिर्फ़ अल्लाह है जिसके सिवा कोई इबादत के लायक नहीं, वह अपने इल्म से तमाम चीज़ों को घेरे हुए है। (98) (जिस तरह हमने मूसा अलैहिस्सलाम का किस्सा बयान किया) इसी तरह हम आपसे और गुज़रे हुए वाकिआत की ख़बरें भी बयान करते रहते हैं, और हमने आपको अपने पास से एक नसीहत-नामा भी दिया है, (यानी कुरआन)। (99) जो लोग इससे मुँह मोड़ेंगे सो वे कियामत के दिन बड़ा भारी (अज़ाब का) बोझ लादे होंगे। (100) (और) वे उस अज़ाब में हमेशा-हमेशा रहेंगे, और यह बोझ कियामत के दिन उनके लिए बुरा (बोझ) होगा। (101) जिस दिन सूर में फूँक मारी जाएगी (जिससे मुर्दे ज़िन्दा हो जाएँगे) और हम उस दिन मुजरिम (यानी काफ़िर) लोगों को (कियामत के मैदान में) इस हालत से जमा करेंगे कि (आँखों से) नीले होंगे। (102) चुपके-चुपके आपस में बातें करते होंगे कि तुम लोग (क़ब्रों में) सिर्फ़ दस दिन रहे होंगे।⁴ (103) जिस (मुद्दत) के बारे में वे बातचीत करेंगे उसको हम ख़ूब जानते हैं (कि वह किस क़द्र है) जबकि उन सबमें का ज़्यादा सही राय वाला यूँ कहता होगा कि नहीं तुम तो (क़ब्र में) एक ही दिन रहे हो। (104) ♦

और लोग आपसे पहाड़ों के बारे में पूछते हैं (कि कियामत में उनका क्या हाल होगा) सो आप फरमा दीजिए कि मेरा रब उनको बिलकुल उड़ा देगा। (105) फिर इस (ज़मीन) को एक हमवार मैदान कर देगा। (106) जिसमें तू (ऐ मुखातब!) न तो नाहमवारी देखेगा और न कोई बुलन्दी देखेगा। (107) उस दिन सब-के-सब (यानी मख़्लूक) बुलाने वाले (यानी सूर फूँकने वाले फ़रिश्ते) के कहने पर हो लेंगे, उसके सामने (किसी का) टेढ़ापन न रहेगा,⁵ और तमाम आवाज़ें (खुदा-ए-) रहमान के सामने (हैबत की वजह से) दब जाएँगी, सो तू (ऐ मुखातब!) सिवाय पाँव की आहट के और कुछ न सुनेगा। (108) उस दिन (किसी को किसी की) सिफ़ारिश नफ़ा न देगी, मगर ऐसे शख्स को कि जिसके वास्ते (खुदा-ए-) रहमान ने इजाज़त दे दी हो, और उस शख्स के वास्ते बोलना पसन्द कर लिया हो।⁶ (109) वह (अल्लाह तआला) उन सबके

(पृष्ठ 574 का शेष)

6. मक़ाम का हासिल यह है कि यहाँ दो चीज़ें हैं- एक यह कि उनका साथ छोड़ देना ज़्यादा फ़ायदेमन्द था, दूसरा यह कि उनके साथ न रहना ज़्यादा नुक़सानदेह था। मूसा अलैहिस्सलाम का ज़ेहन अबल चीज़ की तरफ़ गया और हारून अलैहिस्सलाम का ज़ेहन दूसरी बात की तरफ़ गया।

7. यानी तूने यह हरकत क्यों की।

1. यानी हज़रत जिबराईल अलैहिस्सलाम नज़र आए जो घोड़े पर चढ़े हुए थे। जिस दिन दरिया से पार उतरे हैं मोमिनों की मदद और काफ़िरो को हलाक करने की मस्तहत से आए होंगे।

2. यानी मेरे दिल में खुद-बखुद यह बात पैदा हुई कि इसमें ज़िन्दगी हासिल हो जाने का असर होगा।

3. ताकि उसका नाम व निशान भी न रहे।

4. मतलब यह है कि हम तो यूँ समझे थे कि मरने के बाद फिर ज़िन्दा होना नहीं, यह गुमान तो बिलकुल ग़लत निकला। ज़िन्दा न होना तो दरकिनार यह भी तो न हुआ कि देर ही में ज़िन्दा होते, बल्कि बहुत ही जल्दी हम ज़िन्दा हो गए, कि यह मुद्दत दस दिन के बराबर मालूम होती है। इस मात्रा के बराबर मालूम होने की वजह उस दिन का लम्बा और घबराहत व परेशानी है, कि क़ब्र में ठहरने की मुद्दत इतनी कम मालूम होगी। (शेष तफ़सीर पृष्ठ 578 पर)

अगले-पिछले हालात को जानता है और उसको उनका इल्म इहाता नहीं कर सकता। (110) और (उस दिन) तमाम चेहरे उसी हय्यु व कय्यूँ “यानी अल्लाह” के सामने झुके होंगे।¹ और ऐसा शख्स तो (हर तरह) नाकाम रहेगा जो जुल्म (यानी शिक) लेकर आया होगा। (111) और जिसने नेक काम किए होंगे और वह ईमान भी रखता होगा, सो उसको (पूरा सवाब मिलेगा) न किसी ज़्यादती का अन्देशा होगा और न किसी कमी का। (112) और हमने इसी तरह इसको अरबी कुरआन (करके) नाज़िल किया है, और हमने इसमें तरह-तरह से वर्द “यानी सज़ा की धमकी और तंबीह” बयान की है, ताकि वे (सुनने वाले) लोग डर जाएँ,² यह (कुरआन) उनके लिए किसी क़द्र (तो) समझ पैदा कर दे।³ (113) सो अल्लाह तआला जो हकीकी बादशाह है, बड़ा आलीशान है, और कुरआन (पढ़ने) में इससे पहले कि आप पर उसकी वद्द नाज़िल हो चुके जल्दी न किया कीजिए, और आप यह दुआ कीजिए कि ऐ मेरे रब! मेरा इल्म बढ़ा दीजिए।⁴ (114) और इससे (बहुत ज़माने) पहले हम आदम को एक हुक्म दे चुके थे, सो उनसे ग़फ़लत (और बेएहतियाती) हो गई, हमने (उस हुक्म के एहतिमाम में) उनमें पुख्तगी (और साबित-क़दमी) न पाई। (115) ♦

और (वह वक़्त याद करो) जबकि हमने फ़रिश्तों से इरशाद फ़रमाया कि आदम के सामने (सलाम व ताज़ीम का) सज्दा करो, सो सबने सज्दा किया सिवाय शैतान के, (कि) उसने इनकार किया। (116) फिर हमने (आदम से) कहा कि ऐ आदम! (याद रखो) यह बिला शुब्हा तुम्हारा और तुम्हारी बीवी का (इस वजह से) दुश्मन है (कि तुम्हारे मामले में यह मरदूद हुआ), सो कहीं तुम दोनों को जन्नत से न निकलवा दे,⁵ फिर तुम मुसीबत में पड़ जाओ। (117) यहाँ (जन्नत में) तो तुम्हारे लिए यह (आराम) है कि तुम न भूखे रहोगे और न नंगे होगे। (118) और न यहाँ प्यासे होगे और न धूप में तपोगे। (119) फिर उनको शैतान ने बहकाया, कहने लगा कि ऐ आदम! क्या मैं तुमको हमेशगी (की ख़ासियत) का पेड़ बतलाऊँ,⁶ और ऐसी बादशाही कि जिसमें कभी कमज़ोरी न आए। (120) सो (उसके बहकाने से) दोनों ने उस पेड़ से खा लिया, तो उन दोनों के सतर “यानी जिस्म की छुपाने की जगहें” एक-दूसरे के सामने खुल गए, और (अपना बदन ढाँकने को) दोनों अपने ऊपर जन्नत के (पेड़ों के) पत्ते चिपकाने लगे, और आदम से अपने रब का कुसूर हो गया, सो ग़लती में पड़ गए। (121) फिर (जब उन्होंने माज़िरत की तो) उनको उनके रब ने (ज़्यादा) मकबूल बना लिया, सो उनपर ज़्यादा तवज्जोह फ़रमाई और (हमेशा सीधे) रास्ते पर कायम रखा। (122) अल्लाह ने फ़रमाया कि दोनों के दोनों इस (जन्नत) से उतरो (और दुनिया में) ऐसी हालत से (जाओ) कि एक का दुश्मन एक होगा। फिर अगर तुम्हारे पास मेरी तरफ़ से कोई हिदायत (का ज़रिया यानी रसूल या किताब) पहुँचे तो (तुममें) जो शख्स मेरी (उस) हिदायत की इत्तिबा करेगा तो वह न (दुनिया में) गुमराह होगा और न (आख़िरत

(पृष्ठ 576 का शेष) 5. यानी क़द्र से ज़िन्दा होकर ऐसे न रहेंगे जैसे दुनिया में अम्बिया अलैहिमुस्सलाम के सामने टेढ़े रहते थे, कि तस्दीक न करते थे।

6. मुराद इससे मोमिन है कि सिफ़ारिश करने वालों को उसकी सिफ़ारिश के लिए इजाज़त होगी। और इस बारे में सिफ़ारिश करने वाले का बोलना अल्लाह तआला को पसन्दीदा होगा, और काफ़िरों के लिए किसी को सिफ़ारिश की इजाज़त ही न होगी। पस नफ़ा न होना सिफ़ारिश न होने की वजह से है, इसमें मुँह मोड़ने वाले काफ़िरों को डराना है कि तुम तो शफ़ाअत से भी महरूम रहोगे।

1. यानी सब घमण्ड करने वालों और इनकारियों का घमण्ड व इनकार ख़त्म हो जाएगा।

2. मतलब यह है कि सारे कुरआन के मज़ामीन हमने साफ़-साफ़ बतलाए हैं।

3. यानी अगर पूरा असर न हो तो थोड़ा ही हो, और इसी तरह चन्द बार थोड़ा-थोड़ा जमा होकर काफ़ी मिक़दार (मात्रा) हो जाए, और किसी वक़्त मुसलमान हो जाएँ।

4. इसमें जो इल्म हासिल है उसके याद रहने की, और जो इल्म हासिल नहीं उसके हासिल होने की, और जो हासिल होने वाला नहीं है उसके हासिल न होने को ख़ैर समझने की और सब उलूम में अच्छी समझ की, (शेष तफ़सीर पृष्ठ 580 पर)

में) शकी “यानी बदबख्त और महरूम” होगा। (123) और जो शख्स मेरी (इस) नसीहत से मुँह मोड़ेगा तो उसके लिए तंगी का जीना होगा,¹ और कियामत के दिन हम उसको अन्धा (करके कब्र से) उठाएँगे। (124) वह (ताज्जुब से) कहेगा कि ऐ मेरे रब! आपने मुझको अन्धा (करके) क्यों उठाया, मैं तो (दुनिया में) आँखों वाला था। (125) इरशाद होगा कि ऐसा ही (तुझसे अमल हुआ था, और यह कि) तेरे पास हमारे अहकाम पहुँचे थे फिर तूने उनका कुछ ख्याल न किया और ऐसा ही आज तेरा कुछ ख्याल न किया जाएगा। (126) और इसी तरह (हर) उस शख्स को हम (अमल के मुनासिब) सज़ा देंगे जो (इताअत की) हद से गुज़र जाए और अपने परवर्दिगार की आयतों पर ईमान न लाए, और वाकई आखिरत का अज़ाब है बड़ा सख्त और बड़ा देर तक रहने वाला। (127) क्या उन लोगों को (अब तक) इससे भी हिदायत नहीं हुई कि हम उनसे पहले बहुत-से गिरोहों को हलाक कर चुके हैं, कि उन (में से बाज़) के रहने के मक़ामात में ये लोग भी चलते (फिरते) हैं, इसमें तो समझ वालों के लिए (काफ़ी) दलीलें मौजूद हैं।² (128) ♦

और अगर आपके रब की तरफ़ से एक बात पहले से फ़रमाई हुई न होती और (अज़ाब के लिए) एक मीयाद मुतैयन न होती (कि वह कियामत का दिन है) तो (अज़ाब) लाज़िमी तौर पर होता।³ (129) सो (जब अज़ाब का आना यकीनी है तो) आप उनकी (कुफ़्र भरी) बातों पर सब्र कीजिए और अपने रब की तारीफ़ के साथ (उसकी) तसबीह कीजिए, (इसमें नमाज़ भी आ गई) सूरज निकलने से पहले (जैसे फ़ज़्र की नमाज़) और उसके छुपने से पहले (जैसे ज़ोहर व अस्त्र की नमाज़ें) और रात के वक्तों में (भी) तसबीह किया कीजिए (जैसे मगरिब व इशा की नमाज़ें) और दिन के शुरू व आखिर में, ताकि (आपको जो सवाब मिले) आप (उससे) खुश हों।⁴ (130) और हरगिज़ उन चीज़ों की तरफ़ आप आँख उठाकर न देखिए जिनसे हमने उन (काफ़िरों) के मुख़्तलिफ़ गिरोहों को आजमाइश के लिए फ़ायदा उठाने वाला बना रखा है कि वह (सिर्फ़) दुनियावी ज़िन्दगी की रौनक है,⁵ और आपके रब का अतिया (जो आखिरत में मिलेगा) इससे कहीं बेहतर और देरपा है।⁶ (131) और अपने मुताल्लिकीन को (यानी ख़ानदान वालों को या मोमिनों को) भी नमाज़ का हुक्म करते रहिए और खुद भी इसके पाबन्द रहिए,⁷ हम आपसे (और दूसरों से) रोज़ी (कमवाना) नहीं चाहते, रोज़ी तो आपको हम देंगे,⁸ और बेहतर अन्जाम तो परहेज़गारी ही का है। (132) और वे लोग (दुश्मनी और बैर के तौर पर) यूँ कहते हैं कि यह (रसूल) हमारे पास अपने रब के पास से (अपनी नुबुव्वत की) कोई निशानी क्यों नहीं लाते। (जवाब यह है कि) क्या उनके पास पहली किताबों के नज़ामीन का ज़ाहिर होना नहीं पहुँचा।⁹ (133) और अगर हम उनको इस (कुरआन आने) से पहले (कुफ़्र की सज़ा में) किसी अज़ाब से हलाक कर देते तो ये लोग (उज़्र के तौर पर यूँ) कहते कि ऐ हमारे रब! आपने हमारे पास (दुनिया में) कोई रसूल क्यों नहीं भेजा था, कि हम आपके अहकाम पर चलते इससे पहले कि हम (यहाँ खुद) बेक़द्र हों और दूसरों की निगाह में रुस्वा हों। (134) आप कह दीजिए कि (हम) सब इन्तिज़ार कर रहे हैं, सो (थोड़ा) और इन्तिज़ार कर लो। अब जल्द ही तुमको (भी) मालूम हो जाएगा कि सही रास्ते वाले कौन हैं, और वह कौन है जो (मन्ज़िले) मकसूद तक पहुँचा। (135) ♦

(पृष्ठ 578 का शेष) ये सब दुआएँ दाख़िल हैं। हासिल यह कि याद करने की तदबीरों में से जल्दी करने की तदबीर को छोड़ दीजिए और दुआ की तदबीर को इस्तिज़ार कीजिए।

5. यानी उसके कहने से कोई ऐसा काम मत कर बैठना कि जन्नत से बाहर किए जाओ।

6. कि उसके खाने से हमेशा खुश और आबाद रहो।

1. यानी कियामत से पहले दुनिया और कब्र में। ‘तंगी का जीना’ कब्र में तो ज़ाहिर है कि कब्र काफ़िर पर तंग होगी और उसमें उसपर तरह-तरह से अज़ाब होगा, और दुनिया में तंगी दिल के एतिबार से है, कि हर वक्त दुनिया की हिंस में तरक्की की फ़िक्र में, कमी के अन्देशे में बे-आराम रहता है, अगरचे कोई काफ़िर बेफ़िक्र भी हो लेकिन अक्सर की हालत यही है। (शेष तफ़सीर पृष्ठ 582 पर)

सत्रहवाँ पार: इक़त-र-ब लिन्नासि

21 सूर: अम्बिया 73

सूर: अम्बिया मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 112 आयतें और 7 रुकूअ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

‘उन (इनकार करने वाले) लोगों से उनका हिसाब (का वक्त) नज़दीक आ पहुँचा,² और ये (अभी) ग़फ़लत (ही) में (पड़े हैं और) मुँह मोड़े हुए हैं। (1) उनके पास उनके रब की तरफ़ से जो ताज़ा नसीहत (उनके हाल के मुताबिक़) आती है, ये उसको ऐसे तरीक़े से सुनते हैं कि (उसके साथ) हँसी करते हैं। (2) (और) उनके दिल मुतवज्जह नहीं होते, और ये लोग यानी ज़ालिम (और काफ़िर) लोग (आपस में) चुपके-चुपके सरगोशी करते हैं कि यह (यानी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) महज़ तुम जैसे एक (मामूली) आदमी हैं, तो क्या तुम फिर भी जादू (की बात सुनने को उन) के पास जाओगे, हालाँकि तुम जानते हो। (3) (पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने) फ़रमाया कि मेरा रब हर बात को (चाहे) आसमान में (हो) और (चाहे) ज़मीन में (हो) जानता है,³ और वह ख़ूब सुनने वाला और ख़ूब जानने वाला है। (4) बल्कि (यूँ भी) कहा कि (यह कुरआन) परेशान ख़्यालात हैं, बल्कि उन्होंने (यानी पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने) इसको घड़ लिया है, बल्कि यह तो एक शायर (शख्स) है,⁴ (अगर वाकई यह रसूल हैं) तो इनको चाहिए कि हमारे पास कोई ऐसी (बड़ी) निशानी लाएँ जैसा कि पहले लोग रसूल बनाए गए। (और बड़े-बड़े मोजिज़े ज़ाहिर किए) (5) उनसे पहले कई बस्ती वाले जिनको हमने हलाक किया है, ईमान नहीं लाए, सो क्या ये लोग ईमान ले आएँगे। (6) और हमने आपसे पहले सिर्फ़ आदमियों ही को पैग़म्बर बनाया जिनके पास हम वह्य भेजा करते थे, सो (ऐ इनकारियों!) अगर तुमको (यह बात) मालूम न हो तो अहले किताब से मालूम कर लो। (7) और हमने उन (रसूलों) के लिए ऐसे जुस्से “यानी जिस्म” नहीं बनाए थे जो खाना न खाते हों (यानी फ़रिश्ता न बनाया था) और वे (हज़रात भी दुनिया में) हमेशा रहने वाले नहीं हुए।⁵ (8) फिर हमने जो उनसे वायदा किया था उसको सच्चा किया, यानी उनको और जिन-जिनको (नजात देना) मन्ज़ूर हुआ हमने नजात दी और (इताअत) की हद से गुज़रने वालों को हलाक किया। (9) हम तुम्हारे पास ऐसी किताब भेज चुके हैं कि उसमें

(पृष्ठ 580 का शेष) 2. मुल्क शाम को जाते हुए मक्का वालों के रास्ते में उन कौमों में से बाज़ के ठिकाने आते थे।

3. खुलासा यह कि कुफ़्र तो अज़ाब को चाहता है लेकिन एक रुकावट से देरी हो रही है। पस उनका वह शुब्हा और अज़ाब के न आने से दलील पकड़ना ग़लत है।

4. मतलब यह है कि आप अपनी तवज्जोह माबूदे हक़ीकी की तरफ़ रखिए, उनकी फ़िक्र न कीजिए।

5. इस मना करने से मकसूद औरों को सुनाना है, कि जब गुनाहों से पाक और महफूज़ के लिए यह मनाही है जिनमें एहतिमाल भी नहीं तो जो गुनाहों से महफूज़ नहीं उनको तो इसका एहतिमाम क्योंकि ज़रूरी न होगा। और आजमाइश यह कि कौन एहसान मानता है और कौन नाफरमानी करता है।

6. कलाम का खुलासा यह हुआ कि न उनके मुँह मोड़ने की तरफ़ ध्यान किया जाए न उनके साज़ो-सामान की तरफ़, सबका अन्जाम अज़ाब है।

7. यानी ज़्यादा तवज्जोह के काबिल ये चीज़ें हैं।

8. यानी असली मकसूद कमाना नहीं, बल्कि दीन और बन्दगी हैं। कमाने की उसी हालत में इजाज़त या हुक्म है कि ज़रूरी बन्दगी में वह ख़लल डालने वाला न हो।

9. मतलब यह है कि क्या उनके पास कुरआन नहीं पहुँचा जिसकी पहले से शोहरत थी कि वह नुबुवत पर काफ़ी दलील है।

1. इस सूर: में ये मज़ामीन मिले-जुले हैं- आख़िरत की तहकीक, नुबुवत की तहकीक और तौहीद की (शेष तफ़सीर पृष्ठ 584 पर)

तुम्हारी नसीहत (काफ़ी मौजूद) है, क्या फिर भी तुम नहीं समझते (और नहीं मानते)। (10) ♦

और हमने बहुत-सी बस्तियाँ जहाँ के रहने वाले ज़ालिम (यानी काफ़िर) थे, ग़ारत कर दीं, और उनके बाद दूसरी कौम पैदा कर दी। (11) सो जब उन्होंने हमारा अज़ाब आता देखा तो उस (बस्ती) से भागना शुरू कर दिया। (12) भागो मत और अपने ऐश के सामान की तरफ़ और अपने मकानों की तरफ़ वापस चलो, शायद तुमसे कोई पूछे-पाछे। (13) वे लोग (अज़ाब नाज़िल होने के वक़्त) कहने लगे कि हाय हमारी कमबख़्ती! इसमें कोई शक़ नहीं कि हम लोग ज़ालिम थे। (14) सो उनकी यही (चीख़) पुकार रही यहाँ तक कि हमने उनको ऐसा (नेस्तनाबूद) कर दिया, जिस तरह खेती कट गई हो और आग़ ठन्डी हो गई हो। (15) हमने आसमान और ज़मीन को और जो कुछ उनके दरमियान है उसको इस तौर पर नहीं बनाया कि हम बेफ़ायदा काम करने वाले हों। (16) (और) अगर हमको मशग़ला ही बनाना मन्ज़ूर होता तो हम ख़ास अपने पास की चीज़ को मशग़ला बनाते,⁵ अगर हमको यह करना होता। (17) बल्कि हम हक़ बात को बातिल पर फ़ेंक मारते हैं, सो वह (हक़) उस (बातिल) का भेजा निकाल देता है, (यानी उसको मग़लूब कर देता है) सो वह (मग़लूब होकर) यकायक जाता रहता है,⁶ और तुम्हारे लिए उस बात से बड़ी ख़राबी होगी जो तुम घड़ते हो। (18) और (हक़ तअ़ाला की वह शान है कि) जितने कुछ आसमानों और ज़मीन में हैं सब उसी के हैं, और (उनमें से) जो उसके (यानी अल्लाह तअ़ाला के) नज़दीक (बड़े मक़बूल व मुक़र्रब) हैं, वे उसकी इबादत से शर्म नहीं करते और न ही थकते हैं। (19) (बल्कि) रात और दिन (अल्लाह की) तस्बीह करते हैं (किसी वक़्त) बन्द नहीं करते। (20) क्या (बावजूद इन दलीलों के) उन लोगों ने अल्लाह के सिवा और माबूद बना रखे हैं, (ख़ासकर) ज़मीन (की चीज़ों में) से (जैसे पत्थर या खनिज पदार्थ के बुत) जो किसी को ज़िन्दा करते हैं। (21) ज़मीन (में या) आसमान में अल्लाह तअ़ाला के सिवा और माबूद (जिसका वजूद अपना ज़ाती हो) होता तो दोनों दरहम-बरहम “यानी उलट-पलट” हो जाते,⁸ सो (इन तक़रीरों से साबित हुआ कि) अल्लाह मालिके अर्श उन चीज़ों से पाक है जो ये लोग बयान कर रहे हैं। (22) वह जो कुछ करता है उससे कोई पूछताछ नहीं कर सकता, और औरों से पूछताछ की जा सकती है। (23) क्या उस (खुदा) को छोड़कर उन्होंने और माबूद बना रखे हैं, (उनसे) कहिए कि तुम (इस दावे पर) अपनी दलील पेश करो, यह मेरे साथ वालों की

(पृष्ठ 582 का शेष) तहकीक़। तौहीद और रिसालत की ताईद के लिए बाज़ अम्बिया अलैहिमुस्सलाम के किस्से भी ज़िक्र हुए हैं।

2. यानी कियामत धीरे-धीरे नज़दीक होती जाती है।

3. सो तुम्हारी इन कुफ़िया बातों को भी जानता है और तुमको ख़ूब सज़ा देगा।

4. खुलासा यह कि रसूल नहीं हैं।

5. पस अगर आपकी भी वफ़ात हो जाए तो नुबुव्वत में क्या ख़राबी लाज़िम आई। गरज़ यह कि जैसे पहले रसूल थे वैसे ही आप भी हैं। और ये लोग जिस तरह आपको झुठलाते हैं इसी तरह उन हज़रात को भी उस ज़माने के काफ़िरों ने झुठलाया।

1. ताकि अज़ाब से बच जाएँ।

2. कि क्या गुज़री। मक़सद इससे छेड़ना और छीटा देना है कि न वह सामान रहा न वह मकान रहा न किसी हमदर्द का निशान रहा।

3. ‘बेशक हम लोग ज़ालिम थे’ का इक़रार इसलिए उनको नफ़ा देने वाला न हुआ कि अज़ाब के फ़रिश्तों को देखने के बाद होगा, जैसा कि फिरऔन का ‘आमन्तु’ यानी मैं ईमान लाया कहना डूबने का एहसास होने के वक़्त उसको फ़ायदेमन्द न हुआ।

4. बल्कि इनमें बहुत-सी हिक्मते हैं, जिनमें सबसे बड़ी यह कि तौहीद पर दलालत है।

5. जैसे अपनी सिफ़ाते कमाल के देखने को।

6. यानी तौहीद की दलीलें जो उन बनाई हुई चीज़ों से हासिल होती हैं, शिर्क की पूरी तरह नफ़ी कर देती हैं, जिसकी मुखालिफ़ जानिब (विपरीत दिशा) का एहतिमाल ही नहीं रहता। (शेष तफ़सीर पृष्ठ 586 पर)

किताब (यानी कुरआन) और मुझसे पहले लोगों की किताबें (यानी तौरात व इन्जील व ज़बूर) मौजूद हैं, बल्कि उनमें ज्यादा वही हैं जो हक़ बात का यकीन नहीं करते, सो (इस वजह से) वे मुँह मोड़ रहे हैं। (24) और हमने आपसे पहले कोई ऐसा पैगम्बर नहीं भेजा जिसके पास हमने यह वक़्त न भेजी हो कि मेरे सिवा कोई माबूद (होने के लायक) नहीं, पस मेरी (ही) इबादत किया करो। (25) और ये (मुशिरक) लोग (यूँ) कहते हैं कि (खुदा-ए-) रहमान ने (फ़रिश्तों को) औलाद बना रखा है, वह (अल्लाह तआला इससे) पाक है बल्कि (वे फ़रिश्ते उसके) सम्मानित बन्दे हैं। (26) वे उससे आगे बढ़कर बात नहीं कर सकते, और वे उसी के हुक्म के मुवाफ़िक़ अमल करते हैं। (27) (वे जानते हैं कि) अल्लाह तआला उनके अगले-पिछले हालात को जानता है, और सिवाय उसके जिसके लिए (शफ़ाअत करने की) खुदा तआला की मरज़ी हो और किसी की सिफ़ारिश नहीं कर सकते, और वे सब अल्लाह तआला की हैबत से डरते (रहते) हैं। (28) और उनमें से जो शख्स (मान लो यूँ) कहे कि मैं अलावा खुदा के माबूद हूँ, सो हम उसको जहन्नम की सज़ा देंगे, (और) हम ज़ालिमों को ऐसी ही सज़ा दिया करते हैं।¹ (29) ♦

क्या उन काफ़िरो को यह मालूम नहीं हुआ कि आसमान और ज़मीन (पहले) बन्द थे,² फिर हमने दोनों को (अपनी कुदरत से) खोल दिया,³ और हमने (बारिश के) पानी से हर जानदार चीज़ को बनाया है,⁴ क्या (इन बातों को सुनकर) फिर भी ईमान नहीं लाते। (30) और हमने ज़मीन में इसलिए पहाड़ बनाए कि ज़मीन उन लोगों को लेकर हिलने (न) लगे, और हमने इस (ज़मीन) में खुले-खुले रास्ते बनाए ताकि वे लोग (उनके ज़रिये से) मन्ज़िले (मकसूद) को पहुँच जाएँ। (31) और हमने (अपनी कुदरत से) आसमान को एक छत (की तरह) बनाया जो महफूज़ है,⁵ और ये लोग इस (आसमान के अन्दर) की (मौजूदा) निशानियों से मुँह मोड़े हुए हैं।⁶ (32) और वह ऐसा है कि उसने रात और दिन और सूरज और चाँद बनाए (वे निशानियाँ यही हैं) हर एक एक- (एक) दायरे में तैर रहे हैं।⁷ (33) और हमने आपसे पहले भी किसी बशर के लिए हमेशा रहना तजवीज़ नहीं किया, फिर अगर आपका इन्तिकाल हो जाए तो क्या ये लोग (दुनिया में) हमेशा-हमेशा को रहेंगे। (34) हर जानदार मौत का मज़ा चखेगा, और हम तुमको बुरी-भली (हालतों) से अच्छी तरह आजमाते हैं,⁸ और (फिर इस ज़िन्दगी के ख़त्म पर) तुम सब हमारे पास चले आओगे। (35) और ये काफ़िर लोग जब

(पृष्ठ 584 का शेष) 7. जब उनकी यह हालत है तो आम मख़्लूक तो किस गिनती में है। पस इबादत के लायक वही है। और जब कोई दूसरा ऐसा नहीं है तो फिर उसका शरीक समझना कितनी बेअक्ली है।

8. क्योंकि आदतन दोनों के इरादों और कामों में टकराव होता जिससे फ़साद लाज़िम है, लेकिन चूँकि फ़साद ज़ाहिर नहीं है इसलिए अनेक खुदाओं का वजूद भी नहीं है।

1. यानी खुदा का उनपर पूरा काबू है जैसे और मख़्लूक़ात पर, फिर वे खुदा की औलाद जिसके लिए खुदा होना ज़रूरी है कैसे हो सकते हैं।

2. यानी न आसमान से बारिश होती थी न ज़मीन से कुछ पैदावार, इसी को बन्द होना फ़रमा दिया। चुनौचे जिस ज़माने में बारिश नहीं होती और ज़मीन से कुछ पैदा नहीं होता, अब भी बन्द होते हैं।

3. कि आसमान से बारिश होने लगी और ज़मीन से नबातात (पेड़-पौधे और घास व सब्ज़ा वग़ैरह) उगने लगे।

4. चाहे ख़त्म होने के लिए हो, चाहे बाकी रहने के लिए। वास्ते से हो या बिला वास्ता।

5. यानी गिरने से भी महफूज़ बनाया, टूटने से भी, शैतानों के ख़बरों चुराने से भी और यह महफूज़ रहना लम्बे ज़माने तक रहेगा, हमेशा के लिए ऐसा नहीं है।

6. यानी उनमें ग़ौर व फ़िक्र नहीं करते।

7. फ़लक (यानी आसमान) गोल चीज़ को कहते हैं। चूँकि सूरज चाँद की हरकत दायरों के अन्दर है, इसलिए इनके हरकत करने की जगह को फ़लक फ़रमा दिया, चाहे वह आसमान हो, आसमानों के दरमियान की फ़िज़ा हो या आसमान व ज़मीन के बीच की फ़िज़ा हो, या आसमान की मोटाई हो, इसके बारे में कोई कतई वज़ाहत नहीं। (शेष तफ़सीर पृष्ठ 588 पर)

आपको देखते हैं तो बस आपसे हँसी करने लगते हैं, (और आपस में कहते हैं) कि क्या यही हैं जो तुम्हारे माबूदों का (बुराई से) ज़िक्र किया करते हैं, और (खुद) ये लोग (खुदा-ए-) रहमान के ज़िक्र पर इनकार (किया) करते हैं। (36) इनसान जल्दी ही (के खमीर) का बना हुआ है,¹ हम जल्द ही (वक़्त आने पर) तुमको अपनी (कहर की) निशानियाँ (यानी सज़ायें) दिखाए देते हैं, पस तुम मुझसे जल्दी मत मचाओ। (37) और ये लोग कहते हैं कि यह वायदा किस वक़्त आएगा अगर तुम (अज़ाब के आने की ख़बर में) सच्चे हो। (38) काश! इन काफ़ि़रों को उस वक़्त की ख़बर होती, जबकि ये लोग (उस) आग को न अपने सामने से रोक सकेंगे और न अपने पीछे से, और न उनकी कोई हिमायत करेगा।² (39) बल्कि वह (आग तो) उनको एकदम से आ लेगी, सो उनको बदहवास कर देगी, फिर न उसके हटाने की उनको कुदरत होगी और न उनकी मोहलत दी जाएगी। (40) और आपसे पहले जो पैग़म्बर हो गुज़रे हैं उनके साथ भी (काफ़ि़रों की तरफ़ से) मज़ाक़ और हँसी उड़ाना किया गया था, सो जिन लोगों ने हँसी-मज़ाक़ किया था, उनपर वह (अज़ाब) आ ही पड़ा जिसके साथ वे मज़ाक़-ठट्ठा किया करते थे।³ (41) ♦

(और यह भी उनसे) कह दीजिए कि वह कौन है जो रात और दिन में रहमान (के अज़ाब) से तुम्हारी हिफ़ाज़त करता हो, बल्कि वे लोग अपने रब के ज़िक्र से मुँह फेरने वाले (ही) हैं। (42) क्या उनके पास हमारे सिवा और ऐसे माबूद हैं कि (ज़िक्र हुए अज़ाब से) उनकी हिफ़ाज़त कर लेते हों, वे खुद अपनी हिफ़ाज़त की ताक़त नहीं रखते,⁴ और न हमारे मुकाबले में कोई उनका साथ दे सकता है। (43) बल्कि हमने उनको और उनके बाप-दादाओं को (दुनिया का) ख़ूब सामान दिया, यहाँ तक कि उनपर (उसी हालत में) एक लम्बी मुद्दत गुज़र गई, क्या उनको यह नज़र नहीं आता कि हम (उनकी) ज़मीन को (इस्लामी फ़तूहात के ज़रिये) हर (चार) तरफ़ से (बराबर) घटाते (चले जाते) हैं, सो क्या ये लोग (उम्मीद रखते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और ईमान वालों पर) ग़ालिब आएँगे। (44) आप कह दीजिए कि मैं तो सिर्फ़ वह्य के ज़रिये से तुमको डराता हूँ और (यह) बहरे जिस वक़्त डराए जाते हैं पुकार सुनते ही नहीं। (45) और (उनकी बुलन्द हिम्मती की कैफ़ियत यह है कि) अगर उनको आपके रब के अज़ाब का एक झोंका भी (ज़रा) लग जाए तो (यूँ) कहने लगे कि हाय हमारी कमबख़्ती वाकई हम ख़तावार थे। (46) और (वहाँ) क़ियामत के दिन हम इन्साफ़ की

(पृष्ठ 586 का शेष) 8. मतलब यह है कि ज़िन्दगी इसलिए दे रखी है कि देखें कैसे-कैसे अमल करते हैं।

1. यानी जैसे इसके बुनियादी खमीर और फ़ितरत में जल्दी है, इसी वास्ते ये लोग अज़ाब जल्दी माँगते हैं और उसमें देर होने को अज़ाब के न आने की दलील समझते हैं। लेकिन ऐ काफ़ि़रो! यह तुम्हारी ग़लती है, क्योंकि उसका वक़्त मुतैयन है, सो ज़रा सब्र करो।
2. यानी अगर उस मुसीबत का इल्म होता तो ऐसी बातें न बनाते।
3. पस इससे मालूम हुआ कि कुफ़्र अज़ाब को वाजिब करने वाला है, अगर दुनिया में न आया तो आख़िरत में ज़रूर होगा।
4. जैसे उनको कोई तोड़ने-फोड़ने लगे तो अपनी रक्षा भी नहीं कर सकते।

तराजू खड़ी करेंगे (और सबके आमाल का वज़न करेंगे)¹ सो किसी पर बिलकुल भी जुल्म न होगा, और अगर (किसी का अमल) राई के दाने के बराबर भी होगा तो हम उसको (वहाँ) हाज़िर कर देंगे, और हम हिसाब लेने वाले काफ़ी हैं।² (47) और हमने (आपसे पहले) मूसा और हासून को एक फ़ैसले की और रोशनी की और मुत्तकियों के लिए नसीहत की चीज़ (यानी तौरात) अता फरमाई थी। (48) जो (मुत्तकी) अपने परवर्दिगार से बिन देखे डरते हैं, और वे लोग कियामत से (भी) डरते हैं। (49) और यह (कुरआन भी) बहुत ज़्यादा फायदों वाली नसीहत (की किताब) है, जिसको हमने नाज़िल किया, तो क्या फिर भी तुम इसके इनकारी हो। ♦ (50) ♦

और हमने (उस मूसा अलैहिस्सलाम के ज़माने से) पहले इब्राहीम को उनकी (शान के मुनासिब) अक़ल व दानिश अता फरमाई थी, और हम उनको³ ख़ूब जानते थे।⁴ (51) (उनका वह वक़्त याद करने के काबिल है) जबकि उन्होंने अपने बाप से और अपनी बिरादरी से फरमाया कि ये क्या (वाहियात) मूर्तियाँ हैं जिन (की इबादत) पर तुम जमे बैठे हो।⁵ (52) वे लोग (जवाब में) कहने लगे कि हमने अपने बड़ों को उनकी इबादत करते हुए देखा है। (53) (इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने) कहा कि बेशक तुम और तुम्हारे बाप-दादे (उनको इबादत के लायक समझने में) खुली ग़लती में हो। (54) वे कहने लगे कि क्या तुम (अपने नज़दीक) सच्ची बात (समझकर) हमारे सामने पेश कर रहे हो, या दिल्लगी कर रहे हो। (55) (इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने) फरमाया कि नहीं, (दिल्लगी नहीं) बल्कि तुम्हारा रब्बे (हकीकी जो इबादत के लायक है) वह है जो तमाम आसमानों और ज़मीन का रब है, जिसने उन सबको पैदा (भी) किया और मैं इस (दावे) पर दलील भी रखता हूँ। (56) और खुदा की कसम! मैं तुम्हारे उन बुतों की गत ऐसी बनाऊँगा जब तुम (उनके पास से) पीठ फेर कर चले जाओगे।⁶ (57) तो (उनके चले जाने के बाद) उन्होंने उन (बुतों) को (कुल्हाड़ी वगैरह से) टुकड़े-टुकड़े कर दिया सिवाय उनके एक बड़े (बुत) के, कि शायद वे लोग इब्राहीम की तरफ़ (दरियाफ़्त करने के लिए) रुजू करें।⁷ (58) कहने लगे कि यह हमारे बुतों के साथ किसने किया है, इसमें कोई शक नहीं कि उसने बड़ा ही ग़ज़ब किया। (59) (बाज़ों ने) कहा कि हमने एक नौजवान आदमी को जिसको इब्राहीम करके पुकारा जाता है

1. 'मवाज़ीन' का बहुसंख्या में लाना या तो इस वजह से है कि हर शख्स के लिए अलग मीज़ाने अमल (अमल की तराजू) हो, या चूँकि एक ही तराजू में बहुत-से लोगों के आमाल का वज़न होगा इसलिए वह एक ही अनेक के कायम-मक़ाम होगी।
2. शुरू सूर: से यहाँ तक तौहीद और रिसालत का ज़्यादा और उसके ज़िम्न में उसके ताल्लुक से रसूलों के मुख़ालिफ़ों का आखिरत में उमूमन अज़ाब पाना और बाज़ का दुनिया में भी हलाक होना ज़िक्र हुआ था, आगे बाज़ हज़राते अम्बिया अलैहिमुस्सलाम के किस्से बयान फरमाकर इन्हीं मज़ामीन की ताईद फरमाते हैं। रिसालत की ताईद तो उनके रसूल होने से ज़ाहिर है और तौहीद की ताईद उनके तौहीद की तरफ़ बुलाने वाले होने से, और अज़ाब दिए जाने की ताईद उनकी बाज़ उम्मतों की हलाकत से।
3. यानी उनके इल्मी और अमली कमालात को।
4. यानी वह बड़े कामिल थे, सलाहियत व इस्तेदाद के एतिबार से अक़ल व दानिश दिए जाने से पहले और ज़ाहिर व मौजूदा हालत में अक़ल व दानिश दिए जाने के बाद।
5. यानी ये हरगिज़ इबादत के काबिल नहीं।
6. ताकि उनका अज़िज़ और मजबूर होना सामने आ जाए।
7. बड़ा बुत जो जुस्से में या उन लोगों की नज़रों में इज़्ज़त वाला होने में बड़ा था, उसको छोड़ दिया, जिससे एक किस्म का मज़ाक उड़ाना मकसूद था, कि एक के सही सालिम रहने और दूसरों के टूट जाने से दूसरों को (शेष तफ़सीर पृष्ठ 592 पर)

इन (बुतों) का (बुराई से) तज़क़िरा करते सुना है। (60) (फिर) वे लोग बोले, (जब यह बात है) तो अच्छा उसको सब आदमियों के सामने हाज़िर करो ताकि वे लोग (इस इकरार के) गवाह हो जाएँ। (61) (गरज़ वह सबके सामने आए) उन लोगों ने कहा, क्या हमारे बुतों के साथ तुमने यह हरकत की है ऐ इब्राहीम! (62) उन्होंने (जवाब में) कहा नहीं! बल्कि उनके इस बड़े (गुरु) ने की, सो उन (ही) से पूछ लो (ना) अगर ये बोलते हों। (63) इसपर वे लोग अपने जी में सोचे फिर (आपस में) कहने लगे कि हकीकत में तुम लोग ही नाहक पर हो, (कि जो ऐसा आज़िज़ हो वह क्या माबूद होगा)। (64) फिर (शर्मिन्दगी के मारे) अपने सरों को झुका लिया (और बोले कि) ऐ इब्राहीम! तुमको तो मालूम ही है कि ये (बुत कुछ) बोलते नहीं। (65) (इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने) फ़रमाया, तो क्या तुम खुदा को छोड़कर ऐसी चीज़ों की इबादत करते हो जो तुमको न कुछ नफ़ा पहुँचा सके और न कुछ नुक़सान पहुँचा सके। (66) तुफ़ “यानी लानत व अफ़सोस” है तुमपर (कि बावजूद हक़ सामने आ जाने के बातिल पर जमे हुए हो) और उनपर (भी) जिनको तुम खुदा के सिवा पूजते हो, क्या तुम (इतना भी) नहीं समझते। (67) (आपस में) वे लोग कहने लगे कि इनको (आग में) जला दो, और अपने माबूदों का (इनसे) बदला लो, अगर तुमको (कुछ) करना है। (68) (गरज़ उन्होंने मुत्तफ़िक़ होकर आग में डाल दिया, उस वक़्त) हमने आग को हुक्म दिया कि ऐ आग! तू इब्राहीम के हक़ में ठन्डी और तकलीफ़ न पहुँचाने वाली बन जा। (69) और उन लोगों ने उनके साथ बुराई करना चाहा था, सो हमने उन्हीं लोगों को नाकाम कर दिया। (70) और हमने उनको (यानी इब्राहीम अलैहिस्सलाम को) और (उनके भतीजे) लूत (अलैहिस्सलाम) को ऐसे मुल्क (यानी मुल्क शाम) की तरफ़ भेजकर बचा लिया जिसमें हमने दुनिया जहान वालों के लिए (ख़ैर व) बरक़त रखी है। (71) और (हिज़रत के बाद) हमने उनको इसहाक़ (बेटा) और याक़ूब (पोता) अता किया, और हमने उन सबको (आला दर्जे का) नेक बनाया। (72) और हमने उनको मुक्तादा “यानी पेशवा और रहनुमा” बनाया, कि हमारे हुक्म से (मख़्लूक को) हिदायत किया करते थे, और हमने उनके पास नेक कामों के करने का और (खासकर) नमाज़ की पाबन्दी का और ज़कात अदा करने का हुक्म भेजा, और वे (हज़रात) हमारी इबादत (ख़ूब) किया करते थे। (73) और लूत को हमने हिक्मत और इल्म (जो अम्बिया की शान के मुनासिब होता है) अता फ़रमाया, और हमने उनको उस बस्ती से नजात दी जिसके रहने वाले गन्दे (गन्दे) काम किया करते थे, बेशक वे लोग बड़े बदज़ात बदकार थे। (74) और हमने उसको (यानी लूत को) अपनी रहमत में दाख़िल किया, (क्योंकि) बेशक वह बड़े नेकों में थे। (75) ♦

(पृष्ठ 590 का शेष) वहम व गुमान होता है कि कहीं उसने तो सबकी ख़बर नहीं ली। पस शुरू में तो शक व गुमान है फिर जब वे लोग कौट-छोट करने वाले की तहकीक़ करेंगे और इस बड़े बुत पर अन्देशा भी न करेंगे तो उनकी तरफ़ से इसके आज़िज़ होने का भी एतिराफ़ हो जाएगा, और हुज़्जत भी पूरी हो जाएगी। पस इन्तिहा के तौर पर यह इल्ज़ाम देना और लाजवाब करना है और मक़सूद मुश्तरक़ उनमें से बाज़ के इकरार और बाज़ के इनकार से आज़िज़ होना साबित करना है। गरज़ इस मसलहत से एक को छोड़कर बाकी सबको तोड़ दिया।

1. अगर यह काम करने और बोलने की सूत बातिल है तो उनका आज़िज़ होना तुम्हारे नज़दीक़ भी मुसल्लम हो गया फिर उनके मुताल्लिक़ खुदा होने का एतिकाद रखने की क्या वजह।
2. यानी न जलाने वाली रह कि गर्मी की तकलीफ़ पहुँचे और न बहुत ठंडी हो जा कि ठंडक की तकलीफ़ पहुँचे, बल्कि दरमियानी हवा की तरह बन जा, चुनौचे ऐसा ही हो गया।
3. कि उनका मक़सद हासिल न हुआ बल्कि और उसके उलट यह कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का हक़ पर होना और ज़्यादा साबित हो गया। (शेष तफ़सीर पृष्ठ 594 पर)

और नूह (अलैहिस्सलाम के किस्से का तज़क़िरा कीजिए) जबकि उस (इब्राहीम अलैहिस्सलाम के ज़माने) से (भी) पहले उन्होंने दुआ की, सो हमने उनकी दुआ कबूल की और उनको और उनके पैरोकारों को बड़े भारी ग़म से नज़ात दी।¹ (76) और (नज़ात इस तरह दी कि) हमने ऐसे लोगों से उनका बदला लिया जिन्होंने हमारे हुक्मों को (जो कि नूह अलैहिस्सलाम लाए थे) झूठा बताया था, बेशक वे लोग बहुत बुरे थे, इसलिए उन सबको हमने गर्क कर दिया। (77) और दाऊद और सुलैमान (के किस्से का तज़क़िरा कीजिए) जबकि दोनों किसी खेत के बारे में फैसला करने लगे, जबकि (उस खेत में) कुछ लोगों की बकरियाँ रात के वक़्त (जा घुसीं और) उसको चर गई, और हम उस फैसले को जो लोगों के मुताल्लिक हुआ था, देख रहे थे। (78) सो हमने उस (फैसले) की समझ सुलैमान को दे दी, और (यूँ) हमने दोनों को हिक्मत और इल्म अता फ़रमाया था,² और हमने दाऊद के साथ ताबे कर दिया था पहाड़ों को, कि (उनकी तस्बीह के साथ) वे तस्बीह किया करते थे, और परिन्दों को भी और (दरअसल उन कामों के) करने वाले हम थे। (79) और हमने उनको ज़िरह (बनाने) का हुनर तुम लोगों के (नफे के) वास्ते सिखलाया, ताकि वह (ज़िरह) तुमको (लड़ाई में) एक-दूसरे की मार से बचाए, सो तुम (इस नेमत का) शुक्र करोगे भी (या नहीं)? (80) और हमने सुलैमान का ज़ोर की हवा को ताबे बना दिया था कि वह उनके हुक्म से उस सरज़मीन की तरफ़ को चलती जिसमें हमने बरकत रखी है, (मुराद मुल्क शाम है)³ और हम हर चीज़ को जानते हैं। (81) और बाज़े शैतान (यानी ज़िन्न) ऐसे थे कि उनके (यानी सुलैमान अलैहिस्सलाम के) लिए (दरियाओं में) डुबकी लगाते थे (ताकि मोती निकाल कर दें) और वे और (और) काम भी इसके अलावा किया करते थे, और उनके सँभालने वाले हम थे। (82) और अय्यूब (का तज़क़िरा कीजिए) जबकि उन्होंने (सख़्त बीमारी में मुब्तला होने के बाद) अपने रब को पुकारा कि मुझको यह तकलीफ़ पहुँच रही है, और आप सब मेहरबानों से ज़्यादा मेहरबान हैं। (83) हमने उनकी दुआ कबूल की और उनको जो तकलीफ़ थी उसको दूर कर दिया, और (बिला दरख़्वास्त) हमने उनको उनका कुन्बा अता फ़रमा दिया, और उनके साथ (गिनती में) उनके बराबर और भी अपनी ख़ास रहमत से, और इबादत करने वालों के लिए यादगार रहने के लिए (अता फ़रमाए)⁴ (84) और इसमाईल और इदरीस और जुलकिफ़ल (का तज़क़िरा कीजिए)⁵ ये सब (अल्लाह के अहक़ाम पर) साबित-क़दम रहने वाले लोगों में से थे। (85) और हमने उनको अपनी (ख़ास) रहमत में दाख़िल कर लिया था, बेशक ये पूरी संलाहियत वालों में से थे। (86) और

(पृष्ठ 592 का शेष) 4. दुनियावी भी कि अनाज और मेवे व फल वगैरह कसरत से पैदा होते हैं और दूसरे लोग भी इससे फायदा उठाते हैं। और दीनी भी कि कसरत से वहाँ अम्बिया अलैहिमुस्सलाम हुए जिनकी शरीअतों की बरकत दुनिया में दूर-दूर तक फैली। यानी उन्होंने मुल्क शाम की तरफ अल्लाह के हुक्म से हिज़रत फ़रमाई।

5. आला दर्जे की नेकी से मुराद गुनाहों से महफूज़ होना है जो इनसान में नुबुव्वत की खुसूसियात में से है। पस मुराद यह है कि उन सबको नबी बनाया।

1. उस भारी ग़म से जो झुठलाने और काफ़िरों के तकलीफ़ देने की वजह से उनको पेश आया था।

2. मुक़द्दमे की सूरत यह थी कि जिस क़द्र खेत का नुक़सान हुआ था उसकी लागत बकरियों की कीमत के बराबर थी। दाऊद अलैहिस्सलाम ने ज़िमान में खेत वाले को वे बकरियाँ दिलवा दीं, और असल शर्इ क़ानून का यही तकाज़ा था, जिसमें मुद्दई या जिसपर दावा किया गया, उसकी रज़ामन्दी भी शर्त नहीं, मगर चूँकि इसमें बकरी वालों का बिलकुल ही नुक़सान होता था इसलिए सुलैमान अलैहिस्सलाम ने बतौर सुलह के जो मौकूफ़ थी दोनों फ़रीकों के राज़ी होने पर, यह सूरत जिसमें दोनों की सहूलत और रियायत थी तजवीज़ फ़रमाई कि चन्द दिन के लिए तो बकरियाँ खेत वाले को दे दी जाएँ कि उनके दूध वगैरह से अपना गुज़र करे और बकरी वाले को वह खेत सुपुर्द किया जाए कि उसकी ख़िदमत पानी देने वगैरह से करें। जब खेत पहली हालत पर आ जाए तो खेत व बकरियाँ अपने-अपने मालिकों को दे दी जाएँ। पस इससे मालूम हो गया कि दोनों फैसलों में कोई टकराव नहीं, (शेष तफ़सीर पृष्ठ 596 पर)

मछली वाले (पैगम्बर यानी यूनुस अलैहिस्सलाम का तज़क़िरा कीजिए) जबकि वह अपनी कौम से (जबकि वे ईमान न लाए) ख़फ़ा होकर चल दिए,¹ और उन्होंने यह समझा कि हम उनपर (इस चले जाने में) कोई पकड़ न करेंगे,² पस उन्होंने अन्धेरो में पुकारा कि (इलाही) आपके सिवा कोई माबूद नहीं है, आप (सब कमियों से) पाक हैं, मैं बेशक कुसूरवार हूँ।³ (87) सो हमने उनकी दुआ कबूल की और हमने उनको उस घुटने से नजात दी,⁴ और हम इसी तरह (और) ईमान वालों को (भी मुसीबत और परेशानी से) नजात दिया करते हैं। (88) और ज़करिया (का तज़क़िरा कीजिए) जबकि उन्होंने अपने रब को पुकारा, ऐ मेरे रब! मुझको लावारिस मत रखियो, (यानी मुझको बेटा दे दीजिए कि मेरा वारिस हो) और सब वारिसों से बेहतर आप ही हैं। (89) सो हमने उनकी दुआ कबूल कर ली और हमने उनको यह्या (बेटा) अता फ़रमाया और उनकी खातिर उनकी बीबी को (जो कि बाँझ थी औलाद के) काबिल कर दिया, ये सब नेक कामों में दौड़ते थे, और उम्मीद व ख़ौफ़ के साथ हमारी इबादत किया करते थे, और हमारे सामने दबकर रहते थे।⁵ (90) और उनका (यानी बीबी मरियम अलैहस्सलाम का भी तज़क़िरा कीजिए) जिन्होंने अपनी आबरू को (मर्दों से) बचाया (निकाह से भी और नाजायज़ से भी) फिर हमने उनमें (जिबराईल अलैहिस्सलाम के वास्ते से) अपनी रूह फूँक दी और हमने उनको और उनके बेटे (ईसा अलैहि.) को दुनिया ज़हान वालों के लिए (अपनी कुदरत कामिला की) निशानी बना दी। (91) यह है तुम्हारा तरीका कि (जिसपर तुमको रहना वाजिब है, और) वह एक ही तरीका है, और मैं तुम्हारा (हकीकी) रब हूँ, सो तुम मेरी इबादत किया करो। (92) और उन लोगों ने अपने (दीन के) मामले में इख़िलाफ़ पैदा कर लिया, (सो उसकी सज़ा देखेंगे, क्योंकि) सब हमारे पास आने वाले हैं। (93) ♦

सो जो शख्स नेक काम करता होगा और वह ईमान वाला भी होगा तो उसकी मेहनत बेकार (जाने वाली) नहीं, और हम उसको लिख लेते हैं। (94) और हम जिन बस्तियों को (अज़ाब से या मौत से) फना कर चुके हैं उनके (रहने वालों के) लिए यह बात नामुम्किन है कि वे (दुनिया में) फिर लौटकर आएँ। (95) यहाँ तक कि जब याजूज व माजूज खोल दिए जाएँगे और वे (अपनी तादाद के ज़्यादा होने की वजह से) हर बुलन्दी (जैसे पहाड़ और टीले) से निकलते (मालूम) होंगे। (96) और (वह अल्लाह की तरफ़ लौटकर जाने और मरने के बाद ज़िन्दा होने का) सच्चा वायदा नज़दीक आ पहुँचा होगा, तो बस फिर एकदम से यह (किस्सा) होगा कि इनकार करने वालों की निगाहें फटी-की-फटी रह जाएँगी, (और यूँ कहते नज़र आएँगे) कि हाय हमारी कमबख़्ती हम इस (चीज़) से ग़फलत में थे, बल्कि वाकिफ़ा यह है कि हम ही कुसूरवार थे।⁶ (97) बेशक (ऐ मुशिरको!) तुम और जिनको तुम खुदा तआला को छोड़कर पूज रहे हो सब जहन्नम में झोंके जाओगे, (और) तुम सब उसमें दाख़िल होंगे। (98) (और यह बात समझने की है कि) अगर ये (तुम्हारे माबूद वाकई) माबूद

(पृष्ठ 594 का शेष) कि एक का सही होना दूसरे के सही न होने का मुक्ताज़ी हो, इसलिए 'और यूँ हमने दोनों को इल्म और हिक्मत अता फ़रमाया था' फ़रमाया।

3. यानी जब मुल्क शाम से किसी तरफ़ जाते और फिर आते तो यह आना और इसी तरह जाना भी हवा के ज़रिये से होता था।

4. यानी इबादत करने वाले याद रखें कि अल्लाह तआला सब्र करने वालों को कैसा बदला देते हैं।

5. हज़रत जुलक़िफ़ल के बारे में इख़िलाफ़ है कि आया यह नबी थे या एक नेक शख्स थे। कुरआन के बयान करने के अन्दाज़ से उनका नबी होना महसूस होता है।

1. और अपनी कौम पर से अज़ाब टलने के बाद भी खुद वापस न आए और उस सफ़र के लिए हमारे हुक्म का इन्तिज़ार न किया।

2. पस चूँकि वहाँ से चले जाने को उन्होंने अपने ख़्याल से जायज़ समझा इसलिए वहाँ और वाज़ेह हुक्म का इन्तिज़ार न किया, लेकिन चूँकि वहाँ की उम्मीद तक वहाँ का इन्तिज़ार अम्बिया के लिए मुनासिब था। इस मुनासिब को छोड़ने पर उनको यह आजमाइश पेश आई कि राह में उनको कोई दरिया मिला और वहाँ क़श्ती में सवार हुए। क़श्ती चलते-चलते रुक गई। (शेष तफ़सीर पृष्ठ 598 पर)

होते तो उस (जहन्नम) में क्यों जाते, और सब (इबादत करने वाले और जिनकी इबादत की जा रही है) उसमें हमेशा-हमेशा को रहेंगे। (99) (और) उनका उसमें शोर होगा, और वहाँ (अपने शोरो-गुल में किसी की) कोई बात सुनेंगे भी नहीं। (100) (यह तो दोज़खियों का हाल हुआ, और) जिनके लिए हमारी तरफ से भलाई मुक़द्दर हो चुकी है वे उस (दोज़ख) से (इस क़द्र) दूर किए जाएँगे (101) (कि) उसकी आहट भी न सुनेंगे,¹ और वे लोग अपनी दिल चाही चीज़ों में हमेशा रहेंगे। (102) (और) उनको बड़ी घबराहट (यानी दूसरी बार सूर फूँकने से ज़िन्दा होने की हालत) ग़म में न डालेगी, और (क़ब्र से निकलते ही) फ़रिश्ते उनका स्वागत करेंगे (और कहेंगे कि) यह है तुम्हारा वह दिन जिसका तुमसे वायदा किया जाता था।² (103) (वह दिन भी याद करने के काबिल है) जिस दिन हम (पहली बार सूर फूँकने के वक़्त) आसमानों को इस तरह लपेट देंगे जिस तरह लिखे हुए मज़मून का कागज़ लपेट लिया जाता है, (और) हमने जिस तरह पहली बार पैदा करने के वक़्त (हर चीज़ की) शुरुआत की थी उसी तरह (आसानी से) उसको दोबारा (पैदा) कर देंगे, यह हमारे ज़िम्मे वायदा है, (और) हम ज़रूर (इसको पूरा) करेंगे। (104) और हम ज़बूर (और सब आसमानी किताबों) में ज़िक्र (यानी लौहे-महफूज़ में लिखने) के बाद लिख चुके हैं कि इस ज़मीन (यानी जन्नत) के मालिक मेरे नेक बन्दे होंगे।³ (105) बिला शुब्हा इस (कुरआन) में (हिदायत का) काफी मज़मून है, उन लोगों के लिए जो बन्दगी करने वाले हैं। (106) और हमने (ऐसे नफ़ा देने वाले मज़ामीन देकर) आपको और किसी बात के वास्ते नहीं भेजा मगर दुनिया ज़हान के लोगों (यानी शरीअत के अहक़ाम के जो मुक़त्लफ़ हैं, उन) पर मेहरबानी करने के लिए।⁴ (107) आप (खुलासे के तौर पर एक बार फिर) फ़रमा दीजिए कि मेरे पास तो सिर्फ़ यह वज़ह आती है कि तुम्हारा (हकीकी) माबूद एक ही माबूद है, सो अब भी तुम मानते हो (या नहीं?), यानी अब तो मान लो (108) फिर (भी) अगर ये लोग नाफ़रमानी करें तो (हुज्जत पूरी करने के तौर पर) आप फ़रमा दीजिए कि मैं तुमको बहुत ही साफ़ इत्तिला कर चुका हूँ, और मैं यह नहीं जानता कि जिस सज़ा का तुमसे वायदा हुआ है, क्या वह करीब है या (बहुत ज़्यादा) दूर (है, अलबत्ता वह आएगा ज़रूर, क्योंकि) (109) अल्लाह को तुम्हारी पुकार कर कही हुई बात की ख़बर है, और जो (बात) तुम दिल में रखते हो उसकी भी ख़बर है। (110) और मैं (मुतैयन तौर पर) नहीं जानता (कि क्या मस्लहत है) शायद वह (अज़ाब में देरी) तुम्हारे लिए (सूरत के एतिबार से) एक इम्तिहान हो, और एक वक़्त (यानी मौत) तक (ज़िन्दगी से) फ़ायदा पहुँचाना हो। (111) (पैग़म्बर ने अल्लाह के हुक्म से) कहा कि ऐ मेरे रब! फैसला कर दीजिए,⁵ हक़ के मुवाफ़िक़, और (पैग़म्बर सल्ल. ने काफ़ि़रों से यह भी फ़रमाया कि) हमारा रब हमपर बड़ा मेहरबान है, जिससे उन बातों के मुकाबले में मदद चाही जाती है जो तुम बनाया करते हो। ● (112) ◆

(पृष्ठ 596 का शेष) यूनुस अलैहिस्सलाम समझ गए कि मेरा यह वहाँ से बिना इजाज़त चले आना नापसन्द हुआ, उसकी वजह से क़त्ली रुकी। क़त्ली वालों से फ़रमाया कि मुझको दरिया में डाल दो, वे राज़ी न हुए। गरज़ कुर्आ डालने पर इत्तिफ़ाक़ हुआ, तब भी उन्हीं का नाम निकला, आख़िर उनको दरिया में डाल दिया और खुदा के हुक्म से उनको एक मछली निगल गई।

3. कई अन्धेरे इस तरह कि एक अन्धेरा मछली के पेट का, दूसरा दरिया की गहराई का, फिर दोनों गहरे अन्धेरे बहुत-से अन्धेरो की तरह हुए, और तीसरा अन्धेरा रात का। गरज़ उन अन्धेरो में दुआ की।

4. हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम से इस वाक़िए में किसी बात की मुख़ालफ़त नहीं हुई सिर्फ़ राय कायम करने में ग़लती हुई जो उम्मत के लिए माफ़ है, मगर अम्बिया की तरबियत तथा और ज़्यादा सँवारना और इस्लाम मक़सूद होती थी, इसलिए यह आज़माइश हुई।

5. जिससे उन हज़रत का बन्दगी में कामिल होना और हमारा माबूद होने में कामिल होना साबित होता है।

6. हासिल यह हुआ कि उस वक़्त जो लोग अल्लाह की तरफ़ लौटने के इनकारी थे वे भी इसके इकरारी हो जाएँगे।

1. क्योंकि वे जन्नत में होंगे और जन्नत और दोज़ख़ में बहुत ज़्यादा दूरी होगी।

2. कि क़ियामत आएगी और नेक लोगों को नेक बदला मिलेगा। पस यह सम्मान और खुशख़बरी (शेष तफ़सीर पृष्ठ 600 पर)

22 सूर: हज 103

सूर: हज मदीना में नाज़िल हुई। इसमें 78 आयतें और 10 रुकूअ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

‘ऐ लोगो! अपने रब से डरो, (क्योंकि) यकीनन कियामत (के दिन) का ज़लज़ला बड़ी भारी चीज़ होगी।’ (1) जिस दिन तुम लोग उस (ज़लज़ले) को देखोगे (उस दिन) तमाम दूध पिलाने वालियाँ (डर के मारे) अपने दूध पीते बच्चे को भूल जाएँगी, और तमाम हमल “यानी गर्भ” वालियाँ अपने हमल को (पूरे दिन होने से पहले) डाल देंगी। और (ऐ मुखातब!) तुझको लोग नशे जैसी हालत में दिखाई देंगे, हालाँकि वे (हकीकत में) नशे में न होंगे, और लेकिन अल्लाह का अज़ाब है (ही) सख़्त चीज़।’ (2) और बाज़े आदमी ऐसे हैं कि अल्लाह के बारे में (यानी उसकी ज़ात या सिफ़ात में) बेजाने-बूझे झगड़ा करते हैं और हर शैतान सरकश के पीछे हो लेते हैं। (3) जिसके मुताल्लिक (खुदा के यहाँ से) यह बात लिखी जा चुकी है कि जो शख्स उससे ताल्लुक रखेगा (यानी उसका कहना मानेगा) तो (उसका काम ही यह है कि) वह उसको (हक़ रास्ते से) बेराह कर देगा, और उसको दोज़ख़ के अज़ाब का रास्ता दिखला देगा। (4) ऐ लोगो! अगर तुम (कियामत के दिन) दोबारा ज़िन्दा होने से शक (व इनकार) में हो तो हमने (पहले) तुमको मिट्टी से बनाया, फिर नुत्फ़े से (जो कि ग़िज़ा से पैदा होता है) फिर खून के लोथड़े से, फिर बोटी से कि (बाज़ी) पूरी होती है और (बाज़ी) अधूरी भी, ताकि हम तुम्हारे सामने (अपनी कुदरत) ज़ाहिर कर दें,⁴ और हम (माँ के) रहम में जिस (नुत्फ़े) को चाहते हैं एक मुकर्ररा मुद्दत (यानी पैदाइश) तक ठहराए रखते हैं फिर हम तुमको बच्चा बनाकर बाहर लाते हैं, फिर ताकि तुम अपनी भरी जवानी (की उम्र) तक पहुँच जाओ, और बाज़े तुममें वे भी हैं जो (जवानी से पहले ही) मर जाते हैं, और बाज़े तुममें वे हैं जो निकम्मी उम्र (यानी ज़्यादा बुढ़ापे) तक पहुँचा दिए जाते हैं, (जिसका असर यह है) कि एक चीज़ से जानकार होकर फिर बेख़बर हो जाते हैं,⁵ और (आगे दूसरा इस्तिदलाल है कि ऐ मुखातब!) तू ज़मीन को देखता है कि सूखी (पड़ी) है, फिर जब हम उसपर पानी बरसाते हैं तो वह उभरती है और फूलती है, और हर किस्म के खुशनुमा नबातात “यानी पेड़-पौधे और सब्ज़ियाँ व घास वगैरह” उगाती है।⁶ (5) यह (सब) इस सबब से हुआ कि (वजूद में) अल्लाह तआला ही कामिल है,⁷ और वही बेजानों में जान डालता है,⁸ और वही हर चीज़ पर कादिर है।⁹ (6) और (तथा इस सबब से हुआ कि) कियामत आने

(पृष्ठ 598 का शेष) उनके लिए ज़्यादा खुशी का सबब हो जाएगी।

3. यहाँ तक सूर: के बड़े हिस्से में तौहीद व नुबुव्वत की तहकीक और इनकार करने वालों के लिए वईद (डॉट और सज़ा की धमकी) ज़िक्र हुई। कुरआने करीम के इन मुफ़ीद मज़ामीन पर मुश्तमिल होने की वजह से आयत ‘इन्-न फ़ी हाज़ा’ और ‘व मा अरसल्ला-क’..... में इन मज़ामीन की खुले तौर पर तारीफ़ व खूबी और दूसरी आयत में इशारे के तौर पर इन मज़ामीन के लाने वाले की भी तारीफ़ और आयत ‘कुल इन्मा यू-हा....’ में पहले मज़मून के खुलासे के तौर पर तौहीद और इस्लाम की तरफ़ जिसके लवाज़िम में से नुबुव्वत की तस्दीक भी है, दोबारा दावत, और आयत ‘फ़इन् तवल्ली.....’ से आख़िर तक खुलासे ही के तौर पर इनकार पर दोबारा वईद और धमकी और सज़ा के मुताल्लिक और मुनासिब मज़ामीन इरशाद हैं।

4. वह मेहरबानी यही है कि लोग रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से इन मज़ामीन को कबूल करें, हिदायत और हिदायत के फल हासिल करें। और जो कबूल न करे यह उसका कुसूर है, इससे मज़मून के सही होने में कोई खलल नहीं पड़ता।

5. मतलब यह है कि अमली फैसला कर दीजिए। यानी मुसलमानों के जिस ग़ल्बे की पैशीनगोई (भविष्यवाणी) है उसको ज़ाहिर कर दीजिए ताकि हुज्जत और ज़्यादा मुकम्मल हो जाए।

1. इस सूर: का खुलासा ये मज़ामीन हैं- 9. मरने के बाद ज़िन्दा होना और हिसाब, जिससे सूर: शुरू भी हुई है और बीच में कियामत के दिन और दोज़ख़ व जन्नत का ज़िक्र जगह-जगह आया है। 2. नुबुव्वत और उसके मुताल्लिक (शेष तफ़सीर पृष्ठ 602 पर)

वाली है इसमें ज़रा भी शुब्हा नहीं, और अल्लाह कियामत में कब्र वालों को दोबारा पैदा कर देगा।¹ (7) और बाज़े आदमी ऐसे होते हैं कि अल्लाह के बारे में बिना जानकारी (यानी ज़रूरी इल्म) के और बिना दलील (यानी अक्ली तौर पर दलील लाने) और बिना किसी रोशन किताब (यानी नकली दलील लाने) के तकबुर करते हुए झगड़ा करते हैं (8) ताकि अल्लाह की राह से (यानी दीने हक़ से) बेराह कर दें, ऐसे शख्स के लिए दुनिया में रुस्वाई है और कियामत के दिन हम उसको जलती आग का अज़ाब चखाएँगे। (9) (और उससे कहा जाएगा) कि यह तेरे हाथ के किए हुए कामों का बदला है, और यह (बात साबित ही है) कि अल्लाह तआला (अपने) बन्दों पर जुल्म करने वाला नहीं, (पस तुझको बिला जुर्म सज़ा नहीं दी गई)। (10) ♦

और बाज़ आदमी अल्लाह की इबादत (ऐसे तौर पर) करता है (जैसे किसी चीज़ के) किनारे पर (खड़ा हो) फिर अगर उसको कोई (दुनियावी) नफ़ा पहुँच गया तो उसकी वजह से (ज़ाहिरी) करार पा लिया, और अगर उसकी कुछ आजमाइश हो गई तो मुँह उठाकर (कुफ़ की तरफ़) चल दिया, (जिससे) दुनिया और आखिरत दोनों को खो बैठा, यही खुला नुकसान (कहलाता) है। (11) खुदा (की इबादत) को छोड़कर ऐसी चीज़ की इबादत करने लगा जो न उसको नुकसान पहुँचा सकती है और न उसको नफ़ा पहुँचा सकती है, यह इन्तिहाई दर्जे की गुमराही है।² (12) वह ऐसे की इबादत कर रहा है कि उस (की इबादत) का नुकसान उसके नफ़े के मुकाबले में ज़्यादा जल्द (सामने आने वाला) है, (और) ऐसा कारसाज़ भी बुरा और ऐसा साथी भी बुरा।³ (13) बेशक अल्लाह तआला ऐसे लोगों को जो ईमान लाए और अच्छे काम किए (जन्मत के) ऐसे बाग़ों में दाखिल फरमाएँगे जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, अल्लाह तआला जो इरादा करता है कर गुज़रता है।⁴ (14) जो शख्स (रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ मुख़ालफ़त करके) इस बात का ख़याल रखता है कि अल्लाह तआला उनकी (यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की) दुनिया और आखिरत में मदद न करेगा तो उसको चाहिए कि एक रस्सी आसमान तक तान ले, फिर (उसके ज़रिये से आसमान तक पहुँचकर अगर हो सके इस वह्य को) रुकवा दे,⁵ तो फिर (अब) ग़ौर करना चाहिए कि क्या उसकी (यह) तदबीर उसकी नागवारी की चीज़ को (यानी वह्य को) बन्द कर सकती है।⁶ (15) और हमने इस कुरआन को इसी तरह उतारा है (जिसमें) खुली-खुली दलीलें (हक़ को मुतैयन करने की हैं) और (बात) यह (ही है) कि अल्लाह तआला जिसको चाहता है (हक़ की) हिदायत करता है।⁷ (16) इसमें कोई शुब्हा नहीं कि मुसलमान और यहूद

(पृष्ठ 600 का शेष) शुब्हात का जगह-जगह जवाब और नुबुव्वत ही के मुताल्लिक़ मदद का वायदा और जिहाद की इजाज़त और उसके बारे में झगड़ने और बहस करने वालों की निन्दा, चाहे वह झगड़ना ज़बान से हो या फ़ैल से। जैसे हज या उमर: से रोकना, जिसके ज़िम्न में हज के अहक़ाम ज़िक्र हुए। ३. तौहीद।

2. जब ज़लज़ला जो कि उसके वाकिआत में से एक वाकिआ है, ऐसा होगा तो वाकिआत के मजमूए की क्या शिद्दत और सख़्ती होगी, तो उन सख़्तियों के ख़ैरियत से गुज़रने के लिए सामान करो, और वह तक्वा है।

3. रिवायतों से ऐन कियामत ही के दिन और कियामत से पहले भी ज़लज़ले का आना साबित है, लेकिन जिस ज़लज़ले का आयत में ज़िक्र है हदीस से उसका कियामत के दिन आना मालूम होता है।

4. और इसी से ज़ाहिर है कि हम दोबारा पैदा करने पर कादिर हैं।

5. ये सब हालात भी हमारे कादिर होने पर दलालत करते हैं।

6. सो यह भी दलील है कुदरते कामिला की।

7. यह उसका ज़ाती कमाल है।

8. यह उसका फ़ैली कमाल है।

9. यह उसका कमाले वस्फी है, और ये तीनों कमालात मिलकर ज़िक्र हुए उमूर की इल्लत हैं, क्योंकि अगर तीनों कमालात में से एक भी मौजूद न पाया जाता तो ईजाद करना न पाया जाता। (पृष्ठ 602 की तफ़सीर पृष्ठ 604 पर)

और साबिईन और ईसाई और मजूस¹ और मुशिरकीन अल्लाह तआला इन सबके दरमियान कियामत के दिन (अमली) फैसला कर देगा, (मुसलमानों को जन्नत में दाखिल कर देगा और काफिरों को दोज़ख में), बेशक खुदा तआला हर चीज़ से वाकिफ़ है।² (17) (ऐ मुखातब!) क्या तुझको (अक्ल से या देखने से) यह (बात) मालूम नहीं कि अल्लाह तआला के सामने (अपनी-अपनी हालत के मुनासिब) सब आज़िजी करते हैं, जो कि आसमानों में हैं और जो कि ज़मीन में हैं, और सूरज और चाँद और सितारे और पहाड़ और दरख्त और चौपाये और बहुत सारे (तो) आदमी भी,³ और बहुत-से ऐसे हैं जिनपर (फ़रमाँबरदार न होने की वजह से) अज़ाब साबित हो गया है। और (सच यह है कि) जिसको खुदा ज़लील करे (और उसको हिदायत की तौफ़ीक़ न हो) उसको कोई इज़्ज़त देने वाला नहीं, (और) अल्लाह तआला (को इख़्तियार है) जो चाहे करे। □ (18) ये (जिनका ऊपर की आयत में ज़िक्र हुआ है) दो फ़रीक़ हैं, जिन्होंने अपने रब के (दीन के) बारे में (आपस में) इख़्तिलाफ़ किया, सो जो लोग काफ़िर थे उनके (पहनने के) लिए (कियामत में) आग के कपड़े काटे जाएँगे,⁴ (और) उनके सर के ऊपर से तेज़ गर्म पानी छोड़ा जाएगा। (19) (और) उससे उनके पेट में की चीज़ें (यानी अंतड़ियाँ) और (उनकी) खालें सब गल जाएँगी। (20) और उनके (मारने के) लिए लोहे के गुर्ज़ होंगे। (21) वे लोग जब (दोज़ख़ में) घुटे-घुटे (घबरा जाएँगे और) उससे बाहर निकलना चाहेंगे तो फिर उसमें धकेल दिए जाएँगे, और (उनको कहा जाएगा कि) जलने का अज़ाब (हमेशा के लिए है) चखते रहो। (22) ♦

(और) अल्लाह तआला उन लोगों को जो कि ईमान लाए और नेक काम किए (जन्नत के) ऐसे बाग़ों में दाखिल करेगा जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, (और) उनको वहाँ सोने के कंगन और मोती पहनाए जाएँगे, और उनका लिबास वहाँ रेशम का होगा। (23) और (यह सब इनाम उनके लिए इसलिए है कि दुनिया में) उनको कलिमा-ए-तय्यिबा (के एतिकाद) की हिदायत हो गई थी, और उनको उस (खुदा) के रास्ते की हिदायत हो गई थी जो तारीफ़ के लायक़ है। (वह रास्ता इस्लाम है)। (24) बेशक जो लोग काफ़िर हुए और (मुसलमानों को) अल्लाह के (रास्ते से और मस्जिदे हराम यानी हरम) से (भी) रोकते हैं जिसको हमने तमाम आदमियों के वास्ते मुक़र्रर किया है, कि उसमें सब बराबर हैं, उसमें रहने वाला भी और बाहर से आने वाला भी, (ये रोकने वाले लोग अज़ाब पाएँगे) और जो शख्स उसमें (यानी हरम शरीफ़ में) कोई दीन के ख़िलाफ़ काम जान-बूझकर

(तफ़सीर पृष्ठ 602)

1. यह ज़िक्र हुए उमूर की हिकमत है। यानी हमने वे ज़िक्र हुए तसरुफ़ात इसलिए ज़ाहिर किए कि इसमें और हिकमतों में से एक हिकमत और वजह यह भी थी कि हमको कियामत का लाना और मुर्दों को ज़िन्दा करना मन्ज़ूर था। तो उन तसरुफ़ात से इनका मुस्क़िन होना लोगों पर ज़ाहिर हो जाएगा।

2. सिर्फ़ यही नहीं कि उसकी इबादत से नफ़ा न होता हो बल्कि इबादत में नुक़सान होता है।

3. न 'मौला' यानी बड़ा होकर काम आए और न 'अशीर' यानी बराबर होकर काम आए।

4. उसके साथ कोई रोक-टोक नहीं कर सकता, और वह इस जज़ा व सज़ा का इरादा कर चुका है, पस ज़रूर ऐसा ही ज़ाहिर होगा।

5. और ज़ाहिर है कि ऐसा कोई नहीं कर सकता।

6. यानी हरगिज़ नहीं कर सकती।

7. अलबत्ता इनसान की कोशिश और तलब के बाद अल्लाह तआला इरादा कर ही लेता है।

(तफ़सीर पृष्ठ 604)

1. 'मजूस' आग की पूजा करने वाले हैं।

2. पस उसको हर एक के कुफ़्र व ईमान की भी इत्तिला है, हर एक को मुनासिब बदला और सिला देगा।

3. बावजूद तमाम मख़्लूक़ात के ताबे-ए-फ़रमान होने के आदमियों में जो ख़ास दर्जे की अक्ल रखता है, उनमें सब फ़रमाँबरदार नहीं।

4. यानी आग चारों तरफ़ से सर से पाँव तक कपड़ों की तरह घेरे हुए होगी।

(खासकर जबकि वह) जुल्म (यानी शिर्क व कुफ़) के साथ करेगा तो हम उसको दर्दनाक अज़ाब (का मज़ा) चखाएंगे।¹ (25) ♦

और जबकि हमने इब्राहीम को ख़ाना काबा की जगह बताला दी² (और हुक्म दिया) कि मेरे साथ किसी चीज़ को शरीक मत करना,³ और मेरे इस घर को तवाफ़ करने वालों और (नमाज़ में) कियाम व रुकूअ व सज्दा करने वालों के वास्ते (महसूस और ग़ैर-महसूस गन्दगी और नापाकियों से) पाक रखना। (26) और (इब्राहीम से यह भी कहा गया कि) लोगों में हज (के फ़र्ज़ होने) का ऐलान कर दो, (जिससे कि) लोग तुम्हारे पास (हज को) चले आएँगे, पैदल भी और (जो ऊँटनियाँ सफ़र के मारे) दुबली (हो गई होंगी उन) ऊँटनियों पर भी, जो कि दूर-दराज़ रास्तों से पहुँची होंगी। (27) ताकि अपने (दीनी और दुनियावी) फ़ायदों के लिए आ मौजूद हों⁴ और (इसलिए आएँगे) ताकि मुकर्ररा दिनों (यानी कुरबानी के दिनों) में उन (मख्सूस) चौपायों पर (ज़िब्ह के वक़्त) अल्लाह का नाम लें, (यानी बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अक्बर कहें जो अल्लाह तआला ने) उनको अता किए हैं, सो उन (कुरबानी के जानवरों) में से तुम (को) भी (मुस्तहब होने के साथ इजाज़त है कि) खाया करो और (मुस्तहब यह है कि) मुसीबतज्दा मोहताजों को भी खिलाया करो। (28) फिर (लोगों को) चाहिए कि अपना मैल-कुचैल दूर कर दें और अपने वाजिबात को पूरा करें, और (उन्हीं मुकर्ररा दिनों में) इस मामून घर (यानी ख़ाना-ए-काबा) का तवाफ़ करें।⁵ (29) यह बात तो हो चुकी, और जो शख्स अल्लाह तआला के मोहतरम अहकाम⁶ की वक़अत करेगा,⁷ सो यह (वक़अत करना) उसके हक़ में उसके रब के नज़दीक बेहतर है,⁸ और उन (मख्सूस) चौपायों को उन (बाज़) को छोड़कर जो तुमको पढ़कर सुना दिए गए हैं तुम्हारे लिए हलाल कर दिया गया है, तो तुम लोग गन्दगी से यानी बुतों से (बिलकुल) किनारा करने वाले रहो और झूठी बात से अलग रहो। (30) इस तौर से कि अल्लाह ही की तरफ़ झुके रहो (और) उसके साथ शरीक मत ठहराओ, और जो शख्स अल्लाह के साथ शिर्क करता है तो गोया वह आसमान से गिर पड़ा, फिर परिन्दों ने उसकी बोटियाँ नोच लीं या उसको हवा ने किसी दूर-दराज़ जगह में लेजा पटका।⁹ (31) यह बात भी हो चुकी, और जो शख्स अल्लाह (के दीन) की (इन ज़िक्र हुई) यादगारों का पूरा लिहाज़ रखेगा तो (उनका) यह (लिहाज़ रखना खुदा तआला से) दिल के साथ डरने से होता है। (32) तुमको उनसे एक मुतैयन वक़्त तक फ़ायदे हासिल करना (जायज़) है, फिर (यानी कुरबानी का जानवर बनने के बाद) उसके (ज़िब्ह) हलाल होने का मौका बैठे अतीक “यानी बैतुल्लाह” के करीब है।¹⁰ (33) ♦

1. अगरचे दीन के खिलाफ़ काम करना हर जगह ही अज़ाब का सबब है लेकिन हरम के अन्दर और ज्यादा अज़ाब का सबब है।
2. क्योंकि उस वक़्त ख़ाना-ए-काबा बना हुआ न था।
3. यह उनके बाद वालों को सुनाना है, और घर के ज़िक्र के साथ इसका ज़िक्र इसलिए निहायत ही मुनासिब हुआ कि किसी हकीकत न पहचानने वाले को इस घर की क़द्र व अज़मत से और इसके इबादत की जगह होने के बारे में कोई शक व वहम न हो जाए।
4. जैसे आखिरत के फ़ायदे ये हैं- हज का सवाब और अल्लाह तआला की रिज़ा। और दुनियावी फ़ायदे ये हैं- कुरबानी का गोश्त खाना और तिजारात वगैरह। इसको हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से इब्ने अबी हातिम ने नक़ल किया है। अलबत्ता दुनियावी फ़ायदों का असल मक़सद होना नापसन्दीदा है।
5. यह तवाफ़े ज़ियारत कहलाता है जो कि फ़र्ज़ है।
6. आम इससे कि हज के अहकाम ज़िक्र हुए हों या हज के अहकाम ज़िक्र न हुए हों, या हज से मुताल्लिक न हों।
7. इल्म के एतिबार से भी कि उनके मालूम करे और अमल के एतिबार से भी कि उनके खिलाफ़ न करे।
8. क्योंकि सवाब को वाजिब करने वाला और अज़ाब से नजात देने वाला है।
9. इसी तरह जिसने शिर्क किया या तो किसी के हाथ से मारा गया या किसी वक़्त तबई मौत से (शेष तफ़सीर पृष्ठ 608 पर)

और (जितने शरीअतों वाले गुज़रे हैं उनमें से) हमने हर उम्मत के लिए कुरबानी करना इस गरज़ से मुकर्रर किया था कि वे उन (मख्सूस) चौपायों पर अल्लाह का नाम लें जो उसने उनको अता फ़रमाए थे, सो (इससे यह बात निकल आई कि) तुम्हारा (हकीकी) माबूद एक ही खुदा है तो तुम पूरी तरह उसी के होकर रहो! आप (अल्लाह के अहक़ाम के सामने ऐसे) गरदन झुका देने वालों को (जन्मत वग़ैरह की) खुशख़बरी सुना दीजिए। (34) जो ऐसे हैं कि जब (उनके सामने) अल्लाह का ज़िक्र किया जाता है तो उनके दिल डर जाते हैं, और जो उन मुसीबतों पर जो कि उनपर पड़ती हैं सब्र करते हैं, और जो नमाज़ की पाबन्दी रखते हैं, और जो कुछ हमने उनको दिया है उसमें से (हुक़म और तौफ़ीक़ के मुताबिक़) खर्च करते हैं? (35) और कुरबानी के ऊँट (और गाय और इसी तरह भेड़ और बकरी को भी) हमने अल्लाह (के दीन) की यादगार बनाया है, इन (जानवरों) में तुम्हारे (और भी) फ़ायदे हैं, सो तुम उनपर खड़े करके³ (ज़िब्ह करने के वक़्त) अल्लाह का नाम लिया करो। पस जब वे (किसी) करवट के बल गिर पड़ें (और ठन्डे हो जाएँ) तो तुम खुद भी खाओ और बेसवाल और सवाली (मोहताज) को भी खाने को दो, (और) हमने इन (जानवरों) को इस तरह तुम्हारे हुक़म के ताबे कर दिया, ताकि तुम (इस ताबे कर देने पर अल्लाह तआला का) शुक्र करो! (36) अल्लाह के पास न उनका गोश्त पहुँचता है और न उनका खून, और लेकिन उसके पास तुम्हारा तक्वा पहुँचता है, इसी तरह अल्लाह तआला ने उन (जानवरों) को तुम्हारे हुक़म के ताबे कर दिया ताकि तुम (अल्लाह की राह में उनकी कुरबानी करके) इस बात पर अल्लाह की बड़ाई (बयान) करो कि उसने तुमको तौफ़ीक़ दी, और (ऐ मुहम्मद!) इख़्लास वालों को खुशख़बरी सुना दीजिए। (37) बिला शुब्हा अल्लाह तआला (उन मुशिरकीन के ग़ल्बे और तकलीफ़ पहुँचाने की कुदरत को) ईमान वालों से (जल्द ही) हटा देगा,⁵ बेशक अल्लाह तआला किसी दगाबाज़-कुफ़्र करने वाले को नहीं चाहता! ▲ (38) ♦

(अब) लड़ने की उन लोगों को इजाज़त दे दी गई जिनसे (काफ़िरों की तरफ़ से) लड़ाई की जाती है, इस वजह से कि उनपर (बहुत) जुल्म किया गया है,⁷ और बिला शुब्हा अल्लाह तआला उनके ग़ालिब कर देने पर पूरी कुदरत रखता है। (39) (आगे उनकी मज़लूमियत का बयान है) जो अपने घरों से बेवजह निकाले गए, सिर्फ़ इतनी (बात) पर कि वे (यूँ) कहते हैं कि हमारा रब अल्लाह है,⁸ और अगर (यह बात न होती कि) अल्लाह तआला (हमेशा से) लोगों का एक-दूसरे (के हाथ) से ज़ोर न घटवाता रहता⁹ तो (अपने-अपने ज़मानों में) ईसाइयों के ख़िलवतख़ाने और इबादतख़ाने और यहूद के इबादतख़ाने और (मुसलमानों की) वे मस्जिदें जिनमें अल्लाह तआला का नाम कसरत से लिया जाता है, सब ढा दिए गए होते। और बेशक अल्लाह उसकी मदद करेगा जो अल्लाह के दीन की मदद करेगा,¹⁰ बेशक अल्लाह कुव्वत वाला (और) ग़ल्बे वाला है। (वह जिसको चाहे ग़ल्बा और कुव्वत दे सकता है)। (40) ये लोग ऐसे हैं कि अगर हम उनको दुनिया में हुकूमत दे

(पृष्ठ 606 का शेष) मर गया, हर हालत में हलाक़त के घर यानी दोज़ख़ में पहुँचेगा। और यूँ हवा के झोंकों के बग़ैर भी ज़रूर ही गिरता, लेकिन उस सूरत में और ज़्यादा कुल्फ़त होगी। चुनाँचे तबई मौत के साथ फ़रिश्तों के धक्के-मुक्के उसी के जैसे हैं।

10. मुराद पूरा हरम है। यानी हरम से बाहर ज़िब्ह न करें।

1. यानी ख़ालिस मोमिन रहो, किसी मकान वग़ैरह को उसकी ज़ात के एतिबार से अज़मत वाला समझने से ज़र्रा बराबर शिक़ का शक़ व शुब्हा भी अपने अज़मल में न पैदा होने दो।

2. यानी तौहीदे ख़ालिस ऐसी बरक़त वाली चीज़ है कि उसकी बदीलत नफ़्सानी, जिस्मानी और माली कमालात पैदा हो जाते हैं।

3. यह सिर्फ़ ऊँटों के एतिबार से फ़रमाया कि उनका इस तरह ज़िब्ह करना इसलिए बेहतर है कि इससे ज़िब्ह करने और रूह के निकलने में आसानी होती है।

4. यह हिक़मत मुतलक़ ज़िब्ह में है कुरबानी होने से अलग। और आगे ज़िब्ह की तख़सीसात के अपनी ज़ात में मक़सूद न होने को एक अक्ली कायदे से बयान फ़रमाते हैं। (शेष तफ़सीर पृष्ठ 610 पर)

दें तो ये लोग (खुद भी) नमाज़ की पाबन्दी करें और ज़कात दें और (दूसरों को भी) नेक कामों के करने को कहें और बुरे कामों से मना करें,¹ और सब कामों का अन्जाम तो अल्लाह के ही इख़्तियार में है।² (41) और ये (झगड़ालू) लोग अगर आपको झुठलाते हैं तो (आप ग़मगीन न होइए, क्योंकि) इन लोगों से पहले कौमे नूह, आद और समूद (42) और कौमे इब्राहीम और कौमे लूत (43) और मद्यन वाले (भी अपने-अपने अंबिया अलैहिमुस्सलाम को) झुठला चुके हैं, और मूसा को भी (किब्ब की तरफ से) झूठा करार दिया गया, सो (झुठलाए जाने के बाद) मैंने (उन) काफ़िरो को (थोड़ी-सी) मोहलत दी, फिर मैंने उनको पकड़ लिया, सो मेरा अज़ाब कैसा हुआ। (44) (गरज़) कितनी बस्तियाँ हैं जिनको हमने (अज़ाब से) हलाक किया, जिनकी यह हालत थी कि वे नाफ़रमानी करती थीं, सो (अब उनकी कैफ़ियत यह है कि) वे अपनी छतों पर गिरी पड़ी हैं,³ और (इसी तरह उन बस्तियों में) बहुत-से बेकार कुएँ (जो पहले आबाद थे) और बहुत-से क़लई-घूने के महल⁴ (भी उन बस्तियों के साथ तबाह हुए)। (45) सो क्या ये (इनकारी) लोग मुल्क में चले-फिरे नहीं, जिससे कि उनके दिल ऐसे हो जाएँ कि उनसे समझने लगे, या उनके कान ऐसे हो जाएँ जिससे सुनने लगे। बात यह है कि (न समझने वालों की कुछ) आँखें अन्धी नहीं हो जाया करती, बल्कि दिल जो सीनों में हैं वे अन्धे हो जाया करते हैं।⁵ (46) और ये लोग (नुबुव्वत में शुब्हा निकालने के लिए ऐसे) अज़ाब का तकाज़ा करते हैं, हालाँकि अल्लाह कभी अपना वायदा ख़िलाफ़ न करेगा, और आपके रब के पास का एक दिन (यानी कियामत का दिन लम्बा होने में या सख़्त होने में) एक हज़ार साल के बराबर है, तुम लोगों की गिनती के मुवाफ़िक़। (47) और बहुत-सी बस्तियाँ हैं जिनको मैंने (उनकी तरह) मोहलत दी थी, और वे (उन्हीं की तरह) नाफ़रमानी करती थीं,⁶ फिर मैंने उनको पकड़ लिया और (सबको) मेरी ही तरफ़ लौटना होगा।⁷ (48) ♦

(और) आप (यह भी) फ़रमा दीजिए कि ऐ लोगो! मैं तो सिर्फ़ तुम्हारे लिए एक खुला डराने वाला हूँ। (49) सो जो लोग (इस डर को सुनकर) ईमान ले आए और अच्छे काम करने लगे, उनके लिए मग़्फ़िरत और इज़्ज़त की रोज़ी (यानी जन्नत) है। (50) और जो लोग हमारी आयतों के मुताल्लिक़ (उनको झुठलाने की) कोशिश करते रहते हैं (नबी को और ईमान वालों को) हराने के लिए, ऐसे लोग दोज़ख़ (में रहने) वाले हैं।⁸ (51) और ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)! हमने आपसे पहले कोई रसूल और कोई नबी ऐसा नहीं भेजा जिसको यह किस्सा पेश न आया हो कि जब उसने अल्लाह तआला के अहक़ाम में से कुछ पढ़ा

- (पृष्ठ 608 का शेष) 5. कि फिर हज वग़ैरह से रोक ही न सकेंगे।
 6. इसलिए अन्जामकार उनको मग़लूब और मुख़्तस मोमिनो को ग़ालिब कर देगा।
 7. यह इल्लत है जिहाद के जायज़ व मशरू होने की। मगर मज़लूमियत के सबब और वजह होने से कोई यह शुब्हा न करे कि जो काफ़िर ज़ालिम न हों और इस्लाम के ज़ेरें फ़रमान भी न हों उनके साथ जंग व क़िताल नहीं है।
 8. यानी उनके तौहीद के इकरार पर काफ़िरो का यह तमाम नाराज़गी और गुस्सा था जिसकी वजह से उनको इस क़द्र परेशान किया कि वतन छोड़ना पड़ा।
 9. 'व लौ ला दफ़्अल्लाहि.....' के हिक्मत होने से कोई यह शुब्हा न करे कि कभी-कभी अहले हक़ भी मग़लूब हो जाते हैं, असल यह है कि इतना ग़ल्बा जिसमें हक़ न मिटे यही हिक्मत का मक़सद है, सो यह हासिल रहा है।
 10. यानी उसके लड़ने में ख़ालिस नीयत अल्लाह के क़लिमे को बुलन्द करने की हो। इस आयत से यह शुब्हा न पैदा होना चाहिए कि ग़ैर-मुस्लिमों की यह इबादतगाहें अब भी अल्लाह के यहाँ मक़बूल हैं। असल यह है कि मशरू होने के अपने-अपने ज़माने में और अपनी-अपनी मिल्त में उनके मक़सुद होने में उनका मतलूब होना मक़सूद है। और ईसाइयों की दो इबादतगाहों का इसलिए ज़िक़्र किया कि उनमें दुरवेशी की भी रस्म जारी थी, और 'ल-यन्सुरनल्लाहु.....' से कोई शुब्हा न करे कि कभी-कभी हक़ के मददगार भी मग़लूब हो जाते हैं, असल यह है कि उलट-पलट होने के बाद अन्जामकार ग़ल्बा हक़ के मददगारों ही को होता है, शर्त यह है कि वे साबित-क़दम रहें।
 1. इस आयत से सहाबा की फज़ीलत और ख़ुलफ़ा-ए-राशिदीन का हक़ पर होना साबित होता है।
 2. पस मुसलमानों की मौजूदा हालत को देखकर कोई क्योकर यह कह सकता है कि (शेष तफ़्सीर पृष्ठ 612 पर)

(तब ही) शैतान ने उसके पढ़ने में (काफ़िरों के दिलों में) शुब्हा डाला, फिर अल्लाह तआला शैतान के डाले हुए (शुब्हात) को नेस्तनाबूद कर देता है, फिर अल्लाह अपनी आयतों को ज़्यादा मज़बूत कर देता है,¹ और अल्लाह तआला ख़ूब इल्म वाला, ख़ूब कुदरत वाला है। (52) (और यह सारा किस्सा इसलिए किया है) ताकि अल्लाह तआला शैतान के डाले हुए (शुब्हात) को ऐसे लोगों के लिए आजमाइश (का ज़रिया) बना दे, जिनके दिल में (शक की) बीमारी है, और जिनके दिल (बिल्कुल) सख़्त हैं,² और वाकई (ये) जालिम लोग बड़ी मुश्क़लफ़्त में हैं। (53) और ताकि जिन लोगों को (सही) समझ अता हुई है वे (इन जवाबों और हिदायत के नूर से इस बात का ज़्यादा) यकीन कर लें कि यह आपके रब की तरफ़ से हक़ है, ईमान पर ज़्यादा कायम हो जाएँ, फिर उसकी तरफ़ उनके दिल (और भी) झुक जाएँ। और वाकई (उन) ईमान वालों को अल्लाह तआला (ही) सीधा रास्ता दिखलाता है। (54) और (रह गए) काफ़िर लोग (सो वे) हमेशा इस (पढ़े हुए हुक्म) की तरफ़ से शक़ ही में रहेंगे, यहाँ तक कि उनपर अचानक क़ियामत आ जाए, या उनपर किसी बेबरक़त दिन का (जो कि क़ियामत का दिन है) अज़ाब आ पहुँचे।³ (55) बादशाही उस दिन अल्लाह ही की होगी, वह इन सब (ज़िक्क-शुदा) के दरमियान (अमली) फैसला फरमाएगा, सो जो लोग ईमान लाए होंगे और अच्छे काम किए होंगे वे चैन के बाग़ों में होंगे। (56) और जिन्होंने कुफ़्र किया होगा और हमारी आयतों को झुठलाया होगा तो उनके लिए ज़िल्लत का अज़ाब होगा। (वह फैसला यह होगा)। (57) ♦

और जिन लोगों ने अल्लाह की राह में (यानी दीन के लिए) अपना वतन छोड़ा, फिर वे लोग (कुफ़्र के मुकाबले में) क़त्ल किए गए या मर गए, अल्लाह तआला ज़रूर उनको (एक) उम्दा रिज़्क देगा,⁴ और यकीनन अल्लाह तआला सब देने वालों से अच्छा (देने वाला) है। (58) (और उम्दा रिज़्क के साथ अल्लाह तआला उनको ऐसी जगह लेजाकर) दाख़िल करेगा जिसको वे (बहुत ही) पसन्द करेंगे, और बिला शुब्हा अल्लाह तआला (हर बात की मस्तहत को) ख़ूब जानने वाला है, बहुत हिल्म वाला (भी) है। (59) यह (मज़मून तो) हो चुका और जो शख्स (दुश्मन को) उसी क़द्र तकलीफ़ पहुँचाए जिस क़द्र (उस दुश्मन की तरफ़ से) उसको तकलीफ़ पहुँचाई गई थी, (और) फिर उस शख्स पर ज्यादाती की जाए तो अल्लाह तआला उस शख्स की ज़रूर मदद करेगा,⁵ बेशक़ अल्लाह तआला बहुत ज़्यादा माफ़ करने वाला, बहुत ज़्यादा मग़्फ़िरत करने वाला है।⁶ (ऐसी बारीक़ियों पर पकड़ नहीं करता)। (60) यह (मोमिनों का ग़ालिब कर देना) इस सबब से है कि अल्लाह तआला रात (के हिस्सों) को दिन में दाख़िल कर देता है और दिन के (हिस्सों) को रात में दाख़िल कर देता है, और (साथ ही) इस सबब से है कि अल्लाह तआला (इन सब हालात और बातों को) ख़ूब सुनने

(पृष्ठ 610 का शेष) अन्जाम भी उनका यही रहेगा, बल्कि मुम्किन है कि इसका उल्टा हो जाए, चुनाँचे हुआ।

3. मुराद यह है कि वीरान हैं। क्योंकि आदतन पहले छत गिरती है फिर उसपर दीवारें आ पड़ती हैं।

4. इसी तरह वायदा किए गए वक़्त पर ये लोग भी अज़ाब दिए जाएँगे।

5. सो उनके भी वही दिल जो सीनों में हैं अन्ये हो रहे हैं, वरना ज़िक्क की गई उम्मतों की हालत से समझ लेते कि सच-मुच कुफ़्र अल्लाह का नापसन्दीदा है, जब ही तो इसपर अज़ाब आया।

6. यानी वह भी जल्दी मचाते और हँसी उड़ाते थे।

7. उस वक़्त कुफ़्र की पूरी सज़ा दी जाएगी।

8. पस यह मेरा दावा है और मैं इसपर दलील रखता हूँ। और अज़ाब से डराना मेरा फ़र्ज़ और ज़िम्मेदारी है, जो अपने वक़्त पर अल्लाह के इख़्तियार से वाक़ेअ और जाहिर होगा।

1. अगरचे वे अपने आपमें भी मज़बूत थीं लेकिन एतिराज़ों के जवाब से उस मज़बूती का और ज़्यादा जुहूर हो गया।

2. कि वह शक़ से आगे बढ़कर बातिल का यकीन किए हुए हैं। सो उनकी आजमाइश होती है कि देखें जवाब के बाद अब भी शुब्हात की पैरवी करते हैं या जवाब को समझकर हक़ को कबूल करते हैं।

3. मतलब यह है कि ये अज़ाब को देखे बग़ैर कुफ़्र से बाज़ न आएँगे, मगर उस वक़्त बाज़ आना (शेष तफ़सीर पृष्ठ 614 पर)

वाला, ख़ूब देखने वाला है। (61) यह (मदद) इस सबब से (यकीनी) है कि अल्लाह तआला ही (वजूद में) कामिल है, और जिन चीज़ों की ये लोग अल्लाह के सिवा इबादत कर रहे हैं, वे बिल्कुल लचर हैं, और अल्लाह ही आलीशान और (सबसे) बड़ा है। (62) (और ऐ मुखातब!) क्या तुझको यह ख़बर नहीं कि अल्लाह ने आसमान से पानी बरसाया, जिससे ज़मीन हरी-भरी हो गई, बेशक अल्लाह बहुत मेहरबान (और) सब बातों की ख़बर रखने वाला है। (63) (सब) उसी का है जो कुछ आसमानों और जो कुछ ज़मीन में है, (यानी वह सबका मालिक है) और बेशक अल्लाह ही ऐसा है जो किसी का मोहताज नहीं (और) हर तरह की तारीफ़ के लायक है। (64) ♦

(और ऐ मुखातब!) क्या तुझको यह ख़बर नहीं कि अल्लाह तआला ने तुम लोगों के काम में लगा रखा है ज़मीन की चीज़ों को और क़स्ती को (भी) कि वह दरिया में उस (खुदा) के हुक्म से चलती है, और वही आसमानों को ज़मीन पर गिरने से थामे हुए है, हाँ! मगर उसी का हुक्म हो जाए (तो ख़ैर), यकीनन अल्लाह तआला लोगों (के हाल) पर बड़ी शफ़क़त और रहमत फ़रमाने वाला है। (65) और वही है जिसने तुमको ज़िन्दगी दी, फिर (मुकर्रर वक़्त पर) तुमको मौत देगा, फिर (कियामत में दोबारा) तुमको ज़िन्दा करेगा, वाकई इनसान है बड़ा बेक़द्र। (66) (जितनी उम्मतें शरीअत वालों की गुज़री हैं) हमने (उनमें) हर उम्मत के वास्ते ज़िह्न करने का तरीक़ा मुकर्रर किया है, कि वे उसी (तरीके) पर ज़िह्न किया करते थे, सो इन (एतिराज़ करने वाले) लोगों को चाहिए कि आपसे इस (ज़िह्न के) मामले में झगड़ा न करें, और आप (उनको) अपने रब (यानी उसके दीन) की तरफ़ बुलाते रहिए, क्योंकि आप यकीनन सही रास्ते पर हैं। (67) और अगर (इसपर भी) ये लोग आपसे झगड़ा निकालते रहें, तो आप (आख़िरी बात यह) फ़रमा दीजिए कि अल्लाह तआला तुम्हारे कामों को ख़ूब जानता है। (68) अल्लाह तआला तुम्हारे दरमियान कियामत के दिन (अमली) फैसला फ़रमा देगा, जिन चीज़ों में तुम इख़िलाफ़ करते थे। (69) (आगे इसकी ताईद है कि ऐ मुखातब!) क्या तुझको मालूम नहीं कि अल्लाह तआला सब चीज़ों को जानता है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है। यकीनी बात है कि यह (सब उनका कौल व फ़ैल) आमाज़नामे में (भी महफूज़) है, (पस) यकीनन (साबित हो गया कि) यह (फ़ैसला करना) अल्लाह तआला के नज़दीक (बहुत) आसान है। (70) और ये (मुशिरक) लोग अल्लाह तआला के सिवा ऐसी चीज़ों की इबादत करते हैं जिन (की इबादत के जायज़ होने पर) अल्लाह तआला ने (अपनी किताब में) कोई हुज़्जत नहीं भेजी और न उनके पास उसकी कोई (अक़ली) दलील है, और उन ज़ालिमों का कोई मददगार न होगा। (71) और जब उन लोगों के सामने हमारी आयतें जो कि (अपने मज़ामीन में) ख़ूब

(पृष्ठ 612 का शेष) कुछ नफ़ा न देगा।

4. यानी जन्नत के मेवे और अल्लाह रब्बुल आलमीन का दीदार।

5. अगर यह शख्स बदला लेना चाहे तो दुनिया में शरीअत की मदद यकीनी है, यानी बदला लेने की इजाज़त। और अगर बदला न ले तो आख़िरत में महसूस और जाहिरी मदद ज़रूरी है, यानी ज़ालिम को अज़ाब दिया जाना।

फ़ायदा: बराबरी की इस रियायत का वाजिब होना मामलों और समाजी ज़िन्दगी में है न कि जिहाद में। तथा जो काम हर हाल में गुनाह है वे भी इस उमूम से अलग हैं, जैसे कोई किसी के माँ-बाप को बुरा कहे तो बदले में उसके माँ-बाप को बुरा कहना जायज़ न होगा।

6. ऊपर मोमिनों के ग़ालिब और काफ़िरों के मग़लूब होने का बयान था। चूँकि मुसलमानों की मौजूदा बेसरो-सामानी और काफ़िरों का तादाद और सामान व तैयारी में बहुत ज्यादा होने पर नज़र करते हुए इसमें एक तरह की दूर की बात मालूम होती थी, इसलिए आगे अपनी कुदरतें कामिला का बयान फ़रमाते हैं। और चूँकि जाहिल काफ़िरों को इस मक़ाम पर अपने माबूदों के मददगार होने का वहम भी हो सकता था, इसलिए 'ज़ालि-क बिअन्नल्ला-ह हुवल हक़ू.....' में उनका नाकारा होना इरश़ाद फ़रमाते हैं। यह मज़मून तौहीदे ज़ाती व सिफ़ाती व अफ़ज़ाली को शामिल था और मुशिरकीन की तरफ़ ख़िताब था जो कि शिर्क में मुब्तला होने से अल्लाह की नेमतों का इनकार करते थे, इसलिए 'अलमू त-र अन्नल्ला-ह अन्ज़-ल' से 'ल-कफ़ूर' तक इस मज़मून की किसी क़द्र तफ़सील फ़रमाते हैं।

1. कि अब भी कुफ़्र व शिर्क से बाज़ नहीं आता। इनसान से मुसलम़ ऐसे ही लोग हैं। इस सूर: के (शेष तफ़सीर पृष्ठ 616 पर)

वाजेह हैं, पढ़कर सुनाई जाती हैं तो तुम उन काफ़िरों के चेहरों में (अन्दरूनी नागवारी की वजह से) बुरे आसार देखते हो,¹ करीब है कि ये उन लोगों पर (अब) हमला कर बैठें- (गे) जो हमारी आयतें उनके सामने पढ़ रहे हैं। आप (उन मुशिरकों से) कहिए कि क्या मैं तुमको इस (कुरआन) से भी ज्यादा नागवार चीज़ बतला दूँ, वह दोज़ख़ है (कि) उसका अल्लाह ने काफ़िरों से वायदा किया है, और वह बुरा ठिकाना है।² (72) ♦

ऐ लोगो! एक अजीब बात बयान की जाती है, उसको कान लगाकर सुनो। (वह यह है कि) इसमें कोई शुब्हा नहीं कि जिनकी तुम खुदा को छोड़कर इबादत करते हो, वे एक (मामूली) मक्खी को तो पैदा ही नहीं कर सकते चाहे सबके सब भी (क्यों न) जमा हो जाएँ। और (पैदा करना तो बड़ी बात है, वे तो ऐसे आजिज़ हैं कि) अगर उनसे मक्खी कुछ छीन ले जाए तो उसको (तो) उससे छुड़ा (ही) नहीं सकते, ऐसा इबादत करने वाला भी लचर और ऐसा माबूद भी लचर। (73) (अफ़सोस है) उन लोगों ने अल्लाह की जैसी ताज़ीम करनी चाहिए थी (कि उसके सिवा किसी की इबादत न करते) वह न की, अल्लाह तआला बड़ी कुव्वत वाला है सबपर ग़ालिब है।³ (74) अल्लाह तआला (को इख़्तियार है) रसूल बनाने के लिए (जिसको चाहता है) चुन लेता है, फ़रिश्तों में से (जिन फ़रिश्तों को चाहे) अहक़ाम पहुँचाने वाले मुकर्रर फ़रमा देता है, और (इसी तरह) आदमियों में से। यकीनी बात है कि अल्लाह तआला ख़ूब सुनने वाला, ख़ूब देखने वाला है।⁴ (75) (यानी) वह उन (सब फ़रिश्तों और आदमियों) की आने वाली और गुज़री हुई हालतों को (ख़ूब) जानता है,⁵ और तमाम कामों का मदार अल्लाह ही पर है। (यानी वह अपनी ज़ात से मुस्तक़िल मालिक है)। (76) ऐ ईमान वालो! तुम रुकूअ किया करो और सज्दा किया करो, और अपने रब की इबादत किया करो, और (तुम) ऐसे नेक काम (भी) किया करो, उम्मीद (यानी वायदा) है कि तुम फ़लाह पाओगे। □ (77) और अल्लाह (के काम) में ख़ूब कोशिश किया करो जैसा कि उसमें कोशिश करने का हक़ है, उसने तुमको (और उम्मतों से) मुमताज़ फ़रमाया, और (उसने) तुमपर दीन (के अहक़ाम) में किसी किस्म की तंगी नहीं की, तुम अपने बाप इब्राहीम की (इस) मिल्लत पर (हमेशा) कायम रहो। उस (अल्लाह) ने तुम्हारा लक़ब मुसलमान रखा है,⁶ (कुरआन नाज़िल होने से) पहले भी और इस (कुरआन) में भी, ताकि तुम्हारे (गवाही के काबिल और मोतबर होने के) रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) गवाह हों, और (इस रसूलुल्लाह की गवाही से पहले) तुम लोगों के मुकाबले में गवाह (तजवीज़) हो।⁷ सो तुम लोग (खुसूसियत के साथ) नमाज़ की पाबन्दी रखो और ज़कात देते रहो, और अल्लाह ही को मज़बूत पकड़े रहो,⁸ वह तुम्हारा कारसाज़ है, (किसी की मुख़ालफ़त तुमको हकीकत में नुक़सानदेह न होगी) सो क्या ही अच्छा कारसाज़ है और क्या अच्छा मददगार है। (78) ♦

(पृष्ठ 614 का शेष) अक्सर हिस्सों में काफ़िरों के हुज्जत व बहस और उसके बातिल होने की वुजूहात का बयान है, उन बहसों और हुज्जत व तकरार में से एक बहस जिब्ह के मुताल्लिक थी, जिसका हासिल वही है जो अब भी बाज़ काफ़िरों की ज़बान पर मशहूर है कि खुदा का मारा हुआ मुर्दार और अपना मारा हुआ हलाल, आगे इसपर मुशिरकों को तंबीह है।

2. सही रास्ते वाले को हक़ होता है कि ग़लत रास्ते वाले को अपनी तरफ़ बुलाए। और ग़लत रास्ते वाले को यह हक़ नहीं होता।
3. क्योंकि फैसले का सबसे बड़ा मदार हाकिम के एतिबार से इल्म ही है, और ग़ैर-हाकिम के एतिबार से इल्म के साथ हुक्मत के हासिल होने की भी ज़रूरत है, और हक़ तआला का हाकिम होना मुसल्लम ही था।
4. न कौल के एतिबार से कि उनके फ़ैल के अच्छा होने पर कोई हुज्जत पेश कर सके, न अमल के एतिबार से कि उनको अज़ाब से बचा सके।

1. जैसे चेहरे पर बल पड़ जाना, नाक चढ़ जाना, तैवर बदल जाना।
2. यानी कुरआन से नागवारी का नागवार नतीजा दोज़ख़ है।
3. तो इबादत ख़ालिस उसी का हक़ था न कि उसका जो न कुव्वत वाला हो और न ग़ालिब।
4. यानी रसूल होने का मदार अल्लाह के चुन लेने पर है, इसमें फ़रिश्ता होने की कुछ खुसूसियत नहीं। बल्कि जिस तरह फ़रिश्ता होने के साथ रिसालत जमा हो सकती है, जिसको मुशिरक भी मानते हैं, इसी तरह इनसान होने के साथ (शेष तफ़सीर पृष्ठ 618 पर)

अट्टारहवाँ पार: कद् अफ़ल-हल् मुअ्मिनून

23 सूर: मुअ्मिनून 74

सूर: मुअ्मिनून मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 118 आयतें और 6 रुकूअ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

‘यकीनन उन मुसलमानों ने (आखिरत में) फ़लाह पाई’² (1) जो अपनी नमाज़ में खुशूअ करने वाले हैं।¹ (2) और जो लंग बातों से (चाहे कौली हों या फेली) अलग रहने वाले हैं।¹ (3) और जो (आमाल व अख़लाक में) अपनी सफ़ाई करने वाले हैं। (4) और जो अपनी शरमगाहों की (हराम शहवत पूरी करने से) हिफ़ाज़त करने वाले हैं। (5) लेकिन अपनी बीवियों से या अपनी (शरई) बाँदियों से (हिफ़ाज़त नहीं करते), क्योंकि उनपर (उसमें) कोई इल्ज़ाम नहीं। (6) हाँ, जो इसके अलावा (और जगह शहवत पूरी करने का) तलबगार हो,⁵ ऐसे लोग (शरई) हद से निकलने वाले हैं। (7) और जो अपनी (सुपुर्दगी में ली हुई) अमानतों और अपने अहदों का ख़्याल रखने वाले हैं। (8) और जो अपनी नमाज़ों की पाबन्दी करते हैं। (9) (पस) ऐसे ही लोग वारिस होने वाले हैं। (10) जो जन्नत के वारिस होंगे (और) वे उसमें हमेशा हमेशा रहेंगे। (11) और हमने इनसान को मिट्टी के खुलासे (यानी ग़िज़ा) से बनाया। (12) फिर हमने उसको नुत्फ़े से बनाया जो कि (एक मुकर्ररा मुद्दत तक) एक महफूज़ मक़ाम (यानी गर्भ) में रहा। (13) फिर हमने उस नुत्फ़े को खून का लोथड़ा बना दिया, फिर हमने उस खून के लोथड़े को (गोشت की) बोटी बना दिया, फिर हमने उस बोटी (के बाज़ हिस्सों) को हड्डियाँ बना दिया, फिर हमने उन हड्डियों पर गोشت चढ़ा दिया, फिर हमने (उसमें रूह डालकर) उसको एक दूसरी ही (तरह की) मख़्लूक बना दिया। सो कैसी बड़ी शान है अल्लाह की जो ताम बनाने वालों से बढ़कर है।⁶ (14) फिर तुम इस (तमाम अजीब किस्से) के बाद ज़रूर ही मरने वाले हो। (15) फिर तुम कियामत के दिन दोबारा ज़िन्दा किए जाओगे। (16) और हमने तुम्हारे ऊपर सात आसमान बनाए और हम मख़्लूक (की मस्तहतों) से बेख़बर न थे। (17) और हमने आसमान से (मुनासिब) मिक्दार के साथ

(पृष्ठ 616 का शेष) भी वह जमा हो सकती है।

5. गरज़ सबके सुने हुए और देखे हुए हालात उसको मालूम हैं, उनमें से बाज़ का हाल चूँकि उनके चुन लेने को चाहता था इसलिए उन्हें रिसालत के लिए चुन लिया गया।

6. चुनाँवे इब्राहीम अलैहिस्सलाम की ज़बान से कहलवाया- ‘उम्मतम्-मुस्लि-मतल् ल-क’ और शायद कुरआन से पहले नाज़िल होने वाली किताबों में भी हो। और कुरआन में तो जगह-जगह आया है, और अल्लाह तआला ने यह उन्वान मुकर्रर किया है तो ज़रूर ही उम्पते मुहम्मदिया में इताअत व फरमाँदारी का माहा ज़्यादा होगा।

7. तुम एक बड़े मुकद्दमे में जिसमें एक फरीक अम्बिया अलैहिमुस्सलाम होंगे और दूसरा फरीक उनकी मुख़ालिफ़ कौमें होंगी। उन मुख़ालिफ़ कौमों के मुकाबले में अम्बिया अलैहिमुस्सलाम के हक में गवाही दो, और तुम्हारी गवाही से उस मुकद्दमे का फैसला अम्बिया अलैहिमुस्सलाम के हक में हो और मुख़ालिफ़ मुजरिम करार पाकर सज़ा पाने वाले हों।

8. यानी हिम्मत व इरादे के साथ दीन के कामों में लगे रहो। अल्लाह के ग़ैर के खुश होने या खुश न होने, या अपने नफ़्स की मस्तहत या नुक़सान की तरफ़ तवज्जोह मत करो।

1. इस सूर: का खुलासा ये मज़ामीन हैं- अब्दल इबादत की फज़ीलत जो शुरू ही में ज़िक्र की गई है। दूसरे अल्लाह की कुदरत के आसार का बयान जो इनाम व तौहीद दोनों पर दलालत करता है। तीसरे नुबुव्वत की तहकीक़ मय उसके मुताल्लिक जो शुब्हात हैं उनका दूर करना। चौथे मरने के बाद ज़िन्दा होना और आमाल का बदला दिया जाना। पाँचवे काफ़िरो के हाल की बुराई। (शेष तफ़सीर पृष्ठ 620 पर)

पानी बरसाया, फिर हमने उसको (मुद्दत तक) ज़मीन में ठहराया, और हम उस (पानी) के ख़त्म कर देने पर (भी) कादिर हैं। (18) फिर हमने उस (पानी) के ज़रिये से बाज़ पैदा किए खजूरों के और अंगूरों के, तुम्हारे वास्ते उनमें कसरत से मेवे भी हैं, और उनमें से खाते भी हो। (19) और (उसी पानी से) एक (ज़ैतून का) पेड़ भी (हमने पैदा किया) जो कि तूरे- सीना में (कसरत से) पैदा होता है,¹ जो कि उगता है तेल लिए हुए और खाने वालों के लिए सालन लिए हुए।² (20) और तुम्हारे लिए मवेशियों में (भी) गौर करने का मौका है कि हम तुमको उनके पेट में की चीज़ (यानी दूध) पीने को देते हैं, और तुम्हारे लिए उनमें और भी बहुत-से फायदे हैं,³ और (साथ ही) उनमें से बाज़ को खाते भी हो। (21) और उनपर और क़स्ती पर लदे-लदे फिरते (भी) हो। (22) ♦

और हमने नूह को उनकी कौम की तरफ़ पैगम्बर बनाकर भेजा, सो उन्होंने (अपनी कौम से) फ़रमाया ऐ मेरी कौम! अल्लाह ही की इबादत किया करो, उसके सिवा कोई तुम्हारे लिए माबूद बनाने के लायक नहीं, फिर क्या तुम (दूसरों को माबूद बनाने से) डरते नहीं हो। (23) पस (नूह अलैहिस्सलाम की यह बात सुनकर) उनकी कौम में जो काफ़िर सरदार थे, (अवाम से) कहने लगे कि यह शख्स सिवाय इसके कि तुम्हारी तरह का एक (मामूली) आदमी है और कुछ नहीं, (इस दावे से) उसका मतलब यह है कि तुमसे बरतर होकर रहे,⁴ और अल्लाह तआला को (रसूल भेजना) मन्ज़ूर होता तो फ़रिश्तों को भेजता, हमने यह बात अपने पहले बड़ों में नहीं सुनी। (24) बस यह एक आदमी है जिसको जुनून हो गया है। सो एक खास वक़्त (यानी उसके मरने के वक़्त) तक उस (की हालत) का और इन्तिज़ार कर लो। (25) नूह ने अर्ज़ किया कि ऐ मेरे रब! मेरा बदला ले इस वजह से कि उन्होंने मुझको झुठलाया है। (26) पस हमने (उनकी दुआ कबूल की और) उनके पास हुक्म भेजा कि तुम हमारी निगरानी में और हमारे हुक्म से क़स्ती तैयार कर लो, फिर जिस वक़्त हमारा (अज़ाब का) हुक्म (क़रीब) आ पहुँचे और (निशानी उसकी यह है कि) ज़मीन से पानी उबलना शुरू हो तो (उस वक़्त) हर किस्म (के जानवरों) में से एक-एक नर और एक-एक मादा यानी दो-दो अ़दद उस (क़स्ती) में दाख़िल कर लो, और अपने घर वालों को भी (सवार कर लो) उसको छोड़कर जिसपर उनमें से (गर्क होने का) हुक्म नाफ़िज़ हो चुका है। और (यह सुन लो कि) मुझसे काफ़िरों (की नजात) के बारे में कुछ गुप्तगू मत करना (क्योंकि) वे सब गर्क किए जाएँगे। (27) फिर जिस वक़्त तुम और तुम्हारे (मुसलमान) साथी क़स्ती में बैठ चुको तो यूँ कहना, शुक्र है खुदा का जिसने हमको काफ़िर लोगों से (यानी उनके फ़ेलों और तकलीफों से) नजात दी। (28) और यूँ कहना कि ऐ मेरे रब! मुझको (ज़मीन पर) बरक़त का उतारना उतारियो,⁵ और आप

(पृष्ठ 618 का शेष)

छटे उनमें से अक्सर की तक्वियत (यानी मज़बूती व ताक़त देने) के लिए बाज़ हिकायतें और किस्से। सातवें बाज़ आला आमाल व उम्दा अख़्लाक़ की तालीम जो पहले मज़मून के मुनासिब है।

2. यानी उन मुसलमानों ने फ़लाह पाई जो अकायद को सही रखने के साथ निम्न सिफ़्तों के साथ भी मौसूफ़ हैं।

3. खुशूअ की हकीक़त है सुकून, यानी दिल का भी कि दूसरे ख़्यालात को दिल में इरादा करके हाज़िर न करे, और जिस्म के अंगों का भी कि बेफ़ायदा हरकतें न करे। और उसकी फ़र्ज़ियत में क़लाम है, मगर हक़ यह है कि नमाज़ के सही होने के लिए तो लाज़िमी नहीं और इस दर्जे में फ़र्ज़ नहीं, लेकिन नमाज़ के क़बूल होने के लिए खुशूअ ज़रूरी है और इस दर्जे में फ़र्ज़ है।

4. 'लग़व' का अदना दर्जा अगरचे मुबाह हो मगर उसका छोड़ना अच्छा और काबिले तारीफ़ है, और नाफ़रमानी लग़व का आला दर्जा है, उसका छोड़ना वाजिब है। पस लग़व के मायने हैं ग़ैर-मुफ़ीद, फिर उसकी दो किस्में हैं- नुक़सानदेह व ग़ैर-नुक़सानदेह।

5. इसके अलावा वह तलबगार हो, इसमें ज़िना व बदफ़ेली व चौपायों के साथ संभोग वग़ैरह इज्माई तौर पर और बाज़ के नज़दीक हाथ से मनी (यानी वीर्य) निकालना भी दाख़िल है। और अगर यह आयत मदनी हो तो मुताअ के हराम होने पर भी इससे दलील पकड़ना सही है।

6. क्योंकि दूसरे बनाने वाले सिर्फ़ चीज़ों को अलग-अलग कर सकते या कई चीज़ों को मिला-जुला सकते हैं, ज़िन्दगी का देना हकीक़त में यह अल्लाह ही का काम है।

1. जिस पहाड़ का नाम तूर है तूरे-सीना भी उसी का नाम है। क्योंकि वह जिस जगह है (शेष तफ़सीर पृष्ठ 622 पर)

सब उतारने वालों से अच्छे हैं। (29) इस (ज़िज़्र हुए वाकिए) में बहुत-सी निशानियाँ हैं, और हम (ये निशानियाँ मालूम कराकर अपने बन्दों को) आजमाते हैं।¹ (30) फिर हमने नूह (अलैहिस्सलाम) की कौम के बाद दूसरा गिरोह पैदा किया।² (31) फिर हमने उनमें एक पैगम्बर को भेजा जो उनमें ही के थे,³ (उन पैगम्बर ने कहा) कि तुम लोग अल्लाह तआला ही की इबादत करो उसके सिवा तुम्हारा और कोई (हकीकी) माबूद नहीं, क्या तुम (शिरक से) डरते नहीं हो। (32) ♦

और (उन पैगम्बर की यह बात सुनकर) उनकी कौम में जो सरदार थे, जिन्होंने (खुदा और रसूल के साथ) कुफ़ किया था, और आखिरत के आने को झुठलाया था, और हमने उनको दुनियावी ज़िन्दगी में ऐश व आराम भी दिया था, कहने लगे कि बस यह तो तुम्हारी तरह एक (मामूली) आदमी हैं, (चुनाँचे) ये वही खाते हैं जो तुम खाते हो और वही पीते हैं जो तुम पीते हो। (33) और अगर तुम अपने जैसे एक (मामूली) आदमी के कहने पर चलने लगे तो बेशक तुम (अक्ल के) घाटे में हो।⁴ (34) क्या यह शख्स तुमसे कहता है कि जब तुम मर जाओगे और (मरकर) मिट्टी और हड्डियाँ हो जाओगे तो (दोबारा ज़िन्दा करके ज़मीन से) निकाले जाओगे। (35) बहुत ही दूर और बहुत ही दूर “की बात” है, जो बात तुमसे कही जाती है। (36) बस ज़िन्दगी तो यही हमारी दुनियावी ज़िन्दगी है कि हममें कोई मरता है और कोई पैदा होता है, और हम दोबारा ज़िन्दा न किए जाएँगे।⁵ (37) बस यह एक ऐसा शख्स है जो अल्लाह पर झूठ बाँधता है, और हम तो हरगिज़ इसको सच्चा न समझेंगे। (38) पैगम्बर ने दुआ की कि ऐ मेरे रब! मेरा बदला ले, इस वजह से कि उन्होंने मुझको झुठलाया। (39) इरशाद हुआ कि ये लोग जल्द ही शर्मिन्दा होंगे। (40) चुनाँचे उनको एक सख्त आवाज़ (यानी अज़ाब) ने सच्चे वायदे के मुवाफ़िक़ आ पकड़ा, (जिससे वे सब हलाक हो गए) फिर हमने उनको कूड़े-करकट (की तरह बरबाद) कर दिया, सो खुदा की मार काफ़िर लोगों पर।⁶ (41) फिर उन (आद व समूद) के हलाक होने के बाद हमने और उम्मतों को पैदा किया। (42) (उन उम्मतों में से) कोई उम्मत अपनी मुक़र्ररा मुद्दत से (हलाक होने में) न आगे आ सकती थी और न (उस मुद्दत से) वे लोग पीछे हट सकते थे। (43) फिर (उनके पास) हमने अपने पैगम्बरों को एक के बाद एक भेजा, जब कभी किसी उम्मत के पास उस उम्मत का (खास) रसूल आया, उन्होंने उसको झुठलाया, सो हमने (भी हलाक करने में) एक के बाद एक का नम्बर लगा दिया। और हमने उनकी कहानियाँ बना दी,⁷ सो खुदा की मार उन लोगों पर जो (अम्बिया के समझाने पर भी) ईमान न लाते थे। (44) फिर हमने मूसा और उनके भाई हारून को अपने अहकाम और खुली दलील⁸ देकर फिरऔन और उसके दरबारियों के पास (भी पैगम्बर बनाकर) भेजा। (45) सो उन लोगों

(पृष्ठ 620 का शेष) उसका नाम सीना है और सीनीन भी। अगरचे अब कुछ और नाम हो गया हो, और जैतून की तख़सीस तूर के साथ उसके कसरत से पैदा होने की वजह से है। और तूर की तख़सीस जैतून के साथ फ़ायदों के ज्यादा होने की वजह से है।

2. यानी उसके फल से दोनों काम की चीज़ हासिल होती है। चाहे रोशन करने और मालिश करने के काम में लाओ चाहे उसमें रोटी डुबोकर खाओ।

3. जैसे उनके बाल और ऊन काम आते हैं।

4. यानी ओहदा व हुकूमत मकसूद है।

5. यानी ज़ाहिरी व बातिनी इत्मीनान के साथ रखियो।

1. कि देखें कौन-सा फ़ायदा उठाता है और कौन-सा नहीं उठाता।

2. मुराद कौमे आद है या समूद।

3. मुराद हूद अलैहिस्सलाम या सालेह अलैहिस्सलाम हैं।

4. यानी बड़ी बेवकूफी है।

5. तो भला ऐसा शख्स कहीं इताअत व इत्तिबा के लायक हो सकता है।

(शेष तफ़सीर पृष्ठ 624 पर)

ने (उनकी तस्दीक व इताअत से) तकब्बुर किया, और वे लोग थे ही घमण्डी।⁴ (46) चुनाँचे वे (आपस में) कहने लगे कि क्या हम ऐसे दो शख्सों पर जो हमारी तरह के आदमी हैं ईमान ले आएँ, हालाँकि उनकी कौम (तो खुद) हमारे हुक्म के ताबे हैं।⁵ (47) गरज़ वे लोग उन दोनों को झुठलाते ही रहे, पस हलाक किए गए। (48) और (उनके हलाक होने के बाद) हमने मूसा (अलैहस्सलाम) को किताब (यानी तौरात) अता फरमाई, ताकि (उसके ज़रिये से) वे लोग हिदायत पाएँ। (49) और हमने मरियम (अलैहस्सलाम) के बेटे (ईसा अलैहस्सलाम) को और उनकी माँ (हज़रत मरियम अलैहस्सलाम) को बड़ी निशानी बनाया, और हमने उन दोनों को एक ऐसी बुलन्द ज़मीन पर लेजाकर पनाह दी⁶ जो (ग़ल्लों और मेवों के पैदा होने की वजह से) ठहरने के काबिल और हरी-भरी जगह थी। (50) ♦

ऐ पैगम्बरो! तुम (और तुम्हारी उम्मतें) नफ़ीस चीज़ें खाओ और नेक काम (यानी इबादत) करो, (और) मैं तुम सबके किए हुए कामों को ख़ूब जानता हूँ।⁷ (51) और (हमने उन सबसे यह भी कहा कि) यह है तुम्हारा तरीका कि वह एक ही तरीका है,⁸ और (हासिल उस तरीके का यह है) कि मैं तुम्हारा रब हूँ, सो तुम मुझसे डरते रहो।⁹ (52) सो उन लोगों ने अपने दीन में अपना तरीका अलग-अलग करके इख़िलाफ़ पैदा कर लिया। हर ग़िरोह के पास जो दीन है वह उसी से खुश है।¹⁰ (53) सो आप उनको उनकी (उसी) जहालत में एक ख़ास वक़्त (यानी मौत तक) रहने दीजिए। (54) क्या ये लोग यूँ गुमान कर रहे हैं कि हम उनको जो कुछ माल व औलाद देते चले जाते हैं (55) तो हम उनको जल्दी-जल्दी फ़ायदा पहुँचा रहे हैं, (यह बात हरगिज़ नहीं) बल्कि ये लोग (उसकी वजह) नहीं जानते। (56) इसमें कोई शक नहीं कि जो लोग अपने रब की हैबत से डरते हैं (57) और जो लोग अपने रब की आयतों पर ईमान रखते हैं। (58) और जो लोग (उस ईमान में) अपने रब के साथ शिर्क नहीं करते हैं। (59) और जो लोग (अल्लाह की राह में) देते हैं जो कुछ देते हैं, और (बावजूद देने के) उनके दिल इससे ख़ौफ़ज़दा होते हैं कि वे अपने रब के पास जाने वाले हैं।¹¹ (60) ये लोग (अलबत्ता) अपने फ़ायदे जल्दी-जल्दी हासिल कर रहे हैं, और वे उनकी तरफ़ दौड़ते हैं, (न कि ये काफ़िर लोग जिनका ज़िक्र हुआ)। (61) और हम (तो) किसी को उसकी वुस्अत से ज़्यादा काम करने को नहीं कहते, (पस जो काम बतला रखे हैं, सब आसान ही हैं) और हमारे पास एक दफ़्तर (नामा-ए-आमाल का मस्फूज़) है, जो ठीक-ठीक (सबका हाल) बता देगा और लोगों पर ज़रा भी जुल्म न होगा। (62) बल्कि उन काफ़िरों के दिल इस दीन की तरफ़ से जहालत (और शक) में हैं, और इसके अलावा उन लोगों के और भी (बुरे-बुरे)

(पृष्ठ 622 का शेष)

6. चूँकि “सैहा” (यानी सख़्त आवाज़) से समूद का अज़ाब दिया जाना दूसरी आयतों में भी आया है। इस वजह से बाज़ ने तो इसको समूद का किस्सा समझा है, और चूँकि अक्सर जगह नूह अलैहस्सलाम की कौम के बाद कौमे आद का किस्सा आया है इस बात से बाज़ ने इसको आद का किस्सा समझा है, और मुराद “सैहा” से एक हौलनाक सज़ा ली है, या मुम्किन है कि आद पर भी “सैहा” आया हो।

7. यानी वे ऐसे नेस्तनाबूद हुए कि सिवाय कहानियों के उनका कुछ नामो-निशान न रहा।

8. यानी साफ़ मोज़िज़ा जो कि नुबुव्वत की दलील है।

1. यानी पहले ही से उनका दिमाग़ सड़ा हुआ था।

2. यानी हमको तो खुद उनकी कौम पर सरदारी हासिल है। फिर उन दोनों को हमपर कैसे सरदारी हासिल हो सकती है।

3. “हेरो देस” नाम का एक ज़ालिम बादशाह नुज़ूमियों से यह सुनकर कि ईसा अलैहस्सलाम को सरदारी हासिल होगी बचपन ही में उनका दुश्मन हो गया था। अल्लाह के ख़बर देने से मरियम अलैहस्सलाम उनको लेकर मुल्क मिस्र चली गई और उस ज़ालिम के मरने के बाद फिर ‘शाम’ चली आई।

4. पस इबादतों पर फल अता करूँगा। (शेष तफ़सीर पृष्ठ 626 पर)

अमल हैं जिनको ये करते रहते हैं। (63) यहाँ तक कि हम जब उनके खुशहाल लोगों को (मौत के बाद) अज़ाब में धर पकड़ेंगे तो फौरन चिल्ला उठेंगे।¹ (64) (उस वक़्त उनसे कहा जाएगा कि) अब मत चिल्लाओ, हमारी तरफ़ से तुम्हारी बिलकुल मदद न होगी।² (65) मेरी आयतें तुमको (रसूल की ज़बानी) पढ़-पढ़कर सुनाई जाया करती थीं तो तुम उल्टे पाँव भागते थे (66) तकब्बुर करते हुए, कुरआन का मशगला बनाते हुए, (इस कुरआन की शान में) बेहूदा बकते हुए।³ (67) तो क्या उन लोगों ने इस (अल्लाह के) कलाम में गौर नहीं किया, या उनके पास ऐसी चीज़ आई है जो उनके पहले बड़ों के पास नहीं आई थी।⁴ (68) या ये लोग अपने रसूल (की दियानत, अमानत और सच्चाई) से वाकिफ़ न थे इस वजह से उनके इनकारी हुए।⁵ (69) या ये लोग आपके बारे में जुनून के कायल हैं, (हालाँकि आपका आला दरजे का सही राय वाला होना मुसल्लम है) बल्कि (उनके झुठलाने की असल वजह यह है कि) यह रसूल उनके पास हक़ बात लेकर आए हैं, और उनमें अक्सर लोग हक़ से नफ़रत रखते हैं।⁶ (70) और (अगरचे यह मुहाल है लेकिन अगर फ़र्ज़ कर लो कि) अगर दीने हक़ उनके ख़्यालात के ताबे हो जाता तो तमाम आसमान और ज़मीन और जो उनमें (आबाद) हैं सब तबाह हो जाते, बल्कि हमने उनके पास उनकी नसीहत की बात भेजी, सो ये लोग अपनी (नफ़े वाली) नसीहत से भी मुँह मोड़ते हैं। (71) या आप उनसे कुछ आमदनी चाहते हैं, तो आमदनी तो आपके रब की सबसे बेहतर है, और वह सब देने वालों से अच्छा है। (72) और (उनकी हालत का खुलासा यह है कि) आप तो उनको सीधे रास्ते की तरफ़ (जिसको ऊपर हक़ कहा है) बुला रहे हैं (73) और उन लोगों की जो आख़िरत पर ईमान नहीं रखते यह हालत है कि उस (सीधे) रास्ते से हटते जाते हैं। (74) और अगर हम उनपर मेहरबानी फ़रमा दें और उनपर जो तकलीफ़ है उसको हम दूर भी कर दें तो वे लोग (फिर) अपनी गुमराही में भटकते हुए इसरार करते हैं।⁷ ♦ (75) और हमने उनको अज़ाब में गिरफ़्तार भी किया है, सो उन लोगों ने अपने रब के सामने (पूरे तौर से) इन्क़िसारी की और न आज़िज़ी इख़्तियार की। (76) यहाँ तक कि हम जब उनपर सख़्त अज़ाब का दरवाज़ा खोल देंगे तो उस वक़्त बिलकुल हैरान रह जाएँगे। (77) ♦

और वह (अल्लाह तआला) ऐसा (कादिर व नेमत देने वाला) है, जिसने तुम्हारे लिए कान और आँखें और दिल बनाए,⁸ (लेकिन) तुम लोग बहुत ही कम शुक्र करते हो।⁹ (78) और वह ऐसा है जिसने तुमको ज़मीन में फैला रखा है, और तुम सब (कियामत में) उसी के पास लाए जाओगे।¹⁰ (79) और वह ऐसा है जो

(पृष्ठ 624 का शेष)

5. यानी किसी शरीअत में अलग नहीं हुआ।

6. और मेरे अहक़ाम की मुख़ालफ़त मत करो।

7. और उसके बातिल होने के सुबूत के बावजूद हक़ समझता है, तो आप उन कुरैश के मुश्रिकों के ऐसे ही बिना दलील के दावे और कुफ़्र पर हठधर्मी पर गुम न कीजिए।

8. यानी बावजूद देने के उनके दिल ख़ौफ़ज़दा रहते हैं कि देखिए वहाँ जाकर इन सदकात का क्या फल और नतीजा ज़ाहिर हो, ऐसा न हो कि हुक्म के मुवाफ़िक़ न दिया गया हो, जैसे हलाल माल न हो, या नीयत ख़ालिस न हो, तो उल्टी पकड़ होने लगे।

1. और सारा घमण्ड करना जिसके ये आदी हैं, सब हवा हो जाएगा।

2. क्योंकि यह बदला मिलने की जगह है अमल करने की जगह नहीं है कि चिल्लाना और आज़िज़ी करना मुफीद हो।

3. कोई उसको जादू कहता था, कोई शेर कहता था और मशगले का यही मतलब है।

4. मुराद इससे रसूलों के ज़रिये अल्लाह के अहक़ाम का आना है। मतलब यह कि यह बात भी नहीं हुई कि इन रसूल पर यह नई वज़ा आई हो, बल्कि शरीअतें तो रसूलों के ज़रिये से हमेशा से नाज़िल होती आई हैं। पस झुठलाने की यह वजह भी बातिल ठहरी।

5. यानी यह वजह भी बातिल है, क्योंकि आपके सच्चा होने पर सबका इत्तिफ़ाक़ था।

6. पस यही असल वजह है झुठलाने और इत्तिबा न करने की।

7. और वे कौल व क़रार जो मुसीबत के वक़्त किए थे सब ख़त्म हो जाएँगे।

(शेष तफ़सीर पृष्ठ 628 पर)

जिलाता है और मारता है, और उसी के इख्तियार में है रात और दिन का घटना-बढ़ना, सो क्या तुम (इतनी बात) नहीं समझते? (80) बल्कि यह भी वैसी ही बात कहते हैं जो अगले (काफिर) लोग कहते चले आए हैं। (81) (यानी) यूँ कहते हैं कि क्या जब हम मर जाएँगे और हम मिट्टी और हड्डियाँ हो जाएँगे तो क्या हम दोबारा ज़िन्दा किए जाएँगे। (82) इसका तो हमसे और (हमसे) पहले हमारे बड़ों से वायदा होता चला आया है, ये कुछ नहीं महज़ बे-सनद बातें हैं जो अगलों से नकल होती चली आती हैं। (83) आप (जवाब में) कह दीजिए कि (अच्छा यह बतलाओ कि) यह ज़मीन और जो इसपर रहते हैं, यह किसके हैं, अगर तुमको कुछ ख़बर है। (84) वे ज़रूर यही कहेंगे कि अल्लाह के हैं। (तो) उनसे कहिए कि फिर क्यों नहीं ग़ौर “व फ़िक्क” करते? (85) (और) आप यह भी कहिए कि (अच्छा यह बतलाओ कि) इन सात आसमानों का मालिक और आलीशान अर्श का मालिक कौन है? (86) (उसका भी) वे ज़रूर यही जवाब देंगे कि यह भी (सब) अल्लाह का है, (उस वक़्त) आप कहिए कि फिर तुम (उससे) क्यों नहीं डरते? (87) आप (उनसे) यह भी कहिए कि (अच्छा) वह कौन है जिसके हाथ में तमाम चीज़ों का इख्तियार है और वह पनाह देता है और उसके मुकाबले में कोई किसी को पनाह नहीं दे सकता, अगर तुमको कुछ ख़बर है। (88) (तब भी जवाब में) वे ज़रूर यही कहेंगे कि ये सब रिफ़्तें भी अल्लाह ही की हैं, आप (उस वक़्त) कहिए कि फिर तुमको कैसा ख़ब्त हो रहा है? (89) बल्कि हमने उनको सच्ची बात पहुँचाई है, और यकीनन ये झूठे हैं। (90) अल्लाह ने किसी को औलाद करार नहीं दिया और न उसके साथ कोई और खुदा है, अगर ऐसा होता तो हर खुदा अपनी मख़्लूक को (तक़सीम करके) अलग कर लेता और एक-दूसरे पर चढ़ाई करता। अल्लाह उन (बुरी और बेहूदा) बातों से पाक है, जो ये लोग उसके (मुताल्लिक) बयान करते हैं। (91) जानने वाला है सब छुपे हुए और ज़ाहिर का, गरज़ उन लोगों के शिर्क से वह बुलन्द और पाक है। (92) ♦

आप (अल्लाह तआला से) दुआ कीजिए कि ऐ मेरे परवदिगार! जिस अज़ाब का उन काफ़िरो से वायदा किया जा रहा है, अगर आप मुझको दिखा दें (93) तो ऐ मेरे रब! मुझको उन ज़ालिम लोगों में शामिल न कीजिए। (94) और हम इस बात पर कादिर हैं कि जो उनसे वायदा कर रहे हैं आपको भी दिखला दें (95) (लेकिन जब तक उनपर अज़ाब न आए) आप उनकी बदी का दफ़ीया ऐसे बर्ताव से कर दिया कीजिए जो बहुत ही अच्छा (और नरम) हो,⁵ हम ख़ूब जानते हैं जो-जो कुछ ये (आपके बारे में) कहा करते हैं। (96)

(पृष्ठ 626 का शेष)

8. कि आराम भी बरतो और दीन का भी ख़्याल व एहसास रखो।

9. क्योंकि असली शुक्र यह था कि उस नेमत देने वाले के पसन्दीदा दीन को कबूल करते और दोबारा ज़िन्दा करके उठाने पर उसकी कुदरत का इनकार न करते।

10. उस वक़्त नेमतों की इस नाशुक्री की हकीकत मालूम होगी।

1. कि कुदरत होने की ये दलीलें तौहीद और मरने के बाद ज़िन्दा करने दोनों पर दलालत करती हैं, मगर फिर भी हम नहीं मानते।

2. कि मरने के बाद ज़िन्दा करने और तौहीद दोनों का तुमको सुबूत हो जाए।

3. कि उसकी कुदरत और दोबारा ज़िन्दा करने की निशानियों का इनकार करते हो।

4. कि इन सब मुकद्दमात को मानते हो और नतीजे को जो कि तौहीद और मरने के बाद फिर ज़िन्दा होने का एतिकाद है, नहीं मानते।

5. यानी अपनी ज़ात के लिए बदला न लीजिए, बल्कि हमारे इवाले कर दिया कीजिए।

और आप यूँ दुआ किया कीजिए कि ऐ मेरे रब! मैं आपकी पनाह माँगता हूँ, शैतानों के वस्वसों से। (97) और ऐ मेरे रब! आपकी पनाह माँगता हूँ इससे कि शैतान मेरे पास भी आएँ।¹ (98) यहाँ तक कि जब उनमें से किसी (के सर) पर मौत आ (खड़ी हो-) ती है, उस वक्त कहता है कि ऐ मेरे रब! मुझको (दुनिया में) फिर वापस भेज दीजिए। (99) ताकि जिस (दुनिया) को मैं छोड़कर आया हूँ, उसमें फिर जाकर नेक काम करूँ, हरगिज़ (ऐसा) नहीं (होगा)। यह (उसकी) एक बात ही बात है, जिसको यह कहे जा रहा है,² और उन लोगों के आगे एक (चीज़) आड़ (की आने वाली) है, (मुराद इससे मौत है) कियामत के दिन तक। (100) फिर जब (कियामत में) सूर फूँका जाएगा तो उनमें (जो) आपसी रिश्ते-नाते (थे) उस दिन न रहेंगे,³ और न कोई किसी को पूछेगा।⁴ (101) सो जिस शख्स का (ईमान का) पल्ला भारी होगा,⁵ तो ऐसे लोग कामयाब (यानी नजात पाने वाले) होंगे। (102) और जिस शख्स का पल्ला हल्का होगा, (यानी वह काफ़िर होगा) सो ये वे लोग होंगे जिन्होंने अपना नुकसान कर लिया और जहन्नम में हमेशा के लिए रहेंगे। (103) उनके चेहरों को (उस जहन्नम की) आग झुलसूती होगी, और उस (जहन्नम) में उनके मुँह बिगड़े हुए होंगे। (104) क्यों क्या तुमको (दुनिया में) मेरी आयतें पढ़कर सुनाई नहीं जाया करती थीं और तुम उनको झुठलाया करते थे। (यह उसकी सज़ा मिल रही है)। (105) वे कहेंगे कि ऐ हमारे रब! (वाकई) हमारी बदबख्शी ने हमको घेर लिया था और (बेशक) हम गुमराह लोग थे।⁶ (106) ऐ हमारे रब! हमको इस (जहन्नम) से (अब) निकाल दीजिए, फिर अगर हम दोबारा (ऐसा) करें तो हम बेशक कुसूरवार हैं। (107) इरशाद होगा कि इसी (जहन्नम) में धुतकारे हुए पड़े रहो और मुझसे बात मत करो। (108) मेरे बन्दों में एक गिरोह था जो (हमसे) अर्ज़ किया करते थे कि ऐ हमारे रब! हम ईमान ले आए सो हमको बख्श दीजिए और हमपर रहमत फरमाइए और आप सब रहम करने वालों से बढ़कर रहम करने वाले हैं। (109) सो तुमने उनका मज़ाक बनाया था (और) यहाँ तक (उसका मशगला किया) कि मशगले ने तुमको हमारी याद भी भुला दी, और तुम उनसे हँसी-मज़ाक किया करते थे। (110) मैंने उनको आज उनके सब्र का यह बदला दिया है कि वही कामयाब हुए।⁷ (111) इरशाद होगा (कि अच्छा यह बतलाओ) तुम बरसों की गिनती से किस कद्र मुद्दत ज़मीन पर रहे होगे। (112) वे जवाब देंगे कि हम एक दिन या एक दिन से भी कम रहे होंगे, (और सच यह है कि हमको याद नहीं) सो गिनने वालों से पूछ लीजिए।⁸ (113) इरशाद होगा कि तुम (दुनिया में) थोड़ी ही मुद्दत रहे (लेकिन) क्या अच्छा होता कि तुम

1. यह दुआ इस वजह से नहीं है "अल्लाह अपनी पनाह" कि ऐसा होने का कोई शक व गुमान भी है, बल्कि इज़हार है अज़ाब के उतरने का कि जहाँ इसकी कोई गुन्जाइश और वहम भी नहीं जब वहाँ पनाह माँगने का हुक्म है तो जो मुस्तहिक हैं उनको तो बहुत ही डरना चाहिए।
2. और वह बात पूरी होने वाली नहीं।
3. यानी कोई किसी की हमदर्दी नहीं करेगा।
4. गरज़ न रिश्ता-नाता काम आएगा न दोस्ती और परिचय, बस वहाँ काम की चीज़ एक ईमान होगा जिसकी आम पहचान के लिए कि सबपर ज़ाहिर हो जाए एक तराजू खड़ी की जाएगी और उससे आमाँल व अक़ीदों का वज़न होगा।
5. यानी वह मोमिन होगा।
6. यानी हम जुर्म का इकरार और उसपर शर्मिन्दगी व माज़िरत का इज़हार करके दरख्वास्त करते हैं कि अब हमारे जुर्म बख्श दिए जाएँ।
7. जवाब का मतलब यह हुआ कि तुम्हारा कुसूर इस काबिल नहीं कि सज़ा के वक्त इकरार करने से माफ़ कर दिया जाए, क्योंकि तुमने ऐसा मामला किया जिससे हमारे हुक्क भी जाया हुए और बन्दों के हुक्क भी, और बन्दे भी कैसे? हमारे मकबूल और महबूब! जो हमसे बहुत ही खुसूसियत रखते थे। पस इसकी सज़ा के लिए हमेशा के लिए और पूरी सज़ा होना मुनासिब है। और मोमिनों को फ़लाह व कामयाबी की जज़ा देना यह भी काफ़िरों की सज़ाओं में से एक सज़ा है, क्योंकि दुश्मनों की कामयाबी से रुहानी तकलीफ़ होती है।
8. यानी फ़रिश्तों से।

(यह बात दुनिया में) समझते होते। (114) हाँ! तो क्या तुमने यह ख्याल किया था कि हमने तुमको यूँ ही (हिक्मत से खाली) बेकार पैदा कर दिया है, और यह (ख्याल किया था) कि तुम हमारे पास नहीं लाए जाओगे। (115) सो अल्लाह तआला बहुत ही आलीशान है जो कि हकीकी बादशाह है, उसके सिवा कोई भी इबादत के लायक नहीं, (और वह) अर्शे अज़ीम का मालिक है। (116) और जो शख्स (इस बात पर दलील कायम होने के बाद) अल्लाह के साथ किसी और माबूद की भी इबादत करे कि जिस (के माबूद होने) पर उसके पास कोई भी दलील नहीं, सो उसका हिसाब उसी के रब के यहाँ होगा, (जिसका लाज़िमी नतीजा यह है कि) यकीनन काफ़िरों को फ़लाह न होगी। (117) और आप यूँ कहा करें कि ऐ मेरे रब! (मेरी ख़ताएँ) माफ़ कर और रहम कर, और तू सब रहम करने वालों से बढ़कर रहम करने वाला है। (118) ♦

24 सूर: नूर 102

सूर: नूर मदीना में नाज़िल हुई। इसमें 64 आयतें और 9 रुकूअ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

यह एक सूर: है जिस (के अल्फ़ाज़) को (भी) हम (ही) ने नाज़िल किया है और इस (के मायने यानी अहकाम) को (भी) हम (ही) ने मुक़र्रर किया है और हमने इस सूर: में साफ़-साफ़ आयतें नाज़िल की हैं, ताकि तुम समझो और अमल करो। (1) ज़िना कराने वाली औरत और ज़िना करने वाला मर्द, सो उनमें से हर एक को सौ दुर्रें मारो,⁴ और तुम लोगों को उन दोनों पर अल्लाह के मामले में ज़रा रहम न आना चाहिए अगर अल्लाह पर और क़ियामत के दिन पर ईमान रखते हो, और दोनों की सज़ा के वक़्त मुसलमानों की एक जमाअत को हाज़िर रहना चाहिए। (2) ज़ानी निकाह भी किसी के साथ नहीं करता सिवाय ज़ानिया या मुशिरका के, और (इसी तरह) ज़ानिया के साथ भी और कोई निकाह नहीं करता सिवाय ज़ानी या मुशिरक के, और यह (यानी ऐसा निकाह) मुसलमानों पर हराम (और गुनाह को वाजिब करने वाला) किया गया है। (3) और जो लोग (ज़िना की) तोहमत लगाएँ पाकदामन औरतों को, और फिर (अपने दावे पर) चार गवाह न ला सकें तो ऐसे लोगों को अस्सी दुर्रें लगाओ, और उनकी कोई गवाही कभी कबूल मत करो, (यह तो दुनिया में उनकी सज़ा हुई) और ये लोग (आख़िरत में भी सज़ा के मुस्तहक़ हैं, क्योंकि) फ़ासिक हैं। (4) लेकिन जो लोग इस (तोहमत लगाने) के बाद (खुदा के सामने) तौबा कर लें और अपनी (हालत की) इस्ताह कर लें सो (इस हालत में) अल्लाह तआला ज़रूर मग़्फ़िरत करने वाला, रहमत करने वाला है। (5) और जो लोग अपनी

1. मतलब यह कि जब हमने आयतों में जिनका सच्चा होना सही दलीलों से साबित है, मरने के बाद ज़िन्दा होने और आमाल का बदला दिए जाने की ख़बर दी थी, तो मालूम हो गया था कि जो मुक़ल्लफ़ हैं उनके पैदा करने की हिक्मतों में से एक हिक्मत यह भी है। इसका इनकार करना कितनी ख़तरनाक और सख़्त बात थी।
2. आपका मग़्फ़िरत व रहमत माँगना अपने दर्जे के मुवाफ़िक़ है, पस इससे नाफरमानी और गुनाह का शुब्हा नहीं हो सकता।
3. इस तम्हीद में अपनी तरफ़ मन्सूब फरमाकर सूर: के अल्फ़ाज़ और मायनों का अज़ीमुश़्शन और आला दर्जे का होना खुद-बखुद ज़ाहिर हो गया। फिर अल्फ़ाज़ का मायनों पर वाज़ेह तौर पर दलालत करना और फिर इस मजमूए की ग़रज़ बयान फरमाने से इन अहकाम पर अमल करने का बहुत ही ज़्यादा एहतिमाम व तवज्जोह करने की ज़रूरत व अहमियत ज़ाहिरे हो गई।
4. यह सज़ा उस ज़ानी और ज़ानिया की है जो आज़ाद, आक़िल, बालिग़ हों और निकाह किए हुए न हों, या निकाह के बाद हमबिस्तरी न कर चुके हों। और जो आज़ाद न हो उसके पचास दुर्रें लगते हैं, और जो आक़िल या बालिग़ न हो वह मुक़ल्लफ़ ही नहीं, और जिस मुसलमान में तमाम सिफ़तें हों, यानी आज़ाद हो, बालिग़ हो, अक़ल वाला हो, निकाह और हमबिस्तरी कर चुका हो ऐसे शख्स को “मुससिन” कहते हैं, उसकी सज़ा ‘रज्म’ (यानी पत्थर मार-मारकर उसको हलाक कर देना) है। और जो बीमारी (शेष तफ़सीर पृष्ठ 634 पर)

(निकाह की हुई) बीवियों को (ज़िना की) तोहमत लगाएँ और उनके पास सिवाय अपने ही (दावे के) और कोई गवाह न हों (जिनको संख्या में चार होना चाहिए) तो उनकी गवाही (जो कि रोकने को ख़त्म करने वाली या तोहमत की सज़ा हो) यही है कि चार बार अल्लाह की कसम खाकर यह कह दे कि बेशक मैं सच्चा हूँ (6) और पाँचवीं बार यह कहे कि मुझपर खुदा की लानत हो अगर मैं झूठा हूँ। (7) और (उसके बाद उस औरत से (रोकने की या ज़िना की) सज़ा इस तरह टल सकती है कि वह चार बार कसम खाकर कहे कि बेशक यह मर्द झूठा है (8) और पाँचवीं बार यह कहे कि मुझपर खुदा का ग़ज़ब हो अगर यह सच्चा हो। (9) और (ऐ मर्दों और औरतों!) अगर यह बात न होती कि तुमपर अल्लाह का फज़ल और उसका करम है और यह कि अल्लाह तआला तौबा कबूल करने वाला (और) हिक्मत वाला है तो तुम बड़ी दिक्कतों और परेशानियों में पड़ जाते। (10) ♦

जिन लोगों ने यह तूफ़ान (हज़रत आयशा सिद्दीका रज़ियल्लाहु अन्हा के बारे में) बर्पा किया है, (ऐ मुसलमानो!) वह तुम्हारे में का एक (छोटा-सा) गिरोह है,² तुम इस (तूफ़ान बन्दी) को अपने हक में बुरा न समझो बल्कि यह (अन्जाम के एतिबार से) तुम्हारे हक में बेहतर है, उनमें से हर शख्स को जितना किसी ने कुछ किया था गुनाह हुआ। और उनमें जिसने उस (तूफ़ान) में सबसे बड़ा हिस्सा लिया उसको सज़ा सज़ा होगी।³ (11) (आगे उन तोहमत लगाने वाले मोमिनों को नसीहत के अन्दाज़ में मलामत है कि) जब तुम लोगों ने यह बात सुनी थी तो मुसलमान मर्दों और मुसलमान औरतों ने अपने आपस वालों के साथ नेक गुमान क्यों न किया,⁴ और (ज़बान से) यूँ क्यों न कहा कि यह खुला झूठ है। (12) (आगे इस अच्छे गुमान के वाजिब होने की वजह इरशाद है कि) ये (तोहमत लगाने वाले) लोग (अपने) उस (कौल) पर चार गवाह क्यों न लाए,⁵ सो जिस सूरत में ये लोग (कायदे के मुवाफ़िक) गवाह नहीं लाए तो बस अल्लाह के नज़दीक ये झूठे हैं। (13) और अगर तुमपर अल्लाह तआला का करम व फज़ल न होता दुनिया में और आख़िरत में तो जिस शग़ल में तुम पड़े थे उसमें तुमपर सज़ा अज़ाब आ पड़ता।⁶ (14) जबकि तुम इस (झूठ) को अपनी ज़बानों से नक़ल दर नक़ल कर रहे थे और अपने मुँह से ऐसी बात कह रहे थे जिसकी तुमको (किसी दलील से) बिल्कुल ख़बर नहीं, और तुम उसको हल्की बात (यानी गुनाह का सबब न होने वाली) समझ रहे थे, हालाँकि वह अल्लाह के नज़दीक बहुत भारी बात है।⁷ (15) और तुमने जब इस (बात) को (पहले) सुना था तो यूँ क्यों न

(पृष्ठ 632 का शेष) की वजह से दुर्ों के बरदाश्त करने के काबिल न हो उसकी सेहत का इन्तिज़ार करेंगे।

5. ताकि उनके ज़रिये से इसका चर्चा हो, और सुनने वालों को इबरत हो, और दूसरे लोग इससे रुकें।

6. मतलब इसका यह है कि जो लोग ज़िना के आदी हो जाते हैं और अभी उन्होंने तौबा न की हो, उनकी असल रग़बत ज़िना की तरफ़ होती है और उसी में उनको ज़्यादा लज़्ज़त आती है। यहाँ तक कि उनको जो औरत पसन्द आती है, अव्वल उनका मकसूद यही होता है कि उससे ज़िना मयस्सर हो जाए और यह हमारे साथ जानिया होना गवारा कर ले।

7. हर तोहमत का यह हुक्म नहीं बल्कि ख़ास ज़िना की तोहमत का, अगरचे यह कैद साफ़ तौर पर मज़कूर नहीं मगर “चार गवाहों” का होना इसपर दलालत करता है।

8. इसलिए फ़ासिक होने की वजह से आख़िरत के अज़ाब का जो इस्तेह्काक हुआ था वह ख़त्म हो जाएगा, अगरचे गवाही का रद्द किया जाना जो कि सज़ा का एक हिस्सा था वह फिर भी ब़ाकी रहेगा क्योंकि तौबा से सज़ा साफ़ित नहीं होती।

1. इस तरीके से दोनों सज़ा से बच सकते हैं। लेकिन वह औरत उस मर्द पर हराम हो जाएगी। इस तरह कहलवाने को ‘लिआन’ कहते हैं और लिआन ख़ास उस सूरत में होता है जब शीहर अपर्ना औरत को ज़िना की तोहमत लगा दे, या अपने बच्चे को कहे कि यह मेरे नुक्के से नहीं है।

2. तोहमत लगाने वाले कुल चार थे- एक जाती तौर पर और इस ख़बर को घड़कर जारी करने वाला यानी अब्दुल्लाह मुनाफ़िक, और तीन प्रत्यक्ष रूप से ताबे होकर यानी ‘हस्सान’ ‘मिस्तह’ और ‘हम्ना’। यह हज़रत मुख़्लिस मोमिन थे।

3. मुराद इससे अब्दुल्लाह बिन उबई मुनाफ़िक है।

(शेष तफ़सीर पृष्ठ 636 पर)

कहा कि हमारे लिए यह मुनासिब नहीं कि हम ऐसी बात मुँह से भी निकालें, अल्लाह की पनाह यह तो बड़ा बोहतान है।¹ (16) अल्लाह तआला तुमको नसीहत करता है कि फिर ऐसी हरकत मत करना अगर तुम ईमान वाले हो। (17) और अल्लाह तआला तुमसे साफ़-साफ़ अहकाम बयान करता है। और अल्लाह तआला बड़ा जानने वाला, बड़ा हिक्मत वाला है। (18) जो लोग (इन आयतों के नाज़िल होने के बाद भी) चाहते हैं कि बेहयाई की बात का मुसलमानों में चर्चा हो,² उनके लिए दुनिया और आख़िरत में दर्दनाक सज़ा (मुकर्रर) है। और (उस मामले पर इस सज़ा का ताज़्जुब मत करो, क्योंकि) अल्लाह तआला जानता है और तुम नहीं जानते। (19) और (ऐ तौबा करने वालो!) अगर यह बात न होती कि तुमपर अल्लाह का फ़ज़ल व करम है और यह कि अल्लाह तआला बड़ा शफीक़ बड़ा रहीम है तो तुम भी (इस वर्ईद से) न बचते।³ ● (20) ◆

ऐ ईमान वालो! तुम शैतान के क़दम-से-क़दम मिलाकर मत चलो (यानी उसके बहकाने पर अमल मत करो) और जो शख्स शैतान के क़दम-से-क़दम मिलाकर चलता है तो वह तो (हमेशा हर शख्स को) बेहयाई और नामाकूल काम करने को ही कहेगा, और अगर तुमपर अल्लाह का फ़ज़ल व करम न होता तो तुममें से कोई कभी भी (तौबा करके) पाक व साफ़ न होता।⁴ और लेकिन अल्लाह तआला जिसको चाहता है (तौबा की तौफीक़ देकर) पाक-साफ़ कर देता है। और अल्लाह तआला सब कुछ सुनता है, सब कुछ जानता है।⁵ (21) और जो लोग तुममें (दीनी) बुजुर्गी और दुनियावी वुसूअत वाले हैं, वे रिश्तेदारों को और मसाकीन को और अल्लाह की राह में हिजरत करने वालों को देने से क़सम न खा बैठें। और चाहिए कि वे माफ़ कर दें और दरगुज़र करें। क्या तुम यह बात नहीं चाहते कि अल्लाह तआला तुम्हारे कुसूर माफ़ कर दे, बेशक अल्लाह तआला मग़्फ़िरत करने वाला, रहम करने वाला है।⁶ (22) (आगे मुनाफ़िकों की वर्ईद की तफ़सील है) जो लोग तोहमत लगाते हैं उन औरतों को जो पाकदामन हैं (और) ऐसी बातों (के करने) से (बिलकुल) बेख़बर हैं (और) ईमान वालियाँ हैं, उनपर दुनिया और आख़िरत में लानत की जाती है और उनको (आख़िरत में) बड़ा अज़ाब होगा। (23) जिस दिन उनके ख़िलाफ़ उनकी ज़बानें गवाही देंगी और उनके हाथ और उनके पाँव भी (गवाही देंगे), उन कामों की जो कि ये लोग करते थे। (24) उस दिन अल्लाह तआला उनको वाजिबी बदला पूरा-पूरा देगा। और उनको (उस दिन ठीक-ठीक) मालूम होगा कि अल्लाह ही ठीक फैसला करने वाला (और) बात (की हकीकत) को खोल देने वाला है।⁷ (25) गन्दी औरतें (हमेशा) गन्दे मर्दों के लायक होती हैं, और गन्दे मर्द गन्दी

(पृष्ठ 634 का शेष)

4. यानी हज़रत आयशा सिद्दीका रज़ियल्लाहु अन्हा और उन सहाबी के साथ दिल से नेक गुमान क्यों न किया।

5. जो कि ज़िना के साबित करने के लिए शर्त है।

6. इससे मालूम हो गया कि सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम की तौबा कबूल हो चुकी और वे पाक होकर आख़िरत में रहमत में हैं।

7. यानी बहुत बड़े गुनाह का सबब है।

1. जैसा कि बाज़ सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने इसी तरह कहा था।

2. यानी यह ख़बर फैले कि उन मुसलमानों में यह बेहयाई की बात है। हासिले मतलब यह कि जो लोग उन मुक़द्दस और पाक हज़रात की तरफ़ ज़िना की निस्वत करते हैं।

3. आगे मुसलमानों को अपनी रहमत से बिना तख़सीस इस ज़िक्र हुए गुनाह और तमाम गुनाहों से बचने का हुक्म और तौबा के ज़रिये उनका पाक-साफ़ होना और उनपर अपना एहसान फरमाने को मुख़्तलिफ़ उन्वानों से दोबारा इरशाद फरमाते हैं।

4. या तो तौबा की तौफीक़ ही न होती जैसा कि मुनाफ़िकों को न हुई, और या तौबा कबूल न की जाती, क्योंकि हमपर कोई चीज़ वाजिब तो है नहीं।

5. आगे इसका बयान है कि बरी होने की आयतों के नाज़िल होने के बाद बाज़ सहाबा ने जिनमें हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु भी हैं और दूसरे सहाबा भी, सख़्त नाराज़गी और गुम व गुस्से में क़सम खा ली कि जिस-जिसने यह चर्चा किया है कि बाज़ उनमें से ज़रूरतमन्द भी थे उनको अब से किसी किस्म की माली इम्दाद न देंगे। अल्लाह तआला कुसूर के माफ़ कर देने और इम्दाद जारी कर देने के लिए इरशाद फरमाते हैं। (शेष तफ़सीर पृष्ठ 638 पर)

औरतों के लायक होते हैं, और पाक-साफ़ औरतें पाक-साफ़ मर्दों के लायक होती हैं, और पाक-साफ़ मर्द पाक-साफ़ औरतों के लायक होते हैं। ये उस बात से पाक हैं जो ये (मुनाफ़िक) बकते फिरते हैं। उन (हज़रात) के लिए (आखिरत में) मग़्फ़िरत और इज़ाज़त की रोज़ी (यानी ज़न्नत) है। (26) ♦

ऐ ईमान वालो! तुम अपने (खास रहने के) घरों के सिवा दूसरे घरों में दाख़िल मत हो, जब तक कि (उनसे) इजाज़त हासिल न कर लो, और (इजाज़त लेने से पहले) उनके रहने वालों को सलाम न कर लो,¹ यही तुम्हारे लिए बेहतर है। (यह बात तुमको इसलिए बतलाई है) ताकि तुम ख़्याल रखो, (और इसपर अमल करो)। (27) फिर अगर उन घरों में तुमको कोई (आदमी) मालूम न हो तो (भी) उन घरों में न जाओ, जब तक कि तुमको (इजाज़त देने वाले की जानिब से) इजाज़त न दी जाए। और अगर तुमसे (इजाज़त लेने के वक़्त) यह कह दिया जाए कि (इस वक़्त) लौट जाओ, तो तुम लौट आया करो,² यही बात तुम्हारे लिए बेहतर है, और अल्लाह तआला को तुम्हारे आमाal की सब ख़बर है। (अगर ख़िलाफ़ करोगे तो सज़ा के मुस्तहक़ होगे) (28) तुमको ऐसे मकानों में चले जाने का गुनाह न होगा जिनमें (घर के तौर पर) कोई न रहता हो, उनमें तुम्हारी कुछ इस्तेमाली ज़रूरत हो। और तुम जो कुछ ज़ाहिरी तौर पर करते हो और जो पोशीदा तौर पर करते हो अल्लाह तआला सब जानता है। (29) आप मुसलमान मर्दों से कह दीजिए कि अपनी निगाहें नीची रखें,³ और अपनी शरमगाहों की हिफ़ाज़त करें,⁴ यह उनके लिए ज़्यादा सफ़ाई की बात है। बेशक अल्लाह तआला को सब ख़बर है जो कुछ लोग किया करते हैं। (30) और (इसी तरह) मुसलमान औरतों से (भी) कह दीजिए कि (वे भी) अपनी निगाहें नीची रखें और अपनी शरमगाहों की हिफ़ाज़त करें, और अपनी ज़ीनत “यानी बनाव-सिंघार” (की जगहों) को ज़ाहिर न करें⁵ मगर जो उस (ज़ीनत की जगह) में से (आम तौर पर) खुला रहता है, (जिसके हर वक़्त छुपाने में हर्ज है)⁶ और अपने दुपट्टे अपने सीनों पर डाले रहा करें और अपनी ज़ीनत (की ज़िक्र हुई जगहों) को (किसी पर) ज़ाहिर न होने दें मगर अपने शौहरों पर या अपने (मेहरम रिश्तेदारों पर, यानी) बाप पर या अपने शौहर के बाप पर या अपने बेटों पर या अपने शौहर के बेटों पर या अपने (सगे, माँ-शरीक और बाप-शरीक) भाइयों पर⁷ या अपने भाइयों के बेटों पर या अपनी (सगी, माँ-शरीक और बाप-शरीक) बहनों के बेटों पर या अपनी औरतों पर⁸ या अपनी बाँदियों पर, या उन मर्दों पर जो तुफ़ैली (के तौर पर रहते) हों और उनको ज़रा भी तवज्जोह न हो, या ऐसे लड़कों पर जो औरतों के पर्दे की बातों से अभी नावाकिफ़ हैं। (मुराद वे लड़के हैं जो अभी बालिग़ होने के करीब न हुए हों) और अपने पाँव को ज़ोर से न रखें कि उनका छुपा हुआ ज़ेवर मालूम हो जाए। और मुसलमानो! (तुमसे जो इन अहक़ाम

(पृष्ठ 636 का शेष) 6. सो तुमको भी अल्लाह के अख़लाक व सिफ़ात को अपनाना चाहिए। तुम भी अपने क़ुरसूरवारों को माफ़ कर दो।

7. ये आयतें उनके बारे में हैं जिन्होंने तौबा नहीं की और अल्लाह की तरफ़ से बराअत का हुक्म नाज़िल होने के बाद भी अपने उस ग़लत ख़्याल से बाज़ नहीं आए। तौबा करने वालों को दोनों जहाँ में रहमत का हक़दार फ़रमाया और तौबा न करने वालों को मलऊन करार देकर उनके लिए हमेशा के अज़ाब की सज़ा मुक़र्रर फ़रमाई।

1. यानी पहले सलाम करके उनसे पूछो कि हम आएँ? और वैसे ही बेइजाज़त लिए हुए मत घुस जाओ।

2. इजाज़त लेने का यह मसला मर्दाना और ज़नाना सब घरों के लिए है। और इजाज़त लेना वाजिब है और पहले सलाम करना सुन्नत है। और अगरचे यहाँ ख़िताब मर्दों को है मगर औरतों का हुक्म भी यही है, मर्दाना में भी और ज़नाना में भी।

3. यानी जिस के जिस अंग की तरफ़ मुतलक़न देखना नाजायज़ है उसको बिल्कुल न देखें, और जिसको अपने आप में देखना जायज़ है, मगर शहवत से देखना जायज़ नहीं उसको शहवत से न देखें।

4. यानी नाजायज़ जगह में शहवत पूरी न करें, जिसमें ज़िना और बदफ़ेली सब दाख़िल है।

5. ज़ीनत से मुराद ज़ेवर और उनके मौक़ों से मुराद हाथ, पिंडली, बाजू, गर्दन, सर, सीना, कान यानी इन सब जगहों को छुपाए रखें, उन दो को छोड़कर जो आगे आते हैं। और जब इन मौक़ों को अज़नबियों से छुपाना वाजिब है, जिनका मेहरमों के (शेष तफ़सीर पृष्ठ 640 पर)

में कोताही हो गई हो तो) तुम सब अल्लाह के सामने तौबा करो ताकि तुम फ़लाह पाओ। (31) और तुममें (यानी आज़ाद लोगों में) जो बेनिकाह हों तुम उनका निकाह कर दिया करो, और (इसी तरह) तुम्हारे गुलामों और बाँदियों में से जो इस (निकाह के) लायक हो उसका भी। अगर वे लोग मुफ़िलस होंगे तो खुदा तआला (अगर चाहेगा) उनको अपने फ़ज़ल से ग़नी “मालदार व खुशहाल” कर देगा,¹ और अल्लाह तआला वुस्अत वाला है, ख़ूब जानने वाला है। (32) और ऐसे लोगों को कि जिनको निकाह की ताक़त व कुदरत नहीं उनको चाहिए कि (अपने नफ़्स को) काबू करें, यहाँ तक कि अल्लाह तआला (अगर चाहे) उनको अपने फ़ज़ल से ग़नी कर दे, (फिर निकाह कर लें) और तुम्हारे मम्लूकों “यानी गुलाम बाँदियों” में से जो मुकातब होने के इच्छुक हों तो (बेहतर है कि) उनको मुकातब बना दिया करो,² अगर उनमें बेहतरी (के आसार) पाओ। और अल्लाह के (दिए हुए) उस माल में से उनको भी दो जो अल्लाह ने तुमको दे रखा है, (ताकि जल्दी आज़ाद हो सकें) और अपनी (मिल्क में मौजूद) बाँदियों को जिना कराने पर मजबूर मत करो, (और ख़ास तौर पर) जबकि वे पाकदामन रहना चाहें, महज़ इसलिए कि दुनियावी ज़िन्दगी का कुछ फायदा (यानी माल) तुमको हासिल हो जाए, और जो शख्स उनको मजबूर करेगा तो अल्लाह उनके मजबूर किए जाने के बाद (उनके लिए) बख़्शने वाला, मेहरबान है। (33) और हमने तुम्हारे पास खुले-खुले अहक़ाम भेजे हैं, और जो लोग तुमसे पहले हो गुज़रे हैं उनकी बाज़ हिकायतें भी, और (खुदा से) डरने वालों के लिए नसीहत की बातें (भेजी हैं)। (34) ♦

अल्लाह तआला नूर (हिदायत) देने वाला है आसमानों का और ज़मीन का,³ उसके नूर (हिदायत) की अजीब हालत ऐसी है जैसे (फ़र्ज़ करो) एक ताक़ है (और) उसमें एक चिराग़ है (और) वह चिराग़ एक किन्दील में है (और वह किन्दील ताक़ में रखा है, और) वह किन्दील ऐसा (साफ़-सुथरा) है जैसे एक चमकदार सितारा हो, (और) वह चिराग़ एक निहायत मुफीद दरख़्त (के तेल) से रोशन किया जाता है कि वह जैतून (का दरख़्त) है, जो (किसी आड़ के) न पूरब रुख़ है और न पश्चिम रुख़ है। उसका तेल (इस क़द्र साफ़ और सुलगने वाला है) अगर उसको आग़ भी न छुए लेकिन ऐसा मालूम होता है कि खुद-बखुद जल उठेगा। (और जब आग़ भी लग गई तब तो) नूर पर नूर है, और अल्लाह तआला अपने (इस हिदायत के नूर) तक जिसको चाहता है राह दे देता है,⁴ और अल्लाह तआला लोगों (की हिदायत) के लिए (ये) मिसालें बयान फ़रमाता है, और अल्लाह तआला हर चीज़ को ख़ूब जानने वाला है। (35)⁵ वे ऐसे घरों में (इबादत करते) हैं जिनके मुताल्लिक अल्लाह ने हुक्म दिया है कि उनका अदब किया जाए,⁶ और उनमें अल्लाह का नाम लिया जाए, उनमें ऐसे लोग सुबह व शाम अल्लाह तआला की पाकी (नमाज़ों में) बयान करते हैं।⁷ (36) जिनको अल्लाह

(पृष्ठ 638 का शेष) सामने ज़ाहिर करना जायज़ है तो और मौकों व अंगों जैसे पीठ व पेट वगैरह जिनका खोलना मेहरम के सामने भी जायज़ नहीं, उनका पोशीदा रखना शर्ई तौर पर वाजिब हो गया। हासिल यह हुआ कि सर से पाँव तक अपना तमाम बदन पोशीदा रखें।

6. मुराद इस ज़ीनत की जगह से सही कौल के मुताबिक़ चेहरा, दोनों हाथ और दोनों पैर हैं। कि चेहरा तो कुदरती तौर पर मुकम्मल ज़ीनत की जगह है और बाज़ी ज़ीनतें इरादतन भी उसमें की जाती हैं जैसे सुर्मा, पाँवडर वगैरह। और हाथ और उँगली, अँगूठी छल्ले मेहंदी की जगह है, और पैर भी छल्लों और मेहंदी का मक़ाम हैं। पस इन जगहों को इज़हार की ज़रूरत की वजह से अलग रखा है।

7. न कि चचाज़ाद मामूज़ाद वगैरह पर।

8. मतलब यह कि मुसलमान औरतों पर, क्योंकि काफ़िर औरत का हुक्म अजनबी मर्द के जैसा है।

1. पस न मालदारी के न होने को निकाह के लिए रोक समझें और न निकाह को मालदारी के लिए रोक, इसका दारोमदार अल्लाह तआला की मर्जी पर है।

2. ‘मुकातबत’ शरीअत में एक मुआहदा है गुलाम और आका के दरमियान। आका उससे यह कहे कि तू मुझको इस क़द्र माल कमाकर दे तो तू आज़ाद है, और गुलाम कबूल कर ले।

3. यानी आसमान व ज़मीन वालों में जिनको हिदायत हुई है उन सबको अल्लाह ही ने हिदायत दी है। और आसमान व ज़मीन से मुराद कुल आलम है, पस जो मख़्लूक़ात आसमान व ज़मीन से बाहर हैं वे भी दाख़िल हो गईं जैसे अर्श को उठाने वाले। (शेष तफ़सीर पृष्ठ 642 पर)

की याद से और (खास तौर पर) नमाज़ पढ़ने से और ज़कात देने से न ख़रीद ग़फ़लत में डालने पाती है और न बेंच, (और) वे ऐसे दिन (की पकड़) से डरते रहते हैं जिसमें बहुत-से दिल और बहुत-सी आँखें उलट जाएँगी। (37) अन्जाम (उन लोगों का) यह होगा कि अल्लाह उनको उनके आमाल का बहुत ही अच्छा बदला देगा (यानी ज़न्त), और (अलावा जज़ा के) उनको अपने फ़ज़ल से और भी ज़्यादा देगा,¹ और अल्लाह तआला जिसको चाहे बेशुमार देता है। (38) और जो लोग काफ़िर हैं उनके आमाल ऐसे हैं कि एक चटियल मैदान में चमकता हुआ रेत, कि प्यासा आदमी उसको (दूर से) पानी ख़्याल करता है, यहाँ तक कि जब उसके पास आया तो उसको (जो समझ रखा था) कुछ भी न पाया और कज़ा-ए-इलाही को पाया, सो अल्लाह तआला ने उस (की उम्र) का हिसाब उसको बराबर-सराबर चुका दिया, (यानी उम्र का ख़ात्मा कर दिया) और अल्लाह तआला दम भर में हिसाब (यानी फ़ैसला) कर देता है। (39) या वे ऐसे हैं जैसे बड़े गहरे समुद्र में अन्दुरुनी अन्धेरे, कि उसको एक बड़ी लहर ने ढाँक लिया हो, उस (लहर) के ऊपर दूसरी लहर उसके ऊपर बादल है (गरज़) ऊपर नीचे बहुत-से अन्धेरे (ही अन्धेरे) हैं, कि अगर (कोई ऐसी हालत में) अपना हाथ निकाले (और देखना चाहे) तो देखने का एहतिमाल भी नहीं, और जिसको अल्लाह तआला ही नूर (हिदायत) न दे उसको (कहीं से भी) नूर मयस्सर नहीं हो सकता।² (40) ♦

(ऐ मुखातब!) क्या तुझको मालूम नहीं हुआ कि अल्लाह की पाकी बयान करते हैं सब जो कुछ कि आसमानों में और ज़मीन में (मख़्लूकात) हैं,³ और (खासकर) परिन्दे जो पर फैलाए हुए (उड़ते फिरते) हैं सबको अपनी-अपनी दुआ और अपनी तस्बीह मालूम है, और अल्लाह तआला को उन लोगों के सब कामों का पूरा इल्म है। (41) और अल्लाह तआला ही की हुक्मत है आसमानों और ज़मीन में, और अल्लाह तआला ही की तरफ़ (सबको) लौटकर जाना है। (42) क्या तुझको यह बात मालूम नहीं कि अल्लाह तआला (एक) बादल को (दूसरे बादल की तरफ़) चलता करता है (और) फिर उस बादल (के मजमूए) को आपस में मिला देता है, फिर उसको तह-ब-तह करता है, फिर तू बारिश को देखता है कि उस (बादल) के बीच में से निकलती है, और उसी बादल से यानी उसके बड़े-बड़े हिस्सों में से ओले बरसाता है, फिर उनको जिस (की जान पर या माल) पर चाहता है गिराता है और जिससे चाहता है उसको हटा देता है, (और) उस बादल की बिजली की चमक की यह हालत है कि ऐसा मालूम होता है कि गोया उसने अब बीनाई “यानी आँखों की

(पृष्ठ 640 का शेष)

4. पस इसी तरह मोमिन के दिल में अल्लाह तआला जब हिदायत का नूर डालता है तो दिन-बदिन उसका हक के कबूल करने के लिए दिली इत्मीनान बढ़ता चला जाता है और वह हर वक़्त अहकाम पर अमल करने के लिए तैयार रहता है।

5. मतलब यह कि अल्लाह तआला मिसालें बयान करता है और वह मिसाल निहायत मुनासिब होती है, ताकि ख़ूब हिदायत हो।

6. मुराद उन घरों से मस्जिदें हैं और उनका अदब यह कि उनमें नापाक मर्द और नापाक औरत दाख़िल न हो, और उनमें कोई ग़न्दी और नापाक चीज़ दाख़िल न की जाए। वहाँ शोर न मचाया जाए, दुनिया के काम और बातें करने के लिए वहाँ न बैठें। बदबू की चीज़ खाकर उनमें न जाएँ, वग़ैरह-वग़ैरह।

7. यानी पाँचों नामाज़ें अदा करते हैं। सुबह की नमाज़ “गुदुब्” में आ गई और चार नमाज़ें “आसाल” में आ गई। क्योंकि आसाल कहते हैं सूरज ढलने से लेकर तमाम रात तक।

1. ‘ज़ज़ा’ वह जिसका वायदा मुफ़स्सल है और ‘ज़्यादा’ वह जिसका मुफ़स्सल वायदा नहीं।

2. पस उन लोगों को चाहिए था कि अल्लाह के अहकाम की पैरवी का इरादा करते तो अल्लाह तआला अपनी आदत के मुताबिक़ कि इरादे के बाद फ़ैल पैदा कर देता है उनको हिदायत का नूर देता, मगर उन्होंने मुँह मोड़ा तो अन्धेरियों में रह गए, कहीं से भी सहारा न लगा।

3. चाहे ज़बान से हो जो बाज़ मख़्लूकात में देखा भी जाता है, चाहे हाल के एतिबार से हो जो तमाम मख़्लूकात में अक्ल की दलालत करने से मालूम है।

रोशनी" ली। (43) (और तथा) अल्लाह तआला रात और दिन को (भी) बदलता रहता है, इस (सब मजमूए) में समझ रखने वालों के लिए दलील हासिल करने (का मौका) है। (44) और अल्लाह तआला ही ने हर चलने वाले जानदार को (पानी का हो या खुशकी का) पानी से पैदा किया है। फिर उनमें बाजे तो वे (जानवर) हैं जो अपने पेट के बल चलते हैं,¹ और बाजे उनमें वे हैं जो दो पैरों पर चलते हैं,² और बाजे उनमें वे हैं जो चार (पैरों) पर चलते हैं।³ अल्लाह जो चाहता है बनाता है। बेशक अल्लाह तआला हर चीज़ पर कादिर है। (45) हमने (हक के) समझाने वाली दलीलें नाज़िल फ़रमाई हैं, और (उन आम में से) जिसको अल्लाह चाहता है सीधे रास्ते की तरफ़ हिदायत फ़रमाता है। (46) और (ये मुनाफ़िक) लोग (ज़बान से) दावा करते हैं कि हम अल्लाह पर और उसके रसूल पर ईमान ले आए और हुक्म माना, फिर उसके बाद (दावे की सच्चाई ज़ाहिर होने के मौके पर) उनमें का एक गिरोह नाफ़रमानी करता है। और ये लोग (दिल में) बिल्कुल भी ईमान नहीं रखते।⁴ (47) और ये लोग जब अल्लाह और उसके रसूल की तरफ़ इस गरज़ से बुलाए जाते हैं कि रसूल उनके (और उनके मुखालिफ़ के) दरमियान फैसला कर दें तो उनमें का एक गिरोह किनारा करता है।⁵ (48) और अगर उनका हक़ (किसी की तरफ़ वाजिब) हो तो सर झुकाए हुए आपके पास चले आते हैं।⁶ (49) क्या उनके दिलों में (जड़ पकड़े हुए कुफ़्र का) मरज़ है या ये (नुबुव्वत की तरफ़ से) शक में पड़े हैं, या उनको यह अन्देशा है कि अल्लाह और उसका रसूल उनपर जुल्म (न) करने लगे, (सो इनमें से कोई सबब) नहीं (है) बल्कि (असली सबब यह है) कि ये लोग जुल्म पर उतरे हुए (होते) हैं।⁷ ▲ (50) ♦

मुसलमानों का कौल तो जबकि उनको (किसी मुकद्दमे में) अल्लाह की और उसके रसूल की तरफ़ बुलाया जाता है ताकि उनके दरमियान में फैसला कर दें, यह है कि वे (दिली खुशी से) कहते हैं कि हमने सुन लिया और मान लिया, और ऐसे लोग (आखिरत में) फ़लाह पाएँगे। (51) और जो शख्स अल्लाह और उसके रसूल का कहा माने और अल्लाह से डरे और उसकी मुख़ालफ़त से बचे, बस ऐसे लोग कामयाब होंगे। (52) और वे लोग बड़ा जोर लगाकर कस्में खाया करते हैं कि अल्लाह की कसम! (हम ऐसे फ़रमाँबर्दार हैं कि) अगर आप उनको (यानी हमको) हुक्म दें तो वे अभी निकल खड़े हों, (आप उनसे) कह दीजिए कि बस कस्में न खाओ, (तुम्हारी) फ़रमाँबर्दारी (की हकीकत) मालूम है, (क्योंकि) अल्लाह तआला तुम्हारे आमाल की पूरी ख़बर रखता है। (53) आप कहिए कि अल्लाह की इताअत करो और रसूल की इताअत करो, फिर अगर तुम लोग (इताअत से) मुँह मोड़ोगे तो समझ लो कि रसूल के ज़िम्मे वही (तब्तीग़) है जिसका उनपर बार रखा गया है, और तुम्हारे ज़िम्मे वह है जिसका तुमपर बार रखा गया है। और अगर तुमने उनकी इताअत कर ली तो

1. जैसे साँप और मछली।

2. जैसे इन्सान और परिन्दे जबकि हवा में न हों।

3. जैसे मवेशी।

4. इस मौके से वह सूरत मुराद है कि जब उनके ज़िम्मे किसी का हक़ चाहता हो और हक़ वाला उस मुनाफ़िक से दरख़्वास्त करे कि चलो जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास मुकद्दमा ले चलते हैं, उस मौके पर ये नाफ़रमानी और हुक्म के ख़िलाफ़ करते हैं, क्योंकि आपके इन्ज़ास में जब हक़ ज़ाहिर हो जाएगा तो उसी के मुवाफ़िक आप फैसला करेंगे।

5. यह बुलाना रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ही की तरफ़ है, मगर चूँकि आपका फैसला अल्लाह के हुक्म के मुवाफ़िक होता है इसलिए "इलल्लाहि" यानी 'अल्लाह की तरफ़' बड़ा दिया।

6. क्योंकि इत्मीनान होता है कि वहाँ इन्साफ़ होगा।

7. इसी वास्ते हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में मुकद्दमा लाना पसन्द नहीं करते।

राह पर जा लगोगे, और (बहरहाल) रसूल के ज़िम्मे सिर्फ़ साफ़ तौर पर पहुँचा देना है। (54) (ऐ पूरी उम्मत!) तुममें जो लोग ईमान लाएँ और नेक अमल करें,¹ उनसे अल्लाह तआला वायदा फ़रमाता है कि उनको (इस इत्तिबा की बरकत से) ज़मीन में हुकूमत अता फ़रमाएगा, जैसा कि उनसे पहले (हिदायत वाले) लोगों को हुकूमत दी थी।² और जिस दीन को (अल्लाह तआला ने) उनके लिए पसन्द फ़रमाया है (यानी इस्लाम) उसको उनके (आख़िरत के नफ़े के) लिए कुव्वत देगा, और उनके इस ख़ौफ़ के बाद उसको अमन से बदल देगा, बशर्ते कि मेरी इबादत करते रहें (और) मेरे साथ किसी किस्म का शिर्क न करें। और जो शख्स इस (वायदे के ज़ाहिर होने) के बाद नाशुक्री करेगा³ तो ये लोग बेहुक्म हैं।⁴ (55) और (मुसलमानो!) नमाज़ की पाबन्दी रखो और ज़कात दिया करो और (बाकी अहकाम में भी) रसूल की इताअत किया करो, ताकि तुमपर (कामिल) रहम किया जाए। (56) (ऐ मुखातब!) काफ़िरों के बारे में यह ख़याल मत करना (कि हमारे क़हर से बचने के लिए) ज़मीन (के किसी हिस्से) में (भागकर हमको) हरा देंगे, और (आख़िरत में) उनका ठिकाना दोज़ख़ है, और बहुत ही बुरा ठिकाना है। (57) ♦

ऐ ईमान वाले! (तुम्हारे पास आने के लिए) तुम्हारे मन्सूकों “यानी गुलाम बाँदियों वगैरह” को और तुममें से जो अभी बालिग़ होने की हद को नहीं पहुँचे, उनको तीन वक्तों में इजाज़त लेना चाहिए- (एक तो) सुबह की नमाज़ से पहले, और (दूसरे) जब (सोने के लिए) दोपहर को अपने (बाज़) कपड़े उतार दिया करते हो, और (तीसरे) इशा की नमाज़ के बाद।⁵ ये तीन वक्त तुम्हारे पदों के (वक्त) हैं, (और) इन वक्तों के अलावा न तुमपर कोई इल्ज़ाम है और न (बिना इजाज़त चले आने में) उनपर कुछ इल्ज़ाम है, (क्योंकि) वे कसरत से तुम्हारे पास आते-जाते रहते हैं, कोई किसी के पास और कोई किसी के पास। इसी तरह अल्लाह तआला तुम से (अपने) अहकाम साफ़-साफ़ बयान करता है, और अल्लाह तआला जानने वाला, हिक्मत वाला है।⁶ (58) और जिस वक्त तुममें के वे लड़के (जिनका हुक्म ऊपर आया है) बालिग़ होने की हद को पहुँचें तो उनको भी उसी तरह इजाज़त लेना चाहिए जैसा कि उनसे अगले (यानी उनसे बड़ी उम्र के) लोग इजाज़त लेते हैं, इसी तरह अल्लाह तआला तुमसे अपने अहकाम साफ़-साफ़ बयान करता है, और अल्लाह तआला जानने वाला, हिक्मत वाला है।⁷ (59) और बड़ी-बूढ़ी औरतें जिनको (किसी के) निकाह (में आने) की कुछ उम्मीद न रही

1. यानी हिदायत की मुकम्मल तौर पर पैरवी करें।
2. जैसे बनी इस्राईल को क़िस्बियों पर ग़ालिब किया फिर अमालका पर ग़ल्बा दिया और मिस्र पर ग़ल्बा दिया और मिस्र व शाम मुल्कों की हुकूमत दी।
3. यानी दीन के ख़िलाफ़ तरीका इस्तियार करेगा।
4. इस आयत में उम्मत के मजमूए से ईमान और नेक अमल पर हुकूमत देने का वायदा है। जिसका जुहूर खुद हुजुरे पाक के ज़माने से शुरू होकर ख़िलाफ़ते राशिदा तक बराबर चलता रहा। चुनौचे जज़ीरा-ए-अरब आपके ज़माने में और दूसरे मुमालिक ख़ुलफ़ा-ए-राशिदीन के ज़माने में फ़ह हो गए। और बाद में भी वक्त-वक्त पर अगरचे लगातार और बराबर न हो, दूसरे नेक बादशाहों और ख़ुलफ़ा के हक़ में इस वायदे का जुहूर होता रहा और आगे भी होता रहेगा।
5. यानी ये तीनों वक्त चूँकि आदतन और ग़ालिबन तन्हाई और आराम करने के हैं, इनमें ज़्यादातर आदमी बेतक़ल्लुफी से रहते हैं। इसलिए अपने गुलाम, बाँदियों, नौकरों और नाबालिग़ बच्चों को समझा दो कि बेइत्तिला और इजाज़त के बग़ैर तुम्हारे पास न आया करें।
फ़ायदा: इन तीन वक्तों की ही कुछ तख़सीस नहीं, उस वक्त आदत इसी के मुवाफ़िक़ थी। बाकी जहाँ जैसी ज़रूरत हो, यह हुक्म इस सबब पर लागू है कि जहाँ जिसका जो वक्त तन्हाई और आराम करने का हो वहाँ उस वक्त इजाज़त लेना ज़रूरी है।
6. पस सब मसलहतों और हिक्मतों पर उसकी नज़र है, और अहकाम में उनकी रियायत फ़रमाता है।
7. उसको दोबारा इसलिए लाया गया कि इजाज़त लेने के क़ानून की मसलहतें निहायत वाज़ेह और उसके अहकाम निहायत रियायत के काबिल हैं, दोबारा लाने से इसका अहम होना ज़ाहिर हो गया।

हो,¹ उनको (अलबत्ता) इस बात में कोई गुनाह नहीं कि वे अपने (फ़ालतू)² कपड़े उतार दें, बशर्ते कि बनने-सँवरने (की जगहों) का इज़हार न करें।³ और (अगरचे बड़ी-बूढ़ियों को मुँह खोलने की इजाज़त है लेकिन अगर) इससे भी एहतियात रखें तो उनके लिए और ज्यादा बेहतर है। और अल्लाह तआला (सब कुछ) सुनता है, (सब कुछ) जानता है। (60) न तो अन्धे आदमी के लिए कुछ हर्ज है और न लंगड़े आदमी के लिए कुछ हर्ज है और न बीमार आदमी के लिए कुछ हर्ज है और न खुद तुम्हारे लिए इस बात में (कुछ हर्ज है) कि तुम अपने घरों से (जिनमें बीवी और औलाद के घर भी आ गए) खाना खा लो, या अपने बाप के घर से या अपनी माँओं के घर से या अपने भाइयों के घरों से या अपनी बहनों के घरों से या अपने चचाओं के घरों से या अपनी फूफियों के घरों से या अपने मामुओं के घरों से या अपनी खालाओं के घरों से या उन घरों से जिनकी कुन्जियाँ तुम्हारे इख्तियार में हैं या अपने दोस्तों के घरों से, (फिर इसमें भी) तुमपर कुछ गुनाह नहीं कि सब मिलकर खाओ या अलग-अलग (खाओ), फिर (यह भी जान लो कि) जब तुम अपने घरों में जाने लगा करो तो अपने लोगों को सलाम कर लिया करो, (जो कि) दुआ के तौर पर (है, और) जो खुदा की तरफ से मुकर्रर है, (और) बरकत वाली उम्दा चीज़ है। (अल्लाह ने जिस तरह ये अहकाम बतलाए) इसी तरह अल्लाह तुमसे (अपने) अहकाम बयान फ़रमाता है ताकि तुम समझो (और अमल करो)।⁴ (61) ♦

बस मुसलमान तो वही हैं जो अल्लाह पर और उसके रसूल पर ईमान रखते हैं, और जब रसूल के पास किसी ऐसे काम पर होते हैं जिसके लिए लोगों को जमा किया गया है (और इत्तिफ़ाक़न वहाँ से जाने की ज़रूरत पड़ती है) तो जब तक आपसे इजाज़त न ले लें, नहीं जाते।⁵ (ऐ पैग़म्बर!) जो लोग आपसे (ऐसे मौकों पर) इजाज़त लेते हैं, बस वही अल्लाह पर और उसके रसूल पर ईमान रखते हैं,⁶ तो जब ये (ईमान वाले लोग) ऐसे मौकों पर अपने किसी (ज़रूरी) काम के लिए आपसे (जाने की) इजाज़त तलब करें तो उनमें से जिसके लिए आप चाहें इजाज़त दे दिया करें,⁷ और (इजाज़त देकर भी) आप उनके लिए अल्लाह तआला से मफ़िरत की दुआ कीजिए,⁸ बेशक अल्लाह तआला बख़्शने वाला, मेहरबान है। (62) तुम लोग रसूल के बुलाने को ऐसा (मामूली बुलाना) मत समझो जैसा तुममें एक-दूसरे को बुलाता है,⁹ अल्लाह तआला उन लोगों को ख़ूब जानता है जो (दूसरे की) आड़ में होकर तुममें से (हुज़ूरे पाक की मज्लिस से) खिसक जाते हैं। सो जो लोग अल्लाह के हुक्म की (जो कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के वास्ते से पहुँचा है) मुख़ालफ़त करते हैं उनको इससे डरना चाहिए कि उनपर (दुनिया में) कोई आफ़त (न) आ पड़े, या उनपर (आख़िरत में) कोई दर्दनाक अज़ाब नाज़िल (न) हो जाए।¹⁰ (63) (और यह भी) याद रखो कि जो कुछ आसमानों और ज़मीन में

1. यानी जो बिलकुल भी रग़बत का स्थान नहीं रही।

2. फ़ालतू कपड़े जिनसे चेहरा वग़ैरह छुपा रहता है, नामेहरम के सामने उतारना जायज़ है।

3. जीनत के मौकों का ज़ाहिर करना नामेहरम के सामने बिलकुल ही नाजायज़ है।

4. ऊपर बहुत-से अहक़ाम का हुक्म और बहुत-सी चीज़ों से मनाही इरशाद फ़रमाई। आगे उस वक़्त के मुनासिब एक ख़ास हुक्म इरशाद फ़रमाते हैं। जिससे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इन्तिहाई दर्जे की इताअत का वाजिब होना साबित होता है, जो कि ज़िक्र हुए तमाम अहक़ाम और मना की हुई चीज़ों, बल्कि दुनिया व आख़िरत की तमाम ज़ाहिरी व बातिनी सज़ादतों की ताकीद करने वाली है।

5. यानी जब तक आपसे इजाज़त न ले लें और आप उसपर इजाज़त न दे दें।

6. हासिल यह है कि इजाज़त लेना बिना ईमान के नहीं पाया जाता, क्योंकि कोई मुनाफ़िक़ इजाज़त न लेता था।

7. यानी इसका फैसला हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की राय मुबारक पर छोड़ दिया गया है।

8. क्योंकि इजाज़त माँगना अगरचे किसी क़वी उज़्र की वजह से हो, लेकिन फिर भी उसमें दुनिया को दीन पर मुक़दम करना तो लाज़िम आया। और उसमें एक नुक़्स का शुब्हा है, उसकी तलाफ़ी के लिए इस्तिग़फ़ार का हुक्म हुआ।

9. कि चाहे आया या न आया, फिर आकर भी जब तक चाहा बैठा, जब चाहा उठकर बिना इजाज़त लिए (शेष तफ़सीर पृष्ठ 650 पर)

(मौजूद) है सब खुदा ही का है। अल्लाह तआला उस हालत को भी जानता है जिसपर तुम (अब) हो, और उस दिन को जिसमें सब उसके पास (जिन्दा करके) लाए जाएँगे। फिर वह उनको सब जतलाएगा जो कुछ उन्होंने किया था, और अल्लाह तआला (तो) सब कुछ जानता है। (64) ♦

25 सूर: फुरकान 42

सूर: फुरकान मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 77 आयतें और 6 रुकूअ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

बड़ी¹ आलीशान ज़ात है जिसने यह फैसले की किताब (यानी कुरआन) अपने खास बन्दे (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर नाज़िल फरमाई ताकि वह (बन्दा) तमाम दुनिया जहान वालों के लिए डराने वाला हो। (1) ऐसी ज़ात जिसके लिए आसमानों और ज़मीन की हुकूमत हासिल है, और उसने किसी को (अपनी) औलाद करार नहीं दिया, और न कोई हुकूमत में उसका साझी है, और उसने (तमाम मुमकिन चीज़ों में से) हर (मौजूद) चीज़ को पैदा किया, फिर सबका अलग-अलग अन्दाज़ रखा।² (2) और (बावजूद हक़ तआला के ऐसे बेमिस्ल होने के) उन मुश्रिकों ने खुदा (की तौहीद) को छोड़कर और ऐसे माबूद करार दिए हैं जो किसी चीज़ के पैदा करने वाले नहीं, और (बल्कि) वे खुद मख़्लूक “यानी पैदा किए हुए” हैं, और खुद अपने लिए न किसी नुक़सान (के हटाने) का इख़्तियार रखते हैं और न किसी नफ़े (के हासिल करने) का, और न किसी के मरने का इख़्तियार रखते हैं और न किसी के जीने का, और न किसी को (कियामत में) दोबारा जिलाने का। (3) और काफ़िर (यानी मुश्रिक) लोग (कुरआन के बारे में) यूँ कहते हैं कि यह तो कुछ भी नहीं निरा झूठ है, जिसको एक शख्स (यानी पैग़म्बर) ने घड़ लिया है, और दूसरे लोगों ने उस (घड़ने) में उसकी मदद की है।³ सो ये लोग बड़े जुल्म और झूठ के मुरतकिब हुए। (4) और ये (काफ़िर) लोग यूँ कहते हैं कि यह (कुरआन) बे-सनद बातें हैं जो अगलों से नक़ल होती चली आती हैं, जिनको उस शख्स (यानी पैग़म्बर) ने लिखवा लिया है, फिर वही (मज़ामीन) उसको सुबह व शाम पढ़कर सुनाए जाते हैं। (5) आप (उसके जवाब में) कह दीजिए कि इस (कुरआन) को तो उस ज़ात ने उतारा है जिसको सब छुपी बातों की, चाहे वे आसमान में हों या ज़मीन में, ख़बर है।⁴ वाकई अल्लाह तआला मफ़िरत करने वाला, रहमत करने वाला है। (6) और ये (काफ़िर) लोग (रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बारे में) यूँ कहते हैं कि इस रसूल को क्या हुआ कि वह (हमारी तरह) खाना खाता है और बाज़ारों में चलता-फिरता है,⁵ उसके पास कोई फ़रिश्ता क्यों नहीं भेजा गया कि वह उसके साथ रहकर डराता। (7) या उसके पास (ग़ैब से) कोई ख़ज़ाना आ पड़ता या उसके पास कोई (ग़ैबी) बाग़ होता जिससे यह ख़ाया करता, और (ईमान वालों से) ये ज़ालिम यूँ (भी) कहते हैं कि तुम लोग एक बेअक्ल आदमी की राह पर चल रहे हो। (8) (ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि

(पृष्ठ 648 का शेष) चल दिया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का बुलाना ऐसा नहीं है, बल्कि उसका मानना और बजा लाना वाजिब है। और बेइजाज़त जाना हराम है।

10. यह इजाज़त माँगने का वाजिब होना उस वक़्त है जब बुलाए हुए आएँ, या किसी मशिवरा वगैरह के लिए खास ऐलान या आम ऐलान के ज़रिये बुलाया गया हो, वरना हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मज्लिस में कितनी ही बार लोग खुद हाज़िर हुए और खुद चले गए उनपर मलामत नहीं की गई। और अब भी मुसलमानों का इमाम (यानी मुसलमान बादशाह और हाकिम) अगर लोगों को जमा करे तो बेइजाज़त जाना जायज़ नहीं।

1. इस सूर: में ये मज़ामीन हैं। तौहीद का साबित करना, शिर्क और मुश्रिकीन की बुराई, रिसालत का साबित करना, रिसालत से मुताल्लिक शुब्हात का जवाब, आखिरत का बयान और उसकी तफ़सील में तददीक करने वालों और झुठलाने वालों की सज़ा व जज़ा, मज़मून की मुनासबत से बाज़ किस्से, तौहीद व रिसालत के इनकार करने की बुराई, (शेष तफ़सीर पृष्ठ 652 पर)

व सल्लम!) देखिए तो ये लोग आपके लिए कैसी अजीब-अजीब बातें बयान कर रहे हैं, सो (उन खुराफ़ात से) वे (बिलकुल) गुमराह हो गए, फिर वे राह नहीं पा सकते। (9) ♦

वह जात बड़ी आलीशान है कि अगर वह चाहे तो आपको (काफ़िरों की) उस (फरमाइश) से (भी) अच्छी चीज़ दे दे, यानी बहुत-से (गैबी) बागात जिनके नीचे से नहरें बहती हों, और आपको बहुत-से महल दे दे।¹ (10) बल्कि ये लोग कियामत को झूठ समझ रहे हैं² और (अन्जाम इसका यह होगा कि) हमने ऐसे शख्स के लिए जो कि कियामत को झूठ समझे, दोज़ख़ तैयार कर रखी है।³ (11) वह उनको दूर से देखेगी तो वे लोग (दूर ही से) उसका जोश व ख़रोश सुनेंगे। (12) और (फिर) जब वे उस (दोज़ख़) की किसी तंग जगह में हाथ-पाँव जकड़ कर डाल दिए जाएंगे तो वहाँ मौत ही मौत पुकारेंगे। (13) (उस वक़्त उनसे कहा जाएगा कि) एक मौत को न पुकारो बल्कि बहुत-सी मौतों को पुकारो।⁴ (14) आप (उनको यह मुसीबत सुनाकर) कहिए कि (यह बतलाओ कि) क्या यह (मुसीबत की हालत) अच्छी है या वह हमेशा रहने की जन्नत (अच्छी है) जिसका खुदा से डरने वालों से वायदा किया गया है, कि वह उनके लिए (उनकी इताअत का) सिला है, और उनका (आख़िरी) ठिकाना। (15) (और) उनको वहाँ वे सब चीज़ें मिलेंगी जो कुछ वे चाहेंगे (और) वे (उसमें) हमेशा रहेंगे। (ऐ पैग़म्बर!) यह एक वायदा है जो आपके रब के ज़िम्मे है और माँगने के काबिल है। (16) और जिस दिन अल्लाह उन (काफ़िर) लोगों को और जिनको वे लोग खुदा के सिवा पूजते थे उन (सब) को जमा करेगा, फिर (उन माबूदों से) फरमाएगा, क्या तुमने मेरे इन बन्दों को गुमराह किया था या ये (खुद ही हक़ के) रास्ते से गुमराह हो गए थे।⁵ (17) वे (माबूदीन) अर्ज़ करेंगे कि अल्लाह की पनाह! हमारी क्या मजाल थी कि हम आपके सिवा और कारसाज़ों को तजवीज़ करते, और लेकिन आपने (तो) उनको और उनके बड़ों को (ख़ूब) ऐश व आराम दिया,⁶ यहाँ तक कि वे (आपकी) याद को भुला बैठे, और ये लोग खुद ही बरबाद हुए।⁷ (18) (उस वक़्त अल्लाह तआला फरमाएगा कि) लो तुम्हारे इन माबूदों ने तो तुमको तुम्हारी बातों में झूठा ठहरा दिया, सो (अब) तुम न तो खुद (अज़ाब को) टाल सकते हो और न (किसी दूसरे की तरफ़ से) मदद दिए जा सकते हो। और जो (जो) तुममें ज़ालिम (यानी मुशिरक) होगा हम उसको बड़ा अज़ाब चखाएंगे। (19) और हमने आपसे पहले जितने पैग़म्बर भेजे सब खाना भी खाते थे और बाज़ारों में भी चलते-फिरते थे,⁸ और हमने तुम (तमाम ही मुकल्लफ़ लोगों) में एक को दूसरे के लिए आजमाइश बनाया है, क्या तुम सब्र करोगे? (यानी सब्र करना चाहिए) और आपका रब ख़ूब देख रहा है। (20) ♦

(पृष्ठ 650 का शेष) तौहीद व रिसालत की तस्दीक़ करने वाले बाज़ ख़ास बन्दों के कुछ अच्छे-बुलन्द आमाल, और इसी आख़िरी मज़मून पर सूर: ख़त्म है।

2. किसी चीज़ के आसार व खुसूसियतें कुछ हैं किसी के कुछ हैं।

3. इम्दाद करने वालों से वे अहले किताब मुराद हैं जो मुसलमान हो गए थे या आपकी ख़िदमत में वैसे ही हाज़िर हुआ करते थे।

4. जवाब का हासिल यह हुआ कि इस कलाम का इनसानी ताक़त से बाहर होना इसकी दलील है कि काफ़िरों का कहना कि “यह कुरआन बे-सनद बातें हैं जो अंगलों से नक़ल होती चली आती हैं” ग़लत है। और इसी से यह साबित हो गया कि वे लोग जुल्म और झूठ के मुजरिम हैं। अगर यह खुद पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का घड़ा हुआ या किसी का लिखवाया हुआ कलाम होता या किसी दूसरी कौम की मदद से तैयार किया हुआ होता तो दूसरे लोग ऐसा कलाम लाने से आजिज़ क्यों होते।

5. यानी इनसान है जो कि मोहताज़ होता है खाने व रोज़ी का एहतियाम करने का। मतलब यह कि रसूल को फ़रिश्ता होना चाहिए।

1. मतलब यह कि जो जन्नत में मिलेगा अगर अल्लाह तआला चाहे तो आपको दुनिया ही में दे दे लेकिन बाज़ हिक्मतों से नहीं चाहा, और इसकी कोई ज़रूरत भी न थी, पस यह शुब्हा बिलकुल बेहूदा है।

2. इसलिए अन्जाम की फ़िक्र नहीं है और जो जी में आता है कर लेते हैं, बक़ देते हैं।

3. क्योंकि कियामत को झुठलाने से अल्लाह व रसूल का झुठलाना लाज़िम आता है जो दोज़ख़ में जाने का असल सबब है।

4. क्योंकि मौत के पुकारने की इल्लत मुसीबत है और मुसीबत ऐसी है जिसकी कोई सीमा नहीं है, और हर मुसीबत का मुक़तज़ा मौत को पुकारना है तो पुकारना भी बहुत ज़्यादा और असीमित हुआ। (शेष तफ़सीर पृष्ठ 654 पर)

उन्नीसवाँ पार: व कालल्लजी-न

सूर: फुरकान (आयत 21 से 77)

और जो लोग हमारे सामने पेश होने से अन्देशा नहीं करते (इस वजह से कि उसके मुन्किर हैं) वे यूँ कहते हैं कि हमारे पास फ़रिश्ते क्यों नहीं आते, या हम अपने रब को देख लें,¹ ये लोग दिलों में अपने को बहुत बड़ा समझ रहे हैं, और ये लोग (इनसानियत की) हद से बहुत दूर निकल गए हैं। (21) जिस दिन ये लोग फ़रिश्तों को देखेंगे, उस दिन (क़ियामत में) मुजरिमों (यानी काफ़िरों) के लिए कोई खुशी की बात न होगी, और (अज़ाब के फ़रिश्तों को देखकर) कहेंगे कि पनाह है, पनाह है। (22) और हम (उस दिन) उनके (यानी काफ़िरों के) उन (नेक) कामों की तरफ़ जो कि वे (दुनिया में) कर चुके थे मुतवज्जह होंगे, सो उनको ऐसा (बेकार) कर देंगे जैसे परेशान गुबार।² (23) (अलबत्ता) जन्नत वाले उस दिन ठिकाने में भी अच्छे रहेंगे और आरामगाह में भी ख़ूब अच्छे होंगे।³ (24) और जिस दिन आसमान एक बदली पर से फट जाएगा, और (उस बदली के साथ) फ़रिश्ते (ज़मीन पर) कसरत से उतारे जाएँगे। (25) (और) उस दिन हकीकी हुकूमत (खुदा-ए-) रहमान (ही) की होगी,⁴ और वह (दिन) काफ़िरों पर बड़ा सख्त दिन होगा।⁵ (26) और जिस दिन ज़ालिम (यानी काफ़िर आदमी इन्तिहाई हसरत से) अपने हाथ काट खाएगा, (और) कहेगा क्या अच्छा होता मैं रसूल के साथ (दीन की) राह पर लग लेता। (27) हाय मेरी शामत (कि ऐसा न किया, और) क्या अच्छा होता कि मैं फ़लों शख्स को दोस्त न बनाता। (28) उस (कमबख्त) ने मुझको नसीहत आने के बाद उससे बहका दिया (और हटा दिया) और शैतान तो इनसान को (ऐन वक़्त पर) मदद करने से जवाब दे ही देता है। (29) और (उस दिन) रसूल कहेंगे कि ऐ मेरे रब! मेरी (इस) कौम ने इस कुरआन को (जिसपर अमल करना वाजिब था) बिल्कुल नज़र अन्दाज़ कर रखा था।⁶ (30) और हम इसी तरह (यानी जिस तरह ये लोग आपसे दुश्मनी और बैर रखते हैं) मुजरिम लोगों में से हर नबी के दुश्मन बनाते रहे हैं,⁷ और हिदायत करने और मदद करने को आपका रब काफ़ी है। (31) और काफ़िर लोग यूँ कहते हैं कि उन (पैग़म्बर) पर यह कुरआन एक ही बार में क्यों नाज़िल नहीं किया गया, इस तरह (धीरे-धीरे हमने) इसलिए (नाज़िल किया) है ताकि हम उसके ज़रिये आपके दिल को क़वी रखें, और (इसी लिए) हमने इसको बहुत ठहरा-ठहराकर उतारा है।⁸ (32) और ये लोग कैसा ही अज़ीब सवाल आपके सामने पेश करें मगर हम (उसका) ठीक जवाब और वज़ाहत में (भी) बढ़ा हुआ आपको इनायत कर देते हैं। (33) ये लोग वे हैं जो अपने मुहों के बल जहन्नम की तरफ़ ले जाए जाएँगे, ये लोग जगह में भी बदतर हैं और तरीक़े में भी बहुत गुमराह हैं।⁹ (34) ❖

(पृष्ठ 652 का शेष) 5. मतलब यह कि उन्होंने तुम्हारी इबादत जो कि हकीकत में गुमराही है, तुम्हारे हुक़्म और तुम्हारी रिज़ा से की थी, जैसा कि उन लोगों का ख़्याल था कि ये माबूद खुश होते हैं और खुश होकर अल्लाह तआला से शफ़ाअत करेंगे, या अपनी फ़ासिद राय से घड़ ली थी।

6. जिसका मुक्तज़ा यह था कि नेमत देने वाले की पहचान और उसका शुक्र व इताअत करते।

7. जवाब का मतलब ज़ाहिर है कि दोनों सूरतों में “राह से गुमराह होने” की सूरत को इख़्तियार किया और गुमराही की बुराई और नापसन्दी को राहत व आराम में पढ़ने के ज़िक्र से मुअक्कद किया जिससे ख़ूब नाराज़ी उन इबादत करने वालों से ज़ाहिर हो जाए।

8. मतलब यह कि नुबुव्वत और खाना खाने वगैरह में कोई ज़िद और मुख़ालफ़त नहीं, कि दोनों एक साथ जमा न हो सकें।

1. यानी फ़रिश्ते आकर हमसे कहें कि यह अल्लाह के रसूल हैं, या हमारा रब खुद फ़रमा दे कि हमने उनको रसूल बनाकर भेजा है।

2. यानी जिस तरह गुबार किसी काम नहीं आता, उसी तरह उन काफ़िरों के आमाल पर कुछ सवाब न होगा।

3. मुराद ठिकाने और आरामगाह से जन्नत है। यानी जन्नत उनके लिए रहने की जगह (शेष तफ़सीर पृष्ठ 656 पर)

और तहकीक कि हमने मूसा को किताब (यानी तौरात) दी थी,¹ और हमने उनके साथ उनके भाई हारून को (उनका) मददगार बनाया था। (35) फिर हमने (दोनों को) हुक्म दिया कि दोनों आदमी उन लोगों के पास जाओ जिन्होंने हमारी (तौहीद की) दलीलों को झुठलाया है,² सो हमने उनको (अपने कहर से) बिलकुल ही गारत कर दिया। (36) और नूह की कौम को भी हम हलाक कर चुके हैं, जब उन्होंने पैगम्बरों को झुठलाया तो हमने उनको (तूफान से) गर्क कर दिया, और हमने उन (के वाकिए) को लोगों (की इबरत) के लिए एक निशान बना दिया, और (आखिरत में) हमने उन ज़ालिमों के लिए दर्दनाक सज़ा तैयार कर रखी है। (37) और हमने आद और समूद और रस्स वालों³ और उनके बीच-बीच में बहुत-सी उम्मतों को हलाक कर दिया। (38) और हमने हर एक के वास्ते अजीब-अजीब (यानी असरदार) मज़ामीन बयान किए, और (जब न माना तो) हमने सबको बिलकुल बरबाद ही कर दिया। (39) और ये (मक्का के काफिर) उस बस्ती पर होकर गुज़रे हैं जिसपर बुरी तरह पत्थर बरसाए गए। (मुराद लूत अलैहिस्सलाम की कौम की बस्ती है) सो क्या ये लोग उसको देखते नहीं रहते, बल्कि ये लोग मर कर जी उठने का अन्देशा ही नहीं रखते। (यानी आखिरत के इनकारी हैं)। (40) और जब ये लोग आपको देखते हैं तो बस आपसे हँसी करने लगते हैं, (और कहते हैं) कि क्या यही हैं जिनको खुदा तआला ने रसूल बनाकर भेजा है।⁴ (41) इस शख्स ने तो हमको हमारे माबूदों से हटा ही दिया होता अगर हम उनपर (मज़बूती से) कायम न रहते,⁵ और (मरने के बाद) जल्दी ही उनको मालूम हो जाएगा जब अज़ाब का मुआयना करेंगे कि कौन शख्स गुमराह था। (42) ऐ पैगम्बर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)! आपने उस शख्स की हालत भी देखी जिसने अपना खुदा अपनी नफ़्सानी ख्वाहिश को बना रखा है, सो क्या आप उसकी निगरानी कर सकते हैं। (43) या आप ख्याल करते हैं कि उनमें अक्सर सुनते या समझते हैं,⁶ ये तो महज़ चौपायों की तरह हैं (कि वे बात को न सुनते हैं, न समझते हैं,) बल्कि ये उनसे भी ज़्यादा बेराह हैं।⁷ (44) ❖

(ऐ मुखातब!) क्या तुमने अपने रब (की कुदरत) पर नज़र नहीं की, उसने साये को किस तरह (दूर तक) फैलाया है। और अगर वह चाहता तो उसको एक हालत पर ठहराया हुआ रखता। फिर हमने सूरज को उस (साये के लम्बा और कम होने) पर निशानी मुक़र्रर किया। (45) फिर हमने उसको अपनी तरफ़ आहिस्ता-आहिस्ता समेट लिया। (46) और वह ऐसा है जिसने तुम्हारे लिए रात को पर्दे की चीज़ और नींद को राहत की चीज़ बनाया, और दिन को ज़िन्दा होने का वक़्त बनाया।⁸ (47) और वह ऐसा है कि अपनी

(पृष्ठ 654 का शेष) और आराम की जगह होगी, और उसका अच्छा होना ज़ाहिर है।

4. यानी हिसाब व किताब और जज़ा व सज़ा में किसी को दखल न होगा।

5. क्योंकि उनके हिसाब का अन्जाम जहन्नम ही है।

6. मतलब यह कि खुद काफिर लोग भी अपनी गुमराही का इक्कार करेंगे और रसूल भी गवाही देंगे, और जुर्म के साबित होने की यहीं दो सूरतें प्रचलित हैं- इक्कार और गवाही, और दोनों के जमा होने से यह सुबूत और भी ज़्यादा पक्का हो जाएगा, और सज़ा पाने वाले होंगे।

7. यानी यह पुराना तरीका चला आता है कि काफिर लोग अम्बिया के साथ दुश्मनी और बैर रखते रहे हैं, सो यह कोई नई बात नहीं जिसका गुम किया जाए।

8. चुनौचे 23 साल में पूरा हुआ ताकि धीरे-धीरे उतारने का मुकम्मल फायदा हो।

9. जगह से मुराद दोज़ख़ और तरीके से मुराद मस्लक और मज़हब है।

1. यानी वह बहुत बड़े रुतबे वाले और किताब वाले नबी थे।

2. इस कौम से मुराद फिरऔन और उसकी कौम है।

3. “रस्स” लुगत में कहते हैं कुएँ को, और कुछ लोग कौमे समूद के रह गए थे और किसी कुएँ पर आबाद थे। वे ‘रस्स वाले’ हैं।

4. यानी ऐसा आदमी रसूल न होना चाहिए। अगर रिसालत कोई चीज़ है (शेष तफसीर पृष्ठ 658 पर)

रहमत की बारिश से पहले हवाओं को भेजता है कि वे (बारिश की उम्मीद दिलाकर दिल को) खुश कर देती हैं, और हम आसमान से पानी बरसाते हैं जो पाक-साफ करने की चीज़ है। (48) ताकि उसके ज़रिये से मुर्दा ज़मीन में जान डाल दें, और अपनी मख़्लूक़ात में से बहुत-से चार पैरों वाले और बहुत-से आदमियों को सैराब कर दें। (49) और हम उस (पानी) को (मस्लहत के मुताबिक) उन लोगों के दरमियान तक़सीम कर देते हैं, ताकि लोग ग़ौर करें। सो (चाहिए था कि ग़ौर करके उसका हक़ अदा करते, लेकिन) अक्सर लोग बग़ैर नाशुक़ी किए न रहे। (50) और अगर हम चाहते तो (आपके अलावा इसी ज़माने में) हर बस्ती में एक पैग़म्बर भेज देते।¹ (51) सो (इस नेमत के शुक्रिये में) आप काफ़ि़रों की खुशी का काम न कीजिए और कुरआन से उनका जोर से मुकाबला कीजिए।² (52) (आगे फिर तौहीद का बयान है) और वह ऐसा है जिसने दो दरियाओं को सूरत के एतिबार से मिला दिया जिनमें एक (का पानी) तो मीठा सुकून बख़्श है और एक (का पानी) खारा कड़वा है। और उनके दरमियान में (अपनी कुदरत से) एक पर्दा और एक मज़बूत रोक रख दी।³ (53) और वह ऐसा है जिसने पानी से (यानी नुत्फ़े से) आदमी को पैदा किया, फिर उसको ख़ानदान वाला और ससुराल वाला बनाया। और (ऐे मुखातब!) तेरा रब बड़ी कुदरत वाला है। (54) और (बावजूद इसके) ये (मुशिरक) लोग (ऐसे) खुदा को छोड़कर उन चीज़ों की इबादत करते हैं जो न उनको कुछ नफ़ा पहुँचा सकती हैं और न उनको कुछ नुक़सान पहुँचा सकती हैं, और काफ़िर तो अपने रब का मुख़ालिफ़ है। (55) और हमने आपको सिर्फ़ इसलिए भेजा है कि (मोमिनों को जन्नत की) खुशख़बरी सुनाएँ, और (काफ़ि़रों को दोज़ख़ से) डराएँ।⁴ (56) आप कह दीजिए कि मैं तुमसे इस (तब्लीग़) पर कोई मुआवज़ा नहीं माँगता, हाँ जो शख्स यूँ चाहे कि अपने रब तक (पहुँचने का) रास्ता इख़्तियार कर ले।⁵ (57) और उस हमेशा रहने वाले पर भरोसा रखिए (और इत्मीनान के साथ) उसकी तस्बीह व तारीफ़ बयान करने में लगे रहिए,⁶ और वह (खुदा) अपने बन्दों के गुनाहों से काफ़ी (तौर पर) ख़बरदार है।⁷ (58) वह ऐसा है जिसने आसमान व ज़मीन और जो कुछ उनके दरमियान में है सब छह दिन (की मिक़दार) में पैदा किया, फिर (शाही) तख़्त पर कायम हुंआ, वह बड़ा मेहरबान है, सो उसकी शान किसी जानने वाले से पूछना चाहिए। (काफ़िर क्या जानें)। (59) और जब उन (काफ़ि़रों) से कहा जाता है कि रहमान को सज्दा करो तो (जहालत व बैर की वजह से) कहते हैं कि रहमान क्या चीज़ है? क्या हम उसको सज्दा करने लगेंगे जिसको तुम सज्दा करने के लिए हमको कहोगे, और उससे उनको और ज़्यादा नफ़रत होती है।⁸ □ (60) ♦

(पृष्ठ 656 का शेष)

तो कोई सरदार और बड़ा आदमी होना चाहिए था, पस यह रसूल नहीं।

5. यानी हम तो हिदायत पर हैं और यह हमको गुमराह करने की कोशिश में थे।

6. मतलब यह कि आप उनको हिदायत न होने से ग़मज़दा न होइए। क्योंकि आप उनपर मुसल्लत नहीं कि वे चाहें या न चाहें उनको राह पर लाएँ ही, और न हिदायत की उनसे उम्मीद कीजिए, क्योंकि उनको न सुनना मयस्सर है न उनके पास अक़ल है।

7. क्योंकि वे इस दीन के रास्ते के मुकल्लफ़ नहीं, तो उनका न समझना निन्दनीय नहीं और ये मुकल्लफ़ हैं, फिर नहीं समझते।

8. इस एतिबार से कि सोना मीत के ही जैसा है, और दिन का वक़्त जागने का है।

1. और तन्हा आप पर तमाम काम न डालते, लेकिन चूँकि आपका अज़्र बढ़ाना मक़सूद है इसलिए हमने ऐसा नहीं किया। तो इस तौर पर इतना काम आपके सुपुर्द करना खुदा तआला की नेमत है।

2. यानी आम और मुकम्मल तब्लीग़ कीजिए। यानी सबसे कहिए और बार-बार कहिए और हिम्मत मज़बूत रखिए जैसा कि अब तक आप करते रहे हैं।

3. मुराद इन दो दरियाओं से वे जगहें हैं जहाँ मीठी नदियाँ और नहरें बहते-बहते समुद्र में आकर गिरती हैं। वहाँ बावजूद इसके कि ऊपर से दोनों की सतह एक मालूम होती है, लेकिन अल्लाह की कुदरत से उनमें एक ऐसी फ़ासले की हद है कि संगम की एक जानिब से पानी लिया जाए तो मीठा और दूसरी जानिब से जो कि पहली जानिब से बिलकुल करीब है, (शेष तफ़सीर पृष्ठ 660 पर)

वह ज्ञात बहुत आलीशान है। जिसने आसमान में बड़े-बड़े सितारे बनाए और इस (आसमान) में एक चिराग (यानी सूरज) और नूरानी चाँद बनाया। (61) और वह ऐसा है जिसने रात और दिन को एक-दूसरे के पीछे आने-जाने वाले बनाए, (और ये तमाम दलीलें) उस शख्स के लिए हैं जो समझना चाहे या शुक्र करना चाहे। (62) और (हज़रते) रहमान के (खास) बन्दे वे हैं जो ज़मीन पर अज़िजी के साथ चलते हैं,¹ और जब जाहिल लोग उनसे (जहालत की बात करते हैं) तो वे बुराई को दफ़ा करने की बात कहते हैं।² (63) और जो रातों को अपने रब के आगे सज्दे और क़ियाम (यानी नमाज़) में लगे रहते हैं।³ (64) और जो दुआँ माँगते हैं कि ऐ हमारे परवर्दिगार! हमसे जहन्नम को दूर रखिए क्योंकि उसका अज़ाब पूरी तबाही है। (65) बेशक वह जहन्नम बुरा ठिकाना और बुरा मक़ाम है। (66) (यह तो उनकी जिस्मानी इबादतों की हालत है) और (माली इबादतों में उनका यह तरीक़ा है कि) वे जब खर्च करने लगते हैं तो न फुज़ूलखर्ची करते हैं और न तंगी करते हैं, और उनका खर्च करना इस (कमी-बेशी) के दरमियान ऐतिदाल पर होता है। (67) और जो कि अल्लाह तआला के साथ किसी और माबूद की पूजा नहीं करते, और जिस शख्स (के क़त्ल करने) को अल्लाह तआला ने हराम फ़रमाया है उसको क़त्ल नहीं करते, हाँ मगर हक़ पर, और वे ज़िना नहीं करते, और जो शख्स ऐसे काम करेगा तो सज़ा से उसको साबक़ा पड़ेगा। (68) कि क़ियामत के दिन उसका अज़ाब बढ़ता चला जाएगा और वह उस (अज़ाब) में हमेशा-हमेशा ज़लील (व रुस्वा) होकर रहेगा। (69) मगर जो (शिक़ व गुनाहों से) तौबा कर ले और ईमान (भी) ले आए और नेक काम करता रहे तो अल्लाह तआला ऐसे लोगों के (पिछले) गुनाहों की जगह नेकियाँ इनायत फ़रमाएगा। और अल्लाह तआला माफ़ करने वाला, रहम करने वाला है। (70) और जो शख्स (गुनाहों से) तौबा करता है और नेक काम करता है तो वह (भी अज़ाब से बचा रहेगा, क्योंकि वह) अल्लाह तआला की तरफ़ खास तौर पर रुजू कर रहा है। (71) और वे बेहूदा बातों में शामिल नहीं होते, और अगर (इत्तिफ़ाक़ से) बेहूदा मशग़लों के पास को होकर गुज़रें तो सन्जीदगी के साथ गुज़र जाते हैं।⁴ (72) और वे ऐसे हैं कि जिस वक़्त उनको अल्लाह के अहक़ाम के ज़रिये से नसीहत की जाती है तो उन (अहक़ाम) पर बहरे अन्धे होकर नहीं गिरते।⁵ (73) और वे ऐसे हैं कि दुआ़ा करते रहते हैं कि ऐ हमारे परवर्दिगार! हमको हमारी बीवियों और हमारी औलाद की तरफ़ से आँखों की ठंडक (यानी राहत) अता फ़रमा,⁶ और हमको मुत्तकियों का अफ़सर बना दे।⁷ (74) ऐसे लोगों को (जन्नत में रहने को) बालाख़ाने

(पृष्ठ 658 का शेष)

पानी लिया जाए तो कड़वा। चुनौचे बंगाल में भी ऐसा स्थान मौजूद है।

4. उनके ईमान न लाने से आपका क्या नुक़सान है? फिर आप क्यों ग़म करें। और न आप उस विरोध को मालूम करके फ़िक्र में पड़ें।
5. तो यह अलबत्ता चाहता हूँ चाहे उसको बदला कहे या न कहे।
6. यानी तब्दीग़ जो कि ऐसी इबादत है जिसका नफ़ा दूसरों तक पहुँचता है और तस्बीह व तारीफ़ बयान करने की इबादत ऐसी है जिसका फ़ायदा अपनी ज्ञात तक सीमित है। उनको बेफ़िक्री से अदा कीजिए।
7. जब मुनासिब समझेगा सज़ा देगा। इन जुम्लों में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से ग़म व फ़िक्र और ख़ौफ़ को ख़त्म फ़रमाया है।
8. लफ़ज़ 'रहमान' उनमें कम मशहूर था, मगर यह नहीं कि जानते न हों। मगर इस्लामी तालीम से जो मुख़ालफ़त बढ़ी हुई थी तो अल्फ़ाज़ के बोलने में भी मुख़ालफ़त को निभाते थे। कुरआन में जो यह लफ़ज़ कसरत से आया वे इसमें भी मुख़ालफ़त कर बैठे और इस हैसियत से कि कुरआनी मुहावरा है जानकर भी अन्ज़ान बनने के तौर पर उसमें क़लाम और उसका इनकार करने लगे। चाहे खुदा ही का इनकार और बे-अदबी लाज़िम आ जाए।
1. मतलब यह कि उनके मिज़ाज में तमाम मामलात में तवाज़ो है और उसी का असर चलने में भी ज़ाहिर होता है।
2. मतलब यह कि अपने नफ़्स के लिए ज़बानी या फ़ेल से बदला नहीं लेते और जो सख़्ती तरबियत, इस्लाह और शरई ज़रूरत या दीन की बात को बुलन्द करने के लिए हो यहाँ उसकी नफ़ी मक़सूद नहीं।
3. अल्लाह और बन्दों के हुक्क़ अदा करने के बावजूद अल्लाह से इस क़द्र डरते हैं। (आगे देखो तर्जुमा) (शेष तफ़सीर पृष्ठ 662 पर)

मिलेंगे इस वजह से कि वे (दीन और बन्दगी पर) साबित कदम रहे, और उनको उस (जन्मत) में (फ़रिश्तों की ओर से) बाकी रहने की दुआ और सलाम मिलेगा। (75) (और) उसमें हमेशा-हमेशा रहेंगे, वह कैसा अच्छा ठिकाना और मक़ाम है। (76) आप (आम तौर पर लोगों से) कह दीजिए कि मेरा रब तुम्हारी ज़रा भी परवाह न करेगा अगर तुम इबादत न करोगे। सो तुम जो (अल्लाह के अहक़ाम को) झूठा समझते हो तो जल्द ही यह (झूठा समझना तुम्हारे लिए) वबाले (जान) होगा।¹ ♦ (77) ♦

26 सूर: शु-अरा 47

सूर: शु-अरा मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 227 आयतें और 11 रुकूअ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, और बड़े रहम वाले हैं।²

ता-सीम्-मीम्। (1) ये (मज़ामीन जो आप पर नाज़िल होते हैं) वाज़ेह किताब (यानी कुरआन) की आयतें हैं। (2) शायद आप उनके ईमान न लाने पर (रंज करते-करते) अपनी जान दे देंगे। (3) अगर हम (उनको मोमिन करना) चाहें तो उनपर आसमान से एक बड़ी निशानी नाज़िल कर दें, फिर उनकी गर्दन उस निशानी से झुक जाएँ। (4) और (उनकी हालत यह है कि) उनके पास कोई ताज़ा तंबीह (हज़रते) रहमान की तरफ़ से ऐसी नहीं आती जिससे ये बेरुख़ी न करते हों। (5) सो उन्होंने (दीने हक़ को) झूठा बतला दिया, सो अब जल्द ही उनको उस बात की हकीकत मालूम हो जाएगी जिसके साथ यह हँसी-मज़ाक़ किया करते थे। (6) क्या उन्होंने ज़मीन को नहीं देखा कि हमने उसमें किस कद्र उम्दा-उम्दा किस्म की बूटियाँ उगाई हैं। (7) इसमें (तौहीद की) एक बड़ी निशानी है, और उनमें अक्सर लोग ईमान नहीं लाते।³ (8) और बेशक़ आपका रब ग़ालिब है, रहीम है।⁴ (9) ♦

और (उन लोगों से कहिए कि) जब आपके रब ने मूसा (अलैहिस्सलाम) को पुकारा (और हुक्म दिया) कि तुम उन ज़ालिम लोगों के पास जाओ (10) यानी फिरऔन की कौम के, (और ऐ मूसा! देखो) क्या ये लोग (हमारे ग़ज़ब से) नहीं डरते। (11) उन्होंने अर्ज़ किया कि ऐ मेरे रब! मुझको यह अन्देशा है कि वे मुझको झुठलाने लेंगे। (12) और (तबई तौर पर ऐसे वक़्त में) मेरा दिल तंग होने लगता है और मेरी ज़बान (अच्छी तरह) नहीं चलती, इसलिए हासून के पास भी वद्व भेज दीजिए। (13) और मेरे ज़िम्मे उन लोगों का एक जुर्म भी है,⁵ सो मुझको यह अन्देशा है कि वे लोग मुझको (रिसालत की तब्लीग़ से पहले) क़त्ल कर डालें। (14) इरशाद हुआ क्या मजाल है, सो (अब) तुम दोनों हमारे अहक़ाम लेकर जाओ, हम (हिमायत और इम्दाद से) तुम्हारे साथ हैं, सुनते हैं। (15) सो तुम दोनों फिरऔन के पास जाओ और (उससे) कहो कि हम रब्बुल

(पृष्ठ 660 का शेष) 4. यानी न उसकी तरफ़ मशगूल होते हैं और न उनके अन्दाज़ से गुनाहगारों को हकीर समझना और अपनी बड़ाई व तकब्बुर जाहिर होता है।

5. जिस तरह काफ़िर कुरआन पर एक नई बात समझकर तमाशे के तौर पर और साथ ही उसमें एतिराज़ात पैदा करने के लिए उसकी सच्चाइयों से अन्ये-बहरे होकर अंधाधुंध बेतरतीब हुजूम कर लेते थे। जैसे कि अल्लाह ने इरशाद फ़रमाया: “कादू यकूनु-न अलैहि लि-बदा” सो ये इबादत करने वाले जिनका ज़िक्र हुआ ऐसा नहीं करते, बल्कि अक़ल व समझ के साथ कुरआन पर मुतवज्जह होते हैं।

6. खुद जैसे दीन के आशिक हैं उसी तरह अपने घर वालों और बाल-बच्चों के लिए भी उसके कोशिश करने वाले और दावत देने वाले हैं। चुनौचे अमली कोशिश के साथ हक़ तआला से दुआ भी करते हैं कि उनको दीनदार बना दे, और हमको हमारी इस दीनी कोशिश में कामयाब फ़रमा कि उनको दीनदारी की हालत में देखकर राहत और खुशी हासिल हो।

7. असल मक़सूद अफ़सरी माँगना नहीं अगरचे उसमें भी बुराई नहीं, मगर मक़ाम दलालत नहीं करता। बल्कि असल मक़सूद अपने ख़ानदान के मुत्तकी होने की दरख़्वास्त है।

1. जिस तरह काफ़िर कुरआन पर एक नई बात समझकर तमाशे के तौर पर और साथ ही उसमें और साथ ही उसमें एतिराज़ात पैदा करने के लिए उसकी सच्चाइयों से अन्ये-बहरे होकर अंधाधुंध बेतरतीब हुजूम कर लेते थे। (शेष तफ़सीर पृष्ठ 664 पर)

आलमीन के भेजे हुए हैं। (16) (और तौहीद की तरफ दावत के साथ यह हुक्म भी लाए हैं) कि तू बनी इस्राईल को हमारे साथ जाने दे। (17) (दोनों हज़रत गए और फिरऔन से सब मज़ामीन कह दिए) फिरऔन कहने लगा कि (आहा, तुम हो) क्या हमने तुमको बचपन में परवरिश नहीं किया, और तुम अपनी (उस) उम्र में बरसों रहा-सहा किए। (18) और तुमने अपनी वह हरकत भी की थी जो की थी, (यानी किबती को कत्ल किया था) और तुम बड़े नाशुके हो। (19) (हज़रत) मूसा ने जवाब दिया कि (वाकई) उस वक्त वह हरकत मैं कर बैठा था और मुझसे ग़लती हो गई थी। (20) फिर जब मुझको डर लगा तो मैं तुम्हारे यहाँ से फ़रार हो गया, फिर मुझको मेरे रब ने दानिशमन्दी “यानी खुसूसी समझ व शुऊर” अता फ़रमाई और मुझको पैग़म्बरों में शामिल कर दिया। (21) और (रहा परवरिश करने का एहसान जतलाना सो) वह यह नेमत है जिसका तू मुझपर एहसान रखता है कि तूने बनी इस्राईल को सख्त ज़िल्लत में डाल रखा था। (22) फिरऔन (इस बात में लाजवाब हुआ तो उस) ने कहा कि रब्बुल आलमीन की माहियत (और हकीकत) क्या है? (23) मूसा ने जवाब दिया कि वह रब है आसमानों और ज़मीन का और जो कुछ (मख़्लूक़ात) उनके दरमियान में है उसका, अगर तुमको यकीन करना हो (तो यह पता बहुत काफ़ी है)। (24) फिरऔन ने अपने इर्द-गिर्द वालों से कहा कि तुम लोग सुनते हो, (कि सवाल कुछ और जवाब कुछ)। (25) मूसा ने फ़रमाया कि वह परवर्दिगार है तुम्हारा और तुम्हारे पहले बुजुर्गों का। (26) फिरऔन (न समझा और) कहने लगा कि यह तुम्हारा रसूल जो (अपने ख़्याल के मुताबिक) तुम्हारी तरफ़ रसूल होकर आया है, मजन्नूँ (मालूम होता) है। (27) मूसा ने फ़रमाया कि वह परवर्दिगार है पूरब और पश्चिम का, और जो कुछ उनके दरमियान में है उसका भी, अगर तुमको अक्ल हो (तो इसी से मान लो)। (28) फिरऔन (आख़िर झुल्लाकर) कहने लगा कि अगर तुम मेरे सिवा कोई और माबूद तजवीज़ करोगे तो मैं तुमको जेलख़ाने भेज दूँगा। (29) मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फ़रमाया अगर मैं कोई साफ़ और खुली दलील पेश करूँ तब भी (न मानेगा?) (30) फिरऔन ने कहा कि अच्छा तो वह दलील पेश करो, अगर तुम सच्चे हो। (31) मूसा (अलैहिस्सलाम) ने अपनी लाठी डाल दी तो वह एकदम एक नुमायाँ अज़्दहा बन गया। (32) और दूसरा (मोज़िज़ा) अपना हाथ (गिरेबान में देकर) बाहर निकाला तो वह यकायक सब देखने वालों के सामने बहुत ही चमकता हुआ हो गया। (33) ♦

फ़िरऔन ने दरबार वालों से जो उसके आस-पास (बैठे) थे, कहा कि इसमें कोई शक नहीं कि यह शख्स बड़ा माहिर जादूगर है। (34) इसका (असल) मतलब यह है कि अपने जादू (के ज़ोर) से तुमको तुम्हारी सरज़मीन से बाहर कर दे, सो तुम लोग क्या मश्विरा देते हो। (35) दरबारियों ने कहा कि आप उनको और

(पृष्ठ 662 का शेष) जैसे कि अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमाया: “कादू यकूनु-न अलैहि लि-बदा” सो ये इबादत करने वाले जिनका ज़िक्र हुआ ऐसा नहीं करते, बल्कि अक्ल व समझ के साथ कुरआन पर मुतवज्जह होते हैं।

2. चाहे वह दुनिया में जैसे वाकिआ-ए-बद में काफ़िरों पर मुसीबत आई या आख़िरत में, और वह ज़ाहिर है।

3. इस सूर: के सबसे पहले और सबसे पिछले रुकूअ में कुरआन और रिसालत की हक्कानियत व सच्चाई और उसके मुताल्लिक चीज़ों का ज़िक्र है, और इनके इनकारियों को मलामत और झिड़की और इब्रत के लिए पहले रुकूअ के ख़त्म पर तौहीद को साबित करने वाली बाज़ दलीलें जो कि कुरआन का एक हिस्सा हैं, और सूर: के दरमियान में अल्लाह के अहकाम और रसूलों को झुठलाने वालों के बाज़ किस्से ज़िक्र किए गए हैं। चुनौचे हर किस्से में आयत “इन्-न फ़ी ज़ालि-क.....” को बार-बार लाया जाना उस इब्रत के मकसूद होने पर साफ़ तौर पर दलालत करता है।

4. मालूम हुआ कि उनके बैर व दुश्मनी ने उनकी फ़ितरत को बिलकुल तबाह व ज़ाया कर दिया, फिर ऐसों के पीछे क्यों जान खोई जाए।

5. उसकी आम फैली हुई रहमत दुनिया में काफ़िरों से भी मुताल्लिक है। इसका असर यह है कि उनको मोहलत दे रखी है वरना कुफ़्र यकीनन बुरा और अज़ाब का सबब है।

6. ज़ुर्म एक किबती के कत्ल का, जिसका किस्सा सूर: कसस में आया।

1. कुल मिलाकर दावत का हासिल अल्लाह तआला और बन्दों के हुक्क में जुल्म व ज़्यादती का छोड़ना है।

2. जवाब का खुलासा यह है कि मैं पैग़म्बर की हैसियत से आया हूँ। जिसमें दबने की कोई वजह नहीं, (शेष तफ़सीर पृष्ठ 666 पर)

उनके भाई को (थोड़ी) मोहलत दीजिए और शहरों में चपरासियों को (हुक्मनामे देकर) भेज दीजिए (36) कि वे (सब शहरों से) सब माहिर जादूगरों को आपके पास लाकर हाज़िर कर दें। (37) गरज़ वे जादूगर एक मुकर्ररा दिन के खास वक़्त पर¹ जमा किए गए। (38) और फिर (फ़िरऔन की तरफ़ से) लोगों को यह इश्तिहार दिया गया कि क्या तुम लोग जमा होगे? (यानी जमा हो जाओ) (39) ताकि अगर जादूगर ग़ालिब आ जाएँ तो हम उन्हीं की राह पर रहें। (40) फिर जब वे जादूगर (फ़िरऔन की पेशी में) आए तो फ़िरऔन से कहने लगे कि अगर हम (मूसा पर) ग़ालिब आ गए तो क्या हमको कोई बड़ा सिला (और इनाम) मिलेगा? (41) फ़िरऔन ने कहा, हाँ! और (उसपर ज़ायद यह कि) तुम उस सूरत में (हमारे) करीबी लोगों में दाख़िल हो जाओगे।² (42) मूसा (अलैहिस्सलाम) ने उनसे फ़रमाया कि तुमको जो कुछ डालना हो (मैदान में) डालो। (43) सो उन्होंने अपनी रस्सियाँ और लाठियाँ³ डालीं और कहने लगे कि फ़िरऔन के इक्बाल “यानी बुलन्दी और इज़्ज़त” की कसम बेशक हम ही ग़ालिब आएँगे। (44) फिर मूसा (अलैहिस्सलाम) ने अपनी लाठी डाली, सो डालने के साथ ही (अज़्दहा बनकर) उनके तमाम-के-तमाम बनाए हुए धन्धे को निगलना शुरू कर दिया। (45) सो (यह देखकर) जादूगर (ऐसे मुतास्सिर हुए कि) सब सच्चे में गिर पड़े। (46) (और पुकार-पुकारकर) कहने लगे कि हम ईमान ले आए रब्बुल आलमीन पर। (47) जो मूसा और हासून का भी रब है।⁴ (48) फ़िरऔन कहने लगा कि हाँ, तुम मूसा पर ईमान ले आए बिना इसके कि मैं तुम्हें इजाज़त दूँ, ज़रूर (मालूम होता है कि) यह (जादू में) तुम सबका उस्ताद है, जिसने तुमको जादू सिखाया है।⁵ सो अब तुमको हकीकत मालूम हुई जाती है। (और वह यह है कि) मैं तुम्हारे एक तरफ़ के हाथ और दूसरी तरफ़ के पाँव काटूंगा, और तुम सबको सूली पर लटकाऊँगा (ताकि औरों को सबक मिले)। (49) उन्होंने जवाब दिया कि कुछ हर्ज नहीं, हम अपने मालिक के पास जा पहुँचेंगे। (50) (और) हम उम्मीद रखते हैं कि हमारा परवर्दिगार हमारी ख़ताओं को माफ़ कर दे, इस वजह से कि हम (इस मौके पर हाज़िरान में से) सबसे पहले ईमान लाए हैं। (51) ♦

और हमने मूसा को हुक्म भेजा कि मेरे (उन) बन्दों को रातों-रात (मिस्र से बाहर) निकाल ले जाओ, (और फ़िरऔन की जानिब से) तुम लोगों का पीछा किया जाएगा। (52) फ़िरऔन ने (पीछा करने की तदबीर के लिए आस-पास के) शहरों में चपरासी दौड़ा दिए। (53) (और यह कहला भेजा) कि ये लोग (यानी बनी इस्राईल हमारे मुकाबले में) थोड़ी-सी जमाअत है। (54) और उन्होंने हमको बहुत गुस्सा दिलाया है। (55) और हम सब एक हथियारों से लेस जमाअत (और बाकायदा फौज) हैं। (56) गरज़ हमने उनको बागों से

(पृष्ठ 664 का शेष) और पैगम्बरी उस ग़लती से क़त्ल हो जाने के मनाफ़ी नहीं। क्योंकि वह क़त्ल ग़लती से था, जो नुबुव्वत की मलाहियत में फ़तूर डालने वाला नहीं और इस्तेदाद व सलाहियत के बाद उसका हो जाना कुछ बर्द नहीं।

3. कि उनके लड़कों को क़त्ल करता था, जिसके ख़ौफ़ से मैं सन्दूक में रखकर दरिया में डाला गया और तेरे हाथ लग गया, और तेरी परवरिश में रहा। तो उस परवरिश की असल वजह तो तेरा जुल्म ही है। तो ऐसी परवरिश का क्या एहसान जतलाया जाता है, बल्कि उससे तो तुझे अपनी नामाकूल हरकतों को याद करके शरमाना चाहिए। मगर याद रहे कि परवरिश का एहसान जतलाने का जवाब देने से एहसान मानने की नफ़ी मकसूद नहीं, बल्कि एहसान जतलाने की नफ़ी मकसूद है, जो उम्मून बुरी और नापसन्दीदा है और खुसूसन जबकि उस एहसान का सबब उस एहसान के दावेदार का जुल्म व ज़्यादती हो।

4. मतलब यह कि हकीकत से उसकी मज़ूरिफ़्त और पहचान नहीं हो सकती। जब सवाल होगा, सिफ़तों ही से जवाब मिलेगा।

1. मुकर्ररा दिन से “यौमुज्जीनत” और खास वक़्त से सूरज चढ़े का वक़्त मुराद है, जैसा कि सूरः ता-हा के शुरू रुकूअ में इसका मुकाबले के लिए मुतैयन होना ज़िक्र किया गया है। यानी उस वक़्त के करीब तक सब जमा कर लिए गए और फ़िरऔन को जमा होने की इत्तिला की गई।

2. गरज़ इस गुफ़्तगू के बाद मुकाबले की जगह पर आए और दूसरी तरफ़ मूसा अलैहिस्सलाम और उनके भाई हज़रत हासून अलैहिस्सलाम तशरीफ़ लाए और मुकाबला शुरू हुआ। जादूगरों ने मूसा अलैहिस्सलाम से कहा कि आप अपनी लाठी पहले डालिएगा या हम डालें? आपने फ़रमाया कि तुम ही पहले डालो। (शेष तफ़सीर पृष्ठ 668 पर)

और चश्मों से “निकाला” (57) और खज़ानों से और उम्दा मकानात से निकाल बाहर किया। (58) (हमने उनके साथ तो) यूँ किया, और उनके बाद बनी इस्राईल को उनका मालिक बनाया। (59) गरज़ सूरज निकलने के वक़्त उनको पीछे से जा लिया। (60)¹ फिर दोनों जमाअतें (आपस में ऐसी करीब हुई कि) एक-दूसरे को देखने लगीं, तो मूसा के साथ वाले (घबराकर) कहने लगे कि (ऐ मूसा!) बस हम तो हाथ आ गए। (61) (मूसा अलैहि. ने) फ़रमाया हरगिज़ नहीं, क्योंकि मेरे साथ मेरा रब है, वह मुझको (दरिया से निकलने का) अभी रास्ता बतला देगा। (62)² फिर हमने मूसा को हुक्म दिया कि अपनी लाठी को दरिया पर मारो, चुनाँचे (उन्होंने उसपर लाठी मारी, जिससे) वह (दरिया) फट गया,³ और हर हिस्सा इतना (बड़ा) था जैसा बड़ा पहाड़।⁴ (63) और हमने दूसरे फ़रीक को भी उस जगह के करीब पहुँचा दिया।⁵ (64) और (किस्से का अन्जाम यह हुआ कि) हमने मूसा को और उनके साथ वालों को सबको बचा लिया। (65) फिर दूसरों को गर्क कर दिया। (66) (और) इस वाकिए में (भी) बड़ी इबरत है, और (बावजूद इसके) उन (काफ़िरों) में अक्सर लोग ईमान नहीं लाते। (67) और आपका रब बड़ा ज़बरदस्त है, (और) बड़ा मेहरबान है। (68) ♦

और आप उन लोगों के सामने इब्राहीम (अलैहि.) का किस्सा बयान कीजिए। (69) जबकि उन्होंने अपने बाप से और अपनी कौम से फ़रमाया कि तुम किस चीज़ की इबादत करते हो। (70) उन्होंने कहा कि हम बुतों की इबादत किया करते हैं, (और) हम उन्हीं की (इबादत) पर जमे बैठे रहते हैं। (71) (इब्राहीम अलैहि. ने) फ़रमाया कि क्या ये तुम्हारी सुनते हैं जब तुम इनको पुकारा करते हो? (72) या ये तुमको कुछ नफ़ा पहुँचाते हैं, या ये तुमको कुछ नुकसान पहुँचा सकते हैं? (73) उन लोगों ने कहा कि (इनकी इबादत करने की यह वजह तो) नहीं, बल्कि हमने अपने बड़ों को इसी तरह करते देखा है। (74) (इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने) फ़रमाया कि भला तुमने उनको (ग़ौर से) देखा भी जिनकी तुम इबादत किया करते हो। (75) तुम भी और तुम्हारे पुराने बड़े भी (76) कि ये (जिनकी इबादत की जा रही है) मेरे (यानी तुम्हारे) लिए नुकसान का सबब हैं, मगर हाँ रब्बुल आलमीन (की इबादत पूरी तरह नफ़ा देने वाली है) (77) जिसने मुझको (और इसी तरह सबको) पैदा किया, फिर वही मुझको (मेरी मस्लहतों की तरफ़) रहनुमाई करता है। (78) और जो कि मुझको खिलाता-पिलाता है। (79) और जब मैं बीमार हो जाता हूँ तो वही मुझको शिफा देता है। (80) और जो मुझको (वक़्त पर) मौत देगा। फिर (क़ियामत के दिन) मुझको ज़िन्दा करेगा। (81) और जिससे मुझको यह उम्मीद है कि मेरे ग़लतियों को⁶ क़ियामत के दिन माफ़ कर देगा। (82) ऐ मेरे रब! मुझको हिक़मत अता फ़रमा

(पृष्ठ 666 का शेष) 3. जो जादू के असर से सॉप मालूम होती थी।

4. उम्मीद के खिलाफ़ यह अन्जाम देखकर फिरऔन बहुत घबराया कि कहीं ऐसा न हो कि सारी रिआया और पब्लिक ही मुसलमान हो जाए। तो एक बात बनाकर नाराज़गी के तौर पर जादूगरों से कहने लगा।

5. और तुम इसके शागिर्द हो, इसलिए आपस में ख़ुफ़िया साज़िश कर ली है कि तुम यूँ करना हम यूँ करेंगे, फिर इस तरह हार-जीत ज़ाहिर करेंगे, ताकि क़िस्बियों से हुक्मत छीनकर ख़ूब मज़े के साथ खुद हुक्मत करो।

1. यानी करीब पहुँच गए। उस वक़्त बनी इस्राईल दरिया-ए-कुलजुम से उतरने की फ़िक्र में थे कि क्या सामान करें।

2. क्योंकि मूसा अलैहिस्सलाम से हक़ तअ़ाला ने फ़रमा दिया था कि उनके लिए दरिया में (लाठी मारकर) खुशक रास्ता बना देना। फिर तुमको न तो फिरऔन के आ पकड़ने का ख़ौफ़ होगा और न (डूब जाने का) डर। पस मूसा अलैहिस्सलाम अल्लाह के इस वायदे पर मुत्मइन थे। लेकिन उनकी कौम इस वायदे का इल्म न रखने के सबब परेशान थी।

3. यानी पानी कई जगह से इधर-उधर हटकर बीच में अनेक सड़कें खुल गईं।

4. बनी इस्राईल अमन व इत्पीनान के साथ दरिया से पार हो गए।

5. फिरऔन और फिरऔनी भी दरिया के नज़दीक पहुँचे। दरिया उस वक़्त उसी हाल पर ठहरा हुआ था, इसलिए फिरऔन ने खुले हुए रास्तों को ग़नीमत समझा। आगा-पीछा कुछ न सोचा, सारे लश्कर को लेकर अन्दर घुस गया। (शेष तफ़सीर पृष्ठ 670 पर)

और (अपनी निकटता के दर्जों में) मुझको (आला दर्जे के) नेक लोगों में शामिल फरमा।^१ (83) और मेरा जिक्र आगे आने वालों में जारी रख। (84) और मुझको जन्नतुन्-नअमीम के हकदारों में से कर। (85) और मेरे बाप (को ईमान की तौफीक देकर उस) की मग़्फ़िरत फरमा, कि वह गुमराह लोगों में है। (86) और जिस दिन सब ज़िन्दा होकर उठेंगे उस दिन मुझको रुस्वा न करना। (87) उस दिन मैं कि (नजात के लिए) न माल काम आएगा और न औलाद।^२ (88) मगर हाँ, (उसकी नजात होगी) जो अल्लाह तआला के पास (कुफ़्र व शिर्क से) पाक दिल लेकर आएगा। (89) और (उस दिन) खुदा से डरने वालों (यानी ईमान वालों) के लिए जन्नत नज़दीक कर दी जाएगी। (90) और गुमराहों (यानी काफ़िरों) के लिए दोज़ख़ सामने ज़ाहिर की जाएगी। (91) और (उस दिन) उनसे कहा जाएगा कि वे माबूद कहाँ गए जिनकी तुम इबादत करते थे (92) अल्लाह के अलावा। क्या (इस वक़्त) वे तुम्हारा साथ दे सकते हैं या अपना ही बचाव कर सकते हैं। (93) फिर (यह कहकर) वे (माबूद) और गुमराह लोग (94) और शैतान का लश्कर सब के सब दोज़ख़ में औंधे मुँह डाल दिए जाएंगे। (95) वे काफ़िर दोज़ख़ में गुफ़्तगू करते हुए (उन माबूदों से) कहेंगे (96) कि अल्लाह की कसम! बेशक हम खुली गुमराही में थे। (97) जबकि तुमको (इबादत में) रब्बुल आलमीन के बराबर करते थे। (98) और हमको तो बस इन बड़े मुजरिमों ने (जो कि गुमराही की बुनियाद रखने वाले थे) गुमराह किया। (99) सो (अब) न कोई हमारा सिफ़ारशी है (कि छुड़ा ले) (100) और न कोई मुख़्लिस दोस्त है (कि ख़ाली दिल को तसल्ली ही दे) (101) सो क्या अच्छा होता कि हमको (दुनिया में) फिर वापस जाना मिलता ताकि हम मुसलमान हो जाते।^३ (102) बेशक इस वाक़िए में (भी हक़ के तालिबों के लिए) एक बड़ी इब्रत है, और (बावजूद इसके) उन (मक्का के मुशिरकों) में अक्सर लोग ईमान नहीं लाते। (103) बेशक आपका रब बड़ा ज़बरदस्त, रहमत वाला है। (104) ❖

नूह की कौम ने पैग़म्बरों को झुठलाया।^४ (105) जबकि उनसे उनकी बिरादरी के भाई नूह ने फ़रमाया कि क्या तुम (अल्लाह तआला से) नहीं डरते। (106) मैं तुम्हारा अमानतदार पैग़म्बर हूँ। (107) सो (इसका तकाज़ा यह है कि) तुम लोग अल्लाह से डरो और मेरा कहना मानो। (108) और (साथ ही यह कि) मैं तुमसे कोई (दुनियावी) सिला नहीं माँगता, मेरा सिला तो बस रब्बुल आलमीन के ज़िम्मे है। (109) सो (मेरी इस बेग़रज़ी का मुक्तज़ा भी यह है कि) तुम अल्लाह से डरो और मेरा कहना मानो। (110) वे लोग कहने लगे कि क्या हम तुमको मानेंगे हालाँकि रज़ील “यानी समाजी तौर पर कमज़ोर व कम दर्जे के” लोग तुम्हारे साथ हो लिए हैं।^५ (111) नूह (अलैहिस्सलाम) ने फ़रमाया कि उनके (पेशे और) काम से मुझको क्या बहस (112)

(पृष्ठ 668 का शेष) अब दरिया का पानी चारों तरफ़ से सिमटना शुरू हुआ और फिरज़ौन का सारा लश्कर ग़र्क़ हो गया।

6. इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अल्लाह की ये सिफ़तें इसलिए सुनाई कि खुदा तआला की इबादत की रग़बत हो, और “ख़ती-अती” से मुराद ख़िलाफ़े औला (यानी ना-मुनासिब) है वरना अम्बिया अलैहिमुस्सलाम गुनाहों से क़तई तौर पर पाक थे।

1. शामिल फ़रमाने से मरतबे की ज़्यादती और नेक लोगों के साथ खुसूसी निकटता मुराद है।
2. इससे कोई शख्स यह शुब्हा न करे कि मोमिनो को तो वह माल जिसको सदका किया हो, और वह औलाद जो नेक हो या नाबालिग़ मर गई हो, नफ़ा देती है। बात यह है कि नफ़े का इनकार उनकी ज़ात के एतिबार से है, और मोमिन के लिए नफ़ा देने वाला होना नेक अमल के मिल जाने यानी सन्न और सदक़े की वजह से है, पस इस ज़वाब की हाज़त नहीं कि यह नफ़ा न पहुँचना काफ़िरों के लिए मख़सूस है।
3. यहाँ तक इब्राहीम अलैहिस्सलाम की तक़रीर है। उसके बाद खुदा तआला फ़रमाता है।
4. क्योंकि एक पैग़म्बर को झुठलाने से तमाम नबियों का झुठलाना लाज़िम आता है।
5. जिनकी मुवाफ़क़त से शरीफ़ और बड़े लोगों को शर्म आती है, और यह भी कि अक्सर ऐसे कम-हौसला लोगों की गरज़ भी माल का हासिल करना या बुलन्दी व तरक्की पाना हुआ करता है, ये लोग भी दिल से ईमान नहीं लाए।

उनसे हिसाब किताब लेना बस खुदा का काम है। क्या खूब हो कि तुम इसको समझो। (113) और मैं ईमान वालों को दूर करने वाला नहीं हूँ। (114) मैं तो साफ़ तौर पर एक डराने वाला हूँ।¹ (115) वे लोग कहने लगे कि अगर तुम (इस कहने-सुनने से) ऐ नूह! बाज़ न आओगे तो ज़रूर संगसार कर दिए जाओगे। (116) नूह (अलैहिस्सलाम) ने² दुआ की कि ऐ मेरे परवरिगार! (मेरी कौम) मुझको (बराबर) झुठला रही है। (117) सो आप मेरे और उनके दरमियान में एक (अमली) फैसला कर दीजिए,³ और मुझको और जो ईमान वाले मेरे साथ हैं उनको (उस हलाकत से) नजात दीजिए। ● (118) तो हमने (उनकी दुआ कबूल की और) उनको और जो उनके साथ भरी कश्ती में (सवार) थे उनको नजात दी। (119) फिर उसके बाद हमने बाँकी लोगों को डुबू दिया। (120) इस (वाकिए) में (भी) बड़ी इबरत है, और (बावजूद इसके) उन (मक्का के काफ़िरों) में अक्सर लोग ईमान नहीं लाते। (121) और बेशक आपका रब ज़बरदस्त (और) मेहरबान है। (122) ♦

कौमे आद ने पैगम्बरों को झुठलाया। (123) जबकि उनसे उन (की बिरादरी) के भाई हूद ने कहा कि क्या तुम (अल्लाह से) डरते नहीं हो? (124) मैं तुम्हारा अमानतदार पैगम्बर हूँ। (125) सो तुम अल्लाह से डरो और मेरा कहना मानो। (126) और मैं तुमसे इस (तब्लीग़) पर कोई सिला नहीं माँगता, बस मेरा सिला तो रब्बुल आलमीन के ज़िम्मे है। (127) क्या तुम हर ऊँचे मक़ाम पर एक यादगार (के तौर पर इमारत) बनाते हो, जिसको महज़ फुज़ूल (बिला ज़रूरत) बनाते हो। (128) और बड़े-बड़े महल बनाते हो, जैसे दुनिया में तुमको हमेशा रहना है।⁴ (129) और जब किसी की पकड़-धकड़ करने लगते हो तो बिलकुल जाबिर (और ज़ालिम) बनकर पकड़ करते हो।⁵ (130) सो तुम (को चाहिए कि) अल्लाह तआला से डरो, और (चूँकि मैं रसूल हूँ इसलिए) मेरी इताअत करो। (131) और उस (अल्लाह) से डरो जिसने तुम्हारी उन चीज़ों से इम्दाद की जिनको तुम जानते हो (132) (यानी) मवेशी और बेटों (133) और बाग़ों और चश्मों से तुम्हारी इम्दाद की।⁶ (134) (अगर तुम इन हरकतों से बाज़ न आए तो) मुझको तुम्हारे हक़ में एक बड़े सख़्त दिन के अज़ाब का अन्देशा है। (135) वे लोग बोले कि हमारे नज़दीक तो दोनों बातें बराबर हैं, चाहे तुम नसीहत करो और चाहे नसीहत करने वाले मत बनो। (136) यह तो बस अगले लोगों की एक (मामूली) आदत (और रस्म) है। (137) और (तुम जो हमको अज़ाब से डराते हो तो) हमको हरगिज़ अज़ाब न होगा। (138) गरज़ उन लोगों ने हूद (अलैहिस्सलाम) को झुठलाया तो हमने उनको (आँधी के अज़ाब से) हलाक कर दिया, बेशक

1. और तब्लीग़ से मेरा फ़र्ज़ और ज़िम्मेदारी पूरी हो जाती है। आगे अपना नफ़ा व नुक़सान तुम देख लो।
2. गरज़ लम्बी मुद्दत इसी तरह से गुज़र गई तो नूह अलैहिस्सलाम ने दुआ की।
3. यानी उनको हलाक कर दीजिए।
4. यानी ऐसे लम्बे-चौड़े और बुलन्द व मज़बूत मकानात और महल यादगार और निशानियाँ बनाना उस वक़्त मुनासिब थे कि दुनिया में हमेशा रहना होता, तो यह ख़याल होता कि लम्बे-चौड़े मकान बनाओ ताकि आने वाली नस्त में तंगी न हो, क्योंकि हम भी रहेंगे और वे भी होंगे। और ऊँचे और बुलन्द भी बनाओ ताकि नीचे जगह न रहे तो ऊपर रहने लगे।
5. इन बुरे अख़लाक का इसलिए बयान किया गया कि ये बुरे अख़लाक अक्सर ईमान व इताअत के लिए रुकावट हो जाते हैं, और चूँकि शिर्क और बुरे अख़लाक अल्लाह की नाराज़ी और अज़ाब दिए जाने का सबब हैं, इसलिए तुमको चाहिए कि अल्लाह से डरो।
6. तो नेमतें देने वाला होने का तकाज़ा यह है कि उसके अहक़ाम की बिलकुल भी मुख़ालफ़त न की जाए।

इस (वाकिए) में भी बड़ी इबरत है, और (बावजूद इसके) उनमें अक्सर लोग ईमान नहीं लाते। (139) और बेशक आपका रब ज़बरदस्त (और) मेहरबान है।^१ (140) ❖

कौमे समूद ने (भी) पैगम्बरों को झुठलाया। (141) जबकि उनसे उनके भाई सालेह (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया, क्या तुम (अल्लाह तआला से) नहीं डरते। (142) मैं तुम्हारा अमानतदार पैगम्बर हूँ। (143) सो तुम अल्लाह से डरो और मेरी इताअत करो। (144) और मैं तुमसे इसपर कुछ सिला नहीं चाहता, बस मेरा सिला तो रब्बुल आलमीन के ज़िम्मे है।^२ (145) क्या तुमको इन्हीं चीज़ों में बेफिक्री से रहने दिया जाएगा जो यहाँ (दुनिया में) मौजूद हैं। (146) यानी बागों में और चश्मों में (147) और खेतों और उन खजूरों में जिनके गुफ्फे खूब गूँधे हुए हैं।^३ (148) और क्या (इसी गुफ़लत की वजह से) तुम पहाड़ों को तराश-तराशकर इतराते हो (और फ़ख़र करते हुए) मकान बनाते हो। (149) सो अल्लाह तआला से डरो और मेरा कहना मानो। (150) और इन (बन्दगी) की हदों से निकल जाने वालों का कहना मत मानो (151) जो सरज़मीन में फ़साद किया करते हैं और (कभी) सुधार (की बात) नहीं करते।^४ (152) उन लोगों ने कहा कि तुम पर तो किसी ने बड़ा भारी जादू कर दिया है।^५ (153) तुम बस हमारी ही तरह के एक (मामूली) आदमी हो, (और आदमी नबी होता नहीं) सो कोई मोजिज़ा पेश करो अगर तुम सच्चे हो। (154) सालेह ने फरमाया कि यह एक ऊँटनी है^६ पानी पीने के लिए एक बारी इसकी है और एक मुकर्ररा दिन में एक बारी तुम्हारी। (यानी तुम्हारे मवेशियों की)^७ (155) और इसको बुराई (तकलीफ़ देने की नीयत) के साथ हाथ भी मत लगाना, कभी तुमको एक भारी दिन का अज़ाब आ पकड़े। (156) सो उन्होंने^८ उस ऊँटनी को मार डाला, फिर (अपनी हरकत पर) शर्मिन्दा हुए।^९ (157) फिर (आख़िर) अज़ाब ने उनको आ लिया, बेशक इस (वाकिए) में बड़ी इबरत है। और (बावजूद इसके) इन (मक्का के काफ़िरों) में अक्सर लोग ईमान नहीं लाते। (158) और बेशक आपका रब बड़ा ज़बरदस्त, बहुत मेहरबान है (कि बावजूद कुदरत के मोहलत देता है)। (159) ❖

लूत की कौम ने (भी) पैगम्बरों को झुठलाया। (160) जबकि उनसे उनके भाई^{१०} लूत (अलैहिस्सलाम) ने कहा कि क्या तुम (अल्लाह से) डरते नहीं हो। (161) मैं तुम्हारा अमानतदार पैगम्बर हूँ। (162) सो तुम अल्लाह से डरो और मेरी इताअत करो। (163) और मैं तुमसे इसपर कोई सिला नहीं चाहता, बस मेरा सिला

1. कि अज़ाब देने पर भी काविर है और अपनी रहमत से मोहलत भी दे रखी है।
2. और तुम जो ऐश व आराम की बदैलत अल्लाह से इस दर्जा ग़ाफ़िल हो तो (आगे देखो तर्जुमा)
3. जिनमें खूब कसरत से फल आता है।
4. मुराद काफ़िरों के सरदार हैं जो लोगों को गुमराही पर तैयार करते थे। फ़साद फैलाने और सुधार न करने से यही मुराद है।
5. जिससे तुम्हारी अक्ल में फ़तूर आ गया है कि वब्र और नुबुव्वत का दावा करते हो।
6. जो ख़िलाफ़े आदत पैदा होने की वजह से मोजिज़ा है। जैसे आठवे पार: के ख़त्म के करीब गुज़रा। और इसके अलावा कि यह मेरी रिसालत पर एक दलील है खुद इसके भी कुछ हुक्कू-हैं। चुनाँचे उनमें से एक यह है कि (आगे देखो तर्जुमा)
7. पानी की बारी इस तरह थी कि एक दिन ऊँटनी का और एक दिन दूसरे जानवरों का। जब ऊँटनी की बारी का दिन होता तो वह तमाम पानी पी जाती, और उस दिन न दूसरे जानवरों को पानी मिलता न आदमियों को, और यह बात उन लोगों को नागवार हुई और उस ऊँटनी के दुश्मन हो गए। हदीसों से मालूम होता है कि वहाँ एक कुआँ था जिसमें यह बारी थी।
8. न रिसालत की तस्दीक़ की न ऊँटनी के हुक्कू अदा किए। बल्कि (आगे देखो तर्जुमा)
9. मगर अब्बल तो अज़ाब के देखने के वक़्त शर्मिन्दगी बेकार है, दूसरे ख़ाली तबई शर्मिन्दगी से क्या होता है जब तक इख़्तियारी तलाफ़ी यानी तौबा और ईमान न हो।
10. रूहुल-मअनी में सूर: काफ़ की तफ़सीर में लिखा है कि ये लोग नसबी भाई न थे, मजाज़न भाई कह दिया, ससुराली रिश्तेदार थे। क्योंकि लूत अलैहिस्सलाम हिज़रत करके यहाँ तशरीफ़ लाए थे, आपकी बिरादरी के लोग (यानी हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह अलैहिस्सलाम के ख़ानदान वाले) यहाँ आपके साथ मौजूद न थे।

तो रब्बुल आलमीन के ज़िम्मे है। (164) क्या तमाम दुनिया जहान वालों में से तुम (यह हरकत करते हो कि) मर्दों से बदफेली करते हो। (165) और तुम्हारे रब ने जो तुम्हारे लिए बीवियाँ पैदा की हैं उनको नज़र अन्दाज़ किए रहते हो।¹ बल्कि (असल बात यह है कि) तुम (इनसानियत की) हद से गुज़र जाने वाले लोग हो। (166) वे कहने लगे कि ऐ लूत! अगर तुम (हमको कहने-सुनने से) बाज़ नहीं आओगे तो ज़रूर (बस्ती से) निकाल दिए जाओगे। (167) लूत (अलैहि.) ने फ़रमाया² कि मैं तुम्हारे इस काम से सख्त नफ़रत रखता हूँ।³ (168) (हज़रत) लूत ने दुआ की कि ऐ मेरे रब! मुझको और मेरे (खास) मुताल्लिकीन को उनके इस काम (के वबाल) से नज़ात दे। (169) सो हमने उनको और उनके मुताल्लिकीन को सबको नज़ात दी (170) सिवाय एक बुढ़िया के,⁴ वह (अज़ाब के अन्दर) रह जाने वालों में रह गई।⁵ (171) फिर हमने और सबको हलाक कर दिया। (172) और हमने उनपर एक खास किस्म की (यानी पत्थरों की) बारिश बरसाई, सो क्या बुरी बारिश थी जो उन लोगों पर बरसी जिनको (अल्लाह तआला के अज़ाब से) डराया गया था। (173) बेशक इस (वाकिए) में (भी) इबरत है, और (बावजूद इसके) इन (मक्का के काफ़िरों) में अक्सर लोग ईमान नहीं लाते। (174) और बेशक आपका परवर्दिगार बड़ी कुदरत वाला, बड़ी रहमत वाला है। (175) ♦

ऐका वालों ने (भी) जिनका ज़िक्र सूरः हिज़्र के आख़िर में गुज़रा है) पैग़म्बरों को झुठलाया। (176) जबकि उनसे शुऐब (अलैहिस्सलाम) ने फ़रमाया कि क्या तुम (अल्लाह से) डरते नहीं हो। (177) मैं तुम्हारा अमानतदार पैग़म्बर हूँ। (178) सो तुम अल्लाह से डरो और मेरा कहना मानो। (179) और मैं तुमसे इसपर कोई सिला नहीं चाहता, बस मेरा सिला तो रब्बुल आलमीन के ज़िम्मे है। (180) तुम लोग पूरा नापा करो, और (हक वाले का) नुक़सान मत किया करो। (181) और (इसी तरह तौलने की चीज़ों में) सीधी तराजू से तौला करो।⁶ (182) और लोगों का उनकी चीज़ों में नुक़सान मत किया करो, और सरज़मीन में फ़साद मत मचाया करो। (183) और उस (खुदा-ए-कादिर) से डरो जिसने तुमको और तमाम अगली मख़्लूक़ात को पैदा किया। (184) वे लोग कहने लगे कि बस तुमपर तो किसी ने बड़ा भारी जादू कर दिया है। (185) और तुम तो महज़ हमारी तरह (के) एक (मामूली) आदमी हो, और हम तो तुमको झूठे लोगों में से ख़याल करते हैं। (186) सो अगर तुम सच्चों में से हो तो हमपर आसमान का कोई टुकड़ा गिरा दो।⁷ (187) शुऐब ने कहा कि⁸ तुम्हारे आमाल को मेरा रब (ही) ख़ूब जानता है। (188) सो वे लोग (बराबर) उनको झुठलाया किए, फिर उनको सायबान⁹ के वाकिए ने आ पकड़ा, बेशक वह बड़े सख्त दिन का अज़ाब था। (189) (और) इस (वाकिए) में (भी) बड़ी इबरत है, और (बावजूद इसके) इन (मक्का के काफ़िरों) में अक्सर लोग

1. यानी और कोई आदमी तुम्हारे सिवा यह हरकत नहीं करता, और यह नहीं है कि उसके बुरा होने में कुछ छुपी हुई बात है।

2. तुम्हारी यह धमकी मुझको हक़ कहने से बाज़ नहीं रख सकती। क्योंकि (आगे देखो तर्जुमा)

3. तो कहना कैसे छोड़ दूँगा। जब उन लोगों ने किसी तरह न माना और अज़ाब आता मालूम हुआ तो (आगे देखो तर्जुमा)

4. इससे लूत अलैहिस्सलाम की बीवी मुराद है।

5. अज़ाब में रह जाना इसलिए था कि वह काफ़िरा थी, इसलिए रात को लूत अलैहिस्सलाम के साथ शहर से न निकली।

6. यानी डन्डी न मारा करो, न बाटों में फर्क किया करो।

7. ताकि हमको मालूम हो जाए कि वाकई तुम नबी थे। तुम्हारे झुठलाने से हमको यह सज़ा हुई।

8. मैं अज़ाब का लाने वाला या उसकी कैफ़ियत को मुतैयन करने वाला कौन होता हूँ।

9. 'सायबान का अज़ाब' जैसा कि तफ़सीर दूरें मन्सूर में रिवायत किया गया है, यह था कि पहले उन लोगों पर गर्मी मुसल्लत हुई। फिर एक बादल जाहिर हुआ जिससे ठन्डी हवा आती थी। सब लोग उसके नीचे जमा हो गए। उसमें से आग बरसना शुरू हुई और सब जल गए।

ईमान नहीं लाते। (190) और बेशक आपका रब बड़ी कुव्वत वाला और बड़ी रहमत वाला है। (191) ❖
 और यह कुरआन रब्बुल आलमीन का भेजा हुआ है। (192) इसको अमानत दार फरिश्ता लेकर आया है (193) आपके दिलपर ताकि आप (भी) अन्य डराने वालों में से हों (194) साफ़ अरबी ज़बान में “नाज़िल किया” (195) और इस (कुरआन) का ज़िक्र पहली उम्मतों की (आसमानी) किताबों में (भी) है।¹ (196) क्या उन लोगों के लिए यह बात दलील नहीं है कि इस (पैशिनगोई) को बनी इस्राईल के उलमा जानते हैं।² (197) और अगर (फ़र्ज़ करो) हम इस (कुरआन) को किसी अज़मी (ग़ैर-अरबी) पर नाज़िल कर देते (198) फिर वह (ग़ैर-अरबी) उनके सामने इसको पढ़ भी देता, ये लोग (अपनी हद से बड़ी हुई दुश्मनी और बैर की वजह से) तब भी इसको न मानते। (199) हमने इसी तरह (सख्ती और इसरार के साथ) इस ईमान न लाने को उन नाफ़रमानों के दिलों में डाल रखा है।³ (200) ये लोग इस (कुरआन) पर ईमान न लाएँगे जब तक कि सख्त अज़ाब को (मरने के वक़्त या बरज़ख़ में या आख़िरत में) न देख लेंगे। (201) जो अचानक उनके सामने आ खड़ा होगा, और उनको (पहले से) ख़बर भी न होगी। (202) फिर (उस वक़्त जान को बनेगी) कहेंगे कि क्या (किसी तौर पर) हमको (कुछ) मोहलत मिल सकती है।⁴ (203) क्या (हमारी डॉट और धमकियों को सुनकर) ये लोग हमारे अज़ाब का जल्द आना चाहते हैं।⁵ (204) ऐ मुखातब! ज़रा बतलाओ तो अगर हम उनको चन्द साल तक ऐश में रहने दें, (205) फिर जिस (अज़ाब) का उनसे वायदा है वह उनके सर पर आ पड़े, (206) तो उनका वह ऐश किस काम आ सकता है।⁶ (207) और जितनी बस्तियाँ (इनकार करने वालों की) हमने (अज़ाब से) ग़ारत की हैं सबमें डराने वाले (पैग़म्बर) आए। (208) (जब न माना तो अज़ाब नाज़िल हुआ) नसीहत के वास्ते, “यानी पैग़म्बर नसीहत के वास्ते आए” और हम (बज़ाहिर देखने में भी) ज़ालिम नहीं हैं। (209) और इस (कुरआन) को शैतान (जो काहिनों के पास आया करते थे) लेकर नहीं आए। (210) और यह उन (की हालत) के मुनासिब ही नहीं, और वे इसपर कादिर भी नहीं। (211) क्योंकि वे शयातीन (आसमानी वह्य) सुनने से रोक दिए गए हैं। (212) सो (ऐ पैग़म्बर!) तुम अल्लाह के साथ किसी और माबूद की इबादत मत करना, कभी तुमको सज़ा होने लगे। (213) और (इस मज़मून से) आप (सबसे पहले) अपने नज़दीक के कुन्बे को डराइए।⁷ (214) और उन लोगों के साथ (तो शफ़क़्त भरी) इन्क़िसारी से पेश आइए जो मुसलमानों में दाख़िल होकर आपकी राह पर चलें। (215) और अगर ये लोग (जिनको आपने डराया है) आपका कहा न मानें तो आप कह दीजिए कि मैं तुम्हारे फ़ेलों से बेज़ार हूँ। (216) और आप

1. कि एक ऐसी-ऐसी शान का पैग़म्बर होगा और उसपर ऐसा कलाम नाज़िल होगा, चुनाँचे तफ़सीरे हक्कानी के इस मक़ाम के हाशियों में चन्द खुशख़बरीयाँ नक़ल की हैं। आगे इस मज़मून “व इन्हू लफी जुबुरिल् अव्वली-न” की वज़ाहत है।
2. चुनाँचे उनमें जो लोग इस्लाम ले आए हैं तो वे ऐलानिया इसका एतिराफ़ करते हैं, और जो इस्लाम नहीं लाए वे भी ख़ास-ख़ास लोगों के सामने इसका इक़्रार करते हैं।
3. यानी कुफ़्र में सख़्त हैं और उसपर अड़े हुए हैं।
4. लेकिन वह वक़्त न मोहलत का है न ईमान के क़बूल करने का।
5. यानी सच्ची ख़बर देने वाले के दलीलें कायम करने के बावजूद फिर भी इनकार करते हैं।
6. यानी यह ऐश जो मोहलत देने के तौर पर है, अज़ाब में कमी करने तक में तो मुअस्सिर है नहीं, फिर अज़ाब के न होने में इसको क्या दख़ल होता। पस उनका यह दलील पकड़ना बिलकुल बेकार है।
7. हालाँकि आप में ‘अल्लाह हमें अपनी पनाह में रखे’ न शिर्क का एहतिमाल न अज़ाब दिए जाने का। पस जब आपके एतिबार से भी इन दोनों में लाज़िमियत का हुक्म किया जाता है तो और बेचारे तो किस गिनती में हैं, शिर्क से उनको कैसे मना न किया जाएगा, और शिर्क करके अज़ाब से क्योंकर बचेंगे।
8. चुनाँचे आपने सबको पुकारकर जमा किया और शिर्क पर अल्लाह के अज़ाब से डराया, जैसा कि हदीसों में है।

खुदा-ए-कादिर रहीम पर भरोसा रखिए। (217) जो आपको जिस वक्त कि आप (नमाज़ के लिए) खड़े होते हैं (218) और (तथा नमाज़ शुरू करने के बाद) नमाज़ियों के साथ आपके उठने-बैठने को देखता है। (219) वह खूब सुनने वाला, खूब जानने वाला है। (220) (ऐ पैग़म्बर! लोगों से कह दीजिए कि) क्या मैं तुमको बतला दूँ शैतान किसपर उतरा करते हैं। (221) (सुनो!) ऐसे शख्सों पर उतरा करते हैं जो (पहले से) झूठ बोलने वाले, बड़े बद-किरदार हों। (222) और जो (शैतानों की खबरें सुनने के लिए) कान लगा देते हैं, और वे कसरत से झूठ बोलते हैं। (223) और शायरों की राह तो बेराह लोग चला करते हैं। (224) (ऐ मुखातब!) क्या तुमको मालूम नहीं कि वे (शायर) लोग (ख्याली मज़ामीन के) हर मैदान में हैरान फिरा करते हैं (225) और ज़वान से वे बातें कहते हैं जो करते नहीं। (226) हाँ, मगर जो लोग ईमान लाए और अच्छे काम किए,³ और उन्होंने (अपने शेरों में) कसरत से अल्लाह का ज़िक्र किया, और उन्होंने उसके बाद कि उनपर जुल्म हो चुका है, (उसका) बदला लिया, और जल्द ही उन लोगों को मालूम हो जाएगा जिन्होंने (अल्लाह के हुक्म वगैरह में) जुल्म कर रखा है कि कैसी जगह उनको लौटकर जाना है। (227) ♦

27 सूर: नम्ल 48

सूर: नम्ल मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 93 आयतें और 7 रुक़ूअ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

१तों-सीन। ये (आयतें जो आपपर नाज़िल की जाती हैं) आयतें हैं कुरआन की, और एक वाज़ेह किताब की। (1) ये (आयतें) ईमान वालों के लिए हिदायत (का ज़रिया) और खुशख़बरी सुनाने वाली हैं। (2) जो (मुसलमान) ऐसे हैं कि नमाज़ की पाबन्दी करते हैं और ज़कात देते हैं, और वे आखिरत पर (पूरा) यकीन रखते हैं। (3) (यह तो ईमान वालों की सिफ़त है, और) जो लोग आखिरत पर ईमान नहीं रखते, हमने उनके (बुरे) आमाल उनकी नज़र में पसन्दीदा कर रखे हैं। सो वे (अपनी इस दोहरी जहालत में हक़ से दूर) भटकते-फिरते हैं। (4) ये वे लोग हैं जिनके लिए (मरने के वक्त भी) सख़्त अज़ाब (होने वाला) है, और वे लोग आखिरत में (भी) सख़्त घाटे में हैं। (कि कभी नजात न होगी) (5) और आपको यकीनन एक बड़ी हिकमत वाले, इल्म वाले की जानिब से कुरआने हकीम दिया जा रहा है। ▲ (6) (इसलिए आप उनके इनकार से ग़मगीन न होइए, उस वक्त का किस्सा याद कीजिए) जबकि मूसा (अलैहिस्सलाम) ने अपने घर वालों से कहा कि मैंने आग देखी है, मैं अभी (जाकर) वहाँ से (या तो रास्ते की) कोई ख़बर लाता हूँ या तुम्हारे पास (वहाँ से) आग का शोला (किसी लकड़ी वगैरह में लगा हुआ) लाता हूँ ताकि तुम सँको। (7) सो जब उस (आग) के पास पहुँचे तो उनको (अल्लाह की जानिब से) आवाज़ दी गई कि जो इस आग के अन्दर हैं (यानी फ़रिश्ते) उनपर भी बरकत हो और जो इसके पास है (यानी मूसा अलैहिस्सलाम) उसपर भी (बरकत हो)⁷ और रब्बुल आलमीन पाक है। (8) ऐ मूसा! बात यह है कि मैं (जो बेकैफ़ियत के कलाम कर रहा हूँ) अल्लाह हूँ,

1. पस जब उसको इल्म भी कामिल है, और आप पर मेहरबान भी है, और उसको सब कुछ कुदरत भी है तो ज़रूर वह भरोसे के लायक है। वह आपको हकीकी नुक़सान से बचाएगा। और जो भरोसा करने वाले को नुक़सान पहुँचता है, वह देखने में नुक़सान होता है जिसके तहत में हजारों फ़ायदे लोते हैं, जिनका कभी दुनिया में और कभी आखिरत में इज़हार होता है।

2. मुराद 'राह' से शेर कहना है। यानी ख्याली शायराना मज़ामीन को नस (गिद्य) या नज़्म (पद्य) के तौर पर कहना उन लोगों का शेवा है, जो तहकीक के रास्ते से दूर हों। चुनाँचे ख्याली मज़मून उसको कहते हैं जो तहकीक के खिलाफ़ हो।

3. यानी शरीअत के खिलाफ़ न उनका कौल है न फ़ैल, यानी उनके शेरों में बेहूदा मज़ामीन नहीं हैं। (शेष तफ़सीर पृष्ठ 682 पर)

जबरदस्त, हिक्मत वाला। (9) और (ऐ मूसा!) तुम अपनी लाठी (जमीन पर) डाल दो, सो जब उन्होंने उसको इस तरह हरकत करते देखा जैसे साँप हो तो पीठ फेर कर भागे, और पीछे मुड़कर भी न देखा। (इरशाद हुआ कि) ऐ मूसा! डरो नहीं, हमारे हुजूर में (यानी नुबुव्वत का सम्मान दिए जाने के वक्त) पैगम्बर नहीं डरा करते।¹ (10) हाँ, मगर जिससे कोई कुसूर हो जाए² फिर बुराई (हो जाने) के बाद उसकी जगह नेक काम कर ले, (यानी तौबा कर ले) तो मैं मग़्फ़िरत वाला, रहमत वाला हूँ।³ (11) और तुम अपना हाथ अपने गिरेबान के अन्दर ले जाओ (और फिर निकालो), वह बिना किसी ऐब (यानी बिना किसी कोढ़ वगैरह की बीमारी) के रोशन होकर निकलेगा, नौ मोजिज़ों में से हैं, (जिनके साथ तुमको) फ़िरऔन और उसकी कौम की तरफ़ (भेजा जाता है क्योंकि) वे बड़े हद से निकल जाने वाले लोग हैं (12) गरज़ उन लोगों के पास जब हमारे (दिए हुए) मोजिज़े पहुँचे (जो) निहायत वाज़ेह (थे) तो वे लोग (उन सबको देखकर भी) बोले, यह खुला जादू है। (13) (और) ग़ज़ब तो यह था कि जुल्म और तकब्बुर की राह से उन (मोजिज़ों) के (बिलकुल) मुन्किर हो गए, हालाँकि उनके दिलों ने उनका यकीन कर लिया था, सो देखिए कैसा (बुरा) अन्जाम हुआ उन फ़साद फैलाने वालों का।⁴ (14) ♦

और हमने दाऊद (अलैहिस्सलाम) और सुलैमान (अलैहिस्सलाम) को (शरीअत और बादशाहत चलाने का) इल्म अता फ़रमाया, और उन दोनों ने (शुक्र अदा करने के लिए) कहा कि तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए लायक़ हैं, जिसने हमको अपने बहुत-से ईमान वाले बन्दों पर फज़ीलत दी। (15) और दाऊद (अलैहिस्सलाम की वफ़ात के बाद उन) के कायम मुक़ाम सुलैमान हुए, और उन्होंने (शुक्र ज़ाहिर करने के लिए) कहा कि ऐ लोगो! हमको परिन्दों की बोली (समझने) की तालीम दी गई है, और हमको (हुक्मूत के सामान के मुताल्लिक़) हर किस्म की (ज़रूरी) चीज़ें दी गई हैं। वाकई यह (अल्लाह तआला का) साफ़ फज़ल है। (16) और सुलैमान (अलैहिस्सलाम) के लिए (जो) उनका लश्कर जमा किया गया, उनमें जिन्न भी थे और इनसान भी और परिन्दे भी, (जो किसी बादशाह के ताबे नहीं होते) और (इस कसरत से थे कि) उनको (चलने के वक्त) रोका जाता था।⁵ (17) यहाँ तक कि जब चीँवटियों के एक मैदान में आए तो एक चीँवटी ने (दूसरी चीँवटियों से) कहा कि ऐ चीँवटियो! अपने-अपने सूरखों में जा घुसो, कहीं तुमको सुलैमान और उनका लश्कर बेख़बरी में न कुचल डालें।⁶ (18) सो सुलैमान (अलैहिस्सलाम) उसकी बात से मुस्क्राते हुए हँस पड़े⁷ और कहने लगे कि ऐ मेरे रब! मुझको इसपर हमेशगी दीजिए कि मैं नेक काम किया करूँ जिससे आप खुश हों, और मुझको अपनी

(पृष्ठ 680 का शेष)

4. मुराद इससे जहन्नम है।

5. इस सूरः का असल खुलासा तीन मज़मून हैं- अव्वल वह व रिसालत का साबित करना, दूसरे तौहीद, तीसरे आख़िरत का सुबूत और क़ियामत का कायम होना और बदला व सज़ा का मिलना।

6. यानी इसमें दो सिफ़तें हैं- कुरआन होना और स्पष्ट किताब होना।

7. यह दुआ सलाम और बरकत के तौर पर है। जैसे आने के वक्त आने वाला या जिसके पास आया जाए वह सलाम किया करता है। मगर चूँकि मूसा अलैहिस्सलाम जानते न थे कि यह नूर अल्लाह के नूरों में से है, इसलिए खुद सलाम न कर सके तो अल्लाह की तरफ़ से उनको मानूस करने के लिए सलाम इरशाद हुआ।

8. और इस चीज़ के बतलाने के लिए कि यह नूर जो आग की शक़ल में है खुद ज़ाते बारी तआला नहीं, यह इरशाद फ़रमाया कि अल्लाह रब्बुल आलमीन दिशाओं, हदों, मिक्दार और रंगों वगैरह से पाक है।

1. इस जुम्ले से जो कि ऐसा मालूम होता है कि ख़बर दी जा रही है, लेकिन इससे मुराद यह है कि डरना न चाहिए।

2. यानी जिससे कोई ग़लती हो जाए और उस ग़लती व गुनाह को याद करके डरे तो कोई हर्ज नहीं।

3. यह इसलिए फ़रमा दिया कि इस लाठी की शक़ल बदल जाने के मामले से मुत्मइन हो जाने के बाद कहीं क़िबती को क़त्ल कर देने वाले वाक़िफ़ को याद करके परेशान हों। इसलिए इससे भी मुत्मइन फ़रमा दिया ताकि घबराहट जाती रहे।

4. कि दुनिया में डूबने और आख़िरत में आग में जलने की सज़ा पाई।

(शेष तफ़सीर पृष्ठ 684 पर)

(खास) रहमत से अपने (आला दर्जे के) नेक बन्दों में दाखिल रखिए। (19) और (एक बार यह किस्सा हुआ कि) सुलैमान ने परिन्दों की हाज़िरी ली,¹ तो हुदहुद को न देखा, फरमाने लगे कि यह क्या बात है कि मैं हुदहुद को नहीं देखता, क्या कहीं गायब हो गया है? (20) मैं उसको (ग़ैर-हाज़िरी पर) सख्त सज़ा दूँगा,² या उसको ज़िब्ह कर डालूँगा या वह कोई साफ़ हुज्जत (और ग़ैर-हाज़िरी का उज़्र) मेरे सामने पेश करे। (21) सो थोड़ी ही देर में वह आ गया और (सुलैमान अलैहिस्सलाम से) कहने लगा कि मैं ऐसी बात मालूम करके आया हूँ जो आपको मालूम नहीं हुई। (और मुख्तसर बयान उसका यह है कि) मैं आपके पास कबीला सबा की एक तहकीकी ख़बर लाया हूँ। (22) मैंने एक औरत को देखा कि वह उन लोगों पर बादशाही कर रही है, और उसको (बादशाही के लिए ज़रूरी चीज़ों में से) हर किस्म का सामान मयस्सर है, और उसके पास एक बड़ा (और कीमती) तख़्त है। (23) मैंने उसको और उस (औरत) की कौम को देखा कि वे खुदा (की इबादत) को छोड़कर सूरज को सज्दा करते हैं, और शैतान ने उनके (उन) (कुफ़िया) आमाल को उनकी नज़र में पसन्दीदा कर रखा है, और उनको हक़ रास्ते से रोक रखा है, सो वे (हक़ के) रास्ते पर नहीं चलते (24) कि उस खुदा को सज्दा नहीं करते जो (ऐसा कादिर है कि) आसमान और ज़मीन की पोशीदा चीज़ों को (जिनमें बारिश और पेड़-पौधे वग़ैरह भी हैं) बाहर लाता है, और (ऐसा अल्लिम है कि) तुम जो कुछ (दिल में) पोशीदा रखते हो और जो (कुछ ज़बान वग़ैरह से) ज़ाहिर करते हो वह सबको जानता है। (25) (पस) अल्लाह ही ऐसा है कि उसके सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं, और वह अर्शे अज़ीम का मालिक है। □ (26) सुलैमान (अलैहि) ने यह सुनकर) फ़रमाया कि हम अभी देखते हैं कि तू सच कहता है या झूठों में से है। (27) (अच्छा) मेरा यह ख़त ले जा और इसको उसके पास डाल देना, फिर (ज़रा वहाँ से) हट जाना, फिर देखना कि आपस में क्या सवाल व जवाब करते हैं।³ (28) बिलक़ीस ने (ख़त पढ़कर अपने सरदारों से मश्वरे के लिए) कहा कि ऐ दरबार वालो! मेरे पास एक ख़त (जिसका मज़मून) निहायत बा-वक़अत (है)⁴ डाला गया है। (29) वह सुलैमान की तरफ़ से है, और उसमें यह (मज़मून) है, (पहले) बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम (30) (और उसके बाद यह कि) तुम मेरे मुकाबले में तकबुर मत करो और मेरे पास ताबेदार होकर चले आओ। (31) ♦

बिलक़ीस ने कहा कि ऐ दरबार वालो! तुम मुझको मेरे इस मामले में राय दो (कि मुझको सुलैमान के साथ क्या मामला करना चाहिए और) मैं किसी बात का क़तई फैसला नहीं करती जब तक कि तुम लोग मेरे पास मौजूद न हो। (32) वे लोग कहने लगे कि हम बड़े ताक़तवर और बड़े लड़ने वाले हैं, और (आगे) इख़्तियार तुमको है, सो तुम ही (मसलहत देख लो, जो कुछ (तजवीज़ करके) हुक्म देना हो। (33) बिलक़ीस कहमै लगी कि बादशाहों (का) कायदा है कि जब किसी बस्ती में (मुख़ालफ़त के तौर पर) दाख़िल होते हैं तो

(पृष्ठ 682 का शेष) 5. ताकि बिखर न जाएँ। पीछे वाले भी पहुँच जाएँ। यह बात आदतन बहुत ज़्यादा तादाद होने में होती है, क्योंकि थोड़े मजमे में तो अगला आदमी खुद ही ऐसे वक़्त रुक जाता है, और बड़े मजमे में अगलों को पिछलों की ख़बर भी नहीं होती, इसलिए इसका इन्तिज़ाम करना पड़ता है। एक बार अपने लाव-लश्कर के साथ तशरीफ़ लिए जाते थे, (आगे देखो तर्जुमा)

6. चीवटी के इस कलाम के वक़्त या तो आपका लश्कर ज़मीन पर चल रहा होगा और अगर हवा पर सफ़र था तो वहाँ उतरने का इरादा होगा और चीवटी को अल्लाह के ख़बर देने से सुलैमान अलैहिस्सलाम और उनके लश्कर और इस इरादे की जानकारी हो गई होगी, और कुदरत के सामने सब आसान है।

7. और “हँस पड़ने” से अम्बिया अलैहिमुस्सलाम के हँसने का सबूत मिलता है और हदीस में जो आँ हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से इसकी नफ़ी आई है तो मुराद उससे आदत की नफ़ी है न कि कुल्ली तौर पर नफ़ी। और सुलैमान अलैहिस्सलाम अगर दुनिया भर के बादशाह मान लिए जाएँ तो उनका धीरे-धीरे पूरी दुनिया का बादशाह बनने का कायल होना चाहिए ताकि उस वक़्त तक बिलक़ीस का मुल्क आपके कब्ज़े में न आना शक़ व शुब्हे का सबब न हो।

1. या तो परिन्दों को कुछ ख़िदमतें सुपुर्द कर रखी होंगी इसलिए हाज़िरी ली, या यह कि महज़ इन्तिज़ामी (शेष तफ़सीर पृष्ठ 686 पर)

उसको तबाह व बरबाद कर देते हैं, और उसके रहने वालों में जो इज़्ज़तदार हैं, उनको जलील किया करते हैं, और ये लोग भी ऐसा ही करेंगे। (34) और मैं उन लोगों के पास कुछ हदिया भेजती हूँ फिर देखूँगी कि वे ऐलची (वहाँ से) क्या (जवाब) लेकर आते हैं। (35) सो जब वह ऐलची सुलैमान (अलैहिस्सलाम) के पास पहुँचा (और तोहफे पेश किए तो सुलैमान अलैहिस्सलाम ने) फरमाया, क्या तुम लोग (यानी बिलकीस वगैरह) माल से मेरी इम्दाद करते हो, सो (समझ लो कि) अल्लाह ने जो कुछ मुझको दे रखा है वह उससे कहीं बेहतर है जो तुमको दे रखा है।¹ हाँ तुम ही अपने इस हदिए पर इतराते होगे। (सो ये तोहफे हम न लेंगे) (36) तुम (इनको लेकर) उन लोगों के पास लौट जाओ, सो हम उनपर ऐसी फौजें भेजते हैं कि उन लोगों से उनका ज़रा मुकाबला न हो सकेगा और हम उनको वहाँ से जलील करके निकाल देंगे, और वे (हमेशा के लिए) मातहत हो जाएँगे। (37) सुलैमान (अलैहिस्सलाम को वक्ल से या किसी परिन्दे वगैरह के ज़रिये से उसका चलना मालूम हुआ तो उन्होंने) फरमाया कि ऐ दरबारियो! तुममें कोई ऐसा है जो उस (बिलकीस) का तख्त इससे पहले कि वे लोग मेरे पास ताबेदार होकर आएँ, हाज़िर कर दे। (38) एक ताकतवर हैकल जिन्न ने जवाब में अर्ज़ किया कि मैं उसको आपकी ख़िदमत में हाज़िर कर दूँगा, इससे पहले कि आप अपने इजलास से उठें, और (अगरचे वह बहुत भारी है मगर) मैं उस (के लाने) पर ताकत रखता हूँ (और अगरचे वह बड़ा कीमती जवाहरात से जड़ा हुआ है, मगर) मैं अमानतदार (भी) हूँ। (39) जिसके पास किताब का इल्म था² उस (इल्म वाले) ने (उस जिन्न से) कहा कि मैं उसको तेरे सामने आँख झपकने से पहले लाकर खड़ा कर सकता हूँ।³ पस जब सुलैमान (अलैहि.) ने उसको सामने रखा देखा तो (खुश होकर शुक्र के तौर पर) कहने लगे कि यह भी मेरे रब का एक फ़ज़ल है, ताकि वह मेरी आजमाइश करे कि मैं शुक्र करता हूँ या (खुदा न करे) नाशुक्री करता हूँ। और (जाहिर है कि) जो शख्स शुक्र करता है वह अपने ही नफे के लिए शुक्र करता है, (अल्लाह तआला का कोई नफ़ा नहीं) और (इसी तरह) जो नाशुक्री करता है, मेरा रब ग़नी है और करीम है। (40) (उसके बाद सुलैमान अलैहिस्सलाम ने बिलकीस की अक्ल आजमाने के लिए) हुक्म दिया कि उसके लिए उसके तख्त की सूरत बदल दो, हम देखें कि उसको इसका पता लगता है या उसकी गिनती उन्ही में है जिनको (ऐसी बातों का) पता नहीं लगता। (41) सो जब (बिलकीस) आई तो उससे (तख्त दिखाकर) कहा गया कि क्या तुम्हारा तख्त ऐसा ही है, वह कहने लगी कि हाँ है तो ऐसा ही, और (यह भी कहा कि) हम लोगों को तो इस वाकिए से पहले ही (आपकी नुबुव्वत की) तहकीक हो चुकी है, और हम (उसी वक़्त से दिल से) मानने वाले हो चुके हैं। (42) और उसको (ईमान लाने से) अल्लाह के अलावा दूसरों की इबादत ने (जिसकी उसको आदत थी) रोक रखा था, (और वह आदत इसलिए पड़ गई थी कि) वह काफ़िर कौम में की थी।⁴ (43) (बिलकीस से) कहा गया कि इस महल में दाख़िल हो। (वह चली, रास्ते में हौज़ आया) तो जब उसका आँगन देखा तो उसको पानी (से भरा हुआ) समझा, और (उसके अन्दर घुसने के लिए) अपनी दोनों पिंडलियाँ खोल दीं। (उस वक़्त) सुलैमान ने फरमाया कि यह तो एक महल है जो शीशों से बनाया गया है,⁵ (उस वक़्त बिलकीस)⁶ कहने लगी कि ऐ मेरे परवर्दिगार! मैंने (अब तक) अपने नफ़स पर जुल्म किया था, (कि शिर्क में मुब्तला थी) और मैं अब सुलैमान के साथ (यानी उनके तरीके पर) होकर रब्बुल आलमीन पर ईमान लाई। (44) ❖

(पृष्ठ 684 का शेष) ज़रूरतों के लिए जैसे लश्क़रों के सरदार ऐसा किया करते हैं, इस तौर पर ऐसा किया हो।

2. "मैं उसको ग़ैर-हाज़िरी पर सख्त सज़ा दूँगा" से मालूम हुआ कि जानवरों को तालीम के लिए सधाना और तबियत देना जायज़ है, और तकलीफ़ दूर करने के लिए क़त्ल करना भी जायज़ है। जहाँ अदब सिखाना और तकलीफ़ दूर करना मक़सद हो वरना नहीं।

3. हुदहुद के इस कौल का मतलब यह है कि मेरी ग़ैर-हाज़िरी नाफ़रमानी के तौर पर न थी, बल्कि एक तरीके से हुक्म का पालन करने ही में दाख़िल थी कि आप ही की ख़िदमत में लगा हुआ था। 'सबा' एक शख्स का नाम था, फिर उसकी औलाद को कहने लगे। ये लोग यमन में आबाद थे, फिर उनके शहर को भी सबा कहने लगे (पृष्ठ 684 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 686 की तफ़सीर पृष्ठ 688, 690 पर)

और हमने (कौमे) समूद के पास उनके (बिरादरी के) भाई सालेह (अलैहिस्सलाम) को (पैगम्बर बनाकर) भेजा, यह (पैगाम देकर) कि तुम अल्लाह की इबादत करो, सो अचानक उनमें दो फरीक हो गए जो (दीन के बारे में) आपस में झगड़ने लगे।¹ (45) सालेह (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया कि ऐ भाइयो! तुम नेक काम (यानी तौबा व ईमान) से पहले अज़ाब को क्यों जल्दी माँगते हो, तुम लोग अल्लाह के सामने (कुफ़्र से) माफी क्यों नहीं चाहते, जिससे उम्मीद हो कि तुमपर रहम किया जाए (यानी अज़ाब से महफूज़ रहो)। (46) वे लोग कहने लगे कि हम तो तुमको और तुम्हारे साथ वालों को मन्हूस समझते हैं। सालेह (अलैहिस्सलाम) ने (जवाब में) फरमाया कि तुम्हारी (इस) नहूसत का सबब अल्लाह के इल्म में है,² बल्कि तुम लोग वे हो कि (कुफ़्र की बदौलत) अज़ाब में मुब्तला होगे। (47) और (कुफ़्र के सरगना) उस बस्ती में नौ शख्स थे जो सरज़मीन में (यानी बस्ती से बाहर तक भी) फ़साद किया करते थे, और (ज़रा भी) सुधार न करते थे। (48) उन्होंने कहा कि सब आपस में (इसपर) अल्लाह की कसम खाओ कि हम रात के वक़्त सालेह और उनके मुताल्लिकीन (ईमान वालों को) जा मारेंगे, फिर (तहकीक के वक़्त) हम उनके वारिस से कह देंगे कि हम उनके मुताल्लिकीन और खुद उनके मारे जाने में मौजूद (भी) न थे, और हम बिलकुल सच्चे हैं। (49) और (यह मश्विरा करके) उन्होंने एक खुफ़िया तदबीर की, और एक खुफ़िया तदबीर हमने की, और (उस तदबीर की) उनको ख़बर भी न हुई।³ (50) सो देखिए उनकी शरारत का क्या अन्जाम हुआ कि हमने उनको (ज़िक्र हुए तरीक़े पर) और (फिर) उनकी कौम को सबको (आसमानी अज़ाब से) ग़ारत कर दिया। (51) सो ये उनके घर हैं जो वीरान पड़े हैं,⁴ उनके कुफ़्र के सबब से बिला शुब्हा इस (वाकिए) में बड़ी इबरत है समझदारों के लिए। (52) और हमने ईमान और तक्वे वालों को नजात दी। (53) और हमने लूत (अलैहिस्सलाम) को भेजा था जबकि उन्होंने अपनी कौम से फरमाया कि क्या तुम बेहयाई का काम करते हो, हालाँकि समझदार हो। (54) क्या तुम मदों के साथ शहवत पूरी करते हो औरतों को छोड़कर, (और इसके बुरा होने में कोई शुब्हा नहीं) बल्कि (इस बारे में) तुम (बिलकुल) जहालत कर रहे हो। (55) सो (इस तकरीर का) उनकी कौम से कोई उचित जवाब न बन पड़ा सिवाय इसके कि आपस में कहने लगे कि लूत के लोगों को तुम अपनी बस्ती से निकाल दो, (क्योंकि) ये लोग बड़े पाक व साफ़ बनते हैं। (56) सो हमने (उस कौम पर अज़ाब नाज़िल किया और) लूत (अलैहिस्सलाम) को और उनके मुताल्लिकीन को बचा लिया, सिवाय उनकी बीवी के, उसको हमने उन्हीं लोगों में तजवीज़ कर रखा था जो अज़ाब में रह गए थे। (57) और हमने उनपर एक नई तरह की बारिश बरसाई, सो उन लोगों की क्या बुरी बारिश थी जो डराए गए थे।⁵ (58) ♦

आप (तौहीद का बयान करने के लिए खुतबे के तौर पर) कहिए कि तमाम तारीफें अल्लाह ही के लिए लायक हैं और उसके उन बन्दों पर सलाम (नाज़िल) हो जिनको उसने मुन्तख़ब फरमाया “यानी चुन लिया” है। क्या अल्लाह बेहतर है या वे चीज़ें जिनको वे शरीक ठहराते हैं। (59)

(पिछले पृष्ठ का शेष) जो ‘सुनआ’ से तीन दिन के फ़ासले पर है। बिलक़ीस उसी ख़ानदान में से है और ‘यअ़रब बिन कहतान’ की औलाद में होने की वजह से उनकी ज़बान अरबी थी।

4. मालूम होता है कि हुदहुद सुलैमान अलैहिस्सलाम के अलावा दूसरों का कलाम भी समझता था, सो यह भी हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम का मौजिज़ा होगा।

5. “बा वक़अत” इसलिए कहा कि हाकिमाना मज़मून है, जिसमें बावजूद बहुत ज़्यादा मुख़्तसर होने के आला दर्जे की बलागत है।

(तफ़सीर पृष्ठ 686)

1. क्योंकि तुम्हारे पास सिर्फ़ दुनिया है और मेरे पास दीन भी है और दुनिया भी तुमसे ज़्यादा, सो मैं तो इन चीज़ों का लालची नहीं हूँ।

2. ज़्यादा सही यह है कि सुलैमान अलैहिस्सलाम मुराद हैं।

3. क्योंकि मैं मोजिज़े की कुव्वत से लाऊँगा। चुनौते आपने हक़ तआला से दुआ की वैसे ही या किसी अल्लाह के नाम के ज़रिये से और तज़त्त सामने आ मौजूद हुआ। (पृष्ठ 686 की बकिया तफ़सीर और पृष्ठ 688 की तफ़सीर पृष्ठ 690, 692 पर)

बीसवाँ पार: अम्मन् ख-ल-क

सूर: नम्ल (आयत 60 से 93)

या वह ज्ञात (बेहतर है) जिसने आसमान और ज़मीन को बनाया, और उसने आसमान से तुम्हारे लिए पानी बरसाया। फिर उस (पानी) के जरिये हमने रौनकदार बाग़ उगाए (वरना) तुमसे तो मुम्किन न था कि तुम उन (बाग़ों) के दरख्तों को उगा सको। (यह सुनकर बतलाओ कि) क्या अल्लाह तआला के साथ (इबादत में शरीक होने के लायक) कोई और माबूद है? (मगर मुशिरक लोग फिर भी नहीं मानते) बल्कि ये ऐसे लोग हैं कि (दूसरों को) खुदा के बराबर ठहराते हैं।¹ (60) या वह ज्ञात जिसने ज़मीन को (मख्लूक के) ठहराने की जगह बनाया और उसके दरमियान नहरें बनाई और उस (ज़मीन) के ठहराने के लिए पहाड़ बनाए, और दो दरियाओं के दरमियान एक हद्दे-फ़ासिल “यानी एक आड़” बनाई। क्या अल्लाह के साथ कोई और माबूद है? (मगर मुशिरक लोग नहीं मानते) बल्कि उनमें ज़्यादा तो (अच्छी तरह) समझते भी नहीं। (61) या वह ज्ञात जो बेकरार आदमी की सुनता है, जब वह उसको पुकारता है, और (उसकी) मुसीबत को दूर कर देता है, और तुमको ज़मीन में इख्तियार वाला बनाता है। (यह सुनकर अब बतलाओ कि) क्या अल्लाह के साथ कोई और माबूद है? (मगर) तुम लोग बहुत ही कम याद रखते हो। (62) (अच्छा फिर और कमालात सुनकर बतलाओ कि ये बुत बेहतर हैं) या वह ज्ञात जो तुमको खुशकी और दरिया की अंधेरियों में रास्ता सुझाता है, और जो कि हवाओं को बारिश से पहले भेजता है जो (बारिश की उम्मीद दिलाकर दिलों को) खुश कर देती हैं। (यह सुनकर बतलाओ कि) क्या अल्लाह के साथ कोई और माबूद है? (हरगिज़ नहीं, बल्कि) अल्लाह पाक,² उन लोगों के शिर्क से बरतर है। (63) या वह ज्ञात जो मख्लूकात को अब्बल बार पैदा करता है, (यह तो मानी हुई बात है) फिर उसको दोबारा ज़िन्दा करेगा और जो कि आसमान (से पानी बरसाकर) और ज़मीन से (पैड़-पौधे वगैरह निकालकर) तुमको रिज्क देता है। (यह सुनकर अब बतलाओ कि) क्या अल्लाह के साथ कोई और माबूद है? आप कहिए कि (अच्छा) तुम (उनके इबादत के मुस्तहिक होने पर) अपनी दलील पेश करो अगर तुम (इस दावे में) सच्चे हो। (64) आप कह दीजिए कि जितनी मख्लूकात आसमानों और ज़मीन (यानी दुनिया में) मौजूद हैं, (उनमें से) कोई भी ग़ैब की बात नहीं जानता, सिवाय अल्लाह के, और (इसी वजह से) उन (मख्लूकात) को यह ख़बर नहीं कि वे कब दोबारा ज़िन्दा किए जाएंगे।³ (65) बल्कि आखिरत के बारे में (खुद) उनका इल्म (उसके ज़ाहिर होने के बारे में) नहीं है, बल्कि ये लोग उससे शक में हैं, बल्कि यह उससे अन्धे बने हुए हैं।⁴ (66) ♦

(पिछले पृष्ठ का शेष)

4. उसके बाद सुलैमान अलैहिस्सलाम ने यह चाहा कि मोज़िज़े और नुबुव्वत की शान दिखलाने के अलावा उसको बादशाहत की ज़ाहिरी शान भी दिखला दी जाए, ताकि अपने को दुनिया के एतबार से भी बड़ा न समझे। इसलिए एक शीश-महल बनवाकर उसके आँगन में हौज़ बनवाया, और उसमें पानी और मछलियाँ भरकर उसको शीशे से पाट दिया। वह शीशा ऐसा साफ़ और चमकदार था कि सरसरी निगाह में नज़र न आता था। और वह हौज़ ऐसी जगह पर था कि उस महल में जाने वाले को हर हाल में उसपर से पार उतरना पड़े।

5. और यह हौज़ भी शीशे से पटा हुआ है, दामन उठाने की ज़रूरत नहीं।

6. बिलक़ीस को मालूम हो गया कि यहाँ दुनियावी चीज़ें और अज़ायबात भी ऐसे हैं जो आज तक मैंने आँख से नहीं देखे, तो उनके दिल में हर तरह सुलैमान अलैहिस्सलाम का सम्मान पैदा हुआ और एकदम कहने लगीं, (आगे देखो तर्जुमा)

(तफ़सीर पृष्ठ 688) 1. यानी एक फ़िर्का तो ईमान ले आया और एक न लाया। और उनमें जो झगड़ा और कलाम हुआ, उसमें से बाज़ बातों का सूर: आराफ़ में ज़िक्र हुआ है, (पृष्ठ 688 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 690 की तफ़सीर पृष्ठ 692, 694 पर)

और ये काफिर यूँ कहते हैं कि क्या हम लोग जब (मरकर) मिट्टी हो गए और (इसी तरह) हमारे बड़े भी, तो क्या (फिर) हम (जिन्दा करके कब्रों से) निकाले जाएँगे। (67) इसका तो हमसे और हमारे बड़ों से (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से) पहले से वायदा होता चला आया है, ये बे-सनद बातें हैं जो अगलों से नकल होती चली आई हैं। (68) आप कह दीजिए कि तुम ज़मीन में चल-फिरकर देखो कि मुजरिम लोगों का अन्जाम क्या हुआ। (69) और (अगर वाज़ेह नसीहतों के बावजूद फिर भी मुख़ालफ़त पर क़मर कसे हुए हैं तो) आप उनपर ग़म न कीजिए और जो कुछ ये शरारतें कर रहे हैं उनसे तंग न होइए। (70) और ये लोग (निडर होकर) यूँ कहते हैं कि यह (अज़ाब व क़हर का) वायदा कब पूरा होगा, अगर तुम सच्चे हो (तो बतलाओ)। (71) आप कह दीजिए कि अज़ब नहीं कि जिस अज़ाब की तुम जल्दी मचा रहे हो उसमें से कुछ तुम्हारे पास ही आ लगा हो। (72) और (अब तक जो देर हो रही है उसकी वजह यह है कि) आपका रब लोगों पर (अपना) बड़ा फ़ज़ल रखता है,² और लेकिन अक्सर आदमी (इस बात पर) शुक्र नहीं करते। (73) और आपके रब को सब ख़बर है जो कुछ उनके दिलों में छुपा है और जिसको वे ऐलानिया करते हैं। (74) और आसमान और ज़मीन में ऐसी कोई छुपी हुई चीज़ नहीं जो लौहे महफूज़ में न हो।³ (75) बेशक यह कुरआन बनी इस्राईल पर अक्सर उन बातों (की हकीकत) को ज़ाहिर करता है जिसमें वे इख़िलाफ़ करते हैं। (76) और यकीनन वह ईमान वालों के लिए (ख़ास) हिदायत और (ख़ास) रहमत है। (77) यकीनन आपका परवर्दिगार उनके दरमियान अपने हुक्म से (वह अमली) फैसला कियामत के दिन करेगा। और वह ज़बरदस्त (और) इल्म वाला है। (78) सो (जब वह ऐसा है तो) आप अल्लाह तआला पर भरोसा रखिए। यकीनन आप बिलकुल हक़ (तरीके) पर हैं। (79) आप मुद्दों को नहीं सुना सकते और न बहरों को अपनी आवाज़ सुना सकते हैं, (ख़ासकर) जब वे पीठ फेरकर चल दें। (80) और न आप अन्धों को उनकी गुमराही से (बचाकर) रास्ता दिखलाने वाले हैं, आप तो सिर्फ़ उन्हीं को सुना सकते हैं जो हमारी आयतों का यकीन रखते हैं (और) फिर वे मानते (भी) हैं।⁴ (81) और जब (कियामत का) वायदा उनपर पूरा होने को होगा तो हम उनके लिए ज़मीन से एक (अजीब) जानवर निकालेंगे कि वह उनसे बातें करेगा, कि (काफिर) लोग हमारी

(पिछले पृष्ठ का शेष) और उनमें से बाज़ आगे जिक्र हो रही है।

- यानी तुम्हारे कुफ़्रिया आमाज़ अल्लाह को मालूम है। ये बर्दियाँ उन्हीं आमाज़ पर मुरतब हैं।
- वह यह कि एक पहाड़ से एक पत्थर उनपर लुढ़क आया और वे सब वहीं पर हलाक हो गए।
- जो कि मक्का वालों को मुल्क शाम के सफ़र में मिलते हैं।
- सूर: के शुरू से यहाँ तक रिसालत की बहस थी, आगे तौहीद की बहस है जिसको एक बहुत ही आलीशान और मुहल्लसर ख़ुतबे से शुरू किया है।

(तफ़सीर पृष्ठ 690) 1. आसमान में सूरज चाँद सितारे, ज़मीन में नदियाँ नाले और बड़े-बड़े दरिया, इनसान और तरह-तरह के जानवर, चरिन्द-परिन्द, बाग़ खेती और उसके लिए पानी, यह सब कुछ जो अल्लाह तआला ने पैदा किया है वह सब की आँखों के सामने है। और यह भी सब की आँखों के सामने है कि अल्लाह तआला के अलावा किसी को भी न आसमान पैदा करने की कुदरत है न ज़मीन। बारिश अगर मुकर्रर वक़्त पर न बरसे तो सारी दुनिया के बादशाह अमीर व ग़रीब सब जमा हों तो भी एक क़तरा बरसाने की किसी में कुदरत नहीं। इसी तरह मुर्दा इनसान व हैवानात में से किसी को अल्लाह के अलावा न कोई जिला सकता है और न बीमार को तन्दुरुस्त कर सकता है। अल्लाह की मर्ज़ी के बग़ैर न दुआ में असर है, न दवा में। क्या इन सब बातों के होते हुए कोई कह सकता है कि खुदा के अलावा कोई और माबूद है? और क्या अपने आपको और सब चीज़ों को अपनी आँखों के सामने पैदा होता हुआ देखकर कोई शक़ कर सकता है कि कियामत के दिन खुदा मुद्दों को जिन्दा करने पर कादिर नहीं है, बल्कि वह ज़रूर कादिर है। (फ़त्हुल बारी, इम्ने जरीर, ख़ाज़िन)

2. दोबारा ज़िन्वगी का सुबूत: बिना दलील शिर्क़ करना किस क़द्व बवाल की बात है, और यह कि आसमान व ज़मीन से जिस क़द्व चीज़ें पैदा होती हैं अगरवे बार-बार पैदा होने की वजह से लोगों के आगे यह एक मामूली बात हो गई है, मगर हकीकत में हर एक बात अक़ल के ख़िलाफ़ है। खुद इनसान की पैदाइश 'मनी' (यानी वीर्य) के एक क़तरे से है, यह भला कौन-सी अक़ल की बात है। फिर कियामत के दिन एक-एक ज़र्रा जमा करके जिस तैयार करे, (पृष्ठ 690 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 692 की तफ़सीर पृष्ठ 694, 696 पर)

(यानी अल्लाह तआला की) आयतों पर यकीन न लाते थे। (82) ♦

और जिस दिन (कब्रों से ज़िन्दा करने के बाद) हम हर उम्मत से एक गिरोह उन लोगों का (हिसाब के लिए) जमा करेंगे जो हमारी आयतों को झुठलाया करते थे, फिर उनको रोका जाएगा। (83) यहाँ तक कि जब (ठहरने की जगह में) हाज़िर हो जाएँगे तो अल्लाह इरशाद फरमाएगा कि क्या तुमने मेरी आयतों को झुठलाया था, हालाँकि तुम उनको अपने इल्मी घेरे में भी नहीं लाए, बल्कि और भी क्या-क्या काम करते रहे। (84) और (अब वह वक्त है कि) उनपर (अज़ाब का) वायदा पूरा हो गया, इस वजह से कि (दुनिया में) उन्होंने (बड़ी-बड़ी) ज़्यादतियाँ की थीं, सो वे लोग बात भी न कर सकेंगे। (85) क्या उन्होंने इसपर नज़र नहीं की कि हमने रात बनाई, ताकि लोग उसमें आराम करें, (और यह आराम मौत की तरह है) और दिन बनाया जिसमें देखें, (और यह मौत के बाद ज़िन्दा होने जैसा है, पस) बिला शुब्हा इसमें बड़ी-बड़ी दलीलें हैं, उन (ही) लोगों के लिए जो ईमान रखते हैं। (86) और जिस दिन सूर में फूँक मारी जाएगी, सो जितने आसमान और ज़मीन में हैं सब घबरा जाएँगे मगर जिसको खुदा चाहे, (वह उस घबराहट से और मौत से महफूज़ रहेगा) और सबके सब उसी के सामने दबे-झुके रहेंगे। (87) और तू (जिन) पहाड़ों को देख रहा है और उनको ख्याल कर रहा है कि ये (अपनी जगह से) हरकत न करेंगे, हालाँकि वे बादलों की तरह उड़े-उड़े फिरेंगे। यह खुदा का काम होगा। जिसने हर चीज़ को (मुनासिब अन्दाज़ पर) मज़बूत बना रखा है। यह यकीनी बात है कि अल्लाह को तुम्हारे सब कामों की पूरी ख़बर है। (88) जो शख्स नेकी (यानी ईमान) लाएगा सो उस शख्स को उस (नेकी के अज़्र) से बेहतर (अज़्र) मिलेगा, और वे लोग बड़ी घबराहट से उस दिन अमन में रहेंगे। (89) और जो शख्स बुराई (यानी कुफ़्र व शिर्क) लाएगा तो वे लोग औंधे मुँह आग में डाल दिए जाएँगे, (और उनसे कहा जाएगा कि) तुमको उन्हीं आमाँल की सज़ा दी जा रही है जो तुम (दुनिया में) किया करते थे। (90) मुझको तो यही हुक्म मिला है कि मैं इस शहर (यानी मक्का) के (हकीमी) मालिक की इबादत किया करूँ जिसने इस (शहर) को एहतियाम वाला बनाया है। और (उसकी इबादत क्यों न की जाए जबकि वह ऐसा है कि) सब चीज़ें उसी की (मिल्क) हैं। और मुझको यह (भी) हुक्म हुआ है कि मैं फ़रमाँबर्दार रहूँ। (91) और (मुझको) यह (भी) हुक्म मिला है कि मैं कुरआने करीम पढ़-पढ़कर सुनाऊँ, सो (मेरी तब्लीग़ के बाद) जो शख्स राह पर आएगा, सो वह अपने ही फायदे के लिए राह पर आएगा। और जो शख्स गुमराह रहेगा तो आप कह दीजिए (कि मेरा कोई नुक़सान नहीं, क्योंकि) मैं तो सिर्फ़ डराने वाले पैग़म्बरों में से हूँ। (92) और आप (यह भी) कह दीजिए कि सब ख़ूबियाँ ख़ालिस अल्लाह ही के लिए साबित हैं, वह तुमको जल्द ही अपनी निशानियाँ (यानी कियामत के वाकिआत) दिखला देगा। सो तुम (उनके ज़ाहिर होने के वक्त) उनको पहचानोगे, और आपका रब उन कामों से बेख़बर नहीं जो तुम सब लोग कर रहे हो। (93) ♦

(पिछले पृष्ठ का शेष) फिर उसमें वही रूह डाल दे जो जिस्म से निकली थी तो यह क्या ताज्जुब की बात है? (इन्ने जरीर, फ़तुल बारी)।

3. यानी अल्लाह तआला को तो बिना बतलाए ही सब कुछ मालूम है और किसी को बिना बतलाए कुछ भी मालूम नहीं। मगर देखा जाता है कि बहुत-सी बातें जिनका पहले से इल्म नहीं होता, ज़ाहिर होती हैं। इससे मालूम हुआ कि इल्म का न होना ज़ाहिर न होने को लाज़िम नहीं। बल्कि बात यह है कि अल्लाह तआला को बाज़ उलूम का ग़ैब में रखना मन्ज़ूर है। सो कियामत के आने का मुतयन करना भी उन्हीं बातों में से है। इसलिए मख़्लूक़ को इसका इल्म नहीं दिया गया। मगर इससे उसका न आना कैसे लाज़िम आ गया।

4. यानी जैसे अन्धे को रास्ता नज़र नहीं आता, इसलिए मक़सुद तक पहुँचना मुहाल है। इसी तरह आख़िरत की तस्दीक़ करने का जो रास्ता है यानी सही दलीलें ये लोग अपनी दुश्मनी और बैर की वजह से उनमें ग़ौर व फ़िक्र नहीं करते, इसलिए वे दलीलें उनको नज़र नहीं आती जिससे मतलूब तक पहुँच जाने की उम्मीद होती। पस यह शक़ से भी बढ़कर है, क्योंकि शक़ वाला कभी-कभी दलीलों में ग़ौर-फ़िक्र करके शक़ को दूर कर लेता है और ये ग़ौर व फ़िक्र भी नहीं करते।

(तफ़सीर पृष्ठ 692) 1. कि और नबियों के साथ भी यही मामला हुआ है।

2. इस रहमते आम्मा की वजह से किसी क़द्र मोहलत दे रखी है।

3. जब छुपी हुई चीज़ें जिनको कोई नहीं जानता, (पृष्ठ 692 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 694 की तफ़सीर पृष्ठ 696, 698 पर)

28 सूर: कसस् 49

सूर: कसस् मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 88 आयतें और 9 रुकूअ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

ताँ-सीम्-मीम् (1) यें (मज़ामीन जो आप पर वह्य किए जाते हैं) वाज़ेह (मायनों वाली) किताब (यानी कुरआन) की आयतें हैं। (2) हम आपको मूसा (अलैहिस्सलाम) और फिरऔन का कुछ किस्सा ठीक-ठीक पढ़कर (यानी नाज़िल करके) सुनाते हैं। उन लोगों के (नफे के) लिए जो ईमान रखते हैं।¹ (3) फिरऔन (मिस्र की) सरज़मीन में बहुत बढ़-चढ़ गया था, और उसने वहाँ के रहने वालों को मुख्तलिफ़ किस्में कर रखा था,² कि उन (निवासियों में) से एक जमाअत (यानी बनी इस्राईल) का ज़ोर घटा रखा था, (इस तरह से कि) उनके बेटों को ज़िद्द कराता था और उनकी औरतों (यानी लड़कियों) को ज़िन्दा रहने देता था, वाकई वह बड़ा फ़सादी था। (4) (गरज़ फिरऔन तो इस ख़्याल में था) और हमको यह मन्ज़ूर था कि जिन लोगों का ज़ोर (मिस्र की) ज़मीन में घटाया जा रहा था, हम उनपर (दुनियावी व दीनी) एहसान करें, और (वह एहसान यह कि) उनको (दीन में) पेशवा बना दें, और (दुनिया में) उनको (मुल्क का) मालिक बनाएँ। (5) और (मालिक होने के साथ) उनको ज़मीन में हुक्मत दें, और फिरऔन और हामान और उनके पैरोकारों को उन (बनी इस्राईल) की जानिब से वे (नागवार) वाकिआत दिखलाएँ जिनसे वे बचाव कर रहे थे।³ (6) और (जब मूसा पैदा हुए तो) हमने मूसा की वालिदा को इल्हाम किया कि तुम उनको दूध पिलाओ। फिर जब तुम उनके बारे में (जासूसों के ख़बर पाने का) अन्देशा हो तो (बिना किसी डर और ख़तरे के) उनको (नील) दरिया में डाल देना। और न तो (डूब जाने का) अन्देशा करना और न (जुदाई पर) ग़म करना, (क्योंकि) हम ज़रूर उनको फिर तुम्हारे ही पास वापस पहुँचा देंगे और (फिर अपने वक़्त पर) उनको पैग़म्बर बना देंगे।⁴ (7) तो फिरऔन के लोगों ने मूसा को (यानी मय सन्दूक के) उठा लिया, ताकि वह उन लोगों के लिए दुश्मन और ग़म का सबब बनें। बिला शुब्हा फिरऔन और हामान और उनके पैरोकार (इस बारे में) बहुत चूके।⁵ (8) और फिरऔन की बीवी (हज़रत आसिया) ने (फिरऔन से) कहा कि यह (बच्चा) मेरी और तेरी आँखों की टंडक है,⁶ इसको क़त्ल मत करो, अज़ब नहीं कि (बड़ा होकर) हमको कुछ फ़ायदा पहुँचाए या हम इसको अपना बेटा ही बना लें, और उन लोगों को (अन्जाम की) ख़बर न थी।⁷ (9) और (उधर यह किस्सा हुआ कि) मूसा

(पिछले पृष्ठ का शेष) उसमें मौजूद हैं तो ज़ाहिर चीज़ें तो ज़रूर ही मौजूद हैं। गरज़ उनके आमाल की खुदा को भी ख़बर, दफ़्तर में भी महफूज़, और वे आमाल खुद सज़ा का तकाज़ा करने वाले, और सज़ा के होने पर सच्ची ख़बरें भी मुत्तफ़िक़, फिर यह समझने की क्या गुन्जाइश है कि सज़ा न होगी, हाँ देर मुश्किन है। चुनाँचे बाज़ सज़ाएँ उन इनकार करने वालों को दुनिया में हुईं जैसे अकाल का शिकार होना और क़त्ल किया जाना, और बाज़ मरने के बाद बरज़़ख़ में होंगी, कि ये सब करीब हैं। और कुछ आख़िरत में होंगी।

4. मतलब यह कि ये लोग तो मुर्दों, बंहरों और अन्धों के जैसे हैं। फिर उनसे समझने और सही रास्ते पर आने की उम्मीद बेकार है, जब उम्मीद न होगी, ग़म भी न होगा।

(तफ़सीर पृष्ठ 694) 1. मतलब यह कि सुनते ही बिना सोचे-समझे उनको झुठला दिया। और झुठलाने ही पर बस नहीं किया बल्कि याद करो कि उसके अलावा और भी क्या-क्या करते रहे, जैसे नबियों और ईमान वालों को तकलीफ़ दी, इसी तरह अन्य कुफ़्रिया आमाल और अक्कीदों और नाफ़रमानियों में मुब्तला रहे।

2. क्योंकि वे ग़ौर-फ़िक़्र करते हैं और दूसरे ग़ौर-फ़िक़्र नहीं करते, और नतीजे पर पहुँचने के लिए ग़ौर-फ़िक़्र ज़रूरी है। इसलिए दूसरे इससे फ़ायदा उठाने वाले नहीं होते।

3. ऊपर सूर: में जो तीन मज़ामीन- नुबुव्वत, तौहीद और आख़िरत मुफ़स्सल ज़िक्र हुए हैं, आगे ख़तमें में उनका मुख़्तसर और खुलासे के तौर पर बयान है। (पृष्ठ 694 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 696 की तफ़सीर पृष्ठ 698 पर)

(अलैहिस्सलाम) की वालिदा का दिल (अनेक ख्यालों के आने से) बेकरार हो गया, करीब था कि वह मूसा (अलैहिस्सलाम) का हाल सबपर जाहिर कर देती, अगर हम उनके दिल को इस गरज़ से मज़बूत न किए रहें कि यह (हमारे वायदे पर) यकीन किए (बैठी) रहें। (10) उन्होंने मूसा की बहन (यानी अपनी बेटी) से कहा कि ज़रा मूसा का सुराग तो लगा, सो उन्होंने मूसा (अलैहिस्सलाम) को दूर से देखा और उन लोगों को (यह) ख़बर न थी (कि यह उनकी बहन हैं और इस फ़िक्क में आई हैं)। (11) और हमने पहले ही से मूसा (अलैहिस्सलाम) पर दूध पिलाने वालियों की बन्दिश कर रखी थी, सो वह (इस मौक़े को देखकर) कहने लगी, क्या मैं तुम लोगों को किसी ऐसे घराने का पता बता दूँ जो तुम्हारे लिए इस बच्चे की परवरिश करें, और वे दिल से इसकी ख़ैरख्वाही करें। (12) गरज़ हमने मूसा (अलैहिस्सलाम) को उनकी वालिदा के पास (अपने वायदे के मुवाफ़िक्) वापस पहुँचा दिया, ताकि उनकी आँखें ठंडी हों और ताकि (जुदाई के) ग़म में न रहें, और ताकि इस बात को जान लें कि अल्लाह तआला का वायदा सच्चा (होता) है, लेकिन (अफ़सोस की बात है कि) अक्सर लोग (इसका) यकीन नहीं रखते। ♦ (13) ♦

और जब (परवरिश पाकर) अपनी भरी जवानी (की उम्र) को पहुँचे और (जिस्मानी और अक्ली ताकत से) दुरुस्त हो गए हमने उनको हिकमत और इल्म अता फ़रमाया,¹ और हम नेक काम करने वालों को इसी तरह सिला दिया करते हैं। (यानी नेक अमल से इल्मी फैज़ में तरक्की होती है)² (14) और मूसा शहर में (यानी मिस्र में कहीं बाहर से) ऐसे वक़्त पहुँचे कि वहाँ के (अक्सर) निवासी बेख़बर (पड़े सो रहे) थे, तो उन्होंने वहाँ दो आदमियों को लड़ते देखा, एक तो उनकी बिरादरी में का था और दूसरा उनके मुख़ालिफ़ीन में से था। सो वह जो उनकी बिरादरी का था उसने मूसा से उसके मुकाबले में जो उनके मुख़ालिफ़ीन में से था मदद चाही, तो मूसा ने उसको (एक) घूँसा मारा, सो उसका काम ही तमाम कर दिया।³ मूसा कहने लगे कि यह तो शैतानी हरकत हो गई। बेशक शैतान (भी आदमी का) खुला दुश्मन है। (ग़लती में डाल देता है)। (15) अज़र्ज़ किया कि ऐ मेरे परवर्दिगार! मुझसे कुसूर हो गया है, आप माफ़ फ़रमा दीजिए, सो अल्लाह तआला ने माफ़ फ़रमा दिया। बिला शुब्हा वह बड़ा माफ़ करने वाला, रहमत करने वाला है। (16) मूसा ने (यह भी) अज़र्ज़ किया कि ऐ मेरे परवर्दिगार! चूँकि आपने मुझपर बड़े-बड़े इनामात फ़रमाए हैं, सो कभी मैं मुजरिमों की मदद न करूँगा।⁴ (17) फिर मूसा को शहर में सुबह हुई ख़ौफ़ और घबराहट की हालत में कि अचानक (देखते क्या हैं

(पिछले पृष्ठ का शेष)

4. मतलब यह कि इबादत में शिर्क से दूर रहूँ जैसा कि अब तक दूर हूँ।

5. यानी उसको अज़्र व सवाब और नजात होगी। मैं उससे किसी माली फ़ायदे या ओहदे व शान का इच्छुक नहीं हूँ।

6. यानी मेरा काम सिर्फ़ हुक्म पहुँचाना है, सो पहुँचाकर भार-मुक्त हो जाऊँगा। आगे न मानने का वबाल तुमको भुगतना पड़ेगा। मतलब यह कि मैं पैग़म्बर हूँ और तुमसे कोई गरज़ या लालच नहीं रखता।

(तफ़सीर पृष्ठ 696)

1. क्योंकि किस्सों के मकासिद में इनसे इबरात हासिल करना और नुबुव्वत वग़ैरह पर इस्तिदलाल है, जो मोमिनोँ ही को नफ़ा देने वाले हैं, चाहे हकीकत के एतिबार से मोमिन हों या हुक्म के एतिबार से।

2. इस तरह कि क़िब्तियों को सम्मान वाला बना रखा था और सिब्तियों यानी बनी इस्राईल को ज़लील व पस्त कर रखा था।

3. इससे हुक्मत का पतन और हलाक होना मुराद है, कि इसी पतन व हलाकत से बचाव के लिए बनी इस्राईल के लड़कों को क़त्ल करता था, जिसकी बिना एक ख़्वाब थी जो फ़िरऔन ने देखा था और नुजूमियों ने उसकी यही ताबीर दी थी। पस हमारे तकदीरी हुक्म के सामने उन लोगों की तदबीर कुछ काम न आई।

4. गरज़ वह इसी तरह उनको दूध पिलाती रही, फिर जब राज़ खुलने का ख़ौफ़ हुआ तो सन्दूक में बन्द करके अल्लाह के नाम पर नाल दरिया में छोड़ दिया। गरज़ वह सन्दूक किनारे पर लगा।

5. कि अपने दुश्मन को अपनी बग़ल में पाला।

6. यानी इसको देखकर जी खुश हुआ करेगा।

7. कि यह वही बच्चा है जिसके हाथों फ़िरऔन की बादशाहत ग़ारत होगी। (पृष्ठ 698 की फ़सीर पृष्ठ 700 पर)

कि) वही शख्स जिसने गुजरी कल इम्दाद चाही थी वह फिर उनको मदद के लिए पुकार रहा है। मूसा (अलैहिस्सलाम) उससे फरमाने लगे बेशक तू खुला बुरे रास्ते वाला (आदमी) है। (18) सो जब मूसा (अलैहिस्सलाम) ने उसपर हाथ बढ़ाया जो उन दोनों का मुखालिफ था, वह इस्राईली कहने लगा, ऐ मूसा! क्या (आज) मुझको कत्ल करना चाहते हो, जैसा कि कल एक आदमी को कत्ल कर चुके हो। (मालूम होता है कि) बस तुम दुनिया में अपना जोर बिठलाना चाहते हो और सुलह (और मिलाप) करवाना नहीं चाहते। (19) और (उस मजमे में) एक शख्स शहर के (उस) किनारे से (जहाँ यह मश्विरा हो रहा था) दौड़े हुए आए (और) कहने लगे कि ऐ मूसा! दरबार वाले आपके मुताल्लिक मश्विरा कर रहे हैं कि आपको कत्ल कर दें। सो आप (यहाँ से) चल दीजिए। मैं आपकी खैरखाही कर रहा हूँ। (20) पस (यह सुनकर) मूसा (अलैहिस्सलाम) वहाँ से (किसी तरफ को) निकल गए खौफ और घबराहट की हालत में, (और चूँकि रास्ता मालूम न था, दुआ के तौर पर) कहने लगे कि ऐ मेरे परवर्दिगार! मुझको इन जालिम लोगों से बचा लीजिए! (21) ♦

और जब मूसा (अलैहि.) मद्यन की तरफ हो लिए, कहने लगे कि उम्मीद है कि मेरा रब मुझको (किसी अमन की जगह का) सीधा रास्ता चलाएगा। (चुनाँचे ऐसा ही हुआ और मद्यन जा पहुँचे)। (22) और जब मद्यन के पानी (यानी कुँए) पर पहुँचे तो उसपर (विभिन्न) आदमियों का एक मजमा देखा जो पानी पिला रहे थे। और उन लोगों से एक तरफ (अलग) को दो औरतें देखीं कि वे (अपनी बकरियाँ) रोके खड़ी हैं। मूसा (अलैहिस्सलाम) ने (उनसे) पूछा तुम्हारा क्या मतलब है? वे दोनों बोलीं कि (हमारा मामूल यह है कि) हम (अपने जानवरों को) उस वक्त तक पानी नहीं पिलाते जब तक ये चरवाहे पानी पिलाकर (जानवरों को) हटाकर न ले जाएँ, और हमारे बाप बहुत बूढ़े हैं। (23) पस (यह सुनकर) मूसा (अलैहिस्सलाम) ने उनके लिए पानी (खींचकर उनके जानवरों को) पिलाया फिर (वहाँ से) हटकर साये में जा बैठे, फिर (अल्लाह से) दुआ की कि ऐ मेरे परवर्दिगार! (इस वक्त) जो नेमत भी आप मुझको भेज दें मैं उसका (सख्त) जरूरतमन्द हूँ। (24) मूसा (अलैहिस्सलाम) के पास एक लड़की आई कि शरमाती हुई चलती थी, (और आकर) कहने लगी कि मेरे वालिद तुमको बुलाते हैं,² ताकि तुमको उसका सिला दें जो तुमने हमारी खातिर (हमारे जानवरों को) पानी पिला दिया था।¹ सो जब उनके पास पहुँचे और उनसे तमाम हाल बयान किया तो उन्होंने (तसल्ली दी और) कहा कि

(तफसीर पृष्ठ 698) 1. यानी तुबुब्बत से पहले ही सही समझ और मजबूत अक्ल इनायत फरमाई जिससे अच्छे-बुरे में फर्क कर सकें।

2. इसमें इशारा है कि फिरऔन के तरीके को मूसा अलैहिस्सलाम ने कभी इख्तियार न किया था, बल्कि उससे नफरत ही करते रहे।

3. यानी इतिफाक से वह मर ही गया।

4. यहाँ मुजरिमों से मुराद वे हैं जो दूसरों से गुनाह का काम कराना चाहें। क्योंकि किसी से गुनाह कराना यह भी जुर्म है। पस इसमें शैतान भी दाखिल हो गया कि वह गुनाह कराता है, और गुनाह करने वाला उसकी मदद करता है, चाहे जान-बूझकर या ग़लती से। मतलब यह हुआ कि मैं शैतान का कहना कभी न मानूँगा। यानी जहाँ ग़लती का इम्कान होगा वहाँ एहतियात और समझदारी से काम लूँगा। और असल मकसूद इतना ही है, मगर हुक्म को शामिल करने के लिए 'मुजरिमीन' बहुवचन का सीगा लाया गया है कि औरों को भी आम हो जाए।

(तफसीर पृष्ठ 700) 1. और अमन की जगह पहुँचा दीजिए।

2. यह बुजुर्ग हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम थे।

3. मूसा अलैहिस्सलाम साथ हो लिए, अगरचे मूसा अलैहिस्सलाम का मकसद यकीनन सिला लेना न था, लेकिन वक्त के तकाज़े के मुताबिक अमन की जगह और किसी मेहरबान साथी के मुतलाशी थे। और अगर भूख की शिद्दत भी इस जाने का एक सबब हो तो मुजायका नहीं, और इसको उजरत से कुछ ताल्लुक नहीं। और मेहमान नवाज़ी का अनुरोध भी खासकर जरूरत के वक्त और किसी खास करीम से कुछ ज़िल्लत नहीं। कहाँ यह कि दूसरे के अनुरोध पर मेहमान नवाज़ी का कबूल कर लेना।

(अब) अन्देशा न करो तुम ज़ालिम लोगों से बच आएं। (25) (फिर) एक लड़की ने कहा कि अब्बा जान! आप इनको नौकर रख लीजिए, क्योंकि अच्छा नौकर वह शख्स है जो मज़बूत (हो और) अमानतदार (भी) हो।¹ (26) वह (बुजुर्ग मूसा अलैहिस्सलाम से) कहने लगे कि मैं चाहता हूँ कि इन दोनों लड़कियों में से एक को तुम्हारे साथ ब्याह दूँ, इस शर्त पर कि तुम आठ साल मेरी नौकरी करो,² फिर अगर तुम दस साल पूरे कर दो तो यह तुम्हारी तरफ़ से (एहसान) है। और मैं (इस मामले में) तुमपर कोई मशक्कत डालना नहीं चाहता, (और) तुम मुझको इन्शा-अल्लाह तआला अच्छे मामले वाला पाओगे।³ (27) मूसा (अलैहिस्सलाम रज़ामन्द हो गए और) कहने लगे कि (बस तो) यह बात मेरे और आपके दरमियान (पक्की) हो चुकी, मैं इन दो मुद्दों में से जिस (मुद्दत) को पूरा कर दूँ, मुझपर कोई ज़ब्र न होगा, और हम जो (मामले की) बातचीत कर रहे हैं अल्लाह तआला इसका गवाह (काफी) है।⁴ (28) ♦

गरज़ जब मूसा (अलैहिस्सलाम) उस मुद्दत को पूरा कर चुके और (शुऐब अलैहिस्सलाम की इजाज़त से) अपनी बीवी को लेकर (मिस्र को या मुल्क शाम को) रवाना हुए तो उनको तूर पहाड़ की तरफ़ से एक (रोशनी) आग (की शकल में) दिखलाई दी। उन्होंने अपने घर वालों से कहा कि तुम (यहीं) ठहरे रहो, मैंने एक आग देखी है (मैं वहाँ जाता हूँ) शायद मैं तुम्हारे पास वहाँ से (रास्ते की कुछ) ख़बर लाऊँ या कोई आग का (दहकता हुआ) अंगारा ले आऊँ, ताकि तुम सेंको। (29) सो जब वह उस आग के पास पहुँचे तो उनको उस मैदान की दाहिनी ओर से (जो कि मूसा अलैहिस्सलाम की दाहिनी जानिब था) उस मुबारक मक़ाम में एक दरख़्त में से आवाज़ आई कि ऐ मूसा! मैं अल्लाह रब्बुल आलमीन हूँ। (30) और यह (भी आवाज़ आई) कि तुम अपनी लाठी डाल दो,⁵ सो उन्होंने जब उसको लहराता हुआ देखा जैसा पतला साँप (तेज़) होता है, तो पीठ फेर कर भागे और पीछे मुड़कर भी न देखा। (हुक्म हुआ कि) ऐ मूसा! आगे आओ और डरो मत, तुम (हर तरह) अमन में हो।⁶ (31) तुम अपना हाथ गिरेबान के अन्दर डालो (और फिर निकालो) वह बिना किसी मर्ज़ के निहायत रोशन होकर निकलेगा। और ख़ौफ़ (दूर करने) के वास्ते अपना (वह) हाथ (फिर) अपने गिरेबान और (बग़ल) से (पहले की तरह) बदस्तूर मिला लेना, सो ये (तुम्हारी नुबुव्वत की) दो सनदें हैं तुम्हारे रब की तरफ़ से, फिरऔन और उसके सरदारों के पास जाने के वास्ते, (जिसका तुमको हुक्म दिया जाता है) क्योंकि वे बड़े नाफ़रमान लोग हैं। (32) उन्होंने अर्ज़ किया कि ऐ मेरे रब! मैंने उनमें से एक आदमी का खून

1. और इनमें दोनों सिफ़तें हैं।
2. हासिल यह कि आठ साल की ख़िदमत इस निकाह का महर है।
3. यानी काम लेने और वक़्त की पाबन्दी वगैरह-वगैरह तमाम बातों में आसानी बरतूँगा।
4. उसको हाज़िर-नाज़िर समझकर अहद को पूरा करना चाहिए।
5. चुनाँचे उन्होंने डाल दिया और वह साँप बनकर चलने लगा।
6. यह कोई डर की बात नहीं बल्कि तुम्हारा मौजिज़ा है।

कर दिया था, सो मुझको अन्देशा है कि (कहीं पहली ही बार में) वे लोग मुझको कत्ल कर दें।¹ (33) और मेरे भाई हारून की ज़बान मुझसे ज्यादा रवाँ है, तो उनको भी मेरा मददगार बनाकर मेरे साथ रिसालत दे दीजिए कि वह मेरी तक़रीर की ताईद और तस्दीक करेंगे। क्योंकि मुझको अन्देशा है कि वे लोग (यानी फिरऔन और उसके दरबारी) मुझको झुठलाएँ।² (34) इरशाद हुआ कि (बेहतर है) हम अभी तुम्हारे भाई को तुम्हारे हाथ की कुव्वत बनाए देते हैं। (एक दरख्वास्त तो यह मन्ज़ूर हुई) और हम तुम दोनों को एक खास रोब व दबदबा (और हैबत) अता करते हैं जिससे उन लोगों को तुमपर पहुँच और ताक़त न होगी। (पस) हमारे मोजिज़े लेकर जाओ। तुम दोनों और जो तुम्हारी पैरवी करने वाला होगा (उन लोगों पर) ग़ालिब रहोगे। (35) गरज़ जब उन लोगों के पास मूसा हमारी खुली दलीलें लेकर आए तो उन लोगों ने (मोजिज़ों को देखकर) कहा कि यह तो (महज़) एक जादू है कि (ख़्वाह-मख़्वाह खुदा तआला पर) झूठ घड़ा जाता है। और हमने ऐसी बात कभी नहीं सुनी कि हमारे अगले बाप-दादों के वक़्त में भी हुई हो। (36) और मूसा (अलैहि.) ने उसके जवाब में फ़रमाया कि मेरा परवर्दिगार उस शख्स को ख़ूब जानता है जो सही दीन उसके पास से लेकर आया है, और जिसका उस आलम “यानी आख़िरत” का अन्जाम अच्छा होने वाला है। (और) यकीनन ज़ालिम लोग कभी फ़लाह न पाएँगे।³ (37) और (मूसा अलैहिस्सलाम की दलीलें देखकर सुनकर) फिरऔन कहने लगा कि ऐ दरबार वालो! मुझको तो तुम्हारा अपने सिवा कोई खुदा मालूम नहीं होता, तो ऐ हामान! तुम हमारे लिए मिट्टी (की ईंटें बनवाकर उन) को आग में (पज़ावा लगाकर) पकवाओ फिर (उन पक्की ईंटों से) मेरे वास्ते एक बुलन्द इमारत बनवाओ ताकि मैं (उसपर चढ़कर) मूसा के खुदा को देखूँ-भालूँ, और मैं तो (इस दावे में कि मेरे सिवा और कोई खुदा है) मूसा को झूठा ही समझता हूँ। (38) और फिरऔन और उसके ताबेदारों ने नाहक दुनिया में सर उठा रखा था और यूँ समझ रहे थे कि उनको हमारे पास लौटकर आना नहीं है। (39) तो हमने (तक़ब्बुर की सज़ा में) उसको और उसके ताबेदारों को पकड़कर दरिया में फेंक दिया (यानी डुबू दिया) सो देखिए ज़ालिमों का क्या अन्जाम हुआ। (40) (और मूसा अलैहि. का कौल जाहिर हो गया) और हमने उन लोगों को ऐसा सरदार बनाया था जो (लोगों को) दोज़ख़ की तरफ़ बुलाते रहे और (इसी वास्ते) क़ियामत के दिन (ऐसे बेसहारा रह जाएँगे कि) कोई उनका साथ न देगा। (41) और (ये लोग दोनों जहाँ में घाटे में रहे, चुनाँचे) दुनिया में भी हमने उनके पीछे लानत लगा दी⁴ और क़ियामत के दिन भी वे बदहाल लोगों में से होंगे।⁵ (42) ❖

1. और तब्लीग़ भी न होने पाए।
2. तो उस वक़्त मुनाज़रा करने की ज़रूरत होगी और ज़बानी मुनाज़रे के लिए रवाँ ज़बान आदतन ज्यादा मुफीद है।
3. मतलब यह कि खुदा को ख़ूब मालूम है कि हममें और तुममें कौन सही रास्ते पर है, और कौन ज़ालिम। और कौन अच्छे अन्जाम वाला है और कौन कामयाबी से महरूम है। पस हर एक की हालत और नतीजे का जल्दी ही मरने के साथ ही जुहूर हो जाएगा।
4. लानत पीछे लगा देने का मतलब यह है कि दुनिया में जो ज़ालिमों-काफ़िरों वगैरह पर लानत करता है, चूँकि वे लोग भी ऐसे ही थे उनपर भी लानत पड़ती है।
5. मूसा अलैहिस्सलाम का किस्सा फिरऔन के साथ ख़त्म हुआ। आगे इस किस्से के सबसे बड़े मक़सद यानी हुज़ुरे पाक जनाब मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की रिसालत को साबित करने का मज़मून मज़कूर है, साथ ही काफ़िरों के बाज़ शुब्हात का जवाब और तम्हीद के लिए मूसा अलैहिस्सलाम की रिसालत का खुलासा इरशाद है।

और हमने मूसा को अगली उम्मतों (यानी नूह की कौम और आद व समूद) के हलाक करने के बाद किताब (यानी तौरात) दी थी, जो लोगों (यानी बनी इस्राईल) के लिए दानिशमन्दियों “यानी बुद्धिमत्ता” का सबब और हिदायत और रहमत थी,¹ ताकि वे (उससे) नसीहत हासिल करें।² (43) और आप (तूर पहाड़ की) पश्चिमी ओर मौजूद न थे, जबकि हमने मूसा को अहकाम दिए थे और (खास वहाँ तो क्या मौजूद होते) आप (तो) उन लोगों में से (भी) न थे जो (उस ज़माने में) मौजूद थे। (44) और लेकिन (बात यह है कि हमने मूसा अलैहिस्सलाम के बाद) बहुत-सी नस्लें पैदा कीं। फिर उनपर लम्बा ज़माना गुज़र गया,³ और आप मद्यन वालों में भी न रहते थे कि आप (वहाँ के हालात देखकर उन हालात के मुताल्लिक) हमारी आयतें उन लोगों को पढ़-पढ़कर सुना रहे हों, और लेकिन हम ही (आपको) रसूल बनाने वाले हैं। (45) और (इसी तरह) आप तूर की (पश्चिमी) ओर (जिसका ज़िक्र हुआ) में उस वक़्त (भी) मौजूद न थे, जब हमने (मूसा को) पूकारा था, और लेकिन (इसका इल्म भी इसी तरह हासिल हुआ कि) आप अपने रब की रहमत से नबी बनाए गए, ताकि आप ऐसे लोगों को डराएँ जिनके पास आपसे पहले कोई डराने वाला (नबी) नहीं आया, क्या अज़ब है कि नसीहत कबूल करें।⁴ (46) और हम रसूल न भी भेजते अगर यह बात न होती कि उनपर उनके किरदारों के सबब (जो कि अक्ल के एतिबार से बुरे हैं) कोई मुसीबत (दुनिया या आखिरत में) नाज़िल होती, तो यह कहने लगते कि ऐ हमारे रब! आपने हमारे पास कोई पैगम्बर क्यों न भेजा, ताकि हम आपके अहकाम की पैरवी करते, और (उन अहकाम और रसूल पर) ईमान लाने वालों में होते।⁵ (47) सो जब हमारी तरफ़ से उन लोगों के पास हक़ बात पहुँची तो (उसमें शुब्हा निकालने के लिए यूँ) कहने लगे कि उनको ऐसी किताब क्यों न मिली जैसी मूसा को मिली थी,⁶ क्या जो किताब मूसा को मिली थी इससे पहले ये लोग उसके इनकार करने वाले नहीं हुए। ये लोग तो यूँ कहते हैं कि दोनों जादू हैं जो एक-दूसरे के मुवाफ़िक़ “यानी अनुकूल” हैं। और यूँ भी कहते हैं कि हम तो दोनों में से किसी को भी नहीं मानते। (48) आप कह दीजिए कि अच्छा तो (तौरात और कुरआन के अलावा) तुम कोई और किताब अल्लाह के पास से ले आओ जो हिदायत करने में उन दोनों से बेहतर हो, मैं उसी की पैरवी करने लगूँगा, अगर तुम (इस दावे में) सच्चे हो।⁷ (49) फिर (इस एहतिजाज के बाद) अगर ये लोग आपका (यह) कहना न कर सकें तो आप समझ लीजिए कि ये लोग महज़

1. हक़ के तालिब की अव्वल समझ दुरुस्त होती है, यह ‘बसीरत’ है। फिर अहकाम कबूल करता है, यह ‘हिदायत’ है। फिर हिदायत का फल यानी: अल्लाह तआला की निकटता और उसके यहाँ कबूलियत इनायत होती है, यह ‘रहमत’ है।

2. इसी तरह जब यह दौर भी ख़त्म हो चुका और लोग फिर नई हिदायत के नए सिरे से मोहताज हुए तो अपनी मुस्तक़िल आदत के मुताबिक़ हमने आपको रसूल बनाया जिसकी दलीलों में से एक यही मूसा अलैहिस्सलाम के वाकिए की यकीनी ख़बर देना है।

3. जिससे फिर सही उलूम नायाब (यानी अप्राप्य) हो गए। और लोग फिर हिदायत के मोहताज हुए। और अगरचे बीच-बीच में अम्बिया अलैहिमुस्सलाम आया किए मगर उनके उलूम भी इसी तरह नायाब हुए। इसलिए हमारी रहमत ने यह चाहा कि हमने आपको वह और रिसालत से सम्मानित फ़रमाया।

4. हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने वालों, बल्कि उनके करीबी बाप-दादाओं ने भी किसी नबी को नहीं देखा।

5. अगर ये लोग ज़रा ग़ौर-फ़िक्र करें तो समझ सकते हैं कि पैगम्बर भेजने से हमारा कोई फ़ायदा नहीं बल्कि उन्हीं लोगों का फ़ायदा है कि ये लोग अच्छाई और बुराई पर बाख़बर होकर सज़ा से बच सकते हैं। वरना जिन बातों का बुरा होना अक्ल से मालूम हो सकता है उनपर बिना रसूल भेजे भी अज़ाब होना मुम्किन था। लेकिन उस वक़्त उनको एक तरह की हसरत होती कि हाय! अगर रसूल आ जाता तो हमको ज़्यादा ताकीद हो जाती और इस मुसीबत में न पड़ते। इसलिए रसूल भी भेज दिया ताकि उनको उस हसरत से बचना आसान हो।

6. यानी कुरआन एक ही बार में तौरात की तरह क्यों नाज़िल न हुआ।

7. ग़रज़ यह कि मैं हक़ साबित कर दूँ तो तुम उसकी इतिबा करो, और अगर तुम हक़ साबित कर दो तो मैं भी इतिबा करने के लिए तैयार हूँ।

अपनी नफ़्सानी ख्वाहिशों पर चलते हैं। और ऐसे शख्स से ज्यादा कौन गुमराह होगा जो अपनी नफ़्सानी ख्वाहिश पर चलता हो बगैर इसके कि अल्लाह की जानिब से कोई दलील (उसके पास) हो, (और) अल्लाह तआला ऐसे जालिम लोगों को हिदायत नहीं किया करता। (50) ♦

और हमने इस कलाम (यानी कुरआन) को उन लोगों के लिए वक़्त-वक़्त पर एक के बाद एक भेजा, ताकि ये लोग (बार-बार ताज़ा-बताज़ा सुनने से) नसीहत मानें।¹ (51) (और) जिन लोगों को हमने कुरआन से पहले (आसमानी) किताबें दी हैं (उनमें जो इन्साफ़ पसन्द हैं) वे इस (कुरआन) पर ईमान लाते हैं। ● (52) और जब कुरआन उनके सामने पढ़ा जाता है तो कहते हैं कि हम इसपर ईमान लाए, बेशक यह हक़ है (जो) हमारे रब की तरफ़ से (नाज़िल हुआ है, और) हम तो इस (के आने) से पहले भी मानते थे। (53) उन लोगों को उनकी पुख़्तगी की वजह से दोहरा सवाब मिलेगा, और वे लोग नेकी (और बरदाश्त) से बुराई (और तकलीफ़) को दफ़ा कर देते हैं, और हमने जो कुछ उनको दिया है उसमें से (अल्लाह तआला की राह में) खर्च करते हैं। (54) और जब (किसी से अपने बारे में) कोई बेहूदा बात सुनते हैं तो उसको (भी) टाल जाते हैं, और (सही चलन के तौर पर) कह देते हैं कि (हम कुछ जवाब नहीं देते) हमारा किया हमारे सामने आएगा और तुम्हारा किया तुम्हारे सामने आएगा। (भाई) हम तुमको सलाम करते हैं, हम बे-समझ लोगों से उलझना नहीं चाहते। (55) आप जिसको चाहें हिदायत नहीं कर सकते बल्कि अल्लाह जिसको चाहे हिदायत कर देता है, और हिदायत पाने वालों का इल्म (भी) उसी को है।² (56) और ये लोग कहते हैं कि अगर हम आपके साथ होकर (इस दीन की) हिदायत पर चलने लगे तो फौरन अपने मक़ाम से मारकर निकाल दिए जाएँ। क्या हमने उनको अमन व शान्ति वाले हरम में जगह न दी, जहाँ हर किस्म के फल खिंचे चले आते हैं जो हमारे पास से (यानी हमारी कुदरत और हमारे देने से) खाने को मिलते हैं, और लेकिन उनमें अक्सर लोग (इसको) नहीं जानते।³ (57) और हम बहुत-सी ऐसी बस्तियाँ हलाक कर चुके हैं जो अपने ऐश के सामान पर इतराते थे। सो (देख लो) ये उनके घर (तुम्हारी आँखों के सामने पड़े) हैं कि उनके बाद आबाद ही न हुए मगर थोड़ी देर के लिए,⁴ और आखिरकार (उनके उन सब सामानों के) हम ही मालिक रहे। (58) और आपका रब बस्तियों को (अव्वल ही बार में) हलाक नहीं किया करता जब तक कि उन (बस्तियों) के मुख्य स्थान में किसी पैग़म्बर को न भेज ले, कि वह उन लोगों को हमारी आयतें पढ़-पढ़कर सुनाए। और हम उन बस्तियों को हलाक नहीं करते मगर उसी हालत में कि वहाँ के रहने वाले बहुत ही शरारत करने लगे।⁵ (59) और जो कुछ

1. यानी हम तो एक ही बार में भेजने पर भी कादिर हैं, मगर उन्हीं की मस्लहत से थोड़ा-थोड़ा नाज़िल करते हैं।
2. यानी हिदायत करने की कुदरत तो सिवाय खुदा तआला के किसी को क्या होती, किसी को इसका इल्म भी नहीं कि कौन-कौन हिदायत पाने वाला है।
3. यानी हरम होने की वजह से जिसका सब एहतियाम करते हैं, नुक़सान पहुँचने का भी अन्देशा नहीं और इस नुक़सान के न होने की वजह से रिज़्क के फ़ायदे के ख़त्म होने का अन्देशा भी नहीं। पस उनको चाहिए था कि इस हालत को ग़नीमत समझते और इसको नेमत समझकर कद्र करते और ईमान ले आते, लेकिन वे इसका ख़याल नहीं करते।
4. यानी किसी मुसाफ़िर का इतिफ़ाक़ से उधर को गुज़र हो जाए और वह थोड़ी देर वहाँ सुस्ताने को या तमाशा देखने को बैठ जाए।
5. यानी एक अच्छी-खासी मुद्दत तक बार-बार के नसीहत करने से नसीहत हासिल न करें, उस वक़्त हलाक कर देते हैं। इसी क़ानून के मुवाफ़िक़ तुम्हारे साथ अमल दरामद हो रहा है।

तुमको दिया दिलाया गया है वह महज (चन्द दिन का) दुनियावी जिन्दगी के बरतने के लिए है, और यहीं की (जेब व जीनत है)¹ और जो (अज़्र व सवाब) अल्लाह के यहाँ है वह इससे बहुत ज्यादा बेहतर है, और ज्यादा (यानी हमेशा) बाकी रहने वाला है। क्या तुम लोग (इस फर्क को) नहीं समझते। (60) ♦

भला वह शख्स जिससे हमने एक पसन्दीदा वायदा कर रखा है। फिर वह शख्स उस (वायदे की चीज़) को पाने वाला है, क्या उस शख्स के जैसा हो सकता है जिसको हमने दुनियावी जिन्दगी का चन्द दिन का फायदा दे रखा है?² फिर वह कियामत के दिन उन लोगों में से होगा जो गिरफ्तार करके लाए जाएँगे। (61) और (वह दिन याद करने के काबिल है) जिस दिन अल्लाह उन काफ़िरों को (झिड़की के तौर पर) पुकार कर कहेगा कि वे मेरे शरीक कहाँ हैं, जिनको तुम (हमारा शरीक) समझ रहे थे?³ (62) जिनपर (गुमराह करने की वजह से) खुदा का फ़रमाया हुआ (यानी अज़ाब का मुस्तहिक होना) साबित हो चुका होगा। वे बोल उठेंगे कि ऐ हमारे परवर्दिगार! बेशक ये वही लोग हैं जिनको हमने बहकाया, हमने उनको वैसा ही (बिना किसी जोर-ज़बरदस्ती) बहकाया जैसा कि हम खुद बहके थे, और हम आपकी मौजूदगी में उन (के ताल्लुकात) से अलाहिदगी इख़्तियार करते हैं (और) ये लोग (हकीकत में) हमको न पूजते थे!⁴ (63) और (उस वक़्त उन मुशिरकों से मज़ाक उड़ाने के तौर पर) कहा जाएगा कि (अब) अपने उन शरीकों को बुलाओ, चुनौचे वे (इन्तिहाई हैरत से बेकरारी के साथ) उनको पुकारेंगे, सो वे जवाब भी न देंगे। और (उस वक़्त) ये लोग (अपनी आँखों से) अज़ाब देख लेंगे। ऐ काश! ये लोग (दुनिया में) सही रास्ते पर होते, (तो यह मुसीबत न आती)। (64) और जिस दिन उन काफ़िरों से पुकार कर पूछेगा कि तुमने पैग़म्बरों को क्या जवाब दिया था? (65) सो उस दिन उन (के ज़ेहन) से सारे मज़ामीन गुम हो जाएँगे, तो वे (अपने आप भी न समझ सकेंगे और) आपस में पृष्ठताछ भी न कर सकेंगे!⁵ (66) लेकिन जो शख्स (कुफ़्र व शिर्क से दुनिया में) तौबा करे और ईमान ले आए और नेक काम किया करे तो ऐसे लोग उम्मीद है कि (आख़िरत में) कामयाबी पाने वालों में से होंगे। (67) और आपका रब जिस चीज़ को चाहता है पैदा करता है और (जिस हुक्म को चाहता है) पसन्द करता है। उन लोगों को (अहकाम) तजवीज़ करने का कोई हक़ हासिल नहीं। अल्लाह तआला उनके शिर्क से पाक और बरतर है। (68) और आपका रब सब चीज़ों की ख़बर रखता है, जो उनके दिलों में पोशीदा रहता है और जिसको ये जाहिर करते हैं। (69) और अल्लाह तआला वही (कामिल सिफ़ात वाला) है, उसके सिवा कोई माबूद (होने को काबिल) नहीं, तारीफ़ (और प्रशंसा) के लायक़ दुनिया और आख़िरत में वही है,⁶ और हुक्ूमत भी (कियामत में) उसी की होगी, तुम सब उसी के पास लौटकर जाओगे। (70) आप (उन लोगों से) कहिए कि भला यह तो बतलाओ कि अगर अल्लाह तआला तुमपर हमेशा के लिए कियामत तक रात ही रहने दे तो खुदा के सिवा वह कौन-सा माबूद है जो तुम्हारे लिए रोशनी को ले आए, तो क्या तुम (तौहीद

1. यानी उम्र के ख़ात्मे के साथ उसका भी ख़ात्मा हो जाएगा।

2. मुराद पहले शख्स से मोमिन है जिससे जन्नत का वायदा है, और दूसरे से मुराद काफ़िर है जो मुजरिम होकर आएगा।

3. मुराद उससे शयातीन हैं कि उन्हीं की मुतलक ताबेदारी से शिर्क करते थे, इसलिए उनको “शु-रका” कहा।

4. यानी जब ये अपने इख़्तियार से बहके हैं न कि ख़ालिस हमारे बहकाने से तो इस एतिबार से ये ख़्वाहिश-परस्त थे, न कि सिर्फ़ शैतान-परस्त। मतलब यह कि ये खुद अपनी ख़्वाहिश से ख़राब हुए इस दर्जे में हमारा उनका कोई ताल्लुक नहीं। लेकिन जिस क़द्र हमारी ख़ता है कि हमने उनको बहकाया उसका हम इक़रार करते हैं। मक़सूद इस सब हिकायत से यह है कि जिनके भरोसे पर बैठे हैं वे उनसे कानों पर हाथ रखेंगे।

5. ऊपर शिर्क पर धमकी और झिड़की की हिकायत में शिर्क की निन्दा ज़िक्र हुई है, आगे तौहीद को और उसके तहत में इनामात व एहसानात को साबित किया गया है।

6. क्योंकि उसके इख़्तियारात और दख़ल दोनों आलम में ऐसे हैं (पृष्ठ 710 की बक़िया तफ़सीर पृष्ठ 712 पर)

की ऐसी साफ़ दलीलों को) सुनते नहीं। (71) आप कहिए कि भला यह तो बतलाओ कि अगर अल्लाह तआला तुम पर हमेशा के लिए कियामत तक दिन ही रहने दे,¹ तो खुदा तआला के सिवा वह कौन-सा माबूद है जो तुम्हारे लिए रात को ले आए, जिसमें तुम आराम पाओ। क्या तुम (इस कुदरत के गवाह को) देखते नहीं। (72) और (वह नेमत देने वाला ऐसा है कि) उसने अपनी रहमत से तुम्हारे लिए रात और दिन को बनाया, ताकि रात में आराम करो और ताकि (दिन में) उसकी रोज़ी तलाश करो, और ताकि (इन दोनों नेमतों पर) तुम (अल्लाह का) शुक्र करो।² (73) और जिस दिन अल्लाह तआला उनको पुकार कर फरमाएगा कि जिनको तुम मेरा शरीक समझते थे वे कहाँ गए। (74) और हम हर उम्मत में से एक-एक गवाह निकाल लाएँगे,³ फिर हम (उन मुशिरकों से) कहेंगे कि (अब) अपनी (कोई) दलील (शिक के सही होने के दावे पर) पेश करो, सो (उस वक्त) उनको मालूम हो जाएगा कि सच्ची बात खुदा ही की थी, और (दुनिया में) जो कुछ बातें घड़ा करते थे (आज) किसी का पता न रहेगा।⁴ (75) ♦

कारून मूसा (अलैहिस्सलाम) की बिरादरी में से था, सो वह (माल की ज़्यादती की वजह से) उन लोगों के मुकाबले में तकबुर करने लगा और (उस माल की ज़्यादती यह थी कि) हमने उसको इस कद्र खज़ाने दिए थे कि उनकी कुन्जियाँ कई-कई ताकतवर शख्सों को बोझल कर देती थीं।⁵ जबकि उसको उसकी बिरादरी ने (समझाने के तौर पर) कहा कि तू (इस माल व शान पर) इतरा मत, वाकई अल्लाह तआला इतराने वालों को पसन्द नहीं करता। (76) और (यह भी कहा कि) तुझको जितना दे रखा है उसमें आलमे आखिरत की भी जुस्तजू किया कर, और दुनिया से अपना हिस्सा (आखिरत में ले जाना) मत भूल, और जिस तरह खुदा तआला ने तेरे साथ एहसान किया तू भी (बन्दों के साथ) एहसान किया कर। दुनिया में फ़साद का इच्छुक मत हो,⁶ बेशक अल्लाह फ़सादियों को पसन्द नहीं करता। (77) कारून (यह सुनकर कहने लगा कि) मुझको तो यह सब कुछ मेरी ज़ाती हुनर मन्दी “यानी क़माल और योग्यता” से मिला है,⁷ क्या उस (कारून) ने (निरन्तर ख़बरों से) यह न जाना कि अल्लाह तआला उससे पहले पिछली उम्मतों में ऐसे-ऐसों को हलाक कर चुका है जो (माली) ताकत में (भी) उससे कहीं बढ़े हुए थे और मजमा (भी) उनका (उससे) ज़्यादा था। और मुजरिमों से (तहकीक करने के लिए) उनके गुनाहों का सवाल न करना पड़ेगा।⁸ (78) फिर (एक बार ऐसा इत्तिफ़ाक

(पिछले पृष्ठ का शेष)

कि जो सिफ़ते क़माल पर दलालत करते हैं जिससे यह वाज़ेह है कि तारीफ़ के लायक वही है।

1. रात हमेशा होना इस तौर पर कि सूरज को उफ़ुक (आसमान के किनारे) से न निकलने दे या उसका नूर छीन ले। और दिन का हमेशा होना इस तरह पर कि सूरज को छुपने न दे। या बिना सूरज ही के नूर फैला दे।
2. क़माल की समस्त सिफ़तें जो इस मक़ाम पर दलील पकड़ने के लिए ज़िक्र हुई हैं, ये हैं- 1- ख़ालिक होना 2- शरीअत व क़ानून का मुख़्तार होना 3- इल्म 4- हुकूमत 5- हुकूमत की कुव्वत व वुसअत 6- कुदरत 7- नेमत अता करना।
3. मुराद इससे अम्बिया हैं कि वे उनके कुफ़्र की गवाही देंगे।
4. क्योंकि हक़ के ज़ाहिर होने के लिए बातिल का ग़ायब हो जाना लाज़िम है।
5. यानी उनसे मुश्किल से उठती थीं, तो जब कुन्जियाँ इतनी ज़्यादा थीं तो ज़ाहिर है कि ख़ज़ाने बहुत होंगे।
6. यानी गुनाह करने से दुनिया में फ़साद व बिगाड़ होता है।
7. यानी मैं कमाने और माल हासिल करने के तरीके और तदबीरें खूब जानता हूँ उससे मैंने यह सब जमा किया है। फिर मेरा फ़ख़र करना बेजा नहीं और न इसको ग़ैबी एहसान कहा जा सकता है। और न इसमें किसी का हक़ हो सकता है।
8. क्योंकि अल्लाह तआला को सब मालूम है अगरचे सख़्खी करने और झिड़कने के लिए सवाल हो। मतलब यह कि अगर कारून इस मज़मून पर ग़ौर करता तो ऐसी ज़हलत की बात न कहता। क्योंकि दुनियावी हलाकत से हकीकी कुदरत के तहत में और आखिरत की पकड़ से हकीकी हुकूमत के तहत में दाख़िल होना ज़ाहिर है। फिर ऐसे शख्स की क्या कुदरत कि अपने कमाने और ज़ाती मेहनत से हासिल करने को हकीकी इल्लत समझे, और ऐसे शख्स की क्या राय कि वाजिब हुकूक का इनकार करे।

हुआ कि) वह अपने ठाठ (और शान) से अपनी बिरादरी के सामने निकला। जो लोग (उसकी बिरादरी में) दुनिया के तालिब थे (अगरचे मोमिन हों) कहने लगे, क्या खूब होता कि हमको भी वह साज़ो-सामान मिला होता जैसा कि कारून को मिला है। वाकई वह बड़ा नसीब वाला है। (79) और जिन लोगों को (दीन की) समझ अता हुई थी वे (उन लालचियों से) कहने लगे, अरे तुम्हारा नास हो, (तुम इस दुनिया पर क्या ललचाते हो) अल्लाह के घर का सवाब (इस दुनियावी शान-शौकत से) हज़ार दर्जे बेहतर है, जो ऐसे शख्स को मिलता है कि ईमान लाए और नेक अमल करे, और (फिर) वह (सवाब पूरे तौर पर) उन्हीं को दिया जाता है जो (दुनिया की हिस् व लालच से) सब्र करने वाले हैं।¹ (80) फिर हमने उस (कारून) को और उसके महल-सराय को (उसकी शरारत बढ़ जाने से) ज़मीन में धँसा दिया। सो कोई ऐसी जमाअत न हुई जो उसको अल्लाह (के अज़ाब) से बचा लेती, और न वह खुद ही अपने को बचा सका। (81) और कल (यानी पिछले करीबी ज़माने में) जो लोग उस जैसे होने की तमन्ना कर रहे थे, वे (उसको ज़मीन में धँसता देखकर) कहने लगे, बस जी यूँ मालूम होता है कि अल्लाह तआला अपने बन्दों में से जिसको चाहे ज़्यादा रोज़ी देता है और (जिसको चाहे) तंगी से देने लगता है। अगर हमपर अल्लाह तआला की मेहरबानी न होती तो हमको भी धँसा देता, बस जी मालूम हुआ कि काफ़िरों को कामयाबी नहीं होती।² (82) ♦

यह आलमे-आख़िरत हम उन्हीं लोगों के लिए ख़ास करते हैं जो दुनिया में न बड़ा बनना चाहते हैं और न फ़साद करना, और अच्छा अन्जाम परहेज़गार लोगों को मिलता है।³ (83) जो शख्स (कियामत के दिन) नेकी लेकर आएगा उसको उस (नेकी की वजह) से बेहतर (बदला) मिलेगा,⁴ और जो शख्स बुराई लेकर आएगा सो ऐसे लोगों को जो कि बुराई के काम करते हैं उतना ही बदला मिलेगा जितना वे करते थे।⁵ (84) जिस खुदा ने आप पर कुरआन (के अहकाम पर अमल और उसकी तब्लीग) को फ़र्ज़ किया है वह आपको (आपके) असली वतन (यानी मक्का शरीफ़) में फिर पहुँचाएगा।⁶ आप (उनसे) फ़रमा दीजिए कि मेरा रब खूब जानता है कि (अल्लाह तआला की तरफ़ से) कौन सच्चा दीन लेकर आया है और कौन खुली गुमराही में (मुब्तला) है। (85) और आपको (अपने नबी होने से पहले) यह उम्मीद न थी कि आप पर यह किताब नाज़िल की जाएगी, मगर महज़ आपके रब की मेहरबानी से इसका उतरना हुआ, सो आप उन काफ़िरों की

1. पस तुम लोग ईमान को मुकम्मल करने और नेक आमाल के हासिल करने में लगे, और शरई हद के अन्दर दुनिया हासिल करके उसकी हिस् व लालच से सब्र करो और बचो।
2. अगरचे चन्द दिन मज़े लूट लें मगर अन्जाम फिर नाकामी और घाटा है। पस असल और हकीकी कामयाबी ईमान वालों ही के साथ मख़सूस है।
3. यानी न तकब्बुर करते हैं और न कोई ज़ाहिरी गुनाह करते हैं। ख़ासकर ऐसा गुनाह जिसका असर दूसरे की ज़ात तक पहुँचे, जैसा कि फिरऔन व कारून तकब्बुर व घमण्ड और बिगाड़ व फ़साद के मुजरिम हुए। और वे सिर्फ़ मना की हुई चीज़ों से रुकने पर बस नहीं करते, बल्कि जो गुनाहों और मनाशुदा बातों के साथ-साथ हुक्म की हुई बातों और अहकाम को भी बजा लाते हों।
4. क्योंकि तकाज़ा तो यह था कि सिर्फ़ अमल की हैसियत के मुवाफ़िक़ बदला मिले मगर वहाँ ज़्यादा मिलेगा। जिसका कम-से-कम दर्जा दस हिस्से है।
5. यानी उसके तकाज़े से ज़्यादा न मिलेगा।
6. हासिले कलाम यह कि जिसने आपको नबी व वक्क वाला बनाया है और नबी से जो वायदा किया जाता है वह वक्क के क़तई होने की वजह से यकीनन सच्चा होता है, वह आपसे यह वायदा करता है, पस यकीनन ऐसा होगा।

जरा भी ताईद न कीजिए। (86) और जब अल्लाह के अहकाम आप पर नाज़िल हो चुके तो ऐसा न होने पाए (जैसा अब तक भी नहीं होने पाया) कि ये लोग आपको उन अहकाम से रोक दें और आप (बदस्तूर) अपने रब (के दीन) की तरफ (लोगों को) बुलाते रहिए, और उन मुशिरकों में शामिल न होइए। (87) और (जिस तरह अब तक आप शिर्क से पाक और महफूज़ हैं उसी तरह आगे भी) अल्लाह तआला के साथ किसी माबूद को न पुकारना, उसके सिवा कोई माबूद (होने के काबिल) नहीं,¹ (इसलिए कि) सब चीज़ें फना होने वाली हैं सिवाय उसकी ज़ात के, उसी की हुकूमत है (जिसका पूरे तौर पर जुहूर कियामत में है) और उसी के पास तुम सबको जाना है। (पस सबको उनके किए का बदला देगा)। ▲ (88) ♦

29 सूर: अन्कबूत 85

सूर: अन्कबूत मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 69 आयतें और 7 रूकूअ हैं।

शुरु करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

अलिफ-लाम्-मीम्² (1) (बाज़े मुसलमान जो काफिरों के तकलीफ पहुँचाने से घबरा जाते हैं, तो) क्या उन लोगों ने यह ख्याल कर रखा है कि वे इतना कहने पर छूट जाएंगे कि हम ईमान ले आए और उनको (किस्म-किस्म की मुसीबतों से) आजमाया न जाएगा। (2) और हम तो (ऐसे ही वाकिआत से) उन लोगों को भी आजमा चुके हैं जो उनसे पहले (मुसलमान) हो गुजरे हैं। सो अल्लाह तआला उन लोगों को (ज़ाहिरी इल्म से) जानकर रहेगा जो (ईमान के दावे में) सच्चे थे, और झूठों को भी जानकर रहेगा।³ (3) हाँ, क्या जो लोग बुरे-बुरे काम कर रहे हैं वे यह ख्याल करते हैं कि हमसे कहीं निकल भागेंगे, उनकी यह तजवीज़ निहायत ही बेहूदा है।⁴ (4) जो शख्स अल्लाह से मिलने की उम्मीद रखता है, सो (उसको तो ऐसे-ऐसे हादसों से परेशान न होना चाहिए, क्योंकि) अल्लाह तआला (से मिलने) का वह मुकर्ररा वक़्त ज़रूर आने वाला है, (जिससे सारे ग़म दूर हो जाएँगे) और वह सब कुछ सुनता, सब कुछ जानता है। (5) और जो शख्स मेहनत करता है, वह अपने ही (नफ़े के) लिए मेहनत करता है, (वरना) खुदा तआला को (तो) तमाम जहान वालों में किसी की हाज़त नहीं। (6) और (वह नफ़ा जो नेकी करने से पहुँचता है उसका बयान यह है कि) जो लोग ईमान लाते हैं और नेक काम करते हैं। हम उनके गुनाह उनसे दूर कर देंगे और उनको उनके (उन) आमाल (ईमान और नेक कामों) का (हक़ से) ज़्यादा अच्छा बदला देंगे।⁵ (7) और हमने इनसान को अपने माँ-बाप के साथ अच्छा

1. इन आयतों में काफिरों और मुशिरकों को उनकी दरखास्तों से मायूस करना है, और बात का रुख़ उन्हीं की तरफ़ है कि तुम जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लाम से दीन में मुवाफ़िक होने यानी की दरखास्त करते हो उसमें कामयाबी का कभी का सवाल ही नहीं। मगर आदत है कि जिसपर ज़्यादा गुस्सा होता है उससे बात नहीं किया करते। अपने महबूब से बातें करके उस शख्स को सुनाया करते हैं।
2. इस सूर: में ज़्यादातर दीन पर साबित क़दम रहने में जो चीज़ें रुकावट होती हैं उनके मुताल्लिक अहकाम हैं।
3. चुनौचे जो सच्चे दिल और एतिकाद से मुसलमान होते हैं वे इन इम्तिहानों में अटल रहते हैं, बल्कि और ज़्यादा पुख्ता हो जाते हैं। और जो वक़्ती तौर पर यूँही मुसलमान होते हैं वे ऐसे वक़्त में इस्लाम को छोड़ बैठते हैं। यानी यह एक हिक्मत है इम्तिहान की।
4. जारी मज़मून से अलग यह एक दूसरी बात बयान की है। जिसमें काफिरों के बुरे अन्जाम को सुनाकर मुसलमानों की एक तरह से तसल्ली कर दी कि इन तकलीफों का उनसे बदला लिया जाएगा।
5. काफिर लोग तरह-तरह से मुसलमानों को इस्लाम से हटाने की फ़िर्के करते थे। बाज़े जिस्मानी तकलीफें पहुँचाया करते थे और बाज़े दूसरे तरीकों से मजबूर करते। चुनौचे सअद बिन अबी वक्कास रज़ियल्लाहु अन्हु की वालिदा (माँ) ने उनसे कहा कि अल्लाह का हुक्म है कि माँ-बाप की इताअत करो, सो मैं कसम खाती हूँ कि खाना-पानी न चखूँगी जब तक कि तू इस्लाम न छोड़ देगा चाहे मेरी जान निकल जाए, इसपर अगली आयत नाज़िल हुई।

सुलूक करने का हुक्म दिया है। और (उसके साथ यह भी कह दिया है कि) अगर वे दोनों तुझपर इस बात का दबाव डालें कि तू ऐसी चीज़ को मेरा शरीक ठहराए जिस (के माबूद होने) की कोई (सही) दलील तेरे पास नहीं है, तो तू उनका कहना न मानना, तुम सबको मेरे ही पास लौटकर आना है। सो मैं तुमको तुम्हारे सब काम (नेक हों या बुरे) जतला दूँगा।¹ (8) और (तुममें) जो लोग ईमान लाए होंगे और नेक अमल किए होंगे, हम उनको नेक बन्दों (के दर्जे) में (जो कि जन्नत है) दाखिल कर देंगे। (9) और बाज़े आदमी ऐसे भी हैं जो कह देते हैं कि हम अल्लाह तआला पर ईमान लाए, फिर जब उनको अल्लाह के रास्ते में कुछ तकलीफ़ पहुँचाई जाती है² तो लोगों के तकलीफ़ पहुँचाने को ऐसा (बड़ा) समझ जाते हैं जैसे खुदा का अज़ाब। और अगर (कभी) कोई (मुसलमानों की) मदद आपके रब की तरफ़ से आ पहुँचती है तो (उस वक़्त) कहते हैं कि हम तो (दीन व अक्कीदे में) तुम्हारे साथ थे। क्या अल्लाह को दुनिया-जहान वालों के दिलों की बातें मालूम नहीं? (यानी उनके दिल ही में ईमान न था)। (10) और (ये वाकिआत इसलिए होते रहते हैं कि) अल्लाह तआला ईमान वालों को मालूम करके रहेगा और मुनाफ़िकों को भी मालूम करके रहेगा। (11) और काफ़िर लोग मुसलमानों से कहते हैं कि तुम (दीन में) हमारी राह चलो और (क़ियामत में) तुम्हारे गुनाह हमारे ज़िम्मे, हालाँकि ये लोग उनके गुनाहों में से ज़रा भी नहीं ले सकते, ये बिलकुल झूठ बक रहे हैं। (12) और (अलबत्ता यह होगा कि) ये लोग अपने गुनाह अपने ऊपर लादे होंगे और अपने (उन) गुनाहों के साथ (ही) कुछ गुनाह और (भी लादे हुए होंगे) और ये लोग जैसी-जैसी झूठी बातें बनाते थे, क़ियामत में उनसे पूछताछ (और फिर सज़ा) ज़रूर होगी।³ (13) ♦

और हमने नूह (अलैहिस्सलाम) को उनकी कौम की तरफ़ (पैग़म्बर बनाकर) भेजा, सो वह उनमें पचास साल कम एक हज़ार बरस रहे (और कौम को समझाते रहे)।⁴ फिर (जब उसपर भी वे बाज़ न आए तो) उनको तूफ़ान ने आ दबाया, और वे बड़े ज़ालिम लोग थे।⁵ (14) फिर (उस तूफ़ान के आने के बाद) हमने उनको और कश्ती वालों को (उस तूफ़ान से) बचा लिया, और हमने इस वाक़िए को तमाम जहान वालों के लिए इबरत का सबब बनाया। (15) और हमने इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) को (पैग़म्बर बनाकर) भेजा, जबकि उन्होंने अपनी कौम से (जो कि बुतपरस्त थे) फरमाया कि तुम अल्लाह की इबादत करो और उससे डरो,⁶ यह तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम कुछ समझ रखते हो। (16) तुम लोग अल्लाह को छोड़कर महज़ बुतों को पूज रहे हो, और (उसके मुताल्लिक) झूठी बातें घड़ते हो। तुम खुदा को छोड़कर जिनको पूज रहे हो वे तुमको

1. हासिल यह हुआ कि ऊपर वाले वाक़िए में माँ की नाफरमानी से गुनाह का वस्वसा न किया जाए।
2. रद्द करने से मकसूद यह नहीं है कि उनका इस्लाम अब मकबूल नहीं। बल्कि गुज़रे हुए ज़माने में इस्लाम पर बराबर कायम रहने के दावे को झुठलाना है।
3. ऊपर काफ़िरों के तकलीफ़ देने और मुख़ालफ़तों का बयान था जिससे मुसलमन नुक़सान व परेशानी उठाते हैं, आगे तसल्ली के लिए पहली उम्मतों के बाज़ किस्से ज़िक्र हुए हैं।
4. रुहुल-मआनी में इब्ने अबी शैबा, अब्द बिन हमीद, इब्नुल मुन्ज़िर, इब्ने अबी हातिम, इब्ने मरदूविया और हाकिम की रिवायत से हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से नक़ल किया है कि नूह अलैहिस्सलाम को चालीस साल की उम्र में नुबुव्वत मिली और साढ़े नौ सौ साल वज़्र फरमाया। और फिर तूफ़ान के बाद साठ साल ज़िन्दा रहे, सो इस हिसाब से उनकी उम्र एक हज़ार पचास साल की हुई, और अल्लाह ही खूब जानते हैं।
5. कि इतनी लम्बी मुदत की तंबीह और समझाने से भी मुतास्सिर न हुए।
6. आर डरकर शिर्क छोड़ दो।

कुछ भी रिज्क देने का इख्तियार नहीं रखते। सो तुम रिज्क खुदा के पास से तलाश करो¹ और उसी की इबादत करो और उसी का शुक्र अदा करो, और तुमको उसी के पास लौटकर जाना है।² (17) और अगर तुम लोग मुझको झूठा समझो तो (मेरा कुछ नुकसान नहीं, क्योंकि) तुमसे पहले भी बहुत-सी उम्मतें (अपने पैगम्बरों को) झूठा समझ चुकी हैं, और (उनका भी कुछ नुकसान नहीं हुआ। वजह उसकी यह है कि) पैगम्बर के ज़िम्मे तो सिर्फ (बात का) साफ़ तौर पर पहुँचा देना है। (18) क्या उन लोगों को यह मालूम नहीं कि अल्लाह तआला किस तरह मख्लूक को अव्वल बार पैदा करता है, (कि नापैदी की हालत से वजूद में लाता है) फिर वही दोबारा उसको पैदा करेगा, यह अल्लाह के नज़दीक बहुत ही आसान बात है। (19) आप (उन लोगों से) कहिए कि तुम लोग मुल्क में चलो-फिरो और देखो कि खुदा तआला ने मख्लूक को किस तौर पर अव्वल बार पैदा किया है। फिर अल्लाह तआला पिछली बार भी पैदा करेगा। बेशक अल्लाह तआला हर चीज़ पर कादिर है।³ (20) जिसको चाहेगा अज़ाब देगा (यानी जो उसका हक़दार होगा) और जिसपर चाहे रहमत फ़रमा देगा (यानी जो उसका अहल होगा) और तुम सब उसी के पास लौटकर जाओगे। (21) और न तुम ज़मीन में (छुपकर खुदा को) हरा सकते हो और न आसमान में (उड़कर), और खुदा के सिवा न तुम्हारा कोई कारसाज़ है और न कोई मददगार।⁴ (22) ♦

और जो लोग खुदा की आयतों के और (खास तौर पर) उसके सामने जाने के इनकारी हैं, वे लोग (क़ियामत में) मेरी रहमत से नाउम्मीद होंगे, और यही हैं जिनको दर्दनाक अज़ाब होगा। (23) सो (इब्राहीम अलैहिस्सलाम की इस दिल को छू लेने वाली तक़रीर के बाद) उनकी कौम का (आख़िरी) जवाब बस यह था कि (आपस में) कहने लगे कि उनको या तो क़त्ल कर डालो या उनको जला दो। (चुनाँचे जलाने का सामान किया) सो अल्लाह ने उनको उस आग से बचा लिया। बेशक इस वाक़िए में उन लोगों के लिए जो कि ईमान रखते हैं, कई निशानियाँ हैं।⁵ (24) और इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने (वअज़ यानी तक़रीर में यह भी) फ़रमाया कि तुमने जो खुदा को छोड़कर बुतों को (माबूद) तजवीज़ कर रखा है, बस यह तुम्हारे दुनिया के आपसी ताल्लुकात की वजह से है।⁶ फिर क़ियामत में (तुम्हारा यह हाल होगा कि) तुममें से एक दूसरे का मुख़ालिफ़ हो जाएगा और एक दूसरे पर लानत करेगा। और (अगर तुम इस बुतपरस्ती से बाज़ न आए तो) तुम्हारा ठिकाना दोज़ख़ होगा, और तुम्हारा कोई हिमायती न होगा। (25) सो (इतने वअज़ और नसीहत पर भी उनकी कौम ने न माना) सिर्फ़ लूत (अलैहिस्सलाम) ने उनकी तस्दीक़ फ़रमाई और (इब्राहीम ने) फ़रमाया कि मैं अपने परवर्दिगार की (बतलाई हुई जगह की) तरफ़ वतन छोड़ करके चला जाऊँगा,⁷ बेशक वह ज़बरदस्त, हिक्मत

1. यानी उससे माँगो कि रिज्क का मालिक वही है।
2. एक तो इबादत के वाजिब होने का सबब यह है कि वह नफ़े का मालिक है, और दूसरा यह कि वह नुक़सान का भी मालिक है।
3. मख्लूक की पहली पैदाइश के इल्मे अक्ली से उसके दोबारा पैदा करने पर इस्तिदलाल किया है जैसा कि इसपर “अ-व लम् यरौ” दलालत कर रहा है। और फिर मख्लूक के पहली बार पैदाइश के महसूस किए जाने वाले इल्म से दोबारा पैदाइश पर इस्तिदलाल है जैसा कि “उन्जुरु” इसपर दलालत कर रहा है, जिसमें पहली दलील से और आगे बढ़कर इरशाद है, कि जिस चीज़ से दलील पकड़ी जा रही है वह सिर्फ़ अक्ली चीज़ नहीं बल्कि महसूस की जाने वाली बात है।
4. पस न अपनी तदबीर से बच सके न दूसरे की हिमायत से।
5. यानी यह वाक़िआ कई चीज़ों पर दलालत करता है- अल्लाह का कादिर होना, इब्राहीम अलैहिस्सलाम का नबी होना, कुफ़ व शिर्क का बातिल होना। पस एक दलील इस एतिबार से कई दलीलों के कायम-मक़ाम हो गई कि उससे कई चीज़ों पर दलालत हो रही है।
6. चुनाँचे आँखों के सामने है कि अक्सर आदमी अपने ताल्लुक वालों, दोस्तों और रिश्तेदारों के तरीके पर रहता है, या तो इस वजह से हक़ के बारे में ग़ौर ही नहीं करता, और या समझकर भी डरता है कि ये सब छूट जाएँगे। (शेष तफ़सीर पृष्ठ 722 पर)

वाला है। (26) और हमने (हिजरत के बाद) उनको इसहाक (बेटा) और याकूब (पोता) इनायत फरमाया, और हमने उनकी नस्ल में नुबुव्वत और किताब (के सिलसिले) को कायम रखा, और हमने उनका सिला उनको दुनिया में भी दिया और आखिरत में भी (बड़े दर्जे के) नेक बन्दों में होंगे। (27) और हमने लूत (अलैहिस्सलाम) को पैगम्बर बनाकर भेजा, जबकि उन्होंने अपनी कौम से फरमाया कि तुम ऐसी बेहयाई का काम करते हो कि तुमसे पहले किसी ने दुनिया जहान वालों में नहीं किया। (28) क्या तुम मर्दों से फेल “यानी बुरा काम” करते हो, (वह बेहयाई का काम यही है) और तुम डाका डालते हो, और (ग़ज़ब यह है कि) अपनी भरी मज्लिस में नामाकूल हरकत करते हो? सो उनकी कौम का (आखिरी) जवाब बस यह था कि तुम हमपर अल्लाह का अज़ाब ले आओ अगर तुम (इस बात में) सच्चे हो (कि ये काम अज़ाब को लाने वाले हैं)। (29) लूत (अलैहिस्सलाम) ने दुआ की, ऐ मेरे रब! मुझको इन फ़साद “यानी बिगाड़” पैदा करने वाले लोगों पर ग़ालिब (और इनको अज़ाब से हलाक) कर दे। (30) ♦

और हमारे (वे) भेजे हुए फ़रिश्ते जब इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के पास खुशख़बरी लेकर आए तो (बातचीत के दौरान में) उन फ़रिश्तों ने (इब्राहीम अलैहिस्सलाम से) कहा कि हम इस बस्ती वालों को हलाक करने वाले हैं, (क्योंकि) वहाँ के रहने वाले बड़े शरीर हैं। (31) इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने फ़रमाया कि वहाँ तो लूत (अलैहिस्सलाम भी मौजूद) हैं। फ़रिश्तों ने कहा कि जो-जो वहाँ (रहते) हैं हमको सब मालूम हैं। हम उनको और उनके ख़ास मुताल्लिकीन को बचा लेंगे सिवाय उनकी बीवी के, कि वह अज़ाब में रह जाने वालों में होगी। (32) (यह बातचीत तो इब्राहीम अलैहि. से हुई) और (फिर वहाँ से फारिग़ होकर) जब हमारे वे भेजे हुए लूत के पास पहुँचे तो लूत (अलैहिस्सलाम) उन (के आने) की वजह से रन्जीदा हुए और उनके सबब तंगदिल हुए। और (फ़रिश्तों ने जब यह हाल देखा तो) वे फ़रिश्ते कहने लगे कि आप (किसी बात का) अन्देशा न करें और न रन्जीदा हों, हम आप और आपके ख़ास मुताल्लिकीन को बचा लेंगे सिवाय आपकी बीवी के, कि वह अज़ाब में रह जाने वालों में होगी। (33) (और आपको मय मुताल्लिकीन उससे बचाकर) हम इस बस्ती के (बकिया) रहने वालों पर एक आसमानी अज़ाब उनकी बदकारियों की सज़ा में नाज़िल करने वाले हैं। (34) और हमने उस बस्ती के कुछ ज़ाहिरी निशान (अब तक) रहने दिए हैं उन लोगों (की इबरत) के लिए जो अक्ल रखते हैं। (35) और मद्यन वालों के पास हमने उन (की बिरादरी) के भाई शूऐब (अलैहिस्सलाम) को पैगम्बर बनाकर भेजा। सो उन्होंने फ़रमाया कि ऐ मेरी कौम! अल्लाह की इबादत करो (और शिर्क छोड़ दो) और कियामत के दिन से डरो, और सरज़मीन में फ़साद मत फैलाओ। (36) सो उन

(पृष्ठ 720 का शेष)

7. वह मेरी हिफाज़त करेगा और मुझको इसका फल देगा।

1. इस सिला से मुराद अल्लाह की निकटता और उसके यहाँ मकबूल होना है।
2. और गुनाह का ऐलान और ज़ाहिर करना यह खुद एक गुनाह और अक्ली तौर पर बुरी चीज़ है।
3. और उनकी दुआ कबूल होने के बाद अल्लाह तआला ने अज़ाब की ख़बर देने के लिए फ़रिश्ते मुक़र्रर फरमा दिए। और दूसरा काम उन फ़रिश्तों को यह बतलाया गया कि इब्राहीम अलैहिस्सलाम को इसहाक के पैदा होने की खुशख़बरी दें।
4. क्योंकि वे हसीन नौजवानों की शक्ल में आए थे और लूत अलैहिस्सलाम ने उनको आदमी समझा, और अपनी कौम की नामाकूल हरकत का ख़याल आया।
5. चुनौचे वह बस्ती उलट दी गई और ग़ैब से पत्थर बरसाए गए।
6. चुनौचे मक्का वाले मुल्क शाम के सफ़र में उन वीरान स्थानों को देखते थे, और जो अक्लमन्द थे वे फ़ायदा भी उठाते थे कि डरकर ईमान ले आते थे। (शेष तफ़सीर पृष्ठ 724 पर)

लोगों ने शुऐब (अलैहिस्सलाम) को झुटलाया, पस जलजले ने उनको आ पकड़ा, फिर वे अपने घरों में औंधे गिरकर रह गए। (37) और हमने आद और समूद को भी (उनके बैर और मुखालफत की वजह से) हलाक किया, और यह हलाक होना तुमको उनके रहने के स्थानों से नज़र आ रहा है। और (उनकी यह हालत थी कि) शैतान ने उनके (बुरे) आमांल को उनकी नज़र में अच्छा कर रखा था, और (इस तरह से) उनको (हक) रास्ते से रोक रखा था, और वे लोग (वैसे) होशियार थे। (38) और हमने कारून और फिरऔन और हामान को भी (उनके कुफ़ के सबब) हलाक किया। और उन (तीनों) के पास मूसा (अलैहिस्सलाम हक की) खुली दलीलें लेकर आए थे, फिर उन लोगों ने ज़मीन में सरकशी की और (हमारे अज़ाब से) भाग न सके। (39) तो हमने हर एक को उसके गुनाह की सज़ा में पकड़ लिया। सो उनमें बाज़ों पर तो हमने तेज़ हवा भेजी² और उनमें बाज़ों को हौलनाक आवाज़ ने आ दबाया।³ और उनमें बाज़ को हमने ज़मीन में धँसा दिया।⁴ और उनमें बाज़ को हमने (पानी में) डुबो दिया।⁵ और अल्लाह ऐसा न था कि उनपर जुल्म करता, लेकिन यही लोग (शरारतें करके) अपने ऊपर जुल्म किया करते थे।⁶ (40) जिन लोगों ने खुदा के सिवा और कारसाज़ तजवीज़ कर रखे हैं, उन लोगों की मिसाल मकड़ी जैसी मिसाल है, जिसने एक घर बनाया, और कुछ शक नहीं कि सब घरों में ज़्यादा बोदा मकड़ी का घर होता है। अगर वे (हकीकते हाल को) जानते तो ऐसा न करते।⁷ (41) अल्लाह तआला (तो) उन सब चीज़ों (की हकीकत और कमज़ोरी) को जानता है जिस-जिसको वे लोग खुदा के सिवा पूज रहे हैं। (पस वे चीज़ें तो बहुत ही कमज़ोर हैं) और वह (अल्लाह तआला) ज़बरदस्त, हिक्मत वाला है। (42) और हम इन (कुरआनी) मिसालों को लोगों के (समझाने के) लिए बयान करते हैं, और मिसालों को बस इल्म वाले लोग ही समझते हैं। (43) अल्लाह तआला ने आसमानों और ज़मीन को मुनासिब तौर पर बनाया है। ईमान वालों के लिए इसमें (अल्लाह के इबादत का हकदार होने की) बड़ी दलील है।⁸ (44) ♦

(पृष्ठ 722 का शेष)

7. यानी अल्लाह और बन्दों के हुक्क को ज़ाया मत करो, जैसा कि कुफ़ व शिर्क के साथ कम नापने-तौलने के भी आदी थे। और इन्साफ़ के अगर कायम न रखा जाए तो उससे जो फ़साद व बिगाड़ फैलेगा वह ज़ाहिर है।

1. कि वीरानी और बरबादी के आसार उनसे ज़ाहिर हैं। और ये मकामात (यानी स्थान) मुल्क शाम को जाते हुए मिलते थे।

2. इससे कौमे आद मुराद है।

3. इससे कौमे समूद मुराद है।

4. इससे कारून मुराद है।

5. इससे फिरऔन और हामान मुराद है।

6. सूर: के शुरू से यहाँ तक काफ़िरों के मुसलमानों को तकलीफ़ देने के मज़मून बयान होता चला आया है। आगे तौहीद व नुबुव्वत की तहकीक़ है जो असल बिना थी इस तकलीफ़ पहुँचाने की, और इससे उस तकलीफ़ पहुँचाने का नाहक होना भी वाज़ेह हो जाएगा।

7. पस जैसे उस मकड़ी ने अपने ख़्याल में अपनी एक पनाह लेने की जगह बनाई है, मगर हकीकत में वह पनाह की जगह बहुत ही कमज़ोर होने की वजह से न होने के बराबर है, इसी तरह ये मुशिरक लोग बातिल माबूदों को अपने गुमान में अपनी पनाह समझते हैं, मगर हकीकत में वह पनाह कुछ नहीं है।

8. ऊपर तौहीद का ज़िक्र था आगे नुबुव्वत का ज़िक्र है। इस तरतीब से कि पहले हुज़ूर अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को “उल्लु मा उहि-य इलै-क” से ज़बानी तब्तीग़ और “अकिमिस्सला-त” से अमली तब्तीग़ का हुक्म, और उसके बाद के जुम्लों (यानी वाक्यों) में अल्लाह के इल्म का बयान किया और आमांल की फ़ज़ीलत बयान की, जिससे तरगीब देना और डराना और शरीअत के मुकर्ररा मकसूद की तब्तीग़ है। और “ला तुजादिलू.....आख़िर तक” से “कुल कफ़ा बिल्लाहि.....” तक रिसालत का इनकार करने वालों से कलाम किया, पहले अहले किताब से फिर ग़ैर-अहले किताब से। फिर आगे “यस्तअज़िलून-क” से बाज़ रिसालत का इनकार करने वालों के एक शुब्हे का जवाब ज़िक्र किया गया है।

इक्कीसवाँ पार: उल्लु मा ऊहि-य

सूर: अन्कबूत (आयत 45 से 69)

जो किताब आप पर वह्य की गई है आप उसको पढ़ा कीजिए। और नमाज़ की पाबन्दी रखिए। बेशक नमाज़ (अपनी शकल और जाहिरी हालात के एतिबार से) बेहयाई और नामाकूल कामों से रोक-टोक करती रहती है,¹ और अल्लाह की याद बहुत बड़ी चीज़ है। और अल्लाह तुम्हारे सब कामों को जानता है। (45) और तुम अहले किताब के साथ सिवाय मुहज़ज़ब तरीके के बहस मत करो। हाँ, जो उनमें ज़्यादाती करें,² और यूँ कहो कि हम उस किताब पर भी ईमान रखते हैं जो हमपर नाज़िल हुई और उन किताबों पर भी जो तुमपर नाज़िल हुई। और (यह तुम भी मानते हो) कि हमारा और तुम्हारा माबूद एक है, और हम तो उसकी इताअत करते हैं। (46) और इसी तरह हमने आप पर किताब नाज़िल फ़रमाई। सो जिन लोगों को हमने किताब (की नफ़ा देने वाली समझ) दी है, वे इस (आप वाली) किताब पर ईमान ले आते हैं, और इन (अरब के मुशिरक) लोगों में भी बाज़े ऐसे (इन्साफ़ पसन्द) हैं कि इस किताब पर ईमान ले आते हैं। और हमारी आयतों से सिवाय (ज़िद्दी) काफ़िरों के और कोई मुन्किर नहीं होता। (47) और आप इस किताब से पहले न कोई किताब पढ़े हुए थे और न कोई किताब अपने हाथ से लिख सकते थे, कि ऐसी हालत में यह हक़ न पहचानने वाले लोग कुछ शुब्हा निकालते। (48) बल्कि यह किताब खुद बहुत-सी वाज़ेह दलीलें हैं उन लोगों के ज़ेहन में जिनको इल्म अता हुआ है, और हमारी आयतों से बस ज़िद्दी लोग इनकार किए जाते हैं। (49) और ये लोग यूँ कहते हैं कि उनपर उनके रब के पास से निशानियाँ क्यों नहीं नाज़िल हुईं। आप कह दीजिए कि वे निशानियाँ तो खुदा के कब्जे में हैं और मैं तो सिर्फ़ एक साफ़-साफ़ डराने वाला हूँ। (50) क्या उन लोगों को यह बात काफ़ी नहीं हुई कि हमने आप पर यह किताब नाज़िल फ़रमाई जो उनको सुनाई जाती रहती है, बेशक इस किताब में ईमान लाने वाले लोगों के लिए बड़ी रहमत और नसीहत है। (51) ♦

आप यह कह दीजिए कि अल्लाह तआला मेरे और तुम्हारे दरमियान गवाह काफ़ी है। उसको सब चीज़ की ख़बर है जो आसमानों में है और ज़मीन में है, और जो लोग झूठी बातों पर यकीन रखते हैं और अल्लाह तआला के मुन्किर हैं तो वे लोग बड़े घाटा उठाने वाले हैं।³ (52) और ये लोग आपसे अज़ाब का तकाज़ा करते हैं। और अगर (अल्लाह तआला के इल्म में अज़ाब आने की) मीयाद मुकर्रर न होती तो उनपर अज़ाब

1. यानी नमाज़ ज़बाने हाल से कहती है कि जिस माबूद की तू इतनी ताज़ीम करता है 'बेहयाई' और 'बुरे कामों' करके उसकी बेअदबी करना बहुत ही नामुनासिब है।
2. यानी उनको तुर्की-ब-तुर्की जवाब देने में कोई हर्ज नहीं, अगरचे अफ़ज़ल जब भी वही तरीका है। यानी अच्छे अन्दाज़ से उनसे बहस-मुबाहसा किया जाए।
3. यानी जब अल्लाह तआला के इरशाद से मेरी रिसालत साबित है तो उसका इनकार करना अल्लाह का इनकार करना है, और अल्लाह तआला का इल्म घेरने वाला है, तो उसको इस इनकार करने और कुफ़ की भी ख़बर है और अल्लाह तआला कुफ़ पर घाटे में रहने की सज़ा देते हैं। पस ज़रूर ऐसे लोग घाटा उठाने वाले होंगे।

आ चुका होता, और वह अज़ाब उनपर एकदम से आ पहुँचेगा, और उनको ख़बर भी न होगी। (53) ये लोग आपसे अज़ाब का तकाज़ा करते हैं और इसमें कुछ शक नहीं कि जहन्नम उन काफ़िरों को घेर लेगी। (54) जिस दिन कि उनपर अज़ाब उनके ऊपर से और उनके नीचे से घेर लेगा और हक़ तआला फ़रमाएगा कि जो कुछ करते रहे हो (अब उसका मज़ा) चखो। (55) ऐ मेरे ईमान वाले बन्दो! मेरी ज़मीन फ़राख़ “यानी खुली हुई और बहुत बड़ी” है सो ख़ालिस मेरी ही इबादत करो। (56) हर शख्स को मौत का मज़ा चखना है,³ फिर तुम सबको हमारे पास आना है। (57) और जो लोग ईमान लाए और अच्छे अमल किए हम उनको जन्नत के बालाख़ानों में जगह देंगे, जिनके नीचे से नहरें चलती होंगी, वे उनमें हमेशा-हमेशा रहेंगे। (नेक) काम करने वालों का क्या अच्छा अज़्र है। (58) जिन्होंने सब्र किया,⁴ और वे अपने रब पर भरोसा किया करते थे। (59) और बहुत-से जानवर ऐसे हैं कि जो अपनी गिज़ा उठाकर नहीं रखते, अल्लाह ही उनको (उनके लिए लिखी गई) रोज़ी पहुँचाता है और तुमको भी, और वह सब कुछ सुनता, सब कुछ जानता है। (60) और अगर आप उनसे पूछें कि वह कौन है जिसने आसमान और ज़मीन को पैदा किया? और जिसने सूरज और चाँद को काम में लगा रखा है, तो वे लोग यही कहेंगे कि वह अल्लाह तआला है, फिर किधर उल्टे चले जा रहे हैं। (61) अल्लाह ही अपने बन्दों में से जिसके लिए चाहे रोज़ी फ़राख़ “खोल देता और ज़्यादा” कर देता है, और जिसके लिए चाहे तंग कर देता है। बेशक अल्लाह ही हर चीज़ के हाल से वाकिफ़ है। (62) और अगर आप उनसे पूछें कि वह कौन है जिसने आसमान से पानी बरसाया, फिर उससे ज़मीन को इसके बाद कि वह खुश्क पड़ी थी तरोताज़ा कर दिया। तो वे लोग यही कहेंगे कि वह भी अल्लाह है, आप कहिए कि अल्हम्दु लिल्लाहि, बल्कि उनमें अक्सर समझते नहीं। (63) ♦

1. पस वह अज़ाब जहन्नम का अज़ाब है और वह मीयाद कियामत का दिन है।
2. यानी जब ये लोग अपनी हद से बड़ी हुई दुश्मनी और बैर की वजह से शरीअत की चीज़ों को कायम करने और दीन को इख़्तियार करने पर तकलीफ़ पहुँचाते हैं तो यहाँ रहने की क्या ज़रूरत है, मेरी ज़मीन बहुत बड़ी है। अगर यहाँ रहकर इबादत नहीं कर सकते तो कहीं और चले जाओ और वहाँ जाकर ख़ालिस मेरी ही इबादत करो।
3. यानी अगर हिज़रत करने में तुमको यार-दोस्त और अपने वतनों को छोड़ना भारी मालूम हो तो यह समझ लो कि एक-न-एक दिन तो यह होना ही है, क्योंकि हर शख्स को ज़रूर मौत का मज़ा चखना है, आख़िर उस वक़्त सब छूटेंगे।
4. यानी पेश आने वाली सख़्तियों पर जिनमें हिज़रत की सख़्ती भी दाख़िल है, सब्र किया।
5. यानी जो तकलीफ़ें आ सकती हों उनके आने के अन्देशे के वक़्त वह अपने रब पर भरोसा करते थे, जिनमें दूसरी संभावित सख़्तियों के साथ रोज़ी का अन्देशा भी आ गया।
6. यानी दिल मजबूत करके अल्लाह पर भरोसा रखो, और वह भरोसे के लायक़ है, क्योंकि वह सब कुछ सुनता सब कुछ जानता है। इसी तरह दूसरी सिफ़्तों में कामिल है। और जो ऐसा कामिल सिफ़्तों वाला हो वह ज़रूर भरोसे के काबिल है।
7. यानी माबूद होने में तौहीद का जो आधार है, यानी पैदा करने और बनाने में वह तो उन लोगों के नज़दीक़ भी मुसल्लम है, फिर जब पैदा करने और बनाने की तौहीद को मानते हैं तो फिर माबूद होने में तौहीद के बारे में किधर उल्टे चले जा रहे हैं।
8. इस वजह से नहीं कि अक्ल नहीं, बल्कि अक्ल से काम नहीं लेते और ग़ौर नहीं करते। इसलिए बिलकुल आम-सी औरी ज़ाहिर चीज़ भी आँखों से ओझल रहती है।

और यह दुनियावी ज़िन्दगी (अपने आपमें) सिवाय खेल-तमाशे के और कुछ भी नहीं, और असल ज़िन्दगी आलमे आखिरत है। अगर आपको इसका इल्म होता तो ऐसा न करते।¹ (64) फिर जब ये लोग कश्ती में सवार होते हैं तो ख़ालिस एतिकाद करके अल्लाह ही को पुकारने लगते हैं। फिर जब उनको नजात देकर खुशकी की तरफ़ ले आता है, तो वे फ़ौरन ही शिर्क करने लगते हैं। (65) जिसका हासिल यह है कि हमने जो नेमत आपको दी है उसकी नाक़्द्री करते हैं, और ये लोग थोड़ा और फ़ायदा हासिल कर लें, फिर जल्द ही आपको सब ख़बर हुई जाती है। (66) क्या उन लोगों ने इस बात पर नज़र नहीं की कि हमने अमन वाला हरम बनाया है,² और उनके आस-पास में लोगों को निकाला जा रहा है, फिर क्या ये लोग झूठे माबूदों पर ईमान लाते हैं और अल्लाह की नेमतों की नाशुक्री करते हैं।³ (67) और उस शख्स से ज़्यादा कौन नाइन्साफ़ होगा जो अल्लाह पर झूठ घड़े और जब सच्ची बात उसके पास पहुँचे वह उसको झुठलाए,⁴ क्या ऐसे काफ़िरो का जहन्नम में ठिकाना न होगा।⁵ (68) और जो लोग हमारी राह में मशक्कतें बरदाश्त करते हैं, हम आपको अपनी (निकटता और सवाब यानी जन्नत के) रास्ते ज़रूर दिखा देंगे, और बेशक अल्लाह (की रिज़ा व रहमत) ऐसे खुलूस वालों के साथ है। (69) ♦

30 सूर: रूम 84

सूर: रूम मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 60 आयतें और 6 रुकूअ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

अलिफ़-लाम्-मीम् (1) रूम वाले एक करीब के मौके में मग़्लूब हो गए।¹ (2) और वे अपने मग़्लूब होने के बाद जल्द ही तीन साल से लेकर नौ साल के अन्दर-अन्दर ग़ालिब आ जाएँगे। (3) पहले भी इख़्तियार अल्लाह तआला ही को था और बाद में भी, और उस दिन मुसलमान अल्लाह तआला की उस इम्दाद पर खुश होंगे। (4) वह जिसको चाहे ग़ालिब कर देता है और वह ज़बरदस्त है, (और) रहीम है। (5) अल्लाह

1. कि फ़ानी में मशगूल होकर बाकी को भुला देते और उसके लिए सामान न करते, बल्कि ये लोग दलीलों में ग़ौर करते और ईमान ले आते जैसा कि पैदा करने और वजूद में लाने तथा बाकी रखने में वे तौहीद के इकरारी हैं।

2. यानी मक्का शहर को।

3. क्योंकि शिर्क से बढ़कर कोई नाशुक्री नहीं कि पैदा करने, रिज़्क देने और बाकी रखने और तदबीर वग़ैरह की नेमत वह अता फ़रमाए और इबादात जो कि इन नेमतों का शुक्र है दूसरे के लिए तजवीज़ की जाए।

4. बेइन्साफी ज़ाहिर है कि बिना दलील वाली बात की तो तस्दीक करे और दलील वाली बात को झुठलाए।

5. यानी ज़रूर होगा।

6. एक बार रूम और फ़ारस (यानी प्राचीन ईरान) में मक़ाम 'अज़रआत' और 'बसरा' के दरमियान लड़ाई हुई और रूमी मग़्लूब हो गए। मक्का के मुशिरक लोग मुसलमानों से कहने लगे कि तुम और रूमी अहले किताब हो और हम और फ़ारसी ग़ैर-अहले किताब हैं, पस रूम पर फ़ारस का ग़ालिब आना इसका शगून है कि हम भी तुमपर ग़ालिब रहेंगे, इसपर ये आयतें नाज़िल हुईं। जिनमें पेशीनगोई है कि नौ साल के अन्दर रूमी फ़ारसियों पर ग़ालिब आ जाएँगे। चुनौती उससे सातवें साल फिर दोनों का मुक़ाबला हुआ और रूमी ग़ालिब आ गए जिससे वह पेशीनगोई (भविष्यवाणी) पूरी हुई।

तआला ने इसका वायदा फरमाया है, अल्लाह तआला अपने वायदे के खिलाफ नहीं फरमाता,¹ और लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। (6) ये लोग सिर्फ दुनियावी जिन्दगी के ज़ाहिर को जानते हैं और ये लोग आखिरत से बेख़बर हैं।² (7) क्या उन्होंने अपने दिलों में यह ग़ौर नहीं किया कि अल्लाह तआला ने आसमानों और ज़मीन को और जो कुछ उनके दरमियान में हैं, किसी हिक्मत ही से और एक मुकर्ररा मीयाद के लिए पैदा किया है,³ और बहुत-से आदमी अपने रब के मिलने के मुन्किर हैं,⁴ (8) क्या ये लोग ज़मीन में चले-फिरे नहीं जिसमें देखते-भालते कि जो लोग उनसे पहले गुज़र चुके हैं उनका अन्जाम क्या हुआ, वे इनसे कुव्वत में भी बढ़े हुए थे, और उन्होंने ज़मीन को बोया-जोता था। और जितना इन्होंने उसको आबाद कर रखा है उससे ज्यादा उन्होंने उसको आबाद किया था, और उनके पास भी उनके पैगम्बर मोजिज़े लेकर आए थे, सो अल्लाह ऐसा न था कि उनपर जुल्म करता और लेकिन वे तो खुद ही अपनी जानों पर जुल्म कर रहे थे।⁵ (9) फिर ऐसे लोगों का अन्जाम जिन्होंने बुरा काम किया था बुरा ही हुआ,⁶ इस वजह से कि उन्होंने अल्लाह तआला की आयतों को झुठलाया था और उनकी हँसी उड़ाते थे। (10) ♦

अल्लाह तआला मख़्लूक को पहली बार भी पैदा करता है, फिर वही दोबारा भी उसको पैदा करेगा, फिर उसके पास लाए जाओगे। (11) और जिस दिन क़ियामत कायम होगी उस दिन मुजरिम लोग हैरान रह जाएँगे।⁷ (12) और उनके शरीकों में से उनका कोई सिफ़ारिशी न होगा, और ये लोग अपने शरीकों से मुन्किर हो जाएँगे। (13) और जिस दिन क़ियामत कायम होगी उस दिन सब आदमी अलग-अलग हो जाएँगे। (14) यानी जो लोग ईमान लाए थे और उन्होंने अच्छे काम किए थे, वे तो बाग़ में खुश “और प्रसन्न” होंगे। (15) और जिन लोगों ने कुफ़्र किया था और हमारी आयतों को और आखिरत के पेश आने को झुठलाया था वे लोग अज़ाब में गिरफ़्तार होंगे।⁸ (16) सो तुम अल्लाह की तस्बीह किया करो शाम के वक़्त और सुबह के

1. इसलिए यह पेशीनगोई (भविष्यवाणी) ज़रूर पूरी होगी।

2. इसलिए उनको न सज़ा के असबाब का अन्देशा है जो कि कुफ़्र व इनकार है, न नज़ात के असबाब की फ़िक्र है जो कि तस्दीक व ईमान है।

3. उन हिक्मतों में से एक आमा़ल का बदला देना है, और मुकर्ररा मीयाद क़ियामत है।

4. अगर अपने दिलों में ग़ौर करते तो इन वाकिआत की संभावना अक्ल से और उनका आना और ज़ाहिर होना नक़ल से, और उस नक़ल का सच्चा होना मोजिज़े से ज़ाहिर हो जाता और आखिरत के इनकारी न होते। मगर ग़ौर न करने से इनकारी हो रहे हैं।

5. कि रसूलों का इनकार करके हलाक़त के हक़दार बने।

6. वह अन्जाम दोज़ख़ की सज़ा है।

7. यानी कोई उचित बात उनसे बन न पड़ेगी।

8. ये मायने हैं अलग-अलग होने के।

वक्त। (17) और तमाम आसमान व ज़मीन में उसी की तारीफ़ होती है,¹ और सूरज ढलने के बाद ज़ोहर के वक्त² (18) वह जानदार को बेजान से बाहर लाता है और बेजान को जानदार से बाहर लाता है,³ और ज़मीन को उसके मुर्दा होने के बाद ज़िन्दा करता है, और इसी तरह तुम लोग निकाले जाओगे। (19) ♦

और उसी की निशानियों में से एक यह है कि तुमको मिट्टी से पैदा किया फिर थोड़े ही दिनों बाद तुम आदमी बनकर फैले हुए फिरते हो। (20) और उसी की निशानियों में से यह है कि उसने तुम्हारे वास्ते तुम्हारी जिन्स की “यानी तुम्हारी ज़ात से और तुम्हारी ही शक्ल व सूरत वाली” बीवियाँ बनाई ताकि तुमको उनके पास आराम मिले और तुम मियाँ-बीवी में मुहब्बत और हमदर्दी पैदा की। इसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो फ़िक्र से काम लेते हैं। (21) और उसी की निशानियों में से आसमान और ज़मीन का बनाना है। और तुम्हारे बातचीत करने के अन्दाज़ और रंगतों का अलग-अलग होना है।⁴ इसमें समझदारों के लिए निशानियाँ हैं।⁵ (22) और उसी की निशानियों में से तुम्हारा सोना-लेटना है रात में और दिन में,⁶ और उसकी रोज़ी को तुम्हारा तलाश करना है। इसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो सुनते हैं। (23) और उसी की निशानियों में से यह है कि वह तुमको बिजली दिखाता है जिससे डर भी होता है और उम्मीद भी होती है, और वही आसमान से पानी बरसाता है फिर उसी से ज़मीन को उसके मुर्दा हो जाने के बाद ज़िन्दा कर देता है। इसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो अक्ल रखते हैं। (24) और उसी की निशानियों में से यह है कि आसमान और ज़मीन उसके हुक्म से कायम हैं।⁷ फिर जब तुमको पुकारकर ज़मीन में से बुलाएगा तो तुम एकदम से निकल पड़ोगे।⁸ (25) और जितने आसमान और ज़मीन में मौजूद हैं, सब उसी के ताबे हैं। (26) और वही है जो पहली बार पैदा करता है, फिर वही दोबारा पैदा करेगा और यह उसके नज़दीक ज़्यादा आसान है, और आसमान व ज़मीन में उसी की शान आला है, और वह ज़बरदस्त, हिक्मत वाला है। ♦ (27) ♦

1. यानी आसमान में फ़रिश्ते और ज़मीन में बाज़ इख़्तियारी तौर पर और बाज़ ग़ैर-इख़्तियारी तौर पर उसकी तारीफ़ व प्रशंसा करते हैं, पस जब वह ऐसा बेहतरीन सिफ़ात वाला और अपनी ज़ात में कामिल है तो तुमको भी ज़रूर उसकी तस्बीह करना चाहिए।

2. इसलिए कि ये वक्त नई नेमत देने और कुदरत के आसार के ज़्यादा ज़ाहिर होने के हैं, इनमें फिर नए सिरे से अल्लाह की पाकी बयान करना मुनासिब है।

3. जैसे नुफ़े और अन्डे से इनसान और बच्चे, और इनसान और परिन्दे से नुफ़ा और अन्डा।

4. बातचीत करने के अन्दाज़ से मुराद या तो बोलियाँ हों या आवाज़ व गुफ़्तगू करने का तरीका और ढंग।

5. निशानियाँ बहुवचन इसलिए फरमाया कि ज़िक्र हुई बात कई चीज़ों पर मुश्तमिल है।

6. अगरचे रात को ज़्यादा और दिन में कम हो।

7. इसमें बयान है उनके बाकी रखने का, और ऊपर “आसमान व ज़मीन के बनाने” में ज़िक्र था उनके वजूद में आने का, और यह दुनिया का पूरा निज़ाम जो ज़िक्र हुआ यानी तुम्हारी नस्ल चलने और पैदाइश का सिलसिला जारी होना, और आपस में शादी-विवाह होना, और आसमान व ज़मीन का मौजूदा शक्ल और हालत पर मौजूद और कायम होना, और बोलियों व रंगतों का विभिन्न होना, और रात व दिन के आने-जाने में खास मस्तहतों का होना, और बारिश का उतरना, और उसके आने से पहले उसके आसार व निशानियों का ज़ाहिर होना, ये सब उसकी पहली ज़िन्दगी के सिलसिले के बाकी रहने तक है, और एक दिन ये सब ख़त्म हो जाएगा।

8. और दूसरा निज़ाम शुरू हो जाएगा, जिसका इस जगह बयान करना मक़सद है।

अल्लाह तआला तुमसे एक अजीब मज़मून तुम्हारे ही हालात में से बयान फरमाते हैं। क्या तुम्हारे गुलामों में कोई शख्स तुम्हारा उस माल में जो हमने तुमको दिया है शरीक है? कि तुम और वह उसमें बराबर हों जिनका तुम ऐसा ख्याल करते हो जैसा अपने आपस का ख्याल किया करते हो।¹ हम इसी तरह समझदारों के लिए साफ-साफ दलीलें बयान करते रहते हैं। (28) बल्कि उन जालिमों ने बिना दलील अपने ख्यालात का इत्तिबा कर रखा है, सो जिसको खुदा गुमराह करे उसको कौन राह पर लाए, और उनका कोई हिमायती न होगा। (29) सो तुम यक्सू होकर अपना रुख उस दीन की तरफ रखो। अल्लाह की दी हुई काबलियत का इत्तिबा करो जिसपर अल्लाह तआला ने लोगों को पैदा किया है,² अल्लाह तआला की उस पैदा की हुई चीज़ को न बदलना चाहिए जिसपर उसने तमाम आदमियों को पैदा किया है। पस सीधा दीन यही है लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। (30) तुम खुदा की तरफ रुजू होकर अल्लाह तआला के कानून का इत्तिबा करो, और उससे डरो और नमाज़ की पाबन्दी करो और शिर्क करने वालों में से मत रहो। (31) जिन लोगों ने अपने दीन को टुकड़े-टुकड़े कर लिया और बहुत-से गिरोह हो गए।³ हर गिरोह अपने उस तरीके पर खुश है जो उनके पास है। (32) और जब लोगों को कोई तकलीफ पहुँचती है, अपने रब को उसी की तरफ रुजू होकर पुकारने लगते हैं,⁴ फिर जब अल्लाह तआला उनको अपनी तरफ से कुछ इनायतों का मज़ा चखा देता है तो बस उनमें से बाज़े लोग अपने रब के साथ शिर्क करने लगते हैं। (33) जिसका हासिल यह है कि हमने जो उनको दिया है उसकी नाशुकी करते हैं, सो चन्द रोज़ और फायदा उठा लो फिर जल्दी ही तुम मालूम कर लोगे। (34) क्या हमने उनपर कोई सनद नाज़िल की है कि वह उनको अल्लाह तआला के साथ शिर्क करने को कह रही है। (35) और हम जब लोगों को कुछ इनायत का मज़ा चखा देते हैं तो वे उससे खुश होते हैं। और अगर उनके आमाल के बदले में जो पहले अपने हाथों कर चुके हैं, उनपर कोई मुसीबत आ पड़ती है तो बस वे लोग नाउम्मीद हो जाते हैं। (36) क्या उनको यह मालूम नहीं कि अल्लाह तआला जिसको चाहे ज़्यादा रोज़ी देता है और जिसको चाहे कम देता है, इसमें निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो ईमान रखते हैं। (37) फिर रिश्तेदार को उसका हक़ दिया करो और मिस्कीन और मुसाफ़िर को भी। यह उन लोगों के लिए बेहतर है

1. ज़ाहिर है कि गुलाम इस तरह शरीक नहीं होता।

2. मतलब फ़ितरत का यह है कि अल्लाह तआला ने हर शख्स में पैदाइशी तौर पर यह सलाहियत रखी है कि अगर हक़ को सुनना और समझना चाहे तो वह समझ में आ जाता है। और उसके इत्तिबा का मतलब यह है कि उस सलाहियत और काबलियत से काम ले और उसके तकाज़े पर अमल करे जो कि हक़ को पाना है। ग़रज़ उस फ़ितरत का इत्तिबा करना चाहिए।

3. यानी हक़ तो एक था और बातिल बहुत हैं, उन्होंने हक़ को छोड़ दिया और बातिल की मुख़्तलिफ़ राहें इख़्तियार कर लीं, ये टुकड़े-टुकड़े करना है कि एक ने एक ले लिया दूसरे ने दूसरा।

4. यानी जिस तौहीद की तरफ़ हम बुलाते हैं परेशानी और मुसीबत के वक़्त आम तौर पर अपनी ज़बान और अपने हाल से बावजूद इस मुख़ालफ़त व इनकार के उसका इज़हार व इकरार भी होने लगता है, जिससे उसके फ़ितरी होने की भी ताईद होती है।

जो अल्लाह तआला की रिज़ा के तालिब हैं। और ऐसे ही लोग फ़ुलाह पाने वाले हैं। (38) और जो चीज़ तुम इस गरज़ से दोगे कि वह लोगों के माल में पहुँचकर ज़्यादा हो जाए तो यह खुदा के नज़दीक नहीं बढ़ता, और जो ज़कात दोगे जिससे अल्लाह तआला की रिज़ा तलब करते होंगे, तो ऐसे लोग खुदा तआला के पास बढ़ाते रहेंगे। (39) अल्लाह ही वह है जिसने तुमको पैदा किया, फिर तुमको रिज़्क दिया, फिर तुमको मौत देता है, फिर तुमको ज़िन्दा करेगा। क्या तुम्हारे शरीकों में भी कोई ऐसा है जो इन कामों में से कुछ भी कर सके? वह उनके शिर्क से पाक और बरतर है। (40) ♦

ख़ुशकी और तरी में लोगों के आमाल के सबब बलाएँ फैल रही हैं, ताकि अल्लाह तआला उनके बाज़ आमाल का मज़ा उनको चखा दे, ताकि वे बाज़ आ जाएँ। (41) आप फ़रमा दीजिए कि मुल्क में चलो-फिरो, फिर देखो कि जो लोग पहले गुज़र चुके हैं उनका अन्जाम कैसा हुआ, उनमें अक्सर मुशिरक ही थे। (42) सो तुम अपना रुख़ इस सच्चे दीन की तरफ़ रखो,¹ इससे पहले कि ऐसा दिन आ जाए जिसके वास्ते फिर खुदा तआला की तरफ़ से हटना न होगा।² उस दिन सब लोग अलग-अलग हो जाएँगे। (43) जो शख्स कुफ़्र कर रहा है उसपर तो उसका कुफ़्र पड़ेगा, और जो नेक अमल कर रहा है सो ये लोग अपने लिए सामान कर रहे हैं। (44) जिसका हासिल यह होगा कि अल्लाह तआला उन लोगों को अपने फज़ल से जज़ा देगा जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे अमल किए। वाकई अल्लाह तआला काफ़िरो को पसन्द नहीं करता है। (45) और अल्लाह तआला की निशानियों में से एक यह है कि वह हवाओं को भेजता है कि वे खुशख़बरी देती हैं, और ताकि तुमको अपनी रहमत का मज़ा चखा दे, और ताकि कश्तियाँ उसके हुक्म से चलें, और ताकि तुम उसकी रोज़ी तलाश करो,³ और ताकि तुम शुक्र करो। (46) और हमने आपसे पहले बहुत-से पैग़म्बर उनकी कौमों के

1. जब तौहीद की दलीलों में मालूम हुआ कि रिज़्क की कमी-ज़्यादती अल्लाह ही के तरफ़ से है, तो इससे एक बात और साबित हुई कि कन्ज़ूसी करना बुरा है क्योंकि उससे तक्दीर से ज़्यादा नहीं मिल सकता फिर इम्साक (यानी रोक के रखना) बेफ़ायदा है, और ख़ैर होने के लिए जो “युरीदू-न वज्हुल्लाहि” की कैद लगाई है, वजह इसकी यह है कि मुतलक ख़र्च करना ख़ैर और कामयाबी का वाजिब करने वाला नहीं। खुदा के नज़दीक पहुँचना और बढ़ना उस माल के साथ ख़ास है जो अल्लाह की रिज़ा के लिए ख़र्च किया जाए।

2. ज़ाहिर है कि ऐसा कोई भी नहीं।

3. बाज़ का मतलब यह है कि अगर सब पर सज़ाएँ लागू हों तो एक साँस भी ज़िन्दा न रहें।

4. यानी तौहीदे इस्लामी की तरफ़।

5. यानी जैसे दुनिया में ख़ास अज़ाब के वक़्त को अल्लाह तआला क़ियामत के वायदे पर हटाता जाता है। जब वह वायदा किया हुआ दिन आ जाएगा फिर उसको न हटाएगा, और ढील व मोहलत न होगी।

6. यानी आसमान की गर्दिश और रोज़ी पहुँचाना दोनों हवा के भेजने का सबब और ज़रिया हैं। पहला करीब बिला-वास्ता और दूसरा दूर का पहले के वास्ते से।

पास भेजे, और वे उनके पास दलीलें लेकर आए। सो हमने उन लोगों से इत्तिकाम लिया जिन्होंने जुर्म किए थे,¹ और ईमान वालों को ग़ालिब करना हमारे ज़िम्मे था।² (47) अल्लाह तआला ऐसा है कि वह हवाएँ भेजता है, फिर वे बादलों को उठाती हैं, फिर अल्लाह तआला उसको जिस तरह चाहता है आसमान में फैला देता है, और उसके टुकड़े-टुकड़े कर देता है।³ फिर तुम बारिश को देखते हो कि उसके अन्दर से निकलती है। फिर जब वह अपने बन्दों में से जिसको चाहे पहुँचा देता है तो बस वे खुशियाँ मन्गाने लगते हैं। (48) और वे लोग इससे पहले कि उनके खुश होने से पहले उनपर बरसे, नाउम्मीद थे।⁴ (49) सो अल्लाह की रहमत के आसार देखो कि अल्लाह तआला ज़मीन को उसके मुर्दा होने के बाद किस तरह ज़िन्दा करता है। कुछ शक नहीं कि वही मुर्दों को ज़िन्दा करने वाला है, और वह हर चीज़ पर कुदरत रखने वाला है। (50) और अगर हम उनपर और हवा चलाएँ, फिर ये लोग खेती को पीली हुई देखें तो ये उसके बाद नाशुकी करने लगें।⁵ (51) सो आप मुर्दों को नहीं सुना सकते, और बहरों को आवाज़ नहीं सुना सकते जबकि वे पीठ फेरकर चल दें।⁶ (52) और आप अन्धों को उनकी बेराही से राह पर नहीं ला सकते। आप तो बस उनको सुना सकते हैं जो हमारी आयतों का यकीन रखते हैं, फिर वे मानते हैं। (53) ♦

अल्लाह ऐसा है जिसने तुमको कमज़ोरी की हालत में बनाया,⁷ फिर कमज़ोरी के बाद ताक़त अता की,⁸ फिर ताक़त के बाद कमज़ोरी और बुढ़ापा किया। वह जो चाहता है पैदा करता है, और वह जानने वाला, कुव्वत रखने वाला है।⁹ (54) और जिस दिन कियामत कायम होगी मुजरिम लोग कसम खा बैठेंगे कि वे लोग (यानी हम बरज़ख के मक़ाम में) एक घड़ी से ज़्यादा नहीं रहे, इसी तरह ये लोग उल्टे चला करते थे। (55) और जिन लोगों को इल्म और ईमान अता हुआ है,¹⁰ वे कहेंगे कि तुम तो अल्लाह के लिखे हुए के मुवाफ़िक़ कियामत के दिन तक रहे हो, सो कियामत का दिन यही है, और लेकिन तुम यकीन न करते थे।¹¹ (56)

1. और वे जुर्म हक़ का झुठलाना और अहले हक़ की मुख़ालफ़त है, और उस इत्तिकाम में हमने उनको मग़लूब और ईमान वालों को ग़ालिब किया।
2. वह इत्तिकाम अल्लाह का अज़ाब था, और उसमें काफ़िरों का हलाक़ होना उनका मग़लूब होना है और मुसलमानों का बच जाना उनका ग़ालिब आना है। गरज़ इसी तरह उन काफ़िरों से इत्तिकाम लिया जाएगा। चाहे दुनिया में हो चाहे मीत के बाद हो।
3. 'बस्त' का मतलब यह है कि इकट्ठा करके दूर तक फैला देता है, और 'कै-फ़' का मतलब यह है कि कभी थोड़ी दूर तक कभी बहुत दूर तक। और 'कि-सफ़न्' का मतलब यह है कि इकट्ठा नहीं होता अलग-अलग और बिखरा हुआ रहता है।
4. यानी अभी-अभी नाउम्मीद थे और अभी खुश हो गए। और ऐसा ही देखने में भी आता है कि ऐसी हालत में इनसान की कैफ़ियत बहुत ही जल्दी बदल जाती है।
5. और पिछली सब नेमतें भुला दी।
6. सो जब उनकी ग़फलत और नाशुकी का यह हाल है तो उससे यह भी साबित हुआ कि बिलकुल ही बेहिस हैं। तो उनके ईमान न लाने और आयतों में ग़ौर-फ़िक़्र न करने पर गुम करना भी बेकार है।
7. मुराद उससे बचपन की शुरू की हालत है।
8. यानी जवानी अता की।
9. पस जो ऐसा कादिर हो उसको दोबारा पैदा करना क्या मुश्किल है?
10. मुराद ईमान वाले हैं कि शरीअत के ज़रिए दी हुई ख़बरों का उन्हें इल्म हासिल है।
11. उस इनकार के वक़ाल में आज परेशानी का सामना हुआ। इस वजह से घबराकर ख़याल हुआ कि अभी तो मीयाद पूरी नहीं हुई और अगर तस्दीक़ करते और ईमान ले आते तो उसके आने को जल्दी न समझते, बल्कि यूँ चाहते कि उससे भी जल्दी आ जाए।

गरज उस दिन जालिमों को उनका उज्र करना नफा न देगा, और न उनसे खुदा की नाराज़गी की तलाफ़ी चाही जाएगी।¹ (57) और हमने लोगों के वास्ते इस कुरआन में हर तरह के उम्दा मज़ामीन बयान किए हैं। और अगर आप उनके पास कोई निशानी ले आएँ तब भी ये लोग जो काफ़िर हैं यही कहेंगे कि तुम सब ख़ालिस झूठे और अहले बालित हो। (58) जो लोग यकीन नहीं करते अल्लाह तआला उनके दिलों पर यूँ ही मुहर कर दिया करता है।² (59) सो आप सब्र कीजिए, बेशक अल्लाह का वायदा सच्चा है,³ और ये बद्-यकीन लोग आपको बे-बरदाश्त न करने पाएँ।⁴ (60) ♦

31 सूर: लुकमान 57

सूर: लुकमान मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 34 आयतें और 4 रुकूअ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

अलिफ़-लाम्-मीम्। (1) ये आयतें एक हिक्मत से भरी किताब की हैं।⁵ (2) जो कि हिदायत और रहमत है नेक काम करने वालों के लिए। (3) जो नमाज़ की पाबन्दी करते हैं और ज़कात अदा करते हैं, और वे लोग आख़िरत का पूरा यकीन रखते हैं। (4) ये लोग अपने रब के सीधे रास्ते पर हैं, और यही लोग फ़लाह पाने वाले हैं।⁶ (5) और बाज़ा आदमी ऐसा (भी) है जो उन बातों का ख़रीदार बनता है⁷ जो (अल्लाह से) गाफ़िल करने वाली हैं, ताकि अल्लाह की राह से बेसमझे-बूझे गुमराह कर ले और उसकी हँसी उड़ाए, ऐसे लोगों के लिए ज़िल्लत का अज़ाब है। (6) और जब उसके सामने हमारी आयतें पढ़ी जाती हैं तो वह शख्स तकब्बुर करता हुआ मुँह मोड़ लेता है, जैसे उसने सुना ही नहीं। जैसे उसके कानों में भारीपन “यानी डाट” है,⁸ सो उसको एक दर्दनाक अज़ाब की ख़बर सुना दीजिए। (7) लेकिन जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक काम किए उनके लिए ऐश की जन्नतें हैं। (8) जिनमें वे हमेशा रहेंगे, यह अल्लाह ने सच्चा वायदा फरमाया है

1. यानी इसका मौका न दिया जाएगा कि तौबा करके खुदा को राज़ी कर लें।
 2. यानी रोज़ाना हक़ को कबूल करने की सलाहियत कमज़ोर और निढाल होती जाती है, इसलिए इताअत में कमज़ोरी और दुश्मनी में कुव्वत बढ़ती जाती है।
 3. वह वायदा ज़रूर जाहिर होगा। पस सब्र व बरदाश्त थोड़े ही दिन करना पड़ता है।
 4. यानी उनकी तरफ़ से चाहे कैसी ही बात पेश आए मगर ऐसा न हो कि आप बरदाश्त न करें।
- फ़ायदा: नफ़्सानी इन्तिकाम अगरचे अपने आपमें जायज़ है, मगर तब्लीग़ करने वाले के लिए और ख़ासकर बातचीत और संबोधन के वक़्त मस्लहत के खिलाफ़ है, क्योंकि इस्लाम की इब्तिदाई हालत थी।
5. यानी कुरआन की।
 6. पस कुरआन इस तरह उनके लिए हिदायत व रहमत का सबब हो गया कि इसका असर फ़लाह है।
 7. यानी ऐसी बातें इख़्तियार करता है।
 8. यानी जैसे बहरा है।

और वह ज़बरदस्त, हिक्मत वाला है।¹ (9) अल्लाह तआला ने आसमानों को बिना सुतून के बनाया, तुम उनको देख रहे हो। और ज़मीन में पहाड़ डाल रखे हैं कि वह तुमको लेकर डावाँ-डोल न होने लगे, और उसमें हर किस्म के जानवर फैला रखे हैं। और हमने आसमान से पानी बरसाया, फिर उस ज़मीन में हर तरह की उम्दा किस्में उगाई। (10) ये तो अल्लाह की बनाई हुई चीज़ें हैं, अब तुम मुझको दिखाओ कि उसके सिवा जो हैं उन्होंने क्या-क्या चीज़ें पैदा कीं, बल्कि ये ज़ालिम लोग खुली गुमराही में हैं। (11) ♦

और हमने लुकमान को दानिशमन्दी “यानी खुसूसी अक्ल व समझ” अता फरमाई,² कि अल्लाह तआला का शुक्र अदा करते रहो और जो शख्स शुक्र करेगा वह अपने ज़ाती नफे के लिए शुक्र करता है,³ और जो नाशुक्री करेगा तो अल्लाह बेनियाज़, खूबियों वाला है। (12) और जब लुकमान ने अपने बेटे को नसीहत करते हुए कहा कि बेटा खुदा के साथ किसी को शरीक न ठहराना, बेशक शिर्क करना बड़ा भारी जुल्म है।⁴ (13) और हमने इनसान को उसके माँ-बाप के मुताल्लिक ताकीद की है।⁵ उसकी माँ ने कमज़ोरी पर कमज़ोरी उठाकर उसको पेट में रखा और दो साल में उसका दूध छूटता है, कि तू मेरी और अपने माँ-बाप की शुक्रगुज़ारी किया कर,⁶ मेरी ही तरफ़ लौटकर आना है। ● (14) और अगर तुझपर वे दोनों इस बात का ज़ोर डालें कि तू मेरे साथ ऐसी चीज़ को शरीक ठहराए जिसकी तेरे पास कोई दलील न हो,⁷ तू उनका कहना न मानना, और दुनिया में उनके साथ अच्छाई से बसर करना, और उसी की राह पर चलना जो मेरी तरफ़ रुजू हो।⁸ फिर तुम सबको मेरे पास आना है, फिर मैं तुमको जतला दूँगा जो कुछ तुम करते थे। (15) बेटा! अगर कोई अमल राई के दाने के बराबर हो, फिर वह किसी पत्थर के अन्दर हो या वह आसमान के अन्दर हो या वह ज़मीन के अन्दर हो, तब भी उसको अल्लाह हाज़िर कर देगा,⁹ बेशक अल्लाह तआला बड़ा बारीकबीन, बाख़बर है। (16) बेटा! नमाज़ पढ़ा कर और अच्छे कामों की नसीहत किया कर और बुरे कामों से मना किया कर, और तुझपर जो मुसीबत आए उसपर सब्र किया कर, यह हिम्मत के कामों में से है। (17)

1. पस कुदरत के कामिल होने से वायदे और वईद को ज़ाहिर कर सकता है, और हिक्मत से उसको वायदे के मुताबिक सामने लाएगा।
2. लुकमान अलैहिस्सलाम नबी न थे, उनका ज़माना दाऊद अलैहिस्सलाम के करीब का था। पस उनके नबी न होने की बिना पर उनको यह हुक्म होना “कि अल्लाह तआला का शुक्र अदा करते रहो” या तो बतौर इल्हाम के होगा या उस ज़माने के किसी नबी की तालीम के ज़रिए से। और जिस बेटे को उन्होंने नसीहत की है, सही और वाज़ेह तौर पर कहीं नहीं देखा कि उनके बेटे का क्या तरीका था, पहले से मोमिन थे या इस नसीहत के बाद मोमिन हुए, या क्या हुआ।
3. यानी खुद उसी का नफ़ा है कि इससे नेमत में तरक्की होती है। दुनियावी नेमत में तो कभी नेमत की ज़ात के एतिबार से, और सवाब के एतिबार से हमेशा। और दीनी नेमत में जैसे इल्म वगैरह के दोनों तरह पर। यानी इल्म भी बढ़ता है और सवाब भी मिलता है।
4. जुल्म की हकीकत है किसी चीज़ का उसके मौके-महल से हटाकर दूसरे मक़ाम और जगह पर रखना, और ज़ाहिर है कि यह बात शिर्क में सख़्त दर्जे में पाई जाती है।
5. कि उनकी इताअत और ख़िदमत करे, क्योंकि उन्होंने उसके लिए बड़ी मशक्कतें झेली हैं, ख़ासकर माँ ने।
6. हक़ तआला की शुक्रगुज़ारी तो इबादत और हकीकी इताअत के साथ, और माँ-बाप की ख़िदमत व शरई हुक्क़ अदा करने के साथ।
7. और ज़ाहिर है कि कोई चीज़ भी ऐसी नहीं कि जिसके शरीक होने के हक़दार होने पर कोई दलील कायम हो, बल्कि हक़दार न होने पर दलीलें कायम हैं।
8. यानी मेरे अहक़ाम का एतिकाद रखने वाला और उनपर अमल करने वाला हो।
9. मख़्लूक के इल्म से चीज़ के पोशीदा रह जाने के यही असबाब हैं। क्योंकि कभी बहुत ज़्यादा छोटा होने की वजह से एक चीज़ आँखों से ओझल हो जाती है, कभी पर्दे के सख़्त और गहरा होने की वजह से, कभी जगह के दूर होने से, कभी अन्धेरा होने से।

और लोगों से अपना रुख मत फेर, और ज़मीन पर इतराकर मत चल, बेशक अल्लाह तआला किसी तकब्बुर करने वाले, फखर करने वाले को पसन्द नहीं करते। (18) और अपनी रफ्तार में दरमियानापन इख्तियार कर,¹ और अपनी आवाज़ को पस्त कर,² बेशक आवाज़ों में सबसे बुरी आवाज़ गधों की आवाज़ है। (19) ♦

क्या तुम लोगों को यह बात मालूम नहीं हुई कि अल्लाह तआला ने तमाम चीज़ों को तुम्हारे काम में लगा रखा है, जो कुछ आसमानों में हैं और जो कुछ ज़मीन में हैं। और उसने तुमपर अपनी ज़ाहिरी और बातिनी नेमतें पूरी कर रखी हैं।³ और बाज़े आदमी ऐसे हैं कि अल्लाह तआला के बारे में बिना जानकारी और बिना दलील और बिना किसी रोशन किताब के झगड़ा करते हैं। (20) और जब उनसे कहा जाता है कि उस चीज़ का इत्तिबा करो जो अल्लाह तआला ने नाज़िल फरमाई है, तो कहते हैं कि नहीं! हम उसी का इत्तिबा करेंगे जिसपर हमने अपने बड़ों को पाया है। क्या अगर शैतान उनके बड़ों को दोज़ख के अज़ाब की तरफ बुलाता रहा हो तब भी?⁴ (21) और जो शख्स अपना रुख अल्लाह की तरफ झुका दे⁵ और वह मुख़्लिस भी हो,⁶ तो उसने बड़ा मज़बूत हल्का थाम लिया,⁷ और अख़ीर सब कामों का अल्लाह ही की तरफ पहुँचेगा। (22) और जो शख्स कुफ़्र करे सो आपके लिए उसका कुफ़्र ग़म का सबब न होना चाहिए, उन सबको हमारे ही पास लौटना है, सो हम उन सबको जतला देंगे, जो-जो कुछ वे किया करते थे। अल्लाह तआला को दिलों की बातें खूब मालूम हैं। (23) हम उनको चन्द दिन की ऐश दिए हुए हैं, फिर उनको ज़बरदस्ती खींचते-खींचते एक सख़्त अज़ाब की तरफ ले आएँगे। (24) और अगर आप उनसे पूछें कि आसमानों और ज़मीन को किसने पैदा किया है तो ज़रूर यही जवाब देंगे कि अल्लाह तआला ने, आप कहिए कि अल्हम्दु लिल्लाहि! बल्कि उनमें अक्सर नहीं जानते। (25) जो कुछ आसमानों और ज़मीन में मौजूद है सब अल्लाह ही का है, और बेशक अल्लाह तआला बेनियाज़, सब ख़ूबियों वाला है। (26) और जितने पेड़ ज़मीन भर में हैं, अगर वे सब क़लम बन जाएँ और यह जो समुद्र है उसके अलावा सात समुद्र इसमें और शामिल हो जाएँ तो अल्लाह की बातें ख़त्म न हों;⁸ बेशक खुदा तआला ज़बरदस्त, हिक्मत वाला है। (27) तुम सबका पैदा करना और ज़िन्दा करना

1. न बहुत दौड़कर चल कि वकार के खिलाफ है और न बहुत गिन-गिनकर क़दम रख, बल्कि बेतकल्फ़ और दरमियानी चाल तवाज़ो व सादगी के साथ इख्तियार कर, जिसको दूसरी आयत में इस उन्वान से ज़िक्र किया है: 'यम्शू-न अलल अर्ज़ि हौनन्'।
2. यानी बहुत शोर न मचा। यह मतलब नहीं कि इतनी पस्त कर कि दूसरा सुने भी नहीं।
3. ज़ाहिरी वह कि हवास (यानी सुनने, देखने, छूने, सूँघने और चखने) से पता चले, और बातिनी वह जो अक़ल से मालूम और महसूस हों। और नेमतों से वे नेमतें मुराद हैं जो आसमानों और ज़मीन को ताबे करने पर मुरतब होती हैं।
4. मतलब यह कि ऐसे दुश्मन और मुख़ालिफ़ हैं कि बावजूद इसके कि उनको दलील की तरफ बुलाया जाता है, मगर फिर भी बिना दलील, बल्कि खिलाफ़े दलील महज़ अपने गुमराह बाप-दादाओं की राह पर चलते हैं।
5. यानी फ़र्माँबरदारी इख्तियार करे, अक़ीदों में भी और आमाल में भी। मुराद इस्लाम व तौहीद है।
6. यानी महज़ ज़ाहिरी इस्लाम न हो।
7. यानी वह उस शख्स के जैसा हो गया जो किसी मज़बूत रस्सी का हल्का थामकर गिरने से महफूज़ रहता है, इसी तरह यह शख्स हलाक होने और नुक़सान से महफूज़ है।
8. अल्लाह की बातें यानी वे कलिमात जिनसे अल्लाह तआला के कमालात को बयान किया गया हो।

बस ऐसा ही है जैसा कि एक शख्स का। बेशक अल्लाह तआला सब कुछ सुनता, सब कुछ देखता है।¹ (28) (ऐ मुखातब!) क्या तुझको यह मालूम नहीं कि अल्लाह तआला रात को दिन में और दिन को रात में दाखिल कर देता है, और उसने सूरज और चाँद को काम में लगा रखा है, कि हर एक मुकर्ररा वक्त तक² चलता रहेगा, और यह कि अल्लाह तआला तुम्हारे सब आमाल की पूरी खबर रखता है। (29) यह इस सबब से है कि अल्लाह ही हस्ती में कामिल है और जिन चीजों की अल्लाह के सिवा ये लोग इबादत कर रहे हैं, बिलकुल ही लचर हैं। और अल्लाह ही आलीशान (और) बड़ा है।³ (30) ♦

(ऐ मुखातब!) क्या तुझको (तौहीद की) यह (दलील) मालूम नहीं कि अल्लाह ही के फजल से दरिया में कश्ती चलती है, ताकि तुमको अपनी निशानियाँ दिखलाए, उसमें हर ऐसे शख्स के लिए निशानियाँ हैं जो साबिर व शाकिर हो।⁴ (31) और जब उन लोगों को मौजें सायबानों “यानी साया करने वाले जैसे छप्पर वगैरह” की तरह घेर लेती हैं तो वे ख़ालिस एतिकाद करके अल्लाह ही को पुकारने लगते हैं, फिर जब उनको नजात देकर खुश्की की तरफ ले आता है सो बाज़े तो उनमें एतिदाल पर रहते हैं,⁵ और हमारी आयतों के बस वही लोग मुन्किर होते हैं जो बद्-अहद और नाशुक्र हैं।⁶ (32) ऐ लोगो! अपने रब से डरो और उस दिन से डरो जिसमें न कोई बाप अपने बेटे की तरफ से कुछ मुतालबा अदा कर सकेगा, और न कोई बेटा ही है कि वह अपने बाप की तरफ से ज़रा भी मुतालबा अदा कर दे। यकीनन अल्लाह का वायदा सच्चा है।⁷ सो तुमको दुनियावी ज़िन्दगानी धोखे में न डाले,⁸ और न वह धोखेबाज़ (शैतान) अल्लाह से धोखे में डाले। (33) बेशक अल्लाह तआला ही को कियामत की खबर है, और वही बारिश बरसाता है, और वही जानता है जो कुछ रहम “यानी माँ के पेट” में है, और कोई शख्स नहीं जानता कि वह कल क्या अमल करेगा, और कोई शख्स नहीं जानता कि वह किस ज़मीन में मरेगा। बेशक अल्लाह तआला सब बातों का जानने वाला, खबर रखने वाला है।⁹ (34) ♦

32 सूर: सज्द: 75

सूर: सज्द: मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 30 आयतें और 3 रुकूअ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

अलिफ्-लाम्-मीम्¹⁰ (1) यह नाज़िल की हुई किताब है इसमें कुछ शुब्हा नहीं, यह रब्बुल आलमीन की

1. पस जो लोग बावजूद इन दलीलों के मौत के बाद ज़िन्दा होने का इनकार कर रहे हैं और इस ज़ुरत पर गुनाह और बुराइयाँ करते हैं, उन सबको सुन रहा है, देख रहा है।
2. यानी कियामत तक।
3. इसलिए ये सब इख्तियारात और ताक़त उसके साथ खास हैं।
4. इससे मोमिन मुराद है कि सब्र व शुक्र में कामिल होना उसकी सिफ़त है।
5. यानी शिर्क के टेढ़ को छोड़कर तौहीद इख्तियार कर लेते हैं जो कि तमाम रास्तों में बेहतर रास्ता है।
6. कि कश्ती में जो तौहीद का अहद किया था उसको तोड़ दिया, और खुश्की में आने का मुक्तज़ा था शुक्र करना उसको छोड़ दिया।
7. यानी वह दिन ज़रूर आने वाला है, क्योंकि उसके मुताल्लिक अल्लाह का वायदा है।
8. कि उसमें मशगूल होकर उस दिन से गाफ़िल रहो।
9. ऊपर धमकी और डोंट थी कियामत के दिन की, और इनकार करने वाले इनकार के मक़सद से उसका वक्त पूछा करते थे, इसलिए इस आयत में (कि इसके नाज़िल होने का मौका भी बाज़ लोगों का हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से उसके मुताल्लिक सवाल करना दुर्र मन्सूर में मज़कूर है) जवाब के तौर पर ग़ैब के इल्म को अपने साथ खास फ़रमाया। (शेष तफ़सीर पृष्ठ 750 पर)

तरफ से है। (2) क्या ये लोग यूँ कहते हैं कि पैगम्बर ने यह अपने दिल से बना लिया है, बल्कि यह सच्ची किताब है आपके रब की तरफ से, ताकि आप ऐसे लोगों को डराएँ जिनके पास आपसे पहले कोई डराने वाला नहीं आया, ताकि वे लोग राह पर आ जाएँ। (3) अल्लाह ही है जिसने आसमानों और ज़मीन को और उस मख्लूक को जो उन दोनों के दरमियान है, छह दिन में पैदा किया, फिर अर्श पर कायम हुआ।¹ उसके अलावा न तुम्हारा कोई मददगार है और न कोई सिफारिश करने वाला। सो क्या तुम समझते नहीं हो?² (4) वह आसमान से लेकर ज़मीन तक हर मामले की तदबीर करता है, फिर हर मामला उसी के हुज़ूर में पहुँच जाएगा, एक ऐसे दिन में जिसकी मिकदार “यानी मात्रा” तुम्हारी गिनती के हिसाब से एक हजार साल की होगी।³ (5) वही पोशादा “छुपी” और ज़ाहिर चीज़ों का जानने वाला है। ज़बरदस्त, रहमत वाला है। (6) जिसने जो चीज़ बनाई ख़ूब बनाई,⁴ और इनसान की पैदाइश मिट्टी से शुरू की। (7) फिर उसकी नस्ल को खुलासा-ए-अख़लात यानी एक बेक़द्र पानी से बनाया। (8) फिर उसके आज़ा “यानी अंग और हिस्से” दुरुस्त किए और उसमें अपनी रूह फूँकी, और तुमको कान और आँखें और दिल दिए,⁵ तुम लोग बहुत कम शुक्र करते हो, (यानी नहीं करते)। (9) और ये लोग कहते हैं कि जब हम ज़मीन में नेस्तनाबूद हो गए तो क्या हम फिर नए जन्म में आएँगे, बल्कि वे लोग अपने रब से मिलने के इनकारी ही हैं।⁶ (10) आप फरमा दीजिए कि तुम्हारी जान मौत का फरिश्ता कब्ज़ करता है जो तुमपर मुतैयन है। फिर तुम अपने रब की तरफ लौटाकर लाए जाओगे। (11) ♦

और अगर आप देखें तो अजीब हाल देखें, जबकि ये मुजरिम अपने रब के पास सर झुकाए होंगे, कि ऐ हमारे परवर्दिगार! बस हमारी आँखें और कान खुल गए।⁷ सो हमको फिर भेज दीजिए, हम नेक काम करेंगे हमको पूरा यकीन आ गया। (12) और अगर हमको मन्ज़ूर होता तो हम हर शख्स को उसका रास्ता अता फरमाते और लेकिन मेरी यह बात तय हो चुकी है कि मैं जहन्नम को जिन्नात और इनसान दोनों से ज़रूर

(पृष्ठ 748 का शेष) जवाब का हासिल यह हुआ कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कियामत के वक़्त को न जानने से यह लाज़िम नहीं आता कि वह आएगी ही नहीं।

10. पिछली सूर: में तौहीद और आखिरत के मज़ामीन थे। इस सूर: के शुरू में कुरआन के हक होने को साबित करने से रिसालत को साबित करना है, फिर तौहीद और आखिरत का ज़िक्र है। फिर “व ल-कद् आतैना मूसा” से रिसालत के मसले की ताईद और झुठलाने वालों के मामले में रसूल की तसल्ली का मज़मून है। और “अ-व लम् यहदि” से आखिर तक झुठलाने वालों को डॉट-डपट और सज़ा की धमकी और उनके बाज़ कौलों का जवाब है।

1. यानी इख्तियारात और ताक़त व कुदरत नाफिज़ करने लगा।
2. कि ऐसी ज़ात का कोई शरीक नहीं हो सकता।
3. यानी कियामत में उनसे मुताल्लिक चीज़ों के सब मामले और सब ही कुछ उसी के सामने पेश होंगे।
4. यानी जिस मसलहत के लिए उसको बनाया उसके मुनासिब बनाया।
5. यानी ज़ाहिरी व बातिनी हवास दिए।
6. यह सवाल के अन्दाज़ में इनकार है।
7. और मालूम हो गया कि पैगम्बरों ने जो कुछ कहा सब हक था।

भरूंगा। (13) तो अब इसका मज़ा चखो कि तुम इस दिन के आने को भूले रहे। हमने तुमको भुला दिया,¹ और अपने आमाल की बदौलत हमेशा के अज़ाब का मज़ा चखो। (14) बस हमारी आयतों पर तो वे लोग ईमान लाते हैं कि जब उनको वे आयतें याद दिलाई जाती हैं तो वे सज्दे में गिर पड़ते हैं, और अपने रब की पाकी और तारीफ़ बयान करने लगते हैं, और वे लोग तकब्बुर नहीं करते। □ (15) उनके पहलू सोने की जगहों “यानी बिस्तर व पलंग वगैरह” से अलग होते हैं, इस तौर पर कि वे लोग अपने रब को उम्मीद से और खौफ़ से पुकारते हैं, और हमारी दी हुई चीज़ों में से खर्च करते हैं।² (16) सो किसी शख्स को ख़बर नहीं, जो-जो आँखों की ठंडक का सामान ऐसे लोगों के लिए ग़ैब के ख़ज़ाने में मौजूद है। यह उनको उनके आमाल का सिला मिला है। (17) तो जो शख्स मोमिन हो क्या वह उस शख्स जैसा हो जाएगा जो बेहुक़्म “यानी नाफ़रमान” हो, वे आपस में बराबर नहीं हो सकते। (18) जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किए सो उनके लिए हमेशा का ठिकाना जन्नतें हैं जो उनके आमाल के बदले में बतौर उनकी मेहमानी के हैं। (19) और जो लोग बेहुक़्म थे सो उनका ठिकाना दोज़ख़ है, वे लोग जब उससे बाहर निकलना चाहेंगे तो फिर उसी में धकेल दिए जाएँगे, और उनको कहा जाएगा कि दोज़ख़ का वह अज़ाब चखो जिसको तुम झुठलाया करते थे। (20) और हम उनको करीब का (यानी दुनिया में आने वाला) अज़ाब भी उस बड़े अज़ाब से पहले चखा देंगे,³ ताकि ये लोग बाज़ आएँ।⁴ (21) और उस शख्स से ज़्यादा कौन ज़ालिम होगा जिसको उसके रब की आयतें याद दिलाई जाएँ, फिर वह उनसे मुँह मोड़े,⁵ हम ऐसे मुजरिमों से बदला लेंगे। (22) ♦

और हमने मूसा (अलैहिस्सलाम) को किताब दी थी, सो आप उसके मिलने में कुछ शक न कीजिए।⁶ और हमने उसको बनी इस्राईल के लिए हिदायत का ज़रिया बनाया था।⁷ (23) और हमने उनमें बहुत-से पेशवा “यानी रहनुमा” बना दिए थे जो हमारे हुक़्म से हिदायत करते थे, जबकि वे लोग सब्र किए रहे और वे लोग हमारी आयतों का यकीन रखते थे।⁸ (24) आपका रब क़ियामत के दिन उन सबके दरमियान उन मामलों में फैसला कर देगा जिनमें ये आपस में इख़्तिलाफ़ करते थे।⁹ (25) क्या उनको इस बात से रहनुमाई नहीं हुई कि

1. यानी रहमत से महरूम कर दिया।
2. मतलब यह कि ईमान लाने वालों की ये सिफ़तें हैं, जिनमें से बाज़ पर तो ईमान का वजूद मौकूफ़ है और बाज़ पर ईमान का मुकम्मल होना।
3. जैसे बीमारियाँ और मुसीबतें।
4. फिर जो बाज़ न आए उसके लिए बड़ा अज़ाब है ही।
5. उसके अज़ाब का हक़दार होने में क्या शुब्हा है।
6. मतलब यह कि आप किताब वाले और साहिबे-ख़िताब हैं। पस जब आप अल्लाह के नज़दीक ऐसे मकबूल हैं तो अगर चन्द मुद्दी भर बेवकूफ़ आपको कबूल न करें तो कोई ग़म की बात नहीं।
7. इसी तरह आपकी किताब से बहुतों को हिदायत होगी।
8. यह मोमिनों को तसल्ली है कि तुम लोग सब्र करो। और जब तुम यकीन वाले हो और यकीन का तकाज़ा सब्र करना है तो तुमको सब्र ज़रूरी है। उस वक़्त हम तुमको भी दीन के पेशवा बना देंगे।
9. यानी मोमिनों को जन्नत में और काफ़िरों को दोज़ख़ में डाल देगा।

हम उनसे पहले कितनी उम्मतें हलाक कर चुके हैं जिनके रहने की जगहों में ये लोग आते-जाते हैं, इसमें साफ निशानियाँ हैं,¹ क्या ये लोग सुनते नहीं हैं। (26) क्या उन्होंने इस बात पर नज़र नहीं की कि हम सूखी पड़ी ज़मीन की तरफ़ पानी पहुँचाते हैं। फिर उसके ज़रिये से खेती पैदा करते हैं, जिससे उनके मवेशी और वे खुद भी खाते हैं, तो क्या वे देखते नहीं। ▲ (27) और ये लोग कहते हैं कि अगर तुम सच्चे हो तो यह फैसला कब होगा? (28) आप फ़रमा दीजिए कि उस फैसले के दिन काफ़िरों को उनका ईमान लाना नफ़ा न देगा, और उनको मोहलत भी न मिलेगी। (29) सो उनकी बातों का ख़याल न कीजिए और आप इन्तिज़ार कीजिए, ये भी इन्तिज़ार कर रहे हैं।² (30) ♦

33 सूर: अहज़ाब 90

सूर: अहज़ाब मदीना में नाज़िल हुई। इसमें 73 आयतें और 9 रुकूअ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

ऐ नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)! अल्लाह से डरते रहिए³ और काफ़िरों का और मुनाफ़िकों का कहना न मानिए, बेशक अल्लाह तआला बड़ा इल्म वाला, बड़ी हिक्मत वाला है। (1) और आपके परवर्दिगार की तरफ़ से जो हुक्म आप पर वहा किया जाता है उसपर चलिए, बेशक तुम लोगों के सब आमाल की अल्लाह तआला पूरी ख़बर रखता है।⁴ (2) और आप अल्लाह पर भरोसा रखिए और अल्लाह काफ़ी कारसाज़ है।⁵ (3) अल्लाह तआला ने किसी शख्स के सीने में दो दिल नहीं बनाए, और तुम्हारी उन बीवियों को जिनसे तुम ज़िहार कर लेते हो तुम्हारी माँ नहीं बना दिया। और तुम्हारे मुँह-बोले बेटों को तुम्हारा (सचमुच का) बेटा नहीं बना दिया, यह सिर्फ़ तुम्हारे मुँह से कहने की बात है। और अल्लाह हक़ बात फ़रमाता है और वही सीधा रास्ता बतलाता है।⁶ (4) तुम उनको उनके बापों की तरफ़ मन्सूब किया करो, यह अल्लाह के नज़दीक रास्ती की बात है। और अगर तुम उनको बापों को न जानते हो तो वे तुम्हारे दीन के भाई हैं और तुम्हारे दोस्त हैं। और तुमको इसमें जो भूल-चूक हो जाए तो उससे तो तुमपर कुछ गुनाह न होगा। लेकिन हाँ जो दिल से इरादा करके करो, और अल्लाह मग़्फ़िरत करने वाला, रहम करने वाला है। (5) नबी मोमिनों के साथ खुद

1. यानी कुफ़ के बुरा और गुमराही होने की निशानियाँ मौजूद हैं।
2. मालूम हो जाएगा कि किसका इन्तिज़ार हकीकत के तबिक है और किसका नहीं।
3. इस सूर: में मजमूई तौर पर जो मज़ामीन बयान किए गए हैं उनमें हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अल्लाह के यहाँ महबूब और वहाँ से मदद याफ़ता होना और आपका अल्लाह के यहाँ खुसूसी मक़ाम वाला और मुक़र्रम होना, और आपका अदब व एहतियार वाजिब होना, और आपको तक्लीफ़ देना हराम होना वगैरह हैं। इसके अलावा जो मज़ामीन हैं वे सब इन्हीं के मुक़द्दिमात या इनको पूरा करने के लिए हैं।
4. "इत्तिफ़ा" और "ला तुतिअ" और "इत्तिबिअ" और "तवक्कल्" इन सब फ़रमानों और मुमानअतों पर आप पहले ही से अमल करने वाले हैं। यहाँ ज़्यादा मक़सूद मुखालिफ़ों को सुनाना है कि हमारे नबी तो इस हालत पर रहेंगे, तुम नाकाम और घाटा उठाने वाले होकर बैठ रहो।
5. उसके मुक़ाबले में उन लोगों की कोई तदबीर नहीं चल सकती, इसलिए कुछ अन्देशा न कीजिए।
6. जाहिलियत के ज़माने में ये तीनों ग़लत बातें मशहूर थीं कि ज़हीन और अक्लमन्द आदमी के दो दिल समझा करते, और ज़िहार से हमेशा के लिए बीबी के हराम होने का हुक्म करते, और मुँह-बोले बेटे को तमाम अहक़ाम में हकीकी बेटे जैसा क़रार देते। यहाँ अगरचे असल मक़सद तीसरी ग़लती का दूर करना है, मगर बात को मज़बूत बनाने के लिए दो ग़लतियाँ और भी दूर कर दीं।

उनके नफ़्स से भी ज़्यादा ताल्लुक रखते हैं,¹ और आपकी बीवियाँ उनकी माँ हैं।² और रिश्तेदार अल्लाह की किताब में एक-दूसरे से दूसरे मोमिनों और मुहाजिरों के मुकाबले में ज़्यादा ताल्लुक रखते हैं, मगर यह कि तुम अपने दोस्तों से कुछ सुलूक करना चाहो तो वह जायज़ है, यह बात लौहे-महफूज़ में लिखी जा चुकी थी।³ (6) और जबकि हमने तमाम पैग़म्बरों से उनका इकरार लिया और आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से भी, और नूह (अलैहिस्सलाम) और इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) और ईसा बिन मरियम (अलैहिस्सलाम) से भी, और हमने उन सबसे ख़ूब पक्का अहद लिया (7) ताकि उन सच्चों से उनके सच की तहकीकात करे, और काफ़िरों के लिए अल्लाह तआला ने दर्दनाक अज़ाब तैयार कर रखा है।⁴ (8) ♦

ऐ ईमान वालो! अपने ऊपर अल्लाह का इनाम याद करो जब तुमपर बहुत-से लश्कर चढ़ आए, फिर हमने उनपर एक आँधी भेजी और ऐसी फ़ौज भेजी जो तुमको दिखाई न देती थी, और अल्लाह तआला तुम्हारे आमाल को देखते थे।⁵ (9) जबकि वे लोग तुमपर आ चढ़े थे ऊपर की तरफ़ से भी और नीचे की तरफ़ से भी, और जबकि आँखें खुली की खुली रह गई थीं और कलेजे मुँह को आने लगे थे। और तुम लोग अल्लाह के साथ तरह-तरह के गुमान कर रहे थे। (10) उस मौक़े पर मुसलमानों का इम्तिहान किया गया और सख़्त ज़लजले में डाले गए। (11) और जबकि मुनाफ़िक और वे लोग जिनके दिलों में रोग है, यूँ कह रहे थे कि हमसे तो अल्लाह और उसके रसूल ने धोखे ही का वायदा कर रखा है। (12) और जबकि उनमें से बाज़ लोगों ने कहा कि ऐ यसरिब⁶ के लोगो! तुम्हारे लिए ठहरने का मौक़ा नहीं, सो लौट चलो। और बाज़ लोग उनमें नबी से इजाज़त माँगते थे, कहते थे कि हमारे घर ग़ैर-महफूज़ “यानी असुरक्षित” हैं, हालाँकि वे ग़ैर-महफूज़ नहीं हैं, ये सिर्फ़ भागना ही चाहते हैं। (13) और अगर (मदीना में) उसकी सन्तों और किनारों से

1. इसलिए मुसलमान पर अपनी जान से भी ज़्यादा आपका हक़ है। और आपकी इताअत पूरी तरह और ताज़ीम पूरे दर्जे में वाजिब है। और इसमें तमाम अहक़ाम और मामलात आ गए।
2. हुजुरे पाक की बीवियों का मुसलमानों की माँ होना अदब व ताज़ीम के एतिबार से है, और अदब व ताज़ीम की एक किस्म हराम होना भी है, इसलिए हराम होना भी ज़ाहिर हुआ।
3. यानी शरीअत का आख़िरी हुक्म रिश्तेदारों में मीरास की तक़सीम का हो जाएगा।
4. इस अहद और गरज़ से दोनों बातों का वाजिब होना साबित हो गया। जिसपर वद्व आए उसपर वद्व की इत्तिबा करने का और जिसपर वद्व न आए उसपर उसकी इत्तिबा का जिसपर वद्व आए।
5. इस वाक़िफ़ का खुलासा यह है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यहूद बनी नज़ीर को मदीने से निकाल दिया था। उन्होंने सन् चार या पाँच हिजरी में अरब के कबीलों को बहकाया और सब दस या बारह हज़ार आदमी मदीना पर चढ़ आए। आपने मदीना के चारों तरफ़ ख़न्दक खुदवाई और तीन हज़ार आदमियों से सामना और मुकाबला किया, करीब एक महीना यह घेराव रहा आख़िर अल्लाह तआला ने ज़ाहिरी तौर पर एक आँधी और बातिनी तौर पर फ़रिश्तों के लश्कर से सब काफ़िरों को तित्तर-बित्तर कर दिया और शिकस्त उनका मुक़द्दर बनी। चूँकि यहूद बनी कुरैज़ा ने अपने मुआहदे के विपरीत इन घेराव करने वालों की मदद की थी इसलिए आप अहज़ाब की लड़ाई से फ़ारिग़ होने के बाद उनके मुकाबले के लिए चले। वे पहले तो क़िले के अन्दर बन्द हो गए और बीस-पच्चीस दिन तक घेरे में रहे, फिर आख़िर तंग होकर निकले और बाज़े क़त्ल और बाज़े कैद किए गए। और इस वाक़िफ़ में मुनाफ़िकों से भी बहुत-सी बेमुरव्वती की बातें सामने आईं। और चूँकि इसमें बहुत-से ग़िरोह चढ़ आए थे और ख़न्दक भी खुदी थी इसलिए इसका नाम ग़च्चा-ए-अहज़ाब (यानी ग़िरोहों वाली लड़ाई) भी है और ग़च्चा-ए-ख़न्दक (यानी ख़न्दक वाली लड़ाई) भी।
6. यानी मदीना।

उनपर कोई आ घुसे फिर उनसे फसाद की दरख्वास्त की जाए तो ये उसको मन्ज़ूर कर लें और उन घरों में बहुत ही कम ठहरें। (14) हालाँकि यही लोग पहले खुदा से अहद कर चुके थे कि पीठ न फेरेंगे,¹ और अल्लाह से जो अहद किया जाता है उसकी पूछ “और सवाल” होगा। (15) आप फरमा दीजिए कि तुमको भागना कुछ फायदेमन्द नहीं हो सकता। अगर तुम मौत से या क़त्ल से भागते हो, और इस हालत में सिवाय थोड़े दिनों के और ज़्यादा फायदा उठाने वाले नहीं हो सकते।² (16) यह भी फरमा दीजिए कि वह कौन है जो तुमको खुदा से बचा सके, अगर वह तुम्हारे साथ बुराई करना चाहे।³ या वह कौन है जो खुदा के फज़ल से तुमको रोक सके अगर वह तुमपर फज़ल करना चाहे,⁴ और खुदा के सिवा न कोई अपना हिमायती पाएँगे और न कोई मददगार। (17) अल्लाह तअ़ाला तुममें से उन लोगों को जानता है जो रुकावट बनते हैं और जो अपने (नसबी या वतनी) भाइयों से यूँ कहते हैं कि हमारे पास आ जाओ, और लड़ाई में बहुत ही कम आते हैं। (18) तुम्हारे हक़ में कन्ज़ूसी लिए हुए,⁵ सो जब ख़ौफ़ पेश आता है तो उनको देखते हो कि वे आपकी तरफ़ इस तरह देखने लगते हैं कि उनकी आँखें चकराई जाती हैं, जैसे किसी पर मौत की बेहोशी तारी हो। फिर जब वह ख़ौफ़ दूर हो जाता है तो तुमको तेज़-तेज़ ज़बानों से ताने देते हैं, माल पर हिंस लिए हुए।⁶ ये लोग ईमान नहीं लाए तो अल्लाह तअ़ाला ने उनके तमाम आमाल बेकार कर रखे हैं, और यह बात अल्लाह के नज़दीक बिलकुल आसान है। (19) उन लोगों का यह ख़्याल है कि (अभी तक) ये लश्कर गए नहीं, और अगर (फ़र्ज़ कर लें कि) ये (गए हुए) लश्कर (फिर लौटकर) आ जाएँ तो (फिर तो) ये लोग (अपने लिए) यही पसन्द करेंगे कि काश! हम देहातियों में बाहर जाकर रहें कि तुम्हारी ख़बरें पूछते रहें, और अगर तुम ही में रहें तब भी कुछ यूँ ही-सा लड़ें।⁷ (20) ♦

तुम लोगों के लिए यानी ऐसे शख्स के लिए जो अल्लाह से और आख़िरत के दिन से डरता हो, और कसरत से अल्लाह का ज़िक्र करता हो,⁸ रसूलुल्लाह का एक उम्दा नमूना मौजूद था।⁹ (21) और जब ईमान

1. यह अहद उस वक़्त किया था जबकि बद्र की लड़ाई में बाज़ लोग शरीक होने से रह गए थे। तो बाज़ मुनाफ़िक़ भी मुफ़्त की भलाई लेने के लिए कहने लगे कि अफ़सोस! हम शरीक न हुए, ऐसा करते वैसा करते। जब वक़्त आया तो सारी क़लई खुल गई।
2. यानी भागकर उम्र नहीं बढ़ सकती, क्योंकि उसका वक़्त तो पहले से तय है। और जब तय है तो अगर न भागते तो भी वक़्त से पहले मर नहीं सकते, पस न तो डटे रहने से कोई नुक़सान और न फ़रार होने से कोई नफ़ा, फिर भागना सिर्फ़ बेअक़ली है।
3. जैसे वह तुमको हलाक़ करना चाहे तो क्या तुमको कोई बचा सकता है? जैसा कि तुम फ़रार होने को फायदेमन्द ख़्याल करते हो।
4. जैसे वह ज़िन्दा रखना चाहे जो कि दुनिया के एतिबार से रहमत है, तो कोई उसके लिए रुकावट हो सकता है? जैसा कि तुम्हारा ख़्याल है कि लड़ाई में जमे रहने को ज़िन्दगी के ख़त्म होने का सबब समझते हो।
5. यानी आने में बड़ी नीयत यह होती है कि ग़नीमत का सारा माल मुसलमानों को न मिल जाए। नाम के लिए शरीक होने से ग़नीमत के माल के हक़दार होने का दावा तो किसी दर्जे में कर सकेंगे।
6. यानी ग़नीमत के माल के लिए दिल दुखाने वाली बातें करते हैं, कि हम शरीक क्यों न थे? हमारे ही पीछा संभालने से तुमको यह जीत नसीब हुई है।
7. आगे जंग में डटे रहने में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैरवी को ईमान का मुक़्तज़ा होना बयान फरमाते हैं, ताकि मुनाफ़िक़ों को शर्म दिलाई जा सके कि ईमान का दावा करने के बावजूद उसके तकाज़े के ख़िलाफ़ किया और मुख़्लिस हज़रात को खुशख़बरी हो कि ये लोग अल्लाह से डरने के सही मिस्दाक़ हैं।
8. “यरज़ू” में आग़ज़ व अन्जाम का एतिकाद आ गया। और “ज़-करल्ला-ह” में सब इबादतें और नेकियाँ आ गईं।
9. आगे मुनाफ़िक़ों के मुकाबले में मुख़्लिस मोमिनों का ज़िक्र है।

वालों ने उन लश्करों को देखा तो कहने लगे कि यह वही है जिसकी हमको अल्लाह और उसके रसूल ने ख़बर दी थी, और अल्लाह व रसूल ने सच फ़रमाया था और उससे उनके ईमान और फ़रमाँबरदारी में तरक्की हो गई।¹ (22) उन मोमिनों में कुछ लोग ऐसे भी हैं कि उन्होंने जिस बात का अल्लाह से अहद किया था उसमें सच्चे उतरे,² फिर बाज़े आदमी तो उनमें वे हैं जो अपनी मन्नत पूरी कर चुके हैं और बाज़े उनमें आरज़ू करने वाले हैं और उन्होंने ज़रा भी बदलाव नहीं किया। (23) यह वाकिआ इसलिए हुआ ताकि अल्लाह तआला सच्चे मुसलमानों को उनके सच का सिला दे, और मुनाफ़िकों को चाहे सज़ा दे या चाहे उनको तौबा की तौफीक दे। बेशक अल्लाह तआला माफ़ करने वाला, रहम करने वाला है। (24) और अल्लाह तआला ने काफ़िरों को उनके गुस्से में भरा हुआ हटा दिया कि उनकी कुछ भी मुराद पूरी न हुई। और जंग में अल्लाह तआला मुसलमानों के लिए आप ही काफ़ी हो गया,³ और अल्लाह तआला बड़ी कुव्वत वाला, बड़ा ज़बरदस्त है। (25) और जिन अहले किताब ने उनकी मदद की थी उनको उनके किलों से नीचे उतार दिया और उनके दिलों में तुम्हारा रौब बिठा दिया, बाज़ को तुम क़त्ल करने लगे और बाज़ को कैद कर लिया। (26) और उनकी ज़मीन और उनके घरों और उनके मालों का तुमको मालिक बना दिया, और ऐसी ज़मीन का भी जिसपर तुमने क़दम नहीं रखा,⁴ और अल्लाह तआला हर चीज़ पर पूरी कुदरत रखता है।⁵ (27) ♦

ऐ नबी! आप अपनी बीवियों से फ़रमा दीजिए कि तुम अगर दुनियावी ज़िन्दगी (का ऐश) और उसकी बहार चाहती हो तो आओ मैं तुमको कुछ माल और (दुनियावी) सामान दे दूँ और तुमको ख़ूबी के साथ रुख़्सत करूँ।⁶ (28) और अगर तुम अल्लाह को चाहती हो और उसके रसूल को और आख़िरत के घर को तो तुममें नेक किरदारों के लिए अल्लाह तआला ने बड़ा अज़्र मुहैया कर रखा है। (29) ऐ नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की बीवियो! जो कोई तुममें से खुली हुई बेहूदगी करेगी,⁷ उसको दोहरी सज़ा दी जाएगी। और यह बात अल्लाह को आसान है। (30)

1. यह सिफ़त तो सब मोमिनों में मुश्तरक रूप से है और बाज़ सिफ़तें बाज़ मोमिनों में ख़ास भी हैं जिसका बयान आगे है।
2. यह तक़सीम इस बिना पर है कि बाज़ ने अहद ही नहीं किया था और बिना अहद ही साबित-क़दम रहे। और मुराद उन अहद करने वालों से हज़रत अनस बिन नज़र और उनके साथी हैं। जो हज़रात इतिफ़ाक से बद्र की लड़ाई में शरीक नहीं हो पाए थे, तो उनको अफ़सोस हुआ और अहद किया कि अगर अब की बार कोई जिहाद हो तो उसमें हमारी जान तोड़ कोशिश देख ली जाएगी। मतलब यह था कि मुँह न मोड़ेंगे चाहे मारे जाएँ।
3. यानी काफ़िरों को लड़ने की बाकायदा नौबत भी न आई कि पहले ही दफ़ा हो गए।
4. इसमें खुशख़बरी है आने वाली जीत और फ़तूहात की उम्मीद, या ख़ैबर की जीत की ख़ुसूसन, जो इसके कुछ बाद हासिल हुई।
5. इसलिए यह चीज़ें कुछ मुश्किल नहीं हैं।
6. हुज़ुरे पाक की बीवियों (रज़ियल्लाहु अन्हुन्-न) के तक़ज़े के साथ कुछ ज़ायद दुनियावी सामान माँगने से जिसको वे ग़लती से ज़ायद न समझी थीं, आपके दिल मुबारक को तकलीफ़ पहुँची, यहाँ तक कि आप नाराज़ होकर एक महीने के लिए सबसे अलग हो गए। ये आयतें उसके मुताल्लिक़ नबी-ए-करीम की पाक बीवियों (जो तमाम मुसलमानों की माएँ हैं) की तंबीह के लिए इरशाद हुई। और ग़ालिबन उस माँगने की वजह यह हुई कि ख़ैबर वगैरह के फ़तह होने से किसी क़दम माली नुसुअत हासिल हो गई थी, तो अपने ख़्याल में वे इसको तकलीफ़ का सबब नहीं समझीं। और यह किस्सा ख़ैबर के फ़तह होने के बाद हुआ, चुनाँचे उस वक़्त हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हा भी आपके निकाह में थीं जो ख़ैबर से हासिल हुई थीं।
7. इससे वह मामला मुराद है जिससे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तंग और परेशान हों।

बाईसवाँ पार: व मय्यक्नुत

सूर: अहज़ाब (आयत 31 से 73)

और जो कोई तुममें अल्लाह की और उसके रसूल की फरमाँबरदारी करेगी और नेक काम करेगी तो हम उसको उसका सवाब दोहरा देंगे, और हमने उसके लिए एक उम्दा रोज़ी तैयार कर रखी है। (31) ऐ नबी की बीवियो! तुम मामूली औरतों की तरह नहीं हो, अगर तुम तक्वा इख्तियार करो,¹ तो तुम (नामेहरम मर्द से) बोलने में (जबकि ज़रूरत से बोलना पड़े) नरमी और लचक मत करो, (इससे) ऐसे शख्स को (तबई तौर पर बुरा) ख्याल पैदा होने लगता है जिसके दिल में खराबी है, और (पाकदामनी के) कायदे के मुवाफ़िक़ बात कहो।² (32) और तुम अपने घरों में करार से रहो और पुराने जहालत के ज़माने के दस्तूर के मुवाफ़िक़ मत फ़िरो, और तुम नमाज़ों की पाबन्दी रखो और ज़कात दिया करो और अल्लाह का और उसके रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का कहना मानो, अल्लाह को यह मन्ज़ूर है कि ऐ घर वालो! तुमसे आलूदगी को दूर रखे और तुमको (हर तरह ज़ाहिरी तौर पर भी और बातिनी तौर पर भी) पाक-साफ़ रखे। (33) और तुम उन आयतों को और उस इल्म (अहक़ाम) को याद रखो जिसका तुम्हारे घरों में चर्चा रहता है।³ बेशक अल्लाह तआला राज़ का जानने वाला है, पूरा ख़बर रखने वाला है। (34) ♦

बेशक इस्लाम के काम करने वाले मर्द और इस्लाम के काम करने वाली औरतें, और ईमान लाने वाले मर्द और ईमान लाने वाली औरतें,⁴ और फरमाँबरदारी करने वाले मर्द और फरमाँबरदारी करने वाली औरतें, और सच्चे मर्द और सच्ची औरतें, और सब्र करने वाले मर्द और सब्र करने वाली औरतें, और खुशूअ करने वाले मर्द और खुशूअ करने वाली औरतें, और ख़ैरात करने वाले मर्द और ख़ैरात करने वाली औरतें, और रोज़ा रखने वाले मर्द और रोज़ा रखने वाली औरतें, और अपनी शरमगाहों की हिफ़ाज़त करने वाले मर्द और हिफ़ाज़त करने वाली औरतें, और कसरत से खुदा को याद करने वाले मर्द और याद करने वाली औरतें, इन सबके लिए अल्लाह तआला ने मग़्फ़िरत और बड़ा अज़्र तैयार कर रखा है।⁵ (35) और किसी ईमान वाले मर्द और किसी ईमान वाली औरत को गुन्जाइश नहीं है जबकि अल्लाह और उसका रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) किसी काम का हुक्म दे दें कि (फिर) उन (मोमिनों) को उनके उस काम में कोई इख्तियार (बाकी) रहे। और जो शख्स अल्लाह का और उसके रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का कहना न मानेगा वह खुली गुमराही में जा पड़ा।⁶ (36) और जब आप उस शख्स से फ़रमा रहे थे जिसपर अल्लाह ने भी इनाम किया

1. यानी तक्वे के बग़ैर ख़ाली निस्बत बेकार है!

2. मतलब यह है कि जैसे औरतों के बात करने का एक फ़ितरी अन्दाज़ होता है कि बोलने में नरमी होती है, मिज़ाज की सादगी से उस अन्दाज़ को मत बरतो, बल्कि ऐसे मौक़े पर तकल्लुफ़ और एहतिमाम से उस फ़ितरी अन्दाज़ को बदल कर बातचीत करो, यानी ऐसे अन्दाज़ से बातचीत करो जिसमें रूखापन हो कि यह पाकदामनी और आबरू की हिफ़ाज़त करने वाला है।

3. अल्लाह की आयतें यानी कुरआन।

4. इस्लाम से मुराद नमाज़, रोज़ा, ज़कात और हज़ वग़ैरह आमाज़ हुए, और ईमान से मुराद अक़ायद हुए।

5. अगली आयत के नाज़िल होने का सबब यह है कि हुज़ुरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु का निकाह अपनी फूफीज़ाद बहन हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा से करना चाहा। चूँकि हज़रत ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु गुलाम मशहूर हो चुके थे इसलिए हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा और उनके भाई अब्दुल्लाह बिन जहश रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस निकाह की मन्ज़ूरी से उज़्र किया, उसपर यह आयत नाज़िल हुई।

6. अगली आयत के नाज़िल होने का सबब यह है कि जब गुज़री हुई आयत के नाज़िल होने पर (शेष तफ़सीर पृष्ठ 764 पर)

और आपने भी इनाम किया,¹ कि अपनी बीवी (ज़ैनब) को अपने निकाह में रहने दे और खुदा से डर, और आप अपने दिल में वह (बात भी) छुपाए हुए थे जिसको अल्लाह तआला (आखिर में) जाहिर करने वाला था, और आप लोगों (के ताना देने) से अन्देशा करते थे, और डरना तो आपको खुदा ही से ज्यादा मुनासिब है।² फिर जब ज़ैद (रज़ियल्लाहु अन्हु) का उससे जी भर गया,³ हमने आपसे उसका निकाह कर दिया, ताकि मुसलमानों पर अपने मुँह-बोले बेटों की बीवियों के (निकाह के) बारे में कुछ तंगी न रहे, जब वे (मुँह बोले बेटे) उनसे अपना जी भर चुकें,⁴ और खुदा का यह हुक्म तो होने वाला ही था। (37) और उन पैगम्बर के लिए जो बात (तकदीरी तौर पर या शरीअत के हुक्म के तौर पर) खुदा तआला ने मुकर्रर कर दी थी उसमें नबी पर कोई इल्ज़ाम नहीं, अल्लाह तआला ने उन (पैगम्बरों) के हक में (भी) यही मामूल कर रखा है जो पहले हो गुजरे हैं, और अल्लाह का हुक्म (पहले से) तजवीज़ किया हुआ होता है। (38) ये सब (पहले गुजरे हुए पैगम्बर) ऐसे थे कि अहकाम पहुँचाया करते थे और इस बारे में अल्लाह ही से डरते थे और अल्लाह के सिवा किसी से न डरते थे, और अल्लाह हिसाब लेने के लिए काफी है। (39) मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तुम्हारे मर्दों में से किसी के बाप नहीं हैं लेकिन अल्लाह के रसूल हैं, सब नबियों के ख़तम पर हैं, और अल्लाह तआला हर चीज़ को ख़ूब जानता है। (40) ♦

(और) ऐ ईमान वालो! तुम अल्लाह को ख़ूब कसरत से याद करो (41) और सुबह व शाम (यानी हमेशा) उसकी तस्बीह (व पाकी बयान) करते रहो। (42) वह ऐसा (रहीम) है कि वह (खुद भी) और उसके फ़रिश्ते (भी) तुमपर रहमत भेजते रहते हैं,⁵ ताकि हक़ तआला तुमको अन्धेरियों से नूर की तरफ़ ले आए। और अल्लाह तआला मोमिनों पर बहुत मेहरबान है। (43) वे जिस दिन अल्लाह से मिलेंगे तो उनको जो सलाम होगा वह यह होगा कि अस्सलामु अलैकुम, और अल्लाह ने उनके लिए उम्दा सिला (जन्नत) तैयार कर रखा है। (44) ऐ नबी! हमने बेशक आपको इस शान का रसूल बनाकर भेजा है कि आप गवाह होंगे और आप (मोमिनों को) खुशख़बरी देने वाले हैं, और (काफ़िरों को) डराने वाले हैं। (45) और (सबको) अल्लाह की तरफ़ उसके हुक्म से बुलाने वाले हैं और आप एक रोशन चिराग़ हैं।⁶ (46) और मोमिनों को खुशख़बरी दे

(पृष्ठ 762 का शेष) निकाह मन्ज़ूर कर लिया गया तो इतिफ़ाक़ से आपस में मिज़ाजों में मुवाफ़क़त और मिलाप न हुआ। हज़रत ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु ने तलाक़ देना चाहा और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मशिवरा किया। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने समझाया कि तलाक़ मत दो। मगर जब किसी तरह निभाह न हुआ, आखिर फिर तलाक़ का इरादा जाहिर किया। उस वक़्त आपको वझ से मालूम हुआ कि ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु ज़रूर तलाक़ देंगे और ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा का आपसे निकाह होगा। और उस वक़्त मस्लहत भी यही थी, क्योंकि अव्वल तो यह निकाह मरज़ी के ख़िलाफ़ होने से तबई तकलीफ़ का सबब हुआ था, फिर उसपर तलाक़ देना और ज्यादा परेशानी, तकलीफ़ और दिल टूटने का सबब था। उस दिल टूटने की तलाफ़ी जिससे हज़रत ज़ैनब रज़ि. के आँसू पोछे जा सकते थे, इससे बेहतर और कोई न थी कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उनसे निकाह करके उनका दिल रखें और सम्मानित फ़रमाएँ, मगर साथ ही अ़वाम के ताने देने और बुरा-भला कहने का ख़याल था, मगर अल्लाह के हुक्म से निकाह हुआ, जिसमें ज़िक्र हुई ख़ास मस्लहत के अलावा शरीअत की यह अ़मम मस्लहत भी थी कि मुँह-बोले बेटे की बीवी से निकाह का हलाल होना हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अ़मल से साबित हो जाए।

1. इससे हज़रत ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु मुराद हैं।
2. इससे हज़रत ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु के तलाक़ देने की सूरत में हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा से निकाह मुराद है।
3. यानी तलाक़ दे दी और इदत भी गुज़र गई।
4. यानी तलाक़ दे दें। मतलब यह कि शरीअत के इस हुक्म का इज़हार करना हमको मकसूद था। (शेष तफ़सीर पृष्ठ 766 पर)

दीजिए कि उनपर अल्लाह की तरफ से बड़ा फज़ल होने वाला है। (47) और काफ़िरों और मुनाफ़िकों का कहना न मानिए, और उनकी तरफ से जो तकलीफ़ पहुँचे उसका ख़्याल न कीजिए,¹ और अल्लाह पर भरोसा कीजिए और अल्लाह तआला काफ़ी कारसाज़ है। (48) ऐ ईमान वालो! तुम जब मुसलमान औरतों से निकाह करो (और) फिर तुम उनको हाथ लगाने से पहले (किसी इत्तिफ़ाक़ से) तलाक़ दे दो,² तो तुम्हारी उनपर कोई इद्दत (वाजिब) नहीं, जिसको तुम गिनने लगे, तो उनको कुछ (माल) सामान दे दो,³ और ख़ूबी के साथ उनको रुख़्सत करो।⁴ (49) ऐ नबी! हमने आपके लिए आपकी ये बीवियाँ जिनको आप उनके महर दे चुके हैं, हलाल की हैं, और वे औरतें भी जो तुम्हारी मम्लूका हैं, जो अल्लाह तआला ने गुनीमत में आपको दिलवा दी हैं, और आपके चचा की बेटियाँ और आपकी फूफियों की बेटियाँ और आपके मामूँ की बेटियाँ और आपकी ख़ालाओं की बेटियाँ भी जिन्होंने आपके साथ हिजरत की हो, और उस मुसलमान औरत को भी जो बिना बदले के अपने को पैगम्बर को दे दे,⁵ बशर्ते कि पैगम्बर उसको निकाह में लाना चाहें। ये सब आपके लिए मख़सूस किए गए हैं : कि और मोमिनों के लिए। हमको वे अहकाम मालूम हैं जो हमने उनपर उनकी बीवियों और बाँदियों के बारे में मुकर्रर किए हैं। ताकि आप पर किसी किस्म की तंगी न हो। और अल्लाह तआला माफ़ करने वाला, रहम करने वाला है। (50) उनमें से आप जिसको चाहें (और जब तक चाहें) अपने से दूर रखें, और जिसको चाहें (और जब तक चाहें) अपने नज़दीक रखें,⁶ और जिनको दूर कर रखा था उनमें से फिर किसी को तलब करें तब भी आप पर कोई गुनाह नहीं।⁷ इसमें ज़्यादा उम्मीद है कि उनकी आँखें ठन्डी रहेंगी⁸ और गुमगीन न होंगी। और जो कुछ भी आप उनको दे देंगे उसपर सबकी सब राज़ी रहेंगी। और खुदा तआला को तुम लोगों के दिलों की सब बातें मालूम हैं, और अल्लाह तआला (यही क्या) सब कुछ जानने वाला, बुर्दबार

(पृष्ठ 764 का शेष) 5. उसका रहमत भेजना तो रहमत करना है, और फ़रिश्तों का रहमत भेजना रहमत की दुआ करना है।

6. इसलिए कि आपकी हर हालत नूर के तालिबों के लिए हिदायत का सरमाया है। पस कियामत में उन मोमिनों पर जो कुछ रहमत होगी वह आप ही की इन सिफ़तों यानी खुशख़बरी देने वाले, डराने वाले, अल्लाह की तरफ़ बुलाने वाले और रोशन चिराग़ होने की के वास्ते से है।

1. यानी उनका ताना देना और एतितराज़ करना उनको तब्लीग़ करने से रोकने का सबब न हो जाए।

2. हाथ लगाना, इससे सोहबत करने की तरफ़ इशारा है, चाहे वह हकीकत में हो या हुक्मन, जैसे इतनी तन्हाई कि जिसमें सोहबत की जा सके।

3. माल व सामान में यह तफ़सील है कि अगर उसका महर मुकर्रर नहीं हुआ तो यह सामान एक जोड़ा है, और अगर महर मुकर्रर हुआ है तो यह सामान आधा महर है।

4. 'ख़ूबी के साथ रुख़्सत करना' यह कि बिना हक़ न रोके, उसका वाजिब माल-सामान न रखे और दिया हुआ माल-सामान वापस न ले, कोई सख़्त बात न कहे।

5. यानी निकाह में आना चाहे।

6. यानी जिसको चाहें और जब तक चाहें उसको बारी यानी नम्बर न दें, और जिसको चाहें और जब तक चाहें उसको बारी दें।

7. मतलब यह हुआ कि उनकी बारी वगैरह की रियायत आप पर वाजिब नहीं।

8. यानी खुश रहेंगी।

है। (51) इनके अलावा और औरतें आपके लिए हलाल नहीं हैं,¹ और न यह दुरुस्त है कि आप उन (मौजूदा) बीवियों की जगह दूसरी बीवियाँ कर लें, अगरचे आपको उन (दूसरियों) का हुस्न अच्छा मालूम हो, हाँ मगर जो आपकी मिल्क में हो। और अल्लाह तआला हर चीज़ (की हकीकत और आसार और मस्लहतों) का पूरा निगराँ है। (52) ♦

ऐ ईमान वालो! नबी के घरों में (बिना बुलाए) मत जाया करो, मगर जिस वक़्त तुमको खाने के लिए इजाज़त दी जाए, ऐसे तौर पर कि उसकी तैयारी के मुन्तज़िर न रहो।² लेकिन जब तुमको बुलाया जाए (कि खाना तैयार है) तब जाया करो। फिर जब खाना खा चुको तो उठकर चले जाया करो और बातों में जी लगाकर मत बैठे रहा करो, इस बात से नबी को नागवारी होती है, सो वह तुम्हारा लिहाज़ करते हैं,³ और अल्लाह तआला साफ़-साफ़ बात कहने से (किसी का) लिहाज़ नहीं करता। और जब तुम उनसे कोई चीज़ माँगो तो पर्दे के बाहर से माँगा करो।⁴ यह बात (हमेशा के लिए) तुम्हारे दिलों और उनके दिलों के पाक रहने का उम्दा ज़रिया है। और तुमको जायज़ नहीं कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को तकलीफ़ पहुँचाओ, और न यह जायज़ है कि तुम आपके बाद आपकी बीवियों से कभी भी निकाह करो, यह खुदा के नज़दीक बड़ी भारी (गुनाह और नाफ़रमानी की) बात है। (53) अगर तुम किसी चीज़ को ज़ाहिर करोगे या उसको छुपाओगे तो अल्लाह तआला हर चीज़ को अच्छी तरह जानते हैं। (54) पैग़म्बर की बीवियों पर अपने बापों के बारे में कोई गुनाह नहीं, और न अपने बेटों के, और न अपने भाइयों के, और न अपने भतीजों के, और न अपने भान्जों के, और न अपनी औरतों के, और न अपनी बाँदियों के, और खुदा से डरती रहो, बेशक अल्लाह तआला हर चीज़ पर हाज़िर (नाज़िर) है।⁵ (55) बेशक अल्लाह तआला और उसके फ़रिश्ते रहमत भेजते हैं इन पैग़म्बर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर।⁶ ऐ ईमान वालो! तुम भी आप पर रहमत भेजा करो और ख़ूब सलाम भेजा करो। (56) बेशक जो लोग अल्लाह तआला और उसके रसूल को तकलीफ़ देते हैं अल्लाह तआला उनपर दुनिया और आख़िरत में लानत करता है, और उनके लिए ज़लील करने वाला अज़ाब तैयार कर रखा है।⁷ (57) और जो लोग ईमान वाले मर्दों को और ईमान वाली औरतों को बग़ैर इसके कि

1. यानी रिश्तेदारों में से वे औरतें हलाल नहीं जिन्होंने हिज़रत नहीं की। और दूसरी औरतों में से ग़ैर-मोमिन औरतें हलाल नहीं।
2. यानी बिना दावत किए तो जाओ मत, और दावत हो तब भी बहुत पहले से मत जा बैठो।
3. और ज़बान से नहीं फ़रमाते कि उठकर चले जाओ।
4. यानी बेज़रूरत तो पर्दे के पास जाना और बात करना भी न चाहिए, लेकिन ज़रूरत में गुप्तगू करने में कोई हर्ज नहीं, मगर सामने न आना चाहिए।
5. यानी उससे कोई बात छुपी नहीं। पस इसके खिलाफ़ करने में सज़ा का अन्देशा है।
6. अल्लाह तआला का रहमत भेजना तो रहमत फ़रमाना है, और मुराद इससे ख़ास रहमत है जो आपकी बुलन्द शान के मुनासिब है। और फ़रिश्तों का रहमत भेजना और इसी तरह जिस रहमत के भेजने का हमको हुक्म है उससे मुराद उस ख़ास रहमत की दुआ करना है, और इसी को हमारे मुहावरे में दुरूद कहते हैं। और इस दुआ करने से हुज़ूरे पाक के बुलन्द मर्तबों में भी तरक्की हो सकती है और खुद दुआ करने वाले को भी नफ़ा होता है।
7. अल्लाह के नाराज़ करने को तकलीफ़ देना कहा गया है।

उन्होंने कुछ किया हो तकलीफ पहुँचाते हैं तो वे लोग बोहतान और खुले गुनाह का बोझ लेते हैं।¹ (58) ♦

ऐ पैग़म्बर! अपनी बीवियों से और अपनी बेटियों से और दूसरे मुसलमानों की बीवियों से भी कह दीजिए कि (सर से) नीचे कर लिया करें अपने ऊपर थोड़ी-सी अपनी चादरें,² इससे जल्दी पहचान हो जाया करेगी, तो तकलीफ न दी जाया करेंगी। और अल्लाह बख़्शने वाला, मेहरबान है।³ (59) ये मुनाफ़िक लोग और वे लोग जिनके दिलों में ख़राबी है, और वे लोग जो मदीने में (झूठी-झूठी) अफ़वाहें उड़ाया करते हैं, अगर बाज़ न आए तो ज़रूर हम आपको उनपर मुसल्लत करेंगे,⁴ फिर ये लोग आपके पास मदीने में बहुत ही कम रहने पाएँगे। (60) वे भी (हर तरफ़ से) फटकारे हुए जहाँ मिलेंगे पकड़-धकड़ और मार-धाड़ की जाएंगी। (61) अल्लाह तआला ने उन (फ़साद करने वाले) लोगों में भी अपना यही दस्तूर रखा है जो पहले हो गुज़रे हैं, और आप खुदा के दस्तूर में किसी शख्स की तरफ़ से रद्दोबदल न पाएँगे।⁵ ♦ (62) ये (इनकार करने वाले) लोग आपसे कियामत के मुताल्लिक सवाल करते हैं, आप फ़रमा दीजिए कि उसकी ख़बर तो बस अल्लाह तआला ही के पास है। और आपको उसकी क्या ख़बर, अज़ब नहीं कि कियामत करीब ही ज़ाहिर हो जाए। (63) बेशक अल्लाह तआला ने काफ़िरों को रहमत से दूर रखा है, और उनके लिए भड़कती हुई आग तैयार कर रखी है। (64) जिसमें वे हमेशा-हमेशा रहेंगे, न कोई यार पाएँगे और न कोई मददगार। (65) जिस दिन उनके चेहरे दोज़ख़ में उलट-पलट किए जाएँगे,⁶ यूँ कहते होंगे कि ऐ काश! हमने अल्लाह की इताअत की होती और हमने रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की इताअत की होती। (66) और यूँ कहेंगे कि ऐ हमारे रब! हमने अपने सरदारों और अपने बड़ों का कहना माना था। सो उन्होंने हमको (सीधे) रास्ते से गुमराह किया था। (67) ऐ हमारे रब! उनको दोहरी सज़ा दीजिए, और उनपर बड़ी लानत कीजिए। (68) ♦

1. यानी अर्गर वह तकलीफ़ ज़बान से है तो बोहतान है, और अगर फ़ेल से है तो मुतलक़ गुनाह ही है।
2. यानी किसी ज़रूरत से बाहर निकलना पड़े तो चादर से सर और चेहरा भी छुपा लिया जाए।
3. यानी इस सर और चेहरे के ढाँकने में जो बिला इरादा कोताही या बेइहतियाती हो जाए तो अल्लाह तआला उसको माफ़ कर देगा।
4. यानी उनके निकाल बाहर करने का हुक्म कर देंगे।
5. कि खुदा तो कोई बात जारी करना चाहे और कोई उसको रोक सके। पस 'सुन्नतुल्लाहि' में किसी बात के वक़्त से पहले हो जाने का रद्द फ़रमा दिया, और 'लन तजि-द' में किसी बात का वक़्त के बाद ज़ाहिर होने का रद्द फ़रमा दिया। कि जब वह ज़ाहिर करने और सामने लाने लगे तो कोई हटा नहीं सकता।
6. यानी चेहरों के बल घसीटे जाएँगे, कभी चेहरे की इस करवट कभी उस करवट।

ऐ ईमान वालो! तुम उन लोगों की तरह मत होना जिन्होंने (कुछ तोहमत घड़कर) मूसा (अलैहिस्सलाम) को तकलीफ दी थी, सो उनको खुदा तआला ने बरी साबित कर दिया,¹ और वह अल्लाह के नज़दीक बड़े इज़्ज़त वाले “यानी सम्मानित” थे।² (69) ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो³ और सच्ची बात कहो।⁴ (70) अल्लाह तआला (इसके सिले में) तुम्हारे आमाल को कबूल करेगा और तुम्हारे गुनाह माफ़ कर देगा। और जो शख्स अल्लाह और उसके रसूल की इताअत करेगा, सो वह बड़ी कामयाबी को पहुँचेगा। (71) हमने यह अमानत (यानी अहकाम जो अमानत के दर्जे में हैं) आसमानों और ज़मीन और पहाड़ों के सामने पेश की थी, सो उन्होंने इसकी ज़िम्मेदारी से इनकार कर दिया और इससे डर गए, और इनसान ने इसको अपने ज़िम्मे ले लिया,⁵ वह ज़ालिम है, जाहिल है। (72) अन्जाम यह हुआ कि अल्लाह तआला मुनाफ़िक़ मर्दों और मुनाफ़िक़ औरतों और मुशिरक़ मर्दों और मुशिरक़ औरतों को सज़ा देगा, और मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों पर तवज्जोह (और रहमत) फरमाएगा, और अल्लाह तआला मफ़िरत करने वाला, रहम करने वाला है। (73) ♦

34 सूर: सबा 58

सूर: सबा मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 54 आयतें और 6 रुकूअ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

पूरी की पूरी तारीफ़ें (और प्रशंसा) उसी अल्लाह के लिए हैं जिसकी मिल्क में है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है, और उसी को तारीफ़ (और प्रशंसा) आखिरत में भी (लायक) है। और वह हिक्मत वाला,⁶ ख़बर रखने वाला है।⁷ (1) वह सब कुछ जानता है जो चीज़ ज़मीन के अन्दर दाख़िल होती है (जैसे बारिश), और जो चीज़ उसमें से निकलती है (जैसे पेड़-पौधे, घास, सब्ज़ियाँ और हरियाली वगैरह) और जो चीज़ आसमान से उतरती है, और जो चीज़ उसमें चढ़ती है,⁸ और वह (अल्लाह तआला) रहीम (और) ग़फ़ूर (भी) है। (2) और ये काफ़िर कहते हैं कि हमपर क़ियामत न आएगी। आप फ़रमा दीजिए कि क्यों नहीं, क़सम है अपने परवर्दिगार ग़ैब के जानने वाले की, वह ज़रूर तुमपर आएगी। उस (के इल्म) से कोई ज़रा

1. यानी उनका तो कुछ नुक़सान न हुआ, तोहमत लगाने वाले ही झूठे और सज़ा के मुस्तहिक़ ठहरे।
2. मतलब यह कि तुम रसूल को उनकी मुख़ालफ़त करके तकलीफ़ मत देना कि वह अल्लाह की मुख़ालफ़त भी है।
3. यानी हर मामले में उसकी इताअत करो।
4. जिसमें इन्साफ़ हो, हद से गुज़रना न हो।
5. यह किसी ख़ास इनसान से जैसे आदम अलैहिस्सलाम से नहीं पूछा गया बल्कि जैसे ‘अहद लेने’ (यानी वह अहद जो तमाम रूहों से अल्लाह पाक ने लिया था) की तरह यह पेशकश भी आम होगी। और लाज़िम कर लेना और ज़रूरी क़रार दे लेना भी आम था। पस आसमान, ज़मीन और पहाड़ मुक़ल्लफ़ न हुए और यह मुक़ल्लफ़ बना दिया गया। आयत में इसका याद दिलाना ग़ालिबन इसी हिक्मत से है, जैसा कि ‘अहद’ याद दिलाया। यानी इन अहक़ाम को तुमने खुद ही अपने ऊपर लाज़िम किया है, फिर निभाना चाहिए।
6. कि ज़मीन व आसमान में मौजूद चीज़ों को फ़ायदों और मस्लहतों पर मुश्तमिल बनाया है।
7. कि उन मस्लहतों और फ़ायदों को पैदा करने से पहले ही जानता था, फिर उनको पैदा करके ज़मीन और आसमानों में रख दिया।
8. जैसे फ़रिश्ते कि उतरते-चढ़ते हैं, और जैसे अहक़ाम जो नाज़िल होते हैं, और आमाल जो चढ़ते हैं।

बराबर भी गायब नहीं, न आसमानों में और न ज़मीन में, और न कोई चीज़ इस (ज़िक्र हुई मात्रा) से छोटी है और न कोई चीज़ (इससे) बड़ी है, मगर ये सब किताबे मुबीन में (लिखी हुई) है।¹ (3) ताकि उन लोगों को (नेक) सिला दे जो ईमान लाए थे और उन्होंने नेक काम किए थे, (सो) ऐसे लोगों के लिए मग़्फ़िरत और (जन्नत में) इज़्ज़त की रोज़ी है। (4) और जिन लोगों ने हमारी आयतों के मुताल्लिक (उनके बातिल करने की) कोशिश की थी हराने के लिए, ऐसे लोगों के वास्ते सख्ती का दर्दनाक अज़ाब होगा।² (5) और जिन लोगों को (आसमानी किताबों का) इल्म दिया गया है, वे इस कुरआन को जो कि आपके रब की तरफ़ से आपके पास भेजा गया है, ऐसा समझते हैं कि वह हक़ है और वह खुदा-ए-ग़ालिब तारीफ़ वाले (की रिज़ा) का रास्ता बतलाता है। (6) और काफ़िर (आपस में) कहते हैं कि क्या हम तुमको एक ऐसा आदमी बताएँ जो तुमको यह अजीब ख़बर देता है कि जब तुम बिलकुल रेज़ा-रेज़ा हो जाओगे तो (उसके बाद कियामत में) ज़रूर एक नए जन्म में आओगे। (7) मालूम नहीं उस शख्स ने खुदा तआला पर (जान-बूझकर) झूठ बोहतान बाँधा है या उसको किसी तरह का जुनून है, बल्कि जो लोग आख़िरत पर यकीन नहीं रखते (वही) अज़ाब और दूर-दराज़ गुमराही में (मुब्तला) हैं।³ (8) तो क्या उन्होंने आसमान और ज़मीन की तरफ़ नज़र नहीं की, जो उनके आगे भी और उनके पीछे (भी) मौजूद हैं। अगर हम चाहें तो उनको ज़मीन में धंसा दें या उनपर आसमान के टुकड़े गिरा दें। इस (ज़िक्र हुई दलील) में (अल्लाह की कुदरत की) पूरी दलील है, (मगर) उस बन्दे के लिए जो (खुदा की तरफ़) मुतवज्जह (भी) हो।⁴ (9) ♦

और हमने दाऊद को अपनी तरफ़ से बड़ी नेमत दी थी। ऐ पहाड़ो! दाऊद के साथ बार-बार तस्बीह करो, और (इसी तरह) परिन्दों को भी हुक्म दिया,⁵ और हमने उनके वास्ते लोहे को (मोम की तरह) नरम कर दिया। (10) (और यह हुक्म दिया) कि तुम पूरी ज़िरहें बनाओ (और कड़ियों के) जोड़ने में अन्दाज़ा रखो, और तुम सब नेक काम किया करो,⁶ मैं तुम्हारे सब आमाल देख रहा हूँ। (11) और सुलैमान के लिए हवा को ताबे कर दिया कि उस (हवा) की सुबह की मन्ज़िल एक महीने भर की (राह) होती और उसकी शाम की मन्ज़िल एक महीने भर की (राह) होती,⁷ और हमने उनके लिए ताँबे का चश्मा बहा दिया, और जिन्नात में बाज़े वे थे जो उनके आगे काम करते थे उनके रब के हुक्म से, और उनमें से जो शख्स हमारे इस हुक्म से सरकशी करेगा, हम उसको (आख़िरत में) अज़ाब चखा देंगे।⁸ (12) वे जिन्नात उनके लिए वे-वे चीज़ें बनाते

1. यानी लौहें-महफूज़ में।

2. कुरआनी आयतों के झुठलाने पर यह सज़ा होना ही चाहिए। क्योंकि अब्बल तो कुरआन अपनी ज़ात के एतिबार से एक हक़ चीज़ है जो अल्लाह की तरफ़ से उतरा है, और ऐसी हक़ चीज़ का झुठलाना खुद हक़ तआला को झुठलाना है। इसपर जितनी भी सज़ा हो बजा है। दूसरे कुरआन सही रास्ते की तालीम व हिदायत करता है जो अल्लाह के यहाँ पसन्दीदा है। जो शख्स उसको न मानेगा वह सही रास्ते से जान-बूझकर दूर रहेगा। न उसको हक़ अक्कीदों का पता लगेगा, न नेक आमाल का, और यही तरीका है नजात का। पस नजात के रास्ते से जान-बूझकर दूर रहने पर सज़ा होना बेजा नहीं है।

3. इस गुमराही का मौजूदा असर यह है कि सच्चे भी झूठ घड़ने वाले और मजनुँ नज़र आते हैं, और अन्जाम का असर यह है कि अज़ाब भुगतना पड़ेगा।

4. यानी दलील तो काफी है मगर उनकी तरफ़ से तलब नहीं, इसलिए महरूम हैं।

5. यानी जब यह ज़िक्र मैं मशगूल हों तो तुम भी इनका साथ दो। ग़ालिबन यह तस्बीह ऐसी होगी कि जो सुनने वाले को समझ में आए, वरना समझ में न आने वाली तस्बीह तो आम है उसमें दाऊद अलैहिस्सलाम का साथ देने की क्या तख़सीस है?

6. यानी दाऊद अलैहिस्सलाम और उनके ताल्लुक वाले।

7. यानी वह हवा सुलैमान अलैहिस्सलाम को इतनी-इतनी दूर पहुँचाती। (शेष तफ़सीर पृष्ठ 776 पर)

जो उनको (बनवाना) मन्ज़ूर होता। बड़ी-बड़ी इमारतें और मूरतें और लगन (ऐसे बड़े) जैसे हौज़ और (बड़ी-बड़ी) देंगे जो एक ही जगह जमी रहें। ऐ दाऊद के खानदान वालो! तुम सब शुक्रिए में नेक काम किया करो, और मेरे बन्दों में शुक्रगुज़ार कम ही होते हैं। (13) फिर जब हमने उनपर मौत का हुक्म जारी कर दिया तो किसी चीज़ ने उनके मरने का पता न बतलाया मगर घुन के कीड़े ने, कि वह सुलैमान (अलैहिस्सलाम) की लाठी को खाता था।¹ सो जब वह गिर पड़े तब जिन्नात को हकीकत मालूम हुई कि अगर वे ग़ैब जानते होते तो इस ज़िल्लत की मुसीबत में न रहते।² (14) सबा (के लोगों) के लिए उनके वतन (की मजमूर हालत) में निशानियाँ मौजूद थीं। दो कतारें थीं बाग़ की दाएँ और बाएँ,³ अपने रब का (दिया हुआ) रिज़्क खाओ और उसका शुक्र अदा करो (कि रहने को) उम्दा शहर (दिया) और बख़्शने वाला, परवर्दिगार है। (15) सो उन्होंने नाफरमानी की तो हमने उनपर बन्द का सैलाब छोड़ दिया।⁴ और हमने उनके उन दो तरफ़ा बाग़ों के बदले और दो बाग़ दिए जिनमें ये चीज़ें रह गईं- बद्मज़ा फल और झाव और थोड़ी-सी बेरी। (16) उनको यह सज़ा हमने उनकी नाशुक्री के सबब दी। और हम ऐसी सज़ा बड़े नाशुके ही को दिया करते हैं। (17) और हमने उनके और उन बस्तियों के दरमियान में जहाँ हमने बरकत कर रखी है, बहुत-से गाँव आबाद कर रखे थे जो नज़र आते थे, और हमने उन देहात के दरमियान उनके चलने का एक ख़ास अन्दाज़ रखा था कि बिना किसी डर और ख़ौफ़ के उनमें रातों को और दिनों को चलो। (18) सो वे कहने लगे कि ऐ हमारे रब! हमारे सफ़रों में लम्बाई कर दे, और (इस नाशुक्री के अलावा) उन्होंने (और भी नाफरमानियाँ करके) अपनी जानों पर जुल्म किया, सो हमने उनको अफ़साना बना दिया और उनको बिलकुल तित्तर-बित्तर कर दिया। बेशक इस (किस्से) में हर साबिर व शाकिर (मोमिन) के लिए बड़ी इब्रतें हैं। (19) और वाकई शैतान ने उन लोगों के बारे में⁵ अपना गुमान सही पाया कि ये सब उसी की राह पर हो लिए, मगर ईमान वालों का गिरोह। (20) और शैतान का उन लोगों पर (बहकाने और गुमराह करने के तौर पर जो) कब्ज़ा है, इसके

(पृष्ठ 774 का शेष) 8. हासिल यह कि जो जिन्न ईमान और फ़रमाँबरदारी इच्छियार करेगा वह दोज़ख़ के अज़ाब से महफूज़ रहेगा, जैसा कि ईमान का तकाज़ा है।

1. सुलैमान अलैहिस्सलाम मौत के करीब लाठी को दोनों हाथ से पकड़कर उसको ठोड़ी के नीचे लगाकर तख़्त पर बैठ गए और उसी हालत में रूह कब्ज़ हो गई, और उसी तरह साल भर तक बैठे रहे। जिन्नात आपको बैठा देखकर जिन्दा समझते रहे और जिन्दा समझकर बदस्तूर काम करते रहे।
2. मुराद मशक्कत भरे आमाल हैं, जिनमें मातहत होने की वजह से ज़िल्लत भी है और मशक्कत की वजह से मुसीबत भी है।
3. यानी उनके तमाम इलाक़े में दोनों तरफ़ मिले हुए बागात चले गए थे।
4. यानी जो सैलाब बन्द से रुका रहता था, बन्द टूटकर उस सैलाब का पानी चढ़ आया जिससे उनके दोनों तरफ़ लगे हुए ये बागात सब ग़ारत हो गए।
5. यानी आदम की औलाद (इनसानों) के बारे में।

सिवा और किसी वजह से नहीं कि हमको (जाहिरी तौर पर) उन लोगों को जो कि आखिरत पर ईमान रखते हैं उन लोगों से (अलग करके) मालूम करना है जो उसकी तरफ से शक में हैं,¹ और आपका रब हर चीज़ का निगराँ है। (21) ♦

आप फरमा दीजिए कि जिनको तुम खुदा के सिवा (खुदाई में दखील) समझ रहे हो उनको पुकारो, वे ज़रा बराबर इख्तियार नहीं रखते, न आसमानों में और न ज़मीन में, और न उनकी उन दोनों (के पैदा करने) में कोई शिरकत है, और न उनमें से कोई अल्लाह का (किसी काम में) मददगार है।² (22) और खुदा के सामने (किसी की) सिफ़ारिश किसी के लिए काम नहीं आती मगर उसके लिए जिसके मुताल्लिक (सिफ़ारिश करने वाले को) वह इजाज़त दे दे।³ यहाँ तक कि जब उनके दिलों से घबराहट दूर हो जाती है तो एक-दूसरे से पूछते हैं कि तुम्हारे परवर्दिगार ने क्या हुक्म फरमाया? वे कहते हैं कि (फ़लानी) हक़ बात का हुक्म फरमाया, और वह आलीशान, सबसे बड़ा है।⁴ (23) आप (तौहीद की तहकीक़ के लिए यह भी) पूछिए कि (अच्छा बतलाओ) तुमको आसमान और ज़मीन से कौन रोज़ी देता है? आप (ही) कह दीजिए कि अल्लाह (रोज़ी देता है)। और (यह भी कहिए कि इस तौहीद के मसले में) बेशक हम या तुम ज़रूर सही रास्ते पर हैं या खुली गुमराही में हैं। (24) आप (यह भी) फरमा दीजिए कि अगर हम मुजरिम हैं (तो) तुमसे हमारे जुर्मों की पूछताछ न होगी, और हमसे तुम्हारे आमाँल की पूछताछ न होगी। (25) (और यह भी) कह दीजिए कि हमारा रब हम सबको (एक जगह) जमा करेगा। फिर हमारे दरमियान ठीक-ठीक (अमली) फैसला कर देगा, और वह बड़ा फैसला करने वाला, जानने वाला है।⁵ (26) आप (यह भी) कहिए कि मुझको ज़रा वे तो दिखलाओ जिनको तुमने शरीक बनाकर खुदा के साथ मिला रखा है, हरगिज़ (उसका कोई शरीक) नहीं, बल्कि (हकीक़त में) वही है अल्लाह ज़बरदस्त, हिक्मत वाला।⁶ (27) और हमने तो आपको तमाम लोगों के वास्ते पैग़म्बर बनाकर भेजा है,⁷ (ईमान लाने पर उनको हमारी रिज़ा और सवाब की) खुशख़बरी सुनाने वाले, और (ईमान न लाने पर उनको हमारे अज़ाब व ग़ज़ब से) डराने वाले, लेकिन अक्सर लोग नहीं समझते। (28) और ये लोग (ऐसे मज़ामीन सुनकर) कहते हैं कि यह वायदा कब होगा, अगर तुम (यानी नबी और आपके मानने वाले) सच्चे हो (तो बतलाओ)। (29) आप कह दीजिए कि तुम्हारे वास्ते एक ख़ास दिन का वायदा (मुकर्रर) है, कि उससे न एक घड़ी पीछे हट सकते हो और न आगे बढ़ सकते हो।⁸ ♦ (30) ♦

1. यानी आजमाइश और इम्तिहान मकसूद है, ताकि मोमिन व काफ़िर मुतयन हो जाएँ, कि बाज़ को सवाब देना और बाज़ को अज़ाब देना हिक्मत का तकाज़ा है।
2. यानी न दुनिया के बनाने में उनका कोई दख़ल है और न मौजूद हो जाने के बाद उनका मुस्तक़िल तौर पर कोई इख्तियार है, और न नायब होने की हैसियत से इख्तियार है।
3. और दलीलों से साबित है कि यह इजाज़त सिर्फ़ मोमिनों के हक़ में होगी।
4. पस जब मुकर्रब फ़रिशतों की यह हालत हो तो बुत और शयातीन तो किस गिनती में हैं। कि एक में काबलियत नहीं दूसरे में मकबूलियत नहीं।
5. उससे किसी का हाल छुपा नहीं जिससे ग़लत फैसले का शुब्हा हो सके।
6. ऊपर तौहीद का ज़िक्र था। आगे हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की रिसालत और उसके आम (यानी सबके लिए) होने का मज़मून है, कि वे लोग इसके भी इनकारी थे। फिर तौहीद का हक़ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैरवी के बग़ैर हासिल भी नहीं होता।
7. यानी चाहे जिन्नात हों या इन्सान, अरब वाले हों या अरब से बाहर के, मौजूद हों या आइन्दा होने वाले हों।
8. यानी अगरचे हम वक़्त न बतलाएँ मगर आएगी ज़रूर।

और ये काफिर लोग (दुनिया में तो खूब बातें बनाते हैं और) कहते हैं कि हम हरगिज़ इस कुरआन पर ईमान न लाएँगे और न इससे पहली किताबों पर, और अगर आप (उनकी) उस वक्त की हालत देखें (तो एक हौलनाक मन्ज़र नज़र आए), जब ये ज़ालिम अपने रब के सामने खड़े किए जाएँगे, एक-दूसरे पर बात डालता होगा। (चुनाँचे) अदना दर्जे के लोग¹ बड़े लोगों से² कहेंगे कि (हम तो तुम्हारे सबब से बरबाद हुए) अगर तुम न होते तो हम ज़रूर ईमान ले आए होते। (31) (उसपर) ये बड़े लोग उन अदना दर्जे के लोगों से कहेंगे कि क्या हमने तुमको हिदायत (पर अमल करने) से (ज़बरदस्ती) रोका था, इसके बाद कि वह (हिदायत) तुमको पहुँच चुकी थी। नहीं! बल्कि तुम ही कुसूरवार हो। (32) और (उसके जवाब में) ये कम दर्जे के लोग उन बड़े लोगों से कहेंगे कि (हम ज़बरदस्ती को रुकावट नहीं (कहते) बल्कि तुम्हारी रात-दिन की तदबीरों ने रोका था, जब तुम हमको फरमाइश करते रहते थे कि हम अल्लाह के साथ कुफ़ करें,³ और उसके लिए शरीक करार दें। और वे लोग (अपनी उस) शर्मिन्दगी को (एक-दूसरे से) छुपाकर रखेंगे जबकि अज़ाब देखेंगे। और हम काफिरों की गर्दनो में तौक डालेंगे, जैसा करते थे वैसा ही तो भरा।⁴ (33) और हमने किसी बस्ती में कोई डराने वाला (पैगम्बर) नहीं भेजा, मगर वहाँ के खुशहाल लोगों ने यही कहा कि हम तो उन अहकाम के इनकार करने वाले हैं जो तुमको देकर भेजा गया है। (34) और उन्होंने यह भी कहा कि हम माल और औलाद में तुमसे ज़्यादा हैं, और हमको कभी अज़ाब न होगा। (35) आप कह दीजिए कि मेरा परवर्दिगार जिसको चाहता है ज़्यादा रोज़ी देता है और जिसको चाहता है कम देता है, और लेकिन अक्सर लोग (इससे) वाकिफ़ नहीं।⁵ (36) ♦

और तुम्हारे माल और औलाद ऐसी चीज़ नहीं जो दर्जे में तुमको हमारा मुकर्रब बना दे, (यानी अल्लाह की निकटता की भी सबब व इल्लत नहीं) मगर हाँ जो ईमान लाए और अच्छे काम करे (ये दोनों चीज़ें अलबत्ता निकटता का सबब हैं) सो ऐसे लोगों के लिए उनके (नेक) अमल का सिला है और वे (जन्नत के) बालाख़ानों में चैन से (बैठे) होंगे। (37) और जो लोग हमारी आयतों के मुताल्लिक (उनको बातिल करने की) कोशिश कर रहे हैं (नबी को) हराने के लिए, ऐसे लोग अज़ाब में लाए जाएँगे।⁶ (38) आप (मोमिनो से)

1. यानी पैरवी करने वाले।
2. यानी जिनकी पैरवी की गई उनसे।
3. तदबीरों से मुराद शौक दिलाना और डराना है।
4. अगर शुब्हा हो कि बाज़ काफ़िरो ने तो अपने मानने वालों पर ज़बरदस्ती भी की है, फिर इसके क्या मायने “अ-नहनु सदद्नाकुम् (आख़िर तक)” तो जवाब यह है कि असल ईमान एतिकाद है, और उसका स्थान दिल है, वहाँ ज़बरदस्ती करना मुम्किन नहीं।
5. यानी इस हकीकत के वाकिफ़ नहीं कि रिज़्क के ज़्यादा होने का मदार अल्लाह के यहाँ मकबूल होने पर नहीं है, बल्कि इसका मदार दूसरी मसलहतों पर है।
6. ऊपर रिज़्क के कम-ज़्यादा होने का इरादे और चाहने से ताल्लुक होने को बातिल फरमाया था जैसा कि काफ़िरो का ख़्याला था, आगे इसी पर मोमिनो की इस्लाह का एक मज़मून बयान फरमाते हैं। जिसका हासिल यह है कि माल का कम-ज़्यादा होना महज़ इरादे और चाहने पर है, तो मोमिन को चाहिए कि दिल को उसके साथ ज़्यादा न लगाए और काफ़िरो की तरह उसको मकसूद न समझे, बल्कि उसको अल्लाह की रिज़ा और निकटता के हासिल होने का ज़रिया बनाए जो कि असल मकसूद है।

फरमा दीजिए कि मेरा रब अपने बन्दों में से जिसको चाहे ज्यादा रोजी देता है और जिसको चाहे तंगी से देता है,¹ और जो चीज़ तुम (अल्लाह के हुक्म के मौकों में) खर्च करोगे, सो वह (यानी अल्लाह तआला) उसका बदला देगा, और वह सबसे बेहतर रोजी देने वाला है।² (39) और (वह दिन जिक्र करने के काबिल है) जिस दिन अल्लाह तआला उन सबको (कियामत के मैदान में) जमा फरमाएगा। फिर फरिश्तों से इरशाद फरमाएगा, क्या ये लोग तुम्हारी इबादत किया करते थे? (40) वे अर्ज़ करेंगे कि आप पाक हैं, हमारा तो आपसे ताल्लुक है न कि इनसे, बल्कि ये लोग शैतानों को पूजा करते थे, उनमें अक्सर लोग उन्हीं के मोतकिद थे। (41) सो (काफिरों से कहा जाएगा) आज तुम (इबादत करने वाले और जिनकी इबादत की जाती थी सबके सब) में से न कोई किसी को नफ़ा पहुँचाने का इख्तियार रखता है और न नुकसान पहुँचाने का, और (उस वक़्त) हम ज़ालिमों (यानी काफिरों) से कहेंगे कि जिस दोज़ख के अज़ाब को तुम झुठलाया करते थे (अब) उसका मज़ा चखो। (42) और जब उन लोगों के सामने हमारी आयतें जो (हक़ और-हिदायत वाली होने की सिफ़त में) साफ़-साफ़ पढ़ी जाती हैं, तो ये लोग (पढ़ने वाले यानी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बारे में) कहते हैं (अल्लाह हमें अपनी पनाह में रखे) कि यह महज़ एक ऐसा शख्स है जो यूँ चाहता है कि तुमको उन चीज़ों (की इबादत) से रोक दे जिनको (पहले से) तुम्हारे बड़े पूजते थे,³ और (कुरआन के बारे में) कहते हैं (अल्लाह की पनाह) कि यह महज़ एक घड़ा हुआ झूठ है। और ये काफिर इस हक़ चीज़ (यानी कुरआन) के मुताल्लिक जबकि वह उनके पास पहुँचा यूँ कहते हैं कि यह महज़ एक खुला जादू है। (43) और हमने उनको किताबें नहीं दी थीं कि उनको पढ़ते-पढ़ाते हों, और (इसी तरह) हमने आपसे पहले उनके पास कोई डराने वाला (यानी पैगम्बर) नहीं भेजा था। (44) और उनसे पहले जो (काफिर) लोग थे उन्होंने झुठलाया था और ये (अरब के मुशिरक लोग) तो उस सामान के जो हमने उनको दे रखा था, दसवें हिस्से को भी नहीं पहुँचे।⁴ गरज़ उन्होंने मेरे रसूलों को झुठलाया, सो (देखो) मेरा (उनपर) कैसा अज़ाब हुआ। (45) ♦

आप कहिए कि मैं तो सिर्फ़ एक बात समझता हूँ,⁵ वह यह कि तुम (सिर्फ़) खुदा के वास्ते खड़े हो जाओ, दो-दो⁶ और एक-एक, फिर सोचो कि तुम्हारे उस साथी को जुनून (तो) नहीं है। वह तो तुमको एक सख़्त अज़ाब आने से पहले डराने वाला है। (46) आप कह दीजिए कि मैंने तुमसे (इस तब्लीग़ पर) कुछ मुआवज़ा माँगा हो तो वह तुम्हारा ही रहा,⁷ मेरा मुआवज़ा तो बस अल्लाह तआला ही के ज़िम्मे है, और वही हर चीज़ पर इत्तिला रखने वाला है।⁸ (47) आप कह दीजिए कि मेरा रब हक़ बात (यानी ईमान) को (कुफ़

1. इस सूरत में रोक लेने से रिज़्क बढ़ नहीं सकता, और शरीअत के हुक्म के मुताबिक़ खर्च करने से घट नहीं सकता। पस माल से ज्यादा ताल्लुक मत रखो बल्कि जहाँ-जहाँ अल्लाह के, घर वालों और बाल-बच्चों के और फ़कीरों व ज़रूरतमन्दों के हुक्क और दूसरी जगहों में खर्च करने का हुक्म है बेधड़क खर्च करते रहो कि उससे जितना रिज़्क तय हो चुका है उसमें तो कमी का नुकसान न होगा, और आखिरत का नफ़ा होगा।

2. “राजिकी-न” बहुवचन लाना इस एतिबार से है कि जो लोग ज़ाहिर में अपने हाथ से देते-दिलाते हैं उनको मजाज़न राजिक़ करार दे दिया गया। और चूँकि अल्लाह तआला हकीकी राजिक़ है इसलिए उसका “सबसे बेहतर रोजी देने वाला” होना ज़ाहिर है।

3. उन कमबख्तों का मतलब यह था कि यह नबी नहीं, और इनका बुलाना और दावत देना अल्लाह की जानिब से नहीं बल्कि इसमें खुद इनकी जाती गरज़ ओहदा व सरदारी हासिल करने की है।

4. यानी उनके जैसी कुव्वत, उनके जैसी उम्र, उनके जैसी मालदारी इनको नहीं मिली जो कि ग़ुरुर और घमण्ड का ज़रिया होता है।

5. इससे हक़ वाज़िह हो जाएगा, बस इसको कर लो।

6. यानी तैयार हो जाओ।

7. यानी तुम अपने ही पास रखो। यह मुहावरे में अज़्र माँगने का ज्यादा ज़ोरदार अन्दाज़ में इनकार करना है। (शेष तफ़सीर पृष्ठ 784 पर)

पर) ग़ालिब कर रहा है, (और) वह तमाम ग़ैब की बातों और चीज़ों को जानता है। (48) आप कह दीजिए कि (दीने) हक़ आ गया और (दीने) बातिल न करने का रहा न धरने का।¹ (49) आप कह दीजिए कि अगर (मसलान् मान लें और फ़र्ज़ कर लें) मैं गुमराह हो जाऊँ तो मेरी गुमराही मुझ ही पर वबाल होगी, और अगर मैं (सही) रास्ते पर हूँ तो यह इस कुरआन की बदौलत है जिसको मेरा रब मेरे पास भेज रहा है। वह सब कुछ सुनता (और) बहुत नज़दीक है। (50) और अगर आप वह वक़्त देखें (तो आपको हैरत हो) जबकि काफ़िर लोग घबराए फ़िरेंगे, फिर निकल भागने की कोई सूरत न होगी और पास के पास ही (यानी फ़ौरन) पकड़ लिए जाएँगे। (51) और कहेंगे कि हम हक़ दीन पर ईमान ले आए, और इतनी दूर जगह से (ईमान का) उनके हाथ आना कहाँ मुम्किन है? (52) हालाँकि पहले से (दुनिया में) ये लोग उसका इनकार करते रहे, और बेतहकीक़ बातें दूर-ही-दूर से हाँका करते थे।² (53) और उनमें और उनकी (ईमान क़बूल करने की) आरज़ू में एक आड़ कर दी जाएगी,⁴ जैसा कि उनके हम-ख्यालों के साथ (भी) यही (बर्ताव) किया जाएगा जो उनसे पहले थे, क्योंकि ये सब बड़े शक़ में थे जिसने इनको दुविधा में डाल रखा था। (54) ♦

35 सूर: फ़ातिर 43

सूर: फ़ातिर मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 45 आयतें और 5 रुकूअ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

पूरी की पूरी⁵ तारीफ़ (उसी) अल्लाह को लायक़ है जो आसमान और ज़मीन का पैदा करने वाला है। जो फ़रिश्तों को पैग़ाम पहुँचाने वाला बनाने वाला है,⁶ जिनके दो-दो और तीन-तीन और चार-चार पर वाले बाजू हैं। वह पैदाइश में जो चाहे ज़्यादा कर देता है, बेशक़ अल्लाह हर चीज़ पर कादिर है। (1) अल्लाह जो रहमत (बारिश वगैरह) लोगों के लिए खोल दे, सो उसका कोई बन्द करने वाला नहीं। और जिसको बन्द कर दे, सो उसके (बन्द करने के) बाद उसका कोई जारी करने वाला नहीं, और वही ग़ालिब, हिक़मत वाला है। (2) ऐ लोगो! तुमपर जो अल्लाह के एहसान हैं उनको याद करो, (शुक्र करो और ग़ौर करो कि) क्या अल्लाह तआला के सिवा कोई पैदा करने वाला है जो तुमको आसमान और ज़मीन से रिज़्क पहुँचाता हो?⁷ उसके सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं, सो तुम (शिक़र करके) कहाँ उल्टे जा रहे हो। (3) और अगर ये लोग आपको झुठलाएँ

(पृष्ठ 782 का शेष)

8. बदले में माल और ओहदा यानी सरदारी सब आ गया, क्योंकि इन दोनों ही चीज़ों में अज़्र बनने की सलाहियत है। मतलब यह कि मैं तुमसे किसी गरज़ का तालिब नहीं हूँ।

1. असल मक़सूद मुखातबीन को सुनाना है कि बावजूद हक़ सामने आ जाने और वाज़ेह हो जाने के अगर तुमने हक़ का इत्तिबा न किया तो तुम भुगतोगे, मेरा क्या बिगड़ेगा। और अगर राह पर आ गए तो यह राह पर आना भी उस दीने हक़ की पैरवी के सबब होगा जिसका हक़ होना वक़््त के ज़रिए साबित है। पस तुमको चाहिए कि सही रास्ते पर आने के लिए इस दीन को इख़्तियार करो।

2. यानी दारुल-अमल (अमल करने की जगह) की वजह से ईमान लाने की जगह दुनिया थी जो बड़ी दूर हो गई। अब आख़िरत में जो कि दारुल-जज़ा (बदला मिलने की जगह) है, ईमान मक़बूल नहीं।

3. दूर का मतलब यह है कि उसकी तहकीक़ से दूर थे। यानी दुनिया में तो कुफ़्र करते रहे अब ईमान सूझा है, और उसके मक़बूल होने की आरज़ू है।

4. यानी उनकी आरज़ू पूरी न होगी।

5. इस सूर: का ज़्यादा हिस्सा तौहीद को साबित करने और शिक़र को बातिल करने में है। और बाज़ आयतों में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को तसल्ली दी गयी है। और बाज़ आयतों में आमाज़ के फ़ायदों और नुक़सानों और बाज़ आयतों में कुफ़्र के बुराई और उसपर सज़ा की धमकी व डॉट है। (शेष तफ़सीर पृष्ठ 786 पर)

तो (आप गुमं न करें, क्योंकि) आपसे पहले भी बहुत-से पैगम्बर झुठलाए जा चुके हैं, और सब मामलात अल्लाह ही के सामने पेश किए जाएंगे। (4) ऐ लोगो! अल्लाह तआला का (यह) वायदा ज़रूर सच्चा है। सो ऐसा न हो कि यह दुनियावी ज़िन्दगी तुमको धोखे में डाले रखे,¹ और ऐसा न हो कि तुमको धोखेबाज़ शैतान अल्लाह से धोखे में डाल दे। (5) यह शैतान बेशक तुम्हारा दुश्मन है, सो तुम उसको (अपना) दुश्मन (ही) समझते रहो। वह तो अपने गिरोह को महज़ इसलिए (बातिल की तरफ़) बुलाता है ताकि वे लोग दोज़खियों में से हो जाएँ। (6) (पस) जो लोग काफ़िर हो गए उनके लिए सख़्त अज़ाब है, और जो लोग ईमान लाए और अच्छे काम किए उनके लिए (गुनाहों की) बख़्शिश और ईमान पर बड़ा अज़्र है। (7) ♦

तो क्या ऐसा शख्स जिसको उसका बुरा अमल अच्छा करके दिखाया गया, फिर वह उसको अच्छा समझने लगा (यानी काफ़िर), और ऐसा शख्स जो बुरे को बुरा समझता है (यानी मोमिन), कहीं बराबर हो सकते हैं?² सो अल्लाह जिसको चाहता है गुमराह करता है और जिसको चाहता है हिदायत देता है। सो उनपर अफ़सोस करके कहीं आपकी जान न जाती रहे, अल्लाह को उनके सब कामों की ख़बर है। (8) और अल्लाह ऐसा (कुदरत वाला) है जो (बारिश से पहले) हवाओं को भेजता है, फिर वे (हवाएँ) बादलों को उठाती हैं, फिर हम उस बादल को ज़मीन के सूखे टुकड़े की तरफ़ हाँक ले जाते हैं, फिर हम उसके (पानी के) ज़रिए से ज़मीन को ज़िन्दा करते हैं, इसी तरह (कियामत में आदमियों का) जी उठना है।³ (9) जो शख्स इज़्ज़त हासिल करना चाहे तो पूरी की पूरी इज़्ज़त खुदा ही के लिए है।⁴ अच्छा कलाम उसी तक पहुँचता है और अच्छा काम उसको पहुँचाता है।⁵ और जो लोग (उसके खिलाफ़) बुरी-बुरी तदबीरें कर रहे हैं उनको सख़्त अज़ाब होगा,⁶ और उन लोगों का यह मक़्र नेस्तनाबूद हो जाएगा।⁷ (10) और अल्लाह ने तुमको (ज़िम्नी तौर पर) मिट्टी से पैदा किया है, फिर (मुस्तक़िल तौर पर) नुत्फ़े से पैदा किया, फिर तुमको जोड़े-जोड़े बनाया।⁸ और किसी औरत को न गर्भ रहता है और न वह जन्म देती है मगर सब उसकी इत्तिला से होता है।⁹ और (इसी तरह) न किसी की उम्र ज़्यादा (मुकर्रर) की जाती है और न किसी की उम्र कम (मुकर्रर) की जाती है मगर ये सब लौहे-महफूज़ में होता है। यह सब अल्लाह को आसान है। (11) और दोनों दरिया बराबर नहीं हैं (बल्कि) एक

(पृष्ठ 784 का शेष) 6. पैग़ाम से मुराद अम्बिया अलैहिमुस्सलाम की तरफ़ वहन लाना है, चाहे वह अहकाम से मुताल्लिक हो या खुशख़बरी वगैरह हों।

7. यानी न कोई पैदा करने वाला है जो कि ईजाद करने की नेमत है, और न कोई रिज़्क देने वाला है जो कि बाक़ी रखने की नेमत है। पस जब वह हर तरह कामिल है तो यकीनन उसके सिवा कोई इबादत के लायक भी नहीं।

1. कि उसमें मशगूल होकर उस वायदा किए गए दिन से गाफ़िल रहो।

2. पहले शख्स से मुराद काफ़िर है जो शैतान के बहकाने और गुमराह करने से बातिल को हक़ और नुक़सान पहुँचाने वाली चीज़ को नफ़ा देनी वाली समझता है। और दूसरे शख्स से मुराद मोमिन है जो नबियों की इत्तिबा और शैतानों की मुख़ालफ़त करने से बातिल को बातिल, हक़ को हक़, नुक़सान देने वाली चीज़ को नुक़सान देनी वाली और नफ़ा देनी वाली को नफ़ा देनी वाली जानता है। यानी ये दोनों बराबर कहाँ हुए? बल्कि एक जहन्नमी और एक जन्नती है।

3. समान बताने (एक जैसा होने) की वजह जाहिर है कि दोनों में एक ख़त्म हो जाने वाली सिफ़त का दोबारा पैदा करना है।

4. इसलिए उसको चाहिए कि अल्लाह से इज़्ज़त हासिल करे।

5. अच्छे कलाम में कलिमा-ए-तौहीद और अल्लाह तआला के तमाम ज़िक़्र और अच्छे काम में दिल से तस्दीक़ और जाहिर व बातिल के तमाम नेक आमाल दाख़िल हैं। और पहुँचना (यानी अल्लाह की तरफ़ जाना) आम है, सिर्फ़ कबूल होने को भी, और मुकम्मल तौर पर कबूल होने को। (शेष तफ़सीर पृष्ठ 788 पर)

तो मीठा प्यास बुझाने वाला है, जिसका पीना आसान है, और एक खारा कड़वा है, और तुम हर एक (दरिया) से (मछलियाँ निकालकर उनका) ताज़ा गोश्त खाते हो, (तथा) ज़ेवर (मोती) निकालते हो जिसको तुम पहनते हो। और तू कश्तियों को उसमें देखता है पानी को फाड़ती हुई चली जाती हैं, ताकि तुम (उनके ज़रिए से) उसकी रोज़ी ढूँढो और ताकि तुम शुक्र अदा करो। (12) वह रात को दिन में दाखिल कर देता है और दिन को रात में दाखिल कर देता है।¹ और (जैसे यह कि) उसने सूरज और चाँद को काम में लगा रखा है, हर एक मुक़र्ररा वक़्त तक² चलते रहेंगे। यही अल्लाह (जिसकी यह शान है) तुम्हारा परवर्दिगार है, उसी की हुक्मत है और उसके सिवा जिनको तुम पुकारते हो वे तो खजूर की गुठली के छिलके के बराबर भी इख़्तियार नहीं रखते। (13) अगर तुम उनको पुकारो भी तो वे तुम्हारी पुकार (पहले तो) सुनेंगे नहीं, और अगर (फ़र्ज़ कर लो कि) सुन भी लें तो तुम्हारा कहना न करेंगे। और क़ियामत के दिन वे (खुद) तुम्हारे शिर्क करने की मुख़ालफ़त करेंगे, और तुझको ख़बर रखने वाले की बराबर कोई नहीं बतलाएगा।³ ▲ (14) ♦

ऐ लोगो! तुम (ही) खुदा तआला के मोहताज हो और अल्लाह (तो) बेपरवाह (और खुद तमाम) ख़ूबियों वाला है। (15) अगर वह चाहे तुमको फ़ना कर दे और एक नई मख़्लूक पैदा कर दे। (16) और यह बात अल्लाह तआला को कुछ मुश्किल नहीं। (17) और कोई दूसरे का (गुनाह का) बोझ न उठाएगा। और अगर कोई बोझ का लदा हुआ (यानी कोई गुनाहगार) किसी को अपना बोझ उठाने के लिए बुलाएगा (भी) तब भी उसमें से कुछ भी बोझ न बटाया जाएगा अगरचे वह शख्स करीबी रिश्तेदार ही (क्यों न) हो। आप तो सिर्फ़ ऐसे लोगों को डरा सकते हैं जो बेदेखे अपने रब से डरते हैं और नमाज़ की पाबन्दी करते हैं।⁴ और जो शख्स पाक होता है वह अपने लिए पाक होता है, और खुदा की तरफ़ लौटकर जाना है। (18) और अन्धा और आँखों वाला बराबर नहीं हो सकते (19) और न अंधेरा और रोशनी (20) और न छाँव और धूप।⁵ (21) और ज़िन्दे और मुर्दे बराबर नहीं हो सकते।⁶ अल्लाह जिसको चाहता है सुनवा देता है, और आप उन लोगों

(पृष्ठ 786 का शेष) 6. यह उनकी ज़िल्लत का सबब होगा, और उनके ख़्याली खुदा उनको ख़ाक इज़्जत न दे सकेंगे। बल्कि उल्टे वे खुद उनके ख़िलाफ़ हो जाएँगे।

7. यानी उन तदबीरों में उनको कामयाबी न होगी। चुनाँचे ऐसा ही हुआ कि वे इस्लाम को मिटाना चाहते थे खुद ही मिट गए।

8. यानी कुछ नर और कुछ मादा बनाए।

9. यानी उसको पहले से सबकी ख़बर होती है।

1. जिससे दिन और रात के घटने-बढ़ने के मुताल्लिक़ फ़ायदे हासिल होते हैं।

2. यानी क़ियामत के दिन तक।

3. ऊपर तौहीद का ज़िक्र था। चूँकि काफ़िर लोग उसका इनकार करते थे और उस इनकार से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ग़म भी होता था, इसलिए आगे इनकार से हक़ तआला का नुक़सान न होना बल्कि खुद उन काफ़िरों ही का नुक़सान होना, और मान लेने से हक़ तआला का कुछ नफ़ा न होना बल्कि खुद उन्हीं का नफ़ा होना, और दुनिया में उस नुक़सान का अन्देश और आख़िरत में उसके सामने आने और ज़ाहिर होने को बयान करके काफ़िरों को ख़बरदार करने और उससे डराने और उसके बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ग़म करने पर आपकी तसल्ली का मज़मून है।

4. मतलब यह है कि हक़ के तालिब को नफ़ा हुआ करता है। ये लोग हक़ के तालिब ही नहीं, इनसे उम्मीद न रखिए।

5. यानी उन लोगों से क्या उम्मीद रखी जाए कि उनका समझना मोमिनों जैसा समझना हो, और उस समझने से मोमिनों की तरह ये भी हक़ को कबूल कर लें, और हक़ को कबूल करने के दीनी फ़ायदों में भी ये लोग शरीक हो जाएँ। क्योंकि मोमिनों की मिसाल हक़ को समझने में देखने वाले के जैसी है, और उनकी मिसाल हक़ के न समझने में अन्धों जैसी है। (शेष तफ़सीर पृष्ठ 790 पर)

को नहीं सुना सकते जो कब्रों में (दफन) हैं। (22) आप तो सिर्फ डराने वाले हैं। (23) हम ही ने आपको (दीने) हक देकर खुशखबरी सुनाने वाला और डर सुनाने वाला बनाकर भेजा है। और कोई उम्मत ऐसी नहीं हुई जिसमें कोई डर सुनाने वाला न गुज़रा हो। (24) और अगर ये लोग आपको झुठलाएँ तो जो लोग उनसे पहले गुज़र चुके हैं उन्होंने भी झुठलाया था, (और) उनके पास भी उनके पैगम्बर मोजिज़े और सहीफे और रोशन किताबें लेकर आए थे। (25) फिर मैंने उन काफिरों को पकड़ लिया। सो (देखो) मेरा कैसा अज़ाब हुआ। (26) ♦

(ऐ मुखातव!) क्या तूने इस बात पर नज़र नहीं की कि अल्लाह ने आसमान से पानी उतारा, फिर हमने उसके ज़रिए से मुख्तलिफ़ रंगतों के फल निकाले। और (इसी तरह) पहाड़ों के भी मुख्तलिफ़ हिस्से हैं- (बाज़े) सफ़ेद, (वाज़े) सुर्ख़ कि उनकी भी रंगतें अलग-अलग हैं। (और बाज़े न सफ़ेद न सुर्ख़ बल्कि) बहुत गहरे काले। (27) और इसी तरह आदमियों और जानवरों और चौपायों में भी बाज़ ऐसे हैं कि उनकी रंगतें अलग-अलग हैं। खुदा से उसके वही बन्दे डरते हैं जो (उसकी बड़ाई का) इल्म रखते हैं, वाकई अल्लाह तआला ज़वरदस्त, बड़ा बख़्शने वाला है।¹ (28) जो लोग अल्लाह की किताब की तिलावत (और साथ ही उस पर अमल भी) करते रहते हैं और नमाज़ की पाबन्दी रखते हैं, और जो कुछ हमने उनको अज़ा फ़रमाया है उसमें से छुपे और खुले तौर पर खर्च करते हैं, वे ऐसी तिज़ारत के उम्मीदवार हैं जो कभी मद्धम और फ़ीकी न होगी। (29) ताकि उनको उनकी उजरतें (भी) पूरी-पूरी दें और उनको अपने फज़ल से और ज़्यादा (भी) दें। बेशक वह बड़ा बख़्शने वाला, बड़ा क़द्र करने वाला है। (30) और यह किताब जो हमने आपके पास वहा के तौर पर भेजी है, यह बिल्कुल ठीक है जो कि अपने से पहली किताबों की भी तस्दीक़ करती है। अल्लाह तआला अपने बन्दों की (हालत की) पूरी ख़बर रखने वाला, ख़ूब देखने वाला है। (31) फिर यह किताब हमने उन लोगों के हाथों में पहुँचाई जिनको हमने अपने (तमाम दुनिया के) बन्दों में से पसन्द फ़रमाया,² फिर बाज़े तो उनमें अपनी जानों पर जुल्म करने वाले हैं और बाज़े उनमें दरमियानी दर्जे के हैं, और बाज़े उनमें खुदा की तौफ़ीक़ से नेकियों में तरक्की किए चले जाते हैं। यह बड़ा फज़ल है।³ (32) वे बागात हैं हमेशा रहने के जिनमें

(पृष्ठ 788 का शेष) और इसी तरह मोमिनों ने हक़ को समझने और पाने के ज़रिए से जिस हिदायत के रास्ते को इख़्तियार किया है उस हक़ रास्ते की मिसाल नूर के जैसी है, और काफ़िर ने हक़ को न समझने और उसको कबूल न करने से जिस रास्ते को इख़्तियार किया है उसकी मिसाल अन्धेरे के जैसी है। और इसी तरह जों फल जन्मत वग़ैरह इस हक़ तरीक़े पर मुरतब होगा उसकी मिसाल ठन्डे साये के जैसी है, और जो नर्ताजा और फल जहन्नम वग़ैरह बातिल तरीक़े पर मुरतब होगा उसकी मिसाल जलती धूप के जैसी है। पस न उनका और मोमिनों का समझना बराबर हुआ और न उनका तरीक़ा और न उस तरीक़े का फल और नतीजा।

6. जब ये मुर्दे हैं तो मुर्दों को ज़िन्दा करना खुदा की कुदरत में है, बन्दे की कुदरत में नहीं।

1. पस अल्लाह से डरना और खौफ़ इज़्ज़त का सबब भी है और बख़्शिश का भी।

2. इससे मुसलमान मुराद है जो इस इमान की हैसियत से तमाम दुनिया वालों में अल्लाह के नज़दीक़ मक़बूल है। अगरवे उनमें कोई किसी दूसरी वजह से जैसे आमाज़ का ख़राब होना वग़ैरह, मलामत (डॉट-डपट और बुरा-भला कहने) का सबब भी हो। मतलब यह है कि मुसलमानों के हाथों में वह किताब पहुँचाई।

3. क्योंकि उसपर अमल करने की बदीलत कैसे अज़ व फज़ल के हक़दार हो गए।

ये लोग दाखिल होंगे (और) उनको सोने के कंगन और मोती पहनाए जाएँगे, और वहाँ उनका लिबास रेशम का होगा। (33) और कहेंगे अल्लाह का लाख-लाख शुक्र है जिसने हमसे (रंज और) ग़म दूर किया, बेशक हमारा परवर्दिगार बड़ा बख़्शने वाला, कद्रदान है। (34) जिसने हमको अपने फ़ज़ल से हमेशा रहने के ठिकाने में ला उतारा, जहाँ हमको न कोई परेशानी पहुँचेगी और न हमको कोई ख़स्तगी पहुँचेगी। (35) और (उनके विपरीत) जो लोग काफ़िर हैं उनके लिए दोज़ख़ की आग है, न तो उनकी मौत आएगी कि मर ही जाएँ और न उनसे दोज़ख़ का अज़ाब ही हल्का किया जाएगा। हम हर काफ़िर को ऐसी ही सज़ा देते हैं। (36) और वे लोग उस (दोज़ख़) में चिल्लाएँगे कि ऐ हमारे परवर्दिगार! हमको (यहाँ से) निकाल लीजिए, हम (अब ख़ूब) अच्छे (-अच्छे) काम करेंगे, उन कामों के उलट जो किया करते थे। क्या हमने तुमको इतनी उम्र न दी थी कि जिसको समझना होता वह समझ सकता?¹ और तुम्हारे पास डराने वाला भी पहुँचा था। सो (उसे न मानने का) मज़ा चखो, कि ऐसे ज़ालिमों का (यहाँ) कोई मददगार नहीं। (37) ♦

बेशक अल्लाह तआला (ही) जानने वाला है आसमानों और ज़मीन की छुपी चीज़ों का। बेशक वही जानने वाला है दिल की बातों का। (38) वही ऐसा है जिसने तुमको ज़मीन में आबाद किया।² सो जो शख्स कुफ़्र करेगा उसके कुफ़्र का वबाल उसी पर पड़ेगा,³ और काफ़िरों के लिए उनका कुफ़्र उनके परवर्दिगार के नज़दीक नाराज़ी ही बढ़ने का सबब हो जाता है, और (साथ ही) काफ़िरों के लिए उनका कुफ़्र घाटा ही बढ़ने का सबब होता है। (39) आप कहिए कि तुम अपने बनाए हुए शरीकों का हाल तो बताओ जिनको तुम खुदा के सिवा पूजा करते हो। यानी मुझको यह बतलाओ कि उन्होंने ज़मीन का कौन-सा हिस्सा बनाया है, या उनका आसमान (बनाने) में कुछ साझा है,⁴ या हमने उनको कोई किताब दी है कि ये उसकी किसी दलील पर कायम हों,⁵ बल्कि ये ज़ालिम एक-दूसरे से ख़ालिस धोखे की बातों का वायदा करते आए हैं।⁶ (40) यकीनी बात है कि अल्लाह तआला आसमानों और ज़मीन को थामे हुए है कि वे मौजूदा हालत को छोड़ न दें। और अगर (मान लो) वे मौजूदा हालत को छोड़ दें तो फिर खुदा के सिवा और कोई उनको थाम भी नहीं सकता, वह हलीम है, मग़फ़िरत करने वाला है। (41) और उन (कुरैश के) काफ़िरों ने बड़ी ज़ोरदार कसम खाई थी कि

1. इससे बालिग़ होने की उम्र मुराद है कि उसमें ज़रूरत के मुताबिक़ पूरी समझ हासिल हो जाती है, इसी लिए उसमें मुकल्लफ़ हो जाता है।
2. इन दलीलों और नेमतों का तकाज़ा यह था कि दलील पकड़ते और शुक्र अदा करते हुए तौहीद और फ़रमाँबरदारी इख़्तियार करते, मगर बाज़े इसके ख़िलाफ़ कुफ़्र व मुख़ालफ़त पर अड़े हुए हैं।
3. किसी दूसरे का क्या बिगड़ता है।
4. ताकि अक्ली दलील से उनका इबादत का हक़दार होना साबित हो।
5. असल यह है कि न अक्ली दलील है न नक्ली दलील है।
6. उनके बड़ों ने उनको बे-सनद ग़लत बात बतला दी कि “ये अल्लाह के यहाँ हमारे सिफ़ारिशी हैं” हालाँकि हकीकत में वे बिल्कुल बेइख़्तियार हैं। पस वे इबादत के हक़दार भी नहीं। तो जब कुल मुख़्तार हक़ तआला है तो वही इबादत के काबिल भी है।

अगर उनके पास कोई डराने वाला आए तो वे हर-हर उम्मत से ज्यादा हिदायत कबूल करने वाले हों। फिर जब उनके पास एक पैगम्बर आ पहुँचे¹ तो बस उनकी नफरत ही को तरक्की हुई। (42) दुनिया में अपने को बड़ा समझने की वजह से और उनकी बुरी तदबीरों को,² और बुरी तदबीरों का (असली) वबाल उन तदबीर वालों ही पर पड़ता है। सो क्या ये उसी दस्तूर का इन्तिज़ार कर रहे हैं जो अगले (काफिर) लोगों के साथ होता रहा है।³ सो आप खुदा के (इस) दस्तूर को कभी बदलता हुआ न पाएँगे, और आप खुदा के दस्तूर को मुन्तकिल होता हुआ “यानी एक जगह से दूसरी जगह जाने वाला” न पाएँगे।⁴ (43) और क्या ये लोग ज़मीन में चले-फिरे नहीं, जिसमें देखते-भालते कि जो (इनकार करने वाले) लोग उनसे पहले गुज़र चुके उनका अन्जाम क्या हुआ? हालाँकि वे कुव्वत में इनसे भी बढ़े हुए थे। और खुदा तआला ऐसा नहीं है कि कोई चीज़ (ताकत वाली) उसको हरा दे, न आसमान में और न ज़मीन में, (क्योंकि) वह बड़े इल्म वाला (और) बड़ी कुदरत वाला है।⁵ (44) और अगर अल्लाह तआला (उन) लोगों पर उनके आमाल के सबब (फौरन) पकड़ फरमाने लगता तो रू-ए-ज़मीन पर एक जानदार को न छोड़ता, लेकिन अल्लाह तआला उनको एक मुर्कररा मीयाद (यानी कियामत) तक मोहलत दे रहा है। सो जब उनकी वह मीयाद आ पहुँचेगी (उस वक़्त) अल्लाह तआला अपने बन्दों को आप देख लेगा। (45) ♦

36 सूर: यासीन 41

सूर: यासीन मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 83 आयतें और 5 रुकूअ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

या-सीन् (1) कसम है कुरआन की जो हिकमत से भरा हुआ है। (2) कि बेशक आप पैगम्बरों में से हैं। (3) (और) सीधे रास्ते पर हैं। (4) यह कुरआन ज़बरदस्त, मेहरबान खुदा तआला की तरफ से नाज़िल किया गया है। (5) कि आप (पहले) ऐसे लोगों को डराएँ जिनके बाप-दादा नहीं डराए गए थे, सो इसी वजह से ये बेख़बर हैं। (6) उनमें से अक्सर लोगों पर (तकदीरी) बात साबित हो चुकी है। सो ये लोग (हरगिज़) ईमान न लाएँगे। (7) हमने उनकी गर्दनो में तौक डाल दिए हैं, फिर वे ठोड़ियों तक (अड़ गए) हैं, जिससे

1. यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम।

2. यानी तकब्बुर की वजह से आपकी पैरवी से शर्म तो हुई थी मगर यह भी न किया कि न पैरवी होती और न तकलीफ पहुँचाने के पीछे पड़ते, बल्कि आपको तकलीफ पहुँचाने की फ़िक्र में लग गए। चुनौचे हर वक़्त उनका इसी में लगे रहना मालूम और मशहूर है।

3. यानी सज़ा देना और हलाक करना।

4. मतलब यह है कि हक़ तआला का वायदा है कि काफ़िरो को अज़ाब होगा चाहे दुनिया में भी, चाहे सिर्फ़ आख़िरत में। और हक़ तआला का वायदा हमेशा सच्चा होता है। पस न यह शक़ व शुब्हा है कि उनको अज़ाब न हो, और न यह शक़ व शुब्हा कि दूसरों को होने लगे। इस तकरीर से मक़सद अज़ाब के वाक़ेअ होने की ताक़ीद है। (यानी अज़ाब ज़रूर होगा यह कोई ख़्याली बात नहीं)।

5. पस इल्म से अपने हर इरादे को नाफ़िज़ और लागू करने का तरीक़ा जानता है, और कुदरत से उसको नाफ़िज़ और लागू कर सकता है।

उनके सर ऊपर को उठ रहे हैं।¹ (8) और हमने एक आड़ उनके सामने कर दी और एक आड़ उनके पीछे कर दी, जिससे हमने (हर तरफ से) उनको (पदों में) घेर दिया, सो वे नहीं देख सकते। (9) और उनके हक में आपका डराना या न डराना दोनों बराबर हैं ये ईमान न लाएँगे। (10) पस आप तो सिर्फ ऐसे शख्स को डरा सकते हैं जो नसीहत पर चले और खुदा से बेदेखे डरे।² सो आप उसको मग़िफ़रत और उम्दा बदले की खुशख़बरी सुना दीजिए।³ (11) बेशक हम मुर्दों को ज़िन्दा करेंगे, और हम लिखते जाते हैं वे आमाल भी जिनको लोग आगे भेजते जाते हैं, और उनके वे आमाल भी जिनको पीछे छोड़ जाते हैं।⁴ और हमने हर चीज़ को एक वाज़ेह किताब में लिख दिया था।⁵ (12) ♦

और आप उनके सामने एक किस्सा यानी एक बस्ती वालों का किस्सा उस वक़्त का बयान कीजिए⁶ जबकि उस बस्ती में कई रसूल आए। (13) यानी जबकि हमने उनके पास (पहले) दो को भेजा, सो उन लोगों ने (पहले) दोनों को झूठा बतलाया, फिर तीसरे (रसूल) से ताईद की, सो उन तीनों ने कहा कि हम तुम्हारे पास भेजे गए हैं। (14) उन लोगों ने कहा कि तुम तो हमारी तरह (महज़) मामूली आदमी हो, और खुदा-ए-रहमान ने (तो) कोई चीज़ नाज़िल (ही) नहीं की, तुम खालिस झूठ बोलते हो। (15) उन रसूलों ने कहा कि हमारा परवर्दिगार जानता है कि बेशक हम तुम्हारे पास भेजे गए हैं। (16) और हमारे ज़िम्मे तो सिर्फ स्पष्ट तौर पर (हुक्म का) पहुँचा देना था।⁷ (17) वे लोग कहने लगे कि हम तो तुमको मन्हूस समझते हैं,⁸ अगर तुम बाज़ न आए तो हम पत्थरों से तुम्हारा काम तमाम कर देंगे, और तुमको हमारी तरफ से सख़्त तकलीफ़ पहुँचेगी। (18) उन रसूलों ने कहा कि तुम्हारी नहूसत तो तुम्हारे साथ लगी हुई है, क्या इसको नहूसत समझते हो कि तुमको नसीहत की जाए? बल्कि तुम (खुद अक्ल और शरीअत की) हद से निकल जाने वाले लोग हो।⁹ (19) और एक (मुसलमान) शख्स उस शहर के किसी दूर मक़ाम से दौड़ता हुआ आया (और) कहने लगा कि ऐ मेरी कौम! इन रसूलों की राह पर (ज़रूर) चलो। (20) ऐसे लोगों की राह पर चलो जो तुमसे कोई मुआवज़ा और सिला नहीं माँगते और वे खुद सही रास्ते पर हैं।¹⁰ (21)

1. यानी उठे रह गए, नीचे को नहीं हो सकते।
2. इसलिए कि डर ही से हक की तलब होती है, और तलब से पाना, और ये डरते ही नहीं।
3. इसी से इसपर भी दलालत हो गई कि जो गुमराही और हक से मुँह मोड़ने का जुर्म करेगा, वह मग़िफ़रत और अज़्र से महरूम और अज़ाब का मुस्तहिक है।
4. “मा कहमू” से मुराद जो काम अपने हाथ से किया और “आसा-रहुम” से मुराद वह असर जो उसके काम के सबब पैदा हुआ और मरने के बाद भी बाक़ी रहा। गरज़ ये सब लिखे जा रहे हैं और वहाँ इन सबपर जज़ा और सज़ा मुरत्तब हो जाएगी।
5. यानी लौहे-महफूज़ में।
6. ऊपर रिसालत का मसला मय तसल्ली देने के ज़िक्र किया गया था। आगे रिसालत की ताईद और झुठलाने वालों को डराने और धमकाने के लिए एक किस्सा ज़िक्र किया गया है, जो रिसालत के झुठलाने वालों की मलामत और निन्दा वग़ैरह पर ख़त्म किया गया है। जिससे उस मज़मून की भी ताईद हो गई जो सज़ा के बारे में ऊपर ज़िक्र किया गया था।
7. गरज़ यह कि हम अपना काम कर चुके, तुम न मानो तो हम मजबूर हैं।
8. मतलब यह होगा कि तमाम लोगों में एक फितना डाल दिया जिससे नुकसानात पहुँच रहे हैं, यह नहूसत है, और इस नहूसत के सबब तुम हो।
9. पस शरीअत की मुख़ालफ़त से तुमपर यह नहूसत आई, और अक्ल की मुख़ालफ़त से तुमने इसका सबब ग़लत समझा।
10. यानी खुद-गरज़ी जो पैरवी के लिए रुकावट है वह हट गई और हिदायत याफ़ता होना जो कि पैरवी को चाहता है वह मौजूद है, फिर पैरवी क्यों न की जाए।

तेईसवाँ पार: व मा लि-य

सूर: यासीन (आयत 22 से 83)

और मेरे पास कौन-सा उज़्र है कि मैं उस माबूद की इबादत न करूँ जिसने मुझको पैदा किया और तुम सबको उसी के पास लौटकर जाना है।¹ (22) क्या मैं अल्लाह तआला को छोड़कर और ऐसे-ऐसे माबूद करार दे लूँ कि अगर खुदा-ए-रहमान मुझको कुछ तकलीफ पहुँचाना चाहे तो न उन माबूदों की सिफारिश मेरे कुछ काम आए और न वे मुझको छुड़ा सकें। (23) अगर मैं ऐसा करूँ तो खुली गुमराही में जा पड़ा। (24) मैं तो तुम्हारे रब पर ईमान ला चुका, सो तुम (भी) मेरी बात-सुन लो। (25) इरशाद हुआ कि जा जन्नत में दाखिल हो, कहने लगा कि काश! मेरी कौम को यह बात मालूम हो जाती (26) कि मेरे परवर्दिगार ने मुझको बख्श दिया और मुझको इज़्ज़तदारों में शामिल कर दिया। (27) और हमने उस (शहीद) की कौम पर उसके बाद कोई (फरिश्तों का) लश्कर आसमान से नहीं उतारा और न हमको उतारने की ज़रूरत थी। (28) वह सज़ा बस एक सख्त आवाज़ थी और वे सब उसी दम (उससे) बुझकर (यानी मरकर) रह गए। (29) अफसोस ऐसे बन्दों के हाल पर, उनके पास कभी कोई रसूल नहीं आया जिसकी उन्होंने हँसी न उड़ाई हो। (30) क्या उन लोगों ने इसपर नज़र नहीं की कि हम उनसे पहले बहुत-सी उम्मतें ग़ारत कर चुके कि वे (फिर) उनकी तरफ (दुनिया में) लौटकर नहीं आते। (31) और उनमें कोई ऐसा नहीं जो मुज्त्ता तौर पर “यानी इकट्ठा होकर और जमा होकर” हमारे सामने हाज़िर न किया जाए। (32) ♦

और उन लोगों के लिए एक निशानी मुर्दा ज़मीन है। हमने उसको (बारिश से) ज़िन्दा किया और हमने उससे ग़ल्ले निकाले, सो उनमें से लोग खाते हैं। (33) और (तथा) हमने उसमें खजूरों और अंगूरों के बाग़ लगाए और (साथ ही) उसमें चश्मे जारी किए। (34) ताकि लोग बाग़ के फलों में से खाएँ, और उस (फल और ग़ल्ले) को उनके हाथों ने नहीं बनाया,² सो क्या शुक्र नहीं करते। (35) वह पाक ज़ात है जिसने तमाम मुकाबिल किस्मों को पैदा किया, ज़मीन में से उगने वाली चीज़ों में से भी,³ और (खुद) उन आदमियों में से भी, और उन चीज़ों में से भी जिनको (आम लोग) नहीं जानते।⁴ (36) और एक निशानी उनके लिए रात है,⁵ कि हम उस (रात) पर से दिन को उतार लेते हैं, सो यकायक वे लोग अन्धेरे में रह जाते हैं। (37) और (एक

1. असल मतलब यही है कि तुमको कौन-सा उज़्र है।

2. अगरचे बीज डालने का काम बज़ाहिर उन्हीं के हाथों होता हो, मगर फल और ग़ल्ले का पैदा करना खास खुदा ही का काम है।

3. चाहे मुकाबला एक जैसे होने का हो, जैसे एक-से ग़ल्ले एक-से फल, चाहे मुकाबला अलग और एक-दूसरे की ज़िद होने का हो, जैसे गेहूँ और जौ और खट्टे फल, या इससे भी ज़्यादा इख़्तिलाफ़ (यानी विभिन्नता) हो।

4. यानी लोग नहीं जानते कि आम मुकाबले के मफहूम के एतिबार से पोशीदा चीज़ों में भी कोई चीज़ मुकाबिल से ख़ाली नहीं, और इसी से हक़ तआला का बेमुकाबिल होना मालूम हो गया। गरज़ सब जोड़े मख़्लूक और वह उन सबका ख़ालिक।

5. अन्धेरे के असल होने की वजह से, गोया असल वक़्त वही था। और सूरज की रोशनी के सबब गोया उसको दिन ने छुपा लिया था।

निशानी) सूरज (है कि वह) अपने ठिकाने की तरफ चलता रहता है।¹ यह अन्दाज़ा बाँधा हुआ है उस (खुदा तआला) का जो ज़बरदस्त, इल्म वाला है। (38) और चाँद के लिए मन्ज़िलें मुक़रर कीं, यहाँ तक कि ऐसा रह जाता है जैसे ख़ज़ूर की पुरानी टहनी। (39) न सूरज की मजाल है कि चाँद को जा पकड़े और न रात दिन से पहले आ सकती है, और दोनों एक-एक दायरे में तैर रहे हैं। (40) और एक निशानी उनके लिए यह है कि हमने उनकी औलाद को भरी हुई कश्ती में सवार किया। (41) और हमने उनके लिए कश्ती ही जैसी ऐसी चीज़ें पैदा कीं जिनपर ये लोग सवार होते हैं। (42) और अगर हम चाहें तो उनको गर्क कर दें, फिर न तो कोई उनकी फ़रियाद को पहुँचने वाला हो और न ये ख़लासी “यानी छुटकारा और नजात” दिए जाएँ (43) मगर यह हमारी ही मेहरबानी है, और उनको एक मुक़ररा वक़्त तक फायदा देना (मन्ज़ूर) है। (44) और जब उन लोगों से कहा जाता है कि तुम लोग उस अज़ाब से डरो जो तुम्हारे सामने है और तुम्हारे (मरने के) पीछे “बाद” है, ताकि तुमपर रहमत की जाए (45) तो वे बिल्कुल परवाह नहीं करते, और उनके रब की आयतों में से कोई आयत भी उनके पास ऐसी नहीं आती, जिससे वे मुँह न मोड़ते हों। (46) और जब उनसे कहा जाता है कि अल्लाह ने जो कुछ तुमको दिया है उसमें से खर्च करो, तो ये कुफ़ार (उन) मुसलमानों से यूँ कहते हैं कि क्या हम ऐसे लोगों को खाने को दें जिनको अगर खुदा चाहे तो (बहुत कुछ) खाने को दे दे। तुम बिल्कुल खुली ग़लती में (पड़े) हो।² (47) और ये लोग (बतौर इनकार) कहते हैं कि यह वायदा कब होगा? अगर तुम सच्चे हो।³ (48) ये लोग बस एक सख़्त आवाज़ के मुन्तज़िर हैं जो उनको आ पकड़ेगी और वे सब आपस में लड़-झगड़ रहे होंगे। (49) सो न तो वसीयत करने की फुरसत होगी और न अपने घर वालों के पास लौटकर जा सकेंगे।⁴ (50) ♦

और (फिर दोबारा) सूर फूँका जाएगा, सो वे सब एकदम से क़ब्रों से (निकल-निकल कर) अपने रब की तरफ जल्दी से चलने लगेंगे। (51) कहेंगे कि हाय! हमारी कमबख़्ती हमको हमारी क़ब्रों से किसने उठाया?⁵ यह वही (क़ियामत) है जिसका रहमान ने वायदा किया था, और पैग़म्बर सच कहते थे। (52) बस वह एक ज़ोर की आवाज़ होगी जिससे एक बार ही में सब जमा होकर हमारे पास हाज़िर कर दिए जाएँगे। (53) फिर उस दिन किसी शख्स पर ज़रा जुल्म न होगा, और तुमको बस उन्हीं कामों का बदला मिलेगा जो तुम किया करते

1. यह आ़म है उस नुक्ते (बिन्दू) और जगह को भी जहाँ से चलकर सालाना दौरा करके फिर उसी नुक्ते पर जा पहुँचता है, और उस नुक्ते को भी जहाँ से निकल कर अपनी रोज़ाना की हरकत में वहाँ पहुँचकर गुरूब हो जाता है।
2. ग़रज़ न डराने से वे ईमान लाएँ न शौक दिलाने से।
3. ऊपर तौहीद का मज़मून और उसके साथ आख़िरत के अज़ाब से डराने का मुख्यसर ज़िक्र था। अब आख़िरत के हालात किसी क़द्र तफ़सील के साथ ज़िक्र किए गए हैं। और उसके अख़ीर में “व लौ नशाउ ल-तमस्ना.....आख़िर तक” से दुनिया में भी अज़ाब के आ जाने के अन्देशे से डरावा है, जिससे “मा बै-न ऐदीकुम” की किसी क़द्र शरह और खुलासा हो गया।
4. यानी जो जिस हाल में होगा उसी हाल में मर जाएगा।
5. इसलिए कि यहाँ के मुक़ाबले में तो वहाँ ही राहत में थे।

थे। (54) जन्नत वाले बेशक उस दिन अपने मशगलों में खुशदिल होंगे। (55) वे और उनकी बीवियाँ,¹ साथों में मसहरियों पर तकिया लगाए बैठे होंगे। (56) उनके लिए वहाँ (हर तरह के) मेवे होंगे, और जो कुछ माँगेगे उनको मिलेगा। (57) उनको मेहरबान रब की तरफ से सलाम फरमाया जाएगा।² (58) और ऐ मुजरिमो! आज (ईमान वालों से) अलग हो जाओ।³ (59) ऐ आदम (अलैहिस्सलाम) की औलाद! क्या मैंने तुमको ताकीद नहीं कर दी थी कि तुम शैतान की इबादत न करना, वह तुम्हारा खुला दुश्मन है। (60) और यह कि मेरी (ही) इबादत करना,⁴ यही सीधा रास्ता है। (61) और वह (शैतान) तुममें एक बड़ी मख्लूक को गुमराह कर चुका (है), सो क्या तुम नहीं समझते थे? (62) यह जहन्नम है जिसका तुमसे वायदा किया जाया करता था। (63) आज अपने कुफ़ के बदले में उसमें दाखिल हो। (64) आज हम उनके मुहों पर मुहर लगा देंगे,⁵ और उनके हाथ हमसे बोलेंगे और उनके पाँव गवाही देंगे, जो कुछ ये लोग किया करते थे। (65) और अगर हम चाहते तो (दुनिया ही में) उनकी आँखों को मलियामेट कर देते, फिर ये रास्ते की तरफ दौड़ते-फिरते, सो उनको कहाँ नज़र आता। (66) और अगर हम चाहते तो उनकी सूरतें बदल डालते, इस हालत से कि ये जहाँ हैं वहीं रह जाते, जिससे ये लोग न आगे को चल सकते और न पीछे को लौट सकते। (67) ♦

और हम जिसकी उम्र ज्यादा कर देते हैं तो उसको तबई हालत में उल्टा कर देते हैं,⁶ सो क्या वे लोग नहीं समझते? (68) और हमने आपको शायरी का इल्म नहीं दिया, और वह आपके लिए मुनासिब भी नहीं, वह तो महज़ नसीहत (का मज़मून) और एक आसमानी किताब है जो अहकाम को ज़ाहिर करने वाली है। (69) ताकि ऐसे शख्स को डराए जो ज़िन्दा हो और ताकि काफ़िरों पर (अज़ाब की) हुज्जत साबित हो जाए। (70) क्या उन लोगों ने इसपर नज़र नहीं की कि हमने उनके (फ़ायदे के) लिए अपने हाथ की बनाई हुई चीज़ों में से मवेशी पैदा किए, फिर ये लोग उनके मालिक बन रहे हैं। (71) और हमने उन मवेशियों को उनका ताबे बना

1. "अज़्वाजुहुम" में हूरें और ईमान वाली बीवियाँ दोनों मुराद हो सकती हैं।

2. यानी हक तआला खुद फरमाएँगे "अस्सलामु अलैकुम या अस्ललु जन्नति" (ऐ जन्नतियो! तुमपर सलाम हो)।

फ़ायदा: जन्नत में सलाम से मक़सद या तो महज़ इक्राम है या हमेशा की सलामती की खुशख़बरी और ख़बर देना है। पस यह शुब्हा न रहा कि जन्नतियों को तो सलामती पहले ही से हासिल है इस सलामती की दुआ में क्या नई बात हुई?

3. क्योंकि उनको जन्नत में भेजना है और तुमको दोज़ख़ में।

4. इबादत से मुराद मुतलक़ इताअत व फ़रमाँबरदारी है।

5. जिससे यह झूठा उम्र न कर सके।

6. तबई हालत से मुराद सुनने वाली, देखने वाली, महसूस करने वाली, काम करने वाली, हज़म करने वाली, बढ़ोतरी करने वाली वगैरह कुब्बतें हैं, और रंग व रोगन व हुस्न व ख़ूबसूरती हैं। और उल्टा करने से उनकी हालत का घटिया और पस्त दर्जे की तरफ़ बदल जाना मुराद है। पस 'आँखों को मलियामेट करना' और 'सूरतें बदल डालना' भी कामिल से नाकिस की तरफ़ एक किसिम की तब्दीली है।

दिया, सो उनमें बाज़े तो उनकी सवारियाँ हैं और बाज़ों को वे खाते हैं। (72) और उनमें उन लोगों के और भी नफे हैं, और पीने की चीज़ें भी हैं (यानी दूध), सो क्या ये लोग शुक्र नहीं करते। (73) और उन्होंने खुदा के सिवा और माबूद करार दे रखे हैं, इस उम्मीद पर कि उनको मदद मिले। (74) (लेकिन) वे उनकी कुछ मदद कर ही नहीं सकते, और वे उन लोगों के हक में एक (मुखालिफ़) फ़रीक़ हो जाएँगे जो हाज़िर किए जाएँगे। (75) तो उन लोगों की बातें आपके लिए रंजीदगी का सबब न होना चाहिए, बेशक हम सब जानते हैं जो कुछ ये दिल में रखते हैं और जो कुछ ज़ाहिर करते हैं। (76) क्या आदमी को यह मालूम नहीं कि हमने उसको नुत्फ़े से पैदा किया, सो वह खुलेआम एतिराज़ करने लगा। (77) और उसने हमारी शान में एक अजीब मज़मून बयान किया और अपनी असल को भूल गया। कहता है कि हड्डियों को (खास तौर पर) जबकि वे बोसीदा हो गई हों, कौन ज़िन्दा कर देगा? (78) आप जवाब दे दीजिए कि उनको वह ज़िन्दा करेगा जिसने पहली बार में उनको पैदा किया है, और वह सब तरह का पैदा करना जानता है। (79) वह ऐसा (कादिर) है कि (बाज़) हरे पेड़ से तुम्हारे लिए आग पैदा कर देता है, फिर तुम उससे और आग सुलगा लेते हो? (80) और जिसने आसमान और ज़मीन पैदा किए हैं, क्या वह इसपर कादिर नहीं कि उन जैसे आदमियों को (दोबारा) पैदा कर दे? ज़रूर कादिर है, और वह बड़ा पैदा करने वाला, ख़ूब जानने वाला है। (81) जब वह किसी चीज़ का इरादा करता है तो बस उसका मामूल तो यह है कि उस चीज़ को कह देता है कि हो जा, तो वह हो जाती है। (82) तो उसकी ज़ात पाक है जिसके हाथ में हर चीज़ का पूरा इख़्तियार है, और तुम सबको उसी के पास लौटकर जाना है। (83) ♦

37 सूर: साफ़ात 56

सूर: साफ़ात मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 182 आयतें और 5 रुकूअ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

कसम है उन फ़रिश्तों की जो सफ़ बाँधकर खड़े होते हैं। (1) फिर उन फ़रिश्तों की जो बन्दिश करने वाले हैं। (2) फिर उन फ़रिश्तों की जो ज़िक्र की तिलावत करने वाले हैं। (3) कि तुम्हारा माबूद (बरहक) एक है। (4) वह परवर्दिगार है आसमानों का और ज़मीन का और जो कुछ उनके दरमियान में है। (5) और परवर्दिगार है तुलूअ करने के मौकों का “यानी पूरब के उन स्थानों का जहाँ से सूरज निकलता है”। हम ही ने रौनक दी है इस तरफ़ वाले आसमान को एक अजीब सजावट यानी सितारों के साथ। (6) और हिफ़ाज़त भी

1. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि आस बिन वाइल एक बोसीदा हड्डी लेकर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और उसको चुटकी से मलकर कहने लगा कि क्या यह ऐसी हालत के बाद ज़िन्दा होगी? आपने फरमाया “हाँ! और तू दोज़ख़ में जाएगा”। इसपर “अ-व लम् यरल् इन्सानु” से सूर: के आख़िर तक की आयतें नाज़िल हुईं।
2. चुर्नॉचे अरब में एक पेड़ मर्ख़ था, और एक अफ़ार, उनसे चकमाक़ (यानी माचिस) का काम लेते थे। पस जब पानी में कि हरा होना उसी का असर है, आग पैदा कर देते हैं तो बेजान चीज़ में ज़िन्दगी पैदा करना क्या मुश्किल है।
3. इबादत में या हक़ तअ़ाला का हुक्म सुनने के वक़्त।
4. यानी शिहाबि-साकिब (चमकदार सितारा जो रात में टूटकर गिरता है) के ज़रिए से आसमानी ख़बरें लाने से शैतानों की बन्दिश करने वाले।

की है हर शरीर शैतान से। (7) वे शयातीन ऊपर के आलम की तरफ कान भी नहीं लगा सकते, और वे हर तरफ से मार कर धक्के दिए जाते हैं।¹ (8) और उनके लिए हमेशा का अज़ाब होगा। (9) मगर जो शैतान कुछ ख़बर ले ही भागे, तो एक दहकता हुआ शोला उसके पीछे लग लेता है।² (10) तो आप उनसे पूछिए कि ये लोग बनावट में ज्यादा सख़्त हैं या हमारी पैदा की हुई ये चीज़ें?³ (क्योंकि) हमने उन लोगों को चिपकती मिट्टी से पैदा किया है।⁴ (11) बल्कि आप तो ताज्जुब करते हैं और ये लोग मज़ाक उड़ाते हैं। (12) और जब उनको समझाया जाता है तो ये समझते नहीं। (13) और जब कोई मोजिज़ा देखते हैं तो (खुद) उसकी हँसी उड़ाते हैं। (14) और कहते हैं कि यह तो खुला जादू है। (15) (क्योंकि) भला जब हम मर गए और मिट्टी और हड्डियाँ हो गए तो क्या हम (फिर) ज़िन्दा किए जाएँगे? (16) और क्या हमारे अगले बाप-दादा भी? (17) आप कह दीजिए कि हाँ! (ज़रूर ज़िन्दा होंगे) और तुम ज़लील भी होंगे।⁵ (18) पस कियामत तो बस एक ललकार होगी (यानी दूसरी बार का सूर फूँका जाना), सो सब यकायक देखने-भालने लगेंगे। (19) और कहेंगे कि हाय! हमारी कमबख़्ती यह तो वही बदले का दिन मालूम होता है। (20) (इरशाद होगा कि हाँ) यह वही फैसले का दिन है जिसको तुम झुठलाया करते थे। (21) ♦

जमा कर लो ज़ालिमों को,⁶ और उनके हम मशरबों “यानी उन जैसे काम करने वालों और उनको साथियों” को और उन माबूदों को जिनकी वे लोग इबादत किया करते थे” (22) अल्लाह के अलावा। फिर उन सबको दोज़ख़ का रास्ता बतलाओ। ♦ (23) और (अच्छा) उनको (ज़रा) ठहराओ, उनसे कुछ पूछा जाएगा। (24) कि अब तुमको क्या हुआ एक-दूसरे की मदद नहीं करते। (25) बल्कि वे सब-के-सब उस दिन सर झुकाए (खड़े) होंगे। (26) और वे एक-दूसरे की तरफ़ मुतवज्जह होकर जवाब-सवाल (यानी झगड़ा) करने लगेंगे। (27) (चुनाँचे) पैरोकार कहेंगे कि हमपर तुम्हारी आमद बड़े ज़ोर की हुआ करती थी।⁷ (28) जिनकी पैरवी की जाती थी वे कहेंगे कि नहीं बल्कि तुम खुद ही ईमान नहीं लाए थे। (29) और हमारा तुम पर कोई ज़ोर तो था ही नहीं, बल्कि तुम खुद ही सरकशी किया करते थे। (30) सो हम सब पर ही हमारे रब की यह (हमेशा की “यानी शुरू में तय हो चुकी है वह”) बात साबित हो चुकी थी कि हम सबको मज़ा चखना है। (31) तो हमने तुमको बहकाया, हम खुद भी गुमराह थे। (32) तो वे सब-के-सब उस दिन

1. ग़रज़ ख़बर सुनने से पहले ही शोले बरसा दिये जाते हैं। और सुनने का इरादा करके भी वह ख़बर के सुनने में नाकाम रहता है।
2. पस ख़बर सुनने के बाद भी वह ख़बर दूसरों को सुनाने और पहुँचाने में नाकाम रहता है।
3. हकीकत में यही चीज़ें ज्यादा सख़्त हैं।
4. ग़रज़ जब ताकतवर और सख़्त मख़्लूक़ात के इब्तिदा में पैदा करने पर हम कादिर हैं तो कमज़ोर मख़्लूक़ के दोबारा पैदा करने पर कुदरत क्यों न होगी?
5. जो शख्स दलील के बाद भी दुश्मनी और बैर की वजह से इनकार करे उसके लिए ऐसा ही जवाब मुनासिब है।
6. यानी जो कुफ़ व शिर्क की बुनियाद डालने वाले और मुक्तदा थे।
7. यानी शयातीन व बुत।
8. यानी हमपर ख़ूब ज़ोर डालकर हमारे गुमराह करने का एहतिमाम और उसमें कोशिश किया करते थे।

अज़ाब में (भी) शरीक रहेंगे। (33) (और) हम ऐसे मुजरिमों के साथ ऐसा ही किया करते हैं। (34) वे लोग ऐसे थे कि जब उनसे कहा जाता था कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद बरहक नहीं, तो तकब्बुर किया करते थे। (35) और कहा करते थे कि क्या हम अपने माबूदों को एक दीवाने शायर की वजह से छोड़ देंगे? (36) बल्कि एक सच्चा दीन लेकर आए हैं, और दूसरे पैगम्बरों की तस्दीक करते हैं। (37) तुम सबको दर्दनाक अज़ाब चखना पड़ेगा। (38) और तुमको उसी का बदला मिलेगा जो कुछ तुम किया करते थे। (39) हाँ, मगर जो अल्लाह के ख़ास किए हुए बन्दे हैं (40) उनके वास्ते ऐसी ग़िज़ाएँ हैं जिनका हाल (क़ुरआन की दूसरी सूरतों में) मालूम (हो चुका) है। (41) यानी मेवे, और वे लोग बड़ी इज़्ज़त से (42) आराम के बाग़ों में (43) तख़्तों पर आमने-सामने बैठे होंगे। (44) उनके पास शराब का ऐसा जाम लाया जाएगा जो बहती हुई शराब से भरा जाएगा। (45) सफ़ेद होगी, पीने वालों को मज़ेदार मालूम होगी। (46) न उसमें सरदर्द होगा और न उससे अक्ल में फ़तूर आएगा। (47) और उनके पास नीची निगाह वाली बड़ी-बड़ी आँखों वाली (हूरें) होंगी। (48) गोया कि वे बैजे हैं जो छुपे हुए रखे हैं। (49) फिर एक-दूसरे की तरफ़ मुतवज्जह होकर बातचीत करेंगे। (50) उनमें से एक कहने वाला कहेगा कि (दुनिया में) मेरा एक मिलने वाला था। (51) वह कहा करता था कि क्या तू मरने के बाद ज़िन्दा होने का यकीन रखने वालों में से है? (52) क्या जब हम मर जाएँगे और मिट्टी और हड्डियाँ हो जाएँगे तो क्या हम जज़ा और सज़ा दिए जाएँगे? (53) इरश़ाद होगा कि क्या तुम झाँककर (उसको) देखना चाहते हो? (54) सो वह शख्स झाँकेगा तो उसको जहन्नम के बीच में देखेगा। (55) कहेगा कि खुदा की कसम! तू तो मुझे तबाह ही करने को था। (56) और अगर मेरे रब का (मुझपर) फ़ज़ल न होता तो मैं भी पकड़े गए लोगों में होता। (57) क्या हम अब नहीं मरेंगे (58) पहली बार के मर चुकने के अलावा। और न हमको अज़ाब होगा। (59) यह बेशक बड़ी कामयाबी है। (60) ऐसी ही कामयाबी के लिए अमल करने वालों को अमल करना चाहिए। (61) भला यह दावत बेहतर है या ज़क्कूम

1. इसमें तौहीद और रिसालत दोनों का इनकार हो गया।
2. यानी ऐसे उसूल बतलाते हैं जिनमें सब रसूल मुत्तफ़िक़ हैं।
3. इससे ईमान वाले मुराद हैं, कि उन्होंने हक़ की पैरवी की और अल्लाह तआला ने उनको मक़बूल और मख़सूस फ़रमा लिया।
4. तश्बीह (यानी मिसाल देना) सिर्फ़ सफ़ाई में है रंगत में नहीं।
5. यानी वह मरने के बाद दोबारा ज़िन्दा होने का इनकारी था।
6. यानी ईमान लाना और इताअत करना चाहिए।

का दरख़्त। (62) हमने उस दरख़्त को ज़ालिमों के लिए इम्तिहान का ज़रिया बनाया है। (63) वह एक दरख़्त है जो दोज़ख़ की गहराई में से निकलता है। (64) उसके फल ऐसे हैं जैसे साँप के फन। (65) तो वे लोग उसमें से खाएँगे और उसी से पेट भरेंगे। (66) फिर उनको खौलता हुआ पानी (पीप में) मिलाकर दिया जाएगा। (67) फिर उनका आखिरी ठिकाना दोज़ख़ ही की तरफ़ होगा। (68) (क्योंकि) उन्होंने बड़ों को गुमराही की हालत में पाया था। (69) फिर ये भी उन्हीं के कदम-ब-कदम “यानी उन्हीं के पीछे-पीछे” तेज़ी के साथ चलते थे। (70) और उनसे पहले भी अगले लोगों में अक्सर गुमराह हो चुके हैं। (71) और हमने उनमें भी डराने वाले (पैग़म्बर) भेजे थे। (72) सो देख लीजिए उन लोगों का कैसा (बुरा) अन्जाम हुआ, जिनको डराया गया था। (73) हाँ, मगर जो अल्लाह के खास किए हुए बन्दे थे। (74) ♦

और हमको नूह (अलैहिस्सलाम) ने पुकारा, सो हम ख़ूब फ़रियाद सुनने वाले हैं। (75) और हमने उनको और उनके मानने वालों को बड़े भारी ग़म से नजात दी। (76) और हमने उन्हीं की औलाद को बाकी रहने दिया। (77) और हमने उनके लिए बाद आने वाले लोगों में यह बात रहने दी (78) कि नूह पर सलाम हो आलम वालों में। (79) हम मुख़्लिसीन को ऐसा ही सिला दिया करते हैं। (80) बेशक वह हमारे ईमान वाले बन्दों में से थे। (81) फिर हमने दूसरे लोगों को (यानी काफ़िरो को) डूबो दिया। (82) और नूह (अलैहिस्सलाम) के तरीके वालों में से इब्राहीम भी थे। (83) जबकि वह अपने रब की तरफ़ साफ़ दिल से मुतवज्जह हुए। (84) जबकि उन्होंने अपने बाप से और अपनी कौम से फ़रमाया कि तुम किस (वाहियात) चीज़ की इबादत किया करते हो। (85) क्या झूठ-मूठ के माबूदों को अल्लाह के सिवा चाहते हो? (86) तो तुम्हारा रब्बुल आलमीन के साथ क्या ख़्याल है? (87) सो इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने सितारों को एक निगाह भर कर देखा (88) और कह दिया कि मैं बीमार होने को हूँ। (89) गरज़ वे लोग उनको छोड़कर चले गए। (90) तो यह उनके बुतों में जा घुसे और कहने लगे कि क्या तुम खाते नहीं हो? (91) तुमको क्या हुआ तुम बोलते भी नहीं हो? (92) फिर उनपर ताक़त के साथ जा पड़े और मारने लगे। (93) सो वे लोग

1. यानी उसके बाद भी वहीं पर हमेशा रहना होगा।
2. यानी शौक और रग़बत से उनके बेराही के रास्ते पर चलते थे।
3. यानी ईमान वाले बन्दे।
4. कि तूफ़ान से कुफ़्फ़ार को गर्क कर दिया और उनको और उनके मानने वालों को बचा लिया।
5. यानी और किसी की नस्ल नहीं चली।
6. साफ़ दिल का मतलब यह है कि बुरे अक़ीदों और रियाकारी वग़ैरह से पाक था। जिसका हासिल ख़ालिस तौहीद और कामिल इख़्तास है।
7. यह सितारों को देखना थोड़े में डालने और हालत छुपाने के लिए था। कि वे तो इस वजह से कि सितारों को हवादिस में तसरूफ़ करने वाला समझते थे, यूँ समझे कि उनको सितारों का कायदा अता होगा, जिससे सितारों की रफ़्तार को देखकर उनको भालूम हो गया कि मैं थोड़ी देर में बीमार हो जाऊँगा, और चूँकि वे सितारों के मोतकिद थे इसलिए इसरार नहीं किया।

उनके पास दौड़ते हुए आए। (94) इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया, क्या तुम उन चीज़ों को पूजते हो जिनको खुद तराशते हो। (95) हालाँकि तुमको और तुम्हारी उन बनाई हुई चीज़ों को अल्लाह ही ने पैदा किया है। (96) वे लोग कहने लगे कि इब्राहीम के लिए एक आतिशख़ाना “यानी आग का घर” तामीर करो और उसको दहकती आग में डाल दो। (97) गरज़ उन लोगों ने इब्राहीम के साथ बुराई करना चाहा था, सो हमने उन्हीं को नीचा दिखाया। (98) और इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) कहने लगे कि मैं तो अपने रब की तरफ़ चला जाता हूँ वह मुझको (अच्छी जगह) पहुँचा ही देगा। (99) ऐ मेरे रब! मुझको एक नेक फरज़न्द दे। (100) सो हमने उनको एक हलीमुल-मीज़ाज “यानी बुर्दबार और नरम मिज़ाज वाले” फरज़न्द की खुशख़बरी दी। (101) सो जब वह लड़का ऐसी उम्र को पहुँचा कि इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के साथ चलने-फिरने लगा, तो इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया कि बेटा! मैं ख़्वाब में देखता हूँ कि मैं तुमको (अल्लाह के हुक्म से) ज़िब्ह कर रहा हूँ, सो तुम भी सोच लो कि तुम्हारी क्या राय है? वह बोले कि अब्बा जान! आपको जो हुक्म हुआ है आप (बिला झिझक) कीजिए, इन्शा-अल्लाह आप मुझको सहार करने वालों में से पाएँगे। (102) गरज़ जब दोनों ने (खुदा के हुक्म को) तस्लीम कर लिया और बाप ने बेटे को (ज़िब्ह करने के लिए) करवट पर लिटा दिया (103) और (चाहते थे कि गला काट डालें, उस वक़्त) हमने उनको आवाज़ दी कि ऐ इब्राहीम! (शाबाश!) (104) तुमने ख़्वाब को सच कर दिखाया। (वह वक़्त भी अजीब था), हम मुख़्लिसीन को ऐसा ही सिला दिया करते हैं। (105) हकीकत में यह था भी बड़ा इम्तिहान। (106) और हमने एक बड़ा ज़बीहा “यानी कुरबानी का जानवर” उसके बदले में दे दिया। (107) और हमने पीछे आने वालों में यह बात उनके लिए रहने दी (108) कि इब्राहीम पर सलाम हो। (109) हम मुख़्लिसीन को ऐसा ही बदला दिया करते हैं। (110) बेशक वह हमारे ईमान वाले बन्दों में से थे। (111) और हमने (एक इनाम उनपर यह किया कि) उनको इसहाक (अलैहिस्सलाम) की खुशख़बरी दी कि नबी और नेक-बख़्तों में से होंगे। (112) और हमने इब्राहीम पर और इसहाक पर बरकतें नाज़िल कीं और (फिर आगे) उन दोनों की नस्ल में बाज़े अच्छे भी हैं और बाज़े ऐसे भी जो (बुराइयाँ करके) खुले तौर पर अपना नुक़सान कर रहे हैं। (113) ♦

और हमने मूसा (अलैहिस्सलाम) और हासून पर भी एहसान किया। (114) और हमने उन दोनों को और उनकी कौम को बड़े ग़म से नजात दी। (115) और हमने उन सबकी (फिरऔन के मुक़ाबले में) मदद की, सो यही लोग ग़ालिब आए। (116) और हमने उन दोनों को वाज़ेह किताब दी। (117) और हमने उन

1. चुनाँचे मुल्क शाम में जा पहुँचे।

2. इसमें इख़िलाफ़ हुआ है कि ज़िब्ह होने वाले इसमाईल अलैहिस्सलाम थे या इसहाक अलैहिस्सलाम, दोनों तरफ़ की रिवायतों पर कलाम किया गया है। आयत के मज़मून से जाहिरी तौर पर इसमाईल अलैहिस्सलाम मालूम होते हैं।

3. जिसको सिवाय कामिल मुख़्लिस के दूसरा बरदाशत नहीं कर सकता।

4. “एक बड़ा कुरबानी का जानवर” के मुतैयन करने में भी कलाम है। बाज़ ने कहा है कि मामूली दुंभा था, और अज़ीम ‘मोटा-ताज़ा’ होने के मायने में है, और बाज़ ने कहा है कि जन्नत से भेजा गया था और अज़ीम ‘बड़े रुतबे वाले’ के मायने में है। और जब हज़रे अस्वद वगैरह का जन्नत से आना साबित है तो एक हैवान का आना क्या बर्द है।

5. कि उनको दुआ व सलामती की खुशख़बरी का महल (स्थान) बनाते हैं।

6. इसमें इस बात का इज़हार हो गया कि उसूल (यानी बड़ों और बाप-दादा) का नेक होना उनकी नस्ल के काम नहीं आ सकता जबकि वे खुद ईमान से महसूम हों। इसमें यहूद के आलिमों के फ़ख़र करने का ख़ात्मा कर दिया।

7. वह ग़म उनको फिरऔन की तरफ़ से तकलीफ़ पहुँचना था।

8. फिरऔन गर्क कर दिया गया और ये हुक्मत वाले हो गए।

दोनों को सीधे रास्ते पर कायम रखा। (118) और हमने उन दोनों के लिए पीछे “यानी बाद में” आने वाले लोगों में यह बात रहने दी (119) कि मूसा और हासून (अलैहिमस्सलाम) पर सलाम हो। (120) हम मुख़्लिसीन को ऐसा ही सिला दिया करते हैं। (121) बेशक वे दोनों हमारे (कामिल) ईमान वाले बन्दों में से थे। (122) और इलियास (अलैहिस्सलाम) भी (बनी इसराईल के) पैगम्बरों में से थे। (123) जबकि उन्होंने अपनी कौम से फरमाया कि क्या तुम खुदा से डरते नहीं? (124) क्या तुम बअल को पूजते हो, और उसको छोड़े बैठे हो जो सबसे बढ़कर बनाने वाला है (125) (और वह) माबूद बरहक है। तुम्हारा भी रब है और तुम्हारे अगले बाप-दादाओं का भी रब है। (126) सो उन लोगों ने उनको झुठलाया, सो वे लोग पकड़े जाएँगे। (127) मगर जो अल्लाह के ख़ालिस बन्दे थे। (128) और हमने इलियास के लिए पीछे आने वाले लोगों में यह बात रहने दी (129) कि इलियासीन पर सलाम हो। (130) हम मुख़्लिसीन को ऐसा ही सिला दिया करते हैं। (131) बेशक वह हमारे (कामिल) ईमान वाले बन्दों में से थे। (132) और बेशक लूत (अलैहिस्सलाम) भी पैगम्बरों में से थे। (133) जबकि हमने उनको और उनके मुताल्लिकीन को सबको नजात दी (134) सिवाय उस बुढ़िया (यानी उनकी बीवी) के, कि वह रह जाने वालों में रह गई। (135) फिर हमने और सबको हलाक कर दिया। (136) और तुम तो उन (के घरों और ठिकानों) पर सुबह होते और रात में गुज़रा करते हो? (137) तो क्या फिर भी नहीं समझते हो? (138) ♦

और बेशक यूनस (अलैहिस्सलाम) भी पैगम्बरों में से थे। (139) जबकि भाग कर भरी हुई कश्ती के पास पहुँचे। (140) सो यूनस कुरआ में शरीक हुए तो यही मुल्ज़िम ठहरे। (141) फिर उनको मछली ने (पूरा-का-पूरा) निगल लिया और यह अपने को मलामत कर रहे थे। (142) सो अगर वह (उस वक़्त) तस्बीह करने वालों में से न होते (143) तो कियामत तक उसी “यानी मछली” के पेट में रहते। (144) सो हमने उनको एक मैदान में डाल दिया, और वह उस वक़्त कमज़ोर थे। (145) और हमने उनपर एक बेलदार पेड़ भी उगा दिया था। (146) और हमने उनको एक लाख या उससे भी ज़्यादा आदमियों की तरफ़ पैगम्बर बनाकर भेजा था (147) फिर वे लोग ईमान ले आए थे, तो हमने उनको एक ज़माने तक ऐश दिया। (148)

1. यानी जो लूत अलैहिस्सलाम और उनके मुताल्लिकीन के अलावा थे।
2. सुबह और रात का ज़िक्र इसलिए किया कि अरब में अक्सर आदत रात को सुबह तक चलने की है।
3. मतलब यह कि पेट से निकलना मयस्सर न होता।
4. ऊपर के किस्सों से उन सब अम्बिया अलैहिमुस्सलाम का जिनकी नुबुव्वत अक़लन साबित है, मोमिन, खुदा को एक मानने वाला, आबिद, मुख़्लिस और तौहीद व ईमान की तरफ़ दावत देने वाला होना साबित होता है। इससे पहली सूर: के शुरू में तौहीद की अक़ली दलीलें ज़िक्र हो चुकी हैं। आगे उन अक़ली और नक़ली दलीलों से शिर्क व कुफ़ को बातिल होना बयान फरमाते हैं। यहाँ दलीले अक़ली के ज़रिए साबित करना तो ज़ाहिर है, और दलीले नक़ली से इस तरह कि नुबुव्वत के लिए सच्चा होना लाज़िम है, पस तौहीद का हक़ होना ज़रूरी और शिर्क का बातिल होना उसके लवाज़िम में से होना ज़ाहिर है।

सो उन लोगों से पूछिए कि क्या अल्लाह तआला के लिए तो बेटियाँ और तुम्हारे लिए बेटे?¹ (149) हाँ, क्या हमने फ़रिश्तों को औरत बनाया है? और वे (उनके बनाए जाने के वक़्त) देख रहे थे?² (150) ख़ूब सुन लो कि वे लोग अपनी तरफ़ से बात बनाकर ऐसा कहते हैं (151) कि (नऊजु बिल्लाह) अल्लाह औलाद वाला है, और वे यकीनन (बिलकुल) झूठे हैं। (152) क्या अल्लाह तआला ने बेटों के मुकाबले में बेटियाँ ज़्यादा पसन्द की? (153) तुमको क्या हो गया, तुम कैसा (बेहूदा) हुक्म लगाते हो? (154) फिर क्या तुम (अक्ल और) सोच से काम नहीं लेते हो। (155) हाँ, क्या तुम्हारे पास (इसपर) कोई वाज़ेह दलील मौजूद है? (156) सो तुम अगर (इसमें) सच्चे हो तो अपनी वह किताब पेश करो!³ (157) और उन लोगों ने अल्लाह में और जिन्नात में (भी) रिश्तेदारी करार दी है, और (जिस-जिसको ये लोग खुदा का शरीक ठहरा रहे हैं उनकी तो यह कैफ़ियत है कि उनमें जो) जिन्नात हैं, खुद उनका यह अक्कीदा है कि (उनमें जो काफ़िर हैं) वे (अज़ाब में) गिरफ़्तार होंगे। (158) अल्लाह उन बातों से पाक है जो-जो ये बयान करते हैं, (159) मगर जो अल्लाह तआला के ख़ास (ईमान वाले) बन्दे हैं। (160) सो तुम और तुम्हारे सारे माबूद, (161) अल्लाह से किसी को नहीं फेर सकते, (162) मगर उसी को जो कि (खुदा तआला के इल्म में) जहन्नम में जाने वाला है। (163) और हममें से हर एक का एक तयशुदा दर्जा है!⁴ (164) और (खुदा के हुज़ूर में हुक्म सुनने के वक़्त या इबादत के वक़्त) हम सफ़ बाँधे खड़े होते हैं। (165) और हम खुदा की पाकी बयान करने में भी लगे रहते हैं। (166) और ये लोग कहा करते थे⁵ (167) कि अगर हमारे पास कोई नसीहत (की किताब) पहले लोगों की (किताबों के) तौर पर आती (168) तो हम अल्लाह तआला के ख़ास बन्दे होते। (169) फिर ये लोग उसका इनकार करने लगे, सो (ख़ैर) अब उनको (उसका अन्जाम) मालूम हुआ जाता है। (170) और हमारे ख़ास बन्दों यानी पैग़म्बरों के लिए हमारा यह कौल पहले ही से मुकर्रर हो चुका है (171) कि बेशक वही ग़ालिब किए जाएँगे। (172) और (हमारा तो कायदा आम है कि) हमारा ही लश्कर ग़ालिब रहता है!⁶ (173) तो आप (तसल्ली रखिए और) थोड़े ज़माने तक (सब्र कीजिए और उनकी मुखा़लफ़त और तकलीफ़ देने का) का ख़्याल न कीजिए। (174) और (ज़रा) उनको देखते रहिए, सो जल्द ही ये भी देख लेंगे। (175) क्या हमारे अज़ाब का तकाज़ा कर रहे हैं? (176) सो वह (अज़ाब) जब उनके सामने आ नाज़िल होगा, सो वह दिन उन लोगों का जिनको डराया जा चुका था बहुत ही बुरा होगा (टल न सकेगा)। (177) और आप थोड़े ज़माने तक उनका ख़्याल न कीजिए। (178) और देखते रहिए। सो जल्दी ही ये लोग भी देख लेंगे। (179) आपका परवर्दिगार जो बड़ी अज़मत वाला है, उन बातों से पाक है जो ये (काफ़िर) बयान करते हैं। (180)

1. यानी जब अपने लिए बेटे पसन्द करते हो तो ज़िक्र हुए अक्कीदे में खुदा के लिए बेटियाँ कैसे तजवीज़ करते हो?

2. यानी बिना दलील के फ़रिश्तों पर मुअन्नस (Female) होने की तोहमत रखते हैं।

3. हासिल मक़ाम का यह हुआ कि जिसके तुम मुद्दई हो उसमें तीन तो ख़ामियाँ हैं और दलील एक भी नहीं, न मुशाहदा और न अक्ल और न नक़ल।

4. यानी उनमें जो फ़रिश्ते हैं उनका यह कहना है कि हम तो सिर्फ़ बन्दे हैं। चुनाँचे जो ख़िदमत हमको सुपुर्द है उसको पूरा करने में लगे रहते हैं, अपनी राय से कुछ नहीं कर सकते।

5. यानी अरब के काफ़िर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नबी होने की हैसियत से ज़ाहिर होने से पहले कहा करते थे।

6. अहले हक़ के ग़ालिब होने का मतलब यह है कि उसका असली तकाज़ा यही है। पस आरज़ी तौर पर मग़लूब होना आजमाइश की हिक़मत से उसके ख़िलाफ़ नहीं।

और सलाम हो पैगम्बरों पर। (181) और तमाम की तमाम खूबियाँ अल्लाह ही के लिए हैं जो तमाम आलम का परवर्दिगार है। (182) ♦

38 सूर: सौद 38

सूर: सौद मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 88 आयतें और 5 रुकूअ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

सौद। कसम है कुरआन की जो नसीहत से पुर है।¹ (1) बल्कि (खुद) ये कुफ़्फ़ार (ही) तअस्सुब और (हक की) मुख़ालफ़त करते हैं। (2) उनसे पहले बहुत-सी उम्मतों को हम (अज़ाब से) हलाक कर चुके हैं, सो उन्होंने (हलाकत के वक़्त) बड़ी हाय-पुकार की, और वह वक़्त छुटकारे और नजात का न था। (3) और उन (कुरैश के) काफ़िरों ने इस बात पर ताज्जुब किया कि उनके पास उन (ही) में से एक (पैगम्बर) डराने वाला आ गया, और कहने लगे कि यह (मोज़िज़ों में) जादू और (नुबुव्वत के दावे में) झूठा है। (4) (और) क्या (यह शख्स सच्चा हो सकता है कि) उसने इतने माबूदों की जगह एक ही माबूद रहने दिया, वाकई यह बहुत अजीब बात है। (5) और (तौहीद का मज़मून सुनकर) उन कुफ़्फ़ार में के सरदार यह कहते हुए चले कि (यहाँ से) चलो और अपने माबूदों (की इबादत पर) कायम रहो, यह कोई मतलब की बात है। (6) हमने तो यह बात (अपने) पिछले मज़हब में नहीं सुनी,² हो न हो यह (इस शख्स की) घड़त है। (7) क्या हम सबमें से उसी शख्स पर अल्लाह का कलाम नाज़िल किया गया? बल्कि ये लोग (खुद) मेरी वहब की तरफ़ से शक (यानी इनकार) में हैं।³ बल्कि (असल वजह यह है कि) उन्होंने अभी तक मेरे अज़ाब का मज़ा नहीं चखा। (8) क्या उन लोगों के पास आपके परवर्दिगार ज़बरदस्त, फ़य्याज़ की रहमत के ख़ज़ाने हैं? (जिसमें नुबुव्वत भी दाख़िल है)।⁴ (9) या क्या उनको आसमान व ज़मीन और जो चीज़ें उनके दरमियान हैं उनका इख़्तियार हासिल है? (अगर इख़्तियार है) तो उनको चाहिए कि सीढ़ियाँ लगाकर (आसमान पर) चढ़ जाएँ। (10) इस मक़ाम पर⁵ उन लोगों की यूँ ही एक भीड़ है, ये सब (रसूलों के मुख़ालिफ़ीन) ग़िरोहों में से हैं जो शिकस्त दिए जाएँगे। (11) उनसे पहले भी नूह (अलैहिस्सलाम) की कौम और आद और फ़िरअौन ने जिस (की हुकूमत) के खूँटे गड़ गए थे⁶ (12) और समूद ने और कौमे लूत और ऐका वालों ने झुठलाया था (और) वह ग़िरोह यही लोग हैं। (13) उन सबने सिर्फ़ रसूलों को झुठलाया था, सो मेरा अज़ाब (उनपर) आ पड़ा। (14) ♦

और ये लोग बस एक जोर की चीख़ के मुन्तज़िर हैं, जिसमें दम लेने की गुन्जाइश न होगी (इससे कियामत मुराद है)। (15) और ये लोग कहते हैं कि ऐ हमारे रब! हमारा हिस्सा हमको हिसाब के दिन से पहले दे दे।⁷ (16) आप उन लोगों की बातों पर सब्र कीजिए। और हमारे बन्दे दाऊद (अलैहिस्सलाम) को याद

1. इब्तिदाई आयतों के नाज़िल होने का सबब यह है कि अबू तालिब की बीमारी में कुरैश उनके पास आए और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी तशरीफ़ लाए। कुरैश ने उनसे आपकी शिकायत की, उन्होंने आपसे पूछा कि आप अपनी कौम से क्या बात चाहते हैं? आपने फ़रमाया सिर्फ़ एक कलिमा चाहता हूँ जिससे तमाम अरब उनका फ़र्माँबरदार हो जाए, और ग़ैर-अरब उनको जिज़्या यानी टैक्स देने लगे। उन्होंने पूछा वह एक कलिमा कौन-सा है? आपने फ़रमाया “ला इला-ह इल्लल्लाहु”। कहने लगे कि तो सब माबूदों का इनकार करके एक ही माबूद क़रार दे दिया, यह अजीब बात है। उसपर ‘सौद’ से ‘बल लम्मा यज़ूकू अज़ाब’ तक नाज़िल हुआ।

2. पिछले मज़हब का मतलब यह कि दुनिया में बहुत-से तरीके के लोग हुए। सबसे पीछे हम मौजूद हैं और हक़ पर हैं, सो हमने इस तरीके के बुजुर्गों से कभी यह बात नहीं सुनी। (शेष तफ़सीर पृष्ठ 820 पर)

कीजिए जो बड़ी कुव्वत (और हिम्मत) वाले थे। वह (खुदा की तरफ) बहुत रुजू होने वाले थे। (17) हमने पहाड़ों को हुक्म कर रखा था कि उनके साथ शाम और सुबह तस्बीह किया करें। (18) और (इसी तरह) परिन्दों को भी जो (तस्बीह के वक़्त उनके पास) जमा हो जाते थे, सब उनकी (तस्बीह की) वजह से ज़िज़्र में मशगूल रहते। (19) और हमने उनकी हुक्मत को बड़ी कुव्वत दी थी, और हमने उनको हिक्मत और फैसला करने वाली तकरीर अता फ़रमाई थी। (20) और भला आपको उन मुकद्दमे वालों की ख़बर भी पहुँची है, जबकि वे लोग (दाऊद के) इबादतख़ाने की दीवार फाँदकर दाऊद (अलैहिस्सलाम) के पास आए। (21) तो वह (उनके इस तरह आने से) घबरा गए। वे लोग कहने लगे कि आप डरें नहीं, हम दो अहले मामला हैं, कि एक ने दूसरे पर (कुछ) ज़्यादती की है, सो आप हममें इन्साफ़ से फैसला कर दीजिए और बेइन्साफी न कीजिए, और हमको (मामले की) सीधी राह बता दीजिए। (22) (फिर एक शख्स बोला, मुकद्दमे की शक़्त यह है कि) यह शख्स मेरा भाई है, इसके पास निन्नानवे दुंबियाँ हैं और मेरे पास (सिर्फ़) एक दुंबी है, सो यह कहता है कि वह भी मुझको दे डाल, और बातचीत में मुझको दबा देता है। (23) दाऊद (अलैहिस्सलाम) ने कहा, यह जो तेरी दुंबी अपनी दुंबियों में मिलाने की दरखास्त करता है तो वाकई तुझपर जुल्म करता है, और अक्सर शरीकों (की आदत है कि) एक-दूसरे पर (यूँ ही) ज़्यादती किया करते हैं, मगर हाँ! जो लोग ईमान रखते हैं और नेक काम करते हैं, और ऐसे लोग बहुत ही कम हैं। और दाऊद (अलैहिस्सलाम) को ख़याल आया कि हमने उनका इम्तिहान किया है, सो उन्होंने अपने रब के सामने तौबा की और सज्दे में गिर पड़े और रुजू हुए। □ (24) सो हमने उनको वह (मामला) माफ़ कर दिया और हमारे यहाँ उनके लिए (ख़ास) निकटता और (आला दर्जे की) नेक अन्जामी है। (25) ऐ दाऊद (अलैहिस्सलाम)! हमने तुमको ज़मीन पर हाकिम बनाया है, सो लोगों में इन्साफ़ के साथ फैसला करते रहना, और आइन्दा भी नफ़्सानी ख्वाहिश की पैरवी मत करना। (अगर ऐसा करोगे तो) वह खुदा के रास्ते से तुमको भटका देगी। (और) जो लोग खुदा के रास्ते से भटकते हैं उनके लिए सख़्त अज़ाब होगा, इस वजह से कि वे हिसाब के दिन को भूले रहे। (26) ♦

और हमने आसमान व ज़मीन को और जो चीज़ें उनके दरमियान मौजूद हैं उनको हिक्मत से ख़ाली पैदा नहीं किया। यह (यानी उनका हिक्मत से ख़ाली होना) उन लोगों का ख़याल है जो काफ़िर हैं, सो काफ़िरों के लिए (आख़िरत में) बड़ी ख़राबी है, यानी दोज़ख़। (27) हाँ, तो क्या हम उन लोगों को जो ईमान लाए और

(पृष्ठ 818 का शेष)

3. यानी असल नुबुव्वत के मसले ही के इनकारी हैं, ख़ास तौर पर इनसान के लिए। (यानी इनके ख़याल के मुताबिक कोई इनसान नबी नहीं हो सकता)।

4. यानी नुबुव्वत एक अज़ीम चीज़ है उसके दिए जाने के लिए बहुत ज़्यादा दबदबे वाला, सख़्त ग़ल्बे वाला और ख़ज़ानों का मालिक होना लाज़िम है। सो इस तरह अगर यह उनके इख़्तियार में होता तो उनको इस कहने की गुन्जाइश थी कि हमने बशर को नुबुव्वत नहीं दी, फिर वह नबी कैसे हो गया? या हमने फ़लाँ बशर को दी और फ़लाँ को नहीं दी। उस सूरत में यह कहना उनके लिए मुनासिब था।

5. यानी मक्का में।

6. यानी उसकी हुक्मत बहुत बड़ी और ज़बरदस्त थी।

7. मतलब यह कि क़ियामत नहीं है। और अगर है तो हमको अभी अज़ाब चाहिए। जब अज़ाब नहीं होता तो मालूम हुआ कि क़ियामत न आएगी। खुदा की पनाह ये कैसे जाहिल थे।

1. उनकी हरकतों और अक़वाल का मजमूआ निहायत दर्जे की गुस्ताख़ी और बेअदबी है। पस इसमें दाऊद अलैहिस्सलाम के संयम और सब्र का इम्तिहान हो गया, कि आया हुक्मत के जोर में इन लगातार गुस्ताख़ियों पर पकड़ करते हैं या नुबुव्वत के नूर के ग़ल्बे की वजह से माफ़ फ़रमाते हैं। चुनाँचे इम्तिहान में साबिर साबित हुए और मुकद्दमे को निहायत ठन्डे दिल से सुना और फैसला फ़रमाया। लेकिन अम्बिया का अज़ीम रुतबा और इन्साफ़ की ऊँची शान जिस बुलन्द दर्जे की चाहती है उससे बज़ाहिर एक बात यह मामूली-सी बईद पेश आ गई कि शरई दलील के कायम हो जाने के बाद बजाय इसके कि सिर्फ़ ज़ालिम से यह ख़िताब फ़रमाते (शेष तफ़सीर पृष्ठ 822 पर)

अच्छे काम किए उनके बराबर उन्हें कर देंगे जो (कुफ़्र वगैरह करके) दुनिया में फ़साद करते फिरते हैं, या हम परहेज़गारों को बदकारों के बराबर कर देंगे? (28) यह एक बरकत वाली किताब है जिसको हमने आप पर इस वास्ते नाज़िल किया है ताकि लोग इसकी आयतों में ग़ौर करें और ताकि समझदार लोग नसीहत हासिल करें। (29) और हमने दाऊद (अलैहिस्सलाम) को सुलैमान अता किया, बहुत अच्छे बन्दे थे कि (खुदा तआला की तरफ़) बहुत रुजू होने वाले थे। (30) (चुनाँचे वह किस्सा उनका याद करने के काबिल है) जबकि शाम के वक़्त उनके रू-ब-रू असील (और) उम्दा घोड़े पेश किए गए। (31) तो कहने लगे कि (अफ़सोस) मैं इस माल की मुहब्बत में (लगकर) अपने रब की याद से गाफ़िल हो गया, यहाँ तक कि सूरज (मगरिब के) पर्दे में छुप गया। (32) (फिर खादिमों और नौकरों को हुक्म दिया कि) उन घोड़ों को ज़रा फिर मेरे सामने लाओ, सो उन्होंने उनकी पिंडलियों और गर्दनो पर (तलवार से) हाथ साफ़ करना शुरू किया। (33) और हमने सुलैमान (अलैहिस्सलाम) को (एक और तरह से भी) इम्तिहान में डाला, और हमने उनके तख़्त पर (एक अधूरा) धड़ डाला, फिर उन्होंने (अल्लाह तआला की तरफ़) रुजू किया। (34) दुआ माँगी कि ऐ मेरे रब! मेरा (पिछला) कुसूर माफ़ फ़रमा और (आइन्दा के लिए) मुझको ऐसी हुक्म दे कि (मेरे ज़माने में) मेरे सिवा किसी को मयस्सर न हो, आप बड़े देने वाले हैं। (35) सो (हमने उनकी दुआ कबूल की और साथ ही) हमने हवा को उनके ताबे कर दिया कि वह उनके हुक्म से जहाँ वह (जाना) चाहते नरमी से चलती। (36) और जिन्नात को भी उनका ताबे कर दिया, यानी तामीर बनाने वालों को भी और गोता लगाने वालों को भी। (37) और दूसरे जिन्नात को भी जो ज़न्जीरों में जकड़े रहते थे। (38) (और हमने यह सामान देकर इरशाद फ़रमाया कि) यह हमारी देन है, सो चाहे (किसी को) दो या न दो, तुमसे कुछ पूछ-गछ नहीं। (39) और (इसके अलावा) उनके लिए हमारे यहाँ (खास) नज़दीकी और नेक अन्जामी है। (40) ♦

और हमारे बन्दे अय्यूब (अलैहि.) को याद कीजिए, जबकि उन्होंने अपने रब को पुकारा कि शैतान ने मुझको रंज और दुख पहुँचाया है। (41) अपना पाँव मारो, यह नहाने का ठन्डा पानी है और पीने का। (42) और हमने उनको उनका कुंबा अता फ़रमाया और उनके साथ (गिनती में) उनके बराबर और भी (दिए) अपनी खास रहमत के सबब से, और अक्ल वालों के लिए यादगार रहने के सबब से। (43) और तुम अपने हाथ में एक मुट्ठा सीकों का लो और उससे मारो और कसम न तोड़ो, बेशक हमने उनको साबिर पाया, अच्छे बन्दे थे कि बहुत रुजू होते थे। (44) और हमारे बन्दों इब्राहीम और इसहाक और याकूब (अलैहिमुस्सलाम) को याद

(पृष्ठ 820 का शेष) कि तूने जुल्म किया, उस मज़्लूम से यह ख़िताब फ़रमाया कि तुझपर जुल्म किया, जिससे एक तरफ़दारी की सूरत वहम में आती है, और इस तरफ़दारी का वहम भी पैदा न होना ज़्यादा इन्साफ़ वाले और कामिल होने की बात थी। सो इन्तिहाई दर्जे का तक्वा होने की वजह से इतनी बात को भी सब्र के आला दर्जे और इम्तिहान में मुकम्मल साबित-कदम रहने में ख़लल डालने वाला समझे।

2. यह बात औरों को सुना दी, जो भटक रहे हैं।

1. यानी उसपर अमल करें।

2. बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है कि एक बार सुलैमान अलैहिस्सलाम अपने लश्कर के सरदारों पर उनकी किसी जिहाद की कौताही पर ख़फ़ा हुए और फ़रमाने लगे कि मैं आज रात अपनी सत्तर बीवियों से हमबिस्तर हूँगा, और उनसे सत्तर मुजाहिद पैदा होंगे। फ़रिश्ते ने दिल में डाला कि इन्शा-अल्लाह कह लीजिए। आपको कुछ ख़याल न रहा, चुनाँचे सिर्फ़ एक औरत हामिला (गर्भवती) हुई और उससे भी एक नाक़िस ज़िस्म का बच्चा पैदा हुआ जिसके एक तरफ़ का धड़ न था।

3. जिहाद के किस्से में सब्र यह हुआ कि इतने ज़्यादा माल की कुछ परवाह न की, यह दीन पर हद दर्जे का जमाव था कि सब्र की हकीक़त की यही दलील है। और जसद के किस्से में तौबा करना इसके बावजूद कि नाफ़रमानी न थी, यह भी दलील है हद दर्जा दीन पर साबित-कदम रहने की।

4. चुनाँचे नहाये और पिया, और बिलकुल अच्छे हो गए।

कीजिए जो हाथों वाले और आँखों वाले थे।¹ (45) हमने उनको एक खास बात के साथ मख्सूस किया था कि वह आखिरत की याद है।² (46) और वे (हज़रात) हमारे यहाँ चुनिन्दा और सब से अच्छे लोगों में से हैं।³ (47) और इसमाईल और य-स-अ और जुलकिफ़ल (अलैहिमुस्सलाम) को भी याद कीजिए, और ये सब भी सबसे अच्छे लोगों में से हैं। (48) एक नसीहत का मज़मून तो यह हो चुका,⁴ और परहेज़गारों के लिए (आखिरत में) अच्छा ठिकाना है। (49) यानी हमेशा रहने के बागात जिनके दरवाज़े उनके वास्ते खुले होंगे। (50) वे उन बागों में तकिया लगाए बैठे होंगे, (और) वह वहाँ (जन्नत के खादिमों से) बहुत-से मेवे और पीने की चीज़ें मँगवाएँगे। (51) और उनके पास नीची निगाह वालियाँ उन्हीं की उम्र वाली होंगी। (52) (ऐ मुसलमानो!) यह वह (नेमत) है जिसका तुमसे हिसाब का दिन आने पर वायदा किया जाता है। ▲ (53) बेशक यह हमारी अता है, इसका कहीं अंत ही नहीं।⁵ (54) यह बात तो हो चुकी, और सरकशों के लिए बुरा ठिकाना है (55) यानी दोज़ख़, उसमें वे दाख़िल होंगे, सो वह बहुत ही बुरी जगह है। (56) यह खौलता हुआ पानी और पीप है, सो ये लोग उसको चखेंगे। (57) और (इसके अलावा) और भी इसी किस्म की (नागवार) तरह-तरह की चीज़ें हैं। (58) यह एक जमाअत और आई जो तुम्हारे साथ (अज़ाब में शरीक होने के लिए दोज़ख़ में) घुस रहे हैं, उनपर खुदा की मार, यह भी दोज़ख़ ही में आ रहे हैं। (59) वे (पैरवी करने वाले उन मुक्तदाओं से) कहेंगे, बल्कि तुम्हारे ही ऊपर खुदा की मार, (क्योंकि) तुम ही तो यह (मुसीबत) हमारे आगे लाए, सो (जहन्नम) बहुत ही बुरा ठिकाना है। (60) दुआ करेंगे कि ऐ हमारे रब! जो शख्स इस (मुसीबत) को हमारे आगे लाया हो उसको दोज़ख़ में दोगुना अज़ाब दीजिए। (61) और वे लोग कहेंगे कि क्या बात है हम उन लोगों को (दोज़ख़ में) नहीं देखते जिनको हम बुरे लोगों में शुमार करते थे।⁶ (62) क्या हमने उन लोगों की हँसी कर रखी थी, या उन (के देखने) से निगाहें चकरा रही हैं? (63) यह बात यानी दोज़ख़ियों का लड़ना-झगड़ना बिल्कुल सच्ची बात है। (64) ♦

आप कह दीजिए कि मैं तो (तुमको अल्लाह के अज़ाब से) डराने वाला हूँ और सिवाय एक अल्लाह ग़ालिब के कोई इबादत के लायक नहीं है। (65) वह परवर्दिगार है आसमानों और ज़मीन का और उन चीज़ों का जो उनके दरमियान में हैं। (और वह) ज़बरदस्त, बड़ा बख़्शने वाला है। (66) आप कह दीजिए कि यह एक अज़ीमुश्शान मज़मून है (67) जिससे तुम (बिल्कुल ही) बेपरवाह हो रहे हो। (68) मुझको ऊपर की दुनिया (की बहस व गुफ्तगू) की कुछ भी ख़बर न थी जबकि वे (आदम अलैहिस्सलाम की पैदाइश के बारे में) झगड़ रहे थे।⁷ (69) मेरे पास (जो) वह्य (आती है तो) महज़ इस सबब से आती है कि मैं (अल्लाह तआला की जानिब से) साफ़-साफ़ डराने वाला (भेजा गया) हूँ। (70) जबकि आपके परवर्दिगार ने फ़रिश्तों से इरशाद

1. यानी उनमें अमली कुव्वत भी थी और इल्मी कुव्वत भी।
2. शायद यह इसलिए बढ़ा दिया हो कि गाफ़िलों के कान हों कि जब अम्बिया अलैहिमुस्सलाम इस फ़िक्र से ख़ाली न थे तो हम किस गिनती में हैं।
3. यानी चुनिन्दा लोगों में से भी सबसे बढ़कर।
4. नबियों के किस्से मुराद हैं कि झुठलाने वालों के लिए इसमें नुबुव्वत के मसले का सुबूत, और तस्दीक करने वालों के लिए इसमें अच्छे अख़्लाक और उम्दा आमाल की तालीम है।
5. यानी हमेशा-हमेशा रहने वाली नेमत है।
6. यानी मुसलमानों को बुरी राह वाला और हकीर समझा करते थे, वे क्यों नज़र नहीं आते।
7. अल्लाह तआला से फ़रिश्तों की गुफ्तगू को मजाज़न झगड़ना कहा गया कि ज़ाहिरन झगड़ने की तरह थी।

फरमाया कि मैं गारे से एक इनसान को (यानी उसके पुतले को) बनाने वाला हूँ। (71) सो मैं जब उसको पूरा बना चुकूँ और उसमें अपनी (तरफ से) जान डाल दूँ तो तुम सब उसके रू-ब-रू सज्दे में गिर पड़ना। (72) सो (जब अल्लाह तआला ने उसको बना लिया तो) सारे-के-सारे फरिश्तों ने (आदम को) सज्दा किया (73) मगर शैतान ने, कि वह गुरुर में आ गया और काफ़िरोँ में से हो गया। (74) अल्लाह तआला ने फरमाया कि ऐं इब्नीस! जिस चीज़ को मैंने अपने हाथों से बनाया,¹ उसको सज्दा करने से तुझको कौन-सी चीज़ रुकावट हुई, क्या तू गुरुर में आ गया (और हकीकत में बड़ा नहीं है), या यह कि तू (वाकई ऐसे) बड़े दर्जे वालों में है। (75) कहने लगा कि (दूसरी वाली बात ही है, यानी) मैं आदम से बेहतर हूँ। (क्योंकि) आपने मुझको आग से पैदा किया है और उस (आदम अलैहि.) को ख़ाक से पैदा किया है।² (76) इरशाद हुआ कि (अच्छा फिर) तू आसमान से निकल, क्योंकि बेशक तू (इस हरकत से) मरदूद हो गया। (77) और बेशक तुझपर मेरी लानत रहेगी कियामत के दिन तक। (78) कहने लगा, तो फिर मुझको मोहलत दीजिए कियामत के दिन तक। (79) इरशाद हुआ (कि जब तू मोहलत माँगता है) तो (जा) तुझको मोहलत दी गई (80) मुकर्ररा वक़्त की तारीख़ तक। (81) कहने लगा, (जब मुझको मोहलत मिल गई) तो (मुझको भी) तेरी इज़्ज़त की कसम कि मैं उन सबको गुमराह करूँगा (82) सिवाय आपके उन बन्दों के जो उनमें चुन लिए गए हैं। (83) इरशाद हुआ कि मैं सच कहता हूँ और मैं तो (हमेशा) सच ही कहा करता हूँ (84) कि मैं तुझसे और जो उनमें तेरा साथ दे उन सबसे दोज़ख़ को भर दूँगा। (85) आप कह दीजिए कि मैं तुमसे इस कुरआन (की तब्लीग़) पर न कुछ बदला चाहता हूँ और न मैं बनावट करने वालों में से हूँ।³ (86) यह कुरआन तो (अल्लाह का कलाम और) दुनिया ज़हान वालों के लिए बस एक नसीहत है। (87) और थोड़े दिनों के बाद तुमको इसका हाल मालूम हो जाएगा। (यानी मरने के साथ ही हकीकत खुल जाएगी कि यह हक़ और सच्चा था)।⁴ (88) ♦

39 सूर: जुमर 59

सूर: जुमर मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 75 आयतें और 8 रुकूअ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

यह नाज़िल की हुई किताब है अल्लाह ग़ालिब, हिक्मत वाले की तरफ़ से।¹ (1) हमने ठीक तौर पर इस किताब को आपकी तरफ़ नाज़िल किया है, सो आप (कुरआन की तालीम के मुवाफ़िक) ख़ालिस एतिकाद करके

1. यानी जिसके बनाने की तरफ़ अल्लाह तआला की ख़ास इनायत मुतवज्जह हुई, यह तो उसका शर्फ़ उसकी ज़ात के एतबार से है और फिर उसके सामने सज्दा करने का हुक्म भी दिया गया।
2. आदम अलैहिस्सलाम की पैदाइश का मादा कहीं “ख़ाक” आया है, कहीं “मिट्टी” और कहीं “सड़े हुए गारे की बनी हुई मिट्टी”। इनमें कुछ टकराव और तआरुज़ नहीं, कहीं करीबी मादा बतला दिया, कहीं दूर का मादा।
3. यानी अगर झूठ बोलता तो उसका मन्शा या तो कोई अक्ली नफ़ा होता जिसको अज़्र कहा जाता है, और या तबई आदत होती जिसको तकल्लुफ़ कहा जाता है, सो ये दोनों बातें नहीं।
4. इस सूर: में कुरआन की तीन जगह तरीफ़ है, और तीनों जगह इसको “ज़िक्र” फरमाया गया है। अब्बल में- “ज़िज़िक्वि” दूसरी में “लि-य-तज़क्क-र” और तीसरी में “ज़िक्रुलु लिलुआलमी-न”।
5. ग़ालिब होना इसको चाहता था कि जो इसको झुठलाए उसको सज़ा दे दी जाए, मगर चूँकि हकीम भी है और मोहलत में मस्लहत थी, इसलिए सज़ा में मोहलत दे रखी है।

अल्लाह की इबादत करते रहिए। (2) याद रखो, इबादत जो कि (शिरक से) खालिस हो, अल्लाह ही के लायक है। और जिन लोगों ने खुदा के सिवा और शरीक तजवीज़ कर रखे हैं (और कहते हैं) कि हम तो उनकी पूजा सिर्फ इसलिए करते हैं कि हमको खुदा का मुकर्रब बना दें, तो उनके (और उनके मुकाबिल ईमान वालों के) आपसी इख़्तिलाफ़ों का (क़ियामत के दिन) अल्लाह तआला फैसला कर देगा।¹ अल्लाह तआला ऐसे शख्स को राह पर नहीं लाता जो (ज़बान का) झूठा और (एतिकाद के एतिबार से) काफ़िर हो।² (3) अगर (मान लो) अल्लाह तआला किसी को औलाद बनाने का इरादा करता तो ज़रूर अपनी मख़्लूक में से जिसको चाहता चुन लेता। वह पाक है, वह ऐसा अल्लाह है जो अकेला है ज़बरदस्त है। (4) उसने आसामन व ज़मीन को हिक्मत से पैदा किया। वह रात (की अंधेरी) को दिन (की रोशनी के महल यानी हवा) पर लपेटता है, और दिन (की रोशनी) को रात पर लपेटता है। और उसने सूरज और चाँद को काम में लगा रखा है कि (उनमें से) हर एक मुकर्ररा वक़्त तक चलता रहेगा। याद रखो कि वह ज़बरदस्त है, बड़ा बख़्शने वाला (भी) है। (5) उसने तुम लोगों को वाहिद तन (यानी आदम अलैहिस्सलाम) से पैदा किया, फिर उसी से उसका जोड़ा बनाया,³ और (उस पैदाइश और वजूद में आने के बाद) तुम्हारे (नफ़े के बाकी रहने के) लिए आठ नर व मादा चौपायों के पैदा किए, वह तुमको माओं के पेट में एक कैफ़ियत के बाद दूसरी कैफ़ियत पर बनाता है, तीन अंधेरियों में। यह है अल्लाह तुम्हारा रब, उसी की सल्लनत है। उसके सिवा कोई इबादत के लायक नहीं, सो (इन दलीलों के बाद) तुम (हक़ से) कहाँ फिरे चले जा रहे हो? (6) अगर तुम कुफ़्र करोगे तो खुदा तआला को तुम्हारी ज़रूरत नहीं, और वह अपने बन्दों के लिए कुफ़्र को पसन्द नहीं करता।⁴ और अगर तुम शुक्र करोगे तो इसको तुम्हारे लिए पसन्द करता है।⁵ और कोई किसी (के गुनाह) का बोझ नहीं उठाता,⁶ फिर अपने परवर्दिगार के पास तुमको लौटकर जाना होगा, सो वह तुमको तुम्हारे सब आमाल जतला देगा,⁷ वह दिलों तक की बातों का जानने वाला है।⁸ (7) और (मुशिरक) आदमी को जब कोई तकलीफ़ पहुँचती है तो अपने परवर्दिगार को उसी की तरफ़ रुजू होकर पुकारने लगता है, फिर जब अल्लाह तआला उसको अपने पास से (अमन व सुकून की) नेमत अता फ़रमा देता है तो जिसके लिए पहले से (खुदा को) पुकार रहा था उसको भूल जाता है, और खुदा के शरीक बनाने लगता है। जिसका असर यह होता है कि अल्लाह की राह से (दूसरों को) गुमराह करता है। आप (ऐसे शख्स से) कह दीजिए कि अपने कुफ़्र की बहार थोड़े दिनों और लूट ले, (फिर आख़िरकार) तू दोज़ख़ियों में से होने वाला है। (8) भला जो शख्स रात के समय में सज्दा व क़ियाम (यानी नमाज़) की हालत में इबादत कर रहा हो, आख़िरत से डर रहा हो और अपने परवर्दिगार की रहमत की उम्मीद कर रहा हो,

1. यानी उन लोगों के न मानने पर आप गुम न करें, उनका फैसला वहाँ होगा।

2. यानी मुँह से कुफ़्रिया बातों और दिल से कुफ़्रिया अक़ीदों पर इसरार करता हो। और उससे बाज़ न आने का और हक़ की तलब का इरादा ही न करता हो तो उसके इस बैर और दुश्मनी से अल्लाह तआला भी उसको हिदायत की तौफ़ीक़ नहीं देता।

3. इससे हब्बा अलैहिस्सलाम मुराद हैं।

4. क्योंकि कुफ़्र से बन्दों को नुक़सान पहुँचता है।

5. क्योंकि उसमें तुम्हारा नफ़ा है।

6. इसलिए कुफ़्र करके यूँ न समझना कि हमारा कुफ़्र दूसरे के नामा-ए-आमाल में किसी वजह से दर्ज हो जाएगा और हम बरी हो जाएँगे। गरज़ तुम्हारा कुफ़्र तुम्हारे जुर्मों में लिखा जाएगा।

7. पस यह गुमान भी ग़लत है कि इन आमाल की पेशी का वक़्त न आएगा।

8. पस यह गुमान भी मत करना कि हमारे कुफ़्र की शायद उसको इत्तिला न हो।

आप कहिए क्या इल्म वाले और जहल वाले (कहीं) बराबर होते हैं? वही लोग नसीहत पकड़ते हैं जो (सही) अक्ल वाले हैं। (9) ♦

आप (मोमिनों को मेरी तरफ से) कहिए कि ऐ मेरे ईमान वाले बन्दो! तुम अपने परवर्दिगार से डरते रहो! जो लोग इस दुनिया में नेकी करते हैं उनके लिए नेक सिला है और अल्लाह की ज़मीन फराख़ "लम्बी-चौड़ी" है,² साबित-कदम रहने वालों को उनका सिला बेशुमार ही मिलेगा। (10) आप कह दीजिए कि मुझको (अल्लाह तआला की तरफ से) हुक्म हुआ है कि मैं अल्लाह तआला की इस तरह इबादत करूँ कि इबादत को उसी के लिए खास रखूँ।¹ (11) और मुझको यह (भी) हुक्म हुआ है कि सब मुसलमानों में अब्बल मैं हूँ। (12) आप (यह भी) कह दीजिए कि अगर (मान लो, जबकि ऐसा होना नामुम्किन है कि) मैं अपने रब का कहना न मानूँ तो मैं एक बड़े दिन के अज़ाब का अन्देशा रखता हूँ।¹ (13) आप कह दीजिए कि मैं तो अल्लाह ही की इबादत इस तरह करता हूँ कि अपनी इबादत को उसी के लिए ख़ालिस रखता हूँ। (14) सो खुदा को छोड़कर तुम्हारा दिल जिस चीज़ को चाहे उसकी इबादत करो। आप (यह भी) कह दीजिए कि पूरे घाटे वाले वही लोग हैं जो अपनी जानों से और अपने मुताल्लिकीन से कियामत के दिन ख़सारे में पड़े। याद रखो कि यह खुला घाटा है। (15) उनके लिए उनके ऊपर से भी आग के घेरने वाले शोले होंगे और उनके नीचे से भी आग के घेरने वाले शोले होंगे, यह वही (अज़ाब) है जिससे खुदा तआला अपने बन्दों को डराता है। ऐ मेरे बन्दो! मुझसे (यानी मेरे अज़ाब से) डरो। (16) और जो लोग शैतान की इबादत से बचते हैं (मुराद गैरुल्लाह की इबादत है) और (पूरी तरह) खुदा तआला की तरफ़ मुतवज्जह होते हैं, वे खुशख़बरी सुनाने के हक़दार हैं, सो आप मेरे उन बन्दों को खुशख़बरी सुना दीजिए (17) जो इस (अल्लाह के) कलाम को कान लगाकर सुनते हैं, फिर उसकी अच्छी-अच्छी बातों पर चलते हैं। यही हैं जिनको अल्लाह ने हिदायत की, और यही हैं जो अक्ल रखते हैं। (18) भला जिस शख्स पर अज़ाब की (अज़ली तकदीरी) बात साबित हो चुकी, तो क्या आप ऐसे शख्स को जो कि (अल्लाह के इल्म में) दोज़ख़ में है, छुड़ा सकते हैं?⁵ (19) लेकिन जो लोग अपने रब से डरते हैं उनके लिए (जन्नत के) बालाख़ाने हैं जिनके ऊपर और बालाख़ाने हैं, जो बने बनाए तैयार हैं। उनके नीचे नहरें चल रही हैं। यह अल्लाह तआला ने वायदा किया है (और) अल्लाह वायदे के खिलाफ़ नहीं करता। (20) (ऐ मुखातब) क्या तूने इस (बात) पर नज़र नहीं की कि अल्लाह तआला ने आसमान से पानी बरसाया फिर उसको ज़मीन के सोतों में दाख़िल कर देता है। फिर (जब वह उबलता है तो)

1. यानी बन्दगी व ताअत पर हमेशा कायम रहने वाले और गुनाहों से परहेज़ करने वाले रहो, कि ये सब परहेज़गारी की किस्में हैं।

2. इसलिए अगर वतन में कोई नेकी करने से रुकावट हो तो हिजरत करके दूसरी जगह चले जाओ।

3. यानी उसमें शिर्क का मामूली-सा शुब्हा भी न हो।

4. मतलब यह कि ख़ालिस तौहीद का वाजिब होना और उसके छोड़ने पर अज़ाब का मुस्तहिक़ होना ऐसा आम है कि मासूम (गुनाहों से महफूज़) ज़िरुमै नाफरमानी का एहतिमाल है ही नहीं, वह भी इस कायदे से बाहर नहीं, तो गैर-मासूम तो किस गिनती में है।

5. यानी जो दोज़ख़ में जाने वाले हैं वे कोशिश से भी गुमराही से न निकलेंगे, तो अफ़सोस व ग़म करना बेफ़ायदा है।

उसके ज़रिये से खेतियाँ पैदा करता है जिसकी मुख़ालिफ़ किस्में हैं, फिर वह खेती बिलकुल सूख जाती है, सो उसको तू ज़र्द देखता है। फिर (अल्लाह तआला) उसको चूरा-चूरा कर देता है। इस (नमूने) में अक्ल वालों के लिए बड़ी इब्रत है। (21) ♦

सो जिस शख्स का सीना अल्लाह तआला ने इस्लाम (के कबूल करने) के लिए खोल दिया¹ और वह अपने परवर्दिगार के (अता किए हुए) नूर पर है,² (क्या वह शख्स और संगदिल बराबर हैं?) सो जिन लोगों के दिल खुदा के ज़िक्र से मुतास्सिर नहीं होते उनके लिए बड़ी ख़राबी है, ये लोग खुली गुमराही में हैं। (22) अल्लाह ने बड़ा उम्दा कलाम³ नाज़िल फ़रमाया है, जो ऐसी किताब है कि आपस में मिलती जुलती है। बार-बार दोहराई गई है, जिससे उन लोगों के जो कि अपने रब से डरते हैं, बदन काँप उठते हैं।⁴ फिर उनके बदन और दिल नरम (और ताबेदार) होकर अल्लाह के ज़िक्र की तरफ़ मुतवज्जह हो जाते हैं।⁵ यह (कुरआन) अल्लाह की हिदायत है, जिसको वह चाहता है इसके ज़रिए से हिदायत करता है, और खुदा जिसको गुमराह करता है उसका कोई हिदायत देने वाला नहीं। (23) भला जो शख्स अपने मुँह को कियामत के दिन अज़ाब की ढाल बना देगा,⁶ और ऐसे ज़ालिमों को हुक्म होगा कि जो कुछ तुम किया करते थे (अब) उसका मज़ा चखो। (24) तो क्या यह (अज़ाब पाने वाले) और जो ऐसा न हो बराबर हो सकते हैं? जो लोग उनसे पहले हो चुके हैं उन्होंने भी (हक़ को) झुठलाया था, सो उनपर (खुदा का) अज़ाब ऐसे तौर पर आया कि उनको ख़याल भी न था। (25) सो अल्लाह ने उनको इसी दुनियावी ज़िन्दगी में भी रुस्वाई का मज़ा चखाया और आख़िरत का अज़ाब और भी बड़ा (और सख़्त) है, काश! ये लोग समझ जाते। (26) और हमने लोगों की (हिदायत) के लिए इस कुरआन में हर किस्म के (ज़रूरी) उम्दा मज़ामीन बयान किए हैं, ताकि ये लोग नसीहत पकड़ें। (27) जिसकी कैफ़ियत यह है कि वह अरबी कुरआन है जिसमें ज़रा भी टेढ़ नहीं (और) ताकि ये लोग डरें।⁷ (28) अल्लाह ने (मोमिन व मुशिरक के बारे में) एक मिसाल बयान फ़रमाई कि एक शख्स (गुलाम) है, जिसमें कई साझी हैं, जिनमें आपस में ज़िद्दा-ज़िद्दी (भी) है, और एक और शख्स है कि पूरा एक ही शख्स का (गुलाम) है, (तो) क्या उन दोनों की हालत बराबर (हो सकती) है?⁸ अल्हम्दु लिल्लाह (कबूल तो किया) बल्कि उनमें अक्सर समझते भी नहीं। (29) आपको भी मरना है और उनको भी मरना है। (30) फिर कियामत के दिन तुम मुक़द्मात अपने रब के सामने पेश करोगे। (उस वक़्त अमली फैसला हो जाएगा)⁹ (31) ♦

1. यानी इस्लाम के हक़ होने का उसको यकीन आ गया।

2. यानी वह हिदायत के तकाज़े पर चल रहा है। यानी यकीन लाकर उसी के मुताबिक़ अमल करने लगा।

3. यानी कुरआन पाक।

4. इससे डर और ख़ौफ़ मुराद है, अगरचे दिल ही में रहे बदन पर उसका असर ज़ाहिर न हो।

5. यानी डरकर हाथ-पैर वग़ैरह के आमाल और दिल के आमाल को फ़रमाँबरदारी और तवज्जोह से बजा लाते हैं।

6. ढाल बनाने का मतलब यह है कि आदमी की आदत यह है कि जो कोई उसपर वार और हमला करता है तो वह उसको हाथ पर रोकता है, मगर वहाँ हाथ-पाँव जकड़े होंगे इसलिए सब मुँह पर ही लेगा। हम अल्लाह के गुज़ब से उसकी पनाह चाहते हैं।

7. पस हिदायत की किताब होने के लिए जिन कमाल की सिफ़तों की ज़रूरत थी, कुरआन उनपर हावी है। लेकिन अगर उन्हीं की इस्तेदाद और सलाहियत ख़राब और फ़ासिद हो तो क्या किया जाए।

8. पहली मिसाल मुशिरक की है कि हमेशा डावाँ-डोल रहता है, कभी ग़ैरुल्लाह (अल्लाह के अलावा) की तरफ़ दौड़ता है, कभी अल्लाह की तरफ़। फिर कभी ग़ैरुल्लाह में भी एक पर इत्मीनान नहीं होता। कभी किसी की तरफ़ रुजू करता है, कभी किसी की तरफ़।

9. इस झगड़े के वक़्त फैसला यह होगा कि जो हक़-परस्त नहीं उनको दोख़ का अज़ाब नसीब होगा और हक़-परस्तों को बड़ा अज़्र मिलेगा।

चौबीसवाँ पार: फ-मन् अज़्लमु

सूर: जुमर (आयत 32 से 75)

सो उस शख्स से ज़्यादा बेइन्साफ़ कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ बाँधे और सच्ची बात (यानी कुरआन) को जबकि वह उसके पास (रसूल के ज़रिए से) पहुँची झुठलाए। क्या (कियामत के दिन) ऐसे काफ़िरों का ठिकाना जहन्नम में न होगा?¹ (32) और जो लोग सच्ची बात लेकर आए और (खुद भी) उसको सच जाना तो ये लोग परहेज़गार हैं। (33) (उनका फैसला यह होगा कि) वे जो कुछ चाहेंगे उनके लिए उनके परवर्दिगार के पास सब कुछ है, यह सिला है नेक काम करने वालों का। (34) ताकि अल्लाह उनसे उनके बुरे आ़माल को दूर कर दे और उनके नेक कामों के बदले उनको उनका सवाब दे।² (35) क्या अल्लाह तआला अपने (खास) बन्दे (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हिफ़ाज़त) के लिए काफ़ी नहीं, और ये लोग आपको उन (झूठे माबूदों) से डराते हैं जो खुदा के सिवा (तजवीज़ कर रखे) हैं, और जिसको खुदा गुमराह करे उसका कोई हिदायत देने वाला नहीं। (36) और जिसको वह हिदायत दे उसका कोई गुमराह करने वाला नहीं। क्या खुदा तआला ज़बरदस्त, इन्तिकाम लेने वाला नहीं?³ (37) और अगर (आप) उनसे पूछें कि आसमान और ज़मीन को किसने पैदा किया है? तो यही कहेंगे कि अल्लाह तआला ने, आप (उनसे) कहिए कि भला फिर यह तो बतलाओ कि खुदा के सिवा तुम जिन माबूदों को पूजते हो अगर अल्लाह तआला मुझको कोई तकलीफ़ पहुँचाना चाहे, क्या ये माबूद उसकी दी हुई तकलीफ़ दूर कर सकते हैं? या अल्लाह तआला मुझपर अपनी इनायत करना चाहे, क्या ये माबूद उसकी इनायत को रोक सकते हैं? आप कह दीजिए कि (इससे साबित हो गया कि) मेरे लिए खुदा काफ़ी है, भरोसा करने वाले उसी पर भरोसा करते हैं।⁴ (38) आप कह दीजिए कि तुम अपनी हालत पर अमल किए जाओ, मैं भी अमल कर रहा हूँ,⁵ सो अब जल्दी ही तुमको मालूम हुआ जाता है (39) कि वह कौन शख्स है जिसपर (दुनिया में) ऐसा अज़ाब आया चाहता है जो उसको रुस्वा कर देगा, और (मौत के बाद) उसपर हमेशा रहने वाला अज़ाब नाज़िल होगा। (40) हमने आप पर यह किताब लोगों के (नफ़े के) लिए उतारी जो हक़ को लिए हुए है। सो जो शख्स सच्ची राह पर आएगा तो अपने

1. ऐसे शख्स का बहुत बड़ा ज़ालिम होना भी ज़ाहिर है और बड़े ज़ालिम का बड़ी सज़ा का मुस्तहक़ होना भी ज़ाहिर है, और बड़ी सज़ा जहन्नम है।
2. ऊपर क़री कई आयतों में तौहीद के हक़ होने और शिर्क के बातिल होने को बयान किया है। ऐसे मज़मूनों को सुनकर कुफ़ार और मुशिरकीन आपसे कहते कि हमारे माबूदों से गुस्ताखी न कीजिए वरना हम उनसे दरखास्त करके आपको मजनों करवा देंगे। चुनौचे इसपर आयत "व युख़्विफून-क.....आख़िर तक" नाज़िल हुई। इसी तरह और भी मुख़ालफ़त और दुश्मनी की बातें करते थे। आप रन्जीदा और गुममीन होते। आगे आपके लिए तसल्ली के मज़ामीन हैं, जिनमें से बाज़ में आपको ख़िताब (संबोधन) करने वाला और बाज़ में जवाब देने वाला बनाना मकसूद है।
3. यानी अल्लाह तआला मददगार होने की सिफ़त में कामिल और खास बन्दा मदद किए जाने के काबिल, और बातिल माबूद कुदरत और मदद से बेबस व बेकार। फिर यह डराना ख़ालिस जहालत और गुमराही नहीं तो और क्या है।
4. पस मैं भी उसी पर भरोसा रखता हूँ और तुम्हारी मुख़ालफ़त और दुश्मनी की कुछ परवाह नहीं करता।
5. यानी जैसे तुम अपना तरीका नहीं छोड़ते मैं अपना तरीका नहीं छोड़ता।

नफे के वास्ते, और जो शख्स बेराह रहेगा तो उसका बेराह होना (यानी उसका वबाल) उसी पर पड़ेगा, और आप उनपर (कुछ बतौर ज़िम्मेदारी के) मुसल्लत नहीं किए गए। (41) ♦

अल्लाह ही कब्ज़ (यानी मुअत्तल व बेकार) करता है (उन) जानों को उनकी मौत के वक़्त, और उन जानों को भी जिनकी मौत नहीं आई उनके सोने के वक़्त, फिर उन जानों को तो रोक लेता है जिनपर मौत का हुक्म फ़रमा चुका है और बाकी जानों को एक मुकर्ररा मीयाद तक के लिए रिहा कर देता है, इसमें उन लोगों के लिए जो कि सोचने के आदी हैं दलीलें हैं। (42) हाँ, क्या उन (मुशिरक) लोगों ने खुदा के सिवा दूसरों को (माबूद) करार दे रखा है, जो (उनकी) सिफ़ारिश करेंगे। आप कह दीजिए कि अगरचे ये कुछ भी कुदरत न रखते हों और कुछ भी इल्म न रखते हों।¹ (43) आप कह दीजिए कि सिफ़ारिश तो मुकम्मल तौर पर खुदा ही के इख़्तियार में है,² तमाम आसमानों और ज़मीन की बादशाही उसी की है, फिर उसी की तरफ़ लौटकर जाओगे। (44) और जब फ़कत अल्लाह का ज़िक्र किया जाता है तो उन लोगों के दिलों को नागवार होता है जो कि आख़िरत का यकीन नहीं रखते, और जब उसके सिवा औरों का ज़िक्र आता है तो उसी वक़्त वे लोग खुश हो जाते हैं।³ (45) आप कहिए कि ऐ अल्लाह आसमान और ज़मीन के पैदा करने वाले! बातिन और ज़ाहिर के जानने वाले! आप ही (कियामत के दिन) अपने बन्दों के दरमियान उन मामलों में फैसला फ़रमा देंगे जिनमें वे आपस में इख़्तिलाफ़ करते थे।⁴ (46) और अगर जुल्म (यानी शिर्क व कुफ़्र) करने वालों के पास दुनिया भर की तमाम चीज़ें हों और उन चीज़ों के साथ उतनी ही चीज़ें और भी हों, तो वे लोग कियामत के दिन सख़्त अज़ाब से छूट जाने के लिए (बिना सोचे) उनको देने लगें। और खुदा की तरफ़ से उनको वह मामला पेश आएगा जिसका उनको गुमान भी न था। (47) और (उस वक़्त) उनको तमाम बुरे आमाँल ज़ाहिर हो जाएँगे और जिस (अज़ाब) के साथ वे हँसी-मज़ाक़ किया करते थे, वह उनको आ घेरेगा। (48) फिर जिस वक़्त (उस मुशिरक) आदमी को कोई तकलीफ़ पहुँचती है तो हमको पुकारता है। फिर जब हम उसको अपनी

1. यानी शफ़ाअत के लिए कम-से-कम इल्म व कुदरत तो ज़रूरी है।

2. यानी उसकी इजाज़त के बग़ैर किसी की मजाल नहीं कि सिफ़ारिश कर सके। और इजाज़त के लिए दो शर्तें हैं- शफ़ाअत करने वाले का मकबूल होना और जिसके लिए शफ़ाअत की जाए उसका मग़्फ़रत के काबिल होना। पस जिन रुहों को ये माबूद करार देते हैं अगर वे शयातीन हैं तो दोनों शर्तें नहीं पाई गईं, और अगर वे फ़रिश्ते वग़ैरह हैं तो दूसरी शर्त नहीं पाई गई। बहरहाल इजाज़त नहीं पाई गई, पस उनकी शफ़ाअत भी नहीं होगी। और यही बुनियाद थी उनके माबूद करार देने की, पस उनका माबूद होना बातिल ठहरा और हक़ तआला का यक़्ता होना साबित हो गया।

3. ऊपर तौहीद के ज़िम्न में मुशिरकीन के तकब्बुर और दुश्मनी का बयान है। चूँकि घमण्ड और तकब्बुर और दुश्मनी तब्तीग़ करने वाले को रंज पहुँचाने का सबब होता है इसलिए आगे आपकी तसल्ली के लिए एक दुआ की तालीम है। और जज़ा के बयान से तसल्ली देते और दुआ के मज़मून को मुकम्मल फ़रमाते हैं।

4. यानी आप उन घमण्ड और तकब्बुर करने वालों की फ़िक्र में न पड़िए, बल्कि उनका मामला अल्लाह के सुपुर्द कीजिए, वह अमली फैसला कर देंगे।

तरफ से कोई नेमत अता फरमा देते हैं तो कहता है कि यह तो मुझको (मेरी) तदबीर से मिली है, बल्कि वह एक आजमाइश है,¹ लेकिन अक्सर लोग समझते नहीं।² (49) यह बात (बाज़) उन लोगों ने भी कही थी जो उनसे पहले गुज़र चुके हैं (जैसे कारून ने कहा था), सो उनकी कार्रवाई उनके कुछ काम न आई, (50) फिर उनके तमाम बुरे आमाल उनपर आ पड़े (और सज़ा पाने वाले हुए)। और उनमें भी जो ज़ालिम हैं उनपर भी उनके बुरे आमाल अभी पड़ने वाले हैं, और ये (खुदा तआला को) हरा नहीं सकते।³ (51) क्या उन लोगों को (हालात में ग़ौर करने से) यह मालूम नहीं हुआ कि अल्लाह ही जिसको चाहता है ज़्यादा रिज़्क देता है, और वही (जिसके लिए चाहता है) तंगी भी कर देता है, इस (ज़्यादती और तंगी करने) में ईमान वालों के वास्ते निशानियाँ हैं।⁴ (52) ♦

आप कह दीजिए कि ऐ मेरे बन्दो! जिन्होंने (कुफ़्र व शिर्क करके) अपने ऊपर ज़्यादतियाँ की हैं, कि तुम खुदा की रहमत से नाउम्मीद मत हो, यकीनन खुदा तआला तुम्हारे गुनाहों को माफ़ फरमा देगा।⁵ वाकई वह बड़ा बख़्शने वाला और बड़ी रहमत वाला है। (53) और तुम अपने रब की तरफ़ रुजू करो और (इस्लाम कबूल करने में) उसकी फरमाँबरदारी करो,⁶ इससे पहले कि तुमपर (अल्लाह का) अज़ाब आ जाए (और) उस वक़्त किसी की तरफ़ से तुम्हारी कोई मदद न की जाए।⁷ (54) और तुम (को चाहिए कि) अपने रब के पास से आए हुए अच्छे-अच्छे हुक्मों पर चलो, इससे पहले कि तुमपर अचानक अज़ाब आ पड़े और तुमको (उसका) ख़्याल भी न हो।⁸ (55) कभी (कल कियामत को) कोई शख्स कहने लगे कि अफ़सोस मेरी उस कोताही पर जो मैंने खुदा तआला की जनाब में की, और मैं तो (खुदा के अहकाम पर) हँस्ता ही रहा। (56) या कोई यह कहने लगे कि अगर अल्लाह तआला (दुनिया में) मुझको हिदायत करता तो मैं भी परहेज़गारों में से होता। (57) या कोई अज़ाब को देखकर यूँ कहने लगे कि काश! मेरा (दुनिया में) फिर जाना हो जाए, फिर मैं नेक बन्दों में हो जाऊँ। (58) हाँ, बेशक तेरे पास मेरी आयतें पहुँची थीं, सो तूने उनको झुठलाया और

1. आजमाइश इसलिए कि देखें उसके मिलने पर हमको भूल जाता है और कुफ़्र करता है, या याद रखता है और शुक्र करता है। और इसी आजमाइश के लिए बाज़ नेमतों में असबाब और कमाने का वास्ता भी रख दिया है, इससे और ज़्यादा आजमाइश हो गई, कि देखें इस ज़ाहिरी सबब पर नज़र करता है या हकीकी सबब पर।

2. इसलिए उसको अपनी तदबीर का नतीजा बतलाते हैं, और शिर्क में मुक्तला रहते हैं।

3. चुनाँचे बद्र में ख़ूब सज़ा हुई।

4. यानी दलीलें कायम हैं कि कम-ज़्यादा करने वाला वही है, तदबीर और तदबीर का बुरा होना हकीकी इल्लत नहीं। पस इन दलीलों को जो शख्स समझ लेगा वह अपनी तदबीर की तरफ़ निस्वत नहीं करेगा, बल्कि खुदा के मुनइम (नेमत देने वाला) होना ज़हन से न उतरेगा, जो शिर्क में मुक्तला हो जाने का सबब हो गया था, बल्कि वह ईमान वाला रहेगा। और तंगदस्ती और बीमारी में उसके हाल और क़ौल में इख़िलाफ़ और टकराव न होगा।

5. यानी यह ख़्याल न करो कि पहले जो कुफ़्र व शिर्क किया है ईमान लाने के बाद उसपर पकड़ होगी, सो यह बात नहीं।

6. यानी माफी की शर्त कुफ़्र से तौबा करना और ईमान लाना है।

7. यानी जैसे ईमान लाने की सूरत में सब कुफ़्र व शिर्क माफ़ हो जाएगा, इसी तरह इस्लाम न लाने की सूरत में उस कुफ़्र व शिर्क पर अज़ाब होगा जिसको कोई दूर करने वाला नहीं।

8. इससे आख़िरत का अज़ाब मुराद है।

(झुठलाना किसी शुब्हे से न था, बल्कि) तूने तकब्बुर किया और काफ़िरो में (हमेशा) शामिल रहा। (59) और आप कियामत के दिन उन लोगों के चेहरे स्याह देखेंगे जिन्होंने खुदा पर झूठ बोला था,¹ क्या उन तकब्बुर करने वालों का ठिकाना जहन्नम नहीं है? (60) और जो लोग (शिरक और कुफ़ से) बचते थे, अल्लाह तआला उन लोगों को कामयाबी के साथ (जहन्नम से) नजात देगा। उनको (ज़रा भी) तकलीफ़ न पहुँचेगी और न वे ग़मगीन होंगे। (क्योंकि जन्नत में ग़म नहीं)। (61) अल्लाह ही पैदा करने वाला है हर चीज़ का, और वही हर चीज़ का निगहबान है। (62) (और) उसी के इख़्तियार में हैं आसमानों और ज़मीन की कुन्जियाँ² और जो लोग (इसपर भी) अल्लाह की आयतों को नहीं मानते वे बड़े घाटे में रहेंगे। (63) ♦

आप (उनके जवाब में) कह दीजिए कि ऐ जाहिलो! क्या फिर भी तुम मुझसे अल्लाह के ग़ैर की इबादत करने की फ़रमाइश करते हो? (64) और आपकी तरफ़ भी और जो पैग़म्बर आपसे पहले हो गुज़रे हैं उनकी तरफ़ भी यह (बात) वह्य में भेजी जा चुकी है कि ऐ आ़म मुखातब! अगर तू शिरक करेगा तो तेरा किया कराया काम (सब) बरबाद हो जाएगा और तू घाटे में पड़ेगा। (तो ऐ मुखातब! कभी शिरक मत करना) (65) बल्कि (हमेशा) अल्लाह ही की इबादत करना और (अल्लाह तआला का) शुक्रगुज़ार रहना।³ (66) और (अफ़सोस है कि) उन लोगों ने खुदा तआला की कुछ अज़मत न की जैसी अज़मत करना चाहिए थी,⁴ हालाँकि (उसकी वह शान है कि) सारी ज़मीन उसकी मुट्ठी में होगी कियामत के दिन, और तमाम आसमान लिपटे होंगे उसके दाहिने हाथ में, वह पाक और बरतर है उनके शिरक से। (67) और (कियामत के दिन) सूर में फूँक मारी जाएगी, सो तमाम आसमान और ज़मीन वालों के होश उड़ जाएँगे मगर जिसको खुदा चाहे, फिर उस (सूर) में दोबारा फूँक मारी जाएगी तो एक ही बार में सब-के-सब खड़े हो जाएँगे (और चारों तरफ़) देखने लगेंगे। (68) और ज़मीन अपने रब के नूर (जिसकी कैफ़ियत नाकाबिले बयान है) से रोशन हो जाएगी और (सबका) नामा-ए-आमाल (हर एक के सामने) रख दिया जाएगा, और पैग़म्बर और गवाह हाज़िर किए जाएँगे, और सब में ठीक-ठीक फैसला किया जाएगा, और उनपर ज़रा जुल्म न होगा। (69) और हर शख्स को उसके

1. इसमें दो चीज़ें आ गईं। जो बात खुदा ने नहीं कही, जैसे शिरक वगैरह उसको कहना कि खुदा ने कही है। और जो बात खुदा ने कही जैसे कुरआन, उसको कहना कि खुदा ने नहीं कही।
2. यानी पहली बार पैदा करने वाला भी वही और हिफ़ाज़त करने वाला भी वही और तसर्फ़ करने वाला भी वही। पस ऐसी सिफ़ाते कमाल का रखने वाला शरीक से भी पाक होगा और जज़ा व सज़ा का भी मालिक होगा।
3. यह शिरक के बुरा होने की दलील है कि वह सख़्त दर्जे की नाशुकी है। पस जब नबियों को शिरक का बुरा होना वह्य से मालूम है और दूसरों तक उसके पहुँचाने का हुक्म है, तो उनसे शिरक का होना कैसे मुम्किन है? और आप भी उन्हीं यानी अम्बिया में से हैं। तो ऐसी हवस रखना उनके दिमाग़ का ख़लल है।
4. अज़मत के हक़ से मुराद तौहीद है, और उसके इनकार करने से मुराद शिरक है।

आमाल का पूरा बदला दिया जाएगा,¹ और वह सबके कामों को खूब जानता है। (70) ♦

और जो काफिर हैं वे जहन्नम की तरफ गिरोह-गिरोह बनाकर हाँके जाएँगे,² यहाँ तक कि जब दोज़ख के पास पहुँचेंगे तो (उस वक़्त) उसके दरवाज़े खोल दिए जाएँगे और उनसे दोज़ख के मुहाफिज़ (फ़रिश्ते, मलामत के तौर पर) कहेंगे कि क्या तुम्हारे पास तुम ही लोगों में से पैगम्बर नहीं आए थे? जो तुमको तुम्हारे रब की आयतें पढ़कर सुनाया करते थे और तुमको तुम्हारे इस दिन के पेश आने से डराया करते थे। काफिर कहेंगे कि हाँ! लेकिन अज़ाब का वायदा काफ़िरों पर पूरा होकर रहा।³ (71) (फिर उनसे) कहा जाएगा (यानी फ़रिश्ते कहेंगे) कि जहन्नम के दरवाज़ों में दाख़िल हो (और) हमेशा उसमें रहा करो। गरज़ (खुदा के अहक़ाम से) तकब्बुर करने वालों का बुरा ठिकाना है।⁴ (72) और जो लोग अपने रब से डरते थे, वे गिरोह-गिरोह होकर जन्नत की तरफ़ रवाना किए जाएँगे।⁵ यहाँ तक कि जब उस (जन्नत) के पास पहुँचेंगे और उसके दरवाज़े (पहले से) खुले हुए होंगे (ताकि ज़रा भी देर न लगे) और वहाँ के मुहाफिज़ (फ़रिश्ते) उनसे कहेंगे कि अस्सलामु अलैकुम! तुम मज़े में रहो, सो इस (जन्नत) में हमेशा रहने के लिए दाख़िल हो जाओ। (73) और (दाख़िल होकर) कहेंगे कि अल्लाह तआला का (लाख-लाख) शुक्र है जिसने हमसे अपना वायदा सच्चा किया और हमको इस सरज़मीन का मालिक बना दिया कि हम जन्नत में जहाँ चाहें ठहरें।⁶ गरज़ (नेक) अमल करने का अच्छा बदला है।⁷ (74) और आप फ़रिश्तों को देखेंगे कि (हिसाब के इज्जास के वक़्त) अर्श के इर्द-गिर्द घेरा बनाए होंगे (और) अपने रब की पाकी और तारीफ़ बयान करते होंगे, और तमाम बन्दों में ठीक-ठीक फैसला कर दिया जाएगा और कहा जाएगा कि सारी खूबियाँ खुदा ही को लायक हैं जो तमाम ज़हानों का परवर्दिगार है। ♦ (75) ♦

40 सूर: मुअ्मिन 60

सूर: मुअ्मिन मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 85 आयतें और 9 रुकूअ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

हा-मीम्।¹ (इसके मायने अल्लाह ही को मालूम हैं) (1) यह किताब उतारी गई है अल्लाह की तरफ़ से जो ज़बरदस्त है, हर चीज़ का जानने वाला है। (2) गुनाह का बख़्शने वाला है और तौबा का क़बूल करने वाला है। सख़्त सज़ा देने वाला है, कुदरत वाला है, उसके सिवा कोई इबादत के लायक नहीं, उसी के पास (सबको) जाना है। (3) अल्लाह तआला की इन आयतों में (यानी कुरआन में) वही लोग (नाहक़ के) झगड़े

1. नेक आमाल में बदले के पूरा होने से मकसूद कमी का इनकार करना है, और बुरे आमाल में बदले के पूरा होने से ज़्यादाती का इनकार करना मकसूद है।

2. गिरोह-गिरोह इसलिए कि कुफ़ के दर्जे और किस्में अलग-अलग हैं। पस एक तरह के काफ़िरों का एक-एक गिरोह होगा।

3. यह माज़िरत नहीं इक्कार है, कि पहुँचाने के बावजूद हमने कुफ़ किया, और काफ़िरों के लिए जिस अज़ाब का वायदा किया गया था वह हमारे सामने आया। वाकई हमारी नालायकी है।

4. फिर उस हुक्म के बाद वे जहन्नम में दाख़िल किए जाएँगे और दरवाज़े बन्द कर दिए जाएँगे।

5. यानी जिस दर्जे का तक्वा होगा उस दर्जे के मुत्तकी एक जगह कर दिए जाएँगे।

6. यानी हर शख्स को खूब फ़रागत की जगह मिली है।

7. यह या तो उन्हीं का कलाम हो, या अल्लाह तआला का हो।

8. यहाँ से सूर: अहक़ाफ़ तक लगातार सात सूरतें 'हा-मीम्' से शुरू हुई हैं। और अजीब लतीफ़ है कि सातों कुरआन मजीद के अल्लाह की तरफ़ से नाज़िल शुदा होने और वद्व किए जाने के मज़मून से शुरू हुई हैं।

निकालते हैं जो (इसके) इनकारी हैं, सो उन लोगों का शहरों में (अमन व अमान से) चलना-फिरना आपको शुब्हे में न डाले।¹ (4) उनसे पहले नूह (अलैहिस्सलाम) की कौम ने और दूसरे गिरोहों ने भी जो उनके बाद हुए (जैसे आद व समूद वगैरह ने सच्चे दीन को) झुठलाया था, और हर उम्मत (में से जो लोग ईमान न लाए थे उन्होंने) अपने पैगम्बर के गिरफ्तार करने का इरादा किया और नाहक के झगड़े निकाले, ताकि उस नाहक से हक को बातिल कर दें, सो मैंने (आखिर) उनपर पकड़ की, सो (देखो) मेरी तरफ से (उनको) कैसी सज़ा हुई। (5) और इसी तरह तमाम काफिरों पर आपके रब का यह कौल साबित हो चुका है कि वे लोग (आखिरत में) दोज़खी होंगे।² (6) जो फरिश्ते कि (अल्लाह के) अर्श को उठाए हुए हैं और जो फरिश्ते उसके इर्द-गिर्द हैं वे अपने रब की तस्बीह व तारीफ करते रहते हैं और उसपर ईमान रखते हैं, और ईमान वालों के लिए (इस तरह) इस्तिगफार किया करते हैं कि ऐ हमारे परवर्दिगार! आपकी रहमत (जो कि आम है) और इल्म हर चीज़ को शामिल है,³ सो उन लोगों को बख्श दीजिए (जिन्होंने शिर्क और कुफ्र से) तौबा कर ली और आपके रास्ते पर चलते हैं, और उनको जहन्नम के अज़ाब से बचा लीजिए।⁴ (7) ऐ हमारे परवर्दिगार! उनको हमेशा रहने की जन्नतों में जिनका आपने उनसे वायदा किया है, दाखिल कर दीजिए, और उनके माँ-बाप और बीवियों और औलाद में जो (जन्नत के) लायक (यानी मोमिन) हों उनको भी दाखिल कर दीजिए, बेशक आप ज़बरदस्त, हिक्मत वाले हैं।⁵ (8) और उनको (कियामत के दिन हर तरह की) तकलीफों से बचाइए,⁶ और आप जिसको उस दिन की तकलीफों से बचा लें तो उसपर आपने (बहुत) मेहरबानी फरमाई और यह बड़ी कामयाबी है।⁷ (9) ♦

जो लोग काफिर हुए (उस वक़्त) उनको पुकारा जाएगा कि जैसी तुमको (इस वक़्त) अपने आप से नफरत है, इससे बढ़कर खुदा को (तुमसे) नफरत थी, जबकि तुम (दुनिया में) ईमान की तरफ बुलाए जाते थे फिर तुम नहीं मानते थे।⁸ (10) वे लोग कहेंगे कि ऐ हमारे परवर्दिगार! आपने हमको दो बार मुर्दा रखा और दो बार ज़िन्दगी दी,⁹ सो हम अपनी ख़ताओं का इक़रार करते हैं, तो क्या (यहाँ से) निकलने की कोई सूरत है? (11) वजह इसकी यह है कि जब सिर्फ अल्लाह का नाम लिया जाता था तो तुम इनकार करते थे, और अगर उसके साथ किसी को शरीक किया जाता था तो तुम मान लेते थे, सो (उसपर) यह फैसला अल्लाह का है जो आलीशान (और) बड़े रुतबे वाला है।¹⁰ (12) वही है जो तुमको अपनी निशानियाँ दिखलाता है, और (वही है

1. आपके इस ख़िताब (संबोधित किए जाने) से दूसरों को सुनाना मकसूद है।
2. यानी यहाँ भी सज़ा हुई और वहाँ भी होगी। इसी तरह कुफ्र के सबब इन मौजूदा काफिरों की भी पकड़ और सज़ा होने वाली है, चाहे दोनों आलम में हो या आखिरत में।
3. पस ईमान वालों पर और ज़्यादा रहमत होगी।
4. जो कि मग़िफ़रत का सबब है, क्योंकि अज़ाब का सबब गुनाह है। गुनाहों के दूर होने से वह भी दूर हो जाएगा।
5. यानी आप मग़िफ़रत पर कादिर हैं और हर एक के मुनासिब उसको दर्जा अता फरमाते हैं।
6. अगरचे वे जहन्नम से हल्के हों जैसे कियामत के मैदान की परेशानियाँ।
7. यानी छोटे और बड़े अज़ाब से मग़िफ़रत और हिफ़ाज़त और जन्नत में दाखिल होना बड़ी चीज़ है।
8. इस कहने से मकसूद हसरत बढ़ाना और शर्मिन्दगी दिलाना है।
9. दो बार मुर्दा रखा। यानी एक बार पैदा होने से पहले जबकि बेजान चीज़ की हालत में थे, जिसमें परिचित जान नहीं होती। और दूसरी बार जिसको सब मौत कहते हैं। और दो बार ज़िन्दगी दी- यानी एक दुनिया की ज़िन्दगी और दूसरी आखिरत की।

(शेष तफ़सीर पृष्ठ 846 पर)

जो) आसमान से तुम्हारे लिए रिज़्क भेजता है। और सिर्फ वही शख्स नसीहत कबूल करता है जो (खुदा की तरफ) रुजू (करने का इरादा) करता है। (13) सो तुम लोग खुदा को ख़ालिस एतिकाद करके पुकारो, अगरचे काफ़िरो को नागवार (ही) क्यों न हो। (14) वह बुलन्द और आला दर्जों वाला है, वह अर्श का मालिक है, वह अपने बन्दों में से जिसपर चाहता है वहा यानी अपना हुक्म भेजता है, ताकि (वह वहा वाला लोगों को) जमा होने के दिन (यानी कियामत के दिन) से डराए। (15) जिस दिन सब लोग (खुदा के) सामने आ मौजूद होंगे, (कि) उनकी बात खुदा से छुपी न रहेगी। आज के दिन किसकी हुक्मत होगी? बस अल्लाह ही की होगी जो यकता (और) ग़ालिब है। (16) आज हर शख्स को उसके किए का बदला दिया जाएगा, आज (किसी पर) जुल्म न होगा, अल्लाह तआला बहुत जल्द हिसाब लेने वाला है। (17) और आप उन लोगों को एक करीब आने वाले मुसीबत के दिन से (जो कि कियामत का दिन है) डराइए, जिस वक़्त कलेजे मुँह को आ जाएँगे (और ग़म से) घुट-घुट जाएँगे। (उस दिन) ज़ालिमों का न कोई दिली दोस्त होगा और न कोई सिफ़ारिशी होगा जिसका कहा माना जाए। (18) (वह ऐसा है कि) आँखों की चोरी को जानता है, और उन (बातों) को भी जो सीनों में छुपी हैं।¹ (19) और अल्लाह तआला ठीक-ठीक फैसला कर देगा। और खुदा के सिवा जिनको ये लोग पुकारा करते हैं, वे किसी तरह का भी फैसला नहीं कर सकते, (क्योंकि) अल्लाह ही सब कुछ सुनने वाला, सब कुछ देखने वाला है।² (20) ♦

क्या उन लोगों ने मुल्क में चल-फिरकर नहीं देखा कि जो (काफ़िर) लोग उनसे पहले गुज़र चुके हैं उनका क्या अन्जाम हुआ, वे लोग ताक़त और उन निशानों में जो कि ज़मीन पर छोड़ गए हैं, उनसे बहुत ज़्यादा थे। सो उनके गुनाहों की वजह से खुदा ने उनपर पकड़ फ़रमाई,³ और उनका कोई खुदा (के अज़ाब) से बचाने वाला न हुआ। (21) यह (पकड़) इस वजह से हुई कि उनके पास उनके रसूल रोशन दलीलें⁴ लेकर आते रहे, फिर उन्होंने न माना, तो अल्लाह ने उनपर पकड़ फ़रमाई, बेशक वह बड़ी कुव्वत वाला, सख़्त सज़ा देने वाला है।⁵ (22) और हमने मूसा (अलैहिस्सलाम) को अपने अहकाम और खुली दलील के साथ (23) फिरऔन

(पृष्ठ 844 का शेष) फ़ायदा: ये सब चार हालतें हुईं। अगरचे इनमें इनकार एक ही का था और उसी का इकरार इस वक़्त मकसूद है, लेकिन बक़िया तीन हालतें इसलिए ज़िक्र कर दीं कि वे यकीनी थीं। पस मकसूद यह होगा कि यह चौथी भी उन तीनों के जैसे यकीनी और साबित है।

10. यानी चूँकि हक़ तआला की बुलन्द शान और बड़ाई के एतबार से यह बड़ा जुर्म था, इसलिए फैसले में सज़ा भी बड़ी तजवीज़ हुई, यानी हमेशा उसमें गिरफ़्तार रहना।

1. मतलब यह कि उसको बन्दों के तमाम आमाल की जानकारी है जिसपर बदले का दिया जाना मौकूफ़ है।
2. इससे दो बातें साबित हुईं- एक तैरे-खुदा का मदद करने से आजिज़ होना और दूसरे खुदाई में किसी का शरीक न होना।
3. यानी अज़ाब नाज़िल किया।
4. यानी मोजिज़े (चमत्कार), जो कि नुबुव्वत की दलीलें हैं।
5. पस जब पकड़ की वजह कुफ़्र और शिर्क है, जो उनमें भी मुश्तरक है, फिर ये पकड़ से कैसे महफूज़ है? चाहे दोनों जहाँ में, चाहे आख़िरत में।

और हामान और कारून के पास भेजा, तो उन लोगों ने कहा कि यह जादूगर (और) झूठा है।^१ (24) फिर (उसके बाद) जब वह (आम) लोगों के पास हक दीन जो कि हमारी तरफ से था, लेकर आए तो उन (ज़िफ्र शुदा) लोगों ने (मशिवरे के तौर पर) कहा कि जो लोग उनके साथ ईमान ले आए हैं उनके बेटों को कत्ल कर डालो और उनकी लड़कियों को ज़िन्दा रहने दो, और उन काफ़िरो की तदबीर बिलकुल बेअसर रही।^२ (25) और फिरऔन ने (दरबारियों से) कहा कि मुझको छोड़ दो मैं मूसा को कत्ल कर डालूँ, और उसको चाहिए कि अपने परवर्दिगार को (मदद के लिए) पुकारे, मुझको अन्देशा है कि वह (कहीं) तुम्हारा दीन (न) बदल डाले, या मुल्क में कोई खराबी (न) फैला दे। (26) और मूसा (अलैहिस्सलाम) ने (जब यह बात सुनी तो) कहा कि मैं अपने और तुम्हारे (यानी सबके) परवर्दिगार की पनाह लेता हूँ हर तकब्बुर करने वाले शख्स (की बुराई) से, जो हिसाब के दिन पर यकीन नहीं रखता। (27) ♦

और (उस मशिवरे की मज्लिस में) एक मोमिन शख्स ने जो कि फिरऔन के खानदान से थे, (और अब तक) अपना ईमान छुपाकर रखे हुए थे, कहा क्या तुम एक शख्स को (सिर्फ) इस बात पर कत्ल करते हो कि वह कहता है कि मेरा परवर्दिगार अल्लाह है, हालाँकि वह तुम्हारे रब की तरफ से (इस दावे पर) दलीलें (भी) लेकर आया है।^३ और अगर (मान लो) वह झूठा है तो उसका झूठ उसी पर पड़ेगा, और अगर वह सच्चा हुआ तो वह जो कुछ पेशीनगोई “यानी भविष्यवाणी” कर रहा है उसमें से कुछ तो तुमपर (ज़रूर ही) पड़ेगा।^४ अल्लाह तआला ऐसे शख्स को मकसूद तक नहीं पहुँचाता जो (अपनी) हद से गुज़र जाने वाला, बहुत झूठ बोलने वाला हो। (28) ऐ मेरे भाईयो! आज तो तुम्हारी हुकूमत है कि इस सरज़मीन में तुम हाकिम हो, सो खुदा के अज़ाब में हमारी कौन मदद करेगा अगर (उनके कत्ल करने से) वह हमपर आ पड़ा? फिरऔन ने (यह तक्रीर सुनकर जवाब में) कहा कि मैं तुमको वही राय दूँगा जो खुद समझ रहा हूँ (कि उनका कत्ल ही मुनासिब है) और मैं तुमको बिलकुल मस्तहत का तरीका बतलाता हूँ। (29) और उस मोमिन ने कहा^५ साथियो! मुझको तुम्हारे बारे में और उम्मतों के जैसे बुरे दिन का अन्देशा है। (30) जैसा कि कौमे नूह और आद और समूद और उनके बाद वालों (यानी कौमे लूत वगैरह) का हाल हुआ था, और अल्लाह तो बन्दों पर किसी तरह का जुल्म करना नहीं चाहता।^६ (31) और साहिबो! मुझको तुम्हारे बारे में उस दिन का अन्देशा है

1. जादूगर मोज़िज़ा दिखलाने में कहा, और झूठा नुबुव्वत व अहकाम के दावे में कहा।
2. चुनौचे आखिर में मूसा अलैहिस्सलाम ग़ालिब आए।
3. यानी मोज़िज़े भी दिखलाता है जो नुबुव्वत के दावे में सच्चा होने और अल्लाह की तरफ से तौहीद की तब्लीग़ के लिए मुकर्रर किए जाने की दलील है। और दलील मौजूद होते हुए दलील रखने वाले की मुख़ालफ़त करना, और मुख़ालफ़त भी इस दर्जे की कि कत्ल का इरादा किया जाए, यह निहायत नामुनासिब है।
4. गरज़ उसके झूठे होने की सूरत में कत्ल बेकार और उसके सच्चा होने की सूरत में नुक़सानदेह। फिर ऐसा काम क्यों किया जाए?
5. उस मोमिन ने जब देखा कि नसीहत में मुख़ातब के ख़्याल की रियायत यानी नरमी इख़्तियार करने से काम नहीं चलता, तो अब धमकाने और डराने से काम लिया।
6. यह दुनिया के अज़ाब से डराना था। आगे आखिरत के अज़ाब से डराना है।

जिसमें कसरत से आवाज़ें दी जाएँगी।¹ (32) जिस दिन (हिसाब की जगह से) पीठ फेर कर (दोज़ख़ की तरफ़) लौटोगे (और उस वक़्त) तुमको खुदा तआला से कोई बचाने वाला न होगा, और जिसको खुदा ही गुमराह करे उसका कोई हिदायत करने वाला नहीं। (33) और इससे पहले तुम लोगों के पास यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम नुबुव्वत और तौहीद की) दलीलें लेकर आ चुके हैं। सो तुम उन उमूर में भी बराबर शक ही में रहे जो वह तुम्हारे पास लेकर आए थे, यहाँ तक कि जब उनकी वफ़ात हो गई तो तुम लोग कहने लगे कि बस अब अल्लाह किसी रसूल को न भेजेगा। इसी तरह अल्लाह तआला आपे से बाहर हो जाने वालों (और) शुब्हात में गिरफ़्तार रहने वालों को ग़लती में डाले रखता है। (34) जो अपने पास मौजूद बिना किसी सनद के खुदा की आयतों में झगड़े निकाला करते हैं, उस (उल्टी बहस) से खुदा तआला को भी बड़ी नफ़रत है और मोमिनों को भी। (और) इसी तरह अल्लाह तआला हर ग़ुरुर करने वाले ज़ालिम के पूरे दिल पर मुहर कर देता है।² (35) और फिरऔन ने कहा, ऐ हामान! मेरे वास्ते एक ऊँची इमारत बनवाओ, शायद मैं आसमान पर जाने की राहों तक पहुँच जाऊँ। (36) फिर (वहाँ जाकर) मूसा के खुदा को देखूँ-भालूँ और मैं तो मूसा को झूठा ही समझता हूँ। और इसी तरह फिरऔन के (और) बुरे काम भी उसको अच्छे मालूम हुए थे और (सीधे) रास्ते से रुक गया, और फिरऔन की (हर) तदबीर बेकार ही गई। (37) ♦

और उस मोमिन ने कहा कि ऐ भाइयो! तुम मेरी राह पर चलो, मैं तुमको ठीक-ठीक रास्ता बतलाता हूँ।³ (38) ऐ भाइयो! यह दुनियावी ज़िन्दगानी सिर्फ़ चन्द दिन का नफ़ा है और (असल) ठहरने का मक़ाम तो आख़िरत है। (39) (जहाँ बदले का यह क़ानून है कि) जो शख़्स गुनाह करता है उसको तो बराबर-सराबर ही बदला मिलता है, और जो नेक काम करता है, चाहे मर्द हो या औरत बशर्ते कि मोमिन हो, ऐसे लोग जन्नत में जाएँगे (और वहाँ) बेहिसाब उनको रिज़्क मिलेगा। (40) और ऐ मेरे भाइयो! यह क्या बात है कि मैं तो तुमको नजात (के रास्ते) की तरफ़ बुलाता हूँ और तुम मुझको दोज़ख़ की तरफ़ बुलाते हो? ● (41) (यानी) तुम मुझको इस बात की तरफ़ बुलाते हो कि मैं खुदा के साथ कुफ़्र करूँ और ऐसी चीज़ों को उसका साझी बनाऊँ जिस (के साझी होने) की मेरे पास कोई भी दलील नहीं, और मैं तुमको गुनाहों को माफ़ करने वाले,

1. यानी वह दिन बड़े-बड़े वाकिआत पर मुश्तमिल है, क्योंकि आवाज़ों का ज़्यादा होना वाकिआत के अहम और बड़ा होने में होता है।
2. इसलिए इसमें हक़ के समझने की गुन्जाइश बिल्कुल नहीं रहती।
- फ़ायदा: यह तक्रीर उन मोमिन बुजुर्ग की थी। और इस तक्रीर से उन बुजुर्ग का ईमान का छुपाना जाता रहा।
3. यानी सही रास्ता मेरा बतलाया हुआ रास्ता है न कि फिरऔन का रास्ता।

जबरदस्त खुदा की तरफ बुलाता हूँ। (42) यकीनी बात है कि तुम जिस चीज़ (की इबादत) की तरफ मुझको बुलाते हो वह न तो दुनिया ही में पुकारे जाने के लायक है और न आखिरत ही में, और (यकीनी बात है कि) हम सबको खुदा तआला के पास जाना है। और जो लोग (बन्दगी के) दायरे से निकल रहे हैं वे सब दोज़खी होंगे। (43) सो आगे चलकर तुम मेरी बात को याद करोगे, और मैं अपना मामला अल्लाह के सुपुर्द करता हूँ। खुदा तआला सब बन्दों का निगराँ है। (44) फिर खुदा तआला ने उस (मोमिन) को उन लोगों की बुरी तदबीरों से महफूज़ रखा, और फिरऔन वालों पर (मय फिरऔन के) तकलीफ़ वाला अज़ाब नाज़िल हुआ (जिसका आगे बयान है कि) (45) वे लोग (बरज़ख़ में) सुबह व शाम आग के सामने लाए जाते हैं, और जिस दिन क़ियामत कायम होगी (हुक़्म होगा कि) फिरऔन वालों को (मय फिरऔन के) निहायत सख़्त अज़ाब में दाख़िल करो।¹ (46) और जबकि कुफ़ार दोज़ख़ में एक-दूसरे से झगड़ेंगे तो कम दर्जे के लोग (यानी पैरवी करने वाले) बड़े दर्जे के लोगों से कहेंगे कि हम (दुनिया में) तुम्हारे ताबे थे, सो क्या तुम हमसे आग का कोई हिस्सा हटा सकते हो?² (47) वे बड़े लोग कहेंगे कि हम सब ही दोज़ख़ में हैं,³ अल्लाह तआला बन्दों के दरमियान फैसला कर चुका।⁴ (48) और (उसके बाद) जितने लोग दोज़ख़ में होंगे, जहन्नम के ज़िम्मेदार फ़रिश्तों से (दरख़्वास्त के तौर पर) कहेंगे कि तुम ही अपने परवर्दिगार से दुआ व कि किसी दिन तो हमसे अज़ाब हल्का कर दे।⁵ (49) फ़रिश्ते कहेंगे कि (यह बतलाओ) क्या तुम्हारे पास तुम्हारे पैग़म्बर मोज़िज़े लेकर नहीं आते रहे थे? दोज़ख़ी कहेंगे कि हाँ, आते तो रहे थे। फ़रिश्ते कहेंगे कि फिर तुम ही दुआ करो और काफ़िरो की दुआ बिलकुल बेअसर है। (50) ♦

हम अपने पैग़म्बरों की और ईमान वालों की दुनियावी ज़िन्दगानी में भी मदद करते हैं और उस दिन भी जिसमें गवाही देने वाले (यानी फ़रिश्ते जो कि आमाल नामे लिखते थे) “मदद करेंगे”।⁶ (51) जिस दिन कि

1. इन आयतों से बरज़ख़ (यानी मरने के बाद और क़ियामत के आने से पहले के ज़माने) का अज़ाब साबित होता है।
2. यानी जब तुम हमसे अपनी पैरवी कराते थे तो अब तुमको हमारी मदद करनी चाहिए।
3. यानी जैसे तुम दोज़ख़ में हो हम भी दोज़ख़ में हैं। सो हमको अगर मदद करने की कुछ कुदरत होती तो पहले अपनी ही फ़िक्र करते। जब अपने ही से अज़ाब दूर नहीं कर सकते तो तुमसे क्या दूर करेंगे।
4. अब उसके खिलाफ़ गुमान नहीं, इस फैसले में हम सब दोज़ख़ी ठहरे, अब क्या होता है।
5. यानी इसकी तो क्या उम्मीद करें कि अज़ाब बिलकुल हट जाए या हमेशा के लिए हल्का हो जाए, मगर ख़ैर एक ही दिन के लिए हल्का हो जाए।
6. इससे क़ियामत का दिन मुराद है।

ज़ालिमों (यानी काफ़िरों) को उनकी माज़िरत कुछ नफ़ा न देगी,¹ और उनके लिए लानत होगी और उनके लिए उस ज़हान में ख़राबी होगी।² (52) और (आपसे पहले) हम मूसा को हिदायतनामा (यानी तौरात) दे चुके हैं, और (फिर) हमने वह किताब बनी इस्राईल को पहुँचाई थी। (53) कि वह हिदायत और नसीहत (की किताब) थी (सही) अक्ल रखने वालों के लिए। (54) सो आप सब्र कीजिए। बेशक अल्लाह तआला का वायदा सच्चा है। और अपने (उस) गुनाह की (जिसको मजाज़न गुनाह कह दिया गया) माफ़ी माँगिए।³ और शाम और सुबह अपने रब की पाकी और तारीफ़ बयान करते रहिए।⁴ (55) (और) जो लोग अपने पास मौजूद बिना किसी सनद के खुदाई आयतों में झगड़े निकाला करते हैं, उनके दिलों में निरी बड़ाई (ही बड़ाई) है, कि वे उस तक कभी पहुँचने वाले नहीं। सो आप अल्लाह की पनाह माँगते रहिए, बेशक वही है सब कुछ सुनने वाला, सब कुछ देखने वाला।⁵ (56) यकीनन आसमानों और ज़मीन को (शुरू में) पैदा करना आदमियों के (दोबारा) पैदा करने के मुकाबले में बड़ा काम है, और लेकिन अक्सर आदमी (इतनी बात) नहीं समझते। (57) और देखने वाला और अन्धा, और (एक) वे लोग जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किए और (दूसरे) बदकार, आपस में बराबर नहीं होते, तुम लोग बहुत ही कम समझते हो।⁶ (58) कियामत तो ज़रूर ही आकर रहेगी, उस (के आने) में किसी तरह का शक है ही नहीं, मगर अक्सर लोग नहीं मानते। (59) और तुम्हारे रब ने फ़रमा दिया है कि मुझको पुकारो, मैं तुम्हारी दरख्वास्त कबूल करूँगा। जो लोग (सिर्फ़) मेरी इबादत से सरकशी करते हैं,⁷ वे जल्द ही (यानी मरते ही) ज़लील होकर जहन्नम में दाख़िल होंगे। (60) ♦

अल्लाह ही है जिसने तुम्हारे (नफ़े के) लिए रात बनाई, ताकि तुम उसमें आराम करो, और उसी ने दिन को (देखने के लिए) रोशन बनाया।⁸ बेशक अल्लाह तआला का लोगों पर बड़ा ही फ़ज़ल है, और लेकिन अक्सर आदमी (इन नेमतों का) शुक्र अदा नहीं करते। (61) यह अल्लाह है तुम्हारा रब,⁹ वह हर चीज़ का पैदा करने वाला है, उसके सिवा कोई इबादत के लायक नहीं, सो (तौहीद के साबित होने के बाद) तुम लोग शिर्क करके कहाँ उल्टे जा रहे हो? (62) इसी तरह वे (पहले) लोग भी उल्टे चला करते थे जो अल्लाह की

1. यानी पहले तो कोई ख़ास और काबिले तवज्जोह माज़िरत न होगी, अगर कुछ हरकत भी हुई तो वह नफ़ा देने वाली न होगी।

2. पस इसी तरह आप और आपके मानने वाले भी मदद किए जाएँगे और मुख़ालिफ़ीन नाक़ाम और क़हर के अन्दर होंगे, तो आप तसल्ली रखिए।

3. यानी अगर कभी कामिल दर्जे का सब्र होने में कुछ कमी हो गई हो जो शरीअत के कायदों की रू से हकीक़त में तो गुनाह नहीं, मगर आपके बुलन्द रुतबे के एतिबार से उसकी तलाफ़ी करने के वाजिब होने में गुनाह के जैसे ही है, उसकी तलाफ़ी कीजिए।

4. यानी ऐसे शुगल में रहिए कि जिन चीज़ों से रंज व गुम होता हो उनकी तरफ़ ख़याल ही न हो।

5. वह अपनी कामिल सिफ़ात से अपनी पनाह में आए हुए को महफूज़ रखेगा।

6. वरना अन्धे और बदकार न रहते।

7. हासिल यह हुआ कि जो लोग तौहीद से मुँह मोड़ करके शिर्क करते हैं।

8. ताकि बेतक़ल्लुफ़ रोज़ी-रोटी हासिल करो।

9. यानी जिसका ज़िक्र हुआ, न कि वह जिनको तुमने घड़ रखा है।

निशानियों का इनकार किया करते थे।¹ (63) अल्लाह ही है जिसने ज़मीन को (मख्लूक के) रहने का ठिकाना बनाया, और आसमान को छत (की तरह) बनाया, और तुम्हारा नक्शा बनाया, सो उम्दा नक्शा बनाया,² और तुमको उम्दा-उम्दा चीज़ें खाने को दीं। (पस) यह अल्लाह है तुम्हारा रब, सो बड़ा आलीशान है अल्लाह, जो सारे जहान का परवर्दिगार है। (64) वही (हमेशा से और हमेशा तक) ज़िन्दा रहने वाला है, उसके सिवा कोई इबादत के लायक नहीं, सो तुम (सब) ख़ालिस एतिकाद करके उसको पुकारा करो,³ तमाम ख़ूबियाँ उसी अल्लाह के लिए हैं जो तमाम जहान का परवर्दिगार है। (65) आप (उन मुशिरकों को सुनाने के लिए) कह दीजिए कि मुझको इससे मनाही कर दी गई है कि मैं उन (शरीकों) की इबादत करूँ जिनको खुदा के सिवा तुम पुकारते हो। जबकि मेरे पास मेरे रब की निशानियाँ आ चुकी हैं।⁴ और मुझको यह हुक्म हुआ है कि मैं (सिर्फ) रब्बुल आलमीन के सामने गर्दन झुका लूँ।⁵ (66) वही है जिसने तुमको⁶ मिट्टी से पैदा किया, फिर नुत्फे से,⁷ फिर खून के लोथड़े से, फिर तुमको बच्चा करके (माँ के पेट से) निकालता है, फिर (तुमको ज़िन्दा रखता है) ताकि तुम अपनी जवानी को पहुँचो, फिर ताकि तुम बूढ़े हो जाओ। और कोई-कोई तुममें से पहले ही मर जाता है⁸ और ताकि तुम सब (अपने-अपने) वक्ते मुक़र्ररा (जो तकदीर में तय है) तक पहुँच जाओ, और (यह सब कुछ इसलिए किया गया) ताकि तुम लोग समझो। (67) वही है जो ज़िन्दा करता है और मारता है, फिर वह जब किसी काम को (फ़ौरन) पूरा करना चाहता है, सो बस उसके मुताल्लिक (इतना) फ़रमा देता है कि हो जा, सो वह हो जाता है। (68) ♦

क्या आपने उन लोगों (की हालत) को नहीं देखा जो अल्लाह की आयतों में झगड़े निकालते हैं, (हक से) कहाँ फिरे चले जा रहे हैं? (69) जिन लोगों ने इस किताब (यानी कुरआन) को झुठलाया और उस चीज़ को जो हमने अपने पैगम्बरों को देकर भेजा था, सो उनको अभी (यानी कियामत में जो करीब है) मालूम हुआ जाता है। (70) जबकि तौक उनकी गर्दनो में होंगे और ज़न्जीरें उनको घसीटते हुए (71) खौलते पानी में ले जाए जाएँगे, फिर ये आग में झोंक दिए जाएँगे। (72) फिर उनसे पूछा जाएगा कि अल्लाह के अलावा (वे माबूद) कहाँ गए जिनको तुम (खुदाई में) शरीक ठहराते थे।⁹ (73) वे कहेंगे कि वे सब तो हमसे गायब हो

1. इसमें एक तरह से आपकी तसल्ली भी है।
2. चुनाँचे इनसान के जिस्मानी अंगों के बराबर किसी हैवान के जिस्मानी अंगों में तनासुब नहीं।
3. और शिर्क न किया करो।
4. अक्ली और नक्ली दलीलें मुराद हैं। मतलब यह है कि शिर्क से मुझको मनाही हुई है।
5. मतलब यह कि मुझको तौहीद का हुक्म हुआ है।
6. यानी तुम्हारे बाप को।
7. यानी आगे उनकी नस्ल को।
8. यानी जवानी और बुढ़ापे से पहले।
9. यानी तुम्हारी मदद क्यों नहीं करते।

गए, बल्कि हम इससे पहले किसी को भी नहीं पूजते थे।¹ अल्लाह तआला इसी तरह काफ़िरों को ग़लती में फँसाए रखता है। (74) यह (सज़ा) उसके बदले में है कि तुम दुनिया में नाहक खुशियाँ मनाते थे, और उसके बदले में कि तुम इतराते थे।² (75) जहन्नम के दरवाज़ों में घुसो (और) हमेशा-हमेशा उसमें रहो, सो तकब्बुर करने वालों का वह बुरा ठिकाना है। (76) (और जब उनसे इस तरह बदला लिया जाएगा) तो आप (थोड़ा-सा) सब्र कीजिए, बेशक अल्लाह तआला का वायदा सच्चा है। फिर जिस (अज़ाब) का हम उनसे वायदा कर रहे हैं, उसमें से कुछ थोड़ा-सा (अज़ाब) अगर हम आपको दिखला दें,³ या (उसके आने से पहले ही) हम आपको वफ़ात दे दें, सो हमारे ही पास उनको आना होगा। (77) और हमने आपसे पहले बहुत-से पैग़म्बर भेजे, जिनमें से बाज़े तो वे हैं कि उनका किस्सा हमने आपसे बयान किया है, और बाज़े वे हैं जिनका हमने आपसे किस्सा बयान नहीं किया, और (इतनी बात सबमें मुश्तरक है कि) किसी रसूल से यह न हो सकेगा कि कोई मोजिज़ा अल्लाह के हुक्म के बग़ैर ज़ाहिर कर सके, फिर जिस वक़्त (अज़ाब के आने के लिए) अल्लाह का हुक्म आएगा, ठीक-ठीक फैसला हो जाएगा, और उस वक़्त बातिल वाले घाटे में रह जाएँगे। (78) ♦

अल्लाह ही है जिसने तुम्हारे लिए मवेशी बनाए ताकि उनमें बाज़ से सवारी लो, और उनमें बाज़ (ऐसे हैं कि उन) को खाते भी हो। (79) और तुम्हारे लिए उनमें और भी बहुत फ़ायदे हैं।⁴ और (इसलिए बनाए) ताकि तुम उनपर अपने मतलब तक पहुँचो जो तुम्हारे दिलों में है, और उनपर (भी) और क़स्ती पर (भी) लदे-लदे फिरते हो। (80) और (उनके अलावा) तुमको अपनी और भी निशानियाँ दिखलाता रहता है,⁵ सो तुम अल्लाह तआला की कौन-कौन-सी निशानियों का इनकार करोगे? (81) क्या उन लोगों ने मुल्क में चल-फिरकर नहीं देखा कि जो (मुशिरक) लोग उनसे पहले गुज़र चुके हैं उनका क्या अन्जाम हुआ?⁶ (हालाँकि) वे लोग उनसे ज़्यादा थे, और कुव्वत में और निशानियों में (भी) जो कि ज़मीन पर छोड़ गए हैं बढ़े हुए थे, सो उनकी (यह पूरी की पूरी) कमाई उनके कुछ भी काम न आई।⁷ (82) गरज़ जब उनके पैग़म्बर उनके पास खुली दलीलें लेकर आए तो वे लोग अपने (उस रोज़गार और कमाने के) इल्म पर बड़े इतराए, जो उनको हासिल था,⁸ और उनपर वह अज़ाब आ पड़ा जिसके साथ मज़ाक करते थे। (83) फिर जब उन्होंने हमारा

1. यानी मालूम हुआ कि वे कुछ भी न थे। ऐसी बात ग़लत ज़ाहिर होने के वक़्त कही जाती है। जैसे कोई शख्स तिजारत में नुकसान उठाए और उससे पूछा जाए कि तुम फ़लों माल की तिजारत किया करते हो, और वह कहे कि मैं तो कहीं की भी तिजारत नहीं करता। यानी जब उसका फ़ायदा हासिल न हुआ तो यूँ समझना चाहिए कि गोया वह अमल ही नहीं हुआ।
2. “फ़रह” (खुशियाँ मनाना) दिल के मुताल्लिक है, और “मरह” (इतराना) बदन के। चाहे तुग़त के एतिबार से या मुकाबले के, यानी दुनिया के फ़ायदे को असल मकसूद समझकर उसके हासिल करने पर दिल में ऐसे खुश होते थे कि उसके आसार बदन पर ज़ाहिर होते थे, जैसे चाल वग़ैरह में, जिसकी मनाही आई है- “व ला तमिश् फ़िल्अर्जि म-रहन्” यानी ज़मीन पर इतराकर मत चल।
3. यानी आपकी ज़िन्दगी में उनपर वह नाज़िल हो जाए।
4. जैसे उनके बाल और ऊन काम आते हैं।
5. चुनौचे हर तैयार होने वाली चीज़ उसके बनाए जाने पर एक निशान है।
6. यानी क्या उनको शिर्क के वबाल की ख़बर नहीं?
7. क्योंकि वे अल्लाह के अज़ाब से न बच सके।
8. यानी मआश (कमाने और रोज़गार) को मकसूद समझकर और उसमें जो उनको काबलियत हासिल थी उसपर खुश हुए और आख़िरत का इनकार करके उसकी तलब को दीवानगी, और उसके इनकार पर सज़ा की धमकी को हँसी मज़ाक का सबब बनाया।

अज़ाब देखा तो कहने लगे (अब) हम एक अल्लाह पर ईमान लाए और उन सब चीज़ों से हम इनकारी हुए जिनको हम उसके साथ शरीक ठहराते थे। (84) सो उनका यह ईमान लाना फ़ायदेमन्द न हुआ जब उन्होंने हमारा अज़ाब देख लिया।¹ अल्लाह तआला ने अपना यही मामूल “यानी आदत और तरीका” मुक़र्रर किया है जो उसके बन्दों में पहले से होता चला आया है, और उस वक़्त काफ़िर घाटे में रह गए।² (85) ♦

41 सूर: हा-मीम् अस्-सज्द: 61

सूर: हा-मीम् अस्-सज्द: मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 54 आयतें और 6 रुकूअ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

हा-मीम् (1) यह कलाम रहमान रहीम की तरफ़ से नाज़िल किया जाता है। (2) यह एक किताब है जिसकी आयतें साफ़-साफ़ बयान की गई हैं। यानी ऐसा कुरआन है जो अरबी (ज़बान में) है,³ ऐसे लोगों के लिए (नफ़ा देने वाला है) जो अक्लमन्द हैं।⁴ (3) खुशख़बरी देने वाला है (और न मानने वालों के लिए) डराने वाला है, सो अक्सर लोगों ने (इससे) मुँह फेरा, फिर वे (मुँह फेरने की वजह से) सुनते ही नहीं। (4) और वे लोग कहते हैं कि जिस बात की तरफ़ आप हमको बुलाते हैं हमारे दिल उससे पर्दों में हैं,⁵ और हमारे कानों में डाट (लग रही) है, और हमारे और आपके दरमियान एक पर्दा है, सो आप अपना काम किए जाइए हम अपना काम कर रहे हैं।⁶ ▲ (5) आप फरमा दीजिए कि मैं भी तुम ही जैसा बशर हूँ। मुझपर यह वह्य नाज़िल होती है कि तुम्हारा माबूद एक ही माबूद है,⁷ सो उस (माबूदे बरहक) की तरफ़ सीध बाँध लो और उससे माफ़ी माँगो, और ऐसे मुशिरकों के लिए बड़ी ख़राबी है (6) जो ज़कात नहीं देते, और वे आख़िरत के इनकारी ही रहते हैं। (7) (और उनके उलट) जो लोग ईमान ले आए और उन्होंने नेक काम किए उनके लिए (आख़िरत में) ऐसा अज़्र है जो (कभी) मौकूफ़ होने जाने वाला नहीं। (8) ♦

आप फरमाइए कि क्या तुम लोग ऐसे खुदा (की तौहीद) का इनकार करते हो जिसने ज़मीन को (इतनी बड़ा होने के बावजूद) दो दिन में पैदा कर दिया, और तुम उसके शरीक ठहराते हो। यही सारे जहान का रब है। (9) और उसी ने ज़मीन में उसके ऊपर पहाड़ बना दिए, और इस (ज़मीन) में फ़ायदे की चीज़ें रख दीं, और इसमें इस (के रहने वालों) की ग़िज़ाएँ तजवीज़ कर दीं,⁸ चार दिन में (हुआ। जो गिनती में) पूरे हैं पूछने वालों के लिए। (10) फिर आसमान (के बनाने) की तरफ़ तवज्जोह फरमाई और वह (उस वक़्त) धुआँ-सा

1. क्योंकि वह ईमान बेइख़्तियारी था और बन्दा इख़्तियारी ईमान का मुक़ल्लफ़ है।
2. पस उन मुशिरकीन को भी ये सब मज़ामीन समझकर डरना चाहिए। उनके लिए भी यही होगा। फिर कुछ तलाफ़ी न हो सकेगी।
मसला: जब आख़िरत का अज़ाब और फ़रिश्ते नज़र आ जाएँ उस वक़्त ईमान लाना मक़बूल नहीं, और उसको 'ईमाने-बाइस' कहते हैं।
3. यानी अरबी में इसलिए है ताकि जिन लोगों में यह नाज़िल हुआ है वे आसानी से समझ लें।
4. यानी अगरचे मुक़ल्लफ़ सब ही हैं, मगर फ़ायदा उठाने वाले सिर्फ़ अक्ल वाले ही होते हैं।
5. यानी हमारी समझ में नहीं आती।
6. यानी हमसे कबूल करने की कुछ उम्मीद न रखिए, और फिर भी कहने को जी चाहे तो कहे जाइए। आप जानें और आपका काम हम अपने तरीके को न छोड़ेंगे।
7. यानी मुझपर वह्य आती है जिसकी तस्दीक़ मौजिज़ों से हो चुकी है, जिनमें सबसे बड़ा मौजिज़ा कुरआन है, जिसका ऊपर बयान है।
8. चुनौचे आँखों के सामने है कि ज़मीन के हर हिस्से के रहने वालों के मुनासिब अलग-अलग ग़िज़ाएँ हैं। यानी ज़मीन में हर किस्म के ग़ल्ले, अनाज और मेवे पैदा कर दिए हैं। कहीं कुछ कहीं कुछ, जिनका सिलसिला अब तक चला आता है।

था,¹ सो उससे और ज़मीन से फरमाया कि तुम दोनों खुशी से आओ या ज़बरदस्ती से।² दोनों ने अर्ज किया कि हम खुशी से हाज़िर हैं। (11) सो दो दिन में उसके सात आसमान बना दिए और हर आसमान में उसके मुनासिब (फरिश्तों को) अपना हुक्म भेज दिया। और हमने इस करीब वाले आसमान को सितारों से सजाया और (शैतानों के वहाँ जाकर चोरी-छुपे ख़बर सुनने से) उसकी हिफ़ाज़त की, यह तजवीज़ है (खुदा-ए-) ज़बरदस्त, हर चीज़ के जानने वाले की।³ (12) फिर अगर (तौहीद की दलीलें सुनकर भी) ये लोग (तौहीद से) मुँह मोड़ें तो आप कह दीजिए कि मैं तुमको ऐसी आफ़त से डराता हूँ जैसी आद व समूद पर (शिकं व कुफ़ की बदौलत) आफ़त आई थी।⁴ (13) जबकि उनके पास उनके आगे से भी और उनके पीछे से भी पैग़म्बर आए, कि अल्लाह के सिवा और किसी को मत पूजो। उन्होंने जवाब दिया कि अगर हमारे रब को (यह) मन्ज़ूर होता (कि किसी को पैग़म्बर बनाकर भेजे) तो फरिश्तों को भेजता, सो हम इस (तौहीद) से भी इनकारी हैं, जिसको देकर (तुम अपने गुमान के मुताबिक) भेजे गए हो। (14) फिर वे जो आद के लोग थे, वे दुनिया में नाहक का तक़ब्बुर करने लगे और कहने लगे, वह कौन है जो कुव्वत में हमसे ज़्यादा है? (आगे जवाब है कि) क्या आपको यह नज़र न आया कि जिस खुदा ने आपको पैदा किया वह उनसे कुव्वत में बहुत ज़्यादा है, और हमारी आयतों का इनकार करते रहे। (15) तो हमने उनपर एक तेज़ हवा ऐसे दिनों में भेजी जो मन्हूस थे, ताकि हम आपको इस दुनियावी ज़िन्दगी में रुस्वाई के अज़ाब का मज़ा चखाएँ, और आख़िरत का अज़ाब और ज़्यादा रुस्वाई का सबब है, और आपको मदद न पहुँचेगी। (16) और वे जो समूद थे, तो हमने आपको (पैग़म्बर के ज़रिए से) रास्ता बतलाया था, सो उन्होंने हिदायत के मुकाबले में गुमराही को पसन्द किया, पस आपको उनके बुरे आमाल की वजह से ज़िल्लत भरे अज़ाब की आफ़त ने पकड़ लिया। (17) और हमने (उस अज़ाब से) उन लोगों को नजात दी जो ईमान लाए और (हमसे) डरते थे।⁵ (18) ♦

और (उनको वह दिन भी याद दिलाइए) जिस दिन अल्लाह तआला के दुश्मन (यानी कुफ़ार) दोज़ख की तरफ़ जमा कर- (ने) के (लिए एक जगह) लाए जाएँगे, फिर वे रोके जाएँगे (ताकि बकिया भी आ जाएँ)। (19) यहाँ तक कि जब वे उसके करीब आ जाएँगे तो उनके कान और आँखें और उनकी खालें उनपर

1. यानी उसका मादा जो कि ज़मीन के मादे के बाद और ज़मीन की मौजूदा सूरत से पहले बन चुका था, इस शकल में था।
2. मतलब यह कि हमारे तक्वीनी अहकाम जो तुम दोनों में जारी हुआ करेंगे, तो उनका जारी होना तुम्हारे इख़्तियार से ख़ारिज है, लेकिन जो इदराक और शुऊर तुमको अता हुआ है, उससे तुम्हारी हालत के मुनासिब रज़ामन्दी और नापसन्दीदगी दोनों का सुबूत हो सकता है। सो तुम देख लो कि हमारे उन अहकाम पर राज़ी रहा करोगे या नापसन्दीदगी इख़्तियार करोगे।
3. पस इबादत के लायक यह ज्ञात है जो कामिल सिफ़ात वाली है, या दूसरी चीज़ें जो अपनी ज्ञात और सिफ़ात में नाकिस हैं?
4. मुराद हलाक करने वाला अज़ाब है। चुनौचे मक्का वाले भी बद्र में हलाक किए गए।
5. यहाँ तक दुनियावी अज़ाब का ज़िक्र था और आगे आख़िरत के अज़ाब का ज़िक्र है।

उनके आमाल की गवाही देंगे। (20) और (उस वक्त) वे लोग (ताज्जुब से) अपने जिस्म के अंगों से कहेंगे कि तुमने हमारे खिलाफ क्यों गवाही दी? वे (जिस्म के अंग) जवाब देंगे कि हमको उस अल्लाह ने बोलने की ताकत दी जिसने हर (बोलने वाली) चीज़ को बोलने की ताकत दी, और उसी ने तुमको पहली बार पैदा किया था, और उसी के पास फिर लाए गए हो।¹ (21) और तुम (दुनिया में) इस बात से तो अपने आपको छुपा ही न सकते थे² कि तुम्हारे कान और आँखें और खालें तुम्हारे खिलाफ गवाही दें, और लेकिन तुम इस गुमान में रहे कि अल्लाह तआला को तुम्हारे बहुत-से आमाल की ख़बर भी नहीं। (22) और तुम्हारे इसी गुमान ने जो कि तुमने अपने रब के साथ किया था तुमको बरबाद किया,³ फिर तुम (हमेशा के) घाटे में पड़ गए। (23) सो (उस हालत में) अगर ये लोग सब्र करें तब भी दोज़ख ही उनका ठिकाना है,⁴ और अगर वे उज़्र करना चाहेंगे तो भी मकबूल न होगा। (24) और हमने (दुनिया में) उनके लिए कुछ साथ रहने वाले शैतान मुकर्रर कर रखे थे। सो उन्होंने उनके अगले-पिछले आमाल उनकी नज़र में अच्छे बना रखे थे, और उनके हक में भी उन लोगों के साथ अल्लाह का कौल (यानी अज़ाब का वायदा) पूरा होकर रहा, जो उनसे पहले (कुफ़्फ़ार में से) जिन्नात व इनसान गुज़र चुके हैं। बेशक वे (सब) भी घाटे में रहे।⁵ (25) ♦

और ये काफ़िर (आपस में) यह कहते हैं कि इस कुरआन को सुनो ही मत, और (अगर पैग़म्बर सुनाने लगे तो) उसके बीच में शोर मचा दिया करो, शायद (इस तदबीर से) तुम ही ग़ालिब रहो। (26) सो हम उन काफ़िरों को सख़्त अज़ाब का मज़ा चखा देंगे, और उनको उनके (ऐसे) बुरे-बुरे कामों की सज़ा देंगे। (27) यही सज़ा है अल्लाह के दुश्मनों की, यानी दोज़ख उनके लिए वहाँ हमेशा रहने की जगह होगी, इस बात के बदले में कि वे हमारी आयतों का इनकार किया करते थे। (28) और (जब अज़ाब में मुब्तला होंगे तो) वे

1. पस जो खुदा ऐसा कुदरत वाला और बड़ी शान वाला हो, उसके सामने उसके पूछने पर हम हक को कैसे छुपा सकते थे कि उसकी बड़ाई उससे रुकावट थी। इसलिए हमने गवाही दे दी।

2. क्योंकि हक तआला की कुदरत हर चीज़ पर है, और आमाल की जानकारी हकीकत में साबित है।

3. क्योंकि इस गुमान से कुफ़िया आमाल के करने वाले हुए और वे आमाल बरबादी का सबब हुए।

4. यह नहीं कि उनका सब्र करना और ख़ामोशी रहम का सबब हो जाए, जैसा कि दुनिया में कभी-कभी ऐसा हो जाता है।

5. ऊपर सूर: के शुरू में कुरआन व रिसालत के मुताल्लिक मज़मून था, आगे उसका इनकार करने वालों को तंबीह व धमकी और मलामत है।

काफ़िर लोग कहेंगे कि ऐ हमारे परवर्दिगार! हमको वे दोनों शैतान और इनसान दिखा दीजिए जिन्होंने हमको गुमराह किया था, हम उनको अपने पैरों तले मसल डालें, ताकि वे ख़ूब ज़लील हों।¹ (29) जिन लोगों ने (दिल से) इकरार कर लिया कि हमारा रब अल्लाह है,² फिर (उसपर) जमे रहे,³ उनपर फ़रिश्ते उतरेंगे कि तुम न अन्देशा करो और न ग़म करो, और तुम जन्नत (के मिलने) पर खुश रहो, जिसका तुमसे (पैग़म्बरों की मारिफ़त) वायदा किया जाया करता था। (30) और हम दुनियावी ज़िन्दगी में भी तुम्हारे साथी थे और आख़िरत में भी रहेंगे,⁴ और तुम्हारे लिए इस (जन्नत) में जिस चीज़ को तुम्हारा जी चाहेगा मौजूद है, और तुम्हारे लिए उसमें जो माँगोगे मौजूद है।⁵ (31) यह मेहमानी के तौर पर होगा माफ़ करने वाले, रहम करने वाले की तरफ़ से।⁶ (32) ♦

और उससे बेहतर किसकी बात हो सकती है जो (लोगों को) खुदा की तरफ़ बुलाए और (खुद भी) नेक अमल करे, और कहे कि मैं फ़रमाँबरदारों में से हूँ।⁷ (33) और नेकी और बुराई बराबर नहीं होती, (बल्कि हर एक का असर अलग है), तो अब आप (मय अपने मानने वालों के) नेक बर्ताव से (बुराई को) टाल दिया कीजिए। फिर यकायक आपमें और जिस शख्स में दुश्मनी थी वह ऐसा हो जाएगा जैसा कि कोई दिली दोस्त होता है। (34) और यह बात उन्हीं लोगों को नसीब होती है जो बड़े मुस्तक़िल (मीज़ाज) हैं। और यह बात उसी को नसीब होती है जो बड़ा नसीब वाला है। (35) और अगर (ऐसे वक़्त में) आपको शैतान की तरफ़ से कुछ वस्वसा आने लगे तो (फ़ौरन) अल्लाह की पनाह माँग लिया कीजिए, बेशक वह ख़ूब सुनने वाला है, ख़ूब जानने वाला है। (36) और उसकी (कुदरत और तौहीद की) निशानियों में से रात और दिन है, और सूरज है और चाँद है। (पस) तुम लोग न सूरज को सज्दा करो और न चाँद को, और (सिर्फ़) उस खुदा तआला को सज्दा करो जिसने इन (सब) निशानियों को पैदा किया, अगर तुमको अल्लाह की इबादत करना है। (37) फिर अगर ये लोग तकब्बुर करें तो जो फ़रिश्ते आपके रब के करीबी हैं वे रात और दिन उसकी पाकी बयान करते हैं, और वे (उससे ज़रा) नहीं उकताते। □ (38) और उसकी (कुदरत और तौहीद की) निशानियों में से एक

1. यानी उस वक़्त उन लोगों पर गुस्सा आएगा जिन्होंने बहकाया था, और वे बहकाने वाले आदमी भी होंगे और शैतान भी। और उस दरख्वास्त का मन्ज़ूर होना ज़रूरी नहीं, और यूँ तो गुमराह करने वाले भी जहन्नम में होंगे मगर शायद दरख्वास्त के वक़्त नज़र न आएँ।
2. मतलब यह कि शिर्क छोड़कर तौहीद इख़्तियार कर ली।
3. यानी उसको छोड़ा नहीं।
4. चुनाँचे दुनिया में नेकियों का दिल में डालना, हादसों में सब्र और सुकून फ़रिश्तों ही का फ़ैज़ है।
5. यानी तलब इख़्तियारी हो या बेइख़्तियारी दोनों बराबर पूरी होंगी।
6. यानी ये नेमतें इज़्ज़त के साथ मिलेंगी जिस तरह मेहमान को मिलती हैं।
7. यानी बन्दगी को फ़ख़्र समझे। घमण्डी लोगों की तरह शर्म न करे।

यह है कि (ऐ मुखातब!) तू ज़मीन को देखता है कि दबी-दबाई पड़ी है, फिर जब हम उसपर पानी बरसाते हैं तो वह उभरती है¹ और फूलती है। (इससे साबित हुआ कि) जिसने इस ज़मीन को ज़िन्दा कर दिया वही मुर्दों को ज़िन्दा कर देगा, बेशक वह हर चीज़ पर कादिर है। (39) बेशक जो लोग हमारी आयतों में ग़लत रास्ता इख़्तियार करते हैं, वे लोग हमपर छुपे नहीं हैं² सो भला जो शख्स दोज़ख़ में डाला जाए वह अच्छा है या वह शख्स जो कियामत के दिन अमन व अमान के साथ (जन्नत में) आए? जो जी चाहे कर लो वह तुम्हारा सब किया हुआ देख रहा है। (40) जो लोग इस कुरआन का इनकार करते हैं, जबकि वह उनके पास पहुँचता है, (उनमें खुद सोचने-समझने की कमी है) और यह (कुरआन मजीद) बड़ी वक़अत वाली किताब है (41) जिसमें खिलाफ़े हकीकत बात न उसके आगे की तरफ़ से आ सकती है और न उसके पीछे की तरफ़ से,³ यह हिक्मत वाले और तारीफ़ वाले खुदा तआला की तरफ़ से नाज़िल किया गया है। (42) आपको वही बातें (झुठलाने और तकलीफ़ देने की) कही जाती हैं जो आपसे पहले रसूलों को कही गई हैं, आपका रब बड़ी मफ़िरत वाला और दर्दनाक सज़ा देने वाला है। (43) और अगर हम इसको अज़मी “यानी अरबी ज़बान के अलावा किसी और” (ज़बान का) कुरआन बनाते तो यूँ कहते कि इसकी आयतें साफ़-साफ़ क्यों नहीं बयान की गई? यह क्या बात कि अज़मी किताब और अरबी रसूल?⁴ आप कह दीजिए कि यह कुरआन ईमान वालों के लिए रास्ता दिखाने वाला और शिफ़ा है। और जो ईमान नहीं लाते उनके कानों में डाट है। और वह कुरआन उनके हक़ में अंधापन है, ये लोग (फ़ायदा न उठाने की वजह से ऐसे हैं कि गोया) किसी बड़ी दूर जगह से पुकारे जा रहे हैं (कि आवाज़ सुनते हों मगर समझते न हों)। (44) ♦

और हमने मूसा (अलैहिस्सलाम) को भी किताब दी थी, सो उसमें भी इख़्तिलाफ़ हुआ⁵ और अगर एक बात न होती जो आपके रब की तरफ़ से पहले ठहर चुकी है (कि पूरा अज़ाब आखिरत में मिलेगा) तो उनका फैसला (दुनिया ही में) हो चुका होता, और ये लोग उसकी तरफ़ से ऐसे शक में हैं जिसने उनको तरद्दुद “यानी असमंजस” में डाल रखा है। (45) जो शख्स नेक अमल करता है वह अपने नफ़े के लिए, और जो शख्स बुरा अमल करता है उसका वबाल उसी पर पड़ेगा, और आपका परवर्दिकगार बन्दों पर जुल्म करने वाला नहीं⁶। (46)

1. इससे तौहीद पर दलालत होने के अलावा मरने के बाद दोबारा ज़िन्दा होने के मुम्किन होने पर भी दलील हासिल हुई।
2. हमको उनका सब हाल मालूम है और उनको हम जहन्नम की सज़ा देंगे।
3. यानी इसमें किसी पहलू और किसी सन्त से इसका एहतिमाल नहीं कि यह कुरआन अल्लाह की तरफ़ से उतरा हुआ न हो, और फिर हकीकत के खिलाफ़ इसको अल्लाह की तरफ़ से नाज़िल-शुदा (उतरा हुआ) कह दिया जाए।
4. खुलासा यह कि अब जो कुरआन अरबी है तो कहते हैं कि अज़मी (अरबी के अलावा किसी और ज़बान में) क्यों नहीं? अगर अज़मी होता तो कहते कि अरबी क्यों नहीं? किसी हल पर उनको करार नहीं। फिर अज़मी (ग़ैर-अरबी) होने से क्या फ़ायदा होता?
5. यानी किसी ने माना किसी ने न माना, यह आपके लिए कोई नई बात नहीं हुई। पस आप गुमगीन न हों।
6. यानी ऐसा नहीं कि कोई नेकी जो उसकी पूरी शतों के साथ अमल में लाई गई हो, उसको शुमार न करे। या किसी बुराई को ज़्यादा शुमार कर ले।

पच्चीसवाँ पार: इलैहि युरद्दु

सूर: हा-मीम् अस-सज्द: (आयत 47 से 54)

क़ियामत के इल्म का हवाला खुदा ही की तरफ़ दिया जा सकता है।¹ और कोई फल अपने खोल में से नहीं निकलता और न किसी औरत को हमल “यानी गर्भ” रहता है, और न वह बच्चे को जन्म देती है, मगर यह सब उसकी इत्तिला से होता है। और जिस दिन अल्लाह तआला उन (मुश्रिकों) को पुकारेगा (और कहेगा) कि मेरे शरीक (अब) कहाँ हैं, वे कहेंगे कि (अब तो) हम आपसे यही अर्ज़ करते हैं कि हममें (इस अक्कीदे का) कोई दावेदार नहीं। (47) और जिन-जिनको ये लोग पहले से (यानी दुनिया में) पूजा करते थे, वे सब ग़ायब हो जाएँगे।² और ये लोग समझ लेंगे कि उनके लिए कहीं बचाव की सूरत नहीं। (48) आदमी, तरक्की की ख्वाहिश से उसका जी नहीं भरता, और अगर उसको कोई तकलीफ़ पहुँचती है तो नाउम्मीद परेशान हो जाता है।³ (49) और अगर हम उसको किसी तकलीफ़ के बाद जो कि उसपर आ पड़ी थी, अपनी मेहरबानी का मज़ा चखा देते हैं तो कहता है कि यह तो मेरे लिए होना ही चाहिए था,⁴ और मैं क़ियामत को आने वाला नहीं ख़्याल करता, और अगर मैं अपने रब के पास पहुँचाया भी गया तो मेरे लिए उसके पास भी बेहतरी ही है। सो हम उन इनकार करने वालों को उनके (यह) सब किरदार ज़रूर बतला देंगे, और उनको सख़्त अज़ाब का मज़ा चखा देंगे। (50) और जब हम आदमी को नेमत अता करते हैं तो (हमसे और हमारे अहकाम से) मुँह मोड़ लेता है और करवट फेर लेता है,⁵ और जब उसको तकलीफ़ पहुँचती है तो ख़ूब लम्बी-चौड़ी दुआएँ करता है।⁶ (51) आप कहिए कि भला यह तो बतलाओ कि अगर यह कुरआन खुदा तआला के यहाँ से आया हो (और) फिर तुम इसका इनकार करो तो ऐसे शख्स से ज़्यादा कौन ग़लती में होगा जो (हक़ से) ऐसी दूर-दराज़ मुखालफ़त में पड़ा हो? (52) हम जल्द ही उनको अपनी (कुदरत की) निशानियाँ उनके इर्द-गिर्द में भी दिखा देंगे⁷ और खुद उनकी ज़ात में भी,⁸ यहाँ तक कि उनपर ज़ाहिर हो जाएगा कि वह कुरआन हक़ है। (तो) क्या आपके रब की यह बात (आपके हक़ पर होने की शहादत के लिए) काफ़ी नहीं कि वह हर चीज़ का शाहिद है।⁹ (53) याद रखो कि वे लोग अपने रब के सामने जाने की तरफ़ से शक़ में पड़े हैं। याद रखो कि वह हर चीज़ को (अपने इल्म के) घेरे में लिए हुए है।¹⁰ (54) ♦

1. यानी इस सवाल के ज़वाब में कि क़ियामत कब आएगी? यही कहा जाएगा कि उसका इल्म खुदा ही को है, मख़्लूक को उसका इल्म न होने से उसका न आना लाज़िम नहीं आता।
2. या तो यह मुराद है कि उनकी शिर्कत का एतिकाद हक़ के वाज़ेह होने के सबब ज़ेहन से सब ख़त्म हो जाएगा, या यह कि वे मदद न कर सकेंगे।
3. और यह हद दर्जे की नाशुक्की, अल्लाह के साथ बदगुमानी और उसके हुक्म से नागवारी है।
4. क्योंकि मेरी तदबीर व काबलियत और फज़ीलत इसी को चाहती थी और यह भी हद दर्जे की नाशुक्की और तकब्बुर है।
5. और यह हद दर्जे की बुराई और सरकशी है।
6. और यह हद दर्जे की बेसब्री और दुनिया की मुहब्बत में मशग़ूलियत है।
7. कि अरब के इलाके पेशीनगोई के मुताबिक़ फल्ट हो जाएँगे।
8. यानी ये ‘बद’ में मारे जाएँगे और उनका मस्कन (यानी ठिकाना और रहने की जगह) मक्का भी फल्ट हो जाएगा।
9. और उसने जगह-जगह आपकी रिसालत की गवाही दी, मौजिज़ों के इज़हार से ज़बान से भी और अमल से भी। पस वह गवाही काफ़ी है।
10. पस उनके शक व इनकार को भी जानता है और उसपर सज़ा देगा।

42 सूर: शूरा 62

सूर: शूरा मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 53 आयतें और 5 रुकूअ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

हा-मीम् (1) अैन-सीन-काफ़ (2) इसी तरह आप पर और जो (पैग़म्बर) आपसे पहले हो चुके हैं उनपर अल्लाह जो ज़बरदस्त हिक्मत वाला है (दूसरी सूरतों और किताबों की) वह्य भेजता रहा है। (3) उसी का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है, और वही सबसे बरतर और बड़ी शान वाला है। (4) कुछ बईद नहीं कि आसमान अपने ऊपर से (कि उधर ही से बोझ पड़ता है) फट पड़ें, और (वे) फरिश्ते अपने रब की तस्बीह और तारीफ़ करते हैं और ज़मीन वालों के लिए माफी माँगते हैं, ख़ूब समझ लो कि अल्लाह ही माफ़ करने वाला, रहमत करने वाला है। (5) और जिन लोगों ने अल्लाह के अलावा दूसरे कारसाज़ “यानी काम बनाने वाले” करार दे रखे हैं अल्लाह तआला उनको भी देख-भाल रहा है। और आपको उनपर कोई इख़्तियार नहीं दिया गया। (6) और हमने इसी तरह आप पर (यह) कुरआन अरबी वह्य के ज़रिए से नाज़िल किया है, ताकि आप (सबसे पहले) मक्का में रहने वालों को और जो लोग उसके आस-पास हैं उनको डराएँ और जमा होने के दिन से डराएँ,¹ जिस (के आने) में ज़रा शक नहीं। एक ग़िरोह जन्नत में (दाख़िल) होगा और एक दोज़ख़ में होगा। (7)² और अगर अल्लाह तआला को मन्ज़ूर होता तो उन सबको एक ही तरीक़े का बना देता,³ लेकिन वह जिसको चाहता है अपनी रहमत में दाख़िल कर लेता है, और (उन) ज़ालिमों का (क़ियामत के दिन) कोई हिमायती और मददगार नहीं। (8) क्या उन लोगों ने खुदा के सिवा दूसरे कारसाज़ “काम बनाने वाले” करार दे रखे हैं? सो अल्लाह ही कारसाज़ है और वही मुर्दों को ज़िन्दा करेगा, और वही हर चीज़ पर कुदरत रखता है।⁴ (9) ♦

और जिस-जिस बात में तुम (हक़ वालों के साथ) इख़्तिलाफ़ करते हो उसका फैसला अल्लाह तआला ही के सुपुर्द है। यह अल्लाह मेरा रब है, मैं उसी पर भरोसा करता हूँ और उसी की तरफ़ रुजू करता हूँ।⁵ (10) वह आसमानों का और ज़मीन का पैदा करने वाला है,⁶ उसने तुम्हारे लिए तुम्हारी जिन्स के जोड़े बनाए और (इसी तरह) मवेशियों के जोड़े बनाए। (और) इस (जोड़े मिलाने) के ज़रिए से तुम्हारी नस्ल चलाता रहता है। कोई चीज़ उसके जैसी नहीं और वही हर बात का सुनने वाला (और) देखने वाला है। (11) उसी के इख़्तियार में हैं आसमानों की और ज़मीन की कुन्जियाँ,⁷ जिसको चाहता है ज्यादा रोज़ी देता है और (जिसको चाहे) कम देता है, बेशक वह हर चीज़ का पूरा जानने वाला है।⁸ (12) अल्लाह तआला ने तुम लोगों के वास्ते वही दिन

1. इससे क़ियामत का दिन मुराद है, कि उसमें पहले वाले और आख़िर वाले सब जमा हो जाएँगे।

2. पस आपका काम सिर्फ़ ऐसे दिन से डरा देना है। और बाकी उनके ईमान लाने और ईमान न लाने से आपको क्या बहस, वह अल्लाह तआला की चाहत और मरज़ी पर है।

3. यानी सबको ईमान नसीब कर देता।

4. तो कारसाज़ बनाने के लायक़ वही हुआ जिसकी कुदरत हर चीज़ पर आ़म तौर पर और मुर्दों को ज़िन्दा करने पर ख़ास तौर पर साबित है। इस ख़ास कुदरत का इसलिए बयान किया कि इस वक़्त औरों की कुदरत जो अब नाम के लिए है वह भी बेनाम व निशान हो जाएगी, तो कुदरत का जुहूर पूरी तरह होगा।

5. पस न उन नुक़सान और तकलीफ़ों से डरता हूँ, और न तौहीद में कोई शुब्हा करता हूँ जिसको उसने हक़ कह दिया है।

6. और वह तुम्हारा भी पैदा करने वाला है। (शेष तफ़सीर पृष्ठ 874 पर)

मुकर्रर किया जिसका उसने नूह (अलैहिस्सलाम) को हुक्म दिया था, और जिसको हमने आपके पास वह्य के ज़रिए से भेजा है, और जिसका हमने इब्राहीम और मूसा और ईसा (अलैहिमुस्सलाम) को (मय उनके सब पैरोकारों के) हुक्म दिया था, (और उनकी उम्मतों को यह कहा था) कि इसी दीन को कायम रखना और इसमें फूट न डालना।¹ मुशिरकीन को वह बात बड़ी नागवार गुज़रती है जिसकी तरफ आप उनको बुला रहे हैं। अल्लाह अपनी तरफ जिसको चाहता है खींच लेता है,² और जो शख्स (खुदा की तरफ) रुजू करे उसको अपने तक पहुँचना नसीब फ़रमाता है।³ (13) और वे लोग इसके बाद कि उनके पास इल्म पहुँच चुका था, आपस की ज़िद्दा-ज़िद्दी से आपस में अलग-अलग हो गए। और अगर आपके परवर्दिगार की तरफ से एक मुकर्ररा वक़्त तक (के लिए मोहलत देने की) एक बात पहले करार न पा चुकती तो (दुनिया ही में) उनका फैसला हो चुका होता। और जिन लोगों को उनके बाद किताब दी गई है (मुराद इससे हुज़ूरे पाक के ज़माने के मुशिरक हैं) वे उसकी तरफ से ऐसे (मज़बूत) शक में पड़े हैं जिसने (उनको) दुविधा और शक में डाल रखा है। (14) सो आप उसी तरफ (उनको बराबर) बुलाते रहिए, और जिस तरह आपको हुक्म हुआ है (उसपर) अटल और कायम रहिए, और उनकी (बुरी) ख्वाहिशों पर न चलिए। और आप कह दीजिए कि अल्लाह ने जितनी किताबें नाज़िल फ़रमाई हैं मैं सबपर ईमान लाता हूँ। और मुझको यह (भी) हुक्म हुआ है कि (अपने और) तुम्हारे दरमियान में इन्साफ़ रखूँ। अल्लाह हमारा भी मालिक है और तुम्हारा भी मालिक है। हमारे आमाल हमारे लिए और तुम्हारे आमाल तुम्हारे लिए, हमारी-तुम्हारी कुछ बहस नहीं। अल्लाह हम सबको जमा करेगा और (इसमें शक ही नहीं कि) उसी के पास जाना है। (15) और जो लोग अल्लाह तआला (के दीन) के बारे में (मुसलमानों से) झगड़े निकालते हैं, इसके बाद कि वह मान लिया गया,⁴ उन लोगों की हुज्जत उनके रब के नज़दीक बातिल है, और उनपर ग़ज़ब (पड़ने वाला) है, और उनके लिए (क़ियामत में) सख़्त अज़ाब (होने वाला) है।⁵ (16) अल्लाह ही है जिसने (इस) किताब (यानी कुरआन) को और इन्साफ़ को नाज़िल फ़रमाया। और आपको (इसकी) क्या ख़बर, अज़ब नहीं कि क़ियामत करीब हो। (17) (मगर) जो लोग उसका यकीन नहीं रखते उसका तकाज़ा करते हैं, और जो लोग यकीन रखने वाले हैं वे उससे डरते हैं और एतिकाद रखते हैं कि वह बरहक़ है। याद रखो कि जो लोग क़ियामत के बारे में झगड़ते हैं, बड़ी दूर की गुमराही में (मुब्तला)

(पृष्ठ 872 का शेष) 7. यानी तसर्फ़ करने वाला वही है।

8. यानी वह जानने वाला है कि किसके लिए क्या मसलहत है।

1. मुराद इस दीन से दीन की उसूलों चीज़ें हैं, जो तमाम शरीअतों में मुश्तरक हैं। जैसे अल्लाह को एक मानना और रसूलों पर ईमान लाना और मरने के बाद ज़िन्दा होने पर यकीन लाना वगैरह।

फ़ायदा: कायम रखना यह कि उसको तब्दील मत करना, उसको छोड़ना मत। और फूट यह कि किसी बात पर ईमान लाएँ और किसी पर ईमान न लाएँ, या कोई ईमान लाए कोई न लाए। हासिल यह कि तौहीद वगैरह दीने क़दीम है कि शुरू से इस वक़्त तक तमाम शरीअतें इसमें मुत्तफ़िक़ रही हैं, और इसके ज़िम्न में नुबुव्वत की भी ताईद हो गई। पस चाहिए था कि उसके क़बूल करने में लोगों को ज़रा भी बहाने बनाना और टाल-मटोल न होता।

2. यानी हक़ दीन को क़बूल करने की तौफ़ीक़ दे देता है।

3. चाहत के बाद इज्तिबा यानी ईमान की तौफ़ीक़ देना होता है, और इज्तिबा यानी ईमान की तौफ़ीक़ के बाद अगर अल्लाह की तरफ़ रुजू और इताअत हो तो उसपर अल्लाह की नज़दीकी और बेइन्तिहा सवाब मुरत्तब होता है। खुलासा यह कि मुशिरकीन इनकार की सिफ़त के साथ मुत्तसिफ़ हैं और मोमिनीन अल्लाह की तौफ़ीक़ व हिदायत के साथ मुत्तसिफ़ हैं।

4. यानी इसके बाद कि बहुत-से आदमी अक्लमन्द और समझदार होकर उसको मान चुके, जिससे हुज्जत और ज़्यादा ज़ाहिर हो गई।

5. और उससे बचने का तरीक़ा यही है कि अल्लाह को और उसके दीन को मानो, और उसका मानना यह है कि अल्लाह की किताब को जो कि अल्लाह और बन्दों के हुक्क और सच और जिन चीज़ों पर अमल करना वाजिब है, उनको ज़ामे और मुश्तमिल है।

हैं। (18) अल्लाह तआला (दुनिया में) अपने बन्दों पर मेहरबान है, जिसको (जिस कद) चाहता है रोज़ी देता है।¹ और वह कुव्वत वाला (और) ज़बरदस्त है। (19) ♦

जो शख्स आखिरत की खेती का तालिब हो,² हम उसको उसकी खेती में तरक्की देंगे,³ और जो दुनिया की खेती का तालिब हो⁴ तो हम उसको कुछ दुनिया (अगर चाहें) दे देंगे और आखिरत में उसका कुछ हिस्सा नहीं। (20) क्या (खुदाई में) उनके कुछ शरीक हैं जिन्होंने उनके लिए ऐसा दीन मुकर्रर कर दिया है जिसकी खुदा ने इजाज़त नहीं दी,⁵ और अगर (खुदा की तरफ से) एक फैसले वाली बात (ठहरी हुई) न होती तो (दुनिया ही में) उनका फैसला हो चुका होता, और (आखिरत में) उन जालिमों को ज़रूर दर्दनाक अज़ाब होगा। (21) (उस दिन) आप उन जालिमों को देखेंगे कि अपने आमाल (के वबाल) से डर रहे होंगे, और वह (वबाल) उनपर (ज़रूर) पड़कर रहेगा। और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किए वे जन्नतों के बागों में (दाखिल) होंगे। वे जिस चीज़ को चाहेंगे उनके रब के पास उनको मिलेगी, यही बड़ा इनाम है।⁶ (22) यही है जिसकी खुशख़बरी अल्लाह तआला अपने उन बन्दों को दे रहा है जो ईमान लाए और अच्छे अमल किए, आप (उनसे) यूँ कहिए कि मैं तुमसे कुछ मतलब नहीं चाहता सिवाय रिश्तेदारी की मुहब्बत के।⁷ और जो शख्स कोई नेकी करेगा हम उसमें और ज़्यादा खूबी कर देंगे। बेशक अल्लाह तआला बड़ा बख़्शने वाला, बड़ क़द्रदान है। (23) क्या ये लोग यूँ कहते हैं कि उन्होंने खुदा पर झूठ बोहतान बाँध रखा है? सो खुदा अगर चाहे तो आपके दिल पर बन्द लगा दे, और अल्लाह तआला बातिल को मिटाया करता है और हक को अपने अहकाम से साबित किया करता है। वह दिलों की बातें जानता है। (24) और वह ऐसा (रहम करने वाला) है कि अपने बन्दों की तौबा कबूल करता है,⁸ और वह तमाम (गुज़रे हुए) गुनाह माफ़ फ़रमा देता है। और जो कुछ तुम करते हो वह उस (सब) को जानता है।⁹ (25) और उन लोगों की इबादत कबूल करता है जो ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल किए, और उनको अपने फ़ज़ल से और ज़्यादा (सवाब) देता है। और जो लोग कुफ़्र कर रहे हैं उनके लिए सख़्त अज़ाब है। (26) और अगर अल्लाह तआला अपने सब बन्दों के लिए रोज़ी

1. इस दुनिया में लुफ़ व मेहरबानी से यह लाज़िम नहीं आता कि उनका मस्लक (यानी मज़हब और तरीका) हक़ हो, और आखिरत में भी उनपर लुफ़ हो और अज़ाब न हो, बल्कि बातिल पर जमे रहने की वजह से वहाँ अज़ाब दिए जाएंगे।
2. यानी आखिरत के सवाब का तालिब हो।
3. यानी आमाल पर उसको सवाब देंगे और उस सवाब को दोगुना करेंगे।
4. यानी तदबीर और कोशिश से उसकी गरज़ दुनिया का नफ़ा हो और आखिरत के लिए कुछ कोशिश न करे, यहाँ तक कि ईमान भी न लाए।
5. इस इनकार के अन्दाज़ में सवाल करने से मकसूद यह है कि कोई इस काबिल नहीं कि खुदा के खिलाफ़ उसका मुकर्रर किया हुआ दीन मोतबर हो सके।
6. न वह जो दुनिया में ऐश और आराम मौजूद है।
7. यानी इतना चाहता हूँ कि मेरे-तुम्हारे जो रिश्तेदारी के ताल्लुकात हैं जो कि तमाम कुरैश में बल्कि तमाम अरब में फैले हुए थे, उनके हुक्क का तो ख़याल रखो।
8. पस अगर कोई काफ़िर कुफ़्र से तौबा कर ले और इस्लाम ले आए तो हम उसका ईमान कबूल कर लेंगे।
9. पस उसको यह भी ख़बर है कि तौबा ख़ालिस की है या ग़ैर-ख़ालिस की है। तो तुमको ख़ालिस तौबा करनी चाहिए।

कुशादा कर देता तो वे दुनिया में शरारत करने लगते,¹ लेकिन जितना रिज़्क चाहता है (मुनासिब) अन्दाज़ से (हर एक के लिए) उतारता है, वह अपने बन्दों (की मस्लहतों) को जानने वाला (और उनका हाल) देखने वाला है।² (27) और वह ऐसा है जो लोगों के नाउम्मीद हो जाने के बाद बारिश बरसाता है और अपनी रहमत फैलाता है,³ और वह (सबका) काम बनाने वाला, तारीफ़ के काबिल है।⁴ (28) और उस (की कुदरत) की निशानियों में से आसमानों और ज़मीन का पैदा करना है, और उन जानदारों का जो उसने आसमान और ज़मीन में फैला रखे हैं,⁵ और वह उन (मख़्लूक़ात) के जमा कर लेने पर भी जब वह (जमा करना) चाहे कादिर है। ♦ (29) ♦

और तुमको (ऐ गुनाहगारो!) जो कुछ मुसीबत पहुँचती है तो वह तुम्हारे ही हाथों के किए हुए कामों से (पहुँचती है) और बहुत-से तो दरगुज़र ही कर देता है।⁶ (30) और तुम ज़मीन में (पनाह लेकर उसको) हरा नहीं सकते, और खुदा तआला के सिवा तुम्हारा कोई भी हामी और मददगार नहीं। (31) और उसकी निशानियों में से जहाज़ हैं समुद्र में (ऐसे ऊँचे) जैसे पहाड़। (32) अगर वह चाहे हवा को ठहरा दे, तो वह (समुद्री जहाज़) समुद्र की सतह पर खड़े-के-खड़े रह जाएँ। बेशक इसमें निशानियाँ हैं हर साबिर-शाकिर (यानी मोमिन) के लिए। (33) या उन जहाज़ों को उनके (बुरे) आमाल (कुफ़्र वगैरह) के सबब तबाह कर दे, और (उनमें) बहुत-से आदमियों से दरगुज़र कर जाए। (34) और (उस तबाही के वक़्त) उन लोगों को जो कि हमारी आयतों में झगड़े निकालते हैं मालूम हो जाए कि (अब) उनके लिए कहीं बचाव नहीं। (35) सो जो कुछ तुमको दिया-दिलाया गया है वह सिर्फ़ (चन्द दिन की) दुनियावी ज़िन्दगी के बरतने के लिए है,⁷ और जो (अज़्र और सवाब आखिरत में) अल्लाह तआला के यहाँ है वह इससे कहीं बढ़ा हुआ और बेहतर है, और ज़्यादा पायदार।⁸ वह उन लोगों के लिए है जो ईमान ले आए और अपने परवर्दिगार पर भरोसा करते हैं। (36) और जो कि बड़े गुनाहों से और (उनमें) बेहयाई की बातों से बचते हैं, और जब उनको गुस्सा आता है तो माफ़ कर देते हैं। (37) और जिन लोगों ने कि अपने रब का हुक्म माना और वे नमाज़ के पाबन्द हैं। और उनका हर काम (जिसमें शरीअत का कोई वाज़ेह हुक्म मौजूद न हो) आपस के मशिवरे से होता है,⁹ और हमने जो

1. यानी अल्लाह तआला की सिफ़ते हिक्मत की निशानियों में से यह है कि उसने सब आदमियों को ज़्यादा माल नहीं दिया, और ज़ाहिर है कि अगर मालदारी आम हो जाए तो माल की ज़रूरत तो किसी को किसी से बाकी न रहे और काम किसी का कोई करे नहीं, तो दोनों तरफ़ से ज़रूरत जाती रहे, फिर कौन किससे दबे?

2. इससे हिक्मत वाला होने के अलावा ख़बर रखने वाला और दूर अन्देश होना दो सिफ़तें और साबित हुईं।

3. निशानियों से उगने वाले चीज़ें और फल मुराद हैं।

4. पस ऊपर की तीन सिफ़तों के साथ तीन सिफ़तें और साबित हुईं- 'रहम करने वाला, कारसाज़ और तारीफ़ के काबिल होना'।

5. इससे ऊपर की छह सिफ़तों के साथ 'ख़ालिक' होना भी साबित हुआ।

6. चाहे दोनों ज़हान में या सिर्फ़ दुनिया में।

7. और उम्र के ख़त्म होने के साथ उसका भी ख़ात्मा हो जाएगा।

8. पस दुनिया की तलब छोड़कर आखिरत की तलब करो।

9. हर काम से मुराद हर अहम और बड़ा काम है, इसलिए कि मामूली कामों में मशिवरा मन्कूल नहीं, जैसे दो वक़्त का खाना खाना वगैरह। और शरीअत का हुक्म न होने की कैद इसलिए कि शरीअत की तरफ़ से मुकर्रा अहकाम में भी मशिवरा नहीं, जैसे यह मशिवरा कि पाँच वक़्त की नमाज़ पढ़ा करूँ या न पढ़ा करूँ।

कुछ उनको दिया है उसमें से खर्च करते हैं। (38) और जो ऐसे हैं कि जब उनपर जुल्म वाके होता है तो वे बराबर का बदला लेते हैं।¹ (39) और बुराई का बदला वैसी ही बुराई है,² फिर (बदला लेने की इजाजत के बाद) जो शख्स माफ़ करे और इस्लाह करे तो उसका सवाब अल्लाह के ज़िम्मे है, वाकई अल्लाह तआला ज़ालिमों को पसन्द नहीं करता। (40) और जो अपने ऊपर जुल्म हो चुकने के बाद बराबर का बदला ले ले, सो ऐसे लोगों पर कोई इल्ज़ाम नहीं। (41) इल्ज़ाम सिर्फ़ उन लोगों पर है जो लोगों पर जुल्म करते हैं³ और नाहक दुनिया में सरकशी (और तकब्बुर) करते हैं, ऐसों के लिए दर्दनाक अज़ाब (मुकर्रर) है। (42) और जो शख्स सब्र करे और माफ़ कर दे, यह ज़रूर बड़े हिम्मत के कामों में से है।⁴ (43) ♦

और जिसको अल्लाह तआला गुमराह कर दे तो उसके बाद उस शख्स का (दुनिया में भी) कोई मददगार नहीं, और आप (उन) ज़ालिमों को देखेंगे जिस वक़्त कि उनको अज़ाब का मुआयना होगा, कहते होंगे कि क्या (दुनिया में) वापस जाने की कोई सूरत है? (44) और (साथ ही) आप उनको इस हालत में देखेंगे कि वे दोज़ख़ के सामने लाए जाएँगे ज़िल्लत के मारे झुके हुए होंगे, सुस्त निगाह से देखते होंगे और (उस वक़्त) ईमान वाले कहेंगे कि पूरे घाटे वाले वे लोग हैं जो अपनी जानों से और अपने मुताल्लिकीन से (आज) कियामत के दिन घाटे में पड़े। याद रखो कि ज़ालिम (यानी मुशिरक और काफ़िर) लोग हमेशा के अज़ाब में रहेंगे। (45) और (वहाँ) उनके कोई मददगार न होंगे जो खुदा से अलग (होकर) उनकी मदद करें। और जिसको खुदा गुमराह कर दे उस (की नजात) के लिए कोई रास्ता ही नहीं। (46) तुम अपने रब का हुक्म मान लो, इससे पहले कि ऐसा दिन आ पहुँचे जिसके लिए खुदा की तरफ़ से हटना न होगा।⁵ न तुमको उस दिन कोई पनाह मिलेगी और न तुम्हारे बारे में कोई (खुदा से) रोक-टोक करने वाला है। (47) फिर अगर ये लोग (यह सुनकर भी) मुँह मोड़ें तो हमने आपको उनपर निगराँ करके नहीं भेजा, (जिससे कि आपको अपने से पूछताछ का अन्देशा हो), आपके ज़िम्मे तो सिर्फ़ (हुक्म का) पहुँचा देना है। और हम जब (इस किस्म के) आदमी को अपनी इनायत का मज़ा चखा देते हैं तो वह उसपर खुश हो जाता है, और अगर (ऐसे) लोगों पर उनके आमाँल के बदले में जो पहले अपने हाथों कर चुके हैं, कोई मुसीबत आ पड़ती है तो आदमी नाशुक्री करने

1. यानी ज्यादती नहीं करते, और यह मतलब नहीं कि माफ़ नहीं करते।
2. बशर्ते कि वह फेल (काम) अपनी ज़ात के एतिबार से नाफरमानी न हो।
3. चाहे शुरू में या बदला लेने के वक़्त।
4. यानी ऐसा करना बेहतर है और यह बहादुरी है।
5. यानी दुनिया में जिस तरह अज़ाब हटता जाता है वहाँ इसका हटना और ढील देना न होगा।

लगता है।¹ (48) अल्लाह तआला ही की बादशाहत है आसमानों की और ज़मीन की,² वह जो चाहता है पैदा करता है, जिसको चाहता है बेटियाँ अता फ़रमाता है और जिसको चाहता है बेटे अता फ़रमाता है। (49) या उनको जमा कर देता है, बेटे भी और बेटियाँ भी, और जिसको चाहता है बेऔलाद रखता है। बेशक वह बड़ा जानने वाला, बड़ी कुदरत वाला है। (50) और किसी बशर “यानी आदमी और इनसान” की (मौजूदा हालत में) यह शान नहीं कि अल्लाह उससे कलाम फ़रमाए मगर (तीन तरह से), या तो इल्हाम से,³ या आड़ और पर्दे के बाहर से,⁴ या किसी फ़रिश्ते को भेज दे कि वह खुदा के हुक्म से जो खुदा को मन्ज़ूर होता है, पैग़ाम पहुँचा देता है, वह बड़ी बुलन्द शान वाला है और बड़ी हिक्मत वाला (भी) है। (51) और इसी तरह हमने आपके पास भी वह यानी अपना हुक्म भेजा है, आपको न यह ख़बर थी कि (अल्लाह की) किताब क्या चीज़ है, और न यह ख़बर थी कि ईमान (के कमाल की इन्तिहा) क्या है, और लेकिन हमने इस कुरआन को एक नूर बनाया,⁵ जिसके ज़रिए हम अपने बन्दों में से जिसको चाहते हैं हिदायत करते हैं। और इसमें कोई शुब्हा नहीं कि आप एक सीधे रास्ते की हिदायत कर रहे हैं। (52) यानी उस खुदा के रास्ते की कि उसी का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है। याद रखो सब मामलात उसी की तरफ़ लौटेंगे। (53) ♦

43 सूर: जुख्रुफ़ 63

सूर: जुख्रुफ़ मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 89 आयतें और 7 रुकूअ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

हा-मीम् (1) कसम है इस वाज़ेह किताब की (2) कि हमने इसको अरबी ज़बान का कुरआन बनाया ताकि (ऐ अरब वालो!) तुम (आसानी से) समझ लो। (3) और वह हमारे पास लौहे-महफूज़ में बड़े रुतबे की और हिक्मत से भरी हुई किताब है।⁶ (4) क्या हम तुमसे इस नसीहत (की किताब) को इस बात पर हटा लेंगे कि तुम (फ़रमाँबरदारी की) हद से गुज़रने वाले हो।⁷ (5) और हम पहले लोगों में बहुत-से नबी भेजते रहे

1. ये दोनों हालतें नफ़्सानी लज़्ज़तों से बहुत ज़्यादा ताल्लुक होने और हक़ तआला से बेताल्लुकी की दलील हैं। और यह हालत उनकी तबीयत का हिस्सा हो गई है। पस उनसे आप ईमान की उम्मीद क्यों रखें, जो ग़म का सबब हो।
2. “लिल्लाहि मुल्कुस्समावाति.....आख़िरत तक” तमाम इख़्तियारात को आम है।
3. यानी दिल में कोई अच्छी बात तबई हवास के वास्ते के बग़ैर डाल दे, चाहे वह इल्हामे क़तई हो जैसा अम्बिया का। या ग़ैर-क़तई हो जैसा ग़ैर-अम्बिया का इल्हाम।
4. यह पर्दा कोई जिस्मानी आड़ नहीं और न यह पर्दा हक़ तआला की ज़ात व नूर को छुपा सकता है, बल्कि हकीकत इस पर्दे की बशर के इदराक़ की सिफ़त का कमज़ोर होना है, और यही पर्दा था जो मूसा अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला के देखने से रुकावट बना था, और यही रुकावट ज़न्नत में दूर हो जाएगी, यानी दीदार की कुव्वत और बरदाश्त करने की हिम्मत दे दी जाएगी।
5. यानी उलूम और आमाल की तरफ़ हिदायत देने वाला बनाया।
6. पस जब यह समझने में आसान है, और ख़ास हमारी हिफ़ाज़त के तहत और अपने बेमिसाल, बड़े रुतबे वाली और हक़ होने पर दलालत करने वाली किताब, फिर फ़ायदों और मस्लहतों पर मुश्तमिल तो ऐसी किताब को ज़रूर मानना चाहिए। लेकिन अगर तुम न भी मानो तब भी हम हिक्मत के तकाज़े की वज़ह से उसका भेजना और तुमको उसका मुखातब बनाना न छोड़ेंगे।
7. यानी चाहे तुम मानो या न मानो, मगर नसीहत तो बराबर की जाएगी और यह फैज़ का मिल होकर रहेगा।

हैं। (6) और उन लोगों के पास कोई नबी ऐसा नहीं आया जिसके साथ उन्होंने मज़ाक उड़ाने का काम न किया हो। (7) फिर हमने उन लोगों को जो कि उनसे ज़्यादा ताकतवर थे ग़ारत कर डाला, और पहले लोगों की (हलाक व ग़ारत करने की) यह हालत हो चुकी है।¹ (8) और अगर आप उनसे पूछें कि आसमान और ज़मीन को किसने पैदा किया है, तो वे ज़रूर यही कहेंगे कि उनको ज़बरदस्त, जानने वाले (खुदा तआला) ने पैदा किया है।² (9) जिसने तुम्हारे (आराम के) लिए ज़मीन को फ़र्श (के जैसा) बनाया (कि उसपर आराम करते रहो) और उसमें उसने तुम्हारे लिए रास्ते बनाए ताकि तुम मन्ज़िले मकसूद तक पहुँच सको। (10) और जिसने आसमान से पानी एक अन्दाज़ से बरसाया, फिर हमने उससे सूखी ज़मीन को (उसके मुनासिब) ज़िन्दा किया। इसी तरह तुम (भी अपनी कब्रों से) निकाले जाओगे। (11) और जिसने तमाम किस्में बनाई और तुम्हारी वे कश्तियाँ और चौपाए बनाए जिनपर तुम सवार होते हो। (12) ताकि तुम उनकी पीठ पर जमकर बैठो, फिर जब उसपर बैठ चुको तो अपने रब की नेमत को दिल से याद करो, और (ज़बान से पसन्दीदगी के इज़हार के तौर पर) यूँ कहो कि उसकी ज़ात पाक है जिसने इन चीज़ों को हमारे बस में कर दिया, और हम तो ऐसे न थे जो इनको काबू में कर लेते।³ (13) और हमको अपने रब की तरफ़ लौटकर जाना है। (14) और उन लोगों ने खुदा के बन्दों में से (जो मख़्लूक होते हैं) खुदा का हिस्सा ठहरा दिया, वाकई इन्सान खुला नाशुक्रा है।⁴ (15) ♦

क्या अल्लाह तआला ने अपनी मख़्लूक़ात में से बेटियाँ पसन्द कीं और तुमको बेटों के साथ मख़सूस किया (16) हालाँकि जब उनमें से किसी को उस चीज़ के होने की ख़बर दी जाती है जिसको खुदा रहमान का नमूना (यानी औलाद) बना रखा है, (मुराद बेटी है) तो (इस क़द्र नाराज़ हो कि) सारे दिन उसका चेहरा बेरौनक़ रहे और वह दिल ही दिल में घुटता रहे। (17) क्या जो कि (आदतन) बनाव-सिंघार में पले-बढ़े और वह बहस करने में बयान की कुव्वत (भी) न रखे।⁵ (18) और उन्होंने फ़रिशतों को जो कि खुदा के बन्दे हैं औरत करार दे रखा है। क्या ये उनकी पैदाइश के वक़्त मौजूद थे? उनका यह दावा लिख लिया जाता है और (क़ियामत में) उनसे पूछताछ होगी। (19) और वे लोग यूँ कहते हैं कि अगर अल्लाह तआला चाहता तो हम

1. पस न आप ग़म करें कि उनका भी ऐसा ही हाल होना है, चुनाँचे बद वग़ैरह में हुआ। और न ये बेफ़िक़ हों कि नमूना मौजूद है।
2. और पैदा करने में तन्हा और अकेला होना इसको लाज़िम है कि माबूद और खुदा भी तन्हा और अकेला हो, पस अल्लाह का एक होना उनके यह मान लेने से साबित हो गया।
3. क्योंकि जानवर से ज़्यादा ताक़त नहीं, और अल्लाह के दिल में डाले बग़ैर कश्ती चलाने की तदबीर से वाकिफ़ नहीं। दोनों के मुताल्लिक हक़ तआला ने तदबीर सिखा दी।
4. इसलिए कि खुदा तआला के साथ इतना बड़ा कुफ़ करता है कि उसको हिस्सों वाला करार देता है, जिससे उसका क़दीम न होना लाज़िम आता है।
5. मक्का के मुशिरकों की यह हालत थी कि अपने घर लड़की का पैदा होना तो बुरा समझते थे लेकिन रब्बुल आलमीन के लिए बेटियाँ तजवीज़ करते थे। फ़रमाया कि लड़की की ज़ात जो गहने-पाते में पले, और ज़रूरत के वक़्त जिसके मुँह से पूरी बात भी न निकल सके, उसको अल्लाह की तरफ़ मन्सूब करते हो?

उनकी इबादत न करते। उनको इसकी कुछ तहकीक नहीं, बिलकुल बेतहकीक बात कर रहे हैं।¹ (20) क्या हमने उनको इस (कुरआन) से पहले कोई किताब दे रखी है कि ये उससे दलील पकड़ते हैं।² (21) बल्कि वे कहते हैं कि हमने अपने बाप-दादाओं को एक तरीके पर पाया है और हम भी उनके पीछे-पीछे रास्ता चल रहे हैं। (22) और इसी तरह हमने आपसे पहले किसी बस्ती में कोई पैगम्बर नहीं भेजा मगर वहाँ के खुशहाल लोगों ने यही कहा कि हमने अपने बाप-दादाओं को एक तरीके पर पाया है और हम भी उन्हीं के पीछे-पीछे चले जा रहे हैं। (23) (इसपर) उनके पैगम्बर ने कहा कि क्या (बाप-दादा के तरीके ही की पैरवी किए जाओगे) अगरचे मैं उससे अच्छा मकसूद पर पहुँचा देने वाला तरीका तुम्हारे पास लाया हूँ कि जिसपर तुमने अपने बाप-दादाओं को पाया है। वे (बैर और दुश्मनी के तौर पर) कहने लगे कि हम तो इस दीन को मानते ही नहीं जिसको देकर तुमको भेजा गया है। (24) सो हमने उनसे इन्तिकाम लिया, सो देखिए झुठलाने वालों का कैसा (बुरा) अन्जाम हुआ।³ ● (25) ♦

और (वह वक्त भी काबिले जिक्र है) जबकि इब्राहीम ने अपने बाप से और अपनी कौम से फरमाया, मैं उन चीजों (की इबादत) से बेजार हूँ जिनकी तुम इबादत करते हो। (26) मगर हाँ, जिसने मुझे पैदा किया, फिर वही मुझको रास्ता दिखाता है।⁴ (27) और वह इस (अक्कीदे) को अपनी औलाद में (भी) एक कायम रहने वाली बात कर गए। ताकि (हर ज़माने में मुशिरक) लोग (शिरक से) बाज़ आते रहें।⁵ (28) बल्कि मैंने उनको और उनके बाप-दादाओं को (दुनिया का) ख़ूब सारा सामान दिया, यहाँ तक कि उनके पास सच्चा कुरआन और साफ़-साफ़ बतलाने वाला रसूल आया। (29) और जब उनके पास यह सच्चा कुरआन पहुँचा तो कहने लगे कि यह तो जादू है और हम इसको नहीं मानते। (30) और कहने लगे कि यह कुरआन (अगर अल्लाह का कलाम है तो) इन दोनों बस्तियों (मक्का और ताइफ़ के रहने वालों) में से किसी बड़े आदमी पर क्यों नाज़िल नहीं किया गया?⁶ (31) क्या ये लोग आपके रब की (खास) रहमत (यानी नुबुव्वत) को तकसीम करना चाहते हैं। दुनियावी ज़िन्दगी में (तो) उनकी रोज़ी हम (ही) ने तकसीम कर रखी है, और हमने एक को दूसरे पर बरतरी दे रखी है, ताकि एक-दूसरे से काम लेता रहे (और दुनिया का इन्तिजाम कायम रहे), और आपके रब की रहमत इस (दुनियावी माल व असबाब) से कहीं बेहतर है, जिसको ये लोग समेटते फिरते हैं।⁷ (32)

1. क्योंकि कादिर कर देना रिज़ा और खुशनूदी की दलील नहीं।

2. हकीकत यह है कि न दलीले अक्ली है न दलीले नक्ली।

3. ऊपर तौहीद का मज़मून था। आगे उसकी ताकीद और ताईद के लिए हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम से जो कि अरब वालों के नज़दीक माने हुए और सम्मानित थे, इसका मन्कूल होना और उनके बाद फिर उनकी औलाद में इसका नकल होते हुए आना और अब आखिर में सबसे आखिरी पैगम्बर की मारिफ़त इसको ताज़ा करना और इसके साथ पैगम्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नुबुव्वत के मुताल्लिक उन लोगों के एक एतिराज़ का जवाब मज़कूर है।

4. मतलब यह कि उन लोगों को हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का हाल याद करना चाहिए कि वह खुद भी तौहीद (अल्लाह के एक होने) के मोतकिद थे।

5. यानी अपनी औलाद को भी वसीयत की, जिसका कुछ-कुछ असर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नबी बनाकर भेजे जाने तक रहा। यहाँ तक कि जाहिलियत के ज़माने में भी अरब में बाज़ लोग शिरक से नफरत करते थे।

6. यानी रसूल के लिए बड़ी शान वाला होना ज़रूरी है, और पैगम्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम माल और रियासत नहीं रखते, तो यह पैगम्बर नहीं हो सकते। मकसद पैगम्बरी का इनकार था।

7. पस जब दुनियावी रोज़गार तकसीम उनकी राय पर नहीं रखी जो कि अदना दर्जे की चीज़ है तो नुबुव्वत जो खुद भी आला दर्जे की चीज़ है और उसकी मस्तहतें भी बड़े दर्जे की हैं, वह क्योंकि उनकी राय पर तकसीम की जाती।

और अगर यह बात (अपेक्षित) न होती कि तमाम आदमी एक ही तरीके के हो जाएंगे तो जो लोग अल्लाह तआला के साथ कुफ़र करते हैं उनके लिए उनके घरों की छतें हम चाँदी की कर देते, और (यह भी कि) ज़ीने भी जिनपर वे चढ़ा (उतरा) करते हैं। (33) और उनके घरों के किवाड़ भी और तख़्त भी जिनपर तकिया लगाकर बैठते हैं। (34) और (यही चीज़ें) सोने की भी हैं,¹ और यह सब (साज़ व सामान) कुछ भी नहीं सिर्फ़ दुनियावी ज़िन्दगी की चन्द दिन की कामयाबी है, (फिर फ़ना आख़िर फ़ना,) और आख़िरत आपके रब के यहाँ खुदा तआला से डरने वालों के लिए है।² (35) ♦

और जो शख़्स अल्लाह तआला की नसीहत (यानी कुरआन) से अंधा बन जाए हम उसपर एक शैतान मुसल्लत कर देते हैं, सो वह (हर वक़्त) उसके साथ रहता है। (36) और वे उनको (हक़) रास्ते से रोकते रहते हैं। और ये लोग ख़्याल करते हैं कि वे (सही) रास्ते पर हैं। (37) यहाँ तक कि जब ऐसा शख़्स हमारे पास आएगा तो (उस शैतान से) कहेगा कि काश! मेरे और तेरे दरमियान में (दुनिया में) पूरब और पश्चिम के बराबर फ़ासला होता कि (तू तो) बुरा साथी था। (38) और (उनसे कहा जाएगा कि) जबकि तुम (दुनिया में) कुफ़र कर चुके थे, तो आज यह बात तुम्हारे काम न आएगी कि तुम (और शयातीन) सब अज़ाब में शरीक हो। (39) सो क्या आप (ऐसे) बहरों को सुना सकते हैं या (ऐसे) अन्धों को और उन लोगों को जो खुली गुमराही में हैं, राह पर ला सकते हैं?³ (40) पस अगर हम (दुनिया से) आपको उठा लें तो भी हम उनसे बदला लेने वाले हैं। (41) या अगर उनसे जो हमने अज़ाब का वायदा कर रखा है वह आपको (भी) दिखला दें तब भी (कुछ बर्द नही, क्योंकि) हमको उनपर हर तरह की कुदरत है।⁴ (42) तो आप इस कुरआन पर कायम रहिए जो आप पर वह्य के ज़रिए से नाज़िल किया गया है, आप बेशक सीधे रास्ते पर हैं।⁵ (43) और यह कुरआन आपके लिए और आपकी कौम के लिए बेशक बड़े शर्फ़ “यानी इज़्ज़त व सम्मान” की चीज़ है, और जल्दी ही तुम सब पूछे जाओगे।⁶ (44) और आप उन सब पैग़म्बरों से जिनको हमने आपसे पहले भेजा है, पूछ लीजिए, क्या हमने खुदा-ए-रहमान के सिवा दूसरे माबूद ठहरा दिए थे कि उनकी इबादत की जाए। (45) ♦

और हमने मूसा को अपनी दलीलें देकर फिरऔन और उसके सरदारों के पास भेजा था, सो उन्होंने (उन लोगों के पास आकर) फरमाया कि मैं रब्बुल आलमीन की तरफ़ से (पैग़म्बर होकर आया) हूँ। (46) फिर जब मूसा उनके पास हमारी निशानियाँ लेकर आए तो वे यकायक उनपर हँसने लगे। (47) और हम उनको जो निशानी दिखलाते थे वह दूसरी निशानी से बढ़कर होती थी,⁷ और हमने उन लोगों को अज़ाब में पकड़ा था ताकि वे (अपने कुफ़र से) बाज़ आ जाएँ।⁸ (48) और उन्होंने कहा कि ऐ जादूगर! हमारे लिए अपने रब से

1. इससे मालूम हुआ कि दुनिया हकीकत में बड़ी चीज़ नहीं है। पस वह नुबुव्वत के रुतबे की सलाहियत का आधार भी न होगी, बल्कि इस सलाहियत का आधार अल्लाह तआला की तरफ़ से अता की हुई आला ख़ूबियाँ और कमालात हैं जो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम में कमाल दर्जे के जमा हैं, पस नुबुव्वत उन्हीं के लिए मुनासिब थी, न कि मक्का और ताइफ़ के मालदारों के लिए।
2. पस जो चीज़ फ़ना हो जाने वाली हो वह न काबिले क़द्र है और न इस काबिल है कि उसको तलब किया जाए। हाँ, आख़िरत जो कि बाक़ी रहने वाली है, और उसके हासिल करने के ज़राए (सूत्र) जो कि आमाल और नेकियाँ हैं, वे बेशक एतिबार के काबिल हैं।
3. यानी उनको हिदायत देना आपके इख़्तियार से बाहर है। आप इसके पीछे न पड़ें।
4. मतलब यह कि अज़ाब ज़रूर होगा चाहे कभी हो।
5. मतलब यह कि अपना काम किए जाइए दूसरों के काम का ग़म न कीजिए।
6. पस आपसे सिर्फ़ तब्लीग़ के मुताल्लिक़ सवाल होगा, जिसको आप ख़ूब अदा कर चुके हैं। और अमल के मुताल्लिक़ उनसे सवाल होगा जिसमें उन्होंने कोताही की। पस जब आपसे उनके आमाल के बारे में पूछताछ न होगी (शेष तफ़सीर पृष्ठ 890 पर)

उस बात की दुआ कर दीजिए जिसका उसने आपसे अहद कर रखा है, हम ज़ख़र राह पर आ जाएँगे। (49) फिर जब हमने वह अज़ाब उनसे हटा दिया तब ही उन्होंने (अपना) अहद तोड़ दिया। (50) और फिरऔन ने अपनी कौम में यह मुनादी कराई, यह बात कही कि ऐ मेरी कौम! क्या मिस्र की बादशाही मेरी नहीं है? और ये नहरें मेरे (महल के) नीचे बह रही हैं, क्या तुम देखते नहीं हो? (51) बल्कि मैं (ही) अफ़ज़ल हूँ उस शख्स से¹ जो कि कम-क़द्र है,² और बयान की कुव्वत भी नहीं रखता। (52) तो उसके सोने के कंगन क्यों नहीं डाले गए,³ या फ़रिश्ते उसके साथ में पर बाँधकर आए होते।⁴ (53) गरज़ उसने (ऐसी बातें करके) अपनी कौम को मग़लूब कर दिया और वे उसके कहने में आ गए। वे लोग (कुछ पहले से भी) शरारत के भरे थे। (54) फिर जब उन लोगों ने हमको गुस्सा दिलाया तो हमने उनसे बदला लिया और उन सबको डुबो दिया। (55) और हमने उनको आइन्दा आने वालों के लिए खास तौर के पहले गुज़रे हुए और (इब्रत का) नमूना बना दिया।⁵ (56) ♦

और जब ईसा इब्ने मरियम के मुताल्लिक एक अजीब मज़मून बयान किया गया तो यकायक आपकी कौम के लोग उससे (खुशी के मारे) चिल्लाने लगे। (57) और (उस एतिराज़ करने वाले के साथ होकर) कहने लगे कि हमारे माबूद ज़्यादा बेहतर हैं या ईसा (अलैहिस्सलाम)? उन लोगों ने जो यह (अजीब मज़मून) आपसे बयान किया है तो सिर्फ़ झगड़ने की गरज़ से, बल्कि ये लोग हैं ही झगड़ालू।⁶ (58) ईसा (अलैहिस्सलाम) तो सिर्फ़ एक ऐसे बन्दे हैं जिनपर हमने फ़ज़ल किया था और उनको बनी इस्राईल के लिए हमने (अपनी कुदरत का) नमूना बनाया था। (59) और अगर हम चाहते तो हम तुमसे फ़रिश्तों को पैदा कर देते कि वे ज़मीन पर एक के बाद एक रहा करते। (60) और वह (यानी ईसा अलैहिस्सलाम) क़ियामत के यकीन का ज़रिया हैं, तो तुम लोग उस (के सही होने) में शक मत करो, और तुम लोग मेरी पैरवी करो, यह सीधा रास्ता है। (61) और तुमको शैतान (इस राह पर आने से) रोकने न पाए, वह बेशक तुम्हारा खुला दुश्मन है। (62) और जब ईसा (अलैहिस्सलाम) मोज़िज़े लेकर आए तो उन्होंने (लोगों से) कहा कि मैं तुम्हारे पास समझ की बातें लेकर आया हूँ और ताकि बाज़ बातें जिनमें तुम इख़्तिलाफ़ कर रहे हो तुमसे बयान कर दूँ, तो तुम लोग अल्लाह से डरो और मेरा कहना मानो। (63) बेशक अल्लाह ही मेरा भी रब है और तुम्हारा भी रब है, सो उसी की

(पृष्ठ 888 का शेष) तो फिर आप क्यों ग़म करते हैं।

7. मतलब यह कि सब निशानियाँ बड़ी थीं।

8. यानी वे निशानियाँ नुबुव्वत की दलीलें भी थीं, और उनके लिए सज़ाएँ भी थीं।

1. यानी मूसा अलैहिस्सलाम से।

2. यानी माल और बढ़ाई के एतिबार से।

3. मतलब यह कि अगर उस शख्स को नुबुव्वत अता होती तो खुदा की तरफ़ से उसके हाथ में सोने के कंगन होते।

4. यानी खास कर लेने की ये निशानियाँ ज़ाहिर होतीं, हालाँकि यह सिर्फ़ हिमाक़त है, क्योंकि नुबुव्वत जिस किस्म का कमाल और खास करना है उसी किस्म की निशानियाँ और दलीलें उसके साथ मौजूद हैं।

5. मतलब यह है कि लोग उनका किस्सा याद करके इब्रत दिलाते हैं कि देखो पहले लोगों में से ऐसे-ऐसे हुए हैं और उनका ऐसा-ऐसा हाल हुआ है।

6. क्योंकि अक्सर हक़ के मामलों में झगड़े निकालते रहते हैं।

इबादत करो, यही (अल्लाह तआला को एक मानना) सीधा रास्ता है। (64) सो मुख्तलिफ़ गिरोहों ने (इस बारे में) आपस में इख़िलाफ़ डाल लिया,¹ सो उन ज़ालिमों के लिए एक दर्दनाक अज़ाब के दिन से बड़ी ख़राबी है। (65) ये लोग बस कियामत का इन्तिज़ार कर रहे हैं² कि वह उनपर अचानक आ पड़े और उनकी ख़बर भी न हो। (66) तमाम (दुनियावी) दोस्त उस दिन एक-दूसरे के दुश्मन हो जाएंगे सिवाय खुदा तआला से डरने वालों के।³ (67) ♦

(और मोमिनों को अल्लाह की तरफ़ से निदा होगी कि) ऐ मेरे बन्दो! तुमपर आज कोई ख़ौफ़ नहीं और न तुम ग़मगीन होगे। (68) (यानी वे बन्दे) जो हमारी आयतों पर ईमान लाए थे और (हमारे) फ़रमाँबरदार थे। (69) तुम और तुम्हारी (ईमान वाली) बीवियाँ खुशी-खुशी जन्नत में दाख़िल हो जाओ। (70) उनके पास सोने की रक़ाबियाँ और गिलास लाए जाएंगे (यानी जन्नत के नौउम्र लड़के-लड़कियाँ लाएँगे) और वहाँ वे चीज़ें मिलेंगी जिनको जी चाहेगा और जिनसे आँखों को लज़्ज़त मिलेगी, और तुम यहाँ हमेशा रहोगे। (71) और (उनसे कहा जाएगा कि) यह वह जन्नत है जिसके तुम मालिक बना दिए गए हो अपने (नेक) आमाल के बदले में। (72) (और) तुम्हारे लिए इसमें बहुत-से मेवे हैं जिनमें से खा रहे हो। (73) इसमें कोई शक़ नहीं कि नाफ़रमान (यानी काफ़िर) लोग दोज़ख़ के अज़ाब में हमेशा रहेंगे। (74) वह (अज़ाब) उनसे हल्का न किया जाएगा, और वे उसी में मायूस पड़े रहेंगे। (75) और हमने उनपर (ज़रा भी) जुल्म नहीं किया, लेकिन ये खुद ही ज़ालिम थे। (76) और पुकारेंगे कि ऐ मालिक! “यह दोज़ख़ के दारोगा का नाम है” तुम्हारा परवर्दिगार (हमको मौत देकर) हमारा काम ही तमाम कर दे, वह (फ़रिश्ता) जवाब देगा कि तुम हमेशा इसी हाल में रहोगे। (77) हमने सच्चा दीन तुम्हारे पास पहुँचाया लेकिन तुममें अक्सर आदमी सच्चे दीन से नफ़रत रखते हैं। (78) हाँ, क्या उन्होंने कोई इन्तिज़ाम दुरुस्त किया है, सो हमने भी एक इन्तिज़ाम दुरुस्त किया है।⁴ (79) हाँ, क्या उन लोगों का यह ख़्याल है कि हम उनकी चुपकी-चुपकी बातों को और उनके मशिवरों को नहीं सुनते,⁵ हम ज़रूर सुनते हैं। और हमारे फ़रिश्ते उनके पास हैं वे भी लिखते हैं। (80) आप कहिए अगर खुदा-ए-रहमान के औलाद हो तो सबसे पहले उसकी इबादत करने वाला मैं हूँ।⁶ (81) आसमानों और ज़मीन का मालिक जो कि अर्श का भी मालिक है, उन बातों से पाक है जो ये (मुशिरक) लोग बयान कर रहे

1. यानी तौहीद के खिलाफ़ तरह-तरह के मज़ाहिब ईजाद कर लिए।
2. इन्तिज़ार से बावजूद इनकार के मज़ाज़न यह मुराद है कि उनका दलील को न मानना उस शख्स की हालत के जैसा है जैसे कोई देखने का मुन्तज़िर हो कि उस वक्त मानूँगा।
3. यानी ईमान वालों के।
4. ज़ाहिर है कि खुदाई इन्तिज़ाम के सामने उनका इन्तिज़ाम नहीं चल सकता। चुनौचे आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम महफूज़ रहे और वे लोग नाकाम, और आख़िरकार बद्र की लड़ाई में हलाक हुए।
5. दो में गुफ्तगू होना “सिर” (यानी चुपके-चुपके बातें करना) है और दो से ज़्यादा में “नज्वा” (यानी मशिवरा करना) है।
6. मतलब यह कि मुझको तुम्हारी तरह हक़ बात के मानने से इनकार नहीं, तुम अगर साबित कर दो तो सबसे पहले उसको मैं मानूँ। मगर चूँकि यह बात बिल्कुल बातिल है इसलिए मैं यह न मानूँगा और न इबादत करूँगा।

9

हैं। (82) तो आप उनको इसी धंधे और तफरीह में रहने दीजिए¹ यहाँ तक कि उनको अपने उस दिन से साबका पड़े जिसका उनसे वायदा किया जाता है। (83) और वही ज्ञात है जो आसमान में भी इबादत के काबिल है और ज़मीन में भी काबिले इबादत है। और वही बड़ी हिक्मत वाला और बड़े इल्म वाला है।² (84) और वह ज्ञात बड़ी आलीशान है जिसके लिए आसमान और ज़मीन की और जो मख्लूक उसके दरमियान में है उसकी बादशाही साबित है, और उसको क़ियामत की (भी) ख़बर है। और तुम सब उसी के पास लौटकर जाओगे। (85) और खुदा के सिवा जिन माबूदों को ये लोग पुकारा करते हैं वे सिफ़ारिश (तक) का इख़्तियार न रखेंगे, हाँ! जिन लोगों ने हक़ बात (यानी ईमान के कलिमे) का इकरार किया था और वे तस्दीक़ भी किया करते थे।³ (86) और अगर आप उनसे पूछें कि उनको किसने पैदा किया है तो यही कहेंगे कि अल्लाह ने, सो ये लोग किधर उल्टे जा रहे हैं। (87) और उसको रसूल के इस कहने की भी ख़बर है कि ऐ मेरे रब! ये ऐसे लोग हैं कि ईमान नहीं लाते। (88) तो आप उनसे बेरुख़ रहिए⁴ और यूँ कह दीजिए कि तुमको सलाम करता हूँ, सो उनको अभी मालमू हो जाएगा। (89) ♦

44 सूर: दुखान 64

सूर: दुखान मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 59 आयतें और 3 रुकूअ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

हा-मीम् (1) कसम है इस वाज़ेह किताब की (2) कि हमने इसको (लौहे-महफूज़ से दुनिया के आसमान पर) एक बरकत वाली रात (यानी शबे-क़द्र) में उतारा है, हम आगाह करने वाले थे।⁵ (3) उस रात में हर हिक्मत वाला मामला तय किया जाता है।⁶ (4) हमारी पेशी से हुक्म होकर, हम आपको पैग़म्बर बनाने वाले थे (5) रहमत की वजह से, जो आपके रब की तरफ़ से होती है। बेशक़ वह बड़ा सुनने वाला, बड़ा जानने वाला है। (6) जो कि मालिक है आसमानों और ज़मीन का और जो (मख्लूक) उन दोनों के दरमियान है उसका भी। अगर तुम यकीन लाना चाहो। (7) उसके सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं, वही जान डालता है और वही जान निकालता है, वह तुम्हारा भी रब है और तुम्हारे अगले बाप-दादाओं का भी रब है। (8) बल्कि वे शक़ में हैं, खेल में लगे हुए हैं।⁷ (9) सो आप (उनके लिए) उस दिन का इन्तिज़ार कीजिए कि आसमान की तरफ़ एक नज़र आने वाला धुआँ पैदा हो (10) जो उन सब लोगों पर आम हो “यानी फैल” जाए, यह (भी) एक दर्दनाक सज़ा है।⁸ (11) ऐ हमारे रब! हमसे इस मुसीबत को दूर कर दीजिए हम ज़रूर

1. रहने देने का मतलब यह नहीं कि तब्तीग़ न कीजिए, बल्कि यह मतलब है कि उनकी मुखा़लफ़त की तरफ़ ध्यान न कीजिए और उनके ईमान न लाने से ग़मगीन न होइए।
2. और कोई इल्म व हिक्मत में उसका शरीक़ नहीं। पस माबूद होना भी उसी के साथ ख़ास है।
3. यानी अलबत्ता वे अल्लाह की इजाज़त से ईमान वालों की सिफ़ारिश कर सकेंगे, मगर इससे काफ़िरों को क्या फ़ायदा?
4. यानी उनके ईमान का एहतिमाम और उसकी उम्मीद न कीजिए। क्योंकि जब उनका यह अन्जाम मुक़दर है तो ये क्या ईमान लाएँगे।
5. यानी हमको मन्ज़ूर हुआ कि इन नुक़सानों से बचा लेने के लिए भलाई और बुराई की इत्तिला कर दें। कुरआन के नाज़िल करने का यह सबब हुआ।
6. यानी साल भर के मामलात में कि सब ही हिक्मत से भरे हैं, जिस तौर पर अल्लाह तआला को करना मन्ज़ूर है, उस तौर को मुतैयन करके और उनकी इत्तिला कारकुन फ़रिशतों को करके उनके सुपुर्द कर दिए जाते हैं। (शेष तफ़सीर पृष्ठ 896 पर)

ईमान ले आएँगे। (12) उनको (इससे) कब नसीहत होती है, हालाँकि (इससे पहले) उनके पास जाहिर शान का पैगम्बर आया। (13) फिर भी ये लोग उससे सरकशी करते रहे और यही कहते रहे कि (किसी दूसरे बशर का) सिखाया हुआ है, दीवाना है। (14) हम किसी कद्र अज़ाब को हटा देंगे तुम फिर अपनी उसी हालत पर आ जाओगे। (15) जिस दिन हम बड़ी सख्त पकड़ पकड़ेंगे (उस दिन) हम (पूरा) बदला ले लेंगे। (16) और हमने उनसे पहले फिरऔन की कौम को आजमाया था और (वह आजमाइश यह थी कि) उनके पास एक मुअज़्ज़ज़ “यानी सम्मानित” पैगम्बर आए थे। (17) कि उन अल्लाह के बन्दों (यानी बनी इस्राईल) को मेरे हवाले कर दो,² मैं तुम्हारी तरफ़ खुदा का रसूल (होकर आया) हूँ, दियानतदार हूँ। (18) और यह (भी फरमाया) कि तुम खुदा से सरकशी मत करो, मैं तुम्हारे सामने (अपनी नुबुव्वत की) एक वाज़ेह दलील पेश करता हूँ।³ (19) और मैं अपने परवर्दिगार और तुम्हारे रब की पनाह लेता हूँ इससे कि तुम लोग मुझको पत्थर (या पत्थर के अलावा किसी चीज़) से कल्ल करो। (20) और अगर तुम मुझपर ईमान नहीं लाते तो मुझसे अलग ही रहो। (21) तब मूसा ने अपने रब से दुआ की कि ये बड़े सख्त मुजरिम लोग हैं। ▲ (22) तो अब मेरे बन्दों को तुम रात-ही-रात में लेकर चले जाओ, तुम लोगों का पीछा होगा। (23) और तुम उस दरिया को सुकून की हालत में छोड़ देना, उनका सारा लश्कर डुबो दिया जाएगा। (24) वे लोग कितने ही बाग़ और चश्मे (यानी नहरें) (25) और खेतियाँ और उम्दा मकानात (26) और आराम के सामान जिसमें वे खुश रहा करते थे, छोड़ गए। (27) (यह किस्सा) इसी तरह हुआ और हमने एक दूसरी कौम को उनका मालिक बना दिया।⁴ (28) सो न तो उनपर आसमान और ज़मीन को रोना आया⁵ और न उनको मोहलत दी गई।⁶ (29) ♦

और हमने बनी इस्राईल को सख्त ज़िल्लत के अज़ाब यानी फिरऔन (के जुल्म व सितम) से नजात दी। (30) वाकई वह बड़ा सरकश (और बन्दगी की) हद से निकल जाने वालों में से था। (31) और (इसके अलावा) हमने बनी इस्राईल को अपने इल्म की रू से (बाज़ बातों में) तमाम दुनिया-जहान वालों पर बरतरी दी। (32) और हमने उनको ऐसी निशानियाँ दीं जिनमें खुला इनाम था।⁷ (33) ये लोग कहते हैं कि (34) अख़ीर हालत बस यही हमारा दुनिया का मरना है, और हम दोबारा ज़िन्दा न होंगे।⁸ (35) सो ऐ मुसलमानो! अगर तुम सच्चे हो तो हमारे बाप-दादाओं को (ज़िन्दा करके) सामने लाओ। (36) ये लोग (कुव्वत और शौकत में) ज़्यादा बढ़े हुए हैं या तुब्बा (यमन के बादशाह) की कौम? और जो कौमों उनसे पहले गुज़र चुकी हैं, सो हमने उनको भी हलाक कर डाला, वे नाफरमान थे।⁹ (37) और हमने आसमानों और ज़मीन को और जो

(पृष्ठ 894 का शेष) चूँकि वह रात ऐसी है और कुरआन सबसे ज़्यादा हिक्मत वाला मामला था, इसलिए यह भी उसी रात में उतरा।

7. आख़िरत की फ़िक्र नहीं जो हक़ को तलब करें और उसमें ग़ौर से काम लें।

8. मुराद इससे गल्ले की कमी (अकाल) है जिसमें मक्का वाले मुब्तला हुए थे। जिसका असली सबब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बद्-दुआ थी। जब ये लोग दुश्मनी में हद से ज़्यादा बढ़ गए थे। और यह बद्-दुआ एक बार मक्का में हुई थी और एक बार मदीना में।

1. यानी मूसा अलैहिस्सलाम।

फ़ायदा: पैगम्बर के आने से आजमाइश यह होती है कि कौन ईमान लाता है और कौन नहीं लाता।

2. और उनसे अलग और बेदख़ल हो जाओ कि मैं जहाँ और जिस तरह मुनासिब हो उनको आज़ाद करके रखूँ।

3. मुराद इससे ‘असा’ (लाठी) और ‘यदे बैज़ा’ (सफ़ेद हाथ) है।

4. मुराद बनी इस्राईल हैं।

5. यह नापसन्दीदा और नफरत के काबिल होने का असर है।

6. यानी अगर थोड़ा और जीते तो दोज़ख़ के अज़ाब से और बचे रहते, और यह मोहलत न मिलना असर है गुज़ब के हक़दार होने का।

7. यानी वे उमूर दोनों सिफ़्तों के जामे थे, यानी नेमत होना और कुदरत की दलील होना। (शेष तफ़सीर पृष्ठ 898 पर)

कुछ उनके दरमियान में है उसको इस तौर पर नहीं बनाया कि हम बेकार काम करने वाले हों। (38) (बल्कि) हमने उन दोनों के किसी हिक्मत ही से बनाया है, लेकिन अक्सर लोग नहीं समझते। (39) बेशक फैसले का दिन (यानी कियामत का दिन) उन सबका मुकर्ररा वक्त्त है। (40) जिस दिन कोई ताल्लुक और रिश्ते वाला किसी ताल्लुक वाले के ज़रा काम न आएगा, और न उनकी कुछ हिमायत की जाएगी। (41) हाँ, मगर जिसपर अल्लाह तआला रहम फरमाए, वह (अल्लाह) ज़बरदस्त है, मेहरबान है। (42) ♦

बेशक जक्कूम का पेड़ (43) बड़े मुजरिम (यानी काफिर) का खाना होगा। (44) जो (बुरी सूरत होने में) तेल की तलछट जैसा होगा (और) वह पेट में ऐसा खौलेगा (45) जैसा तेज़ गर्म पानी खौलता है। (46) (और फरिश्तों को हुक्म होगा कि) उसको पकड़ो, फिर घसीटते हुए दोज़ख के बीचों-बीच तक ले जाओ। (47) फिर उसके सर के ऊपर तकलीफ़ देने वाला गर्म पानी छोड़ दो। (48) ले चख तू बड़ा इज़्ज़त वाला और रुतबे वाला है। (49) यह वही चीज़ है जिसमें तुम शक किया करते थे। (50) बेशक खुदा से डरने वाले अमन (चैन) की जगह में होंगे। (51) यानी बाग़ों में और नहरों में। (52) (और) वे लिबास पहनेंगे बारीक और मोटा रेशम का, आमने-सामने बैठे होंगे। (53) (और) यह बात इसी तरह है, और हम उनका गोरी-गोरी, बड़ी-बड़ी आँखों वालियों से निकाह करेंगे। (54) (और) वहाँ इत्मीनान से हर किस्म के मेवे मँगाते होंगे। (55) (और) वहाँ वे सिवाय उस मौत के जो दुनिया में आ चुकी थी और मौत का ज़ायका भी न चखेंगे, (यानी मरेंगे नहीं) और अल्लाह उनको दोज़ख से बचा लेगा। (56) यह सब कुछ आपके रब के फ़ज़ल से होगा, बड़ी कामयाबी यही है। (57) सो हमने इस कुरआन को आपकी ज़बान (अरबी) में आसान कर दिया है ताकि ये लोग नसीहत कबूल करें। (58) तो (अगर ये लोग न मानें तो) आप मुन्तज़िर “यानी इन्तिज़ार करने वाले” रहिए ये लोग भी मुन्तज़िर हैं। (59) ♦

45 सूर: जासिय: 65

सूर: जासिय: मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 37 आयतें और 4 रुकूअ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

हा-मीम् (1) यह नाज़िल की हुई किताब है अल्लाह ग़ालिब, हिक्मत वाले की तरफ़ से। (2) आसमानों

(पृष्ठ 396 का शेष) फिर बाज़ उनमें महसूस की जाने वाली नेमतें थीं और बाज़ उनमें मअूनवी (यानी अन्दुरुनी और बातिनी) नेमतें थीं।

8. मतलब यह कि आखिरी हालत वह आखिरत की ज़िन्दगी नहीं, बल्कि यह दुनिया की मौत ही आखिरी हालत है।

9. मतलब यह कि वे लोग उनसे ज़्यादा सख्त और ताक़तवर थे मगर हमने उनको भी हलाक कर डाला। सो ये लोग अगर बाज़ न आएँगे तो ये क्योंकर अपने को बचा लेंगे।

1. वह काफ़िरो से इन्तिक़ाम लेगा और मुसलमानों पर रहमत फ़रमाएगा।

2. यानी हैंसी उड़ाने के तौर पर कहा जाएगा कि यह तेरा सम्मान हो रहा है जैसा कि दुनिया में तू अपने को बड़ा इज़्ज़तदार और सम्मान वाला समझकर हमारे अहक़ाम से शर्म किया करता था।

3. यानी आप तब्लीग़ से ज़्यादा फ़िक्क में न पड़िए, न मुख़ालफ़त पर रंज कीजिए। उनका मामला खुदा तआला के सुपुर्द कीजिए, वह खुद समझ लेगा।

4. इस सूर: का खुलासा तीन मज़मून हैं- तौहीद, नुबुव्वत और आखिरत। और दूसरे बाज़ मज़ामीन इन्हीं के ताल्लुक से आ गए हैं।

और ज़मीन में ईमान वालों के (दलील पकड़ने के) लिए बहुत-सी दलीलें हैं। (3) और (इसी तरह) खुद तुम्हारे और उन जानवरों के पैदा करने में जिनको ज़मीन में फैला रखा है, दलीलें हैं उन लोगों के लिए जो यकीन रखते हैं। (4) और (इसी तरह) एक के बाद एक रात और दिन के आने जाने में, और इस रिज़्क (के माद्दे) में जिसको अल्लाह तआला ने आसमान से उतारा,¹ फिर उस (बारिश) से ज़मीन को तरोताज़ा किया उसके सूख जाने के बाद। और (इसी तरह) हवाओं के बदलने में दलीलें हैं उन लोगों के लिए जो (सही-सालिम) अक्ल रखते हैं। (5) ये अल्लाह तआला की आयतें हैं जो सही-सही तौर पर हम आपको पढ़कर सुनाते हैं, तो फिर अल्लाह और उसकी आयतों के बाद और कौन-सी बात पर ये लोग ईमान लाएंगे। (6) बड़ी ख़राबी होगी हर ऐसे शख्स के लिए जो झूठा हो, नाफरमान हो। (7) जो खुदा की आयतों को सुनता है जबकि उसके रू-ब-रू पढ़ी जाती हैं (और) फिर भी वह तकब्बुर करता हुआ (अपने कुफ़्र पर) इस तरह अड़ा रहता है जैसे उसने उनको सुना ही नहीं, सो ऐसे शख्स को एक दर्दनाक अज़ाब की ख़बर सुना दीजिए। (8) और जब वह हमारी आयतों में से किसी आयत की ख़बर पाता है तो उसकी हँसी उड़ाता है, ऐसे लोगों के लिए (आखिरत में) ज़िल्लत का अज़ाब है।² (9) उनके आगे जहन्नम (आ रही) है, और (उस वक़्त) न तो उनके वे चीज़ें ज़रा काम आएंगी जो (दुनिया में) कमा गए थे और न वे जिनको अल्लाह के सिवा कारसाज़ (और माबूद) बना रखा था, और उनके लिए बड़ा अज़ाब होगा। (10) यह कुरआन पूरा-का-पूरा हिदायत है। और जो लोग अपने रब की (इन) आयतों को नहीं मानते उनके लिए सख़्ती का दर्दनाक अज़ाब होगा। (11) ♦

अल्लाह ही है जिसने तुम्हारे लिए दरिया को ताबे बनाया ताकि उसके हुक्म से उसमें कश्तियाँ चलेँ और ताकि तुम उसकी रोज़ी तलाश करो, और ताकि तुम शुक्र करो। (12) और (इसी तरह) जितनी चीज़ें आसमानों में हैं और जितनी चीज़ें ज़मीन में हैं उन सबको अपनी तरफ़ से ताबे बनाया, बेशक इन बातों में उन लोगों के लिए दलीलें हैं जो ग़ौर करते रहते हैं। (13) आप ईमान वालों से फ़रमा दीजिए कि उन लोगों से दरगुज़र करें जो खुदा के मामलात का यकीन नहीं रखते,³ ताकि अल्लाह तआला एक क़ौम को (यानी मुसलमानों को) उनके अमल का सिला दे। (14) जो शख्स नेक काम करता है सो अपने ज़ाती नफ़े के लिए, और जो शख्स बुरा काम करता है उसका वबाल उसी पर पड़ता है, फिर तुमको अपने परवर्दिगार के पास लौटकर जाना है।⁴ (15) और हमने बनी इस्राईल को (आसमानी) किताब और हिकमत (यानी अहकाम का इल्म) और नुबुव्वत दी थी, और हमने उनको अच्छी-अच्छी चीज़ें खाने को दी थीं, और हमने उनको दुनिया

1. मुराद बारिश है।

2. मतलब यह कि जिन आयतों को तिलावत में सुनता है उनको भी झुठलाता है, और जिन आयतों की वैसे ही ख़बर सुन लेता है उनको भी झुठलाता है। ग़रज़ आयतों के झुठलाने में बहुत बढ़ा हुआ है।

3. यानी आखिरत का इनकार करने वाले हैं।

4. पस वहाँ तुमको अज़लाफ़ और नेक आमाal का अच्छा बदला और उन तुम्हारे मुख़ालिफ़ों को उनके कुफ़्र और गुनाहों पर बुरा बदला दिया जाएगा। सो तुमको यहाँ दरगुज़र करना ही मुनासिब है।

फ़ायदा: और इससे जिहाद की नफ़ी नहीं होती, क्योंकि यहाँ उस बदले के लेने से रोका है जिससे असल मक़सद अल्लाह का कलिमा बुलन्द करना न हो, बल्कि सिर्फ़ अपने गुस्से को शांत करना हो। और जिहाद में असल मक़सद अल्लाह के कलिमे को बुलन्द करना है, अगरचे ताबे होकर गुस्सा भी शांत हो जाए।

जहान वालों पर बरतरी दी। (16) और हमने उनको दीन के बारे में खुली-खुली दलीलें दीं,¹ सो उन्होंने इल्म ही के आने के बाद आपस में इख़िलाफ़ किया, आपस की जिद्दा-जिद्दी की वजह से। आपका रब उनके दरमियान क़ियामत के दिन उन मामलों में (अमली) फैसला करेगा जिनमें ये आपस में इख़िलाफ़ किया करते थे।² (17) फिर हमने आपको दीन के एक ख़ास तरीके पर कर दिया, सो आप उसी तरीके पर चले जाइए और इन जाहिलों की ख़्वाहिशों पर न चलिए। (18) ये लोग खुदा के मुक़ाबले में आपके ज़रा भी काम नहीं आ सकते, और ज़ालिम लोग एक-दूसरे के दोस्त होते हैं, और अल्लाह परहेज़गार लोगों का दोस्त है। (19) यह कुरआन आम लोगों के लिए समझदारियों का सबब और हिदायत का ज़रिया हैं, और यकीन (यानी ईमान) लाने वालों के लिए बड़ी रहमत (का सबब) है। (20) ये लोग जो बुरे-बुरे काम करते हैं, क्या ये ख़याल करते हैं कि हम उनको उन लोगों के बराबर रखेंगे जिन्होंने ईमान और नेक अमल इख़्तियार किया? कि उन सबका जीना और मरना एकसाँ हो जाए? ये बुरा हुक्म लगाते हैं।³ (21) ♦

और अल्लाह तआला ने आसमानों और ज़मीन को हिक्मत के साथ पैदा किया, और ताकि हर शख्स को उसके किए का बदला दिया जाए, और उनपर ज़रा भी जुल्म न किया जाए। (22) सो क्या आपने उस शख्स की हालत भी देखी जिसने अपना खुदा अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिश को बना रखा है,⁴ और खुदा तआला ने उसको बावजूद समझ-बूझ के गुमराह कर दिया है।⁵ और खुदा तआला ने उसके कान और दिल पर मुहर लगा दी है और उसकी आँख पर पर्दा डाल दिया है,⁶ सो ऐसे शख्स को खुदा के (गुमराह कर देने के) बाद कौन हिदायत करे, क्या तुम फिर भी नहीं समझते? (23) और ये (मरने के बाद ज़िन्दा होने के इनकारी) लोग यूँ कहते हैं कि सिवाय इस दुनिया की ज़िन्दगी के और कोई हमारी ज़िन्दगी नहीं है, हम मरते हैं और जीते हैं, और हमको सिर्फ़ ज़माने (की गर्दिश) से मौत आ जाती है।⁷ और उन लोगों के पास इसपर कोई दलील नहीं, सिर्फ़ अटकल से हॉक रहे हैं। (24) और (इस बारे में) जिस वक़्त उनके सामने हमारी खुली-खुली आयतें पढ़ी जाती हैं तो उनका (इसपर) इसके अलावा और कोई जवाब नहीं होता, कहते हैं कि हमारे बाप-दादाओं को (ज़िन्दा करके) सामने ले आओ अगर तुम सच्चे हो। (25) आप यूँ कह दीजिए कि अल्लाह तआला

1. गरज़ सब ही तरह की नेमतें उनको दीं।

2. इस मज़मून से दो चीज़ें समझ में आ गईं- एक बनी इस्राईल को किताब, अहक़ाम और नुबुव्वत मिलने से आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नुबुव्वत की ताईद, दूसरे आपको तसल्ली देना कि बनी इस्राईल को जो इख़िलाफ़ की वजह पेश आई थी वही आपकी क़ौम को आपके साथ मुख़ालफ़त करने में पेश आई है, यानी दुनिया की मुहब्बत और हसद और नफ़सानियत। यह नहीं कि आपकी दलीलों या अहक़ाम को वाज़ेह करने में कुछ कमी हो। पस आप गुम न करें और यह ज़िक़शुदा किस्सा याद कर लिया करें कि बनी इस्राईल के क्या-क्या मामलात हुए।

3. मतलब यह कि आख़िरत के इनकार से यह लाज़िम आता है कि फ़रमाँबरदारों को कहीं इताअत का फल न मिले, और मुख़ालिफ़ों पर कभी मुख़ालफ़त का वबाल न पड़े। पस आख़िरत के वजूद की यह हिक्मत हुई कि हर एक को उसके आमाल के फल मिल जाएँ।

4. यानी इल्म और अमल के एतिबार से जो जी में आता है उसकी पैरवी करता है।

5. यानी हक़ को सुना और समझा भी मगर नफ़्स की पैरवी करने से गुमराह हो गया।

6. यानी नफ़्स की पैरवी की बदौलत हक़ को क़बूल करने की सलाहियत बहुत ही कमज़ोर हो गई।

(शेष तफ़सीर पृष्ठ 904 पर)

तुमको ज़िन्दा रखता है, फिर (जब चाहेगा) तुमको मौत देगा, फिर क़ियामत के दिन जिस (के आने) में ज़रा शक नहीं तुमको जमा करेगा, लेकिन अक्सर लोग नहीं समझते। (26) ♦

और अल्लाह ही की बादशाहत है आसमानों में और ज़मीन में,¹ और जिस दिन क़ियामत कायम होगी उस दिन अहले बातिल घाटे में पड़ेंगे। (27) और (उस दिन) आप हर फ़िके को देखेंगे कि (डर के मारे) घुटनों के बल पड़ेंगे। हर ग़िरोह अपने नामा-ए-आमाल (के हिसाब) की तरफ़ बुलाया जाएगा। आज तुमको तुम्हारे किए का बदला मिलेगा। (28) (और कहा जाएगा कि) यह (नामा-ए-आमाल) हमारा दफ़्तर है जो तुम्हारे मुकाबले में ठीक-ठीक बोल रहा है,² और हम (दुनिया में) तुम्हारे आमाल को (फ़रिश्तों से) लिखवाते जाते थे।³ (29) सो जो लोग ईमान लाए थे और उन्होंने अच्छे काम किए थे तो उनको उनका रब अपनी रहमत में दाख़िल करेगा और यह खुली कामयाबी है। (30) और जो लोग काफ़िर थे (उनसे कहा जाएगा कि) क्या मेरी आयतें तुमको पढ़-पढ़कर नहीं सुनाई जाती थीं, सो तुमने (उनको कबूल करने से) तकबुर किया था और तुम (इस वजह से) बड़े मुजरिम थे। (31) और जब (तुमसे) कहा जाता था कि अल्लाह का वायदा हक़ है⁴ और क़ियामत में कोई शक नहीं है, तो तुम कहा करते थे कि हम नहीं जानते कि क़ियामत क्या चीज़ है, सिर्फ़ एक ख़्याल-सा तो हमको भी होता है और हमको यकीन नहीं। (32) और (उस वक़्त) उनको अपने तमाम बुरे आमाल ज़ाहिर हो जाएँगे और जिस (अज़ाब) के साथ वे मज़ाक़ किया करते थे वह उनको आ घेरेंगे। (33) और (उनसे) कहा जाएगा कि आज हम तुमको भुलाए देते हैं⁵ जैसा कि तुमने अपने इस दिन के आने को भुला रखा था, और (आज) तुम्हारा ठिकाना जहन्नम है और कोई तुम्हारा मददगार नहीं। (34) यह (सज़ा) इस वजह से है कि तुमने अल्लाह की आयतों की हँसी उड़ाई थी और तुमको दुनियावी ज़िन्दगी ने धोखे में डाल रखा था। सो आज न तो ये लोग दोज़ख़ से निकाले जाएँगे और न उनसे खुदा (की नाराज़गी) की तलाफ़ी चाही जाएगी।⁶ (35) सो तमाम ख़ूबियाँ अल्लाह ही के लिए हैं जो परवर्दिगार है आसमानों का और परवर्दिगार है ज़मीन का, परवर्दिगार तमाम आलम का। (36) और उसी को बढ़ाई है आसमानों में और ज़मीन में, और वही ज़बरदस्त, हिक़मत वाला है। (37) ♦

(पृष्ठ 902 का शेष)

7. मतलब यह कि ज़माने के गुज़रने से जिस्मानी कुव्वतें तहलील होती (यानी धुल जाती) हैं और इन तबई असबाब से मौत आ जाती है। और इसी तरह ज़िन्दगी का सबब भी तबई चीज़ें हैं। पस जब मौत और ज़िन्दगी तबई असबाब के तकाज़े की बिना पर है और दूसरी ज़िन्दगी को तबई असबाब नहीं चाहते तो दूसरी ज़िन्दगी न होगी।

1. वह जो चाहे तसर्फ़ करे।
2. यानी तुम्हारे आमाल को ज़ाहिर कर रहा है।
3. और यह उन्हीं का मजमूआ है।
4. यानी मरने के बाद ज़िन्दा होने और आमाल का बदला दिए जाने के वायदे का।
5. यानी रहमत से महरूम किए देते हैं, जिसको भुलाना मज़ाज़न कह दिया है।
6. यानी इसका मौक़ा न दिया जाएगा कि तौबा करके खुदा को राज़ी कर लें।

छब्बीसवाँ पार: हा-मीम

46 सूर: अहकाफ 66

सूर: अहकाफ मक्का में नाज़िल हुई, इसमें 35 आयतें और 4 रुकूअ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

हा-मीम (1) यह किताब अल्लाह ज़बरदस्त, हिक्मत वाले की तरफ से भेजी गई है। (2) हमने आसमान और ज़मीन को और जो उनके दरमियान में हैं उनको हिक्मत के साथ एक मुकर्ररा मुद्दत के लिए पैदा किया है।¹ और जो लोग काफ़िर हैं उनको जिस चीज़ से डराया जाता है² वे उससे बेरुखी करते हैं। (3) आप कहिए कि यह तो बतलाओ कि जिन चीज़ों की तुम अल्लाह तआला को छोड़कर इबादत करते हो, मुझको यह दिखलाओ कि उन्होंने कौन-सी ज़मीन पैदा की है या उनका आसमान में कुछ साझा है।³ मेरे पास कोई किताब जो इससे पहले की हो या कोई और मज़मून नक़लशुदा लाओ, अगर तुम सच्चे हो।⁴ (4) और उस शख्स से ज़्यादा गुमराह कौन होगा जो अल्लाह तआला को छोड़कर ऐसे माबूद को पुकारे जो क़ियामत तक भी उसका कहना न करे, और उनको उनके पुकारने की भी ख़बर न हो। (5) और जब सब आदमी जमा किए जाएँ तो वे उनके दुश्मन हो जाएँ और उनकी इबादत ही का इनकार कर बैठें।⁵ (6) और जब हमारी खुली-खुली आयतें उन लोगों के सामने पढ़ी जाती हैं तो ये मुन्किर लोग उस सच्ची बात के मुताल्लिक़ जबकि वह उन तक पहुँचती है, यूँ कहते हैं कि यह खुला जादू है। (7) क्या ये लोग यह कहते हैं कि इस शख्स ने इसको अपनी तरफ से बना लिया है? आप कह दीजिए कि अगर मैंने इसको अपनी तरफ से बनाया होगा तो फिर तुम लोग मुझको खुदा से ज़रा भी नहीं बचा सकते।⁶ वह ख़ूब जानता है, तुम कुरआन में जो-जो बातें बना रहे हो। मेरे और तुम्हारे दरमियान में वह काफ़ी ग़वाह है,⁷ और वह बड़ी मग़्फ़िरत वाला, रहमत वाला है। (8) आप कह दीजिए कि कोई मैं अनोखा रसूल तो हूँ नहीं, और मैं नहीं जानता कि मेरे साथ क्या किया जाएगा, और न (यह मालूम कि) तुम्हारे साथ (क्या किया जाएगा), मैं तो सिर्फ़ उसी की पैरवी करता हूँ जो मेरी तरफ़

1. वह हिक्मत तौहीद और बदला दिए जाने पर दलालत है, और वह मीयाद क़ियामत है।

2. जैसे यह कि तौहीद के इनकार पर तुमको क़ियामत में अज़ाब होगा।

3. यानी ज़ाहिर है कि तुम भी उनको पैदा करने वाला नहीं मानते जो कि माबूद होने के हक़दार होने की दलील हो सकती है, बल्कि मख़्लूक कहते हो जो माबूद बनने के हक़दार होने के मनाफ़ी है। पस अक्ली दलील तो मनफ़ी (नकारात्मक) हुई।

4. मतलब यह कि दलीले नक़ली के लिए यह ज़रूरी है कि जहाँ से नक़ल की गई है उसका पैरवी के काबिल होना साबित हो, और सनद उस तक लगातार और बराबर मौजूद हो, चाहे वह जिससे नक़ल किया गया है किसी नबी की किताब हो या उनका ज़बानी कौल हो, ज़ाहिर है कि ऐसी दलील कोई पेश नहीं कर सकता।

5. पस ऐसे माबूदों की इबादत करने से बढ़कर क्या ग़लती है कि इबादत का सबब और वजह एक भी नहीं और इबादत न करने के असबाब और कारण अनेक साबित हैं।

6. मतलब यह कि नुबुव्वत का झूठा दावा करने पर सज़ा का मुततब होना ऐसा लाज़िमी है कि कोई मेरा हामी व मददगार भी उसके ख़िलाफ़ करने पर कादिर नहीं।

7. यानी उसकी ख़बर रखता है।

वह्य के जरिए आता है, और मैं तो सिर्फ साफ-साफ डराने वाला हूँ। (9) आप यह कह दीजिए कि तुम मुझको यह बताओ कि अगर यह कुरआन अल्लाह की तरफ से हो और तुम इसके मुन्किर हो, और बनी इस्राईल में से कोई गवाह इस जैसी किताब पर गवाही देकर ईमान ले आए और तुम तकब्बुर ही में रहो, बेशक अल्लाह तआला बेइन्साफ लोगों को हिदायत नहीं किया करता। (10) ♦

और ये काफिर लोग ईमान वालों के बारे में यूँ कहते हैं कि अगर यह कुरआन कोई अच्छी चीज़ होता तो ये लोग उसकी तरफ हमसे आगे न बढ़ते,¹ और जब उन लोगों को कुरआन से हिदायत नसीब न हुई तो यह कहेंगे कि यह पुराना झूठ है। (11) और इससे पहले मूसा (अलैहिस्सलाम) की किताब जो राह दिखाने वाली और रहमत थी, और यह एक किताब है जो उसको सच्चा करती है, अरबी ज़बान में, ज़ालिमों के डराने के लिए और नेक लोगों को खुशख़बरी देने के लिए। (12) जिन लोगों ने कहा कि हमारा रब अल्लाह है,² फिर जमे रहे,³ उन लोगों पर कोई ख़ौफ़ नहीं और न वे ग़मगीन होंगे। (13) ये लोग जन्मती हैं जो उसमें हमेशा रहेंगे, उन कामों के बदले में जो वे करते थे। (14) और हमने इनसान को अपने माँ-बाप के साथ नेक सुलूक करने का हुक्म दिया है। उसकी माँ ने उसको बड़ी मशक्कत के साथ पेट में रखा और बड़ी मशक्कत के साथ उसको जन्म दिया और उसको पेट में रखना और उसका दूध छुड़ाना तीस महीने (में पूरा होता) है, यहाँ तक कि जब वह अपनी जवानी को पहुँच जाता है⁴ और चालीस साल को पहुँचता है तो कहता है कि ऐ मेरे परवर्दिगार! मुझको इसपर हमेशगी दीजिए कि मैं आपकी उन नेमतों का शुक्र किया करूँ जो आपने मुझको और मेरे माँ-बाप को अता फ़रमाई हैं। और मैं नेक काम करूँ जिससे आप खुश हों, और मेरी औलाद में भी मेरे लिए सलाहियत पैदाकर दीजिए, मैं आपकी जनाब में तौबा करता हूँ और मैं फ़रमाँबरदार हूँ।⁵ (15) ये वे लोग हैं कि हम उनके कामों को कबूल कर लेंगे और उनके गुनाहों से दरगुज़र करेंगे, इस तौर पर कि ये जन्नत वालों में से होंगे,⁶ उस सच्चे वायदे की वजह से जिसका उनसे वायदा किया जाता है। (16) और जिसने अपने माँ-बाप से कहा कि तुफ़ “यानी लानत” है तुमपर। क्या तुम मुझको यह वायदा (यानी ख़बर) देते हो कि मैं (कियामत में दोबारा ज़िन्दा होकर) क़ब्र से निकाला जाऊँगा? हालाँकि मुझसे पहले बहुत-सी उम्मतें गुज़र गईं। और वे दोनों अल्लाह से फ़रियाद कर रहे हैं कि अरे तेरा नास हो ईमान ले आ, बेशक

1. यानी हम लोग बड़े अक्लमन्द हैं और ये लोग कमअक्ल हैं, और हक़ बात को अक्लमन्द पहले कबूल करता है। तो अगर यह हक़ होता तो हम पहले मानते, जब हमने नहीं माना तो यह हक़ नहीं। ये लोग बेअक्ली से उधर दौड़ने लगे हैं।
2. यानी तौहीद को रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तालीम के मुताबिक़ कबूल किया।
3. यानी उसको छोड़ा नहीं।
4. यानी बालिग़ होने की उम्र को।
5. हासिल मक़ाम का यह हुआ कि जो शख्स नेक होता है वह अल्लाह का हक़ भी अदा करता है, और माँ-बाप के हुक्क भी, जो कि बन्दों के हुक्क में से हैं, अदा करता है।
6. यहाँ यह न समझा जाए कि बग़ैर तौबा के गुनाह माफ़ नहीं होते, क्योंकि गुनाह महज़ फ़ज़ल से भी माफ़ हो जाते हैं।

अल्लाह तआला का वायदा सच्चा है, तो यह कहता है कि ये बे-सन्द बातें अगलों से नकल होती चली आ रही हैं।¹ (17) ये वे लोग हैं कि उनके हक में भी उन लोगों के साथ अल्लाह का कौल पूरा होकर रहा जो उनसे पहले ज़िन्न और इनसान गुज़र चुके हैं, बेशक ये घाटे में रहे। (18) और हर एक के लिए उनके आमाल की वजह से अलग-अलग दर्जे मिलेंगे, और ताकि अल्लाह तआला सबको उनके आमाल पूरे कर दे और उनपर जुल्म न होगा। (19) और जिस दिन काफ़िर लोग आग के सामने लाए जाएंगे कि तुम अपनी लज़्ज़त की चीज़ें अपनी दुनियावी ज़िन्दगी में हासिल कर चुके और उनको ख़ूब बरत चुके, सो आज तुमको ज़िल्लत की सज़ा दी जाएगी, इस वजह से कि तुम दुनिया में नाहक तकब्बुर किया करते थे।² और इस वजह से कि तुम नाफ़रमानियाँ किया करते थे।³ (20) ♦

और आप कौमे आद के भाई का ज़िक्र कीजिए जबकि उन्होंने अपनी कौम को जो कि ऐसे मक़ाम पर रहते थे कि वहाँ रैग के लम्बे झुके हुए तूदे थे,⁴ इसपर डराया कि तुम खुदा के सिवा किसी की इबादत मत करो। और उनसे पहले और उनसे पीछे बहुत-से डराने वाले (पैग़म्बर अब तक) गुज़र चुके हैं, मुझको तुमपर एक बड़े दिन के अज़ाब का अन्देशा है। (21) वे कहने लगे, क्या तुम हमारे पास इस इरादे से आए हो कि हमको हमारे माबूदों से फेर दो? अगर तुम सच्चे हो तो जिसका तुम हमसे वायदा करते हो उसको हमपर ला दो। (22) उन्होंने फ़रमाया कि पूरा इल्म तो खुदा ही को है, और मुझको तो जो पैग़ाम देकर भेजा गया है मैं तुमको पहुँचा देता हूँ, लेकिन मैं तुमको देखता हूँ कि तुम लोग ख़ालिस जहालत की बातें करते हो।⁵ (23) सो उन लोगों ने जब उस बादल को अपनी वादियों के मुकाबिल आता देखा तो कहने लगे कि यह तो बादल है जो हमपर बरसेगा, नहीं-नहीं बल्कि यह वही है जिसकी तुम जल्दी मचाते थे। एक आँधी है जिसमें दर्दनाक अज़ाब है। (24) वह हर चीज़ को अपने परवर्दिगार के हुक्म से हलाक कर देगी। चुनाँचे वे ऐसे हो गए कि

1. मतलब यह कि यह ऐसा बदबख़्त है कि नुफ़ और नाफ़रमानी दोनों का मुज़्रिम है, और नाफ़रमानी भी इस दर्जे की कि माँ-बाप की मुख़ालफ़त के साथ उनसे कलाम में बदतमीज़ी और सख़्ती व बद-अख़्लाकी करता है।
2. “दुनिया में” की कैद इस इशारे के लिए है कि ज़मीन पर रहकर तकब्बुर करना और भी ज़्यादा बुरा है, और “नाहक” की कैद हकीकत के मुताबिक है, क्योंकि मख़्लूक से तकब्बुर का सादिर होना हमेशा नाहक ही होगा। और तकब्बुर करने से मुराद ईमान से तकब्बुर करना है कि हमेशगी का अज़ाब उसी की ख़ासियत में से है।
3. इसमें तमाम कुफ़ियात और बुराइयाँ और जुल्म के तरीक़े दाख़िल हो गए।
4. उन लोगों का ठिकाना अक्सर के कौल के मुताबिक़ यमन के शहर में था, और वहाँ रैग के तूदे थे। अरब के लोग तिजारात के लिए अक्सर सफ़र किया करते थे तो उन जगहों से गुज़रते थे और आदमियों और मवेशियों का उस हवा में उड़े-उड़े फिरना दुर्गन्ध मन्सूर में इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया गया है। और वादी कहते हैं ज़मीन के निचले हिस्से को जहाँ पानी जमा हो जाता है, इसी वजह से कभी इसका तर्जुमा मैदान से किया जाता है और कभी नदी नाले से।
5. इसलिए कि एक तो तौहीद को कबूल नहीं करते हो, फिर अपने मुँह से बला माँगते हो, फिर मुझसे उसकी फ़रमाइश करते हो।

सिवाय उनके मकानों के और कुछ न दिखाई देता था। हम मुजरिमों को यूँ ही सज़ा दिया करते हैं। (25) और हमने उन लोगों को उन बातों में कुदरत दी थी कि तुमको उन बातों में कुदरत नहीं दी, और हमने उनको कान और आँख और दिल दिए थे, सो चूँकि वे लोग अल्लाह तआला की आयतों का इनकार करते थे इसलिए न उनके कान उनके ज़रा काम आए और न उनकी आँखें और न उनके दिल, और जिसकी वे हँसी किया करते थे उसी ने उनको आ घेरा।¹ (26) ♦

और हमने तुम्हारे आस-पास की और बस्तियाँ भी ग़ारत की हैं,² और हमने बार-बार अपनी निशानियाँ बतला दी थीं ताकि वे बाज़ आएँ। (27) सो अल्लाह तआला के सिवा जिन-जिन चीज़ों को उन्होंने अल्लाह की नज़दीकी हासिल करने को अपना माबूद बना रखा है, उन्होंने उनकी मदद क्यों न की? बल्कि वे सब उनसे ग़ायब हो गए और वह महज़ उनकी तराशी हुई और घड़ी हुई बात है। (28) और जबकि हम जिन्नात की एक जमाअत को आपकी तरफ़ ले आए जो कुरआन सुनने लगे थे। गरज़ जब वे कुरआन के पास आ पहुँचे, कहने लगे कि चुप रहो। फिर जब कुरआन पढ़ा जा चुका तो वे लोग अपनी कौम के पास ख़बर पहुँचाने के वास्ते वापस गए। (29) कहने लगे कि ऐ भाइयो! हम एक किताब सुनकर आए हैं जो मूसा (अलैहिस्सलाम) के बाद नाज़िल की गई है, जो अपने से पहली किताबों की तस्दीक़ करती है, हक़ और सही रास्ते की तरफ़ रहनुमाई करती है। (30) ऐ भाइयो! अल्लाह की तरफ़ बुलाने वाले का कहना मानो और उसपर ईमान ले आओ, अल्लाह तआला तुम्हारे गुनाह माफ़ कर देगा और तुमको दर्दनाक अज़ाब से महफूज़ रखेगा।³ (31) और जो शख्स अल्लाह की तरफ़ बुलाने वाले का कहना न मानेगा तो वह ज़मीन में हरा नहीं सकता, और खुदा के सिवा उसका कोई मददगार भी न होगा। ऐसे लोग खुली गुमराही में हैं। (32) क्या उन लोगों ने यह न जाना कि जिस खुदा ने आसमान और ज़मीन को पैदा किया और उनके पैदा करने में ज़रा नहीं थका, वह इसपर कुदरत रखता है कि मुर्दों को ज़िन्दा कर दे, क्यों न हो बेशक वह हर चीज़ पर कादिर है। (33) और

1. यानी न उनके हवास उनको अज़ाब से बचा सके, और न उनकी तदबीर जिसका इदराक़ दिल से होता है, और न उनकी कुव्वत, पस तुम्हारी तो क्या हकीकत है?
2. जैसे समूद और कौमे लूत कि मुल्क शाम को जाते हुए उनके ठिकानों से गुज़रते थे। और चूँकि मक्का से एक तरफ़ यमन है, दूसरी सन्त में शाम, इसलिए “तुम्हारे आस-पास” फरमाया।
3. इन आयतों में जिन जिन्नात के ईमान लाने का ज़िक्र है उनका वाकिआ हदीसों में इस तरह आया है कि जब नबी-ए-पाक के नबी बनकर तशरीफ़ लाने के वक़्त जिन्नात को आसमानी ख़बरें सुनने से दुमदार टूटने वाले सितारों के ज़रिए रोक दिया गया, तो जिन्नात में तज़िक़ा हुआ कि इसका सबब तहकीक़ करना चाहिए कि कौन-सा नया वाकिआ दुनिया में हुआ है जिसके सबब यह मामला हो गया। जिन्नात मुख़्तलिफ़ इलाकों में तहकीक़ के वास्ते रवाना हुए। बाज़ जिन्नात हिजाज़ की तरफ़ भी चले, उस दिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम चन्द सहाबियों के साथ ‘बतने नख़्ला’ में जो एक जगह का नाम है तशरीफ़ रखते थे, और उकाज़ के बाज़ार को तशरीफ़ ले जाने का इरादा था। गरज़ आप सुबह की नमाज़ पढ़ा रहे थे, जब वे जिन्नात यहाँ पहुँचे, कुरआन सुनकर कहने लगे, बस वह नई बात जो हमारे और आसमानी ख़बरों के दरमियान रुकावट हो गई, यह है। और एक रिवायत में यह है कि वे जिन्नात जब यहाँ आए तो आपस में कहने लगे कि ख़ामोश रहकर कुरआन सुनो, जब आप सुबह की नमाज़ से फारिग़ हुए तो मोतकिद और मोमिन होकर अपनी कौम के पास वापस गए और उनको ख़बर सुनाकर ईमान की तरगीब दी, और आपको उनके आने-जाने की ख़बर नहीं हुई, यहाँ तक कि सूर: ज़िन्न के नाज़िल होने से आपको ख़बर दी गई।

जिस दिन वे काफिर लोग दोज़ख के सामने लाए जाएँगे (उनसे पूछा जाएगा), क्या ये दोज़ख एक हकीकत नहीं है? वे कहेंगे कि हमको अपने परवर्दिगार की कसम! जरूर एक हकीकत है। इरशाद होगा, तो अपने कुफ्र के बदले इसका अज़ाब चखो। (34) तो आप सब्र कीजिए जैसे और हिम्मत वाले पैगम्बरों ने सब्र किया था,¹ और उन लोगों के लिए (अल्लाह के) इन्तिकाम की जल्दी न कीजिए। जिस दिन ये लोग उस चीज़ को देखेंगे जिसका उनसे वायदा किया जाता है तो गोया ये लोग दिन भर में एक घड़ी रहे हैं,² यह पहुँचा देना है। सो वही बरबाद होंगे जो नाफरमानी करेंगे। ♦ (35) ♦

47 सूर: मुहम्मद 95

सूर: मुहम्मद मदीना में नाज़िल हुई। इसमें 38 आयतें और 4 रुकूअ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

जो लोग काफिर हुए और अल्लाह के रास्ते से रोका, खुदा ने उनके आमाल ज़ाया कर दिए।¹ (1) और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किए और वे उस सब पर ईमान लाए जो मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर नाज़िल किया गया है और वह उनके रब के पास वाकई चीज़ है, अल्लाह तआला उनके गुनाह उनपर से उतार देगा और उनकी हालत दुरुस्त रखेगा। (2) यह इस वजह से है कि काफिर तो ग़लत रास्ते पर चले और ईमान वाले सही रास्ते पर चले जो उनके रब की तरफ़ से है।¹ अल्लाह तआला इसी तरह लोगों के लिए उनके हालात बयान फ़रमाते हैं। (3) सो जब तुम्हारा काफ़िरो से मुक़ाबला हो जाए तो उनकी गर्दन में मारो,⁵ यहाँ तक कि जब तुम उनका ख़ूब ख़ून बहा चुको तो ख़ूब मज़बूत बाँध लो। फिर उसके बाद या तो मुआवज़े के बग़ैर छोड़ देना और या मुआवज़ा लेकर छोड़ देना, जब तक कि लड़ने वाले अपने हथियार न रख दें,⁶ यह (जिहाद का) हुक्म (जो ज़िक्र किया गया) इसपर अमल करना। और अगर अल्लाह चाहता तो उनसे इन्तिकाम ले लेता, लेकिन ताकि तुममें एक का दूसरे के ज़रिए से इम्तिहान करे।⁷

1. "हिम्मत वालों" से मुहम्मद की ने सब पैगम्बर मुराद लिए हैं, क्योंकि सबका अज़म और हिम्मत वाला होना ज़ाहिर है, और "मिनरुसुलि" में कलिमा "मिन" बयान करने के लिए है। और चूँकि अल्लाह के इरशाद "फज़ल्ला बअ-जहुम अला बअज़िन" कि हमने बाज़ को बाज़ पर फज़ील दी है, के मुताबिक इस सिफ़्त में बाज़ रसूल औरों से बड़े हुए हैं, इस बिना पर यह लक़ब भी बाज़ रसूलों का मशहूर हो गया है।
2. यानी दुनिया की लम्बी मुद्दत छोटी मालूम होगी और यही मालूम होगा कि बहुत जल्दी अज़ाब आ गया।
3. यानी जिन कामों को वे नेक समझ रहे थे ईमान न होने की वजह से वे मक़बूल नहीं, बल्कि उनमें से बाज़े काम और उल्टे सज़ा का सबब हैं।
4. ग़लत रास्ते का नाकामी का सबब होना और सही रास्ते का कामयाबी का सबब होना ज़ाहिर है, इसलिए वे नाकाम रहे और ये कामयाब हुए। और अगर इस्लाम के सही रास्ता होने में कोई शक हो तो "मिरिब्बिहिम" यानी यह उनके रब की तरफ़ से है, से उसका जवाब हो गया कि दलील इसके सही होने की यह है कि उसका अल्लाह की जानिब से होना नुबुव्वत के मौजिज़ों खास तौर से कुरआन के बेमिसाल होने से साबित है।
5. यानी क़त्ल करो।
6. मुराद इससे इस्लाम लाने और ताबेदार होने में से किसी मामले को कबूल करना है। पस अगर क़त्ल और कैद से पहले इस्लाम ले आएँ या ज़िम्मी होना (यानी मुस्लिम हुक्मत में टैक्स देकर रहना) कबूल करें तो अब न क़त्ल जायज़ है न कैद जायज़ है।
7. मुसलमानों का इम्तिहान यह कि कौन अल्लाह के हुक्म को अपनी जान पर तरजीह देता है, और काफ़िरो का इम्तिहान यह कि इस सज़ा से ख़बरदार होकर कौन हक़ को कबूल करता है। पस इस हिक्मत के लिए भी जिहाद को शरीअत में रखा गया।

और जो लोग अल्लाह की राह में मारे जाते हैं, अल्लाह उनके आमाल को हरगिज़ ज़ाया नहीं करेगा। (4) अल्लाह उनको मकसूद तक पहुँचा देगा और उनकी हालत दुरुस्त रखेगा।¹ (5) और उनको जन्नत में दाखिल करेगा, जिसकी उनको पहचान करा देगा। (6) ऐ ईमान वालो! अगर तुम अल्लाह की मदद करोगे तो वह तुम्हारी मदद करेगा और तुम्हारे कदम जमा देगा।² (7) और जो लोग काफिर हैं उनके लिए तबाही है, और उनके आमाल को खुदा तआला बेकार कर देगा।³ (8) यह इस सबब से हुआ कि उन्होंने अल्लाह के उतारे हुए अहकाम को नापसन्द किया, सो अल्लाह ने उनके आमाल को अकारत कर दिया। (9) क्या ये लोग मुल्क में चले-फिरे नहीं, और उन्होंने देखा नहीं कि जो लोग उनसे पहले हो गुज़रे हैं उनका अन्जाम कैसा हुआ कि अल्लाह ने उनपर कैसी तबाही डाली, और उन काफिरों के लिए भी इसी किस्म के मामलात होने को हैं। (10) यह इस सबब से है कि अल्लाह मुसलमानों का कारसाज़ है और काफिरों का कोई कारसाज़ नहीं। (11) ♦

बेशक अल्लाह उन लोगों को जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किए, ऐसे बागों में दाखिल करेगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी। और जो लोग काफिर हैं वे ऐश कर रहे हैं और इस तरह खाते-पीते हैं जिस तरह चौपाए खाते-पीते हैं, और जहन्नम उन लोगों का ठिकाना है। (12) और बहुत-सी बस्तियाँ ऐसी थीं जो कुव्वत में आपकी उस बस्ती से बड़ी हुई थीं जिसके रहने वालों ने आपको घर से बेघर कर दिया, हमने उनको हलाक कर दिया। सो उनका कोई मददगार न हुआ।⁴ (13) तो जो लोग अपने रबके वाज़ेह रास्ते पर हों, क्या वे उन शख्सों की तरह हो सकते हैं जिनकी बदअमली उनको अच्छी मालूम होती हो और जो अपनी नफ़्सानी ख्वाहिशों पर चलते हों?⁵ (14) जिस जन्नत का परहेज़गारों से वायदा किया जाता है उसकी कैफ़ियत यह है कि उसमें बहुत-सी नहरें तो ऐसे पानी की हैं जिसमें ज़रा भी बदलाव न होगा,⁶ और बहुत-सी नहरें दूध की हैं जिनका ज़ायका ज़रा बदला हुआ न होगा, और बहुत-सी नहरें शराब की हैं जो पीने वालों को बहुत मज़ेदार मालूम होगी, और बहुत-सी नहरें शहद की हैं जो बिलकुल साफ़ होगा, और उनके लिए वहाँ हर किस्म के फल होंगे और उनके रबकी तरफ़ से बख़्शिश होगी। क्या ऐसे लोग उन जैसे हो सकते हैं जो हमेशा दोज़ख़ में रहेंगे और ख़ौलता हुआ पानी उनको पीने को दिया जाएगा, सो वह उनकी अंतड़ियों को टुकड़े-टुकड़े कर देगा।⁷ (15)

1. यानी क़ब्र में और हश्र में और पुलसिरात पर और आखिरत के तमाम मौकों में।
2. मतलब यह कि मजमूए के मुकाबले मजमूआ साबित-क़दम रहकर काफ़िरों पर ग़ालिब आ जाएगा। चाहे शुरू ही से चाहे इन्तिहा में।
3. गरज़ काफ़िर लोग दोनों ज़हाम में घाटे में रहे।
4. ऐसी हालत में उनको घमण्ड न करना चाहिए क्योंकि हम जब चाहें उनकी भी सफ़ाई कर सकते हैं। और आप उनको भी सबब और इत्लत के एक होने यानी कुफ़ और मुख़ालफ़त की वजह से वक़्त पर सज़ा देने वाले हैं। और ये लोग जो कि अहले बातिल हैं आप और तमाम अहले हक़ के मुकाबले में क्योंकि सज़ा के काबिल न होंगे, जबकि अहले बातिल सिर्फ़ नफ़्स की राह पर हैं, और अहले हक़ खुदा की राह पर हैं।
5. यानी जब आमाल में फ़र्क़ है तो अन्जाम में भी फ़र्क़ होगा। पस जिस तरह अहले हक़ सवाब के मुस्तहिक़ हैं उसी तरह अहले बातिल अज़ाब के मुस्तहिक़ हैं।
6. न बू (गंध) में, न रंग में, न ज़ायके में।
7. गरज़ यह कि जब उनके आमाल में फ़र्क़ है तो उनके अन्जाम में यह फ़र्क़ होगा जिसका बयान अब किया गया।

और बाज़े आदमी ऐसे हैं¹ कि वे आपकी तरफ़ कान लगाते हैं, यहाँ तक कि जब वे लोग आपके पास से बाहर जाते हैं तो दूसरे इल्म वालों से कहते हैं कि हज़रत ने अभी क्या बात फ़रमाई थी?² ये वे लोग हैं कि हक़ तअ़ाला ने उनके दिलों पर मुहर कर दी है और ये अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिशों पर चलते हैं। (16) और जो लोग राह पर हैं³ अल्लाह तअ़ाला उनको और ज़्यादा हिदायत देता है, और उनको उनके तक्वे की तौफ़ीक़ देता है।⁴ (17) सो ये लोग बस कियामत का इन्तिज़ार कर रहे हैं कि वह उनपर अचानक आ पड़े⁵ सो उसकी निशानियाँ तो आ चुकी हैं,⁶ तो जब कियामत उनके सामने आ खड़ी हुई उस वक़्त उनको समझना कहाँ मयस्सर होगा। (18) तो आप इसका यकीन रखिए कि अल्लाह तअ़ाला के सिवा और कोई इबादत के काबिल नहीं,⁷ और आप अपनी ख़ता की माफ़ी माँगते रहिए⁸ और सब मुसलमान मदों और सब मुसलमान औरतों के लिए भी। और अल्लाह तअ़ाला तुम्हारे चलने-फिरने और रहने-सहने की ख़बर रखता है।⁹ (19) ♦

और जो लोग ईमान वाले हैं वे कहते रहते हैं कि कोई (नई) सूर: क्यों न नाज़िल हुई, सो जिस वक़्त कोई साफ़-साफ़ (मज़मून की) सूर: नाज़िल होती है और (इत्तिफ़ाक़ से) उसमें जिहाद का भी ज़िक्र होता है तो जिन लोगों के दिलों में (निफ़ाक़ का) रोग है आप उन लोगों को देखते हैं कि वे आपकी तरफ़ इस तरह देखते हैं जैसे किसी पर मौत की बेहोशी तारी हो।¹⁰ सो (असल यह है कि) जल्द ही उनकी कमबख़्ती आने वाली है। (20) उनकी फ़रमाँबरदारी और बातचीत मालूम है, पस जब सारा काम तैयार ही हो जाता है तो अगर ये लोग अल्लाह से सच्चे रहते तो उनके लिए बहुत ही बेहतर होता।¹¹ (21) सो अगर तुम किनारा करने वाले रहो तो आया तुमको यह अन्देशा भी है कि तुम दुनिया में फ़साद मचा दो, और आपस में ताल्लुक तोड़ दो। (22) ये वे लोग हैं जिनको खुदा ने अपनी रहमत से दूर कर दिया, फिर उनको बहरा कर दिया और उनकी आँखों को अंधा कर दिया। (23) तो क्या ये लोग कुरआन में ग़ौर नहीं करते? या दिलों पर ताले लग रहे हैं? (24) जो लोग पीठ फेर कर हट गए इसके बाद कि सीधा रास्ता उनको साफ़ मालूम हो गया, शैतान ने उनको चकमा दिया है और उनको दूर-दूर की सुझाई है। (25) यह इस सबब से हुआ कि उन लोगों ने ऐसे लोगों से जो कि खुदा के उतारे हुए अहक़ाम को नापसन्द करते हैं, यह कहा कि बाज़ी बातों में हम तुम्हारा कहना मान लेंगे, और अल्लाह तअ़ाला उनके खुफिया बातें करने को ख़ूब जानता है। (26) सो

1. इससे मुनाफ़िक़ लोग मुराद हैं।
2. इसकी वजह उनकी ख़बीस हालत के तकाज़े से यह मालूम होती है कि वे इस बात का इशारा करते थे कि हम आपकी बातों को तक्ज़ोह के काबिल नहीं जानते, और बज़ाहिर बात का पूछना ज़ाहिर करते थे, और यह भी उनके निफ़ाक़ का एक शोबा है।
3. यानी मुसलमान हो चुके हैं।
4. यानी ईमान लाने के बाद उन अहक़ाम पर भी अमल करते हैं।
5. यह भी एक तरह की डॉट और तंबीह है। यानी क्या कियामत में नसीहत हासिल करेंगे?
6. यहाँ 'अशरात' से मुराद वे निशानियाँ हैं जो कियामत से बहुत पहले सामने आईं, और करीब की निशानियाँ जैसे ईसा अलैहिस्सलाम का आसमान से उतरना, दज्जाल का निकलना और सूरज का पश्चिम की ओर से निकलना यहाँ मुराद लेना इसलिए मुनासिब नहीं कि इससे आयत के नाज़िल होने के ज़माने के लोगों को डराना तकल्लुफ़ से ख़ाली नहीं, और "क़द जा-अ अशरातुहा" से मकसूद वईद यानी सज़ा की धमकी और अज़ाब से डराना है।
7. इसमें दीन के सब उसूल (यानी बुनियादी चीज़ें) आ गए, क्योंकि इल्म से मुराद पूरा और कामिल इल्म है, और कामिल इल्म बन्दगी पर पूरी तरह अमल करने को शामिल है। हासिल यह कि जिन चीज़ों के करने का हुक्म है (शेष तफ़सीर पृष्ठ 920 पर)

उनका क्या हाल होगा जबकि फरिश्ते उनकी जान कब्ज़ करते होंगे और उनके मुँहों पर और पीठों पर मारते जाते होंगे। (27) यह इस सबब से कि जो तरीका खुदा की नाराज़ी को वाजिब करने वाला था ये उसी पर चले और उसकी रिज़ा से नफ़रत करते रहे, इसलिए अल्लाह तआला ने उनके सब आमाल ज़ाया और बरबाद कर दिए। (28) ♦

जिन लोगों के दिल में रोग है क्या ये लोग यह ख़याल करते हैं कि अल्लाह तआला कभी उनकी दिली दुश्मनियों को ज़ाहिर न करेगा? (29) और हम अगर चाहते तो आपको उनका पूरा पता बता देते, सो आप उनको हुलिए से पहचान लेते, और आप उनको बात करने के अन्दाज़ से ज़रूर पहचान लेंगे। और अल्लाह तआला तुम सबके आमाल को जानता है।¹ (30) और हम ज़रूर तुम सबके आमाल की आजमाइश करेंगे, ताकि हम उन लोगों को मालूम कर लें जो तुममें जिहाद करने वाले हैं और जो साबित-क़दम “यानी अड़िग” रहने वाले हैं। (31) और ताकि तुम्हारी हालतों की जाँच कर लें। बेशक जो लोग काफ़िर हुए और उन्होंने अल्लाह के रास्ते से रोका और रसूल की मुख़ालफ़त की, इसके बाद कि उनको रास्ता नज़र आ चुका था, ये लोग अल्लाह को कुछ नुक़सान न पहुँचा सकेंगे,² और अल्लाह उनकी कोशिशों को मिटा देगा। (32) ऐ ईमान वालो! अल्लाह की इताअत करो और रसूल की इताअत करो, और (काफ़िरों की तरह अल्लाह और रसूल की मुख़ालफ़त करके) अपने आमाल को बरबाद मत करो। (33) बेशक जो लोग काफ़िर हुए और उन्होंने अल्लाह के रास्ते से रोका, फिर वे काफ़िर ही रहकर मर गए, खुदा तआला उनको कभी न बख़्शेगा।³ (34) सो तुम हिम्मत मत हारो और सुलह की तरफ़ मत बुलाओ,⁴ और तुम ही ग़ालिब रहोगे⁵ और अल्लाह तआला तुम्हारे साथ है और तुम्हारे आमाल में हरगिज़ कमी न करेगा।⁶ (35) दुनियावी ज़िन्दगी तो सिर्फ़ एक खेल-तमाशा है,⁷ और अगर तुम ईमान और तक्वा इख़्तियार करो तो अल्लाह तुमको तुम्हारे अज़्र अता करेगा, और तुमसे तुम्हारे माल तलब न करेगा। (36) अगर तुमसे तुम्हारे माल तलब करे फिर इन्तिहाई दर्जे तक तुमसे तलब करता रहे तो तुम कन्ज़ूसी करने लगे, और अल्लाह तआला तुम्हारी नागवारी ज़ाहिर कर दे। (37) हाँ! तुम लोग ऐसे हो कि तुमको अल्लाह की राह में ख़र्च करने के लिए बुलाया जाता है, सो बाज़े तुममें से वे हैं जो कन्ज़ूसी करते हैं। और जो शख्स कन्ज़ूसी करता है तो वह खुद अपने से कन्ज़ूसी करता है। और अल्लाह तो किसी का मोहताज नहीं, और तुम सब मोहताज हो। और अगर तुम नाफ़रमानी करोगे तो खुदा तआला तुम्हारी जगह दूसरी कौम पैदा कर देगा, फिर वे तुम जैसे न होंगे। (38) ♦

(पृष्ठ 918 का शेष) और जिन चीज़ों से मना किया गया है उन सबपर शरीअत के मुताबिक़ अमल की हमेशा पाबन्दी रखो।

8. ख़ता से मुराद मजाज़ी ख़ता है।

9. पस उसके वायदे के उम्मीदवार और उसकी वईद से डरते रहना चाहिए।

10. इस तरह देखने का सबब ख़ौफ़ और बुज़दिली है कि अब अपनी ज़ाहिरि हालत को बनाए रखने के लिए जिहाद में जाना पड़ा और मुसीबत आई।

11. यानी शुरू में अगर मुनाफ़िक थे तो आख़िर में निफ़ाक़ से तौबा कर लेते, तब भी ईमान मक़बूल हो जाता।

1. तो मुसलमानों को उनके इख़्लास पर जज़ा और मुनाफ़िकों को उनके निफ़ाक़ व धोखे पर सज़ा देगा।

2. बल्कि यह दीन हर हाल में पूरा होकर रहेगा, चुनाँचे हुआ।

3. मफ़िरत के न होने के लिए कुफ़्र के साथ “अल्लाह के रास्ते से रोकना” शर्त नहीं।

4. यहाँ जो सुलह की मनाही है तो इससे मुराद मुतलक़ सुलह नहीं, बल्कि सिर्फ़ वह सुलह जिसका मन्शा सिर्फ़ हिम्मत की कमजोरी हो, जो कि गुनाह है। और जो सुलह किसी मस्तहत से हो वह जायज़ है।

5. और वे मग़लूब होंगे इसलिए कि तुम महबूब हो और वे नापसन्दीदा हैं।

6. यह तो हिम्मत व ज़ुरत दिलाने से जिहाद की तरगीब थी, आगे दुनिया से बे-रग़बती पैदा करके (शेष तफ़सीर पृष्ठ 922 पर)

48 सूर: फ़तह 111

सूर: फ़तह मदीना में नाज़िल हुई। इसमें 29 आयतें और 4 रुकूअ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

‘बेशक हमने आपको एक खुल्लम-खुल्ला फ़तह दी’ (1) ताकि अल्लाह तआला आपकी सब अगली पिछली ख़ताएँ माफ़ फ़रमा दे, और आप पर अपने एहसानों को पूरा कर दे, और आपको सीधे रास्ते पर ले चले। (2) और अल्लाह आपको ऐसा गुल्बा दे जिसमें इज़्ज़त ही इज़्ज़त हो। (3) वह खुदा ऐसा है कि जिसने मुसलमानों के दिलों में बरदाश्त पैदा की है, ताकि उनके पहले ईमान के साथ उनका ईमान और ज़्यादा हो। और आसमान व ज़मीन का सब लश्कर अल्लाह ही का है, और अल्लाह तआला (मस्लहतों का) बड़ा जानने वाला, बड़ी हिक्मत वाला है। (4) ताकि अल्लाह तआला मुसलमान मर्दों और मुसलमान औरतों को ऐसी जन्नतों में दाखिल करे जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, जिनमें हमेशा को रहेंगे, और ताकि उनके गुनाह दूर कर दे, और यह अल्लाह के नज़दीक बड़ी कामयाबी है। (5) और ताकि अल्लाह तआला मुनाफ़िक मर्दों और मुनाफ़िक औरतों और मुशिरक मर्दों और मुशिरक औरतों को अज़ाब दे जो कि अल्लाह के साथ बुरे-बुरे गुमान रखते हैं। उनपर बुरा वक्त पड़ने वाला है,⁵ और (आखिरत में) अल्लाह तआला उनपर ग़ज़बनाक होगा और उनको रहमत से दूर कर देगा, और उनके लिए उसने दोज़ख़ तैयार कर रखी है, और वह बहुत ही बुरा ठिकाना है। (6) और आसमान व ज़मीन का सब लश्कर अल्लाह ही का है, और अल्लाह तआला ज़बरदस्त, हिक्मत वाला है। (7) हमने आपको गवाही देने वाला और खुशख़बरी देने वाला और डराने वाला करके भेजा है। (8) ताकि तुम लोग अल्लाह पर और उसके रसूल पर ईमान लाओ और उसकी मदद करो और उसकी क़द्र व इज़्ज़त करो और सुबह व शाम उसकी तस्बीह में लगे रहो। (9) जो लोग आपसे बैअत कर रहे हैं, तो वे (हकीकत में) अल्लाह तआला से बैअत कर रहे हैं, खुदा का हाथ उनके हाथों पर है।⁸ फिर (बैअत के बाद) जो शख्स अहद तोड़ेगा सो उसके अहद तोड़ने का वबाल उसी पर पड़ेगा। और जो शख्स उस बात को पूरा करेगा जिसपर (बैअत में) खुदा से अहद किया है, सो जल्द ही खुदा उसको बड़ा अज़्र देगा। (10) ♦

(पृष्ठ 920 का शेष) जिहाद की तरगीब और अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करने की तम्हीद है।

7. अगर इसमें जान-माल को फ़ायदा हासिल करने के लिए बचाना है तो वह फ़ायदा ही कितने दिन का है, और क्या उसका हासिल?

1. आप हुदैबिया से मदीना को वापस तशीफ़ लाते थे कि रास्ते में यह सूर: नाज़िल हुई। पूरी की पूरी या अक्सर, इसमें इख़्तिलाफ़ है। और सारे वाकिआत (जिनकी तरफ़ इस सूर: में इशारा है) जीकादा सन् 6 हिजरी में पेश आए।

2. यानी सुलह हुदैबिया से यह फ़ायदा हुआ कि वह सबब बन गई एक ऐसी फ़तह की जिसकी ज़रूरत थी, यानी फ़तेह मक्का की। पस यह सुलह ही फ़तह थी। और मक्का की फ़तह को खुली फ़तह इसलिए कहा गया कि फ़तह की गरज़ और मक़सद इस्लाम का गुल्बा होना है, लोगों के मुसलमान होने से या झुक जाने और फ़रमाँबरदारी इख़्तियार कर लेने से, और यही उसका वह असर है जिसकी तलब है, और मक्का के फ़तह होने से इस्लाम को इसलिए बहुत ज़्यादा गुल्बा हुआ कि अरब के तमाम कबीले इस बात के मुन्तज़िर थे कि आप अपनी कौम पर ग़ालिब आ गए तो हम भी इताअत कर लेंगे। चुनाँचे जब मक्का फ़तह हुआ तो चारों तरफ़ से कबीले उमड़ पड़े और खुद या किसी वफ़द के वास्ते से हाज़िर होकर इस्लाम लाना शुरू किया। पस चूँकि इस्लाम के गुल्बे के आसार इस फ़तह पर ज़्यादा नुमायाँ हुए इसलिए इसको खुली फ़तह करार दिया गया।

3. और पहले से भी सीधे रास्ते पर चलना यकीनी है, लेकिन उसमें काफ़िर लोग आड़े आते और टकराते थे।

4. यानी जिसके बाद फिर आपको कभी दबना ही न पड़े।

5. चुनाँचे मुशिरकीन चन्द दिन बाद कल और कैद किए गए और मुनाफ़िकों की तमाम उम्र हसरत (शेष तफ़सीर पृष्ठ 924 पर)

जो देहाती पीछे रह गए वे जल्द ही आपसे यह कहेंगे कि हमको हमारे माल और बाल-बच्चों ने फुर्सत न लेने दी, सो हमारे लिए (इस कोताही की) माफी की दुआ माँगिए। ये लोग अपनी ज़बान से वे बातें कहते हैं कि जो उनके दिल में नहीं हैं। आप कह दीजिए कि सो वह कौन है जो खुदा के सामने तुम्हारे लिए किसी चीज़ का (कुछ भी) इख़्तियार रखता हो? अगर अल्लाह तआला तुमको कोई नुकसान या कोई नफ़ा पहुँचाना चाहे,¹ बल्कि अल्लाह तआला तुम्हारे सब आमाल पर बाख़बर है। (11) बल्कि तुमने यूँ समझा कि रसूल और (उनके साथी) मोमिनीन अपने घर वालों में कभी लौटकर न आएँगे। और यह बात तुम्हारे दिलों में अच्छी भी मालूम हुई थी और तुमने बुरे-बुरे गुमान किए, और तुम बरबाद होने वाले लोग हो गए। (12) और जो शख्स अल्लाह पर और उसके रसूल पर ईमान न लाएगा सो हमने काफ़िरों के लिए दोज़ख़ तैयार कर रखी है। (13) और तमाम आसमान व ज़मीन की हुक्मत अल्लाह ही की है, वह जिसको चाहे बख़्श दे और जिसको चाहे सज़ा दे,² और अल्लाह तआला बड़ा माफ़ करने वाला, रहम करने वाला है।³ (14) जो लोग पीछे रह गए थे वे जल्दी ही जब तुम (ख़ैबर की) ग़नीमतें “यानी जंग में फ़ह के बाद हासिल होने वाले माल” लेने चलोगे तो कहेंगे कि हमको भी इजाज़त दो कि हम तुम्हारे साथ चलें। वे लोग यूँ चाहते हैं कि खुदा के हुक्म को बदल डालें।⁴ आप कह दीजिए कि तुम हरगिज़ हमारे साथ नहीं चल सकते, खुदा तआला ने पहले से यूँ ही फ़रमा दिया है।⁵ तो वे लोग कहेंगे कि बल्कि तुम लोग हमसे हसद करते हो, बल्कि खुद ये लोग बहुत कम बात समझते हैं। (15) आप उन पीछे रहने वाले देहातियों से (यह भी) कह दीजिए कि जल्द ही तुम लोग ऐसे लोगों (से लड़ने) की तरफ़ बुलाए जाओगे जो बहुत सख़्त लड़ने वाले होंगे, कि या तो उनसे लड़ते रहो या वे (इस्लाम के) फ़रमाँबरदार हो जाएँ। सो अगर तुम इताअत करोगे तो तुमको अल्लाह तआला नेक बदला (यानी जन्नत) देगा, और अगर तुम (उस वक़्त भी) मुँह मोड़ोगे जैसा कि इससे पहले मुँह मोड़ चुके हो तो वह दर्दनाक अज़ाब की सज़ा देगा। (16) न अंधे पर कोई गुनाह है और न लंगड़े पर कोई गुनाह है और न बीमार पर कोई गुनाह है, और जो शख्स अल्लाह व रसूल का कहना मानेगा उसको ऐसी जन्नतों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी। और जो शख्स (हुक्म से) मुँह मोड़ेगा उसको दर्दनाक अज़ाब की सज़ा देगा। ● (17) ◆

(पृष्ठ 922 का शेष) और परेशानी में कटी कि इस्लाम बढ़ता जाता था और वे घुटते जाते थे।

6. यानी पूरी कुदरत वाला है अगर चाहता किसी लश्कर से उन सबकी एक दम से सफ़ाई कर देता कि ये उसके हक़दार हैं, लेकिन चूँकि वह हिक्मत वाला है इसलिए मस्लहत से सज़ा में देरी फ़रमाता है।

7. अ़कीदे के तौर पर भी कि अल्लाह तआला को तमाम कमालात वाला और तमाम कमियों से पाक समझो, और अमल के एतबार से भी फ़रमाँबरदारी करो।

8. “अल्लाह का हाथ उनके हाथों पर है” से यह न समझा जाए कि बैअत के वक़्त हाथ में हाथ लेना ज़रूरी है, या यह कि शैख़ यानी बैअत लेने वाले का हाथ ऊपर ही होना ज़रूरी है। असल यह बयान करना है कि बैअत से इताअत व फ़रमाँबरदारी मक़सद है। और “अल्लाह के हाथ” में, इसके असल मायने अल्लाह ही को मालूम है इसमें ज्यादा खोजबीन नहीं करनी चाहिए।

1. ज़ाहिर है कि कोई ऐसा नहीं। पस साबित हुआ कि हकीकत में कोई उज़्र तकदीर को टालने वाला नहीं। मगर जहाँ शरीअत ने मस्लहत समझा बहुत-से मौक़ों पर हकीक़ी उज़्र को रुख़्सत और छूट का मदार करार भी दे दिया।

2. चुनाँचे मोमिन के लिए मग़फ़िरत और काफ़िर के लिए अज़ाब चाहता और इसी तरह मुक़रर कर दिया।

3. यानी काफ़िर अगरचे सज़ा का हक़दार होता है लेकिन अल्लाह तआला ऐसा माफ़ करने वाला और रहम करने वाला है कि वह अगर ईमान ले आए तो उसको भी बख़्श देता है।

4. यानी ये लोग चाहते हैं कि खुदा के हुक्म को बदल डालें, जो कि इस वाकिए के मुताल्लिक़ हुआ है कि सिवाय हुदैबिया वालों के ‘ख़ैबर’ और कोई न जाए, ख़ासकर पीछे रह जाने वाले। यानी मुसलमानों से इसकी दरख़ास्त करना (शेष तफ़सीर पृष्ठ 926 पर)

तहकीकी बात है कि अल्लाह तआला उन मुसलमानों से खुश हुआ जबकि ये लोग आपसे (बबूल के) पेड़ के नीचे बैअत कर रहे थे और उनके दिलों में जो कुछ था अल्लाह तआला को वह भी मालूम था। पस अल्लाह तआला ने उनमें इत्मीनान पैदा कर दिया¹ और उनको लगे हाथ एक फ़ह्र दे दी² (18) और (उस फ़ह्र में) बहुत-सी ग़नीमतें भी (दीं) जिनको ये लोग ले रहे हैं, और अल्लाह तआला बड़ा ज़बरदस्त, बड़ा हिक्मत वाला है। (19) अल्लाह तआला ने तुमसे (और भी) बहुत-सी ग़नीमतों का वायदा कर रखा है जिनको तुम लोगे। सो फ़िलहाल तुमको यह दे दी है और लोगों के हाथ तुमसे रोक दिए,³ और ताकि यह (वाकिआ) ईमान वालों के लिए एक नमूना हो जाए, और ताकि तुमको एक सीधी सड़क पर डाल दे⁴ (20) और एक फ़ह्र और भी है जो तुम्हारे काबू में नहीं आई⁵ खुदा तआला उसको घेरे में लिए हुए है, और अल्लाह तआला हर चीज़ पर कादिर है। (21) और अगर तुमसे ये काफ़िर लड़ते तो ज़रूर पीठ फेरकर भागते, फिर न उनको कोई यार मिलता और न मददगार। (22) अल्लाह तआला ने (काफ़िरों के लिए) यही दस्तूर कर रखा है जा पहले से चला आता है, और आप खुदा के दस्तूर में रद्दोबदल न पाएँगे। (23) और वह ऐसा है कि उसने उनके हाथ तुमसे (यानी तुमको क़त्ल करने से) और तुम्हारे हाथ उन (के क़त्ल) से ऐन मक्का (के निकट) में रोक दिए, इसके बाद कि तुमको उनपर काबू दे दिया था, और अल्लाह तआला तुम्हारे कामों को देख रहा था⁶ (24) ये वे लोग हैं जिन्होंने कुफ़्र किया और तुमको मस्जिदे हराम से रोका, और (यह कि) कुरबानी के जानवर को, जो रुका हुआ रह गया उसके मौके में पहुँचने से रोका। और अगर (मक्का में उस वक़्त) बहुत-से मुसलमान मर्द और बहुत-सी मुसलमान औरतें न होतीं जिनकी तुमको ख़बर भी न थी, यानी उनके पिस जाने का अन्देशा न होता, जिसपर उनकी वजह से तुमको भी बेख़बरी से नुक़सान पहुँचता, तो सब किस्सा तय कर दिया जाता। लेकिन ऐसा इसलिए नहीं किया गया ताकि अल्लाह अपनी रहमत में जिसको चाहे दाख़िल कर दे⁷ अगर यह टल गए होते तो उनमें जो काफ़िर थे हम उनको दर्दनाक सज़ा देते। (25) जबकि

(पृष्ठ 924 का शेष) गोया कि यह दरख़्वास्त करना है कि मुसलमान खुदा के हुक्म के खिलाफ़ करें, जो उनके लिए शरई तौर पर मना है। और इस मायने में बदलाव करने वाले मुसलमान होंगे। लेकिन चूँकि वे लोग इस दरख़्वास्त की वजह से इस बदलाव करने का सबब हैं, इसलिए उनकी तरफ़ इसकी निस्बत की गई, और ज़ि़क़्र हुए मायने में तब्दीली के वाक़ेअ होने से अल्लाह के अफ़आल (यानी कामों) और सिफ़तों में कोई नुक़्स नहीं आता, क्योंकि वह हुक्म क़ानून बयान करने के तौर पर था, लेकिन मोमिनों का गुनाहगार होना लाज़िम आता है। मतलब का हासिल यह हुआ कि वे इसकी दरख़्वास्त करते हैं कि तुम गुनाह के करने वाले हो जाओ।

5. पहले से इसलिए कहा कि हुदैबिया से वापसी पर यह हुक्म हो गया था।

1. जिससे उनको खुदा का हुक्म मानने में ज़रा भी संकोच नहीं हुआ।

2. इससे ख़ैबर की फ़ह्र मुराद है।

3. यानी सबके दिल में रौब पैदा कर दिया कि उनको ज़्यादा हाथ डालने की हिम्मत न हुई। और इससे तुम्हारा दुनियावी नफ़ा भी मकसूद था, ताकि आराम हो।

4. मुराद इस सड़क से अल्लाह पर भरोसा और एतिमाद है, यानी हमेशा के लिए उसको सोचकर अल्लाह पर एतिमाद से काम लिया करो।

5. इससे मक्का का फ़ह्र होना मुराद है।

6. हुदैबिया में सुलह से पहले एक वाकिआ यह हुआ कि एक जमाअत हथियार से लैस मक्का वालों में से यहाँ खुफिया तौर पर इस इरादे से आई कि मौका पाकर नऊनु बिल्लाह आँ हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का काम तमाम कर दें। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने उनको देख लिया और पकड़ लिया, मगर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनको छोड़ दिया, यहाँ उस वाकिआ की तरफ़ इशारा है।

7. चुनाँचे उन मुसलमानों की जान बची और तुम्हारा दीन बचा।

उन काफ़िरो ने अपने दिलों में शर्म "और ग़ैरत" को जगह दी, और शर्म की जाहिलियत की।¹ सो अल्लाह तआला ने अपने रसूल और मोमिनों को अपनी तरफ़ से तहम्मूल "संयम" अता किया² और अल्लाह तआला ने मुसलमानों को तक्वे की बात पर जमाए रखा³ और वे उसके ज़्यादा हकदार और उसके अहल हैं, और अल्लाह तआला हर चीज़ को ख़ूब जानता है। (26) ♦

बेशक अल्लाह तआला ने अपने रसूल को सच्चा ख़्बाब दिखलाया जो हकीकत के मुताबिक है कि तुम लोग मस्जिदे हराम (यानी मक्का) में इन्शा-अल्लाह ज़रूर जाओगे, अमन व शांति के साथ, कि तुममें कोई सर मुँडाता होगा और कोई बाल कतरवाता होगा, तुमको किसी तरह का अन्देशा न होगा। सो अल्लाह तआला को वे बातें मालूम हैं जो तुमको मालूम नहीं, फिर उससे पहले एक फ़तह दे दी।⁴ (27) वह (अल्लाह) ऐसा है कि उसने अपने रसूल को हिदायत दी और सच्चा दीन (यानी इस्लाम) देकर (दुनिया में) भेजा है, ताकि उसको तमाम दीनों पर ग़ालिब करे⁵ और अल्लाह काफ़ी ग़वाह है। (28) मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अल्लाह के रसूल हैं, और जो लोग आपकी सोहबत पाए हुए हैं वे काफ़िरो के मुकाबले में तेज़ हैं और आपस में मेहरबान हैं। ऐ मुखातब! तू उनको देखेगा कि कभी रुकूअ कर रहे हैं, कभी सज्दा कर रहे हैं। अल्लाह के फज़ल और रज़ामन्दी की तलाश में लगे हैं, उनके आसार सज्दे की तासीर की वजह से उनके चेहरों पर नुमायाँ हैं। ये उनकी सिफ़तें तौरात में हैं और इन्जील में उनका यह वस्फ है कि जैसे खेती कि उसने अपनी सूई निकाली, फिर उसने उसको मज़बूत किया, फिर वह और मोटी हुई, फिर अपने तने पर सीधे खड़ी हो गई, कि किसानों को भली मालूम होने लगी, ताकि उनसे काफ़िरो को जलाए। अल्लाह तआला ने उन हज़रात से जो कि ईमान लाए हैं और नेक काम कर रहे हैं, मग़्फ़िरत और बड़े अज़्र का वायदा कर रखा है। (29) ♦

49 सूर: हुजुरात 106

सूर: हुजुरात मदीना में नाज़िल हुई। इसमें 18 आयतें और 2 रुकूअ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

‘ऐ ईमान वालो! अल्लाह और रसूल (की इजाज़त) से पहले तुम आगे मत बढ़ा करो’ और अल्लाह से डरते रहो, बेशक अल्लाह तआला (तुम्हारी सब बातों को) सुनने वाला, और (तुम्हारे सब कामों को) जानने वाला है। (1) ऐ ईमान वालो! तुम अपनी आवाज़ें पैग़म्बर की आवाज़ से ऊँची मत किया करो। और न उनसे

1. इस शर्म से मुराद वह ज़िद है जो बिस्मिल्लाह और रसूलुल्लाह के लफ़्ज़ लिखने में उन्होंने मुसलमानों से की थी, इसलिए इसको जाहिलियत की कैद के साथ बयान फ़रमाया, वरना मुतलक ग़ैरत व शर्म बुरी चीज़ नहीं।
2. जिससे अपने ऊपर संयम करके लिखने पर इस्रार नहीं किया, यहाँ तक कि सुलह हो गई और कुफ़्फ़ार क़िताल से बच गए।
3. तक्वे की बात से कलिमा-ए-तय्यिबा यानी तौहीद और रिसालत का इकरार मुराद है, इसकी बदौलत कुफ़ व शिर्क से बचाव हो जाता है, और यह कि वह चाहता है तक्वा व इताअत के वाजिब करने को। और उसपर जमाए रखने का मतलब यह है कि तौहीद और रिसालत के एतिकाद का तकाज़ा अल्लाह व रसूल की इताअत हैं। और मुसलमानों का यह बर्दाश्त करना सिर्फ़ इस वजह से था कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तहम्मूल और संयम का हुक्म फ़रमाया था। पस यह इताअत कलिमा-ए-तक्वा पर जमना है।
4. ख़बर की फ़तह मुराद है।
5. हुज्जत और दलील के एतिबार से तो हमेशा, और मुसलमानों की हुक्मत और शान व शौकत के एतिबार से दीनदारों के सुधार की शर्त के साथ। और चूँकि यह शर्त सहाबा में पाई जाती थी इसलिए यह आयत रिसालत के सुबूत के साथ-साथ सहाबा के लिए आम फ़तूहात होने की खुशख़बरी भी हो गई, चुनाँचे ऐसा ही ज़ाहिर हुआ। (शेष तफ़सीर पृष्ठ 932 पर)

ऐसे खुलकर बोला करो जैसे तुम आपस में एक-दूसरे से खुलकर बोला करते हो,¹ कहीं तुम्हारे आमाल बरबाद हो जाएँ और तुमको ख़बर भी न हो। (2) बेशक जो लोग अपनी आवाज़ों को रसूलुल्लाह के सामने पस्त रखते हैं, ये लोग वे हैं जिनके दिलों को अल्लाह तआला ने तक्वे के लिए ख़ास कर दिया है,² उन लोगों के लिए मग़्फ़िरत और बड़ा अज़्र है।³ (3) जो लोग हुजुरों के बाहर से आपको पुकारते हैं, उनमें अक्सरों को अक्ल नहीं है। (4) और अगर ये लोग (ज़रा) सब्र (और इन्तिज़ार) करते, यहाँ तक कि आप खुद बाहर उनके पास आ जाते तो यह उन लोगों के लिए बेहतर होता, (क्योंकि यह अदब की बात थी)। और अल्लाह तआला मग़्फ़िरत करने वाला, रहम करने वाला है। (5) ऐ ईमान वालो! अगर कोई शरीर आदमी तुम्हारे पास कोई ख़बर लाए तो ख़ूब तहकीक़ कर लिया करो, कभी किसी कौम को नादानी से कोई नुक़सान पहुँचा दो, फिर अपने किए पर पछताना पड़े।⁴ (6) और जान लो कि तुममें अल्लाह के रसूल हैं। बहुत-सी बातें ऐसी होती हैं कि अगर वह उसमें तुम्हारा कहना माना करें तो तुमको बड़ा नुक़सान पहुँचे। लेकिन अल्लाह तआला ने तुमको ईमान की मुहब्बत दी, और उसको तुम्हारे दिलों में पसन्दीदा कर दिया, और कुफ़्र और फिस्क और नाफरमानी से तुमको नफरत दी, ऐसे लोग सही रास्ते पर हैं। (7) अल्लाह तआला के फज़ल और इनाम “की वजह” से। और अल्लाह तआला जानने वाला और हिक्मत वाला है। (8) और अगर मुसलमानों में दो गिरोह आपस में लड़ पड़ें तो उनके दरमियान इस्लाह कर दो। फिर अगर उनमें का एक गिरोह दूसरे पर ज़्यादती करे तो उस गिरोह से लड़ो जो ज़्यादती करता है, यहाँ तक कि वह खुदा के हुक्म की तरफ़ रुजू हो जाए। फिर अगर रुजू हो जाए तो उन दोनों के दरमियान इन्साफ़ के साथ इस्लाह कर दो, और इन्साफ़ का ख़्याल रखो, बेशक अल्लाह इन्साफ़ वालों को पसन्द करता है। (9) मुसलमान तो सब भाई हैं। सो अपने दो भाइयों के

(पृष्ठ 930 का शेष) 6. इस सूर: के हिस्सों के मजमूए का हासिल हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और दीनी भाइयों के हुक्क का बयान है। इन आयतों के नाज़िल होने का वाकिआ यह है कि एक बार बनू तमीम के कुछ लोग आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुए और हज़रत अबू बक्र और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा में आपस में आपकी मज्लिस में इस मामले में गुप्तगू हो गई कि उन लोगों पर हाकिम किसको बनाया जाए। हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने कअज़ा बिन माबद के बारे में राय दी, और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अक़रा बिन हाबिस के बारे में राय दी, और गुप्तगू बढ़कर दोनों की आवाज़ें बुलन्द हो गई, इसपर यह हुक्म नाज़िल हुआ।

7. यानी जब तक मजबूत इशारात या स्पष्ट तौर पर गुप्तगू की इजाज़त न हो, उस वक़्त तक गुप्तगू मत किया करो।

1. यानी न बुलन्द आवाज़ से बोलो जबकि आपके सामने बात करना हो, अगरचे आपस में ही गुप्तगू हो, और न बराबर की आवाज़ से बोलो जबकि खुद आपसे गुप्तगू करो।

2. मतलब यह कि कामिल मुत्तकी हैं।

3. अगली आयतों का वाकिआ यह है कि वही बनू तमीम जब आपकी ख़िदमत में हाज़िर होने के लिए आए तो उस वक़्त आप अपने दौलत ख़ाना (यानी घर) में तशरीफ़ रखते थे। उन्होंने तमीज़ व तहज़ीब न होने की वजह से बाहर से आपको नाम ले-लेकर पुकारना शुरू किया। इसपर ये आयतें नाज़िल हुईं।

4. इसके नाज़िल होने का वाकिआ इस तरह हुआ (और फिर हुक्म आम है) कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने वलीद बिन उक्बा को बनी मुस्तलक के कबीले से ज़कात वसूल करने के लिए भेजा, और एक रिवायत में बनी वकीआ आया है। वलीद में और उनमें जाहिलियत के ज़माने में कुछ दुश्मनी थी। वलीद को वहाँ जाते हुए कुछ अन्देशा हुआ, उन लोगों ने सुनकर स्वागत किया, वलीद को यह ख़्याल हुआ कि ये लोग कल्ल करने के इरादे से आए हैं। वापस आकर अपने ख़्याल के मुवाफ़िक़ कह दिया कि वे तो इस्लाम के मुख़ालिफ़ हो गए। आपने हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु को सही हालात की तहकीक़ के लिए भेजा और फरमा दिया कि ख़ूब तहकीक़ करना और जल्दी मत करना। चुनाँचे उन्होंने वहाँ फरमाँबरवारी और भलाई के सिवा कुछ न देखा। आकर आपको इत्मीनान दिला दिया, उसपर यह हुक्म नाज़िल हुआ।

फ़ायदा: इससे एक शर्इ हुक्म साबित हो गया कि बग़ैर तहकीक़ के ऐसी ख़बर पर अमल न करना चाहिए।

दरमियान इस्लाह कर दिया करो, और अल्लाह से डरते रहा करो ताकि तुमपर रहमत की जाए। ▲ (10) ◆

ऐ ईमान वालो! न तो मर्दों को मर्दों पर हँसना चाहिए¹ क्या अजब है कि (जिनपर हँसते हैं) वे उन (हँसने वालों) से (खुदा के नज़दीक) बेहतर हों। और न औरतों को औरतों पर हँसना चाहिए, क्या अजब है कि वे उनसे बेहतर हों। और न एक-दूसरे को ताना दो, और न एक-दूसरे को बुरे लकब से पुकारो। ईमान लाने के बाद गुनाह का नाम लगना (ही) बुरा है। और जो लोग (इन हरकतों से) बाज़ न आएँगे तो वे जुल्म करने वाले हैं। (11) ऐ ईमान वालो! बहुत-से गुमानों से बचा करो, क्योंकि बाज़े गुमान गुनाह होते हैं। और सुराग मत लगाया करो। और कोई किसी की गीबत भी न किया करे² क्या तुममें से कोई इस बात को पसन्द करता है कि अपने मरे हुए भाई का गोश्त खाए? इसको तो तुम नागवार समझते हो। और अल्लाह से डरते रहो, बेशक अल्लाह बड़ा तौबा कबूल करने वाला, मेहरबान है। (12) ऐ लोगो! हमने तुमको एक मर्द और एक औरत से पैदा किया है, और तुमको मुख्तलिफ़ कौमों और मुख्तलिफ़ ख़ानदान बनाया ताकि एक-दूसरे को पहचान सको³ अल्लाह के नज़दीक तुम सबमें बड़ा शरीफ़ वही है जो सबसे ज़्यादा परहेज़गार हो। अल्लाह ख़ूब जानने वाला, पूरा ख़बर रखने वाला है। (13) ये गँवार कहते हैं कि हम ईमान ले आए। आप फ़रमा दीजिए कि तुम ईमान तो नहीं लाए लेकिन यूँ कहो कि हम (मुख़ालफ़त छोड़कर) फ़रमाँबरदार हो गए, और अभी तक ईमान तुम्हारे दिलों में दाख़िल नहीं हुआ⁴ और अगर तुम अल्लाह और उसके रसूल का कहना मान लो तो अल्लाह तआला तुम्हारे आमाल में से ज़रा भी कमी न करेगा। बेशक अल्लाह मग़्फ़िरत करने वाला, रहम करने वाला है। (14) पूरे मोमिन वे हैं जो अल्लाह पर और उसके रसूल पर ईमान लाए, फिर शक नहीं किया और अपने माल और जान से खुदा के रास्ते में जिहाद किया, ये लोग हैं सच्चे। (15) आप

1. 'हँसी उड़ाना' वह हँसी है जिससे दूसरे का अपमान हो और दिल को तकलीफ़ पहुँचे, और जिससे दूसरे का दिल खुश हो वह मिज़ाह कहलाता है, और वह जायज़ है।

2. गीबत यह है कि किसी की पीठ-पीछे उसकी ऐसी बुराई करना कि उसके सामने की जाए तो उसको तकलीफ़ हो। अगरचे वह सच्ची बात हो, वरना बोहतान है। और पीठ-पीछे की कैद से यह न समझा जाए कि सामने जायज़ है, क्योंकि वह ताना देने में दाख़िल है जिसकी मनाही ऊपर आई है।

फ़ायदा: तहकीकी बात यह है कि गीबत गुनाह कबीरा (यानी बड़ा गुनाह) है। लेकिन जिससे बहुत कम तकलीफ़ हो वह सगीरा (यानी छोटा) हो सकता है।

फ़ायदा: बिना सख़्त मजबूरी के गीबत सुनना गीबत करने ही की तरह मना है।

3. शु-अब् ख़ानदान की जड़ को कहते हैं, कबीला उसकी शाख़ को। जैसे सय्यिद एक शु-अब् है और हसनी और हुसैनी कबीले हैं। इसी तरीक़े पर और को सोच लिया जाए।

4. यहाँ इस्लाम से मुराद इस्लाम के लुगवी मायने हैं, शरई इस्लाम नहीं। पस इस आयत से ईमान व इस्लाम के एक-दूसरे से अलग होने पर दलील पकड़ना सही नहीं है।

फरमा दीजिए कि क्या खुदा तआला को अपने दीन की ख़बर देते हो¹ हालाँकि अल्लाह को तो आसमानों और ज़मीन की सब चीज़ों की ख़बर है, और अल्लाह सब चीज़ों को जानता है।² (16) ये लोग अपने इस्लाम लाने का आप पर एहसान रखते हैं, आप कह दीजिए कि मुझपर अपने इस्लाम लाने का एहसान न रखो, बल्कि अल्लाह तुमपर एहसान रखता है कि उसने तुमको ईमान की हिदायत दी, बशर्ते कि तुम सच्चे हो।³ (17) बेशक अल्लाह तआला आसमान और ज़मीन की छुपी बातों को जानता है, और तुम्हारे सब आमाल को भी जानता है। (18) ♦

50 सूर: काफ 34

सूर: काफ मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 45 आयतें और 3 रुकूअ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

काफ। कसम है कुरआन मजीद की। (1) बल्कि उनको इस बात पर ताज्जुब हुआ कि उनके पास उन्हीं (की) जिन्स में से (कि इनसान हैं) एक डराने वाला (यानी पैग़म्बर) आ गया। सो काफ़िर लोग कहने लगे कि यह (एक) अजीब बात है। (2) जब हम मर गए और मिट्टी हो गए तो क्या दोबारा ज़िन्दा होंगे? यह दोबारा ज़िन्दा होना (संभावना से) बहुत ही दूर की बात है। (3) हम उनके उन हिस्सों को जानते हैं जिनको मिट्टी (खाती और) कम करती है। और हमारे पास (वह) किताब (यानी लौहे) महफूज़ (मौजूद) है। (4) बल्कि सच्ची बात को जबकि वह उनको पहुँचती है तो झुठलाते हैं। गरज़ यह कि वे एक डाँवाडोल हालत में हैं।⁴ (5) क्या उन लोगों ने अपने ऊपर की तरफ़ आसमान को नहीं देखा कि हमने उसको कैसा (ऊँचा और बड़ा) बनाया, और (सितारों से) उसको सँवार दिया, और उसमें कोई रखना “यानी छेद, नुक्स और फटन” तक नहीं। (6) और ज़मीन को हमने फैलाया और उसमें पहाड़ों को जमाया, और उसमें हर किस्म की खुशनुमा चीज़ें उगाईं (7) जो ज़रिया है देखने और समझने का⁵ हर रुजू होने वाले बन्दे के लिए।⁶ (8) और हमने आसमान से बरक़त (यानी नफ़े) बाला पानी बरसाया, फिर उससे बहुत-से बाग़ उगाए और खेती का ग़ल्ला (9) और लम्बी-लम्बी खज़ूर के पेड़ जिनके गुच्छे ख़ूब गुंथे हुए होते हैं (10) बन्दों को रिज़्क देने के लिए। और हमने उस (बारिश) के ज़रिए मुर्दा ज़मीन को ज़िन्दा किया (पस) इसी तरह ज़मीन से निकलना होगा।⁷ (11) इससे

1. यानी अल्लाह तआला तो जानते हैं कि तुमने ईमान कबूल नहीं किया, इसके बावजूद जो तुम दावा कबूल करने का करते हो तो लाज़िम आता है कि अल्लाह तआला के इल्म के खिलाफ़ एक बात बताते हो।
2. इससे मालूम हुआ कि हक़ तआला को जो तुम्हारे मुताल्लिक इल्म है कि तुम ईमान नहीं लाए, वही सही है।
3. यहाँ लफ़्ज़ ‘ईमान’ फ़रमाने से शुब्हा न किया जाए कि उसका ईमान होना तस्लीम कर लिया गया। बात यह है कि यहाँ फ़र्ज़ कर लेने के तौर पर गुफ़्तगू है, जिसमें उनकी तरफ़ से गुफ़्तगू की गई है। जैसा कि “अगर तुम सच्चे हो” में करीना है। यानी अगर मान लो तुम्हारे दावे के मुवाफ़िक़ इसको ईमान मान लिया जाए तो भी खुदा ही का एहसान है।
4. इसलिए कि कभी ताज्जुब है, कभी झुठलाना है।
5. यानी हमारी कुदरत को पहचानने का ज़रिया है।
6. यानी ऐसे शख्स के लिए जो इस गरज़ से बनाई हुई चीज़ों में ग़ौर-फ़िक़्र करने की तरफ़ मुतवज्जह हो जो कि एक तरह से उनके बनाने वाले की तरफ़ तवज्जोह करना है। शेष तफ़सीर पृष्ठ 936 पर)

पहले कौमे नूह और रस्स वालों और समूद ने झुठलाया (12) और आद और फिरऔन और कौमे लूत ने भी झुठलाया (13) और ऐका वालों और कौमे तुब्बा ने झुठलाया। (यानी) सबने पैगम्बरों को झुठलाया, सो मेरी वर्ईद (उनपर) साबित हो गई।¹ (14) क्या हम पहली बार पैदा करने में थक गए? बल्कि ये लोग नए सिरे से पैदा करने की तरफ से (महज़ बेदलील) शुब्हे में हैं। (15) ♦

और हमने इनसान को पैदा किया है, और उसके जी में जो ख्यालात आते हैं हम उनको जानते हैं, और हम इनसान के इस कद्व करीब हैं कि उसकी गर्दन की रग से भी ज़्यादा।² (16) जब दो लेने वाले फ़रिश्ते लेते रहते हैं, जो कि दाईं और बाईं तरफ बैठे रहते हैं। (17) वह कोई लफ़्ज़ मुँह से निकालने नहीं पाता मगर उसके पास ही एक ताक लगाने वाला तैयार है। (18) और मौत की सख़्ती (नज़दीक) आ पहुँची।³ यह (मौत) वह चीज़ है जिससे तू बिदकता था। (19) और (क़ियामत के दिन दोबारा) सूर फूँका जाएगा। यही दिन होगा वर्ईद का। (20) और हर शख्स (क़ियामत के मैदान में) इस तरह आएगा कि उसके साथ एक “और होगा जो” उसको अपने साथ लाएगा, और एक (उसके आमाँल का) गवाह होगा। (21) तू इस दिन से बेख़बर था, सो अब हमने तेरे ऊपर से तेरा (ग़फ़लत का) पर्दा हटा दिया, सो आज (तो) तेरी निगाह बड़ी तेज़ है। (22) और (उसके बाद) फ़रिश्ता जो उसके साथ रहता था, अर्ज़ करेगा कि यह वह (रोज़नामचा है) जो मेरे पास तैयार है। (23) ऐसे शख्स को जहन्नम में डाल दो जो कुफ़्र करने वाला हो (24) और (हक़ से) ज़िद रखता हो, और नेक काम से रोकता हो, और (बन्दगी की) हद से बाहर जाने वाला हो, (और दीन में) शुब्हा पैदा करने वाला हो। (25) जिसने खुदा के साथ दूसरा माबूद तजवीज़ किया हो, सो ऐसे शख्स को सख़्त अज़ाब में डाल दो। (26) वह शैतान जो उसके साथ रहता था, कहेगा कि ऐ हमारे परवर्दिगार! मैंने इसको ज़बरदस्ती गुमराह नहीं किया था, लेकिन यह खुद दूर-दराज़ की गुमराही में था। (27) इरशाद होगा, मेरे सामने झगड़े की बातें मत करो, (कि बेफ़ायदा हैं) और मैं तो पहले ही तुम्हारे पास वर्ईद भेज चुका था। (28) मेरे यहाँ (वह) बात (ज़िक्र हुई वर्ईद की) नहीं बदली जाएगी, और मैं (इस तजवीज़ में) बन्दों पर जुल्म करने वाला नहीं हूँ। (29) ♦

जिस दिन कि हम दोज़ख़ से कहेंगे कि तू भर भी गई? वह कहेगी कि कुछ और भी है?⁴ (30) और

(पृष्ठ 934 का शेष) 7. यानी जब इन उमूर पर हमारी कुदरत साबित हो गई तो मुद्दों को ज़िन्दा करने पर क्यों न होगी? पस कुदरत में होना मुम्किन और करने वाला इल्म और कुदरत की सिफ़तों से मुत्तसिफ़ हुआ, फिर ताज़्जुब या झुठलाने के क्या मायने?

1. यानी उन सबपर अज़ाब नाज़िल हुआ। इसी तरह इन झुठलाने वालों पर अज़ाब आएगा, चाहे दुनिया में भी या सिर्फ़ आख़िरत में।
2. मतलब यह हुआ कि हम इल्म के एतिबार से उसकी रूह और नफ़्स से भी ज़्यादा नज़दीक हैं। जैसा इल्म इनसान को अपने हालात का है हमको उसका इल्म खुद उससे भी ज़्यादा है।
3. यानी हर शख्स की मौत करीब है।
4. यह पूछना शायद काफ़िरों में हैल और डर बिठाने के लिए हो कि जवाब सुनकर उनके दिल में दोज़ख़ का ख़ौफ़ और डर पैदा हो जाए कि हम कैसे ग़ज़ब और गुस्से के ठिकाने पर पहुँचे हैं।

जन्नत मुत्तकियों के करीब लाई जाएगी, कि कुछ दूर न रहेगी।¹ (31) यह है वह चीज़ जिसका तुमसे वायदा किया जाता था, कि वह हर ऐसे शख्स के लिए है जो रुजू होने वाला, पाबन्दी करने वाला हो। (32) जो शख्स खुदा तआला से बेदेखे डरता हो और रुजू होने वाला दिल लेकर आएगा। (33) इस जन्नत में सलामती के साथ दाखिल हो जाओ, यह दिन है हमेशा रहने का। (34) उनको जन्नत में सब कुछ मिलेगा जो-जो चाहेंगे, और हमारे पास और भी ज्यादा (नेमत है)। (35) और हम उन (मक्का वालों) से पहले बहुत-सी उम्मतों को हलाक कर चुके हैं जो कुव्वत में उनसे (कहीं) ज्यादा थे, और तमाम शहरों को छानते फिरते थे² (लेकिन जब हमारा अज़ाब नाज़िल हुआ तो उनको) कहीं भागने की जगह न मिली।³ (36) इसमें उस शख्स के लिए बड़ी इब्रत है जिसके पास (समझने वाला) दिल हो, या वह (कम-से-कम दिल से) मुतवज्जह होकर (बात की तरफ) कान ही लगा देता हो। (37) और हमने आसमानों को और ज़मीन को और जो कुछ उनके दरमियान में है उस सबको छह दिन में पैदा किया, और हमको थकान ने छुआ तक नहीं। (38) सो उनकी बातों पर सब्र कीजिए और अपने रब की तस्बीह और तारीफ़ करते रहिए, (इसमें नमाज़ भी दाखिल है) सूरज निकलने से पहले (जैसे सुबह की नमाज़) और छुपने से पहले (जैसे ज़ोहर और अ़सर) (39) और रात में भी उसकी तस्बीह किया कीजिए, (इसमें मग़रिब और इशा आ गई) और (फ़र्ज़) नमाज़ों के बाद भी।⁴ (40) और सुन लो कि जिस दिन एक पुकारने वाला पास ही से पुकारेगा।⁵ (41) जिस दिन उस चीखने को यकीनन सब सुन लेंगे, यह दिन होगा (क़ब्रों से) निकलने का। (42) हम ही (अब भी) जिलाते हैं और हम ही मारते हैं, और हमारी ही तरफ़ फिर लौटकर आना है। (43) जिस दिन ज़मीन उन (मुर्दों) पर से खुल जाएगी, जबकि वे दौड़ते होंगे। यह हमारे नज़दीक एक आसान जमा कर लेना है। (44) जो-जो कुछ ये लोग कह रहे हैं हम ख़ूब जानते हैं, और आप उनपर ज़बरदस्ती करने वाले नहीं हैं। तो आप कुरआन के ज़रिए से ऐसे शख्स को नसीहत करते रहिए जो मेरी वईद “सज़ा की धमकी” से डरता हो। (45) ♦

51 सूर: ज़ारियात 67

सूर: ज़ारियात मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 60 आयतें और 3 रुकूअ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

कसम है उन हवाओं की जो गुबार वगैरह को उड़ाती हों। (1) फिर उन बादलों की जो बोझ (यानी बारिश) को उठाते हैं। (2) फिर उन कशितियों की जो नरमी से चलती हैं। (3) फिर उन फ़रिश्तों की जो (हुक्म के मुवाफ़िक़) चीज़ें बाँटते हैं। (4) तुमसे जिस (यानी कियामत) का वायदा किया जाता है, वह

1. ‘जन्नत के करीब लाने’ की दो सूरतें हो सकती हैं- या तो उसकी जगह से मुन्तकिल करके कियामत के मैदान में ले आएँ और अल्लाह को सब कुदरत है। तो इस सूरत में “उसमें दाखिल हो जाओ” फ़रमाना इस मायने में नहीं है कि अभी चले जाओ, बल्कि खुशख़बरी और वायदा है कि तुम हिसाब-किताब वगैरह के बाद उसमें जाना। और दूसरी सूरत यह हो सकती है कि हिसाब वगैरह से फ़ारिग होने के बाद उन लोगों को जन्नत के करीब पहुँचाकर बाहर ही से कहा जाएगा कि “यह है वह चीज़ जिसका तुमसे वायदा किया जाता था” फिर और करीब करके कहा जाएगा “उसमें दाखिल हो जाओ..... आख़िर तक”।

2. यानी ताक़त के साथ रोज़गार और कमाने के असबाब में भी बड़ी तरक्की दी थी।

3. यानी किसी तरह बच न सके।

4. हासिल यह हुआ कि अल्लाह के ज़िक्र में और उसकी फ़िक्र में लगे रहिए ताकि उनके कुफ़िया कौलों की तरफ़ तवज्जोह न हो।

5. पास का मतलब यह है कि वह आवाज़ सबको धैरकल्लुफ़ पहुँचेगी, (शेष तफ़सीर पृष्ठ 940 पर)

बिलकुल सच है। (5) और (आमाल की) जज़ा (और सज़ा) ज़रूर होने वाली है।¹ (6) कसम है आसमान की जिसमें (फ़रिश्तों के चलने के) रास्ते हैं (7) कि तुम (यानी सब) लोग (क़ियामत के बारे में) मुख़लिफ़ गुफ़्तगू में हो। (8) उससे वही फिरता है जिसको फिरना होता है। (9) ग़ारत हो जाएँ बे-सनद बातें करने वाले² (10) जो कि जहालत में भूले हुए हैं।³ (11) पूछते हैं कि बदले का दिन कब होगा? (12) जिस दिन वे लोग आग पर रखे जाएँगे (13) (और कहा जाएगा कि) अपनी उस सज़ा का मज़ा चखो, यही है जिसकी तुम जल्दी मचाया करते थे। (14) बेशक मुत्तकी लोग जन्नतों में और चश्मों में होंगे। (15) (और) उनके रब ने उनको जो (सवाब) अता किया होगा वह उसको (खुशी-खुशी) ले रहे होंगे। (और क्यों न हो) वे लोग इससे पहले (दुनिया में) नेक काम करने वाले थे। (16) वे लोग रात को बहुत कम सोते थे।⁴ (17) और रात के अख़ीर में इस्तिग़फ़ार किया करते थे। (18) और उनके माल में सवाली और ग़ैर-सवाली का हक़ था।⁵ (19) और यकीन लाने वालों के लिए ज़मीन में बहुत-सी निशानियाँ हैं (20) और खुद तुम्हारी ज़ात में भी। और क्या तुमको दिखाई नहीं देता। (21) और तुम्हारा रिज़क़ और जो तुमसे (क़ियामत के मुताल्लिक) वायदा किया जाता है (22) (उन) सबका (मुतैयन वक़्त) आसमान में है, तो कसम है आसमान और ज़मीन के परवर्दिगार की कि वह बरहक़ है जैसा कि तुम बातें कर रहे हो। (23) ♦

क्या इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के मुअज़्ज़ज़ “यानी सम्मानित” मेहमानों की हिकायत आप तक पहुँची है? (24) (और यह किस्सा उस वक़्त में था) जबकि वे (मेहमान) उनके पास आए फिर उनको सलाम किया, इब्राहीम (अलैहि.) ने भी (जवाब में) कहा, सलाम (और कहने लगे कि) अन्जान लोग (मालूम होते) हैं। (25) फिर अपने घर की तरफ़ चले और एक मोटा-ताज़ा बछड़ा (तला हुआ) लाए। (26) और उसको उनके पास (यानी सामने लाकर) रखा। कहने लगे, आप लोग खाते क्यों नहीं? (27) तो उनसे दिल में डरे, उन्होंने कहा कि तुम डरो मत और उनको एक लड़के की खुशख़बरी दी, जो बड़ा आलिम होगा।⁶ (28) इतने में उनकी बीवी बोलती हुई आई, फिर माथे पर हाथ मारा और कहने लगी कि (पहले तो) बुढ़िया (फिर) बाँझ। (29) फ़रिश्ते कहने लगे कि तुम्हारे परवर्दिगार ने ऐसा ही फ़रमाया है, कुछ शक़ नहीं कि वह बड़ा हिक़मत वाला, जानने वाला है।⁷ (30)

(पृष्ठ 938 का शेष) और जैसे अक्सर दूर की आवाज़ किसी को पहुँचती है किसी को नहीं पहुँचती, ऐसा न होगा।

1. इन कस्मों में इशारा है दलील की तरफ़। यानी ये सब अजीब तसरूफ़ात खुदाई कुदरत से होना दलील है अज़्मते कुदरत की, फिर ऐसे बड़े कुदरत वाले को क़ियामत का कायम करना क्या मुश्किल है?
 2. यानी जो अपने पास बिना दलील के होते हुए क़ियामत का इनकार करते हैं।
 3. भूलने से मुराद वह ग़फलत है जो अपने इस्तियार से हो।
 4. यानी रात का ज़्यादा हिस्सा इबादत में खर्च करते थे।
 5. यानी ऐसी पाबन्दी और एहतिमाम से देते थे कि जैसे उनके ज़िम्मे उनका कुछ आता हो। मुराद इससे ज़कात के अलावा है।
- फ़ायदा: यह मतलब नहीं है कि “जन्नतें और चश्मे” इन नवाफ़िल पर मौकूफ़ हैं। बल्कि बुलन्द दर्जे वालों का ज़िक़्र फ़रमाया गया है।
6. इससे इसहाक़ अलैहिस्सलाम मुराद हैं।
 7. यानी अपने आपमें अगरचे यह बात ताज्जुब की है, मगर तुमको जो कि नुबुव्वत के ख़ानदान में रहती हो और इल्म व समझ भी रखती हो, यह मालूम करके कि यह खुदा का इरशाद है, ताज्जुब में न रहना चाहिए।

सत्ताईसवाँ पार: का-ल फमा खत्बुकुम

सूर: ज़ारियात (आयत 31 से 60)

इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) कहने लगे (कि) अच्छा तो (यह बतलाओ कि) तुमको बड़ी मुहिम क्या पेश आई है ऐ फ़रिश्तो! (31) फ़रिश्तों ने कहा कि हम एक मुजरिम कौम (यानी लूत अलैहिस्सलाम की कौम) की तरफ़ भेजे गए हैं। (32) ताकि हम उनपर धिंगर के पत्थर बरसाएँ। (33) जिनपर आपके रब के पास (यानी आलिमे ग़ैब में) ख़ास निशानियाँ भी हैं हद से गुज़रने वालों के लिए। (34) और हमने जितने ईमान वाले थे उनको वहाँ से निकाल कर अलग कर दिया। (35) सो मुसलमानों के सिवाय एक घर के और कोई घर (मुसलमानों का) हमने नहीं पाया। (36) और हमने इस वाकिए में (हमेशा के वास्ते) ऐसे लोगों के लिए इबरात रहने दी जो दर्दनाक अज़ाब से डरते हैं। (37) और मूसा (अलैहिस्सलाम) के किस्से में भी इबरात है, जबकि हमने उनको फिरऔन के पास एक खुली हुई दलील (यानी मोज़िज़ा) देकर भेजा। (38) सो उसने अपनी हुकूमत के अरकान सहित सरकशी की और कहने लगा कि यह जादूगर है या मजन्नूँ। (39) सो हमने उसको और उसके लश्कर को पकड़ कर दरिया में फेंक दिया (यानी गर्क कर दिया) और उसने काम ही मलामत का किया था। (40) और आद के किस्से में भी इबरात है, जबकि हमने उनपर नामुबारक आँधी भेजी। (41) जिस चीज़ पर गुज़रती थी (यानी उन चीज़ों में से कि जिनके हलाक करने का हुक्म था) उसको ऐसा कर छोड़ती थी जैसे कोई चीज़ गलकर रेज़ा-रेज़ा हो जाती है। (42) और समूद के किस्से में भी इबरात है, जबकि उनसे कहा गया, और थोड़े दिनों चैन-सुकून ले लो। (43) सो (इस डराने पर भी) उन लोगों ने अपने रब के हुक्म से सरकशी की, सो उनको अज़ाब ने आ पकड़ा और वे (उस अज़ाब के आसार को) देख रहे थे। (44) सो न तो खड़े ही हो सके और न (हमसे) बदला ले सके। (45) और उनसे पहले नूह (अलैहिस्सलाम) की कौम का यही हाल हो चुका था। (यानी इस सबब से कि) वे बड़े नाफ़रमान लोग थे। (46) ♦

और हमने आसमानों को (अपनी) कुदरत से बनाया और हम बड़ी कुदरत वाले हैं। (47) और हमने ज़मीन को फ़र्श (के तौर पर) बनाया, सो हम (कैसे) अच्छे बिछाने वाले हैं। (48) और हमने हर चीज़ को दो-दो किस्म बनाया, ताकि तुम (उन बनाई हुई चीज़ों से तौहीद को) समझो। (49) तो तुम अल्लाह ही की (तौहीद की) तरफ़ दौड़ो, मैं तुम्हारे (समझाने के) वास्ते अल्लाह तआला की तरफ़ से खुला डराने वाला (होकर आया) हूँ। (50) और खुदा के साथ कोई और माबूद मत करार दो। मैं तुम्हारे वास्ते अल्लाह तआला की तरफ़ से खुला डराने वाला हूँ। (51) इसी तरह जो (काफ़िर) लोग उनसे पहले हो गुज़रे हैं, उनके पास कोई

1. जब प्यारे मेहमानों ने जो आदमियों की शकल में थे बताया कि हम फ़रिश्ते हैं और हज़रत इब्राहीम खलीलुल्लाह का ख़ौफ़ जो उनके अचानक ज़ाहिर होने पर तारी हुआ था, जाता रहा तो आपने महसूस किया कि सिर्फ़ लड़के की खुशख़बरी देना इनका मक़सद नहीं था, क्योंकि उसके लिए एक कासिद को भेज देना काफी था। यकीनन ये किसी अहम मामले के लिए भेजे गए हैं। इसलिए दरियाफ़्त फ़रमाया कि आप हज़रात के आने की असली ग़रज़ क्या है?

2. फ़रिश्तों ने बताया कि लूत अलैहिस्सलाम की मुज़्रिम कौम पर पत्थर बरसाकर उनको तहस-नहस करने पर मुतैयन हुए हैं। जो मुज़्रिम जिस पत्थर से हलाक होने वाला है, उसपर उसका नाम भी लिखा है। ग़रज़ यह कि सख़्त पकड़ करने वाले रब ने उनकी सख़्त बुरी हरकतों की सज़ा में जो इनसानियत के लिए शर्म का सबब थी, उनपर कंकरी के पत्थर बरसाए जिससे वे हलाक हो गए।

3. उस क़सबे में लूत अलैहिस्सलाम के घराने के सिवा मुसलमानों का कोई घर न था, उसको बचा लिया गया। आपकी बीवी चूँकि काफ़िरा थी वह भी तमाम कौम की तरह हलाकत के गढ़े में डाल दी गई। लूत अलैहिस्सलाम की बीवी दो हाल से ख़ाली न थी- या तो मुनाफ़िका थी यानी ज़ाहिर में मोमिना और बातिन में काफ़िरा, अगर ऐसा था तो मालूम हुआ कि मुनाफ़िक औरत से (शेष तफ़सीर पृष्ठ 944 पर)

पैगम्बर ऐसा नहीं आया जिसको उन्होंने जादूगर या मजनुँ न कहा हो। (52) क्या इस बात की एक-दूसरे को वसीयत करते चले आते हैं,¹ बल्कि (इस एक ही बात पर जमा होने की वजह यह हुई कि) ये सब-के-सब सरकश लोग हैं? (53) सो आप उनकी तरफ़ तवज्जोह न कीजिए³ क्योंकि आप पर किसी तरह का इल्जाम नहीं। (54) और समझाते रहिए कि समझाना ईमान (लाने) वालों को (भी) नफ़ा देगा। (55) और मैंने जिन्न और इनसान को इसी वास्ते पैदा किया है कि मेरी इबादत किया करें। (56) मैं उनसे (मख़्लूक को) रिज़्क पहुँचाने की दरख्वास्त नहीं करता। और न यह दरख्वास्त करता हूँ कि वे मुझको खिलाया करें। (57) अल्लाह खुद ही सबको रिज़्क पहुँचाने वाला, ताक़त वाला, निहायत कुव्वत वाला है।⁴ (58) तो उन ज़ालिमों के लिए (अल्लाह के इल्म में सज़ा की) भी बारी मुकर्रर है, जैसे (पहले गुज़र चुके) उन्हीं जैसे तरीके वाले लोगों की बारी (मुकर्रर) थी, सो मुझसे (अज़ाब) जल्दी तलब न करें। (59) गरज़ उन काफ़िरों के लिए उस दिन के आने से बड़ी ख़राबी होगी जिसका उनसे वायदा किया जाता है।⁵ (60) ♦

52 सूर: तूर 76

सूर: तूर मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 49 आयतें और 2 रुकूअ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

और कसम है तूर (पहाड़) की (1) और उस किताब की जो लिखी है (2) खुले हुए कागज़ में (3) और (कसम है) बैतुल-मअमूर की।⁶ (4) और (कसम है) ऊँची छत की, (मुराद आसमान है)। (5) और (कसम है) नमकीले पानी के दरिया की, जो (पानी से) भरा हुआ है।⁷ (6) कि बेशक आपके रब का अज़ाब ज़रूर होकर रहेगा। (7) कोई उसको टाल नहीं सकता। (8) (और यह उस दिन ज़ाहिर होगा) जिस दिन आसमान थरथराने लगेगा। (9) और पहाड़ (अपनी जगह से) हट जाएँगे। (10) तो जो लोग झुठलाने वाले हैं (और) जो (झूठ के) मशग़ले में बेहूदगी के साथ लग रहे हैं (11) उनकी उस दिन कमबख़्ती आएगी। (12) जिस दिन कि उनको दोज़ख़ की आग की तरफ़ धक्के देकर लाएँगे। (13) यह वही दोज़ख़ है जिसको तुम झुठलाया करते थे⁸ (14) तो क्या यह (भी) जादू है (देखकर बतलाओ)? या यह कि तुमको (अब भी) नज़र नहीं आता। (15) उसमें दाख़िल हो, फिर चाहे (उसकी) सहाय करना या सहाय न करना, तुम्हारे हक़ में दोनों बराबर हैं।⁹ जैसा तुम करते थे वैसा ही बदला तुमको दिया जाएगा।¹⁰ (16) बेशक मुत्तकी लोग (जन्नत के) बाग़ों और ऐश के सामान में होंगे। (17) (और) उनको जो चीज़ें उनके परवर्दिगार ने दी होंगी उनसे दिल से खुश होंगे, और

(पृष्ठ 942 का शेष) मोमिन का निकाह जायज़ है जब तक कुल्ली तौर पर किसी कुफ़िया अमल को न करे, उस वक़्त तक वह मोमिन के निकाह में रह सकती है। और अगर वह औरत खुलेआम काफ़िरा थी तो उस वक़्त ग़ैर-मुस्लिम औरत से निकाह जायज़ होगा।

4. लूत अलैहिस्सलाम की कौम की बस्ती बिल्कुल तबाह व बर्बाद कर दी गई और उस सरज़मीन पर एक दरिया ज़ाहिर हो गया जो उस हौलनाक हादसे की यादगार 'बहीरा-ए-लूत' के नाम से अब तक मशहूर है। उस दरिया का पानी इतना कड़वा और बदबूदार है कि कोई जानदार उसको इस्तेमाल नहीं कर सकता और उसके किनारे कोई पेड़ भी नहीं उगता।

5. हज़रत लूत अलैहिस्सलाम की तबाहशुदा बस्ती की जगह तमाम लोगों के लिए इब्रत की जगह है। लेकिन बदबख़्त काफ़िर उससे इब्रत हासिल नहीं करते, बल्कि उन्होंने हकीकते हाल के चेहरे पर बात बनाने का मुलम्मा कर रखा है कि उस मक़ाम पर कोयले और गन्धक की खान थी जिसके उड़ने से यह दरिया ज़ाहिर हो गया था। गरज़ यह मक़ाम सिर्फ़ ईमान वालों के लिए इब्रत की जगह है काफ़िर लोग उससे सबक़ नहीं लेते।

6. आगे हक़ तअाला का इरश़ाद है कि आप वाकई बेशक साफ़ तौर पर डराने वाले हैं जैसा कि अभी ज़िक्र हुआ, लेकिन ये आपके मुख़ालिफ़ ऐसे जाहिल हैं कि 'अल्लाह की पनाह!' आपको कभी जादूगर, कभी मजनुँ बताते हैं, सो आप सब्र कीजिए।

1. यानी यह जमा होना तो ऐसा हो गया जैसे एक-दूसरे को कहते चले आते हों कि देखो (शेष तफ़सीर पृष्ठ 946 पर)

उनका परवर्दिगार उनको दोजख के अज़ाब से महफूज़ रखेगा। (18) खूब खाओ और पियो मज़े के साथ, अपने आमाल के बदले में। (19) तकिया लगाए हुए तख्तों पर जो बराबर-बराबर बिछाए हुए हैं, और हम उनका गोरी-गोरी बड़ी-बड़ी आँखों वालियों (यानी हूरों) से विवाह कर देंगे। (20) और जो लोग ईमान लाए और उनकी औलाद ने भी ईमान में उनका साथ दिया, हम उनकी औलाद को भी (दर्जे में) उनके साथ शामिल कर देंगे, और उनके अमल में से कोई चीज़ कम नहीं करेंगे।¹ हर शख्स अपने (कुफ़िया) आमाल में (दोजख में) कैद रहेगा। (21) और हम उनको मेवे और गोश्त जिस किस्म का उनको पसन्द हो दिन-प्रतिदिन बढ़ने वाला देते रहेंगे। (22) (और) वहाँ आपस में (दिल्लगी के तौर पर) शराब के जाम में छीना-झपटी भी करेंगे, उसमें न बक-बक लगेगी (क्योंकि नशा न होगा) और न कोई बेहूदा बात होगी। (23) और उनके पास ऐसे लड़के आएँगे जो ख़ास उन्हीं के लिए होंगे, गोया कि वे हिफ़ाज़त से रखे हुए मोती हैं।² (24) और वे एक-दूसरे की तरफ़ मुतवज्जह होकर बातचीत करेंगे। (25) यह भी कहेंगे कि (भाई) हम तो इससे पहले अपने घर (यानी दुनिया में अपने अन्जाम से) बहुत डरा करते थे। (26) सो खुदा ने हमपर बड़ा एहसान किया और हमको दोजख के अज़ाब से बचा लिया। (27) हम इससे पहले (यानी दुनिया में) उससे दुआएँ माँगा करते थे, वाकई वह बड़ा एहसान करने वाला, मेहरबान है। (28) ♦

तो आप समझाते रहिए क्योंकि आप अल्लाह के फज़ल से न तो काहिन हैं और न मजन्नू हैं³ (जैसा कि ये मुशरिक लोग कहते हैं)। (29) हाँ, ये लोग यूँ (भी) कहते हैं कि यह शायर हैं (और) हम उनके बारे में मौत के हादसे का इन्तिज़ार कर रहे हैं। (30) आप फरमा दीजिए कि (ठीक है) तुम मुन्तज़िर रहो, सो मैं भी तुम्हारे साथ मुन्तज़िर हूँ।⁴ (31) क्या उनकी अक्लें उनको इन बातों की तालीम करती हैं? या यह है कि ये बुरे लोग हैं।⁵ (32) हाँ, क्या यह (भी) कहते हैं कि उन्होंने इस (कुरआन) को खुद घड़ लिया है, बल्कि ये लोग तस्दीक नहीं करते। (33) तो ये लोग इस तरह का कोई कलाम (बनाकर) ले आएँ अगर ये (इस दावे में) सच्चे हैं। (34) (आगे तौहीद के मुताल्लिक गुफ्तगू है कि) क्या ये लोग बग़ैर किसी पैदा करने वाले के खुद-ब-खुद पैदा हो गए हैं, या ये खुद अपने पैदा करने वाले हैं? (35) या उन्होंने आसमान और ज़मीन को पैदा किया है? बल्कि ये लोग (अपनी जहालत की वजह से तौहीद का) यकीन नहीं लाते। (36) क्या इन लोगों के पास तुम्हारे रब के ख़ज़ाने हैं, या ये लोग (इस नुबुव्वत के महकमे के) हाकिम हैं? (37) क्या उनके पास कोई सीढ़ी है कि उसपर (चढ़कर आसमान की) बातें सुन लिया करते हैं? तो उनमें से जो (वहाँ की) बातें सुन आता हो वह (इस दावे पर) कोई साफ़ दलील पेश करे। (38) क्या अल्लाह के लिए बेटियाँ और तुम्हारे लिए

(पृष्ठ 944 का शेष) जो रसूल आए तुम भी हमारी तरह कहना।

2. यानी सबब उस कौल की सरकशी है, चूँकि वह मुशतरक है इसलिए कौल भी मुशतरक हो गया।

3. इस आयत के नाज़िल होने पर सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम को सख्त मलाल हुआ और समझे कि अब वक्फ़ रुक गई और अज़ाब नाज़िल हुआ चाहता है, क्योंकि हक़ तआला ने अपने हबीब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को काफ़िरो की नाफरमानियाँ देखकर ख़ामोश ही रहने और मुँह फेर लेने का हुक्म सादिर फरमा दिया है, लेकिन जब अगली आयत में यह हुक्म नाज़िल हुआ कि आप समझाते रहिए क्योंकि समझाना ईमान लाने वालों को भी नफ़ा देगा, तो सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम के दम में दम आया।

4. हासिल यह कि जब इस इबादत का हुक्म करने से हमारी कोई गरज़ नहीं बल्कि खुद बन्दों ही का नफ़ा है तो उनको इसमें कुछ तरद्दुद न होना चाहिए।

5. यानी जिस तरह गुज़रे हुए ज़मानों के काफ़िरो ने गुनाहों और नाफरमानियों की गठरी बाँध ली थी, उसी तरह मक्का के काफ़िरो ने भी अपने अन्जाम की तबाही का पूरा ज़ख़ीरा जमा कर लिया है, सिर्फ़ इतनी-सी कमी है कि जिस तरह उन अग़लौ पर अल्लाह का अज़ाब आ नाज़िल हुआ था इसी तरह उनपर भी आ गया। और हकीकत में अगर रब्बुल आलमीन को अपने हबीबे पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दिलदारी अज़ाज़ न होती तो अज़ाब के नाज़िल होने में देर ही क्या लगती? लेकिन हज़रत सरदारो अम्बिया सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की (पृष्ठ 944 की बकिया तफ़सीर और पृष्ठ 946 की तफ़सीर पृष्ठ 948-952 पर)

बेटे (तजवीज़ हों)? (39) क्या आप उनसे (अहकाम के पहुँचाने का) कुछ बदला माँगते हैं कि वह तावान उन लोगों को भारी मालूम होता है? (40) क्या उनके पास ग़ैब (का इल्म) है कि ये लिख लिया करते हैं?¹ (41) क्या ये लोग कुछ बुराई करने का इरादा रखते हैं? सो ये काफिर खुद ही (उस) बुराई में गिरफ़्तार होंगे। (42) क्या उनका अल्लाह के सिवा कोई माबूद है? अल्लाह तआला उनके शिर्क से पाक है। (43) और अगर वे आसमान के टुकड़े को देख लें² कि गिरता हुआ आ रहा है तो यूँ कह दें कि यह तो तह-ब-तह जमा हुआ बादल है। (44) तो उनको रहने दीजिए यहाँ तक कि उनको अपने उस दिन से साबका पड़े जिसमें उनके होश उड़ जाएँगे। (45) जिस दिन उनकी तदबीरें उनके कुछ भी काम न आएँगी। और न (कहीं से) उनको मदद मिलेगी। (46) और उन जालिमों के लिए इस (अज़ाब) से पहले भी अज़ाब होने वाला है³ (जैसे कहत, और बदर की लड़ाई में क़त्ल होना) लेकिन उनमें अक्सर को मालूम नहीं। (47) और आप अपने रब की (इस) तजवीज़ पर सब्र से बैठे रहिए कि आप हमारी हिफ़ाज़त में हैं, और (मज्लिस से या सोने से) उठते वक़्त अपने रब की तस्बीह और तारीफ़ बयान किया कीजिए। (48) और रात में भी उसकी तस्बीह किया कीजिए (जैसे इशा की नमाज़) और सितारों से पीछे “यानी उनके छुपने के बाद” भी। (49) ♦

53 सूर: नज्म 23

सूर: नज्म मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 62 आयतें और 3 रुकूअ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

कसम है (आम) सितारे की जब वह छुपने लगे⁴ (1) यह (हर वक़्त) तुम्हारे साथ रहने वाले न (हक़) राह से भटके और न ग़लत रास्ते पर गए⁵ (2) और न आप अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिश से बातें बनाते हैं। (3) उनका इश्राद ख़ालिस वह्य है, जो उनपर भेजी जाती है।⁶ (4) उनको एक फ़रिश्ता तालीम करता है जो बड़ा ताक़तवर है।⁷ (5) पैदाइशी ताक़तवर है। फिर वह फ़रिश्ता (अपनी) असली सूरत पर (आपके सामने) ज़ाहिर हुआ। (6) ऐसी हालत में कि वह (आसमान के) बुलन्द किनारे पर था।⁸ (7) फिर वह फ़रिश्ता (आपके) नज़दीक आया, फिर और आया। (8) सो दो कमानों के बराबर फासला रह गया⁹ बल्कि और भी कम।¹⁰ (9) फिर अल्लाह पाक ने अपने बन्दे पर वह्य नाज़िल फ़रमाई जो कुछ नाज़िल फ़रमाई थी। (10) दिल ने देखी हुई चीज़ में कोई ग़लती नहीं की। (11) तो क्या उन (पैग़म्बर) से उनकी देखी हुई चीज़ में झगड़ा करते हैं। (12) और उन्होंने (यानी पैग़म्बर ने) उस फ़रिश्ते को एक बार और भी (असली सूरत में) देखा है। (13) सिद्दरतुल मुन्तहा के पास।¹¹ (14) उसके करीब जन्नतुल-मअ्वा है। (15) जब उस सिद्दरतुल मुन्तहा को लिपट रही थीं जो चीज़ें लिपट रही थीं।¹² (16) निगाह न तो हटी और न बढ़ी¹³ (17) उन्होंने अपने परवर्दिगार (की

(पिछले पृष्ठ का शेष) दुआ से क़ुरेश पर सख़्त कहत (अकाल) का आया हुआ अज़ाब भी टल गया।

6. सही हदीसों से साबित है कि ख़ाना-ए-काबा के बिल्कुल बराबर में सातवें आसमान पर फ़रिश्तों का ख़ाना-ए-काबा बना हुआ है, उसका नाम ‘बैतुल-मअ्मूर’ (यानी आबाद घर) है। हर दिन उसका तवाफ़ करने के लिए सत्तर हज़ार फ़रिश्ते आते हैं, और जो एक बार तवाफ़ कर चुके हैं क़ियामत तक दूसरी बार उनकी बारी न आएगी।

7. इन क़स्मों में मतलब का इस तौर पर बयान करना है कि क़ियामत के कायम होने की असल ज़रूरत आमाँल का सवाब या अज़ाब है, और बदला दिए जाने में शरई अहकाम असल हैं। फिर बदला दिए जाने के नतीजे में दो चीज़ें अहम हैं- जन्नत और दोज़ख़, और कसम खाने की वजह सूर: हिज़्र आयत ‘लअमूरु-क’ के तहत में और कसम की गरज़-मक़सद सूर: साफ़फ़ात के शुरू में गुज़र चुकी है।

8. यानी जिन आयतों में उसकी ख़बर थी (पृष्ठ 944 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 946, 948 की तफ़सीर पृष्ठ 950-960 पर)

कुदरत) के बड़े-बड़े अज़ूबे देखे हैं।¹ (18) भला तुमने लात और उज्जा (19) और तीसरे मनात के हाल में गौर भी किया है।² (20) क्या तुम्हारे लिए तो बेटे (तजवीज़) हों और खुदा के लिए बेटियाँ? (21) इस हालत में तो यह बहुत बेढंगी तकसीम हुई। (22) यह (ज़िक्र हुए माबूद का) बस नाम-ही-नाम हैं, जिनको तुमने और तुम्हारे बाप-दादाओं ने मुक़र्रर कर लिया है। खुदा तआला ने तो उन (के माबूद होने) की कोई दलील नहीं भेजी। (बल्कि) ये लोग सिर्फ़ बेअसल ख़्यालों पर और अपने नफ़्स की ख़्वाहिश पर चल रहे हैं, हालाँकि उनके पास (रसूल के वास्ते से) उनके रब की जानिब से हिदायत आ चुकी है। (23) क्या इनसान को उसकी हर तमन्ना मिल जाती है? (24) सो खुदा ही के इख़्तियार में है आख़िरत और दुनिया। (25) ♦

और बहुत-से फ़रिश्ते आसमानों में मौजूद हैं, उनकी सिफ़ारिश ज़रा भी काम नहीं आ सकती, मगर इसके बाद कि अल्लाह जिसके लिए चाहें इजाज़त दें और (उसके लिए सिफ़ारिश करने से) राज़ी हों। (26) जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते वे फ़रिश्तों को (खुदा की) बेटी के नाम से नामज़द करते हैं। (27) हालाँकि उनके पास इसपर कोई दलील नहीं, सिर्फ़ बेअसल ख़्यालों पर चल रहे हैं। और यकीनन बेअसल ख़्यालात हक़ बात (के साबित करने) में ज़रा भी फ़ायदेमन्द नहीं होते। (28) तो आप ऐसे शख्स से अपना ख़्याल हटा लीजिए जो हमारी नसीहत का ख़्याल न करे और दुनियावी ज़िन्दगी के सिवा उसको कोई (आख़िरत का मतलब) मकसूद न हो। (29) उन लोगों की समझ की रसाई यही (दुनियावी ज़िन्दगी) है, तुम्हारा परवर्दिगार ख़ूब जानता है कि कौन उसके रास्ते से भटका हुआ है, और वही उसको भी ख़ूब जानता है जो सही रास्ते पर है। ♦ (30) और जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है वह सब अल्लाह ही के इख़्तियार में है, अन्जामकार यह है कि बुरा काम करने वालों को उनके (बुरे) काम के बदले में (ख़ास अन्दाज़ की) जज़ा देगा, और नेक काम करने वालों को उनके नेक कामों के बदले में जज़ा देगा। (31) वे लोग ऐसे हैं कि बड़े गुनाहों से और (उनमें) बेहयाई की बातों से (ख़ास तौर से ज़्यादा) बचते हैं, मगर हल्के-हल्के गुनाह,³ बेशक आपके रब की मफ़िरत बहुत बड़ी है⁴ वह तुमको (और तुम्हारे हालात को उस वक़्त से) ख़ूब जानता है जब तुमको ज़मीन से पैदा किया था, और जब तुम अपनी माओं के पेट में बच्चे थे, तो तुम अपने को नेक और पारसा मत समझा करो। (बस) तक्वे वालों को वही ख़ूब जानता है।⁵ (32) ♦

(पिछले पृष्ठ का शेष) उनको झुटलाते थे, तथा यह कि उन आयतों को जादू कहा करते थे। ख़ैर वह तो तुम्हारे नज़दीक जादू था तो क्या यह भी जादू है? देखकर बतलाओ।

9. न यह होगा कि तुम्हारी हाय-तौबा से नजात हो जाए और न यह होगा कि तुम्हारे मान लेने और झुक जाने और चुप हो जाने पर रहम करके निकाल दिया जाए, बल्कि हमेशा उसी में रहना होगा।

10. यानी तुम कुफ़्र किया करते थे जो कि सख़्त नाफ़रमानी और अल्लाह के बेइन्तिहा और असीमित कमालात का इनकार है, पस बदले में दोज़ख़ का अज़ाब नसीब होगा जो कि सख़्त अज़ाब है और जिसकी कोई हद व सीमा नहीं है।

(तफ़सीर पृष्ठ 946) 1. यानी यह न करेंगे कि उन मुक्तदाओं यानी जिनकी पैरवी की गई है उनके बाज़ आमाल लेकर उनकी औलाद को देकर दोनों को बराबर कर दें, बल्कि मुक्तदा अपने आला दर्जों में बदस्तूर रहेगा और पैरोकार व ताबेदार को भी वहाँ पहुँचा दिया जाएगा।

2. यानी ऐसे हसीन व ख़ूबसूरत लड़के जन्मतियों की ख़िदमत करने वाले होंगे जैसे आबदार मोती, और मोती भी वे जो किसी महफूज़ जगह में अच्छी तरह बन्द करके रखे हों कि उनकी आब और चमक को गर्द व गुबार ने मैला नहीं किया। महफूज़ मोती की आब और चमक आला दर्जे की होती है।

3. काहिन वे थे जो उन शैतानों से ख़बरें हासिल करते जो चोरी-छुपे आसमान तक पहुँचकर आसमानी ख़बरें ले उड़ते थे। फिर काहिन उनमें अपनी तरफ़ से बीस झूठ मिलाकर लोगों को सुनाते और अपने ग़ैब जानने का सिक्का जमाते। मक्का के काफ़िरों ने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर जो तोहमतें लगाई थीं, उनमें एक यह थी कि आप काहिन हैं, यानी खुदा की पनाह! शैतानों से आसमानी ख़बरें हासिल करते हैं।

4. यानी तुम मेरा अन्जाम देखो, (पृष्ठ 946 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 948, 950 की तफ़सीर पृष्ठ 952-964 पर)

तो भला आपने ऐसे शख्स को भी देखा जिसने (दीने हक से) भुँह मोड़ लिया (33) और थोड़ा माल दिया' और (फिर) बन्द कर दिया। (34) क्या उस शख्स के पास (किसी सही ज़रिए से) गैब का इल्म है कि उसको देख रहा है। (35) क्या उसको उस मज़मून की खबर नहीं पहुँची जो मूसा के सहीफों में है (36) और तथा इब्राहीम (अलैहि.) के, जिन्होंने अहकाम पर पूरी तरह अमल किया। (37) (और वह मज़मून) यह (है) कि कोई शख्स किसी का गुनाह अपने ऊपर नहीं ले सकता। (38) और यह कि इनसान को (ईमान के बारे में) सिर्फ अपनी ही कमाई मिलेगी। (39) और यह कि इनसान की कोशिश बहुत जल्द देखी जाएगी। (40) फिर उसको पूरा बदला दिया जाएगा। (41) और यह कि (सबको) आपके रब ही के पास पहुँचना है। (42) और यह कि वही हँसाता है और रुलाता है। (43) और यह कि वही मारता है और जिलाता है। (44) और यह कि वही दोनों किस्म यानी नर और मादा को बनाता है (45) नुत्फे से, जब वह (गर्भ में) डाला जाता है। (46) और यह कि (वायदे के मुताबिक) दोबारा पैदा करना उसके जिम्मे है। (47) और यह कि वही मालदार करता है और सरमाया (देकर महफूज़ और) बाकी रखता है। (48) और यह कि वही मालिक है शिअ्रा (सितारे) का भी² (49) और यह कि उसने पुरानी कौम आद को (उसके कुफ़ की वजह से) हलाक किया³ (50) और समूद को भी, कि (उनमें से) किसी को बाकी न छोड़ा। (51) और उनसे पहले नूह की कौम को (हलाक किया) बेशक वे सबसे बढ़कर ज़ालिम और शरीर थे। (52) और उल्टी हुई बस्तियों को भी फेंक दिया। (53) (और फिर उन बस्तियों को) घेर लिया, जिस चीज़ ने कि घेर लिया। (54) सो तू अपने रब की कौन-कौन-सी नेमत में शक (और इनकार) करता रहेगा? (55) यह (पैगम्बर) भी पहले पैगम्बरों की तरह एक पैगम्बर हैं। (56) (इनको मान लो क्योंकि) वह जल्दी आने वाली चीज़ करीब आ पहुँची है। (57) अल्लाह तआला के अलावा कोई उसका हटाने वाला नहीं। (58) सो क्या (ऐसी खौफ की बातें सुनकर भी) तुम लोग इस (अल्लाह के) कलाम से ताज्जुब करते हो (59) और हँसते हो? और (अज़ाब के खौफ से) रोते नहीं हो? (60) और तुम तकबुर करते हो। (61) सो अल्लाह की इताअत करो और (किसी को उसका शरीक बनाए बग़ैर उसकी) इबादत करो। □ (62) ♦

54 सूर: कमर 37

सूर: कमर मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 55 आयतें और 3 रुकूअ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

कियामत नज़दीक आ पहुँची और चाँद फट गया।¹ (1) और ये लोग अगर कोई मोजिज़ा देखते हैं तो टाल देते हैं और कहते हैं कि यह जादू है जो अभी ख़त्म हुआ जाता है। (2) उन लोगों ने झुठलाया और

(पिछले पृष्ठ का शेष) मैं तुम्हारा अन्जाम देखता हूँ। इसमें इशारे के तौर पर पेशीनगोई (अविष्यवाणी) है कि मेरा अन्जाम कामयाबी है और तुम्हारा अन्जाम घाटा और नाकामी। यह मकसूद नहीं कि तुम मरोगे और मैं नहीं मरूँगा, बल्कि उन लोगों का इससे जो मकसूद था कि इनका दीन नहीं चलेगा, यह मर जाएँगे और दीन मिट जाएगा, ज़वाब में इसका रद्द मकसूद है। चुनौचे ऐसे ही हुआ।

5. उनके अक्ल का दावेदार होने पर उनका यह कौल दलालत करता है कि अगर दीने इस्लाम में कोई ख़ैर और अच्छाई होती तो अदना तबूके के लोग इस्लाम लाने में हमसे आगे न बढ़ जाते। कुरैश के सरदार दूसरे लोगों में अक्ल और समझ वाले मशहूर थे, पस इस आयत में उनकी अक्ल की हालत दिखलाई गई है कि बस तुम्हारी यही अक्ल है जो ऐसी तालीम दे रही है? और अगर यह अक्ल की तालीम नहीं तो ख़ालिस शरारत और ज़िद है।

(तफ़सीर पृष्ठ 948) 1. यानी काफ़िर लोग जो बड़ी पुख्तगी और इस्तिक़लाल के साथ कहा करते हैं कि कियामत हरगिज़ आएगी ही नहीं, और अगर आई भी तो हमको अज़ाब हरगिज़ न होगा। क्या उनके पास लौहे-महफूज़ मौजूद है जिससे गैब की चीज़ों को देखकर इस ज़ोर और पुख्तगी से (पृष्ठ 948 की बकिया तफ़सीर और पृष्ठ 950, 952 की तफ़सीर पृष्ठ 954-966 पर)

अपनी नफ़सानी ख्वाहिशों की पैरवी की, और हर बात को करार आ जाता है। (3) और उन लोगों के पास (तो पहले गुजरी हुई उम्मतों की भी) खबरें इतनी पहुँच चुकी हैं कि उनमें (काफी) इबरत (4) यानी आला दर्जे की समझ और अक्लमन्दी (हासिल हो सकती) है। सो (उनकी कैफ़ियत यह है कि) खौफ़ दिलाने वाली चीज़ें उनको कुछ फ़ायदा ही नहीं देती। (5) तो आप उनकी तरफ़ से कुछ ख़्याल न कीजिए। जिस दिन एक बुलाने वाला फ़रिश्ता (उनको) एक ना-पसन्दीदा चीज़ की तरफ़ बुलाएगा (6) उनकी आँखें (ज़िल्लत की वजह से) झुकी हुई होंगी (और) कब्रों से इस तरह निकल रहे होंगे जैसे टिड्डियाँ फैल जाती हैं। (7) (और फिर निकलकर) बुलाने वाले की तरफ़ दौड़े चले जा रहे होंगे। काफ़िर कहते होंगे कि यह दिन बड़ा सख़्त है। (8) उन लोगों से पहले नूह (अलैहिस्सलाम) की कौम ने झुठलाया, यानी हमारे (ख़ास) बन्दे (नूह अलैहिस्सलाम) को झुठलाया और कहा कि यह मजन्नू है, और नूह (अलैहिस्सलाम) को धमकी दी गई। (9) तो नूह (अलैहिस्सलाम) ने अपने रब से दुआ की कि मैं आजिज़ हूँ सो आप (इनसे) इन्तिक़ाम लीजिए। (10) पस हमने कसरत से बरसाने वाले पानी से आसमान के दरवाज़े खोल दिए (11) और ज़मीन से चश्मे जारी कर दिए, फिर (आसमान और ज़मीन का) पानी उस काम के (पूरा होने के) लिए मिल गया जो (अल्लाह के इल्म में) तजवीज़ हो चुका था। (12) और हमने नूह (अलैहिस्सलाम) को (मोमिनों के साथ) सवार किया तख़्तों और मेख़ों वाली कश्ती पर (13) जो कि हमारी निगरानी में चल रही थी। यह सब कुछ उस शख्स का बदला लेने के लिए किया जिसकी बेक़द्री की गई थी। (14) और हमने इस वाक़िए को इबरत के वास्ते रहने दिया, क्या कोई नसीहत हासिल करने वाला है? (15) फिर (देखो) मेरा अज़ाब और मेरा डराना कैसा हुआ। (16) और हमने कुरआन को नसीहत हासिल करने के लिए आसान कर दिया है,² सो क्या कोई नसीहत हासिल करने वाला है? (17) आद ने (भी अपने पैग़म्बर को) झुठलाया। सो (उसका किस्सा सुनो कि) मेरा अज़ाब और डराना कैसा हुआ। (18) हमने उनपर एक तेज़ हवा भेजी, एक हमेशा रहने वाले नहूसत के दिन में।³ (19) वह हवा लोगों को इस तरह उखाड़-उखाड़ फेंकती थी कि गोया वे उखड़ी हुई खजूरों के तने हैं। (20) सो (देखो) मेरा अज़ाब और डराना कैसा (हौलनाक) हुआ। (21) और हमने कुरआन को नसीहत हासिल करने के लिए आसान कर दिया है, सो क्या कोई नसीहत हासिल करने वाला है? (22) ♦

समूद ने (भी) पैग़म्बरों को झुठलाया (23) और कहने लगे, क्या हम ऐसे शख्स की पैरवी करेंगे जो हमारी जिन्स का आदमी है और अकेला है, तो इस सूरत में हम बड़ी ग़लती और (बल्कि) पागलपन में पड़ जाएँ। (24) क्या हम सबमें से (चुनकर) उसपर वह नाज़िल हुई है, (हरगिज़ ऐसा नहीं) बल्कि यह बड़ा झूठा

(पिछले पृष्ठ का शेष) अपने कलाम को सच्चा साबित करना चाहते हैं।

2. यानी उनकी सरकशी, कुफ़्र और दुश्मनी यहाँ तक बढ़ गई है कि अगर हम उनपर अज़ाब नाज़िल करें और आसमान से कोई टुकड़ा गिरता हुआ देखें, तब भी तो न डरें, बल्कि कहें कि यह तो बादल है चन्द टुकड़े ऊपर नीचे तह-ब-तह जमा होकर गाढ़े और गहरे बादल की सूरत में बारिश बरसाने को जाहिर हुआ है।

3. यानी कियामत के दिन से पहले भी उनको एक और अज़ाब होना है कि वह कब्र का अज़ाब है। या दुनियावी अज़ाब यानी सात साल का कहत और बद्र की लड़ाई में ज़िल्लत के साथ मुसलमानों के हाथों क़त्ल होना।

4. जब सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ज़िबराईल अलैहिस्सलाम के ज़रिए से वह आनी शुरू हुई, आपने नबी बनने के बाद ऐलानिया अपने रसूल होने का दावा किया तो मक्का के काफ़िरों ने अपनी जाती गरज़ों की वजह से बुरा-भला कहना शुरू किया और कहा अफ़सोस! मुहम्मद ने अपने बाप-दादा के दीन से बरग़श्ता होकर एक नया दीन घड़ लिया है। तो उस वक़्त ये आयतें नाज़िल हुईं। और सितारे से या तो सुरैया मुराद है या अम है, यानी सितारा कि जब वह छुपने लगे, यानी जबकि वह गुरुब होता है या जबकि कियामत के दिन टूट पड़ेगा।

5. इस क़सम में नज़ीर है क़सम के जवाब के मज़मून “मा ज़ल्-ल व मा ग़वा” की। यानी जिस तरह सितारा निकलने से छुपने तक उस पूरी की पूरी दूरी और सफ़र में (पृष्ठ 948 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 950, 952, 954 की तफ़सीर पृष्ठ 956-968 पर)

और बड़ा शैखीबाज़ है। (25) उनको बहुत जल्दी (मरते ही) मालूम हो जाएगा कि झूठा (और) शैखीबाज़ कौन था? (26) हम ऊँटनी को निकालने वाले हैं उनकी आजमाइश के लिए, सो उनको देखते-भालते रहना और सब्र से बैठे रहना। (27) और उन लोगों को यह बतला देना कि (कुएँ का) पानी उनमें बाँट दिया गया है, हर एक बारी पर बारी वाला हाज़िर हुआ करेगा। (28) सो उन्होंने अपने साथी (केदार) को बुलाया, सो उसने (ऊँटनी पर) वार किया और मार डाला। (29) सो (देखो) मेरा अज़ाब और डराना कैसा हुआ। (30) हमने उनपर (फ़रिश्ते की) एक ही चीख़ को मुसल्लत किया, सो वे (उससे) ऐसे हो गए जैसे काँटों की बाढ़ लगाने वाले (की बाढ़) का चूरा। (31) और हमने कुरआन को नसीहत हासिल करने के लिए आसान कर दिया है, सो क्या कोई नसीहत हासिल करने वाला है? (32) लूत की कौम ने (भी) पैग़म्बरों को झुठलाया। (33) हमने उनपर पथरों की बारिश बरसाई, सिवाय लूत (अलैहि.) के मुताल्लिकीन के। (यानी मोमिनों के अलावा) कि उनको रात के आखिरी हिस्से में बचा लिया गया (34) अपनी ओर से फ़ज़ल करके। जो शुक्र करता है हम उसे ऐसा ही सिला दिया करते हैं। (35) और (अज़ाब आने से पहले) लूत (अलैहिस्सलाम) ने उनको हमारी पकड़ से डराया था, उन्होंने उस डराने में झगड़े पैदा किए। (36) और उन लोगों ने लूत से उनके मेहमानों को बुरे इरादे से लेना चाहा सो हमने उनकी आँखें चौपट कर दीं कि लो मेरे अज़ाब और डराने का मज़ा चखो। (37) (यह तो उस वक़्त वाकिआ हुआ) और (फिर) सुबह सवेरे उनपर हमेशगी का अज़ाब आ पहुँचा। (38) (और इर्शाद हुआ) कि लो मेरे अज़ाब और डराने का मज़ा चखो। (39) और हमने कुरआन को नसीहत हासिल करने के लिए आसान कर दिया है, सो क्या कोई नसीहत हासिल करने वाला है? (40) ♦

और (फ़िरऔन और) फ़िरऔन वालों के पास भी डराने की बहुत-सी चीज़ें पहुँचीं। (41) उन लोगों ने हमारी (उन) तमाम निशानियों को झुठलाया, सो हमने उनको ज़बरदस्त कुदरत का पकड़ना पकड़ा। (42) क्या तुममें जो काफ़िर हैं उनमें इन (ज़िक्र हुए) लोगों से कुछ फ़ज़ीलत है, या तुम्हारे लिए (आसमानी) किताबों में कोई माफ़ी है? (43) या ये लोग कहते हैं कि हमारी ऐसी जमाअत है जो ग़ालिब ही रहेंगे। (44) जल्द ही (उनकी) यह जमाअत शिकस्त खाएगी और पीठ फेरकर भागेंगे। (45) बल्कि कियामत उनका (असल) वायदा है, और कियामत बड़ी सख़्त और नागवार चीज़ है। (46) ये मुजरिम लोग (यानी काफ़िर) बड़ी ग़लती और बेअक्ली में हैं। (47) जिस दिन ये लोग अपने मुहों के बल जहन्नम में घसीटे जाएँगे तो इनसे कहा जाएगा कि

(पिछले पृष्ठ का शेष) अपनी बाकायदा रफ़्तार से इधर-उधर नहीं हुआ इसी तरह आप अपनी उम्र में गुमराही और ग़लत रास्ते पर जाने से महफूज़ हैं। इसमें साथ ही इस तरफ़ भी इशारा है कि जैसे सितारे से रोशनी देने और रहनुमाई करने का अमल होता है इसी तरह आपसे भी हिदायत व रहनुमाई का अमल होता है, इस वजह से कि आप गुमराही और हक़ रास्ते से हटने से महफूज़ हैं।

फ़ायदा: 'ज़लाल' यह कि बिल्कुल रास्ता भूलकर खड़ा रह जाए, और 'ग़वायत' यह कि ग़लत राह को राह समझकर चलता रहे।

6. वह्म आ़म है चाहे अल्फ़ाज़ की भी हो जिसे कुरआन कहते हैं, चाहे सिर्फ़ मायनों की जो सुन्नत कहलाती है। और चाहे वह्म आंशिक हो या किसी कायदा-ए-कुल्लिया की वह्म हो जिससे आप इज्तिहाद फरमाते हों। इन अल्फ़ाज़ से असल मक़सद काफ़िरों के ख़्याल का इनकार है। यानी आँ हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम खुदा की तरफ़ ग़लत बात की निस्बत नहीं करते।

7. जिबराईल अलैहिस्सलाम की ताक़त का अन्दाज़ा इससे हो सकता है कि कौम लूत की बस्तियाँ एक बाज़ू पर तहतुस्सरा से उठाकर उलट मारी और एक ही चिंघाड़ से कौम समूद के ज़िगर फाड़ दिए।

8. जिबराईल अलैहिस्सलाम नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास दह्या कलबी नाम के एक सहाबी की शक्ल में आया करते थे जो बहुत हसीन व खूबसूरत थे। एक बार आपने जिबराईल अलैहिस्सलाम से फरमाया कि मैं तुम्हें तुम्हारी असल सूरत में भी देखना चाहता हूँ। सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हिरा में थे कि हज़रत जिबराईल अलैहिस्सलाम सूरज के निकलने की जगह पर आसमान के किनारे पर जाहिर हुए। छह सौ पर थे और क़द और जिस्म और परो ने आसमान के दोनों किनारे छुपा रखे थे।

9. अरब वालों की आदत थी कि जब दो शख्स आपस में इन्तिहाई दर्जे का इत्तिफ़ाक़ और एकता करना चाहते तो दोनों अपनी-अपनी कमानें लेकर उनकी तौत को (पृष्ठ 948 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 950, 952, 954, 956 की तफ़सीर पृष्ठ 958-970 पर)

दोज़ख़ (की आग) के लगने का मज़ा चखो। (48) हमने हर चीज़ को अन्दाज़े से पैदा किया।¹ (49) और हमारा हुक्म एक ही बार में ऐसा हो जाएगा जैसे आँख का झपकाना। (50) और हम तुम्हारे ही तरीके वाले जैसे लोगों को हलाक कर चुके हैं, सो क्या कोई नसीहत हासिल करने वाला है? (51) और जो कुछ भी ये लोग करते हैं सब कुछ आमालनामों में (भी लिखा हुआ) है। (52) और हर छोटी बड़ी बात (उसमें) लिखी हुई है। (53) परहेज़गार लोग बागों में और नहरों में होंगे। (54) एक उम्दा मक़ाम में कुदरत वाले बादशाह के पास। (55) ♦

55 सूर: रहमान 97

सूर: रहमान मदीना में नाज़िल हुई। इसमें 78 आयतें और 3 रुकूअ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

रहमान ने (1) कुरआन की तालीम दी। (2) उसने इनसान को पैदा किया। (3) (फिर) उसको बोलना सिखाया। (4) सूरज और चाँद हिसाब के साथ (चलते) हैं। (5) और बग़ैर तने के पेड़ और तनेदार पेड़ (अल्लाह के) फ़रमाँबरदार हैं। (6) और उसी ने आसमान को ऊँचा किया, और उसी ने (दुनिया में) तराजू रख दी (7) ताकि तुम तौलने में कमी-बेशी न करो (8) और इन्साफ़ (और हक़ पहुँचाने) के साथ वज़न को ठीक रखो और तौल को घटाओ मत। (9) और उसी ने मख़्लूक के वास्ते ज़मीन को (उसकी जगह) रख दिया (10) कि उसमें मेवे हैं, और खज़ूर के पेड़ हैं जिन (के फल) पर ग़िलाफ़ होता है। (11) और (उसमें) ग़ल्ला है जिनमें भूसा (भी) होता है² और (उसमें) ग़िज़ा की चीज़ (भी) है। (12) सो ऐ जिन्न और ऐ इनसान! तुम अपने रब की कौन-कौन-सी नेमतों के इनकारी हो जाओगे?³ (13) उसी ने इनसान (की असल यानी आदम अलैहिस्सलाम) को ऐसी मिट्टी से पैदा किया जो ठीकरे की तरह बजती थी। (14) और जिन्नात को ख़ालिस आग से पैदा किया।⁴ (15) सो ऐ जिन्न और ऐ इनसान! तुम अपने रब की कौन-कौन-सी नेमतों के इनकारी हो जाओगे? (16) वह दोनों पूरब और दोनों पश्चिम का मालिक है।⁵ (17) सो ऐ जिन्न और ऐ इनसान! तुम अपने रब की कौन-कौन-सी नेमतों के इनकारी हो जाओगे? (18) उसी ने दो दरियाओं को (देखने में) मिलाया कि (ज़ाहिर में) आपस में मिले हुए हैं (19) (और हकीकत में) उन दोनों के दरमियान में एक (कुदरती) पर्दा है कि दोनों बढ़ नहीं सकते।⁶ (20) सो ऐ जिन्न और ऐ इनसान! तुम अपने रब की

(पिछले पृष्ठ का शेष) आपस में मिला देते, पस दो कमानों का फासला रह जाना निकटता और इत्तिहाद से इशारा होगा।

10. इससे इस तरफ़ इशारा है कि ज़ाहिरी निकटता और ताल्लुक के अलावा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और हज़रत जिबराईल अलैहिस्सलाम में रूहानी मुनासबत भी थी।

11. नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जिबराईल अलैहिस्सलाम को 'शबे मेराज' में दूसरी बार 'सिद्रतुल मुन्तहा' के पास उनकी असल सूरत में देखा था। 'सिदरा' अरबी में बेरी के पेड़ को कहते हैं। 'सिद्रतुल मुन्तहा' सातवें आसमान पर बेरी का एक पेड़ है, फ़रिश्तों के पहुँचने की वही तक सीमा है।

12. एक रिवायत में है कि ऐसे अच्छे रंग वाले सुनहरे परवाने थे कि जिनके देखने से दिल खिंचा जाए। और दूसरी रिवायत में है कि फ़रिश्ते थे यानी उनकी हकीकत यह थी।

13. बल्कि उन चीज़ों को ख़ूब देखा। और जिन चीज़ों के देखने का हुक्म जब तक न हुआ उनकी तरफ़ देखने को आपकी निगाह न बढ़ी, यानी उनको इजाज़त से पहले नहीं देखा। यह आपके हृदय दर्जा इस्तिफ़ाल की दलील है क्योंकि इनसान अजीब चीज़ों से हैरान होकर उन चीज़ों को देखता नहीं (पृष्ठ 948 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 950, 952, 954, 956, 958 की तफ़सीर पृष्ठ 960-972 पर)

कौन-कौन-सी नेमतों के इनकारी हो जाओगे? (21) उन दोनों से मोती और मोंगा बरामद होता है। (22) सो ऐ जिन्न और ऐ इनसान! तुम अपने रब की कौन-कौन-सी नेमतों के इनकारी हो जाओगे? (23) उसी के (इख्तियार और मिल्क में) हैं जहाज़ जो पहाड़ों की तरह ऊँचे खड़े (नज़र आते) हैं। ● (24) सो ऐ जिन्न और ऐ इनसान! तुम अपने रब की कौन-कौन-सी नेमतों के इनकारी हो जाओगे? (25) ♦

जितने (जानदार) रू-ए-ज़मीन पर मौजूद हैं सब फना हो जाएँगे। (26) और (सिर्फ) आपके परवर्दिगार की ज़ात जो कि बड़ाई (वाली) और एहसान वाली है बाकी रह जाएगी। (27) सो ऐ जिन्न और ऐ इनसान! तुम अपने रब की कौन-कौन-सी नेमतों के इनकारी हो जाओगे? (28) उसी से (अपनी-अपनी ज़रूरतें) सब आसमान और ज़मीन वाले माँगते हैं, वह हर वक़्त किसी-न-किसी काम में रहता है। (29) सो ऐ जिन्न और ऐ इनसान! तुम अपने रब की कौन-कौन-सी नेमतों के इनकारी हो जाओगे? (30) ऐ जिन्नात और इनसानो! हम जल्द ही तुम्हारे (हिसाब व किताब के) लिए ख़ाली हुए जाते हैं। (31) सो ऐ जिन्न और ऐ इनसान! तुम अपने रब की कौन-कौन-सी नेमतों के इनकारी हो जाओगे? (32) ऐ जिन्नात और इनसानों के गिरोह! अगर तुमको यह कुदरत है कि आसमान और ज़मीन की हदों से कहीं बाहर निकल जाओ तो (हम भी देखें) निकलो, मगर बग़ैर ज़ोर के नहीं निकल सकते, (और ज़ोर है नहीं, पस निकलने का सवाल ही पैदा नहीं होता)। (33) सो ऐ जिन्न और ऐ इनसान! तुम अपने रब की कौन-कौन-सी नेमतों के इनकारी हो जाओगे? (34) तुम दोनों पर (क़ियामत के दिन) आग का शोला और धुआँ छोड़ा जाएगा, फिर तुम (उसको) हटा न सकोगे। (35) सो ऐ जिन्न और ऐ इनसान! तुम अपने रब की कौन-कौन-सी नेमतों के इनकारी हो जाओगे? (36) गरज़ जब (क़ियामत आएगी जिसमें) आसमान फट जाएगा और ऐसा सुख हो जाएगा जैसे सुख नरी (यानी चमड़ा) (37) सो ऐ जिन्न और ऐ इनसान! तुम अपने रब की कौन-कौन-सी नेमतों के इनकारी हो जाओगे? (38) तो उस दिन (अल्लाह के मालूम करने के लिए) किसी इनसान और जिन्न से उसके जुर्म के मुताल्लिक न पूछा जाएगा। (39) सो ऐ जिन्न और ऐ इनसान! तुम अपने रब की कौन-कौन-सी नेमतों के इनकारी हो जाओगे? (40) मुजरिम लोग अपने हुलिये से (कि चेहरे के काला होने और आँखों के नीला होने की वजह से) पहचाने जाएँगे सो (उनके) सर और पाँव पकड़ लिए जाएँगे। (41) सो ऐ जिन्न और ऐ इनसान! तुम अपने रब की कौन-कौन-सी नेमतों के इनकारी हो जाओगे? (42) यह है वह जहन्नम जिसको मुजरिम लोग झुठलाते थे। (43) वे लोग दोज़ख़ के इर्द-गिर्द ख़ीलते हुए पानी के दरमियान घूमते होंगे। (44) सो ऐ जिन्न और ऐ इनसान! तुम अपने रब की कौन-कौन-सी नेमतों के इनकारी हो जाओगे? (45) ♦

और जो शख्स अपने रब के सामने खड़ा होने से (हर वक़्त) डरता रहता है, उसके लिए (जन्नत में) दो बाग़ होंगे। (46) सो ऐ जिन्न और ऐ इनसान! तुम अपने रब की कौन-कौन-सी नेमतों के इनकारी हो जाओगे? (47) (और वे) दोनों बाग़ बहुत ज़्यादा शाख़ों वाले होंगे। (48) सो ऐ जिन्न और ऐ इनसान! तुम

(पिछले पृष्ठ का शेष) जिनके देखने को कहा जाता है, और उन चीज़ों को देखता है जिनके देखने की मनाही की गई हो।

(तफ़सीर पृष्ठ 950)

1. वे अज़ूबे मेराज की हदीसों में ज़िक्र किए गए हैं- जैसे अम्बिया अलैहिमुस्सलाम से मुलाकात, रूहों को देखना, जन्नत की सैर वगैरह। बाज़ मुफ़स्सरीन ने सूर: नज्म की इन आयतों की तफ़सीर अल्लाह तआला के दीदार के साथ की है लेकिन मुस्लिम शरीफ़ में उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा की रिवायत से इन आयतों की तफ़सीर हज़रत जिबराईल को देखने के साथ खुद सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से नक़ल की गई है। और शुरैक की रिवायत जो बुख़ारी शरीफ़ में है उससे यह शुब्हा पड़ता है कि शायद ये आयतें अल्लाह तआला की नज़दीकी और कुर्ब पर महमूल हों, सो इमाम नववी ने नक़ल किया है कि शुरैक हाफ़िज़े हदीस नहीं थे।

2. अरब में बुत तो बहुत थे, मगर इन तीनों को ख़ास करने की वजह उनका बड़ा और मशहूर होना है। तो इससे जो छोटे बुत थे उनका माबूद होना और (पृष्ठ 950 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 952, 954, 956, 958, 960 की तफ़सीर पृष्ठ 962-976 पर)

अपने रब की कौन-कौन-सी नेमतों के इनकारी हो जाओगे? (49) उन दोनों बागों में दो चश्मे होंगे कि बहते चले जाएंगे। (50) सो ऐ जिन्न और ऐ इनसान! तुम अपने रब की कौन-कौन-सी नेमतों के इनकारी हो जाओगे। (51) उन दोनों बागों में हर मेवे की दो-दो किस्में होंगी। (52) सो ऐ जिन्न और ऐ इनसान! तुम अपने रब की कौन-कौन-सी नेमतों के इनकारी हो जाओगे? (53) वे लोग तकिया लगाए ऐसे फर्शों पर बैठे होंगे जिनके अस्तर मोटे रेशम के होंगे,¹ और उन दोनों बागों का फल बहुत नज़दीक होगा। (54) सो ऐ जिन्न और ऐ इनसान! तुम अपने रब की कौन-कौन-सी नेमतों के इनकारी हो जाओगे? (55) उनमें नीची निगाह वालियाँ (यानी हूरें) होंगी, कि उन (जन्नती) लोगों से पहले उनपर न तो किसी आदमी ने तुसरुफ़ किया होगा और न किसी जिन्न ने। (56) सो ऐ जिन्न और ऐ इनसान! तुम अपने रब की कौन-कौन-सी नेमतों के इनकारी हो जाओगे? (57) गोया वे याकूत और मरजान हैं। (58) सो ऐ जिन्न और ऐ इनसान! तुम अपने रब की कौन-कौन-सी नेमतों के इनकारी हो जाओगे? (59) भला हृद दर्जा इताअत का बदला इनायत के अलावा और भी कुछ हो सकता है?² (60) सो ऐ जिन्न और ऐ इनसान! तुम अपने रब की कौन-कौन-सी नेमतों के इनकारी हो जाओगे? (61) और उन दोनों बागों से कम दर्जे में दो बाग और हैं। (62) सो ऐ जिन्न और ऐ इनसान! तुम अपने रब की कौन-कौन-सी नेमतों के इनकारी हो जाओगे? (63) वे दोनों बाग गहरे सब्ज होंगे।³ (64) सो ऐ जिन्न और ऐ इनसान! तुम अपने रब की कौन-कौन-सी नेमतों के इनकारी हो जाओगे? (65) उन दोनों बागों में दो चश्मे होंगे जो कि जोश मारते होंगे। (66) सो ऐ जिन्न और ऐ इनसान! तुम अपने रब की कौन-कौन-सी नेमतों के इनकारी हो जाओगे? (67) उन दोनों बागों के अन्दर मेवे और खजूरें और अनार होंगे। (68) सो ऐ जिन्न और ऐ इनसान! तुम अपने रब की कौन-कौन-सी नेमतों के इनकारी हो जाओगे? (69) उनमें अच्छे गुण वाली खूबसूरत औरतें होंगी (यानी हूरें)। (70) सो ऐ जिन्न और ऐ इनसान! तुम अपने रब की कौन-कौन-सी नेमतों के इनकारी हो जाओगे? (71) वे औरतें गोरी रंगत की होंगी (और) खेमों में महफूज़ होंगी। (72) सो ऐ जिन्न और ऐ इनसान! तुम अपने रब की कौन-कौन-सी नेमतों के इनकारी हो जाओगे? (73) (और) इन (जन्नती) लोगों से पहले उनपर न तो किसी आदमी ने तसरुफ़ किया होगा और न किसी जिन्न ने। (74) सो ऐ जिन्न और ऐ इनसान! तुम अपने रब की कौन-कौन-सी नेमतों के इनकारी हो जाओगे? (75) वे लोग हरे नक्श वाले और अजीब खूबसूरत कपड़ों (के फर्शों) पर तकिया लगाए बैठे होंगे। (76) सो ऐ जिन्न और ऐ इनसान! तुम अपने रब की कौन-कौन-सी नेमतों के इनकारी हो जाओगे? (77) बड़ा बरकत वाला नाम है आपके रब का, जो बड़ाई वाला और एहसान वाला है।⁴ (78) ♦

(पिछले पृष्ठ का शेष) अच्छी तरह बातिल हो गया।

3. यानी हल्के-हल्के गुनाह अगर कभी-कभार हो जाएँ तो जिस नेक काम करने का यहाँ ज़िक्र है, उसमें उनसे ख़लल नहीं आता।

तंबीह: छोटे गुनाहों को अलग करने का मतलब यह नहीं कि छोटे गुनाह करने की इजाज़त है।

4. गुनाहों में फँसे हुए लोगों को अपने गुनाहों और बुराइयों की तलाफी से हिम्मत न हारना चाहिए। अगर खुदा-ए-गफ़ूर चाहे कुछ व शिर्क के सिवा तमाम दूसरे गुनाहों को महज़ अपने फ़जल से माफ़ कर देता है, तो तलाफी से क्यों माफ़ न करेगा? इसी तरह नेक अमल करने वालों को अपने आमाल पर घमण्ड और तकबुर न होना चाहिए, क्योंकि कभी-कभी नेकियों में भी छुपे तौर पर ऐसे ऐब और ख़राबियाँ शामिल हो जाती हैं कि वे नेकियाँ क़बिले क़बूल नहीं रहती, और अमल करने वाले को उस तरफ़ ध्यान न होने से उनकी इतिला नहीं होती, लेकिन खुदा-ए-अलीम को उनका इल्म होता है। पस ज़ाहिर है कि जब वह नेकी मक़बूल नहीं तो नेकोकार होने का मदार नहीं हो सकती, फिर घमण्ड और बड़ाई कैसी?

(पृष्ठ 950 की बकिया तफ़सीर और पृष्ठ 952, 954, 956, 958, 960, 962 की तफ़सीर पृष्ठ 964-977 पर)

56 सूर: वाकिअ: 46

सूर: वाकिअ: मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 96 आयतें और 3 रुकूअ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

जब कियामत कायम होगी। (1) जिसके कायम होने में कोई झूठ नहीं है। (2) तो वह (बाज़ को) पस्त कर देगी (और बाज़ को) बुलन्द कर देगी। (3) जबकि ज़मीन को सख्त ज़लजला आएगा। (4) और पहाड़ बिलकुल टुकड़े-टुकड़े हो जाएंगे। (5) फिर वे मुन्तशिर गुबार हो जाएंगे। (6) और तुम तीन किस्म के हो जाओगे। (7) सो जो दाहिने वाले हैं, वे दाहिने वाले कैसे अच्छे हैं। (8) और जो बाएँ वाले हैं, वे बाएँ वाले कैसे बुरे हैं। (9) और जो आला दर्जे के हैं वे तो आला ही दर्जे के हैं। (10) (और) वे (अल्लाह के साथ) खास निकटता रखने वाले हैं। (11) ये (निकटता रखने वाले) लोग आराम के बागों में होंगे। (12) उनका एक बड़ा गिरोह तो अगले लोगों में से होगा। (13) और थोड़े पिछले लोगों में से होंगे। (14) (वे लोग) सोने के तारों से बुने हुए तख्तों पर (15) तकिया लगाए आमने-सामने बैठे होंगे। (16) उनके आस-पास ऐसे लड़के जो हमेशा लड़के ही रहेंगे ये चीज़ें लेकर आना-जाना किया करेंगे- (17) आबखोरे और आफताबे “यानी ढक्कनदार लोटे और डोंगे” और ऐसा जामे-शराब जो बहती हुई शराब से भरा जायेगा। (18) न उससे उनको सरदर्द होगा और न उससे अक्ल में फ़तूर आयेगा। (19) और मेवे जिनको वे चाहेंगे। (20) और परिन्दों का गोश्त जो उनको पसन्दीदा होगा (21) और (उनके लिए) गोरी-गोरी बड़ी-बड़ी आँखों वाली औरतें होंगी (यानी हूरें)। (22) जैसे (हिफ़ाज़त से) छुपाकर रखा हुआ मोती। (23) यह उनके आमाल के बदले में मिलेगा। (24) (और) वहाँ न बक-बक सुनेंगे और न कोई (और) बेहूदा बात। (25) बस (हर तरफ़ से) सलाम की आवाज़ आएगी। (26) और जो दाहिने वाले हैं, वे दाहिने वाले कैसे अच्छे हैं। (27) वे उन बागों में होंगे जहाँ बगैर काँटों की बेरियाँ होंगी (28) और तह-ब-तह केले होंगे। (29) और लम्बा-लम्बा साया होगा। (30) और चलता हुआ पानी होगा। (31) और कसरत से मेवे होंगे। (32) जो न ख़त्म होंगे और न उनकी रोक-टोक होगी। (33) और ऊँचे-ऊँचे फ़र्श होंगे। (34) हमने (वहाँ की) उन औरतों को

(पिछले पृष्ठ का शेष) 5. कि फ़लों शख्स परहेज़गार है और फ़लों नहीं। अगरचे देखने में परहेज़गारी के अफ़आल दोनों से सादिर होते हैं। पस नेक काम करने वालों को घमण्ड और नाज़ न चाहिए क्योंकि नेकोकारी का मदार ख़ात्मे पर है और अपने ख़ात्मे का हाल किसी को मालूम नहीं, यह चीज़ सिर्फ़ खुदा के इल्म में है।

(तफ़सीर पृष्ठ 952) 1. यह आयत हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु के बाप वलीद बिन मुगीरा के बारे में नाज़िल हुई थी। वह सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ईमान ले आया, और जब वह ईमान लाकर घर को जा रहा था तो उसका एक दोस्त जो उसके इस्लाम का हाल सुन चुका था रास्ते में मिला, कहने लगा वलीद! मुझको सख्त ताज़्जुब और अफ़सोस है कि तू अपने बाप-दादा का दीन और अपने बड़ों का तरीक़ा छोड़कर एक नए दीन में दाख़िल हो गया है। वलीद कहने लगा कि मुझे अल्लाह के अज़ाब का ख़ौफ़ हुआ इसलिए दीने इस्लाम क़बूल कर लिया। वह बोला, अगर आख़िरत के अज़ाब का अन्देशा है तो मुझको माल अता करो मैं तुम्हारे सारे गुनाह अपने ज़िम्मे ले लेता हूँ। वलीद ने थोड़ा-सा माल दिया और जिस क़द्र माल मुकर्रर हुआ था वह भी पूरा न दिया और कागज़ लिखवा कर उसपर शहादतें करा लीं और मुशिरक बनकर मुत्तइन हो बैठा कि ख़ूब जान बची। थोड़ी-सी रक़म खर्च करने पर ख़ैर गुज़री कि अज़ाब का खटका जाता रहा। उसके बारे में यह आयत नाज़िल हुई। इससे मालूम हुआ कि ऐसा शख्स दूसरों को नफ़ा पहुँचाने के लिए क्या खर्च करेगा जब अपने ही मतलब के लिए पूरा खर्च न कर सका।

2. ‘शिअरा’ एक सितारे का नाम है जो सख्त गर्मी में निकलता है। ख़ुज़ाआ कबीले के लोग उसकी पूजा करते थे, इसलिए खास तौर पर (पृष्ठ 952 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 954, 956, 958, 960, 962, 964 की तफ़सीर पृष्ठ 966-977 पर)

खास तौर पर बनाया है। (35) यानी हमने उनको ऐसा बनाया कि वे कुंवारीयों हैं, (36) महबूबा हैं, हम-उम्र हैं। (37) ये सब चीजें दाहिने वालों के लिए हैं। (38) ♦

उन (दाहिने वालों) का एक बड़ा गिरोह अगले लोगों में से होगा। (39) और एक बड़ा गिरोह पिछले लोगों में से होगा। (40) और जो बाएँ वाले हैं, वे बाएँ वाले कैसे बुरे हैं। (41) वे लोग आग में होंगे और खौलते हुए पानी में (42) और काले धुएँ के साये में (43) जो न ठन्डा होगा और न खुशी व राहत देने वाला होगा। (44) वे लोग उससे पहले (यानी दुनिया में) बड़ी खुशहाली में रहते थे। (45) और बड़े भारी गुनाह (यानी शिर्क व कुफ्र) पर इसरार किया करते थे। (46) और यूँ कहा करते थे कि जब हम मर गए और मिट्टी और हड्डियाँ (होकर) रह गए, तो क्या (उसके बाद) हम दोबारा ज़िन्दा किए जाएँगे (47) और क्या हमारे अगले बाप-दादा भी (ज़िन्दा किए जाएँगे)? (48) आप कह दीजिए कि सब अगले और पिछले (49) जमा किए जाएँगे एक मुकर्रर की हुई तारीख के वक़्त पर (50) फिर (जमा होने के बाद) तुमको ऐ गुनराहो, झुठलाने वालो! (51) ज़क्कूम के पेड़ से खाना होगा। (52) फिर उससे पेट भरना होगा। (53) फिर उसपर खौलता हुआ पानी पीना होगा। (54) फिर पीना भी प्यासे ऊँटों के जैसा। (55) (गरज़) उन लोगों की कियामत के दिन यह दावत होगी। (56) हमने तुमको (पहली बार) पैदा किया है (जिसको तुम भी तस्लीम करते हो), फिर तुम तस्दीक क्यों नहीं करते? (57) अच्छा फिर यह बतलाओ तुम जो (औरतों के गर्भ में) वीर्य पहुँचाते हो। (58) उसको तुम आदमी बनाते हो या हम बनाने वाले हैं? (59) हम ही ने तुम्हारे दरमियान मौत को (मुतैयन वक़्त पर) तय कर रखा है और हम इससे आजिज़ नहीं हैं (60) कि तुम्हारे जैसे और (आदमी) पैदा कर दें और तुमको ऐसी सूरत में बना दें जिनको तुम जानते ही नहीं। (61) और तुमको पहली पैदाइश का इल्म हासिल है फिर तुम क्यों नहीं समझते? (62) अच्छा फिर यह बतलाओ कि तुम जो कुछ (बीज वगैरह) बोते हो, (63) उसको तुम उगाते हो या हम उगाने वाले हैं? (64) अगर हम चाहें तो उस

(पिछले पृष्ठ का शेष) उसका ज़िक्र फरमाया कि जिसको तुम अपना माबूद समझते हो उसका मालिक भी वही परवर्दिगार आलम है।

3. यह 'आदे उल्ला' हज़रत हूद और हज़रत लूत अलैहिमस्सलाम की कौम थी, और 'दूसरी आद' आदे इरम कहलाते हैं।

4. यानी कियामत के नज़दीक होने की ख़बरों को तस्दीक करने वाला भी जाहिर हो गया। और उसका तस्दीक करने वाला होना इस तरह है कि चाँद का टुकड़े होना रसूलल्लाहु सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मोजिज़ा है जिससे नुबुव्वत साबित होती है। और नबी का हर कौल सच्चा है। पस आपका कियामत के नज़दीक होने की ख़बर देना भी सच है। इससे डराने वाले का काबिले एतबार होना साबित हो गया। चाँद का टुकड़े होना कियामत के बरहक होने की इस लिहाज़ से एक दलील है कि जिस तरह चाँद के दो टुकड़े हो गए इसी तरह कियामत के दिन आसमान और ज़मीन, चाँद-सूरज सब टूट-फूट जाएँगे। चाँद के टुकड़े होने वाले मोजिज़े का वाकिआ यह है कि हज़ का मौसम था, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आधी रात के वक़्त कबीलों में तब्तीग़ के लिए तशरीफ़ ले गए। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु और बाज़ दूसरे सहाबा भी आपके साथ थे। इतिफ़ाक़ से कुरैश के चन्द सरदार आपको रास्ते में मिल गए। वे आपको कबीलों की तरफ़ जाते हुए देखकर कहने लगे, मुहम्मद! तुम चुपके-चुपके बाहर के लोगों को अपना पैरोकार बनाते हो लेकिन हम लोगों को अपनी सच्चाई की कोई निशानी दिखाकर अपने साथ मिलाने की कोशिश क्यों नहीं करते? आपने फरमाया कि तुम लोग तो मेरी बात ही नहीं सुनते, ऐसी हालत में तुम्हें मेरे हक़ पर और सच्चा होने का क्योंकर यकीन हो सकता है? उन्होंने कहा कि सच्चा होने की कोई निशानी दिखाओ तो हम ज़रूर मानेंगे। अबू जहल ने चाँद की तरफ़ इशारा करके कहा, 'अच्छा अगर तुम सच्चे हो तो हमारे सामने इस चाँद को दो टुकड़े करके दिखा दो' आपने फरमाया कि अगर ऐसा हो जाए तो मुझे सच्चा नबी यकीन करोगे? अबू जहल और कुरैश के दूसरे सरदार बोले हाँ, हम तुम्हें सच्चा नबी मान लेंगे। आपने फरमाया कि आसमान की तरफ़ देखो, फ़ौरन चाँद दो टुकड़े हो गया। एक टुकड़ा हिरा पहाड़ के पूरब की तरफ़ उतर आया और दूसरा पश्चिम की तरफ़ हो लिया, पहाड़ दोनों के बीच में था, फिर दोनों हिस्से ऊपर की तरफ़ चढ़े और आपस में मिल गए। दिल के काले कुरैश के सरदार हक़ की पैरवी करने के बजाय कहने लगे कि वाकई यह शख्स बड़ा जादूगर है, इस चाँद पर और हमारी आँखों पर जादू कर दिया है।

(पृष्ठ 954, 956, 958, 960, 962, 964, 966 की तफ़सीर पृष्ठ 968-977 पर)

(पैदावार) को चूरा-चूरा कर दें, फिर तुम हैरान होकर रह जाओगे। (65) कि (अबकी बार तो) हमपर तावान ही पड़ गया। (66) बल्कि हम बिल्कुल ही महसूस रह गए (यानी सारा ही सरमाया गया गुज़रा)। (67) अच्छा फिर यह बतलाओ कि जिस पानी को तुम पीते हो (68) उसको बादल से तुम बरसाते हो या हम बरसाने वाले हैं? (69) अगर हम चाहें तो उसको कड़वा कर डालें, सो तुम शुक्र क्यों नहीं करते? (70) अच्छा फिर यह बतलाओ जिस आग को तुम सुलगाते हो (71) उसके पेड़ को तुमने पैदा किया है या हम पैदा करने वाले हैं? (72) हमने उसको याद दिलाने की चीज़ और मुसाफ़िरो के फायदे की चीज़ बनाया है। (73) सो आप बड़ी शान वाले परवर्दिगार के नाम की तस्बीह कीजिए। ▲ (74) ♦

सो मैं कसम खाता हूँ सितारों के छुपने की। (75) और अगर तुम गौर करो तो यह एक बड़ी कसम है। (76) कि यह एक काबिले एहतिराम कुरआन है। (77) जो एक महफूज़ किताब (यानी लौहे-महफूज़) में दर्ज है (78) कि उसको पाक फरिश्तों के अलावा कोई हाथ नहीं लगाने पाता। (79) यह रब्बुल आलमीन की तरफ से भेजा हुआ है। (80) सो क्या तुम लोग इस कलाम को सरसरी बात समझते हो? (81) और झुठलाने को अपनी गिज़ा बना रहे हो? (82) सो जिस वक़्त रूह हलक तक आ पहुँचती है (83) और तुम उस वक़्त तका करते हो (84) और हम (उस वक़्त) उस (मरने वाले) शख्स के तुमसे भी ज़्यादा नज़दीक होते हैं, लेकिन तुम समझते नहीं हो। (85) तो (हकीकत में) अगर तुम्हारा हिसाब-किताब होने वाला नहीं है (86) तो तुम उस रूह को (बदन की तरफ) फिर क्यों नहीं लौटाते, अगर तुम सच्चे हो। (87) फिर (जब कियामत आएगी तो) जो शख्स अल्लाह के करीबी लोगों में से होगा उसके लिए तो राहत है। (88) और (फराग़त की) गिज़ाएँ हैं और आराम की जन्नत है। (89) और जो शख्स दाहिने वालों में से होगा (90) तो उससे कहा जाएगा कि तेरे लिए अमन व अमान है कि तू दाहिने वालों में से है। (91) और जो शख्स झुठलाने वालों (और) गुमराहों में से होगा (92) तो ख़ौलते हुए पानी से उसकी दावत होगी। (93) और दोज़ख में दाख़िल

(तफ़सीर पृष्ठ 954) 1. मुराद नूह अलैहिस्सलाम है। और चूँकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और अल्लाह तआला के हुक्म में आपस में ताल्लुक है इसमें अल्लाह के साथ कुफ़ करना भी आ गया।

2. यानी आसान कर दिया सबके लिए उमूमन इस वजह से कि अपने बयान में बिल्कुल वाज़ेह है, और अरब वालों के लिए हिस्सा था इस वजह से कि ज़बान अरबी है।

फ़ायदा: इसका सीधा मतलब यह है कि शौक दिलाने और डराने के मुताल्लिक कुरआन में जो मज़मून हैं वे निहायत साफ़ और वाज़ेह हैं, और अहक़ाम के निकालने की जुज़ूहात का बारीक और गहरा होना तो खुद ज़ाहिर है।

3. यानी वह ज़माना उनके हक़ में हमेशा के लिए इसलिए मन्हूस रहा कि उस दिन जो अज़ाब आया वह अज़ाब बरज़ख़ (यानी मौत के बाद कियामत से पहले ज़माने) से मिला हुआ हो गया, फिर अज़ाब काफ़िरो के लिए कभी ख़त्म होने वाला या हटने वाला न होगा।

(तफ़सीर पृष्ठ 956) 1. चूँकि अल्लाह की उस ज़ैटनी के पानी पीते वक़्त दूसरे जानवर घाट पर पानी पीने नहीं आ सकते, इसलिए उसमें और तुममें पानी तफ़सीम कर दिया गया है, कि एक दिन यह पानी पिए और दूसरे दिन तुम्हारे जानवर पिएँ। और हर फ़रीक़ अपनी बारी के दिन पानी पीने के लिए हाज़िर हुआ करे, न उसकी बारी में तुम्हारे मवेशी आएँ और न उनकी बारी के दिन यह घाट पर जाए।

2. एक बदकार औरत के बहुत मवेशी थे। उसने अपने आशना को जिसका नाम केदार था इस बात पर तैयार किया कि सालेह अलैहिस्सलाम की ज़ैटनी को मार डाले, उसने उसकी कोचें काटकर हलाक कर दिया।

3. कायदा यह है कि खेत की हिफ़ाज़त के लिए उसके इर्द-गिर्द सूखी टहनियों और काटों की बाड़ लगा दिया करते हैं, ताकि जानवर खेत में घुसकर खेती बर्बाद न कर सकें। कुछ मुदत के बाद वह बाड़ पुरानी होकर बर्बाद हो जाती है। इस मिसाल से यह गरज़ है कि हमने पुरानी बाड़ की तरह समूद को पामाल और तबाह कर दिया।

4. यानी उन फरिश्तों के लेने के पीछे पड़ गए जो खूबसूरत लड़कों की शक्ल में हज़रत लूत अलैहिस्सलाम के मेहमान बने थे।

(पृष्ठ 956 की बकिया तफ़सीर और पृष्ठ 958, 960, 962, 964, 966, 968 की तफ़सीर पृष्ठ 970-978 पर)

होना होगा। (94) बेशक यह (जो कुछ जिक्र हुआ) तहकीकी यकीनी बात है। (95) सो अपने (उस) बड़ी शान वाले परवर्दिगार के नाम की तस्बीह कीजिए। (96) ♦

57 सूर: हदीद 94

सूर: हदीद मदीना में नाज़िल हुई। इसमें 29 आयतें और 4 रुकूअ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

अल्लाह की पाकी बयान करते हैं सब जो कुछ आसमानों और ज़मीन में हैं। और वह ज़बरदस्त (और) हिक्मत वाला है। (1) उसी की बादशाही है आसमानों की और ज़मीन की, वही ज़िन्दगी देता है और (वही) मौत देता है, और वही हर चीज़ पर कादिर है। (2) (सब मख्लूक से) वही पहले है और वही पीछे, और वही ज़ाहिर है और वही पोशीदा है, और वह हर चीज़ को ख़ूब जानने वाला है। (3) वह ऐसा है कि उसने आसमानों और ज़मीन को छह दिन (की मात्रा) में पैदा किया, फिर तख़्त पर कायम हुआ वह सब कुछ जानता है जो चीज़ ज़मीन के अन्दर दाख़िल होती है (जैसे बारिश) और जो चीज़ उसमें से निकलती है (जैसे पेड़-पौधे और घास वगैरह) और जो चीज़ आसमान से उतरती है और जो चीज़ उसमें चढ़ती है² और वह तुम्हारे साथ रहता है चाहे तुम लोग कहीं भी हो, और वह तुम्हारे सब आमाल को भी देखता है। (4) उसी की हुक्मत है आसमानों की और ज़मीन की, और अल्लाह ही की तरफ़ तमाम मामलात लौट जाएँगे। (5) वही रात को दिन में दाख़िल करता है (जिससे दिन बड़ा हो जाता है) और वही दिन को रात में दाख़िल करता है (जिससे रात बड़ी हो जाती है) और वह दिल की बातों (तक) को जानता है। (6) तुम लोग अल्लाह तआला पर और उसके रसूल पर ईमान लाओ और (ईमान लाकर) जिस माल में तुमको उसने कायम-मक़ाम किया है उसमें से (उसकी राह में) खर्च करो, सो जो लोग तुममें से ईमान ले आएँ और खर्च करें,³ उनको बड़ा सवाब होगा।⁴ (7) और तुम्हारे लिए इसका क्या सबब है कि तुम अल्लाह पर ईमान नहीं लाते हालाँकि रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तुमको इस बात की तरफ़ बुला रहे हैं कि तुम अपने रब पर ईमान लाओ, और खुद खुदा ने तुमसे अहद लिया था, अगर तुमको ईमान लाना हो। (8) वह ऐसा (रहम करने वाला) है कि अपने (खास) बन्दे (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर साफ़-साफ़ आयतें भेजता है ताकि वह तुमको (कुफ़्र और जहालत की) अंधेरियों से रोशनी की तरफ़ लाए, और बेशक अल्लाह तआला तुम्हारे हाल पर बड़ा

(पिछले पृष्ठ का शेष)

5. मुराद मूसा अलैहिस्सलाम के इरशादत और मोजिज़ात हैं।

6. बद की लड़ाई के दिन मक्का के काफ़िरों ने कहा था कि हमारी भारी जमाअत और तादाद और ज़बरदस्त गिरोह है, हम यकीनन मुसलमानों को शिकस्त देंगे, लेकिन शिकस्त खाई और पीठ फेरकर भागे।

(तफ़सीर पृष्ठ 958)

1. मक्का के काफ़िरों ने तक्दीर के मसले पर कुछ बहस शुरू की, उसके सुबूत में यह आयत नाज़िल हुई। तक्दीर के मसले पर बहस करने से मुसलमानों को सख़्त मनाही है, क्योंकि यह बड़ा नाज़ुक मसला है जो हर एक की समझ में नहीं आ सकता। ज़्यादा खोद-कुरेद करने से ऐसे शुब्हात और वहम पैदा होते हैं जो ईमान को डौंवाडोल करते हैं। ईमान का मन्शा इस बात का पूरी तरह यकीन कर लेना है कि जो कुछ भी हो रहा है वह मुक़द्दर में दाख़िल है, छोटा-बड़ा हर काम शुरू और इब्तिदा ही में लिखा जा चुका है। लेकिन याद रहे कि लौहे-महफूज़ के इस क़दीम लिखने ने किसी शख्स को गुनाह पर मजबूर नहीं कर दिया है।

2. यानी ज़मीन में अनाज पैदा फरमाया जो इन्सान की गिज़ा है और उसके ऊपर भूसे की भी पैदाइश की जो उनके चौपायों की गिज़ा बनता है। पस भूसा भी एक अलग और मुस्तक़िल नेमत हुई।

(पृष्ठ 958 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 960, 962, 964, 966, 968, 970 की तफ़सीर पृष्ठ 972-978 पर)

शफकत करने वाला, बड़ा मेहरबान है। (9) और तुम्हारे लिए इसका क्या सबब है कि तुम अल्लाह की राह में खर्च नहीं करते? हालाँकि सब आसमान और ज़मीन अखीर में अल्लाह ही का रह जाएगा।¹ तुममें से जो लोग मक्का फतह होने से पहले (अल्लाह के रास्ते में) खर्च कर चुके² और लड़ चुके बराबर नहीं, वे लोग दर्जे में उन लोगों से बड़े हैं जिन्होंने (मक्का के फतह होने के) बाद में खर्च किया और लड़े। और (यूँ) अल्लाह तआला ने भलाई (यानी सवाब) का वायदा सबसे कर रखा है, और अल्लाह तआला को तुम्हारे सब आमाल की पूरी खबर है। (10) ♦

कोई शख्स है जो अल्लाह तआला को अच्छी तरह कर्ज के तौर पर दे, फिर खुदा तआला उस (दिए हुए के सवाब) को उस शख्स के लिए बढ़ाता चला जाए और उसके लिए पसन्दीदा अन्न है।³ (11) जिस दिन आप मुसलमान मर्दों और मुसलमान औरतों को देखेंगे कि उनका नूर उनके आगे और उनकी दाहिनी तरफ़ दौड़ता होगा,⁴ आज तुमको खुशख़बरी है ऐसे बाग़ों की जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, जिनमें वे हमेशा रहेंगे (और) यह बड़ी कामयाबी है। (12) (और यह वह दिन होगा) जिस दिन मुनाफ़िक़ मर्द और मुनाफ़िक़ औरतें मुसलमानों से (पुलसिरात पर) कहेंगे कि (ज़रा) हमारा इन्तिज़ार कर लो, हम भी तुम्हारे नूर से कुछ रोशनी हासिल कर लें।⁵ उनको जवाब दिया जाएगा कि तुम अपने पीछे लौट जाओ फिर (वहाँ से) रोशनी तलाश करो, फिर उन (दोनों फ़रीकों) के दरमियान में एक दीवार कायम कर दी जाएगी जिसमें एक दरवाज़ा (भी) होगा। (जिसकी कैफ़ियत यह है कि) उसकी अन्दरूनी ओर में रहमत होगी और बाहरी ओर की तरफ़ अज़ाब होगा। (13) ये (मुनाफ़िक़) उनको पुकारेंगे कि क्या (दुनिया में) हम तुम्हारे साथ न थे? वे (मुसलमान) कहेंगे कि हाँ (थे तो सही) लेकिन तुमने अपने को गुमराही में फँसा रखा था और तुम मुन्तज़िर रहा करते थे, और (इस्लाम के हक़ होने में) तुम शक़ रखते थे, और तुमको तुम्हारी बेहूदा तमन्नाओं ने धोखे में डाल रखा था, यहाँ तक कि तुमपर खुदा का हुक्म आ पहुँचा और तुमको धोखा देने वाले (यानी शैतान) ने अल्लाह के साथ धोखे में डाल रखा था। (14) ग़रज़ आज न तुमसे कोई बदला लिया जाएगा और न काफ़िरों से, तुम सबका ठिकाना दोज़ख़ है, वही तुम्हारा साथी है और वह (वाकई) बुरा ठिकाना है। (15) क्या ईमान वालों के लिए

(पिछले पृष्ठ का शेष) 3. यह आयत तफ़रीअिया इस सूर: में इक़तीस जगह आई है और हर जगह “आला-इ” (यानी नेमतों) का मिस्दाक़ अलग है, इसलिए यह बार-बार आना वैसे ही नहीं, सिर्फ़ अल्फ़ाज़ मुश्तरक़ है, और इन अल्फ़ाज़ के बार-बार आने की वजह से ज़ाहिरी तौर पर इसमें ताकीद का फ़ायदा भी है। और इस किस्म का तकरार (यानी एक जैसे अल्फ़ाज़ का बार-बार आना) जो कि उम्दा साफ़ की हुई मिठाई से ज़्यादा मीठा है, अरब के कलाम (सादी इबारत और शेर) में कसरत से बिला नकीर इस्तेमाल होता है। “तुकज़िज़बानि” (यानी तुम इनकारी हो जाओगे) में ख़िताब़ इनसान और जिन्न को होना इन दलीलों से है- अल्लाह तआला का कौल “ख़-लक़ल् इनसा-न व ख़-लक़ल् जानू-न” (यानी उसने इनसान और जिन्नात को पैदा किया) अल्लाह तआला का कौल “अय्युहस्स-कलानि” अल्लाह तआला का कौल “इन्सुन् कल्हुम व ला जानुन”।

4. कुरआन का असल लफ़ज़ “जानुन्” है, जिस तरह इनसानों के बाप आदम अलैहिस्सलाम हैं और तमाम इनसान उन्हीं की औलाद हैं, इसी तरह तमाम जिन्नात जानू की औलाद हैं, पस वह तमाम जिन्नात का बाप है।

5. जिस तरह गर्मी और जाड़े के मौसम में सूरज निकलने के दो मुख़्तलिफ़ मक़ाम हैं, इसी तरह ग़ुरुब होने के भी अलग-अलग मक़ाम हैं, गोया दो पूरब हुए और दो-पश्चिम हुए।

6. यानी उसमें दो समुद्र पैदा किए। उनमें से एक का पानी खारा और दूसरे का पानी मीठा है, हालाँकि दोनों एक-दूसरे से मिले हुए बह रहे हैं मगर फिर भी उनमें कुदरती दीवार रोक है, कि न खारी समुद्र मीठे को नमकीन बना सकता है और न मीठा समुद्र खारे को मीठा कर सकता है।

(तफ़सीर पृष्ठ 960) 1. चूँकि मकसूद जिन्न और इनसानों के दोनों गिराहों को तंबीह करना है और वे सब ज़मीन पर हैं इसलिए फना होने में ज़मीन वालों का ज़िक़्र किया गया, इस ज़मीन वालों को ख़ास कर देने से जो ज़मीन के अलावा हैं उनके फना होने की नफ़ी लाज़िम नहीं आती। (पृष्ठ 960 की बक़िया और पृष्ठ 962, 964, 966, 968, 970, 972 की तफ़सीर पृष्ठ 974-978 पर)

14

इस बात का वक्त नहीं आया कि उनके दिल खुदा की नसीहत के और जो हक दीन (अल्लाह तआला की तरफ से) नाज़िल हुआ है उसके सामने झुक जाएँ, और उन लोगों की तरह न हो जाएँ जिनको उनसे पहले (आसमानी) किताब मिली थी (यानी यहूदी और ईसाई), फिर (उसी हालत में) उनपर एक लम्बा ज़माना गुज़र गया (और तौबा न की) फिर उनके दिल (ख़ूब ही) सख्त हो गए, और बहुत-से आदमी उनमें के (आज) काफ़िर हैं।¹ (16) यह बात जान लो कि अल्लाह तआला ज़मीन को उसके सुख जाने के बाद ज़िन्दा कर देता है,² हमने तुमसे उसकी नज़ीरें बयान कर दी हैं ताकि तुम समझो। (17) बेशक सदका देने वाले मर्द और सदका देने वाली औरतें और ये (सदका देने वाले) अल्लाह को नेक-नीयती के साथ कर्ज़ दे रहे हैं, वह सदका (सवाब के एतिबार से) उनके लिए बढ़ा दिया जाएगा, और उनके लिए पसन्दीदा अज़्र है। (18) और जो लोग अल्लाह पर और उसके रसूलों पर ईमान रखते हैं, ऐसे ही लोग अपने रब के नज़दीक सिद्दीक और शहीद हैं,³ उनके लिए (जन्नत में) उनका (खास) अज़्र और (पुलसिरात पर) उनका (खास) नूर होगा। और जो लोग काफ़िर हुए और हमारी आयतों को झुठलाया, यही लोग दोज़खी हैं। (19) ♦

तुम ख़ूब जान लो कि (आख़िरत के मुकाबले में) दुनियावी ज़िन्दगी सिर्फ़ खेल-तमाशा और (एक ज़ाहिरी) ज़ीनत और आपस में एक-दूसरे पर फ़ख़र करना और मालों और औलाद में एक-दूसरे से अपने को ज़्यादा बतलाना है।⁴ जैसे बारिश (बरसती) है कि उसकी पैदावार (खेती) किसानों को अच्छी मालूम होती है, फिर वह सूख जाती है सो उसको तू ज़र्द देखता है, फिर वह चूरा-चूरा हो जाती है।⁵ और आख़िरत (की कैफ़ियत यह है कि उस) में सख्त अज़ाब है, और खुदा की तरफ़ से मग़ि़रत और रज़ामन्दी है, और दुनियावी ज़िन्दगी सिर्फ़ धोखे का सामान है। (20) तुम अपने परवर्दिगार की मग़ि़रत की तरफ़ दौड़ो और (इससे बढ़कर) ऐसी जन्नत की तरफ़ जिसकी लम्बाई-चौड़ाई आसमान और ज़मीन की वुसूअत के बराबर है।⁶ वह उन लोगों के वास्ते तैयार की गई है जो अल्लाह पर और उसके रसूलों पर ईमान रखते हैं, यह अल्लाह का फ़ज़ल है वह अपना फ़ज़ल जिसको चाहें इनायत करें, और अल्लाह बड़े फ़ज़ल वाला है।⁷ (21) कोई मुसीबत न दुनिया में आती है और न ख़ास तुम्हारी जानों में मगर वह एक ख़ास किताब (यानी लौहे-महफूज़) में लिखी है, इससे पहले कि हम उन जानों को पैदा करें⁸ यह अल्लाह के नज़दीक आसान काम है। (22) (यह बात इस वास्ते

(पिछले पृष्ठ का शेष) 2. यानी कायनात के इन्तिज़ाम में हर वक्त अपनी मरज़ी के मुताबिक़ हुक्म फरमाता रहता है। जैसी कुछ उसने रोज़े अव्वल में किसी की तकदीर लिख दी उसी के मुताबिक़ किसी को इज़्ज़त देता है और किसी को ज़िल्लत, किसी को अमीर बनाता है और किसी को फ़कीर, किसी को पैदा करता है और किसी को मारता है। पस इस आयत का यह मतलब नहीं कि अफ़आल (कामों) का सादिर होना उसकी ज़ात के लवाज़िम में से है।

3. यानी हिसाब-किताब लेने वाले हैं। मज़ाज़न् और मुबालग़े के तौर पर इसको ख़ाली होने से ताबीर फरमा दिया। और हकीकी मायने इसलिये नहीं हो सकते कि इससे यह लाज़िम आता है कि उससे पहले उसको ऐसी मशगूलियत हो जो दूसरी तरफ़ मुतवज्जह होने से रोकने वाली हो, और यह अल्लाह की ज़ात के लिए मुहाल है।

4. यानी तुम मेरे हुक्म और तकदीर से कहीं निकलकर भाग नहीं सकते, जब तुम लोग कब्रों से निकालकर खड़े किए जाओगे तो ख़ालिस आग के शोले और धुआँ भेज दिया जाएगा, तुममें उसके मुकाबले की ताकत न होगी और न तुम उससे बच सकोगे, वह तुम सबको मैदाने हश्श की जानिब हॉक लाएगी।

5. क्योंकि अल्लाह तआला को सब मालूम है। यानी हिसाब इस गरज़ से न होगा बल्कि खुद उनको मालूम कराने के लिए और जतलाने के लिए सवाल और हिसाब होगा। और यह ख़बर देना भी एक नेमत है।

6. यह पहचान मुज़िर्मों के मुतैयन करने के लिए लाज़िमी नहीं, लेकिन अल्लाह तआला किसी हिक़मत से इस तरह ज़ाहिर कर देंगे और यह ख़बर देना भी एक नेमत है।

7. एक बार हज़ुरत अबू बक्र सिद्दीक रज़ियल्लाहु अन्हु ने कियामत के दिन और हिसाब व किताब और दोज़ख़ और जन्नत का ज़िक्र फरमाया, और इनसान जिन मामलात के लिए पैदा किया गया है और नाफ़रमानी की सूरत में जो अज़ाब और इबरतनाक सज़ाएँ और तकलीफें (पृष्ठ 960 की बकिया तफ़सीर और पृष्ठ 962, 964, 966, 968, 970, 972, 974 की तफ़सीर पृष्ठ 976-978 पर)

बतला दी है) ताकि जो चीज़ तुमसे जाती रहे तुम उसपर (इतना) ग़म न करो, और ताकि जो चीज़ तुमको अता फरमाई है उसपर इतराओ नहीं, और अल्लाह तआला किसी इतराने वाले शैखीबाज़ को पसन्द नहीं करता। (23) जो ऐसे हैं कि (दुनिया की मुहब्बत की वजह से) खुद भी बुख़्त “यानी कन्जूसी” करते हैं और दूसरे लोगों को भी बुख़्त की तालीम करते हैं, और जो शख्स (हक़ दीन से) मुँह मोड़ेगा तो अल्लाह तआला बेपरवाह है, तारीफ़ के लायक़ है। (24) हमने (इसी आख़िरत का सुधार करने के लिए) अपने पैग़म्बरों को खुले-खुले अहक़ाम देकर भेजा, और हमने उनके साथ किताब को और इन्साफ़ करने (के हुक्म) को नाज़िल फरमाया ताकि लोग (अल्लाह के हुक्क और बन्दों के हुक्क में) सही राह पर कायम रहें, और हमने लोहे को पैदा किया जिसमें सख़्त हैबत है, और (इसके अलावा) लोगों के और भी तरह-तरह के फ़ायदे हैं, और (इसलिए लोहा पैदा किया) ताकि अल्लाह तआला जान ले कि बेदेखे उसकी और उसके रसूलों की (यानी दीने हक़ की) कौन मदद करता है, अल्लाह तआला ताक़तवर और ज़बरदस्त है। (25) ♦

और हमने नूह और इब्राहीम (अलैहिमस्सलाम) को पैग़म्बर बनाकर भेजा, और हमने उनकी औलाद में पैग़म्बर और किताब जारी रखी, सो उन लोगों में बाज़े तो हिदायत पाने वाले हुए और बहुत-से उनमें नाफ़रमान थे। (26) फिर उनके बाद और रसूलों को (जो कि मुस्तक़िल शरीअत रखने वाले न थे) एक के बाद एक भेजते रहे और उनके बाद ईसा इब्ने मरियम (अलैहिस्सलाम) को भेजा, और हमने उनको इन्जील दी, और जिन लोगों ने उनकी पैरवी की थी हमने उनके दिलों में शफ़क़त और रहम व तरस पैदा किया। और उन्होंने रहबानियत “यानी दुनिया से बिल्कुल बेताल्लुक हो जाने” को खुद ईजाद कर लिया, हमने उसको उनपर वाजिब न किया था, लेकिन उन्होंने हक़ तआला की रिज़ा के वास्ते उसको इख़्तियार किया था, सो उन्होंने उस (रहबानियत) की पूरी रियायत न की। सो उनमें से जो लोग ईमान लाए⁵ हमने उनको उनका (वायदा किया हुआ) अज़्र दिया, और ज़्यादा उनमें नाफ़रमान हैं। (27) ऐ (ईसा अलैहिस्सलाम पर) ईमान रखने वालो! तुम अल्लाह से डरो और उसके रसूल पर ईमान लाओ, अल्लाह तआला तुमको अपनी रहमत से (सवाब के) दो हिस्से देगा, और तुमको ऐसा नूर इनायत करेगा कि तुम उसको लिए हुए चलते-फिरते होगे और तुमको बख़्श देगा,⁶ और अल्लाह मफ़िरत करने वाला, रहम करने वाला है। (28) (और ये दौलतें तुमको इसलिए देगा) ताकि अहले किताब को यह बात मालूम हो जाए कि उन लोगों को अल्लाह के फ़ज़ल के किसी हिस्से पर (भी) इख़्तियार नहीं, और यह कि फ़ज़ल अल्लाह के हाथ में है वह जिसको चाहे दे दे⁷ और अल्लाह बड़े फ़ज़ल वाला है। (29) ♦

(पिछले पृष्ठ का शेष) उसके लिए तैयार हैं उनको याद करके वह धबरा उठे, और उनपर ऐसा ख़ौफ़ तारी हुआ, कहने लगे कि काश! मैं घास हुआ होता, कि मुझको चौपाए चर लेते, उस वक़्त उनकी शान में यह आयत नाज़िल हुई।

(तफ़सीर पृष्ठ 962)

1. कायदा है कि अबरा (यानी दोहरे कपड़े का ऊपर वाला हिस्सा) अस्तर (नीचे वाले कपड़े) के मुकाबले में ज़्यादा उम्दा होता है। पस जब अस्तर मोटे और मज़बूत रेशम का होगा तो अबरा कैसा कुछ होगा।

2. यानी नेकी का बदला नेकी ही होता है, जैसे उन नेक बन्दों ने नेक अमल किए ऐसे ही उनको हमारी सरकारे आली से नेक सिले अता हुए।

3. कायदे की बात है कि जो चीज़ बहुत ज़्यादा हरे रंग की हो वह स्याही माईल हो जाती है। मतलब यह है कि ये दोनों बाग़ भी ख़ूब हरे-भरे होंगे। ये उन नेक बन्दों के लिए हैं जो रुतबे में पहले लोगों के मुकाबले में कुछ कम हैं।

4. इस सूर: में रब्बुल आलमीन ने जिन्नात और इनसान पर इक़तीस जगह अपनी नेमतें जताई हैं। हर आयत के बाद नेमत का इज़हार सही ज़ौक़ रखने वाले के लिए वह पुरलुफ़ मायने ज़ाहिर करता है जिसको दिल वाले ही समझ सकते हैं। अगरचे अल्फ़ाज़ एक हैं, लेकिन हर मक़ाम में अलग लुफ़ और अलग कैफ़ियत है।

(तफ़सीर पृष्ठ 964)

1. यानी काफ़िरों की ज़िल्लत और मोमिनों की बुलन्दी और तरक्की का उस दिन जुहूर होगा।

(पृष्ठ 964 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 966, 968, 970, 972, 974, 976 की तफ़सीर पृष्ठ 977-980 पर)

(पिछले पृष्ठ का शेष) और अपनी हालत पर कियास करके अल्लाह तआला के लिए जिस्म होने का वहम करना बिलकुल नाजायज़ है। ईमान का मन्शा यह है कि अर्श पर अल्लाह तआला के करार पकड़ने का यकीन रखें लेकिन उसकी कैफियत या तश्बीह से ज़बान बन्द रखें। क्योंकि अल्लाह तआला बेमिस्त और बेनज़ीर है, किसी भी तरह उसके साथ किसी की मिसाल नहीं दी जा सकती।

2. जैसे फ़रिश्ते कि उतरते और चढ़ते हैं, और जैसे अहकाम जो उतरते हैं और आमांल जो चढ़ते हैं।

3. तबूक की लड़ाई में सफ़र दूर का और लम्बा था और जिहाद के सामान की कमी थी इसलिए मालदार सहाबा-ए-किराम को चन्दा देने की तरगीब और नादार व ग़रीब मोमिनो की मदद करने के हुक्म में यह आयत नाज़िल हुई। और चूँकि हज़रत उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु ने लश्कर की तैयारी और सामान से लैस करने में शानदार माली मदद की, उनकी फज़ीलत के इज़हार में आयत “फ़ल्लज़ी-न आमनू मिन्कुम” नाज़िल हुई।

4. इस कायम मक़ाम बनाने के उन्वान में इस तरफ़ इशारा है कि यह माल तुमसे पहले और किसी के पास था और इसी तरह तुम्हारे बाद किसी और के हाथ में चला जाएगा। पस जब यह सदा रहने वाली चीज़ नहीं तो इसको इस तरह जोड़-जोड़कर रखना कि ज़रूरत की जगह में भी खर्च न किया जाए कोरी बेवकूफी है।

(तफ़सीर पृष्ठ 972)

1. पस जब सब माल एक दिन छोड़ना है तो खुशी से क्यों न दिया जाए कि सवाब भी हो।

2. यह आयत हज़रत अबू बक्र सिदीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की फज़ीलत में नाज़िल हुई कि सबसे पहले इस्लाम लाए और अल्लाह की राह में जान व माल दोनों खर्च किए।

3. ख़ैरात का सवाब ज़रूरत और हालात के लिहाज़ से कम और ज्यादा होता है। जिन बुजुर्गाने मिल्लत ने मक्का के फ़तह होने से पहले इस्लाम की मदद की और अल्लाह की राह में दिल खोलकर माल खर्च किया उनका अज़्र व सवाब उन लोगों से कहीं ज्यादा है जिन्होंने मक्का के फ़तह होने के बाद अल्लाह के रास्ते में खर्च किया। क्योंकि मक्का के फ़तह होने के बाद इस्लाम ताक़तवर और इम्दाद से बेपरवाह हो गया था, अगरचे सवाब दोनों गिरोहों को मिलेगा और रब्बे करीम हर एक पर नवाज़िश फ़रमाएगा, लेकिन दोनों फ़रीक़ में आपस में दर्जों का बहुत फ़र्क़ होगा।

4. यह नूर पुलसिरात पर से गुज़रने के लिए उनके साथ होगा।

5. कियामत के दिन जब दोज़ख़ पर पुलसिरात के कायम किए जाने का हुक्म होगा और लोग उसपर से गुज़रने लगेंगे तो मोमिन अपने-अपने आमांल के मुवाफ़िक़ तेज़ी से गुज़र जाएंगे। लेकिन काफ़िर और मुश्रिक लोग कट-कटकर दोज़ख़ में गिरने लगेंगे। हर तरफ़ अंधेरा-ही-अंधेरा होगा, लेकिन ईमान वालों के आगे-आगे और दाहिनी तरफ़ उनके ईमान का नूर उनके साथ-साथ दौड़ता होगा। मुनाफ़िक़ लोग भी जो जाहिर में मुसलमान और बातिन में काफ़िर थे और देखने में दुनिया के अन्दर मुसलमानों के साथी थे उनके नूर की रोशनी में चलने लगेंगे लेकिन उनके जैसी तेज़ रफ़्तार कहां से लाएँ, इसलिए पीछे रह जाएंगे और पुकारेंगे, मुसलमानो! ज़रा ठहरो हमें भी अपने साथ ले चलो, दुनिया में हम भी तुम्हारे साथी थे। मोमिन कहेंगे कि पीछे से रोशनी लाओ। मतलब यह कि रोशनी तो दुनिया में ईमान और नेक अमल से पैदा की जाती है, दुनिया में न ईमान लाए और न नेक अमल किए, अब रोशनी कहां से लाएँ। ग़रज़ वे पीछे रह जाएंगे। अब दोनों फ़रीक़ के दरमियान एक दीवार आड़ हो जाएगी।

(तफ़सीर पृष्ठ 974)

1. मतलब यह कि मुसलमान को जल्द तौबा कर लेना चाहिए क्योंकि कभी-कभी फिर तौबा की तौफ़ीक़ नहीं रहती, और कभी-कभी कुफ़ तक नौबत पहुँच जाती है।

2. इस तरह तौबा करने पर अपनी रहमत से मुर्दा दिल को जिन्दा और दुरुस्त कर देता है। पस मायूस न होना चाहिए।

3. यानी ये ऊँचे दर्जे का मिल ईमान ही की बदौलत नसीब होते हैं।

4. यानी दुनिया के मक़सिद ये हैं कि बचपन में खेलकूद का ग़ल्बा रहता है और जवानी में बनने-सँवरने और आपस में एक-दूसरे पर फ़ख़र करने का और बुढ़ापे में माल-दौलत और आल-औलाद को गिनवाना। और ये सब मक़सिद फ़ानी और महज़ ख़्वाब व ख़याल हैं।

5. इसी तरह दुनिया चन्द दिन की बहार है फिर ज़वाल और ख़ात्मा।

6. यानी इससे कम का इनकार है ज्यादा का इनकार नहीं।

7. इसमें इशारा है कि अपने आमांल पर कोई मग़रूर न हो और अपने आमांल पर जन्नत का हक़दार होने का दावेदार न हो। यह सिर्फ़ फ़ज़ल है जिसका मदार हमारी मरज़ी पर है, मगर हमने अपनी रहमत से इन आमांल के करने वालों के साथ अपनी मरज़ी मुताल्लिक़ कर ली है। अगर हम चाहते तो अपनी मरज़ी को मुताल्लिक़ न करते।

8. यानी तमाम मुसीबतें बाहरी हों या अन्दरूनी वे सब मुक़द्दर हैं।

(तफ़सीर पृष्ठ 976)

1. ‘इज़्ज़ियाल’ यानी इतराना अक्सर अन्दरूनी ख़ूबियों और कमालात पर इतराने में और फ़ख़र अक्सर बाहरी चीज़ों माल व रूतबे वग़ैरह पर इतराने में इस्तेमाल होता है।

2. ऊपर ‘इअ्मलू’ से ‘अल्हमीद’ तक दुनिया का ग़ैर-अहम चीज़ होना और उसके दरमियान में ‘व फ़िल्-आख़िरत’ से आख़िरत का अहम और शान वाली चीज़ होना इरशाद हुआ है। आगे भी आख़िरत का अहम और शान वाला होना इस तरह बयान फ़रमाते हैं कि असल में हमने इसी आख़िरत के दुरुस्त करने के लिए रसूलों को भेजा, और अहकाम मुक़र्रर किए और (शेष तफ़सीर पृष्ठ 978 पर)

अट्टाईसवाँ पार: कद् समिअल्लाहु

58 सूर: मुजादला 105

सूर: मुजादला मदीना में नाज़िल हुई। इसमें 22 आयतें और 3 रुकूअ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

बेशक अल्लाह तआला ने उस औरत की बात सुन ली जो आपसे अपने शौहर के मामले में झगड़ती थी, और (अपने रंज व ग़म की) अल्लाह तआला से शिकायत करती थी, और अल्लाह तआला तुम दोनों की गुफ्तगू सुन रहा था, (और) अल्लाह (तो) सब कुछ सुनने वाला, सब कुछ देखने वाला है।¹ (1) तुममें जो लोग अपनी बीवियों से 'ज़िहार' करते हैं (जैसे यूँ कह देते हैं कि तू मुझपर मेरी माँ की तरह है) वे उनकी माँ नहीं हैं, उनकी माँ तो बस वही हैं जिन्होंने उनको जन्म दिया है, और वे लोग बेशक एक नामाकूल और (चूँकि) झूठ बात कहते हैं (इसलिए गुनाह ज़रूर होगा) और यकीनन अल्लाह तआला माफ़ करने वाले, बख़्श देने वाले हैं। (2) और जो लोग अपनी बीवियों से ज़िहार करते हैं, फिर अपनी कही हुई बात की तलाफ़ी करना चाहते हैं तो उनके ज़िम्मे एक गुलाम या बाँदी का आज़ाद करना है, इससे पहले कि दोनों (मियाँ-बीवी) आपस में मिलें, इससे तुमको नसीहत की जाती है, और अल्लाह तआला को तुम्हारे सब आमाल की पूरी ख़बर है।² (3) फिर जिसको (गुलाम-बाँदी) मयस्सर न हो तो उसके ज़िम्मे लगातार दो महीने के रोज़े हैं, इससे पहले कि दोनों आपस में मिलें। फिर जिससे यह भी न हो सकें तो उसके ज़िम्मे साठ मिस्कीनों को खाना खिलाना है। यह हुक्म इसलिए (बयान किया गया) है कि अल्लाह और उसके रसूल (सल्ल.) पर ईमान ले आओ, और ये अल्लाह की (मुकर्रर की हुई) हदे हैं, और काफ़िरों के लिए सख्त दर्दनाक अज़ाब होगा।³ (4) जो लोग अल्लाह और उसके रसूल की मुख़ालफ़त करते हैं वे (दुनिया में भी) ऐसे ज़लील होंगे जैसे उनसे पहले लोग ज़लील हुए, और हमने खुले-खुले अहक़ाम नाज़िल किए हैं, और काफ़िरों को ज़िल्लत का अज़ाब होगा। (5) जिस दिन उन

(पृष्ठ 978 का शेष) क़ीन की मदद के लिए ख़ास तौर पर लोहे को पैदा किया। और साथ ही इन चीज़ों में तुम्हारे दुनियावी मुनाफ़े भी रख दिए। पस दुनिया एक ज़रूरत की वजह से मकसूद है और आख़िरत अपनी ज़ात ही के सबब मकसूद हुई।

3. ऊपर मख़्लूक की दुरुस्ती के लिए रसूलों का भेजना मुख़्तसर तौर पर ज़िक्र किया गया था। आगे बाज़ ख़ास रसूलों का उम्मतों की इस्लाह के लिए भेजना और उन उम्मतों में से बाज़ का इस्लाह कबूल करना और बाज़ का इस्लाह को कबूल न करना, और मौजूदा लोगों को इस्लाह के कबूल करने का हुक्म इरशाद है।

4. यानी जिस गरज़ से उसको इख़्तियार किया था और वह गरज़ अल्लाह की रिज़ा हासिल करना थी, उसका एहतियाम नहीं किया, यानी अहक़ाम पर अमल नहीं किया अगरचे देखने में दुनिया से बेताल्लुक रहे, और बाज़े अहक़ाम पर अमल करने में सक्रिय रहे।

5. यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ईमान लाए।

6. यानी ऐसा ईमान देगा जो हर वक़्त साथ रहेगा यहाँ से पुलसिरात तक।

7. चुनाँचे उसकी मरज़ी व चाहत उसके फ़ज़ल के साथ मुसलमानों से मुताल्लिक हुई तो उन्हीं को इनायत फ़रमा दिया।

8. मतलब यह कि उनका घमण्ड और गुमान टूट जाए कि वे मौजूदा हालत में अपने को फ़ज़ल और मग़फ़िरत का महल व हक़दार समझते हैं।

1. अरब में जहालत के ज़माने में अगर कोई शख्स अपनी बीवी को इस तरह कह देता कि तू मेरी माँ की जगह है, या तेरी पीठ मेरी माँ या बहन की पीठ की जगह है, तो मियाँ-बीवी में हमेशा के लिए जुदाई हो जाती थी। और यह कौल तलाक़ से बढ़कर हमेशा के लिए हराम करने वाला ख़्याल किया जाता था। शरीअत की इस्तिलाह में इसको 'ज़िहार' कहते हैं। हुज़ुरे पाक के ज़माने में औस बिन सामित सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हु ने गुस्से में अपनी बीवी खौला बिन्ते सालबा रज़ियल्लाहु अन्हा को कह दिया कि तू मेरे हक़ में ऐसी है जैसी मेरी माँ की पुष्ट कि मुझपर हराम है। उसके बाद दोनों शर्मिन्दा हुए। हज़रत खौला मसले के हल और तहकीके हाल के लिए बारगाहे नुबव्वत में हाज़िर हुई। चूँकि 'ज़िहार' के मुताल्लिक अब तक कोई आसमानी हुक्म नाज़िल नहीं हुआ था, आपने कौम ही के मामूल को (शेष तफ़सीर पृष्ठ 982 पर)

सबको अल्लाह दोबारा जिन्दा करेगा। फिर उनका सब किया हुआ उनको बतलाएगा। (क्योंकि) अल्लाह तआला ने वह महफूज़ कर रखा है और ये लोग उसको भूल गए, और अल्लाह हर चीज़ की खबर रखता है। (6) ♦

क्या आपने इसपर नज़र नहीं फरमाई कि अल्लाह तआला सब कुछ जानता है जो आसमानों में है और जो ज़मीन में है। कोई सरगोशी “यानी चुपके-चुपके बातें करना” तीन आदमियों की ऐसी नहीं होती जिसमें चौथा वह (यानी अल्लाह) न हो, और न पाँच की (कानाफूसी) होती है जिसमें छठा वह न हो, और न इस (अंक) से कम (में) होती है (जैसे दो चार आदमियों में) और न उससे ज़्यादा, मगर वह (हर हालत में) उन लोगों के साथ होता है, चाहे वे लोग कहीं भी हों। फिर उन (सब) को कियामत के दिन उनके किए हुए काम बतला देगा, बेशक अल्लाह तआला को हर बात की पूरी ख़बर है। (7) क्या आपने उन लोगों पर नज़र नहीं फरमाई जिनको सरगोशी “चुपके-चुपके बातें करने” से मना किया गया था, (मगर) फिर (भी) वह वही काम करते हैं जिससे उनको मना किया गया था, और गुनाह और ज़्यादती और रसूल की नाफरमानी की सरगोशियाँ “यानी कानाफूसी” करते हैं? और वे लोग जब आपके पास आते हैं आपको ऐसे लफ़्ज़ से सलाम कहते हैं³ जिससे अल्लाह ने आपको सलाम नहीं फरमाया⁴ और अपने जी में (या अपने आपस में) कहते हैं कि (अगर यह पैग़म्बर हैं तो) अल्लाह तआला हमको हमारे इस कहने पर (फौरन) सज़ा क्यों नहीं देता, उनके लिए जहन्नम काफी है, उसमें ये लोग (ज़रूर) दाख़िल होंगे, सो वह बुरा ठिकाना है। (8) ऐ ईमान वालो! जब तुम (किसी ज़रूरत से) सरगोशी करो तो गुनाह और ज़्यादती और रसूल की नाफरमानी की सरगोशियाँ मत करो, और नफ़ा पहुँचाने और परहेज़गारी की बातों की सरगोशियाँ करो⁵ और अल्लाह से डरो जिसके पास तुम सब जमा किए जाओगे। (9) ऐसी सरगोशी सिर्फ़ शैतान की तरफ़ से (यानी उसके बहाकाने से) है⁶ ताकि मुसलमानों को रंज में डाले, और वह (शैतान) बग़ैर खुदा के इरादे के उनको कुछ नुकसान नहीं पहुँचा सकता, और मुसलमानों को (हर मामले में) अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिए। (10) ऐ ईमान वालो! जब तुमसे

(पृष्ठ 980 का शेष) काबिले अमल ख़्याल करके फरमा दिया कि अब तुम्हारे और तुम्हारे शौहर में एक साथ रहने की कोई सूरत नहीं हो सकती। यह सुनकर वह रोने-धोने लगी और अपने शौहर का शिकवा शुरू कर दिया और कहा या रसूलल्लाह! मेरी जवानी शौहर ही के घर में गुज़री और अब जो मैं बूढ़ी हो चली हूँ तो ‘ज़िहार’ कर बैठा है, लेकिन जुदाई की सूरत में घर तबाह हो जाएगा और छोटे-छोटे बच्चे परेशान और मारे-मारे फिरेंगे। उसके बाद आसमान की तरफ़ सर उठाकर कहने लगी, या इलाही! मुझ बेचारी का तू ही वारिस है, मेरी फरियाद सुन। उसी वक़्त ये आयतें नाज़िल हुईं जिनमें ‘ज़िहार’ को तलाक़ क़ारर नहीं दिया गया, और फरमाया गया कि जिसने जन्म नहीं दिया वह माँ किस तरह हो सकती है? और ऐसी बेहूदा बात कहने से रोकने का यह हुक्म देकर फरमाया कि जब तक शौहर कफ़फ़ारा अदा न करे, उस वक़्त तक बीवी के करीब न जाए।

2. पस कफ़फ़ारे में दो हिक़मतें हो गईं— एक बुराई का कफ़फ़ारा जिसकी तरफ़ इशारा है ‘अल्लाह माफ़ करने वाले, बख़्श देने वाले हैं’ में। दूसरे तबीह और डॉट जिसका ‘तुमको नसीहत की जाती है’ में बयान है।

3. इस्लाम में भी यह हुक्म बहाल है कि जो शख्स अपनी बीवी के किसी अंग को अपनी माँ, बहन, बेटी या किसी ऐसी औरत के अंग से तश्बीह दे जिसमें मर्द का किसी हालत में निकाह नहीं हो सकता तो कफ़फ़ारा अदा किए बग़ैर बीवी से सोहबत करना और इसी तरह की दूसरी बातें जैसे लिपटाना, चूमना और साथ लेटाना वग़ैरह सब हराम हो जाते हैं। लेकिन अंग के तश्बीह देने से बदन के वही अंग व हिस्से मुराद हैं जिनकी तरफ़ मर्द बग़ैर किसी सख़्त मजबूरी के देख नहीं सकता जैसे पीठ, पेट, रान। अगर कफ़फ़ारे में बाँदी गुलाम आज़ाद करने का मौक़ा न हो जैसा कि मौजूदा ज़माने में बाँदी और गुलामों का कहीं भी वजूद नहीं पाया जाता तो साठ रोज़े रखे, अगर रोज़ों की ताक़त नहीं तो साठ मिस्कीनों को दोनों वक़्त खाना सालन-रोटी पेट भरकर खिलाए। और अगर अनाज देना चाहे तो हर एक को दो सेर गेहूँ दे।

1. मदीना पाक के यहूदियों की आदत थी कि जब किसी मुसलमान को अपनी मज्लिस के सामने से गुज़रते हुए देखते तो आपस में कानों में बातें करनी शुरू कर देते। अगरचे उस वक़्त यहूदी और मुसलमानों में आपस में सुलह का अ़हद था, लेकिन उस कानाफूसी से मुसलमानों के दिलों में यह बात खटकती थी कि कहीं हमारे क़त्ल या तकलीफ़ के मशिवरे तो नहीं कर रहे हैं? हर चन्द पैग़म्बरे खुदा सल्ल. ने उनको उस नाजायज़ कानाफूसी से मना किया, लेकिन वे बाज़ न आए। उनके बारे में यह आयत नाज़िल हुई। (शेष तफ़सीर पृष्ठ 984 पर)

कहा जाए¹ कि मज्लिस में जगह खोल दो तो तुम जगह खोल दिया करो। अल्लाह तुमको (जन्मत में) खुली जगह देगा। और जब (किसी ज़रूरत से) यह कहा जाए कि (मज्लिस से) उठ खड़े हो तो उठ खड़े हुआ करो² अल्लाह तआला (इस हुक्म के मानने से) तुममें ईमान वालों के और (ईमान वालों में) उन लोगों के जिनको (दीन का) इल्म अता हुआ है (आखिरत के) दर्जे बुलन्द कर देगा, और अल्लाह तआला को तुम्हारे सब आमाल की पूरी खबर है। (11) ऐ ईमान वाले! जब तुम रसूल से सरगोशी “यानी कान में बात” (करने का इरादा) किया करो तो अपनी उस सरगोशी से पहले (मिस्कीनों को) कुछ खैरात दे दिया करो,³ यह तुम्हारे लिए बेहतर है और (गुनाहों से) पाक होने का अच्छा ज़रिया है। फिर अगर तुमको (सदका देने की) ताकत न हो तो अल्लाह तआला माफ़ करने वाला, रहम करने वाला है। (12) क्या तुम अपनी सरगोशी “यानी चुपके-चुपके कान में बात करने” से पहले खैरात देने से डर गए? सो (खैर!) जब तुम (उसको) न कर सके और अल्लाह तआला ने तुम्हारे हाल पर इनायत फरमाई तो तुम नमाज़ के पाबन्द रहो और ज़कात दिया करो और अल्लाह तआला और उसके रसूल का कहना माना करो, और अल्लाह तआला को तुम्हारे सब आमाल की पूरी खबर है।⁴ (13) ♦

क्या आपने उन लोगों पर नज़र नहीं फरमाई जो ऐसे लोगों से दोस्ती करते हैं जिनपर अल्लाह ने ग़ज़ब किया है, ये (मुनाफ़िक) लोग न तो (पूरे-पूरे) तुममें हैं और न उन ही में हैं, और झूठी बात पर कस्में खा जाते हैं, और वे (खुद भी) जानते हैं। (14) अल्लाह ने उन लोगों के लिए सख्त अज़ाब मुहैया कर रखा है, (क्योंकि) बेशक वे बुरे-बुरे काम किया करते थे। (15) उन्होंने अपनी कस्मों को (अपने बचाव के लिए) ढाल बना रखा है, फिर खुदा की राह से रोकते रहते हैं। सो (इस वजह से) उनके लिए ज़िल्लत का अज़ाब होने वाला है। (16) उनके माल और औलाद अल्लाह (के अज़ाब) से उनको ज़रा भी न बचा सकेंगे, (और) ये लोग दोज़ाखी हैं वे लोग उसमें हमेशा रहने वाले हैं। (17) जिस दिन अल्लाह उन सबको दोबारा ज़िन्दा करेगा, सो ये उसके सामने भी (झूठी) कस्में खा जाएंगे जिस तरह तुम्हारे सामने कस्में खा जाते हैं, और यूँ ख्याल करेंगे कि हम किसी अच्छी हालत में हैं। ख़ूब सुन लो कि ये लोग बड़े ही झूठे हैं। (18) उनपर शैतान ने पूरा

(पृष्ठ 982 का शेष) 2. मुनाफ़िकों की ज़ुरत और ढिटाई का यह आलम था कि मस्जिद नबवी में बैठकर अपना हल्का बना लेते और सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम का मज़ाक उड़ाते और ऐब निकालते। सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कोई शरई हुक्म सादिर फरमाते तो ये आपस में कहने लगते कि हमसे तो ऐसे सख्त काम हो नहीं सकते। सूर: निसा में उनकी कानाफूसियों के बारे में रोक का हुक्म आ चुका था, लेकिन वे किसी तरह बाज़ नहीं आते थे।

3. ‘सलाम’ के मायने सलामती के और ‘साम’ के मायने मौत व हलाक होने के हैं। बाज़ यहूदी बारगाहे नुबुव्वत में हाज़िर होते तो शरारत व बद-अन्देशी के तौर पर आपको ‘अस्सामु अलैकुम’ कहते थे और फिर इस बुरी हरकत और शरारत पर नाज़ करते हुए दिल में कहते थे कि अगर मुहम्मद वाकई खुदा के सच्चे नबी हैं तो फिर इस बेअदबी पर उनका खुदा हमपर अज़ाब क्यों नाज़िल नहीं करता? उसपर यह आयत नाज़िल हुई।

4. यानी अल्लाह तआला के अल्फ़ाज़ तो ये हैं “सलामुन अलल मुर्सलीन, सलामुन अला इबादिहिल्लज़ीनस्तफ़ा, सल्लू अलैहि व सल्लिमू तस्लीमन्” और वे कहते हैं “अस्सामु अलैकुम”।

5. ‘बिर’ यानी नफ़ा पहुँचाने से मुराद वह नफ़ा है जिसका फैज़ दूसरों तक पहुँचे जो ‘उदवान’ यानी ‘ज्यादती’ के मुकाबले में है। और ‘तक्वा’ यानी परहेज़गारी ‘इस्म व मासियत’ यानी गुनाह और रसूल की नाफ़रमानी के मुकाबिल है।

6. मोमिनों के खिलाफ़ मुनाफ़िकों और यहूदियों की कानाफूसी मुसलमानों को ग़मगीन और परेशान करती थी, क्योंकि जब किसी मज्लिस में कई आदमी हों और दो आदमी तीसरे से अलग होकर कान में बातें करने लगें तो तीसरे को लाज़िमी तौर पर शक और मलाल होगा कि खुदा जाने मुझसे अलग होकर क्या मशिवरा कर रहे हैं। मुनाफ़िकों की इस बुरी हरकत के बारे में यह आयत नाज़िल हुई।

1. सहाबा-ए-बद्र की जमाअत अम्बिया अलैहिमुस्सलाम के बाद सबसे अफ़ज़ल व मक़बूल-तरीन जमाअत है। एक बार उनमें से चन्द हज़रात सरदारों दो जहाँ सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दीदार मुबारक से मुशरफ़ होने के लिए हाज़िरे ख़िदमत हुए। (शेष तफ़सीर पृष्ठ 986 पर)

कब्ज़ा जमा लिया है, सो उसने उनको खुदा की याद भुला दी है, ये लोग शैतान का गिरोह है, ख़ूब सुन लो कि शैतान का गिरोह ज़रूर बरबाद होने वाला है।¹ (19) जो लोग अल्लाह और उसके रसूल की मुखातिफ़ करते हैं ये लोग इन्तिहाई ज़लील लोगों में हैं। (20) और अल्लाह तआला ने यह बात (अपने कदीमी हुक्म में) लिख दी है कि मैं और मेरे पैग़म्बर ग़ालिब रहेंगे,² बेशक अल्लाह तआला कुव्वत वाला, ग़ल्बे वाला है। (21) जो लोग अल्लाह पर और कियामत के दिन पर (पूरा) ईमान रखते हैं, आप उनको न देखेंगे कि वे ऐसे शख्सों से दोस्ती रखते हैं जो अल्लाह और उसके रसूल के मुखातिफ़ हैं, अगरचे वे उनके बाप या बेटे या भाई या कुंवा ही क्यों न हों। उन लोगों के दिलों में अल्लाह तआला ने ईमान जमा दिया है और उनके (दिलों) को अपने फ़ैज़ से कुव्वत दी है, (फ़ैज़ से मुराद नूर है)। और उनको ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे से नहरें जारी होंगी, जिनमें वे हमेशा रहेंगे। अल्लाह तआला उनसे राज़ी होगा और वे अल्लाह से राज़ी होंगे। ये लोग अल्लाह का गिरोह है। ख़ूब सुन लो कि अल्लाह ही का गिरोह कामयाबी पाने वाला है।³ (22) ♦

59 सूर: हश्च 101

सूर: हश्च मदीना में नाज़िल हुई। इसमें 24 आयतें और 3 रुकूअ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

अल्लाह की पाकी बयान करते हैं सब जो कुछ कि आसमानों और ज़मीन में (मख़्लूक़ात) हैं, (चाहे अपनी ज़बान से या अपने हाल से) और वह ज़बरदस्त (और) हिक्मत वाला है। (1) वही है जिसने (उन) अहले किताब काफ़िरों (यानी बनू-नज़ीर) को उनके घरों से पहली ही बार इकट्ठा करके निकाल दिया,⁴ तुम्हारा गुमान भी न था कि वे (कभी अपने घरों से) निकलेंगे, और (खुद) उन्होंने यह गुमान कर रखा था कि उनके क़िले उनको अल्लाह से बचा लेंगे,⁵ सो उनपर खुदा (का अज़ाब) ऐसी जगह से पहुँचा कि उनको ख़याल भी न था।⁶ और उनके दिलों में रौब डाल दिया कि अपने घरों को खुद अपने हाथों से और मुसलमानों के हाथों से भी उजाड़ रहे थे, सो ऐ समझ रखने वालो! (इस हालत को देखकर) इब्रत हासिल करो।⁷ (2) और अगर

(पृष्ठ 984 का शेष) इतिफ़ाक से उस वक़्त मस्जिदे नबवी में काफ़ी बड़ा मजमा था। रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जौनिसार इन्द्र धनुष की तरह रिसालत के चाँद के गिर्द जमे बैठे हुए थे। इसलिए उन नए आने वाले सहाबा-ए-बद्र को बैठने की जगह न मिल सकी। ये हज़रात सलाम करके खड़े रहे, मजमे में से कोई शख्स उनकी ख़ातिर न उठा। जब यह हालत सरवरे अम्बिया सल्ल. ने देखी तो बद्दी सहाबियों की गिनती के मुताबिक़ चन्द ग़ैर-बदरियों को नाम लेकर अपनी जगह से खड़े हो जाने का हुक्म दिया। वे हज़रात फ़ौरन खड़े हो गए और अहले बद्र उनकी जगह जा बैठे। इससे मुनाफ़िक़ों को ताना मारने का मौक़ा मिल गया और कहने लगे कि मुहम्मद तो बाज़ को दूसरों पर तरज़ीह देते हैं, उन्हें सबको एक नज़र से देखना चाहिए। आँ हज़रात ने जिन हज़रात को अपनी-अपनी जगह से खड़े होने का हुक्म दिया और उन्होंने बग़ैर तंगदिली के इरशादे नबवी की तामील की थी, हक़ तआला को उनका यह हुक्म मानना बहुत पसन्द आया। चुनाँचे उनकी तारीफ़ में यह पूरी आयत “तअमलून-न ख़बीर” तक नाज़िल हुई। और हकीक़त में इनसानी आदाब, इनसानी हमदर्दी और इस्लामी भाईचारे और मुरव्वत का यही तकाज़ा है कि अपने से अफ़ज़ल लोगों का एहतिराम किया जाए। अगर गुन्जाइश हो तो ख़ूब मिल-मिलकर बैठ जाएँ वरना बुजुर्ग हस्तियों के लिए जगह ख़ाली कर दी जाए।

2. चाहे उठने के लिए इस गरज़ से कहा जाए कि आने वाले के लिए जगह खुल जाए, फिर चाहे बिलकुल उठ जाने से हो या एक जगह से उठकर दूसरी जगह जा बैठने से हो, और चाहे इस वजह से कहा जाए कि मज्लिस की मुख्य जगह को किसी ख़ास मशिवरे की मस्तहत या किसी ज़रूरत आराम या इबादत वग़ैरह से अलग करने और ख़ाली करने वग़ैरह की हाज़त हो, जो बग़ैर तन्हाई के बिलकुल हासिल न हो सकें या कामिल न हो सकें। पस मज्लिस के सदर (अध्यक्ष) के हुक्म से उठ जाना चाहिए। और यह हुक्म रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अलावा के लिए भी आ़ाम है। पस मज्लिस के मुखिया को ज़रूरत के वक़्त इसकी इजाज़त है, लेकिन आने वाले को न चाहिए कि किसी को उठाकर उसकी जगह जा बैठे। (पृष्ठ 984 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 986 की तफ़सीर पृष्ठ 988-992 पर)

अल्लाह तआला उनकी किस्मत में वतन से निकाला जाना न लिख चुकता तो उनकी दुनिया ही में (क़त्ल की) सज़ा देता, और उनके लिए आखिरत में दोज़ख़ का अज़ाब (तैयार) है। (3) यह इस सबब से है कि उन लोगों ने अल्लाह की और उसके रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की मुख़ालफ़त की है, और जो शख्स अल्लाह की मुख़ालफ़त करता है तो अल्लाह तआला उसको सख़्त सज़ा देने वाला है। (4) जो खज़ूरों के पेड़ के तने तुमने काट डाले या उनको उनकी जड़ों पर खड़ा रहने दिया, सो (दोनों बातें) खुदा ही के हुक्म (और रिज़ा) के मुवाफ़िक़ हैं, और ताकि काफ़िरो को ज़लील करे। (5) और जो कुछ अल्लाह ने अपने रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को उनसे दिलवाया, सो तुमने उसपर न धोड़े दौड़ाए और न ऊँट, लेकिन अल्लाह तआला (की आदत है कि) अपने रसूलों को जिसपर चाहे (खास तौर पर) मुसल्लत फ़रमा देता है, और अल्लाह तआला को हर चीज़ पर पूरी कुदरत है। (6) जो कुछ अल्लाह तआला (इस तौर पर) अपने रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को दूसरी बस्तियों के (काफ़िर) लोगों से दिलवा दे³ (जैसे फ़िदक और एक हिस्सा खैबर का), सो वह (भी) अल्लाह का हक़ है और रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का और (आपके) रिश्तेदारों का और यतीमों का और ग़रीबों का और मुसाफ़िरो का ताकि वह (ग़नीमत का माल) तुम्हारे मालदारों के कब्ज़े में न आ जाए। और रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तुमको जो कुछ दे दिया करें वह ले लिया करो, और जिस चीज़ (के लेने) से तुमको रोक दें (और अल्फ़ाज़ के आम होने से यही हुक्म है अफ़आल और अहक़ाम में भी) तुम रुक जाया करो, और अल्लाह से डरो, बेशक अल्लाह तआला (मुख़ालफ़त करने पर) सख़्त सज़ा देने वाला है। (7) (और) उन ज़रूरतमन्द मुहाजिरीन का (खास तौर पर) हक़ है जो अपने घरों से और अपने मालों से (जुल्म व ज़बरदस्ती से) अलग कर दिए गए। वे अल्लाह तआला के फज़ल (यानी जन्नत) और रिज़ा के तालिब हैं, और वे अल्लाह और उसके रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के दीन की मदद करते हैं, (और) यही लोग (ईमान के) सच्चे हैं। (8) और (तथा) उन लोगों का (भी हक़ है)

(पिछले पृष्ठ का शेष) 3. खैरात की मिक्दार (यानी मात्रा) आयत में मुकर्रर नहीं और रिवायतों में मुख़लिफ़ मिक्दारें आई हैं। ज़हिरी तौर पर गैर-तयशुदा मालूम होती है, लेकिन माकूल मात्रा होना ज़रूरी है। ग़ालिबन यह सदका ऐलानिया होगा, वरना हर शख्स सदका करने में पहल करने वाला होने का दावा कर सकता। इसकी ज़रूरत इस बिना पर पेश आई कि मुनाफ़िक़ लोग बिना ज़रूरत भी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ तन्हाई कर लेते और बेकार बातों के मुताल्लिक़ सवालालत करने लगते, इससे उनका मक़सद मुसलमानों पर अपनी बड़ाई और बारगाहे नबवी में अपना खुसूसी मक़ाम रखने वाला होना जतलाने के सिवा कुछ न होता था। महबूबे रब्बुल आलमीन सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मिजाज़ मुबारक ज़्यादा सवाल करने और फ़ुज़ूल बातों से परेशान होता था, इसके अलावा यह सूरत नुबुव्वत के एहतियाम के भी ख़िलाफ़ थी, इसलिए यह आयत नाज़िल हुई।

4. जब यह हुक्म हुआ कि जब नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बात करनी हो तो पहले कुछ खैरात देकर पाकी हासिल कर लो फिर आपसे बात करो, मुफ़्त में कान में बात करना बेतहज़ीबी में दाख़िल है, तो मुनाफ़िक़ तो वहीं ठण्डे पड़ गए। क्योंकि फ़रमान मानकर रक़म ख़र्च करने में उनकी रूढ़ फ़ना होती थी। लेकिन जिन सहाबा-ए-किराम को कोई बात दरियाफ़्त करनी होती थी वे खैरात देकर हाज़िरे ख़िदमत होते थे फिर आपसे कोई बात पूछते थे। लेकिन इस आयत के नाज़िल होने के बाद बहुत-से कम गुन्जाइश वाले सहाबा भी ज़रूरी मसाइल पूछने से रुक गए। चूँकि मक़सूद हासिल हो ही चुका था इसलिए सदका देने का हुक्म रद्द हो गया और आयत 'अ-अशफ़कुम.....आखिर तक' नाज़िल फ़रमाई।

(तफ़सीर पृष्ठ 986) 1. ये छह आयतें मुनाफ़िक़ों की मुनाफ़िक़ाना बदकिरदारियों के इज़हार में नाज़िल हुईं। मुनाफ़िक़ लोग यहूदियों के साथी बन बैठे थे जिनपर अल्लाह का गुज़ब है। मुनाफ़िक़ लोग यहूदियों से जा-जाकर सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम के राज़ कह देते थे, और अगर उसकी इत्तिहा हो जाती और उनसे पूछा जाता तो अपना इस्लाम जताने को सैकड़ों झूठी कस्में खा जाते, ताकि एक तो मुसलमानों की नाराज़गी से बचे रहें दूसरे इस्लाम की जड़ उखाड़ने की शैतानी कोशिशों में भी छुपे तौर पर सक्रिय रह सकें। लेकिन मुनाफ़िक़ों की नापाक जमाअत न इधर की रही न उधर की।

2. मक़सद यहाँ अम्बिया अलैहिमुस्सलाम का ग़ल्बा बयान करना है अपना ज़िक्र अम्बिया के ऐज़ाज़ व सम्मान के लिए फ़रमा दिया।

3. इस आयत के नाज़िल होने की शान में (पृष्ठ 986 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 988 की तफ़सीर पृष्ठ 990-996 पर)

जो दारुल इस्लाम (यानी मदीना) में उन (मुहाजिरों) के (आने से) पहले से करार पकड़े हुए हैं। जो उनके पास हिजरत करके आता है उससे ये लोग मुहब्बत करते हैं। और मुहाजिरों को जो कुछ मिलता है उससे ये (अन्सार हजरात) अपने दिलों में कोई रश्क नहीं पाते, और अपने से मुकद्दम रखते हैं। अगरचे उनपर फाका ही हो,¹ और (वाकई) जो शख्स अपनी तबीयत की कन्जूसी से महफूज रखा जाए ऐसे ही लोग फलाह पाने वाले हैं।² (9) और उन लोगों का (भी उस फै के माल में हक है) जो उनके बाद आए। जो (इन जिक्र हुए लोगों के हक में) दुआ करते हैं कि ऐ हमारे परवर्दिगार! हमको बख्श दे और हमारे भाइयों को (भी) जो हमसे पहले ईमान ला चुके हैं, और हमारे दिलों में ईमान वालों की तरफ से कीना न होने दीजिए। ऐ हमारे रब! आप बड़े शपक्त वाले (और) रहम करने वाले हैं। ♦ (10) ♦

क्या आपने उन मुनाफिकों (यानी अब्दुल्लाह बिन उब्बी वगैरह) की हालत नहीं देखी कि अपने (तरीके पर चलने वाले) भाइयों से जो कि अहले किताब काफिर हैं, (यानी बनू नजीर से) कहते हैं कि अल्लाह की कसम! अगर तुम निकाले गए तो हम तुम्हारे साथ निकल जाएंगे और तुम्हारे मामले में हम किसी का कभी कहना नहीं मानेंगे। और अगर तुमसे किसी की लड़ाई हुई तो हम तुम्हारी मदद करेंगे। और अल्लाह गवाह है कि वे बिल्कुल झूठे हैं। (11) खुदा की कसम! अगर अहले किताब निकाले गए तो ये (मुनाफिक लोग) उनके साथ नहीं निकलेंगे, और अगर उनसे लड़ाई हुई तो ये उनकी मदद न करेंगे। और अगर (मान लो, अगरचे ऐसा होना मुहाल है कि) उनकी मदद भी की तो पीठ फेरकर भागेंगे, फिर उनकी कोई मदद न होगी।³ (12) बेशक तुम लोगों का खौफ उन (मुनाफिकों) के दिलों में अल्लाह से ज्यादा है, (और) यह (उनका तुमसे डरना और खुदा से न डरना) इस सबब से है कि वे ऐसे लोग हैं कि समझते नहीं। (13) ये लोग (तो) सब मिलकर भी तुमसे न लड़ेंगे मगर हिफाजत वाली बस्तियों में या दीवार (किला व शहर-पनाह) की आड़ में, उनकी लड़ाई आपस (ही) में बड़ी तेज है। ऐ मुखातब! तू उनको (ज़ाहिर में) मुत्तफिक “यानी एकजुट” ख्याल करता है हालाँकि उनके दिल गैरमुत्तफिक “बिखरे हुए” हैं।⁴ यह इस वजह से है कि वे ऐसे लोग हैं जो (दीन की) अक्ल नहीं रखते। (14) उन लोगों के जैसी मिसाल है जो उनसे कुछ ही पहले हुए हैं जो (दुनिया में भी)

(पिछले पृष्ठ का शेष) दो वाकिआत बयान किए गए हैं। एक बार हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के वालिद अबू कहाफा रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने कुफ की हालत में हुजूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शान में कोई नामाकूल बात मुँह से निकाली। हज़रत सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु का कमाले ईमान भला उस बद-ज़बानी को कब बर्दाश्त कर सकता था, उन्होंने उनके मुँह पर तमाँचा मारा। जब आका-ए-दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सामने इस वाकिआ का तज़िकरा हुआ तो हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज किया, या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! उस वक़्त मेरे पास तलवार न थी वरना ऐसी बेजा बात पर उनकी गर्दन उड़ा देता। तो हज़रत सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु की तारीफ में यह आयत नाज़िल हुई। या इसके नाज़िल होने का सबब यह था कि ग़ज़वा-ए-बद्र जहाँ एक तरफ हज़रत उबैदा बिन जराह रज़ियल्लाहु अन्हु इस्लाम की ताईद में बहादुरी से लड़ रहे थे तो दूसरी तरफ उनके बाप ने कुफ को गालिब करने की नापाक कोशिश में अपनी सारी सलाहियतें झोंक दी थीं। जराह हज़रत अबू उबैदा रज़ियल्लाहु अन्हु को इस्लामी लश्कर में देखकर बुरी तरह दौत पीस रहा था। वह उस वक़्त यहाँ तक बिफरा हुआ था कि उसने अपनी तवज्जोह हर तरफ से हटाकर हज़रत अबू उबैदा रज़ियल्लाहु अन्हु के कत्ल पर केंद्रित कर दी। वह बड़ी तेज़ी से आकर उनपर हमलावार हुआ। हज़रत अबू उबैदा रज़ियल्लाहु अन्हु ने महज़ अपने बचाव पर इत्तिफा किया, मगर वह ताबड़तोड़ हमले कर रहा था। जब उन्होंने देखा कि मेरा काफिर बाप मेरे इस्लाम की वजह से मेरी जान का दुश्मन बना हुआ है तो इधर-उधर बचे-बचे फिरते रहे। लेकिन जब यक़ीन हो गया कि यह मुझे नहीं छोड़ेगा तो मजबूर होकर उसके कत्ल करने का फैसला कर लिया, चुनौचे मौका पाकर तलवार के एक ही वार से उसका काम तमाम कर दिया, उसपर यह आयत नाज़िल हुई। 4. मदीना मुनव्वरा से दो-चार मील के फासले पर यहूद की एक क़ौम बनू नजीर आबाद थी। उन्होंने हिजरते नबवी के बाद सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम से एक मुआहदा किया था जिसके मुताबिक उनपर लाज़िम था कि वे मुसलमानों के खिलाफ किसी तहरीक में शामिल न होंगे। मुसलमानों के हर तरह से मुवाफिक रहेंगे और उनके दुश्मनों की मदद नहीं करेंगे। एक बार नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मक्कूल के वारिसों को खून के बदले मुआवज़ा दिलवाने के (पृष्ठ 986 की बकिया तफसीर और पृष्ठ 988, 990 की तफसीर पृष्ठ 992-998 पर)

अपने किर्दार का मज़ा चख चुके हैं और (आखिरत में भी) उनके लिए दर्दनाक अज़ाब (होने वाला) है।¹ (15) शैतान के जैसी मिसाल है कि (पहले तो) इनसान से कहता है, तू काफ़िर हो जा, फिर जब वह काफ़िर हो जाता है तो (उस वक़्त साफ़) कह देता है कि मेरा तुझसे कोई वास्ता नहीं, मैं तो अल्लाह-रब्बुल आलमीन से डरता हूँ। (16) सो आखिरी अन्जाम दोनों का यह हुआ कि दोनों दोज़ख में गए जहाँ हमेशा रहेंगे। (एक गुमराह करने की वजह से दूसरा गुमराह होने की वजह से), और ज़ालिमों की यही सज़ा है।² (17) ♦

ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरते रहो, और हर शख्स देखभाल ले कि कल (क़ियामत) के वास्ते उसने क्या ज़ख़ीरा भेजा है। और अल्लाह से डरते रहो, बेशक अल्लाह को तुम्हारे आमाँल की सब ख़बर है। (18) और तुम उन लोगों की तरह मत हो जिन्होंने अल्लाह (के अहक़ाम) से बेपरवाई की, सो अल्लाह ने खुद उनकी जान से उनको बेपरवाह बना दिया, यही लोग नाफ़रमान हैं। (19) दोज़ख वाले और जन्नती आपस में बराबर नहीं। जो जन्नत वाले हैं वे कामयाब लोग हैं (और दोज़खी नाकाम हैं)। (20) अगर हम इस कुरआन को किसी पहाड़ पर नाज़िल करते तो (ऐ मुखातब!) तू उसको देखता कि खुदा के ख़ौफ़ से दब जाता और फट जाता। और इन अज़ीब मज़ामीन को हम लोगों के (नफे के) लिए बयान करते हैं ताकि वे सोचें। (21) वह ऐसा माबूद है कि उसके सिवा कोई और माबूद (बनने के लायक) नहीं, वह जानने वाला है छुपी चीज़ों का और ज़ाहिर चीज़ों का, वही बड़ा मेहरबान, रहम वाला है। (22) वह ऐसा माबूद है कि उसके सिवा कोई और माबूद नहीं, वह बादशाह है (सब ऐबों से) पाक है, सालिम है,³ अमन देने वाला है, निगहबानी करने वाला है,⁴ ज़बरदस्त है, ख़राबी का दुरुस्त करने वाला है, बड़ी अज़मत वाला है अल्लाह (जिसकी शान यह है कि) लोगों के शिर्क से पाक है। (23) वह माबूद (बरहक) है, पैदा करने वाला है, ठीक-ठीक बनाने वाला है (यानी हर चीज़ को हिक्मत के मुवाफ़िक़ बनाता है)। सूरत बनाने वाला है, उसके अच्छे-अच्छे नाम हैं, सब चीज़ें उसकी तस्बीह करती हैं जो आसमानों में हैं और जो ज़मीन में हैं, और वही ज़बरदस्त, हिक्मत वाला है।⁵ (24) ♦

(पिछले पृष्ठ का शेष) मुआवज़ा दिलवाने के एक मुक़द्दे का तसफ़िया करने के लिए चन्द सहाबा के साथ उनके यहाँ तशरीफ़ ले गए, उन्होंने आपको दीवार के नीचे बैठकर एक तरफ़ तो आपसे गुफ्तगू शुरू की और दूसरी तरफ़ आपस में मश्वरा किया कि नऊजु बिल्लाह! आपको हलाक कर डालें। चुनाँचे इस मन्सूबे को अमली जामा पहनाने के लिए एक बड़ा पत्थर छत पर चढ़ाकर आप पर लुढ़का देना चाह। झंट से जिबराईल अलैहिस्सलाम पहुँचे और आपको इस साज़िश की इत्तिला दी, और आप फौरन खड़े हुए और सहाबा को साथ लेकर मदीना मुन्वरा वापस तशरीफ़ ले आए। आपने कहला भेजा कि तुमने अहद को तोड़ा है, या तो दस दिन के अन्दर यहाँ से खुद चले जाओ वरना लड़ाई होगी। वे लड़ाई के लिए तैयार हो गए। आपने उनपर लश्कर भेजा और उनके किले का घेराव कर लिया। आखिर मजबूर होकर निकल जाने पर राजी हो गए। आपने फरमाया कि सब हथियार छोड़ जाओ और जितना सामान अपने साथ लेजा सकते हो ले जाओ। गरज़ अपने घरों को अपने हाथों से वीरान करके चल दिए। बाज़ लोग ख़ैबर चले गए और दूसरों ने मुल्क शाम का रास्ता लिया, यह सन् तीन हिजरी का वाकिआ है। बाज़ों ने इसको सन् चार या पाँच हिजरी का वाकिआ करार दिया है।

5. यानी अपने किलों की मजबूती पर ऐसे मुल्मइन थे कि उनके दिल में ग़ैबी बदले का ख़तरा भी न आता था।
6. मुराद इस जगह से यह है कि मुसलमानों के हाथों से निकाले गए जिनकी बेसरो-सामानी पर नज़र करके इसका गुमान भी न होता था कि ये बेसामान उन सामान वालों पर ग़ालिब आ जाएँगे।
7. यानी इब्रत हासिल करो कि खुदा व रसूल की मुखा़लफ़त का अन्जाम कभी-कभी दुनिया में भी बहुत ही बुरा होता है।

(तफ़सीर पृष्ठ 988) 1. यानी अगर सख़्त सज़ा देने वाले खुदा ने उनका वतन से निकाला जाना मुक़द्दर न किया होता तो उन्हें दुनिया में उनकी बद-अहदी, ग़द्दारी और क़त्ल करने की कोशिश की कोई और सज़ा देता। बहरहाल उनको दुनिया में जो सज़ा मिलनी थी वह मिली और आखिरत में उनके लिए आग तैयार है।

2. जब इस्लामी लश्कर ने बनू नज़ीर पर चढ़ाई की तो वे अपने किलों में जा छुपे और उनके बाहर निकलने की कोई सूरत न हुई। उस ज़माने में क़िलाभेदी तोपें या कोई और ऐसा सामान न था जो घिरे हुए लोगों को बाहर निकलकर मुक़ाबला करने पर मजबूर करता, लेकिन अल्लाह पाक की मदद (पृष्ठ 988 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 990, 992 की तफ़सीर पृष्ठ 994-1000 पर)

60 सूर: मुस्तहिन: 91

सूर: मुस्तहिन: मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 13 आयतें और 2 रुकूअ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

ऐ ईमान वाले! तुम मेरे दुश्मनों और अपने दुश्मनों को दोस्त मत बनाओ कि उनसे दोस्ती का इज़हार करने लगे,¹ हालाँकि तुम्हारे पास जो हक़ दीन आ चुका है वे उसके इनकारी हैं। रसूल को और तुमको इस बिना पर कि तुम अपने परवर्दिगार अल्लाह पर ईमान ले आए शहर से निकाल चुके हैं। अगर तुम मेरे रास्ते पर जिहाद करने की गरज़ से और मेरी रज़ामन्दी ढूँढने की गरज़ से (अपने घरों से) निकले हो। तुम उनसे चुपके-चुपके दोस्ती की बातें करते हो,² हालाँकि मुझको सब चीज़ों का ख़ूब इल्म है, तुम जो कुछ छुपाकर करते हो और जो ज़ाहिर करते हो।³ और (आगे इसपर धमकी है कि) जो शख्स तुममें से ऐसा करेगा वह सही रास्ते से भटकेगा। (1) अगर उनको तुमपर कब्ज़ा हासिल हो जाए तो (फौरन) दुश्मनी का इज़हार करने लगे और (वह दुश्मनी का इज़हार यह कि) तुमपर बुराई के साथ हाथ और ज़बान चलाने लगे (यह दुनियावी नुक़सान पहुँचाना है), और (दीनी नुक़सान पहुँचाना यह कि) वे इस बात के इच्छुक हैं कि तुम काफ़िर (ही) हो जाओ। (2) तुम्हारे रिश्तेदार और औलाद कियामत के दिन तुम्हारे काम न आएँगे, खुदा तुम्हारे दरमियान फैसला करेगा, और अल्लाह तआला तुम्हारे सब आमाल को ख़ूब देखता है।⁴ (3) तुम्हारे लिए इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) में और उन लोगों में जो कि (ईमान और इताअत में) उनके शरीके हाल थे, एक उम्दा नमूना है, जबकि उन सबने अपनी कौम से कह दिया कि हम तुमसे और जिनको तुम अल्लाह के सिवा माबूद समझते हो उनसे बेज़ार हैं, हम तुम्हारे मुन्किर हैं, और हममें और तुममें हमेशा के लिए बैर, दुश्मनी और बुग़ज़ (ज्यादा) ज़ाहिर हो गया, जब तक तुम एक अल्लाह पर ईमान न लाओ। लेकिन इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) की इतनी बात तो अपने बाप से हुई थी कि मैं तुम्हारे लिए इस्तिग़फ़ार ज़रूर करूँगा, और तुम्हारे लिए (इस्तिग़फ़ार से ज्यादा) मुझको खुदा के आगे किसी बात का इख़्तियार नहीं।⁵ ऐ हमारे परवर्दिगार! हम आप पर भरोसा करते हैं और आप ही की तरफ़ रुजू करते हैं। और आप ही की तरफ़ लौटना है। (4) ऐ हमारे

(पिछले पृष्ठ का शेष) हर-हर कदम पर अपने रसूल के साथ थी। हबीबे रब्बुल आलमीन सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अल्लाह के पैग़ाम के इशारे पर हुक्म दिया कि उनके खेत उजाड़ दो और बागात काट दो, ताकि ये लोग जल्द फैसला करने पर मजबूर हों। जब खेत उजड़ने और बागात कटने लगे तो वे लोग बोले ऐ मुहम्मद! हम तो ग़द्दार और बद-अहद हैं इसलिए हमारे क़त्ल के पीछे पड़ना तो ठीक है, इन बेकुसूर खेतों और बाग़ों ने क्या कुसूर किया है जिसकी सज़ा में उनके सर कलम हो रहे हैं? चूँकि यह पैग़ाम ज़ाहिरी तौर पर उचितता का पहलू लिए हुए था, इसलिए बाज़ नए-नए इस्लाम में दाख़िल होने वाले सहाबियों को भी खलजान (यानी चिंता और आशंका) हुआ और कुछ परेशानियाँ लाहिक हुईं। खुदा तआला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाकर उनका इत्मीनान कर दिया कि जो कुछ हुआ हमारे हुक्म और मरज़ी से हुआ। याद रहे कि ज़रूरत व मसलहत के वक़्त जंगी दुश्मनों का माल व असबाब बर्बाद और उसमें आग लगा देना, उनके पेड़ों को काट डालना और बाग़ों का काटना, गरज़ हर किस्म की ज़रूरियाते ज़िन्दगी का बर्बाद करना जायज़ है।

3. लूट की दो किस्में हैं- एक वह जो काफ़िरों से लड़कर हाथ आए। दूसरे बग़ैर जंग व झगड़े के मिले और उसमें इस्लामी मुजाहिद मालिक बनने और आपस में बाँटने के हक़दार न हों। पहली सूरत को 'माले ग़नीमत' कहते हैं और दूसरी का नाम 'फै' है। माले फै सब-का-सब बैतुल-माल में जमा होता है, माले ग़नीमत के पाँच हिस्से किए जाते हैं, चार हिस्से इस्लामी लश्कर में बाँटते हैं और पाँचवा हिस्सा अल्लाह के रास्ते में अलग कर दिया जाता है। बनू नज़ीर के मकानात, बागात और खेत मुसलमानों के कब्ज़े में आए। हक़ तआला ने यह ज़मीन माले ग़नीमत की तरह तक्सीम न कराई बल्कि उसका कुल्ली इख़्तियार नबी करीम सल्ल. को दे दिया।

4. हिजरत के बाद अन्सार पर मुहाजिरों का बोझ आन पड़ा था, यही लोग उन परदेसियों की ज़िन्दगी की ज़रूरतों के ज़िम्मेदार थे। हज़राते मुहाजिरीन (पृष्ठ 988 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 990, 992, 994 की तफ़सीर पृष्ठ 996-1004 पर)

परवर्दिगार! हमको काफिरों का तख्ता-ए-मश्क "यानी जुल्म व सितम का निशाना" न बना। और ऐ हमारे परवर्दिगार! हमारे गुनाह माफ कर दीजिए, बेशक आप ज़बरदस्त, हिक्मत वाले हैं। (5) बेशक उन लोगों में तुम्हारे लिए यानी ऐसे शख्स के लिए उम्दा नमूना है जो अल्लाह (के सामने जाने) का और कियामत के दिन (के आने) का एतिकाद रखता हो। और जो शख्स (इस हुक्म से) ख़ुशख़बरी करेगा, सो (उसी का नुकसान होगा क्योंकि) अल्लाह तआला (तो) बिलकुल बेनियाज़ और तारीफ़ के लायक़ है। (6) ♦

अल्लाह तआला से उम्मीद है (यानी उधर से वायदा है) कि तुममें और उन लोगों में जिनसे तुम्हारी दुश्मनी है, दोस्ती कर दे, और अल्लाह तआला को बड़ी कुदरत है, और अल्लाह तआला मग़्फ़िरत करने वाला, रहम करने वाला है।¹ (7) अल्लाह तआला तुमको उन लोगों के साथ एहसान और इन्साफ़ का बर्ताव करने से मना नहीं करता जो तुमसे दीन के बारे में नहीं लड़े, और तुमको तुम्हारे घरों से² नहीं निकाला, अल्लाह तआला इन्साफ़ का बर्ताव करने वालों से मुहब्बत रखते हैं। (8) सिर्फ़ उन लोगों के साथ दोस्ती करने से³ अल्लाह तआला तुमको मना करता है जो तुमसे दीन के बारे में लड़े हों, (चाहे सामने आकर या इरादे से) और तुमको तुम्हारे घरों से निकाला हो। और (अगर निकाला भी न हो, लेकिन) तुम्हारे निकालने में (निकालने वालों की) मदद की हो। और जो शख्स ऐसों से दोस्ती करेगा सो वे गुनाहगार होंगे। (9) ऐ ईमान वालो! जब तुम्हारे पास मुसलमान औरतें (गैर-इस्लामी मुल्क से) हिजरत करके आएँ तो तुम उनका इम्तिहान कर लिया करो। उनके ईमान को अल्लाह ही ख़ूब जानता है।⁴ पस अगर उनको (उस इम्तिहान की रू से) मुसलमान समझो तो उनको काफिरों की तरफ़ वापस मत करो, (क्योंकि) न तो वे औरतें उन काफिरों के लिए हलाल हैं और न वे काफिर उन औरतों के लिए हलाल हैं। और उन काफिरों ने जो कुछ खर्च किया हो वह उनको अदा कर दो। और तुमको उन औरतों से निकाह कर लेने में कुछ गुनाह न होगा जबकि तुम उनके महर उनको दे दो। और (ऐ मुसलमानो!) तुम काफिर औरतों के ताल्लुकात को बाकी मत रखो,⁵ और (इस सूरत में) जो कुछ तुमने खर्च किया हो (उन काफिरों से) माँग लो, और जो कुछ उन काफिरों ने खर्च किया हो वे (तुमसे) माँग लें, यह अल्लाह का हुक्म है (इसका इत्तिबा करो) वह तुम्हारे दरमियान फैसला करता है, और अल्लाह तआला

(पिछले पृष्ठ का शेष) मक्का मुअज़्ज़मा में अपनी बड़ी-बड़ी जायदाद छोड़कर चले आए थे, इसलिए बनू नज़ीर से जो ज़मीनें और बागात हासिल हुए वे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रते मुहाजिरिने किराम पर तकसीम कर दिए। इस तकसीम ने अन्सार सहाबा को मुहाजिरिने के बोझ से आज़ाद कर दिया, उससे मुहाजिरिने और अन्सार दोनों को फ़ायदा पहुँचा।

(तफ़सीर पृष्ठ 990)

1. नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास एक मेहमान आया और आपने घर में पाक बीवियों से खाना माँगा भेजा। हर एक ने यही जवाब दिया कि पानी के सिवा कुछ नहीं। आपने अन्सार सहाबा की तरफ़ मुतवज्जह होकर फरमाया, जो कोई आज रात मेरे मेहमान की मेहमानदारी करेगा खुदा उसपर रहम करेगा। हज़रत साबित कैस अन्सारी रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह! मैं मेहमान की खिदमत का हक़ अदा करूँगा। गरज़ मेहमान को घर ले गए और बीवी से कहा, यह रसूलल्लाह के मेहमान आज हमारे मेहमान बने हैं, जो कुछ खातिर-मुदारात हो सके, पीछे न रहना। बीवी ने कहा कि हमारे यहाँ तो आज बच्चों की खुराक के सिवा और कुछ भी नहीं। हज़रत साबित रज़ियल्लाहु अन्हु बोले अच्छा यूँ करो कि बच्चों को तो बहला-फुसलाकर सुला दो, और मैं खाना लेकर मेहमान के साथ बैठूँ और तुम भी मेरे साथ बैठ जाओ। जब मेहमान खाना शुरू कर दे तो तुम किसी बहाने से उठकर चिराग़ बुझा देना, हम दोनों झूठ-मूठ और दिखाने को नवाले उठाते रहेंगे, अगरचे हम फाँके से रहेंगे लेकिन मेहमान का पेट तो भर जाएगा। चुनाँचे ऐसा ही किया गया। सुबह को हज़रत साबित बारगाहे नुबुवत में हाज़िर हुए तो यह आयत नाज़िल हो चुकी थी।

2. इन तीन आयतों से साबित हुआ कि: 1- खुलासा-ए-उम्मत हज़रते मुहाजिरिने हैं। 2- अन्सार सहाबा के जो फज़ा़इल बयान फरमाए गए हैं उनमें बड़ी बात यह है कि वे मुहाजिरिने से मुहब्बत करते हैं। इससे यह मालूम हुआ कि अन्सार की जो फज़ीलत है वह मुहाजिरों के खिदमत-गुज़ार होने की वजह से है। 3- इन आयतों से यह भी मालूम होता है कि उम्मत तीन तबकों में मुन्कसिम है। चुनाँचे हज़रत सअद

(पृष्ठ 990 की बकिया तफ़सीर और पृष्ठ 992, 994, 996 की तफ़सीर पृष्ठ 998-1008 पर)

बड़ा इल्म वाला (और) हिक्मत वाला है। (10) और अगर तुम्हारी बीवियों में से कोई बीवी काफ़िरों में रह जाने से (बिलकुल ही) तुम्हारे हाथ न आए फिर तुम्हारी बारी आए तो जिनकी बीवियाँ हाथ से निकल गईं, जितना (महर) उन्होंने (उन बीवियों पर) खर्च किया था उसके बराबर तुम उनको दे दो, और अल्लाह से कि जिसपर तुम ईमान रखते हो डरते रहो। (11) ऐ पैग़म्बर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)! जब मुसलमान औरतें आपके पास (इस गरज़ से) आएँ कि आपसे इन बातों पर बैअत करें कि अल्लाह के साथ किसी चीज़ को शरीक न करेंगी, और न चोरी करेंगी, और न बदकारी करेंगी, और न अपने बच्चों को क़त्ल करेंगी और न बोहतान की औलाद लाएँगी, जिसको अपने हाथों और पाँव के दरमियान (शौहर के नुत्फ़े से जन्म दी हुई दावा करके) बना लें,² और जायज़ बातों में वे आपके ख़िलाफ़ न करेंगी, तो आप उनको बैअत कर लिया कीजिए, और उनके लिए अल्लाह से मग़्फ़िरत तलब किया कीजिए, बेशक अल्लाह तआला मग़्फ़िरत करने वाला, रहम करने वाला है। (12) ऐ ईमान वालो! उन लोगों से (भी) दोस्ती मत करो जिनपर अल्लाह तआला ने ग़ज़ब फ़रमाया है³ कि वे आख़िरत (की भलाई और सवाब) से ऐसे नाउम्मीद हो गए हैं जैसे काफ़िर लोग जो क़ब्रों में (दफ़न) हैं, नाउम्मीद हैं।⁴ ● (13) ♦

61 सूर: सफ़ 109

सूर: सफ़ मदीना में नाज़िल हुई। इसमें 14 आयतें और 2 रुकूअ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

सब चीज़ें अल्लाह ही की पाकी बयान करती हैं (अपनी ज़बान से या अपने हाल से) जो कुछ आसमानों में हैं और जो कुछ ज़मीन में हैं। और वही ज़बरदस्त, हिक्मत वाला है।¹ (1) ऐ ईमान वालो! ऐसी बात क्यों कहते हो जो करते नहीं हो? (2) खुदा के नज़दीक यह बात बहुत नाराज़गी की है कि ऐसी बात कहो जो करो

(पिछले पृष्ठ का शेष) बिन वक्कास रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि खुदा ने मोमिनों के तीन दर्जे कायम किए हैं- पहला दर्जा मुहाजिरों का जो ख़त्म हो चुका, अब किसी को नहीं मिल सकता। दूसरा दर्जा अन्सार का, वह भी ख़त्म हो चुका, और अब किसी को नहीं मिल सकता। तीसरा दर्जा उन लोगों का है जो मुहाजिरीन और अन्सार के बाद हों और उनके लिए दुआ करने वाले रहें और इस्तिफ़ार करते रहें, यह दर्जा बाकी है और इनसान की सआदत इसी में है कि वह तीसरे ग़िरोह में हो। और अगर कोई दुआ करने वाला होने के बजाय मुहाजिरीन और अन्सार को बुरा भला कहने वाला होगा, तो वह अपने अन्जाम का खुद ज़िम्मेदार होगा।

3. जब रसूल खुदा सल्ल. ने बनू नज़ीर का घेराव किया था तो मुनाफ़िकों के सरदार अब्दुल्लाह बिन उबई ने उनसे कहला भेजा कि घबराना नहीं मैं अपनी क़ौम के दो हज़ार बहादुरों से तुम्हारी मदद को जल्द ही पहुँचाता हूँ। मगर जब वक़्त आया तो कुछ भी न कर सका। यहूद बनू नज़ीर से मुनाफ़िकों ने यह भी वायदा कर रखा था कि अगर तुम निकाले गए तो हम भी मदीना से निकल जाएँगे, लेकिन मुनाफ़िक उनके साथ न निकले।

4. यानी अगरचे अहले हक़ की दुश्मनी में वे सब बराबर हैं मगर खुद भी तो उनमें अक़ीदों के अलग-अलग होने की वजह से दुश्मनी और फूट है।

(तफ़सीर पृष्ठ 992)

1. मुराद उनसे यहूद बनी कैनाकाअ हैं, जिनका किस्सा यह हुआ कि बद्र के वाकिए के बाद उन्होंने आपसे सन् दो हिजरी में अहद तोड़कर जंग की, फिर मग़लूब और मकहूर हुए और आपके फ़ैसले पर क़िले से बाहर निकले और सबकी मुश्कें बाँधी गईं। फिर अब्दुल्लाह बिन उबई के रोने-धोने से उनकी इस शर्त पर जान बख़्शी हुई कि मदीना से चले जाएँ। चुनौचे वे मुल्क शाम के इलाकों की तरफ़ निकल गए और उनके मालों में माले ग़नीमत की तरह अमल हुआ।

2. पस जिस तरह उस शैतान ने इनसान को पहले बहकाया फिर वक़्त पर साथ न दिया और दोनों घाटे का शिकार हुए, इसी तरह मुनाफ़िकीन ने पहले बनू नज़ीर को बुरी राय दी कि तुम निकलो नहीं, फिर ऐन वक़्त पर उनको दगा दी और दोनों बला में फँसे। बनू नज़ीर तो निकाले गए (पृष्ठ 992 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 994, 996, 998 की तफ़सीर पृष्ठ 1000-1010 पर)

नहीं। (3) अल्लाह तो उन लोगों को (ख़ास तौर पर) पसन्द करता है जो उसके रास्ते में इस तरह मिलकर लड़ते हैं कि गोया वह एक इमारत है कि जिसमें सीसा पिलाया गया है।¹ (4) और (वह वक्त ज़िक्र करने के काबिल है) जबकि मूसा ने अपनी कौम से फ़रमाया कि ऐ मेरी कौम! मुझको क्यों तकलीफ़ पहुँचाते हो? हालाँकि तुमको मालूम है कि मैं तुम्हारे पास अल्लाह का भेजा हुआ आया हूँ। फिर जब (इस तबीह पर भी) वे लोग टेढ़े ही रहे तो अल्लाह तआला ने उनके दिलों को और (ज़्यादा) टेढ़ा कर दिया, और अल्लाह तआला (का मामूल है कि वह) ऐसे नाफ़रमानों को हिदायत (की तौफ़ीक़) नहीं देता।² (5) और (इसी तरह वह वक्त भी ज़िक्र करने के काबिल है) जबकि ईसा इब्ने मरियम ने फ़रमाया कि ऐ बनी इस्राईल! मैं तुम्हारे पास अल्लाह का भेजा हुआ आया हूँ कि मुझसे पहले जो तौरात (आ चुकी) है मैं उसकी तस्दीक़ करने वाला हूँ, और मेरे बाद जो एक रसूल आने वाले हैं जिनका (मुबारक) नाम अहमद होगा, मैं उनकी खुशख़बरी देने वाला हूँ। फिर जब वह उन लोगों के पास खुली दलीलें लाए तो वे लोग (उन दलीलों यानी मोज़िज़ों के बारे में) कहने लगे, यह खुला जादू है। (6) और (वाकई) उस शख्स से ज़्यादा कौन ज़ालिम होगा जो अल्लाह पर झूठ बाँधे, हालाँकि वह इस्लाम की तरफ़ बुलाया जाता हो।³ और अल्लाह ऐसे ज़ालिमों को हिदायत (की तौफ़ीक़) नहीं दिया करता।⁴ (7) ये लोग चाहते हैं कि अल्लाह के नूर (यानी दीने इस्लाम) को अपने मुँह से (फूँक मारकर) बुझा दें⁵ हालाँकि अल्लाह तआला अपने नूर को कमाल तक पहुँचाकर रहेगा, अगरचे काफ़िर लोग कैसे ही नाखुश हों। (8) (चुनाँचे) वह (अल्लाह) ऐसा है जिसने (इस नूर के पूरा करने के लिए) अपने रसूल को हिदायत (का सामान यानी कुरआन) और सच्चा दीन (यानी इस्लाम) देकर भेजा है ताकि इस (दीन) को तमाम (बक़िया) दीनों पर ग़ालिब कर दे (कि यही पूरा करना है), अगरचे मुशिरक कैसे ही नाखुश हों। (9) ♦

ऐ मोमिनो! क्या मैं तुमको ऐसी तिजारात बतलाऊँ जो तुमको एक दर्दनाक अज़ाब से बचा ले? (10) (वह यह है कि) तुम लोग अल्लाह पर और उसके रसूल पर ईमान ले आओ।⁶ और अल्लाह की राह में अपने माल

(पिछले पृष्ठ का शेष) और मुनाफ़िक़ अपने मन्सूबे में नाकामयाब रहे।

3. यानी न गुजरे ज़माने में उसमें कोई ऐब हुआ जो कि हासिल है “कुददूसुन” का, और न आइन्दा इसका एहतिमाल व गुमान है जो कि हासिल है ‘सलामुन’ का।

4. यानी आफ़त भी नहीं आने देता और आई हुई को भी दूर कर देता है।

5. पस ऐसे अज़मत और बड़ाई वाले के अहक़ाम पर अमल करना ज़रूरी और निहायत ज़रूरी है।

(तफ़सीर पृष्ठ 994)

1. यानी अगरचे दिल से दोस्ती न हो मगर ऐसा दोस्ताना बर्ताव भी मत करो।

2. यानी पहले तो दोस्ती ही बुरी चीज़ है, फिर खुफ़िया पैग़ाम भेजना और ज़्यादा बुरा है।

3. यानी दूसरी ज़िक्र की हुई रुकावटों की तरह यह चीज़ भी दोस्ती के लिए रुकावट होनी चाहिए।

4. हज़रत नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत के आठवें साल मक्का पर चढ़ाई करने का इरादा फ़रमाया और इस इरादे को खुफ़िया रखा, ताकि मक्का वालों के कानों में इसकी भनक न पड़े और वे मुकाबले में आकर खून-ख़राबे का सबब न बनें। आप उसके लिए तमाम एहतियाती तदबीरें अमल में लाए। हज़रत हातिब बिन अबी बल्लआ मुहाज़िर और बदी सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हु ने जो यमन के रहने वाले थे और मक्का में आकर रहने लगे थे और उनके माल, वालिदा, भाई और बाल-बच्चे अब भी मक्का में थे। मक्का वालों को आपके इस खुफ़िया इरादे की इतिला देने के लिए चिट्ठी लिखी और मक्का की एक औरत के हाथ भेज दी। सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को वक्ता के ज़रिए इसकी इतिला हुई, आपने झट हज़रत अली और हज़रत जुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुमा को हुक्म दिया कि फ़ौरन पहुँचो और चिट्ठी औरत से वापस लाओ। उन्होंने घोड़े दौड़ा दिए। उस औरत का पीछा किया और रौज़ा-ए-खाख़ के मक़ाम पर उस औरत को जा गिरफ़्तार किया। औरत ने चिट्ठी के होने से इनकार किया, लेकिन जब ज़्यादा सख्ती की गई तो उसने अपनी चोटी में से चिट्ठी निकाल दी, यह चिट्ठी बारगाहे नुबुव्वत में लाकर पढ़ी गई। आपने हज़रत हातिब रज़ियल्लाहु अन्हु से उसके बारे में पूछा, उन्होंने गुज़ारिश की या रसूलल्लाह! वाकई मैंने यह चिट्ठी लिखी, लेकिन मुझे खुदा-ए-अलीम की कसम यह काम मैंने मुसलमानों को नुक़सान पहुँचाने की नीयत से नहीं किया और न काफ़िरो की भलाई के ख़्याल से, बल्कि असल वजह यह थी कि दूसरे मुहाज़िरों की मक्का मुअज़्ज़मा में रिश्तेदारी और ख़ानदानी ताल्लुक है (पृष्ठ 994 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 996, 998, 1000 की तफ़सीर पृष्ठ 1002-1012 पर)

और जान से जिहाद करो, यह तुम्हारे लिए बहुत ही बेहतर है अगर तुम कुछ समझ रखते हो। (11) (जब ऐसा करोगे तो) अल्लाह तआला तुम्हारे गुनाह माफ करेगा और तुमको (जन्नत के) ऐसे बागों में दाखिल करेगा जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, और उम्दा मकानों में (दाखिल करेगा) जो हमेशा रहने के बागों में (बने) होंगे, यह बड़ी कामयाबी है। (12) और (इस आखिरत के फल के अलावा) एक और (दुनियावी फल) भी है कि तुम उसको (भी खास तौर पर) पसन्द करते हो। (यानी) अल्लाह की तरफ से मदद और जल्दी फ़तह पाना। और (ऐ पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम!) आप मोमिनों को खुशख़बरी दे दीजिए। (13) ऐ ईमान वालो! तुम अल्लाह के (दीन के) मददगार हो जाओ जैसा कि ईसा इब्ने मरियम (अलैहिस्सलाम) ने (उन) हवारीयों से फ़रमाया कि अल्लाह के वास्ते मेरा कौन मददगार होता है? वे हवारी बोले,¹ हम अल्लाह (के दीन) के मददगार हैं। सो (इस कोशिश के बाद) बनी इस्राईल में से कुछ लोग ईमान लाए² और कुछ लोग इनकारी रहे³ सो हमने ईमान वालों की उनके दुश्मनों के मुकाबले में ताईद की, सो वे ग़ालिब हो गए। (14) ♦

62 सूर: जुमा 110

सूर: जुमा मदीना में नाज़िल हुई। इसमें 11 आयतें और 2 रुकूअ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

*सब चीज़ें जो कुछ आसमानों में हैं और जो कुछ ज़मीन में हैं, (अपनी ज़बान से या अपने हाल से) अल्लाह तआला की पाकी बयान करती हैं जो कि बादशाह है, (ऐबों से) पाक है, ज़बरदस्त है, हिक्मत वाला है। (1) वही है जिसने (अरब के) अनपढ़ लोगों में उन्ही (की कौम) में से (यानी अरब में से) एक पैग़म्बर भेजा, जो उनको अल्लाह की आयतें पढ़-पढ़कर सुनाते हैं, और उनको (ग़लत अक़ीदों और बुरे अख़लाक से) पाक करते हैं, और उनको किताब और समझदारी (की बातें) सिखलाते हैं, और ये लोग (आपके पैग़म्बर की हैसियत से तशरीफ़ लाने से) पहले से खुली गुमराही में थे।⁴ (2) और (इन मौजूदा लोगों के अलावा) दूसरों के लिए भी उनमें से जो अभी उनमें शामिल नहीं हुए⁵ और वह ज़बरदस्त, हिक्मत वाला है। (3) यह (रसूल के ज़रिए से गुमराही से निकलकर हिदायत की तरफ़ आना) खुदा का फ़ज़ल है, वह फ़ज़ल जिसको चाहता है देता है, और अल्लाह तआला बड़े फ़ज़ल वाला है। (4) जिन लोगों को तौरात पर अमल करने का हुक्म दिया गया,

(पिछले पृष्ठ का शेष) उनके माल व औलाद की हिफ़ाज़त उस रिश्ते-नाते के सबब हो रही है, और मैं ग़ैर-मुल्क का रहने वाला हूँ, मक्का वालों से कोई रिश्ता नहीं, मेरे माल और बाल-बच्चों की हिफ़ाज़त करने वाला वहाँ कोई नहीं। चूँकि मुझे कामिल यकीन था कि खुदा तआला अपने दीन का बोल-बाला करेगा और उसके नबी को हर हालत में फ़तह होगी, मैंने ख़याल किया अगर मैं मक्का वालों को इस चढ़ाई की इत्तिहा दे दूँ तो इससे इस्लाम और मुसलमानों को तो कोई नुक़सान नहीं, लेकिन कुरैश मेरे एहसानमन्द होकर मेरे घर वालों और बाल-बच्चों और माल की हिफ़ाज़त करेंगे और उनको तकलीफ़ और नुक़सान नहीं पहुँचाएँगे। आपने मज्लिस में हाज़िर लोगों से फ़रमाया कि जो कुछ सच्ची बात थी इन्होंने ज़ाहिर कर दी है, इसलिए इनको कोई बुरा न कहे। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल! यह शख्स इस्लाम की मुख़ालफ़त में ग़द्दारी और ख़ियानत का मुजरिम हुआ है। इजाज़त दीजिए कि इस मुनाफ़िक़ की गर्दन उड़ा दूँ। इरशाद हुआ क्या तुम्हें मालूम नहीं कि यह बदी है और बद वालों का हर गुनाह माफ़ है और उनके लिए जन्नत वाजिब हो चुकी है। रहमते आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इस माफ़ और दरगुज़र करने वाली शान पर हज़रत उमर रज़ि. की आँखों से आँसू जारी हो गए। उसपर ये आयतें नाज़िल हुईं।

5. यानी मुसलमानो! हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम और उनके साथियों जैसी नेक चाल तुमको भी चलनी चाहिए कि उन्होंने अपने ग़ैर-मुस्लिम भाई-बन्दों से बिलकुल बेताल्लुकी का इज़हार कर दिया, न उनसे कुछ वास्ता रखा न कोई सरोकार। लेकिन इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अपने काफ़िर बाप के लिए जो इस्तिग़फ़ार का वायदा फ़रमाया था उसमें उनकी पैरवी करना जायज़ नहीं। क्योंकि उनसे यह वायदा नावाक़फ़ियत की हालत में हो गया था। (पृष्ठ 994 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 996, 998 1000, 1002 की तफ़सीर पृष्ठ 1004-1016 पर)

फिर उन्होंने उसपर अमल नहीं किया उनकी हालत उस गधे जैसी हालत है जो बहुत-सी किताबें लादे हुए है।¹ (गरज़) उन लोगों की बुरी हालत है जिन्होंने अल्लाह की आयतों को झुठलाया (जैसे यहूद हैं), और अल्लाह ऐसे ज़ालिमों को हिदायत (की तौफीक) नहीं दिया करता। (5) (और अगर ये लोग यह कहें कि हम बावजूद इस हालत के भी अल्लाह के मकबूल हैं तो) आप (उनसे) कह दीजिए कि ऐ यहूदियो! अगर तुम्हारा यह दावा है कि तुम किसी और की शिकत के बग़ैर अल्लाह के मकबूल (और प्यारे) हो, तो तुम (इसकी तस्दीक के लिए) मौत की तमन्ना कर (के दिखा) दो अगर तुम (इस दावे में) सच्चे हो? (6) और वे कभी इसकी तमन्ना न करेंगे, उन (कुफ़िया) आमाल (के ख़ौफ़ और सज़ा) की वजह से जो अपने हाथों समेटते हैं, और अल्लाह को ख़ूब इत्तिला है उन ज़ालिमों (के हाल) की। (7) आप (उनसे यह भी) कह दीजिए कि जिस मौत से तुम भागते हो वह (मौत एक दिन) तुमको आ पकड़ेगी, फिर तुम पोशीदा और ज़ाहिर जानने वाले (यानी खुदा) के पास ले जाए जाओगे। फिर वह तुमको तुम्हारे सब किए हुए काम बतला देगा (और सज़ा देगा)। (8) ♦

ऐ ईमान वालो! जब जुमा के दिन (जुमे की) नमाज़ के लिए अज़ान कही जाया करे तो तुम अल्लाह की याद (यानी नमाज़ व ख़ुतबे) की तरफ़ (फ़ौरन) चल पड़ा करो, और ख़रीद व बेच (और इसी तरह दूसरे काम जो चलने से रुकावट हों) छोड़ दिया करो।² यह तुम्हारे लिए ज़्यादा बेहतर है अगर तुमको कुछ समझ हो। (क्योंकि उसका नफ़ा बाकी है और ख़रीद व बेच वग़ैरह का नफ़ा फ़ना हो जाने वाला है)। (9) फिर जब (जुमे की) नमाज़ पूरी हो चुके तो (उस वक़्त तुमको इजाज़त है कि) तुम ज़मीन पर चलो-फिरो और खुदा की रोज़ी तलाश करो³ और (उसमें भी) अल्लाह को कसरत से याद करते रहो⁴ ताकि तुमको भलाई हासिल हो। (10) और (बाज़े लोगों का यह हाल है कि) वे लोग जब किसी तिजारत या मशगूल होने वाली चीज़ को देखते हैं तो वे उसकी तरफ़ दौड़ने के लिए बिखर जाते हैं, और आपको खड़ा हुआ छोड़ जाते हैं। आप फरमा दीजिए कि जो चीज़ (अल्लाह की निकटता और सवाब की किस्म में से) खुदा के पास है वह ऐसे मशगले और तिजारत से कहीं बेहतर है, और अल्लाह सबसे अच्छा रोज़ी पहुँचाने वाला है।⁵ (11) ♦

63 सूर: मुनाफिकून 104

सूर: मुनाफिकून मदीना में नाज़िल हुई। इसमें 11 आयतें और 2 रुकूअ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

जब आपके पास ये मुनाफिकीन आते हैं⁷ तो कहते हैं कि हम (दिल से) गवाही देते हैं कि आप बेशक अल्लाह के रसूल हैं। और यह तो अल्लाह को मालूम है कि आप अल्लाह के रसूल हैं (इसमें तो उनके कौल को झुठलाया नहीं जाता) और (इसके बावजूद) अल्लाह तआला गवाही देता है कि ये मुनाफिक लोग (इस कहने में) झूठे हैं। (1) उन लोगों ने अपनी कस्मों को (अपनी जान व माल बचाने के लिए) ढाल बना रखा है,

(पिछले पृष्ठ का शेष) जब उन्हें बाप का कतई तौर पर काफिर होना मालूम हो गया और काफिर के लिए इस्तिग़फ़ार की मनाही भी मालूम हो गई तो साफ़ लफ़्ज़ों में अपनी बेज़ारी का इज़हार फरमा दिया।

(तफ़सीर पृष्ठ 996) 1. चुनौते मक्का फ़तह होने के दिन बहुत आदमी खुशी से मुसलमान हो गए। मतलब यह कि अब्दल तो ताल्लुकात का ख़त्म करना हमेशा के लिए हो तब भी हुक़्म होने की वजह से वाजिबुल अमल था, फिर खासकर जबकि थोड़ी ही मुदत के लिए करना पड़े, और ईमान में शरीक होने से दोस्ती और ताल्लुक बदस्तूर लौट आए। गरज़ हर तरह ताल्लुक तोड़ना ज़रूरी हुआ।

2. मुराद वे काफिर हैं जो 'ज़िम्मी' (यानी इस्लामी हुकूमत में टैक्स देकर रह रहे हों, बदले में उनकी हर तरह की हिफ़ाज़त और देखभाल इस्लामी हुकूमत करती हो) या सुलह करने वाले हों। यानी उनके साथ एहसान का बर्ताव जायज़ है और इसी को मुन्सिफ़ाना बर्ताव फरमाया। पस इन्साफ़ से मुराद (पृष्ठ 996 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 998, 1000, 1002, 1004 की तफ़सीर पृष्ठ 1006-1019 पर)

फिर ये लोग (दूसरों को भी) अल्लाह की राह से रोकते हैं, बेशक उनके ये आमाल बहुत ही बुरे हैं। (2) (और हमारा) यह (कहना कि उनके आमाल बहुत बुरे हैं) इस सबब से है कि ये लोग (पहले जाहिर में) ईमान लाए फिर (कुफ्रिया कलिमात कहकर) काफिर हो गए, सो उनके दिलों पर मुहर कर दी गई है, तो ये (हक बात को) नहीं समझते। (3) और जब आप उनको देखें तो (जाहिरी शान व शौकत की वजह से) उनके डील-डोल आपको अच्छे मालूम हों। और अगर ये बातें करने लगे तो आप उनकी बातें सुन लें, गोया कि ये लकड़ियाँ हैं जो (दीवार के) सहारे लगाई हुई (खड़ी) हैं। हर शोर पुकार को (चाहे वह किसी वजह से हो) अपने ऊपर (पड़ने वाली) ख्याल करने लगते हैं।¹ यही लोग (तुम्हारे पूरे) दुश्मन हैं, आप उनसे होशियार रहिए खुदा उनको गारत करे, (हक दीन से) कहाँ फिरे चले जाते हैं। (4) और जब उनसे कहा जाता है कि (रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास) आओ तुम्हारे लिए रसूलुल्लाह इस्तिगफार कर दें तो वे अपना सर फेर लेते हैं।² और आप उनको देखेंगे कि (वे उस नसीहत करने वाले और इस्तिगफार से) तकब्बुर करते हुए बेरुखी करते हैं। (5) (जब उनके कुफ्र की यह हालत है तो) उनके हक में दोनों बातें बराबर हैं चाहे उनके लिए आप इस्तिगफार करें या उनके लिए इस्तिगफार न करें, अल्लाह तआला उनको हरगिज़ न बख्शेगा³ बेशक अल्लाह तआला ऐसे नाफरमान लोगों को हिदायत (की तौफीक) नहीं देता। (6) ये वे हैं जो कहते हैं कि जो लोग रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पास (जमा) हैं उनपर कुछ खर्च मत करो यहाँ तक कि ये आप ही बिखर जाएँगे। और (उनका यह कहना कोरी जहालत है, क्योंकि) अल्लाह ही के हैं सब खज़ाने आसमानों के और ज़मीन के, और लेकिन मुनाफिकीन समझते नहीं हैं। (7) (और) ये (लोग) कहते हैं कि अगर हम अब मदीना में लौटकर जाएँगे तो इज़ज़त वाला वहाँ से ज़िल्लत वाले को बाहर निकाल देगा। और (यह कहना बिल्कुल जहालत है, बल्कि हकीकत में) अल्लाह ही की है इज़ज़त और उसके रसूल की, (अल्लाह के साथ ताल्लुक के वास्ते से) और मुसलमानों के (अल्लाह और उसके रसूल के साथ ताल्लुक के वास्ते से) और लेकिन मुनाफिक लोग जानते नहीं। (8) ♦

ऐ ईमान वाले! तुमको तुम्हारे माल और औलाद (मुराद इससे दुनिया की तमाम चीज़ें हैं) अल्लाह की याद (और इताअत) से (मुराद इससे दीन के तमाम अहकाम हैं) गाफिल न करने पाएँ,⁴ और जो ऐसा करेगा तो: ऐसे लोग नाकाम रहने वाले हैं।⁵ (9) और (इबादतों में से एक माली इबादत और नेकी का हुक्म किया जाता है कि) हमने जो कुछ तुमको दिया है उसमें से (वाजिब हुक्क) इससे पहले-पहले खर्च कर लो कि तुममें से किसी की मौत आ खड़ी हो, फिर वह (तमन्ना व हसरत के तौर पर) कहने लगे कि ऐ मेरे परवर्दिगार! मुझको और थोड़े दिनों क्यों मोहलत न दी गई कि मैं खैर-खैरात दे लेता और नेक काम करने वालों में शामिल हो जाता। (10) और अल्लाह तआला किसी शख्स को जबकि उसकी (उम्र की) मीयाद (ख़त्म होने पर) आ जाती है हरगिज़ मोहलत नहीं देता। और अल्लाह तआला को तुम्हारे सब कामों की पूरी ख़बर है (वैसे ही बदले के हकदार होंगे)। (11) ♦

(पिछले पृष्ठ का शेष) ख़ास इन्साफ़ है, यानी ख़ास उनके जिम्मी बनकर रहने या सुलह करके रहने के एतिबार से इन्साफ़ का तकाज़ा यह है कि उनके साथ एहसान का मामला किया जाए और आम इन्साफ़ तो हर काफिर बल्कि जानवर के साथ भी वाजिब है।

3. हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु की बड़ी बीवी फ़तीला ने इस्लाम के कबूल करने से इनकार किया था इसलिए उन्होंने इस्लाम के शुरू ही में उसे तलाक़ दे दी थी। एक बार वह अपनी बेटी हज़रत अस्मा बन्ते अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हा से मिलने के लिए मक्का मुअज़्ज़मा पहुँची। हज़रत अस्मा रज़ियल्लाहु अन्हा ने हुज़ुरे पाक की खिदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह! मेरी मुश्रिका माँ आई है और बदस्तूर इस्लाम से बेज़ार है, क्या मैं उसके साथ कुछ अच्छा सुलूक कर सकती हूँ। आपने फरमाया, हाँ! सुलूक कर सकती हो, उसपर यह आयत नाज़िल हुई कि जो तुमसे लड़े नहीं और न तुमको वतन से निकाला और न वतन से निकालने में तुम्हारे मुखालिफ़ों की मदद की, उनके साथ

(पृष्ठ 996 की बकिया तफ़सीर और पृष्ठ 998, 1000, 1002, 1004, 1006 की तफ़सीर पृष्ठ 1008-1019 पर)

64 सूर: तगाबुन 108

सूर: तगाबुन मदीना में नाज़िल हुई। इसमें 18 आयतें और 2 रुकूअ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

सब चीज़ें जो कुछ आसमानों में हैं और जो कुछ ज़मीन में हैं अल्लाह की पाकी (अपनी ज़बान से या अपने हाल से) बयान करती हैं। उसी की बादशाही है और वही तारीफ़ के लायक़ है, और वह हर चीज़ पर कादिर है। (1) वही है जिसने तुमको पैदा किया, सो (बावजूद इसके भी) तुममें बाज़े काफ़िर हैं और बाज़े मोमिन हैं। और अल्लाह तआला तुम्हारे (ईमानी व कुफ़िया) आमाल को देख रहा है। (2) उसी ने आसमानों और ज़मीन को ठीक तौर पर पैदा किया¹ और तुम्हारा नक्शा बनाया, सो उम्दा नक्शा बनाया² और उसी के पास (सबको) लौटना है। (3) वह सब चीज़ों को जानता है जो आसमानों और ज़मीन में हैं, और सब चीज़ों को जानता है जो तुम छुपाकर करते हो और जो खुले तौर पर करते हो, और अल्लाह तआला दिलों तक की बातों का जानने वाला है।³ (4) क्या तुमको उन लोगों की ख़बर नहीं पहुँची जिन्होंने (तुमसे) पहले कुफ़्र किया⁴ फिर उन्होंने अपने (उन) आमाल का वबाल (दुनिया में भी) चखा और (उसके अलावा आख़िरत में भी) उनके लिए दर्दनाक अज़ाब होने वाला है। (5) यह इस सबब से है कि उन लोगों के पास उनके पैग़म्बर खुली दलीलें लेकर आए तो उन लोगों ने (उन रसूलों के बारे में) कहा कि क्या आदमी हमको हिदायत करेंगे? गरज़ उन्होंने कुफ़्र किया और मुँह मोड़ा और खुदा ने (भी उनकी कुछ) परवाह न की, और अल्लाह (सबसे) बेपरवाह (और) तारीफ़ के लायक़ है।⁵ (6) ये काफ़िर (आख़िरत के अज़ाब का मज़मून सुनकर) यह दावा करते हैं कि वे हरगिज़-हरगिज़ दोबारा ज़िन्दा न किए जाएँगे। आप कह दीजिए क्यों नहीं! खुदा की क़सम! ज़रूर दोबारा ज़िन्दा किए जाओगे, फिर जो-जो कुछ तुमने किया है तुमको सब ज़तला दिया जाएगा (और उसपर सज़ा दी जाएगी)। और यह (मरने के बाद ज़िन्दा करना और बदला देना) अल्लाह तआला को बिलकुल आसान है। (7)

(पिछले पृष्ठ का शेष) रिश्तेदारी के सबब सुलूक करने में कोई हर्ज नहीं।

4: हुदैबिया में क़ुरैश के काफ़िरों और मुसलमानों में इस बात पर सुलह हुई थी कि काफ़िरों में से जो कोई मुसलमान होकर आए उसको मुसलमान वापस कर दें, और जो मुसलमान इस्लाम से फिरकर क़ुरैश से जा मिले क़ुरैश उसको वापस न दें। सुलह के दिनों में उक़बा बिन अबी मुईत काफ़िर की बेटी मोहतरमा उम्मे कुलसूम ईमान लाई और हिजरत करके मदीना मुनव्वरा में अपने सौतेले भाई हज़रत उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु के पास पहुँच गई। पीछे-पीछे उनके दोनों भाई उम्मार और वलीद बहन को वापस लेने आ पहुँचे। उन्होंने गुमान किया था कि वापसी की शर्त आम है हालाँकि वह मर्दों ही के साथ खास थी, लेकिन अब अल्लाह की बारगाह से बेक़स व मज़लूम औरत ज़ात पर मुसालहत की यह शर्त लागू न होने का हुक्म नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आ पहुँचा और यह आयत नाज़िल हुई। इसमें जहाँ यह हुक्म हुआ कि ईमान वाली औरतों को काफ़िरों के हवाले न करो, वहाँ यह भी इरशाद हुआ कि उनके काफ़िर शौहरों को उनके वे महर जो उन्हें दे चुके हैं, वापस कर दो।

5. यानी जो तुम्हारी बीवियाँ ग़ैरइस्लामी हुक्मत में कुफ़्र की हालत में रह गईं उनका निकाह तुमसे ख़त्म हो गया।

(तफ़सीर पृष्ठ 998) 1. मक्का के फ़तह होने के दिन जब औरतें इस्लाम की बैअत के लिए नबी करीम की बाबरक़त ख़िदमत में हाज़िर हुईं तो हक़ तआला ने अपने हबीब को उनके बैअत करने का तरीका तालीम फ़रमाया और यह आयत नाज़िल फ़रमाई।

2. जाहिलियत के ज़माने में बाज़ औरतों का दस्तूर था कि किसी ग़ैर का बच्चा उठा लाई और कह दिया कि मेरे शौहर का है। या किसी से बदकारी की और उस हराब नुफ़े को अपने शौहर का बतला दिया, कि इसमें गुनाह के अलावा ज़िन्दा के किसी बच्चे को दूसरे की तरफ़ मन्सूब करना भी है हालाँकि वह बच्चा उसका नहीं है, जिसपर हदीस में वर्ईद आई है।

3. हज़रत ज़ैद बिन हारिस रज़ियल्लाहु अन्हु और किसी और सहाबी की चन्द यहूदियों से मुहब्बत थी। वे मुसलमानों की ख़बरें उन तक जा पहुँचाते, उसकी मनाही में यह आयत नाज़िल हुई और वे फ़ौरन तौबा करके उनसे अलग हो गए।

(पृष्ठ 998 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 1000, 1002, 1004, 1006, 1008 की तफ़सीर पृष्ठ 1010-1019 पर)

सो तुम (को चाहिए कि) अल्लाह पर और उसके रसूल पर और उस नूर पर (यानी कुरआन पर) जो कि हमने नाज़िल किया है ईमान लाओ, और अल्लाह तुम्हारे सब आमाल की पूरी ख़बर रखता है। (8) (और उस दिन को याद करो) कि जिस दिन तुम सबको एक जमा होने के दिन जमा करेगा, यही दिन है नफे और नुकसान का।^१ और (बयान उसका यह है कि) जो शख्स अल्लाह पर ईमान रखता होगा और नेक काम करता होगा अल्लाह तआला उसके गुनाह दूर कर देगा और उसको (जन्नत के) ऐसे बागों में दाखिल करेगा जिनके नीचे से नहरें जारी होंगी, जिसमें हमेशा-हमेशा के लिए रहेंगे (और) यह बड़ी कामयाबी है। (9) और जिन लोगों ने कुफ़्र किया होगा और हमारी आयतों को झुठलाया होगा ये लोग दोज़खी हैं, उसमें हमेशा रहेंगे और वह बुरा ठिकाना है। ▲ (10) ◆

कोई मुसीबत खुदा के हुक्म के बग़ैर नहीं आती।^२ और जो शख्स अल्लाह पर (पूरा) ईमान रखता है अल्लाह तआला उसके दिल को (सब्र व रिज़ा की) राह दिखा देता है, और अल्लाह हर चीज़ को ख़ूब जानता है।^३ (11) और (कलाम का खुलासा यह है कि हर मामले में जिसमें मुसीबतें भी दाखिल हैं) अल्लाह का कहना मानो और रसूल का कहना मानो, और अगर तुम (इताअत से) मुंह मोड़ोगे तो (याद रखो कि) हमारे रसूल के ज़िम्मे तो साफ-साफ़ पहुँचा देना है।^४ (12) अल्लाह के सिवा कोई माबूद (बनने के काबिल) नहीं^५ और मुसलमानों को अल्लाह ही पर (मुसीबतों वग़ैरह में) भरोसा रखना चाहिए। (13) ऐ ईमान वालो! तुम्हारी बाज़ बीवियाँ और औलाद तुम्हारे (दीन की) दुश्मन हैं, सो तुम उनसे होशियार रहो (और उनकी ऐसी बात पर अमल मत करो), और अगर तुम माफ़ कर दो और दरगुज़र कर जाओ और बख़्श दो तो अल्लाह तआला (तुम्हारे गुनाहों का) बख़्शने वाला (और तुम्हारे हाल पर) रहम करने वाला है। (14) तुम्हारे माल और औलाद बस तुम्हारे लिए एक आजमाइश की चीज़ है। और (जो शख्स उनमें पड़कर अल्लाह को याद रखेगा तो) अल्लाह के पास (उसके लिए) बड़ा अज़्र है।^६ (15) तो जहाँ तक तुमसे हो सके अल्लाह से डरते रहो^७ और (उसके अहकाम को) सुनो और मानो, और (खासकर हुक्म के मौकों में) खर्च (भी) किया करो, यह तुम्हारे लिए बेहतर होगा। और जो शख्स अपने नफ्स की हिंस से महफूज़ रहा ऐसे ही लोग (आखिरत में) फ़लाह पाने वाले हैं। (16) अगर तुम अल्लाह को अच्छी तरह (यानी नेक-नीयती के साथ) कर्ज़ दोगे तो वह उसको

(पिछले पृष्ठ का शेष) 4. जो काफ़िर मर जाता है इस वजह से कि उसको आखिरत का मुआयना हो जाता है, असल हकीकत पर यकीन के साथ बाख़बर हो जाता है कि अब मेरी बख़्शिश न होगी।

5. पस जो ऐसा बड़ाई और शान वाला हो उसकी हर हुक्म में फ़रमाँबरदारी ज़रूरी है। जिनमें एक हुक्म जिहाद का है जो इस सूर: में ज़िक्र हुआ है। जिसके नाज़िल होने का सबब यह है कि एक बार बाज़ मुसलमानों ने आपस में तज़्किरा किया कि अगर हमको कोई ऐसा अमल मालूम हो जो अल्लाह तआला के नज़दीक निहायत महबूब हो तो हम उसको अमल में लाएँ। और इससे पहले उहुद की लड़ाई में बाज़े जिहाद से भाग चुके थे, तथा जिहाद के हुक्म के नाज़िल होने के वक़्त बाज़ को वह हुक्म गिराँ गुज़रा था, उसपर यह आयत नाज़िल हुई।

(तफ़सीर पृष्ठ 1000) 1. मतलब यह हुआ कि तुम जो कहते हो कि हमको सबसे ज़्यादा महबूब अमल मालूम होता, सो सबसे महबूब अमल तो जिहाद है, फिर उसके नाज़िल होने के वक़्त नागवारी क्यों हुई थी और जंगे उहुद में क्यों भाग गए थे। यहाँ डॉट-डपट डींगें मारने और झूठ बोलने पर है। और बिना अमल के वज़ज़ इसके मफ़हूम से ख़ारिज है।

2. वे तकलीफ़ें मुख़्तलिफ़ तौर पर थीं और हासिल उन सबका नाफ़रमानी और मुख़ालफ़त है।

3. इस तरह ये लोग रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मुख़्तलिफ़ तरीक़े से तकलीफ़ें पहुँचाते हैं, इसलिए इनका जुर्म और बुराई और ज़्यादा हो जाता है कि इस्लाह की उम्मीद नहीं रही, पस उनके फ़साद को मिटाने के लिए क़िताल का हुक्म देना मस्लहत हुआ।

4. यह आयत नज़ीर बिन हारिस के बारे में नाज़िल हुई। उसने कहा था कि क़ियामत के दिन 'लात' और 'उज़्ज़ा' बुत मेरी शफ़ाअत करेंगे और उनकी सिफ़ारिश यकीनन अल्लाह की बारगाह में मक़बूल होकर मेरी मग़फ़िरत होगी।

5. 'वल्लाहु ला यहदी' इसलिए बढ़ाया कि उनकी मौजूदा हालत इस्लाह से दूर हो गई, इसलिए क़िताल ही की सज़ा तजवीज़ किया जाना मस्लहत हुआ। (पृष्ठ 1000 की बक़िया और पृष्ठ 1002, 1004, 1006, 1008, 1010 की तफ़सीर पृष्ठ 1012-1019 पर)

तुम्हारे लिए बढ़ाता चला जाएगा और तुम्हारे गुनाह बख्श देगा, और अल्लाह तआला बड़ा कद्र करने वाला है (कि नेक अमल को कबूल फरमाता है और) बड़ा बुर्दबार है। (17) छुपे और जाहिर (आमाल) का जानने वाला है (और) ज़बरदस्त है (और) हिक्मत वाला है। (18) ♦

65 सूर: तलाक 99

सूर: तलाक मदीना में नाज़िल हुई। इसमें 12 आयतें और 2 रुकूअ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

ऐ पैगम्बर! (आप लोगों से कह दीजिए कि) जब तुम लोग (अपनी) औरतों को तलाक देने लगो तो उनको इद्त (के ज़माने यानी हैज़) से पहले (यानी पाकी के ज़माने में) तलाक दो, और तुम इद्त को याद रखो और अल्लाह तआला से डरते रहो जो तुम्हारा रब है। उन औरतों को उनके (रहने के) घरों से मत निकालो (क्योंकि तलाक वाली का रहने का ठिकाना निकाह वाली की तरह वाजिब है) और न वे औरतें खुद निकलें, मगर हाँ! कोई खुली बेहयाई करें तो और बात है। और ये सब खुदा के मुकर्रर किए हुए अहकाम हैं, और जो शख्स अल्लाह के अहकाम से तजावुज़ करेगा (जैसे उस औरत को घर से निकाल दिया) उसने अपने ऊपर जुल्म किया। तुझको ख़बर नहीं शायद अल्लाह तआला इस तलाक देने के बाद कोई नई बात (तेरे दिल में) पैदा कर दे। (जैसे तलाक पर शर्मिन्दगी हो तो रुजू करने में उसकी तलाफी हो सकती है)। (1) फिर जब वे (तलाक पाई हुई) औरतें अपनी इद्त गुज़र जाने के करीब पहुँच जाएँ (तो तुमको दो इख्तियार हैं, या तो) उनको कायदे के मुवाफ़िक़ निकाह में रहने दो या कायदे के मुवाफ़िक़ उनको रिहाई दो, और आपस में से दो मोतबर शख्सों को गवाह कर लो। (ऐ गवाहो! अगर गवाही की ज़रूरत पड़े तो) ठीक-ठीक अल्लाह के वास्ते (बिना किसी रियायत के) गवाही दो। इस मज़मून से उस शख्स को नसीहत की जाती है जो अल्लाह पर और कियामत के दिन पर यकीन रखता हो। और जो शख्स अल्लाह से डरता है अल्लाह उसके लिए (परेशानियों से) नजात की शकल निकाल देता है। (2) और उसको ऐसी जगह से रिज़्क पहुँचाता है जहाँ उसका गुमान भी नहीं होता। और जो शख्स अल्लाह पर भरोसा करेगा तो अल्लाह तआला उस (की ज़रूरतों को पूरा करने और उसके काम बनाने) के लिए काफी है। अल्लाह तआला अपना काम (जिस तरह चाहे) पूरा करके रहता है। अल्लाह तआला ने हर चीज़ का (अपने इल्म में) एक अन्दाज़ा मुकर्रर कर रखा है। (3) ऊपर इद्त का मुख़्तसर तौर पर ज़िक्र था) और (तफ़सील यह है कि) तुम्हारी (तलाक दी हुई) बीवियों में से जो औरतें (ज्यादा उम्र होने की वजह से) माहवारी आने से मायूस हो चुकी हैं, अगर तुमको (उनकी इद्त के मुतैयन करने में) शुब्हा हो तो उनकी इद्त तीन महीने हैं। और इसी तरह जिन औरतों को (अब तक उम्र कम होने की वजह से) माहवारी नहीं आई। और गर्भवती औरतों की इद्त उस गर्भ का पैदा हो जाना है। और जो शख्स अल्लाह से डरेगा अल्लाह तआला उसके हर एक काम में आसानी कर देगा। (4) यह (जो कुछ ज़िक्र

(पिछले पृष्ठ का शेष) 6. एक बार सोलह दिन तक नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर वब़ नाज़िल न हुई थी। एक यहूदी सरदार कअ़ब बिन अशरफ़ कहने लगा, ऐ यहूद के ग़िरोह! तुमको खुशख़बरी हो कि दीने इस्लाम का अब ख़ात्मा है, मुहम्मद का काम (अल्लाह की पनाह) ख़त्म ही हुआ चाहता है, इसपर यह आयत नाज़िल हुई।

7. यानी ईमान पर हमेशा कायम रहो।

(तफ़सीर पृष्ठ 1002)

1. हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के बुर्ज़ा साथियों को 'हवारी' कहते हैं। ये तावाद में बारह थे। लफ़ज़ 'हवारी' 'हीर' से निकला है जिसके मायने सफ़ेदी के हैं, हवारी इस बिना पर हवारी कहलाए कि हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम पर सबसे पहले ईमान लाने वाले धोबी थे। (पृष्ठ 1002 की बक़िया और पृष्ठ 1004, 1006, 1008, 1010, 1012 की तफ़सीर पृष्ठ 1014-1020 पर)

हुआ) अल्लाह का हुक्म है, जो उसने तुम्हारे पास भेजा है। और जो शख्स (इन मामलात में और दूसरे मामलात में भी) अल्लाह से डरेगा तो अल्लाह उसके गुनाहों को दूर कर देगा (जो कि बड़े नुकसान का सबब हैं) और उसको बड़ा अन्न देगा। (5) तुम उन (तलाक दी हुई) औरतों को अपनी गुन्जाइश के मुवाफिक रहने का मकान दो जहाँ तुम रहते हो। और उनको तंग करने के लिए (उसके बारे में) तकलीफ मत पहुँचाओ। और अगर वे (तलाक दी हुई) औरतें गर्भ से हों तो गर्भ पैदा होने तक उनको (खाने-पीने का) खर्च दो। फिर अगर वे (तलाक दी हुई) औरतें (जबकि पहले ही से बच्चे वालियाँ हों या बच्चा पैदा होने से ही उनकी इहत खत्म हुई हो) तुम्हारे लिए (बच्चे को उजरत पर) दूध पिला दें तो तुम उनको (तय की हुई) उजरत दो, और (उजरत के बारे में) आपस में मुनासिब तरीके पर मश्वरा कर लिया करो। और अगर तुम आपस में कश्मकश करोगे तो कोई दूसरी औरत दूध पिला देगी। (6) (आगे बच्चे के खर्च के बारे में इरशाद है कि) गुन्जाइश वाले को अपनी गुन्जाइश के मुवाफिक (बच्चे पर) खर्च करना चाहिए। और जिसकी आमदनी कम हो उसको चाहिए कि अल्लाह ने जितना उसको दिया है उसमें से खर्च करे। खुदा तआला किसी शख्स को उससे ज्यादा का मुकल्लफ नहीं बनाता जितना उसको दिया है। खुदा तआला तंगी के बाद जल्दी फरागत भी देगा (अगरचे हाजत व ज़रूरत के पूरा करने के बक़्द हो)। (7) ♦

और बहुत-सी बस्तियाँ थी जिन्होंने अपने रब के हुक्म (मानने) से और उसके रसूलों से सरकशी की, सो हमने उन (के आमाल) का सख्त हिसाब किया और हमने उनको बड़ी भारी सज़ा दी (कि वह सज़ा अज़ाब के ज़रिए हलाक करना है)। (8) गरज़ उन्होंने अपने आमाल का वबाल चखा और उनका अन्जाम घाटा ही हुआ। (9) (यह तो दुनिया में हुआ और आखिरत में) अल्लाह ने उनके लिए एक सख्त अज़ाब तैयार कर रखा है। (और जब नाफरमानी का अन्जाम यह है) तो ऐ समझदारो! जो कि ईमान लाए हो, खुदा से डरो। खुदा ने तुम्हारे पास एक नसीहतनामा भेजा (10) (और वह नसीहतनामा देकर) एक ऐसा रसूल (भेजा) जो तुमको अल्लाह के साफ-साफ अहकाम पढ़-पढ़कर सुनाते हैं, ताकि ऐसे लोगों को जो ईमान लाएँ और अच्छे अमल करें (कुफ़्र व जहालत की) अंधेरियों से (ईमान, इल्म और अमल के) नूर की तरफ ले आएँ। और (आगे ईमान वगैरह इबादतों पर वायदा है कि) जो शख्स अल्लाह पर ईमान लाएगा और अच्छे अमल करेगा खुदा उसको (जन्नत के) ऐसे बागों में दाखिल करेगा जिनके नीचे नहरें जारी हैं, उनमें हमेशा-हमेशा के लिए रहेंगे। बेशक अल्लाह ने उनको (बहुत) अच्छी रोज़ी दी। (11) (आगे अल्लाह की फरमाँबरदारी का वाजिब

(पिछले पृष्ठ का शेष) आप एक दरिया के घाट पर से गुज़रे, देखा कि धोबी कपड़े धो रहे हैं, आपने उनसे फरमाया कि तुम लोगों का मैल-कुचैल दूर करते हो, आओ मैं तुमको धो दूँ और तुमसे मैल-कुचैल छुड़ा दूँ। चुनाँचे वे सब आपकी दावत पर ईमान ले आए।

2. इस्राईलियों में से चन्द आदमी जो हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पर ईमान लाए थे उनका यह अक़ीदा था कि आप अल्लाह के बन्दे और रसूल थे। हक़ तआला ने आपको यहूदियों के हाथों में पड़ने से बचाकर आसमान पर उठा लिया।

3. इसका यह तर्जुमा भी हो सकता है कि एक गिरोह ने कुफ़्र इख्तियार कर लिया, यानी हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को अल्लाह का बेटा मानने लगे।

4. ऊपर की सूर: में तौहीद व रिसालत का सुबूत और झुठलाने वालों का कल्ल की मज़ा का मुस्तहिक़ होना ज़िक्र किया गया था। इस सूर: के शुरू में तौहीद व रिसालत को साबित करने और झुठलाने वालों में से यहूद का जो मूसा अलैहिस्सलाम की कौम के उन्वान से ऊपर की सूर: में मज़कूर हुए हैं, निन्दा और वर्द का मुस्तहिक़ होना ज़िक्र किया गया है। और चूँकि उन यहूद की असल बीमारी दुनिया की मुहब्बत थी, इसलिए मुसलमानों को उससे बचाने के लिए दूसरे रूकूअ में जुमे के अहकाम के ज़िम्न से आखिरत को दुनिया पर तरजीह देने का हुक्म और इसके उलट करने से मना किया गया है। पस दोनों सूरतों के आखिर में तिजारत का ज़िक्र है, पहली में दीनी तिजारत का और दूसरी में दुनियावी तिजारत का।

5. मुराद अक्सर है। क्योंकि जाहिलियत के ज़माने में भी बाज़े अल्लाह के एक होने के इकरारी थे मगर फिर भी हिदायत को मुकम्मल करने (पृष्ठ 1002 की बकिया और पृष्ठ 1004, 1006, 1008, 1010, 1012, 1014 की तफ़सीर पृष्ठ 1016-1020 पर)

होना बयान किया जाता है, यानी) अल्लाह ऐसा है जिसने सात आसमान पैदा किए और उन्हीं की तरह ज़मीन भी, (और) उन सबमें (अल्लाह तआला के) अहकाम नाज़िल होते रहते हैं। (और यह इसलिए बतलाया गया) कि तुमको मालूम हो जाए कि अल्लाह तआला हर चीज़ पर कादिर है, और अल्लाह हर चीज़ को (अपने) इल्मी घेरे में लिए हुए है। (12) ♦

66 सूर: तहरीम 107

सूर: तहरीम मदीना में नाज़िल हुई। इसमें 12 आयतें और 2 रुकूअ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

ऐ नबी! जिस चीज़ को अल्लाह ने आपके लिए हलाल किया है आप (कसम खाकर) उसको (अपने ऊपर) क्यों हराम फरमाते हैं? (फिर वह भी) अपनी बीवियों की खुशी हासिल करने के लिए। और अल्लाह तआला बख्शने वाला, मेहरबान है।¹ (1) अल्लाह तआला ने तुम लोगों के लिए तुम्हारी कस्मों का खोलना (यानी कसम तोड़ने के बाद उसके कप्फारे का तरीका) मुक़र्रर फरमा दिया है, और अल्लाह तआला तुम्हारा कारसाज़ है। और वह बड़ा जानने वाला, बड़ी हिक्मत वाला है। (2) और जबकि पैग़म्बर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने अपनी किसी बीवी से एक बात चुपके से फरमाई,² फिर जब उस बीवी ने वह बात (दूसरी बीवी को) बतला दी और पैग़म्बर को अल्लाह तआला ने (वह के ज़रिए से) उसकी ख़बर कर दी, तो पैग़म्बर ने (उस ज़ाहिर कर देने वाली बीवी को) थोड़ी-सी बात तो जतला दी और थोड़ी-सी बात को टाल गए। सो जब पैग़म्बर ने उस बीवी को वह बात जतलाई, वह कहने लगी कि आपको इसकी किसने ख़बर कर दी? आपने फरमाया कि मुझको बड़े जानने वाले, ख़बर रखने वाले (यानी खुदा ने) ख़बर कर दी। (3) ऐ (पैग़म्बर की) दोनों बीवियो! अगर तुम अल्लाह के सामने तौबा कर लो तो तुम्हारे दिल माईल हो रहे हैं। और अगर (इसी तरह) पैग़म्बर के मुकाबले में तुम दोनों कारवाइयाँ करती रहें तो याद रखो पैग़म्बर का साथी अल्लाह है और ज़िबराईल है और नेक मुसलमान हैं, और उनके अलावा फ़रिश्ते (आपके) मददगार हैं।³ (4) अगर पैग़म्बर तुम औरतों को तलाक़ दे दें तो उनका परवर्दिगार बहुत जल्द तुम्हारे बदले उनको तुमसे अच्छी बीवियाँ दे देगा, जो इस्लाम वाली, ईमान वाली, फ़रमाँबरदारी करने वाली, तौबा करने वाली, इबादत करने वाली, रोज़ा रखने वाली होंगी, कुछ बेवा और कुछ कुँवारियाँ।⁴ (5) ऐ ईमान वालो! तुम अपने को और अपने घर वालों को

(पिछले पृष्ठ का शेष) के वे भी मोहताज थे।

6. इसमें तमाम उम्मत कियामत तक अरबी और ग़ैर-अरबी सब आ गए। और उनको 'मिन्हुम' इस्लाम के एतिबार से फरमाया, क्योंकि मुसलमान सब मुतहिद और एक हैं।

(तफ़सीर पृष्ठ 1004)

1. यह इसलिए कि गथा उन किताबों के नफे से महरूम है। इसी तरह इल्म का असल मकसूद और नफ़ा अमल है, जब यह न हुआ और सिर्फ़ इल्म हासिल करने और याद करने ही में दिक्कत और परेशानी उठाई तो बिल्कुल ऐसी ही मिसाल हो गई। और गथे को ख़ास करने की वजह यह है कि वह जानवरों में बेवकूफ़ मशहूर है, तो इसमें और ज़्यादा बेजारी और कराहत हो गई।

2. यहूद खुदा तआला के साथ अपने ताल्लुकात जतलाया करते और अपने मकबूले बारगाह होने पर फ़ख़र करते। उनके रद्द में यह आयत नाज़िल हुई जिसमें कहा गया कि अगर दूसरों के बजाय तुम ही अल्लाह के दोस्त हो तो मरने की आरज़ू करो, क्योंकि जिसको इस बात का यकीन हो जाए कि मैं अल्लाह का प्यारा और लाडला हूँ, मुझे अल्लाह तआला के यहाँ बड़े दर्जे मिलेंगे तो वह बेखटके मौत का इच्छुक होगा, ताकि ज़िन्दगी की तमाम परेशानियों से नज़ात पाकर जल्दी अल्लाह से जा मिले, और जन्नत का हमेशा का आराम और राहत हासिल करे।

3. बेचने को ख़ास करने की वजह उसके ज़्यादा एहतिमाम के सबब है कि उसके छोड़ने को नफे का जाता रहना समझा जाता है।

(पृष्ठ 1004 की बकिया और पृष्ठ 1006, 1008, 1010, 1012, 1014, 1016 की तफ़सीर पृष्ठ 1018-1020 पर)

(दोज़ख़ की) उस आग से बचाओ¹ जिसका ईंधन (और सोख़ता) आदमी और पत्थर हैं। जिसपर सख़्त-मिज़ाज (और) मज़बूत फ़रिश्ते (मुतैयन) हैं, जो खुदा की किसी बात में (ज़रा भी) नाफ़रमानी नहीं करते जो उनको हुक्म देता है। और जो कुछ उनको हुक्म दिया जाता है उसको (फ़ौरन) पूरा करते हैं।² (6) (और काफ़िरो को दोज़ख़ में दाख़िल करते वक़्त उनसे कहा जाएगा कि) ऐ काफ़िरो! तुम आज उज़्र (और माज़िरत) मत करो (कि बेफ़ायदा है), बस तुमको तो उसकी सज़ा मिल रही है जो कुछ तुम (दुनिया में) किया करते थे। (7) ♦

ऐ ईमान वालो! तुम अल्लाह के आगे सच्ची तौबा करो।³ (तौबा का नतीजा फ़रमाते हैं कि) उम्मीद (यानी वायदा) है कि तुम्हारा रब (उस तौबा की बदौलत) तुम्हारे गुनाह माफ़ कर देगा और तुमको (जन्नत के) ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें जारी होंगी। (और यह उस दिन होगा) जिस दिन कि अल्लाह तआला नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को और जो मुसलमान (दीन की रू से) उनके साथ हैं, उनको रुस्वा न करेगा।⁴ उनका नूर उनके दाहिने और उनके सामने दौड़ता होगा, (और यूँ) दुआ करते होंगे कि ऐ हमारे रब! हमारे लिए इस नूर को आख़िर तक रखिए। (यानी राह में बुझ न जाए), और हमारी मग़्फ़िरत फ़रमा दीजिए, आप हर चीज़ पर कादिर हैं। (8) ऐ नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)! कुफ़्फ़ार से (तलवारों से) और मुनाफ़िकों से (ज़बान से) जिहाद कीजिए और उनपर सख़्ती कीजिए। (दुनिया में तो ये इसके मुस्तहिक़ हैं) और (आख़िरत में) उनका ठिकाना दोज़ख़ है, और वह बुरी जगह है। (9) अल्लाह तआला काफ़िरो के लिए नूह (अलैहिस्सलाम) की बीवी और लूत (अलैहिस्सलाम) की बीवी का हाल बयान फ़रमाता है। वे दोनों हमारे ख़ास बन्दों में से दो बन्दों के निकाह में थीं। सो उन औरतों ने उन दोनों बन्दों का हक़ ज़ाया किया, तो वे दोनों नेक बन्दे अल्लाह के मुकाबले में उनके ज़रा भी काम न आ सके, और उन दोनों औरतों को (काफ़िरा होने की वजह से) हुक्म हो गया कि और जाने वालों के साथ तुम दोनों भी दोज़ख़ में जाओ।⁵ (10) और अल्लाह तआला मुसलमानों (की तसल्ली) के लिए फिरऔन की बीवी (हज़रत आसिया रज़ियल्लाहु अन्हा) का हाल बयान फ़रमाता है। जबकि उनकी बीवी ने दुआ की कि ऐ मेरे परवर्दिगार! मेरे वास्ते जन्नत में अपने नज़दीक में मकान बनाइए और मुझको फिरऔन (की बुराई) से और उसके अमल (यानी कुफ़ के नुक़सान और असर) से महफूज़ रखिए, और मुझको तमाम ज़ालिम (यानी काफ़िर) लोगों से महफूज़ रखिए।⁶ (11) (और साथ ही मुसलमानों की तसल्ली के लिए) इमरान की बेटी (हज़रत मरियम अलैहिस्सलाम) का हाल बयान करता है, जिन्होंने अपनी आबरू को (हराम और हलाल दोनों से) महफूज़ रखा।⁷ सो हमने उनके दामन में अपनी रूह फूँक दी और उन्होंने अपने परवर्दिगार के पैग़ामों की (जो उनको फ़रिश्तों के ज़रिए पहुँचे थे) और उसकी किताबों की तस्दीक़ की। और वह इताअत करने वालों में से थीं। (12) ♦

(पिछले पृष्ठ का शेष)

4. यानी उस वक़्त दुनिया के कामों के लिए चलने-फिरने की इजाज़त है।

5. यानी दुनियावी कामों में ऐसे मशगूल मत हो जाओ कि ज़रूरी अहक़ाम और इबादतों से ग़ाफ़िल हो जाओ।

6. सरदार अम्बिया सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जुमा के दिन खड़े खुतबा दे रहे थे कि हज़रत दह्या कल्बी रज़ियल्लाहु अन्हु का काफ़िला ग़ल्ले और हर किस्म के ख़ुराक के सामान से लदा हुआ मुल्के शाम से मदीना आया। उस वक़्त मदीना मुनव्वरा में सख़्त कहत (अकाल) और तंगी थी, और कायदा था कि जब कोई काफ़िला सही-सलामत वापस आता तो खुशी के नक्क़ारे बजाते थे। नक्क़रा बजा और जो लोग खुतबा सुन रहे थे, उस आवाज़ पर चल दिए। बहुत थोड़ी मिक्दार (मात्रा) में हज़रत जिनमें 'अशरा-ए-मुबशशरा' भी दाख़िल थे, बैठे रह गए। उस वक़्त यह नाराज़गी भरी आयत नाज़िल हुई। लेकिन याद रहे कि जो हज़रत उठकर गए इस्लाम में उनकी इब्तिदाई हालत थी, दूसरे उस वक़्त तक खुतबे से उठने की कोई मनाही नहीं आई थी। इसलिए वह इज्तिहादी ग़लती का शिकार हुए थे। पस किसी मुख़ालिफ़ के लिए एतिराज़ की गुन्जाइश नहीं।

(पृष्ठ 1004 की बक़िया और पृष्ठ 1006, 1008, 1010, 1012, 1014, 1016, 1018 की तफ़सीर पृष्ठ 1020-1022 पर)

(पिछले पृष्ठ का शेष) हैज (माहवारी) की हालत में तलाक दे दी। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि ऐ अब्दुल्लाह! हैज में तलाक देनी नाजायज़ है, इसलिए रुजू कर लो। हक तआला ने यह आयत नाज़िल फरमाकर तलाक का तरीका तालीम फरमा दिया।

2. यानी जैसे बदकारी करने या चोरी करने का जुर्म करें तो सज़ा के लिए निकाली जाएँ, या बाज़ उलमा के कौल के मुताबिक ज़बान दराज़ी और हर वक़्त का रंज व तकरार रखती हों तो उनको निकाल देना जायज़ है।

3. शरीअत में अगरचे ख़ास ज़रूरत और मजबूरी के वक़्त बीवी को तलाक देना जायज़ है लेकिन बिना ज़रूरत सख़्त नापसन्दीदा है। इसकी भी ज़्यादा एहतियात रखी गई है कि हैज (यानी माहवारी) के दिनों में नहीं, बल्कि पाकी के ज़माने में तलाक दी जाए और पाकी की हालत भी वह हो जिसमें मियाँ-बीवी को हमबिस्तरी (सोहबत) करने का इतिफ़ाक न हुआ हो। फिर उसके बाद तलाक पाने वाली अगर बालिगा है कि जिसको हैज के दिन होते हैं तो उसकी इद्दत तीन हैज है, और अगर नब्बालिगा या इतनी बूढ़ी है कि हैज नहीं आता तो तीन महीने। और अगर तलाक पाने वाली हामिला (गर्भ से) है तो उसकी इद्दत उस बच्चे का पैदा होना है। इद्दत के ज़माने में औरत को घर से बाहर नहीं निकलना चाहिए। अगर तलाके रजई के बाद (यानी एक या दो तलाक के बाद जबकि उससे पहले कोई तलाक न दी हो, इसलिए कि कुल और मजमूए का एतिबार होता है) इद्दत ख़त्म होने से पहले शौहर उस औरत को अपने निकाह में रखना चाहे तो रुजू कर ले, और दो गवाह बना ले ताकि किसी को तोहमत लगाने का मौका हाथ न आए।

4. अगर आख़िरत का नफ़ा, नुकसान और रिज़्क मुराद लिया जाए तब तो ये मायने होंगे कि अज़ाब से नज़ात देगा और जन्नत का रिज़्क देगा। और अगर दुनिया का नफ़ा व नुकसान मुराद है तो उसके ज़ाहिर होने की कई सूरतें हैं- एक महसूस तरीके पर कि वह बला टल जाए और रिज़्क वगैरह की फ़राखी हो जाए, और अक्सर यही होता है। दूसरे बातिनी तौर पर कि उस बला पर सब्र हो जाए कि यह भी नज़ात है उसके असर से, और थोड़े पर क़नाअत हो जाए कि यह भी महसूस किए जाने वाले रिज़्क के हुक्म ही में है, सुकून और इत्मीनान के असर में, और ऐसा तो होता ही है। और इसको “ला यहूतसिब” कहना इस मायने में होगा कि बज़ाहिर तो नफ़स के सुकून का तरीका फ़राखी-ए-रिज़्क है, क़नाअत से सुकून “मिन् हैसु ला यहूतसिब” है।

(तफसीर पृष्ठ 1014)

1. यानी इद्दत में रहने का ठिकाना भी तलाक पाने वाली का वाजिब है, लेकिन ‘तलाके बाईन’ में एक मकान में तन्हाई के साथ दोनों का रहना जायज़ नहीं, बल्कि आड़ होना ज़रूरी है।

2. इद्दत गुज़रने तक अपनी तलाक दी हुई बीवी को मकान देना शौहर पर लाज़िम है और बच्चे का खर्च बाप पर है जब तक बच्चा माँ के पेट में रहे। शौहर तलाक दी हुई बीवी को खिलाए-पहनाए और जब पैदा हो तो उसकी माँ ही उसको दूध पिलाए, जो उजरत किसी दूसरी दूध पिलाने वाली को देनी पड़े वही उसकी माँ को दी जाए, क्योंकि वह मुतल्लका हो चुकी और बच्चे की पैदाइश से उसकी इद्दत ख़त्म हो गई। लेकिन उस मासूम बच्चे की माँ होने के सबब माँ का हक दूसरी दूध पिलाने वाली से बहरहाल मुकद्दम है, बशर्ते कि बच्चे की माँ को दूध पिलाने से इनकार न हो, और दूध पिलाने की उजरत भी दूसरी औरतों से ज़्यादा न माँगे।

3. मतलब यह कि उनके कुफ़्रिया आमाल में से किसी अमल को माफ नहीं किया, बल्कि सबपर सज़ा तजवीज़ की, और पूछगछ के तौर पर हिसाब मुराद नहीं।

4. डरना यह कि इताअत करो।

5. मतलब यह कि जो नसीहत इस रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के ज़रिए से पहुँचे उसपर अमल करना भी इताअत है।

(तफसीर पृष्ठ 1016)

1. शुरु की आयतों के नाज़िल होने का सबब हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से बुखारी शरीफ वगैरह में इस तरह नकल किया गया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मामूल शरीफ था कि अन्न के बाद खड़े-खड़े बीवियों के पास तशरीफ लाते। एक बार हज़रत ज़ैनब के पास मामूल से ज़्यादा ठहरे और शहद पिया तो मुझको रश्क आया, मैंने हज़रत हफ़सा रज़ियल्लाहु अन्हा से मश्वरा किया कि हममें से जिसके पास तशरीफ लाएँ वह यूँ कहे कि आपने ‘मगाफीर’ पिया है। (यह एक गोंद है जो बदबूदार होता है) चुनाँचे ऐसा ही हुआ। आपने फ़रमाया कि मैंने तो शहद पिया है, इन बीवियों ने कहा कि शायद कोई मक्खी उस पेड़ पर बैठ गई होगी और उसका रस चूस लिया होगा। आपने कसम खाकर फ़रमाया कि मैं फिर शहद न पिऊँगा, और इस ख़याल से कि हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा का जी बुरा न हो इसके छुपाने की ताकीद फ़रमाई, मगर उन बीवी ने दूसरी से कह दिया। और बाज़ रिवायतों में है कि हज़रत हफ़सा रज़ियल्लाहु अन्हा शहद पिलाने वाली हैं और हज़रत आयशा और हज़रत सौदा और हज़रत सफ़िया सलाह-मश्वरा करने वाली हैं।

2. वह बात यह थी कि मैं फिर शहद न पिऊँगा, मगर किसी से कहना नहीं।

3. मतलब यह कि तुम्हारी इन सज़िओं से आपका कोई नुकसान नहीं है, बल्कि तुम्हारा ही नुकसान है।

4. बाज़ मसलहतों से बेवा (विधवा) भी पसन्दीदा होती है- जैसे तजुर्बा, सलीका, हमउम्र होना वगैरह, इसलिए इसको भी पसन्दीदा सिफ़तों में फ़रमाया।

(तफसीर पृष्ठ 1018)

1. अपने को बचाना खुद इताअत करना, और घर वालों को बचाना उनको अल्लाह के अहक़ाम सिखाना और उनपर अमल कराने के लिए ज़बान से हाथ से जितनी हो सके कोशिश करना।

2. यहाँ ‘नाफरमानी’ से मुराद दिली नाफरमानी है जो इताअत के मुक़बिल है। यानी न दिल में नाफरमानी का ख़याल होता है, न अमल में ख़िलाफ़ करते हैं। या यूँ कहा जाए कि इस मायने में भी नाफरमानी नहीं करते कि कहे हुए के ख़िलाफ़ करें, और सुस्ती और देर भी नहीं करते। (शेष तफसीर पृष्ठ 1022 पर)

उन्तीसवाँ पार: तबा-रकल्लजी

67 सूर: मुल्क 77

सूर: मुल्क मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 30 आयतें और 2 रुकूअ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

वह (खुदा) बड़ा बुलन्द शान वाला है जिसके कब्जे में तमाम बादशाही है और वह हर चीज़ पर कादिर है। (1) जिसने मौत और ज़िन्दगी को पैदा किया ताकि तुम्हारी आजमाइश करे कि तुममें कौन शख्स अमल में ज्यादा अच्छा है।¹ और वह ज़बरदस्त (और) बख़्शने वाला है। (2) जिसने सात आसमान ऊपर-नीचे पैदा किए। तू खुदा की इस कारीगरी में कोई खलल न देखेगा, सो तू (अब की बार) फिर निगाह डालकर देख ले, कहीं तुझको कोई खलल नज़र आता है? (3) (यानी बिना सोचे तूने बहुत बार देखा होगा अबकी बार सोच-फिक्र से निगाह कर)। फिर बार-बार निगाह डालकर देख (आखिरकार) निगाह ज़लील और आजिज़ होकर तेरी तरफ लौट आएगी।² (4) और हमने करीब के आसमान को चिरागों (यानी सितारों) से सजा रखा है, और हमने उन (सितारों) को शैतानों को मारने का ज़रिया भी बना दिया है और हमने उन (शैतानों) के लिए (उनके कुफ़ की वजह से) दोज़ख़ का अज़ाब (भी) तैयार कर रखा है। (5) और जो लोग अपने रब (की तौहीद) का इनकार करते हैं उनके लिए दोज़ख़ का अज़ाब है, और वह बुरी जगह है। (6) जब ये लोग उसमें डाले जाएंगे तो उसकी बड़े ज़ोर की आवाज़ सुनेंगे, और वह इस तरह जोश मारती होगी (7) जैसे मालूम होता है कि (अभी) गुस्से के मारे फट पड़ेगी। (और) जब उसमें (काफ़िरों का) कोई गिरोह डाला जाएगा तो उसके मुहाफिज़ उन लोगों से पूछेंगे कि क्या तुम्हारे पास कोई डराने वाला (पैग़म्बर) नहीं आया था?³ (8) वे काफ़िर (एतिराफ़ के तौर पर) कहेंगे कि वाकई हमारे पास डराने वाला (पैग़म्बर) आया था, सो (यह हमारी शामत थी कि) हमने (उसको) झुठला दिया और कह दिया कि अल्लाह ने (अहकाम व किताबें) कुछ नाज़िल नहीं किया, (और) तुम बड़ी ग़लती में पड़े हो।⁴ (9) और (काफ़िर फ़रिश्तों से यह भी) कहेंगे कि हम अगर सुनते या समझते⁵ तो हम दोज़ख़ वालों में (शामिल) न होते। (10) गरज़ अपने जुर्म का इक़रार करेंगे, सो

(पृष्ठ 1020 का शेष) 3. यानी नाफ़रमानी पर दिल में कामिल शर्मिन्दगी और उसको छोड़ने का पुख़्ता इरादा हो।

4. मक़सूद सिर्फ़ मोमिनों का बयान करना है। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का ज़िक्र मिला देना हुक्म में जोर पैदा करने के लिए है। यानी जैसे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को रुखा न करना यकीनी है इसी तरह मोमिनों का रुखा न होना भी यकीनी है। और रुखाई से मुराद एक ख़ास रुखाई है जो कुफ़ की जज़ा है। अल्लाह तआला का कौल- 'इन्नल् ख़िज़्यल् यौ-म वस्सू-अ अलल् काफ़िरीन' की वजह से। और मोमिनों से मुराद आम मोमिनीन हैं।

5. यह दावा करना कि यह किस्सा हुज़ूर पाक सल्ल. की पाक बीवियों को सुनाया गया है, सिर्फ़ दावा बिना दलील है। क्योंकि यह किस्सा आपकी पाक बीवियों के मज़मून से मुताल्लिक नहीं, बल्कि आयत 'कू अन्फुसकुम व अहलीकुम' के मज़मून से मुताल्लिक है।

6. या तो यह दुआ आम हालात में की थी, या एक ख़ास हालात में। जिसका किस्सा यह लिखा है कि फिरज़ौन को जब अपनी बीवी के मोमिना होने की इत्तिहा हो गई तो हुक्म दिया कि चारों हाथ-पैरों में कीलें ठोक करके धूप में डाल दिया जाए और उनके सीने पर चक्की का पत्थर रखा जाए। उस तकलीफ़ में उन्होंने यह दुआ की तो उनको जन्नत में अपना मकान नज़र आ गया जिससे वह तकलीफ़ हल्की हो गई।

7. इसमें उनकी खुद इख़्तियार की हुई और अल्लाह की तरफ़ से अताशुदा ग़ैर-इख़्तियारी पाकीज़गी का बयान है जो कि बुलन्द अख़्लाक और ऊँचे हालात में से है।

1. अमल के अच्छा होने में मौत का तो यह दख़ल है कि मौत के मुशाहदे से इनसान दुनिया को फ़ानी और मरने के बाद ज़िन्दा होने के एतिकाद से आखिरत को बाकी समझकर वहाँ के अज़ाब और सज़ा से बचने के लिए तैयार हो सकता है, और ज़िन्दगी का दख़ल यह है कि अगर ज़िन्दगी न हो तो अमल किस वक़्त करे। पस अमल के अच्छा होने के लिए (शेष तफ़सीर पृष्ठ 1024 पर)

दोज़खियों पर लानत है। (11) बेशक जो लोग अपने रब से बेदेखे डरते हैं उनके लिए मग़ि़रत और बड़ा अज़्र (मुकर्रर) है। (12) और तुम लोग चाहे छुपाकर बात कहो या पुकारकर कहो (उसको सब ख़बर है, क्योंकि) वह दिलों तक की बातों से ख़ूब वाकिफ़ है।¹ (13) (और भला) क्या वह न जानेगा जिसने पैदा किया है? और वह बारीकी से देखने वाला (और) पूरी ख़बर रखने वाला है। (14) ♦

वह ऐसा (नेमत देने वाला) है जिसने तुम्हारे लिए ज़मीन को ताबे कर दिया² सो तुम उसके रास्तों में चलो (फिरो) और खुदा की रोज़ी में से (जो ज़मीन में पैदा की है) खाओ (पियो) और (खा-पीकर उसको भी याद रखना कि) उसी के पास दोबारा ज़िन्दा होकर जाना है।³ (15) क्या तुम उससे बेख़ौफ़ हो गए हो जो कि आसमान में (भी अपना हुक्म व तसरुफ़ रखता है) कि वह तुमको ज़मीन में धँसा दे, फिर वह ज़मीन थरथरा (कर उलट-पलट हो) ने लगे। (16) या तुम लोग उससे बेख़ौफ़ हो गए हो जो कि आसमान में (भी अपना हुक्म व तसरुफ़ रखता) है कि वह तुमपर (कौमे आद की तरह) एक तेज़ हवा भेज दे⁴ (जिससे तुम हलाक हो जाओ)। सो जल्द ही (यानी मरते ही) तुमको मालूम हो जाएगा कि मेरा (अज़ाब से) डराना कैसा (सही) था। (17) और उनसे पहले जो लोग गुज़र चुके हैं उन्होंने (दीने हक़ को) झुठलाया था, सो (देख लो उनपर) मेरा अज़ाब कैसा (वाक़ेअ) हुआ।⁵ (18) क्या उन लोगों ने अपने ऊपर परिन्दों की तरफ़ नज़र नहीं की, कि पर फैलाए हुए (उड़ते फिरते) हैं, और (कभी उसी हालत में) पर समेट लेते हैं, सिवाय (खुदा-ए-) रहमान के उनको कोई थामे हुए नहीं है। बेशक वह हर चीज़ को देख रहा है (और जिस तरह चाहे उसमें तसरुफ़ कर रहा है)। (19) हाँ! रहमान के सिवा वह कौन है कि वह तुम्हारा लश्कर बनकर (आफ़तों से) तुम्हारी हिफ़ाज़त कर सके, (और) काफ़िर (जो अपने माबूदों के बारे में ऐसा ख़याल रखते हैं) तो (वे) ख़ालिस धोखे में हैं। (20) (और) हाँ, (यह भी बतलाओ कि) वह कौन है जो तुमको रोज़ी पहुँचा दे अगर अल्लाह तआला अपनी रोज़ी बन्द कर ले, (मगर ये लोग इससे भी मुतास्सिर नहीं होते) बल्कि ये लोग सरकशी और (हक़ से) नफ़रत पर ज़म रहे हैं।⁶ (21) सो (जिस काफ़िर का हाल ऊपर सुना है उसको सुनकर सोचो कि) क्या जो शख्स मुँह के बल गिरता हुआ चल रहा हो वह मन्ज़िले मक़सूद पर ज़्यादा पहुँचने वाला होगा या वह शख्स जो सीधा एक हमवार सड़क पर चला जा रहा हो।⁷ (22) आप (उनसे) कहिए कि वही (ऐसा कादिर व नेमत देने वाला) है जिसने तुमको पैदा किया, और तुमको कान और आँखें और दिल दिए, (मगर) तुम लोग बहुत कम शुक्र करते हो। (23) (और) आप (यह भी) कहिए कि वही है जिसने तुमको रू-ए-ज़मीन पर फैलाया, और तुम (क़ियामत के दिन) उसी के पास इकट्ठे किए जाओगे। (24) और ये लोग (जब क़ियामत का ज़िक्र सुनते हैं तो) कहते हैं कि यह वायदा कब पूरा होगा? अगर तुम सच्चे हो (बतलाओ)। (25) आप (जवाब में) कह दीजिए कि यह (उसके सही वक़्त का) इल्म तो खुदा ही को है, और मैं तो सिर्फ़ (खुलासे के तौर पर मगर) साफ़-साफ़ डराने वाला हूँ। (26) फिर जब उस (वायदा किए गए अज़ाब) को पास आता हुआ देखेंगे।

(पृष्ठ 1022 का शेष) मौत शर्त के दर्जे में और ज़िन्दगी ज़र्फ़ (यानी एक जगह) के दर्जे में है। और चूँकि मौत पूरी तरह ख़त्म होना नहीं, इसलिए उसपर मख़बूक होने का हुक्म सही है।

2. यानी वह जिस चीज़ को जैसा चाहे बना सकता है। चुनाँचे आसमान को मज़बूत बनाना चाहा तो कैसा बनाया कि एक लम्बी मुदत गुज़र जाने के बावजूद अब तक उसमें कोई ख़लल नहीं आया। इसी तरह किसी चीज़ को कमज़ोर और असर क़बूल करने वाली बना दिया। गरज़ उसको हर तरह से कुदरत है।

3. यह सवाल झिड़कने के तौर पर है।

4. यानी हमारी जमाअत के सभी अफ़राद ने तमाम डराने वालों और रसूलों को यूँ कह दिया, जिसका हासिल यह है कि अपने-अपने रसूल को हर एक ने यूँ कह दिया। (पृष्ठ 1022 की शेष तफ़सीर और पृष्ठ 1024 की तफ़सीर पृष्ठ 1026-1028 पर)

तो उस वक्त (ग़म के) मारे काफ़िरों के मुँह बिगड़ जाएँगे, और (उनसे) कहा जाएगा कि यही है वह जिसको तुम माँगा करते थे (कि अज़ाब लाओ, अज़ाब लाओ)। (27) आप (उनसे) कहिए कि तुम यह बतलाओ कि अगर खुदा तआला मुझको और मेरे साथ वालों को (तुम्हारी तमन्ना के अनुसार) हलाक कर दे या (हमारी उम्मीद और अपने वायदे के अनुसार) हमपर रहमत फ़रमाए तो काफ़िरों को दर्दनाक अज़ाब से कौन बचा लेगा? (28) (और) आप (उनसे यह भी) कहिए कि वह बड़ा मेहरबान है, हम उसपर ईमान लाए और हम उसपर भरोसा करते हैं। सो जल्द ही तुमको मालूम हो जाएगा कि खुली गुमराही में कौन है। (यानी तुम, जैसा कि हम कहते हैं, या हम जैसा कि तुम कहते हो)। (29) आप (यह भी) कह दीजिए कि अच्छा यह बतलाओ कि अगर तुम्हारा पानी (जो कुओं में है) नीचे को उतर कर ग़ायब हो जाए, सो वह कौन है जो तुम्हारे पास सोत का पानी ले आए (यानी कुएँ की सोत को जारी कर दे)। (30) ♦

68 सूर: कलम 2

सूर: कलम मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 52 आयतें और 2 रुकूअ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

नून। कसम है कलम की और (कसम है) उन (फ़रिश्तों) के लिखने की (जो आमाल के लिखने वाले हैं) (1) कि आप अपने रब के फ़ज़ल से मजन्नू नहीं हैं। (जैसा कि नुबुव्वत के मुन्किर लोग कहते हैं) (2) और बेशक आपके लिए (इस अहकाम की तब्लीग़ पर) ऐसा अज़्र है जो (कभी) ख़त्म होने वाला नहीं (3) और बेशक आप (उम्दा) अख़्लाक के आला पैमाने पर हैं। (4) सो (उनकी बेहूदा बातों का ग़म न कीजिए, क्योंकि) आप भी देख लेंगे और ये लोग भी देख लेंगे (5) कि तुममें किसको जुनून “यानी पागलपन” था। (6) आपका परवर्दिगार उसको भी ख़ूब जानता है जो उसकी राह से भटका हुआ है, और वह (सही) राह पर चलने वालों को भी ख़ूब जानता है। (7) तो आप उन झुठलाने वालों का (कभी) कहना न मानिए। (जैसा कि अब तक भी नहीं माना)। (8) ये लोग चाहते हैं कि आप (अपनी ज़िम्मेदारी यानी तब्लीग़ में) ढीले हो जाएँ तो ये लोग भी ढीले हो जाएँ। (9) और आप (ख़ास तौर से) किसी ऐसे शख्स का कहना न मानें जो बहुत कस्में खाने वाला हो। (मुराद झूठी कस्में खाने वाला है)। (10) बेवक़अत हो, तांना देने वाला हो, चुगलियाँ लगाता फिरता हो, (11) नेक काम से रोकने वाला हो, (एतिदाल की) हद से गुज़रने वाला हो, गुनाहों का करने वाला हो, (12) और सख़्त मिजाज हो, (और) इन (सब) के अलावा हरामज़ादा (भी) हो। (13) इस सबब से कि वह माल व औलाद वाला हो। (14) जब हमारी आयतें उसके सामने पढ़कर सुनाई जाती हैं तो वह कहता है कि ये बे-सनद बातें हैं जो अगलों से नकल होती हुई चली आती हैं। (15) हम जल्द ही उसकी नाक पर दाग़ लगा देंगे। (16) हमने उनकी आज़माइश कर रखी है जैसे हमने बाग़ वालों की

(पिछले पृष्ठ का शेष) 5. यानी पैगम्बरों के कहने को कबूल करते और मानते।

(तफ़सीर पृष्ठ 1024)

1. दलील का हासिल यह है कि वह हर चीज़ का पैदा करने वाला और मुख़्तार है। पस तुम्हारे हालात और जो तुम कहते हो उसका भी पैदा करने वाला है, और पैदा करने का इख़्तियार होना पहले से इल्म के साथ होता है, पस इल्म ज़रूरी हुआ। और अक़वाल यानी जो कुछ कहते हैं उसकी तख़सीस मकसूद नहीं बल्कि हुक्म आम है। इसको ज़िक्र करने की तख़सीस शायद इस बिना पर हो कि अक़वाल ज़्यादा ज़ाहिर होते हैं। गरज़ उसको सब इल्म है, वह हर एक को मुनासिब बदला देगा।

2. चुनाँचे वह तुम्हारे तसरूफ़ात की काबलियत रखती है।

3. पस यह इसको चाहता है कि उसकी नेमतों का शुक्र अदा करो जो कि ईमान लाना व फ़रमाँबरदारी करना है।

4. यानी तुम्हारे कुफ़्र का तकाज़ा यही है। (पृष्ठ 1024 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 1026 की तफ़सीर पृष्ठ 1028-1036 पर)

आजमाइश की थी, जबकि उन लोगों ने (यानी उनमें से अक्सर ने या बाज़ ने) कसम खाई कि उस (बाग़) का फल ज़रूर सुबह चलकर तोड़ लेंगे। (17) और (ऐसा यकीन व एतिमाद हुआ कि) उन्होंने इन्शा-अल्लाह भी नहीं कहा। (18) सो उस बाग़ पर आपके रबकी तरफ़ से एक फिरने वाला (अज़ाब) फिर गया और वे सो रहे थे। (19) फिर सुबह को वह बाग़ ऐसा रह गया जैसा कटा हुआ खेत (कि ख़ाली ज़मीन रह जाती है)। (20) सो सुबह के वक़्त (सोकर जो उठे तो) एक-दूसरे को पुकार कर कहने लगे (21) कि अपने खेत पर सवेरे चलो अगर तुमको फल तोड़ना है। (22) फिर वे लोग आपस में चुपके-चुपके बातें करते चले (23) कि आज तुम तक कोई मोहताज न आने पाए। (24) और (अपने ख़याल में) अपने को उसके न देने पर कादिर समझकर चले। (25) फिर जब (वहाँ पहुँचे और) उस बाग़ को (उस हालत में) देखा तो कहने लगे कि हम ज़रूर रास्ता भूल गए। (26) बल्कि (जगह तो वही है लेकिन) हमारी किस्मत ही फूट गई (कि बाग़ यह हाल हो गया)।¹ (27) उनमें जो किसी कद्र अच्छा आदमी था वह कहने लगा कि क्या मैंने तुमको कहा न था, अब (तौबा और) तस्बीह क्यों नहीं करते। (28) सब (तौबा के तौर पर) कहने लगे कि हमारा परवर्दिगार पाक है, बेशक हम ख़तावार हैं। (29) फिर एक-दूसरे को मुखातब बनाकर आपस में इल्ज़ाम देने लगे। (30) (फिर सब मुत्तफ़िक़ होकर) कहने लगे बेशक हम हद से निकलने वाले थे। (सब मिलकर तौबा कर लो) (31) शायद (तौबा की बरकत से) हमारा परवर्दिगार हमको उससे अच्छा बाग़ उसके बदले दे दे, (अब) हम अपने रब की तरफ़ रज़ू होते हैं।² (32) इस तरह अज़ाब हुआ करता है³ और आख़िरत का अज़ाब इस (दुनियावी अज़ाब) से भी बढ़कर है। क्या अच्छा होता कि ये लोग (इस बात को) जान लेते (ताकि ईमान ले आते)। (33) ♦

इसमें कोई शक नहीं कि परहेज़गारों के लिए उनके रबके पास राहत व आराम की जन्तें हैं। (34) क्या हम फरमाँबरदारों को नाफरमानों के बराबर कर देंगे? (35) तुमको क्या हुआ, तुम कैसा फैसला करते हो? (36) क्या तुम्हारे पास कोई (आसमानी) किताब है जिसमें पढ़ते हो (37) कि उसमें तुम्हारे लिए वह चीज़ (लिखी) हो जिसको तुम पसन्द करते हो। (38) क्या हमारे ज़िम्मे कुछ कस्में चढ़ी हुई हैं जो तुम्हारी ख़ातिर से खाई गई हों, और कस्में कियामत तक बाकी रहने वाली हों (जिनका मज़मून यह हो) कि तुमको वे चीज़ें मिलेंगी जो तुम फैसला कर रहे हो (यानी सवाब व जन्तत)। (39) उनसे पूछिए कि उनमें उसका कौन ज़िम्मेदार है। (40) क्या उनके ठहराए हुए (खुदाई में) कुछ शरीक हैं? सो उनको चाहिए कि ये अपने उन शरीकों को पेश करें अगर ये सच्चे हैं। (41) (वह दिन याद करने के काबिल है) जिस दिन साक़ “यानी

(पिछले पृष्ठ का शेष) 5. इससे साफ़ मालूम हुआ कि कुफ़्र काबिले नफ़रत है। पस अगर किसी हिक्मत से यहाँ अज़ाब टल गया तो दूसरे आलम में वईद व धमकी के मुताबिक़ ज़ाहिर होगा।

6. ख़ुलासा यह कि तुम्हारे बातिल माबूद न नुक़सान के हटाने पर कादिर हैं और न नफ़ा पहुँचाने पर कादिर हैं। फिर उनकी इबादत बिल्कुल बेवक़ूफी है।

7. यही हाल है मोमिन और काफ़िर का, कि मोमिन के चलने का रास्ता भी देने मुस्तकीम है और चलता भी है वह सीधा होकर, और कमी-बेशी से बचकर। और काफ़िर के चलने का रास्ता भी टेढ़ा और गुमराही का है और चलने में भी हर वक़्त हलाकत के गढ़ों में गिरता और ख़तरनाक रास्तों पर चलता जाता है, पस ऐसी हालत में क्या मन्ज़िले मक़सूद पर पहुँचेगा।

(तफ़सीर पृष्ठ 1026) 1. पास आता हुआ देखना यह कि आमात का मुहासबा होगा। दोज़ख़ में जाने का हुक़म होगा जिससे यकीन हो जाएगा कि अब अज़ाब संर पर आया।

2. क़ुरैश के काफ़िर हज़रत सरदारो अम्बिया सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को और सहाबा-ए-किराम रिज़यल्लाहु अन्हुम को बद-दुआएँ देते और कोस्ते थे। हक़ तआला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई जिसमें मोमिनों को इस जवाब की तल्कीन की गई कि अच्छा सहिबो! अगर तुम्हारी तमन्ना के मुवाफ़िक़ हम दुनिया से (पृष्ठ 1026 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 1028 की तफ़सीर पृष्ठ 1030-1040 पर)

पिन्डली" की तजल्ली फरमाई जाएगी¹ और सज्दे की तरफ लोगों को बुलाया जाएगा² सो ये (काफिर) लोग सज्दा न कर सकेंगे। (42) (और) उनकी आँखें (शर्मिन्दगी के मारे) झुकी होंगी (और) साथ ही उनपर जिल्लत छाई होगी। और (वजह इसकी यह है कि) ये लोग (दुनिया में) सज्दे की तरफ बुलाए जाया करते थे और वे सही सालिम थे (यानी उसपर कादिर थे)।³ (43) और जो इस कलाम को झुठलाते हैं उनको (इस मौजूदा हाल पर) रहने दीजिए। हम उनको धीरे-धीरे (जहन्नम की तरफ) लिए जा रहे हैं, इस तौर पर कि उनको ख़बर भी नहीं। (44) और (दुनिया में अज़ाब नाज़िल कर डालने से) उनको मोहलत देता हूँ, बेशक मेरी तदबीर बड़ी मज़बूत है। (45) क्या आप उनसे कुछ बदला माँगते हैं कि वे उस तावान से दबे जाते हैं। (इसलिए आपकी इताअत से नफरत है)। (46) या उनके पास ग़ैब (का इल्म) है कि ये (उसको) लिख लिया करते हैं। (47) तो आप अपने रब की (इस) तजवीज़ पर सब्र से बैठे रहिए और (तंगदिली में) मछली (के पेट में जाने) वाले पैगम्बर⁴ (यूनुस अलैहिस्सलाम) की तरह न होइए जबकि उन्होंने (यानी यूनुस अलैहिस्सलाम ने) दुआ की और वह ग़म से घुट रहे थे। (48) अगर खुदावन्दी एहसान उनकी मदद न करता तो वह (जिस) मैदान में 'मछली के पेट से निकालकर डाले गए थे उसी) बदहाली के साथ डाले जाते (मदद करने से मुराद तौबा का कबूल करना है)। (49) फिर उनके रब ने उनको और मकबूल कर लिया और उनको नेकों में से कर दिया। (50) और ये काफिर जब कुरआन सुनते हैं तो (अपने हृद दर्जा बैर और दुश्मनी की वजह से) ऐसे मालूम होते हैं कि गोया आपको अपनी निगाहों से फुसला कर गिरा देंगे।⁵ (यह एक मुहावरा है)। और (उसी दुश्मनी की वजह से आपके बारे में) कहते हैं कि यह मजन्नू है। (51) हालाँकि यह कुरआन (जिसके साथ आप बात फरमाते हैं) तमाम जहान के वास्ते नसीहत है। ♦ (52) ♦

69 सूर: हाक्क: 78

सूर: हाक्क: मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 52 आयतें और 2 रुकूअ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

वह होने वाली चीज़ (1) कैसी कुछ है वह होने वाली चीज़। (2) और आपको कुछ ख़बर है कि कैसी कुछ है वह होने वाली चीज़ (यह बार-बार पूछना डराने और उसका हौलनाक होना बयान करने के लिए है)।⁶ (3) समूद और आद ने उस खड़खड़ाने वाली चीज़ (यानी कियामत) को झुठलाया। (4) सो समूद तो एक ज़ोरदार आवाज़ से हलाक कर दिए गए। (5) और आद जो थे सो वह एक तेज़ व तुन्द हवा से हलाक किए गए। (6) जिसको अल्लाह तआला ने उनपर सात रात और आठ दिन लगातार मुसल्लत कर दिया था।

(पिछले पृष्ठ का शेष) उठ ही गए या अल्लाह के वायदे के मुताबिक उसकी रहमत से नावाज़े गए, गरज़ जो कुछ भी हमारे साथ मामला होगा वह दुनिया ही में होगा और अन्जाम उसका भलाई के सिवा कुछ नहीं। मगर अपनो कहो कि तुमपर जो मुसीबत आने वाली है उसको कौन रोक लेगा? गरज़ अपनी फ़िक्र छोड़कर दूसरों के पीछे पड़ना कहीं की अक्लमन्दी है।

3. यह पानी जो तुम पीते हो, ज़मीन के अन्दर उतर जाए या बिलकुल सूखकर ख़त्म हो जाए तो अल्लाह तआला के सिवा कोई भी ऐसा नहीं जो पानी ला मौजूद करे। जब यह आयत एक बार किसी मशहूर मुलहिद (यानी खुदा का इनकार करने वाले) ने सुनी तो बड़े गुरूर से कहने लगा कि हम पहाड़ों के बांच में ज़मीन खोदकर पानी निकालेंगे। उसपर उसकी आँखों की तरी सूख गई और फौरन अन्धा हो गया। गरज़ कुदरत की तरफ से उसका (पृष्ठ 1026 की बकिया तफ़सीर और पृष्ठ 1028, 1030 की तफ़सीर पृष्ठ 1032-1044 पर)

सो (ऐ मुखातब! अगर) तू (उस वक्त मौजूद होता) तो उस कौम को इस तरह गिरा हुआ देखता कि गोया वह गिरी हुई खजूरों के तने (पड़े) हैं। (7) सो क्या तुझको उनमें का कोई बचा हुआ नज़र आता है? (यानी बिलकुल खात्मा हो गया)। (8) और (इसी तरह) फिरऔन ने और उससे पहले लोगों ने और (कौमे लूत की) उल्टी हुई बस्तियों ने बड़े-बड़े कुसूर किए (यानी कुफ़ व शिर्क, उसपर उनके पास रसूल भेजे गए)। (9) सो उन्होंने अपने रब के रसूल का कहना न माना तो अल्लाह ने उनको बहुत सख़्त पकड़ा, (यानी) हमने। (10) जबकि (नूह अलैहिस्सलाम के वक्त में) पानी को तुगयानी “यानी हद से ज्यादा बढ़ोतरी और उफ़ान” हुई तो तुमको कश्ती में सवार किया (और बाकी को गर्क कर दिया)। (11) ताकि हम उस मामले को तुम्हारे लिए यादगार (और इबरत) बनाएँ, और याद रखने वाले कान उसको याद रखें। (12) फिर जब सूर में एक ही बार में फूँक मारी जाएगी (मुराद पहली फूँक मारना है) (13) और (उस वक्त) ज़मीन और पहाड़ (अपनी जगह से) उठा लिए जाएँगे, फिर दोनों एक ही दफ़ा में टुकड़े-टुकड़े कर दिए जाएँगे। (14) तो उस दिन होने वाली चीज़ हो पड़ेगी। (15) और आसमान फट जाएगा और वह (आसमान) उस दिन बिलकुल बोदा होगा। (16) और फ़रिश्ते (जो आसमान में फैले हुए हैं) उसके किनारे पर आ जाएँगे² और आपके परवर्दिगार के अर्श को उस दिन आठ फ़रिश्ते उठाए होंगे। (17) जिस दिन (खुदा के सामने हिसाब के वास्ते) तुम पेश किए जाओगे (और) तुम्हारी कोई बात (अल्लाह तआला से) छुपी न होगी। (18) (फिर आमालनामे हाथ में दिए जाएँगे तो) जिस शख्स का आमालनामा उसके दाहिने हाथ में दिया जाएगा वह तो (खुशी के मारे आस-पास वालों से) कहेगा कि लो मेरा आमालनामा पढ़ो। (19) मेरा (तो पहले ही से) एतिकाद था कि मुझको मेरा हिसाब पेश आने वाला है। (20) गरज़ वह शख्स पसन्दीदा ऐश (21) यानी आलीशान जन्नत में होगा। (22) जिसके मेवे (इस क़द्र) झुके होंगे (कि जिस हालत में चाहेंगे) ले सकेंगे (23) (और हुक्म होगा कि) खाओ-पियो मजे के साथ उन आमाल के सिले में जो तुमने गुज़िश्ता दिनों (यानी दुनिया में रहने के दौरान) में किए हैं। (24) और जिसका आमालनामा उसके बाएँ हाथ में दिया जाएगा, सो वह (बहुत ही हसरत से) कहेगा, क्या अच्छा होता कि मुझको मेरा आमालनामा ही न मिलता। (25) और मुझको यह ख़बर ही न होती कि मेरा हिसाब क्या है। (26) क्या अच्छा होता कि (पहली) मौत ही खात्मा कर चुकती। (27) (अफ़सोस) मेरा माल मेरे कुछ काम न आया। (28) मेरा रुतबा और पद (भी) मुझसे गया गुज़रा। (29) (ऐसे शख्स के लिए फ़रिश्तों को हुक्म होगा कि) उस शख्स को पकड़ लो और उसको तौक पहना दो (30)

(पिछले पृष्ठ का शेष) उसका यह जवाब दिया गया कि पहाड़ों पर जाकर पानी निकालना तो लम्बी प्रक्रिया है, तुम अपनी आँखों की तरी (यानी नमी और गीलापन) ही वापस लाकर अपने दावे का अमली सुबूत पेश कर दो।

4. सैफुल्लाह हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु का बाप वलीद बिन मुगीरा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दुश्मनों की पहली सफ़ में था। उसने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को दीवाना कहा। हक़ तआला ने उसके जवाब में सूर: कलम नाज़िल फरमाकर उसकी एक छोटी ऐबजोई के जवाब में उसकी दस ख़स्तें ज़ाहिर फरमा दीं।

5. चुनाँचे आपका हर काम एतिदाल लिए हुए और अल्लाह की रिज़ा के मुताबिक़ है।

6. यानी पागलपन की हकीक़त अक़ल का ख़राब होना है। और अक़ल का काम नफ़े व नुक़सान को समझना और असल नफ़ा व नुक़सान वह है जो हमेशा का हो। पस क़ियामत में उनको भी मालूम हो जाएगा कि अक़ल वाले अहले हक़ थे जिन्होंने उस नफ़े को हासिल किया, और मजन्नू यानी पागल ये खुद थे जो उस नफ़े से महरूम रहकर हमेशा के नुक़सान में मुब्तला हुए।

(पृष्ठ 1026 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 1028, 1030, 1032 की तफ़सीर पृष्ठ 1034-1045 पर)

फिर उसको दोजख में दाखिल कर दो। (31) फिर एक ऐसी जन्जीर में जिसकी पैमाइश सत्तर गज़ है¹ उसको जकड़ दो (32) यह शख्स अल्लाह पर ईमान न रखता था।² (33) और (वह खुद तो किसी को क्या देता औरों को भी) गरीब आदमी के खिलाने की तरगीब न देता था (इसलिए अज़ाब का हकदार हुआ)।³ (34) सो आज उस शख्स का न कोई दोस्त है (35) और न उसको कोई खाने की चीज़ नसीब है, सिवाय ज़ख्मों के धोवन के⁴ (36) जिसको बड़े गुनाहगारों के सिवा कोई न खाएगा। (37) ♦

फिर (बदला देने का मज़मून बयान करने के बाद) मैं कसम खाता हूँ उन चीज़ों की भी जिनको तुम देखते हो (38) और उन चीज़ों की भी जिनको तुम नहीं देखते⁵ (39) कि यह कुरआन (अल्लाह तआला का) कलाम है एक इज़्ज़त वाले फरिश्ते का लाया हुआ है (पस जिसपर आया वह ज़रूर रसूल है)। (40) और यह किसी शायर का कलाम नहीं है जैसा कि कुप्फार (आपको शायर कहते थे, मगर) तुम बहुत कम ईमान लाते हो।⁶ (41) और न किसी काहिन “यानी अन्दाज़े से ग़ैब की बातें बताने वाले” का कलाम है (जैसा कि बाज़ कुप्फार आपको कहते थे), तुम बहुत कम सुमझते हो। (42) रब्बुल-आलमीन की तरफ से भेजा हुआ (कलाम) है। (43) और अगर यह (पैग़म्बर) हमारे ज़िम्मे कुछ (झूठी) बातें लगा देते (44) तो हम उनका दाहिना हाथ पकड़ते (45) फिर हम उनकी दिल की रग काट डालते। (46) फिर तुममें कोई उनका इस सज़ा से बचाने वाला भी न होता।⁷ (47) और बिला शुब्हा यह कुरआन परहेज़गारों के लिए नसीहत है। (48) और हमको मालूम है कि तुममें बाजे झुठलाने वाले भी हैं (पस हम उनको उसकी सज़ा देंगे)। (49) और (इस एतिबार से) यह कुरआन काफ़िरो के हक में हसरत का सबब है। (50) और यह कुरआन तहकीकी यकीनी बात है। (51) सो (जिसका यह कलाम है) अपने (उस) अज़ीम शान वाले परवर्दिगार के नाम की तस्बीह कीजिए। (52) ♦

70 सूर: मअरिज 79

सूर: मअरिज मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 44 आयतें और 2 रुकूअ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

एक दरख्वास्त करने वाला⁸ (इनकार करने के तौर पर) उस अज़ाब की दरख्वास्त करता है जो वाक्फ़ेअ होने वाला है (1) काफ़िरो पर, (और) जिसका कोई दूर करने वाला नहीं। (2) और जो कि अल्लाह की तरफ से वाक्फ़ेअ होगा जो कि सीढ़ियों का (यानी आसमानों का) मालिक है। (3) (जिन सीढ़ियों से) फरिश्ते और (मोमिनो की) रूहें उसके पास चढ़कर जाती हैं⁹ (और वह अज़ाब) ऐसे दिन में होगा जिसकी मिक्दार (यानी मात्रा दुनिया के) पचास हज़ार साल के (बराबर) है।¹⁰ (4) सो आप (उनकी मुखालफ़त पर) सब्र कीजिए, और

(पिछले पृष्ठ का शेष)

7. यानी काफ़िरो का दिली मन्शा यह है कि आप अपने फरीजे और ज़िम्मेदारी यानी तब्लीग को छोड़ दें या उसमें कमी कर दें और बुतपरस्ती की निन्दा भी छोड़ दें तो वे भी ढीले पड़ जाएंगे और दीने इस्लाम की मुखालफ़त में मौजूदा गर्मजोशी का इज़हार न करेंगे।

8. “ज़नीम” अरब की लुगत में उस शख्स को कहते हैं जो अपने आपको किसी दूसरी क़ीम या ख़ानदान की तरफ मन्सूब करे, यह आयत (पृष्ठ 1026 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 1028, 1030, 1032, 1034 की तफ़सीर पृष्ठ 1036-1046 पर)

सब्र भी ऐसा जिसमें शिकायत का नाम न हो। (5) ये लोग उस दिन को (इस वजह से कि ये उसके आने के इनकारी हैं) दूर देख रहे हैं। (6) और हम उसको (ज़ाहिर होने के एतिबार से) करीब देख रहे हैं। (7) (वह अज़ाब उस दिन वाक़ेअ होगा) जिस दिन (कि आसमान रंग में) तेल तलछट की तरह हो जाएगा। (8) और (उस दिन) पहाड़ रंगीन ऊन की तरह (जो कि धुनी हुई हो) हो जाएंगे (यानी उड़ते फिरेंगे)। (9) और (उस दिन) कोई दोस्त किसी दोस्त को न पूछेगा (10) इसके बावजूद कि एक-दूसरे को दिखा भी दिए जाएंगे।¹ (और उस दिन) मुज़्रिम (यानी काफ़िर) इस बात की तमन्ना करेगा कि उस दिन के अज़ाब से छूटने के लिए अपने बेटों को (11) और बीवी को और भाई को (12) और कुन्बे को जिनमें वह रहता था (13) और तमाम ज़मीन पर रहने वालों को अपने फ़िदये में दे दे, फिर यह (फ़िदये में दे देना) उसको (अज़ाब से) बचा ले।² (14) यह हरगिज़ न होगा, (बल्कि) वह आग ऐसी भड़कती हुई है (15) जो खाल (तक) उतार देगी (16) (और) वह उस शख्स को (खुद) बुलाएगी जिसने (दुनिया में हक से) पीठ फेरी होगी और (अल्लाह व उसके रसूल की बात मानने से) बेरुखी की होगी। (17) और जमा किया होगा फिर उसको उठा-उठाकर रखा होगा।³ (18) इनसान कम-हिम्मत पैदा हुआ है।⁴ (19) जब उसको तकलीफ़ पहुँचती है तो (ज़रूरत से ज़्यादा) चीख-पुकार करने लगता है। (20) और जब उसको खुशहाली और फ़रागत होती है तो (अपने ज़िम्मे वाजिब हुक्क से) बुख़ल करने लगता है। (21) मगर वह नमाज़ी (यानी मोमिन) (22) जो अपनी नमाज़ पर बराबर तवज्जोह रखते हैं⁵ (23) और जिनके मालों में हक है (24) सवाली और बे-सवाली सबका।⁶ (25) और जो कियामत के दिन का एतिकाद रखते हैं (26) और जो अपने परवर्दिगार के अज़ाब से डरने वाले हैं। (27) (और) वाक़ई उनके रब का अज़ाब बेख़ौफ़ होने की चीज़ नहीं (यह एक अलग और ग़ैर-मुताल्लिक जुम्ले के तौर पर है)। (28) और जो अपनी शर्मगाहों को (हराम से) महफूज़ रखने वाले हैं। (29) लेकिन अपनी बीवियों से या अपनी (शरई) बाँदियों से (हिफाज़त नहीं करते), क्योंकि उनपर (उसमें) कोई इल्ज़ाम नहीं। (30) हाँ! जो उसके अलावा (और जगह अपनी शहवत पूरी करने का) लतबगार हो, ऐसे लोग (शरई) हद से निकलने वाले हैं। (31) और जो अपनी (सुपुर्दगी में ली हुई) अमानतों और अपने अहद का ख़याल रखने वाले हैं। (32) और जो अपनी गवाहियों को ठीक-ठीक अदा करते हैं, (33) और जो अपनी (फ़र्ज़) नमाज़ों की पाबन्दी करते हैं। (34) (बस) ऐसे लोग जन्नतों में इज़्ज़त से दाख़िल होंगे। (35) ♦

(पिछले पृष्ठ का शेष) वलीद बिन मुगीरा मज़्ज़ूमी के बारे में नाज़िल हुई थी, जिसमें दूसरी बुराइयों के अलावा यह बुराई भी थी कि अपने आपको एक और ख़ानदान की तरफ़ मन्सूब करता था।

9. उसकी नाक को अपमान करने के तौर पर सूँड से ताबीर फ़रमाया, जैसे किसी आदमी के मुँह को थोतड़ी कह दिया जाए जिसका इस्तेमाल उमूमन कुत्ते के लिए होता है। हक़ तआला कियामत के दिन उसके चेहरे और नाक पर ज़िल्लत और पहचान की कोई निशानी रख देगा।

(तफ़सीर पृष्ठ 1028)

1. 'सनआ' शहर से थोड़े फ़ासले पर एक बाग़ था जिस दिन उसके फल तोड़े जाते शहर के फुकरा व मसाकीन जमा हो जाते। मालिक का मामूल यह था कि अपने साल भर के गुज़ारे के लिए उसमें से निकालकर बाकी तमाम गुल्ला और फल फ़कीरों और मोहताजों में ख़ैरात कर देता था। इससे उसको बड़ी बरकत और तरक्की थी। जब मालिक का इन्तिकाल हो गया तो उसके पाँच बेटे वारिस हुए। फल तोड़ने का दिन आया तो पाँचों भाई आपस में कहने लगे कि हमसे ख़ैरात करने में बाप की पैरवी न हो सकेगी। ये फल जो मसाकीन ले जाते हैं अपने ही काम आएँ तो अच्छा है। चलो सुबह-सवेरे ऐसे वक़्त में फल तोड़ लाएँ कि किसी को मालूम न हो सके। जब ग़रीब व मिसकीन लोग अपने वक़्त पर आएँगे तो कटा-कटाया पाएँगे। उनको अपनी इस तदबीर की कामयाबी का यहाँ तक यकीन था

(पृष्ठ 1028 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 1030, 1032, 1034, 1036 की तफ़सीर पृष्ठ 1038-1046 पर)

तो काफ़िरों को क्या हुआ कि (इन मज़ामीन के झुठलाने को) आपकी तरफ़ दौड़े आ रहे हैं। (36) दाहिने और बाएँ से जमाअतें बनकर। (37) क्या उनमें हर शख्स इसकी हवस रखता है कि वह राहत व आराम की जन्नत में दाखिल होगा। (38) यह हरगिज़ न होगा, हमने उनको ऐसी चीज़ से पैदा किया है जिसकी उनको भी ख़बर है। (39) फिर (दूसरे तौर पर क़ियामत के कायम होने के लिए) मैं क़सम खाता हूँ पूरबों और पश्चिमों के मालिक की कि हम इसपर क़ादिर हैं (40) कि (दुनिया ही में) उनकी जगह उनसे बेहतर लोग ले आएँ (यानी पैदा कर दें) और हम (इससे) आजिज़ नहीं हैं। (41) तो आप उनको इसी शग़ल और तफ़रीह में रहने दीजिए यहाँ तक कि उनको अपने उस दिन से साबक़ा पड़े जिसका उनसे वायदा किया जाता है (42) जिस दिन ये क़ब्रों से निकलकर इस तरह दौड़ेंगे जैसे किसी इबादतगाह की तरफ़ दौड़े जाते हैं। (43) (और) उनकी आँखें (शर्मिन्दगी की वजह से) नीचे को झुकी होंगी (और) उनपर ज़िल्लत छाई होगी। (बस) यह है उनका वह दिन जिसका उनसे वायदा किया जाता था (जो कि अब ज़ाहिर हुआ)। (44) ♦

71 सूर: नूह 71

सूर: नूह मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 28 आयतें और 2 रुकूअ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

हमने नूह (अलैहिस्सलाम) को उनकी कौम के पास (पैग़म्बर बनाकर) भेजा था कि तुम अपनी कौम को (कुफ़्र के वबाल से) डराओ, इससे पहले कि उनपर दर्दनाक अज़ाब आए। (1) उन्होंने (अपनी कौम से) कहा कि ऐ मेरी कौम! मैं तुम्हारे लिए साफ़-साफ़ डराने वाला हूँ। (2) (और कहता हूँ) कि तुम अल्लाह की इबादत (यानी तौहीद इख़्तियार) करो और उससे डरो और मेरा कहना मानो (3) तो वह तुम्हारे गुनाह माफ़ कर देगा और तुमको वक़्त मुक़र्रर (यानी मौत के वक़्त) तक (बिना सज़ा के) मोहलत देगा। अल्लाह तआला का मुक़र्रर किया हुआ वक़्त (है), जब (वह) आ जाएगा तो टलेगा नहीं। क्या ख़ूब होता अगर तुम (इन बातों को) समझते। (4) (जब लम्बी मुदत तक इन नसीहतों का कुछ असर कौम पर न हुआ तो) नूह (अलैहिस्सलाम) ने (हक़ तआला से) दुआ की कि ऐ मेरे रब! मैंने अपनी कौम को रात को भी और दिन को भी (हक़ दीन की तरफ़) बुलाया। (5) सो मेरे बुलाने पर (दीन से) और ज़्यादा भागते रहे। (6) और (वह भागना यह हुआ कि) मैंने जब कभी उनको (हक़ दीन की तरफ़) बुलाया ताकि (ईमान के सबब) आप उनको बख़्श दें तो उन लोगों

(पिछले पृष्ठ का शेष) कि इन्शा-अल्लाह भी न कहा। यहाँ भाइयों में ये मशिवरे हो रहे थे और वहाँ रात ही को बाग़ में आग़ लग गई जो सारे बाग़ का सफ़ाया कर गई। बाग़ की यह हालत हो गई थी कि पहचाना न जा सकता था। पहले तो उन्हें यह ख़्याल हुआ कि हम रास्ता भूलकर किसी और जगह पहुँच गए हैं, लेकिन ग़ौर किया तो पहचाना कि वही जगह और वही मक़ाम है, तब कहने लगे कि हाय हमारी किस्मत ही फूट गई।

2. जब उस भाई ने जो उनमें सबसे ज़्यादा दीनदार और समझदार था, उन्हें ख़बरदार किया कि जब तुम इन्शा-अल्लाह कहे बग़ैर फल तोड़ने का इरादा कर रहे थे तो मैंने तुम्हें मशिवरा दिया था कि अल्लाह की तस्बीह करो यानी इन्शा-अल्लाह कहो, क्योंकि उसकी मरज़ी के बग़ैर

(पृष्ठ 1028 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 1030, 1032, 1034, 1036, 1038 की तफ़सीर पृष्ठ 1040-1047 पर)

ने अपनी उँगलियाँ अपने कानों में दे लीं (ताकि हक बात को सुनें भी नहीं), और (यह कि हद दर्जे नफरत की वजह से) अपने कपड़े (अपने ऊपर) लपेट लिए और इसरार किया और (मेरी इताअत से) हद दर्जे का तकब्बुर किया।¹ (7) फिर (भी) मैंने उनको बुलन्द आवाज़ से बुलाया।² (8) फिर मैंने उनको (खुसूसी तौर पर खिताब करके) ऐलानिया समझाया और उनको बिल्कुल खुफिया भी समझाया। (9) और (उस समझाने में) मैंने (उनसे यह) कहा कि तुम अपने रब से गुनाह बख्शवाओ बेशक वह बड़ा बख्शने वाला है। (10) कसरत से तुमपर बारिश भेजेगा। (11) और तुम्हारे माल और औलाद में तरक्की देगा, और तुम्हारे लिए बाग लगा देगा, और तुम्हारे लिए नहरें बहा देगा।³ (12) (मैंने उनसे यह भी कहा कि) तुमको क्या हुआ कि तुम अल्लाह की बड़ाई के मोतकिद नहीं हो? (वरना शिर्क न करते)। (13) हालाँकि उसने तुमको तरह-तरह से बनाया। (14) क्या तुमको मालूम नहीं कि अल्लाह तआला ने किस तरह सात आसमान ऊपर-तले पैदा किए (15) और उनमें चाँद को नूर (की चीज़) बनाया और सूरज को (एक रोशन) चिराग (की तरह) बनाया। (16) और अल्लाह तआला ने तुमको ज़मीन से एक खास तौर पर पैदा किया। (17) फिर तुमको (मौत के बाद) ज़मीन ही में ले जाएगा और (कियामत में फिर इसी ज़मीन से) तुमको बाहर ले आएगा। (18) और अल्लाह तआला ने तुम्हारे लिए ज़मीन को फर्श (की तरह) बनाया (19) ताकि तुम उसके खुले रास्तों में चलो⁴ (20) ♦

(और यह सब गुफ्तगू और वाकिआ अर्ज करके) नूह (अलैहिस्सलाम) ने (यह) कहा कि ऐ मेरे परवर्दिगार! उन लोगों ने मेरा कहना नहीं माना और ऐसे शख्सों की पैरवी की कि जिनके माल और औलाद ने उनको नुकसान ही ज़्यादा पहुँचाया।⁵ (21) और (उन्होंने जिनकी पैरवी की है वे ऐसे हैं कि) जिन्होंने (हक के मिटाने के लिए) बड़ी-बड़ी तदबीरें कीं। (22) और जिन्होंने (अपने पैरोकारों से) कहा कि तुम अपने माबूदों को हरगिज़ न छोड़ना और (खास तौर पर) 'वुद' को और न 'सुवा' को और न 'यगूस' को और 'यऊक' को और 'नसूर' को छोड़ना।⁶ (23) और उन (सरदार) लोगों ने बहुतों को (बहका-बहकाकर) गुमराह कर दिया, और (अब आप) उन ज़ालिमों की गुमराही और बढ़ा दीजिए।⁷ (24) (उन लोगों का अन्जाम यह हुआ कि) अपने इन गुनाहों के सबब वे गर्क किए गए, फिर (गर्क होने के बाद) दोज़ख में दाखिल किए गए। और खुदा के सिवा उनको कोई हिमायती मयस्सर न हुए। (25) और नूह (अलैहिस्सलाम) ने (यह भी) कहा कि ऐ मेरे

(पिछले पृष्ठ का शेष) कामयाबी मुहाल है। मगर तुमने तवज्जोह न की और उसका खमियाज़ा भुगतना पड़ा, तब वे सब शर्मिन्दा हुए और गलती का इकरार किया और तौबा की। हक तआला ने उनकी तौबा कबूल फरमाई और उस बाग के बदले में उनको एक और बाग अता फरमाया जिसमें से खच्चर भर-भरकर अँगूर बाहर जाते थे। बज़ाहिर मालूम होता है कि ये लोग मोमिन थे जो पहले बुख़ल के मुर्तकिब हुए मगर बाद में तौबा कर ली थी।

3. ऐ मक्का वालो! तुम भी ऐसे ही अज़ाब के मुस्तहिक हो बल्कि इससे भी ज़्यादा के, क्योंकि जिस अज़ाब का जिक्र किया गया वह तो महज़ नाफरमानी पर था, तुम तो कुफ़ करते हो।

(तफ़सीर पृष्ठ 1030) 1. पिंडली खोल दिया जाना अरब ज़बान का एक मुहावरा है जिससे किसी काम की सख़्ती और मुसीबत का आना मुराद होता है। इस मुहावरे की बिना शायद यह हो कि जब इनसान को कोई मुश्किल काम करना पड़ता है तो वह पाजामा पिंडली से ऊपर चढ़ाकर मुस्तैदी के साथ उस काम को अन्जाम देता है। पस मतलब यह है कि वह दिन याद करने के काबिल है जिसमें मुसीबत और सख़्ती का सामना होगा। और चूँकि काफ़िरों ने दुनिया में अल्लाह के अहक़ाम को तस्लीम नहीं किया था और सज़्दे की सज़ादत से महरूम रहे थे (पृष्ठ 1030 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 1032, 1034, 1036, 1038, 1040 की तफ़सीर पृष्ठ 1042-1047 पर)

परवर्दिगार! काफिरों में से ज़मीन पर एक रहने वाला भी मत छोड़। (26) (क्योंकि) अगर आप उनको खू-ए-ज़मीन पर रहने देंगे तो आपके बन्दों को गुमराह ही कर देंगे, और (आगे भी) उनके महज़ बुरी और काफिर ही औलाद पैदा होगी। (27) ऐ मेरे रब! मुझको और मेरे माँ-बाप को¹ और जो मोमिन होने की हालत में मेरे घर में दाखिल हैं उनको (यानी घर वालों और बाल-बच्चों को, बीवी और किनआन को छोड़कर) और तमाम मुसलमान मर्दों और मुसलमान औरतों को बख़्श दीजिए, और उन ज़ालिमों की हलाकत व तबाही और बढ़ाइए।² ● (28) ◆

72 सूर: जिन्न 40

सूर: जिन्न मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 28 आयतें और 2 रुकूअ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

आप (उन लोगों से) कहिए कि मेरे पास इस बात की वदह आई है कि जिन्नात में से एक जमाअत ने कुरआन सुना³ फिर (अपनी कौम में वापस जाकर) उन्होंने कहा कि हमने एक अजीब कुरआन सुना है। (1) जो सही रास्ता बतलाता है, सो हम तो उसपर ईमान ले आए⁴ और हम अपने रब के साथ किसी को शरीक नहीं बनाएँगे। (2) और (उन्होंने यह भी बयान किया कि) हमारे परवर्दिगार की बड़ी शान है, उसने न किसी को बीवी बनाया और न औलाद। (3) और हममें जो अहमक हुए हैं वे अल्लाह की शान में हद से बढ़ी हुई बातें कहते थे।⁵ (4) और हमारा (पहले) यह ख़्याल था कि इनसान और जिन्नात कभी खुदा की शान में झूठ बात न कहेंगे। (5) और बहुत-से लोग आदमियों में ऐसे थे कि वे जिन्नात में से बाज़े लोगों की पनाह लिया करते थे। सो उन आदमियों ने उन जिन्नात का दिमाग़ और ख़राब कर दिया।⁶ (6) और जैसा कि तुमने ख़्याल कर रखा था वैसा ही आदमियों ने भी ख़्याल कर रखा था कि अल्लाह तआला किसी को दोबारा ज़िन्दा न करेगा। (7) और हमने (अपनी पुरानी आदत के अनुसार) आसमान (की ख़बरों) की तलाशी लेना चाहा, सो हमने उसको सख़्त पहरों (यानी मुहाफ़िज़ फ़रिश्तों) और शोलों से भरा हुआ पाया।⁷ (8) और (उससे पहले) हम आसमान (की ख़बरें सुनने) के मौकों में (ख़बर) सुनने के लिए जा बैठा करते थे, सो जो कोई अब सुनना चाहता है तो अपने लिए एक तैयार शोला पाता है। (9) और हम नहीं जानते कि (इन नए पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के भेजने से) ज़मीन वालों को कोई तकलीफ़ पहुँचाना मकसूद है या उनके रब ने उनको हिदायत देने का इरादा फ़रमाया है। (10) और हममें (पहले से भी) बाज़े नेक (होते आए) हैं और बाज़े और

(पिछले पृष्ठ का शेष) इसलिए इसका इज़हार करने के लिए उनको सज़े का हुक्म होगा, लेकिन उनकी कमरें तख़्ता हो जाएँगी और वे झुक न सकेंगे।

2. बुलाए जाने से मुराद सज़े का हुक्म देना नहीं है बल्कि उस तज़ल्ली में असर होगा कि सब ग़ैरइस्तियारी तौर पर सज़ा करना चाहेंगे।

3. दुनिया में हुक्म न मानने से आज उनको यह रुस्वाई व ज़िल्लत हुई।

4. 'जुन्नून' और 'साहिबुल हूत' दोनों के एक ही मायने हैं यानी मछली वाला, यह हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम का लक़ब था क्योंकि उनको मछली निगल गई थी।

(पृष्ठ 1030 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 1032, 1034, 1036, 1038, 1040, 1042 की तफ़सीर पृष्ठ 1044-1048 पर)

तरह के (होते आए) हैं, हम मुख्तलिफ़ तरीकों पर थे। (11) और (हमारा तरीका तो यह है कि) हमने समझ लिया है कि हम ज़मीन (के किसी हिस्से) में (जाकर) अल्लाह तआला को हरा नहीं सकते और न (और कहीं) भागकर उसको हरा सकते हैं।¹ (12) और हमने जब हिदायत की बात सुन ली तो हमने उसका यकीन कर लिया, सो (हमारी तरह) जो शख्स अपने रब पर ईमान ले आएगा तो उसको न किसी कमी का अन्देशा होगा और न ज़्यादती का।² (13) और हममें बाज़े तो मुसलमान (हो गए) हैं और बाज़े हममें (पहले की तरह बदस्तूर) बेराह हैं। सो जो शख्स मुसलमान हो गया उन्होंने तो भलाई का रास्ता ढूँढ़ लिया (14) और जो बेराह हैं दोज़ख़ के ईधन हैं।³ (15) और (मुझको अल्लाह की तरफ़ से ये मज़ामीन भी नाज़िल हुए हैं कि) अगर ये (मक्का वाले) लोग (सीधे) रास्ते पर कायम हो जाते तो हम उनको फ़रागत के पानी से सैराब करते। (16) ताकि उसमें उनका इम्तिहान करें।⁴ और जो शख्स अपने परवर्दिगार की याद (यानी ईमान व फ़रमाँबरदारी) से रूगरदानी करेगा अल्लाह तआला उसको सख़्त अज़ाब में मुब्तला करेगा। (17) और (उन वह्य के ज़रिये आए मज़मूनों में से एक यह है कि) जितने सज़दे हैं वे सब अल्लाह का हक़ हैं⁵ सो अल्लाह तआला के साथ किसी की इबादत मत करो।⁶ (18) और जब खुदा का ख़ास बन्दा (मुराद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं) खुदा की इबादत करने खड़ा होता है तो ये (काफ़िर) लोग उस बन्दे पर भीड़ लगाने को हो जाते हैं।⁷ (19) ♦

आप (उनसे) कह दीजिए कि मैं तो सिर्फ़ अपने परवर्दिगार की इबादत करता हूँ और उसके साथ किसी को शरीक नहीं करता। (20) आप (यह भी) कह दीजिए कि मैं तुम्हारे न किसी नुक़सान का इख़्तियार रखता हूँ और न किसी भलाई का।⁸ (21) आप कह दीजिए कि (अगर खुदा न करे मैं ऐसा करूँ तो) मुझको खुदा (के ग़ज़ब) से कोई नहीं बचा सकता, और न मैं उसके सिवा कोई पनाह (की जगह) पा सकता हूँ।⁹ (22) लेकिन खुदा की तरफ़ से पहुँचाना और उसके पैग़ामों का अदा करना यह मेरा काम है। और जो लोग अल्लाह और उसके रसूल का कहना नहीं मानते तो यकीनन उन लोगों के लिए दोज़ख़ की आग़ है जिसमें वे हमेशा-हमेशा रहेंगे। (23) (लेकिन ये काफ़िर लोग इस जहालत से बाज़ न आएँगे) यहाँ तक कि जब उस चीज़ को देख लेंगे जिसका उनसे वायदा किया जाता है। उस वक़्त जानेंगे कि किसके मददगार कमज़ोर हैं और किसकी जमाअत कम है। (24) आप (उनसे) कह दीजिए कि मुझको मालूम नहीं कि जिस चीज़ का तुमसे वायदा किया जाता है¹⁰ क्या वह जल्द ही (आने वाली) है या मेरे परवर्दिगार ने उसके लिए कोई दूर की मुद्दत मुक़र्रर कर रखी है। (25) (और) ग़ैब का जानने वाला वही है, सो वह अपने ग़ैब पर किसी को मुत्तला “यानी अवगत” नहीं करता (26) हाँ मगर अपने किसी मक़बूल और चुने हुए पैग़म्बर को। तो (इस तरह

(पिछले पृष्ठ का शेष) 5. यह एक मुहावरा है यानी तेज़ नज़रों से धूर-धूरकर आपकी तरफ़ इस तरह देखते हैं गोया आप उनसे डरकर कुरआन का पढ़ना और सुनना छोड़ देंगे।

6. इन सवालात से मक़सूद डराना और उसका हौलनाक होना बयान करना है कि वह होने वाली चीज़ है। यानी कियामत एक बड़ी हौलनाक चीज़ है, और चूँकि कियामत ज़रूर वाक़ेअ होने वाली है इसलिए उसको ‘अल्हाक़क़ः’ से ताबीर फ़रमाया।

(पृष्ठ 1032, 1034, 1036, 1038, 1040, 1042, 1044 की तफ़सीर पृष्ठ 1045-1048 पर)

(पिछले पृष्ठ का शेष) (यानी मैं उनको मोहलत देता हूँ। मेरी यह तदबीर बड़ी ज़बरदस्त है) यह वही मसलहतों से भरी तदबीर है जो इब्नीस और उसके लश्कर को कियामत तक खुला छोड़ देने में कारफरमा है, ताकि वे मख्लूक को गुमराह करने का कारोबार आखिरी हदों तक पहुँचा सकें।

8. एक बार मशहूर बुतपरस्त नज़र बिन हारिस खाना-ए-काबा के दरवाज़े पर खड़ा होकर दुआ माँगने लगा कि इलाही! अगर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) हक पर हैं तो हमपर पत्थर बरसा और ऐसा अज़ाब नाज़िल कर कि हमको पनपना नसीब न हो, उसपर यह आयत नाज़िल हुई।

9. मुराद आसमानी दुनिया है। चूँकि रूहें आसमान के रास्ते चढ़ती हैं इसलिए उनको 'मआरिज' (यानी सीढ़ियों) से ताबीर फरमाया।

10. मुराद कियामत का दिन है कि कुछ उसके लम्बा होने और कुछ उसके सख्त होने से काफ़िरो को इस कदर लम्बा महसूस होगा। और चूँकि कुफ़ के दर्जों के एतिबार से सख्ती में फर्क होगा इसलिए एक आयत में 'क-अल्फि स-नतिन' (यानी एक हजार साल के बराबर) आया है, और काफ़िरो की तख्सीस इसलिए की कि हदीस में आया है कि मोमिन को वह दिन इस कदर हल्का मालूम होगा जैसे फर्ज़ नमाज़ पढ़ लेता है।

(तफसीर पृष्ठ 1036)

1. दोस्त का अपने दोस्त की ख़बर न लेना इस वजह से न होगा कि वह अपने दोस्त को देख नहीं रहा होगा, बल्कि उस हमवार ज़मीन पर जहाँ शुरू से लेकर आखिर तक के तमाम लोग जमा होंगे एक किनारे वाला दूसरे किनारे वाले को ज़्यादा होने के बावजूद बिलकुल साफ़ नज़र आएगा, लेकिन चूँकि वहाँ अपनी-अपनी ऐसी पड़ी होगी कि न बाप को बेटे की ख़बर होगी और न दोस्त को दोस्त की, इसलिए कोई किसी का पुरसाने हल न होगा।

2. यानी उस दिन ऐसी नफ़सा-नफ़सी होगी कि हर शख्स को अपनी फ़िक्र पड़ जाएगी। और जिनपर जान देता था उनको अपने बदले में सुपुर्द कर देना अगर उसके काबू की बात हो तो इसको गवारा कर लेगा।

3. मतलब यह कि अल्लाह के हुक्म और बन्दों के हुक्म को ज़ाया किया होगा, या अक़ीदों और अख़्लाक के फासिद होने की तरफ़ इशारा है। खुलासा यह है कि ऐसी सिफ़तें दोज़ख़ में दाख़िल होने का सबब हैं और उस मुज़िम में ये सिफ़तें पाई जाती थीं फिर अज़ाब से नजात कैसे हो सकती है?

4. कम-हिम्मती से तबई कम-हिम्मती मुराद नहीं, बल्कि कम-हिम्मती के बुरे आसार मुराद हैं जिनको अपने इख़्तियार से पैदा किया है।

5. यानी नमाज़ में ज़ाहिरी और बातिनी तौर पर दूसरी तरफ़ तवज्जोह नहीं करते।

6. महलूम उस हाज़तमन्द मिस्कीन को कहते हैं जिसको सवाल की आदत न हो और लोग उसको खुशहाल समझकर इम्दाद के काबिल न समझें। सो ज़ाहिर है कि ऐसे शख्स की इम्दाद करना बहुत बड़ा सवाब का काम है। बाज़े नेकदिल मालदार ऐसे मिस्कीनों की तन्ख़्वाह मुक़र्र करके उनको खुद से मासिक इम्दाद पहुँचाते रहते हैं। इस वजह से ख़ैरात पर हमेशगी रहने के सबब उनका अन्न भी बहुत ज़्यादा हो जाएगा।

(तफसीर पृष्ठ 1038)

1. यानी चाहिए तो यह था कि उन मज़ामीन की तस्दीक करते लेकिन ये लोग मुत्तफ़िह हो होकर आपके पास इस गरज़ से आते हैं कि उन मज़ामीन को झुठलाएँ और उनके साथ मज़ाक़ करें।

2. यानी सबको मालूम है कि तमाम इनसान गन्दी और हकीर चीज़ 'मनी' (यानी वीर्य) के कतारे से पैदा हुए हैं। चूँकि इस पैदाइश में तमाम इनसान बराबर हैसियत रखते हैं इसलिए ज़ाहिर है कि महज़ पैदाइश किसी के लिए दूसरों से ज़्यादा फ़ज़ीलत की वजह नहीं हो सकती, हाँ फ़ज़ीलत व फ़ौक़ियत और ज़न्नत में दाख़िले का सबब अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाना है और तुम काफ़िर उससे महलूम हो, इसलिए तुम्हारी हवस भी बेफ़ायदा है।

3. पस जब नई मख़्लूक और वह भी ऐसी जिसमें खूबियों की सिफ़तें ज़्यादा हों जिनमें ज़्यादा चीज़ें पैदा करना पड़े हमको पैदा करना आसान है तो तुमको दोबारा पैदा करना कौन-सा मुश्किल है।

4. पहली सूर: में सज़ाओं को वाजिब करने वाली चीज़ों का बयान था। उनमें से एक रसूल का झुठलाना है। इस सूर: में नूह अलैहिस्सलाम के किस्से के तहत में इसका बयान है, और साथ ही पहली सूर: में ज़िक्र हुई आख़िरत की सज़ाओं के साथ इस सूर: में कुफ़ पर दुनियावी सज़ा को भी साबित किया है। साथ ही हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इसमें तसल्ली भी दी गई है कि कौम नूह ने भी झुठलाया था।

5. यानी उनसे कहे कि अगर ईमान न लाओ तो तुमपर दर्दनाक अज़ाब आएगा चाहे दुनियावी यानी तुफ़ान या आख़िरत का यानी दोज़ख़।

6. यानी अगर तुम ईमान ले आओगे तो तुम्हारी पिछली ख़ताएँ सब माफ़ हो जाएँगी, और ईमान न लाने पर जिस अज़ाब का दुनिया में अन्देशा है वह ईमान लाने की सूरत में टल जाएगा और तबई मौत तक अमन व आफ़ियत के साथ (शेष तफसीर पृष्ठ 1047 पर)

(पिछले पृष्ठ का शेष)

वादी-ए-नख्खा में अपने अस्हाबे किराम के साथ सुबह की नमाज़ अदा कर रहे थे, तो वे जिन्न ढूँढते-ढूँढते यहाँ आ निकले और आपकी किराअत सुनी। जिन्नात कुरआन का बेनज़ीर होना मालूम करके फ़ौरन ही आप पर ईमान ले आए। ये लोग इस्लाम में दाख़िल होकर वापस गए और अपनी कौम से तमाम माजरा बयान किया।

4. कुरआन होना तो उसके मज़मून से मालूम हुआ और अजीब होना इससे कि किसी इन्सान के कलाम जैसा नहीं।
5. मुराद इससे वे शिर्क की बातें हैं जैसे अल्लाह का शरीक बनाना और उसके लिए औलाद वग़ैरह साबित करना वग़ैरह।
6. जाहिली दौर में जब अरब वाले किसी वादी या ख़ौफ़नाक बयाबान से गुज़रते तो कहा करते थे, “अऊज़ु बिसय्थिदि हाज़ा वादी मिन सु-फहा-इ कौमिही” (मैं इस वादी के सरदार की इस कौम के बेवकूफ़ों से पनाह चाहता हूँ)। उनके गुमान में बयाबानों पर जिन्नात का कब्ज़ा था और जिन्नो के सरदार की इसलिए पनाह तलब करते थे कि उसके मातहत बसने वाले जिन्न कुछ तकलीफ़ न पहुँचाएँ। मतलब यह कि इस किस्म की रस्मों और अक़वाल से आदमियों ने उन जिन्नात को और ज़्यादा मगरूर और घमण्डी बना दिया।
7. ‘शुहुब’ शिहाब (शोले के मायने में) का बहुवचन है। मतलब यह कि हमने जो आसमान को टटोला तो देखा कि उसमें बड़े ताकतवर और मज़बूत फ़रिश्ते चौकीदार बनाकर हर तरफ़ तैनात कर दिए गए हैं ताकि कोई जिन्न आसमानी कलाम सुनने को आए तो उसको ‘शिहाब’ से दूर कर दें।

(तफ्सीर पृष्ठ 1044)

1. भागने से यह मुराद है कि कोई शख्स रू-ए-ज़मीन से भागकर किसी और जगह चला जाए और अपने आपको खुदा की गिरफ़्त से बचा ले तो यह नामुम्किन है।
2. कमी यह कि उसकी कोई नेकी लिखने से रह जाए। और ज़्यादती यह कि कोई गुनाह ज़्यादा लिख दिया जाए।
3. यहाँ तक जिन्नात का कलाम ख़त्म हो गया।
4. यह आयत मक्का के काफ़िरों के बारे में नाज़िल हुई। जब उनपर कुफ़्र के सबब सात साल का सख़्त कहत (अकाल) पड़ा। इस आयत में हक़ तआला ने फ़रमाया कि अगर ये लोग ईमान ले आते तो हम इस कसरत से पानी बरसाते कि कहत नाम को भी न रहता, अनाज की रेलपेल हो जाती।
5. यानी यह जायज़ नहीं कि कोई सच्चा अल्लाह को किया जाए और कोई सच्चा ग़ैरुल्लाह को, जैसा कि कुरैश के मुशिरक करते थे।
6. जिन्नात ने दरखास्त की थी कि या रसूलल्लाह! हमको भी इजाज़त दीजिए कि हम आपके साथ मस्जिद में हाज़िर होकर जमाअत के साथ नमाज़ अदा किया करें, तो यह आयत नाज़िल हुई।
7. जिन्नात हज़रत सरवरे अम्बिया सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को नमाज़ पढ़ते देखते कि किस खुशूअ व खुजूअ से अपने ख़ालिक के सामने हाथ बाँधे हुए खड़े होकर उसका पाक कलाम खुलूसे दिल से पढ़ रहे हैं। फिर कभी झुकते हैं, कभी अपने मौला के आगे पेशानी ज़मीन पर रख देते हैं, और सहाबा हैं कि हाथ बाँधे हुए पीछे खड़े रहते हैं और जिस तरह उम्मत का पेशवा कर रहा है वे भी करते जाते हैं। तो यह हालत देखकर जिन्नात कलाम मजीद सुनने के शौक में सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के गिर्द हुजूम करते थे और धिचपिच एक-दूसरे से चिमट जाते थे।
8. यानी तुम जो ऐसी फ़रमाइशें करते हो कि अगर आप रसूल हैं तो हमपर अज़ाब नाज़िल कर दें तो इसका जवाब यह है कि यह मेरे इख़्तियार में नहीं।
9. मक्का के काफ़िर कहते थे कि ऐ मुहम्मद! तुमने एक नया दीन घड़ लिया है तुम इस दावे से बाज़ आ जाओ, हम तुम्हारे हिमायती हो जाएँगे और तुमको हर बला व मुसीबत से पनाह देंगे। खुदा-ए-हकीम ने आपको इन अल्फ़ाज़ से उनका जवाब तालीम फ़रमाया।
10. अल्लाह अपनी वद्द की हिफ़ाज़त के लिए मुहाफ़िज़ फ़रिश्ते तैनात फ़रमा देता है जो शैतानों और उनके वस्वसों से अल्लाह की वद्द की हिफ़ाज़त करते हैं, ताकि अल्लाह का कलाम किसी दूसरी चीज़ की मिलावट से महफूज़ रहे, वरना दीन की हक्कानियत पर से भरोसा उठ जाएगा। इसी बिना पर अम्बिया अलैहिमुस्सलाम को मासूम (ख़ता से महफूज़) कहा जाता है और यही सबब है कि शैतान किसी के ख़्वाब में सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शक्ल नहीं बना सकता।

इत्तिला देता है कि) उस पैगम्बर के आगे और पीछे हिफाज़त करने वाले फ़रिश्ते भेज देता है। (27) (और यह इन्तिज़ाम इसलिए किया जाता है) ताकि (ज़ाहिरी तौर पर) अल्लाह तआला को मालूम हो जाए कि उन फ़रिश्तों ने अपने परवर्दिगार के पैगाम (रसूल तक हिफाज़त से) पहुँचा दिए। और अल्लाह तआला उन (पहरेदारों) के तमाम हालात का इहाता किए हुए है और उसको हर चीज़ की गिनती मालूम है। (28) ♦

73 सूर: मुज्जिमिल 3

सूर: मुज्जिमिल मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 20 आयतें और 2 रुकूअ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

ऐ कपड़ों में लिपटने वाले! (1) रात को (नमाज़ में) खड़े रहा करो, मगर थोड़ी-सी रात। (2) यानी आधी रात (कि उसमें खड़े न रहो बल्कि आराम करो) या उस आधी से किसी कदर कम कर दो (3) या आधी से कुछ बढ़ा दो। और कुरआन को ख़ूब साफ़-साफ़ पढ़ो (कि एक-एक हर्फ़ अलग-अलग हो)। (4) हम तुमपर एक भारी कलाम डालने को हैं² (मुराद कुरआन है)। (5) बेशक रात के उठने में दिल और ज़बान का ख़ूब मेल होता है, और (दुआ या पढ़ने पर) बात ख़ूब ठीक निकलती है। (6) बेशक तुमको दिन में बहुत काम रहता है³ (दुनियावी भी और दीनी भी)। (7) और अपने रब का नाम याद करते रहो और सबसे कटकर उसी की तरफ़ मुतवज्जह रहो। (8) वह पूरब और पश्चिम का मालिक है, उसके सिवा कोई इबादत के काबिल नहीं, तो उसी को अपने काम सुपुर्द कर देने के लिए करार दिए रहो। (9) और ये लोग जो बातें करते हैं उनपर सन्न करो, और ख़ूबसूरती के साथ उनसे अलग रहो! (10) और मुझको और उन झुठलाने वालों और ऐश व आराम में रहने वालों को (मौजूदा हालत पर) छोड़ दो (यानी रहने दो) और उन लोगों को थोड़े दिनों की और मोहलत दे दो! (11) हमारे यहाँ बेड़ियाँ हैं और दोज़ख़ है (12) और गले में फँस जाने वाला खाना है और दर्दनाक अज़ाब है। (13) जिस दिन कि ज़मीन और पहाड़ हिलने लगेंगे, और पहाड़ (चूरा-चूरा होकर) उड़ने वाली रेत हो जाएँगे। (14) बेशक हमने तुम्हारे पास एक ऐसा रसूल भेजा है जो तुमपर (कियामत के दिन) गवाही देंगे जैसा कि हमने फिरऔन के पास एक रसूल भेजा था (15) फिर फिरऔन ने उस रसूल का कहना न माना तो हमने उसको बहुत सख्ती के साथ पकड़ा। (16) सो अगर तुम (भी रसूल के भेजने के बाद नाफरमानी और) कुफ़्र करोगे तो उस दिन से कैसे बचोगे जो (बहुत ही ज़्यादा) सख्ती और अपने बहुत बड़ा होने से बच्चों को भी बूढ़ा कर देगा! (17) जिसमें आसमान फट जाएगा, बेशक उसका वायदा ज़रूर होकर रहेगा! (18) यह (तमाम मज़मून) एक (बहुत ही उम्दा) नसीहत है, सो जिसका जी चाहे अपने परवर्दिगार की

1. इस उन्वान से खिताब करने की वजह यह है कि नुबुव्वत के शुरूआती ज़माने में कुरैश ने 'दारुन्नदवा' में जमा होकर आपके बारे में मश्विरा किया कि आपकी हालत के मुनासिब कोई लक़ब तजवीज़ करना चाहिए कि उसपर सब मुतफ़िक़ रहें। किसी ने कहा कि काहिन हैं, फिर राय करार पाई कि काहिन नहीं हैं। किसी ने मज़नूँ कहा, फिर इसको भी सबने ग़लत करार दिया। फिर जादूगर कहा, बाज़ ने इसको रद्द किया, लेकिन फिर कहने लगे कि जादूगर इसलिए हैं कि हबीब को हबीब (प्यारे को प्यारे) से जुदा कर देते हैं। आपको यह ख़बर पहुँचकर रंज हुआ और रंज की हालत में कपड़ों में लिपट गए जैसा कि अक्सर सोच और रंज में ग़मगीन आदमी इस तरह कर लेता है। पस हमदर्दी और ताल्लुक के इज़हार के लिए इस उन्वान से खिताब फ़रमाया। और फ़रमाया कि (शेष तफ़सीर पृष्ठ 1052)

तरफ रास्ता इख्तियार कर ले।¹ (19) ♦

आपके रब को मालूम है कि आप और आपके साथ वालों में से बाजे आदमी (कभी) दो तिहाई रात के करीब और (कभी) आधी रात और (कभी) तिहाई रात (नमाज़ में) खड़े रहते हैं। और रात और दिन का पूरा अन्दाज़ा अल्लाह ही कर सकता है। उसको मालूम है कि तुम इस (वक्त के अन्दाज़े) को ज़ब्त नहीं कर सकते तो (इन वज़हों से) उसने तुम्हारे हाल पर इनायत की। सो (अब) तुम लोग जितना कुरआन आसानी से पढ़ा जा सके पढ़ लिया करो।² उसको (यह भी) मालूम है कि बाजे आदमी तुममें बीमार होंगे और बाजे आदमी रोज़ी की तलाश के लिए मुल्क में सफ़र करेंगे, और बाजे अल्लाह की राह में जिहाद करेंगे (इसलिए भी इस हुक्म को मन्सूख कर दिया) सो (इसलिए भी तुमको इजाज़त है कि अब) तुम लोग जितना कुरआन आसानी से पढ़ा जा सके पढ़ लिया करो और (फ़र्ज़) नमाज़ की पाबन्दी रखो और ज़कात देते रहो, और अल्लाह तआला को अच्छी तरह (यानी इख़्लास से) कर्ज़ दो।³ और जो नेक अमल अपने लिए आगे (ज़ख़ीरा-ए-आख़िरत बनाकर) भेज दोगे उसको अल्लाह के पास पहुँचकर उससे अच्छा और सवाब में बड़ा पाओगे। और अल्लाह से गुनाह माफ़ कराते रहो, बेशक अल्लाह मग़्फ़िरत करने वाला, रहम करने वाला है। (20) ♦

74 सूर: मुद्दस्सिर 4

सूर: मुद्दस्सिर मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 56 आयतें और 2 रुकूअ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

ऐ कपड़े में लिपटने वाले!⁴ (1) उठो (यानी अपनी जगह से उठो, या यह कि तैयार हो) फिर (काफ़िरों को) डराओ। (2) और अपने रब की बड़ाइयाँ बयान करो। (3) और अपने कपड़ों को पाक रखो। (4) और बुतों से अलग रहो (जिस तरह कि अब तक अलग हो)⁵ (5) और किसी को इस ग़रज़ से मत दो कि (दूसरे वक्त) ज्यादा मुआवज़ा चाहो। (6) और फिर (डराने “यानी तब्लीग़ करने” में जो तकलीफ़ व परेशानी पेश आए उसपर) अपने रब (को खुश करने) के वास्ते सब्र कीजिए। (7) फिर जिस वक्त सूर फूँका जाएगा (8) सो वह वक्त यानी वह दिन एक सख़्त दिन होगा (9) जिसमें काफ़िरों पर ज़रा भी आसानी न होगी। (10) (आगे बाज़ ख़ास काफ़िरों का ज़िक्र है, यानी) मुझको और उस शख्स को (अपने-अपने हाल पर) रहने दो जिसको मैंने अकेला पैदा किया⁶ (11) और उसको कसरत से माल दिया (12) और पास रहने वाले बेटे (दिए) (13) और सब तरह का सामान उसके लिए मुहैया कर दिया। (14) फिर भी इस बात की हवस

(पृष्ठ 1050 का शेष) आप इन बातों का रंज न करें बल्कि हक़ तआला की तरफ़ ज्यादा तवज्जोह फरमाएँ और इसी सिफ़त पर मुस्तक़िल कायम रहें।

2. यानी हम आप पर कुरआन नाज़िल फरमाएँगे और रिसालत की तब्लीग़ और इस्लाम की दावत का भारी बोझ डालेंगे, पस आप इबादत व रियाज़त कीजिए ताकि वह भारी बोझ हल्का और हुक्म का पालन करना आसान हो जाए।

3. यानी दिन को वज़ज़ व नसीहत ही से फुर्सत न मिलेगी इसलिए इबादत के वास्ते रात का वक्त ख़ास करो कि नफ़स भी ख़ूब कुचला जाए और दुआ भी दिल की गहराई से निकले।

(पृष्ठ 1050 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 1052 की तफ़सीर पृष्ठ 1054-1064 पर)

रखता है कि (उसको) और ज़्यादा दूँ (15) हरगिज़ (वह ज़्यादा देने के काबिल) नहीं, (क्योंकि) वह हमारी आयतों का मुख़ालिफ़ है। (16) उसको जल्द ही (यानी मरने के बाद) दोज़ख़ के पहाड़ पर चढ़ाऊँगा।¹ (17) उस शख्स ने सोचा फिर एक बात तजवीज़ की (18) सो उसपर खुदा तआला की मार हो कैसी बात तजवीज़ की। (19) (और) फिर (दोबारा) उसपर खुदा की मार हो, कैसी बात तजवीज़ की। (20) फिर (हाज़िर लोगों के चेहरों को) देखा (21) फिर मुँह बनाया (ताकि देखने वाले समझें कि इसको कुरआन से बहुत ज़्यादा नफ़रत है) और ज़्यादा मुँह बनाया। (22) और फिर मुँह फेरा और तकब्बुर किया। (23) फिर बोला कि बस यह जादू है (जो औरों से) मन्कूल (है)। (24) बस यह तो आदमी का कलाम है। (25) मैं उसको जल्द ही दोज़ख़ में दाख़िल करूँगा। (26) और तुमको कुछ ख़बर भी है कि दोज़ख़ कैसी चीज़ है? (27) (इससे डराना और ख़ौफ़ दिलाना मक़सद है, वह ऐसी है कि) न तो बाकी रहने देगी और न छोड़ेगी। (28) (और) वह (जलाकर) बदन की हैसियत बिगाड़ देगी। (29) (और) उसपर उन्नीस फ़रिश्ते (जो उसके मुहाफ़िज़ हैं, जिनमें एक का नाम मालिक है, मुकर्रर) होंगे।² (30) और हमने दोज़ख़ के कारकुन (आदमी नहीं बल्कि) सिर्फ़ फ़रिश्ते बनाए हैं, और हमने जो उनकी तादाद (ज़िक्र व बयान करने में) सिर्फ़ ऐसी रखी है जो काफ़िरों की गुमराही का ज़रिया हो तो इसलिए ताकि अहले किताब (सुनने के साथ) यकीन कर लें और ईमान वालों का ईमान और बढ़ जाए, और अहले किताब और मोमिनीन शक न करें। और ताकि जिन लोगों के दिलों में (शक की) बीमारी है वह और काफ़िर लोग कहने लगे कि इस अजीब मज़मून से अल्लाह तआला का क्या मक़सद है? (जिस तरह इस ख़ास बाब में खुदा तआला ने काफ़िरों को गुमराह किया) इसी तरह अल्लाह तआला जिसको चाहता है गुमराह कर देता है और जिसको चाहता है हिदायत कर देता है। और (यह उन्नीस फ़रिश्तों का मुकर्रर होना किसी हिक्मत से है वरना) तुम्हारे रब के लश्क़रों (यानी फ़रिश्तों की तादाद) को सिवाय रब के कोई नहीं जानता, और दोज़ख़ का हाल बयान करना सिर्फ़ आदमियों की नसीहत के लिए है।³ (31) ♦

क़सम है चाँद की। (32) और रात की जब वह जाने लगे। (33) और सुबह की जब वह रोशन हो जाए (34) कि यकीनन दोज़ख़ बड़ी भारी चीज़ है। (35) जो इनसान के लिए बड़ा डरावा है। (36) (यानी) तुममें जो (आगे की तरफ़) बढ़े उसके लिए भी या जो (ख़ैर से) पीछे की तरफ़ हटे उसके लिए भी।⁴ (37) हर शख्स अपने (कुफ़्रिया) आमाल के बदले में (दोज़ख़ में) मुक़ैयद होगा। (38) मगर वे दाहिने वाले (39) कि वे जन्नतों में होंगे, पूछते होंगे (40) मुज़्रिमों (यानी काफ़िरों) का हाल (खुद उन काफ़िरों ही से) (41) (यानी मोमिन लोग काफ़िरों से पूछेंगे) कि तुमको दोज़ख़ में किस बात ने दाख़िल किया? (42) वे कहेंगे, हम न तो

(पिछले पृष्ठ का शेष) 4. अलग होना यह कि कोई ताल्लुक न रखे और ख़ूबसूरती से यह कि उनकी शिकायत व इन्तिक़ाम की फ़िक्र में न पड़े।

5. यह किनाया है सब्र व इन्तिज़ार से, यानी थोड़ा-सा और सब्र कर लीजिए जल्द ही उनको सज़ा होने वाली है।

6. यानी उसके सख़्त और लम्बा होने की वजह से।

7. पस यह भी गुमान नहीं है कि वह वक़्त टल जाए।

(तफ़सीर पृष्ठ 1052)

1. यानी उस तक पहुँचने के लिए दीन का रास्ता कबूल करे।

(पृष्ठ 1052 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 1054, 1056 की तफ़सीर पृष्ठ 1058-1065 पर)

नमाज़ पढ़ा करते थे (43) और न ग़रीब को (जिसका हक़ वाजिब था) खाना खिलाया करते थे। (44) और मशग़ले में रहने वालों के साथ हम भी (उस) मशग़ले में रहा करते थे। (45) और कियामत के दिन को झुठलाया करते थे। (46) यहाँ तक कि (उसी हालत में) हमको मौत आ गई।¹ (47) सो (जो हालत ज़िक्र हुई उसमें) उनको सिफ़ारिश करने वालों की सिफ़ारिश फ़ायदा न देगी।² (48) (और जब कुफ़्र और हक़ से मुँह मोड़ने की बदौलत उनकी यह हालत बनने वाली है) तो उनको क्या हुआ कि इस (कुरआनी) नसीहत से मुँह फेरते हैं (49) कि गोया वे जंगली गधे हैं (50) जो शेर से भागे जा रहे हैं। (51) बल्कि उनमें हर शख्स यह चाहता है कि उसको खुले हुए (आसमानी) नविशते दिए जाएँ। (52) (आगे इस बेहूदा दरख्वास्त का रद्द है कि यह)³ हरगिज़ नहीं (हो सकता) बल्कि ये लोग आख़िरत (के अज़ाब) से नहीं डरते। (53) (पस यह) हरगिज़ नहीं हो सकता बल्कि कुरआन (ही) नसीहत (के लिए काफी) है। (54) जिसका जी चाहे इससे नसीहत हासिल करे। (55) और बग़ैर खुदा के चाहे ये लोग नसीहत क़बूल नहीं करेंगे। वही है जिस (के अज़ाब) से डरना चाहिए और (वही है) जो (बन्दों के गुनाह) माफ़ करता है। ▲ (56) ♦

75 सूर: कियाम: 31

सूर: कियाम: मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 40 आयतें और 2 रुकूअ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

मैं कसम खाता हूँ कियामत के दिन की। (1) और कसम खाता हूँ ऐसे नफ़्स की जो अपने ऊपर मलामत करे।⁴ (2) (आगे उन लोगों का रद्द है जो मरने के बाद ज़िन्दा होने का इनकार करते हैं, यानी) क्या इनसान ख़याल करता है कि हम उसकी हड्डियाँ हरगिज़ जमा न करेंगे? (3) हम ज़रूर जमा करेंगे (और यह जमा करना हमको कुछ दुश्वार नहीं) क्योंकि हम इसपर कादिर हैं कि उसकी उँगलियों की पोरियों तक को दुरुस्त कर दें। (4) बल्कि बाज़ा आदमी (कियामत का इनकारी होकर) यूँ चाहता है कि अपनी आने वाली ज़िन्दगी में भी (बेज़ौफ़ व ख़तर होकर) बुराइयाँ और गुनाह करता रहे। (5) (इसलिए इनकार करने के तौर पर) पूछता है कि कियामत का दिन कब आएगा?⁵ (6) सो जिस वक़्त (हैरत के मारे) आँखें फटी रह जाएँगी। (7) और चाँद बेनूर हो जाएगा। (8) और (चाँद की क्या तख़सीस है बल्कि) सूरज और चाँद (दोनों) एक हालत के हो जाएँगे (यानी दोनों बेनूर हो जाएँगे) (9) उस दिन इनसान कहेगा, अब किधर भागूँ? (10) (इरशाद होता है) हरगिज़ (भागना मुम्किन) नहीं (क्योंकि) कहीं पनाह की जगह नहीं। (11) उस दिन सिर्फ़ आप ही के परवर्दिगार के पास (जाने का) ठिकाना है। (12) उस दिन इनसान को उसका सब अगला-पिछला किया हुआ जतला दिया जाएगा। (13) (और इनसान का अपने आमाल से आगाह होना कुछ उस जतलाने पर मौकूफ़ न होगा)⁶ बल्कि इनसान खुद अपनी हालत पर ख़ूब बाख़बर होगा। (14) अगरचे (तबीयत के तकाज़े की वजह से उस वक़्त भी) अपने हीले (बहाने) सामने लाए।⁷ (15) (और) ऐ पैग़म्बर! (वह्य के ख़त्म हो चुकने से पहले) कुरआन पर अपनी ज़बान न हिलाया कीजिए ताकि आप उसको जल्दी-जल्दी

(पिछले पृष्ठ का शेष)

2. नुबुव्वत के शुरू में जब मुसलमानों पर तहज़ुद की नमाज़ फर्ज़ हुई तो मुसलमानों को वक़्त का अन्दाज़ा करने में बड़ी दुश्वारी पेश आती। (पृष्ठ 1052 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 1054, 1056 की तफ़सीर पृष्ठ 1058-1065 पर)

लें। (16) (क्योंकि) हमारे ज़िम्मे है (आपके दिल में) इसका जमा कर देना (और आपकी ज़बान से) इसका पढ़वा देना। (17) (जब यह हमारे ज़िम्मे है) तो जब हम उसको पढ़ने लगा करें (यानी हमारा फ़रिश्ता पढ़ने लगा करे) तो आप उसके ताबे हो जाया कीजिए। (18) फिर उसका बयान करा देना (भी) हमारा ज़िम्मा है। (19) (ऐ इन्कारियो! कियामत के बारे में जैसा कि तुम समझ रहे हो) हरगिज़ ऐसा नहीं, बल्कि (सिर्फ़ बात यह है) कि तुम दुनिया से मुहब्बत रखते हो (20) और आखिरत को छोड़ बैठे हो। (21) बहुत-से चेहरे उस दिन रौनक वाले होंगे। (22) अपने परवर्दिगार की तरफ़ देख रहे होंगे। (23) (यह तो मोमिनों का हाल हुआ) और बहुत-से चेहरे उस दिन बद्-रौनक होंगे। (24) (और वे लोग) ख़याल कर रहे होंगे कि उनके साथ कमर तोड़ देने वाला मामला किया जाएगा (यानी उनको सख्त अज़ाब होगा)। (25) हरगिज़ ऐसा नहीं, जब जान हँसली तक पहुँच जाती है (26) और (उस वक़्त बहुत ही हसरत से) कहा जाता है कि कोई झाड़ने वाला है? (27) और (उस वक़्त) वह (मरने वाला) यकीन कर लेता है कि यह (दुनिया से) जुदाई का वक़्त है। (28) और (मौत की सख़्तियों से) एक पिंडली दूसरी पिंडली से लिपट जाती है (29) उस दिन तेरे रब की तरफ़ जाना होता है। (30) ♦

तो उसने न तो (खुदा और रसूल की) तस्दीक़ की थी और न नमाज़ पढ़ी थी। (31) लेकिन (खुदा और रसूल को) झुठलाया था और (अहक़ाम से) मुँह मोड़ा था। (32) फिर नाज़ करता हुआ अपने घर चल देता है। (33) तेरी कमबख़्ती पर कमबख़्ती आने वाली है। (34) फिर (दोबारा सुन ले कि) तेरी कमबख़्ती पर कमबख़्ती आने वाली है। (35) क्या इन्सान यह ख़याल करता है कि यूँ ही बेकार छोड़ दिया जाएगा? (36) क्या यह शख्स (शुरू ही में सिर्फ़) एक मनी “यानी वीर्य” का कतरा न था जो (औरत के गर्भ में) टपकाया गया था। (37) फिर वह ख़ून का लोथड़ा हो गया, फिर अल्लाह तआला ने (उसको इन्सान) बनाया, फिर आज्ञा “यानी जिस्मानी हिस्से” दुरुस्त किए। (38) फिर उसकी दो किस्में कर दीं, मर्द और औरत। (39) (तो) क्या वह (खुदा जिसने शुरू में अपनी कुदरत से यह सब कुछ किया) इस बात पर कुदरत नहीं रखता कि (कियामत में) मुर्दों को ज़िन्दा करे? (40) ♦

76 सूर: दहर 98

सूर: दहर मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 31 आयतें और 2 रुकूअ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

बेशक इन्सान पर ज़माने में एक ऐसा वक़्त भी आ चुका है जिसमें वह कोई काबिले ज़िक्र चीज़ न था (यानी इन्सान न था बल्कि नुत्फ़ा था) (1) हमने उसको मख़्लूत “यानी मिश्रित” नुत्फ़े से पैदा किया, इस तौर पर कि हम उसको मुकल्लफ़ बनाएँ। तो (इसी वास्ते) हमने उसको सुनता-देखता (समझता) बनाया। (2) हमने उसको (भलाई-बुराई पर बाख़बर करके) रास्ता बतलाया (यानी अहक़ाम का मुखातब बनाया, फिर) या तो वह शुक्रगुज़ार (और मोमिन) हो गया या नाशुक्र (और काफ़िर) हो गया। (3) हमने काफ़िरों के लिए ज़न्जीरों और तौक़ और भड़कती हुई आग तैयार कर रखी है। (4) (और) जो नेक (लोग) हैं वे ऐसे शराब के

(पिछले पृष्ठ का शेष) यह मालूम नहीं होता था कि किस क़दर रात गुज़री और किस क़दर बाकी है। सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम सोना-लेटना सब छोड़ बैठे और करीब-करीब सारी रात अपने मौला-ए-करीम के आगे हाथ बाँधे हाज़िर और सारी-सारी रात खड़े रहने में गुज़ार देते थे। (पृष्ठ 1052 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 1054, 1056, 1058 की तफ़सीर पृष्ठ 1060-1066 पर)

जाम से (शराबें) पिँएँगे जिसमें काफूर की मिलावट होगी। (5) यानी ऐसे चश्मे से (पिँएँगे) जिससे अल्लाह तआला के खास बन्दे पिँएँगे (और) जिसको वह (खास बन्दे जहाँ चाहेंगे) बहाकर ले जाएँगे। (6) वे लोग वाजिबात को पूरा करते हैं और ऐसे दिन से डरते हैं जिसकी सख्ती आम होगी। (7) और वे लोग (सिर्फ) खुदा तआला की मुहब्बत से गरीब और यतीम और कैदी को खाना खिलाते हैं। (8) हम तुमको सिर्फ खुदा की रज़ामन्दी के लिए खाना खिलाते हैं, न हम तुमसे (इसका अमली) बदला चाहें और न (इसका ज़बान से) शुक्रिया (चाहें)। (9) हम अपने रब की तरफ से एक सख्त और तल्ख़ दिन का अन्देशा रखते हैं। (10) सो अल्लाह तआला उनको (इस इताअत और इख़लास की बरकत से) उस दिन की सख्ती से महफूज़ रखेगा और उनको ताज़गी और खुशी अता फ़रमाएगा (यानी चेहरों पर ताज़गी और दिलों में खुशी देगा)। (11) और उनकी पुख्तगी (यानी दीन पर जमे रहने) के बदले में उनको जन्नत और रेशमी लिबास देगा, (12) इस हालत में कि वे वहाँ (जन्नत में) मसहरियों पर (आराम और इज़्ज़त से) तकिया लगाए होंगे। न वहाँ तपिश (और गर्मी) पाएँगे और न जाड़ा (13) (बल्कि खुशी बख़्शने वाली दरमियानी हालत होगी) और यह हालत होगी कि (वहाँ के यानी जन्नत के) दरख़्तों के साये उनपर झुके होंगे और उनके मेवे उनके इख़्तियार में होंगे (कि हर वक़्त हर तरह बिना मशक्कत ले सकेंगे)। (14) और उनके पास चाँदी के बरतन लाए जाएँगे और आबख़ोरे “यानी पानी पीने के बरतन” जो शीशे के होंगे (15) (और) वह शीशे चाँदी के होंगे जिनको भरने वालों ने मुनासिब अन्दाज़ से भरा होगा। (16) और वहाँ उनको (ज़िक्र हुए जामे शराब के अलावा) ऐसा जामे शराब पिलाया जाएगा जिसमें सौंठ की मिलावट होगी। (17) यानी ऐसे चश्मे से (उनको पिलाया जाएगा) जो वहाँ होगा जिसका नाम (वहाँ) सल्सबील (मशहूर) होगा। (18) और उनके पास (ये चीज़ें लेकर) ऐसे लड़के आना-जाना करेंगे जो हमेशा लड़के ही रहेंगे (और इस क़द्र हसीन हैं कि) ऐ मुखातब! अगर तू उनको (चलते-फिरते) देखे तो यूँ समझे कि मोती हैं जो बिखर गए हैं। (19) और ऐ मुखातब! अगर तू उस जगह को देखे तो तुझको बड़ी नेमत और बड़ी हुकूमत दिखाई दे। (20) (और) उन जन्नतियों पर बारीक रेशम के हरे रंग के कपड़े होंगे और दबीज़ रेशम के कपड़े भी (क्योंकि हर लिबास में अलग लुत्फ़ है) और उनको चाँदी के कंगन पहनाए जाएँगे, और उनका रब उनको पाकीज़ा शराब पीने को देगा (जिसमें न नापाकी होगी न गदलापन)। (21) यह तुम्हारा सिला है, और तुम्हारी कोशिश (जो दुनिया में करते थे) मकबूल हुई। (22) ♦

हमने आप पर कुरआन थोड़ा-थोड़ा करके उतारा है। (23) सो आप अपने रब के हुक्म पर (कि इसमें

(पिछले पृष्ठ का शेष) पाँव सूज गए और पिंडलियों में खून उतरकर वर्म हो गया। पूरे एक साल बाद खुदा तआला ने उनके हाल पर रहम फ़रमाकर कमी के लिए यह आयत नाज़िल फ़रमाई जिससे तहज़्जुद का कर्ज़ होना मन्सूख़ हो गया और मोमिनों को इख़्तियार दिया गया कि जो चाहे तहज़्जुद पढ़े और जो चाहे न पढ़े। और जो नमाज़े तहज़्जुद अदा करे वह भी जितना कुरआन पाक आसानी से पढ़ सके पढ़े “मा तयस्स-र मिनल् कुरआन” (जितना कुरआन आसानी से पढ़ा जा सके पढ़ लिया करो) में कुरआन पढ़ने से नमाज़े तहज़्जुद में पढ़ना मुराद है।

3. ‘कर्ज़ हसन’ (यानी अच्छी तरह कर्ज़ देना) उस बिना ब्याज वाले कर्ज़ को कहते हैं कि जिसका तकाज़ा सख्त न हो। और अगर मकरूज़ अदा न कर सके, बिना अदा किए दुनिया से चला जाए तो आखिरत में भी मुतालबा न हो। अल्लाह को कर्ज़ देने से उसके बन्दों को ज़कात, सदाक़ात और ख़ैरात देना मुराद है। माल सब मालिकुल-मुल्क ही का है, बन्दे सारे उसके मलूक हैं, पस यह उसकी नवाज़िश है कि एक खुशहाल बन्दे से उसी के ज़रूरतमन्द भाई को दिलवाता है और उसको अपने ऊपर कर्ज़ करार देता है कि उसका बदला यकीनन अता फ़रमाएगा। और बदला भी बराबर नहीं बल्कि दस गुना और उससे भी ज़्यादा।

4. हदीसों में है कि सबसे पहले सूर: इक़रा के शुरु की आयतें नाज़िल होकर बाज़ हिक्मतों से कुछ दिनों तक वहाँ नाज़िल न हुई फिर एक बार जंगल में (पृष्ठ 1052 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 1054, 1056, 1058, 1060 की तफ़सीर पृष्ठ 1062-1066 पर)

तब्बीग भी दाखिल है) मुस्तकिल रहिए और उनमें से किसी फ़ासिक या काफ़िर के कहने में न आइए। (24) और (आगे ज़रूरी इबादतों का हुक्म है) यानी अपने परवर्दिगार का सुबह व शाम नाम लिया कीजिए। (25) और रात के किसी क़द्र हिस्से में भी उसको सज्दा किया कीजिए (यानी फ़र्ज़ नमाज़ पढ़ा कीजिए) और रात के बड़े हिस्से में उसकी तस्बीह किया कीजिए। (मुराद इससे तहज्जुद है, फ़राइज़ के अलावा)। (26) ये लोग दुनिया से मुहब्बत रखते हैं और अपने आगे (आने वाले) एक भारी दिन को छोड़ बैठे हैं। (27) हम ही ने उनको पैदा किया है और हम ही ने उनके जोड़-बन्द मज़बूत किए। और (साथ ही यह कि) जब हम चाहें उन्हीं जैसे लोग उनकी जगह बदल दें। (28) यह (सब जो कुछ ज़िक्र हुआ, काफ़ी) नसीहत है, सो जो शख्स चाहे अपने रबकी तरफ़ रास्ता इख्तियार कर ले। (29) और बग़ैर खुदा के चाहे तुम लोग कोई बात चाह नहीं सकते। (और बाज़ लोगों के लिए खुदा के न चाहने में बाज़ हिक्मतें होती हैं, क्योंकि) खुदा तआला बड़ा इल्म और हिक्मत वाला है। (30) वह जिसको चाहे अपनी रहमत में दाखिल कर लेता है और (जिसको चाहे कुफ़्र और जुल्म में मुस्तला रखता है। फिर) ज़ालिमों के लिए उसने दर्दनाक अज़ाब तैयार कर रखा है। (31) ♦

77 सूर: मुर्सलात 33

सूर: मुर्सलात मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 50 आयतें और 2 रुकूअ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

कसम है उन हवाओं की जो नफ़ा पहुँचाने के लिए भेजी जाती हैं। (1) फिर उन हवाओं की जो तेज़ी से चलती हैं (जिससे ख़तरों का अन्देशा होता है)। (2) और उन हवाओं की जो बादलों को (उठाकर) फैलाती हैं। (3) फिर उन हवाओं की जो बादलों को मुन्तशिर कर देती हैं (जैसा कि बारिश के बाद होता है)। (4) फिर उन हवाओं की जो (दिल में) अल्लाह तआला की याद डालती हैं (5) (यानी) तौबा का या डराने का (जज़्बा दिल में डालती हैं)। (6) कि जिस चीज़ का तुमसे वायदा किया जाता है वह ज़रूर होने वाली है, (मुराद कियामत है)। (7) सो जब सितारे बेनूर हो जाएंगे (8) और जब आसमान फट जाएगा (9) और जब पहाड़ उड़ते फिरेंगे (10) और जब सब पैग़म्बर मुक़र्रर वक़्त पर जमा किए जाएंगे। (11) किस दिन के लिए पैग़म्बरों का मामला मुल्तवी रखा गया है? (12) (आगे जवाब है) फैसले के दिन के लिए (मुल्तवी रखा गया है)। (13) और (आगे उस फैसले के दिन के हौलनाक होने का ज़िक्र है कि) आपको मालूम है कि वह फैसले का दिन कैसा कुछ है? (यानी बहुत सख़्त है)। (14) उस दिन (हक़ के) झुठलाने वालों की बड़ी ख़राबी होगी। (15) (आगे अज़ाब से डराना है, यानी) क्या हम अगले (काफ़िर) लोगों को (अज़ाब से) हलाक नहीं कर चुके? (16) फिर पिछलों को भी (अज़ाब में) उन (पहलों) ही के साथ-साथ कर देंगे। (17) हम मुज़्रिमों के साथ ऐसा ही किया करते हैं (यानी उनके कुफ़्र पर सज़ा देते हैं)। (18) उस दिन (हक़ के) झुठलाने वालों की बड़ी ख़राबी होगी। (19) (आगे मरने के बाद ज़िन्दा करने की कुदरत का बयान है, यानी) क्या हमने तुमको एक बेक़द्र पानी (यानी नुफ़े) से नहीं बनाया? (20) फिर हमने उसको एक मुक़र्रर वक़्त तक

(पिछले पृष्ठ का शेष) आपको एक आवाज़ सुनाई दी। ऊपर नज़र उठाकर देखा तो ज़िबराईल अलैहिस्सलाम ज़मीन व आसमान के बीच एक तख़्त पर बैठे हैं। आप हैबत से घर लौट आए और कपड़ों में लिपट गए। उसमें शुरू की आयतें नाज़िल हुईं। लफ़्ज़े “मुद्दसिस्” में इस तरफ़ इशारा है। और ये आयतें नुबुव्वत के शुरू के दौर की हैं और बक़िया सूर: बाद में नाज़िल हुई है। और ‘इतक़ान’ से मालूम होता है

(पृष्ठ 1052 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 1054, 1056, 1058, 1060, 1062 की तफ़सीर पृष्ठ 1064-1066 पर)

एक महफूज जगह (यानी औरत के गर्भ में) रखा। (21) गरज़ हमने (इन तसर्फ़ात का) एक अन्दाज़ा ठहराया (22) सो हम कैसे अच्छे अन्दाज़ा ठहराने वाले हैं। (23) उस दिन (हक के) झुठलाने वालों की बड़ी ख़राबी होगी। (24) क्या हमने ज़मीन को समेटने वाली नहीं बनाया (25) ज़िन्दों और मुर्दों को? (26) और हमने इस (ज़मीन) में ऊँचे-ऊँचे पहाड़ बनाए (जिनसे बहुत-से फायदे जुड़े हुए हैं) और हमने तुमको मीठा पानी पिलाया। (27) उस दिन (हक के) झुठलाने वालों की बड़ी ख़राबी होगी। (28) तुम उस अज़ाब की तरफ़ चलो जिसको झुठलाते थे। (29) एक सायबान “यानी साया करने वाला जैसे छज्जा वगैरह” की तरफ़ चलो जिसकी तीन शाखें हैं। (30) जिसमें न (ठंडा) साया है और न वह गर्मी से बचाता है। (31) वह अंगारे बरसाएगा जैसे बड़े-बड़े महल। (32) जैसे काले-काले ऊँट। (33) उस दिन (हक के) झुठलाने वालों के लिए बड़ी ख़राबी होगी। (34) यह वह दिन होगा जिसमें लोग बोल न सकेंगे (35) और न उनको (उज़्र करने की) इजाज़त होगी, सो उज़्र भी न कर सकेंगे। (36) उस दिन (हक के) झुठलाने वालों के लिए बड़ी ख़राबी होगी। (37) (उन लोगों से कहा जाएगा कि) यह है फ़ैसले का दिन (जिसको तुम झुठलाया करते थे), हमने (आज) तुमको और अगलों को (फ़ैसले के लिए) जमा कर लिया। (38) सो अगर तुम्हारे पास (आज के फ़ैसले से बचने की) कोई तदबीर हो तो मुझपर तदबीर चलाओ। (39) उस दिन (हक के) झुठलाने वालों की बड़ी ख़राबी होगी। (40) ♦

परहेज़गार लोग सायों और चश्मों में (41) और पसन्दीदा मेवों में होंगे (42) (और उनसे कहा जाएगा कि) अपने नेक आमाल के सिले में ख़ूब मज़े से खाओ-पियो। (43) हम नेक लोगों को ऐसा ही सिला दिया करते हैं। (44) (और ये काफ़िर लोग जन्नत की नेमतों को भी झुठलाते हैं, सो समझ लें कि) उस दिन (हक के) झुठलाने वालों की बड़ी ख़राबी होगी। (45) तुम (दुनिया में) थोड़े दिन और खा लो, बरत लो, (जल्द ही कमबख़्ती आने वाली है) तुम बेशक मुज़्रिम हो। (46) उस दिन (हक के) झुठलाने वालों के लिए बड़ी ख़राबी होगी। (47) और (उन काफ़िरों की सरकशी और जुर्म की यह हालत है कि) जब उनसे कहा जाता है कि (खुदा की तरफ़) झुको तो नहीं झुकते। (48) उस दिन (हक के) झुठलाने वालों की बड़ी ख़राबी होगी। (49) तो फिर इस (इस कद्र उम्दा अन्दाज़ में नसीहत करने और डराने वाले कुरआन) के बाद और फिर कौन-सी बात पर ईमान लाएंगे? (50) ♦

(पिछले पृष्ठ का शेष) कि सूर: मुज़मिल के बाद बाकी सूर: नाज़िल हुई है।

5. बावजूद एहतियाल न होने के यह हुक़म फ़रमाना इशारा है तौहीद की अज़ीम शान की तरफ़ कि ऐसी ज़रूरी चीज़ है कि मासूम (जो गुनाहों से महफूज़ हों) को भी बावजूद ज़रूरत न होने के इसकी तालीम की जाती है तो ग़ैर-मासूम तो इसका और भी ज़्यादा मुकल्लफ़ होगा।

6. एक बार वलीद बिन मुगीरा ने नबी-ए-पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को कुरआन पढ़ते सुन लिया। इस कलाम ने उसके पत्थर दिल को मोम बना दिया और इस्लाम की तरफ़ माईल हुआ। अबू जहल को इसकी ख़बर लगी तो वलीद के पास जाकर कहने लगा कि तुम्हारी कौम तुम्हारी तरफ़ से बदगुमान हो गई है, तुम्हारा अपने बाप-दादा के दीन और पुराने तरीक़े को छोड़कर कल के बच्चे मुहम्मद पर ईमान लाना बड़ी ज़िल्लत और कम-ज़रफ़ी की बात होगी। तुम्हारे लिए मुनासिब यह है कि किसी ऐसी बात का इज़हार करो जिससे सबको यकीन आ जाए कि तुम मुहम्मद के दीन को हरगिज़ पसन्द नहीं करते। वलीद बोला कि तुम ख़ूब जानते हो कि आज अरब के अन्दर शायरी में कोई शख्स मेरा मुक़ाबला नहीं कर सकता। किसी की बुराई बयान करने में, तारीफ़ बयान करने में, ग़ज़ल कहने में, गरज़ मैं हर रंग में शेर कहता हूँ। लेकिन मैंने मुहम्मद की ज़बान से ऐसा मज़ेदार और असर करने वाला कलाम सुना है कि जिसकी मिठास उम्र भर न भूलूँगा। अबू जहल बोला, कुछ हो तुम्हें कोई ऐसी बात ज़रूर बनानी होगी जिससे तुम्हारी कौम की बदगुमानी दूर हो। वलीद ने कहा कि अच्छा मैं देखूँगा कि मुझे क्या करना चाहिए। गरज़ बहुत कुछ सोच-विचार के बाद वलीद ने ऐलान किया कि मुहम्मद किसी दूसरे से नकल करने लगते हैं, इसपर यह आयत नाज़िल हुई। (पृष्ठ 1054, 1056, 1058, 1060, 1062, 1064 की तफ़सीर पृष्ठ 1065-1066 पर)

(पिछले पृष्ठ का शेष) 5. मतलब यह कि हमने ऐसी हैअतों और सिफतों के साथ पैदा किया कि उसमें मुकल्लफ बनने की काबलियत हो।

(तफसीर पृष्ठ 1060)

1. यानी सबपर कम या ज्यादा उसकी सख्ती का असर होगा, मुराद कियामत का दिन है।

2. कैदी अगर मजलूम है तब तो उसकी रियायत का अच्छा होना ज़ाहिर है, और अगर ज़ालिम है तो सख्त ज़रूरत के वक़्त उसको खाना खिलाना भी अच्छा है।

3. इससे मालूम हुआ कि आखिरत के खौफ से कोई काम करना इख़लास और अल्लाह की रिज़ा तलब करने के खिलाफ नहीं।

4. यानी उसमें पीने की चीज़ ऐसे अन्दाज़ से भरी होगी कि न उस वक़्त की इच्छा में कमी रहे और न उससे बचे कि दोनों में बेलुत्फ़ी होती है। और चाँदी के शीशे के यह मायने हैं कि सफ़ेदी तो चाँदी जैसी होगी और सफ़ाई व चमक शीशे के जैसी, और दुनिया की चाँदी में आरपार नज़र नहीं आता, और शीशे में यहाँ ऐसी सफ़ेदी नहीं होती, पस यह एक अजीब चीज़ होगी।

5. मोती से तो उनके बाहर आने और सफ़ाई की वजह से तश्बीह दी और बिखरे हुए का वस्फ़ उनके चलने-फिरने के लिहाज़ से, जैसे बिखरे मोती अलग-अलग होकर कोई इधर जा रहा है और कोई उधर जा रहा है, और यह आला दर्जे की तश्बीह है।

6. एक बार हज़रत फ़ारुके आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु बारगाहे नबवी में हाज़िर हुए और नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा कि एक चटाई पर लेटे हुए हैं और चटाई के पट्टे के निशान मुबारक जिस्म पर नक्श हो गए हैं। यह देखकर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की आँखों में आँसू आ गए। हज़रत रसूल मकबूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इसका सबब पूछा तो उन्होंने अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह! मेरे दिल में यह ख़्याल आया कि 'कैसर' व 'किसरा' तो काफ़िर होने के बावजूद कैसे ऐश-आराम में हैं और अल्लाह के हबीब दोनों जहाँ के सरदार एक सख्त चटाई पर आराम फ़रमा हैं, जिसपर कोई कपड़ा भी नहीं। आपने फ़रमाया ऐ उमर! क्या तुम इसपर राज़ी नहीं कि ग़ैर-मुस्लिमों की फ़ानी नेमतें दुनिया की ज़िन्दगी तक सीमित हैं और हम लोगों को खुदा तआला आख़िरत में कभी ख़त्म न होने वाली हमेशा की नेमतें अता फ़रमाएगा।

(तफसीर पृष्ठ 1062)

1. यानी ये ज़िक्र हुई हवाएँ कुदरत पर दलालत करने वाली होने की वजह से अपने बनाने वाले और पैदा करने वाले की तरफ़ मुतवज्जह होने का सबब हो जाती हैं।

2. इस सवाल व जवाब का मतलब यह मालूम होता है कि काफ़िर लोग जो रसूलों को झुठलाते आए हैं और अब भी इस उम्मत के काफ़िर लोग रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को झुठला रहे हैं। और जब इस झुठलाने पर आख़िरत के अज़ाब से डराए जाते हैं तो आख़िरत को भी झुठलाते हैं। इस वक़्त यह झुठलाना अपने आपमें इसको चाहता है कि रसूलों का जो किस्सा काफ़िरों से पेश आ रहा है उसका फैसला अभी हो जाए, और उसकी ताख़ीर और देरी होने से काफ़िरों को जल्दी होने से इनकार और मुसलमानों को तबई तौर पर जल्दी से हो जाने की तमन्ना होती है। इस आयत में इस जल्दी का जवाब है कि हक़ तआला ने बाज़ हिक्मतों से उसको मुअख़्खर कर रखा है, लेकिन वाक़ेअ ज़रूर होगा।

(तफसीर पृष्ठ 1064)

1. उस सायबान से एक धुआँ मुराद है जो जहन्नम से निकलेगा। और यह चूँकि कसरत से होगा इसलिए ऊँचा होगा, फटकर कई टुकड़े हो जाएगा। काफ़िर लोग हिसाब से फारिग होने तक उसी धुआँ के घेरे में रहेंगे, जबकि अल्लाह के मकबूल बन्दे अर्श के साये के नीचे होंगे।

2. कायदा है कि जब आग से चिंगारी झड़ती है तो बड़ी होती है, फिर पहली तश्बीह शुरू की हालत के एतिबार से है और दूसरी तश्बीह आख़िरी और इन्तिहाई हालत के एतिबार से है।

3. इन धमकियों और झंझोड़ने का तकाज़ा यह था कि ये सुनते ही डरकर ईमान ले आते मगर जब इसपर भी उनको असर नहीं तो फिर इस डराने वाले और आलीशान अल्फाज़ वाले कुरआन के बाद और किस बात पर ईमान लाएँगे? इसमें काफ़िरों को झिड़की का सबब आपका उनके ईमान से नाउम्मीद होना है।

तीसवाँ पार: अम्-म य-तसाअलून

78 सूर: नबा 80

सूर: नबा¹ मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 40 आयतें और 2 रुकूअ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

ये (कियामत का इनकार करने वाले) लोग किस चीज़ का हाल पूछते हैं? (1) उस बड़े वाकिए का हाल पूछते हैं (2) जिसमें ये लोग (अहले हक के साथ) इख़्तिलाफ़ कर रहे हैं। (3) हरगिज़ ऐसा नहीं (बल्कि कियामत आएगी और) उनको अभी मालूम हुआ जाता है। (4) (दोबारा कहते हैं कि जैसा ये लोग समझते हैं) हरगिज़ ऐसा नहीं (बल्कि आएगी) उनको अभी मालूम हुआ जाता है। (5) क्या हमने ज़मीन को फ़र्श (6) और पहाड़ों को (ज़मीन की) मेखें नहीं बनाया। (7) और (इसके अलावा हमने और भी कुदरत ज़ाहिर फ़रमाई, चुनाँचे) हमने ही तुमको जोड़ा-जोड़ा (यानी मर्द व औरत) बनाया। (8) और हम ही ने तुम्हारे सोने को राहत की चीज़ बनाया। (9) और हम ही ने रात को पर्दे की चीज़ बनाया (10) और हम ही ने दिन को रोज़गार का वक़्त बनाया। (11) और हम ही ने तुम्हारे ऊपर सात मज़बूत आसमान बनाए। (12) और हम ही ने (आसमान में) एक रोशन चिराग़ बनाया (मुराद सूरज है)। (13) और हम ही ने पानी भरे बादलों से कसरत से पानी बरसाया। (14) ताकि हम उस पानी के ज़रिये से पैदा करें ग़ल्ला और सब्ज़ी (15) और घने बाग़। (16) बेशक फ़ैसले का दिन एक मुतैयन वक़्त है। (17) यानी जिस दिन सूर फूँका जाएगा, फिर तुम लोग ग़िरोह-ग़िरोह होकर आओगे। (18) और आसमान खुल जाएगा, फिर उसमें दरवाज़े ही दरवाज़े हो जाएँगे। (19) और पहाड़ (अपनी जगह से) हटा दिए जाएँगे, सो वे रेत की तरह हो जाएँगे। (20) (आगे उस फ़ैसले के दिन में जो फ़ैसला होगा उसका बयान है, यानी) बेशक दोज़ख़ एक घात की जगह है (21) सरकशों का ठिकाना (है) (22) जिसमें वे बेइन्तिहा ज़मानों (तक पड़े) रहेंगे। (23) (और) उसमें न तो वे किसी ठंडक (यानी राहत) का मज़ा चखेंगे और न पीने की चीज़ का (जो कि प्यास को बुझाने वाली हो) (24) सिवाय गर्म पानी और पीप के। (25) और (उनको) पूरा-पूरा बदला मिलेगा। (26) (और वे आमाल जिनका यह बदला है, यह हैं कि) वे लोग (कियामत के) हिसाब का अन्देशा न रखते थे। (27) और हमारी आयतों को ख़ूब झुठलाते थे। (28) और हमने (उनके आमाल में से) हर चीज़ को (उनके आमालनामे में) लिखकर ज़ब्त कर रखा है। (29) सो मज़ा चखो कि हम तुम्हारी सज़ा ही बढ़ाते जाएँगे। (30) ♦

ख़ुदा से डरने वालों के लिए बेशक कामयाबी है। (31) यानी (खाने और सैर को) बाग़ (जिनमें तरह-तरह के मेवे होंगे) और अंगूर (32) और (दिल बहलाने को) नौजवान हमउम्र औरतें (33) और (पीने को) लबालब भरे हुए शराब के जाम। (34) (और) वहाँ न कोई बेहूदा बात सुनें और न झूठ (क्योंकि ये

1. इसमें भी पिछली मिली हुई सूर: की तरह कियामत के जल्द आने की संभावना और जज़ा व सज़ा के वाकिआत ज़िक्र किए गए हैं।

2. मुराद कियामत है और पूछने से मक़सद इनकार करने के तौर पर पूछना है। और इस सवाल व जवाब से मक़सद ज़ेहनों का उधर मुतवज्जह करना और जो बात ग़ैर-वाज़ेह थी उसकी तफ़सीर से उसका अहम होना ज़ाहिर है।

3. यानी जब दुनिया से जाने के बाद उनपर अज़ाब वाक़ेअ होगा तब असल हकीकत और (शेष तफ़सीर पृष्ठ 1070 पर)

बातें वहाँ बिलकुल नापैद हैं) (35) यह (उनको उनकी नेकियों का) बदला मिलेगा जो कि काफी इनाम होगा (आपके) रब की तरफ़ से (36) जो मालिक है आसमानों का और ज़मीन का और उन चीज़ों का जो उन दोनों के दरमियान में हैं। (और जो) रहमान है, (और) किसी को उसकी तरफ़ से (मुस्तक़िल) इख़्तियार न होगा (कि उसके सामने कुछ कह-सुन सके)¹ (37) जिस दिन तमाम रूहों वाले और फ़रिश्ते (खुदा के सामने) सफ़ बाँधे हुए (अज़िज़ी के साथ झुके हुए) खड़े होंगे, (उस दिन) कोई न बोल सकेगा सिवाय उसके जिसको रहमान (बोलने की) इजाज़त दे दे और वह शख्स बात भी ठीक कहे² (38) यह (दिन जिसका ऊपर ज़िक्र हुआ) यकीनी दिन है, सो जिसका जी चाहे (उसके हालात सुनकर) अपने रब के पास (अपना) ठिकाना बना ले। (39) हमने तुमको एक नज़दीक आने वाले अज़ाब से डरा दिया है (जो कि ऐसे दिन में होने वाला है) जिस दिन हर शख्स उन आमाँल को (अपने सामने हाज़िर) देख लेगा जो उसने अपने हाथों किए होंगे, और काफ़िर (हसरत से) कहेगा कि काश! मैं मिट्टी हो जाता³ (ताकि सज़ा से बच जाता)। (40) ♦

79 सूर: नाज़िआत 81

सूर: नाज़िआत मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 46 आयतें और 2 रुकूअ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

कसम है उन फ़रिश्तों की जो (काफ़िरों की) जान सख्ती से निकालते हैं। (1) और जो (मुसलमानों की) रूह आसानी से निकालते हैं, गोया उनका) बन्द खोल देते हैं।⁴ (2) और जो तैरते हुए चलते हैं। (3) फिर तेज़ी के साथ दौड़ते हैं। (4) फिर हर मामले की तदबीर करते हैं। (5) (उन सबकी कसमें खाकर कहते हैं कि कियामत ज़रूर आएगी) जिस दिन हिला देने वाली चीज़ हिला डालेगी (इससे सूर का पहली बार फूँका जाना मुराद है)। (6) जिसके बाद एक पीछे आने वाली चीज़ आएगी (इससे सूर का दूसरी बार फूँका जाना मुराद है)। (7) बहुत-से दिल उस दिन धड़क रहे होंगे। (8) उनकी आँखें शर्म के मारे झुक रही होंगी। (9) कहते हैं, क्या हम पहली हालत में फिर वापस होंगे? (पहली से मुराद मौत से पहले की ज़िन्दगी है)⁵ (10) क्या जब हम बोसीदा हड्डियाँ हो जाएँगे (11) फिर (ज़िन्दगी की तरफ़) वापस होंगे? (अगर ऐसा हुआ तो) उस सूरत में यह वापसी (हमारे लिए) बड़े घाटे की चीज़ होगी।⁶ (12) तो (यह समझ लें कि हमको कुछ मुश्किल नहीं, बल्कि) बस वह एक ही सख्त आवाज़ होगी (13) जिससे लोग फ़ौरन ही मैदान में आ मौजूद होंगे। (14) क्या आपको मूसा (अलैहिस्सलाम) का किस्सा पहुँचा है? (15) जबकि उनको उनके परवर्दिगार ने एक पाक मैदान यानी तुवा में (यह उसका नाम है) पुकारा (16) कि तुम फिरऔन के पास जाओ, उसने बड़ी शरारत इख़्तियार की है। (17) सो उससे (जाकर) कहो कि क्या तुझको इस बात की ख़ाहिश है कि तू दुरुस्त हो जाए? (18) और (तेरी दुरुस्ती की ग़रज़ से) मैं तुझको तेरे रब की तरफ़ (ज़ात व सिफ़ात की) रहनुमाई करूँ तो तू (यह सुनकर उससे) डरने लगे? (19) फिर (जब उसने नुबुव्वत की दलील तलब की तो) उसको (नुबुव्वत की) बड़ी

(पृष्ठ 1068 का शेष) कियामत का हक़ होना सामने आया। ये लोग उसको नामुष्किन और मुहाल समझते हैं हालाँकि उसको नामुष्किन समझने से हमारी कुदरत का इनकार लाज़िम आता है, और हमारी कुदरत का इनकार निहायत अजीब है क्योंकि.....(आगे देखो तर्जुमा)

(पृष्ठ 1068 की बकिया तफ़सीर और पृष्ठ 1070 की तफ़सीर पृष्ठ 1072-1080 पर)

निशानी दिखलाई। (20) तो उस (फिरऔन) ने उनको झुठलाया और (उनका) कहना न माना। (21) फिर (मूसा अलैहिस्सलाम से) अलग होकर (उनके खिलाफ) कोशिश करने लगा (22) और (लोगों को) जमा किया फिर (उनके सामने) बुलन्द आवाज़ से तकरीर की (23) और कहा कि मैं तुम्हारा आला रब हूँ। (24) सो अल्लाह तआला ने उसको आखिरत के और दुनिया के अज़ाब में पकड़ा। (25) बेशक (इस वाकिए में) ऐसे शख्स के लिए बड़ी इबरत है जो अल्लाह तआला से डरे। (26) ❖

भला तुम्हारा (दूसरी बार) पैदा करना (अपने आप में) ज्यादा सख्त है या आसमान का?² अल्लाह तआला ने उसको बनाया। (27) (इस तरह से कि) उसकी छत को बुलन्द किया और उसको दुरुस्त बनाया (कि कहीं उसमें नुक्स और दरार नहीं) (28) और उसकी रात को अंधेरी बनाया और उसके दिन को ज़ाहिर किया।³ (29) और उसके बाद ज़मीन को बिछाया (30) (और बिछाकर) उससे उसका पानी और चारा निकाला। (31) और पहाड़ों को (उसपर) कायम कर दिया (32) तुम्हारे और तुम्हारे मवेशियों के फ़ायदा पहुँचाने के लिए। (33) सो जब वह बड़ा हंगामा आया (34) यानी जिस दिन इन्सान अपने किए को याद करेगा (35) और देखने वालों के सामने दोज़ख ज़ाहिर की जाएगी (36) तो (उस दिन यह हालत होगी कि) जिस शख्स ने (हक से) सरकशी की होगी (37) और (आखिरत का मुन्किर होकर) दुनियावी ज़िन्दगी को तरजीह दी होगी (38) सो दोज़ख (उसका) ठिकाना होगा। (39) और जो शख्स (दुनिया में) अपने परवर्दिगार के सामने खड़ा होने से डरा होगा और नफ़्स को (हराम) ख्वाहिश से रोका होगा⁴ (40) सो जन्नत उसका ठिकाना होगा। (41) ये लोग आपसे कियामत के बारे में पूछते हैं कि वह कब आएगी?⁵ (42) (सो) उसके बयान करने से आपका क्या ताल्लुक (43) उस (के इल्म को मुतैयन करने) का मदार सिर्फ़ आपके परवर्दिगार की तरफ़ है (44) (और) आप तो सिर्फ़ (उसकी मुख्तसर ख़बर देकर) ऐसे शख्स को डराने वाले हैं जो उससे डरता हो। (45) जिस दिन ये उसको देखेंगे तो (उनको) ऐसा मालूम होगा कि गोया (दुनिया में) सिर्फ़ एक दिन के आखिरी हिस्से में या उसके अव्वल हिस्से में रहे हैं।⁶ (46) ❖

80 सूर: अ-ब-स 24

सूर: अ-ब-स मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 42 आयतें और 1 रुकूअ है।

(नोट:- अब पारे के आखिर तक हर सूर: एक ही रुकूअ की है।)

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

पैगम्बर⁷ (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के चेहरे पर नागवारी के असरात ज़ाहिर हो गए और मुतवज्जह न हुए (1) इस बात से कि उनके पास अंधा आया।⁸ (2) और आपको क्या खबर शायद नाबीना “यानी अंधा” (आपकी तालीम से पूरे तौर पर) सँवर जाता। (3) या (किसी खास मामले में) नसीहत कबूल करता,

(पिछले पृष्ठ का शेष) 4. मुराद सूरज है, जैसे कि अल्लाह तआला का कौल है- ‘व ज-अलशशम्-स सिराजन्’।

5. और इन सबसे हमारा कामिल कुदरत वाला होना ज़ाहिर है। फिर कियामत पर हमारे कादिर होने का क्यों इनकार किया जाता है?

6. यानी आसमान इस कदर बहुत सारा खुल जाएगा जैसे बहुत-से दरवाज़े मिलाकर बहुत-सी जगह खुली होती है। पस यह कलाम तश्बीह पर आधारित है, अब यह शुद्ध नहीं हो सकता कि आसमान में दरवाज़े तो अब भी हैं फिर उस दिन दरवाज़े होने के क्या मायने? और यह खुलना फ़रिश्तों के नाज़िल होने के लिए होगा जैसा कि सूर: फुरकान में ‘त-शक्कुस्समा-उ’ से ताबीर फरमाया है।

(पृष्ठ 1068 की बकिया तफ़सीर और पृष्ठ 1070, 1072 की तफ़सीर पृष्ठ 1074-1081 पर)

सो उसको नसीहत करना (कुछ न कुछ) फायदा पहुँचाता। (4) तो जो शख्स (दीन से) बेपरवाई करता है (5) आप उसकी तो फ़िक्र में पड़ते हैं (6) हालाँकि आप पर कोई इल्ज़ाम नहीं कि वह न सँवरे। (7) और जो शख्स आपके पास (दीन के शौक में) दौड़ता हुआ आता है (8) और वह (खुदा से) डरता है (9) आप उससे बेतवज्जोही करते हैं। (10) (आप आइन्दा) हरगिज़ ऐसा न कीजिए। कुरआन (सिर्फ़ एक) नसीहत की चीज़ है। (11) सो जिसका जी चाहे उसको कबूल कर ले। (12) वह (कुरआन लौहे-महफूज़ के) ऐसे सहीफों में (लिखा हुआ) है जो (अल्लाह के नज़दीक) मुकर्रम “यानी सम्मानित” हैं। (13) बुलन्द रुतबे वाले हैं, मुकद्दस हैं। (14) जो ऐसे लिखने वालों (यानी फ़रिश्तों) के हाथों में (रहते) हैं (15) कि वे मुकर्रम (और) नेक हैं। (16) आदमी पर (जो ऐसे तज़िकरे से नसीहत हासिल न करे) खुदा की मार, वह कैसा नाशुक्रा है। (17) (वह देखता नहीं कि) अल्लाह ने उसको कैसी (बेवक़अत) चीज़ से पैदा किया। (18) (आगे जवाब है कि) नुत्फ़े से (पैदा किया। आगे उसकी कैफ़ियत का ज़िक्र है कि) उसकी सूरत बनाई, फिर उस (के जिस्मानी अंगों) को अन्दाज़ से बनाया। (19) फिर उसके (निकलने का) रास्ता आसान कर दिया। (20) फिर (उम्र ख़त्म होने के बाद) उसको मौत दी, फिर उसको कब्र में ले गया। (21) फिर जब अल्लाह चाहेगा उसको दोबारा ज़िन्दा करेगा। (22) हरगिज़ (शुक्र नहीं अदा किया और) उसको जो हुक्म किया था उसपर अमल नहीं किया। (23) सो इनसान को चाहिए कि अपने खाने की तरफ़ नज़र करे (24) कि हमने अजीब तौर पर पानी बरसाया। (25) फिर अजीब तौर पर ज़मीन को फाड़ा (26) फिर हमने पैदा किया उसमें ग़ल्ला (27) और अंगूर और तरकारी (28) और जैतून और खजूर (29) और घने बाग़ (30) और मेवे और चारा। (31) (बाज़ चीज़ें) तुम्हारे और (बाज़ चीज़ें) तुम्हारे मवेशियों के फायदे के लिए। (32) (अब तो ये नाशुक्रा और कुफ़्र करते हैं) फिर जिस वक़्त कानों को बहरा कर देने वाला शोर बर्पा होगा (33) जिस दिन ऐसा आदमी भागेगा (जिसका ऊपर बयान हुआ), अपने भाई से (34) और अपनी माँ से और अपने बाप से (35) और अपनी बीवी से और अपनी औलाद से। (यानी कोई किसी की हमदर्दी न करेगा)। (36) उनमें हर शख्स को (अपना ही) ऐसा मशग़ला होगा जो उसको दूसरी तरफ़ मुतवज्जह न होने देगा। (37) (यह तो काफ़िरों का हाल हुआ, आगे मजमूई तौर पर मोमिनों और काफ़िरों की तफ़सील है कि) बहुत-से चेहरे उस दिन (ईमान की वजह से) रोशन (38) (और खुशी से) खिले हुए होंगे (39) और बहुत-से चेहरों पर उस दिन (कुफ़्र की वजह से) स्याही छाई होगी। (40) (और उस स्याही के साथ) उनपर (ग़म की) कदूरत “यानी मलाल व रन्जीदगी” छाई होगी। (41) यही लोग काफ़िर-फ़ाजिर हैं। (42) ♦

(पिछले पृष्ठ का शेष) 7. और ये वाकिआत दूसरी बार सूर फूँकने के वक़्त होंगे। अलबत्ता पहाड़ चलाए जाने में इस सूर: में भी और दूसरी जगह भी जहाँ-जहाँ आया है दोनों एहतमाल हैं, या तो दूसरी बार सूर फूँकने के बाद कि उससे पूरी दुनिया फिर अपनी हालत पर वापस आ जाएगी, जब हिसाब का वक़्त आएगा तो पहाड़ों को ज़मीन के बराबर कर दिया जाएगा, ताकि ज़मीन पर कोई पहाड़ आड़ न रहे, सब एक ही मैदान में नज़र आएँ। और या यह कि पहली बार सूर फूँकने से दूसरी बार सूर फूँकने तक के मजमूए को एक दिन करार दे लिया गया। अल्लाह ही खूब जानते हैं।

(तफ़सीर पृष्ठ 1070) 1. यहाँ कई सिफ़तें इरशाद फ़रमाई हैं- ‘रबिस्समावाति.....आख़िर तक’ जो दलालत करता है कियामत के दिन के वाक़िए पर मालिक और क़ब्ज़ा व इख़्तियार वाला होने पर, और रहमान जो मोमिनों को जज़ा देने के मुनासिब है। और ‘ला यम्लिकू-न.....आख़िर तक’ जो काफ़िरों को ख़ौफ़ दिलाने के मुनासिब है।

2. ठीक बात से वह बात मुराद है जिसकी इजाज़त दी गई हो, यानी बोलना भी सीमित और शर्त के साथ होगा, यह नहीं कि जो चाहे

3. और यह उस वक़्त कहेगा जबकि इनसान व जिन्नात के अलावा दूसरे जानदारों को आपस में बदला दिलाने के बाद मिट्टी कर दिया जाएगा। (पृष्ठ 1070 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 1072 की तफ़सीर पृष्ठ 1076-1081 पर)

81 सूर: तक्वीर 7

सूर: तक्वीर मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 29 आयतें हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

जब सूरज बेनूर हो जाएगा। (1) और जब सितारे टूट-टूटकर गिर पड़ेंगे। (2) और जब पहाड़ चलाए जाएँगे। (3) और जब दस महीने की गाभन ऊँटनियाँ छुटी फिरेगी। (4) और जब जंगली जानवर (घबराहट के मारे) सब जमा हो जाएँगे। (5) और जब दरिया भड़काए जाएँगे। (6) और जब एक-एक किस्म के लोग इकट्ठे किए जाएँगे। (7) और जब ज़िन्दा गाड़ी हुई लड़की से पूछा जाएगा (8) कि वह किस गुनाह पर कल की गई थी। (9) और जब आमालनामे खोले जाएँगे (ताकि सब अपने-अपने अमल देख लें)। (10) और जब आसमान खुल जाएगा (और उसके खुलने से आसमान की ऊपर की चीज़ें नज़र आने लगेंगी)। (11) और जब दोज़ख़ (और ज़्यादा) दहकाई जाएगी। (12) और जब जन्नत करीब कर दी जाएगी। (13) (तो उस वक़्त) हर शख्स उन आमाल को जान लेगा जो लेकर आया है। (14) (और जब ऐसा होलनाक वाकिआ होने वाला है) तो मैं कसम खाता हूँ उन सितारों की जो (सीधे चलते-चलते) पीछे को हटने लगते हैं। (15) (और फिर पीछे ही को) चलते रहते हैं (और अपने निकलने की जगहों में) जा छुपते हैं। (16) और कसम है रात की जब वह जाने लगे। (17) और कसम है सुबह की जब वह आने लगे। (18) (आगे कसम का जवाब है) कि यह कुरआन (अल्लाह तआला का) कलाम है। (19) एक इज़्ज़त वाला फ़रिश्ते (यानी ज़िबराईल अलैहिस्सलाम का लाया हुआ जो कुव्वत वाला है और) अर्श के मालिक के नज़दीक रुतबे वाला है। (20) (और) वहाँ (यानी आसमानों में) उसका कहना माना जाता है (और वह) अमानतदार हैं। (21) कि (वह) को सही-सही पहुँचा देते हैं।) और यह तुम्हारे साथ के रहने वाले (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) मजन्नू नहीं हैं। (22) उन्होंने उस फ़रिश्ते को (असली सूरत में आसमान के) साफ़ किनारे पर देखा भी है। (23) और यह पैग़म्बर पोशीदा (बतलाई हुई वद्य की) बातों पर कन्ज़ूसी करने वाले भी नहीं। (24) और यह कुरआन किसी शैतान मरदूद की कही हुई बात नहीं है। (25) (जब यह साबित है) तो तुम लोग (इस बारे में) किधर को चले जा रहे हो? (26) बस यह तो (उमूमन) दुनिया जहान वालों के लिए एक बड़ा नसीहत की किताब है। (27) (और खास तौर से) ऐसे शख्स के लिए जो तुममें से सीधा चलना चाहे। (28) और तुम बग़ैर खुदा-ए-रब्बुल आलमीन के चाहे कुछ नहीं चाह सकते। (29) ♦

82 सूर: इन्फितार 82

सूर: इन्फितार मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 19 आयतें हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

जब आसमान फट जाएगा। (1) और जब सितारे (टूटकर) झड़ पड़ेंगे (2) और सब दरिया (मीठे व

(पिछले पृष्ठ का शेष) यह रिवायत हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से दुर्गे मन्सूर में बयान की गई है। या वह मायने मुराद हों जो सूर: निसा में "लौ तुसव्वा बिहिमुल अर्रजु" (कि काश! हम ज़मीन के पैवन्द हो जाते) में गुज़रे हैं।

4. "वन्नाज़िआति, वन्नाशिताति" से यह शुब्हा न किया जाए कि कभी-कभी काफ़िरो का मौत का वक़्त आसान और मोमिनो का सख़्त देखा जाता है। (पृष्ठ 1070 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 1072, 1076 की तफ़सीर पृष्ठ 1078-1081 पर)

नमकीले) बह पड़ेंगे (3) और जब कब्रें उखाड़ी जाएँगी (यानी उनके मुर्दे निकल खड़े होंगे)। (4) (उस वक्त) हर शख्स अपने अगले और पिछले आमाल को जान लेगा। (5) ऐ इन्सान! तुझको किस चीज़ ने तेरे ऐसे रब्बे करीम के साथ भूल में डाल रखा है (6) जिसने तुझको (इन्सान) बनाया, फिर तेरे जिस्मानी अंगों को दुरुस्त किया, फिर तुझको (मुनासिब) एतिदाल पर बनाया। (7) (और) जिस सूरत में चाहा तुझको तरकीब दे दिया। (8) (इन सब उमूर का तकाज़ा यह है कि तुमको) हरगिज़ (मगरूर) नहीं (होना चाहिए, मगर तुम बाज़ नहीं आते) बल्कि तुम (इस वजह से धोखे में पड़ गए हो कि तुम) जज़ा व सज़ा (ही) को झुठलाते हो। (9) और तुमपर (तुम्हारे सब आमाल) याद रखने वाले, (10) इज़्जत वाले, लिखने वाले मुकर्रर हैं। (11) जो तुम्हारे सब कामों को जानते हैं। (12) नेक लोग बेशक आराम में होंगे (13) और बदकार (यानी काफ़िर) लोग बेशक दोज़ख में होंगे। (14) बदले के दिन उसमें दाख़िल होंगे। (15) और (फिर दाख़िल होकर) उससे बाहर न होंगे (बल्कि उसमें हमेशा रहना होगा)। (16) और आपको कुछ ख़बर है कि वह बदले का दिन कैसा है? (17) (और हम) फिर (दोबारा कहते हैं कि) आपको कुछ ख़बर है कि वह बदले का दिन कैसा है? (18) वह दिन ऐसा है जिसमें किसी शख्स के नफ़े के लिए कुछ बस न चलेगा और पूरी की पूरी हुक्मत उस दिन अल्लाह ही की होगी। ♦ (19) ♦

83 सूर: मुतफ़िफ़ीन 86

सूर: मुतफ़िफ़ीन मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 36 आयतें हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

बड़ी ख़राबी है नाप-तौल में कमी करने वालों की (1) कि जब लोगों से (अपना हक़) नापकर लें तो पूरा लें (2) और जब उनको नापकर या तौलकर दें तो घटा कर दें। (3) (आगे नाप-तौल में कमी करने वालों को धमकाया और तबीह की जा रही है कि) क्या उन लोगों को इसका यकीन नहीं है कि ज़िन्दा करके उठाए जाएँगे (4) एक बड़े दिन में। (5) जिस दिन तमाम आदमी रब्बुल आलमीन के सामने खड़े होंगे। (6) हरगिज़ (ऐसा) नहीं होगा, (यानी काफ़िर) लोगों का आमालनामा 'सिज्जीन' में रहेगा। (7) और (आगे डराने के लिए सवाल है कि) आपको कुछ मालूम है कि 'सिज्जीन' में रखा हुआ आमालनामा क्या चीज़ है? (8) वह एक निशान किया हुआ दफ़्तर है। (9) उस दिन (यानी क़ियामत के दिन) झुठलाने वालों को बड़ी ख़राबी होगी। (10) जो जज़ा के दिन को झुठलाते हैं। (11) और उस (बदले के दिन को तो वही शख्स झुठलाता है जो बन्दगी की हद) से गुज़रने वाला हो (और) मुज़्रिम हो। (12) (और) जब उसके सामने हमारी आयतें पढ़ी जाएँ तो यूँ कह देता हो कि बे-सन्द बातें हैं, अगलों से नक़ल होती हुई चली आती हैं। (13) हरगिज़ (ऐसा)

(पिछले पृष्ठ का शेष) असल यह है कि यह सख़्ती और सहूलत ज़ाहिरी जिस्म पर होती है और आयत में रूहानी व हकीकी सख़्ती और सहूलत मुराद है।

5. यानी क्या मरने के बाद फिर दोबारा ज़िन्दा होना होगा? अराल इसका मुहाल होना ज़ाहिर करना मक़सद है।

6. क्योंकि हमने तो उसके लिए कुछ सामान नहीं किया। मक़सद इससे अहले हक़ के इस अक़ीदे का मज़ाक़ और हँसी उड़ाना था। यानी मुसलमानों के अक़ीदे पर तो हम बड़े ख़सारे में होंगे। जैसे कोई शख्स किसी को ख़ैरख़्वाही से डराए कि इस रास्ते से मत जाना शेर मिलेगा

(पृष्ठ 1070 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 1072, 1076, 1078 की तफ़सीर पृष्ठ 1080-1082 पर)

नहीं बल्कि (उनके झुठलाने की असल वजह यह है कि) उनके दिलों पर उनके (बुरे) आमाल का जंग बैठ गया है। (14) हरगिज़ (ऐसा) नहीं, ये लोग उस दिन (एक तो) अपने रब (का दीदार देखने) से रोक दिए जाएँगे। (15) फिर (सिर्फ इसीपर बस न होगा बल्कि) ये दोज़ख में दाखिल होंगे। (16) फिर (उनसे) कहा जाएगा, यही है जिसको तुम झुठलाया करते थे। (17) (ये जो मोमिनों के अज़्र व सवाब का इनकार करने वाले हैं) हरगिज़ (ऐसा) नहीं, नेक लोगों का आमालनामा इल्लिय्यीन में रहेगा।¹ (18) और (आगे बढ़ाई व रुतबा जताने के लिए सवाल है कि) आपको कुछ मालूम है कि इल्लिय्यीन में रखा हुआ आमालनामा क्या चीज़ है? (19) वह एक निशान किया हुआ दफ़्तर है (20) जिसको मुक़र्रब फ़रिश्ते (शौक से) देखते हैं।² (21) (आगे उनके आख़िरत के बदले का बयान है कि) नेक लोग बड़ी राहत व आराम में होंगे। (22) मसहरियों पर (बैठे जन्नत की अज़ीब-अज़ीब चीज़ों को) देखते होंगे। (23) ऐ मुखातब! तू उनके चेहरों में राहत व आराम की खुशी व ताज़गी देखेगा। (24) (और) उनको पीने के लिए मुहर-बन्द खालिस शराब मिलेगी (25) जिसपर मुश्क की मुहर होगी।³ और हिर्स करने वालों को ऐसी चीज़ की हिर्स करनी चाहिए।⁴ (26) और उस (शराब) की मिलावट तसनीम (के पानी) की होगी। (27) यानी एक ऐसा चश्मा जिससे मुक़र्रब बन्दे पिएँगे। (28) (आगे मुसलमान और काफ़िर दोनों की दुनिया व आख़िरत का हाल मजमूई तौर पर बयान किया गया है, यानी) जो लोग मुज़्रिम थे (यानी काफ़िर) वे ईमान वालों से (उनका अपमान करने के तौर पर दुनिया में) हँसा करते थे। (29) और ये (ईमान वाले) जब उन (काफ़िरों) के सामने से होकर गुज़रते थे तो आपस में आँखों से इशारे करते थे। (30) और जब अपने घरों में जाते तो (वहाँ भी उनका तज़्किरा करके) दिल्लगियाँ करते।⁵ (31) और जब उनको देखते तो यूँ कहा करते कि ये लोग यकीनन ग़लती में हैं (क्योंकि काफ़िर लोग इस्लाम को ग़लती समझते थे)। (32) हालाँकि ये (काफ़िर) उन (मुसलमानों) पर निगरानी करने वाले करके नहीं भेजे गए। (33) सो आज (कियामत के दिन) ईमान वाले काफ़िरों पर हँसते होंगे। (34) मसहरियों पर (बैठे उनका हाल) देख रहे होंगे।⁶ (35) वाकई काफ़िरों को उनके किए का ख़ूब बदला मिला। (36) ♦

84 सूर: इन्शिकाक 83

सूर: इन्शिकाक मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 25 आयतें हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

जब (दूसरी बार सूर फूँकने के वक़्त) आसमान फट जाएगा (ताकि उसमें से बादल और फ़रिश्ते नाज़िल हों) (1) और अपने रब का हुक्म सुन लेगा⁷ और वह (आसमान) इसी लायक है। (2) और जब ज़मीन खींचकर बढ़ा दी जाएगी⁸ (3) और (वह ज़मीन) अपने अन्दर की चीज़ों (यानी मुर्दों) को बाहर उगल देगी और खाली हो जाएगी। (4) और अपने रबका हुक्म सुन लेगी, और वह इसी लायक है। (5) ऐ इनसान! तू

(पिछले पृष्ठ का शेष) और मुखातब झुठलाने के तौर पर किसी से कहे कि भाई उधर मत जाना शेर खा जाएगा। मतलब यह कि कियामत कोई चीज़ नहीं है।

(तफ़सीर पृष्ठ 1072)

1. दुनियावी अज़ाब तो डूबना है और आख़िरत का अज़ाब आग में जलना है।

2. जाहिर है कि हमारे दूसरी बार पैदा करने से आसमान का पैदा करना ज़्यादा सख़्त है, फिर जब उसको पैदा कर दिया तो तुम्हारा दोबारा पैदा कर देना क्या मुश्किल है।

3. रात और दिन को आसमान की तरफ़ इसलिए मन्सूब किया कि रात और दिन सूरज के निकलने और छुपने से होते हैं और सूरज आसमान में है। (पृष्ठ 1072 की बकिया तफ़सीर और पृष्ठ 1076, 1078, 1080 की तफ़सीर पृष्ठ 1081-1082 पर)

(पिछले पृष्ठ का शेष)

(तफसीर पृष्ठ 1078)

1. यानी इनसान बनाने और दुरुस्त करने में मुश्तरक होने के बावजूद फिर अलग-अलग तौर पर पैदा किया। “मा गर्-क” से पहले अन्जाम और आखिर का और उसके बाद उसकी इब्तिदाई हालत के जिक्र की तरफ इशारा है कि अगरचे यह बात गुरुर और धोखे में पड़ने से रोकने वाली हो लेकिन फिर भी गुरुर और घमण्ड से बाज़ नहीं आता। और करीम की सिफ़्त बयान करने से इस तरफ इशारा है कि करीम होना इस बात को चाहता है कि उसकी तरफ ज़्यादा तवज्जोह की जाए।

2. अगरचे लोगों से अपना हक पूरा लेना बुरा नहीं है मगर उसके लेने से मकसूद खुद उसकी निन्दा करना नहीं है बल्कि कम देने पर निन्दा की ताक़ीद है। यानी कम देना अगरचे अपने आपमें बुरा है लेकिन उसके साथ अगर दूसरों की बिल्कुल रियायत न की जाए तो और ज़्यादा बुरा है। बख़िलाफ़ रियायत करने वाले के कि अगर उसमें एक ऐब है तो एक हुनर भी है, इसलिए पहले शख्स का ऐब ज़्यादा सख्त है। और चूँकि असल मकसूद कम देने की निन्दा करना है इसलिए उसमें नाप और तौल दोनों का जिक्र किया ताकि खूब वज़ाहत हो जाए कि नापने में भी कम देते हैं, तौलने में भी कम देते हैं। और चूँकि पूरा लेना अपने आपमें बुराई का सबब नहीं है इसलिए वहाँ नाप और तौल दोनों का जिक्र नहीं किया बल्कि एक ही का जिक्र किया। फिर नापने को शायद इसलिए ख़ास किया हो कि अरब में ज़्यादा दस्तूर नापने का था।

3. सिज्जीन सातवीं ज़मीन में एक मक़ाम है जो काफ़िरो की रूहों का ठिकाना है, जैसा कि तफसीर इब्ने कसीर में हज़रत कअब से और दुर्रे मन्सूर में हज़रत इब्ने अब्बास, मुजाहिद, क़तादा, फ़रक़द और अब्दुल्लाह इब्ने अमर से मरफूअन नक़ल किया गया है।

(तफसीर पृष्ठ 1080)

1. इल्लियीन सातवें आसमान पर एक मक़ाम है जो मोमिनो की रूहों का ठिकाना है, जैसा कि तफसीर इब्ने कसीर में हज़रत कअब से बयान किया गया है।

2. यह मोमिन के लिए बहुत बड़ा सम्मान है जैसा कि रूहुल-मआनी में हज़रत कअब से रिवायत है कि जब फ़रिशते मोमिन की रूह को कब्ज़ करके ले जाते हैं तो हर आसमान के मुक़रब फ़रिशते उसके साथ होते जाते हैं यहाँ तक कि सातवें आसमान तक पहुँचकर उस रूह को रख देते हैं। फिर फ़रिशते अर्ज़ करते हैं कि हम इसका आमालनामा खोलकर देखना चाहते हैं। चुनाँचे वह आमालनामा खोलकर दिखलाया जाता है।

3. जैसे कायदा है कि लाख वगैरह लगाकर उसपर मुहर कर देते हैं और ऐसी चीज़ को ‘तीन ख़िताम’ कहते हैं। वहाँ शराब के मुँह पर कस्तूरी लगाकर उसपर मुहर कर दी जाएगी जो इस बात की निशानी होगी कि इस शराब में से न तो कुछ निकाली गई है और न बाहर की कोई चीज़ इसमें दाख़िल की गई है।

4. यानी हिर्स के लायक़ यह है, चाहे सिर्फ़ शराब मुराद ली जाए चाहे ज़न्नत की तमाम नेमतें, यानी हासिल करने के लायक़ ये नेमतें हैं न कि दुनिया की फ़ानी नेमतें। और उनके हासिल करने का तरीका नेक आमाल हैं। पस उनमें बहुत ज़्यादा कोशिश करनी चाहिए।

5. मतलब यह कि सामने और पीछे हर हालत में मोमिनो का अपमान करने और उनके मज़ाक़ उड़ाने का मशग़ला रहता। लेकिन जब सामने मौजूद होते तो इशारे चला करते और पीछे खुलकर बुराईयाँ करते, हालाँकि मुसलमानों का अपमान और हँसी उड़ाने के बजाय काफ़िरो को अपनी फ़िक्क़ करनी चाहिए थी। उन्होंने एक तो अहले हक़ का मज़ाक़ उड़ाया, फिर अपनी इस्लाह से बेफ़िक्क़ रहे।

6. दुर्रे मन्सूर में हज़रत क़तादा से रिवायत है कि कुछ दरीचे-झरोके ऐसे होंगे जिनसे ज़न्नत वाले दोज़खियों को देख सकेंगे, पस उनका बुरा हाल देखकर बदला लेने के तौर पर हँसेंगे।

7. यहाँ हुक्म से मुराद फटने का हुक्म तक्वीनी है और मानने से मुराद उसका वाक़ेअ़ हो जाना है।

8. जिस तरह चमड़ा या रबड़ खींचा जाता है। पस ज़मीन अपनी मौजूदा मिक्क़दार (यानी मात्रा) से बहुत ज़्यादा लम्बी-चौड़ी हो जाएगी ताकि शुरू से आख़िर तक की तमाम मख़बूक़ उसपर समा सकें, जैसा कि दुर्रे मन्सूर में उम्मा सनद के साथ हाकिम की रिवायत से मरफूअन आया है- “क़ियामत के दिन ज़मीन चमड़े की तरह फैला दी जाएगी”। पस यह फटना और यह लम्बा होना दोनों हिसाब के मुक़दिमात में से हैं।

अपने रब के पास पहुँचने तक (यानी मरने के वक्त तक) काम में कोशिश कर रहा है, फिर (कियामत में) उस (काम की जज़ा) से जा मिलेगा। (6) तो (उस दिन) जिस शख्स का आमालनामा उसके दाहिने हाथ में मिलेगा (7) सो उससे आसान हिसाब लिया जाएगा¹ (8) और (वह उससे फ़ारिग होकर) अपने मुताल्लिकीन के पास खुश-खुश आएगा। (9) और जिस शख्स का आमालनामा (उसके बाएँ हाथ में) उसकी पीठ के पीछे से मिलेगा² (10) सो वह मौत को पुकारेगा (11) और जहन्नम में दाखिल होगा। (12) यह शख्स (दुनिया में) अपने मुताल्लिकीन में खुश-खुश रहा करता था (यहाँ तक कि खुशी की ज़्यादती में आखिरत को झुठलाया करता था)। (13) उसने ख्याल कर रखा था कि उसको (खुदा की तरफ़) लौटना नहीं है। (14) (आगे इस ख्याल का रद्द है कि लौटना) क्यों न होता, उसका रब उसको ख़ूब देखता था। (15) सो (इस बिना पर) मैं कसम खाकर कहता हूँ शफ़क़ “यानी वह सुखी जो सुबह को सूरज के निकलने से पहले और शाम को सूरज के छुपने के बाद” की। (16) और रात की और उन चीज़ों की जिनको रात समेट (कर जमा कर) लेती है³ (17) और चाँद की जब वह पूरा हो जाए (18) कि तुम लोगों को ज़रूर एक हालत के बाद दूसरी हालत पर पहुँचना है⁴ (19) सो (बावजूद इन चीज़ों के जो कि ख़ौफ़ और ईमान के जमा होने का तकाज़ा करती हैं) उन लोगों को क्या हुआ कि ईमान नहीं लाते। (20) और (जब उनके बैर और दुश्मनी की यह हालत है कि) जब उनके सामने कुरआन पढ़ा जाता है तो उस वक्त भी अल्लाह तआला की तरफ़ नहीं झुकते। □ (21) बल्कि ये काफ़िर (और उल्टा) झुठलाते हैं। (22) और अल्लाह तआला को सब ख़बर है जो कुछ ये लोग (बुरे आमाल का ज़खीरा) जमा कर रहे हैं। (23) सो (उन कुफ़िया आमाल के सबब) आप उन लोगों को एक दर्दनाक अज़ाब की ख़बर दे दीजिए। (24) लेकिन जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे अमल किए, उनके लिए (आखिरत में) ऐसा अज़्र है जो कभी मौकूफ़ होने वाला नहीं। (25) ♦

85 सूर: बुरुज 27

सूर: बुरुज मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 22 आयतें हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

कसम है बुरजों वाले आसमान की (मुराद बुरजों से बड़े-बड़े सितारे हैं)। (1) और (कसम) है वायदा किए हुए दिन की (2) और हाज़िर होने वाले की, और (कसम है) उस (दिन) की जिसमें (लोगों की) हाज़िरी होती है¹ (3) कि मलऊन हुए ख़न्दक वाले (4) यानी बहुत-से ईधन की आग वाले, (5) जिस वक्त वे लोग उस (आग) के आस-पास बैठे हुए थे। (6) और वे जो कुछ मुसलमानों के साथ (जुल्म व सितम) कर रहे थे उसको देख रहे थे। (7) और उन काफ़िरो ने उन मुसलमानों में कोई ऐब नहीं पाया सिवाय इसके कि वे खुदा पर ईमान ले आए थे² जो ज़बरदस्त (और) तारीफ़ के लायक़ है। (8) ऐसा कि उसी की बादशाहत है आसमानों और ज़मीन की, और (आगे ज़ालिमों के लिए आम सज़ा की धमकी और डाँट है, और मज़लूमों के लिए आम वायदा है) अल्लाह हर चीज़ से ख़ूब वाकिफ़ है। (9) जिन्होंने मुसलमान मर्दों और मुसलमान औरतों

1. आसान हिसाब के मुख़्तलिफ़ दर्जे हैं। एक यह कि उसपर बिलकुल अज़ाब लागू न हो, बाज़ के लिए तो यह होगा और हदीस में इसी की तफ़सीर आई है कि जिस हिसाब में ज़्यादा बहस व पूछताछ न हो, सिर्फ़ पेशी हो जाए और यह उन लोगों के लिए होगा जिनपर अज़ाब नहीं होगा। दूसरा यह कि उसपर हमेशा के लिए अज़ाब न हो और यह आम मोमिनों के लिए होगा, और मुतलक़ अज़ाब उसके खिलाफ़ नहीं।

2. इससे कुफ़र मुराद हैं, और पीठ की तरफ़ से मिलने की दो सूरतें हो सकती हैं- एक यह कि (शेष तफ़सीर पृष्ठ 1086 पर)

71

को तकलीफ पहुँचाई और फिर तौबा नहीं की, तो उनके लिए जहन्नम का अज़ाब है, और (खास तौर पर जहन्नम में) उनके लिए जलने का अज़ाब है। (10) (आगे मोमिनों के हक में जिनमें मज़लूम लोग भी आ गए, इरशाद है कि) बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल किए उनके लिए (जन्नत के) बाग हैं, जिनके नीचे नहरें जारी होंगी (और) यह बड़ी कामयाबी है। (11) आपके रब की पकड़ बड़ी सख्त है। (12) (पस काफ़िरोँ पर सख्त सज़ा का वाक़ेअ होना कोई बर्द नहीँ और यह कि) वही पहली बार भी पैदा करता है और वही दोबारा (क़ियामत में भी) पैदा करेगा। (13) और वही बड़ा बख़्शने वाला (और) बड़ी मुहब्बत करने वाला (14) (और) अर्श का मालिक (और) बड़ाई वाला है। (15) वह जो चाहे सब कुछ कर गुज़रता है। (16) क्या आपको उन लश्करोँ का किस्सा पहुँचा है (17) यानी फिरऔन और समूद का? (18) बल्कि ये काफ़िर (खुद कुरआन को) झुठलाने में (लगे) हैं। (19) और (अन्जामकार उसकी सज़ा भुगतेंगे, क्योंकि अल्लाह उनको इधर-उधर से घेरे हुए है। (20) (कुरआन ऐसी चीज़ नहीं जो झुठलाने के काबिल हो) बल्कि वह एक अज़मत वाला कुरआन है (21) जो लौहे-महफूज़ में (लिखा हुआ) है। (22) ♦

86 सूर: तारिक 36

सूर: तारिक मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 17 आयतें हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

कसम है आसमान की और उस चीज़ की जो रात को ज़ाहिर होने वाली है। (1) और आपको कुछ मालूम है कि वह रात को ज़ाहिर होने वाली चीज़ क्या है? (2) वह चमकदार सितारा है। (3) कोई शख्स ऐसा नहीं जिसपर (आमाल का) याद रखने वाला कोई (फ़रिश्ता) मुक़र्रर न हो। (4) (जब यह बात है) तो इन्सान को (क़ियामत की फ़िक्र करनी चाहिए और) देखना चाहिए कि वह किस चीज़ से पैदा किया गया है। (5) वह एक उछलते पानी से पैदा किया गया है (6) जो पीठ और सीने (यानी पूरे बदन) के दरमियान से निकलता है। (7) (तो इससे साबित हुआ कि) वह उसके दोबारा पैदा करने पर ज़रूर कादिर है। (8) (और यह दोबारा पैदा करना उस दिन होगा) जिस दिन सबकी क़लई खुल जाएगी। (9) फिर इस इन्सान को न तो खुद (अपनी रक्षा की) कुव्वत होगी और न इसका कोई हिमायती होगा। (10) कसम है आसमान की जिससे बारिश होती है (11) और ज़मीन की जो (बीज निकलते वक़्त) फट जाती है। (12) (आगे कसम का जवाब है) कि यह कुरआन (हक व बातिल में) एक फैसला कर देने वाला कलाम है (13) कोई बेकार चीज़ नहीं है। (14) (उन लोगों का यह हाल है कि) ये लोग (हक के इनकार के लिए) तरह-तरह की तदबीरें कर रहे हैं (15) और मैं भी (उनकी नाकामी और सज़ा के लिए) तरह-तरह की तदबीरें कर रहा हूँ। (16) तो आप उन काफ़िरोँ (की मुखा़लफ़त) को यूँ ही रहने दीजिए, (और ज़्यादा दिन नहीं बल्कि) उनको थोड़े ही दिनों रहने दीजिए। (17) ♦

(पृष्ठ 1084 का शेष) उसकी मशकें कसी हुई होंगी तो बायाँ हाथ भी पीठ की तरफ़ होगा। दूसरी सूरत हज़रत मुजाहिद का कौल है कि उसका हाथ पीठ की तरफ़ निकाल दिया जाएगा। दुर्गे मन्सूर में इसी तरह बयाम किया गया है।

3. मुराद वे सब जानदार हैं जो रात को आराम करने के लिए अपने-अपने ठिकाने पर आ जाते हैं।

4. वे हालतें एक मौत हैं, उसके बाद बरज़ख़ के हालात, उसके बाद क़ियामत के हालात, फिर खुद उनमें भी तादाद व ज़्यादगी है। और इन कस्मों का मौके के मुनासिब होना इस तरह है कि रात की हालतों का विभिन्न होना कि पहले सुखी ज़ाहिर होती है फिर ज़्यादा रात आती है तो सब सो जाते हैं, (पृष्ठ 1084 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 1086 की तफ़सीर पृष्ठ 1088-1093 पर)

87 सूर: अअला 8

सूर: अअला मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 19 आयतें हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

(ऐ पैगम्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम!) आप (और जो मोमिन आपके साथ हैं) अपने रब आली- शान के नाम की तस्बीह कीजिए। (1) जिसने (हर चीज़ को) बनाया, फिर (उसको) ठीक बनाया। (2) और जिसने तजवीज़ किया फिर राह बतलाई। (3) और जिसने (ज़मीन से) चारा निकाला (4) फिर उसको स्याह कूड़ा कर दिया।¹ (5) (इस कुरआन के बारे में हम वायदा करते हैं कि) हम (जितना) कुरआन (नाज़िल करते जाएँगे) आपको पढ़ा दिया करेंगे (यानी याद करा दिया करेंगे), फिर आप उसमें से कोई हिस्सा नहीं भूलेंगे। (6) मगर जिस कद्र (भुलाना) अल्लाह को मन्ज़ूर हो (कि मन्सूख करने का तरीका यह भी है)। वह ज़ाहिर और छुपी हर चीज़ को जानता है।² (7) और (इसी तरह) हम इस शरीअत के लिए आपको सहूलत देंगे (यानी समझना भी आसान होगा और अमल भी आसान होगा) (8) तो आप नसीहत किया कीजिए, अगर नसीहत करना मुफ़ीद होता हो।³ (9) वही शख्स नसीहत मानता है जो (खुदा से) डरता है। (10) और जो शख्स बद-नसीब हो वह उससे गुरेज़ करता है (11) जो (आखिरकार) बड़ी आग में (यानी दोज़ख की आग में) दाखिल होगा। (12) फिर न उसमें मर ही जाएगा और न (आराम की ज़िन्दगी) जियेगा। (13) मुराद पाई उस शख्स ने जो (कुरआन सुनकर ग़लत अक़ीदों और बुरे अख़लाक से) पाक हो गया (14) और अपने रब का नाम लेता और नमाज़ पढ़ता रहा। (15) (मगर ऐ इनकार करने वालो! तुम आखिरत का सामान नहीं करते) बल्कि तुम दुनियावी ज़िन्दगी को मुक़द्दम रखते हो (16) हालाँकि आखिरत (दुनिया से) कहीं बेहतर और पायदार है। (17) (और यह मज़मून सिर्फ़ कुरआन ही का दावा नहीं बल्कि) यह मज़मून अगले सहीफ़ों में भी है (18) यानी इब्राहीम और मूसा के सहीफ़ों में।⁴ (पस इससे और भी ज़्यादा ताकीद हो गई)। (19) ♦

88 सूर: गाशिय: 68

सूर: गाशिय: मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 26 आयतें हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

आपको उस आम घेराव करने वाले वाकिए की कुछ ख़बर पहुँची है? (मुराद इससे कियाभत है)। (1) बहुत-से चेहरे उस दिन ज़लील (और) मुसीबत झेलते (2) (और मुसीबत झेलने से) खस्ता होंगे (3) (और) भड़कती हुई आग में दाखिल होंगे (4) (और) खौलते हुए चश्मे से पानी पिलाए जाएँगे। (5) (और) उनको सिवाय एक काँटेदार झाड़ के और कोई खाना नसीब न होगा। (6) जो न (तो खाने वालों को) मोटा करेगा और न (उनकी) भूख को दूर करेगा।¹ (7) बहुत-से चेहरे उस दिन रौनक वाले (8) (और) अपने (नेक) कामों की बदौलत खुश होंगे (9) (और) आला दर्जे की जन्नत में होंगे (10) जिसमें कोई बेहूदा बात न

(पिछले पृष्ठ का शेष) और फिर एक रात का दूसरी रात से चाँद की रोशनी के कम ज़्यादा होने में मुख़्तलिफ़ और विभिन्न होना, ये सब हालात का मुख़्तलिफ़ होना मौत के बाद के हालात से मुशाबह है। और मौत से आखिरत की दुनिया शुरू होती है जैसे सुर्खी से रात शुरू होती है। फिर मरने के बाद यानी बरज़ख़ की ज़िन्दगी लोगों के सो रहने की तरह है, और घटने के बाद चाँद का पूरा होना दुनिया के फना होने के बाद (पृष्ठ 1084 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 1086, 1088 की तफ़सीर पृष्ठ 1090-1093 पर)

सुनेंगे। (11) उस (जन्नत) में बहते हुए चश्मे होंगे। (12) (और) उस (जन्नत) में ऊँचे-ऊँचे तख़्त (बिछे) हैं (13) और रखे हुए आबख़ोरे “पानी पीने के बरतन” (मौजूद) हैं। (14) और बराबर-बराबर लगे हुए गद्दे (तकिए) हैं (15) और सब तरफ़ कालीन (ही कालीन) फैले पड़े हैं। (16) तो क्या वे लोग ऊँट को नहीं देखते कि किस तरह (अज़ीब तौर पर) पैदा किया गया है? (17) और आसमान को (नहीं देखते) कि तरह बुलन्द किया गया है? (18) और पहाड़ों को (नहीं देखते) कि किस तरह खड़े किए गए हैं? (19) और ज़मीन को (नहीं देखते) कि किस तरह बिछाई गई है? (20) तो आप (भी उनकी फ़िक्र में न पड़िए बल्कि सिर्फ़) नसीहत कर दिया कीजिए, (क्योंकि) आप तो सिर्फ़ नसीहत करने वाले हैं। (21) (और) आप उनपर मुसल्लत नहीं हैं (जो ज़्यादा फ़िक्र में पड़ें)। (22) हाँ, मगर जो मुँह फेरेंगे और कुफ़्र करेगा (23) तो खुदा उसको (आखिरत में) बड़ी सज़ा देगा। (24) क्योंकि हमारे ही पास उनका आना होगा। (25) फिर हमारा ही काम उनसे हिसाब लेना है (आप ज़्यादा ग़म में न पड़िए)। ● (26) ♦

89 सूर: फ़ज़्र 10

सूर: फ़ज़्र मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 30 आयतें हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

कसम है (फ़ज़्र के वक़्त की) (1) और (ज़िलहिज्जा की) दस रातों की (2) और जुफ़्त और ताक़ “यानी जोड़े और बेजोड़” की³ (3) और (कसम है) रात की जब वह चलने लगे (यानी गुज़रने लगे) (4) क्यों इस (ज़िक्र हुई कसम) में अक्लमन्द के वास्ते काफ़ी कसम भी है।⁴ (5) क्या आपको मालूम नहीं कि आपके परवर्दिगार ने कौमे आद यानी कौमे इरम के साथ क्या मामला किया? (6) जिनके डील-डोल सुतूनों के जैसे (लम्बे) थे। (7) (और) जिनकी बराबर (ताक़त व कुव्वत में दुनिया भर के) शहरों में कोई शख्स नहीं पैदा किया गया।⁵ (8) और (आपको मालूम है कि) कौमे समूद के (साथ क्या मामला किया गया) जो वादी-ए-कुरा में (पहाड़ के) पथरों को तराशा करते थे (और मकानात बनाया करते थे)। (9) और मेखों वाले फिरऔन के साथ⁶ (10) जिन्होंने शहरों में सर उठा रखा था। (11) और उनमें बहुत फ़साद मचा रखा था। (12) सो आपके रब ने उनपर अज़ाब का कोड़ा बरसाया। (13) बेशक आपका रब (नाफ़रमानों की) घात में है। (14) सो आदमी को जब उसका परवर्दिगार आजमाता है, यानी उसको (ज़ाहिरी तौर पर) इकराम व इनाम देता है तो वह (फ़ख़र के तौर पर) कहता है कि मेरे रब ने मेरी क़द्र बढ़ा दी। (15) और जब उसको (दूसरी तरह) आजमाता है, यानी उसकी रोज़ी उसपर तंग कर देता है तो वह (शिकायत के तौर पर) कहता है कि मेरे रब ने मेरी क़द्र घटा दी।⁷ (16) हरगिज़ ऐसा नहीं! बल्कि तुम (में और आमाल भी अज़ाब का सबब हैं, चुनाँचे तुम) लोग यतीम की (कुछ) क़द्र (और ख़ातिर) नहीं करते हो (17) और दूसरों को भी मिस्कीन को खाना देने की तरगीब नहीं देते।⁸ (18) और (तुम) मीरास का माल समेटकर खा जाते हो। (19) और माल से तुम लोग

(पिछले पृष्ठ का शेष) क़ियामत में दोबारा ज़िन्दा होने के मुशाबह है।

5. तिर्मिज़ी शरीफ़ की हदीस में आया है कि “वायदा किया हुआ दिन” क़ियामत का दिन है और “हाज़िर होने वाला” जुमे का दिन है, और “जिस दिन में हाज़िरी होती है” अफ़े का दिन है जिसमें हाज़ी लोग अपने-अपने मक़ामात से सफ़र करके अरफ़ात में उस दिन के इरादे से जमा होते हैं, गोया वह दिन मक़सूद (यानी जिसका इरादा किया जाए) और दूसरे लोग हाज़िरी का इरादा करने वाले हैं।

6. इस सूर: में एक वाक़िए का मुख़्तसर तौर पर तज़्किरा है जो मुस्लिम शरीफ़ में ज़िक्र किया गया है। खुलासा उसका यह है कि किसी काफ़िर बादशाह के पास (पृष्ठ 1084 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 1086, 1088, 1090 की तफ़सीर पृष्ठ 1092-1094 पर)

बहुत ही मुहब्बत रखते हो। (20) (आगे इन कामों को अज़ाब का सबब न समझने पर तंबीह है) कि हरगिज़ ऐसा नहीं! (जैसा कि तुम समझते हो)। जिस वक्त ज़मीन को तोड़-तोड़कर रेज़ा-रेज़ा कर दिया जाएगा (21) और आपका रब और गिरोह के गिरोह फ़रिश्ते (मैदाने-महशर में) आएँगे। (22) और उस दिन जहन्नम को लाया जाएगा, उस दिन इनसान को समझ आएगी, और अब समझ आने का मौका कहाँ रहा। (23) कहेगा काश! मैं इस (आखिरत की) ज़िन्दगी के लिए कोई (नेक) अमल आगे भेज लेता। (24) पस उस दिन न तो खुदा के अज़ाब के बराबर कोई अज़ाब देने वाला निकलेगा (25) और न उसके जकड़ने के बराबर कोई जकड़ने वाला निकलेगा। (26) (और जो अल्लाह तआला के फ़रमाँबरदार थे उनको इरशाद होगा कि) ऐ इत्मीनान वाली रूह! (27) तू अपने परवर्दिगार (के करीब रहमत) की तरफ़ चल, इस तरह से कि तू उससे खुश और वह तुझसे खुश। (28) फिर (उधर चलकर) तू मेरे (खास) बन्दों में शामिल हो जा (कि यह भी रूहानी नेमत है), (29) और मेरी जन्मत में दाखिल हो जा। (30) ♦

90 सूर: बलद 35

सूर: बलद मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 20 आयतें हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

मैं कसम खाता हूँ इस शहर (यानी मक्का) की (1) और (मज़मून से हटकर इस जुमले में आपकी तसल्ली के लिए पेशीनगोई फ़रमाते हैं कि) आपको इस शहर में लड़ाई हलाल होने वाली है। (2) और कसम है बाप की औलाद की (3) कि हमने इनसान को बड़ी मशक्कत में पैदा किया है। (4) क्या वह यह ख़याल करता है कि उसपर किसी का बस न चलेगा? (5) (और) कहता है कि मैंने इतना ज़्यादा माल ख़र्च कर डाला। (6) क्या वह यह ख़याल करता है कि उसको किसी ने देखा नहीं (7) क्या हमने उसको दो आँखें (8) और ज़बान और दो होंठ नहीं दिए। (9) और (फिर) हमने उसको (बुराई और भलाई के) दोनों रास्ते बतला दिए। (10) सो वह शख्स (दीन की) घाटी में से होकर न निकला। (11) और आपको मालूम है कि घाटी (से) क्या (मुराद) है? (12) वह किसी (की) गर्दन का गुलामी से छुड़ा देना है (13) या खाना खिलाना फाँके के दिन में (14) किसी रिश्तेदार यतीम को, (15) या किसी खाकसार मोहताज को (यानी अल्लाह के इन अहकाम का पालन करना चाहिए था)। (16) फिर (सबसे बढ़कर यह कि) उन लोगों में से न हुआ जो ईमान लाए और एक-दूसरे को (ईमान की) पाबन्दी की नसीहत व तंबीह की, और एक-दूसरे को (मख़्लूक पर) रहम करने की (यानी जुल्म को छोड़ने की) तंबीह व नसीहत की। (17) यही लोग दाहिने वाले हैं। (18) और जो

(पिछले पृष्ठ का शेष) एक 'काहिन' (यानी ग़ैब की ख़बरें बताने वाला) था। उसने बादशाह से कहा कि मुझको कोई होशियार लड़का दो तो मैं उसको अपना कहानत का इत्म सिखा दूँ। चुनाँचे एक लड़का तजवीज़ किया गया, उसके रास्ते में एक ईसाई आलिम रहता था जो उस वक्त के दीने हक़ यानी ईसाईयत का सच्चा पैरोकार था। उस लड़के का ईसाई आलिम के पास भी आना-जाना शुरू हो गया। चुनाँचे वह खुफ़िया मुसलमान हो गया। एक बार उस लड़के ने देखा कि एक शेर ने रास्ता रोक रखा है और लोग परेशान हैं। उसने एक पत्थर हाथ में लेकर दुआ की, ऐ अल्लाह! अगर राहिब (यानी ईसाई आलिम) का दीन सच्चा है तो यह जानवर मेरे पत्थर से मारा जाए। यह कहकर वह पत्थर मारा तो शेर को लगा और वह हलाक हो गया। लोगों में चर्चा हुआ कि इस लड़के को कोई अजीब इत्म आता है। किसी अन्य ने सुना तो उसने लड़के से आकर कहा कि मेरी आँखें अच्छी हो जाएँ। लड़के ने दुआ की तो वह 'बीना' (यानी देखने वाला) होकर मुसलमान हो गया। बादशाह को ये ख़बरें पहुँचीं तो उसने लड़के और राहिब (ईसाई आलिम) और अन्य को जो अब देखने वाला था, गिरफ़्तार करा कर बुलाया। राहिब और अन्य को शहीद करा दिया और लड़के के लिए हुक्म दिया कि पहाड़ पर से गिराया जाए।

(पृष्ठ 1084 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 1086, 1088, 1090, 1092 की तफ़सीर पृष्ठ 1093-1094 पर)

(पिछले पृष्ठ का शेष) उस वक्त उनके सामने ऊँट होते थे और ऊपर आसमान और नीचे ज़मीन और किनारों में पहाड़, इसलिए इन निशानियों में गौर करने के लिए इरशाद फ़रमाया गया।

3. 'जोड़े' से मुराद ज़िलहिज्जा की दसवीं तारीख़ और 'बेजोड़' से मुराद नवीं तारीख़ है जैसा कि हदीस में है। और एक हदीस में है कि इससे नमाज़ मुराद है कि किसी की ताक़ यानी बेजोड़ रक़अतें हैं और किसी की जुफ़्त यानी जोड़ वाली। पहली हदीस को रिवायत के एतिबार से भी सही कहा गया है और दिरायत (यानी अक़ल व समझ) के एतिबार से भी वह ज़्यादा तरज़ीह रखती है। क्योंकि बकिया तक़सीम होने वाले ज़मानों में से हैं।

4. सवाल करना ताकीद और मज़बूती के लिए है। यानी उन ज़िक्र हुई क़स्मों में से हर-हर क़सम क़लाम की ताकीद के लिए काफी है, और अगरचे सब क़स्में ऐसी ही हैं मगर एहतिमाम के लिए उसके काफी होने की वज़ाहत फ़रमा दी, जैसा कि सूर: वाकिअ: में अल्लाह तआला का क़ौल गुज़रा "व इन्हू ल-क-समुन् लौ तअलमू-न अज़ीम" और क़सम का जवाब इसी में मौजूद है कि इनकारियों को सज़ा ज़रूर होगी।

5. उस क़ौम के दो तक़ब हैं 'आद' और 'इरम' क्योंकि आद बेटा है आस का और वह इरम का और वह साम बिन नूह अलैहिस्सलाम का। पस कभी उनको आद कहते हैं उनके बाप के नाम पर और कभी इरम कहते हैं उनके दादा के नाम पर, और उस इरम का एक बेटा आबिर है, और आबिर का बेटा समूद जिसके नाम से एक क़ौम मशहूर है, पस आद व समूद दोनों इरम में जा मिले हैं। आद आस के वास्ते से और समूद आबिर के वास्ते से।

6. दुर्गे मन्सूर में अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से इसकी तफ़सीर नक़ल की गई है कि वह जिसको सज़ा देता था उसके चारों हाथ-पावें मेखों यानी कीलों से बाँधकर सज़ा देता था। और इसकी एक तफ़सीर सूर: सॉद में गुज़र चुकी है।

7. यानी मुझको इसके बावजूद कि मैं इकराम व सम्मान का हक़दार हूँ अपनी नज़र से आजकल गिरा रखा है कि दुनियावी नेमतें कम हो गईं। मतलब यह कि काफ़िर दुनिया ही को असल समझता है कि उसके ज़्यादा होने को मक़बूलियत की दलील और अपने को उसका मुस्तहिक़ और तंगी को धुतकारा हुआ होने की दलील और अपने को उसका ग़ैर-मुस्तहिक़ समझता है। पस इसमें दो चीज़ें बचने की हैं, एक दुनिया को असल मक़सूद समझना जिससे आख़िरत का इनकार और उसको छोड़ना सामने आता है, दूसरे हक़दार होने का दावा जिससे नेमत पर फ़ख़-नाज़, नाशुक्ऱी और बला व मुसीबत पर शिकवा व बेसब्री निकलती है, और ये सब आमा़ल अज़ाब का सबब हैं।

8. यानी दूसरों के वाजिब हुकूक़ न खुद अदा करते हैं न औरों को वाजिब हुकूक़ अदा करने को कहते हैं। और अमली तौर पर उसके तारिक़ (छोड़ने वाले) और एतिकाद के तौर पर उसके मुन्किर (इनकार करने वाले) हो, और काफ़िर के लिए वाजिब का छोड़ना अज़ाब के ज़्यादा होने के और एतिकाद का ख़राब होना नफ़से अज़ाब का सबब है।

(तफ़सीर पृष्ठ 1092) 1. यह हिसाब के वक़्त होगा और अल्लाह तआला का आना 'मुतशाबिहात' (यानी इसका सही मतलब अल्लाह तआला के सिवा कोई नहीं बता सकता कि उसकी कैफ़ियत क्या होगी) में से है।

2. क्योंकि आख़िरत बदला मिलने की जगह है, अमल करने की जगह नहीं।

3. मक़ाम के करीने से यह ख़िताब "ऐ इल्मीनान वाली रूह!.....आख़िर तक़" कियामत के दिन मालूम होता है। और बाज़ रिवायतों में जो आया है कि मरने के वक़्त मोमिन से कहा जाता है, वहाँ आयत की तफ़सीर मक़सूद नहीं, न मरने के वक़्त की तख़सीस है।

4. चुनाँचे मक्का फ़तह होने के दिन आपके लिए हरम के अहक़ाम बाकी नहीं रहे थे।

5. सारी औलाद के बाप आदम अलैहिस्सलाम हैं। पस आदम अलैहिस्सलाम और आदम की औलाद सबकी क़सम हुई।

6. चुनाँचे उम्र में कहीं बीमारी में, कहीं रंज में, कहीं फ़िक्र में ज़्यादातर मुब्तला रहता है, और उसका तकाज़ा यह था कि उसमें आजिज़ी व इन्क़िसारी पैदा होती और अपने को तक़दीर के हाथों मजबूर समझकर हुक्म का फ़र्माँबरदार और अल्लाह की रिज़ा के ताबे होता, लेकिन काफ़िर इनसान की यह हालत है कि बिलकुल भूल में पड़ा हुआ है।

7. यानी क्या अल्लाह की कुदरत से अपने को बाहर समझता है जो इस क़द्र भूल में पड़ा हुआ है।

8. यानी एक तो शैख़ी वधाराता है फिर रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दुश्मनी, इस्लाम की मुख़ालफ़त और गुनाहों में ख़र्च करने को हुनर समझता है, फिर झूठ भी बोलता है कि उसको ज़्यादा माल बतलाता है।

9. दीन के कामों को इसलिए घाटी कहा कि वे नफ़स पर भारी हैं।

10. ईमान तो सबसे पहले है फिर ईमान पर साबित-क़दम रहने का हुक्म करना औरों से अफ़ज़ल है। फिर दूसरों को तकलीफ़ न देना बक़िया से अहम है, फिर उन आमा़ल का रुतबा है जो "फ़क्कु र-क-बतिन्" से "ज़ा मत्-र-बतिन्" तक़ ज़िक्र किए गए हैं।

लोग हमारी आयतों के इनकारी हैं वे लोग बाएँ वाले हैं। (19) उनपर घेरने वाली आग होगी जिसको बन्द कर दिया जाएगा।¹ (20) ♦

91 सूरः शम्स 26

सूरः शम्स मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 15 आयतें हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

कसम है सूरज की और उसकी रोशनी की (1) और चाँद की जब सूरज (के छुपने के) पीछे आए² (2) और (कसम है) दिन की जब वह उस (सूरज) को खूब रोशन कर दे। (3) और (कसम है) रात की जब वह उस (सूरज) को छुपा ले। (4) और (कसम है) आसमान की और उस (ज़ात) की जिसने उसको बनाया।³ (5) और (कसम है) ज़मीन की और उस (ज़ात) की जिसने उसको बिछाया। (6) और (कसम है) इन्सान की) जान की और उस (ज़ात) की जिसने उसको दुरुस्त बनाया। (7) फिर उसकी बद-किरदारी और परहेज़गारी (दोनों बातों) को उसके दिल में डाला।⁴ (8) यकीनन वह मुराद को पहुँचा जिसने इस (जान) को पाक कर लिया (9) और नामुराद हुआ जिसने इसको (गुनाहों और बुराइयों में) दबा दिया। (10) कौमे समूद ने अपनी शरारत के सबब (सालेह अलैहिस्सलाम को) झुठलाया (11) (और यह उस ज़माने का किस्सा है) जबकि उस कौम में जो सबसे ज़्यादा बदबख्त था (12) वह (ऊँटनी के कत्ल करने के लिए) उठ खड़ा हुआ, तो उन लोगों से अल्लाह के पैगम्बर (सालेह अलैहिस्सलाम) ने फ़रमाया कि अल्लाह की (इस) ऊँटनी से और इसके पानी पीने से ख़बरदार रहना।⁵ (13) सो उन्होंने पैगम्बर को झुठलाया, फिर उस ऊँटनी को मार डाला, तो उनके परवर्दिगार ने उनके गुनाहों के सबब उनपर हलाकत नाज़िल फ़रमाई, फिर उस (हलाकत) को तमाम कौम के लिए आ़म फ़रमाया। (14) और अल्लाह तआ़ला को उस हलाकत के अख़ीर में किसी ख़राबी (के निकलने) का (किसी से) अन्देशा नहीं हुआ।⁶ (15) ♦

92 सूरः लैल 9

सूरः लैल मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 21 आयतें हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

कसम है रात की जबकि वह (सूरज को और दिन को) छुपा ले। (1) और (कसम है) दिन की जबकि वह रोशन हो जाए। (2) और (कसम है) उस (ज़ात पाक) की जिसने नर और मादा को पैदा किया (3) कि बेशक तुम्हारी कोशिशें (यानी आमा़ल) मुख़्तलिफ़ हैं। (4) सो जिसने अल्लाह की राह में (माल) दिया और अल्लाह से डरा, (5) और अच्छी बात (यानी दीने इस्लाम) को सच्चा समझा, (6) तो हम उसको राहत की चीज़ के लिए सामान देंगे।¹ (7) और जिसने (अपने ऊपर वाजिब हुक्कू से) बुख़ल किया और बजाय खुदा से डरने के खुदा से बेपरवाई इख़्तियार की (8) और अच्छी बात (यानी इस्लाम) को झुठलाया (9) तो हम उसको तकलीफ़ की चीज़ के लिए सामान दे देंगे।² (10) और उसका माल उसके कुछ काम न आएगा जब वह बर्बाद

1. यानी दोज़ख़ियों को दोज़ख़ में भरकर आगे से दरवाज़ा बन्द कर देंगे, क्योंकि हमेशा रहने की वजह से निकलना तो मिलेगा ही नहीं।

2. यानी निकले, मुराद इससे महीने की दरमियानी बाज़ रातों का चाँद है कि सूरज के छुपने के बाद रोशन होता है, और यह कैद शायद इसलिए हो कि वह वक़्त रोशनी के हद को पहुँचने का होता है जैसा कि “जुहाह” का इशारा है सूरज की रोशनी के कामिल दर्जे को पहुँचने की तरफ़, और या उस वक़्त दो निशानियाँ ज़ाहिर होती हैं- पीछा करने और मिलाने की कुदरत, (शेष तफ़सीर पृष्ठ 1098 पर)

होने लगेगा। (बरबादी से मुराद जहन्नम में जाना है)। (11) वाकई हमारे ज़िम्मे राह का बतला देना है (12) और (जैसी राह कोई शख्स इख्तियार करेगा वैसा ही फल उसको देगे, क्योंकि) हमारे ही कब्जे में है आखिरत और दुनिया।¹ (13) (आगे खुलासे के तौर पर इरशाद है कि) तो मैं तुमको एक भड़कती हुई आग से डरा चुका हूँ।² (14) उसमें (हमेशा के लिए) वही बदबख्त दाखिल होगा (15) जिसने (दीने हक को) झुठलाया और (उससे) मुँह फेरा। (16) और उससे ऐसा शख्स दूर रखा जाएगा जो बड़ा परहेज़गार है। (17) जो अपना माल (सिर्फ) इस गरज़ से देता है कि (गुनाहों से) पाक हो जाए। (18) और सिवाय अपने बड़ी शान वाले परवर्दिगार की रिज़ा हासिल करने के (कि यही उसका मकसूद है) उसके ज़िम्मे किसी का एहसान न था (19) कि (उस देने से) उसका बदला उतारना (मकसूद) हो।³ (20) और यह शख्स जल्द ही खुश हो जाएगा⁴ (यानी आखिरत में ऐसी-ऐसी नेमतें मिलेंगी)। (21) ♦

93 सूर: जुहा 11

सूर: जुहा मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 11 आयतें हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

कसम है दिन की रोशनी की। (1) और रात की जबकि वह करार पकड़े।⁵ (2) (आगे कसम का जवाब है) कि आपके परवर्दिगार ने न आपको छोड़ा और न (आपसे) दुश्मनी की।⁶ (3) और आखिरत आपके लिए दुनिया से कहीं ज़्यादा बेहतर है। (पस वहाँ आपको इससे ज़्यादा नेमतें मिलेंगी)। (4) और जल्द ही अल्लाह तआला आपको (आखिरत में बहुत ज़्यादा नेमतें) देगा, सो आप खुश हो जाएँगे।⁷ (5) क्या अल्लाह तआला ने आपको यतीम नहीं पाया, फिर (आपको) ठिकाना दिया।⁸ (6) और अल्लाह ने आपको (शरीअत से) बेख़बर पाया, सो (आपको शरीअत का) रास्ता बतला दिया।⁹ (7) और अल्लाह तआला ने आपको नादार पाया, सो मालदार बना दिया।¹⁰ (8) तो आप (उसके शुक्रिए में) यतीम पर सख्ती न कीजिए (9) और माँगने वाले को मत झिड़किए (10) (यह तो अमली शुक्र है) और अपने रब के (ज़िक्र हुए) इनामों का तज़िकरा करते रहा कीजिए (यानी ज़बान से कौली शुक्र भी कीजिए)। (11) ♦

94 सूर: इन्शिराह 12

सूर: इन्शिराह मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 8 आयतें हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

क्या हमने आपकी खातिर आपका सीना (इल्म, नर्मी और बर्दाश्त से) कुशादा नहीं कर दिया?¹² (1) और हमने आपसे आपका वह बोझ उतार दिया (2) जिसने आपकी कमर तोड़ रखी थी।¹³ (3) और हमने आपकी खातिर आपका ज़िक्र बुलन्द किया।¹⁴ (4) सो बेशक मौजूदा मुश्किलात के साथ आसानी (होने वाली है)।¹⁵ (5) बेशक मौजूदा मुश्किलात के साथ आसानी होने वाली है। (6) तो आप जब (तब्लीगे अहकाम से) फ़ारिग हो जाया करें तो (अपनी ज़ात से मुताल्लिक दूसरी खुसूसी इबादतों में) मेहनत किया कीजिए (7) और (जो कुछ माँगना हो उसमें) अपने रब ही की तरफ़ तवज्जोह रखिए। (8) ♦

(पृष्ठ 1096 का शेष) सूरज का छुपना और चाँद का निकलना।

3. मुराद अल्लाह तआला है और मख़्लूक की कसम को ख़ालिक यानी पैदा करने वाले की कसम पर मुकद्दम फरमाना दलील से मदलूल की तरफ़ जाना है कि तैयारशुदा चीज़ अपने बनाने वाले पर दलालत करती है, पस इस मदलूल (जिसपर दलालत की गई है) में तौहीद पर दलील पकड़ने की तरफ़ भी इशारा हो गया। (पृष्ठ 1096 की बकिया तफ़सीर और पृष्ठ 1098 की तफ़सीर पृष्ठ 1100-1113 पर)

95 सूर: तीन 28

सूर: तीन मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 8 आयतें हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

कसम है इन्जीर (के पेड़) की और जैतून (के पेड़) की। (1) और तूरे सीनीन की। (2) और इस अमन वाले शहर (मक्का शरीफ) की (3) कि हमने इनसान को बहुत खूबसूरत साँचे में ढाला है। (4) फिर (उनमें जो बूढ़ा हो जाता है) हम उसको पस्ती की हालत वालों से भी ज्यादा पस्त कर देते हैं। (5) लेकिन जो लोग ईमान लाए और अच्छे काम किए तो उनके लिए इस कद्र सवाब है जो कभी मौकूफ न होगा। (6) फिर कौन-सी चीज़ तुझको कियामत के बारे में मुन्किर बना रही है? (7) क्या अल्लाह तआला सब हाकिमों से बढ़कर हाकिम नहीं है? (8) ♦

96 सूर: अलक 1

सूर: अलक मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 19 आयतें हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

(ऐ पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम!) आप (पर जो) कुरआन (नाज़िल हुआ करेगा) अपने रब का नाम लेकर पढ़ा कीजिए। (यानी जब पढ़िए बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम कहकर पढ़ा कीजिए) जिसने (मख्लूक़ात को) पैदा किया। (1) जिसने इनसान को खून के लोथड़े से पैदा किया। (2) आप कुरआन पढ़ा कीजिए और आपका रब बड़ा करीम है (जो चाहता है अता फ़रमाता है)। (3) (और ऐसा है) जिसने (लिखे-पढ़ों को) कलम से तालीम दी (4) (और आम तौर पर) इनसान को (दूसरे साधनों से) उन चीज़ों की तालीम दी जिनको वह न जानता था। (5) सचमुच बेशक (काफ़िर) आदमी (आदमियत की) हद से निकल जाता है। (6) इस वजह से कि अपने आपको (अपने ही जिन्स के अफ़राद से) बेपरवाह देखता है। (7) ऐ (आम) मुखातब! तेरे रब ही की तरफ़ सबको लौटना होगा। (8) ऐ (आम) मुखातब! भला उस शख्स का हाल तो बतला जो (हमारे) एक (खास) बन्दे को मना करता है (9) जब वह (बन्दा) नमाज़ पढ़ता है। (10) (और) ऐ मुखातब! भला यह तो बतला कि अगर वह बन्दा हिदायत पर हो (जो कि लाज़िमी कमाल है) (11) या वह (दूसरों को भी) परहेज़गारी की तालीम देता हो। (12) ऐ मुखातब! भला यह तो बतला कि अगर वह शख्स (नाहक़ दीन को) झुठलाता हो और (हक़ से) मुँह फेरता हो, (13) क्या उस शख्स को यह ख़बर नहीं कि अल्लाह तआला (उसकी सरकशी व शरारत वग़ैरह को) देख रहा है। (14) हरगिज़ (ऐसा) नहीं (करना चाहिए, और) अगर यह शख्स बाज़ न आएगा तो हम (उसको) पैशानी के बाल पकड़कर (15) जो कि झूठ और ख़ता में लिप्त पैशानी के बाल हैं (जहन्नम की तरफ़) घसीटेंगे। (16) सो यह अपने पास बैठने वाले लोगों को बुला ले। (17) (अगर उसने ऐसा किया तो) हम भी दोज़ख़ के प्यादों को बुला लेंगे। (18) (आगे फिर तबीह व मलामत किया जा रहा है कि उसको) हरगिज़ (ऐसा) नहीं (करना चाहिए मगर) आप उसका कहना न मानिए और (बदस्तूर) नमाज़ पढ़ते रहिए और (खुदा की) नज़दीकी हासिल करते रहिए। □ (19) ♦

(पिछले पृष्ठ का शेष) 4. या यह निस्वत पैदा करने के ऐतिबार से है, यानी दिल में जो नेकी का रुझान होता है या जो बुराई की तरफ़ मैलान होता है, दोनों का पैदा करने वाला अल्लाह तआला है, अगरचे नेकी का ख़्याल दिल में डालना फ़रिश्ते के वास्ते से होता है और बुराई का ख़्याल शैतान के ज़रिये, (पृष्ठ 1096 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 1098, 1100 की तफ़सीर पृष्ठ 1102-1113 पर)

97 सूर: कद्र 25

सूर: कद्र मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 5 आयतें हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

बेशक हमने कुरआन को शबे-कद्र में उतारा है। (1) और (शौक बढ़ाने के लिए फरमाते हैं कि) आपको कुछ मालूम है कि शबे-कद्र कैसी चीज़ है? (2) (आगे जवाब है कि) शबे-कद्र हज़ार महीने से बेहतर है। (3) (और वह शबे-कद्र ऐसी है कि) उस रात में फ़रिश्ते और रूहुल-कुदुस (यानी जिबराईल अलैहि.) अपने परवर्दिगार के हुक्म से हर ख़ैर के मामले को लेकर (ज़मीन की तरफ़) उतरते हैं। (4) (और वह रात) पूरी-की-पूरी सलाम है। वह रात (इसी सिफ़त व बरकत के साथ) फ़ज़्र के निकलने के वक़्त तक रहती है। (5) ♦

98 सूर: बय्यिन: 100

सूर: बय्यिन: मदीना में नाज़िल हुई। इसमें 8 आयतें हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

जो लोग अहले किताब और मुशिरकों में से (आपको पैगम्बर बनाकर भेजे जाने से पहले) काफ़िर थे, वे (अपने कुफ़्र से हरगिज़) बाज़ आने वाले न थे, जब तक कि उनके पास खुली दलील न आती। (1) (यानी) एक अल्लाह का रसूल जो (उनको) पाक सहीफ़े पढ़कर सुना दे (2) जिनमें दुरुस्त मज़ामीन लिखे हों। (3) और जो लोग अहले किताब थे (और ग़ैर-अहले किताब तो और भी ज़्यादा) वे इस खुली दलील के आने ही के बाद (दीन में) इख़िलाफ़ करने वाले हो गए (4) हालाँकि उन लोगों को (पहली आसमानी किताबों में) यही हुक्म हुआ था कि (बातिल और शिर्क वाले दीनों से) यक्सू होकर अल्लाह की इस तरह इबादत करें कि इबादत उसी के लिए ख़ास रखें, और नमाज़ की पाबन्दी रखें और ज़कात दिया करें, और यही तरीका है उन (ज़िक्र हुए) दुरुस्त मज़ामीन का (बतलाया हुआ)। (5) बेशक जो लोग अहले किताब और मुशिरकीन में से काफ़िर हुए वे दोज़ख़ की आग में जाएंगे जहाँ हमेशा-हमेशा रहेंगे, (और) ये लोग मख़्लूक में सबसे बदतर हैं। (6) बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किए वे लोग मख़्लूक में सबसे अच्छे हैं। (7) उनका सिला उनके परवर्दिगार के यहाँ हमेशा रहने की जन्नतें हैं जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, जहाँ हमेशा-हमेशा रहेंगे (और) अल्लाह उनसे खुश रहेगा और वे अल्लाह से खुश रहेंगे। यह (जन्नत और अल्लाह की रिज़ा) उस शख्स के लिए है जो अपने रब से डरता है। (8) ♦

(पिछले पृष्ठ का शेष) फिर वह रुझान और मैलान कभी इरादे के दर्जे तक पहुँच जाता है जो इरादे व इख़्तियार से सादिर होता है, जिसके बाद फ़ेल का सादिर होना खुदा के पैदा करने की वजह से होता है, और कभी इरादे तक नहीं पहुँचता।

5. यानी उसको क़त्ल मत करना और न उसका पानी बन्द करना, चूँकि क़त्ल के इरादे का सबब यही पानी की बारी थी, पानी का इसलिए ज़िक्र फ़रमाया। और अल्लाह की ऊँटनी इसलिए कहा कि खुदा तआला ने उसको नुबुव्वत की दलील बना दिया और उसके एहतिराम व सम्मान को वाजिब फ़रमाया।

6. उस हलाकत के अख़ीर में किसी ख़राबी के निकलने का किसी से अन्देशा नहीं हुआ। जैसे दुनिया के बादशाहों को कभी-कभी किसी कौम को सज़ा देने के बाद अन्देशा होता है कि उसपर कोई शोरिश और हंगामा न खड़ा हो जाए। समूद और ऊँटनी का तफ़सीली तज़्किरा सूर: आराफ़ में गुज़र चुका है। (पृष्ठ 1096 की बफ़िया तफ़सीर और पृष्ठ 1098, 1100, 1102 की तफ़सीर पृष्ठ 1104-1114 पर)

99 सूर: जिल्ज़ाल 93

सूर: जिल्ज़ाल मदीना में नाज़िल हुई। इसमें 8 आयतें हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

जब ज़मीन अपनी सख्त जुम्बिश से हिलाई जाएगी। (1) और ज़मीन अपने बोझ बाहर निकाल फेंकेगी।¹ (2) और (उस हालत को देखकर काफ़िर) आदमी कहेगा कि इसको क्या हुआ?² (3) उस दिन (ज़मीन) अपनी सब (अच्छी-बुरी) ख़बरें बयान करने लगेगी।³ (4) इस सबब से कि आपके रब का उसको यही हुक्म होगा। (5) उस दिन लोग मुख्तलिफ़ जमाअतें होकर (हिसाब के मक़ाम से) वापस होंगे ताकि अपने आमाल (के फल) को देख लें। (6) सो जो शख्स (दुनिया में) ज़रा बराबर नेकी करेगा वह (वहाँ) उसको देख लेगा। (7) और जो शख्स ज़रा बराबर बुराई करेगा वह उसको देख लेगा।⁴ (8) ♦

100 सूर: आदियात 14

सूर: आदियात मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 11 आयतें हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

कसम है उन घोड़ों की जो हाँपते हुए दौड़ते हैं (1) फिर (पत्थर पर) टाप मारकर आग झाड़ते हैं। (2) फिर सुबह के वक़्त तहस-नहस करते हैं। (3) फिर उस वक़्त गुबार उड़ाते हैं। (4) फिर उस वक़्त (दुश्मनों की) जमाअत में जा घुसते हैं।¹ (5) बेशक (काफ़िर) आदमी अपने परवर्दिगार का बड़ा नाशुक्रा है। (6) और उसको खुद भी उसकी ख़बर है (कभी पहली ही बार में कभी ग़ौर-फ़िक्र के बाद)। (7) और वह माल की मुहब्बत में बड़ा मज़बूत है। (8) क्या उसको वह वक़्त मालूम नहीं जब ज़िन्दा किए जाएँगे जितने मुर्दे क़ब्रों में हैं। (9) और ज़ाहिर हो जाएगा जो कुछ दिलों में है। (10) बेशक उनका परवर्दिगार उनके हाल से उस दिन पूरा आगाह है। (11) ♦

101 सूर: कारिअ: 30

सूर: कारिअ: मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 11 आयतें हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

वह खड़खड़ाने वाली चीज़। (1) कैसी कुछ है वह खड़खड़ाने वाली चीज़।¹ (2) और आपको मालूम है कैसी कुछ है वह खड़खड़ाने वाली चीज़? (3) जिस दिन आदमी परेशान परवानों की तरह हो जाएँगे (4) और पहाड़ धुन्की हुई रंगीन ऊन की तरह हो जाएँगे (तश्बीह देने की वजह अलग-अलग होकर उड़ जाना है)। (5) फिर (आमाल के वज़न के बाद) जिस शख्स का (ईमान का) पल्ला भारी होगा² (6) वह तो अपनी पसन्दीदा

(पिछले पृष्ठ का शेष) 7. राहत की चीज़ से नेक अमल और नेक अमल के वास्ते से जन्नत मुराद है जो कि आसानी की जगह और सबब है। इसी लिए “युसरा” कह दिया गया। वरना “युसरा” के मायने आसान चीज़ के हैं।

8. तकलीफ़ की चीज़ से बुरे अमल और बुरे अमल के वास्ते से दोज़ख़ मुराद है जो कि तंगी का सबब और जगह है। इसलिए “उस्र” को “उस्रा” कह दिया गया। और सामान देने से मुराद दोनों जगह यह है कि अच्छे या बुरे काम उससे बेतकल्लुफ़ सादिर होंगे, और वैसे ही असबाब जमा हो जाएँगे, और फिर नेक आमाल का जन्नत का सामान होना और बुरे आमाल का दोज़ख़ का सामान होना ज़ाहिर ही है। हदीस में है कि “जो (पृष्ठ 1096 की बकिया तफ़सीर और पृष्ठ 1098, 1100, 1102, 1104 की तफ़सीर पृष्ठ 1106-1114 पर)

ऐश व आराम में होगा (यानी नजात पाने वाला होगा)। (7) और जिस शख्स का (ईमान का) पल्ला हल्का होगा (यानी वह काफिर होगा) (8) तो उसका ठिकाना हाविया होगा। (9) और आपको कुछ मालूम है कि वह (हाविया) क्या चीज़ है? (10) (वह) एक दहकती हुई आग है। (11) ♦

102 सूर: तकासुर 16

सूर: तकासुर मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 8 आयतें हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

(दुनियावी साज़ व स्लामान पर) फ़ख़र करना (उसके तलब करने और मुहब्बत की निशानी है,) तुमको (आखिरत से) ग़ाम्फ़िल रखता है। (1) यहाँ तक कि तुम क़ब्रिस्तानों में पहुँच जाते हो। (2) हरगिज़ नहीं! तुमको बहुत जल्द (क़ब्र में जाते ही यानी मरते ही) मालूम हो जाएगा। (3) फिर (दोबारा तुमको सचेत किया जाता है कि) हरगिज़ (तुम्हारी यह हालत ठीक) नहीं, बहुत जल्द मालूम हो जाएगा। (4) हरगिज़ नहीं! (और) अगर तुम यकीनी तौर पर (ऐसी दलीलों, जो सही हों और जिनकी पैरवी वाजिब हो, से इस बात को) जान लेते। (5) अल्लाह की क़सम! तुम लोग जरूर दोज़ख़ को देखोगे। (6) फिर (दोबारा ताकीद के लिए कहा जाता है कि) खुदा की क़सम! तुम लोग उसको ऐसा देखना देखोगे जो कि खुद यकीन है। (7) फिर (और बात सुनो कि) उस दिन तुम सबसे नेमतों की पूछ होगी। (8) ♦

103 सूर: अस्त्र 13

सूर: अस्त्र मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 3 आयतें हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

क़सम है ज़माने की (जिसमें नफ़ा व नुक़सान वाक़ेअ होता है) (1) कि इनसान (उम्र को ज़ाया करने की वजह से) बड़े घाटे में है, (2) मगर जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किए (कि यह कमाल है) और एक-दूसरे को हक़ के एतिकाद (पर कायम रहने) की नसीहत व तंबीह करते रहे, और एक-दूसरे को (आमाल की) पाबन्दी की नसीहत व तंबीह करते रहे। (3) ♦

104 सूर: हु-मज़: 32

सूर: हु-मज़: मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 9 आयतें हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

बड़ी ख़राबी है हर ऐसे शख्स के लिए जो पीठ पीछे ऐब निकालने वाला हो (और) रू-ब-रू ताना देने वाला हो। (1) जो (हिर्स के ज़्यादा होने की वजह से) माल जमा करता हो, और (उसकी मुहब्बत और खुशी से) उसको बार-बार गिनता हो। (2) वह ख़याल कर रहा है कि उसका माल उसके पास हमेशा रहेगा। (3) हरगिज़ नहीं (रहेगा)। फिर आगे उस ख़राबी की तफ़सीर है कि) अल्लाह की क़सम! वह शख्स ऐसी आग में डाला जाएगा जिसमें जो कुछ पड़े वह उसको तोड़-फोड़ दे। (4) और आपको कुछ मालूम है कि वह तोड़-फोड़ करने वाली आग कैसी है? (5) वह अल्लाह की आग है जो (अल्लाह के हुक्म से) सुलगाई गई है, (6) जो (कि बदन को लगते ही) दिलों तक जा पहुँचेगी। (7) (और) वह (आग) उनपर बन्द कर दी जाएगी (8) (इस तरह से कि) वे लोग आग के बड़े लम्बे-लम्बे सुतूनों में (घिरे होंगे)। (9) ♦

(पिछले पृष्ठ का शेष) नेक-बख़्त होता है उसके लिए नेक-बख़्तों के आमाल आसान कर दिए जाते हैं और यही मामला बद-बख़्तों के साथ होता है (पृष्ठ 1096 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 1098, 1100, 1102, 1104, 1106 की तफ़सीर पृष्ठ 1108-1115 पर)

105 सूर: फील 19

सूर: फील मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 5 आयतें हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

क्या आपको मालूम नहीं कि आपके रब ने हाथी वालों के साथ क्या मामला किया?¹ (1) क्या उनकी तदबीर को (जो कि काबा शरीफ को वीरान करने के बारे में थी) पूरी तरह ग़लत नहीं कर दिया? (2) और उनपर गिरोह के गिरोह परिन्दे भेजे (3) जो उन लोगों पर कंकर की पत्थरियाँ फेंकते थे। (4) सो अल्लाह तआला ने उनको खाए हुए भूसे की तरह (पामाल) कर दिया। (5) ♦

106 सूर: कुरैश 29

सूर: कुरैश मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 4 आयतें हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

चूँकि कुरैश आदी हो गए हैं। (1) यानी जाड़े और गर्मी के सफ़र के आदी हो गए हैं। (2) तो (इस नेमत के शुक्रिए में) उनको चाहिए कि इस ख़ाना-ए-काबा के मालिक की इबादत करें (3) जिसने उनको भूख में खाने को दिया और ख़ौफ़ से उनको अमन दिया।² (4) ♦

107 सूर: माऊन 17

सूर: माऊन मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 7 आयतें हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

क्या आपने उस शख्स को नहीं देखा जो कियामत के दिन को झुठलाता है। (1) सो (अगर आप उस शख्स का हाल सुनना चाहें तो सुनिए कि) वह वह शख्स है जो यतीम को धक्के देता है। (2) और मोहताज को खाना देने की (दूसरों को भी) तरगीब नहीं देता।³ (3) सो (इससे साबित हुआ कि) ऐसे नमाज़ियों के लिए बड़ी ख़राबी है (4) जो अपनी नमाज़ को भुला बैठते हैं (यानी छोड़ देते हैं)⁴ (5) जो ऐसे हैं कि (जब नमाज़ पढ़ते हैं तो) दिखावा करते हैं। (6) और ज़कात बिल्कुल नहीं देते। (7) ♦

108 सूर: कौसर 15

सूर: कौसर मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 3 आयतें हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

बेशक हमने आपको कौसर (एक हौज़ का नाम है, और हर बड़ी भलाई भी इसमें दाख़िल है) अता फ़रमाई है।⁵ (1) सो (इन नेमतों के शुक्रिए में) आप अपने परवर्दिगार की नमाज़ पढ़िए और कुरबानी कीजिए। (2) यकीनन आपका दुश्मन ही बेनाम व निशान है।⁶ (3) ♦

(पिछले पृष्ठ का शेष) कि उनके लिए बुरे आमाल आसान कर दिए जाते हैं"।

(तफ़सीर पृष्ठ 1098)

1. यानी दोनों में हमारी ही हुकूमत है। इसलिए दुनिया में हमने अहकाम मुक़र्रर किए और आख़िरत में उनकी मुखा़लफ़त व मुवाफ़क़त पर सज़ा व जज़ा देंगे, जिसका बयान दो जगह "फ-सनुयस्सिरुहू" में हुआ है।

(पृष्ठ 1098 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 1100, 1102, 1104, 1106, 1108 की तफ़सीर पृष्ठ 1110-1115 पर)

109 सूर: काफिरून 18

सूर: काफिरून¹ मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 6 आयतें हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

आप (उन काफिरों से) कह दीजिए कि ऐ काफिरों! (1) मेरा और तुम्हारा तरीका एक नहीं हो सकता और न (तो फिलहाल) मैं तुम्हारे माबूदों की पूजा करता हूँ (2) और न तुम मेरे माबूद की पूजा करते हो। (3) और न (आइन्दा भविष्य में) मैं तुम्हारे माबूदों की पूजा करूँगा (4) और न तुम मेरे माबूद की पूजा करोगे। (5) तुमको तुम्हारा बदला मिलेगा और मुझको मेरा बदला मिलेगा। (6) ♦

110 सूर: नस्र 114

सूर: नस्र मदीना में नाज़िल हुई। इसमें 3 आयतें हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

(ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम!) जब खुदा की मदद और (मक्का की) फ़तह (अपनी निशानियों के साथ) आ पहुँचे (यानी ज़ाहिर हो जाए) (1) और (उसकी निशानियाँ जो उसपर सामने आने वाली हैं, ये हैं कि) आप लोगों को अल्लाह के दीन (यानी इस्लाम में) गिरोह के गिरोह दाख़िल होता हुआ देख लें। (2) तो अपने रब की तस्बीह व तारीफ़ कीजिए और (उससे) इस्तिग़फ़ार की दरख़्वास्त कीजिए, वह बड़ा तौबा कबूल करने वाला है। (3) ♦

111 सूर: लहब 6

सूर: लहब² मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 5 आयतें हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

अबू लहब के हाथ टूट जाएँ और वह बर्बाद हो जाए। (1) न उसका माल उसके काम आया और न उसकी कमाई। (माल से मुराद सरमाया और कमाई से मुराद उसका नफ़ा है)। (2) (और आखिरत में) वह जल्द ही (मरने के फ़ौरन बाद) एक भड़कती हुई अंगारों वाली आग में दाख़िल होगा। (3) वह भी और उसकी बीवी भी जो लकड़ियाँ लादकर लाती है। (मुराद काँटेदार लकड़ियाँ हैं,³ जिनका शाने नुज़ूल में ज़िक्र है)। (4) (और दोज़ख़ में) उसके गले में रस्सी होगी ख़ूब बटी हुई। (5) ♦

112 सूर: इख्लास 22

सूर: इख्लास⁴ मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 4 आयतें हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

आप (उन लोगों से) कह दीजिए कि वह यानी अल्लाह तआला (अपनी ज़ात व सिफ़ात के कमाल में) एक है।⁵ (1) अल्लाह (ऐसा) बेनियाज़ है (कि वह किसी का मोहताज नहीं और उसके सब मोहताज हैं)। (2) उसके औलाद नहीं और न वह किसी की औलाद है। (3) और न कोई उसके बराबर का है।⁶ (4) ♦

(पिछले पृष्ठ का शेष) 2. ताकि ईमान व फ़रमाँबरदारी इख़्तियार करके उससे बचो और कुफ़ व नाफ़रमानी इख़्तियार करके उसमें न जाओ। क्योंकि उसमें जाने और न जाने के यही असबाब हैं।

(पृष्ठ 1098 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 1100, 1102, 1104, 1106, 1108, 1110 की तफ़सीर पृष्ठ 1112-1116 पर)

113 सूर: फलक 20

सूर: फलक¹ मदीना में नाज़िल हुई। इसमें 5 आयतें हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

आप (अपने पनाह लेने के लिए) कहिए कि मैं सुबह के मालिक की पनाह लेता हूँ (1) तमाम मख़्लूक़ात की बुराई से² (2) और (खास तौर से) अन्धेरी रात की बुराई से, जब वह रात आ जाए। (और रात में बुराइयों और फितनों का अन्देशा ज़ाहिर है)। (3) और (खास तौर से गन्डे की) गिरहों पर पढ़-पढ़कर फूँकने वालियों की बुराई से। (4) और हसद करने वाले की बुराई से जब वह हसद करने लगे। (5) ♦

114 सूर: नास 21

सूर: नास मदीना में नाज़िल हुई। इसमें 6 आयतें हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

आप कहिए (जिस तरह कि सूर: फलक में गुज़रा) कि मैं आदमियों के मालिक, (1) आदमियों के बादशाह, (2) आदमियों के माबूद की पनाह लेता हूँ (3) वस्वसा डालने, पीछे हट जाने वाले³ (शैतान) की बुराई से। (4) जो लोगों के दिलों में वस्वसा⁴ डालता है (5) चाहे वह (वस्वसा डालने वाला) जिन्न हो या आदमी (हो)। (6) ♦

(पिछले पृष्ठ का शेष)

3. यह इज़्हास की निहायत ही ऊँची हालत है, क्योंकि ख़र्च करने में किसी के एहसान का बदला उतारना अपने आपमें यह भी पसन्दीदा और मतलूब है, मगर फज़ीलत में शुरू में किसी के साथ एहसान करने के बराबर नहीं। पस जब उस शख्स का ख़र्च करना उससे भी ख़ाली और पाक है तो दिखावे वग़ैरह जैसे गुनाहों की मिलावट से और ज़्यादा बरी होगा। और यह इज़्हास का बहुत ऊँचा और आला दर्जा है।

4. अगरचे आयत के अल्फ़ाज़ आम हैं मगर इसका सबब हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु का वाकिआ है, कि उन्होंने हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु वग़ैरह को काफ़िरों से ख़रीदकर अल्लाह के लिए आज़ाद कर दिया था।

5. एक बार आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने किसी बीमारी की वजह से दो-तीन रात इबादत में रात को न जागे एक काफ़िरा ने कहा कि मालूम होता है कि तुम्हारे शैतान ने तुमको छोड़ दिया है, देर हो गई, उसपर यह सूर: नाज़िल हुई।

6. करार पकड़ने के दो मायने हो सकते हैं- एक हकीकी यानी उसकी अंधेरी का कामिल हो जाना कि उससे पहले उसका ज़्यादा होना हरकत करने की तरह था, दूसरे मजाज़ी (यानी असली मायनों को छोड़कर) यानी जानदारों का उसमें सो जाना और चलने-फिरने और बोलने-चालने की आवाज़ों का रुक जाना।

7. क्योंकि अव्वल तो आपसे कोई बात ऐसी नहीं हुई, दूसरे अम्बिया अलैहिमुसलाम के वास्ते यह बात अल्लाह के तरीके में मुहाल है, पस आप काफ़िरों की खुराफ़ात और बेकार बातों से ग़मगीन न हों, आपको वहा की नेमत बराबर हासिल रहेगी।

8. जिसकी कसम खाई गई है उसको खुशख़बरी से मुनासबत यह है कि वहा का लगातार आना और उसके आने में कुछ देरी होना रात और दिन के अदलने-बदलने की तरह है।

9. चुनाँचे सीरत की किताबों में है कि आप माँ के पेट में थे कि आपके वालिद की वफ़ात हो गई, अल्लाह तआला ने आपके दादा और चचा से आपकी परवरिश कराई।

10. अल्लाह तआला का कौल “मा कुन-त तद्री मल्किताबु व लल्-ईमानु” और वहा से पहले शरीअत की तफ़सील मालूम न होना इससे (पृष्ठ 1098 की बकिया तफ़सीर और पृष्ठ 1100, 1102, 1104, 1106, 1108, 1110, 1112 की तफ़सीर पृष्ठ 1113-1116 पर)

(पिछले पृष्ठ का शेष) आपकी शान में कोई नुकस नहीं आता।

11. इस तरह कि हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा के माल में आप शरीक हुए और उसमें नफ़ा मिला। फिर हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा ने आपसे निकाह कर लिया और अपना तमाम माल हाज़िर कर दिया।

12. यानी इल्म भी बहुत ज़्यादा अता फ़रमाया और तब्लीग़ के मुखालिफ़ीन की रुकावट बनने की वजह से जो तकलीफ़ पेश आती है उसमें बरदाश्त करने की हिम्मत और संयम भी दिया।

13. “बोझ” से मुराद वे मुबाह उमूर हैं जो आपसे कभी-कभार किसी हिकमत के तसव्वुर की बिना पर सादिर हो जाते थे और बाद में उनका हिकमत के ख़िलाफ़ और ग़ैर-मुनासिब होना साबित होता था और आप अपनी बुलन्द शान और अल्लाह से अपने खुसूसी ताल्लुक की वजह से ऐसे ही ग़मगीन होते थे जिस तरह कोई गुनाह से ग़मगीन होता है। इसमें उनपर पकड़ न होने की खुशख़बरी है।

14. यानी शरीअत में अक्सर जगह अल्लाह तआला के नाम के साथ आपका मुबारक नाम मिलाया गया, जैसे ‘अत्तहिय्यात में, नमाज़ में, अज़ान में, तकबीर में’ और अल्लाह के नाम की बुलन्दी और शोहरत ज़ाहिर है। पस जो उससे मिला हुआ होगा बुलन्दी व शोहरत में वह भी उसके ताबे रहेगा।

15. मक्का में आप और ईमान वाले तरह-तरह की तकलीफ़ों और सज़्ज़ियों में गिरफ़्तार थे, लेकिन आख़िरकार वे मुश्किलें एक-एक करके सब दूर हो गईं।

(तफ़सीर पृष्ठ 1100)

1. यानी वह ख़ूबसूरती और ताक़त बद-सूरती और कमजोरी से बदल जाती है और बुरे से बुरा हो जाता है। इससे मकसूद बुराई के इन्तिहाई दर्जे को बयान करना है, जिससे लौटाने की कुदरत पर काफ़ी इस्तिदाल होता है।

2. सूरः के शुरू में चार चीज़ों की कसम खाई गई है- दो पेड़ ज़्यादा नफे वाले और दो बरकत वाले मकामात कि एक वह मकाम है जहाँ मूसा अलैहिस्सलाम अल्लाह से हम-कलाम होते थे, दूसरा मकाम आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पैदा होने और रहने और वध्द नाज़िल होने का है। और पेड़ों की कसम को मकसूद से मुनासबत ज़ाहिर है कि पेड़ भी इसी तरह फलता-फूलता है, और चूँकि यहाँ बयान था अशरफ़ुल मख़्लूक़ात यानी इन्सान का इसलिए कसम भी उस पेड़ की खाई जो सब पेड़ों में अफ़जल है, और तूर पहाड़ और ‘बलदे अमीन’ यानी मक्का शरीफ़ दोनों वध्द उतरने की जगह हैं तो आख़िरत में बदला दिए जाने से उनको ज़्यादा मुनासबत हुई क्योंकि वध्द से आख़िरत में बदला दिए जाने का इल्म हुआ है।

3. “इकरा से मा लम् यअलम्” तक सबसे पहली वध्द है। जिसके नाज़िल होने से नुबुव्वत की इम्तिदा और शुरूआत हुई।

4. इस सिफ़त और ख़ूबी को ख़ास करने में यह नुक्ता है कि नेमत के लिहाज़ से इन्सान पर हक़ तआला का तमाम दूसरी मख़्लूक़ात से ज़्यादा इनाम व इकराम है कि खून के लोथड़े से जो कि बिल्कुल एक बेजान चीज़ थी इसको किस दर्जे तक तरक्की दी कि सूरत कैसी बनाई, अक़ल व इल्म से नवाज़ा। पस इन्सान को ज़्यादा शुक्र और ज़िक्र करना चाहिए। और खून के लोथड़े की तछ्ख़ीस शायद इसलिए है कि उससे पहले एक बरज़़्ख़ी हालत है कि उसके पहले नुफ़ा और ग़िज़ा व उन्सुर है, और उसके बाद गोश्त की बोटी और हड्डियों की तरकीब और उसमें रूह का डालना है।

5. मतलब यह कि अव्वल तो तालीम लिखने में मुन्हसिर नहीं दूसरे असबाब से भी तालीम हो रही है। दूसरे असबाब अपने आपमें कुछ असर नहीं रखते, सबबे हकीकी और उलूम के देने वाले हम हैं। पस अगरचे आप लिखना नहीं जानते मगर हमने जब आपको पढ़ने का हुक्म किया है तो हम दूसरे ज़रिए से आपको पढ़ना और वध्द के उलूम को याद रखने की कुदरत दे देंगे। चुनाँचे ऐसा ही हुआ।

6. यह आयत अबू जहल के मुताल्लिक नाज़िल हुई थी जिसने आँ हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को नमाज़ पढ़ने से रोका था।

7. चूँकि यह बुलाना उसके बुलाने की शर्त के साथ था, जब शर्त ही नहीं पाई गई तो मशरूत भी नहीं पाया गया। तिबरी ने हज़रत क़तादा से मुसलन रिवायत की है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अगर अबू जहल ऐसी हरकत करता तो फ़रिश्ते सबके सामने उसको पकड़कर तहस-नहस कर देते।

(तफ़सीर पृष्ठ 1102)

1. यानी हज़ार महीने तक इबादत करने का जिस-क़द्र सवाब है उससे ज़्यादा शबे-क़द्र में इबादत करने का सवाब है। इसी तरह तफ़सीरे ख़ाज़िन में बयान किया गया है।

2. चुनाँचे बैहकी की हदीस में हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया गया है कि शबे-क़द्र में जिबराईल अलैहिस्सलाम फ़रिश्तो के एक ग़िरोह में आते हैं और जिस किसी को अल्लाह की इबादत में मशगूल देखते हैं उसके लिए रहमत की दुआ करते हैं। रहमत और सलामती की दुआ एक ही बात है। और ‘अमरे-ख़ैर’ यानी ख़ैर के मामले से मुराद यही है।

3. यह नहीं कि उस रात के किसी ख़ास हिस्से में यह बरकत हो और किसी में न हो। शबे-क़द्र के मुताल्लिक एक इश्क़ाल यह है कि सूरज के निकलने और छुपने की जगहों के अनेक और अलग-अलग होने की वजह से शबे क़द्र का हर जगह अलग होना लाज़िम आता है। जवाब यह है कि इसमें कोई मुहाल और नामुमकिन होना लाज़िम नहीं आता कि ये बरकतें किसी को (शेष तफ़सीर अगले पृष्ठ पर)

(पिछले पृष्ठ का शेष) किसी वक्त में मिलें और किसी को किसी वक्त में, इसी तरह फरिश्तों का उतरना हर जगह मुख्तलिफ वक्त में हो।

4. मुराद कुरआन है। मतलब यह है कि उन काफ़िरों का कुफ़्र ऐसा सख्त था और ऐसे जहालत में मुक्तला थे कि एक अज़ीम और बड़े रसूल के भेजे बग़ैर उनके राह पर आने की उम्मीद न थी, इसलिए अल्लाह तआला ने हुज्जत के पूरा करने और लाज़िम करने के लिए आपको कुरआन देकर भेजा।

5. यानी दीने हक से भी इख़्तिलाफ़ किया और आपसी इख़्तिलाफ़ जो पहले से थे उनको भी दीने हक की पैरवी करके दूर न किया। और मुशिरकों को ख़ास तौर पर इसलिए कहा कि उनके पास तो पहले से भी आसमानी इल्म न था, और कुरआन को सहीफ़े और इसके मज़ामीन को किताबें फरमाना कुव्वत के एतिबार से है। हासिल यह है कि ऐसे रसूल और ऐसी अज़ीमुशशान किताब का आना यह तकाज़ा करता था कि वे सब लोग दीने हक पर जमा हो जाते, मगर उन लोगों ने इज्तिमा के सबब को तफ़रीक़ और फूट डालने का सबब बना लिया। और इस मुकाबला करने से यह भी मालूम हो गया कि जिन लोगों ने इख़्तिलाफ़ और फूट डालने का काम नहीं किया वे ईमान वाले हैं।

6. यानी न उनसे कोई नाफरमानी होगी और न उनको कोई बुरा और नापसन्दीद मामला पेश आएगा जिससे दोनों तरफ़ से किसी के राज़ी न होने का अन्देशा हो।

(तफ़सीर पृष्ठ 1104)

1. बोझ से दफ़न हुई चीज़ें और मुर्दे मुराद हैं।

2. उस हालत को देखकर कहेगा कि यह आदत के ख़िलाफ़ और ख़िलाफ़े गुमान जल्जला और बोझों का निकालना कैसे होने लगा। वजह इस कहने की यह है कि यह कियामत और उसके वाकिआत का पहले से इनकारी था, अब उन वाकिआत को देखकर हैरान है।

3. तिमिज़ी शरीफ़ वग़ैरह में इसकी तफ़सीर में हदीस आई है कि जिस शख्स ने रू-ए-ज़मीन पर जैसा अमल किया होगा भला या बुरा, ज़मीन गवाही देने के तौर पर अल्लाह के सामने सब कह देगी।

4. बशर्ते कि उस वक्त तक वह भलाई व बुराई बाकी रही हो, वरना अगर कुफ़्र से वह ख़ैर और भलाई फना हो चुकी हो या तौबा व ईमान से वह बुराई दूर हो चुकी हो वह इसमें दाख़िल ही नहीं, क्योंकि वह भलाई-भलाई न रही और वह बुराई-बुराई न रही जिसपर हुक्म का मदार था, जब वह न रहा तो हुक्म भी साबित न होगा।

5. इससे मुराद लड़ाई के घड़े हैं। जिहाद हो या ग़ैर-जिहाद और अरब को इस वजह से कि वे लड़ाके और जंगजू थे इन कस्मों से निहायत मुनासबत है, हाँपना दौड़ने के वक्त ज़ाहिर है। और लोहे वाला जूता पथरीली ज़मीन पर लगने से आग का झड़ना भी ज़ाहिर है, और अरब में अक्सर आदत यह थी कि दुश्मनों पर सुबह के वक्त हमला बोलते थे ताकि रात के वक्त जाने में दुश्मन को ख़बर न हो। सुबह को अचानक जा पड़ें, और रात को हमला न करने में बहादुरी का इज़हार समझते थे। गुबार का उड़ना अगरचे हर वक्त होता है मगर उसको सुबह के साथ मुक़ैयद करना इस तरफ़ इशारा है कि उनके चलने में बहुत तेज़ी होती है कि ठन्ड के वक्त गुबार दबा हुआ होता है।

6. मुराद कियामत है कि दिलों को घबराहट के मारे और कानों को सख्त आवाज़ से खड़खड़ा देगी और उसका खड़खड़ाना उस दिन होगा जिस दिन आदमी परेशान परवानों की तरह हो जाएँगे। परवानों के साथ तश्बीह देने की वजह कमजोरी और बहुत ज़्यादा परेशान होना है, अगरचे बाज़ों को बेताबी और परेशानी न होगी मगर कमजोरी और ज़्यादाती सबके लिए आम है।

7. “ईमान के पल्ले के भारी और हल्का होने” की तहकीक़ सूर; आराफ़ के शुरू में गुज़र चुकी है।

(तफ़सीर पृष्ठ 1106)

1. यानी वह देखना दलील के तौर पर नहीं जिसपर यकीन आने में कभी-कभी देर होती है, बल्कि बिल्कुल सामने रू-ब-रू देखना होगा जिसपर फ़ौरन यकीन हासिल हो जाता है। और यह कि रू-ब-रू देखने में दलीलों से और अक्ली ज़रूरतों से इन्किशाफ़ (यानी असलियत का खुलकर सामने आना) भी ज़्यादा है, उसके खुद देखने को नफ़से यकीन फरमाया जो कि ‘ऐनुल् यकीन’ से मुराद है, इसके बावजूद कि वह सब यकीन है।

2. “लतुसुअलुन्-न” में आम ख़िताब है हदीस के करीने से, जिसमें आपने हज़रत अबू बक्र और हज़रत उमर फारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हुमा से फरमाया कि तुम लोगों से इन नेमतों के मुताल्लिक़ सवाल किया जाएगा। इसी तरह बुख़ारी शरीफ़ वग़ैरह में ज़िक्र किया गया है। पस जब ग़ैर-मुज़्मिन तक से सवाल होगा अगरचे इसपर कोई नुक़सान मुरत्तब न हो तो मुज़्मिन तो क्यों बच जाएँगे? और उनके लिए वह नुक़सानदेह भी होगा।

3. यानी उसमें इस कदर मशगूल रहता और खुद को लगाए रखता है कि जैसे यह ख्याल करता है कि यह हमेशा रहेगा। और यह ज़ाहिर है कि इन सिफ़ात व आमाal पर ये ख़ास वईद (सज़ा की धमकी) उस सूरत में है जबकि मन्शा उनका कुफ़्र हो, अगरचे मुतलक वईद मुतलक सिफ़ात व ज़िक्र हुए अफ़आल पर भी दूसरी वाज़ेह आयात में है।

4. यानी उसमें जल्दी से पकड़ने और अन्दर घुस जाने से और उस शख्स को मौत न आने से यह हालत होगी कि बदन के साथ ही दिल को जला देगी। और अगर इसे छोड़ भी दें तो भी दिल तक पहुँचने की तकलीफ़ मौत के न आने के सबब उसको महसूस होगी, दुनिया की आग के ख़िलाफ़ कि बदन से दिल तक पहुँचते-पहुँचते बहुत देर लगती है, यहाँ तक कि उससे पहले ही (शेष तफ़सीर अगले पृष्ठ पर)

(पिछले पृष्ठ का शेष) रुह निकल जाती है और दिल तक पहुँचने का दर्द और तकलीफ का एहसास करने की नीबत नहीं आती।

5. यानी आग के इतने बड़े-बड़े शोले होंगे और वे लोग उस आग में कैद होंगे।

(तफसीर पृष्ठ 1108)

1. यमन का हाकिम अब्रहा बड़ा लश्कर लेकर जिसमें हाथी भी थे खाना-ए-काबा' को ढाने के लिए चढ़ आया। जब मुहसर वादी में पहुँचा तो समुद्र की तरफ से कुछ परिन्दे आए। उनके पन्नों और चोंचों में मसूर और चने के बराबर कंकरियाँ थीं, उन्होंने उन कंकरियों को लश्कर पर फेंकना शुरू किया, ये कंकरियाँ बन्दूक की गोली की तरह लगती थीं और हलाक कर देती थीं। अक्सर तो इस अज़ाब से हलाक हो गए और दूसरे भाग गए। यह वाकिआ हुजूर सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की विलादते शरीफ़ (जन्म मुबारक) से पचास दिन पहले हुआ।

2. हासिल यह कि मक्का में ग़ल्ला वगैरह पैदा नहीं होता, इसलिए कु़रैश की आदत थी कि साल भर में तिजारत के लिए दो सफ़र करते, जाड़ों में यमन की तरफ़ कि वह गर्म मुल्क है और गर्मी में शाम की तरफ़ कि वह ठंडा मुल्क है। और लोग उनको हरम वाले और बैतुल्लाह के खादिम समझकर उनकी इज़्जत करते और उनके माल व जान से कोई रोक-टोक न करता, और उनको ख़ूब नफ़ा होता कि घर बैठकर खाते और खिलाते। इस सूरः में इसी वाकिए का जिक्र है। और चूँकि बैतुल्लाह के सबब हर जगह उनका एहतिराम व सम्मान होता था इसलिए लफ़ज़ 'रब' (यानी मालिक) को 'हाज़ल बैत' की तरफ़ मुज़ाफ़ किया, और 'भूख' में खाना देना इशारा है नफ़े के हासिल करने की तरफ़, और 'ख़ौफ़' से दुनिया के अमन की तरफ़ इशारा है कि सफ़र हो या वतन में रहने की हालत उनसे कोई किसी तरह की रोक-टोक न करता था।

3. यानी वह ऐसा संगदिल है कि न खुद एहसान करे और न दूसरों को एहसान पर आमादा करे। और जब बन्दे का हक़ ज़ाया करना ऐसा बुरा है तो ख़ालिफ़ (यानी पैदा करने वाले) का हक़ ज़ाया करना तो और ज़्यादा बुरा है।

4. क्योंकि इसमें इज़हार करने का हुक्म नहीं दिया गया इसलिए इसको बिल्कुल ही छोड़ देते हैं, बख़िलाफ़ नमाज़ के कि उसके इज़हार का हुक्म है इसलिए कभी-कभी दिखाने के लिए पढ़ भी लेते हैं और जब निगाह बची छोड़ देते हैं।

5. इस सूरः के नाज़िल होने का सबब यह है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की औलाद में से सबसे बड़े बेटे हज़रत कासिम थे, उनका मक्का में इन्तिकाल हो गया तो आस बिन वाईल सहमी ने और उसके साथ दूसरे मुशिरकों ने कहा कि मुहम्मद की नस्ल बन्द हो गई। पस आप नज़ुज़ बिल्लाह अब्तर यानी बेनाम व निशान हैं। मतलब यह था कि उनके दीन का चर्चा चन्द दिन का है, फिर ये सब बखेड़े पाक हो जाएँगे। उसपर आपकी तसल्ली के लिए यह सूरः नाज़िल हुई। दुर्गे मन्सूर में भी इसी तरह है।

6. जिसमें दुनिया की ख़ैर यानी दीन का बाकी रहना और इस्लाम की तरक्की जो कि अज़्र की ज़्यादती का सबब है और आखिरत की भलाई यानी अल्लाह की निकटता के दर्जे और बुलन्द रुतबे सब दाख़िल है, फिर अगर एक बेटा फौत हुआ और उसपर मुख़ालिफ़ लोग खुश हो रहे हैं तो उसपर ग़म न कीजिए क्योंकि उससे बढ़कर आपको ये दौलतें अ़ता फ़रमाई गई हैं।

7. चाहे जाहिरी नस्ल उस दुश्मन की चले या न चले लेकिन दुनिया में उसका ख़ैर के साथ जिक्र बाकी न रहेगा, बख़िलाफ़ आपके कि कियामत तक आपकी उम्मत और आपका दीन और आपकी याद, नेक-नामी, मुहब्बत और एतिकाद के साथ रहेगी जो कि 'कौसर' के मफ़हूम के आ़ाम होने में सब दाख़िल हैं। अगर नरीना औलाद की नस्ल न हो न सही, जो नस्ल से मकसूद है वह आपको हासिल है। यहाँ तक कि दुनिया से गुज़रकर आखिरत में भी। और दुश्मन इससे महरूम है।

(तफसीर पृष्ठ 1110)

1. इस सूरः के नाज़िल होने का सबब यह है कि एक बार काफ़िरों के चन्द सरदार आपके पास आए और आपसे अर्ज़ किया कि आइए हमारे माबूदों की आप इबादत किया कीजिए और आपके माबूद की हम इबादत किया करें, जिसमें हम और आप दीन के तरीके में शरीक रहें। जौन-सा तरीका ठीक होगा उससे सबको कुछ-कुछ हिस्सा मिल जाएगा। उसपर यह सूरः नाज़िल हुई। दुर्गे मन्सूर में इसी तरह बयान किया गया है।

2. मतलब यह मालूम होता है कि मैं मोमिन होकर शिर्क की बला में गिरफ़्तार नहीं हो सकता, न अब न आइन्दा। और तुम मुशिरक रहकर मोमिन करार नहीं दिए जा सकते, न अब न आइन्दा। यानी तौहीद व शिर्क जमा नहीं हो सकते। जब तक तुम अपने माबूदों की इबादत करने वाले और मुशिरक रहोगे उस वक़्त तक मेरे माबूद की इबादत करने वाले यानी मोमिन न समझे जाओगे। पस इसको पेशीनगोई पर महमूल करने की, और इसपर जो सवाल होता है कि बाज़े तो मुसलमान हो गए थे, उसके जवाब में "काफ़िरून" को अहद हुए मामले पर महमूल करने की ज़रूरत नहीं।

3. इसमें उनके शिर्क पर वईद भी सुना दी। पस यह सूरः मुख़ालफ़त के इज़हार और वईद पर मुश्तमिल है।

4. तो उस वक़्त समझ लीजिए कि दुनिया में रहने और नबी बनाकर भेजे जाने का मकसद जो कि दीन का मुकम्मल करना है, ख़त्म हुआ। इस वजह से आखिरत का सफ़र करीब है, पस उसके लिए तैयारी कीजिए।

5. बहुत-सी हदीसों में इस सूरः की यही तफसीर आई है कि इसमें आपकी वफ़ात के करीब होने की (शेष तफसीर अगले पृष्ठ पर)

(पिछले पृष्ठ का शेष) खबर है, और फत्ह से मक्का का फत्ह होना मुराद है। और “अल्लाह के दीन में लोगों का गिरोह के गिरोह दाखिल होने” को फत्हे मक्का की निशानियों में से इसलिए कहा गया है कि आम लोग मक्का के फत्ह होने का इन्तिज़ार कर रहे थे। अब तक एक-एक दो-दो आदमी मुसलमान होता था, मक्का के फत्ह होने के बाद कबीले के कबीले इस्लाम में दाखिल होने लगे।

6. बुखारी, मुस्लिम और हदीस की दूसरी किताबों में रिवायत किया गया है कि जब आयत “व अन्जिर् अशी-र-तकल् अक्वरबी-न” नाज़िल हुई और आपने सफ़ा पहाड़ पर चढ़कर सबको पुकारा और जमा करके इस्लाम की दावत दी तो आँ हज़रत के चचा अबू लहब बिन अब्दुल मुत्तलिब ने गुस्ताखी करते हुए कहा “तू बर्बाद हो जाए, क्या हमको सिर्फ़ इतनी बात के लिए जमा किया था” उसपर यह सूर: नाज़िल हुई।

7. चुनाँचे गज़वा-ए-बद्र के सात दिन के बाद उसके ताऊन का दाना जिसको ‘अदसा’ कहते हैं निकला और बीमारी लग जाने के ख़ौफ़ से घर वालों ने उसको अलग डाल दिया, यहाँ तक कि उसी हालत में हलाक हो गया। तीन दिन तक लाश यूँ ही पड़ी रही, जब सड़ने लगा तो मज़दूरों से उठवाकर शहर से बाहर भेज दिया, उन्होंने लेजाकर उसको गढ़े में फेंक दिया।

8. अबू लहब की बीवी कौटदार लकड़ियाँ जमा करके लाती और अपनी हद से बढ़ी हुई दुश्मनी और बैर की वजह से आँ हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की राह में बिछाती। दुर्गे मन्सूर में बैहकी वगैरह से इसी तरह नकल किया गया है। और बाज़ ने कहा है कि “लकड़ियाँ लादकर लाने वाली” से मुराद चुगलख़ोर है, और वह औरत चुगलख़ोर भी थी जैसा कि दुर्गे मन्सूर में बयान किया गया है। चुनाँचे फ़ारसी में भी ‘हेज़म-कश’ (यानी सूखी लकड़ी लादकर लाने वाला) इसी मायने में इस्तेमाल होता है।

9. इस सूर: के नाज़िल होने का सबब यह है कि एक बार मुशिरकों ने आपसे कहा कि अपने रब की ख़ूबी और नसब बयान कीजिए इसपर सूर: इख़्लास नाज़िल हुई जैसा कि दुर्गे मन्सूर में है।

10. ज़ाती कमालात ये कि ‘वाज़िबुल वजूद’ (यानी अपने वजूद में किसी का मोहताज नहीं) है, और सिफ़ात का कमाल यह कि इल्म व कुदरत वगैरह उसके कदीम और मुहीत (घेरने वाले) हैं।

11. तौहीद का इनकार करने वाले कई किस्म के हैं- अल्लाह के वजूद का इनकार करने वाले, उसके ‘वाज़िबुल वजूद होने का इनकार करने वाले, उसकी सिफ़तों के कामिल होने का इनकार करने वाले, उसकी इबादत में दूसरों को शरीक करने वाले। इन सबका बातिल होना “अल्लाहु अ-हद” (यानी अल्लाह एक है) में हो गया। और जो मदद माँगने में शिर्क करते हैं उनका बातिल होना “अल्लाहुस्स-मद्” (यानी अल्लाह बेनियाज़ है) में हो गया। पस पहला जुम्ला मज़मून “इय्या-क नअबुदु” और दूसरे जुम्ले में “इय्या-क नस्तईन” दाखिल हो गया। और जो लोग अल्लाह के लिए बेटे और बेटियाँ साबित करते थे उनका बातिल होना “लम यलिद्” से हो गया। और जो लोग बाज़ जिन्नात और इनसानों के माबूद होने का एतिकाद रखते थे उनका बातिल होना “लम् यूल्द” से हो गया। यानी ये लोग पैदा किए हुए हैं, हक़ तआला को किसी ने पैदा नहीं किया। क्योंकि इससे हादिस होना लाज़िम आता है इसलिए अल्लाह के बराबर किसी को ख़्याल करना और किसी को उसका साथी व हमसफ़र एतिकाद करना, जैसा कि ‘मजूस’ (यानी आग को पूजने वाले) जो कि ‘यज़दों’ और ‘अहरमन’ के कायल हैं, इसका बातिल होना “लम् यकुल्लहू कुफ़ुवन् अ-हद” से ज़ाहिर हो गया।

(तफसीर पृष्ठ 1112) 1. सूर: ‘फलक’ और ‘नास’ एक साथ नाज़िल हुई। बैहकी की रिवायत की दलीलों के मुताबिक़ इनके नाज़िल होने का सबब यह है कि हुज़ुरे पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर लबीद यहूदी और उसकी बेटियों ने जादू कर दिया था-जिससे आपको बीमारी जैसी हालत लाहिक हो गई। आपने हक़ तआला से दुआ की, उसपर ये दोनों सूरतें नाज़िल हुई जिनमें एक की पाँच आयतें और एक की छह आयतें हैं। कुल मिलाकर ग्यारह आयतें हैं, और आपको वहा से उस जादू की जगह और मक़ाम भी मालूम करा दिया गया। चुनाँचे वहाँ से मुख़्तलिफ़ चीज़ें निकलीं जिनमें जादू किया गया था। और उसमें ताँत का एक टुकड़ा भी था, जिसमें ग्यारह गिरहें लगी हुई थीं। हज़रत जिबराईल अलैहिस्सलाम ये सूरतें पढ़ने लगे। एक-एक आयत पर एक-एक गिरह खुल गई। चुनाँचे आपको बिल्कुल शिफा हो गई, और दोनों सूरतों के मजमूए में मुख़्तलिफ़ बुराइयों से पनाह माँगने का और तमाम मामलात में हक़ तआला पर भरोसा करने का हुक्म हुआ है।

2. शायद ‘फलक’ (यानी सुबह के वक़्त) की तख़सीस रात के मुकाबले में हो और इशारा इस तरफ़ हो कि जिस तरह हक़ तआला रात को दूर फरमा देता है उसी तरह रात के असर यानी जादू का असर भी ख़त्म कर सकता है।

3. पीछे हटने का मतलब यह है कि हदीस में है कि अल्लाह का नाम लेने से वह हट जाता है, और यह बात जिन्नी शैतान में तो ज़ाहिर है, और इनसानी शैतान में तफसीरे कबीर के मुताबिक़ इस तरह से है कि वस्वसा डालने वाला अपने को नसीहत करने वाले और ख़ैरख़्वाह की सूरत में ज़ाहिर करता है, लेकिन अगर उसको डाँट दिया जाए तो फिर वस्वसा से बाज़ आ जाता है और हट जाता है। और अगर कबूल कर लिया जाए तो और आगे बढ़ता है। और यह सिफ़त इशारा इस तरफ़ है कि अल्लाह के साथ उससे पनाह तलब करना बचाव और पनाह का सबब होगा, क्योंकि उसकी ख़ासियत है अल्लाह की याद से पीछे रह जाना।

4. इससे वह वस्वसा मुराद है जो नाफ़रमानी की तरफ़ ले जाता हो, और उसका दीन के लिए नुक़सानदेह होना ज़ाहिर है।



यह ऐसी किताब है जिसमें कोई शुब्हा नहीं

कुरआन मजीद

(मय तर्जुमा व अरबी मतन)

तर्जुमा

हकीमुल उम्मत हज़रत मौलाना अशरफ अली थानवी रह०

हिन्दी अनुवाद

मौलाना मुहम्मद इमरान कासमी बिज्ञानवी एम. ए. (अलीग०)
मौहल्ला महमूद नगर, मुजफ्फर नगर (उ० प्र०)

इस्लामिक बुक सर्विस (प्रा०) लि०
नई दिल्ली

© All Rights Reserved with
Islamic Book Service (P) Ltd.

No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted
in any form or by any means electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise
without the prior written permission of the Publisher.

القرآن الكريم

कुरआन मजीद

मय हिन्दी तर्जुमा, अरबी मतन एवं लिपियंतरण

Translation by

Hakimul Ummat Hadhrat Maulana Ashraf Ali Thanvi Rah.

Rendered in Hindi by

Maulana Mohammad Imran Qasmi Bigyanvi

ISBN 978-81-7231-456-9

First Published 2003
Nineteenth Impression 2021

Published by *Abdus Sami* for

Islamic Book Service (P) Ltd.

1516-18, Pataudi House, Darya Ganj, New Delhi-110002 (India)

Tel.: +91-11-23244556, 23253514, 23286551

e-mail: info@ibsbookstore.com

Website: www.ibsbookstore.com

Our Associates

Husami Book Depot, Hyderabad (India)



Printed in India

अपनी बात

अल्लाह तआला का लाख-लाख शुक्र व एहसान है कि उसने इस नाचीज़ को एक अहम और अज़ीमुश्शान दीनी ख़िदमत की तौफ़ीक़ इनायत फ़रमाई।

हज़रत मौलाना अशरफ़ अली साहिब थानवी रहमतुल्लाहि अलैहि का नाम किसी परिचय का मोहताज नहीं, आप चौदहवीं सदी के ज़बरदस्त आलिमे दीन गुज़रे हैं। ज़िला मुज़फ़्फ़र नगर (उ. प्र.) के कसबा 'थाना भवन' में 5 रबीउस्सानी 1280 हिजरी में पैदा होने वाले इस आलिमे दीन ने इस्लाम की वे ख़िदमात अन्जाम दीं कि जिनसे कियामत तक उम्मत मुस्लिमा फ़ायदा उठाती रहेगी और अपने दीन को सँवारती रहेगी। मौलाना अशरफ़ अली थानवी रह. ने करीब बीस साल की उम्र में इस्लामी दुनिया की अज़ीम दीनी दर्सगाह दारुल उलूम देवबन्द से फ़राग़त हासिल की, आपने करीब चौदह साल कानपुर में पढ़ाया और फ़तवे लिखने की ख़िदमत अन्जाम दी। उसके बाद हज़रत हाजी इमदादुल्लाह साहिब मुहाजिर मक्की रह. की हिदायत के मुताबिक़ ख़ानकाह इमदादिया 'थाना भवन' में रिहाइश इख़्तियार की, और उम्र की आखिरी साँस तक यहीं रहकर दीनी ख़िदमात अन्जाम देते रहे। आपका इन्तिकाल 17 रजब 1362 हिजरी (19 जौलाई 1943 ई.) में हुआ।

हज़रत थानवी रह. की किताबों की तायदाद तकरीबन एक हज़ार तक पहुँचती है, जिनमें इस्लामी उलूम और दीनी व इल्मी मौजूआत के तकरीबन हर गोशे में आपने उम्मत की रहनुमाई फ़रमाई। दो बातों पर आपका ध्यान ख़ास तौर पर रहा- एक समाज का सुधार और इस सिलसिले में इस्लामी तालीमात का प्रसार और उनको आम करना। दूसरे तसवुफ़ यानी इनसान का अपनी हकीक़त को पहचान कर दुनिया में आने और पैदा किए जाने के मक़सद को सामने रखकर उन तकाज़ों को पूरा करना जिनका उसके पैदा करने वाले और मालिक ने उससे मुतालबा किया है।

आपने उम्मत मुस्लिमा की हर-हर मैदान में रहनुमाई फ़रमाई और इस्लामी तालीमात को दुनिया के सामने उनके असली रंग में पेश किया। उम्मत के अन्दर जो बिगाड़ और ख़राबियाँ हैं आपने उनकी तरफ़ तवज्जोह दिलाई और उनके सुधार की तरफ़ ख़ास ध्यान दिया इसी लिए आपका लक़ब "हकीमुल उम्मत" मशहूर हुआ।

आप हज़रत हाजी इमदादुल्लाह साहिब मुहाजिर मक्की रह. के ख़लीफ़ा थे, मख़्लूक की रहनुमाई और बैअत की लाईन से भी आपने ज़बरदस्त ख़िदमतें अन्जाम दीं। आपके ख़लीफ़ाओं में बड़ी-बड़ी हस्तियाँ शामिल हैं, जिनमें बड़े-बड़े अल्लामा, दीनी रहनुमा, सूफ़िया और समाज सुधारक शामिल हैं।

जिन दीनी किताबों का प्रकाशन हर साल लाखों में होता है उनमें हज़रत थानवी रह. की दो किताबें पहली सफ़ में अपना दर्जा रखती हैं- बहिश्ती ज़ेवर और तर्जुमा-ए-कुरआन। ये दोनों किताबें हर साल लाखों की तायदाद में छपती हैं, और मुस्लिम कौम की दीनी रहनुमाई और हिदायत का ज़रिया बन रही हैं।

मुझे हज़रत थानवी रह. की शख़्सियत और आपकी किताबों से बचपन ही से मुनासबत और ताल्लुक रहा। मेरे उस्ताज़ मोहतरम हज़रत मौलाना कारी अब्दुल ग़फ़ूर साहिब (मोहतामिम मदरसा मसीहुल उलूम ग्रा. बिज्ञाना ज़िला मुज़फ़्फ़र नगर यू. पी.) को हज़रत थानवी रह. की किताबों ख़ास तौर पर उनके मवाज़िज़ (यानी तकरीरों) से एक तरह का इश्क़ है। मैंने होश संभाला तो अपनी बस्ती में इस मदरसे को कायम होता देखा, यही मेरी पहली दर्सगाह (शिक्षा स्थान) है। मौलाना कारी अब्दुल ग़फ़ूर साहिब के इस जौक का थोड़ा बहुत हिस्सा इस नाचीज़ को भी हासिल हुआ, और हज़रत थानवी रह. की ज्ञात व शख़्सियत से बचपन ही में एक अकीदत व मुहब्बत कायम हो गयी जो अल्हम्दु लिल्लाह दिन-ब-दिन बढ़ती ही चली गयी।

पिछले कई सालों से मुझे दीनी किताबों की प्रूफ़ रीडिंग और हिन्दी अनुवाद का मौक़ा मिलता रहा है, कई

बार मेरी ख्वाहिश हुई कि हज़रत थानवी रह. की कुछ अहम किताबों का हिन्दी में अनुवाद किया जाए ताकि हिन्दी पढ़ने और जानने वाले हज़रत भी उनसे फायदा उठा सकें।

करीब दो साल पहले की बात है कि मेरे करम-फरमा जनाब अब्दुल मुईन खाँ साहिब डायरेक्टर इस्लामिक बुक सर्विस ने नाचीज़ बन्दे से हिन्दी में तर्जुमा-ए-कुरआन छापने का इरादा ज़ाहिर किया और मुझसे फरमाइश की कि हज़रत मौलाना अशरफ अली थानवी या हज़रत मौलाना महमूदुल हसन शैखुल-हिन्द के तर्जुमों में से कोई एक तर्जुमा को हिन्दी में करने की खिदमत मैं अन्जाम दूँ। चूँकि काम अहम था इसलिए एक बार को मेरी हिम्मत नहीं हुई मगर फिर भाई अब्दुल मुईन खाँ के इसरार (जिसमें इस नाचीज़ के साथ उनका बिरादराना ताल्लुक और खुलूस शामिल था) के सबब मैंने अल्लाह का नाम लेकर काम शुरू किया और नमूने के तौर पर एक पारः करके ले गया, ताकि वह किसी माहिर और ज़िम्मेदार शख्स को दिखला कर यह तय कर लें कि हिन्दी अनुवाद में ज़बान का मेयार क्या रहे। अल्लाह का शुक्र व एहसान है कि उनको इस नाचीज़ का किया हुआ काम पसन्द आया और उन्होंने फौरन मुझे इस काम की तकमील (यानी पूरा करने) का हुक्म दिया और उसूल व ज़ाबते के तहत एक मुआहदा उसी वक़्त तैयार कराकर बन्दे को इनायत फरमाया।

तर्जुमा का काम शुरू किया तो बहुत-सी दुश्वारियों का सामना करना पड़ा। हज़रत थानवी रह. की ज़बान व तहरीर बड़ी ही नपी-तुली और इल्मी अन्दाज़ की है, उनकी तहरीर के मफहूम व मतलब को हिन्दी में मुन्तकिल करना कोई आसान बात नहीं। मैंने अपनी बिसात-भर पूरी कोशिश की है कि उनकी तहरीर का मफहूम व मतलब ज़रूर निकल आये और अल्हम्दु लिल्लाह मुझे इसमें काफी हद तक कामयाबी भी मिली है। तफसीर में कहीं-कहीं ज़बान और अन्दाज़े बयान इस क़दर इल्मी है कि पूरी कोशिश के बावजूद शायद सौ फीसद उसे आसान ज़बान में बयान करने में नाचीज़ को कामयाबी न मिली हो मगर मफहूम व मतलब को पकड़ने की भरपूर कोशिश की है, ऐसे मकामात (स्थान) चन्द ही नज़र आयेंगे। अल्लाह का शुक्र है कि यह तर्जुमा इतना आसान हो गया है कि उर्दू तर्जुमा इसके सामने मुश्किल मालूम हो सकता है मगर इससे आसानी से फायदा उठाया जा सकता है।

हज़रत थानवी रह. ने अपने तर्जुमा में मकसद व मफहूम को स्पष्ट और वाज़ेह करने के लिए ब्रेकेट को इस्तेमाल किया है, ऐसे में मुझे जहाँ यह महसूस हुआ कि यहाँ तर्जुमा का असल लफज़ बाकी रहना चाहिए या यह कि हिन्दी का जो मुतबादिल लफज़ हम इस्तेमाल कर रहे हैं वह उस उर्दू लफज़ की सौ फीसद नुमायन्दगी और तर्जुमानी नहीं करता, तो अगर हम भी वहाँ ब्रेकेट में इबारत बढ़ाते तो फिर यह पहचान करनी दुश्वार हो जाती कि कौनसी इज़ाफे वाली इबारत हज़रत थानवी रह. की है और कौनसी इबारत इस नाचीज़ (यानी हिन्दी अनुवादक) की है। इस मुश्किल को हमने इस तरह हल किया कि हज़रत थानवी रह. की ब्रेकेट वाली इबारतों को ब्रेकेट ही में रहने दिया और जहाँ कहीं इस नाचीज़ (हिन्दी अनुवादक) को इज़ाफे की ज़रूरत महसूस हुई तो तर्जुमा के अन्दर उद्धरण चिन्ह (" ") के दरमियान उस इबारत का इज़ाफ़ा किया, अब पढ़ने वाला अच्छी तरह समझ सकता है कि कौनसी इबारत हज़रत थानवी की है और कौनसा इज़ाफ़ा हिन्दी अनुवादक का। तफसीर के अन्दर चूँकि उर्दू अनुवादक (हज़रत मौलाना अशरफ अली थानवी रह.) ने ब्रेकेट का इस्तेमाल नहीं किया है, शायद ही पूरी तफसीर में दो-चार जगह हो, इसलिए तफसीर में बन्दे ने अगर कहीं किसी बात को वाज़ेह करने की ज़रूरत पेश आई है तो ब्रेकेट का इस्तेमाल किया है।

मैं बहुत आभारी हूँ जनाब प्रोफ़ेसर मुहम्मद सुलैमान साहिब (देवबन्द) और जनाब प्रोफ़ेसर अब्दुर-रशीद आगवान साहिब (देहली) का, जिन्होंने मेरे इस काम को तवज्जोह की नज़र से देखा और प्रशंसा व दुआओं और मुफीद मशिवरों के ज़रिये मेरी हिम्मत बढ़ाई। इसी तरह मुझे जनाब ख़ालिद निज़ामी साहिब (देहली) का

भी शुक्रिया अदा करना है जिन्होंने बड़ी मेहनत से इस तर्जुमा की प्रूफ रीडिंग की और अपने तजुर्बात से मुझ नाचीज़ की रहनुमाई फ़रमाई, अल्लाह तआला उनको इसका दोनों ज़हान में बेहतरीन बदला इनायत फ़रमाये। साथ ही दिल से दुआ निकलती है अपनी बच्ची ज़ैनब ख़ातून के लिए जो अगरचे अपनी उम्र की सिर्फ़ बारहवीं मन्ज़िल में है मगर अल्लाह तआला ने उसको एक ख़ास सलीके से नवाज़ा है, ग़लतियों के बनाने और प्रूफ़ रीडिंग में इस बच्ची ने भी मेरा बहुत सहयोग किया।

मैंने इस तर्जुमा को हिन्दी का रूप देने में इस बात का पूरा ख़्याल रखा कि हिन्दी के मुश्किल अल्फ़ाज़ न आने पायें बल्कि आम बोल-चाल में जो उर्दू-हिन्दी की मिली-जुली ज़बान इस्तेमाल होती है, कोशिश की है कि उसी आम बोल-चाल के स्तर की ज़बान इस्तेमाल की जाए ताकि उसको हर शख्स आसानी से समझ सके। क्योंकि उर्दू ज़बान भले ही तालीमी इदारों से नापैद होती जा रही हो, भले ही उसके लिखने-पढ़ने वालों की तायदाद में कमी आ रही हो, मगर इसकी अदायगी में आसानी, मिठास और मतलब के समझने-समझाने में असरदार होने के सबब आम बोल-चाल और मीडिया पर अस्सी फीसद तक आज भी इस ज़बान का कब्ज़ा बरकरार है।

मैं एक बार फिर अल्लाह तआला का शुक्र अदा करता हूँ जिसने मुझे अपनी पवित्र और कियामत तक रहने वाली और इनसानियत की रहनुमाई करनी वाली किताब कुरआन मजीद की इस खिदमत की तौफ़ीक़ इनायत फ़रमाई। न सिर्फ़ हिन्दी अनुवाद बल्कि इसकी कम्पोज़िंग और सैटिंग भी मेरी ही निगरानी में अन्जाम पाई और अल्हम्दु लिल्लाह मुझे खुद इसकी सैटिंग करने और तरतीब देने का मौक़ा मिला। यह काम करीब डेढ़ साल की मुद्दत में पूरा हुआ।

कुरआन पाक के अरबी मतन को किसी दूसरी ज़बान में मुन्तकिल करने के बारे में मैं अपनी राय “एक ज़रूरी तंबीह” के उन्वान में लिख चुका हूँ। कुरआन पाक के हुसूफ़ को देखना और इज़्ज़त व अदब से वुजू की हालत में छूना भी इबादत का दर्जा रखता है, ऐसे में वह फज़ीलत किसी और ज़बान में कैसे हासिल हो सकती है जो अरबी ज़बान में है। मेरी तमाम मुसलमानों से गुज़ारिश है कि कुरआन पाक की तिलावत की सआदत और अज़ीम दौलत को हासिल करने के लिए कुरआन पाक को अरबी ही में सीखें और पढ़ें, इससे हमें दोनों ज़हान की कामयाबी हासिल होगी।

इनसान अपनी कोशिश का मुक़ल्लफ़ है, हमने भी पूरी कोशिश की है कि हमारा यह काम ग़लतियों से पाक हो जाए, मगर इनसान की कोई कोशिश ग़लती से पाक नहीं हो सकती, यह मक़ाम अल्लाह तआला ने सिर्फ़ अम्बिया अलैहिमुस्सलाम को बख़्शा है कि अल्लाह तआला ख़ताओं और ग़लतियों से उनकी हिफ़ाज़त फ़रमाता है। हमने पूरी कोशिश की है कि इस हिन्दी मतन, तर्जुमा और तफ़सीर में कोई ग़लती न रहे, अगर आपकी नज़र से कोई ग़लती गुज़रे तो मेहरबानी फ़रमा कर प्रकाशक को उसकी सूचना दें ताकि अगले संस्करण में उसको दुरुस्त किया जा सके। शुक्रिया।

आख़िर में अल्लाह तआला से दुआ है कि वह हमारी इस मेहनत में इख़लास पैदा फ़रमाये और इसको कबूल फ़रमाये आमीन। इसके प्रकाशन का बन्दोबस्त करने वाले इदारे ‘इस्लामिक बुक सर्विस/समी पब्लीकेशंस प्रा. लि.’ के मालिकान, अधिकारियों और कारकुनान सभी को इसकी ख़ैर व बरकत से नवाज़े, आमीन।

मुहम्मद इमरान कासमी बिज्ञानवी (एम. ए. अलीग.)

79 महमूद नगर, गली न. 6 मुज़फ़्फ़र नगर यू. पी.

25.12.2002

कुरआन मजीद के नाज़िल होने, इकट्ठा किए जाने और तरतीब देने के हालात

जानते हो कुरआन मजीद क्या चीज़ है? एक मुकद्दस और पावेत्र किताब है जो सबसे आखिरी नबी तमाम पैगम्बरों के सरदार मुहम्मद अरबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर नाज़िल हुई। यह अर्श व कुर्सी के मालिक का कलाम है, जो उसने अपने एक सम्मानित पैगम्बर और मुकर्रम बन्दे से किया। इस्लाम की बिना इसी पाक आसमानी फ़रमान पर है। जिसने फ़रमाँबरदारी की वह इस्लाम के दायरे में दाख़िल हुआ और जिसने ज़रा भी सरकशी और नाफ़रमानी की वह उस पाकीज़ा जमाअत से ख़ारिज हो गया और अल्लाह जल्ल शानुहू के बाग़ियों में शामिल हुआ। जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उम्र शरीफ़ चालीस साल की हुई उस वक़्त आपको नुबुव्वत अता फ़रमाई गई और रिसालत का ताज आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सर पर रखा गया। उसी ज़माने से कुरआन पाक के नाज़िल होने की शुरूआत हुई। वक़्त वक़्त पर ज़रूरत के मुताबिक़ थोड़ा-थोड़ा तेईस (23) साल तक नाज़िल होता रहा। अगली किताबों की तरह पूरा एक ही बार में नाज़िल नहीं किया गया। (1)

सही यह है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नुबुव्वत के बाद रमज़ान की शबे-क़द्र में पूरा कुरआन मजीद लौहे-महफूज़ से इस आसमान पर जिसे हम देख रहे हैं, अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के हुक्म के मुताबिक़ नाज़िल हो गया और उसके बाद हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम को जिस वक़्त जिस क़द्र हुक्म हुआ उन्होंने इस मुकद्दस कलाम को बिलकुल उसी हालत में बिना किसी कमी-बेशी और बिना किसी बदलाव और अदल-बदल के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तक पहुँचा दिया। कभी दो आयतें, कभी तीन आयतें, कभी एक आयत से भी कम, कभी दस-दस आयतें, कभी-कभी पूरी-पूरी सूरतें। इसी को शरीअत में 'वह्य' कहते हैं। उलमा ने 'वह्य' के अनेक तरीक़े हदीसों से निकाल कर पेश किये हैं।

1. फ़रिश्ता 'वह्य' लेकर आये और एक आवाज़ घन्टी जैसी मालूम हो। यह कैफ़ियत बहुत-सी हदीसों से साबित है, और यह किस्म 'वह्य' की तमाम किस्मों में सख़्त थी। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बहुत तकलीफ़ होती थी, यहाँ तक कि आपने फ़रमाया कि जब कभी ऐसी 'वह्य' आती है तो मैं समझता हूँ कि अब मेरी जान निकल जायेगी।

2. फ़रिश्ता दिल में कोई बात डाल दे।

3. फ़रिश्ता आदमी की शक्ल में आकर बात-चीत करे। यह किस्म बहुत आसान थी, इसमें तकलीफ़ न होती थी।

4. अल्लाह तआला बिना किसी वास्ते के जागने की हालत में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कलाम फ़रमाये, जैसा कि शबे-मेराज में।

5. अल्लाह तआला ख़्वाब की हालत में कलाम फ़रमाए। यह किस्म भी सही हदीसों से साबित है।

1. जैसे हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर तौरात और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पर इन्जील और हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम पर ज़बूर। ये सब किताबें पूरी एक ही दफ़ा में नाज़िल हो गईं। और इसपर सबका इतिफ़ाक़ है कि ये सब किताबें रमज़ान ही के महीने में उतरतीं। (इत्फ़ाक़)

6. फरिश्ता ख़्वाब की हालत में आकर कलाम करे। मगर याद रहे कि अख़ीर की दो किस्मों (5. 6.) की 'वह्य' से कुरआन मजीद ख़ाली है। पूरा कुरआन जागने की हालत में नाज़िल हुआ। अगरचे बाज़ उलमा ने सूर: कौसर को अख़ीर की किस्म से करार दिया है मगर मुहक्किक्क उलमा ने इसको रद्द कर दिया है और उनके शुब्हे का काफी जवाब दे दिया है। (इत्क़ान)

कुरआन मजीद के थोड़ा-थोड़ा नाज़िल होने में यह भी हिक्मत थी कि उसमें बाज़ आयतें वे थीं जिनका किसी वक़्त मन्सूख़ (यानी निरस्त और रद्द) कर देना खुदा-ए-तआला को मन्ज़ूर था। कुरआन मजीद में तीन किस्म के मन्सूखात हैं। बाज़ वह जिनका हुक्म भी मन्सूख़ और तिलावत भी मन्सूख़।

मिसाल: 1. सूर: 'लम् यकुन्' में "लौ का-न लि-इब्नि आद-म वादियम् मिम्-मालिन् ल-अहब्-ब अय्यकू-न इलैहिस्-सानी, व लौ का-न लहुस्-सानी ल-अहब्-ब अय्यकू-न इलैहिमस्-सालिसु व ला यम्लउ जौफ़िन् आद-म इल्लत्-तुराबु व यतूबुल्लाहु अला मन् ता-ब" भी था।

मिसाल: 2. दुआ-ए-कनूत भी कुरआन मजीद की दो सूरतें थीं।

बाज़ वे हैं जिनकी तिलावत मन्सूख़ हो गयी मगर हुक्म बाकी है। जैसे 'आयते रज़्म' कि हुक्म उसका बाकी है मगर तिलावत उसकी नहीं होती। ये दोनों किस्में कुरआन मजीद से निकाल दी गईं और इनका लिखना भी कुरआन मजीद में जायज़ नहीं।

बाज़ वे हैं जिनकी तिलावत बाकी है मगर हुक्म मन्सूख़ हो गया है। यह किस्म कुरआन मजीद में दाख़िल है और इसकी बहुत-सी मिसालें हैं। बाज़ अल्लिमों ने मुस्तक़िल किताबें लिखकर उनको जमा किया है। तफ़सीर के फ़न में उनसे बहुत बहस होती है मगर यह मक़ाम उनकी तफ़सील का नहीं। (तफ़सीरे इत्क़ान)

जब नबी-ए-करीम हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने हकीकी मालिक से जा मिले और इस दुनिया से पर्दा फ़रमाया और वह्य के नाज़िल होने का सिलसिला बन्द हो गया, कुरआन मजीद किसी किताब में, जैसा कि आजकल है, जमा न था, विभिन्न चीज़ों पर सूरतें और आयतें लिखी हुई थीं और वे मुख़्तलिफ़ लोगों के पास थीं। अक्सर सहाबा को पूरा कुरआन मजीद ज़बानी याद था। सबसे पहले, कुरआन मजीद के इकट्ठा करने का ख़्याल हज़रत अमीरुल-मोमिनीन फ़ारुके आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु के दिल में पैदा हुआ और हक़ तआला ने उनके ज़रिये से अपने उस सच्चे वायदे को पूरा किया जो अपने पैग़म्बर से किया था, यानी यह कि कुरआन मजीद के हम हाफ़िज़ हैं, इसका जमा करना और हिफ़ाज़त करना हमारे ज़िम्मे है। यह ज़माना हज़रत अमीरुल-मोमिनीन अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िलाफ़ते राशिदा का था। हज़रत फ़ारुके आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनकी ख़िदमत में अर्ज़ किया कि कुरआन के हाफ़िज़ शहीद हो जाते हैं, और बहुत-से यमामा की लड़ाई में शहीद हो गये। मुझे डर है कि अगर यही हाल रहेगा तो बहुत बड़ा हिस्सा कुरआन मजीद का हाथ से जाता रहेगा। इसलिये मैं मुनासिब समझता हूँ कि आप इस तरफ़ तवज्जोह फ़रमाइए और कुरआन मजीद के जमा करने का एहतिमाम कीजिये। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि जो काम नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने नहीं किया उसको तुम कैसे कर सकते हो? हज़रत फ़ारुके आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया कि खुदा की क़सम! यह बहुत अच्छा काम है। फिर वक़्त वक़्त

पर हज़रत उमर फारूक रज़ियल्लाहु अन्हु इस तरफ़ तवज्जोह दिलाते रहे। यहाँ तक कि हज़रत अबू बक्र सिद्दीक रज़ियल्लाहु अन्हु के दिल में यह बात जम गयी। उन्होंने हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु को तलब किया और यह सब किस्सा बयान करके फरमाया कि कुरआन मजीद के जमा करने के लिये मैंने आपको चुना है। आप 'वह्य' के लिखने वाले थे और नेक जवान हैं। उन्होंने भी वही उज़्र किया कि जो काम नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने नहीं किया उसको आप लोग कैसे कर सकते हैं? आख़िरकार वह भी राज़ी हो गये और उन्होंने बहुत ही एहतिमाम और हद दर्जा एहतियात से कुरआन मजीद को जमा करना शुरू किया।

हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु को चुनने की वजह उलमा ने यह लिखी है कि हर साल रमज़ान में हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम से नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कुरआन मजीद का दौर किया करते थे, (1) और वफ़ात के साल में दो बार कुरआन मजीद का दौर हुआ और हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु उस अख़ीर दौरे में शरीक थे और अख़ीर दौरे के बाद फिर कोई आयत मन्सूख नहीं हुई। जिस क़द्र कुरआन उस दौरे में पढ़ा गया वह सब बाकी रहा, इसलिये उनको मन्सूख हुई आयतों का ख़ूब इल्म था। (शरहे सुन्नह)

जब कुरआन मजीद सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम के निहायत एहतिमाम से जमा हो चुका, हज़रत फारूके आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने ख़िलाफ़त के ज़माने में उसकी नज़रे-सानी की और जहाँ कहीं लिखने में ग़लती हो गयी थी उसको दुरुस्त किया। कई साल तक इस फ़िक्क में रहे और अक्सर समय सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम से मुनाज़रा भी किया। फिर जब इस एहतिमाम व पाबन्दी और एहतियात के बाद यह काम पूरा हो गया तो हज़रत फारूके आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु ने उसके पढ़ने-पढ़ाने का सख़्त एहतिमाम किया। जो सहाबा हाफ़िज़ थे उनको दूर-दराज़ मुल्कों में कुरआन व फ़िक्क (यानी मसाइल) की तालीम के लिये भेजा जिसका सिलसिला हम तक पहुँचा।

हक़ यह है कि हज़रत उमर फारूक रज़ियल्लाहु अन्हु का एहसान इस बारे में तमाम उम्मत मुहम्मदिया पर है, उन्हीं की बदौलत आज हमारे पास कुरआन मजीद मौजूद है और हम इसकी तिलावत से फ़ायदा उठाते हैं। इस एहसान का बदला किससे हो सकता है। ऐ अल्लाह! तू उनके दर्जे बुलन्द फ़रमा और उनको अपनी रिज़ा व शिक़टता का आला मक़ाम अता फ़रमा, आमीन।

फिर हज़रत उसमान रज़ियल्लाहु अन्हु ने उस एहसान को और भी कामिल कर दिया। अपने ख़िलाफ़त के ज़माने में उन्होंने कुरआन मजीद के उस नुस्खे (प्रति) की सात नक़लें कराकर दूर-दराज़ के मुल्कों में भेज दीं और किराअत (पढ़ने) के इख़्तिलाफ़ की वजह से जो फ़सादात बरपा हो रहे थे और एक-दूसरे की किराअत को ख़िलाफ़े हक़ और बातिल समझता था उन सब झगड़ों से दीने इस्लाम को पाक कर दिया। सिर्फ़ एक किराअत पर सबको मुत्तफ़िक़ कर दिया। अब अल्हन्दु लिल्लाह जैसी मज़बूत किताब मुसलमानों के पास है कोई मज़हब दुनिया में इसकी मिसाल नहीं ला सकता। इन्ज़ील व तौरात की हालत तो ख़स्ता है, उनके अन्दर वह

1. हदीस में 'मुआरज़े' का लफ़्ज़ है जिसका मतलब यह हुआ कि कभी आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उनको सुनाते थे कभी वह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सुनाते थे। (फतहुल-बारी)

तब्दीली और कमी-बेशी हुई कि अल्लाह अपनी हिफाज़त में रखे। कुरआन मजीद के बारे में मुखालिफों को भी इकरार है कि हाँ यह वही किताब है जिसके बारे में मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अल्लाह का कलाम होने का दावा फरमाया था। इसमें किसी किस्म की कमी-ज्यादती उनके बाद नहीं हुई। इसपर अल्लाह का शुक्र अदा करना चाहिए।

कुरआन मजीद में आयतों और सूरतों की तरतीब जो इस ज़माने में है यह भी सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने दी है, मगर अपनी राय और किसी अन्दाज़े से नहीं बल्कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जिस तरतीब से पढ़ते थे और जो तरतीब उस मुबारक ज़माने में थी उसके ज़रा भी ख़िलाफ़ नहीं किया। सिर्फ़ दो सूरतों की तरतीब अलबत्ता सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने अपने कियास से दी है। सूर: बराअत और सूर: अन्फ़ाल। तो यह भी यकीनन लौहे-महफूज़ के ख़िलाफ़ न होगी, जिसकी हिफाज़त की ज़िम्मेदारी अल्लाह तआला ने ली हो उसमें तरतीब भी उसकी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ नहीं हो सकती।

सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम के ज़माने में कुरआन मजीद में सूरतों के नाम, पारों के निशानात वगैरह कुछ न थे बल्कि हफ़ों पर नुक्ते भी न दिये गये थे, बल्कि बाज़ सहाबा इसको बुरा समझते थे, वे चाहते थे कि मुसहफ़ में सिवाय कुरआन के और कोई चीज़ न लिखी जाये। अब्दुल मलिक के ज़माने में अबुल-अस्वद या इमाम हसन बसरी रहमतुल्लाहि अलैहि ने इसमें नुक्ते बनाये और उसके बाद फिर खुम्स (पाँचवाँ) और उशर (दसवाँ) लिखे गये और सूरतों और पारों के नाम भी लिख दिये गये। उलमा इन सब चीज़ों के जायज़ होने पर मुत्तफ़िक़ हैं इसलिये कि ये ऐसी चीज़ें नहीं हैं जिनके कुरआन होने का शुब्हा हो, और उन चीज़ों का लिखना मना है जिनके कुरआन होने का शुब्हा पैदा हो।

कुरआन मजीद के फ़ज़ाइल और उसकी तिलावत वगैरह का सवाब

कुरआन मजीद की अज़मत, बुजुर्गी और उसकी फ़ज़ीलत और बुलन्दी के लिये इसी क़दर काफ़ी है कि वह तमाम मख़्लूक़ात के ख़ालिक व मालिक का कलाम है, तमाम ऐबों और कमियों से बरी और पाक है, ज़बान और बयान के एतिबार से इसकी बुलन्द और बेमिसाल हैसियत को तमाम अरब ने मान ली, बड़े-बड़े फ़साहत व बलाग़त के दावे करने वाले इसके जैसे दो-तीन जुमले भी वर्षों की कोशिशों में भी न बना सके। सरेआम ऐलान भी किया गया, जोश दिलाने वाले ख़िताब से कहा गया कि अगर तुम इसके खुदा का कलाम होने में शक़ करते हो और इसको इनसानी कलाम समझते हो तो तुम इसकी छोटी से छोटी सूर: के जैसी कोई इबारत बना लाओ और अपने तमाम मददगारों और सहयोगियों को जमा करो, हरगिज़ न बना सकोगे, हरगिज़ न बना सकोगे। जिन्नों की कौम ने जब इस कलाम को सुना, बेसाख़्ता कह उठे कि “इन्ना समिअ्ना कुरआनन् अ-जबा, यहदी इलर्रशिद फ-आमन्ना बिही व लन् नुशिर-क बि-रब्बिना अ-हदन्” (यानी बेशक हमने एक अजीब कुरआन सुना जो नेकी की तरफ़ हिदायत करता है, हम उसपर ईमान लाये और अपने परवर्दिगार का किसी को शरीक़ हरगिज़ न समझेंगे) खुद अल्लाह जल्ल शानुहू इस मुक़द्दस कलाम की तारीफ़ फरमाता है फिर हम लोगों की ज़बान व कलम में क्या ताक़त है कि इसकी खूबियाँ और फ़ज़ाइल का एक मामूली-सा हिस्सा भी

बयान कर सकें।

इसकी तिलावत और पढ़ने-पढ़ाने का सवाब किसी बयान का मोहताज नहीं। तमाम उलमा-ए-उम्मत मुत्तफिक हैं कि कोई जिक्र कुरआन मजीद के पढ़ने से ज्यादा सवाब नहीं रखता। इस बारे में बहुत ज्यादा हदीसे हैं, नमूने के लिये बरकत के तौर पर चन्द हदीसें नकल की जाती हैं।

1. नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि हक तआला फरमाता है कि जो कोई कुरआन मजीद के पढ़ने में मशगूल हो और दुआ या किसी दूसरे जिक्र की उसको फुरसत न मिले, मैं उसको दुआ माँगने वालों से भी ज्यादा दूँगा और कलामुल्लाह की बुजुर्गी तमाम कलामों पर ऐसी है जैसे खुदा की बुजुर्गी तमाम मख़लूक पर। (दारमी शरीफ)

2. नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि कुरआन मजीद अल्लाह तआला के नज़दीक ज्यादा महबूब है तमाम आसमानों और ज़मीनों और उन चीज़ों से जो उनमें हैं। (दारमी शरीफ)

3. नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि अगर कुरआन मजीद किसी खाल में हो तो वह खाल आग में नहीं जल सकती। (दारमी शरीफ)

खाल से मुराद मोमिन का दिल है, कि अगर उसमें कुरआन मजीद हो तो वह दोज़ख के अज़ाब से महफूज़ रहेगा।

4. नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रिवायत किया गया है कि तीन किस्म के लोगों को कियामत में ख़ौफ न होगा, न उनसे हिसाब लिया जायेगा, और उन तीन में से कुरआन मजीद पढ़ने वाले को आपने बयान फरमाया। (दारमी शरीफ)

5. नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक बार अपने खुतबे में फरमाया कि ऐ लोगो! मैं भी एक आदमी हूँ करीब है कि मेरे रब की तरफ से कोई मुझको बुलाने आये और मैं चला जाऊँ। मैं तुममें दो बहुत कीमती और बड़ाई वाली चीज़ें छोड़े जाता हूँ- एक खुदा की मुकद्दस किताब, इसमें हिदायत व नूर है, पस तुम लोग अल्लाह की किताब को मज़बूत पकड़ लो और उसपर अमल करो। (रिवायत करने वाले कहते हैं कि फिर आपने लोगों को इसपर बहुत रग़बत दिलाई)। दूसरे मेरे अहले-बैत हैं, (यानी घर वाले और आल-औलाद), तुमको खुदा का ख़ौफ याद दिलाता हूँ अपने अहले-बैत के हुक्क की रियायत करने में। (दारमी शरीफ)

6. कुरआन मजीद की तिलावत के वक़्त फरिश्ते और रहमत नाज़िल होते हैं। बुख़ारी शरीफ़ में हज़रत उसैद बिन हज़ीर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि एक रात को वह सूरः ब-करः पढ़ रहे थे और उनका घोड़ा करीब ही बँधा हुआ था, वह भड़कने लगा। वह चुप हो गये, घोड़े को भी सुकून हो गया। फिर उन्होंने पढ़ना शुरू किया, फिर उसकी वही हालत हुई। फिर उन्होंने पढ़ना शुरू किया फिर उसकी वही हालत हुई। तब उन्होंने तिलावत बन्द कर दी, इस ख़्याल से कि उनके साहिबज़ादे यह्या करीब ही थे, कहीं घोड़ा ज्यादा भड़के और वह कुचल न जायें। सुबह को यह वाकिआ हज़रत नबी-ए-करीम की ख़िदमत में अर्ज़ किया, आपने फरमाया, ऐ इब्ने हज़ीर! पढ़े जाओ, ऐ इब्ने हज़ीर! पढ़े जाओ। तब उन्होंने अपना वह ख़ौफ उज़्र में पेश किया और कहा कि तिलावत ख़त्म करने के बाद मैंने सर उठाकर देखा तो बादल का एक टुकड़ा था जिसमें चिराग़

रोशन थे। यहाँ तक कि वह मेरी नज़र से गायब हो गया। हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया, जानते हो यह क्या चीज़ थी? उन्होंने अर्ज़ किया कि नहीं! आपने फरमाया कि ये फरिश्ते थे, तुम्हारी किराअत की वजह से नज़दीक आ गये थे। अगर तुम पढ़े जाते तो वे फरिश्ते तुम्हारे पास आ जाते और सुबह को सब लोग उनको देखते। इसी किस्म का वाकिआ कई सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम को कुरआन मजीद के पढ़ने के वक़्त पेश आया जो सही हदीसों में बयान किया गया है। कई किस्से तो बुख़ारी शरीफ़ में हैं।

7. नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रिवायत किया गया है कि हसद की इजाज़त नहीं मगर दो शख्सों पर- एक वह जो कुरआन मजीद पढ़ता हो और वह उसकी तिलावत में रातों को मशगूल रहता हो। दूसरे वह जिसको अल्लाह तआला ने माल दिया हो और वह उसको दिन-रात अल्लाह की राह में खर्च करता हो। (बुख़ारी शरीफ़)

इस हदीस में हसद से मुराद रश्क करना है। दोनों में फर्क यह है कि किसी शख्स की नेमत के ख़त्म हो जाने की ख्वाहिश करना हसद है, और उस नेमत की अपने लिये ख्वाहिश करना बग़ैर इसके कि दूसरे शख्स से ख़त्म हो, यह रश्क है। रश्क करना मुतूलकन जायज़ है, हसद मुतूलकन नाजायज़। इस हदीस में रश्क करने की इजाज़त सिर्फ़ इन्हीं दोनों चीज़ों में मुन्हसिर (सीमित) करना मकसूद नहीं बल्कि मतलब यह है कि कोई नेमत इन दोनों नेमतों से बढ़कर नहीं, जिसके हासिल होने की ख्वाहिश की जाये।

8. हज़रत अबू सालेह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया गया है कि कुरआन मजीद अपने पढ़ने वालों की कियामत में सिफ़ारिश करेगा। पस उसको बुजुर्गी का लिबास पहनाया जायेगा। फिर कुरआन मजीद कहेगा कि ऐ अल्लाह! और ज़्यादा इसके ऊपर इनाम फरमा, तब उसको बुजुर्गी का ताज पहनाया जायेगा। फिर कहेगा ऐ अल्लाह! और ज़्यादा दे, यहाँ तक कि अल्लाह तआला अपनी रज़ामन्दी का परवाना उस शख्स को अता फरमायेगा। (दारमी शरीफ़)

9. जो शख्स अच्छी तरह कुरआन मजीद पढ़े और उसके हलाल को हलाल और हराम को हराम जाने, अल्लाह तआला उसको जन्नत में दाख़िल फरमायेगा और उसके दस अज़ीज़ों (रिश्तेदारों) के हक़ में जो दोज़ख़ के मुस्तहिक होंगे, उसकी सिफ़ारिश कबूल फरमायेगा। (तिर्मिज़ी, इब्ने माजा)

10. नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि कुरआन मजीद पढ़ने से हर हर्फ़ के बदले में दस नेकियाँ मिलती हैं। मैं नहीं कहता कि 'अलिफ़, लाम, मीम,' एक हर्फ़ है, बल्कि 'अलिफ़' एक हर्फ़ है, 'लाम' एक हर्फ़ है, 'मीम' एक हर्फ़ है। (दारमी शरीफ़)

मकसद यह है कि सिर्फ़ 'अलिफ़-लाम-मीम' कहने से तीस नेकियाँ मिलती हैं। अल्लाहु अकबर।

11. नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि तुम सबमें बेहतर वह शख्स है जिसने कुरआन मजीद को पढ़ा और पढ़ाया। यह हदीस अबू अब्दुर्रहमान ने हज़रत उसमान रज़ियल्लाहु अन्हु से सुनकर कुरआन मजीद पढ़ाना शुरू किया। हज़रत उसमान रज़ियल्लाहु अन्हु के ख़िलाफ़त के वक़्त से हज्जाज के ज़माने तक पढ़ाते रहे और फरमाते थे कि इसी हदीस ने मुझे इस जगह बिठला दिया है कि कुरआन पढ़ाने में मशगूल हूँ। (बुख़ारी शरीफ़, दारमी शरीफ़)

12. हज़रत अबू हुदैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जो शख्स अपने लड़के को कुरआन की तालीम करता है, हक़ तआला उसको कियामत में जन्नत का एक ताज पहनायेगा। (तिबरानी)

13. मुआज़ इब्ने अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जो शख्स अच्छी तरह कुरआन पढ़े और उसपर अमल करे, कियामत के दिन उसके माँ-बाप को एक ताज पहनाया जायेगा जिसकी रोशनी सूरज की रोशनी से कहीं ज़्यादा होगी। फिर क्या कहना उस शख्स का जिसने पढ़ा और अमल किया। (अबू दाऊद)

14. अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि यह कुरआन अल्लाह का नेमत-ख़ाना है, इससे लो जिस कद्र ले सको, मेरे नज़दीक उस घर से ज़्यादा बेबरकत कोई मक़ाम नहीं जिस घर में खुदा की किताब न हो, और बेशक वह दिल जिसमें कुछ भी कुरआन न हो एक वीरान घर है जिसमें कोई रहने वाला नहीं। (दारमी शरीफ़)

15. नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जो शख्स कुरआन मजीद याद करके भूल जाये वह कियामत के दिन कोढ़ी होगा। (बुख़ारी शरीफ़) अल्लाह अपनी पनाह में रखे।

16. ख़ालिद बिन मअदान रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जो शख्स कुरआन मजीद पढ़े उसको इकहरा सवाब मिलेगा और जो उसको सुने उसको दोहरा सवाब मिलेगा। (दारमी शरीफ़) इसी हदीस से उलमा ने यह बात निकाली है कि कुरआन मजीद के सुनने में पढ़ने से भी ज़्यादा सवाब है। (कबीरी)

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को भी बहुत पसन्दीदा था कि कोई दूसरा शख्स कुरआन मजीद पढ़े और आप सुनें। एक बार अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से इर्शाद हुआ कि तुम पढ़कर मुझको सुनाओ। उन्होंने कहा कि मैं आपको सुनाऊँ? आप ही पर नाज़िल हुआ है। इर्शाद हुआ कि मुझे अच्छा मालूम होता है कि किसी दूसरे से सुनूँ। अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने सूर: निसा पढ़ना शुरू की यहाँ तक कि इस आयत पर पहुँचे: “फ़कै-फ़ इज़ा जिअना मिन् कुल्लि उम्मतिल् बि-शहीदिन्-व जिअना बि-क अला हा-उला-इ शहीदा” (1) हुज़ुरे पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया बस बस। इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैंने देखा कि आपकी मुबारक आँखों से आँसू बह रहे थे।

(बुख़ारी शरीफ़, दारमी शरीफ़) (2)

हज़रत फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु जब कभी हज़रत अबू मूसा रज़ियल्लाहु अन्हु को देखते तो फ़रमाते कि ऐ मूसा! हमको अपने प्रवर्दिगार की याद दिलाओ। वह कुरआन पढ़ना शुरू कर देते। (दारमी शरीफ़)

यह अबू मूसा रज़ियल्लाहु अन्हु बहुत अच्छी आवाज़ के मालिक थे। कुरआन मजीद बहुत अच्छा पढ़ते थे। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनके पढ़ने की बहुत तारीफ़ फ़रमाई है।

(1) तर्जुमा: क्या हाल होगा उस वक़्त जब हम हर उम्मत के लिये उनमें से एक गवाह निकालेंगे और उन लोगों पर तुमको गवाह बनायेंगे। यह ज़िक्र कियामत का है कि उस दिन खुदा तआला हर उम्मत पर उनके पैग़म्बर को गवाह बनायेगा और हम लोगों पर हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को।

(2) हुज़ुर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम शायद इस सबब से रोये कि इस आयत में आपके गवाह बनाने का ज़िक्र है और आपको अपनी उम्मत के तमाम अच्छे-बुरे हालात बयान करने पड़ेंगे, और उम्मत की बुराई आपको नागवार है। इसके अलावा आपकी आदत भी थी कि कुरआन मजीद के पढ़ने में अक्सर रोया करते थे।

इसी तरह कुरआन मजीद की खास-खास सूरतों की फज़ीलतें भी सही हदीसों में बहुत आई हैं। मुख्तसर तौर पर चन्द हदीसों नक़ल की जाती हैं।

सूर: फ़ातिहा के बारे में हदीसों में आया है कि 'सब्अे-मसानी' और 'कुरआने अज़ीम' यही है। (बुख़ारी शरीफ़) (1) ऐसी सूर: किसी नबी पर नहीं नाज़िल हुई। (मुस्तद्रक)

सूर: ब-कर: के हक़ में आया है कि जिस घर में यह सूर: पढ़ी जाये वहाँ से शैतान भाग जाता है। (तिर्मिज़ी शरीफ़) उसको पढ़ो बरक़त होगी वरना हसरत होगी। (मुस्लिम शरीफ़) दो तरोताज़ा चीज़ों को पढ़ा करो, सूर: ब-कर: और सूर: आलि इमरान। ये दोनों कियामत में अपने पढ़ने वालों की शफ़ाअत करेंगी और खुदा तआला से झगड़ा करके उसको बख़्शवायेंगी। **आयतुल-कुर्सी** तमाम कुरआनी आयतों की बुजुर्ग और सरदार है। (मुस्लिम शरीफ़) सूर: ब-कर: के आख़िर की दो आयतें जिस घर में पढ़ी जायें तीन दिन तक शैतान उस घर के करीब नहीं जाता। (तिर्मिज़ी शरीफ़)

सूर: अन्आम जब उतरी तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तस्बीह पढ़ी और फ़रमाया कि इस क़द्र फ़रिश्ते उसके साथ थे कि आसमान के किनारे भर गये। (मुस्तद्रक, हाकिम)

सूर: कहफ़ जुमा के दिन जो शख़्स पढ़े उसके लिये एक नूर होगा दूसरे जुमा तक। (मुस्तद्रक) उसके लिये नूर होगा कियामत के दिन। (हिस्ने हसीन)

सूर: यासीन कुरआन मजीद का दिल है। जो कोई शख़्स इसको खुदा के लिये पढ़े वह बख़्श दिया जायेगा, इसको अपने मुर्दों पर पढ़ो। (मुस्तद्रक, हाकिम)

सूर: फ़तह मुझको तमाम चीज़ों से ज़्यादा महबूब है। (बुख़ारी शरीफ़)

सूर: मुल्क ने एक शख़्स की सिफ़ारिश की यहाँ तक कि बख़्श दिया गया। (सिहाहे-सित्ता) यह अपने पढ़ने वालों के लिये मग़फ़िरत की दुआ करती है यहाँ तक कि वह बख़्श दिया जायेगा। (इब्ने हब्बान)

मैं चाहता हूँ कि यह सूर: हर मोमिन के दिल में रहे। (मुस्तद्रक, हाकिम) यह सूर: अपने पढ़ने वाले को कब्र के अज़ाब से बचाती है। जो इसको रात को पढ़ ले उसने बहुत नेकी की और अच्छा काम किया।

(मुस्तद्रक)

सूर: ज़िज़ाल आधे कुरआन के बराबर सवाब रखती है। (तिर्मिज़ी शरीफ़)

सूर: काफ़िरून में चौथाई कुरआन के बराबर सवाब है। (तिर्मिज़ी शरीफ़)

सूर: नम्र का सवाब चौथाई कुरआन का सवाब है। (बुख़ारी शरीफ़) एक शख़्स इस सूर: को हर नमाज़ में पढ़ा करते थे, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि उनसे कह दो कि अल्लाह उनको दोस्त रखता है। (बुख़ारी शरीफ़) उसकी मुहब्बत तुमको जन्नत में दाख़िल करेगी। (बुख़ारी शरीफ़)

एक शख़्स को यह सूर: पढ़ते हुए आपने सुना तो फ़रमाया कि जन्नत ज़रूरी होगी। (तिर्मिज़ी शरीफ़)

सूर: फलक और **सूर: नास** अल्लाह तआला के नज़दीक ज़्यादा महबूब हैं। (मुस्तद्रक) इससे बढ़कर कोई

(1) कुरआन मजीद में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से ख़िताब है कि हमने तुमको 'सब्अे-मसानी' और 'कुरआने अज़ीम' इनायत फ़रमाया है। उसी को आपने फ़रमा दिया कि सबअे-मसानी और कुरआने अज़ीम से यही सूर: मुराद है।

दुआ या इस्तिगफार नहीं है। (निसाई शरीफ) यानी यह बहुत आला दर्जे की दुआ है और इसके पढ़ने से तमाम बलाओं से नजात मिलती है। जब से ये दोनों सूरते नाजिल हुईं नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इन्हीं को विद कर लिया और दूसरी दुआएँ जो जिन्न और हसद वगैरह के शर और बुराई से बचने के लिए पढ़ते थे, छोड़ दीं। (तिर्मिजी शरीफ)

कुरआन मजीद तमाम जिस्मानी और रुहानी बीमारियों की दवा है। अल्लाह तआला फरमाता है “शिफाउव्व-व रस्मतुल् लिल्-मुअ्मिनी-न, व शिफाउल्-लिमा फिस्सुदूरि”। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि अगर कोई सच्चे दिल से कुरआन मजीद पढ़े तो पहाड़ भी हिल जाये। अल्लामा सुयूती इत्कान में लिखते हैं कि कुरआन मजीद रुहानी तिब (दवा और इलाज) है बशर्ते कि नेक लोगों की ज़बान से अदा हो। अल्लाह के हुक्म से हर बीमारी और रोग की शिफा इससे हासिल होती है, मगर चूँकि नेक लोग कम हैं और हर किसी की ज़बान में असर नहीं होता इसलिये लोगों ने जिस्मानी तिब की तरफ रुजू किया।

खास-खास सूरतों के ख्वास भी सही हदीसों में बहुत आये हैं, सैकड़ों मरीजों को इससे शिफा हुई है, हजारों बलायें इससे दूर हुई हैं।

बुखारी शरीफ में अनेक तरीकों से रिवायत किया गया है कि एक शख्स को साँप ने काट लिया था, कुछ सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम वहाँ सफर की हालत में उतरे हुए थे। उन लोगों ने आकर कहा कि यहाँ के सरदार को साँप ने काट लिया है, आप लोगों में अगर कोई झाड़ते हों तो चलें। उनमें से एक सहाबी चले गये और उन्होंने सूरः फातिहा पढ़कर फूँक दी, वह अच्छा हो गया।

कश्ती पर सवार होते वक़्त “बिस्मिल्लाहि मन्रेहा व मुरसाहा इन्-न रब्बी ल-गफूरु-रहीम” पढ़ लेने से कश्ती डूबने से महफूज़ रहती है। (इत्कान)

“कुलिद्भुल्ला-ह अविद्भुर्-रस्मा-न” आखिर सूरः तक पढ़ लेने से चोरी से अमान होता है। (इत्कान)

रात को जिस वक़्त उठना मन्ज़ूर हो सोते वक़्त सूरः कस्फ का आखिरी हिस्सा पढ़ ले, उस वक़्त ज़रूर आँख खुल जायेगी। इस हदीस के एक रिवायत करने वाले कहते हैं कि यह मेरा आजमाया हुआ है। (इत्कान)

“कुलिल्लाहुम्-म मालिकल् मुल्कि तुअ्तिल्-मुल्-क.....बिगैरि हिसाब” तक पढ़ लेना कर्ज़ की अदायगी के लिये मुफ़ीद है। (इत्कान) यह आयत इस नाचीज़ बन्दे की आजमाई हुई है मगर मुझे एक खास तरीका इसके पढ़ने का बतलाया गया है, वह यह कि नमाज़ के बाद शुरू व आखिर में तीन-तीन बार दुख्द शरीफ पढ़कर सात बार यह आयत पढ़े। वाकई बहुत जल्द अपना असर दिखाती है। चालीस दिन भी नहीं गुज़रने पाते कि असर ज़ाहिर होने लगता है।

“रब्बि हब्-ली मिल्लदुन्-क ज़ुर्रियतन् तय्यि-बतन्” जिस औरत के लड़का न होता हो, चालीस दिन तक पढ़ने से कामयाब हो जाती है, यह भी मेरे सामने कई मर्तबा आजमाई गई है।

कुरआन मजीद के फ़ज़ाइल और उसके पढ़ने-पढ़ाने का सवाब मुख्तसर तौर पर बयान हो चुका। ग़ालिबन इस क़द्र सवाब व फ़ज़ीलत मालूम करने के बाद फिर कोई मुसलमान ज़ुर्रत नहीं कर सकता कि कुरआन मजीद की तिलावत और इसके पढ़ने-पढ़ाने से ग़फ़लत करे।

ऐ अल्लाह! ऐ अर्श व कुर्सी के मालिक! ऐ तौरात, ज़बूर, इन्जील और कुरआन को नाज़िल करने वाले! ऐ कुरआन को तमाम किताबों पर फज़ीलत देने वाले, ऐ नेमत देने वाले! अपने फज़ल व करम, अपनी रहमते कामिला और करम के सदके में हम सब मुसलमानों को इस अपनी मुकद्दस किताब से फ़ैज़याब फरमा। इसकी तिलावत की हमें तौफीक दे, हमारे आमाल व अफ़आल को इसके मुवाफ़िक़ कर, कियामत के दिन जब हमारे बुरे आमाल हमें दोज़ख़ का मुस्तहिक़ बना दें तो कुरआन मजीद को हमारा सिफ़ारिशी कर और कुरआन पढ़ने वालों के सदके में हमें बख़्श दे, आमीन। कितना खुशनसीब है वह शख्स जिसको हर दिन कुरआन मजीद की ज़ियारत और तिलावत नसीब होती हो। सो उस नेक बन्दे पर फ़िदा होना पसन्दीदा जानें जिसका वज़ीफ़ा ऐसी मुकद्दस किताब हो, बेशक़ इन्शा-अल्लाह तआला उन लोगों की यह उम्मीद पूरी होगी जिसको अल्लामा शातबी अपने इन शे'रों में ज़ाहिर फरमाते हैं:

ल-अल्-ल इलाहल्-अर्शि या इख़्बती यकी

जमा-अ-तना कुल्लल्-मकारिहि हुव्वला

व यज़अलुना मिम्-मय्यकूनु किताबुहू

शफ़ीअन् लहू इज़् मा नसूहु फियम्हला

तर्जुमा: उम्मीद है कि ऐ भाइयो! अर्श व कुर्सी का मालिक हमारी जमाअत को तमाम बुराइयों और ख़ौफ़ की चीज़ों से बचा ले, और हमको उन लोगों में शामिल फरमाये जिनके लिये उसकी मुकद्दस किताब कियामत के दिन शफ़ाअत करेगी। इसलिये कि हमने उसकी मुकद्दस किताब को भुलाया नहीं जो वह नाख़ुश होकर हमसे कुछ बुराई करे। आख़िरी जुमले में उस हदीस की तरफ़ इशारा है जिसका मज़मून यह है कि जो लोग कुरआन मजीद से ग़फ़लत करते हैं कुरआन मजीद उनको दोज़ख़ में भिजवायेगा। जमाअत से मुराद वे लोग हैं जो कुरआन मजीद पढ़ते हैं और उसके उलूम हासिल करते हैं।

यह भी जान लेना चाहिए कि कुरआन मजीद की तिलावत का सवाब इसपर मौकूफ़ नहीं कि उसके मायने समझकर तिलावत की जाये, जो शख्स अरबी ज़बान न जानता हो, कुरआन के मायने न समझ सकता हो उसको भी कुरआन मजीद की तिलावत का सवाब मिलेगा और वह भी इस आम फ़ैज़ से महरूम न रहेगा, इसलिये कि कुरआन मजीद के अल्फ़ाज़ भी तासीर और फ़ायदे से ख़ाली नहीं हैं। (1) यह दूसरी बात है कि अगर मायने समझकर तिलावत की जाये तो ज़्यादा सवाब मिलेगा।

(1) शेख़ अब्दुल-हक़ मुहद्दिस देहलवी ने 'शरह स-फ़रुस्-सआदत' के दीबाचे में लिखा है कि मैंने इस किताब में दुआ व अज़कार का तर्जुमा नहीं किया इसलिये कि इनके असल अल्फ़ाज़ में ख़ासियत है, मायने मालूम हों या न हों, अगरचे मायने मालूम हो जाने से एक किस्म की खुशी और ताज़गी हासिल हो जाती है। पस कुरआन मजीद जो तमाम ज़िक्रों से अफ़ज़ल है इसके अल्फ़ाज़ तासीर व फ़ैज़ से कैसे ख़ाली रह सकते हैं?।

कुरआन मजीद की तिलावत वगैरह के आदाब

जब कुरआन मजीद के फ़ज़ाइल मालूम हो चुके और उसकी अज़मत दिल में बैठ गई तो यह बात काबिले बयान न रही कि इसकी ताज़ीम व अदब में किस दर्जा कोशिश करनी चाहिये और इसके पढ़ने और सुनने में कैसा अदब और एहतिमाम पेशे नज़र रखना चाहिये। मगर चन्द ज़रूरी और मुफ़ीद बातें हम बयान किये देते हैं।

सही यह है कि कुरआन मजीद की तिलावत और पढ़ने के लिये किसी उस्ताद से इजाज़त लेना या उसको सुनाना शर्त नहीं, हाँ इस कदर ज़रूरी है कि कुरआन मजीद सही पढ़ता हो, अगर इतनी काबलियत अपने में न देखे तो उसको ज़रूरी है कि किसी उस्ताद को सुना दे या उससे पढ़ ले। (इत्क़ान)

यह भी शर्त नहीं है कि कुरआन मजीद के मायने समझ लेता हो, और अगर कुरआन मजीद में ऐराब (यानी ज़ेर, ज़बर, पेश वगैरह) न हों तब भी उसके सही ऐराब पढ़ लेने पर कादिर हो। (1)

सही यह है कि कुरआन मजीद की तिलावत की नेमत सिर्फ़ इनसान को दी गयी है, शयातीन वगैरह इसकी तिलावत पर कादिर नहीं, बल्कि फ़रिश्तों को भी यह नेमत नसीब नहीं हुई, वे भी इस आरज़ू में रहते हैं कि कोई इनसान तिलावत करे और वे सुनें। हाँ मोमिनीन जिनको अलबत्ता यह नेमत नसीब है और वे कुरआन की तिलावत पर कादिर हैं। (इत्क़ान)

शायद इससे हज़रत जिबराईल अलैहिस्सलाम अलग हों, इसलिये कि उनके बारे में हदीस में आया है कि हर रमज़ान में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कुरआन मजीद का दौर किया करते थे और हाफ़िज़ इब्ने हज़्र अस्कलानी ने फतहुल्-बारी में इसका खुलासा किया है कि कभी वह पढ़ते थे और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सुनते थे और कभी आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पढ़ते थे और वह सुनते थे। और अल्लाह ही को ख़ूब इल्म है।

बेहतर यह है कि किब्ला की तरफ़ रुख़ करके पाक-साफ़ निहायत अदब से किसी पाकीज़ा जंगह पर बैठकर कुरआन मजीद पढ़ा जाये, सबसे बेहतर इस काम के लिये मस्जिद है। जो लोग हर वक़्त या अक्सर वक़्त इसकी तिलावत में मशगूल रहना चाहें उनके लिये हर हाल में कुरआन मजीद पढ़ना बेहतर है, लेते हों या बैठे हों, वुजू के साथ हों या बे-वुजू हों। हाँ मगर नापाकी की हालत में न पढ़ना चाहिये।

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की कैफ़ियत बयान फरमाती हैं कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हर हाल में तिलावत फरमाया करते थे, वुजू की हालत में भी, बे-वुजू भी, हाँ अलबत्ता नापाकी की हालत में न करते थे।

कुरआन मजीद की तिलावत के लिए एक ख़ास वक़्त मुक़र्रर कर लेना भी दुरुस्त है। अक्सर सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम फज़्र की नमाज़ के बाद कुरआन मजीद पढ़ा करते थे। वक़्त मुक़र्रर कर लेने में नागा भी नहीं होता।

(1) अल्लामा सुयूती वगैरह की इबारत से यह मुद्दा बाख़ूबी जाहिर है और इस शर्त की कोई वजह भी नहीं मालूम होती। इन सब के अलावा अगर यह शर्त लगाई जाए तो तिलावत बिल्कुल ही बन्द हो जायेगी। और अल्लाह ही ख़ूब जानते हैं।

सुन्नत यह है कि पढ़ने वाला शुरू करने से पहले “अऊजु बिल्लाहि मिनशैतानिर्रजीम, बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम” पढ़ ले। और अगर पढ़ने के दरमियान में कोई दुनियावी बात करे तो उसके बाद फिर इस अमल को दोहरा ले।

कुरआन मजीद की तिलावत ज़बानी पढ़ने के मुकाबले में मुसहफ़ में देखकर ज़्यादा सवाब रखती है इसलिये कि वहाँ दो इबादतें होती हैं- एक तिलावत, दूसरे मुसहफ़ शरीफ़ की ज़ियारत। (1)

कुरआन मजीद पढ़ने की हालत में कोई कलाम करना या और किसी ऐसे काम में मसरूफ़ होना जो दिल को दूसरी तरफ़ मुतवज्जह कर दे, मक्रूह है। कुरआन मजीद पढ़ते वक़्त अपने को पूरी तरह उसी तरफ़ मुतवज्जह कर दे, न यह कि ज़बान से अल्फ़ाज़ जारी हों और दिल में इधर-उधर के ख़्यालात।

कुरआन मजीद की हर सूरः के शुरू में ‘बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम’ कह लेना मुस्तहब है मगर सूरः बराअत के शुरू पर बिस्मिल्लाह न पढ़ना चाहिये।

बेहतर यह है कि कुरआन मजीद की सूरतों को उसी तरतीब से पढ़े जिस तरतीब से मुसहफ़ शरीफ़ में लिखी हैं, हाँ बच्चों के लिये आसानी की गरज़ से सूरतों का तरतीब के ख़िलाफ़ पढ़ाना, जैसा कि आजकल पारः अम्-म य-तसा-अलून में दस्तूर है, बिना किसी कराहत के जायज़ है। (दुर्रै मुख़्तार) और आयतों का तरतीब के ख़िलाफ़ पढ़ना सबके नज़दीक मना है। (इत्क़ान)

कुरआन मजीद की मुख़्तलिफ़ सूरतों की आयतों को एक साथ मिलाकर पढ़ने को उलमा ने मक्रूह लिखा है, इस वजह से कि हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु को आपने इससे मना फ़रमाया था। (इत्क़ान वग़ैरह)

मगर मेरे ख़्याल में यह कराहत उस वक़्त होगी जब उन आयतों की तिलावत सवाब की गरज़ से हो, इसलिये कि झाड़-फूँक के वास्ते मुख़्तलिफ़ आयतों का एक साथ पढ़ना नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और उनके सहाबा से सही तौर पर नक़ल किया गया है। और हर एक आयत के ख़्वास अलग-अलग हैं, इसलिये जो ख़्वास असर हमें मतलूब है वह जिन-जिन आयतों में होगा हमको उनका पढ़ना ज़रूरी है।

कुरआन मजीद ख़ूब अच्छी आवाज़ के साथ पढ़ना चाहिये जिससे जिस क़द्र भी हो सके। सही हदीसों में आया है कि आँ हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जो शख्स कुरआन मजीद अच्छी आवाज़ से न पढ़े वह हममें से नहीं है। (दारमी शरीफ़) मगर जिसकी आवाज़ ही अच्छी न हो वह मजबूर है और किराअत (2) के कायदों की पाबन्दी से कुरआन मजीद पढ़ना चाहिये। और इसपर तमाम उलमा का इत्तिफ़ाक़ है कि कुरआन मजीद को राग से पढ़ना और उसको गाने की तरह गाना मक्रूह तहरीमी है।

कुरआन मजीद ठहर-ठहर कर पढ़े बहुत तेज़ी से पढ़ना सब उलमा के नज़दीक मक्रूह है। (3)

(1) अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती रहमतुल्लाहि अलैहि ने इत्क़ान में चन्द मरफूअ हदीसों भी इस बारे में नक़ल की हैं। जैसे यह कि मुसहफ़ में बेदेखे तिलावत करने से एक हज़ार दर्जा सवाब मिलता है और देखकर पढ़ने से दो हज़ार दर्जा।

(2) यह (यानी किराअत) एक मुस्तक़िल फ़न है जिसमें कुरआन मजीद के पढ़ने के कायदे बयान किये जाते हैं और उन मुख़्तलिफ़ किराअतों का ज़िक्र होता है जिनमें कुरआन नाज़िल हुआ। इस फ़न में बहुत-सी किताबें हैं, मगर हक़ यह है कि उस्ताद के बग़ैर नहीं आता।

(3) ऐसी तेज़ी और जल्दबाज़ी कि जिससे अल्फ़ाज़ के समझने में दिक्कत हो मक्रूह है। ठहर-ठहर कर पढ़ने में असर भी ज़्यादा होता है, इसीलिये अज़मी (यानी ग़ैर-अरबी) लोग जो कुरआन मजीद के मायने नहीं समझे उनको भी ठहर-ठहर कर पढ़ना मुफीद है। (इत्क़ान)

अफ़सोस! हमारे ज़माने में कुरआन मजीद की सख़्त बे-अदबी होती है, पढ़ने में ऐसी तेज़ी की जाती है कि सिवाय बाज़-बाज़ अल्फ़ाज़ के और कुछ समझ में नहीं आता। तरावीह में अक्सर हाफ़िज़ों को ऐसा ही देखा गया। खुदा जाने उनपर किसने ज़बरदस्ती की जो ये तरावीह पढ़ने आये, इससे बेहतर होता कि ऐसे हज़रात न पढ़ते, कुरआन मजीद की बे-अदबी तो न होती।

जो शख्स कुरआन मजीद के मायने समझ सकता हो उसको कुरआन मजीद पढ़ते वक़्त उसके मायनों पर ग़ौर करना और हर मज़मून के मुवाफ़िक़ अपने में उसका असर ज़ाहिर करना मसनून है। जैसे जब कोई ऐसी आयत पढ़े जिसमें अल्लाह की रहमत का ज़िक्र हो तो रहमत माँगे, और अज़ाब का ज़िक्र हो तो उससे पनाह माँगे। कोई जवाब-तलब मज़मून हो तो उसका जवाब दे। जैसे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सूर: वत्तीनि के आख़िर में पहुँचते तो “बला व अ-न अला ज़ालि-क मिनशशाहिदी-न” पढ़ लेते। (1) (तिर्मिज़ी शरीफ़)

या सूर: कियामह के आख़िर में जब पहुँचते तो फ़रमाते “बला” (तिर्मिज़ी शरीफ़)। सूर: फातिहा को जब ख़त्म करते तो आमीन कहते, लेकिन यह जवाब देना या दुआ माँगना उस वक़्त मसनून है कि कुरआन मजीद फ़र्ज़ नमाज़ में या तरावीह में न पढ़ा जाता हो, अगर फ़र्ज़ नमाज़ या तरावीह में पढ़ा जाता हो तो फिर जवाब न देना चाहिये। (रद्दुल्-मुस्तार)

कुरआन मजीद पढ़ने की हालत में रोना मुस्तहब है। अगर रोना न आये तो अपनी संगदिली पर रन्ज व अफ़सोस करे।

सूर: वज्जुहा के बाद से अख़ीर तक हर सूर: के ख़त्म होने के बाद “अल्लाहु अकबर” कहना मुस्तहब (अच्छा और पसन्दीदा) है। कुरआन मजीद ख़त्म होने के बाद दुआ माँगना मुस्तहब है। इसलिये कि आँ हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रिवायत किया गया है कि हर ख़त्म के बाद दुआ मकबूल होती है। (इत्क़ान)

कुरआन मजीद ख़त्म करते वक़्त सूर: इज़्लास को तीन बार पढ़ना मुतअख़िबरीन (बाद के उलमा) के नज़दीक बेहतर है, बशर्ते कि कुरआन मजीद नमाज़ से बाहर पढ़ा जाये।

जब एक बार कुरआन मजीद ख़त्म कर चुके तो मसनून है कि फ़ौरन दूसरा शुरू कर दे, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रिवायत किया गया है कि अल्लाह तआला के नज़दीक बहुत ही महबूब है कि जब कुरआन एक मर्तबा ख़त्म हो जाये तो दूसरा शुरू कर दिया जाये और दूसरे को सिर्फ़ “उलाइ-क हुमुल् मुफ़िलहून” तक पहुँचाकर छोड़ दे, उसके बाद दुआ वग़ैरह माँगे। इसी तरह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सही हदीसों में रिवायत किया गया है।

जहाँ कुरआन मजीद पढ़ा जाता हो वहाँ सब लोगों को चाहिये कि पूरी तरह उसी तरफ़ मुतवज्जह रहें। किसी दूसरे काम में, जो सुनने में हर्ज पैदा करने वाला हो, मशगूल न हों, इसलिये कि कुरआन मजीद का सुनना फ़र्ज़ है। हाँ अगर हाज़िरीन को कोई ज़रूरी काम हो जिसकी वजह से वे उस तरफ़ मुतवज्जह न हो सकें तो पढ़ने वाले को चाहिये कि आहिस्ता आवाज़ से पढ़े, और अगर ऐसी हालत में बुलन्द आवाज़ से पढ़ेगा तो गुनाह उसी पर होगा।

अगर कोई लड़का कुरआन मजीद बुलन्द आवाज़ से पढ़ रहा हो और लोग अपने ज़रूरी कामों में मशगूल हों तो कुछ हर्ज नहीं, इसलिये कि शरीअत में तंगी नहीं है। अगर लड़का आहिस्ता आवाज़ से पढ़े तो आदतनू याद नहीं होता। (रद्दुल्-मुस्तार)

(1) हाँ, और हम इसपर गवाह हैं। चूँकि इस सूर: के अख़ीर में हक़ तआला पूछता है कि क्या हम सब हाकिमों के हाकिम नहीं हैं? इसलिये उसके जवाब में यह जुमला अर्ज़ किया गया।

सुनने वालों को तमाम उन बातों की रियायत करनी चाहिये जो ऊपर जिक्र हुई हैं, सिवाय “अअज़ू बिल्लाहि और बिस्मिल्लाह के।

अगर कोई शख्स अच्छी आवाज़ वाला हो, कुरआन अच्छा पढ़ता हो, उससे कुरआन मजीद पढ़ने की दरख्वास्त करना मसनून है। नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से कुरआन सुनाने की फरमाइश की, हज़रत फारुके आजम अबू मूसा अश्शरी से दरख्वास्त फरमाया करते थे, रज़ियल्लाहु अन्हुमा।

सज्दा-ए-तिलावत का बयान

सज्दा-ए-तिलावत के वाजिब होने के तीन सबब हैं:

1. सज्दे वाली आयत की तिलावत, चाहे पूरी आयत की तिलावत की जाये या सिर्फ उस लफ़्ज़ की जिसमें सज्दा है और उसके साथ पहले या बाद का कोई लफ़्ज़, और चाहे सज्दे की आयत के असल अल्फ़ाज़ के साथ तिलावत की जाये या उसका तर्जुमा किसी और ज़बान में, और चाहे तिलावत करने वाला खुद अपनी तिलावत को सुने या न सुने, जैसे कोई बहरा तिलावत करे। सही यह है कि अगर रुकूअ या सज्दे या तशह्हुद (यानी अतूतहिय्यात पढ़ने की हालत) में सज्दे की आयत तिलावत की जाये तब भी सज्दा वाजिब हो जायेगा और उसी हालत में उसकी भी नीयत कर ली जायेगी। (रददुल-मुह्तार)

अगर कोई शख्स सोने की हालत में सज्दा की आयत तिलावत करे उसपर भी इत्तिला मिलने के बाद सज्दा वाजिब है।

2. आयते सज्दा का किसी इनसान से सुनना, चाहे पूरी आयत सुने या सिर्फ लफ़्ज़े सज्दा मय एक लफ़्ज़ उसके पहले या उसके बाद के, और चाहे अरबी ज़बान में सुने या और किसी ज़बान में, और चाहे सुनने वाला यह जानता हो कि यह तर्जुमा आयते सज्दा का है या न जानता हो, लेकिन न जानने से सज्दा अदा करने में जिस क़द्र ताख़ीर और देरी होगी उसमें वह माज़ूर समझा जायेगा। (फ़तावा आलमगीरी)

किसी जानवर से जैसे तोते वगैरह से अगर आयते सज्दा सुनी जाये तो सही यह है कि सज्दा वाजिब न होगा, इसी तरह अगर किसी ऐसे मजन्नू से आयते सज्दा सुनी जाये जिसका जुनून यानी पागलपन एक दिन रात से ज़्यादा हो जाये और ख़त्म न हो तो सज्दा वाजिब न होगा।

3. ऐसे शख्स की इक्तिदा करना (यानी नमाज़ में उसकी पैरवी करना) जिसने आयते सज्दा की तिलावत की हो कि चाहे उसकी इक्तिदा से पहले या इक्तिदा के बाद, और चाहे उसने ऐसी आहिस्ता आवाज़ से तिलावत की हो कि किसी मुक़्तदी ने न सुना हो या बुलन्द आवाज़ से की हो। अगर कोई शख्स किसी इमाम से आयते सज्दा सुने उसके बाद उसकी इक्तिदा करे तो उसको इमाम के साथ सज्दा करना चाहिये और अगर इमाम सज्दा कर चुका हो तो उसमें दो सूरतें हैं- जिस रक़अत में इमाम ने आयते सज्दा की तिलावत की हो वही रक़अत उसको अगर मिल जाये तो उसको सज्दे की ज़रूरत नहीं, उस रक़अत के मिल जाने से समझा जायेगा कि वह सज्दा भी मिल गया। और अगर वह रक़अत न मिले तो फिर उसको नमाज़ पूरी करने के बाद

नमाज़ से बाहर सज्दा करना वाजिब है। (बहरूर-राइक, रद्दुल-मुस्तार)

मुक्तदी से अगर सज्दे की आयत सुनी जाये तो सज्दा वाजिब न होगा, न उसपर न इमाम पर, न उन लोगों पर जो उस नमाज़ में शरीक हैं। हाँ जो लोग उस नमाज़ में शरीक नहीं, चाहे वे लोग नमाज़ ही न पढ़ते हों या कोई दूसरी नमाज़ पढ़ रहे हों तो उनपर सज्दा वाजिब होगा। (रद्दुल-मुस्तार)

ये तीन सबब जो सज्दे के वाजिब होने के बयान किये गये इनके सिवा किसी और चीज़ से सज्दा वाजिब नहीं होता, जैसे कोई शख्स आयते सज्दा लिखे या दिल में पढ़े, ज़बान से न कहे, या एक-एक हर्फ़ करके पूरी पढ़े, पूरी आयत एक दम न पढ़े, या इसी तरह किसी से सुने तो उन सब सूरतों में सज्दा वाजिब न होगा।

(रद्दुल-मुस्तार)

(1) सज्दा-ए-तिलावत उन्हीं लोगों पर वाजिब है जिनपर नमाज़ वाजिब है। हैज़ वाली (माहवारी की हालत में होने वाली औरत) और निफ़ास वाली (यानी ज़च्चा होने की हालत वाली) औरत पर वाजिब नहीं, न उस वक़्त और न बाद में उसकी कज़ा की ज़रूरत है। नाबालिग़ पर और ऐसे मजन्नों पर वाजिब नहीं जिसका जुनून एक दिन रात से ज़्यादा हो गया, चाहे उसके बाद ख़त्म हो या नहीं। जिस मजन्नों का जुनून एक दिन रात से कम रहे उसपर वाजिब है, इसी तरह मस्त और नापाकी की हालत में होने वाले पर भी।

(2) सज्दा-ए-तिलावत के सही होने की वही सब शर्तें हैं जो नमाज़ के सही होने की हैं, यानी तहारत (पाकी) और सतूरे औरत (यानी वह हिस्सा जिसका छुपाना ज़रूरी है जो मर्द के लिए नाफ़ से घुटनों तक और औरत के लिए हाथ, पाँव और चेहरे के अलावा पूरा बदन है) और नीयत और किब्ला की तरफ़ रुख़ होना। तकबीरे तहरीमा उसमें शर्त नहीं। उसकी नीयत में आयत का मुतैयन करना शर्त नहीं कि यह सज्दा फ़लाँ आयत के सबब से है। और अगर नमाज़ में आयते सज्दा पढ़ी जाये और फ़ौरन सज्दा किया जाये तो नीयत भी शर्त नहीं। (रद्दुल-मुस्तार)

(3) जिन चीज़ों से नमाज़ फ़ासिद हो जाती है उन चीज़ों से सज्दा-ए-तिलावत में भी फ़साद आ जाता है और फिर उसका लौटाना वाजिब हो जाता है, हाँ इस क़द्र फ़र्क़ है कि नमाज़ में क़त्क़हा मारकर हँसने से जुजू जाता रहता है और इसमें क़त्क़हा मारने से जुजू नहीं जाता, और औरत के मुक़ाबिल होने से भी यहाँ कोई ख़राबी नहीं आती।

(4) सज्दा-ए-तिलावत अगर नमाज़ से बाहर वाजिब हुआ हो तो बेहतर है कि फ़ौरन अदा कर ले और अगर उस वक़्त अदा न करे तब भी जायज़ है मगर मक्ख़ुहे तन्ज़ीही है। और अगर नमाज़ में वाजिब हुआ हो तो उसका अदा करना फ़ौरन वाजिब है, देर करने की इजाज़त नहीं। (रद्दुल-मुस्तार)

(5) नमाज़ से बाहर वाजिब हुआ सज्दा नमाज़ में और नमाज़ में वाजिब हुआ सज्दा नमाज़ से बाहर बल्कि दूसरी नमाज़ में भी अदा नहीं किया जा सकता। पस अगर कोई शख्स नमाज़ में आयते सज्दा पढ़े और सज्दा करना भूल जाये तो उसका गुनाह उसके ज़िम्मे होगा जिसकी तदबीर इसके सिवा कोई नहीं कि तौबा करे, अरूहमुर्-राहिमीन अपने फ़ज़ल व करम से माफ़ फ़रमा देगा। (बहरूर-राइक)

नमाज़ का सज्दा नमाज़ से बाहर उस वक़्त अदा नहीं हो सकता जबकि नमाज़ फ़ासिद न हो, अगर

नमाज़ फ़ासिद हो जाये और उसका फ़ासिद करने वाला हैज़ (यानी माहवारी) का आना न हो तो वह सज्दा ख़ारिज में यानी नमाज़ से बाहर अदा कर लिया जाये। और अगर हैज़ की वजह से नमाज़ में फ़साद आया हो तो वह सज्दा माफ़ हो जाता है। (बहरूर-राइक, दुर्रे मुख्तार वग़ैरह)

(6) अगर कोई शख्स नमाज़ की हालत में किसी दूसरे से आयते सज्दा सुने, चाहे वह दूसरा भी नमाज़ में हो तो यह सज्दा नमाज़ से बाहर का समझा जायेगा और नमाज़ के अन्दर वह अदा न किया जायेगा बल्कि नमाज़ से बाहर अदा किया जाएगा।

(7) अगर एक आयते सज्दा की तिलावत एक ही मज्लिस में कई बार की जाये तो एक ही सज्दा वाजिब होगा। और एक आयते सज्दा की तिलावत की जाये फिर वही आयत मुख़्तलिफ़ लोगों से सुनी जाये तब भी एक ही सज्दा वाजिब होगा। अगर सुनने वाले की मज्लिस न बदले तो एक ही सज्दा वाजिब होगा चाहे पढ़ने वाले की मज्लिस बदल जाये या न बदले। अगर सुनने वाले की मज्लिस बदल जाए तो उसपर भी मज्लिस बदलने के एतिबार से अलग-अलग सज्दे वाजिब होंगे, चाहे पढ़ने वाले की मज्लिस बदले या न बदले। और अगर पढ़ने वाले की मज्लिस बदल जायेगी तो उसपर भी मज्लिस के एतिबार से अलग-अलग सज्दे वाजिब होंगे। (बहरूर-राइक)

(8) अगर एक आयते सज्दा कई मर्तबा एक ही मज्लिस में पढ़ी जाये तो इख़्तियार है कि सबके बाद सज्दा किया जाये या पहली ही तिलावत के बाद, क्योंकि एक ही सज्दा अपने से पहले और बाद में की जाने वाली तिलावत के लिये काफी है, मगर एहतियात इसमें है कि सबके बाद किया जाये। (बहरूर-राइक)

अगर आयते सज्दा नमाज़ में पढ़ी जाये और फ़ौरन रुकूअ किया जाये या दो तीन आयतों के बाद, और रुकूअ में झुकते वक़्त सज्दा-ए-तिलावत की भी नीयत कर ली जाये तो सज्दा अदा हो जायेगा। और इसी तरह अगर आयते सज्दा की तिलावत के बाद नमाज़ का सज्दा किया जाये तब भी यह सज्दा अदा हो जायेगा और उसमें नीयत की भी ज़रूरत न होगी। (दुर्रे मुख्तार, रद्दुल-मुह्तार वग़ैरह)

(9) जुमा और ईदों और आहिस्ता आवाज़ की नमाज़ों में आयते सज्दा न पढ़ना चाहिये, इसलिये कि सज्दा करने में मुक़्तदियों के शुब्हे में पढ़ने का ख़ौफ़ है। (बहरूर-राइक)

(10) किसी सूरः का पढ़ना और ख़ासकर आयते सज्दा को छोड़ देना मक्रूह है। (बहरूर-राइक)

(11) अगर हाज़िरीन वुजू के साथ सज्दे के लिये मुस्तैद न बैठे हों तो आयते सज्दा का आहिस्ता आवाज़ से तिलावत करना बेहतर है, इसलिये कि वे लोग उस वक़्त सज्दा न करेंगे और दूसरे वक़्त शायद भूल जायें तो गुनाहगार होंगे। (दुर्रे मुख्तार)

सज्दा-ए-तिलावत का तरीका

सज्दा-ए-तिलावत का तरीका यह है कि किब्ला-रू होकर नीयत करके 'अल्लाहु अकबर' कहे और सज्दा करे, फिर उठते वक़्त 'अल्लाहु अकबर' कहकर उठे और खड़े होकर सज्दा करना मुस्तहब है। सज्दा-ए-तिलावत कई आदमी मिलकर भी कर सकते हैं, इस तरह कि एक शख्स को इमाम की तरह आगे खड़ा करें और खुद मुक़्तदियों की तरह सफ़ बाँधकर पीछे खड़े हों और उसकी पैरवी करें। यह सूरत हकीकत

में जमाअत की नहीं है, इसी लिये अगर इमाम का सज्दा किसी वजह से फासिद हो जाये तो मुक्तदियों का सज्दा फासिद न होगा, और इसी सबब से औरत का आगे खड़ा कर देना भी जायज़ है।

आयते सज्दा अगर फर्ज नमाज़ों में पढ़ी जाये तो उसके सज्दे में नमाज़ के सज्दे की तरह 'सुब्हा-न रब्बियल अज़ल' कहना बेहतर है, और नफ़िल नमाज़ों में या नमाज़ से बाहर अगर पढ़ी जाये तो उसके सज्दे में इख़्तियार है कि 'सुब्हा-न रब्बियल अज़ल' कहें या और तस्बीहें जो हदीसों में आई हैं वे पढ़ें, जैसे यह तस्बीह "स-ज-द वज्ही लिल्लज़ी ख़-ल-कहू व सब्ब-रहू व शक्-क सम्अहू व ब-स-रहू बिहौलिही व कुव्वतिही फ-तबा-रकल्लाहु अह्सनुलु-ख़ालिकीन" और दोनों को जमा कर लें तो और भी बेहतर है।

उलमा ने लिखा है कि अगर कोई शख्स सज्दे की तमाम आयतों को एक ही मज्लिस में तिलावत करे तो हक़ तआला उसकी मुश्किल को दूर फरमाता है। और ऐसी हालत में इख़्तियार है कि सब आयतें एक दफ़ा पढ़ ले और उसके बाद चौदह सज्दे करे, या हर आयत को पढ़कर उसका सज्दा करता जाये। (रद्दुल-मुह्तार)

रुमूज़े औकाफे कुरआन मजीद

हर एक ज़बान के अहले ज़बान जब गुफ़्तगू करते हैं तो कहीं ठहर जाते हैं कहीं नहीं ठहरते, कहीं कम ठहरते हैं कहीं ज़्यादा। और उस ठहरने और न ठहरने को बात के सही बयान करने और उसका सही मतलब समझने में बहुत दख़ल है। कुरआन मजीद की इबारत भी गुफ़्तगू के अन्दाज़ में है इसी लिये आलिमों ने इसके ठहरने न ठहरने की निशानियाँ मुकर्रर कर दी हैं, जिनको "रुमूज़े औकाफे कुरआन मजीद" कहते हैं। ज़रूरी है कि कुरआन मजीद की तिलावत करने वाले इन रुमूज़ का पूरा ख़्याल रखें। रुमूज़े औकाफे कुरआन मजीद की तायदाद तकरीबन पन्द्रह है, लेकिन चूँकि हमने उनमें से सिर्फ़ दो चीज़ों की निशानियाँ मुकर्रर की हैं इसलिए उन्हीं का बयान किया जाता है।

वक्फ़े लाज़िम: वक्फ़े लाज़िम का एक निशान है उसपर ज़रूर ठहरना चाहिये, अगर न ठहरा जाये तो अन्देशा है कि मतलब कुछ-का-कुछ हो जाये। इसकी मिसाल हिन्दी में यूँ समझनी चाहिये कि जैसे किसी को यह कहना हो कि: उठो, मत बैठो। जिसमें उठने का हुक्म और बैठने की मनाही है। तो 'उठो' पर ठहरना लाज़िम और ज़रूरी है, अगर ठहरा न जाये तो 'उठो मत बैठो' हो जायेगा। जिसमें उठने की मनाही और बैठने के हुक्म का एहतिमाल और अन्देशा है। यानी सामने वाला इससे यह भी समझ सकता है कि उठने की मनाही की जा रही है। और अगर ऐसा हो जाए तो यह कहने वाले के मतलब और मन्शा के खिलाफ़ हो जायेगा। अरबी में इसकी निशानी (◌) यह हर्फ़ है, हमने पढ़ने वालों की सहूलत के लिए अरबी के हिन्दी मतन में (✱) यह निशानी मुकर्रर की है।

निशान सज्दा: कुरआन पाक में चौदह स्थान ऐसे हैं जहाँ सज्दा करने का हुक्म है और वहाँ सज्दा करना लाज़िमी है। सज्दा से मुताल्लिक़ मसाइल और उसका तरीक़ा हमने इस मुकद्दिमा के पृष्ठ 19-22 पर बयान किया है वहाँ तफ़सील देख लें। इसी तरह सज्दों के स्थानों की एक सूचि पृष्ठ 24 पर दी गयी है। हमने सज्दा के स्थान को बताने के लिए यह निशान (□ सज्दा) मुकर्रर किया है।



आयत नम्बर: जहाँ बात पूरी हो जाती है वहाँ (अरबी मतन में) एक गोल दायरा बना देते हैं। यह पूरी तरह ठहरने की अलामत (निशानी) है। इसको आयत कहते हैं। हमने पढ़ने वालों की आसानी और सहूलत के लिए ब्रेकेट के अन्दर आयत का नम्बर लिख दिया है। इसपर ठहरना चाहिये।

निशान रुकूअ: यह (❖) रुकूअ का निशान है। अगर हाशिए पर ऐसा निशान लगा है तो इसका मतलब है कि रुकूअ का निशान है। इसमें जो संख्याओं की तरतीब है वह कुरआन पाक में जो रुकूअ के निशान लगे हैं उन्हीं के मुताबिक है। जैसे (❖ रु. 12/3/10) इस तरह लिखा है तो इसका मतलब है कि वह उस सूरः का बारहवाँ रुकूअ है और उसके अन्दर तीन आयतें हैं और वह उस पारः का दसवाँ रुकूअ है।

निशान रुबूअ: हर पारः को उलमा ने चार हिस्सों में बाँट दिया है। उनमें से पहले हिस्से को रुबूअ 1/4 यानी चौथाई कहते हैं। उसके लिए हमने यह निशान (◆ रुबूअ 1/4) मुकर्रर किया है।

निशान निस्फ: हर पारः को उलमा ने चार हिस्सों में बाँट दिया है। जहाँ आधा पारः हो जाता है उसको निस्फ कहते हैं। आधे की निशानी के लिए हमने यह निशान (● निस्फ 1/2) मुकर्रर किया है।

निशान सलासह: हर पारः को उलमा ने चार हिस्सों में बाँट दिया है। जहाँ पारः का तीन चौथाई हिस्सा मुकम्मल हो गया है वहाँ हमने यह निशान (▲ सलासः 3/4) मुकर्रर किया है।

निशान आधा कुरआन: हफ़ों की तायदाद के एतिबार से जहाँ कुरआन आधा हुआ है वहाँ हमने अरबी मतन में यह (⊙) निशान लगाया है। इसको पारः 15 में सूरः कटफ की आयत 19 में देखा जा सकता है।

कुरआन मजीद की मन्ज़िलें

क्रम. सं.	सूरः	सूरः सं.	पृष्ठ सं.	पारः सं.	नाम पारः
1	फ़ातिहः	1	1- 190		अलिफ-लाम्-मीम्
2	मा-इदः	5	192- 371	6	ला युहिबुल्लाहु
3	यूनुस	10	373- 507	11	यअतज़िरु-न
4	बनी इस्राईल	17	509- 659	15	सुब्हानल्लज़ी
5	शु-अरा-इ	26	661- 801	19	व कालल्लज़ी-न
6	वस्साफ़ात	37	803- 931	23	व मा लि-य
7	काफ	50	933- 1111	26	हा-मीम

कुरआन मजीद में सज्दा-ए-तिलावत के स्थान

क्रम. सं.	पार:	सूर:	सज्दे वाले शब्द	सज्दे का स्थान	पृष्ठ सं.	आयत सं.
1	9	सूर: आराफ़	यसजुदून	यसजुदून	317	206
2	13	सूर: रअद	व लिल्लाहि यसजुदु	वल-आसाल	451	15
3	14	सूर: नह्ल	व लिल्लाहि यसजुदु	मा युअमरून	491	49-50
4	15	सूर: बनी इस्त्राईल	यख़िर्स्-न लिल् अज़्कानि सुज्ज-दन्	खुशूआ	529	107-109
5	16	सूर: मरियम	ख़र्स् सुज्जदन्	व बुकिय्या	557	58
6	17	सूर: हज	यसजुदु लहू	मा यशा-उ	603	18
7	17	सूर: हज ¹	वसजुदू	तुफ़िलहून	615	77
8	19	सूर: फुरकान	उसजुदू	नुफूरा	651	60
9	19	सूर: नम्ल	अल्ला यसजुदू	रब्बिद्-अर्शिल् अज़ीम	683	25-26
10	21	सूर: सज्दा	ख़र्स् सुज्जदन्	ला यस्तक़बिरून	751	15
11	23	सूर: सौद ²	व ख़र्-र राकिअन्	व अनाब	819	24
12	24	सूर: हा-मीम सज्दा	वसजुदू लिल्लाहि	ला यसअमून	865	37-38
13	27	सूर: नज्म	फसजुदू	वअबुदू	951	62
14	30	सूर: इन्शिकाक	ला यसजुदून	ला यसजुदून	1083	21
15	30	सूर: अलक	वसजुद्	वक्तरिब्	1099	19

1. 2. इन दो सज्दों में मतभेद है। सूर: 22 आयत 77 पर इमाम शाफई रहमतुल्लाहि अलैहि के नज़दीक सज्दा है लेकिन इमाम अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाहि अलैहि के नज़दीक नहीं है। और सूर: 38 आयत 24 पर इमाम अबू हनीफ़ा के नज़दीक सज्दा है लेकिन इमाम शाफई के नज़दीक नहीं है। वहरहाल दोनों इमामों के नज़दीक सज्दों की कुल तायदाद 14 ही है।

कुरआन मजीद को कितने समय में खत्म किया जाए

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि जिसने तीन दिन से कम में कुरआन मजीद खत्म किया वह कुछ न समझ सका। इमाम अबू हनीफा से नकल किया गया है कि जिसने हर साल में दो बार कुरआन मजीद खत्म किया उसने हक अदा किया। इसलिये कि हज़रत नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी वफ़ात (इन्तिकाल) के साल में दो ही बार कुरआन खत्म किया था। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि उस इबादत में कुछ बेहतरी नहीं है जिसमें समझ न हो, औ न उस किराअत (पढ़ने) में जिसमें फ़िक्र (सोच-समझ) न हो। इमाम ग़ज़ाली रहमतुल्लाहि अलैहि फरमाते हैं कि अपने आपको कुरआन मजीद के खत्म करने की गिनती पर हावी न करो, बल्कि एक आयत का सोचकर पढ़ना सारी रात में दो कुरआन खत्म करने से बेहतर है।

हज़रत अबूज़र ग़िफ़ारी रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि एक बार नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हमारे साथ खड़े हुए तो आप यह आयत बड़ी देर तक पढ़ते रहे:

“इन तुअज़िज़हुम फ-इन्नुहुम् अ़िबादु-क”

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझे पाँच दिन से कम समय में पूरा कुरआन मजीद खत्म करने की इजाज़त नहीं दी।

ज़रूरी तंबीह

कुरआन मजीद के मतन को अरबी के अलावा हिन्दी या किसी दूसरी भाषा के रस्मुलख़त (लिपि) में रुपान्तर करने पर उलमा की रायों में मतभेद है। कुछ उलमा का ख़्याल है कि इस तरह करने से कुरआन मजीद के हफ़ों की तहरीफ़ (कमी-बेशी) होती है और उनको भय (डर) है कि जिस तरह इन्जील और तौरात तहरीफ़ का शिकार हो गईं वैसे ही खुदा न करे इसका भी वही हाल हो, जबकि यह नामुम्किन है। करोड़ों हाफ़िज़ों को कुरआन मजीद ज़बानी याद है।

इस सिलसिले में नाचीज़ भुहम्मद इमरान कासमी बिज्ञानवी (इस कुरआन का हिन्दी अनुवादक) अर्ज करता है कि हकीकत यह है कि अरबी रस्मुलख़त के अलावा दूसरी भाषा में कुरआन मजीद को कतई तौर पर सौ फ़ीसद सही नहीं पढ़ा जा सकता। इसलिए कि हफ़ों की बनावट के एतिबार से भी किसी दूसरी भाषा में यह गुन्जाइश नहीं कि वह अरबी ज़बान के तमाम हुरूफ़ का मुतबादिल (विकल्प) पेश कर सके। फिर अगर किसी तरह कोई निशानी मुक़र्रर करके इस कमी को पूरा करने की कोशिश भी की जाए तो ‘मख़ारिजे हुरूफ़’ यानी हुरूफ़ के निकालने का जो तरीका और इल्म है वह उस वैकल्पिक तरीके से हासिल नहीं किया जा सकता। जबकि यह सबको मालूम है कि सिर्फ़ अल्फ़ाज़ के निकालने में फ़र्क़ होने से अरबी ज़बान में मायने बदल जाते हैं। मैं यहाँ सिर्फ़ तीन मिसालें बयान करके अपनी बात की ताईद पेश करूँगा:

(1) कुरआन पाक में एक लफ़ज़ जगह-जगह आता है “अलीम”। इस लफ़ज़ में अगर “अ” को हलक़ के अगले हिस्से से निकाला जाए तो इसके मायने होंगे “तकलीफ़ देने वाला” जैसे ‘अज़ाबुन् अलीम’ यानी

तकलीफ देने वाला अज़ाब। और अगर इस लफ़्ज़ को हलक़ के दरमियानी हिस्से से निकाला जाए यानी “अ” तो अब “अलीम” के मायने होंगे “जानने वाला”।

(2) कुरआन पाक में “असा” का लफ़्ज़ आया है। यह दो तरह लिखा है- एक “अैन, सीन और या” के साथ। “सीन” को ज़बान की नोक और दाँतों के अगले किनारे से निकाला जाता है तो उस सूरत में इसके मायने होंगे “उम्मीद है, शायद”। और दूसरे “अैन, सॉद और या” के साथ, “सॉद” को ज़बान की नोक और अगले दाँतों के बीच से निकाला जाता है। अब “असा” के मायने होंगे “नाफ़रमानी की, ग़लती की”।

(3) तीसरी मिसाल यह है कि कुरआन पाक में “मुन्-ज़रून” का लफ़्ज़ भी कई जगह आया है। यह भी दो तरह लिखा जाता है- एक “मीम, नून, ज़ाल, रा और नून” से, और दूसरे “मीम, नून, ज़ोए, रा और नून” के साथ, यानी दोनों में एक हर्फ़ का फ़र्क़ है, एक तरफ़ “ज़ाल” है और दूसरी तरफ़ “ज़ोए” है। यह फ़र्क़ भी और इस लफ़्ज़ के निकालने और अदा करने का तरीका भी क़िराअत का इल्म पढ़े और सीखे बग़ैर नहीं आ सकता। “ज़ाल” ज़बान की नोक और दाँतों के अगले किनारों से अदा किया जाता है। और “ज़ोए” को भी इसी स्थान से निकाला जाता है मगर जो माहिर हैं वह इसको अलग अन्दाज़ से अदा करने की मशक़ कराते हैं। अब जिस लफ़्ज़ में “ज़ाल” है, उसके मायने हैं “जिन लोगों को डराया गया हो” और जिस लफ़्ज़ में “ज़ोए” है उसके मायने हैं “जिसको मोहलत दी गयी हो, जिसको छोड़ दिया गया हो”।

इन मिसालों के बाद यह बात अच्छी तरह स्पष्ट हो जाती है कि जब तक अरबी के हुरूफ़ की सही पहचान और उनकी अदायगी का सही तरीका नहीं सीखा जाएगा उस वक़्त तक कुरआन पाक की सही तिलावत मुम्किन नहीं। और यह सिर्फ़ और सिर्फ़ कुरआन मजीद को अरबी ज़बान के अन्दर सीखने से आ सकता है, किसी दूसरी ज़बान के ज़रीए इसको सीख पाना तैराकी का फ़न पानी से बाहर सीखने वाली बात होगी। अब सवाल यह पैदा होता है कि हमने यह सब जानते हुए अरबी मतन को हिन्दी में तब्दील करने की कोशिश क्यों की? सो इसका एक जवाब तो यह है कि आपके अन्दर इस चीज़ का शौक पैदा करने के लिए कि आप इस अज़ीम दौलत को हासिल करने की कोशिश करें और आपको इस तरफ़ तवज्जोह हो। दूसरी बात यह है कि अरबी ज़बान में एक मिठास है और फिर कुरआन तो तमाम ज़हानों के ख़ालिक व मालिक का कलाम है इसके अन्दर तो एक कुदरती कशिश भी है जो अपनी तरफ़ खींचे बग़ैर नहीं रहती, इसलिए हो सकता है किसी अल्लाह के बन्दे के कुरआन सीखने का यही ज़रिया बन जाए।

अगर आप मेरी इस बात से इत्तिफ़ाक़ न करें कि कुरआन पाक को अरबी के अज़ावा सही नहीं पढ़ा जा सकता तो मैं आपको इसकी आजमाइश का भी एक तरीका बतलाता हूँ। वह यह कि आप हिन्दी या किसी और ज़बान में मतन तब्दील शुदा कुरआन खोलकर बैठें और किसी अच्छे कारी के पढ़े हुए कुरआन की कैसिट लें और उसी जगह से उसको चलाएँ जहाँ आप कुरआन पाक में कोई मक़ाम खोले बैठे हैं, फिर जो आवाज़ उस रिकार्ड से निकलती जाए उसको अल्फ़ाज़ पर फिट करते जाएँ और देखें कि क्या मैं इस लिखी हुई इबारत को इस तरह अदा कर सकता हूँ? और जो हुरूफ़ ज़बान से निकल रहे हैं क्या मैं उनके इस तरह निकालने पर कादिर हूँ? देखने में तो “स” एक हर्फ़ है मगर अरबी के तीन हर्फ़ों की नुमायन्दगी करता है।

बहरहाल इस अर्ज करने का मकसद यह है कि आप सिर्फ इस भरोसे पर न बैठ जाएँ कि हम अरबी के अलावा दूसरी भाषाओं में जो कुरआन पाक पढ़ते हैं वह सही तौर पर अदा हो जाता है, बल्कि डर है कि किसी जगह ऐसा न हो जाए कि मायने ही बदल जाएँ और बजाय सवाब के गुनाह के हकदार बन जाएँ। अल्लाह तआला इस से हमारी हिफाजत फरमाए और हमें कुरआन को हासिल करने और उसको पढ़ने और उसपर अमल करने की तौफीक नसीब फरमाए, आमीन।

कुरआन मजीद की सूरतों की ख़ासियतें और असरात

अगर कोई यह अक़ीदा रखे कि कुरआन अमलियात और तावीज़ों के लिये नाज़िल हुआ है तो यह जहालत और बड़ा गुनाह है। क्योंकि कुरआन हकीकत में खुदा के हुक्क जो लोगों पर हैं और साथ ही लोगों के जो आपस में एक-दूसरे पर हुक्क हैं और उनके अदा करने या न करने के सबब जो परिणाम दुनिया में और मरने के बाद सामने आयेंगे उन सबके बयान के लिये खुदा की तरफ से नाज़िल हुआ है। मगर इसके साथ ही बहुत-सी आयतों और सूरतों को रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, सहाबा-ए-किराम और बुजुर्गाने दीन अमलियात के तौर पर मुसीबतों के दूर करने के लिये भी पढ़ते थे जिनकी बरकत से वह मुसीबत दूर हो जाती थी, मगर जो शख्स किसी मतलब के लिये कोई अमल पढ़ता हो और असबाब की दुनिया के तकाज़े के मुताबिक ज़ाहिरी कोशिश न करता हो तो वह यकीनन नाकाम होगा, क्योंकि उसकी मिसाल एक ऐसे बीमार के जैसी होगी जो दवा खाता हो मगर परहेज़ न करता हो, बल्कि अमल पढ़ने का यह मतलब होता है कि अमल की वजह से ज़ाहिरी कोशिश नाकाम न रहे। अब आगे हम सूरतों के ख़्वास (ख़ासियतें और असरात) लिखते हैं जो रसूले करीम की हदीसों, सहाबा-ए-किराम के आसार और नक्शबन्दी, चिशितया, कादिरिया और सह्रवरदिया ख़ानदान के बुजुर्गों के तजुर्बों के मुताबिक हैं, और उन सब बुजुर्गाने दीन का तजुर्बा है कि जिस आयत के मज़मून को जिस काम से मुनासबत पाई जाये तो वह आयत उस काम के लिये अमल के तौर पर पढ़ी जा सकती है। जैसे कुरआन में हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के बारे में ज़िक्र है कि उन्होंने दुआ की “का-ल रब्बिशरह ली सद्री व यस्सिर ली अम्नी, वस्तुल उक्द-तम् मिल्लिसानी, यफ़कहू कौली”

तर्जुमा: मूसा अलैहिस्सलाम ने (फिरऔन को हिदायत की तरफ बुलाने के लिए जाते वक़्त) कहा ऐ खुदा! मेरे सीने को खोल और मेरे काम को मेरे लिये आसान कर और मेरी ज़बान की गिरह खोल (ताकि बयान में सफ़ाई हो) और वे लोग मेरी बात को समझें।

इस आयत को हर शख्स मुश्किल कामों की आसानी के लिये पढ़ सकता है और इस मतलब के लिये पढ़ सकता है कि उसकी ज़बान में तासीर हो ताकि दूसरे लोग उसकी बात और फैसले को मान लें। और अपने ज़ेहन व अक्ल के बढ़ने के लिये पढ़ सकता है। और तथा सूर: नूह में जहाँ हज़रत नूह ने कुप्फ़ार की तबाही के लिये दुआ की है कि ऐ खुदा! किसी काफ़िर को ज़मीन पर ज़िन्दा न छोड़, इन आयतों को दुश्मन की तबाही के लिये पढ़ सकता है।

कुरआन के अमल के मामले में वक़्त का निश्चित करना और पढ़ने की तायदाद की कैद नहीं है, बल्कि

हर शख्स को चाहिये कि वह खुद इशा, या सुबह की नमाज़ के बाद, या कोई और वक़्त मुक़र्रर करके, और पढ़ने की तायदाद भी अपनी तरफ़ से कायम करके पढ़ा करे, अव्वल व आख़िर में दुरुद हो और हर चीज़ को पाक रखे। मगर यह बात तजुर्वी से साबित हुई है कि अगर कोई शख्स कुरआन की आयत किसी नाजायज़ काम के लिये अमल के तौर पर इस्तेमाल में लाये तो वह सरसब्ज़ नहीं होता और पागल हो जाता है।

सूर: फ़ातिह: की ख़ासियतें:- हज़रत नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब किसी शख्स पर कोई मुसीबत पड़ती देखते तो आप सूर: फ़ातिह: पढ़ने का हुक़्म करते। और जो शख्स फ़ज़्र की सुन्नत व फ़र्ज़ के दरमियान विस्मिल्लाह के साथ चालीस (40) बार पढ़कर किसी बीमार के मुँह पर दम करे तो अल्लाह तआला इस सूर: की वरक़त से उसको मुकम्मल सेहत अता फ़रमायेगा। नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: “अल्फ़ाति-हतु शिफ़ाअु कुल्लि दाइन” यानी सूर: फ़ातिह: हर बीमारी के लिए शिफ़ा है। चुनाँचे एक शख्स बीमार हुआ तो हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने सूर: फ़ातिह: को पढ़कर उसके मुँह पर दम किया, उसको विलकुल आराम हो गया।

सूर: ब-क़र: की ख़ासियतें:- हज़रत नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाते थे कि यह सूर: जिस घर में पढ़ी जाती है उस घर में शैतान दाख़िला नहीं पाता। और एक हदीस में फ़रमाया कि सूर: ब-क़र: को पढ़ो कि उसमें ख़ैर व वरक़त है।

सूर: आलि इमरान की ख़ासियतें:- इस सूर: शरीफ़ का विर्द रखने वाला कर्ज़ के बोझ से छुटकारा पायेगा। और जो शख्स सात मर्तबा पढ़े तो तमाम कर्ज़ा दूर हो जाये और उसको मालूम न हो कि उसके लिये रिज़्क किस जगह से आता है।

सूर: निसा की ख़ासियतें:- अगर कोई शख्स हर दिन सात मर्तबा इस सूर: शरीफ़ का विर्द करे तो बीवी को उससे मुहव्वत ज़्यादा हो। और अगर बीवी पढ़े तो मर्द ज़्यादा मुवाफ़क़त करे।

सूर: मा-इद: की ख़ासियतें:- अगर कोई शख्स कहत-साली (अकाल) के दिनों में सूर: मा-इद: को पढ़े तो वह शख्स कहत से महफूज़ रहे।

सूर: अनज़ाम की ख़ासियतें:- जो शख्स इस सूर: को एक मर्तबा पढ़े तो सत्तर हज़ार फ़रिश्ते उसके लिये मग़फ़िरत की दुआ करते हैं और हर किस्म की ज़रूरतों और हाजतों में पढ़ने से मुश्किलात में आसानी होती है, और जो मुश्किल होती है वह हल हो जाती है।

सूर: आराफ़ की ख़ासियतें:- जो शख्स सूर: आराफ़ को पढ़े तो क़ियामत के दिन उसका हाथ जनाब आदम अलैहिस्सलाम के हाथ में होगा। और अगर किसी बादशाह का ख़ौफ़ दिल पर तारी हो या किसी ज़ालिम बादशाह से वास्ता पड़े तो तीन बार पढ़े, ज़ालिम अपने जुल्म से बाज़ आयेगा और मेहरबानी से पेश आयेगा।

सूर: अनफ़ाल की ख़ासियतें:- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जो शख्स इस सूर: शरीफ़ के पढ़ने पर पाबन्दी रखेगा तो क़ियामत के दिन मैं गवाही दूँगा कि यह शख्स निफ़ाक़ से बेज़ार है। और अगर कोई शख्स कैद में मुब्तला हो तो वह इस सूर: को पढ़ा करे। अगर वह बेकुसूर है तो अल्लाह तआला इसकी वरक़त से उसको नज़ात देगा। अगर खुद न पढ़ सके तो कोई रिश्तेदार पढ़ लिया करे। और

हाकिम उसपर मेहरबान होगा।

सूर: तौबा की ख़ासियतें:- इस सूर: का हर दिन एक बार पढ़ना ईमान की सलामती का सबब होता है। चुनाँचे बुजुर्गाने दीन इसकी तिलावत से ऐसे-ऐसे फायदे उठाते रहे हैं कि ज़ाहिरी आँखें उनको नामुष्किन ख्याल करती हैं। किसी हाकिम के सामने पढ़कर जाये तो वह मेहरबान हो जाता है। और अगर कोई ख़ता हो तो उसकी बख़्शिश हो जाती है।

सूर: यूनस की ख़ासियतें:- इस सूर: का जो हमेशा विद रखे उसपर जान निकलने की सख़्ती और क़ब्र का अज़ाब न होगा। और जो शख्स इक्कीस (21) मर्तबा पढ़े वह दुश्मनों पर ग़ल्बा और फ़त्ह पाएगा। और अगर कोई सख़्ती या मुसीबत पेश आए तो तेरह (13) बार पढ़ें, वह सख़्ती और मुसीबत दूर हो जाती है। इन्शा-अल्लाह।

सूर: यूसुफ़ की ख़ासियतें:- अगर कोई शख्स अपने ओहदे (पद) से हटा दिया गया हो तो वह इसकी तिलावत की पाबन्दी इख़्तियार करे, इस सूर: की बरकत से बहाल हो जायेगा। और अगर किसी हाकिम से कोई हाजत हो तो तेरह (13) बार पढ़कर उसके पास जाये अपने मक़सद में ज़रूर कामयाब होगा।

सूर: कट्फ़ की ख़ासियतें:- जो शख्स कर्ज़ में मुब्तला हो, जुमा की नमाज़ के बाद सूर: कट्फ़ सात बार पाढ़े और अल्लाह के सामने रो-रोकर दुआयें करे, उसका कर्ज़ा उतर जायेगा और वह हैरान हो जायेगा। और जो कोई इसको जुमा की रात में पढ़ेगा तो अल्लाह तआला उसको ऐसा नूर अता करेगा कि जिसकी रोशनी बैतुल्लाह शरीफ़ तक पहुँचे और उसके गुनाह माफ़ किये जायेंगे। और इस सूर: को पाबन्दी के साथ पढ़ने वाला ताऊन, सफ़ेद कोढ़, ख़ून ख़राब होने की बीमारी और दज्जाल के फ़ितने से महफूज़ रहेगा। और उसकी शुरू की दस आयतों के पढ़ने की सख़्त ताकीद है। और ज़वान बन्दी, बलाओं और मुसीबतों से हिफ़ाज़त रिज़्क में बढ़ोतरी व बरकत के लिए रोज़ाना सुबह को पढ़ें।

सूर: मरियम की ख़ासियतें:- जो शख्स रोज़गार और काम-धन्धे की कमी के सबब परेशान हो तो सूर: मरियम को सात बार पढ़कर दुआ करे। और अगर कोई ज़रूरत सामने हो तो तीन बार पढ़े।

सूर: तौ-हा की ख़ासियतें:- इसके आमिल पर जादू या सेहर कोई असर नहीं करता और रिज़्क की फ़रागत होती है।

सूर: अम्बिया की ख़ासियतें:- अगर कोई शख्स परेशान हाल हो और अक्सर मुख़्तलिफ़ किस्म की परेशानियों में घिरा रहता हो तो रोज़ाना तीन बार सूर: अम्बिया को पढ़े, अल्लाह तआला उसके तमाम ग़म और परेशानियों को दूर कर देगा। जो सूर: अम्बिया पढ़ेगा कियामत के दिन उसका हिसाब न होगा।

सूर: सबा की ख़ासियतें:- जो शख्स इस सूर: को दस बार पढ़ेगा तो वह आफ़तों और बलाओं से महफूज़ रहेगा। और फ़रमाया हुज़ूर नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कि जो आदमी इस सूर: को पढ़ता रहे वह खुशनसीब है क्योंकि कियामत के दिन कोई ऐसा नबी न होगा जो उसके साथ मुसाफ़ा न करे।

सूर: यासीन की ख़ासियतें:- इस सूर: की ख़ासियतें और असरात इस क़द्र हैं कि कलम उनको लिखने की ताकत नहीं रखता, क्योंकि यह कुरआन का दिल है। चुनाँचे नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने

फरमाया कि हर चीज़ का दिल होता है और कुरआन मजीद का दिल सूरः यासीन है। और जो शख्स इसको किसी हाजत के लिये एक बार पढ़े तो उसकी हाजत पूरी हो। और अगर बाँझ औरत को किसी चीनी के बरतन पर लिखकर और अर्क गुलाब से धोकर पिलाते रहें तो उसके नरीना औलाद हो। और मोहताज पढ़े तो मालदार हो जाये। और अगर किसी ऐसे शख्स पर पढ़ी जाए जिसपर जादू का असर हो तो वह सेहर और जादू दूर हो जाये। अगर किसी ऐसे शख्स पर पढ़कर दम की जाए जिसपर कोई जिन्न भूत वगैरह का असर हो तो वह असर भाग जाए। अगर कोई शख्स रात को नीयत के खुलूस के साथ पढ़े तो वह जन्नती है और दीन व दुनिया की तमाम मुश्किलें उसपर आसान हो जाती हैं। और हर मुहिम और हर मतलब के लिये इसका पढ़ना बहुत मुफ़ीद है। और अगर किसी शख्स की जान अटक जाये तो उसपर इस सूरः शरीफ़ को तीन बार पढ़कर दम करें, उसकी रूह फौरन निकल जाये। और अगर बीमार पर पढ़कर फूँकें तो वह सेहत पाये।

सूरः सौद की ख़ासियतें:- अगर इस सूरः को बुरी नज़र के दूर करने के लिये सात बार पढ़कर दम करें तो नज़रे-बद दूर होगी।

सूरः जुमर की ख़ासियतें:- जो शख्स रोज़ाना सात बार इस सूरः को पढ़े तो इज़्ज़त और रुतबे का मालिक हो, और उसकी रोज़ी में बढ़ोतरी और रुतबे में बुलन्दी हो और हमेशा राहत रहे।

सूरः मुहम्मद की ख़ासियतें:- जो शख्स इस सूरः शरीफ़ को पढ़े या लिखकर गुलाब से धोकर पिये तो वह रुतबे व पद में बुलन्द हो। और अगर लिखकर गले में डाले तो दुश्मनों पर फ़त्ह पाये। अगर सख़्त मुहिम दरपेश हो तो शुरू और आख़िर में ग्यारह (11) बार दुरुद शरीफ़ को पढ़े, इन्शा-अल्लाह नजात हासिल हो और उस मुहिम पर ग़ालिब आये।

सूरः फ़त्ह की ख़ासियतें:- जो शख्स सूरः फ़त्ह को इक्तालीस (41) बार पढ़े तो दुश्मनों पर फ़त्ह पाये। और अगर रमज़ान का चाँद देखकर खड़े-खड़े तीन बार पढ़े तो तमाम साल अमन में रहे। जनाब नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि जो शख्स इस सूरः शरीफ़ को पढ़ता है गोया कि वह मेरे साथ जिहाद में शामिल है।

सूरः काफ़ की ख़ासियतें:- अगर इस सूरः शरीफ़ को लिखें और बारिश के पानी से धोकर पेटदर्द के मरीज़ को पिलायें तो सेहत हो। और जिस लड़के के दाँत मुश्किल से निकलते हों उसको पिलायें बहुत आसानी से दाँत निकल आयें। और इस सूरः के पढ़ने की पाबन्दी करने वाले पर मौत के वक़्त की सख़्ती में आसानी हो जाती है, और इस सूरः का अमिल जब मर जाता है तो उसकी कब्र में एक रोशनी पैदा हो जाती है।

सूरः कमर की ख़ासियतें:- अगर किसी को हाकिम का ख़ौफ़ पैदा हो, या उससे कोई तकलीफ़ पहुँचने का अन्देशा लगा हुआ हो तो सूरः कमर को सात बार पढ़े।

सूरः रहमान की ख़ासियतें:- हदीस शरीफ़ में है कि जो शख्स सूरः रहमान को पढ़ता है गोया वह अल्लाह तआला की तमाम नेमतों का शुक्र अदा करता है। और आँख के दर्द में पढ़कर दम करें तो अल्लाह तआला शिफा बख़्शे। और तिल्ली के मरीज़ पर दम करें तो सेहत हो जाये। और अगर कोई ग्यारह (11) बार पढ़े तो अपने मतलब को पहुँचे।

सूर: वाकिआ की ख़ासियतें:- 'तब्‌अे ताबिईन' में बाज़ बुजुर्गों ने मालदारी हासिल करने के लिए सूर: वाकिआ का अमल इस तरह लिखा है कि जुमा के दिन से सात दिन तक बिना नागा किए हर फर्ज़ नमाज़ के बाद पच्चीस (25) बार पढ़े, फिर जब जुमा की रात आये तो इस सूर: को मगरिब की नमाज़ के बाद पच्चीस (25) बार पढ़े, फिर इशा की नमाज़ के बाद पच्चीस (25) बार हज़रत नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दुख़द शरीफ़ भेजे, उसके बाद रोज़ाना सुबह व शाम एक बार नमाज़ के बाद पढ़ा करे तो अल्लाह तआला उसको मालदार कर देगा। या जिस मतलब के वास्ते पढ़ेगा वह मतलब पूरा होगा।

सूर: मुजादला की ख़ासियतें:- अगर किसी कौम में झगड़ा फ़साद बरपा हो तो सूर: मुजादला पढ़ें क्योंकि इस सूर: शरीफ़ का पढ़ना आपसी निफ़ाक़ और बुग़ज़ व कीना को दूर करता है। और दुश्मनों को नीचा करने के लिए भी आज़माई हुई है।

सूर: हश्र की ख़ासियतें:- अगर कोई ज़रूरत सामने हो तो चार रकअत नमाज़ पढ़ें और हर रकअत में फ़ातिह: (यानी अल्हम्दु) के बाद सूर: हश्र एक बार पढ़ें, फिर सलाम फेरकर जो दुआ करें कबूल होगी।

सूर: जुमा की ख़ासियतें:- जिन मियाँ-बीवी के दरमियान में नाइतिफ़ाकी हो उनमें से कोई जुमा के दिन इस सूर: शरीफ़ को तीन बार पढ़कर दुआ माँगे। उनमें मुहब्बत बढ़ जायेगी और आपस का झगड़ा दूर होगा। और कोई शख्स अच्छी तरह कलाम न कर सकता हो तो इसका विद रखे, उसकी ज़बान दुरुस्त हो जायेगी।

सूर: मुनाफ़िकून की ख़ासियतें:- अगर कोई शख्स किसी चुगलख़ोर की तरफ़ से तकलीफ़ में हो तो सूर: मुनाफ़िकून को एक सौ साठ (160) बार पढ़े, अल्लाह तआला उसके हाल पर रहम करेगा और उस तकलीफ़ से बचालेगा। या उस चुगलख़ोर की ज़बान को बन्द कर देगा।

सूर: तगाबुन की ख़ासियतें:- हदीस शरीफ़ में आया है कि जो कोई सूर: तगाबुन को रोज़ाना एक बार पढ़े तो वह आदमी नागहानी और अचानक की मौत से महफूज़ रहे। और अगर कोई शख्स तीन बार पढ़ा करे तो उसके माल में ख़ैर व बरकत हो।

सूर: मुल्क की ख़ासियतें:- हज़रत अबू हुदैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि कुरआन में एक सूर: है जिसमें तीस आयतें हैं। उसने एक शख्स की शफ़ाअत की यहाँ तक कि वह शख्स बख़्शा गया। और इब्ने हब्बान से रिवायत है कि यह सूर: अपने पढ़ने वाले के लिए इस्तिग़फ़ार करती है यहाँ तक कि वह बख़्शा जाता है। और इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु का यह लफ़ज़ है कि यह सूर: नजात देने वाली है, क़ब्र के अज़ाब से नजात देती है। मैं चाहता हूँ कि यह सूर: हर मोमिन के दिल में हो। और जो शख्स इसको इक्तालीस (41) बार पढ़े तो उसकी तमाम मुश्किलें हल हों और वह तमाम आफ़तों से महफूज़ रहे। और अगर कर्ज़दार हो तो उसका कर्ज़ा उतर जाये।

सूर: मआरिज की ख़ासियतें:- जो शख्स रोज़ाना सूर: मआरिज को पढ़े वह तमाम दिन शैतानी वस्वों से बचा रहे। और जिस शख्स को एहतिलाम (स्वपनदोष) कसरत से होता हो वह आठ बार सूर: मआरिज को पढ़े, या सोते वक़्त रोज़ाना एक बार पढ़ लिया करे, इन्शा-अल्लाह तआला वह शख्स महफूज़ रहेगा।

सूर: नूह की ख़ासियतें:- अगर किसी सख़्त दुश्मन से पाला पड़ जाये और उसको दफ़ा करना नामुम्किन

हो तो एक हजार बार सूर: नूह पढ़ें या बहुत-से आदमी जिनकी तायदाद ताक (यानी बेजोड़ हो, जैसे पाँच, सात, नौ, ग्यारह) हो, एक ही मजलिस में बैठकर खत्म करें या दो तीन दिन में खत्म करें, दुश्मन हलाक हो जायेगा।

सूर: जिन्न की ख़ासियतें:- अगर किसी शख्स को आसेब (जिन्न भूत वगैरह का असर) हो गया हो तो सूर: जिन्न को सात बार पढ़कर सात दिन तक दम करें, आसेब भाग जायेगा। और जिन्न व परी को कब्जे में करने के वास्ते सात सौ (700) बार पढ़ें, जिन्न काबू में आ जायेगा।

सूर: मुज्जम्मिल की ख़ासियतें:- जो शख्स रोज़ाना सूर: मुज्जम्मिल को अपना विर्द बनाये तो वह हज़रत नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़्वाब में ज़ियारत पाये और ख़ैर व बरकत का सबब है। अगर इस सूर: को पढ़कर हाकिम के पास जाये तो हाकिम मेहरबान हो जाये। और ज़बान बन्दी और तलवार बन्दी के वास्ते आजमाई हुई है। और अगर लिखकर मरीज़ के गले में लटकाये तो उसको सेहत हो और हर दिन सात बार पढ़े तो रिज़्क में फ़राखी हो।

सूर: इन्शिराह की ख़ासियतें:- अगर किसी शख्स के सीने में दर्द हो तो इस सूर: पाक से दम किया हुआ पानी छाती पर मले। और दिल के दर्द के वास्ते अक्सीर है। और अगर कोई काम अनेक कारणों से बन्द हो गया हो तो इस सूर: को बीस (20) बार पढ़े, वह काम खुल जायेगा। और जो शख्स कुछ माल ख़रीदे उसपर पढ़कर दम करे तो बरकत हो।

सूर: क़द्र की ख़ासियतें:- जो शख्स इस सूर: को सुबह व शाम तीन-तीन बार पढ़े तो सब दोस्त व आशना उसकी इज़्ज़त करें और बुलन्द रुतबे हासिल करने के लिए हमेशा इसका विर्द रखना अजीब व ग़रीब असर रखता है। और चीनी के बरतन पर लिखकर और उसे गुलाब या बारिश के पानी से धोकर मरीज़ को पिलायें तो इन्शा-अल्लाह शिफ़ा हो।

सूर: इख़्लास की ख़ासियतें:- हदीस शरीफ़ में है कि जो शख्स तीन बार सूर: इख़्लास को पढ़े तो उसको एक कुरआन ख़त्म करने का सवाब हासिल होगा और जन्नत उसपर वाजिब हो जाती है। और नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि “कुल् हुवल्लाहु शरीफ़” का पढ़ने वाला अपनी मुरादों को पहुँचेगा चाहे दुनियावी हों या दीनी। और अगर इशा की नमाज़ के बाद खड़े होकर एक सौ एक (101) बार पढ़े तो तमाम गुनाह उसके माफ़ किये जायें। और अगर बीमार को लिखकर और धोकर पिलायें तो उसे सेहत हासिल हो। यह हर बला को दूर करने वाली है।

सूर: फ़लक़ की ख़ासियतें:- इस सूर: को हर दिन बिना नागा तिलावत करने वाला हर तरह की आफ़तों से महफूज़ रहता है। और हासिदों और दुश्मनों के शर और बुराई से बचा रहता है। और अगर किसी शख्स पर सेहर या जादू असर कर गया हो तो इस सूर: को पढ़कर दम करें, और जिसपर जादू का असर हुआ है अगर वह सौ (100) बार पढ़े तो उससे छुटकारा पाये, और घोलकर पिये और लिखकर गले में बाँधे।

सूर: नास की ख़ासियतें:- जो शख्स इस सूर: को अपने ऊपर पढ़कर दम करे उसपर किसी का जादू न चले और हर बला से महफूज़ रहे। और जादू के वास्ते सौ (100) बार पढ़ें। और अगर हर रोज़ पढ़ें तो तमाम गुनाह माफ़ किये जाते हैं। और जिस आदमी पर जादू कर दिया गया हो या उसपर किसी जिन्न भूत वगैरह का असर हो उसपर दम करें तो उसे नजात हासिल हो।

सूरतों की तरतीब

क्र. स.	नाम सूर:	पारा नम्बर	पृष्ठ नम्बर	क्र. स.	नाम सूर:	पारा नम्बर	पृष्ठ नम्बर
1	सूर: फातिह:		1	31	सूर: लुकमान	21	741-747
2	सूर: ब-कर:	1-2-3	3-87	32	सूर: सज्दा	21	747-753
3	सूर: आलि इमरान	3-4	89-137	33	सूर: अहज़ाब	21-22	753-771
4	सूर: निसा	4-5-6	137-189	34	सूर: सबा	22	771-783
5	सूर: मा-इद:	6-7	191-229	35	सूर: फातिर	22	783-793
6	सूर: अन्आम	7-8	229-269	36	सूर: यासीन	22-23	793-803
7	सूर: आराफ	8-9	271-317	37	सूर: साफ़ात	23	803-817
8	सूर: अन्फाल	9-10	317-335	38	सूर: सौद	23	817-825
9	सूर: तौबा	10-11	335-371	39	सूर: जुमर	23-24	825-841
10	सूर: युनुस	11	373-397	40	सूर: मुअ्मिन	24	841-859
11	सूर: हूद	11-12	397-423	41	सूर: हा-मीम सज्दा	24-25	859-869
12	सूर: यूसुफ	12-13	423-445	42	सूर: शूरा	25	871-881
13	सूर: रअद	13	447-461	43	सूर: जुख़रुफ़	25	881-893
14	सूर: इब्राहीम	13	461-471	44	सूर: दुखान	25	893-897
15	सूर: हिज्र	13-14	471-481	45	सूर: जासिय:	25	897-903
16	सूर: नहल	14	481-507	46	सूर: अहकाफ़	26	905-913
17	सूर: बनी इस्राईल	15	509-529	47	सूर: मुहम्मद	26	913-919
18	सूर: कहफ़	15-16	529-549	48	सूर: फह	26	921-927
19	सूर: मरियम	16	551-563	49	सूर: हुजुरात	26	927-933
20	सूर: तौ-हा	16	563-579	50	सूर: काफ़	26	933-937
21	सूर: अम्बिया	17	581-597	51	सूर: ज़ारियात	26-27	937-943
22	सूर: हज	17	599-615	52	सूर: तूर	27	943-947
23	सूर: मुअ्मिनून	18	617-631	53	सूर: नज़्म	27	947-951
24	सूर: नूर	18	631-649	54	सूर: कमर	27	951-957
25	सूर: फुरकान	18-19	649-661	55	सूर: रहमान	27	957-961
26	सूर: शु-अरा	19	661-679	56	सूर: वाकिआ	27	963-967
27	सूर: नमल	19-20	679-693	57	सूर: हदीद	27	969-975
28	सूर: कसस्	20	695-715	58	सूर: मुजादला	28	979-985
29	सूर: अन्कबूत	20-21	715-729	59	सूर: हश्	28	985-991
30	सूर: रूम	21	729-741	60	सूर: मुस्तहिना	28	993-997

क्र. स.	नाम सूर:	पारा नम्बर	पृष्ठ नम्बर	क्र. स.	नाम सूर:	पारा नम्बर	पृष्ठ नम्बर
61	सूर: सफ़्फ	28	997-1001	88	सूर: गाशय:	30	1087-89
62	सूर: जुमुअ:	28	1001-03	89	सूर: फज्र	30	1089-91
63	सूर: मुनाफिकून	28	1003-07	90	सूर: बल्द	30	1091-95
64	सूर: तगाबुन	28	1007-11	91	सूर: शम्स	30	1095
65	सूर: तलाक	28	1011-15	92	सूर: लैल	30	1095-97
66	सूर: तहरीम	28	1015-17	93	सूर: जुहा	30	1097
67	सूर: मुल्क	29	1021-25	94	सूर: इन्शिराह	30	1097
68	सूर: कलम	29	1025-29	95	सूर: तीन	30	1099
69	सूर: हाक्क:	29	1029-33	96	सूर: अलक	30	1099
70	सूर: मआरिज	29	1033-37	97	सूर: कद्र	30	1101
71	सूर: नूह	29	1037-41	98	सूर: बय्यिन:	30	1101
72	सूर: जिन	29	1041-49	99	सूर: जिल्जाल	30	1103
73	सूर: मुज्जम्मिल	29	1049-51	100	सूर: आदियात	30	1103
74	सूर: मुद्दसिर	29	1051-55	101	सूर: कारिअ:	30	1103-05
75	सूर: कियाम:	29	1055-57	102	सूर: तकासुर	30	1105
76	सूर: दहर	29	1057-61	103	सूर: अस्र	30	1105
77	सूर: मुरसलात	29	1061-63	104	सूर: हु-मज:	30	1105-07
78	सूर: नबा	30	1067-69	105	सूर: फील	30	1107
79	सूर: नाजिआत	30	1069-71	106	सूर: कुरैश	30	1107
80	सूर: अ-ब-स	30	1071-73	107	सूर: माअून	30	1107
81	सूर: तकवीर	30	1075	108	सूर: कौसर	30	1109
82	सूर: इन्फितार	30	1075-77	109	सूर: काफिरून	30	1109
83	सूर: तत्फीफ	30	1077-79	110	सूर: नस्र	30	1109
84	सूर: इन्शिकाक	30	1079-83	111	सूर: ल-हब	30	1109-11
85	सूर: बुरूज	30	1083-85	112	सूर: इख्लास	30	1111
86	सूर: तारिक	30	1085	113	सूर: फलक	30	1111
87	सूर: अअ्ला	30	1087	114	सूर: नास	30	1111

नोट: यहाँ सूरतों की तरतीब उसी तरह है जिस तरह कुरआन पाक में है। वैसे हमने सूरतों के साथ उनके नाज़िल होने की तरतीब का नम्बर भी लिखा है, चुनाँचे आप देखेंगे कि हमने हर सूर: के साथ दो नम्बर लिखे हैं जैसे: (2 सूर: ब-कर: 87---- 96 सूर: अलक 1) इसका मतलब यह है कि कुरआन पाक में स्थान की हैसियत से सूर: ब-कर: का नम्बर 2 वाँ और सूर: अलक का नम्बर 96 वाँ है, और इनके नाज़िल होने के एतिबार से सूर: ब-कर: का नम्बर 87 वाँ और सूर: अलक का नम्बर 1 वाँ है। (मुहम्मद इमरान कासमी)



व कालरू-रसूलु या रब्बि

इन्-न कौमित्त-खज़ू हाज़ल-कुरआ-न महज़ूरा

तर्जुमा: और पैग़म्बर कहेंगे कि ऐ परवर्दिगार! मेरी कौम ने

इस कुरआन को छोड़ रखा था।

फ़ायदा: जनाब नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कियामत के दिन खुदा से शिकायत करेंगे कि ऐ मेरे परवर्दिगार! मेरी कौम ने कुरआन को छोड़ दिया। छोड़ देने की कई सूरतें हैं- इसको न मानना और इसपर ईमान न लाना भी छोड़ देना है, इसमें ग़ौर न करना और सोच समझकर न पढ़ना भी छोड़ देना है, और इसके अवामिर (यानी जिन चीज़ों का हुक्म फ़रमाया गया है) पर अमल न करना और मन्हियात (यानी जिन चीज़ों और कामों से रोका गया है उन) से न बचना भी छोड़ देना है। कुरआन पाक की परवाह न करके दूसरी चीज़ों जैसे बेहूदा नाविलों, शायरी की किताबों, बेमकसद बातों, खेल-तमाशों, राग-रंग में मसरूफ़ (व्यस्त) होना भी छोड़ देना है।

अफ़सोस है कि आजकल के मुसलमान कुरआन की तरफ़ से बहुत ही ग़ाफ़िल हो रहे हैं। इसके पढ़ने, सोचने-समझने और हिदायतों से फ़ायदा उठाने की तरफ़ तवज्जोह नहीं करते और यह खुल्लम-खुल्ला कुरआन पाक को छोड़ देना है। खुदा तआला उनको इसकी तरफ़ राग़िब और इसकी तिलावत में मशगूल होने की तौफ़ीक़ बख़्शे, ताकि वे इसपर अमल करें और दोनों जहान की कामयाबी और फ़लाह हासिल हो।